

भास्करग्रन्थमाला नं० २

# संस्कृत-हिन्दी-कोष

THE

SAHSKRIT-HINDI-DICTIONARY

For the Use of Schools & Colleges.



जिस में

अकारादि क्रम से प्रायः समस्त प्रसिद्ध संस्कृतसंज्ञा और  
धातुओं के [संज्ञाओं के लिंग और धातुओं के गण  
सहित] हिन्दी उर्दू के सरल पर्यायवाची शब्द  
दिये गये हैं।

SAHSKRIT  
DICTIONARY

जिस में २१॥ हजार शब्द हैं



प्रकाशक—

रघुवीरशरण दुबलिस, अध्यक्ष भास्कर प्रेस  
मेरठ शहर।

बिलने का पता—

मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर

प्रथमावृत्ति

१०००

स० १९०१

{ मूल्य १ प्रति

१)

# विषयसूची

अ-	पृष्ठ	१ से आरम्भ है।	ट-	"	३०१	"
आ-	"	१३८	ठ-	"	३०१	"
इ-	"	१६०	ड-	"	३०१	"
ई-	"	१६३	ढ-	"	३०२	"
उ-	"	१६४	ण-	"	३०२	"
ऊ-	"	१८८	त-	"	३०२	"
अ-	"	१९०	थ-	"	३२१	"
अ-	"	१९२	द-	"	३३१	"
ल-	"	१९२	ध-	"	३४७	"
ल-	"	१९२	न-	"	३४७	"
प-	"	१९२	प-	"	३९५	"
पे-	"	१९५	फ-	"	४६५	"
ओ-	"	१९६	ब-	"	४६८	"
भी-	"	१९७	भ-	"	४८१	"
क-	"	१९९	म-	"	४९६	"
ख-	"	२५२	य-	"	५३३	"
ग-	"	२५७	र-	"	५४३	"
घ-	"	२७३	ल-	"	५६२	"
ङ-	"	२७६	व-	"	५६७	"
च-	"	२७६	श-	"	६१५	"
छ-	"	२८८	य-	"	६१६	"
ज-	"	२९१	स-	"	६३७	"
झ-	"	३०३	ह-	"	६८८	"
ञ-	"	३०१				



ओ३म्

लेखक का यह तुच्छ प्रयत्न

श्रीयुत पं० घासीरामजी एम० ए० एल० एल० बी०  
प्रधान

आर्यप्रतिनिधिसभा संयुक्तग्रान्त, मेरठ

की सेवा में

संस्कृतभाषा के प्रति उन के असीम प्रेम और  
देववाणी के प्रचार के लिये उन के सतत

प्रयत्न के उपलक्ष में

सादर समर्पित है।

१। एष, अनेक, द्वि, त्रि, चतुर, पंच, षट्, सप्त, अष्ट, नव, दश, विंशति, त्रिंशत्, अष्टाविंशत्,



पञ्चाशत्, षष्टि, सप्तति, अष्टाति, नवति, शत, सहस्र इत्यादि सख्यावाचक शब्द हैं, यह स्मरण रतना चाहिये कि सङ्ख्याओं के परचात्र सुप् विभक्ति लगाने पर इन के रूप में कुछ फेरफार हो जाता है।

६-कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिन के रूप में कभी विकार नहीं होता और उनके परचात्र सुप् विभक्तिया नहीं लगती। ऐसे शब्दों को अग्रय कहते हैं। कुछ अग्रयों की तालिका यहां दी जाती है। अकस्मात्, अति, अतीव, अवशा, अपो, अय, अपस, अपुना, अन्यथा, अपि, अयि, धरे, अलम्, अहो, आ, इति, इन्धम्, इदानीम्, इह, उच्येत्, उपरि, ज्येते, एव, एवम्, कथम्, कदा, किन्तु, किम्, क्वि, चिरम्, चेत्, तथा, तदा, नीचैस्, मूढम्, परचात्र, प्रति, माक, प्रातर, मातुस्, मायस् इत्यादि। अग्रयों का अन्तिम स् वा र् विसर्ग में बदल जाता है। अग्रय एक प्रकार के क्रियाविशेषण होते हैं। क्रिया के अर्थ में भेदभाव करने के लिये उन्में पूर्व कुछ अग्रय लगाये जाते हैं, जिन का नाम उपसर्ग है। अति, अयि, अयु, अप्, अपि, अमि, धव, आ, वृ, उप्, दुर, नि, निर, परा, परि, म, प्रति, वि, तम्, सु-ये उपसर्ग हैं। अप्, अय्, और अयि के अ का विकल्प से लोप हो जाता है जैसे अवगाह = बगाह, अपिहित = पिहित।

७-पुल्लिङ्गसङ्ख्या से श्रीलिंग संज्ञा बनाने के लिये आ, ई, इका इत्यादि प्रत्यय लगाये जाते हैं। जो श्रीलिंगप्रत्यय बढ़ाते हैं। अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के परचात्र आ लगा कर श्रीलिंग बनाया जाता है। जैसे-सरल से सरला, प्रिय से प्रिया, किन्तु गौर से गौरी, कुमार से कुमारी, विशोर से विशोरी इत्यादि रूप बनते हैं। अजादि को छोड़ कर जातिवाचक शब्दों के परचात्र ई प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे-सिंह से सिंही, राक्षस से राक्षसी, हरिण हरिणी; किन्तु अम से अमा और चटक से चटका। अकारान्त शब्दों के परचात्र ई प्रत्यय लगाते हैं। जैसे दाह से दानी, पाट से पानी। सख्यावाचक को छोड़कर अकारान्त सङ्ख्याओं के उत्तर ई प्रत्यय लगता है, जैसे कामिन् से कामिनी, यामिन् से यामिनी। मत्, वत्, तवत्, वस्, ईयस् प्रत्ययान्त सङ्ख्याओं के परचात्र ई प्रत्यय लगता है। जैसे विद्वत् से विदुषी, बुद्धिमत से बुद्धिमती।

८-संस्कृत में ६ कारक ( Cases ) होते हैं। यथा-कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण; सम्बन्ध और सम्बोधन की कारकों में गिनती नहीं होती। कर्ता में प्रथमा विभक्ति, कर्म में द्वितीया, करण में तृतीया, सम्प्रदान में चतुर्थी, अपादान में पञ्चमी, सम्बन्ध में षष्ठी और अधिकरण में सप्तमी विभक्ति होती है। कर्ता कारक क्रिया करने वाले को प्रकट करता है, कर्म उस द्रव्य को प्रकट करता है जिसमें क्रिया का फल रहता है। करण से उस साधन का बोध होता है जिसकी सहायता से क्रिया की जाती है। सम्प्रदान उस व्यक्ति वा द्रव्य को बतलाता है जिस को कोई वस्तु दी जाती है या जिस के हृदय से क्रिया की जाती है। अपादान उस पुरुष वा द्रव्य को प्रकट करता है जिस से कोई वस्तु अलग की जाय, ली जाय, उत्पन्न की जाय, रहित की जाय, सीखी जाय। अधिकरण उस व्यक्ति वा द्रव्य को बतलाता है जो क्रिया का आधार होता है। सम्बन्ध से दो वस्तुओं का आपस का सम्बन्ध ( तात्पुत्र ) ज्ञात होता है।

९-विशेषण उस सङ्ज्ञा को कहते हैं जो किसी व्यक्ति वा द्रव्य के पूर्व लगाई जाकर उसके अर्थ में कुछ विशेषता लादे। वह व्यक्ति वा द्रव्य विशेष्य कहलाता है। विशेष्य का कोई निश्चित लिङ्ग नहीं होता, प्रस्तुत वह जिस विशेष्य के साथ जोड़ा जाता है उसी के लिङ्ग को ग्रहण कर लेता है। इसीलिये वह विलिङ्ग कहलाता है। माषा में पुल्लिङ्ग और श्रीलिङ्ग केवल दो ही लिङ्ग होते हैं, किन्तु संस्कृत में इन से अधिक एक और लिङ्ग होता है जो नपुंसकलिङ्ग कहलाता है। पुल्लिङ्ग उन शब्दों को जतलाता है जिन में पुरुषत्व वा पुरुषचिह्न पाया जाय। श्रीलिङ्ग उन शब्दों को बतलाता है जिन में श्रीत्व, श्रीचिह्न वा स्त्रुता [ कामलता ] पाई जाय। जिस में श्रीत्व और पुरुषत्व दोनों का अभाव हो वह नपुंसक कहलाता है। संस्कृत में शब्दों का लिङ्ग निश्चित होता है इसलिये यह नियम सर्वत्र नहीं लगता; क्योंकि संस्कृत में श्री के वाचक श्रीलिङ्ग नारी, पुल्लिङ्ग दारा, और नपुंसकलिङ्ग कलत्र तीनों लिङ्गों में पाये जाते हैं।

१०—हिन्दीभाषा में एक वचन और बहुवचन केवल दो ही वचन होते हैं, जिन से एक वा अन्य वस्तुओं का ज्ञान होता है; किन्तु संस्कृत में, जैसा कि प्रायः समस्त प्राचीनकालीन भाषाओं में प्रायः ज्ञात है, दो वस्तु का दोतरु द्विवचन भी होता है। इसलिये सात सात विभक्तियों के लग जाने से षट् शब्द के रूप तीनों वचनों में २१ हो जाते हैं।

११—ये प्रकृति, जिन से होना, करना, सहना इत्यादि अर्थ प्रकट होता है, धातु कहलाती हैं। हिन्दी में धातु का चिह्न ना है। जैसे—करना, पढ़ना, पहिना आदि में। संस्कृत में प्रत्येक कोई निश्चित चिह्न नहीं होता। भू, स्था, गम्, वष्, दृश्, पठ्, सह, नम, वन्द, कृ, घृ, शी, प्लव, दु इत्यादि अनेक धातु होती हैं, जिन की संख्या २३४३ है, जिन में परस्मैपद और आत्मनेपद की विभक्तियाँ लगती हैं। विभक्तियाँ लगाने पर उन का नाम शब्द होता है। धातु दश विभागों में विभक्त हैं, जिन्हें गण कहते हैं। १ भ्रमदि, २ अश्रदि, ३ ह्रादि वा जुल्लेत्वादि, ४ दिवादि, ५ स्वादि, ६ तुदादि, ७ रुधादि, ८ तनादि, ९ जयादि और १० चुरादि—ये दश गणों के नाम हैं।

१२—क्रियाओं की विभक्ति दो प्रकार की होती है। एक परस्मैपद और दूसरी आत्मनेपद। जिन धातुओं के परचाय परस्मैपद की विभक्तियाँ लगती हैं वे परस्मैपदी, जिन के उत्तर आत्मनेपद की विभक्तियाँ लगती हैं वे आत्मनेपदी धातु कहलाती हैं और कुछ ऐसी भी धातु हैं जिनके परचाय दोनों प्रकार की विभक्तियाँ लगती हैं, ऐसी धातुओं को उभयपदी कहते हैं। कात्वेभेद से इन विभक्तियों के दश भेद होते हैं, जो लकार कहलाते हैं। जिन के नाम ये हैं—१ लट् [वर्तमानकाल], २ लृट् [अन्यतनभूत], ३ लिट् [परोक्ष], ४ लुट् [सामान्यभूत], ५ लुङ् [अन्यतनभविष्य], ६ लृङ् [सामान्यभविष्य], ७ लोट् [आज्ञा], ८ वीर्यलिट्, ९ कशीलिट्, १० लृष् [क्रियानिपति]।

१३—संस्कृत में तीन पुरुष होते हैं प्रथम, मध्यम और उत्तम। प्रथम पुरुष परोक्षकर्ता को जताता है, मध्यम पुरुष पुरोक्षकर्ता का और उत्तम पुरुष वक्ता का बोधक होता है। प्रत्येक लकार में इन तीन पुरुषों और तीन वचनों के विभाग से ६ विभक्तियाँ होती हैं, इस प्रकार कुल १८० विभक्तियाँ होती हैं, जो लिट् प्रत्यय पड़वाते हैं। अस्मैक और सक्मैक भेद से धातु के दो भेद होते हैं। जिसके साथ कर्म का सम्बन्ध होता है उसे सक्मैक और जिस के साथ कर्म का सम्बन्ध नहीं होता उसे अस्मैक धातु वरते हैं।

१४—धातु के अर्थ में प्रेरणा दियलाने के लिये शिच् प्रत्यय लगता है और इस प्रत्यय के लगने पर वह धातु दियन्त कहलाती है। जैसे पठ् [पढ़ना] धातु का अर्थ शिच् प्रत्यय लगने पर पठाना हो जायगा। दियन्त धातुओं के रूप चुरादिगण की धातुओं के समान होते हैं। जैसे—पठ् से पाठयति, गम से गमयति, वष् से वापयति इत्यादि।

१५—धातु के अर्थ में कर्ता की इच्छा प्रकट करने के लिये सक् प्रत्यय लगाया जाता है और इस प्रत्यय के लगने पर वह सक्मैक धातु कहलाती है। धातु के उत्तर त् [सक्] प्रत्यय लगाने से धातु के रूप में अस्मैक देखीर होता है। जैसे—पा [पीना] से पिषामति, पिषातु, पिषातेत्र इत्यादि रूप बनते हैं और ज्ञा से जिज्ञामति, जिज्ञातु आदि रूप बनते हैं। पिषासति = वह पीना चाहता है, जिज्ञासति = वह जानना चाहता है, पिषातेति = वह करना चाहता है।

भया, रुच् से रुचान = रोचता भया, युच् से युयुधान = युद्ध करना भया, द्यादि रूप बनते हैं। इसी प्रकार भावी कर्म जतलाने को परस्मैपद में शतृ और आत्मनेपद में स्वमान प्रत्यय लगता है।

१७-तन्त्र, अनीय और यत्र प्रत्यये से बने हुए शब्द इस कोष में बहुतायत से आये हैं। जैसे दा + तन्त्र = दातन्त्र, दा + अनीय = दानीय, दा + यत्र = देय; चिन्त्र + तन्त्र = चिन्तयितन्त्र, चिन्त्र + अनीय = चिन्तनीय और चिन्त्र + यत्र = चिन्त्र्य आदि। ये तीनों प्रत्यय एक ही अर्थ में अर्थात् ओचित्य दिखलाने में प्रयुक्त होते हैं। जैसे - दातन्त्र = देने योग्य।

१८-तद्वत् और त प्रत्यय भी बहुत प्रयुक्त होते हैं। ये दोनों मूलक्रिया का वीतन कराने हैं। जैसे ज्ञा से ज्ञातवत् = जानता भया, गम् से गतवत् = जाता भया। त प्रत्यय लगने पर ज्ञा से ज्ञात, गम् से गत इसी अर्थ में रूप बनते हैं।

१९-धातुओं से उत्तर खोलिग में भाववाचक शब्द बनाने के लिये नि प्रत्यय लगाया जाता है। जैसे ख्या से ख्याति = प्रसिद्धि, स्या से स्थिति = शालन, मुच् से मुक्ति = छुटना। वृन्, कृन्, पिन् प्रत्यय कर्ता को जतलाने के लिये लगाये जाते हैं। जैसे -दा से दावृ = देने वाला, नी से नायक = ले जाने वाला। घन् अल्प्रत्यय माय पुलिङ्ग सज्ञा बनाने में लगाये जाते हैं। जैसे -पच् से पाक = पकाने का काम, पठ् से पाठ = पढ़ने का काम, जि से जय = जीतना इत्यादि। अनट् प्रत्यय नपुंसकलिङ्ग की सज्ञा बनाने के काम में आता है। जैसे -गम् से गमन = जाना, मुन् से मौन = खाना।

२०-सञ्ज्ञाशब्द वा किसी २ अन्य शब्द के उत्तर ण्, ष्, पाण्, पिप्, कप्; कृन्, ता, त्व, वत्तिच्, मत्, वत्, इन्, विन्, इत् इत्यादि प्रत्यय अन्य अधिकार, योग्यता, भाव इत्यादि अर्थ बतलाने के लिये लगाये जाते हैं, जिन को तद्धित कहते हैं। तद्धित प्रत्यय लगने में प्रकृति का स्वरूप में घट्पा हेरफेर होता है। तद्धितप्रत्ययान्त शब्द कोई २ तो सज्ञा, कोई विशेषण और कोई कोई अन्य होते हैं। ण्, ष्, पाण्, वेण् इत्यादि प्रत्यय उत्पत्ति वा अप्रत्यय अर्थ में आते हैं। जैसे -कुशित्स्य अपत्य पौशिक, दशरपत्य अपत्य दाशरथि। कृन् प्रत्यय स्वार्थ और श्लेषार्थ में प्रयुक्त होता है। जैसे बाल से बालक, वृक्ष से वृक्षक। ता और त्व प्रत्यय भाववाचक सज्ञा बनाने में लगते हैं जैसे -गुरु से गुरुता, गुरुत्वम्। ता लगने से सर्वदा खोलिग और त्व लगने से सर्वदा नपुंसकलिङ्ग शब्द बनते हैं। वत्तिच् के लगने से अन्य बनते हैं जैसे -गुरुवत् = गुरु के समान। मत्, वत्, 'वाला' अर्थ में आते हैं, मतिमत् ॥ मुद्रियाणा, शानवत् = शानवाला। इन् प्रत्यय अज्ञानान्त या आशयान्त ऐतौ सज्ञाओं के परबद्ध लगाया जाता है, जिनमें एक से अधिक स्वर हो। जैसे -ज्ञान से ज्ञानिन् = ज्ञान वाला। ईयस् और इष्ट प्रत्यय उत्कर्ष दिखलाने के लिये प्रयुक्त होते हैं। जैसे -गरीयस्, गरिष्ठ = अधिक भारी। चिन् और चन प्रत्यय चिन् के परचात् अनिश्चितता दिखाने के लिये लगते हैं जैसे -विचिन्, निचन, कश्चिन्, कश्चन इत्यादि।

२१-संज्ञितता के लिये सम्भृन् में समास का प्रयोग होता है। अनेक पदों की विभक्तियों का लोप करके एक पद बनाने की समास कहते हैं। समास से सिद्ध शब्द कोई तो विशेषण, कोई एका और कोई अन्य होते हैं। समास करने में समास के घटनपदों का स्वरूप में कहीं ० हेरफेर होता है और कहीं २ अन्त में क क इत्यादि प्रत्यय भी लगते हैं। समास छ प्रकार का होता है। यथा -तत्पुरुष, कर्मधारय, द्विगु, बहुव्रीहि, द्वन्द्व और शब्दयोग्यभाव। समास में कहीं ० पूर्वपद की विभक्तिका लोप न होना उसे अनुसमास कहते हैं। जैसे वनेचर, मुनिठिठर।

तत्पुरुष-जिस समास में प्रथमा और सम्बोधन की छोड़ कर अन्य कोई विभक्ति पूर्वपद के अन्त में रहे, उस का नाम तत्पुरुष समास है। तत्पुरुष का लिङ्ग उत्तरपद के अनुसार होता है। जन्म-दुःखम श्रुति = दुःखातीत, राज पुरुष = राजपुरुष।

कर्मधारय-विशेषण और विशेष्य के समास को कर्मधारय कहते हैं। जैसे नीलम्-उपगम् = नीलोपगम्।

**द्विगु-**जब संख्यावाचक विशेषण के साथ विशेष्य का समास हो और उसका प्रयोग कील्लिङ्ग वा नपुंसकलिङ्ग के एकरूपन में हो, तब उसका नाम द्विगु होता है। जैसे त्रयाणाम् भोक्तानाम् समाहारः = त्रिलोकी। शतानां शतानां समाहारः = शतशती।

**द्वन्द्व-**मिल समास में प्रत्येक पद का अन्वय किसी एक क्रिया से हो उसे द्वन्द्व कहते हैं। इतर-इतरद्वन्द्व और समाहारद्वन्द्व नाम से द्वन्द्व समास दो प्रकार का होता है। समाहारद्वन्द्व सदा नपुंसकलिङ्ग एकरूपनान्त होता है और इतरेतरद्वन्द्व का लिङ्ग उत्तरपद के लिङ्ग के समान होता है। समाहारद्वन्द्व जैसे:-करश्च चरणं च = करचरणम्। मयुरा च पाटलिपुत्रं च = मयुरापाटलिपुत्रम्। इतरेतरद्वन्द्व जैसे:-रामश्च लक्ष्मणश्च = रामलक्ष्मणौ, माता च पिता च = मातृपितरौ। एकरूप द्वन्द्वसमास में दो पद में से केवल एक पद रह जाता है। जैसे-माता च पिता च = पितरौ। यह समास इतरेतरद्वन्द्व के ही अन्तर्गत है।

**चतुर्व्रीहि-**इस में समासित पदों की विशेषता नष्ट हो कर किसी भिन्न पुरुष वा द्वन्द्व का यौतक पद बन जाता है। जैसे-दीर्घौ बाहू यस्य स दीर्घपादः [ पुरुषः ]। इस समास से बने हुए शब्द विशेषण होते हैं।

**अव्ययीभाव-**इस समास में पूर्वपद अव्यय होता है और उस द्वारा सामीप्य, वीप्सा, अन्तिक्रम; अभाव, पर्यन्त इत्यादि बातों की यौतना होती है। जैसे कूलस्य समीपे = उपकुलम्।

यहां संस्कृतव्याकरण का दिग्दर्शनमात्र केवल इसी अभिप्राय से दिया गया है कि जिससे इस कोष में आये हुए शब्दों के समझने में पाठकों को सुगमता हो; परन्तु संस्कृत भाषा के समझने के लिये संस्कृत व्याकरण का सम्यग्ज्ञान बड़ा आवश्यक है। इसलिये पाठकों से हमारा अनुरोध है कि संस्कृत का साधारण ज्ञान प्राप्त करने के लिये भास्करप्रेस मेरठ से प्रकाशित होने वाले "संस्कृतशिक्षक" नामक व्याकरणग्रन्थ का अवश्य अवलोकन करें।

इस ग्रन्थ के सम्पादन, मुद्रण और प्रकाशन में हम से अनेक धुलियां रह गई हैं, जिन को यथा-शक्ति दूर करना हमारा कर्तव्य है। इसलिये पाठकों से सानुनय निवेदन है कि जो अशुद्धि भी उन्हें प्रतीत हो, उसके लिये वे हमें समाप्रदान करते हुए लिख भेजें, जिस से अगले संस्करण में उन का संशोधन कर दिया जाय। अन्त में परमात्मा को धन्यवाद देते हुए और अपने पाठकों की क्षान्ति की प्रार्थना करते हुए इस प्रस्तावना को समाप्त करते हैं। ओं शम्भु।

मेरठ

तिथि १ आ० १९३१ }

धिनीत

{ लेखक और प्रकाशक

# संस्कृत-हिन्दी-कोष

## अ

अ-देवनागरी और संस्कृत वर्णमाला का प्रथम अक्षर ।

अ ( पु० )--विष्णु का नाम । परमात्मा के सर्वोत्तम नाम 'ओम्' का पहिला अक्षर । शिव, ब्रह्मा, वायु वा वैश्वानर का नाम है । निषेधार्थ उपसर्ग ( जिस शब्द के आदि में आता है उस का विपर्ययार्थ हो जाता है और अथ 'अ' से परे शब्द का प्रथम अक्षर स्वर होता है तो 'अ' के स्थान में 'अन्' आदेश हो जाता है ) जैसे अ+सत्य=असत्य, अ ( अन् )+अर्थ=अनर्थ ।

अक्रान्ति ( वि० )--विना कर्ष का, दण्डमुक्त  
अक्रान्ति ( वि० )--अ+क्रान्ति+निनि=अक्रान्ति--जिस पर क्रान्ति ( कर्ष )  
न हो [ इसका दूसरा रूप अन्क्रान्ति भी मिलता है ]

अंश ( पा० उ० )--विभाग करना ।

अंश ( पु० ) अंश+अर्थ=भाग, हिस्सा, टुकड़ा, राशि का तीनों हिस्सा, जिस की छकीर के ऊपर की संख्या । अंशसुता--पमुना नदी ।

अंशक ( पु० )--छोटी अंगिका-भाग, दिन, हिस्सेदार, रिश्तेदार ।

अंशल ( वि० ) अंश+लब्ध-पल्लवाली ।

अंशित् ( वि० ) अंश+णिनि=अंशी-हिस्सेदार, थरीक ।

अंशु ( पु० ) अंश+कु-किरण, प्रभा ।

अंशुक ( नपु० )--वस्त्र, दारौक कपड़ा, रेशमी वस्त्र, दुपट्टा ।

अंशुवर ( पु० )--अंशु +वृ+अब्-किरणों को धारण करने वाला अर्थात् सूर्य ।

अंशुपट्ट ( नपु० )--पट्ट प्रकार का रेशमी कपड़ा । [ वास्वामी, सूर्य ।

अंशुपति-भूत-स्थानी ( पु० )--किरणों

अंशुमाला (स्त्री०)-किरणों का समूह ।

अंशुमालिन् ( पु० )-अंशु+माला +  
णिनि=अंशुमाली-सूर्य ।

अंशुमत् ( वि० )-प्रभायुक्त ।

अंशुमान् ( पु० )-सूर्य । कभी २  
चन्द्रमा का भी बोधक होता है,  
सूर्यवंशीय राजा सगर का पौत्र  
और भग्नसंज्ञक का पुत्र, दिलीप  
का पिता ।

अंशुमती (स्त्री०)-मालपर्णी वृक्ष का  
नाम, यमुना नदी का नाम ।

अंशुमत्फला ( स्त्री० )-केले का वृक्ष

अंशुज ( वि० )-प्रभायुक्त । ( पु० )  
पाण्डव मुनि का नाम ।

अंशु ( पा० प० )-अंशपति, अंशपति-  
अंश का बोधक । [ कन्या

अंश ( पु० )-अंश+अन्-भाग, टुकड़ा,

अंशवृद्ध ( पु० )-साँट के कन्धों के  
बीच का ऊपर उठा हुआ भाग, हुड्ड

अंशल ( वि० )-मलवान्, प्रभायाला,  
वृद्ध कन्धों वाला ।

अंश ( पा० अ० )-लाना, पास आना,  
पकना ।

अंशति, ती ( स्त्री० )-दान, त्याग,  
रोग, चिन्ता [ दूसरा रूप अंहिती ]

अंशु ( नपु० ) अंशु+अधि-पाप,  
दुःख, बाधा । [ मूल

अंशु ( पु० )-अंशु+क्रिन्-पाद, वृक्ष का  
अंशुप ( पु० )-पादप, वृक्ष ।

अंशु ( पा० प० )-अक्षति-लाना,  
साँप के समान गति करना ।

अक्ष ( नपु० )-पाप, दुःख, दुःख का  
अभाव । [ ग्रह का नाम ।

अक्षच ( वि० )-गंजा । ( पु० )-क्षेपु

अक्षय ( वि० )-अक्षयनीय, अक्षय-  
जो कहा न जा सके । अक्षयित-  
जो न कहा गया हो ।

अक्षन्या (स्त्री०)-जो कन्या अर्थात्  
अविवाहिता न हो ।

अक्षम्पन ( वि० )-नहीं हिलता हुआ ।  
पु०-एक राजस का नाम ।

अक्षम्पित ( वि० )-न हिला हुआ,  
नम्रवृत्त, दृढ़ । पु०-एक जैन साधु ।

अकर ( वि० )-जिस के हाथ न हो,  
जो कर ( महसूल ) से रहित हो ।

काम न करने वाला ।  
अकरा ( स्त्री० )-विना हाथ की

स्त्री, आँखों का वृक्ष ।  
अकराण ( नपु० )-क्रिया का अभाव ।

( वि० ) असली, जो बनावटी न हो ।  
अकरणि ( स्त्री० )-असफलता, ना-

कामपायी, निराशा ।  
अकरणीय ( वि० )-जो न करने योग्य

हो, करने के अयोग्य ।  
अकर्ण ( वि० )-कर्ण [ कान ] रहित,

बहरा । ( पु० )-साँप ।  
अकर्ण्य ( वि० )-कानों के अयोग्य,

जो कानों से न हो ।  
अकर्तन ( वि० )-न काटता हुआ ।

अकर्तु ( अकर्ता पु० )-जो कर्ता न हो,  
कर्म का न करने वाला ।-या वि०-

विना कर्ता का ।  
अकर्तव्य, ता-कर्तव्य का अभाव ।

अकर्मण्य (वि०) - न करने योग्य, अनुचित  
अकर्म ( वि० ) - कार्यरहित, सुस्त,

अयोग्य, दुष्ट, गिरा हुआ ।

अकर्मक - क्रिया के दो भेदों में से एक ।

अकर्मण्य - काम न करने वाला, निकम्मा

अकर्मा ( पु० ) - वेकान, कार्य के लिये

अनुपयुक्त, सुस्त ।

अकर्मिणी ( स्त्री० ) - अपराधिनी, कर्म न

करने वाली, दुष्टकर्मा ।

अकाल ( वि० ) - कलारहित, परमात्मा

का एक विशेषण ।

अकल्क ( वि० ) - कल्क [ मिट्टी, धूल ] रहित,

शुद्ध, पापरहित । [ रहित

अकल्का ( स्त्री० ) - चांदनी, पाखण्ड से

अकल्कता ( स्त्री० ) - ईमानदारी ।

अकल्कन ( वि० ) - गर्वरहित, लज्जा-

युक्त, ईमानदार, सुजन ।

अकल्पित ( वि० ) - जो कल्पित

[ बनायटी ] न हो, असली, सच्चा,

मकृत । [ कार ।

अकस्मप ( वि० ) - पापरहित, निर्वि-

अकल्प्य ( वि० ) - रोगी, अस्वस्थ ।

अकल्याण ( वि० ) - भाग्यहीन,

हतभाग्य । नपु० - दुर्भाग्य ।

अकथ ( वि० ) - अदर्शनीय, जिस का

वर्णन न हो सके । [ स्त्री० अकथा ]

अकस्मात् ( अ० ) - अचानक, एक

बारगी, यकायक ।

अकारण ( वि० ) - कांड [ शाखा ] रहित,

आकस्मिक, अवसर विना ।

अकारणजात ( वि० ) - अकस्मात्

उत्पन्न हुआ ।

अकारणपात ( पु० ) - आकस्मिक घटना  
अकारण ( अ० ) - अकस्मात्, अचानक ।

अकाम ( वि० ) - काम [ इच्छा ] रहित,

निःस्पृह, कामनारहित [ स्त्री०

अकामा ]

अकामिन् ( पु० ) - अकामी [ स्त्री०

अकामिनी ] - काम रहित, निःस्पृह

अकामतः ( अ० ) - विना इच्छा, विना

बुरादे के, मेरनारहित होकर ।

अकामता ( स्त्री० ) - काम [ इच्छा ]

का अभाव, निःस्पृहता ।

अकाय ( वि० ) - काया [ शरीर ]

रहित, देहहीन, अशरीर । पु० -

राहु । [ ' अ ' अक्षर ।

अकार ( वि० ) - क्रियारहित । पु० -

अकारण ( वि० ) - कारणरहित,

हेतुहीन, विना वजह का, मूल-

रहित । नपु० - कारण या हेतु का

अभाव । क्रि० वि० - विना वजह के ।

अकार्य ( वि० ) - भाग्यनाशिय, अनु-

चित, न करने योग्य । नपु० - अनु-

चित वा बुरा काम । पु० - कार्य

का अभाव ।

अकार्यकारिन् ( पु० ) - अकार्यकारी

स्त्री० अकार्यकारिणी ] - बुरा काम

करने वाला वा वाली ।

अकाल ( वि० ) [ नास्ति उचितः

कालो यस्य ] - असंगत, जिस का

उचित काल उपस्थित न हुआ

हो, जो काला न हो अर्थात् सफेद

हो । पु० - बुरासनम, अनुपयुक्त

सनम, दुर्निष्ठ ।

अकालज ( वि० )-अनुचित काल में उत्पन्न हुआ । [ अर्थात्परमात्मा ]

अकालमूर्ति ( पु० )-अविनाशी पुरुष

अकालमृत्यु ( स्त्री० )-वैषमय की मृत्यु, चौड़ी अवस्था का भरना, अनायास मृत्यु । [ वीमोक्षे का ।

अकालिक ( वि० )-बिना समय का,

अकिञ्चन ( वि० )-जिस के पास कुछ भी न हो, गितान्त निर्धन, सुहृत्ता । पु०-धनहीन समुप्य ।

नपु०-जिसका कुछ भी भूखन हो ।

अकिञ्चनता ( स्त्री० )-प्रत्येक वस्तु का त्याग, इच्छाकृत धनहीनता ।

अकिञ्चित्कर ( वि० ) न+किञ्चित् +कृ+अच्-काम न करने वाला, निरर्थक, निरुद्योगी ।

अकिञ्चित्थ ( वि० )-निष्प्राप्य, पवित्र । पु०-पापरहित समुप्य ।

अकीर्ति ( स्त्री० )-कीर्ति [ यश ] का न होना, अपयश, बदनामी, अपमान

अकीर्तिकर ( वि० )-अपमानजनक, बदनाम करने वाला ।

अकुण्ठ ( वि० )-जो कुण्ठित न हो, तेज, काम करने योग्य, न करने वाला

अकुण्ठित ( वि० )-अकुण्ठ, तेज ।

अकुण्ठिल ( वि० )-जो कुण्ठित या रुद्ध न हो, सीधा, निष्कपट, साफ दिख का ।-ता-भादगी ।

अकुलः ( शब्० )-कहीं से भी नहीं ।

अकुलोभय ( वि० )-न डरने वाला ।

अकुप्य ( नपु० )-गोना या चांदी ।

अकुल ( वि० )-कुलरहित, नीच, परिवारहीन । पु०-शिवका नाम ।

अकुला ( स्त्री० )-शिव की स्त्री पार्वती ।

अकुलीन ( वि० )-नीच कुल का ।

अकुशल ( वि० )-जो चतुर न हो, मूर्ख, इतभाग्य । नपु०-मुराई ।

अकूपार ( वि० )-असीम, बार बार रहित । पु०-समुद्र, सूर्य, कच्छप ।

अकृच्छ्र ( वि० )-क्षेत्रशून्य । नपु०-क्षेत्र का अभाव ।

अकृत ( वि० )-न किया हुआ, अन्यथा किया हुआ । नपु०-असम्पादित कार्य, कार्य का असम्पादन ।

अकृतात्मा ( वि० )-मूर्ख, धैर्यहीन ।

अकृतोद्वाह ( वि० )-विभ विवाहा ।

अकृतज्ञ ( वि० )-किये हुए उपकार को न भूलने वाला ।

अकृतिन् ( पु० अकृती स्त्री० अकृतिनी )-निरुत्तम, काम न करने योग्य; अकुशल । [ नपु०-पाप ।

अकृत्य ( वि० )-न करने योग्य,

अकृत्रिम ( वि० )-अवली, बिना बनावटी, स्वाभाविक ।

अकृपा ( स्त्री० )-रूपा ( दया ) का अभाव; नाराजी, क्रोध ।

अक्रेतु ( वि० )-अज्ञान, अकाररहित, ध्वजाहीन ।

अक्रोधा ( वि० )-बिना घाल का, गुस्सा ।

अक्रौतय ( पु० )-कपट का अभाव, निष्कपटता ।

अक्रवा ( स्त्री० ) अक्र+कृ-गता ।



अक्षर ( वि० )-बिना क्रम, येचिछ-  
सिद्धा, गृह्यह । पु०-क्रम का  
अभाव, गृह्यह, येतरलोवी, गति  
का अभाव ।

अक्षरान्त ( वि० )-जिसका उत्तरधन  
न हुआ हो, अक्षर ।

अक्षर ( वि० )-क्रियाहीन, सुस्त,  
चेष्टारहित, परमात्मा का विशेष-  
धन, निकम्मा ।

अक्षर ( स्त्री० )-कतंउपहीनता, सुस्ती

अक्षर ( वि० )-जो क्रूर ( निर्दय )  
न हो, कोमल । पु०-कृष्ण के  
एक पक्ष का नाम ।

अक्षर ( वि० )-क्रोध से मुक्त । पु०-  
क्रोध का अभाव ।

अक्षर ( वि० )-बिना श्रेष्ठ का,  
आशान, सीधा । -

अक्ष ( धा० प० अक्षति, अक्षणीति )-  
पहुँचना, यड़ना ।

अक्ष ( पु० )-पाशा खेलने का, पुरा  
गाड़ी का, राधण का एक पुत्र,  
- बहेड़ा नाम ओषधि ।

अक्षत ( वि० ) अ+क्षन्+क्त-बिना  
टूटा, जिस में घाव न हो । नपु०  
चावल, जौ ।

अक्षतयोगि ( स्त्री० )-जिस का पति  
के साथ समागम न हुआ हो ।

अक्षतवीर्य ( पु० )-ब्रह्मचारी ।

अक्षदर्शक ( पु० )-न्यायाधीश, जुमारी

अक्षदेवि ( वि० )-जुगा खेलने वाला

अक्षपाद ( पु० )-पदार्थवादी, गीतम  
अपि ।

अक्षर ( वि० )-अ+क्षम्+अच्-अक्ष-  
मर्धे, लाचार । अक्षमा ( स्त्री० )-  
क्षमा का न होना, न सहारना ।

अक्षमाला ( स्त्री० )-कद्रोस की  
माला, अरुचन्ती का नाम ।

अक्षय ( वि० )-जिसका क्षय [ नाश ]  
न हो, सदा रहनेवाला ।

अक्षर ( वि० )-जो क्षर [ नाश ] न  
हो, अविनाशी, परमात्मा और  
आत्मा का विशेषण । पु०-अका-  
रादि वर्ण, पानी, आकाश, मोक्ष

अक्षरी ( स्त्री० )-बर्षाकाल, बरसात ।

अक्षरचया ( नपु० )-लिखने वाला,  
नकल करनेवाला ।

अक्षरशः ( क्रि० वि० )-अक्षर अक्षर,  
छपजबजपत्र, मिलकुल, ज्योंकात्यों  
अक्षश्रीवट ( पु० )-यक्ष का जुमारी ।

अक्षान्ति ( स्त्री० )-द्वेष, ईर्ष्या,  
असहन, क्रोध, हृषद । [ न हो ।

अक्षर ( वि० )-यनाथटी नमक जिसमें  
आक्षि ( नपु० ) अक्ष+विच-आक्ष, नेत्र ।

अक्षिगत ( वि० )-शत्रु, वैरी ।

अक्षिगोलक ( पु० )-आँख का टेढ़न ।

अक्षित ( वि० )-धिया सड़ा हुआ,  
हमेशा रहने वाला । नपु०-पानी ।

अक्षिति ( वि० )-नाशरहित ।

अक्षीव ( पु० )-जो मलबाला न हो,  
शान्त । [ समूचा ।

अक्षुण्ण ( वि० )-नहीं टूटा हुआ,

अक्षुद्र ( वि० )-जो छिटा न हो ।

अक्षोट ( पु० )-अखरोट, अक्षीव ।

अक्षोभ ( वि० )--क्षोभरहित, गम्भीर  
पु०--क्षोभ का अभाव ।

अक्षीहिणी ( स्त्री० )--अक्ष+अहि+  
णिनि--सेना का एक बड़ा भाग  
जिसमें १०९५० पैदल ६५१० घोड़े  
२९८३० रथ और २९८३० हाथी  
होते हैं ।

अक्षण ( वि० )--न टूटा हुआ, अख-  
रह । नपु०--काल, समय ।

अखण्ड ( वि० )--सम्पूर्ण, खंडरहित  
अखंडनीय ( वि० )--जिस का खण्डन  
न किया जा सके, अखण्ड्य ।

अखण्डित ( वि० )--जिसके खंड न  
हुए हों, अविच्छिन्न, अविभक्त,  
समूचा, पूरा, शालिन ।

अखात ( पु० नपु० )--स्वाभाविक  
जलाशय, खाड़ी, झील ।

अखाद्य ( वि० )--न खाई+पयत्--खाने के  
अयोग्य, अभक्ष्य, न खाने योग्य ।

अखिन्न ( वि० )--जो धका हुआ न हो ।

अखिल ( वि० )--सम्पूर्ण, सारा ।

अख्याति ( स्त्री० )--अपयथ, बदनामी  
अग्र ( धा० प० )--चक्कर लगाकर  
चलना । [ यज्ञ, पयंत, रथि ।

अग्र ( वि० )--न चलने वाला । पु०--  
अग्रणीय ( वि० ) अ+गन्+अनी-  
यर--प्रभु, छातादाद, गणना  
करने के अयोग्य अर्थात् तुच्छ ।

अगणित ( वि० )--नहीं गिना हुआ,  
पेशुमार, बहुत ।

अगति ( स्त्री० ) न+गम्+क्तिन्-  
तिम की गति न हो, उपायरहित

अगद ( वि० )--गद [ रोग ] रहित,  
तन्दुरुस्त, स्वस्थ । पु०--भीषण

अगदंकार ( पु० )--वैद्य, हकीम ।

अगम ( वि० )--अग का पयायवापी

अगम्य ( वि० )--न जानने के योग्य,  
जहां कोई जा न सके, दुर्गम ।

अगम्या ( स्त्री० )--ऐसी स्त्री जिसके  
साथ संग करना उचित नहीं ।

अगम्यागमन ( नपु० )--अनुचितसंसर्ग

अगस्ति ( पु० ) अग+अस्+ति--अ-  
गस्त्य मुनि का नाम । स्त्री-दक्षिण  
दिशा, अगस्त्य की यज्ञज्ञा ।

अगस्त्य ( पु० )--अगस्त्य ऋषि का  
नाम, शिव का नाम । [ गहरा ।

अगाध ( वि० ) न+गाध्+घञ्--बहुत  
अगार ( नपु० )--घर, निवासस्थान ।

अगिर ( पु० )--स्वर्ग, सूर्य, एक राक्षस ।

अगुण ( वि० )--गुणरहित, निकम्मा ।  
पु०--दीप, देव, सुराई ।

अगुरु ( वि० )--हलका, जो भारी न  
हो, गुरुरहित । न० सीसों का पेड़ ।

अगृह ( वि० )--प्रत्यक्ष, न छिपा हुआ ।

अगृह, अगेह ( वि० )--गृहविहीन  
यागप्रस्थी, फकीर ।

अगोचर ( वि० )--इन्द्रियों द्वारा  
अगम्य, अप्रत्यक्ष । [ नामक देवता ।

अग्नि ( पु० )--भाग, आंच, तेज, अग्नि  
अग्निक ( पु० )--अग्नि+क+क--घोर-  
यहूटी नाम का कीड़ा तीज ।

अग्निकर्म-कार्य ( पु० )--अग्निहोत्र,  
होमसाधन । [ नाम ।

अग्निकुमार ( पु० )--कान्तिकेय का

अग्निहेतु ( पु० )--धूम, शिव का एक नाम, रायण की सेना-का एक राक्षस ।

अग्निकोण ( पु० )--पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना [ दाग देना ।

अग्निक्रिया ( स्त्री )--अन्त्येष्टिकर्म,

अग्निस्त्रीडा ( स्त्री० )--आतिशयाज्ञी

अग्निगर्भ ( पु० )--सुयंकान्तमणि, आतषी शीशा ।

अग्निचित् ( पु० )--अग्निहोत्री ।

अग्निज ( पु० )--अग्नि से उत्पन्न हुआ द्रव्य, सोना ।

अग्निजिह्वा ( वि० )--देवता ।

अग्निज्वाला ( स्त्री० )--आग का धोखा, अग्निशिखा, आंच की लपट ।

अग्निप्रस्तर ( पु० )--चकमक पत्थर ।

अग्निवाहु ( पु० )--धुमां, धूम ।

अग्निमुख ( पु० )--देवता, ब्राह्मण ।

अग्निवित् ( पु० )--अग्निहोत्री ।

अग्निष्टोम ( पु० )--एक यज्ञ का नाम

अग्निस्तात् ( वि० )--आग में जलाया हुआ ।

अग्निष्वात्ता ( पु० )--अग्नि, विद्युत् आदि विद्युत्ओं का जाननेवाला ।

अग्निहोत्र ( पु० )--वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया ।

अग्न्यस्त्र ( पु० )--यह अस्त्र जिससे आग उत्पन्न हो ।

अग्न्याधान ( पु० )--अग्नि का विधि-पूर्वक स्थापन ।

अग्न्याहित ( पु० )--अग्निहोत्री ।

अग्न्याशय ( पु० )--मटराग्नि का स्थान, पक्षाशय ।

अग्नन् ( नपु० )--युद्ध, छड़ाई ।

अग्न ( वि० )--पहिंला, सब से आगे का, सरदार, सर्वोत्तम । नपु०--रूपर का भाग, नोक ।

अग्नगण्य ( वि० ) अग्र+गण्+यत्--आगे गिना जाने योग्य, प्रधान ।

अग्नगामिन् ( पु० ) अग्रगामी स्त्री० अग्रगामिनी)--अग्रिम, आगे जाने वाला, अग्रगामी ।

अग्नजन्मन् ( पु० )--बड़ा ताई, ब्राह्मण । वि०--पहिंले उत्पन्न हुआ ।

अग्नजाति ( पु० )--ब्राह्मण ।

अग्रणी ( वि० )--अग्र+णी+क्तिप्--स्वामी, योद्धा । पु०--मुखिया, प्रधानपुरुष ।

अग्रतः ( अ० )--आगे तक ।

अग्रतःसर ( वि० )--आगे जाने वाला ।

अग्रदानी ( पु० )--अचारज, मृतक का दान लेने वाला ।

अग्रभाग ( पु० )--अग्न्याहिस्था, सिर

अग्रमुख ( नपु० )--मुख का अगला भाग

अग्रयान ( पु० )--आगे जानेवाली सेना

अग्रवर्ती ( पु० )--आगे रहनेवाला ।

अग्रसोची ( पु० )--दूरदर्शी, पहिले सोचने वाला । [ चन्ध्या ।

अग्रसन्ध्या ( स्त्री० )--प्रातःकाल की

अग्रसर ( वि० )--अग्र+सृ+ट--आगे जाने

वाला । [रहित सन्ध्या की आदि ।

अग्रह ( पु० )--स्त्री का न होना, स्त्री

अग्रहायण (अस्त्री०)--संपंका पहिला मास, मागंशीर्य मास ।

अग्रहार (पु०)--राज्य की ओर से ब्राह्मण या ब्रह्मचारी को भूमि का दान ।

अग्राह्य (वि०)--न लेने योग्य, स्थाप्य ।  
अग्निम (वि०)--अगाध, पेशगी, घेठ, उत्तम । पु०--बड़ा भाई ।

अग्निप्र [ अग्नीय ] पु०-- बड़ा भाई (वि०)--घेठ, उत्तम । . .

अगु--गु (स्त्री०)--एक नदी, अविद्या-हिता, एकाकिनी ।

अग्रे (अ०)--सासन, आगे [काल वा स्थान की अपेक्षा से] . .

अग्रेदिधिपु ( पु० )--विधवा के साथ विवाह करने वाला । स्त्री० दिधि-यू--बड़ी कन्या से पूर्व विवाही हुई छोटी कन्या ।

अग्नेभव(पु०)--अधिका परमायवाची अघ (नपु०)--अघ्+अघ्--पाप, दयसन, दुःख । वि०--युग, पापी, क्रूर ।  
अघटित (वि०)--जो चटित [बाकः] न हुआ हो ।

अघवान् (पु०)--पापयुक्त, पापी ।  
अघमर्षण (वि०)--पापनाशक, पापों को दूर करने के लिये अपने योग्य मंत्र । [ पापयुक्त ।

अघाप (वि०)--हृषपूर्ण, क्रूर, हानिकर, अपारी ( वि० )--दयामनयुक्त ।

अघर्ष (वि०)--जो गर्भ न हो, ठंडा ।  
अघामुर (पु०)--एक राक्षस का नाम

अघोर (वि०)--प्रियदर्शन, मुहायना ।

पु०--शिव और दुर्गा का पुजारी  
अघोरपथ (वि०)--शिव का अनुयायी ।

अघोष वि०--शब्दरहित, नीरस, गाल वा गहीरों से रहित ।

अघोस् (अ०)--जो शब्द दूर से पुकारने के समय नाम से, पूर्व लगाया जाता है ।

अघ्न्य (वि०)--न+हन्+यत्-न नारने योग्य । पु०--ब्रह्मा, बैल । स्त्री०

अघ्न्या--गाय, गी । [ शराय ।

अघ्रेय ( वि० )--न सूंचने योग्य । नपु०

अंकु (धा० आ०)--टेढ़ी गति करना ।

(उ० प०) अंकित करना, चिन्हित करना ।

अंक ( पु० ) अंक+अच्-चिन्ह, संख्या, नाटक का एक भाग, कोई तिरछा अस्त्र, झूठी लड़ाई, स्थान, पाप, रेखा, शरीर, पर्वत ।

अंकक ( पु० )--चिन्ह करने वाला ।

अंकगाणित(पु०)--गिनती का हिसाब, अर्थमैटिक, अंकविद्या । .

अंकन ( नपु० ) अंक+ल्युट्--चिन्ह, निशान, प्रेम का निशान, चिन्ह करने का काम, मोहर ।

अंकपरिवर्तन ( पु० )--करघट लेना, करघट बदलना ।

अंकपालि-ली-- (स्त्री०)--गोद का स्थान, कौली भरना, धाय, चपनाता ।

अंजति-ती ( पु० )--मांघी, आग, ब्रह्मा । स्त्री० जामेवाही, जाती गुरे ।

अंकस्(नपु०)-निशान, देह ।

अंकित(वि०) चित्रित, चिन्हित, गिना हुआ, निशान किया हुआ ।

अकुट(पु०)-कुत्ती ।

अकुर-कूर(पु०नपु०)-अकुमा, नवोद्भिद्, बीज से जो नया उत्पन्न हो, कल्ला, बाल, कछ, छून ।

अकुरक(पु०)-घोंसला, पत्तियोंका घर  
अकुरित(वि०)-उगा हुआ, जिसमें अकुर निपल आये हों ।

अकुश-कूप(पु०)-एक प्रकार का छोटा शस्त्र जो हाथी के चलाने में काम आता है, अकम् ।

अकुशग्रह(पु०)-हाथीवान्, कीलवान्, हाथी का हाकने वाला महायत् ।

अकुशदुर्धर(पु०)-दुर्दान्त हाथी, मल्ल हाथी ।

अंकुशधारी(पु०)-हाथीवान् । [ हुआ  
अंकुशित(वि०)-अंकुश से चलाया  
अवोद-उ-उ(पु०)-आकोड़नामक वृक्ष  
आकोलिका(स्त्री०)-आलिङ्गन, गले लगाना । यह शब्द अंकपालिका का अपभ्रंश मतीय होता है ।

अङ्ग्य(पु०)अङ्ग+यत्-अंकित करने योग्य, मृदङ्ग तबला आदि का भी नाम है । [ रोके रखना ।

अङ्ग(धातु पु०)-रेंगना, पिपटना, अङ्ग(पा०प०)-चलना, आना ।

अङ्ग-अङ्ग+अप्-शरीर का अङ्गवय, भाग  
अङ्ग, एक देश, छग्न, छः, मन ।

अङ्गाः(पु०)-एक देश का नाम ( वस

देश के निवासी ), वर्तमान भाग-  
सपुरके समीपवर्ती देशका नाम है  
अङ्गग्रह(पु०)-देह की पीड़ा, शारी-  
रिक कष्ट या रोग ।

अङ्गज-जात(वि०)-अङ्ग में उत्पन्न  
हुआ, देह से पैदा, सुन्दर ।  
(पु०)पुत्र, पेश, मेन, कामदेव, रोग  
(नपु०) रक्त, कथिर ।

अङ्गजा(स्त्री०)-पुत्री, आत्मजा ।

अङ्गय-न्-न०)-आंगन, घरका सदन ।

अङ्गति(पु०)-सवारी, अग्नि, अग्नि-  
होत्री ।

अङ्गग्राह्य(पु०)-शरीर को ढकने वाला  
अगरुआ, पहिरने का वस्त्र ।

अङ्गद(पु०)-आँह के ऊपर पहिरने का  
एक आभूषण जिसे आङ्गद्वन्द्व कहते  
हैं । किटकन्धाधिपति घाठी के  
पुत्र का नाम, सहगण के एक पुत्र  
का नाम ।-दा स्त्री०-दक्षिण की  
हथिनी । [ युद्ध से पलायन ।

अङ्गदान(पु०)-युद्ध में पीठ दिखलाना,  
अङ्गदीपा(स्त्री०)-कारूपय नामक देश  
की राजधानी जिसका राजा  
सहगण का पुत्र अङ्गद था ।

अङ्गहार(पु०)-मुग, नाविका आदि  
शरीर की कर्मेन्द्रिय ।

अङ्गना(स्त्री०)अङ्गले यनों घाठी स्त्री,  
कोई स्त्री, उत्तर दिशा में पाए  
जाने वाली हथिनी ।

अङ्गन्यास(पु०)-विशेष मंत्रों के पाठ  
के साथ शरीरके अङ्गों को छूना ।

अङ्गनामिय(पु०)-अङ्गोष्क का दूध ।

(वि०)-जो स्त्रियों को प्रिय हो,  
स्त्रियों का प्रेमपात्र ।

अंगपाली(पु०)-साक्षिण ।

अंगपालिका(पु०)-दाई, उपमाता,  
अंग पालन करने वाली ।

अंगपाक(पु०)-अंग पकने का रोग ।

अंगप्रोक्षण(पु०)-अंग पोंछना, अंगो-  
ठे से शरीर साफ करना ।

अंगभंग(पु०)-शरीर के अवयव का  
टूट जाना, किसी अंग का नाश ।

अंगभंगी(पु०)-स्त्रियों का कटाक्ष,  
चुष्टा । [ का संघालन ।

अंगभाष्य(पु०)-गाते समय अंगों

अंगभूत(वि०)-अंगसे उत्पन्न, अन्तर्गत

अंगमर्द(पु०)-हृदयों का फूटना,  
घड़घड़न । [ दबाना ।

अंगमर्दन(पु०)-अंगोंकी मालिश, शरीर

अंगमर्दिन्(पु०)-मुट्ठीभरनेवाला लोकर

अंगरक्षणी(स्त्री०)-अंग+रक्ष+एयुट्+  
ङीप्-अंगरक्षा । वि० अंगरक्षक

अंगरक्षा(पु०)-शरीर की रक्षा, देह  
का रक्षण । [ का लेप ।

अंगराग(पु०)-केसर, चन्दन, अंग

अंगराज(पु०)-अंग देश का राजा कर्ण

अंगव(न०)-सूरा हुआ फल ।

अंगविकृति(स्त्री०)-वि+रु+क्तिन्-  
भिर्गी, अपस्मार, अंगविकार ।

अंगविक्षेप(पु०)-वि+क्षिप्+घञ्-अं-  
गों का हिलाना, नृत्य, फसरत ।

अंगविद्या(स्त्री०)-द्यामुद्रिक विद्या ।

अंगशोष(पु०)-शरीर सूखने का रोग ।

अंगम्(पु०)-एक प्रकार का पत्ती ।

अंगसंस्कार(पु०)-देह की मज्जाघट,  
शरीर का सम्हारना, उपटना  
मलना ।

अंगसरूप(पु०)-गहरी दोस्ती ।

अंगहार (पु०) अङ्ग + ह + घञ्-अङ्ग  
विक्षेप, अङ्ग का हरण ।

अंगहीन(वि०)-जिसका कोई अङ्ग  
भंग हो गया हो, लूटा, लंगड़ा ।

अंगांगीभाष्य(पु०)-अवयव का अवयव-  
वी के साथ सम्बन्ध, गौण और  
मुख्य भाव । [ स्वामी ।

अंगाधिप(पु०)-राजा कर्ण, अंगों का

अंगार( अस्त्री० )-अङ्ग+भारन्-दह-  
कता हुआ कोयला, बिना धुएँ

की अग्नि, अंगारा । पु०-मंगलघह  
(न०)लाकरंग । वि०-छल्ल, छाल

अंगारक(पु०)-मंगलघह, दहकता अं-  
गार, पिझारी । न० अंगारकनाग

ज्वरों को दूर करने वाला एक  
प्रकार का तेल ।

अंगारकमणि(पु०)-भूंगा ।

अंगारधानी-निका(स्त्री०)-अंगीठी,  
आग रखने का घर्तन ।

अंगारपरिपाचित(न०)-कवाच, पका  
हुआ मांस । [ अंगीठी ।

अंगारपात्री-शकटी ( स्त्री० )-दलकी

अंगारपुष्प(पु०)-हिंमोटयूल, चंगुदी  
नामक पेड़ । [ वृक्ष ।

अंगारमंजरी(स्त्री०)-फरोंशा नामक

अंगारि(स्त्री०)-अंगीठी, बिना उपट  
की आग । [ अंगीठी ।

अंगारिका ( स्त्री० )-अंगारपात्र,

अङ्गारिणी(स्त्री०)-छोटी सी अगीठी,  
दिशा जिस पर हूँ हूँ सूर्य की  
लाली छाई हो, लतामात्र ।

अङ्गारित-रक्षित(वि०)-जला हुआ,  
भुना हुआ । [ लतामात्र ।

अङ्गारिता(स्त्री०)-अङ्गारधानी, फली,  
अङ्गारों (स्त्री०)-कोयले का ढेर ।

अङ्गिन्(वि०) अङ्ग+इनि-प्रधान, थरी-  
री, अङ्गोंवाला ।

अङ्गिरस्(पु०)-एक ऋषि, ब्रह्मा के  
मुख से उत्पन्न हुआ पुत्र, यह  
यज्ञपति और देवताओं का पुरो-  
हित भी कहलाता है ।

अङ्गीकृ(धा० व०)-स्वीकार करना,  
अङ्गीकार करना ।

अङ्गीकारः-कतिः-करणम्-स्वीकारी,  
मण, साहिदा, नाम लेना ।

अङ्गीकृत(वि०)-स्वीकार किया हुआ,  
माना हुआ ।

अङ्गु(पु०)अङ्ग+उन्=हाथ ।

अङ्गुरि-री(स्त्री०)अङ्ग+उलि=अङ्गुली ।

अङ्गुरीय(नपु०)=अङ्गुठी, मुन्दरी ।

अङ्गुल(पु०)-उंगली, अङ्गुठा, [ ज्यो-  
तिष में ] प्रास या घातहवांभाग,  
वात्स्यायन वा चाणक्यमुनि का  
नाम । अस्त्री०-आठ औं का माप,  
लम्बाई की एक माप ।

अङ्गुलि-ली(स्त्री०)-उंगली, पाँचों  
उंगलियों के नाम ये हैं:-[ अङ्गुष्ठ,  
तर्जनी, मध्यमा, अनामिका,  
कनिष्ठा वा कनिष्ठिका ।

अङ्गुलिका(स्त्री०)-एक प्रकार की  
चींटी, उंगली ।

अङ्गुलीतोरण(नपु०)-चन्द्रनादि द्वारा  
माथे पर आये चन्द्रना के आ-  
कार का तिलक ।

अङ्गुलित्र-त्राण(नपु०)-अङ्गुलि की  
रक्षा करनेवाला, दस्ताना ।

अङ्गुलिपर्व(पु०)--उंगलियों के पीरवे  
वा गाँठ ।

अङ्गुलिमुद्रा(स्त्री०)-अङ्गुठी जिस पर  
नाम सुदा हो, सुदर लगाने की  
अङ्गुठी ।

अङ्गुलिवेष्टन(पु०)-दस्ताना ।

अङ्गुलिसंज्ञा(स्त्री०)-उंगली से बनाया  
निधान ।

अङ्गुलिसन्देश(पु०)-उंगली के थड्डे  
से संकेत करना, उंगलियों का  
बजाना ।

अङ्गुलिसंभूत(पु०)-नाखून, नख ।

अङ्गुष्ठ(पु०)-अङ्गुठा, हाथ वा पैर की  
सब से मोटी अङ्गुलि ।

अङ्गुष्ठमात्र(वि०)-अङ्गुठा भर ।

अङ्गुष्ठाना(स्त्री०)-उई से हाथ प्रधा-  
ने के लिये एक धनी हुई छोड़ेकी  
टीपी, अङ्गुस्ताना ।

अङ्गुष्ठ्य(पु०)--अङ्गुठे का नाखून ।

अङ्गुष्ठा(पु०)-नेखला, चामा ।

अङ्गु (धा० व०)-जाना, आरम्भ,  
करना, जल्दी करना, धिक्कारना ।

अङ्गुस्(पु०)--पाप, गुनाह ।

अङ्गारि(वि०)-दीप्तिमान्, चमकीला ।

अंघ्रि(पु०)--घेर, घूँस की जड़, रलोक  
का चतुर्थ पाद ।

अंघ्रिपान(वि०)--अंगूठा घूमनेवाला,  
छोटा मरुधा, घुल ।

अंघ्रिकन्ध(पु०)--सड़ी ।

अच(पा० च०)--जाना, गति करना,  
निवेदन करना, पूछना । [ तिफ ।

अचक्षु(वि०)--बिना पहिचै का, अग-

अचक्षुः(वि०)--नेत्रहीन, अन्धा ।

अचक्षुः(वि०)--कोधरहित, साधु ।

अचक्षुः(स्त्री०)--छोधी, या- साधु  
स्वभाव की भाव ।

अचर(वि०)--न चलने वाला, ठहरा  
हुआ, पृथ्वी, पर्यंत । [ विपला ।

अचरम(वि०)--जो आगिरी न हो,

अचला(वि०)--ठहरा हुआ, गतिहीन,  
स्पर्शहीन । पु०-पर्यंत, चढ़ान, गीत

नामी कील, सात का अंक, शिव  
का नाम । नपु०-ब्रह्म ।

अचला(स्त्री०)--पृथ्वी ।

अचलाकन्यका-शुभा-दुहिता-तनया-  
(स्त्री०)--पायंती का नाम । [ शुभा ।

अचलज-जात(वि०)--पर्यंत से उत्पन्न  
अचलहिप्(पु०)--पर्यंतों का शत्रु

अर्थात् इन्द्र । [ हिमाचल ।

अचलपति-राट्(पु०)पर्यंतों का राजा  
अचलासप्तमी(स्त्री०)--असोज की

शुभा पक्षी । [ मूलं, अदृष्ट ।

अचिन्ता(वि०)--अचिन्त्य, चिन्तारहित,  
अचिन्ति(स्त्री०)--सुद्धि का अभाव,

मूर्खता, अज्ञान ।

अचिन्त्य-अचिन्त्य(वि०)--जिस का  
चिन्तन न होसके, अचिन्त्य, दुर्गोच ।

अचिन्त्यात्मा(पु०)--ईश्वर, जिस का  
स्वरूप ठीक रूपांतर में न आ सके ।

अचिन्तित(वि०)--जिस का चिन्तन  
नहीं किया गया हो, अरुम्भायित ।

अचिकित्स्य ( वि० )--चिकित्सा के  
अयोग्य, असाध्य ।

अचित्(वि०)--अचेतन, जड़ ।

अचिर(वि०)--शीघ्र, थोड़े समय का,  
संक्षिप्त, क्षणिक, नवीन, हाल का ।

अचिरं-रेण-राय-रात(अ०)अविलम्ब  
से, हाल में ही, जल्दी, शीघ्रता से ।

अचिरांशु(स्त्री०)--दिगंली [ आभा,  
सुति, प्रभा, भास् इत्यादि लगाने

से भी यही अर्थ होता है ] ।

अचेतन(वि०)--चेतनारहित, ज्ञान-  
हीन, बेसमझ ।

अचेतन(वि०)--ज्ञानशून्य, जीवम-  
शून्य, सुदर्, चेतनाहीन ।

अचेष्ट(वि०)--चेष्टाहीन, गतिशून्य ।

अचेतन्य(वि०)--ज्ञानरहित, जड़ ।  
नपु०-चेतना का अभाव, अज्ञान,

प्रकृति, प्राकृतिक संसार ।

अच्छ(वि०)--साफ, स्वच्छ, निर्मल ।  
पु०-स्फटिक ।

अच्छ-च्छा(अ०)--सम्मुख, सामने से ।  
अच्छमल्ल(पु०)--रीछ, भाटू ।

अच्छत्र(पु०)--राजा रहित देश, जिस  
देश में अराजकता हो ।

अच्छावाक(पु०)--आह्वान करनेवाला,



सोनचक्र कराने वाले पुरोहितों  
में से एक ।

अच्छन्दः(वि०)--वेद न पढ़ने वाला  
छन्दःरहित, वेद पढ़ने का  
अनधिकारी ।

अच्छिद्र(वि०)--छिद्रहीन, घेघेव,  
समूचा, अक्षत, दोपरहित ।

अच्छिन्न(वि०)--अखंडित, जो कटा  
न हो, लगातार । [ हो सके ।

अच्छेष्ट(वि०)--जिस का विमान न  
अच्छोद(वि०)--निर्मल जल वाला  
छोटा ताछाव । [ मृगया ।

अच्छोदन(नपु०)--शिकार, आखेट,  
अच्युत(वि०)--दृढ़, स्थिर, नित्य जो  
गिरा न हो । पु०--विष्णु का नाम,  
परमात्मा का नाम, चौपल ।

अच्युताग्र(पु०)--बछराव या इन्द्र  
का नाम ।

अच्युताङ्ग(पु०)--कृष्ण और रुक्मि-  
णी का पुत्र कानदेव ।

अच्युतानन्द(पु०)--परमात्मा ।

अच्युतावास(पु०)--घट वृक्ष, तीर-  
चमुद्र, नवरा, वृन्दावन ।

अजु(धा०प०)--आना, हांकना, फेंकना ।

अज(वि०)--अनुत्पन्न, नित्य । पु०--  
ब्रह्मा, विष्णु, शिव, आत्मा,  
बकरा, दशरथ के पिता का नाम ।

अजकार्य-क(पु०)--साठ का दरस्त,  
मरिचपत्र । [ धनुष ।

अजकच-गय(अस्त्री०)--शिव जो का

अजका-जिया(स्त्री०)--छोटी बकरी ।

अजकागत(पु०)--आंस में होने वाली  
छाल फूली, नाचूना ।

अजदीर(न०)--बकरी का दूध ।

अजग(पु०)--विष्णु, अग्नि । [ तुलसी ।

अजगंधा(स्त्री०)--वन अजवायन, वम-

अजगधिका(स्त्री०)--बदरीनामशक ।

अजगंधिनी(स्त्री०)--काकड़ासींगी ।

अजगर(पु०)--बहुत बड़ा साँप, जो  
कहते हैं कि बकरी को निगल  
जाता है ।

अजगल-देखो अजागल ।

अजगल्लिका(स्त्री०)--बच्चों की होने  
वाला एक रोग ।

अजयन्य(वि०)--जो जीव न हो, अच्छा

अजजीविक(पु०)--गहरिया । [ नाम ।

अजटा(स्त्री०)--भूष्यालकी वृक्ष का

अजल(वि०)--चेतन, जो मूरे न हो ।

अजल्पा(स्त्री०)--पीलेरंग की जूही का  
वेड़ और फूल, बकरी का समूह ।

अजदण्डी(स्त्री०)--ब्रह्मादण्डी, एक  
प्रकार का पौधा ।

अजन(पु०)--ब्रह्मा, बुरा आदमी । न०--  
गति करना, हांकना । वि०--अन-  
शून्य । [ जाता न हो ।

अजननि(स्त्री०)--अन्मरहित, त्रिभुवी

अजन्त(पु०)--स्वरांत शब्द ।

अजन्मन्(वि०)--जो उत्पन्न न हुआ  
हो । पु०--मोक्ष ।

अजन्य(नपु०)--मूषाल आदि उपद्रव ।

अजप(पु०)--बुरा पढ़ने वाला । वि०  
बकरी चालने वाला ।

अजपा(स्त्री०)--इंस गानक मन्त्र का

नाम, जो आप ही श्यासके आने जाने से निकलता रहता है ।

अजपात इ-द(पु०)-११ रुद्रों में से एक का नाम ।

अजभक्ष(पु०)-बसूल का पेड़ ।

अजमीड(पु०)-अजमेर नामक नगर, यहाँ का राजा, युधिष्ठिर ।

अजमोदा(स्त्री०)-अजयापन ।

अजम्भ(पु०)-मैंदक । वि०-विना दांत का ।

अजय(पु०)-पराजय, हार, एक नद का नाम, अग्नि का भाग । वि० जो जीता न जानके, अजेय ।

अजरय(वि०)-अजेय, जो जीता नहीं जा सकता । [ जमालगोटा ।

अजयपाल(पु०)-एक राजा का नाम, अजया(स्त्री०)-भाग, विजया, दुर्गा के एक मित्र का नाम, माया ।

अजर(वि०)-जिसे बुढ़ापा न सताये, सदा जवान । पु०-देवता, तीर्थ-कांगी नामक वृक्ष । न०-परमात्मा ।

अजरा(स्त्री०)-चीगवार, शराशून्य । अजर्य(वि०)-नाशहीन, जो पचाया न जा सके । न०-मिश्रता ।

अजराल(वि०)-बलवान् ।

अजलोमा-मी(स्त्री०)-कौंच वृक्ष ।

अजयम्(वि०)-येग रहित, मन्द ।

अजवीवी(स्त्री०)-पितरों का नाम, यमगाला, छायापय ।

अजशुंगी(स्त्री०)-मेढाशुंगी ।

अजसूम्(अ०)-निरन्तर, सदा ।

अजहत्याया(स्त्री०)-अपने अर्थ को

न छोड़कर दूसरे अर्थ को भजाने वाली लक्षणा नाम शक्ति ।

अजहङ्गिण(पु०)-जिसका लिङ्ग नियत हो, विशेष्य का चाहे जो लिङ्ग हो पर अपना लिङ्ग न छोड़ने वाला विशेषण । जैसे "वेदःश्रुतिर्वा प्रमाणम्" ।

अंजा(स्त्री०)-प्रकृति या माया, बकरी ।

अजागर(पु०)-भीगराज नामक भूङ्ग-राज, जिसके सेवन से नींद नहीं आती ।

अजागल(पु०)-बकरी का गला ।

अजगलस्तन(पु०)-बकरी के गले में छटका हुआ मांस ।

अजाजि-जा(स्त्री०)-सफ़ेद व काला जीरा । [ हुआ हो ।

अजात(वि०)-अनुत्पन्न, जो पैदा न

अजातककुद्(पु०)-चोड़ी वगू का बछड़ा ।

अजातशत्रु(वि०)-जिसका कोई शत्रु न हुआ हो, शत्रुविहीन, युधिष्ठिर ।

अजातारि(वि०)-अजातशत्रु के समान अजातव्यवहार(पु०)-नायालिन ।

अजाति(वि०)-जातिरहित, जिसकी कोई जाति न हो, अनुत्पन्न । स्त्री०-उत्पत्ति का अभाव ।

अजानि(पु०)-स्त्रीरहित, रहया ।

अजानिक(वि०)-गहरिया ।

अजानेय(वि०)-शक्तिसम्पन्न, देखीक निहर, अकड़ो नसल का । पु० उत्तम घोड़ा ।

अजि(वि०)--तेज चलनेवाला । स्त्री०--  
गति, चलन, फेंकना ।

अजित(वि०)--जो जीता न गया हो, जो  
काबू में न रहे । पु०--विष्णु, शिव  
वा बुद्ध का नाम ।

अजिता(स्त्री०)--भारतों यदि एकादशी  
का नाम ।

अजितापीड(पु०)--अजेय मुकुटवाला,  
एक राजा का नाम ।

अजिताधिक्रम(पु०)--अजेय शक्तिवाला,  
द्वितीय चन्द्रगुप्त का नाम ।

अजितेन्द्रिय(वि०)--जिसने इन्द्रियों  
को न जीता हो, इन्द्रियलोलुप,  
विषयासक्त ।

अजिन(न०)--शेर, चीते या हाथी का  
चमड़ा, एक प्रकार के चमड़े का  
वस्त्र ।

अजिनपत्रा(स्त्री०)--चिमगादर ।

अजिनयोनि(पु०)--हरिण, मृग ।

अजिर(वि०)--तेज, शीघ्रगामी । पु०--  
एक प्रकार का बालदार बूढ़ा । न०--  
आंगन, अराड़ा, शरीर, वायु-  
मैंदक, इन्द्रियों का विषय ।

अजिरा(स्त्री०)--दुर्गा का नाम, एक  
नद का नाम ।

अजिष्ठा(वि०)--जो फुटिल न हो, सीधा,  
ईमानदार । पु०--मैंदक, एक प्रकार  
की मछली । [ जाने वाला ।

अजिष्ठाग(पु०)--बाण, तीर । वि०--सीधा

अजिष्ठा(पु०)--जीभरहित, मैंदक ।

अजीक्य(न०)--शिय का घनुष ।

अजीगर्त(पु०)--साँप, भृगुवंशीय एक  
ब्राह्मण का नाम ।

अजीत(वि०)--विना मुर्काया हुआ ।

अजीति(स्त्री०)--अभ्युदय, ताश से  
भयरहितता ।

अजीर्णा(वि०)--न पचा हुआ, नवीन ।

अजीर्ण-र्णा(स्त्री०)--यदहर्जनी, शक्ति,  
बल, क्षीणता का अन्तः ।

अजीव(वि०)--जीवनरहित, मरा हुआ ।  
अचेतन । पु०--अन्तः, मृत्यु ।

अजीवन(वि०)--आजीविका रहित ।  
न०--मृत्यु, अन्तः ।

अजीयनि(स्त्री०)--मौत, मृत्यु, एक  
प्रकार का शपथघण ।

अजुष्टि(स्त्री०)--निरीशता या अस-  
न्तोष का भाव, भीषणानन्द का  
अन्तः ।

अजेय(वि०)--जो जीता न जा सके ।  
न०--एक प्रकार का औपधमुक्त  
घना हुआ ची ।

अजोप(वि०)--अवस्तुष्ट ।

अज्जका(स्त्री०)--वेष्टा, कंचिनी ।

अज्जल(न०)--ढाल ।

अज्ज(वि०)--अज्ञानी, अज्ञान, मूर्ख ।

अज्जका(स्त्री०)--मूर्ख स्त्री ।

अज्जता(स्त्री०)--मूर्खता, बेवफूकी ।

अज्जात(वि०)--न जाना हुआ, अमक

अज्जातचर्या(स्त्री०)--छिपकर रहना

अज्जातनामा(वि०)--जिसका नाम  
ज्ञात न हो ।

अज्ञानवास(पु०)--छिपकर रहना ।

अज्ञाति(वि०)--जो ज्ञाति वाला न हो ।

अज्ञान(वि०)--सूरा, अज्ञ । न०-सूखंता  
जड़ता, अधिज्ञा । [ नासककी ।

अज्ञानता(स्त्री०)--सूखंता, जड़ता,

अज्ञानी(पु०)--अज्ञ का पर्यायवाची ।

अज्ञेय(वि०)--न ज्ञानने योग्य, जो समझ  
में न आसके । [ चर ।

अज्ञमू(स्त्री०)--गाय । न०-रस्ता, युद्ध

अज्ञेय(वि०)--जो बड़ा न हो, छोटा,  
जिसके कोई बड़ा साहें न हो ।

अज्ञ(पु०)--सेत, मैदान ।

अज्ञ(धा० व०)--कुसना, जाना, पूजना,  
प्रतिष्ठा करना, गुणगुणाना ।

अज्ञित(वि०)--झुका हुआ, गत, मति-  
हित, सुन्दर, पूजित ।

अज्ञति(पु०)--धाम, अग्नि, जानेवाला ।

अज्ञल(अस्त्री०)--चाड़ी का छोर, आं-  
चल, किनारा, छट ।

अज्ञितभू(स्त्री०)--सुन्दरभी वाली स्त्री

अज्ञ(धा० व०)--अभिप्रेक करना, प्रकाश  
करना, जाना ।

अज्ञ(पु०)--कमल का कूल, कमल ।

अज्ञना(पु०)--एक प्रकार की छपकली,  
एक वृक्ष का नाम, परिषय दिशा  
का दिग्गज । न०-कज्जल, सुरमा,  
राम्रि, स्पाही, अग्नि । वि०--काला,  
सुरमई । [ एक गन्धद्रव्य ।

अज्ञनमेशी(स्त्री०)--इहविद्यामित्री ना-

अज्ञनमलाश(स्त्री०)--सुरमा लगाने  
की गलाह । [ का नाम ।

अज्ञना(स्त्री०)--दनुमान् की माता

अज्ञनावती(स्त्री०)--ईशान कोण की  
हथिनी, काळांजन दृक्ष ।

अज्ञनात्रि(पु०)--एक पर्यंत का नाम ।

अज्ञनानन्दन(पु०)--दनुमान् ।

अज्ञनाम्नस्(न०)--आर्यों का पानी,  
आंसू । [ कली, छोटी घुड़ी ।

अज्ञनिका(स्त्री०)--एक प्रकार की छप-  
कली, काळांजन वृक्ष का नाम ।

अज्ञनी(स्त्री०)--चन्दन लगाये हुए स्त्री,  
कुटकी, काळांजन वृक्ष का नाम ।

अज्ञलि(पु०)--दोनों हाथों से बना  
हुआ सम्पुट, पावभर वस्तु की  
तोड़ ।

अज्ञलिका(स्त्री०)--छोटी घुड़ी

अज्ञलिकारिका(स्त्री०)--छुईछुई का  
पीदा, हाथों का जोड़ना ।

अज्ञलित(वि०)--अंजलि में आया हुआ

अज्ञलिपुट(अस्त्री०)--दोनों हथेलियों के  
जोड़ने से बना हुआ खाली स्थान ।

अज्ञलिचक्र(वि०)--हाथ जोड़े हुए ।

अज्ञस्(वि०)--सीधर, जजु, जो देदा न हो

अज्ञसा(अ०)--शीघ्र, ठीक २, चाक्षात्

अज्ञि(पु०)--प्रेरक, तिलक का निशान  
प्रेषक । (स्त्री०)--सरहम, रङ्ग । [ हुए ।

अज्ञित(वि०)--अंजन लगाये हुए, मांजे

अज्ञिव(वि०)--धिकारा ।

अज्ञिष्ठ-पाणु(पु०)--सूर्य ।

अज्ञी(स्त्री०)--चक्री, धरकत, आशिप् ।

अज्ञीर(अस्त्री०)--अभीर नामक फल  
वा वृक्ष ।

अज्ञ(धा० व०)--इधर छपर घूमना ।

अज्ञ(वि०)--अभय करता हुआ ।

अज्ञन(न०)--अभय, घूमना ।

अटनि-नी(स्त्री०)-धनुषका अग्रभाग ।  
 अटरूप-रूप(पु०)-आंसे का पेड़ ।  
 अटल(वि०)-न टलने वाला, दृढ़ ।  
 अटवि-वी(स्त्री०)-जङ्गल, घन ।  
 अटविक(पु०)-वनवासी ।  
 अटवा(स्त्री०)-पर्यटन, भ्रमण ।  
 अटवाथा(स्त्री०)-पर्यटन, इधर उधर  
 घूमना, घूरा घूमना ।  
 अट्(धा०भा०)-बध करना, अतिक्र-  
 मण करना ।  
 अट(वि०)-ऊँचा, जोर का, सूखा  
 हुआ । अस्त्री०-अटारी, चीनार,  
 बाज़ार, बध, अतिक्रमण । न०-खू-  
 राक, उबले हुए चावल ।  
 अटक(पु०)-अटारी, महल ।  
 अटह(अ०)-बहुत जोर से । [ अख ।  
 अटन(न०)-उपेक्षा, चक्रफल नामक  
 आह्वान(पु०)-जोर से हंसना ।  
 अटहासक(पु०)-कुम्हपुटर का वृत्त ।  
 अटहासी(पु०)-जोर से हंसने वाला,  
 शिव । [ ऊपर का मकान ।  
 अटाल-लक(पु०)-अटारी, सब से  
 अटालिया(स्त्री०)-राजमहल, ऊँचा  
 महल, देगविशेष ।  
 अटालिकाकार ( पु० )-राजमहल,  
 मकान चित्रने वाला ।  
 अट्या(स्त्री०)-पर्यटन, भ्रमण ।  
 अट्(धा०भा०)-जाना ।  
 अट्(धा०भा०)-उद्यमकरना, बख्तरना ।  
 अट्(धा०भा०)-अभियोग, हमला  
 करना, अनुमान करना, समाधान  
 करना ।

अट्टन(न०)-ढाल । [ लेना, जीना ।  
 अट्टा(धा०भा०)-आवाज़ करना, श्वाभ  
 अण[न]क(वि०)-अधम, कुत्सित, बहुत  
 छोटा, नीच । पु०-एक प्रकार का  
 पक्षी । [ अनाज पैदा हो ।  
 अणव्य(न०)-बढ़ते जाँचने छोटा  
 मणि-शी(अकली०)-रथ के पहिये की  
 कील, मुँह का विरा, सीमा, हवि-  
 यार को नोक ।  
 अणिमा[न]ा(पु०)-पतलापन, छोटा-  
 पन, सूक्ष्मता, आठ विधियों में  
 से एक । [ छोटा ।  
 अणीयः[स्म] (वि०)-अति सूक्ष्म, अतुल्य  
 अणु(वि०)-छोटा । स्त्री०-[अण्वी]-  
 छोटा २ धान-चीना, फल्लनी,  
 श्यामा आदि ।  
 अणुक(वि०)-चतुर, निपुण, अल्प ।  
 अणुभा(स्त्री०)-विद्युत, बिजली ।  
 अणुमात्र(वि०)-बहुत थोड़ा ।  
 अणुरेणु(पु०)-पूलिकण, जरेह ।  
 अणुवाद(पु०)-वज्रभाषार्थ का मत,  
 वह मत जिस में जीव व आत्मा  
 अणु माना गया हो ।  
 अण्ड(न०)-अण्डा, पुत्रप के शरीर का  
 अवयव विशेष ।  
 अण्डज(पु०)-अण्डे में उत्पन्न पक्षी,  
 सर्प, मछली, कृकशास नामकपक्षी ।  
 अण्डजा(स्त्री०)-सृगनात्रि, कस्तूरी ।  
 अण्डालु(पु०)-मछली ।  
 अण्डरी(पु०)-सामर्थ्यवान् पुत्रप,  
 शक्ति, ताकत । [ गिरांतरचलना ।  
 अण्(धा०भा०)-दाँधना, पहुँचाना,

अतः(अ०)-इस कारण से, इस वजह से, इस लिये ।

अतएव(अ०)-इसी लिये, इस हेतु से ।

अतट(पु०)-तट [किनारे] रहित, जिस के ललप्रपात स्थान न हो, पर्वत आदि जैसा स्थान ।

अतप्य(वि०)-अन्यथा, झूठ, मिथ्या, अयथार्थ ।

अतद्गुण(पु०)-एक प्रकार का वचन जिस में दूसरे का गुण ग्रहण न किया जाय ।

अतनु(वि०)-शरीररहित, विना शरीर का । पु०-अनंग, कामदेव ।

अतन्द्र(वि०)-जिस की तन्द्रा न हो, चालाक ।

अतन्द्रित(वि०)-निद्रारहित, आलस्य हीन, चपल ।

अतप्त(वि०)-जो तप्य न हो, ठण्डा ।

अतप्ततनु(वि०)-रामानुज सम्प्रदाय के अनुसार जिस ने मुद्रा धारण न की हो । पु०-विना छाप का मनुष्य

अतमसू(वि०)-जिस में अन्धेरा न हो, चमकदार ।

अतमसा(वि०)-जो तरुण [ नया ] न हो अर्थात् पुराना, बूढ़ा ।

अतर्क(वि०)-तर्करहित ।

अतर्कित(वि०)-जो पहिले से अनुमान में न आया हो, घेरोबा समझा ।

अतरय(वि०)-जो तर्क के योग्य न हो, जिसके विषय में किसी तरह की विवेचना न हो सके, अभिज्ञान ।

अतल(वि०)-जिसके तल भाग न हो, न०-सातपातालों में प्रथम पाताल ।

अतलस्पर्श(वि०)-जिस का नीचे का भाग छूना न जा सके, अति गम्भीर, अगाध ।

अतलस्पृक्-शु(वि०)-अतल की छूने वाला, अत्यन्त गहरा ।

अतल(पु०)-अलसी का पेड़, वायु, आतना, शस्त्र, अलसी की छाल से बना कपड़ा । [ अलसी, सन ।

अतसि-सी ( स्त्री० )-वृक्ष विशेष,

अतापी(वि०)-तापरहित, शांत ।

अति(अ०)-अधिका, उरलङ्घन करना, अधिक ।

अतिक्रय(वि०)-न कहने योग्य, न वि-  
श्वास करने लायक, नष्टधन ।

अतिक्रया(स्त्री०)-व्यर्थतापण ।

अतिकन्दक(पु०)-लम्बी कन्द वाला इस्तिफन्द नामक द्रव्य ।

अतिकाप(वि०)-बहुत लम्बा चीड़ा, स्थूल, झीलझील का (पु०)-रावण के एक पुत्र का नाम ।

अतिकृच्छ्र(वि०)-बहुत कठिन। अस्त्री० कष्टसाध्य तप ।

अतिकृत ( वि० )-अतिमान्य किया हुआ, सीमाने अधिक किया हुआ ।

(न०)-सीमातिक्रम । [ यादृगताया

अतिकृति(स्त्री०)-अतिक्रम, सीमा से

अतिक्रम(धा०न०)-पार करना, अति-  
क्रमण करना, सीमासे यादृगताया

अतिक्रम(पु०)-क्रमोद्ग्रहण, अतिपात, अधिक्रम, सीमा से यादृगताया

अतिक्रमण(न०)--अधिकता, उपादती  
चल्लंघन, पार करना ।

अतिक्रान्त(वि०)--सी गाने बाहर गया,  
घोना हुआ, अतीत । [ करनेवाला ।

अतिक्रामक(वि०)--क्रम का चल्लंघन  
अतिगुह्य(वि०)--बहुत क्रोधमें भरा हुआ

अतिक्रूर(वि०)--बहुत निर्दय ।

अतिक्रिस(वि०)--दूर फैला हुआ ।

अतिगम्(धा०प०)--गुजरना, बीतना,  
विदारना, मरना । [ गया ।

अतिग(वि०)--छांघ गया, बाहर हो

अतिगंड(पु०)--ज्योतिष शास्त्र में एक  
योग का नाम, बड़े गालों वाला

अतिगंध(वि०)--अत्यन्त गन्धवाला ।

(पु०)--चम्पा का पेड़, अतिगन्धक ।

अतिगंधालु(पु०)--पुत्रदात्री नाम लता

अतिगवा(वि०)--अति मूर्ख ।

अतिगर्वित(वि०)--अत्यन्त घमरही ।

अतिगहन-गहर(वि०)--बहुत गहरा,  
जो पार न किया जा सके ।

अतिगुण(वि०)--बहुत अच्छे गुणों  
वाला, गुणरहित ।

अतिगुरु(वि०)--बहुत भारी । [ ओपधि

अतिगुह्य(स्त्री०)--पृष्णिपर्णी नामक

अतिग्रहू(धा०प०)--सीमा से बाहर  
ले जाना ।

अतिग्रह्य(वि०)--समझने में कठिन ।

अतिघ--इषियार । [ वाला ।

अतिघ्न(वि०)--अत्यन्त नाश करने

अतिचर(धा०प०)--सबकृत ले जाना,

बाओ ले जाना, सीमातिक्रमकरना,

भूषणे छोड़ देना ।

अतिचर(वि०)--अति परिवर्तनशील ।

अनिचर्या(न०)--अतिक्रमण ।

अतिचार(पु०)--अतिक्रमण, सबकृत ।

अतिचिरम्(अ०)--बहुत देर से ।

अतिच्छत्र(पु०)--छातिया नामक  
प्रसिद्ध वृणविशेष । [ सलूया ।

अतिच्छत्रा(स्त्री०)--अथाक्पुष्पी,

अतिछंदः(वि०)--संसारपणा से रिक्त,  
वेदाद्या का चल्लंघन करने वाला

अतिजन(वि०)--यह अनुप्य जो जिस  
देशमें रहता हो उसका निवासी नहीं

अतिजव(वि०)--अति धीप्रणाली,  
अतिवेगवान् ।

अतिजागर(वि०)--सर्वदा जागनेवाला  
पु०--नीला गुंठा ।

अतिजात(वि०)--अपने वंश से उच्च ।

अतिजीव(धा०प०)--कब रहना, अन्यों  
के पश्चात् जीते रहना ।

अतिजीवक(न०)--अन्यों की सहाय्य से  
पश्चात् जीते रहना । [ पों का ।

अतिडीन(न०)--विलक्षण उद्दाम पक्षि-

अतितीव्र-तीक्ष्ण(वि०)--बहुत तेज़ ।

अतितीव्रा(स्त्री०)--दूर्वा, गणहर्षा ।

अतिनृप्या(स्त्री०)--अत्यन्त लालच  
वा इच्छा । [ ले जाना ।

अतित(धा०प०)--पार करना, बाओ

अतिथि(पु०)--कुसु का पुत्र, रामचन्द्र  
का पौत्र, महमान-जिसकी तिथि

नियत न हो, आगन्तुक ।

अतिथिक्रिया(स्त्री०)--आतिथ्यसंस्कार

अतिथिपूजा, अतिथिसेवा । [ करे ।

अतिथिपति(पु०)--जो अतिथिपरस्कार

अतिदग्ध(वि०)--बुरी तरह कुलसा हुआ, अधिकता से भुना हुआ ।  
 (न०)--कटसाध्य जलन । [ दान ।  
 अतिदान(त०)--बड़ादान, अपरिमित  
 अतिदाह(पु०)--अत्यन्त दाह ।  
 अतिदिशू(धा०प०)--अतिसर्जन करना  
 अतिदीप्य(पु०)--रक्तचित्रक नाम वृक्ष  
 अतिदूर(वि०)--बहुत दूर ।  
 अतिदेव(पु०)- शिवका नाम, परमात्मा  
 अतिदेश(पु०)--अन्य धर्म को दूसरे  
 में लागू कर दिखा देना ।  
 अतिद्वय(वि०)--दो से अधिक, अनुपम,  
 छासानी ।  
 अतिधन्वन(पु०)--अच्छे धनुष वाला,  
 मरुभूमि को छांघने वाला ।  
 अतिधृति(स्त्री०)--उत्तम अस्त्रों के  
 पादवाला एक छन्द, जिसकी धृति  
 जाती रही हो ।  
 अतिनिद्रा(स्त्री०)--बहुत सोना ।  
 अतिनिर्हारिन्(वि०)--बहुतप्रियअच्छा  
 [ गुणध का विशेषण ]  
 अतिनु-नी(वि०)--गाय से उतरा हुआ  
 अतिपत्(धा० प०)--भूलना, छोड़ना,  
 भुगना, पर करना, भान करना ।  
 अतिपतन(ग०)--अतिक्रमण, भूल,  
 सीमा से बाहर जाना ।  
 अतिपति(स्त्री०)--न सिद्ध होना ।  
 अतिपत्र(पु०)--हस्तिकन्द वृक्ष ।  
 अतिपाथिन्(पु०)--अच्छा रास्ता, स-  
 म्मान [ सिद्धरूप अतिपंथाः ] ।  
 अतिपद्(धा०भा०)--सीमा से बाहर  
 जाना, भूलना, छोड़ना ।

अतिपद(वि०)--पदरहित, एक पैर  
 से अधिक पाप का ।  
 अतिपन्न(वि०)--अतिक्रान्त किया हुआ,  
 भूला हुआ, गुजरा हुआ ।  
 अतिपर(वि०)--जिसने अपने शत्रुओं  
 का नाश कर दिया हो । पु०--अ-  
 धिका समतायन् शत्रु ।  
 अतिपरिचय(पु०)--अति मित्रता ।  
 अतिपरोक्ष(वि०)--दृष्टि से बहुत दूर,  
 न दिखाई देने वाला वा दिखाई  
 देने वाला । [ पर्यय ।  
 अतिपात(पु०)--उपास्य, अतिक्रम,  
 अतिपातक(न०)--घोर पाप ।  
 अतिप्रगे(अ०)--बहुत ही सवेरे ।  
 अतिप्रवृद्ध(वि०)--अत्यन्त बूढ़ा ।  
 अतिप्रश्न(पु०)--दिक्क करने वा चिढ़ाने  
 के लिये किया हुआ प्रश्न ।  
 अतिप्रसंग (पु०)--किसी काम में बहुत  
 लग जाना ।  
 अतिप्रसाक्ति(स्त्री०)--अतिप्रसंगवत् ।  
 अतिप्रादा(स्त्री०)--विवाह योग्य कन्या  
 अतिबल(वि०)--प्रबल, अतिशय बल  
 वाला । पु०--अतिरथ । न०--बड़ा  
 बल ।  
 अतिबला(स्त्री०)--खिरैटी ।  
 अतिबालक(पु०)--बच्चा ।  
 अतिबाला(स्त्री०)--दी धवं की गाय ।  
 अतिभ [भा]र(पु०)--भारी बोझ ।  
 अतिभारग(पु०)--खर, अथवातर, सेनर,  
 तिरार ।  
 अतिभी(स्त्री०)--विद्युत्, घण्ट्याला ।



अतिभू(धा०प०)-डटना, अतिक्रमण करना, क्रावू पाना ।

अतिभव(पु०)-घराजय ।

अतिभूमि(स्त्री०)-अधिकता, मर्यादा का तोड़ना, बड़ी मर्यादा ।

अतिभोजन(न०)-खाने में अधिकता ।

[अतिमंगल्य(वि०)-बहुत शुभको उत्पन्न करने वाला । पु०-विल्ववृक्ष, बेल का पेड़ ।

अतिमति(स्त्री०)-अत्यन्त गर्व, घमण्डोपन । [अतिमान भी इसी अर्थ में आता है ]

अतिमर्त्य(वि०)-अमानुषी [ अतिमानुष भी इसी अर्थ में आता है ]

अतिमर्याद(वि०)-चीन्माओं का अतिक्रमण ।

अतिमर्श(पु०)-गहरा सम्बन्ध ।

अतिमांस(वि०)-बहुत मांस वाला, मोटा ।

अतिमात्र(वि०)-अतिशय, बहुत ।

अतिमान(वि०)-जिसका परिमाण न किया जा सके, बहुत बड़ा या बड़ी

अतिमाय(वि०)-भाया के अंजाल से छूटा हुआ ।

अतिमास्त(पु०)-तूफान । [से बाहर ।

अतिमिता(वि०)-अतिशयित, प्रमाण

अतिमित्र (न०)-गहरा दोस्त ।

अतिमुक्त(वि०)-संचारैयणा से बिल्कुल मुक्ति पाया हुआ, ऐसा सफेद

कि गो भीती को भी भात करे, बंजर । पु०-तिनिश वृक्ष का नाम

अनिमुक्ति-मोक्ष-निर्वाण, जन्म मरण से अन्तिम छुटकारा ।

अतिमृत्यु(पु०)-मोक्ष ।

अतिमोदा(स्त्री०)-नवमल्लिका लता, बड़ी सुगन्धि ।

अतियोग(पु०)-अतिशय, अधिक्य ।

अतिरंहस्(वि०)-बहुत तेज ।

अतिरक्त(वि०)-बहुत लाल, अत्यन्त आसक्त ।

अतिरक्ता(स्त्री०)-अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक का नाम ।

अतिरथ(पु०)-अनुपम घोड़ा ।

अतिरभस(पु०)-बहुत वेग ।

अतिरसा(स्त्री०)-बहुत रस वाली लता, मूवा, रास्ता, क्लीतनक लताओं का बोधक ।

अतिराजत्(पु०)-अद्वितीय राजा, राजा से भी बड़ा हुआ पुंलिंग ।

अतिरात्र(पु०)-यज्ञविशेष, रात्रि का मध्यकाल । [नाग वा सर्प का नाच

अतिराष्ट्र(पु०)-पुराण के अनुसार एक अतिरिक्त(वि०)-अधिक, अतिशयित,

अनुपम, भिन्न, बिल्कुल खासी ।

अतिरुचिर(वि०)-बहुत प्रियदर्शन ।

अतिरुत्त(वि०)-बहुत रूखा, प्रेमहीन, निर्दय, बहुत प्रेमयुक्त । पु०-एक प्रकार का अनाज ।

अतिरूप(वि०)-रूप रहित वायुइत्यादि, बहुत सुन्दर । न०-बड़ी सुन्दरता । पु०-परमात्मा ।

अति[ती]रेक(पु०)-अधिकता, अतिशय, अनुपमता, भिन्नता ।

अतिरोग(पु०)-स्यरोग; बड़ा रोग ।  
 अतिरोगश(वि०)-बहुत बालों वाला  
 पु०-जंगली बकरा, बड़ा बन्दर ।  
 अतिलोमश--पूर्ववत् ।  
 अतिलोमश(स्त्री०)-नीलबुन्हा ।  
 अतिलंघन(न०)-अतिक्रमण, अति-  
 शय उपवास । [ करनेवाला ।  
 अतिलंघिन्(वि०)-अशुद्धि [ गलती ]  
 अतिवक्त्र[का](वि०)-बहुत दातूनी,  
 दायाल ।  
 अतिवक्त्र(वि०)-बहुत देड़ा ।  
 अतिवयस्(वि०)-बयोवृद्ध, बूढ़ा ।  
 अतिवर्ती(वि०)-नियम को तोड़कर  
 चलने वाला ।  
 अतिवर्तुल(पु०)-बहुत मोल, कलाय  
 विशेष [ बफेद गटर ] ।  
 अतिवह्(धा० पु०)-अतिक्रमण करना,  
 गुजरना । [ मत, कठोरपचन ।  
 अतिवाद(पु०)-अत्युक्ति, उग्रमतमला-  
 अतिवादिन्[दी] (वि०)-दायाल, बहुत  
 दौलतवाला ।  
 अतियास(पु०)-आहु से पूर्व उपवास ।  
 अतियाह्(पु०)-अतिक्रमण, छेजाना ।  
 अतियाह्क(पु०) यगदूत, छेजानेवाला  
 अतियाहन(न०)-गुजारना, विताना,  
 अतिशय परिश्रम, मेघण ।  
 अतियाहिक(पु०)-अतियाह का  
 पदार्थवाची ।  
 अतियाहित(वि०)-घोटा गुमा, गुज-  
 रा गुमा । पु०-पातालदेश का  
 निवासी । न०-भूतन शरीर ।

अतिविक्रम ( वि० )-असंकर । पु०-  
 दुष्ट हाथी ।  
 अतिविप(वि०)-बहुत जहरीला, विप  
 को मारनेवाला ।  
 अतिविषा(स्त्री०)-अतीव एकभोपधि  
 अतिघृत्(धा० आ०)-पार करना,  
 सीमा से बाहर जाना, भूलना,  
 अपमान करना ।  
 अतिवचन(न०)-समा येऽय पात्र,  
 दण्ड से मुक्ति ।  
 अतिवर्धन(न०)-अत्यन्त बढ़ोतरी ।  
 अतिवृत्ति(स्त्री०)-अतिक्रमण, बढ़ावा  
 अतिवृद्ध(वि०)-बहुत बूढ़ा ।  
 अतिवृद्धा(स्त्री०)-बहुत बूढ़ी गाय ।  
 अतिवृष्टि(स्त्री०)-अत्यन्त घषां, छा-  
 ईतियों में से एक ।  
 अतिवेगित(वि०)-बहुत वेगवान् ।  
 अतिवेघं(पु०)-गहरा लगाव ।  
 अतिवेल( वि० )-बेहद, असीम,  
 किनारों से बढ़ जाना । [ नीके ।  
 अतिवेलम्(क्रि० वि०)-अधिकता से, ये  
 अतिव्ययन(न०)-अत्यन्त कष्ट ।  
 अतिव्यथा(स्त्री०)-बड़ा दुःख ।  
 अतिव्याप्ति(स्त्री०)-अतिशय व्या-  
 पन, व्यापन में अलक्ष्य में  
 लक्षण का जाना ।  
 अतिशक्तिता(स्त्री०)-विक्रम, महाबल  
 अतिशक्तिभाक्(पु०)-अतिशयार्थ ।  
 अतिशी(धा० आ०)-अतिक्रमण करना  
 शयकृत छेजाना । [ गगधिक ।  
 अतिशय(पु०)-बहुत, अधिक, उत्तरधं,

अतिशयित(वि०)--अतिक्रान्त अति-  
क्रमण किया हुआ ।

अतिशयिन्( वि० )--अच्छा, बढ़िया,  
उत्कृष्टता का ।

अतिशयोक्ति( स्त्री० )--किसी बात  
को बहुत बढ़ाकर कहना ।

अतिशयन(न०)--अधिकता, अतिक्रम

अतिशायन( न० )--प्रकर्ष, प्रशंसा,  
आधिपत्य । [ समान ।

अतिशायिन्( वि० )--अतिशयिन् के

अतिशील(न०)--बहुत ठंडा ।

अतिशीलन(न०)--अभ्यास, मनन या  
सम्पादन ।

अतिशूद्र(पु०)--अन्त्यज ।

अतिशेष(पु०)--बकाया, थोड़ा बाकी ।

अतिशोभन(वि०)--श्रेष्ठ, अतिसुन्दर

अतिश्व(वि०)--कुत्ते से अधिक शक्ति

रखनेवाला [ पशु ], कुत्ते से बुरा  
पु०--एक जाति का नाम ।

अतिश्व(स्त्री०)--नीकरी, सेवा ।

अतिश्वन्(पु०)--उत्तम कुत्ता ।

अतिष्ठ(स्त्री०)--नहरण, बड़प्पन ।

अतिशक्ति(स्त्री०)--गहरा लगाव, अधिक  
प्रेम । [ हानि पहुंचाना ।

अतिसंधा(धा०३०)--धोखा देना, ठगना

अतिसन्धान(न०)--ठगई, धोखेबाजी ।

अतिसर्ग(पु०)--इच्छापूर्ति, दान, आश्चा-  
दान, वरदास्तगी, सम्बन्धस्थापन ।

अतिमज्जन( न० )--दान, स्वीकार,   
क़ियाजी, धन, ठगई, परित्याग ।

अतिसर्पण(न०)--गर्ज में बच्चे का  
बहुत दिहना ।

अतिसर्व(वि०)--सर्वोत्कृष्ट, सर्वोत्तम ।

अतिसान्त्वयन(न०)--एक प्रकार का  
कष्टसाध्य तप । [ का काल ।

अतिसायम्(अ०)--सन्ध्या के निकट

अतिसांचत्सर( वि० )--एक वर्ष से  
अधिक काल का ।

अतिसृ(धा०५०)--फैलना ।

अतिस्त्र(वि०)--अतिक्रमण करने वाला  
नेता, सबसे आगे का । पु०--प्रयत्न ।

अति[ती]सार(पु०)--दस्तों का रोग ।

अतिसारिन्(वि०)--अतिसार रोग से  
पीड़ित ।

अतिमृज्ज(धा०५०)--देना, दान करना  
वसूयना, त्यागना, छोड़ देना ।

अतिसारभ( वि० )--बहुत दुर्गन्धि  
वाला । न०--बहुत दुर्गन्धि । पु०--

आम का वृक्ष ।

अतिस्नेह(पु०)--अतिशय प्रेम ।

अतिस्पर्श(वि०)--अनुदार, नीच प्रकृ-  
ति का ।

अतिस्फिर(पु०)--अतिस्फूर्तिशाली ।

अतिहसित(न०)--अतिशय हास्य ।

अतिहास(पु०)--अत्यन्त हँसना ।

अती(धा०५०)--अतिक्रम करना, पार  
करना, प्रवेश करना, गालिबजाना,

बीतना, मरना ।

अतीत(वि०)--बीता हुआ, अतिक्रान्त,  
गत, भूत । न०--भूतकाल ।

अतीन्द्रिय(वि०)--अप्रत्यक्ष, इन्द्रियों  
से अग्राह्य ।

अतीव(अ०)--बहुत, अतिशय ।

अतुन्द(वि०)--जोमारी न हो, पतला ।

अतुल(पु०)--तिल वृक्ष । वि०--अनुपम,  
अद्वितीय ।

अतुल्य(वि०)--तुलना रहित, बेमिसाल  
अनुपार(वि०)--तुपाररहित, जो ठंडा  
न हो ।

अनुपारकर(पु०)--सूर्य ।

अनुष्टि(स्त्री०)--असन्तोष ।

अनुष्टिकर(अस्त्री०)--असन्तोषजनक  
--री--स्त्री०--असन्तोषजन्य ।

अनुद्दिनकर-रश्मि-धामन्(पु०)--सूर्य ।

अनुत्तुजि(वि०)--अदाता, अनदात ।

अनूतं(न०)--आकाश, असीमस्थान ।

अनुयाद(पु०)--घास न खानेवाला,  
नया पैदा हुआ बछड़ा ।

अनुष्या(स्त्री०)--घास का छोटा टेर ।

अनुपित(स्त्री०)--असन्तोष, वृत्ति  
का अभाव ।

अतेज[स्] (न०)--अन्धकार, छाया,  
दुर्बलता । वि०--धुंधियाला, दुर्बल,  
तुच्छ, तेजहीन ।

अतृप्त(पु०)--पथिक, अथयव ।

अतृप्ति(पु०)--एक संश्रद्धा श्रयि ।

अत्ता(स्त्री०)--माता, यही बहिन,  
मास ।

अत्ति(स्त्री०)--यही बहिन ।

अतिता(स्त्री०)--यही बहिन ।

अतन(न०)--पुद्ग, छड़ाई । पु०--आंधी,  
सूर्य, पथिक ।

अतनु(पु०)--सूर्य, घास, पान्थ ।

अतर(पु०)--चोड़ा, अश्व ।

अतग्नि(वि०)--अग्नि से भी अधिक

अत्यद्भुत, वि०--येकाग्र, कायू से माहरा

अत्यध्वन्(पु०)--लम्बा सफर ।

अत्यधिक(वि०)--बहुत, ज्यादा ।

अत्यन्त(वि०)--बहुत अधिक, सम्पूर्ण,  
अन्तरहित, नित्य ।

अत्यन्तम्(अ०)--अधिकता से, अति-  
शयन, बिल्कुल । [ घयह ।

अत्यन्तक्रोपन(वि०)--अतिशय क्रोधी,  
अत्यन्तगत(वि०)--मरा हुआ ।

अत्यन्तगामिन् [ मी ] (पु०)--शीघ्र  
गमन करने वाला ।-मिनी स्त्री०--  
शीघ्र गमन करनेवाली ।

अत्यन्तनिवृत्ति(स्त्री०)--मुक्ति, मोक्ष ।

अत्यन्तसम्पर्क(पु०)--अत्यन्त सैद्युत ।

अत्यन्तसंयोग (पु०)--पूर्ण प्रकार से  
सम्बन्ध ।

अत्यन्तसुकुमार (वि०)--बहुत सुकु-  
मार, अत्यन्त कोमल । पु०--कङ्कनी  
नामक अनाज ।

अत्यन्ताभाव(पु०)--नितान्त अभाव ।

अत्यन्तिक(वि०)--समीप, बहुत शीघ्र-  
गामी । न०--अधिक समीपता ।

अत्यन्तीन(वि०)--शीघ्रगामी ।

अत्यम्ल(वि०)--बहुत खटा । पु० तिन-  
होक नामक वृक्ष ।

अत्यम्लपर्णी(स्त्री०)--लताविशेष ।

अत्यम्बा(स्त्री०)--जंगली घिजीरा,  
नींबू । [ दीप ।

अत्यय(पु०)--मृत्यु, अतिक्रम, दण्ड,

अत्यय(वि०)--बहुत, अत्यधिक । अ०-  
अधिकता से ।

अत्यल्प(वि०)--अतिमूल्य ।  
 अत्यष्टि(स्त्री०)--छन्दोभेद । [ का ।  
 अत्यन्त(वि०)--एक दिन से अधिककाल  
 अत्याचार(पु०)--विरस्कार, निरादर,  
 घृष्टा देह । [ त्यागना ।  
 अत्याग(पु०)--ग्रहण, स्वीकारी, नहीं  
 अत्यागी(वि०)--दुर्गुणों को न छोड़ने  
 वाला, दुर्व्यसनी ।  
 अत्याचार(वि०)--विरुद्धाचारी । पु०-  
 आधार का अतिक्रमण, अनु-  
 विताचरण ।  
 अत्याचारी-रिणी (वि०)--अत्याचार  
 करनेवाला या वाली, शम्पायी,  
 निष्ठुर । [ य, प्राप्ति ।  
 अत्याज्य(वि०)--त्याग करने के अयो-  
 अत्याधान(न०)--आधान का व्यति-  
 क्रम, क्षमर घटना । [ यज्ञानाम ।  
 अत्याय(पु०)--अतिक्रमण, जघादती,  
 अत्यायु(न०)--यज्ञ का पात्रविशेष ।  
 अत्यारुह(न०)--बहुत उच्चपद ।  
 अत्यारुहि(स्त्री०)--पूर्यवम् ।  
 अत्याल(पु०)--रक्तचित्रक नामक वृक्ष  
 अर्गांत छाल चीता ।  
 अत्याशा(स्त्री०)--अत्यन्त चाहना ।  
 अत्याहारी रिणी(वि०)--बहुत खाने  
 वाला या वाली । [ दुर्भाग्य ।  
 अत्याहित(न०)--यही मुमीयत, खनरा,  
 अत्युक्त(वि०)--जो बहुत कर कहा  
 गया हो ।  
 अत्युक्ति(स्त्री०)--बड़ा कर कहना,  
 भग्नताय उक्ति, अन्तका विरोध ।

अत्युग्र(वि०)--बड़ा मजबूत ।  
 अत्युपग्र(वि०)--विश्रवासी, भाग्यनूदा,  
 अनुभूत ।  
 अत्यूह(पु०)--गरुड़ [ नीलकण्ठ ]  
 नामक पक्षी, तर्क में दाहर ।  
 अत्यूहा(स्त्री०)--नीलिका नामक पौधा  
 अन्न(अ०)--इस स्थान में, यहाँ, इस  
 श्रिय में । [ स्थानिक ।  
 अन्नक-त्य(वि०)--यहाँ का, ऐहिक,  
 अन्नप(वि०)--निलम्ब, लज्जारहित ।  
 अन्नमयनी(स्त्री०)--नागनीला, पूज्या  
 अन्नमवान्(पु०)--मान्य, पूजनीय ।  
 अन्नस्त(वि०)--निदर, घेरीक ।  
 अन्नस्थ(वि०)--यहाँ रहनेवाला ।  
 अन्नस्तु(वि०)--भयारुहित, निदर ।  
 अन्नान्तर(ज०)--इस बीच में ।  
 अन्नास(वि०)--निदर, दुःखरहित ।  
 अन्नि(वि०)--सा जाने वाला । पु०--एक  
 मंत्रद्रष्टा क्षपि का नाम शिगडी  
 भाषां बदल मुनि की कन्या  
 अनुसूया थी, जिस के तीन पुत्र  
 थे, दत्तात्रेय, दुर्वास और पन्द्र ।  
 अन्निगुणा(वि०)--त्रिगुणातीत, सत्य,  
 रज, तम नामक तीनों गुणों से  
 पर्यक् ।

अत्सुक(पु०)-यज्ञपात्रविशेष ।  
 अय(अ०)-निरन्तर, मङ्गल, प्रश्न,  
 संध्य, आरम्भ, विकल्प, पक्षान्तर  
 अथवा(अ०)-पक्षान्तर, वा, या ।  
 अयकिम्(अ०)-स्वीकार, हां ।  
 अथर्व(पु०)-चौथावेद ।  
 अथर्वत्वा(पु०)-शिव ।  
 अथर्वीणि(पु०)-अथर्ववेद का जानने  
 वाला ब्राह्मण वा पुरोहित ।  
 अथर्वविद्-निधि(पु०)-अथर्ववेद का  
 जाननेवाला ।  
 अथर्वशिखा(स्त्री०)--एक सपत्नियद्  
 का नाम ।  
 अथर्वशिरः(न०)-पूवंधत् ।  
 अथर्वन् [वा] (पु०)-ब्राह्मण ।  
 अथर्वीगिरस्(पु०)-इसी नाम की  
 कला का एक अङ्गी । बहुवचन में  
 इस का अर्थ अथर्ववेदकेमंत्र होता है  
 अथर्वीगिरस्(वि०)-अथर्वीगिरस् का।  
 अथर्वीगिरस्ताः(वि०)-अथर्ववेद केमंत्र  
 अथर्वीगा(न०)-अथर्ववेद की रीतियां,  
 पु०-अथर्ववेद का जाननेवाला ।  
 अथो(न०)-अथ के समान ।  
 अद्(पा० प०)-भक्षण करना, खाना,  
 नष्ट करना ।  
 अद्[ता] (वि०)-भक्षण करनेवाला ।  
 अद्-द(वि०)-लाता हुआ, भक्षण  
 करता हुआ [मनासांत में प्रयुक्त  
 होता है जैसे मांसाद में] ।  
 अदपट्ट(वि०)-दन्तहीन । पु०-मांघ ।  
 अदरा(वि०)-भक्षण, मुँह ।

अदक्षिणा(वि०)-मायां, दक्षिणा  
 रहित, सीधा ।  
 अदक्षिणीय(वि०)-दक्षिणा के अयोग्य  
 अदक्षिण्य(वि०)-पूर्ववत् ।  
 अदग्ध(वि०)-न जला हुआ ।  
 अदण्ड(वि०)-दण्ड से मुक्त ।  
 अदण्डनीय(वि०)-दण्ड के अयोग्य,  
 जो दण्ड का भागी न हो ।  
 अदण्ड्य(वि०)--दण्ड के अयोग्य, दण्ड  
 से मुक्त । [ का ।  
 अदत्त(वि०)--दन्तहीन, बिना दाँतों  
 अदत्त(वि०)--न दिया हुआ, अन्यथा  
 दिया हुआ ।--ता (स्त्री०)-  
 अविवाहिता कन्या ।  
 अदन(न०)-भक्षण, भोजन ।  
 अदन्त(वि०)-दन्तरहित ।  
 अदन्त्य(वि०)-जो दाँतों का न हो,  
 दाँतों के अयोग्य ।  
 अदन्न(वि०)-बहुत अधिक ।  
 अदम्भ(वि०)-ईमानदार, सच्चा । पु०-  
 ईमानदारी, शिवका नाम । [अजय  
 अदम्य(वि०)-जिसका दमन न हो सके,  
 अदय(वि०)-दयाहीन, क्रूर, निर्दय ।  
 अदयं(क्रि०वि०)-खेरहमी से ।  
 अदर्श(पु०)-जिस दिन चन्द्रमा पहिले  
 पहिल निकले । [दिललाई देना ।  
 अदर्शन(न०)-दर्शन का न होना, न  
 अदर्शनीय(वि०)-नहीं देखनेके योग्य,  
 कुदृष्ट, घृणा ।  
 अदल(वि०)-पत्तों रहित, भागरहित  
 पु० द्विजल नामक वृक्ष ।  
 अदला(स्त्री०)-चीमदार का पीदा ।

अदम्(पूर्व०)-बह, जो वस्तु सामने न हो उसका बोधक । [न देने वाला अदाव[ता] (वि०)अ+दा+तृच्-कृपण, अदादि(वि०)-घातुओं का एक भेद । अदान(वि०)-न देने वाला, कंजूस, अनुदार ।

अदान्(वि०)-तप व्रतेशादि को न सहने वाला, इन्द्रियों का नियंत्रण करने वाला ।

अदान्य(वि०)-कंजूस, निर्धन ।

अदाय(वि०)-जो दायभागी न हो ।

अदायाद(वि०)-जो बारिष घनने का हल्कादार न हो; जिसका कोई बारिष न हो ।

अदायित(वि०)-जिसका कोई बारिष न हो, जो विरासत से सम्बन्ध न रखता हो । [ क्वारा ।

अदार(पु०)-स्त्रीरहित, रंडया या

अदास(पु०)-स्वतन्त्र मनुष्य ।

अदाह्य(वि०)-जो अग्नि को सहण न कर सके ।

अदिति (स्त्री०)-दक्ष प्रजापति की कन्या, जो कश्यपऋषि की पत्नी थी, देवताओं की माता, पृथिवी, धनहीनता । वि०-स्वतन्त्र, असीम, समुद्रा । [ का बोधक ।

अदिती(स्त्री० द्वि०)-द्वी और पृथिवी अदितिज(पु०)-देवता ।

अदितिनन्दन(पु०)-देवता ।

अदीन(वि०)-जो दीन न हो, शक्ति-शाली, अनौर । [ आयातान् ।

अदीनात्मा(पु०)-जो हताश न हो,

अदीनवृत्ति(वि०)-आशान्वित ।

अदीनसत्त्व(वि०)-आशा से भरा हुआ, हिम्मत वाला ।

अदीर्घ(वि०)-जो छम्पा न हो ।

अदीर्घमृत्र(वि०)-तीव्र, कर्मशील ।

अदीर्घस्तुत्रिन्(वि०)-तीव्र, कर्मयोगी ।

अदुःख(वि०)-दुःख ने रहित, शुभ ।

अदुःखनयनी(स्त्री०)-भाद्रपद शुक्ला नवमी, जिसमें स्त्रियां देवी की पूजा करती हैं ।

अदुर्ग(वि०)-जिसके पास पहुँचना कठिन न हो, दुर्गरहित ।

अदूर(वि०)-जो दूर न हो, समीप । न०-समीपता ।

अदूरं(अ०)-समीप में ।

अदूरनः(अ०)-समीप में ।

अदूरात्(अ०)-समीप से, करीब में ।

अदूरे(अ०)-पास ही ।

अदूरेण(अ०)-पास से ही ।

अदृपित(वि०)-दोषरहित, देदाग ।

अदृप्त(वि०)-गवहेहीन, शान्त, आचमरही न हो ।

अदृक् श्(वि०) दृष्टिरहित, अन्धा ।

अदृश्य(वि०)--अदृश्योप अदृष्ट्य ।

अदृष्ट न०)--भाग्य, प्रारब्ध । वि०--जो देखा न गया हो, जो दिखाई न दे ।

अदृष्टपूर्व(वि०)--जिस का पहिले से ज्ञान न हो, आकस्मिक घिरला, अनुपम ।

अदृष्टफल(वि०)--जिसका परिणाम

अभी तक छात न हुआ हो ।

न०--कत कर्मों का भावीफल ।

अद्भुतवान्(वि०)--भाग्यवान्, कपालिया  
अद्भुति(स्त्री०)--प्रतिकूल दृष्टि, कुत्सित  
दृष्टि, क्रोधयुक्त दृष्टि । वि०--अन्धा,  
दृष्टिहीन ।

अद्भुतिका(स्त्री०)--क्रोधयुक्त दृष्टियाली  
अदेय(वि०)--जो न दिया जाना  
चाहिये ।

अदेयदान(न०)--अनुचित या अशा-  
स्त्रीय दान ।

अदेय(वि०)--जो देयता का न हो,  
जो देवतुल्य न हो, देवहीन ।  
पु०--जो देवता नहीं है ।

अदेयमानृक(वि०)--नदी या नहर के  
पानी से सींचा हुआ ।

अदेशः(पु०)--पुढीर, अनुचित स्थान,  
गुरा देश ।

अदेभस्य(वि०)--अनुचित स्थान में  
रहने वाला, अप्रामाणिक, स्वदेश  
से बाहर ।

अदेन्य(वि०)--जिम में दीनता का  
अभाव हो । [ न हो ।

अदेवा(वि०)--जो देव [ प्राचर का ]

अदोग्नी(वि०)--दूध न देनेवाली गाय ।  
अदोदृ(पु०)--यद्य काल जिम में दूध  
न गुहा जाये । [ का अभाव ।

अदोष(वि०)--दोषरहित । पु०--दोष  
अद्भु(पु०)--पून, पुरोडाश । [ स्तव में ।

अद्भु(न०)--यज्ञोपम, विष्णुशब्द, या-  
बाहु(वि०)--अभीय, आश्रयपुष्प ।

न०--आश्चर्यमयी घटना । पु०-  
देवता, गन्धर्व, पीतघणं, लोकातीत  
वस्तु ।

अद्भुतसार(पु०)--खदिरसार, कट्या ।  
अद्भुतस्वन(पु०)--महादेव(वि०)--अद्भुत  
आवाज वाला ।

अद्भुति(पु०)--आग ।

अद्भुत(वि०)--भक्तक, भक्तनपरः ।

अद्भु(अ०)--आज, आज से लेकर ।

अद्भुतन(वि०)--आजवाला, आज का ।

अद्भुतवीन(वि०)--आज कल में होने  
वाला, आश्चर्यमय मरणादि ।

अद्भुतवीना(स्त्री०)--आश्चर्यमय मरणादि ।

अद्भुतवि(अ०)--आज तक ।

अद्भुत(वि०)--जो पतला न हो ।

अद्भु(पु०)--सूर्य, पर्वत, वृक्ष ।

अद्भुतकीर्ण(स्त्री०)--अपराजिता ना-  
मक खेल ।

अद्भुतकीला(स्त्री०)--भूमि ।

अद्भुतज(न०)--शिलाजीत । वि०--पर्वत  
पर उत्पन्न होने वाला ।

अद्भुतजा(स्त्री०)--सैहली वृक्ष, हुगा ।

अद्भुतन्या-तमया सुता(स्त्री०)--पार्वती ।

अद्भुतमित्त इ(पु०)--इन्द्र । वि०--पर्वत  
को भेदन करने वाला ।

अद्भुतभू(स्त्री०)--आशुकीर्ण नामक खेल  
वि०--पर्वत पर पैदा होने वाला ।

अद्भुतराज(पु०)--हिमालय पर्वत ।

अद्भुतशृंग-भानु(न०)--पर्वत का गिरर  
अद्भुतसार(पु०)--जोहा ।



अद्वीश(पु०)--हिमालय पर्वत, पर्वत का स्वामी, शिव ।

अद्रोह(वि०)--द्रोहरहित ।

अद्वेष्ट(वि०)--क्षमण से रहित ।

अद्वय(वि०)--जिसके मत में दो न हों, अकेला ।

अद्वयवादिन् (वि०)--अद्वैतवादी, सद्य ही चैतन्यस्वरूप है, ऐसा मानने वाला । पु०--बुद्धभेद ।

अद्वार(न०)--द्वारहीनता ।

अद्वितीय(वि०)--जिसके समान दूसरा न हो, एकाकी, अनुपम ।

अद्वेष्ट(वि०)--द्वेष्टरहित, जो बैर न रखे, शांत ।

अद्वैत(वि०)--द्वैतभाव से रहित, अकेला । पु०--विष्णु ।

अद्वैतवादिन्[दी] (वि०)--एक ब्रह्मही है और कुछ नहीं ऐसा कहने वाला

अधः[स] (अ०)--नीचे, अधोभाग ।

अधःक्षिप्त(वि०)--नीचे रखा गया, नीचे फेंका गया ।

अधःपुष्पी(स्त्री०)--अनन्तमूल नामक ओषधि, गोत्रिहा, गोभी ।

अधन(वि०)--धनरहित, जिसके पास धन न हो । [ अभाग ।

अधन्य (वि०)--सुखहीन, हतभाग्य, अधम(वि०)--नीच, निन्दित । पु० - कामुक । [ प्रतियोगी ।

अधर्मा(पु०)--कजंदार, वस्त्रण का अधर्माणि(पु०)--अधमण, कजंदार ।

अधमभृत(पु०)--अधमभृत्य, नीचेदास दरवान, काष्ठ देने वाला ।

अधमभृतक(पु०)--अधमभृत का पर्याय । यथाची । [ कन ।

अधमा(स्त्री०)--अहितकारिणी मालि-

अधर्मांग(न०)--पाद, चरण, पैर ।

अधमार्ध(न०)--शरीर के नीचे का आधा भाग ।

अधमार्ध्य (वि०) नीचे के भाग का ।

अधमाचार(वि०)--अत्यन्त गहिंत आचार वाला । पु०--गहिंतआचार ।

अधर(वि०)--नीचे का, उत्तरकाप्रति-द्वन्द्वी, निचला, अधम, धोखे में अथक्त । पु०--होठ, नीचे का होठ

न०--शरीर के नीचे का भाग । अस्त्री०--रसिगृह, स्नरागार ।

अधरकण्ठ(पु०)--गदंन का निचला भाग । [ भाग ।

अधरकाय(पु०)--शरीर का निचला अधरतः(अ०)--नीचे से ।

अधरपान(न०)--ब्रूना, ब्रूयनकरना ।

अधरमधु(न०)--अधररस, अधरामृत ।

अधरस्तात्(अ०)--नीचे से अधरतः ।

अधरस्मात्(अ०)--अधस्तात्, अधरात् नीचे से ।

अधरा(स्त्री०)--नीच, हीन, अपरुष्ट ।

अधरात्(अ०)--अधरेण, अधरस्तात् ।

अधरामृत(न०)--अधरमुषा, होठों का अमृत ।

अधरीकृ(पा०उ०)--अतिक्रमण करना, बढ जाना, नीचा दिखलाना ।

अधरीण(वि०)--तिरस्कृत, धिक्कारा हुआ ।

अधरेण(अ०)--नीचे से, अधरात् ।

अधरेद्यः(अ०)-उष दिन, धीता

हुआ दिन, धीती हुई कल से  
पूर्ववर्ती दिन ।

अधरीष्ट(पु०)-नीचेका होठ । [की ओर]

अधरांच(वि०)-दक्षिण की ओर, नीचे

अधरांची(स्त्री०)-दक्षिण दिशा ।

अधरांकु(अ०)-नीचे ।

अधराचीन(वि०)-नीचेकी ओर जाने  
वाला, पातालदेश का । [द्वारा]

अधराक्ष्य-अधराचीन का पर्याय-

अधर्म(पु०)-धर्माभाय, अन्यथायमं

पाप, अपराध, धर्मविरोध, एक  
प्रजापति का नाम । न०-निर्गुण,

ब्रह्म का विशेषण ।

अधर्मिन्(वि०)-अधर्मात्मा, पापी ।

अधर्म्य(वि०)-पापी, क्रूर, अधार्मिक ।

अधवा(स्त्री०)-पथ [ पति ] हीन, राह

अधस्[अधः](अ०)-नीचे, नीतर ।

अधोपासन(न०)-मैथुनकार्य ।

अधःकर(पु०)-करभ, हाथ का नीचे  
का भाग । [ गिरावट ।

अधःकरण(न०)-घड़ जाना, पराजय,

अधःक्रिया(स्त्री०)-मैथुन, अप-  
मान । [ खोखला करना ।

अधःखनन(न०)-नीचे से खोद कर

अधःगति(स्त्री०)-नीचे ही ओर जाना,

उतार, गिरावट, अधःपात ।

अधःगमन(न०)-अधोगति का पर्याय  
वाची । [ की ओर जानेवाला ।

अधःगन्ता(पु०)-खूहा, खोद कर नीचे  
अधश्चर(पु०)-नीचे, नीचे की ओर  
जाने वाला ।

अधश्चर(पु०)-नीचेचर, मिन्दाखचर

अधोजानु(न०)-घुटनेका नीचे का भाग

अधोपद्मास(पु०)-मैथुन ।

अधस्तन(वि०)-नीचे का, अधःस्थित,  
पहिले का ।

अधस्तल(न०)-नीचे की सतह ।

अधस्तात्(अ०)-नीचे की ओर, नीचेसे

अधःपतन(न०)-गिरावट, नाश ।

अधःपद(न०)-पैरके नीचे की जगह ।

अधःपात(पु०)-अधःपतन, नाश, क्षय ।

अधोभक्त(न०)-पानी या दवा की  
खुराक को भोजन के पश्चात्

खाई जावे ।

अधोभाग(पु०)-शरीर के नीचे का  
भाग, निम्नस्थ हिस्सा ।

अधोभू(स्त्री०)-नीचेकी भूमि, तराई

अधोमुख(वि०)-नीचे की मुख किये हुए

अधोवदन(वि०)-नीचेकी मुँह किये हुए

अधःस्थित(वि०)-नीचे स्थित । [ दल

अधामार्ग(पु०)-अधामार्ग, धामार्ग

अधार्णक(वि०)-कोलाहलदायक न हो

अधार्मिक(वि०)-अधर्मी, अधर्मात्मा  
वादी ।

अधि(अ०)-ऐश्वर्य, अधिकार, उपाधि  
उपरिभाग, अधिक । पु०-मन

की पीड़ा, आधि ।

अधिक(वि०)-अनेक, उपादह, अति-  
रिक्त । न०-काठपाछंकारमेद ।

अधिक्रान्ति(स्त्री०)--चन्द्रमास में  
वर्दी हुई तिथि ।

अधिकरण(न०)-आश्रय, अधिकरण  
नामक कारक, अदालत ।

अधिकरणी(पु०)--निरीक्षक [ जज ।  
अधिकरणभोजक(पु०)--न्यायाधीश,  
अधिकरणमण्डप(पु०)--जजकाकमरा  
या मदालत का मकान ।

अधिकरणाधिवाल(पु०)--एककोअनेक  
बनाना या अनेक को एक बनाना  
अधिकराणिक(पु०)--जज, मैजिस्ट्रेट,  
सरकारी अफसर ।

अधिकरण(न०)--अधिकार, शक्ति ।  
अधिकवाक्योक्ति(स्त्री०)--बढ़ावा,  
बढ़ाकर कहना । [ वाला ।

अधिकर्तृ(वि०)--समृद्ध, बहुत सम्पत्ति  
अधिकर्मन्(न०)--उच्चकार्य, वा उत्तम  
काम, निरीक्षण । पु० उपरिस्टेण्डे-  
रट, निरीक्षक ।

अधिकर्मरुद(पु०)--मजूरों का ओवर-  
सीयर, मेट । [ मीयर ।

अधिकर्मकृत(पु०)--मेट या ओवर-  
अधिकार्मिक(पु०)--हटाध्यक्ष, वाज़ार  
का दारोगा ।

अधिकांग(वि०)--जिम के कोई अंग  
अधिक हो । न०-मेटी, जो कोटके  
ऊपर पहिनी जाती है ।

अधिकाधिक(वि०)--बहुत २. एक से  
एक बढ़ कर । [ कामना ।

अधिकाम(वि०)--कामी । पु०--दूढ़  
अधिकार(पु०)--स्त्रामित्व, निरीक्षण,  
कर्तव्य, पद, धार्म, हकूमत, हुक्म ।

अधिकार्यत(वि०)--अधिकारी का  
पर्यायवाची ।

अधिकारविधि(पु०)--कर्म से उपजा  
फल भोगनेवाले को जताने हारी

विधि । [ अधिकार पर अधिष्ठित ।  
अधिकारस्थ( वि० )--अधिकारयुक्त,  
अधिकाराध्य(वि०)--अधिकारस्थ का  
पर्यायवाची ।

अधिकारिन् [ री ] (पु०)--अधिकार-  
युक्त, प्रभु, स्वामी, अधिपति, स्वत्व-  
वान्, वेदान्तशास्त्र का ज्ञानने  
वाला ।

अधिकारिणी( स्त्री० )--स्वामिनी,  
अधिकारयुक्ता ।

अधिकारिता(स्त्री०)--अधिकारी होने  
का गुण, अधिकार ।

अधिकारित्व(न०)--अधिकारिता का  
पर्यायवाची ।

अधिकार्य(वि०)--बढ़ाया हुआ ।  
अधिकू (धा० उ०)--अधिकार देना,  
निरीक्षण करना, रुकना ।

अधिकृत( पु० )--अध्यक्ष, आयकमय-  
निरीक्षक । वि०-अधिकार में किया  
हुआ, अधिकारयुक्त । [ स्वत्व ।

अधिकृति(स्त्री०)--अधिकार, हक्क,  
अधिकृत्य (अ०)--बादत, लगाव से,  
विषय में । [ करना ।

अधिक्रम् (धा० द० )--बढ़ना, हमला  
अधिक्रम(पु०)--आक्रमण, हमला ।

अधिक्रमण(न०)--आक्रमण, हमला ।

अधिक्षिप्(धा० उ० )--गाली देना, अप-  
मान करना, धड़काना ।

अधिक्षेप(पु०)--गाली, अपमान, पर-  
खास्तगी ।

अधिगत(वि०)--हमिल किया हुआ  
सीखा हुआ, जाना हुआ, प्राप्त ।

अधिगम् (धा०प०)--हासिल करना,  
प्राप्त करना, प्राप्त पहुँचना ।

अधिगम(पु०)--प्राप्ति, अध्ययन, ज्ञान,  
लाभ, सत्प्राप्त । [ वाची ।

अधिगमन(न०)--अधिगमका पध्याय-  
अधिगम्य(वि०)--प्राप्ति के योग्य ।

अधिगमनीय(वि०)--प्राप्तयोग्य ।

अधिगमन्तव्य(वि०)--प्राप्तयोग्य ।

अधिगमन्तु[न्ता] (वि०)--प्राप्ति करने  
वाला ।

अधिगव(वि०)--गौसे प्राप्त किया हुआ ।

अधिगुण्य(वि०)--उत्तम गुणों वाला,  
योग्य, गुणनिधान । पु०--उत्तमगुण ।

अधिचर(धा०प०)--किसी वस्तु पर  
चलना । [ चलने का कृत्य ।

अधिचरण(न०)--किसी वस्तु के ऊपर

अधिजनन(न०)--जन्म, पैदापश ।

अधिजिह्व(पु०)--साँप । [ धनुष ]

अधिज्य(वि०)--बड़ा हुआ, तना हुआ

अधिपका(स्त्री०)--टेविललैण्ड, ऊँची  
झूमि ।

अधिदण्डनेता(पु०)--यम का नाम ।

अधिदन्त(पु०)--दाँत के ऊपर दूसरा  
रना हुआ दाँत ।

अधिद्वार्य(वि०)--लकड़ी का ।

अधिदेव-ता--अधिष्ठातृदेव या देवता  
परमात्मा । [ या तद्वा ।

अधिदेवन(न०)--भुजा खेनने की सेज

अधिदैव त (न०)--अधिष्ठातृदेवता,  
देववर । [ ईश्वर ।

अधिनाय(पु०)--सद्य से बड़ा स्वामी,

अधिनाय(पु०)--भुगम्धि, सुगम्धि ।

अधिनिर्णिङ्(वि०)--ढका हुआ, परदा  
पड़ा हुआ ।

अधिनी(धा०प०)--बढ़ाना, लेनाना,  
अधिनायकता करना ।

अधिप(पु०)--स्वामी, अधिपति, राजा

अधिपति(पु०)--प्रभु, स्वामी । [ चिका ।

अधिपत्नी(स्त्री०)--स्वामिनी, स्त्री शा-

अधिपुरुष[पूरुष] ( पु० )--परमात्मा,  
ब्रह्मा ।

अधिपेय्य(न०)--पीसना ।

अधिप्रज(वि०)--बहुत मज्जा वाला ।

अधिभू(पु०)--स्वामी, प्रभु ।

अधिभूत(न०)--उपापक, परमात्मा ।

अधिभोजन(न०)--अधिक भोजन ।

अधिमन्य(पु०)--अधिकमन्यन, बहुत  
झिलोना, एक प्रकार का नेत्ररोग ।

अधिमन्यत ( वि० )--चक्षुरोग से  
पीड़ित । [ का रोग ।

अधिमांस(पु०)--आँखों का एक प्रकार

अधिमांसक(पु०)--दन्तरोगविशेष ।

अधिमात्र(वि०)--मात्रा से अधिक,  
अतिशयित । [ गलनास ।

अधिमास(पु०)--लींदा का महीना,

अधिमुक्ति(स्त्री०)--विश्रवास, भरोसा

अधियज्ञ(वि०)--यज्ञघनस्थी । पु०--  
सुरययज्ञ ।

अधियोग पु०--सुहृत् ।

अधियोष(पु०)--अप्रणी पोड़ा ।

अधिरथ(वि०)--रथ पर चढ़ा हुआ ।

पु०--सारथि, रथवान्, कर्ण के  
पिता का नाम ।

अधिराज( पु० )--सचाट्, चक्रवर्ती  
राजा । [ सास्राज्य, शाहंशाही ।  
अधिराज्य-राष्ट्र( न० )--चक्रवर्तित्व,  
अधिराट्[ज]( पु० )--सचाट्, शाहंशाह  
अधिरुक्म( वि० )--आभूषणों वाला ।  
अधिरुह्( पा० प० )--चढ़ना, खींचना,  
उगना ।  
अधिरुह्( वि० )--बढ़ा हुआ, आरुढ़,  
बढ़ा हुआ । [ करने का काम ।  
अधिरोपण( न० )--बढ़ाने या उच्चपदस्थ  
अधिरोह( पु० )--हाथी का सवार ।  
अधिरोहण( न० )--बढ़ाना, चढ़ना,  
उपरिगति । [ निःश्रेणी ।  
अधिरोहणी-हिमी ( स्त्री० )--सीढ़ी,  
अधिरोही( वि० )--ऊपरको चढ़ने वाला  
अधिवचू( पा० प० )--वकालत करना ।  
अधिवक्ता( पु० )--वकील, वागी ।  
अधिवचन( न० )--वकालत, पक्षपात-  
पूर्वक कथन, उपनाम । [ वचन ।  
अधिवास( पु० )--वकालत, पक्षपात-  
अधिवस( पा० प० )--बसना, आवास  
होना, पहिरना ।  
अधिवस्र( वि० )--कपड़ों से ढका हुआ  
अधिवास( पु० )--रहने का स्थान,  
भकान, पड़ीसी, रहने वाला ।  
अधिवास( पा० प० )--सुगन्धि देना ।  
अधिवासन( न० )--रहना, सुगन्धियों  
से संस्करण करना, मूर्ति की प्रतिष्ठा  
अधिवासिन्( वि० )--सुगन्धि देनेवाला,  
रहने वाला । [ वत्प्रयुक्त ।  
अधिवासित( वि० )--सुगन्धिप्रयुक्त,  
अधियाहुन( न० )--उठ जाना ।

अधिविकर्त्तन( न० )--धीच में से  
फाटना । [ दूसरा विवाह करना  
अधिविद्( पा० प० )--आर्या होते हुए  
अधिवेत्ता( पु० )--एक स्त्रीके होते हुए  
दूसरी स्त्री को व्याहने वाला पति -  
अधिवेदः-नम्-एक से अधिक विद्याएँ  
करना । [ सीना ।  
अधिशी ( पा० मा० )--लेटना, ऊपर  
अधिश्रि( पा० प० ) ऊपर सोना, ऊपर  
रखना ।  
अधिभ्रम( पु० )--आभ्रम, उचालना ।  
अधिभ्रमण( न० )--उचालना, हाँसी  
को आग पर चढ़ाना ।  
अधिश्री( वि० )-उच्चपद वाला, प्रभु  
अमीर, प्रभु ।  
अधिष्ठा( पा० प० )--ऊपर बैठना, अन्दर  
या ऊपर उड़ा होना, अधिकार  
जमाना, रहना, पकड़ना ।  
अधिष्ठान( न० )--नगर, चक्र, प्रभाव,  
अध्यासन । [ रक्षक, प्रदक्षक ।  
अधिष्ठाए( वि० )--निरीक्षक, सदाँर,  
अधिष्ठित( वि० )--बैठा हुआ, अधि-  
कारयुक्त, उद्दिष्ट ।  
अधिष्ठाता( पु० )--श्री(स्त्री०)प्रबन्धकर्त्ता  
या कर्त्री, निरीक्षक, निरीक्षिका ।  
अधिस्त्री( स्त्री० )--उच्चपदस्थ स्त्री ।  
अधिविदं( अ० )--उच्चतम ज्ञेय से ।  
अधी[अधि+इ] ( पा० मा० )--पढ़ना,  
कण्ठस्थ करना, अध्ययन करना  
अधीकार( पु० )-अधिकार ।  
अधीत( वि० )--सीखा हुआ, पढ़ा हुआ,  
याद किया हुआ ।

अधीतविय(वि०)--जिस ने अपना  
पाठकार्य समाप्त कर लिया हो ।

अधीति(स्त्री०)--पढ़ने, अध्ययन,  
याद करना ।

अधीतिन्(वि०)--पढ़ने वाला, जिस ने  
पढ़ने का कार्य कर लिया हो ।

अधीन(वि०)--परधन, परतन्त्र ।

अधीर(वि०)--हरपीक, चयराया हुआ,  
चंचल, कातर ।

अधीरा(स्त्री०)--विद्युत्, बिजली ।

अधीयान(पु०)--शिक्षार्थी, वेदपाठी ।

अधीवास(पु०)--योगा, वस्त्रविशेष ।

अधीश(पु०)--अधिपति, प्रभु ।

अधीश्वर(पु०)--महाराज, यक्षवर्ती,  
जैनियों के एक तीर्थेकर ।

अधीश्वरी(स्त्री०)--स्वामिनी ।

अधीष्ट(वि०)--आमरेरी, अवैतनिक ।  
पु०--आमरेरीपद ।

अधुत(वि०)--अकम्पित ।

अधुना(अ०)--अब, इस समय ।

अधुनातन(वि०)--हाल का, इस समय  
का, इदानीन्तन ।

अधुर(वि०)--नारहित, नारवे मुक्त ।

अधूमक(वि०)--धूमरहित, बिना  
धुप का । [किया हुआ, येकावू ।

अधृत(पु०)--विष्णु । वि०--न धारण

अधृति(स्त्री०) धृति या धैर्यका अभव,  
चंचलता, अशुच । [अधृत, ग्राहीन

अधृष्ट(वि०)--लज्जावान्, अज्ञेय,

अधृष्ट(वि०)--अज्ञेय, जिस पर आ-  
क्रमण न हो सके, समंदी, सज्जा-

युक्त ।

अधेनु(स्त्री०)--महामात्री दूधन देती हो  
अधैर्य(वि०)--धैर्यहीन, न०--धैर्यभाव ।

अध्यप(पु०)--शिक्षा, पाठ, याद करना

अध्ययन(न०)--पढ़ना, शिक्षा, पाठकार्य

अध्यक्ष(वि०)--दिखार्ह, देने वाला,  
दृष्टिगत । पु०--निरीक्षक, प्रधान,  
प्रभु, स्वामी ।

अध्यधीन(वि०)--बिलकुलमाधीन, दास

अध्यर्ह(पु०)--वापु, आंधी । वि०--  
अधिक आधा रहने वाला ।

अध्यवसो(धा०प०)--निश्चय करना,  
इरादा करना, यत्न करना, मोचना ।

अध्यवसान(न०)--यत्न, इरादा ।

अध्यवसाय(पु०)--प्रयत्न, कीर्ति,  
इरादा, धैर्य, परिश्रम । [ गती ।

अध्यवसायिन्(वि०)--परिश्रमी, मेह-

अध्यवसित(वि०)--यत्न किया हुआ,  
निश्चययुक्त ।

अध्यशन(वि०)--बहुत खाना । [इष्टी ।

अध्यस्थ(न०)--इष्टी पर लगने वाली

अध्यस्थ(वि०)--करर रहला हुआ,  
नियुक्त ।

अध्याकम्(धा०प०)--अधिकार करना,  
आक्रमण करना, जमाना । [हुआ ।

अध्याक्रान्त(वि०)--अधिकृत, किया

अध्यात्म(वि०)--आत्मा के सम्ब-  
न्ध रखने वाला, व्यक्ति से सम्ब-  
न्ध रखने वाला । न०--व्यक्ति ।

अध्यात्मिक(वि०)--अध्यात्म का  
पट्यायवाची ।

अध्यात्मज्ञानं-विद्या-आत्मा और

परमात्मा का ज्ञान, उपनिषदों की शिक्षा ।

अध्यात्मदृष्टि-विद्-(वि०)-अध्यात्म विद्या का जानने वाला ।

अध्यात्मयोग(पु०)-चित्तवृत्तियों की आत्मा के ऊपर लभाना ।

अध्यात्मरामायण(न०)-एक रामचरित का नाम ।

अध्यापक(पु०)-शिक्षक, गुरु, वैदशिक्षक

अध्यापन(न०)-शिक्षा, पढ़ाना ।

अध्याप(पु०)-पढ़ना, सीखना, अध्ययन ।

अध्यापित्(वि०)-शिक्षार्थी ।

अध्यारुह(धा०प०)-ऊपर बढ़ना ।

अध्यारुह(वि०)-ऊपर बढ़ा हुआ ।

अध्यारोप(वि०)-ऊपर बढ़ाने का कार्य, अध्ययन ज्ञान । [भीमा]

अध्यारोपण(न०)-ऊपर उठाना,

अध्यावाप(पु०)-बीने का कृत्य ।

अध्यावाह्निक(न०)-स्त्रीपनविशेष ।

अध्यातृ(धा० भा०)-गीचे लेटना,

सै करना, अधिकन करना, रहना

अध्यामन(न०)-बैठने का स्थान,

बैठने का कृत्य, अधिकार ।

अध्यास(पु०)-भूत अनुमान, मिथ्या आरोपण ।

अध्यासित(वि०)-अविहित, अभिन,

आसरा दिया गया । [ऊहा]

अध्याहरण--हार-तर्कना, अनुमान,

ऊहा । [हुमा]

अध्यापित(वि०)-निवेदित, आयाद

अध्याप(पु०)-ऊठनाही ।

अध्यातृ(वि०)-उचलपड़ना, उठा हुआ, बहुत । पु०-शिय ।

अध्याप्ता(स्त्री०)-मोटे धनीवालीगांध

अध्यातृ(धा०प०)-ऊपर रखना, ऊपर उठाना ।

अध्याता(पु०)-शिक्षार्थी, विद्यार्थी ।

अध्याप्री(स्त्री०)-शिक्षार्थिनी, विद्यार्थिनी ।

अध्यापणा(स्त्री०)-प्राप्ति, निवेदन

अधि(वि०)-बेकाय, जो रोक न पा सके । [माना]

अधिसु-भू(वि०)-अप्रतिहत गति

अधिपुष्पाजिका(स्त्री०)-पानकीमेल

अधियमाणा(वि०)-अधीयित, मृत्यु अप्रतिहत ।

अधुव(वि०)-अनिरिपत, संदिग्ध, चर, गतिशील । न०-अधिपता ।

अध्वग(पु०)-पथिक, ऊ.ट.सूर्य, खेवर

अध्वगत(पु०)-मुनाकिर ।

अध्वगतोप(पु०)-आमृतक वृक्ष ।

अध्वगा(स्त्री०) गगा । [ब्रह्म]

अध्वजा(स्त्री०)-स्वर्णवृक्षी नामक

अध्वन् [पु०] (पु०)-रास्ता, सहक मार्ग । [पु० पथिक]

अध्वनीन(वि०)-सफर करने के योग्य

अध्वन्य(वि०)-यात्रा करने के योग्य

पु० पथिक ।

अध्वर(वि०)-जो देखा न हो, असत,

ध्यानस्थ, चंगा, भावधान । पु०-

यज्ञ । अन्त्री-आकाश या वायु,

यज्ञेय । [यज्ञ]

अध्वरकल्पा(स्त्री०)-काम्येष्टिपान

अध्वरग(वि०)--यज्ञनिमित्त ।

अध्वर्यु(पु०)--यज्ञ कराने वाला, यज्ञ-  
वेद का ज्ञाता ।

अध्वर्युवेद(पु०)--यज्ञवेद ।

अध्वशल्प(पु०)--अध्यासागं ।

अध्वस्मन्(वि०)--न माथ हाने वाला ।

अध्वा(पु०)--[अध्वन् का विह्वल्य]--  
सागं, काल, आयु ।

अध्वान्त(न०)--सम्पदा सन्ध का प्र-  
काश, अन्धियारा, हलका अ-  
न्धियारा । पु०--यात्रा का अन्त ।

अध्वान्तशास्त्रव ( पु० )--इक्षीनाक  
नामक वृक्ष ।

अन्(पु०)--आत्मा ।

अन्(प०प०)--साँच लेना, जीना, हर-  
कत करना ।

अन(पु०)--इयास [ साँस ] ।

अनन(न०)--मांस लेने वा जीने का काम

अनैश(वि०)--दामभाग का अलधि-  
कारी, अशुहीन, अविमल ।

अनैशुमत्कला(स्त्री०)--कले का वृक्ष ।

अनक(वि०)--नीच, अधम ।

अनक्ष(वि०)--दृष्टिहीन, अन्धा ।

अनक्ष(वि०)--दृष्टिहीन, अन्धा ।

अनकस्मात्(अ०)--अचानक नहीं ।

अनक्षर(वि०)--बोलने के अयोग्य,  
गुंगा, अशिक्षित । न०--गाली  
गछीय ।

अनक्षि(न०)--नारायण, दुर्बल दृष्टि

अनगर(वि०)--गृहहीन । पु०--यान-  
प्रस्थी, जहाज, मुनि ।

अनग्नि(पु०)--अग्नि का अभाव, अग्नि  
से निम्न द्रव्य । वि०--जिस में  
अग्नि की आवश्यकता न हो,  
अनाहिताग्नि ।

अनघ(वि०)--पापहीन, चक्रसूर, पवित्र  
पु०--विष्णु का नाम ।

अनङ्गुश(वि०)--चक्रायु, हथी ।

अनंग(वि०)--देहहीन, आकाररहित,  
देह से भिन्न । पु०--भद्र, काम-  
देव । न०--आकाश, मन ।

अनंगक(न०)--चित्त, मन ।

अनंगक्रीडा(स्त्री०)--रति, सम्भोग ।

अनङ्गज(वि०)--प्रेम सत्पन्न करने वाला

अनंगलेख(पु०)--प्रेमपत्र ।

अनंगशत्रु(पु०)--शिव का नाम ।

अनंगवती(स्त्री०)--कामवती, कामिनी ।

अनंगशेखर(पु०)--उन्मोमेद ।

अनंगुरि-लि(वि०)--रंगलियों से रहित

अनक्ष(वि०)--मैला, अस्वच्छ ।

अनजका(स्त्री०)--हुंसी, या छोटा

बकरा ।

अनैजन्(वि०)--अज्ञतरहित, दीयहीन,

वेदाङ्ग, निःसम्बन्ध । न०--आकाश,  
परब्रह्म ।

अनैहु(पु०)--मैल, साँह ।

अनैहुही--हाही(स्त्री०)--गाय ।

अनैहुत्क(वि०)--घैलों वाला ।

अनैहु(पु०)--एक श्रयिक का नाम ।

अनैगु(वि०)--छो छोटा या भारीक  
न हो ।

अनैति(न०)--बहुत अधिक नहीं ।

अनैय(पु०)--सफेद धरती ।



अनद्यतन(वि०)-जो आज का न हो ।

अनधिक(वि०)--जो अधिक न हो ।

अनधिकार(पु०)-अधिकार का अभाव

अनधिकारचर्चा(स्त्री०)-बेजा दुखल देना ।

अनधिकारिन्(वि०)-जो अधिकारी न हो ।

अनधिगत(वि०)-अप्राप्त, अपठित, अनधीत ।

अनधिगतशास्त्र(वि०)-जिसने शास्त्र न पढ़े हो ।

अनधीन(वि०)-स्वतन्त्र ।

अनध्यक्ष(वि०)-अध्यक्षहीन, जो दिखलाई न देता हो, अप्रत्यक्ष ।

अनध्ययन(न०)-अध्ययन न करना, पुही का दिन ।

अनध्याप(पु०)-पुही का दिन ।

अननुभावुक(वि०)-समझने के अयोग्य ।

अननुभाषण(न०)-फिसेनदोहराना

अनन्त(वि०)-अन्तहीन, असीम, नित्य । पु०-विष्णु का नाम, यादल । न०-आकाश, नित्यता, मोक्ष ।

अनन्तक(वि०)-अन्तहीन, नित्य ।

अनन्तग(वि०)-सर्पदा घूमने वाला ।

अनन्तचतुर्दशी (स्त्री०)-साद्रपद शुक्ला चतुर्दशी । [एक तीर्थंकर ।

अनन्तजित्(पु०)-यामुदेव का नाम, अनन्तदृष्टि(पु०)-शिव या इन्द्र का नाम । [नारायण का नाम ।

अनन्तदेव(पु०)-शेषनाग का नाम,

अनन्तपार(वि०)-असीम, तटरहित ।

अनन्तवत्(वि०)-असीम, नित्य ।

अनन्तवान्(पु०)-शिरसम्बन्धी एक रोग । [फर ।

अनन्तवीर्य(पु०) तेईसवा जैम तीर्थ-अनन्तव्रत(न०)-अनन्तचतुर्दशी ।

अनन्तशक्ति(वि०)-असीम शक्ति-वाला, सर्वशक्तिमान् ।

अनन्तशीर्ष(पु०)-विष्णु का नाम ।

अनन्तशीर्षा(स्त्री०)-बाहुकिपत्नी ।

अनन्तश्री(वि०) असीम शोभावाला ।

अनन्ता(स्त्री)-पार्यन्ती, पृथिवी, रपा-चालता, दुर्वा, पीपली, एक का अक ।

अनन्तात्मा(पु०)-परब्रह्म ।

अनन्तप(वि०)-असीम, छातादाद । न०-नित्यता ।

अनन्तर(वि०)-अन्तरहीन, सीमा-रहित । न०-समीपता, ब्रह्म ।

अनन्तरम्(भ०)-तुरन्त बाद में, तत्पश्चात्, उपरान्त ।

अनन्द(वि०)-अप्रसन्न ।

अनन्न(न०)-राने के अयोग्य वस्तु ।

अनन्य(वि०) अग्निक, यही, एक ही, अनुपम, अविभक्त ।

अनन्यगानि(स्त्री०)-केवल एकहीगति ।

अनन्यज(पु०)-कामदेव । [रगा ।

अनन्यदेव(पु०)-सुहोतगदेव परमा-

अनन्यपूर्य(पु०)-जिस है दूसरी स्त्री न हो । [वाहिता ।

अनन्यपूर्वा(स्त्री०)-कुमारी, अवि-अनन्यमदृज(वि०)-अद्वितीय, अनुपम, बेजोड़ । [दो ।

अनप(वि०)-जिस में बहुत पानी न

अनपकार(पु०)-अपकार का अभाव ।  
अनपकारिन्(वि०)-येकसूर, अपकार  
न करने वाला ।

अनपत्य(वि०)-सन्तानहीन ।  
अनपन्नप(वि०)-येश्वर । [ हीन ।  
अनपर(वि०)-द्वितीयहीन, अनुयायि-  
अनपराध-धिन्(वि०)-येकसूर, अपरा-  
धहीन । खेजरर ।

अनपराध(पु०)-येकसूरी, अपराध-  
हीनता ।

अनपाय(वि०)-अपाय [नाश] से मुक्त,  
न नाश होने वाला, कम न होने  
वाला । पु०-शिव का नाम ।

अनपायिन्(वि०)-नकलूत, एकरस, नाश  
न होने वाला, अनश्वर ।

अनपेक्ष-पेक्षिन्(वि०)-बेफिक्र, अपे-  
क्षा न रखनेवाला, निरपेक्ष ।

अनपेक्षा(स्त्री०)-अपेक्षा का अभाव,  
उदासीनता, अविन्यता ।

अनपेक्षित(वि०)-जो अपेक्षित न हो,  
जिसे की परवाह न हो ।

अनपेक्ष्य(वि०)-जिसे किसी की पर-  
वाह न हो ।

अनपेत(वि०)-अनतीत, न घीता हुआ  
अनपत्तरस्त्रा(स्त्री०)-जो अपत्तरा  
न हो । [ नायकिक ।

अनभिज्ञा(वि०)-भूल, युद्धहीन,  
अनभिलाष(वि०)-अभिलाषशून्य ।

पु०-भनिकडा, अकवि ।  
अनभिसन्धान(न०)-हरादेका अभाव

अनभिहित(वि०)-न कहा हुआ ।  
पु०-गोप के सरदार का नाम ।

अनभ्यायति(स्त्री०)-आयति [ दोह-  
राना ] का अभाव ।

अनभ्याश-स(वि०)-अनिकट, दूर ।  
अनम्र(वि०)-नेपरहित ।

अनमः(पु०)-ब्राह्मण ।  
अनमितपच(वि०)-रूपण, कंजूम ।

अनमिघ्र(वि०)-जिस का कोई शत्रु  
न हो । [ सन्ध्यामी ।

अनम्वर(वि०)-वस्त्रहीन । पु०-मीह  
अनम्र(वि०)-चनगही, मगहर, अमापु ।

अनय(पु०)-दैव, अशुभ, टपस्य, विपद्  
अनरयय(पु०)-अयोध्या के एक राजा

का नाम ।  
अनर्गल(वि०)-निरगल, अबाध, निरं-  
कुंश, उद्दाम ।

अनर्घ(वि०)-अमूल्य, वेशकीमत ।  
पु०-अन्यथा वा गलत मूल्य ।

अनर्घ्य-ता--अमूल्यता, वेशकीमती  
अनर्घ्य(वि०)-वेशकीमत, अतिपूज-  
नीय ।

अनर्थ(वि०)-निकम्पा, येकार, दुःखी  
भाष्यहीन, हानिकार, पुरा ।

पु०-निकम्पापन, निकम्पी वस्तु,  
विपद्, उतरा, सेहदगी, विष्णु

का नाम ।  
अनर्थक-र्य(वि०)-निकम्पा, निरं-  
र्थक, अर्थशून्य ।

अनर्थकर(वि०)-हानिकार, पेकायदा ।  
अनर्थकरी(स्त्री०)-हानिकरने वाली

अनर्थनाशी(पु०)-शिव का नाम ।  
अनर्थन्(वि०)-अद्वैत, जिसके कोई

घोड़ा न हो ।

अनहं (वि०)--अयोग्य, बेमौजू, नाकाफी ।  
अनधिकारी ।

अनल (पु०)--अग्नि, वायु, पांचवांजसु,  
घासुदेव, चित्रक आदि का नाम,  
१कार, तीन का अंक, जीव, पर-  
मात्मा, सिद्धि । [ नाशक ।

अनलद (वि०)--अग्निनाशक, ताप-  
अनलप्रभा (स्त्री०)--उद्योतिष्मतीनाम  
पीदा । [ अग्नि की स्त्री ।

अनलप्रिया (स्त्री०)--स्वाहा नामक  
अनलसाद (पु०)--भूख का कल होना ।  
अनलस (वि०)--जो सुस्त न हो, कार्य-  
शील, मेहनती ।

अनलि (पु०)--घफ़्फ़ल ।  
अनल्प (वि०)--पहुत, अधिक ।

अनयकाश (वि०)--जिसे कुरात न हो ।  
पु०--अवकाश का अभाव ।

अनयग्रह (वि०)--बेकाबू, बेलगाम ।  
अनयच्छिन्न (वि०)--अवह, अच्छिन्न,  
लगातार, असीम । [ तराजू ।

अनयद्य (वि०)--वेदांग, नाकाखिले ऐ-  
अनयद्राश (वि०)--अन्द्राहीन, सुशुप्ति-  
हीन ।

अनयधान (न०)--चित्त का अवलोकन,  
अमनोयोग, अप्रतिधान । वि०--  
येतवज्जह ।

अनयधानना (स्त्री०)--प्रसाद मनोयोग  
का अभाव ।

अनयधि (वि०)--लातादाद, अधीन ।  
अनयद्र (वि०)--अवशेषशून्य, कम न  
हुआ हुआ ।

अनयप्र (वि०)--उच्च, ऊँचा, दृष्टान्तः

अनवर (वि०)--अन्यून, श्रेष्ठ, प्रधान ।  
अनवरत (वि०)--निरन्तर, निरन्तर,  
अश्रान्त ।

अनवरतम् अ०--सततम्, हमेशा ।  
अनवराध्य (वि०)--सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ ।  
अनवलम्बन (वि०)--अवलम्बनहीन,  
स्वतन्त्र । पु०--स्वतन्त्रता ।

अनवसर (वि०)--सशून्य, बेसमय,  
असङ्गत ।

अनवसान (वि०)--अन्तहीन, अनर ।  
अनवसित (वि०)--असमाप्त, अनिश्चित

अनवस्कर (वि०)--स्वच्छ, धूलिरहित  
अनवस्थ (वि०)--चंचल, अनिश्चित ।

अनवस्था (स्त्री०)--तर्कविशेष, दशा-  
भाव, स्थिति का अभाव, गड़बड़

अनवस्थान (वि०)--चंचल, अनिश्चित  
पु०--वायु । न०--चंचलता, अ-  
निश्चय ।

अनवस्थित (वि०)--चंचलस्वभाव, दय-  
मिचारी, बदला हुआ, ठहरने में  
असमर्थ । [ रता, अधीन ।

अनवस्थिति (स्त्री०)--वापस, अद्वि-  
अनवाय (वि०)--निःस्वय, अंगहीन ।

अनवेतक (वि०)--चिन्ताहीन उदासीन  
अनवेता (स्त्री०)--अनपेक्षा, उदासी-  
नता ।

अनश्वर(वि०)--नाश न होने वाला  
सनातन, प्रुथ [ स्त्री० में अन-  
श्वरी रूप होता है ] ।

अनसू(न०)--उच्छृङ्खल, पके हुए चावल,  
जन्म ।

अनसूय(वि०)--असूया से रहित, द्वेष-  
हीन ।

अनसूयक(वि०)--पूज्यत्व ।

अनसूया(स्त्री०)--असूया का अभाव,  
द्वेषहीनता या शकुन्तला की एक  
सखी का नाम, अग्नि मुनि की  
स्त्री का नाम जो कर्दम मुनि की  
कन्या थी और जो पातिव्रत्य के  
लिये अत्यन्त प्रसिद्ध है ।

अनस्थ-स्थिक( वि० )--अस्थिहीन ।  
पु०--अस्थिहीन अंग ।

अनहृत्(न०)--बुरा या अशुभ दिन ।  
अमहंवादी[ न ] ( वि० )--गर्वरहित,  
अहंकारशून्य ।

अनहंकृति ( स्त्री० )--अहंकार का  
अभाव, अशोष ।

अनाकार(वि०)--आकाररहित, पर-  
ब्रह्म का विशेषण ।

अनाकाल(पु०)--अमंगल समय, दुर्भिक्ष

अनाकाश(वि०)--जो स्वच्छ न हो ।  
अस्त्री०--जो आकाश न हो ।

अमाकुल(वि०)--युकाग्र, अठ्ठाकुल ।

अनामान्न(वि०)--जिस पर आक्रमण  
न हुआ हो ।

अनामान्ता(स्त्री०)--कंडकारी नामक  
वृक्ष ।

अनाग(वि०)--पापरहित ।

अनागा(स्त्री०)--एक नदी का नाम ।

अनागत(वि०)--न आया हुआ, भावी,  
अनुपस्थित, भविष्यत् ।

अनागतार्ता(स्त्री०)--ऐसी कन्या  
जिस के रजोदर्शन का काल भावी  
न आया हो ।

अनागति(स्त्री०)--आगमन का अभाव,  
अप्राप्ति, न पहुँचना ।

अनागम(वि०)--न आया हुआ, अंश-  
पस्थित । पु०--अप्राप्ति ।

अनागम्य(वि०)--अगम्य, जिसके पास  
न पहुँचा जा सके ।

अनागामुक(वि०)--जिसके वापिस  
जाने की आशा न हो ।

अनागसू(वि०)--वेदांग, अकल्प ।

अनाचार(वि०)--आचारहीन । पु०  
आचारहीनता, अनाचरण, अशु-  
द्धाचार ।

अनाज्ञात(वि०)--अज्ञात, अग्ययाज्ञात ।

अनातप(वि०)--उष्णता से रहित ।  
पु० छाया, ठण्ड ।

अनातुर(वि०)--अरोगी, न चका हुआ  
स्वल्प, आतुरतारहित ।

अनात्मा(पु०)--आत्मा से भिन्न, शरीर ।

अनात्मक(वि०)--अव्यास्तविक, क्षणिक

अनात्मज्ञ(वि०)--आत्मज्ञान से रहित,  
अज्ञानी ।

अनात्म्य(वि०)--अशरीर ।

अनाय(वि०)--प्रभुहीन, मायशून्य ।  
यतीन ।

अनायपिण्ड(पु०)--अनायपालक ।

अनायसभा(स्त्री०)--अनापालय ।

अनादर(पु०)--निरादर, अघृष्टा, अय-  
मानना ।

अनादरण(न०)-अपमानजनक व्यवहार, वेमुषि ।

अनादरिन्(वि०)--अवमाननाकारी ।

अनादि(वि०)--आदिरहित, उत्पत्तिशून्य, स्वयंभू, कारणहीन ।

अनाद्यन्त(वि०)--आदि अन्त रहित, नित्य । पु०--शिव का नाम ।

अनादिता-त्वम्--उत्पत्तिशून्यता ।

अनादिमत्त(वि०)-जिसके कोई आदि न हो ।

अनादीनय(वि०)-धेकसूर, वेदान् ।

अनादृत(वि०)-तिरस्कृत, उदासीन ।  
न०-अपमान, वेद्वज्जती ।

अनादेय(वि०)-स्वीकर या प्रविष्ट करने के अयोग्य, न लेने योग्य ।

अनादेश(पु०)-नादेश या आज्ञा का अभाव । [ योग्य ।

अनाद्य(वि०)-आदिरहित, न, खाने

अनाधार(वि०)-आधाररहित, अगलम्ब । [ रहित ।

अनाधि(वि०)-मानसिक, पीड़ा से

अनापट्ट-प्य(वि०)-अजेय, अनवरुद्ध ।

अनापद्(स्त्री०)-आपत्ति का अभाव ।

अनापि(वि०)-निग्रहीत, विना यन्त्रु-ओं का ।

अनाप्त(वि०)-अप्राप्त, अयोग्य ।  
पु०-अजनयी ।

अनाप्ति(स्त्री०)-अप्राप्ति ।

अनागन्[मा](वि०)-नानरहित, अप्रसिद्ध । पु०-अनागिका उंगली ।

न०-अशरीर ।

अनामक(वि०)-अप्रसिद्ध, नामरहित ।

अनामिका(स्त्री०)-कनिष्ठा की पाख की उङ्गली, छल्ला आदि जिस में पहने गाते हैं ।

अनामय(वि०)-रोगरहित, स्वस्थ ।

अस्त्री०-आरोग्य, तन्दुरुस्ती ।

अनामिष(वि०)-नांसरहित, लाभरहित ।

अनामृण(वि०)-हिंसकरहित ।

अनामृत(वि०)-कभी न मरने वाला ।

अगायक(वि०)-नेतारहित, गद्गद में फना हुआ ।

अनायत(वि०)-जो छुट्टा न हो, अनाधार, अनवरुद्ध । [भूत, स्वतन्त्र ।

अनायत(वि०)-अनधीन, अवशी-

अनायत(वि०)-एकाग्र, निश्चल ।

अनापास(वि०)-जो कठिन न हो, आसान । पु०-अकलेश, परनामाव ।

अनापासकृत(वि०)-आसानी से किया हुआ, बिना परत के किया हुआ । [ सुरक्षित ।

अनापासेन(क्रि० वि०)-आसानी से,

अनायुष्य(वि०)-हीर्षांशु की हानि पहुंचाने वाला जैसे अधिक भोजन, मैद्युन इत्यादि ।

अनारत(वि०)-अनधरत, लगातार, सतत, नित्य ।

अनारम्भ(पु०)-आरम्भ का अभाव ।

अनारम्भ(वि०)-आरम्भ करने के अयोग्य । अ०-आरम्भ किये बिना ।

अनारम्भण(वि०)-अनालम्बन, अनाधार । [ फारक ।

अनारोग्य(वि०)-आरोग्य की हानि-

अनार्जव(वि०)-वेईमान, कुटिल ।  
न०-रोग, थोखा ।

अनार्तव(वि०)-अनवसर, येमीके ।

अनार्तवा(स्त्री०)-अमाप्तवयस्का,  
रजोदर्शन से हीन ।

अनार्य(वि०)-अश्रेष्ठ, गंधार, आर्य से  
भिन्न । पु०-जो आर्य न हो, शूद्र,  
स्लेच्छ ।

अनार्यक(न०)-अगह काष्ठ ।

अनार्यकर्मिन्(वि०)-आर्य के समान  
आचार न करने वाला ।

अनार्यज(वि०)-भीषकुलोत्पन्न ।

अनार्यजुष्ट(वि०)-आर्य वा श्रेष्ठ पुरु-  
षों द्वारा न किया हुआ, आर्यों  
से स्पर्धाय । [ धृत् ।

अनार्यतिक्त(पु०)-विरायता नामक

अनार्य(वि०)-अवेदिक, जो अरियों  
से सम्बन्ध न रखता हो ।

अनार्यय(वि०)-अनार्य ।

अनालम्ब(वि०)-अनाश्रय, आधार-  
हीन । पु०-आश्रय का अभाव ।

अनार्लवु[भु]का(स्त्री०)रजस्युत्तारस्त्री ।

अनालोपित ( वि० )--अविद्येचित,  
जिसकी आलोचना न की गई हो ।

अनायर्त्ति(स्त्री०)-अप्रत्यागमन, मोक्ष

अनायिक(वि०)-न उड़ा हुआ, असत ।

अनायिल ( वि० )--निर्मल, स्वच्छ ।

अनायुत(वि०)-त्राविष न भाया हुआ,  
मदोहराया हुआ ।

अनायुति ( स्त्री० )--अप्रत्यागमन, न  
होईरामा, मोक्ष ।

अनायुष्टि(स्त्री०)--छः इतिषों में से  
एक, सुखा, अवर्षण ।

अनाश(वि०)-मित्य, नष्ट न किया  
हुआ, वाशाशून्य, ना-उन्नेद ।

अनाशक(वि०)-बीवनानन्द से शून्य,  
अहानिकर । न०-उपवास ।

अनाशस्त(वि०)-अप्रशंसित ।

अनाशिनू(वि०)--नाश न होने वाला  
जैसे आत्मा वा परमात्मा ।

अनाशु ( वि० )--नाशरहित, सुस्त,  
अठपाप्त ।

अनाशमिन्(पु०)-जो किसी आश्रम  
से भी सम्बन्ध नहीं रखता ।

अनाशय(वि०)-बेसहारे, परलित,  
सहायकहीन ।

अनाशित(वि०)-स्वतन्त्र, जो किसी  
के आश्रय में न हो । [ हीन ।

अनाशु--(वि०)--मुखरहित, वाणी-

अनासादित(वि०)-अमाप्त, अना-  
कान्त, अशुत ।

अनास्था ( स्त्री० )--उदासीनता,  
आस्था वा अहंता का अभाव ।

अनास्थान(वि०)--स्थानरहित ।

अनास्थाद(वि०)-स्थादरहित ।

अनास्त्राय(वि०)-बलेशरहित, हानि-  
रहित ।

अनाहत(वि०)-जो जलमी न हो ।

अनाहार(वि०)-भीजन न करने वाला,  
उपवास करने वाला । पु०-उपवास

अनाहारिन्(वि०)-भीजन न करने  
वाला । [ शमोध्य ।

अनाहार्य(वि०)-अकर्मिन्, कुदरती,

अनाहुति(स्त्री०)-अनुचित आहुति,  
यज्ञ का न होना ।

अनाहत(वि०)-न मुलाया हुआ,  
अनिनन्त्रित ।

अनिकेत(वि०)-गृहहीन, फकीर ।

अनिगीर्ण(वि०)-न निगता हुआ,  
न छिपा हुआ, प्रत्यक्ष ।

अनिग्रह(वि०)-अप्रत्याहत, अक्षेप ।  
पु०-निग्रह का अभाव ।

अनिच्छ-च्छक-च्छु-च्छुक ( वि० )-  
इच्छा न करता हुआ, गैर रजामन्द

अनिच्छा(स्त्री०)-इच्छा का अभाव,  
अनाकांक्षा ।

अनित(वि०)-रिक्त, हीन ।

अनित्य(वि०)-स्थिर, जो निरर्थक न  
हो, नश्वर, आकस्मिक ।

अनित्यम्(क्रि०वि०)-कभी, यदाकदा

अनिद्र-द्रित(वि०)-जागताहुता, निद्रा  
हीन, सावधान । [ सावधानी ।

अनिद्रा(स्त्री०)-निद्रा का अभाव,  
अनिषष्ट(वि०)-अपरामृत, बेकाबू ।

अनिन्दित(वि०)-निन्दारहित, अग-  
हित, साधु ।

अनिन्द्रिय(ग०)-जो इन्द्रिय नहीं, मन

अनिप(पु०)-सेनापति, फौजका मुखसुर

अनिपात(पु०)-निपात का अभाव,  
जीवन का अटूटपन ।

अनिपुण(वि०)-अप्रवीण, अपटु, अविश्व

अनिषद्(वि०)-न बंधा हुआ ।

अनिवाध(पु०)-स्वतन्त्रता । वि०-  
स्वतन्त्र । [ उज्जाहीन, चंचल ।

अनिभृत(वि०)-प्रत्यक्ष, खुला हुआ,

अनिभृष्ट(वि०)-बेरीक, भक्षत ।

अनिभ्य(वि०)-जो इन्धन[धनी] न हो,  
कंगाल ।

अनिमक(पु०)-मैंदक, फोयल, मधखी,  
पण्णकेशर, मधूक नामक वृक्ष ।

अनिमान(वि०)-अधुत, अपरिच्छिन्न ।

अनिमित्त(वि०)-हेतुरहित, वे मुनि-  
याद । न०-अशकुन, पर्याप्त हेतु

का अभाव ।

अनिमित्तनिराक्रिया(स्त्री०)-अशकुन  
को दूर करने की क्रिया ।

अनिमिष(पु०)-देवता, गढ़ली । वि०-  
निमेषरहित, सावधान, अप्रमत्त ।

अनिमेष(पु०)-देवता, गढ़ली ।

अनियत(वि०)-अनिश्चित, बेकाबू,  
अस्थायी ।

अनियन्त्रण(वि०)-स्वतन्त्र, बेरीक ।

अनियम(पु०)-नियम का अभाव,  
अनिश्चित नियम, बेकाम्यदगी ।

अनियमित(पु०)-बेकायदा, गड़बड़ ।

अनियुक्त(वि०)-जो नियुक्त न हो ।

अनिरा(स्त्री०)-नितान्त दरिद्रता, अन्न  
का अभाव, हँसि ।

अनिराकरणा(न०)-दूर न करना का  
न रोकना ।

अनिरुक्त(वि०)-अस्पष्ट कहा हुआ ।

अनिरुद्ध(वि०)-अनिवार्य, स्वतन्त्र,  
बेरीक । पु०-नाशूना । न०-बाधनेका

रस्ता, कामदेव का पुत्र उपापति

अनिरुद्धपथ(न०)-आकाश, अरुद्धपथ

अनिरुद्धभासिनी(स्त्री०)-उषा, जो  
 कामदेव के पुत्र की पत्नी थी  
 और धाणराज की कन्या थी ।  
 अनिरूप्य(पु०)-अनिश्चय, सन्दिग्धता  
 अनिर्दिष्ट(वि०)-जो बतलाया न गया  
 हो, अनिरूपित, अनिर्धारित ।  
 अनिर्देश(पु०)-निर्देश [हिदायत वा  
 निश्चित नियम] का अभाव ।  
 अनिर्देश्य(वि०)-भ्रैसकी परिभाषा  
 न हो सके, अवर्णनीय । न०-  
 परमात्मा का विशेषण ।  
 अनिर्धारित(वि०)-अनिश्चित ।  
 अनिर्मल(वि०)-मैला, गन्दा, अस्युद्ध  
 अनिर्वचनीय(वि०)-अवर्णनीय, अनि-  
 र्देश्य, कहने के अयोग्य । न०-  
 माया, ज्ञान, जगत् वा संसार ।  
 अनिर्वाण(वि०)-अस्मात्, न द्वाया  
 हुआ । [ धमाभाव ।  
 अनिर्वाह(पु०)-असम्पूर्णता, अप्राप्ति,  
 अनिर्विद्(वि०)-न पका हुआ ।  
 अनिर्विण्ण(वि०)-न पका हुआ, जो  
 दताथ न हो, विष्णु का विशेषण  
 अनिर्वैद(पु०)-निराशा का अभाव,  
 क्याचलम्बन, द्विग्नन बांधना ।  
 अनिर्वृत(वि०)-अस्वस्थ, अशुखी,  
 पूरा न किया हुआ ।  
 अनिर्वृति-ति(स्त्री०)-चिन्ता, उद्विग्न-  
 ता, गूरीयो, धमाभाव ।  
 अनिर्वैद ( वि० )-कमयण, दुःखी,  
 प्रतिहीन ।  
 अनिल(पु०)-वायु, समुविशेष, स्वा-  
 दि पदार्थ, सदा विष्णु ।

अनिलप्लवक(वि०)-विभीतक नामक  
 वृक्ष ।  
 अनिलप्रकृति(वि०)-वायु के समान  
 प्रकृति वाला, वातप्रकृति ।  
 अनिलव्याधि(स्त्री०)-शरीरस्थ वायु  
 का विकार ।  
 अनिलसख(पु०)-अग्नि ।  
 अनिलाशन(वि०)-घृत रखने वाला,  
 हवा पर गुजारने वाला, चांप ।  
 अनिलान्तक(पु०)-इगुदी वृक्ष ।  
 अनिलात्मज(पु०)-वायुका पुत्र, भीम  
 और हनुमान् का विशेषण ।  
 अनिलामय(पु०)-वातरोग, गठिया ।  
 अनिलोचित ( वि० )-अमालोचित,  
 अविवेचित । [ सोचा हुआ ।  
 अनिलोदित(वि०)-अच्छे प्रकार न  
 अनिलोदित(वि०)-जातजुर्बेकार ।  
 अनिवर्तन(वि०)-नजबूत, दृढ़, त्याग  
 के अयोग्य ।  
 अनिवर्तिन(वि०)-धीर, पीछे न हटने  
 वाला, विष्णु और परमात्मा का  
 विशेषण, न लौटने वाला ।  
 अनिविशमान(वि०)-बेचैन, सदापू-  
 ने वाला, न घेदने वाला ।  
 अनिश(वि०)-अनवरत, सतत, सदा  
 भय खाने वाला ।  
 अनिशित(वि०)-अनिर्णीत, सन्दि-  
 ग्ध, निश्चयरहित ।  
 अनिपिह(वि०)-निपिह न किया  
 हुआ, न रोका हुआ, अप्रतिहत ।  
 अनिप्लव(वि०)-अप्लव, अति-  
 शिथिल ।



अनिष्ट(वि०)--न चाहा हुआ, अन-  
मिष्टपित, अवांछित, घुरा । न०--  
घुराई, मुसीबत, कष्ट ।

अनिष्टफल(न०)--घुरा फल, हानिका-  
रक परिणाम ।

अनिष्टशंका(स्त्री०)--घुराई का भय ।

अनिष्टहेतु(पु०)--अशकुन, घुराशकुन ।

अनिष्टा(स्त्री०)--नागबला ।

अनिष्टिन्(वि०)--जिसने यज्ञ न किया  
हो, अनिष्टात । वि०--अकुशल,  
अप्रवीण, अनभिज्ञ । [ न होना ।

अनिष्पत्ति(स्त्री०)--असम्पूर्णता, पूर्ण,

अनिष्पन्न(वि०)--असमाप्त, असम्पूर्ण  
निष्पत्तिरहित ।

अनिस्तीर्ण(वि०)--न पार किया हुआ,  
अनुत्तर, जिसकी तरदीदनकी गई हो ।

अनीक(अस्त्री०)--गुह्य, चैन्य, मुख,  
तेज, मोक्ष ।

अनीकस्य(पु०)--योद्धा, महाबल, युद्ध  
का बाजा, निशान, रणगल ।

अनीकिनी(स्त्री०)--अनीहिणी सेना,  
का दशवां भाग( जिस में १०८३५  
पैदल, ६५६१ घोड़े, २१८७ हाथी,  
६१८७ रथ होते हैं ), कमल, सेना ।

अनीच(वि०)--ओ नीच न हो, उच्च ।

अनीचदर्शी(पुं०)--युद्धभेद । [ यण ।

अनीह(वि०)--अशरीरी, अश्रिकाविशे

अनीति(स्त्री०)--अन्याय, अत्याचार,  
दुर्नीति, दुःखरहितता ।

अनीतिज्ञ(वि०)--अभ्य, बेहूदा,  
व्यवहार में अकुशल ।

अनील(वि०)--ओ नीलान हो ।

अनीश(वि०)--ईश्वरहित, अतिरुद्ध-  
शक्ति, शक्तिविहीन, अस्वतन्त्र,  
विष्णु ।

अनीशा(स्त्री०)--दीनभाव ।

अनीश्वर(वि०)--जिस के ऊपर कोई  
स्वामी न हो, बेकाबू, अशक्त,  
नास्तिक ।

अनीश्वरवाद(पु०)--नास्तिकता, पर-  
मात्मा की हर्ता कर्ता न मानने  
का सिद्धान्त ।

अनीश्वरवादिन्(वि०)--नास्तिक, जो  
ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास  
नहीं करता ।

अनीह(वि०)--जिसे कोई ईच्छा न हो,  
चंदासीन । पु०--अयोध्या के एक  
राजा का नाम ।

अनीहा(स्त्री०)--उदासीनता, अतिच्छा

अनीहित(वि०)--अतिच्छित, नास्तिक-  
गवार । न०--नाराजी ।

अनु(अ०)--सह, पीछे, निकट, सादृश्य  
लक्षण, बीज्या, भाग्य, हीन, आयाम  
समीप आदि । [ का नाम ।

अनु(पु०)--अनुपपन्न, यथाति के एक पुत्र

अनुक(वि०)--कामुक, कामी, लाछण ।

अनुकथ(पा०प०)--एक कथा कहने के  
उपरान्त दूसरी कथा कहना ।

अनुकथन(न०)--आदिमें कही हुई बातों  
क्रमशः वचन ।

अनुकम्प(पा० आ०)--दया देगाना,  
सहानुभूति करना ।

अनुकम्पक(वि०)--सहानुभूति करने  
वाला, दया दिखाने वाला ।

अनुकम्पन(वि०)-दयालु, सहृदय ।

... न०-दया, दयावंता, सहानुभूति ।

अनुकम्पा(स्त्री०)-दया, कृपा ।

अनुकम्पित(वि०)-दयापात्र । [ कृपाणु ।

अनुकम्पिन्(वि०)-दया करने वाला,

अनुकम्प्य(वि०)-दया के योग्य, दया-  
पात्र । पु०-नपस्वी, वेगवान्, दूत ।

अनुकर(वि०)-नकल करने वाला ।

... पु०-सहायक ।

अनुकरण(न०)-नकल, देखादेखी,  
समान आचरण । [ योग्य ।

अनुकरणीय(वि०)-अनुकरण करने

अनुकर्ता(वि०)-नकल करने वाला,

आदर्श पर चलने वाला, ऐकट,   
नाटकी । [ काम, नकल ।

अनुकर्मन्(न०)-परचाय किया हुआ

अनुकार्य(पु०)-आकर्षण, खिंचाव ।

अनुकार्यण(न०)-पूर्यवत् ।

अनुकार्यन्(पु०)-गाड़ी की तलहटी ।

अनुकल्प(पु०)-गोशकल्प, मुख्य कल्प  
के अधिन कल्प ।

अनुकांक्षा(स्त्री०)-इच्छा, श्वादिथ ।

अनुकाम(वि०)-इच्छानुकूल । पु०-

अनुरूप कागता, उचित इच्छा ।

अनुकामीन(वि०)-कामाङ्गामी, स्वे-  
च्छागमनशील ।

अनुकार(पु०)-नकल, समानता ।

अनुकारिन्(वि०)-नकल करनेवाला,  
समानता रखनेवाला ।

अनुकार्य-कर्मण्य(वि०)-नकल करने  
के योग्य ।

अनुकार्य-किया-बाद में किया हुआ  
अनुष्ठान ।

अनुकाल(वि०)-समयानुकूल ।

अनुकालम्(अ०)-उचित समय पर ।

अनुकीर्त्तिन(न०)-प्रसिद्ध करने का कार्य

अनुकूल(वि०)-सुभाक्षिक, पक्ष में  
रहने वाला, सहायक । पु०-बड़े

नायक जो एक ही विवाहिता  
स्त्री में अनुरक्त हो, रामदल का

एक वन्दर । न०-पक्षपात, अनुग्रह

अनुकूलं(अ०)-भीर, तरफ, अनुचार,  
अनुरूप । [ अभ्युदय ।

अनुकूलता-स्वस्-अनुग्रह, दया, प्रसाद,

अनुकूला(स्त्री०)-दन्ती नामक वृक्ष ।

अनुकूलं(धा० उ०)-अनुगमन करना ।

अनुकृति(स्त्री०)-अभुकरण, नकल,  
समानता ।

अनुकृष्(धा०प०)-खींचना, आकर्षण  
करना, अपने पीछे खींचना ।

अनुक्त(वि०)-अविहित, न कहा  
हुआ, न सुना हुआ ।

अनुकथ(वि०)-कीर्त्तनरहित ।

अनुकल्प(धा०प०)-पीछे-रोना, पीछे  
चिहलाना, प्रतिध्वनि करना ।

अनुकन्दन(न०)-उत्तर में प्रतिध्वनि  
या आकोश ।

अनुक्रम(धा०प०)-अनुरूपण करना,  
अनुगमन करना, गिनना, तर-

तीव्र देना ।

अनुक्रम(वि०)-नुरत्तिव, क्रमानुसार ।  
पु०-तरतीव, पञ्चाक्रम, परिपाटी ।

अनुक्रमण(न०)--क्रमपूर्वक आने बढ़ना।  
अनुगमन । [ विषयसूची ]

अनुक्रमणी-शिका(स्त्री०)--भूमिका,  
अनुकुश(धा० प०)--चिल्लाना, पीछे  
चिल्लाना ।

अनुक्रोश(पु०)--कठुना, दया, जो एक  
कोस की यात्रा कर चुका हो ।

अनुक्षणम्(स०)--क्षण २ में ।

अनुख्याति(स्त्री०)--प्रसिद्ध, रिपोर्ट ।

अनुख्याता(पु०)--रिपोर्ट करनेवाला ।

अनुग(वि०)--अनुसर, सेवक, गौकर ।

अनुगत(वि०)--आश्रित, अधीन, अनु-  
गामी ।

अनुगमार्थ(वि०)--प्रायः समान अर्थ  
वाला, मिलते जुलते अर्थवाला ।

अनुगति(स्त्री०)--अनुगमन, अनुसरण,  
स्वीकारी ।

अनुगत्(धा० प०)--अनुसरण करना,  
पीछे चलना, साथ जाना ।

अनुगमः-मनम्--अनुसरण, परचाह  
गमन, सहगमन ।

अनुगामिन्(वि०)--अनुग.सेवक,सहसर  
अनुगामुक(वि०)--स्वभावतः पीछे  
जाने वाला ।

अनुगर्ज्ज(धा० प०)--पश्चात् गर्जना वा  
गर्जने की नकल करना ।

अनुगवीन(पु०)--गोप, गोरक्षक,  
प्रानिया । [ गुंजनेवाला ।

अनुगादिन्(वि०)--दुश्चराने वाला,

अनुगीत(न०)--अनुकरण में गाना ।

अनुगीति(पु०)--एक छन्द का नाम ।

अनुगुणा(पु०)--एक काठ्पाछंकार, जिस  
में किसी वस्तु के पूर्व गुण का  
दूसरी वस्तु के संसर्ग से बढ़ना  
सिखाया जाय । [ हुआ ।

अनुगुप्न(वि०)--टका हुआ, छिपा  
अनुगै(धा० प०)--अनुकरण में गाना,  
जाने में अनुकरण करना ।

अनुग्रहीत(वि०)--जिस पर अनुग्रह  
किया गया हो, कृतज्ञ, उपरत ।

अनुग्रह(धा० प०)--दया दिखलाना,  
मनमून करना, दया का वर्तन  
करना, स्वागत करना, अनुकरण  
करना ।

अनुग्रह(पु०)--ऐसी रूपा दिखानी  
जिसमें दूसरों का मनोरप पूर्ण हो,  
अनुकूलता, सूर्य आदि प्रद के  
प्राप्त ।

अनुग्रहण(न०)--पूर्ववत् ।  
अनुग्राहक(वि०)--अनुग्रह करनेवाला,  
दयालु, उपकारी ।

अनुग्राह्य(वि०)--अनुग्रह करने योग्य,  
अनुग्रह का पात्र ।

अनुग्रासक(पु०)--जितना एक बार  
मुंह में घास आ जाय ।

अनुचर्(धा० प०)--अनुसरण करना,  
पीछा करना, सेवकाई करना,  
व्यवहार करना ।

अनुचर(पु०)--साधी, अनुगामी, सेवक ।  
अनुचरा री(स्त्री०)--सेविका, टह-  
लनी, टाची ।

अनुचरित(वि०)--अनुसृत । न०-व्य-  
वहार, जीवनयात्रा ।

अनुचारक(पु०)--सेवक, भूतप, नौकर,  
अनुज्ञ ।

अनुचारिका(स्त्री०)--शेविका, दासी,  
नौकरनी ।

अनुचित(वि०)--अयोग्य, गैरमुनासिब,  
अशुद्ध । [ गौर करना ।

अनुचिन्त(धा० प०)--मन में सोचना,  
अनुचिन्तन(न०)--धीमी हुई बात को  
याद करना, गौरखोज, चिन्ता,  
बार बार सोचना ।

अनुचिन्ता(स्त्री०)--पूर्ववत् ।

अनुच्छिस्ति(स्त्री०)--अनुच्छेद, अलोप,  
न नाश होना । [ भिन्न ।

अनुच्छिष्ट(वि०)--पवित्र, उच्छिष्ट  
अनुज्ञ(न०)--प्रपौरहरीक नामक सु-  
गन्धिद्रव्य । पु०--कनिष्ठ भ्राता ।  
पीछे उत्पन्न हुआ, छोटा ।

अनुज्ञा(स्त्री०)--छोटी बहन, प्रायमा-  
णा लता ।

अनुज्ञात(वि०)--अनुज्ञ के समान ।

अनुजायर(वि०)--सब से छोटा [भाई] ।

अनुजन्(धा० भा०)--पश्चात् उत्पन्न  
होना । [ भ्राता ।

अनुजन्मन्(पु०)--छोटा भाई, कनिष्ठ

अनुजीव्(धा० प०)--अन्य के सहारे  
नियोज करना, आश्रित होकर  
रहना, जीवन में अनुक्रमण करना,  
पश्चात् जीते रहना ।

अनुजीविन्(वि०)--आश्रित, वान्य के  
आश्रय जीने वाला । पु०--दास,  
सेवक, अनुचर ।

अनुज्ञा(धा० उ०)--आज्ञा देना, अधि-  
कार देना, मंजूरी करना, सगाई  
करना, लमा करना, दुःख मानना,  
निवेदन करना ।

अनुज्ञा(स्त्री०)--आज्ञा, अनुमति, लमा

अनुज्ञात(वि०)--स्वीकृत, उपकृत, निवे-  
आज्ञा दी गई हो, त्यक्त, प्रतिष्ठित  
अनुज्ञान(न०)--आज्ञा, स्वीकारी,  
मंजूरी, लमादान ।

अनुज्ञापक(पु०)--आज्ञा करने वाला ।

अनुज्ञापनं-शक्तिः--आज्ञा देने का  
कार्य, अधिकार देना ।

अनुज्येष्ठ(वि०)--सब से बड़े से छोटा ।

अनुतप्(धा० प०)--गर्भ करना, दुःखी  
करना । [ रंजीदा ।

अनुतप्त(वि०)--गर्भ किया हुआ,  
अनुताप(पु०)--पश्चात्ताप, पछताना,  
दाह, गर्मी, दुःख, रंज ।

अनुतापन(वि०)--दुःख का कष्ट उत्पन्न  
करने वाला । [ वाला, दुःखी ।

अनुतापिन्(वि०)--पश्चात्ताप करने

अनुतर्प(पु०)--पिपासा, पीनेकी इच्छा,  
इवाहित, मद्यपात, मद्य ।

अनुतर(न०)--किराया, भाड़ा ।

अनुत्क(वि०)--अभिलाषारहित, वि-  
ना लालसा का, अनुत्सुक ।

अनुत्तम(वि०)--श्रेष्ठ, प्रधान, जो उत्तम  
न हो । पु०--धिव या धिष्णु का  
नाम ।

अनुत्तर(वि०)--मुक्त, प्रधान, सर्वोत्तम  
उत्तरहीन, नीच, अधम, दक्षिण  
ओर का ।

अनुत्तरा(स्त्री०)-प्रथित्री ।  
अनुत्तरंग(वि०)-ममयूत, महरीं से न  
। घबड़ाया हुआ ।

अनुत्थान(न०)-प्रयत्न का अभाव ।  
अनुत्पत्ति(स्त्री०)-मसफलता, ना-  
कामयाबी ।

अनुत्पन्न(वि०)-न उत्पन्न हुआ हुआ ।  
अनुत्पाद(पु०)-उत्पत्ति में न आना ।  
अनुत्माद(वि०)-उत्मादहीन । पु०-  
उत्साहहीनता । [ शान्त ।

अनुत्सुक(वि०)-नो उत्सुक न हो,  
अनुत्सेक(पु०)-गर्व या दर्प का अभाव  
अनुत्मेकिन्(वि०)-गर्वहीन, दर्पशून्य  
अनुदक(वि०)-जलरहित, थोड़े जल  
वाला । [ यम ।

अनुदग्र(वि०)-अनुकूच, कमजोर, मुला-  
अनुदरं(वि०)-पसली कमर वाला,  
कमजोर ।

अनुदर्शन(न०)-निरीक्षण, देखना ।  
अनुदा(पा० प०)-वापिस देना ।

अनुदात(वि०)-छोटा, लुब्ध, नीचा  
। [ स्वर ], लघु [ उच्चारण ] ।

अनुदार(वि०)-गदाता, कजूर, अम  
झानू, भतिमझानू, अनुरूप भायां  
वाला । [ हुआ ।

अनुदित(वि०)-न कहा हुआ, न उठा  
अनुदिन-दिवसं(अ०)-प्रतिदिन,  
रोज २ ।

अनुदेयी(स्त्री०)-पुनर्दान, सहचारिका  
अनुदृशू(पा० प०)-मापना, देखना,  
दृष्टि में रखना ।

अनुदृष्टि(स्त्री०)-अनुग्रहपूर्वक दृष्टि ।

अनुद्धन(वि०)-नो उद्धन न हो,  
शौभ्य, शान्त, विनीत ।

अनुदुराग(न०)-उद्वार न करना ।

अनुदुर्ष(पु०)-शान्ति ।

अनुद्वार(पु०)-उद्वार का अभाव ।

अनुद्वेष(वि०)-अविमर्श, वसत, न  
निराळा हुआ ।

अनुद्वेद(वि०)-मुलायम, अनुकूच ।

अनुद्यन(वि०)-नो मेहनती न हो,  
सुस्त ।

अनुद्यम(वि०)-उद्योगहीन, अनुद्योगी  
अनुद्योग(वि०)-सुस्त, काहिल । पु०-  
सुस्ती, काहिली ।

अनुदु(पा० प०)-पीछे दीटना, अनु-  
गमन करना, बीछा करना ।

अनुदुत(वि०)-पीछा किया गया  
अनुसृत । [ पर्व ।

अनुद्वार(पु०)-विवाह न होना, अस्त-

अनुद्विग्न(वि०)-शान्तचित्त ।

अनुद्विग(वि०)-चिन्तारहित, शान्त ।  
पु०-मयरहितता ।

अनुधाव(पा० प०)-पीछे दीटना, अनु-  
सरण करना, पीछर साफ करना,  
दौड़कर निकट पहुंचना ।

अनुधावन(न०)-अनुवन्धात, पीछे  
पहना, झुद्धि ।

अनुधै(पा० प०)-अपानपूर्वक सोचना,  
आशीर्वाद देना ।

अनुनय(पु०)-विनय, क्रोधाभाव ।

नि०-मेहरबान, शान्ति देनेवाला

अनुनयिन्(वि०)-विनयायनत, सम्प ।

अनुनाद(पु०)-आवाज, चयनि ।

अनुनादिन्(वि०)--आवाज देने वाला,  
प्रतिध्वनि करने वाला ।

अनुनायक(वि०)--विनयी, अवगत,  
प्रार्थी ।

अनुनासिक(पु०)--लिनकानासासहित  
मुख से उच्चारण किया जाता है  
जैसे रु,अ,ण,न,म और अनुस्वार

अनुनी(पा० प०)--तरसीय देना, यह-  
कामा, रजामन्द करना, विनय  
करना, खुश करना, आदर करना

अनुन्नत(वि०)--न उठा हुआ, जो  
ऊँचा न हो ।

अनुन्मत्त(वि०)--जो पागल न हो,  
स्वस्थ, शान्त ।

अनुन्माद(वि०)--उन्मादविहीन ।

अनुप-देखो अनुप । [ अन्कार ।

अनुपकार(पु०)--उपकार का अभाव,  
अनुपकारिन्(वि०)--उपकार न करने  
वाला, निकम्मा ।

अनुपक्षित(वि०)--अक्षत, अमष्ट ।

अनुपगत(वि०)--दूर का ।

अनुपगीत(वि०)--अकीर्त्तित, न तारीफ  
किया हुआ । [ अभाव ।

अनुपघात(पु०)--घाति या हति का  
अनुपद्(धा० प०)--दोहराना, कहे को  
फिर कहना ।

अनुपठित(वि०)--दुहराया हुआ ।

अनुपत्त(पा० प०)--पीछे दीहता, अनु-  
गमन करना, पीछा करना । उद्-  
कार पशुवना । [ करना ।

अनुपमर्न-पातः--आक्रमण, पीछा  
अनुपय(वि०)--रास्ते का अनुसरण  
करने वाला । पु०--यद्ग, युगाने

अनुपद्(धा० प०)--पीछे जाना, अनुगमन  
करना ।

अनुपद(वि०)--अनुग, पश्चात्तगामी ।  
पु०--जातिविशेष ।

अनुपद्(अ०)--अनन्तर पीछे २, पदे २  
अनुपदिन्(वि०)--आश्चर्यचकतां,  
हूँहनेवाला ।

अनुपदीना(स्त्री०)--पैर के समान  
छम्बा जूता वा-जीजा ।

अनुपदवी--रास्ता, सहक ।

अनुपघ(वि०)--उपचारहित ।

अनुपधि(वि०)--धोखेरहित ।

अनुपनीत(वि०)--अप्राप्त, न लाया  
हुआ, जिसका उपमर्ग सरकार न  
हुँका हो ।

अनुपन्यास(पु०)--अनिश्चय, सन्देह,  
प्रमाणभाव ।

अनुपपत्ति(स्त्री०)--नाकामयाची,  
युक्ति का अभाव, दारिद्र्य ।

अनुपपन्न(वि०)--अनुचित, असम्भव,  
अधीक्षक ।

अनुपम(वि०)--अतुल्य, अद्वितीय,  
उत्तम, उपमारहित ।

अनुपमा(स्त्री०). कुमुद नाम दिग्गज  
की भायां । [ उपरहित ।

अनुपमित मेघ(वि०)--अद्वितीय, साहू-  
अनुपमर्दन(अ०)--सगाये हुए अतियोग  
की तरदीद न करना ।

अनुपयुक्त(वि०)--वेगीजू, अयोग्य,  
निकम्मा, बेकार । [ कता ।

अनुपयोग(वि०)--बेकार । पु०--निरध-

अनुपस्त(वि०)--न उठा हुआ, न मरा  
हुआ ।

अनुपलब्ध (वि०) - न देखा हुआ,  
अप्रत्यक्ष ।

अनुपलब्धि (स्त्री०) - प्रत्यक्षाद्यभावात्, न  
मिलना, अप्राप्ति ।

अनुपवीतिन् (पु०) - यज्ञोपवीत को न  
धारण करने वाला ।

अनुपगम्य (पु०) - रोगज्ञान के पाच  
विधानों में से एक ।

अनुपसंहारिन् (पु०) - न्यायमत में  
कहा गया एक प्रकार का हेतु-  
भास ( दुष्टहेतु ) । ऐसा हेतु कि  
जिस में अन्वय एवं व्यतिरेक का  
कोई दृष्टान्त न धन सके जैसे  
“ सर्वं नित्यं प्रमेयत्वात् ” इस  
अनुमान में “ सर्वं १ को पक्षत्व  
होने से अन्वय में दृष्टान्त नहीं  
हो सकता और नाही व्यतिरेक  
में दृष्टान्त धनता है क्योंकि सर्व  
को प्रमेयता होने से उसका अभाव  
( अप्रमेयत्व ) कहीं भी सिद्ध नहीं  
हो सकता ।

अनुपमर्ग (पु०) - ऐसा शब्द जिस में  
उपसर्गभाव न हो अथवा जिस  
में उपसर्ग न लगा हुआ हो ।

अनुपमेचन (वि०) - उपसेवन [ दाल,  
भात, कढ़ी ] रहित ।

अनुपस्कृत (वि०) - असंस्कृत, सच्चा,  
वेदांग, अपक्व । [ रहित ।

अनुपस्कार ( वि० ) - अघ्राहारदोष-  
अनुपस्थान (न०) - अनुपस्थिति ।

अनुपस्थित (वि०) - जो उपस्थित न  
हो, गैरहाजिर ।

अनुपस्थिति (स्त्री०) - गैरहाजिरी, याद  
रखने में अशक्तता ।

अनुपहत (वि०) - अक्षत, न साराब हुआ  
हुआ, अप्रयुक्त ।

अनुपा (धा०प०) - अन्य वस्तुके पश्चात्  
पीना, पीने में अनुकरण करना,  
अनुपाटन करना ।

अनुपाकृत (वि०) - मन्त्रों से यज्ञ में  
पशु का पूजन आदि उत्सर्ग उपा  
करण रहलाना है, उसमें रहित ।

अनुपाकृतमांस (न०) ऐसा मांस जो  
यज्ञार्थ न हो । [ न दे ।

अनुपाख्य (वि०) - जो भाषा ० दिखाई  
अनुपात (पु०) - पश्चात्पतन, गणित  
की वैराशिक क्रिया ।

अनुपातक (न०) - प्रसिद्धता आदि  
महाप्राप्तिक के समान वेदनिष्ठा  
आदिसे उत्पन्न एक प्रकारका पाप,  
मनु ने तीस अनुपातक बताये हैं,  
देखी, अ० ११ श्लोक ४४ से पृथक् ।

अनुपान (न०) - औषध का अंग, जो  
औषध के साथ वा पीछे खाया  
जाये जैसे मधु, गुड़ आदि ।

अनुपानपि (वि०) - अनुपान करने योग्य  
अनुपाल (धा०प०) - रक्षा करना, सुभर-

दारी करना, आश्रयपालन करना ।

अनुपालन (न०) - रक्षा, आश्रयपालन  
अनुपुष्प (पु०) - अनुयायी ।

अनुपुष्प (पु०) - अश्वत्थ ।

अनुपूर्व (वि०) - यथाक्रम, मिलमिले  
वार, क्रमानुसार । [ पृ० २ करके ।

अनुपूर्व (न०) - पूर्वशः (क्रि० वि०) - क्रमपूर्वक,

अनुपठ्य(वि०)-क्रमानुसार, सिलसिले  
वार ।

अनुपेत(वि०)-अनुपनीत, अदीक्षित  
अनुत(वि०)-न बोया हुआ, बिना  
बोया हुआ ।

अनुप्रज्ञान(न०)-पता चलाना, दूटना  
अनुप्रदान(न०)-दान, बाह्यप्रयत्न,  
वरिष्ठ । [ राना ।

अनुप्रयोग(पु०)-विशेष प्रयोग, दोह-  
अनुप्रविश(धा०प०)-दागिल होना,  
शामिल होना, आक्रमण करना,  
प्रवेश में अनुसरण करना ।

अनुप्रमक्ति ( स्त्री० )-पहुँच गहरा  
लगाव या प्रेम । [ प्राप्ति

अनुप्राप्ति(स्त्री०)-पहुँचना, आगम,  
अनुप्राशन(न०)-पाना, भक्षण करना  
अनुप्रास(पु०)-यह शब्दालंकार जिस

में किसी पद में एक ही अक्षर  
बार बार आकर उस पद की  
अधिक शोभा का कारण होता है  
अनुप्रेक्षा(स्त्री०)-नेत्र गड़ाकर देखना,  
ध्यान से देखना । [ गमन करना ।

अनुसू(धा०मा०)-पीछे दीहना, अनु-  
अनुसूय ( पु० )--अनुसर, अनुयायी,  
मीकर ।

अनुवन्धू (धा०प०)-किसी वस्तु से  
आधना, लोहना या मिलाना,  
पीछा करना ।

अनुवय्य(वि०)-संधानुमा, जोहानुमा,  
सम्बन्धित ।

अनुवन्ध(पु०)--आधना, लगाव, सम्ब-  
न्ध, आधन, मतीना, दरादा,  
दाप ।

अनुबन्धक(वि०)--सम्बन्धित, जोहा  
हुआ ।

अनुबन्धन(न०)-सम्बन्ध, लगाव ।  
अनुबन्धिन्(वि०)--लगाव रखने वाला,  
सम्बन्धी ।

अनुबन्धी(स्त्री०)-दिक्रा, लण्णा ।  
अनुबन्ध्य(वि०)--यज्ञ में नारने के  
लिये बांधी गई गौ आदि ।

अनुबल(न०)-यह सेना जो आगे लाने  
वाली सेना की सहायता के  
लिये रहती है ।

अनुबुध्(धा० आ०)-जागना, स्मरण  
करना, वाकिल होना ।

अनुबोध(पु०)-पश्चात् बोधन,  
प्रबोधन ।

अनुबोधन(न०)-स्मृति, याती हुई  
बात को याद करना ।

अनुभव(पु०) स्मृति से भिन्न ज्ञान,  
परीक्षा द्वारा प्राप्त ज्ञान ।

अनुभवी(वि०)-अनुभव रखने वाला,  
तजुर्बेकार, जानकार । [ हुआ ।

अनुभयसिद्ध(वि०)-तजुर्बे से जाना  
अनुभाव(पु०)-प्रभाव, महिमा, बड़ाई,  
तेज । [ वाला ।

अनुभावक(वि०)-अनुभव कराने  
अनुभाविन्(वि०)-साक्षात्कारकराने  
वाला ।

अनुनापण(न०)-यह हुए को फिर  
दोहराना, यातपीत, पुस्तनू ।

अनुभासितृ[ता](वि०)-उत्तर में बोलने  
वाला ।



अनुभास(पु०)-प्रकार का कौआ  
अनुभुज्(पा०आ०)-आनन्द उठाना,  
अनुभव करना, बरदाश्त करना ।  
अनुभू(पा०प०)-अनुभव करना,  
नहसूस करना, चखना, बरदाश्त  
करना, आनन्द उठाना, अनुमान  
लगाना ।

अनुभू(वि०)-अनुभव करने वाला ।  
स्त्री०-अनुभव, साक्षात्तज्ञान ।  
अनुभूत(वि०)-अनुभव किया हुआ,  
आजमाया हुआ ।

अनुभूति(स्त्री०)-तजुबों, भाशंका,  
अनुभव, नतीजा, महिमा ।

अनुभूतिप्रकाश(पु०)-माधवाचार्यकृत  
उपनिषदों का भाष्य ।

अनुभोग(पु०)-उपभोगानन्द, सेवा के  
धड़ले में भूनि का दान ।

अनुभ्राता(पुं०)-रुनिष्ठ भ्राता ।

अनुमद्(पा०प०)-प्रसन्न होना,  
सुख पागना ।

अनुमत्त(वि०)-सुखी से पागल हुआ ।

अनुमन(वि०)-स्वीकृत, पसन्द, सुश-  
गवार, अङ्गीकृत । पु०-प्रेमी, न०--  
स्वीकारी, रज्जानन्दी, आशा ।

अनुमति(स्त्री०)-आशा, स्वीकारी,  
मञ्जूरी, सम्मति ।

अनुमतिपत्र(न०)-ऐसी दस्तावेज  
जिस में किसी विषय में रज्जा-  
नन्दी पाई जाये ।

अनुमन(पा०आ०)-रज्जानन्द होना,  
पसन्द करना, मञ्जूरी देना ।

अनुमन्[न्ता](वि०)-अनुमति देने  
वाला ।

अनुमनन(न०)-मञ्जूरी, स्वीकारी,  
बर्दाश्त, स्वतन्त्रता ।

अनुमरण(न०)-पीछे करना, सतीकर्म ।

अनुमरु(पु०)-सरभूमि के पास का  
देश ।

अनुमा(पा०आ०)-अनुमान करना,  
नतीजा निकालना ।

अनुमा(स्त्री०)-अनुमान, अनुमति ।

अनुमान[ता](वि०)-अनुमान करने  
वाला ।

अनुमान(न०)-अटकल, अन्दाजा,  
भावना, कयास, न्याय के अनु-  
सार प्रमाण के चार भेदों में से एक ।

अनुमानोक्ति(स्त्री०)-तर्क, जह ।

अनुमास(पु०)-आने वाला नहीना ।

अनुमासं(अ०)-हरनहीने, प्रतिपाद ।

अनुमित(वि०)-अनुमान किया हुआ,  
विचारा हुआ, कयास किया हुआ ।

अनुमिति(स्त्री०)-अनुमान, नवीन  
न्याय के अनुसार अनुभूति के  
चार भेदों में से एक ।

अनुमित्सा(स्त्री०)-अनुमानकरने की  
इच्छा ।

अनुमुद्(पा०आ०)-सुखी में शामिल  
होना, मञ्जूरी देना, अनुमोदन  
करना, बढ़ावा देना ।

अनुमु(पा०आ०)-मरने में अनुसरण  
करना ।

अनुमेय(वि०)-अनुमान करने योग्य ।

अनुमोद(पु०)-और के सुख से सुख-  
प्राप्ति, अनुमोदन ।

अनुमोदन(न०)--ताईद, मंजूरी, स्वी-  
कारी, सुखदान ।

अनुया (धा० प०)--पीछे जाना या  
चलना, अनुसरण करना, नकल  
करना, माय जाना ।

अनुया (वि०)--अनुगमन ।

अनुयाज(पु०)--यज्ञ का अङ्ग ।

अनुयायी[ता] (वि०)--अनुयायी, पीछे  
जाने वाला ।

अनुयाय-त्रा--यात्रा में पीछे जाने  
वाले, सेवक आदि, अनुगमन,  
अनुयायीपन ।

अनुयात्रिक(पु०)--अनुयायी, सेवक ।

अनुयान(न०)--अनुगमन ।

अनुयायी[न्] (वि०)--पश्चाद्गामी,  
मदूथ, अनुवर, सेवक, पैरोकार

अनुयुज् (धा० भ०)--प्रश्न करना,  
पूछना, समाअतकरना, आदेश  
करना, आज्ञा देना, अनुमति[पति] ।

अनुयुक्त(वि०)--पूछा हुआ, प्रश्न  
किया हुआ, परीक्षा किया हुआ,  
निष्कारित ।

अनुयुक्तिन्(वि०)--परीक्षा लेने वाला,  
आज्ञा देने वाला; समाअत  
करने वाला ।

अनुयोक्त[ा] (वि०)--भूतकाध्या-  
यक, परीक्षक, प्रश्नकर्ता, अनु-  
गम्यमानकर्ता ।

अनुयोग(पु०)--प्रश्न, अनुसंधान,  
परीक्षा, विवेचार, प्रयत्न ।

अनुयोगकृत(पु०)--प्रश्नकर्ता, धर्मगुरु ।

अनुयोगिन्(वि०)--प्रश्न करने वाला,  
जोड़ने या मिलाने वाला ।

अनुयोजम(न०)--प्रश्न, अनुसंधान ।

अनुयोज्य(वि०)--प्रष्टव्य, निन्दनीय,  
धुरा ।

अनुरञ् (धा० उ०)--रक्त होना, प्रसन्न  
होना, अनुरक्त होना, पसन्द  
करना ।

अनुरक्त(वि०)--सुख किया हुआ, रंग  
हुआ, प्रसन्न, सन्तुष्ट, वफादार ।

अनुरक्ति(स्त्री०)--प्रेम, लगाव, प्रह्ला ।

अनुरञ्जक(वि०)--हर्षदायक, प्रीतिकर

अनुरञ्जन(न०)--अनुराग, आह्लादन,  
हर्षजनन ।

अनुरञ्जित(वि०)--सन्तुष्ट, प्रसन्न ।

अनुराग(न०)--टनटन की आवाज ।

अनुरत्न(वि०)--प्रीत, अनुराग में संज्ञा  
हुआ ।

अनुरति(स्त्री०)--अनुराग, प्रेम ।

अनुरध्या(स्त्री०)--पगहणही ।

अनुरसित(वि०)--प्रतिध्वनि करता  
हुआ ।

अनुरस-सितं--प्रतिध्वनि; गूँगे की  
आवाज । पु०-गीणरस ।

अनुरहस(वि०)--छिपा हुआ, गुप्त ।

अनुराग(पु०)--आसक्ति, प्रीति, लाली,  
राग । [ आसक्त ।

अनुरागघत् (वि०)--प्रीत, प्रसन्न,  
अनुरागिन्[नी](वि०)--अनुरक्त, आ-  
सक्त, प्रीतान्वित ।

अनुरागं(न०)--हर एक रात में ।

अनुराध(पु०)--विनती, प्रार्थना, आ-  
राधन ।

अनुराधा(स्त्री०)--एक नक्षत्र का नाम ।

अनुरुद्ध(धा० प०)--साथ २ रीना, सहा-  
नुभूति करना ।

अनुरुध् (धा० व०)--रोकना, घेरना,  
बांधना, अनुगमन करना, प्रेम करना ।

अनुरूप(वि०)--समान, सदृश, तुल्यरूप

अनुरूपता (क्रि० वि०)--सुआफिक ।

अनुरूपेण (क्रि० वि०)--पूर्ववत् ।

अनुरूपशः (क्रि० वि०)--पूर्ववत् ।

अनुरोधन(न०)--सहानुभूति, समवेदना ।

अनुरोधः--धनम्--रुकावट, बाधा, अनु-  
वर्तन, सन्तुष्टि, आग्रह ।

अनुरोधक-रोधिन् ( क्रि० )--अनुरोध  
करने वाला, आग्रही ।

अनुलग्न(वि०)--आसक्त, लगा हुआ

अनुलाप( पु० )--पुनरुक्ति, धार  
धार कथन ।

अनुलास(पु०)--मोर ।

अनुलिप्(धा० प०)--अभिषिक्त करना,  
लेपन करना, मुगन्धि आदि की  
मालिश करना । [हुआ, अनुरक्त ।

अनुलीन(वि०)--छिपा हुआ, लगा

अनुलेपः--नम् अभिषेक, मरहम-लेपन  
करने की वस्तु, गन्धद्रव्यादि का  
लेपन ।

अनुलोम(पु०)--प्रतिलोम का प्रति  
द्वन्द्वी । उतार का सिलसिला,  
संगीतमें स्वरों का उतार, अविलोम

अनुलोमज(वि०)--अनुलोमजात अम-  
तिलोमज, दो वर्णों के संयोग से  
उत्पन्न हुआ ।

अनुलोमन(न०)--कोष्ठधद्रु को दूर करने  
वाली रेचक या भेदक औषध ।

अनुलोमाः(पु० व०)--दो वर्णों के संयोग  
से उत्पन्न हुई जाति ।

अनुलोमाय(वि०)--अच्छे प्रकार से वाला  
अनुलवर्णा(वि०)--अनतिरिक्त, अन्यून-  
धिक, अप्रत्यक्ष ।

अनुवश(वि०)--दूसरे की वृत्ता के  
आधीन । पु०--अधीनता ।

अनुवंश(पु०)--वंश की क्रमागत सूची,  
नूतन वंश ।

अनुवक्र(वि०)--बहुत टेढ़ा ।

अनुयक्ता[तृ] (पु०)--दोहराने वाला ।

अनुवच्(धा० प०)--पीछे कहना वा  
बोलना, दूसरे के लिये बोलना,  
दोहराना, पुकारना ।

अनुवचन ( न० )--पुनरुक्ति, शिष्टाः  
अध्याय, पाठ ।

अनुवत्सर(पु०)--वर्ष, ज्योतिष में  
अनुसार जो पांच वर्षों का युग  
होता है उस का चौथा वर्ष ।

अनुवद्(धा० प०)--बोलने की गलत  
करना, हंसी उड़ाना, कथन करना,  
दुर्वचन कहना ।

अनुवर्त्तन(न०)--अनुगमन, आद्यापा  
लन, परिणाम, पूर्वमूल में से प्रदत्त  
करना ।

अनुवर्त्तिन्(वि०)--आद्याकारी, गता-  
नुगतिक, अनुगात्री, पैरवी करने  
वाला । [ अनुयायी ।

अनुवर्त्मन्(वि०)--पीछे जाने वाला,

अनुवम् (धा०प०)--साथ रहना, भग-  
दोक बचना । [ में से एक ।

अनुवद् (पु०)--अग्नि की साथ जिह्वाओं  
अनुवसित (वि०)--कपड़ों में ढका हुआ,  
लिपटा हुआ, धंधा हुआ ।

अनुवाक (पु०)--दोहराना, पुनःकथन,  
वेद का अध्याय ।

अनुवाक्या (स्त्री०)--प्रधास्तानामी  
अतिशब्द से पढ़ाने योग्य देवता  
के बुलाने का-मंत्र ।

अनुवार (अ०)--वारवार ।

अनुवाच (स्त्री०)--दोहराना, अनुवचन,  
पुनरुक्ति । पु०--लेखन, वक्तृता ।

अनुवाचन (न०)--यज्ञों में विधि के  
अनुसार मंत्रों का पाठ ।

अनुवाद (पु०)--पुनरुक्ति, व्याख्या  
पूर्वक दोहराना, उल्लेख, अनुभा,  
सायान्तर ।

अनुवादक-दिग् (वि०)--अनुवाद करने  
वाला, व्याख्यान करने वाला,  
तत्त्वदीक करने वाला ।

अनुवाद्य (वि०)--व्याख्या करने योग्य  
अनुवादित (वि०)--उल्लेख किया हुआ  
अनुवाचम् (धा०प०)--सुगन्धि देना ।

अनुवासः-सनम्--यस्त्रादि को सुग-  
न्धित करना, महकाना, सुगन्ध  
के अनुसार पिचकारी के द्वारा  
तरल शरीर के भीतर पहुँ-  
चाना । [ वस्तिकर्म किया हुआ ।

अनुवासित (वि०)--सुगन्धमें लसता हुआ  
अनुवासिन् [सी] (वि०)--समीप रहने  
वाला, निकटवर्ती ।

अनुविद् (धा०प०)--प्राप्त करना, प्राप्त  
करना, समझना, धिक्का करना ।

अनुवित्ति (स्त्री०)--प्राप्ति, दामिलकरना

अनुविद्ध (वि०)--छेदा हुआ, मूरास  
किया हुआ, भरा हुआ, व्याप्त

अनुविधा (धा०प०)--विधान करना,  
हुकम मानना, तद् रूप होना ।

अनुविधान (न०)--आज्ञापालन, तद्-  
रूप कार्य । [ आज्ञानुवर्ती ।

अनुविधापिन् [यी] (वि०)--करनावर्ती

अनुविनश (धा०प०)--नष्ट होना, अन्य  
वस्तु के साथ या पीछे शलोप होना ।

अनुविनाश (पु०)--पेड़ का तनाश ।

अनुविश (धा०प०)--अनुगमन करना,  
पश्चात् प्रविष्ट होना ।

अनुवृत् (धा०प०)--पीछा करना, पीछे  
जाना ।

अनुवृत्ति (वि०)--आज्ञा मानने वाला,  
अनुयायी, गतसूत्र में से लिया हुआ,  
शीलानुगत । [ अनुकरण ।

अनुवृत्ति (स्त्री०)--अनुवर्त्तन, अनुरोध,  
अनुवृद्धि (वि०)--क्रमपूर्वक बढ़नेवाला  
अनुवेल (अ०)--लगातार, निरन्तर ।

अनुवेशः-शन्म्--अनुप्रवेश, बड़े भाई  
के विवाह के पहिले छोटे भाई  
का विवाह ।

अनुवेश्य (वि०)--घर से जुटा हुआ  
पड़ोसी । [ घाला ।

अनुव्य (वि०)--अनुगत, पीछे जाने  
अनुव्यध (धा०प०)--जगमी करना,  
फिर से मारना, मजबूर करना ।

अनुव्याध वेध (पु०)--छेदना, मूराच्छ  
करना, मुकसान पहुचाना ।

अनुव्याहरण(न०)--पुनरुक्ति, बार २  
कथन, शाप, घददुआ ।

अनुव्याहार ( पु० )--पूर्ववत्  
अनुव्रज् (धा० प०)--अनुगमन करना,  
आज्ञापालन करना ।

अनुव्रजन(न०)--अनुव्रज्या, अनुगमन,  
सेवा, पीछा करना ।

अनुव्रत(वि०)--निश्चये व्रतानुष्ठान कर  
छिया हो, आसक्त, भक्त ।

अनुशय ( पु० )--दीर्घदेष्ट, पूर्ववैर,  
अनुताप । [ डाह, अनुरक्त ।

अनुशयी(वि०)--द्वेषी, वैरी, भग-  
अनुशर(पु०)--राक्षस ।

अनुशाम्(धा०प०)--सलाह देना, तर-  
गीम देना, घासना करना, सजा  
देना, तारीफ करना, सम्पादन  
करना ।

अनुशासक-शासिन्(वि०)--अनुशा-  
सन करने वाला, हुकूमत करने  
वाला ।

अनुशासन(न०)--सलाह, तरगीम,  
दिशायत, आज्ञा, आदेश ।

अनुशासनपर(वि०)--आज्ञाकारी ।

अनुशासनपर्यन्त (न०)--महाभारत  
का १३वां अध्याय ।

अनुशास्ता-सिता (पु०)--अनुशासक,  
आदेश करने वाला ।

अनुशासित(वि०)--निश्चये आज्ञा  
दीर्घ हो, शिथिल ।

अनुशिक्षि(स्त्री०)--आज्ञा, आदेश ।

अनुशिक्षिन्(वि०)--विद्यार्थी, अन्व्यास  
करने वाला ।

अनुशी(धा० आ०)--साध लेटना या  
सीना, अनुगमन करना, पश्चा-  
त्ताप करना ।

अनुशीलिन( न० )--चिन्तन, मनन,  
विचार, बार २ अभ्यास, भावृत्ति ।

अनुशीलनीय( वि० )--चिन्तन करने  
योग्य, अभ्यास करने योग्य ।

अनुशीलिन(वि०) मनन किया हुआ,  
अच्छे प्रकार से अभ्यास किया  
हुआ । [ क्रन्दन करना ।

अनुशुच् ( धा० प० )--सोध - करना,  
अनुशोक-शोचन-दुःख, पश्चात्ताप,  
रक्ष ।

अनुशोचक-शोचिन्( वि० )--पश्चा-  
त्ताप करनेवाला, कष्टदायक ।

अनुश्रव(पु०)--वेद ।

अनुश्रविक(वि०)--परम्परा से युक्ति  
द्वारा प्राप्त मूलोक्तविषयक [ज्ञान]

जैवैश्वर्य, देवता, अमृत इत्यादिका  
अनुश्लोक(न०)--महावृत्तस्य सान-  
भेद । [ हुआ ।

अनुपक्त( वि० )--सम्पन्नित, लगा  
अनुपंग(पु०)--गहरा लगाव, तात्पर्य,  
दया, करुणा, प्रसंग ।

अनुपंगिन्(वि०)--सम्यन्धरगनेवाला,  
अनुपंग प्रसक्त, भावुक ।

अनुपेक्षः सेचनं--जल छिड़कना ।

अनुपुष्टि(स्त्री०)--सहस्रशी, घापी,  
आठ सतरधाना छन्द ।

अनुपुष्टि(वि०)--क्रमानुसार सहा हुआ ।

अनुष्ठा(पा० च०)-अनुष्ठान करना, सम्पादन करना, शासन करना, समीप खड़े होना, अनुगमन करना ।

अनुष्ठाता[त्] (पु०)-सम्पादन करने वाला, अनुष्ठानकर्ता ।

अनुष्ठात्री (स्त्री०)-सम्पादन करने वाली ।

अनुष्ठापिन् (वि०)-अनुष्ठानकर्ता, सम्पादक ।

अनुष्ठान(न०)-कर्मोत्थन, अभ्यास, अनुशीलन, कार्यकरण । [ वाता ।

अनुष्ठापका (वि०)-सम्पादन करने अनुष्ठापन(न०)-सम्पादन कराना ।

अनुष्ठित(वि०)-किया हुआ, सम्पादित । [ विष्ठा ।

अनुष्ठि-दु(स्त्री)-यथाक्रम, ठीकसिद्ध-अनुष्ठेय-छातव्य(वि०)-सम्पादन के योग्य ।

अनुष्ठा(वि०)-जो गर्म न हो, ठंडा, जलन । न०-उत्पल ।

अनुष्ठावहिका(स्त्री०)-नीलदूबा ।

अनुस्पनन्द(पु०)-पीछे का पहिया ।

अनुसंचर (पा० प०)-साथ चलना, पीछा करना । [ करना ।

अनुसंचरण(न०)-अनुगमन, पीछा अनुसंधा-(पा० च०)-अनुसंधान करना, अभ्येष्टन करना, परीक्षा करना, अनुसरण करना ।

अनुसन्धान(न०)-अभ्येष्टन, चेष्टा, तद्दृष्टीकात ।

अनुसन्धानिन्-पिन् (वि०)-अनुसन्धान करनेवाला, तद्दृष्टीकात करने वाला ।

अनुसंबद्ध(वि०)-साथ जुड़ा हुआ ।

अनुसर (पु०)-अनुयायी, सापी, सेवक ।

अनुसरण(न०)-अनुगमन, पीछा करना, रियाज, आदत ।

अनुसार(पु०)-अनुसरण, अनुक्रम, अनुष्ठान ।

अनुसारक-रिन्(वि०)-पीछे जाने वाला, तद्दृष्टीकात करनेवाला ।

अनुसारणा(स्त्री०)-पीछा, अनुगमन अनुसृ(पा० प०)-पीछे जाना, पीछा करना, समल करना ।

अनुसृति(स्त्री०)-अनुगमन, कुछटा, बसती स्त्री ।

अनुसृष्टि(स्त्री०)-क्रमपूर्वक चरपेसि, हाजिरजवाय औरत ।

अनुसेविन्(वि०)-अमल करनेवाला, सेवन करनेवाला ।

अनुसैन्य(न०)-सेनाका पीछे का भाग अनुस्तरणा(न०)-बारों और फैलाना ।

अनुस्तरणी(स्त्री०)-आच्छादन, ढक्कन, माय ।

अनुस्तोत्र(न०)-वाद में प्रशंसा करना या गुण गाना ।

अनुस्पष्ट(वि०)-साफ, प्रत्यक्ष ।

अनुस्मरणा(न०)-स्मृति, याददाश्त, पुनः पुनः स्मृति ।

अनुस्मृ(पा० प०)-याद करना, सोचना

अनुःस्मृति(स्त्री०)-अनुस्मरण, बार  
बार'मोद । [ हुआ, ग्रन्थिन ।

अनुस्मृत(वि०)-सोया हुआ, पिरोया

अनुस्वान( पु० )-अनुरणन, मकार,  
प्रतिध्वनि ।

अनुस्वार(पु०)-म्बर के पीछे उच्चारण  
होनेवाला एक अनुनासिक वर्ण ।

अनुहव(पु०)-निमन्त्रित करना ।

अनुहुंका(या०द०)-गजने की नकल  
करना, हुंकारना ।

अनुहुंकार(पु०)-गजने की नकल ।

अनुह(धा०प०)-नकल करना, तट्टित  
होना । [ तुल्यरूप ।

अनुहरण-हारः-नकल, सन्मानता,

अनुहारी(वि०)-अनुकरण करनेवाला

अनुहोड(पु०)-छकड़ा ।

अनूक(पु०)-गतजन्म, पूर्वजन्म ।

अनूकी-कुल, वध, शील, स्वभाव ।

अनूकाश(पु०)-रोगनी का अपव,  
वैदाहरण, तमचील ।

अनूक्ति(स्त्री०)-वैदपाठ, पश्चाद्ब-  
र्णन, उपाख्यानरूप से दोहराना ।

अनूचान( वि० )-विनीत, अविनय,  
खामबंदविषय । [ हुआ ।

अनूह(वि०)-अविवाहित, न खेजाया

अनूदमान(वि०)-छत्राशील, शर्मिला

अनूदा(स्त्री०)-अविवाहिता स्त्री ।

अनूति(स्त्री०)-अनागमन ।

अनूदक(न०)-जलामाय, अक्षरपण ।

अनूदिन(वि०)-कदा हुआ, वर्णन  
किया हुआ, अनुवादित ।

अनूय(वि०)-अनुवाद, अनुवादनीय

अनून(वि०)-असह्य, समग्र, पूर्ण,  
अहीन, अन्यून ।

अनूनक(वि०)-पूर्वयत् ।

अनूप(वि०)-जलबहुल [ देश ], जल-  
प्लावित [ स्थान ], तर, जल से  
परिपूर्ण । पु०-जल से परिपूर्ण  
देश, दलदल, तालाब, सादर,  
महिष, मँदक, हम्ती ।

अनूपज(न०)-ताजा अदरक ।

अनूपदेश(पु०)-जल से भरा हुआ देश ।

अनूपप्राय(पु०)-जलपूर्ण, दलदलयुक्त ।

अनूप्य(वि०)-दलदल या तालाब में  
होने वाला ।

अनूरु(वि०)-रुक् [ जघा ] रहित ।  
पु०-सूर्य का चारपि अरुण, जमा-  
काल ।

अनूरुसाराधि(पु०)-सूर्य ।

अनूर्जित(वि०)-रुमज्जोर, शक्तिहीन,  
दुर्परहित ।

अनूर्ध्व(वि०)-अनुद्य, निम्नरूप ।

अनूर्मि(वि०)-निश्चल, जहरी से न  
हिलाया हुआ ।

अनूह(वि०)-चिन्ताहीन, बवाल न  
करनेवाला ।

अनूच(वि०)-श्रवाहीन, श्रवणदोष-  
पाठ न करनेवाला ।

अनूजु(वि०)-टेढ़ा, जो सीधा न हो,  
क्रूर, बेइमान ।

अनूय(वि०)-जज्ञ से मुक्त ।

अनूगता(स्त्री०)-श्रव से लुटकारा ।

अनूगिन्(वि०)-अक्षणी, ज्ञानमुक्त ।

अमृत(वि०)-अमृत, भूँडा । न०--

भूँडा, धोखा, फरेब, कृपि ।

अमृतवादी(वि०)-भूँडा, भूँडा धोखे-  
वाला । [ वाला ।

अमृतघ्न(वि०)-घादेखिलाफी करने  
अमृतक(वि०)--भूँडा धोखे वाला ।

अमृत(स्त्री०)-अमृतवा क्रतु, रजोदर्शन  
से पूर्व का काल । [ की कन्या ।

अमृतकन्या(स्त्री०)--रजोदर्शन से पूर्व  
अनेक(वि०)--एक नहीं, एक से अधिक,

अमृत, कतिपय, विविध, विभक्त ।

अनेककृत(पु०)--शिव का नाम ।

अनेकगुण(वि०)--विविध गुणोंवाला ।

अनेकगुप्त(पु०)--एक राजा का नाम ।

अनेकचित्त(वि०)--बचल स्वभाव ।

अनेकज(वि०)--अनेक धार, चंदन

हुआ । पु०--पत्नी ।

अनेकप(पु०)--हाथी ।

अनेकधा(अ०)--अनेक प्रकार से ।

अनेकमूर्ति(पु०)--विष्णु का नाम ।

अनेकरूप(वि०)--बहुत से आकारों

वाला, कई किसम का, बचल ।

पु०--परमात्मा का विशेषण ।

अनेकलोचन(पु०)--शिव, इन्द्र, परब्रह्म

अनेकविध(वि०)--संस्कृतिक, विविध ।

अनेकशः(अ०)-अक्सर, अनेकवार ।

अनेकशब्द(वि०)-पर्यायवाची ।

अनेकाकिन्(वि०)-अकेला नहीं, किसी

के साथ में । [ अनिश्रित ।

अनेकान्त(वि०)--सन्दिग्ध, बचल,

अनेकार्थ(वि०)--बहुत से अर्थोंवाला

[ शब्द-जैसे गो, अमृत, अक्ष आदि ]

अनेकज(वि०)--हरकत न करनेवाला,  
स्थिर, गुरुप, ब्रह्म का विशेषण ।

अनेक(पु०)--मुखं पुरुष, मुहिर्हीन  
अनुपम ।

अनेकमूक(वि०)-बहरा और गुंगा ।  
जन्मा, भूत, शठ, धिक्मानु ।

अनेन(वि०)--पापरहित, दीपहीन ।

अनेनस्(वि०)-पूर्ववत् ।

अनेन(पु०)-जिसके ऊपर कोई प्रभु  
न हो, चक्रवर्ती ।

अनेहम् [ हा ] (पु०)-काल, समय ।

अनेक्य(न०)-देवों का अमाय, अने-  
कता, फट, गुरुप । [ बचल ।

अनेकान्त(वि०)-अनिश्चित, अस्थिर,

अनेकान्तिक-न्तिकी(वि०)-पूर्ववत् ।

अनेकान्त्य(न०)-बचल स्वभाव ।

अनौ(अ०)-तह, निषेध व अभाव में

प्रयुक्त होता है ।

अनौकशाधी(पु०)-घर में न सीने

वाला, फकीर, भिखमंगा ।

अनौकट(वि०)-गृहीन । पु०-वृक्ष ।

अनौदन(वि०)-भोजनहीन । [ तता

अनौचित्य(न०)-अयोग्यता, अनुचि-

अनौजस्य(न०)-तेज धा बल का

अभाव ।

अनौकृत्य(न०)-गर्वहीनता, लज्जा-

शीलता, विनय ।

अनौरस(वि०)-जो आत्मन न हो,

गोद लिया हुआ ।

अंचू(प्रा० पु०)-नामन करना, पूजन करना

अन्त(धा० पु०)-आंधना । [ अंतति ]



अन्तः(वि०)-नजदीक, अन्तिम, प्रिय-  
दशन, सब से नीचे का, सब से  
छोटा, अन्तिममोहर । पु०-नाश,  
स्वरूप, प्रान्त सीमा, निश्चय,  
आवयव । न०-स्वरूप, स्वभाव ।

अन्तःकरण ( न० )-अन्तरिन्द्रिय,  
धीनरामक इन्द्रिय, मन ।

अन्तःकुटिल ( पु० )-शुद्ध । वि०-जो  
अन्तःकरण में कुटिल हो ।

अन्तःकृमि-पेट में उत्पन्न हो जाने  
वाले कीड़े, एक प्रकार का रोग  
विशेष । [ अन्दरूनी गड़बड़ ।

अन्तःकोप(पु०) छिपा हुआ गुस्सा,  
अन्तःकोप(न०)-अन्दर का अन्दर  
का भाव । [ अन्दरूनी ।

अन्तःधर(वि०)-शरीर में भरा हुआ,  
अन्तःपट(अस्त्री०)-परदा, आड़, आड़  
करने का कपड़ा ।

अन्तःपरिधान(न०)-सब से नीचे का  
कपड़ा ।

अन्तःपुर(न०)-जनागलाना, हरन,  
घर में स्त्रियों के रहने का स्थान,  
घर में रहने वाली स्त्रिया ।

अन्तःपुराव्यय(पु०)-राजा के अन्तः-  
पुर का रत्नक ।

अन्तःप्रकृति ( स्त्री० )-अन्तिमगड़बड़,  
मनुष्य का अन्दरूनी स्वभाव ।

अन्तःशर ( पु० )-बीमारी, शरीरस्थ  
रोग । [ ज्वर ।

अन्तःशिला ( स्त्री० )-एकनदी का  
अन्तःसत्त्व(वि०)-नीतरी वाक्य रखने  
वाला ।

अन्तःसत्त्वा(स्त्री०)-अल्लातक, गर्भिणी  
अन्तःसार(वि०) नजदीक, शक्तिशाली  
अन्तःस्वेद(पु०)-हाथी ।

अन्तःक(पु०)-नीत यमराज, काल,  
सीमा । वि०-अन्त करने वाला,  
नाशक । [ कारी, मृत्युकर ।

अन्तःकर-करण-कारिन्(वि०)-नाश-  
अन्तःकर्मन्(न०)-मृत्यु, नाश ।

अन्तःकालः-वेला-मृत्यु का समय ।  
अन्तःकृत(पु०)-मृत्यु ।

अन्तःकारक(वि०) नाश करने वाला,  
उधार करने वाला । [ दाहक्रिया ।

अन्तःक्रिया ( स्त्री० )-अन्तर्गोष्ठिकर्म,  
अन्तःग(वि०)-अन्त तक पहुँचा हुआ,  
अच्छी तरह वाकित ।

अन्तःगति(स्त्री०)-मृत्यु, नाश, शरीर  
का प्रकृति में लय होना ।

अन्तःगमन (न०)-अन्त तक जाना,  
समाप्त करना, पूरा करना, मृत्यु,  
नाश ।

अन्तःगामी-मिनी(वि०)-नष्ट होने वाला  
अन्तःधर(वि०)-द्वार उपर घूमने  
वाला । सीमा तक पहुँचने वाला,  
पूरा करने वाला ।

अन्तःज(वि०)-अन्त में उत्पन्न हुआ ।  
अन्तःत (अ०)-आखिरकार, अन्त में ।

अन्तःभव-भाज्(वि०)-अन्तिम, अन्ते-  
स्थित ।

अन्तःलीन(वि०)-छिपा हुआ ।  
अन्तःवत् [ वान् ] ( वि० )-शान्त,  
विनाशी, सीमाबद्ध ।

अन्तशय्या(स्त्री०)--मृत्युशय्या, मृत्यु,  
मरघट, अरधि, मृत्युसमय पृथ्वी  
पर लेटाना ।

अन्तसङ्ग(पु०)--शिष्य ।

अन्तर्(अ०)--मध्य, प्रान्त, स्वीकार  
। इत्यादि शब्दों में प्रयुक्त होता है;  
समास में अन्तर् का र् कहीं र  
विसर्ग नि परिणत हो जाता है ।

अन्तर(न०)--अवकाश, अवधि, परि-  
धाम, अन्तर्धान, नेद, सादृश्य,  
अवसर, अन्तरात्मा, मध्य, छिद्र,  
आतमीय, बिना, बही, सूक्ष्म ।

अन्तरसं(पु०)--वसःस्थल ।

अन्तरग्नि(पु०)--जठराग्नि ।

अन्तरंग(वि०)--आतमीय, स्वसम्पर्क,  
'अन्दरूनी' न०--हृदय, मन, भीतर  
का भाग, गहरा होस्त ।

अन्तरचक्र(पु०)--दिशाओं और विदि-  
शाओं के बीच के अन्तर को चार  
भागों में बाँटने से घने बुद्बुद भाग  
अन्तरक्ष(वि०)--भीतर की बात जानने  
वाला ।

अन्तरदिशा ( स्त्री० )--दिशाओं के  
बीच की दिशा, विदिशा ।

अन्तरा(न०)--मध्य, निकट, वर्जन,  
विना ।

अन्तराकाश(पु०)--ईश्वर नामक वायु,  
ग्रह, जो हृदय में रहता है ।

अन्तराकृत(न०)--छिपा हुआ दुरादा ।

अन्तरागार(न०)--घर का अन्दरूनी  
भाग । [जीवात्मा वा मन, हृदय ।

अन्तरात्मा(पु०)--अन्दरूनी आत्मा,

अन्तरापण(पु०)--नगर के भीतर का  
बाजार ।

अन्तरापत्न्या(स्त्री०)--गमिणी स्त्री ।

अन्तराय(पु०)--विघ्न, रुकावट । वि०-  
कर्म डालने वाला । [ अन्तराय  
भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ]

अन्तराराम(वि०)--अपने आप में सुग  
होने वाला ।

अन्तराल(न०)--अभ्यन्तर, बीच, मध्य ।  
[ दूसरा रूप अन्तराल भी  
होता है ]

अन्तरालक(न०)--अभ्यन्तर ।

अन्तरिक्ष(न०)--पृथिवी और भूयाँदि  
लोकों के बीच का स्थान ।

अन्तरिक्ष(वि०)--अन्तर्धान, प्राप्त,  
उपयुक्त ।

अन्तरीरिजल(न०)--सूर्य और पृथिवी  
के बीच का जल, वायु, आकाश ।

अन्तरीक्षोदर ( वि० )--जिस का  
भीतर का भाग अन्तरिक्ष के  
वर्णन होता हो ।

अन्तरिक्षग-चर(पु०)--पक्षी ।

अन्तरिक्षजल(न०)भोव, आकाश  
में रहने वाला जल ।

अन्तरिक्षलोक(पु०)--स्वर्ग और  
पृथिवी के बीच का लोक ।

अन्तरीप(पु०)--स्थल का भाग जो  
समुद्र में को निकला हुआ होता  
है, द्वीप । [ वस्त्र ।

अन्तरीय(न०)--अधोवस्त्र, परिधान

अन्तरे(अ०)--मध्य में, बीच में, अभ्य-  
न्तर में ।

अन्तरेण(न०)-बीच में, मध्य में, बिना ।  
 अन्तर्गद्गु(वि०)-निरर्थक, व्यर्थ ।  
 अन्तर्गत(वि०)-बीच में गया हुआ,  
 छिपा हुआ, अन्तर्द्वारी, विस्मृत,  
 आभ्यान्तर ।  
 अन्तर्गम्(धा० प०)-बीच में जाना,  
 बीच में पहुँचा, शामिल होना,  
 विनष्ट होना ।  
 अन्तर्गामी[ नृ ] (वि०)-अन्तर्गत ।  
 अन्तर्गर्भ(वि०)-गर्भ वाली, अभ्यन्तर-  
 युक्त ।  
 अन्तर्गृह(वि०)-भीतर छिपा हुआ ।  
 अन्तर्गृह(न०)-घर का भीतर, यन्त्रालय  
 में एक पवित्र स्थान का नाम ।  
 अन्तर्गण(पु०)-दर्शकों के बाहर आंगन  
 अन्तर्धान(पु०)-बीच में मारना ।  
 अन्तर्जट्टर(न०)-पेट ।  
 अन्तर्जाति(वि०)-अन्दर की ओर उत्पन्न  
 हुआ । [ हुआ जान ।  
 अन्तर्ज्ञान(न०)-आभ्यन्तर या छिपा  
 अन्तर्द्वार(न०) सुराधीश, स्मिष्ट ।  
 अन्तर्द्वार-दाहः-अन्दर की गर्मी,  
 सोजिश । [ हो ।  
 अन्तर्द्वार(वि०)-जिस का हृदय दुःखी  
 अन्तर्द्वार(स्त्री०)-अपने आप को देख-  
 ना [ जानना ] ।  
 अन्तर्द्वार(न०)-प्रकोष्ठद्वार, छिपा  
 हुआ घर का दर्वाजा ।  
 अन्तर्धा(धा० प०)-अन्दर रखना, जमा  
 करना, प्रविष्ट करना, छिपाना,  
 अन्तर्धान होना ।  
 अन्तर्धा(स्त्री०)-छिपाना, प्रोक्षणी ।

अन्तर्धान(न०)-दिखलाई न देना,  
 दृष्टि से बाहर होना ।  
 अन्तर्धानगत(वि०)-अदृश्य, दिखलाई  
 न देने वाला ।  
 अन्तर्धापक( वि० )-छिपाने वाला  
 आँखों से ओझल करने वाला ।  
 अन्तर्धा(पु०)-अन्तर्धान, दृष्टि से  
 - ओझल होना ।  
 अन्तर्हित(वि०)-अलग किया हुआ,  
 ओझल, छिपा हुआ, विनष्ट,  
 अदृष्ट ।  
 अन्तर्निहित(वि०)-अन्दर की ओर  
 छिपा हुआ । [ जग्न ।  
 अन्तर्निष्ठ( वि० )-आत्मचिन्तन में  
 अन्तर्भव(वि०)-अन्दरूनी, भीतर का  
 अन्तर्भाव(पु०)-अन्तर्गत वस्तु, अन्त  
 र्धान ।  
 अन्तर्भाषिना(स्त्री०)अन्तर्गति, भीतर  
 सोचना, या चिन्ता करना ।  
 अन्तर्भिन्न(वि०)-विरोध के कारण  
 टूटकर २ हुआ । [ करना ।  
 अन्तर्भा(धा० प० )-अन्दर शामिल  
 अन्तर्भूत(वि०)-शामिल किया हुआ,  
 अन्तर्गत । [ का ज्ञान ।  
 अन्तर्भूमि(स्त्री०)-पृथिवी के अन्दर  
 अन्तर्भेद(पु०)-अन्दरूनी कतगष्ट ।  
 अन्तर्भेद(वि०)-उदासीन, समशील  
 चिन्तानुर ।  
 अन्तर्भाम(पु०)-खान का रोकना ।  
 अन्तर्भामी(पु०)-अतःकरणनियामक,  
 आत्मा, जीव, पुरुष, ईश्वर ।  
 अन्तर्भाग(पु०)-ध्यान में जान होना ।

अन्तर्लोक(वि०)--छिपा हुआ, अदर की  
तरफ़ पोशीदा । [ अन्त ।

अन्तर्वैशिक-वामिक( पु० )--अंत पुरा-  
अन्तर्वैशिक( वि० )--अदरनी, जिस के  
भीतर कोई वस्तु हो ।

अन्तर्वैशिक-वर्तनी(स्त्री०)--गर्भिणी ।  
अन्तर्वैशिक(पु०)--पेट की गड़बड़, अद-  
रजनी । [ वाला ।

अन्तर्वैशिक(वि०)--भीतर की ओर रहने  
अन्तर्वैशिक(न०)--नीचे का कपड़ा ।

अन्तर्वैशिक(वि०)--शास्त्रज्ञ, शास्त्रवित्त  
अन्तर्वैशिक--हर्म अंदर दाखिल होना,  
पुसना, प्रवेश ।

अन्तर्वैशिक(पु०)--अदर की बेंचनी, अदर  
का खुदर ।

अन्तर्वैशिक(स्त्री०)--अस्त्रावर्त देश, गंगा  
यमुना के मध्यवर्ती देश, दुआम  
अन्तर्वैशिक(न०)--घर के भीतर के कमरे  
अन्तर्वैशिक(पु०)--अन्तर्वैशिक, गूढ़हास  
अन्तर्वैशिक( वि० )- गुप्त, छिपा हुआ,  
तिरोधान ।

अन्तर्वैशिक(न०)--हृदय के भीतर का भाग  
अन्तर्वैशिक(पु०)--अन्तर्वैशिक, नापित,  
मुनिविशेष ।

अन्तिक(स्त्री०)--नाटक में यही वहन  
की धोलते हैं। अ०-सामने, निकट ।  
अन्तिक(वि०)--निकट, समीप, नजदीक,  
अन्तगाभी । न०--समीपता ।

अन्तिक(अ०)- समीप में, करीब में ।  
अन्तिकतम( वि० )--अतिनिकट, अ-  
न्तिकतम, मेदिन ।

अन्तिका(स्त्री०)--यही वहन, चूल्हा,  
एक पीछे का नाम ।

अन्तिकाश्रय(पु०)--निरत भाग्य, तपत्र  
अन्तिक(वि०)--अन्तिकतम, चरम, अति-  
निकट ।

अन्तिकमांक(पु०)--नी का अङ्क ।  
अन्तिकमांशुलि( स्त्री० )--कमिष्टिका  
चङ्गली ।

अन्तिक(स्त्री०)--अङ्गीठी, चूल्हा ।  
अन्तिकवासी( पु० )--शिल्प, अन्तिकाल,  
पुरवे में रहने वाला ।

अन्तिक(वि०)--अन्तिक, अन्तिक, अन्तिक,  
चरम, शेष, शेषोत्पन्न, न०--दश  
सागरसंस्था, सहस्रलक्षकोटि, द्वाद-  
शलक्ष । पु०--अन्तिक, अन्तिक या अन्तिक  
चाव ।

अन्तिक(पु०)--शूद्रजाति का अनुष्य ।  
अन्तिककर्म(न०)--अन्तिककर्म ।  
अन्तिकगमन(न०)--अन्तिककुलोत्पन्न स्त्री  
का नीचकुलोत्पन्न पुरुष के साथ  
समागम ।

अन्तिक(पु०)--शूद्र, शूद्रातिशूद्र, राजक  
आदि सात जाति ।

अन्तिक(स्त्री०)--नीचजाति की स्त्री ।  
अन्तिकजन्मा(पु०)--चतुर्थवर्ण, शूद्र ।  
अन्तिकजानि(पु०)--अन्तिक जाति ।  
अन्तिक(न०)--देवती नक्षत्र, भीतराशि ।  
अन्तिकवर्ण(पु०)-- शूद्र ।

अन्तिका( स्त्री० )--शूद्रजाति की स्त्री  
ज्योतिष में अन्तिका का नाम ।  
अन्तिकावासी(पु०)--अन्तिकाल या अन्तिका  
जाति का पुरुष ।

अन्तर्प्राप्ति(पु०)--संन्यासी, बीषे आ-  
श्रम का । [ दाहकर्म ।

अन्तर्प्रेष्टि(स्त्री०)--मृतकका दाहादिकर्म

अन्तर्प्राप्ति ( स्त्री० )--अन्तर्प्रेष्टिकर्म,  
अन्न(न०)--आंत, अंतही ।

अन्धकूपजन(न०)--आंती की गड़गड़ाहट ।

अन्धबुद्धि(स्त्री०)--आंत उतरने का रोग

अन्ध्रंधमि(स्त्री०)--बद्धजमी, आंती  
का सूजन ।

अन्ध्राद(पु०)--आंती का कीड़ा ।

अन्ध(धा०प०)धांधना, जकड़ना ।

अन्ध(पु०)--धांधना ।

अन्धिका(स्त्री०)--अतिका का पर्या-  
यवाची ।

अन्धु-न्धू(स्त्री०)--स्त्रियों के पैर का  
एक भूषण, जंजीर या घेड़ी, हाथी  
के पैर बांधने का रस्सा ।

अन्धुक-न्दुक(पु०)--पूर्वपक्ष ।

अन्धु (धा० उ०)--अंधा होना, अंधा  
करना ।

अन्ध(वि०)--अंधा, दृष्टिहीन । न०--  
अंधकार, आत्मज्ञान का अभाव,  
अविद्या, लज्जा । पु०--अंध, परित्या-  
जकविशेष ।

अन्धक(वि०)--अंधा । पु०--करयप  
भीर दलिका पुत्र जो असुर था ।

अन्धकरिपु-घाती-शत्रु(पु०)--अंधक  
का मारने वाला शिव ।

अन्धकवर्त(पु०)--एक प्रवर्त का नाम ।

अन्धकार(पु०)--अंधिचारा ।

अन्धकारि(पु०)--शिव का विशेषण ।

अन्धकूप(पु०)--ऐसा कुंआ जिसका  
मुंह ढक गया हो और वृत्तों में  
छिप गया हो ।

अन्धतमस(न०)--घिलकुल अंधेरा ।

अन्धतमसा(स्त्री०)--रात ।

अन्धघी(वि०)--जो बुद्धि से अंधा हो ।

अन्धपूतना(स्त्री०)--बच्चों के रोग  
उत्पन्न करने वाली एक राक्षसी ।

अन्धंकरणा(वि०)--अंधा करने वाला ।

अन्धंभविष्णु-भावुक( वि० )--अंधा  
होनेवाला ।

अन्धसू(न०)--अन्न, भात, चावल ।

अन्धिका(स्त्री०)--रात्रि, जुआ खेलना,  
स्त्रियों की जातिविशेष, आंखों  
का एक रोग ।

अन्धीक(धा० उ०)--अंधा करना ।

अन्धीकृतात्मा(पु०)--अंधे मनवाला ।

अन्धीभू(धा०प०)--अंधा होना ।

अन्धु(पु०)--कुआं, कूप, उपस्थेन्द्रिय ।

अन्धुल(पु०)--शिरीष नामक द्रव्य ।

अन्धु ( पु० )--देशभेद, जातिभेद ।

[ बहुवचन में प्रयोग होता है ]

अन्धुभूत्याः--एक राजवंश का नाम ।

अन्न(न०)--भोज्यपदार्थ, पक्षे हुए  
चावल, अनाज, गले, पृथिवी,  
विष्णु । पु०--भूयं । वि०--खाया  
हुआ, भोजन दिया हुआ ।

अन्नकाल(पु०)--गानाखाने का समय

अन्नकूट(पु०)--पक्षे हुए चावलों का  
एक यज्ञ देर ।

अन्नकोष्ठक( वि० )--कोठार, अनाज  
भरने का घर, विष्णु, भूयं ।

अन्नगन्धि(पु०)-अतिसार, दस्तों का रोग ।

अन्नज-जात(वि०)-अन्न से उत्पन्न  
अन्नजल(न०)-दानापानी, भोजनमात्र  
अन्नद-दाता(वि०)-भोजन देनेवाला,  
शिवका विशेषण ।

अन्नदा(स्त्री०)-दुर्गा या अन्नपूर्णा ।  
अन्नदास(पु०)-भोजनमात्र पर नौ-  
करी करने वाला ।

अन्नदेयता(स्त्री०)-भोज्यपदार्थों की  
रक्षा करने वाला देयता ।

अन्नद्वेष(पु०)-भोजन में अरुचि, भूख  
का कम होना ।

अन्नपति(पु०)-सावित्री, अग्नि और  
शिव का विशेषण ।

अन्नपाक(पु०)-भोजन का पकाना,  
पेट में भोजन का पचाना ।

अन्नपू(वि०)-अन्न को पवित्र करने  
वाला अर्घ्यांत सूर्य ।

अन्नपूर्णा(वि०)-अन्न से भरा हुआ ।

अन्नपूर्णा(स्त्री०)-दुर्गा का एक भेद ।

अन्नप्राशः-जनम्-सोलह संस्कारों  
में से एक, जिस में उत्पत्तिके पश्चात्  
छठे या आठवें गहरीने में बच्चे  
को प्रथम अन्न खिलाया जाता है ।

अन्नमय-यी(वि०)-अन्नयुक्त, अन्न  
का घना हुआ ।

अन्नमज्ज(न०)-पायाना, विष्टा ।

अन्नपस्त्र(न०)-भोजन और वस्त्रमात्र  
अन्नविस्तार(पु०) पेट में गड़बड़,  
अन्न का गवपरिवाह ।

अन्नात्(वि०)-अनाज खानेवाला ।

अन्नाद्(वि०)-अनाज खाने वाला,  
दीप्ताग्नि । पु०-विष्णु ।

अन्नाशन(न०)-विधि से अन्न का  
सुलाना ।

अन्य(वि०)-दूसरा, भिन्न, असदृश, पर,  
विभिन्न, अन्यतर, समान, कोई ।

अन्यक(वि०)-अन्य, भिन्न ।

अन्यकारुका(स्त्री०)-शकृतकीट ।

अन्यक्षेत्र(न०)-दूसरा क्षेत्र, दूसरे की  
स्त्री ।

अन्यग-गामिन्(वि०)-दूसरे के पास  
जानेवाला, व्यभिचारी ।

अन्यच्च(अ०)-और भी ।

अन्यत्(वि०)-इतर, भिन्न ।

अन्यतः(अ०)-अन्यत्, और से,  
दूसरे से ।

अन्यतम(वि०)-यष्टुतर्कों में से एक ।

अन्यतर(वि०)-दो में से एक ।

अन्यतरतः(अ०)-दो ओर में से एक  
ओर से । [ अन्यतर दिन में ।

अन्यतरेद्युः(अ०)-एक न एक दिन ।

अन्यतस्त्य(पु०)-प्रतियोगी, शत्रु ।

अन्यत्र(अ०)-दूसरे स्थान में, दूसरे  
स्थान से, दूसरे अवसर पर ।

अन्यग्रमनम्(वि०)-अन्यत्रचित्त, जिस  
का ध्यान किसी और विषय पर  
लगता हुआ हो ।

अन्यथा(अ०)-विपरीत, चलाटा,  
विरुद्ध, और का और, विना,  
व्यतिरेक, अगत्य ।

अन्यथाकार(पु०)-तबदील करने वाला,  
मदलने वाला ।

अन्यथाभाष(पु०)-तबदीली, विभेद,  
दूसरे प्रकार से होना । [ वाला ।

अन्यथावादी(वि०)-झूठा/झूठ प्रोलने  
अन्यथासिद्ध(वि०)-गलत सिद्ध हुआ ।

अन्यथास्तित्रि(स्त्री०)-न्याय में एक  
दोष जिस में यथार्थ नहीं किन्तु  
और कोई कारण दिखाकर किसी  
वात की सिद्धि की जाय ।

अन्यदा(अ०)-अन्य समय में, काल-  
स्तर में ।

अन्यदीय(वि०)-दूसरे में या दूसरे का  
अन्यदुर्बह(वि०)-दूसरी से लेजाने या  
परदाशत करने के अयोग्य ।

अन्यनाभि(वि०)-दूसरे पंथ से सम्बंध  
रखने वाला । [ वाला ।

अन्यपर(वि०)-दूसरे में भक्ति रखने  
अन्यपुष्टा(स्त्री०)-कोयल, कोकिल ।

अन्यपूर्वा(स्त्री०)-ऐसी स्त्री जिसकी  
दूसरे से प्यं मगाई होगई हो,  
दूसरी धार बिवाही हुई स्त्री ।

अन्यभृत(पु०)-कौआ ।

अन्यभृत(पु०)-कोयल ।

अन्यमनस्क(वि०)-भिन्नचित्त, अन्य-  
मना, दूसरे के ध्यान में लगा हुआ ।

अन्यलिङ्ग(वि०)-दूसरे का लिंग ले  
लेने वाला अर्थात् विशेषण ।

अन्यविचलित(वि०)-अन्यपुष्ट, दूसरे  
से पला हुआ, कोयल ।

अन्ययादी(वि०)-झूठी गवाही देने  
वाला, मुद्दाभलह ।

अन्यथाप(पु०)-कोयल, जिसकी वायत  
कहा जाता है कि वह अपने  
अण्डी को दूसरी चिट्ठिया के  
धींसले में छोड़ देती है ।

अन्यवृत्त(वि०)-भवैदिक अनुष्ठानों  
का करनेवाला, वेदभिन्न देव-  
ताओं का पुजक ।

अन्यमंगम(पु०)-अन्य स्त्री के साथ  
समागम, अनुचित समागम ।

अन्यस्त्री(स्त्री०)-दूसरे की स्त्री ।

अन्या(वि०)-न चूखने वाला ।

अन्यार्थ(वि०)-विभिन्न अर्थों वाला ।

अन्यादृक्(वि०)-अन्य प्रकार का ।

अन्यादृश(वि०)-पूर्वगत ।

अन्याप(पु०)-न्याय से भिन्न, अनी-  
चित्त, अयुक्ति । [ वाला ।

अन्यापी [न्] (वि०)-अन्याप करने

अन्याम्य(वि०)-अनुचित, अयोग्य,  
असङ्गत, गर्हित, धर्मविह्वल ।

अन्यून(वि०)-न्यूनतरहित, न्यूनपूर्ण ।

अन्येद्युः(अ०) दूसरे दिन, दिवसा-  
न्तर में, अन्य दिन । [ का ।

अन्येद्युक्त(वि०)-रोजाना, प्रतिदिन

अन्योढा(वि०)-दूसरे की यिवाही

हुई, दूसरे की स्त्री ।

अन्यौदर्य(वि०)-अन्यनातृज, विलासिन,  
दूसरे उदर से उत्पन्न हुआ,  
साँतेली भा का । [ उजायतः ।

अन्योन्य(वि०)-परस्पर, इतरेतर,  
अन्योन्याश्रय(वि०)-जो एक दूसरे का

आश्रय करता है, न्यायमत में  
तर्क विशेष ।

अन्वय [च] (वि०) - पश्चाद्गामी,  
अनुग । अ० - पश्चात्, पीछे से ।

अन्वय (वि०) - दिखलाई देने वाला,  
पीछा करने वाला ।

अन्वय (वि०) - अनुगामी ।

अन्वय (पु०) - यश, कुल, अनुगमन,  
सम्बन्ध, वाक्य की व्याकरणानु-  
सार तरतीब । [ रखने वाला ।

अन्वयवत् (वि०) - सम्बन्ध या सम्बन्ध

अन्वयगत (वि०) - खान्दानी, परम्प-  
रागत ।

अन्वयी (वि०) - अनुगामी, सम्बन्धी ।

अन्वय (वि०) - स्पष्ट अर्थ वाला ।

अन्वयकिरणा (न०) - कमपूर्वक इधर  
उधर बखेरना ।

अन्वयसर्ग (पु०) - स्वेच्छानुगामिता,  
कामचारानुष्ठा । [ हुआ ।

अन्वयसित (वि०) - सम्बन्धित, यथा

अन्वयाय (पु०) - कुल, यश ।

अन्वयला (स्त्री०) - ख्याल, विचार ।

अन्वयता (स्त्री०) - साग्नियों के लिये  
एक मातृक्रान्ति जो अष्टका के  
अनन्तर पीप, माघ, फाल्गुन और  
हार की कृष्णपक्ष की मयमी को  
होता है ।

अन्वय (वि०) - बँका हुआ, मोली से  
मारा हुआ, धीप २ में विरोधा  
हुआ ।

अन्वय (न०) - प्रतिदिन, दिन पर दिन,  
दिन बदिन ।

अन्वय (पा० प०) - गणना करना,  
क्रमपूर्वक होकर गना ।

अन्वाख्यान (न०) - अध्याय, परिच्छेद,  
पश्चाद्गमन, गणना ।

अन्वाचय (पु०) - प्रधान या मुख्य कार्य  
करने के साथ २ किसी अप्रधान  
कार्य को भी करने की आज्ञा ।

अन्वाचित (वि०) - गौण, मुख्य से निम्न ।

अन्वादिश (पा० प०) - फिर से ध्यान  
करना, उलटकर करना, फिर से  
नियुक्त करना ।

अन्वादिष्ट (वि०) - बाद में ध्यान किया  
हुआ, फिर से नियुक्त, गौण ।

अन्वादेश (पु०) - पहिले एक काम करने  
पर कुछ दूसरा काम करने का  
फिर आदेश या उपदेश ।

अन्वाधान (न०) - अन्वाधान के उप-  
रान्त अग्नि को बनाये रखने के  
लिये लवमें ईंधन छोड़ने की क्रिया ।

अन्वाधि (पु०) - किसीके हाथ में कोई  
वस्तु देकर कहना कि इसे अमुक  
मनुष्यको दे देना । निरन्तर चिन्ता,  
ग्रहणात्मा ।

अन्वाधेय-यक (न०) - विवाह के पीछे  
माता पिता से तथा भर्तृकुल से  
एवं यन्त्रकुल से स्त्री को जो धन  
मिलता है ।

अन्वाध्य (पु०) - देवयोनि विशेष ।

अन्वारभू (पा० आ०) - आरम्भ करना,  
शुरू करना, उठना ।

अन्वारब्ध (वि०) - शरीर के किसी अंग  
पर स्वयं किया हुआ, अनुगत ।

अन्वारम्भः-रम्भणं-स्पर्श, उठना, यथा-  
मुठान के समय यजमान का  
उठना ।



अन्वारम्भणीया(स्त्री०)-आरम्भिक अनुष्ठान ।

अन्वारुह(धा०प०)-घटने में अनुकरण करना, ऊपर चढ़ना ।

अन्वारोहण(न०)-प्रति की मृत्यु के पश्चात् विषया को सती होना ।

अन्वासु(धा० भा०)-समीप बैठाया जाना, सेवकाई करना, किसी धार्मिककृत्य का सहायन करना

अन्वासन(न०)-उपासना, अनुशोचन, शिल्पागार, पश्चात्ताप, स्नेह-वर्ति । [ पक्ष की दक्षिणा ।

अन्वाहार्य(अस्त्री०)-मासिकग्राह, अन्वाहार्यक(न०)-पूर्ववत् ।

अन्वाहिक(वि०)-रोजाना, प्रतिदिन अन्वाहिकी(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

अन्वाहित(वि०)-जो एक के यहां अमानत रखता हो और वह उसे किसी और के यहां रखदे ।

अन्वि(धा० प०)-अनुगमन करना, साप जाना, तलाश करना ।

अन्वित(वि०)-निमित्त, युक्त, शामिल, अनुगत, अन्वय किया हुआ, समझा हुआ ।

अन्विति(वि०)-यन्दना द्वारा प्रयत्न किया हुआ । स्त्री०-भोजन, अनु-गमन ।

अन्विप्(धा० प०)-इच्छा करना, दूँटना, तलाश करना ।

अन्विष्ट(वि०)-अन्वेपित, दूँटा हुआ, इच्छा किया हुआ ।

अन्वीक्ष(धा०आ०)-टकटकी लगाकर देखना, दृष्टि में रखना, तलाश करना । [ ध्यान ।

अन्वीक्षण(न०)-तलाश, तहकीकात, अन्वीक्षा(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

अन्वीत-अन्वित के समान ।

अन्वीप(वि०)-पानी में समीप, प्राप्ति-योग्य । [ दुँडाई, तलाश ।

अन्वेप(पु०)-अन्वेपण, अनुसन्धान, अन्वेपक(वि०)-दूँटने वाला, अनु-सन्धान करने वाला ।

अन्वेपण(न०)-अनुसन्धान ।

अन्वेपणा(स्त्री०)-गवेपणा, अनुसन्धान, पर्येषणा ।

अन्वेपित(वि०)-कृतान्वेपण, गवेपित, अन्वित । [ समान ।

अन्वेपी [ न् ] (वि०)-अन्वेपक के अन्वेष्टा(वि०)-अन्वेपणकर्ता ।

अप्(स्त्री०)-जल [ यह शब्द बहु-वचन में प्रयुक्त होता है, जहां इस के रूप आपः, अपः, अद्भिः, इत्यादि बनते हैं ], वायु ।

अपकृत्स्न(न०)-जल की सहायता से गम्भीर ध्यान ।

अप्पति(पु०)-घफ़स, समुद्र ।

अप(अ०)-अनादर, अश्र, वैरूप्य, त्याग, यज्ञन, वियोग, विषयंय, विरुति निर्देश, हर्ष, इन अर्थों में प्रयुक्त होता है ।

अपः [ स् ] (न०)-यष्टकर्म ।

अपकरण(न०)-अनिष्टाचार, धुराई करना ।

अपकरण(वि०)-निष्ठुर, कठोर हृदय ।

अपकर्ता(वि०)-अपकार करने वाला ।

हानिकारक, बुरा रखने वाला ।

अपकर्म(न०)-दुष्क्रिया, मन्दकर्म ।

अपकर्ष(पु०)-नीचे की खींचना, गिराना, बिगाड़ना ।

अपकर्षक(वि०)-नीचे की खींचने वाला, कम करने वाला ।

अपकर्षण(वि०)-अपकर्षक, चहुँक का प्रतियोगी । न०-हटाना, नीचे की ओर खींचना, कम करना ।

अपकर्तक(पु०)-ग्रहण बड़ा कोलंक या चट्टा ।

अपकार(पु०)-द्रोह, अत्याचार, द्वेष, अनुपकार, अनिष्टसाधन ।

अपकारक-रिन्(वि०)-अपकार करने वाला, हानि देने वाला, शत्रु, घुसार्ने करने वाला । [ देना ।

अपकारगीः(स्त्री०)-फिड़कना, गाली अपकारार्थी(वि०)-हानि पहुंचाने वाला, द्वेषी । [ निन्दा ।

अपशीर्षी(स्त्री०)-अवयव, बदमासी,

अपशीर्षिकर(वि०)-अवयव करने वाला, बदमास करने वाला, निन्दक ।

अपकृति(स्त्री०)-हानि, नुकसान, घोट, दुःखमयी, गिराने वाला काम ।

अपकृत्य(न०)-पूर्ववत् ।

अपकृष्ट [ धा० पठ ]-पीछे की ओर खींचना, एक ओर की खींचना, खींचकर लेजाना, खींचकर बाहर निकालना, अपमानित करना । [ यह धातु छठे गण में उभयपदी होती है ] ।

अपकृष्ट(वि०)-हटाया हुआ, खींचकर बाहर किया हुआ, जघन्य, अधम निरुष्ट । पु०-कौशा ।

अपकृष्टचेतन(वि०)-नीच प्रकृति का अपकृष्टजाति(वि०)-नीचजाति या संघ का ।

अपकृ(धा० पठ)-घबेरना, [ जल का ] ठिड़कना ।

अपशीर्षली(पु०)-उधर, बनावार ।

अपक्ति(स्त्री०)-न पकना, अपरिपक्वता, बदहजमी ।

अपक्वम्(धा० पठ)-दीह लगना, पला जाना, बचकर भागना, पीछे हटना, घोटना ।

अपक्वम्(पु०)-पलायन, भागना, बचकर भागना । वि०-सेतारसीय, कमहोन ।

अपक्वमण्(न०)-पलायन, पीछे की ओर हटना ।

अपक्ष(वि०)--रुज्जा, न पका हुआ ।

अपक्ष(वि०)--पर या पक्षहीन, चङ्गे की शक्ति न रखने वाला, दूसरी पार्टी का, विरुद्ध ।

अपक्षपात( पु० )--पक्षपातहीनता, किसी की तरफ़दारी न करना ।

अपक्षपातिन्( वि० )--पक्षपातहीन, बेजा तरफ़दारी न करने वाला ।

अपक्षय( पु० )--अधःपतन, नाश ।

अपक्षि(धा० प०)--अन्त करना, नष्ट करना, परछाद-करना ।

अपक्षिप्(धा० प०)--फेंकना, दूर या नीचे फेंकना, दूर लेजाना, हटा देना ।

अपक्षि(वि०)--फेंका हुआ, पतित, गिरावा हुआ । [ हुआ ।

अपक्षीण(वि०)--अधोगत, नष्ट हुआ

अपक्षेप(पु०)--दूर फेंकना या नीचे फेंकना

अपक्षेपण(न०)--पूर्यवत् ।

अपक्षेप(वि०)--धालिग, प्राप्नवयस्क ।

अपक्ष( वि० )--जानेवाला, छोट जानेवाला ।

अपक्षान(वि०)--मृत, मरा हुआ, गत, दूरीभूत, पलायित ।

अपक्षानि(स्त्री०)--दुर्गति, बदकिस्मती ।

अपक्षान्(धा० प०)--चला जाना, जुदा होना, मरना, गुजरना, नष्ट होना ।

अपक्षम(पु०)--गलतदमी, जुदाई, नाश, दूर होना, मृत्यु ।

अपक्षमन(न०)--पूर्यवत् ।

अपक्षार(पु०)--मिन्दा, बदनामी ।

अपक्षा ( स्त्री० )--नदी [ शुद्धक भाषणा है ] ।

अपक्षुण्(पु०)--अवगुण, दोष ।

अपक्षुर्(धा० प०)--धमकाना, भत्सना करना, सहकष करना, त्यागना ।

अपक्षुह्(धा० प०)--छिपाना, छिपना ।

अपक्षोह्(पु०)--छिपने का स्थान, अगोचर होना ।

अपक्षन(पु०)--अवयव, अंग ।

अपक्षान( पु० )--अपक्षनत, मारना, दूरी मृत्यु ।

अपक्षानिन्(वि०)--मारने वाला, पात करने वाला ।

अपक्ष(पु०)--बदहजमी, दूरी तरह पकी हुई वस्तु, ऐसा मनुष्य जो अपने लिये भोजन न करता हो ।

अपक्षय(पु०)--क्षति, हानि, अपहरण, एवं ।

अपक्षर्(धा० प०)--जुदा होना, कट कराना, भटकना ।

अपक्षरित(वि०)--मरा हुआ, गत ।

न०--दोष, दूरा कर्म ।

अपक्षार्(धा० प०)--अपक्षाना, अर्चना करना ।

अपक्षार्पित(वि०)--दरा हुआ, प्रतिष्ठित ।

अपक्षार(पु०)--अहिताचरण, जुदाई, मरना, जुर्म, अभाव, हानि ।

अपक्षारिन्( वि० )--अपक्षार करने वाला, दुष्ट, दूरा ।

अपक्षि( धा० प० )--दृष्टत करना, निमंत्रित करना, [उत्तयपक्षी से ] दृष्टा करना ।

अपक्षिन्(वि०)--दृष्टा हुआ, पतला दृष्टा, प्रतिष्ठित, पुनित, स्तीप ।

अपचिति(स्त्री०)—इानि, व्यय, पूजा,  
सय, ध्यंस, सम्मानना ।

अपच्छत्र(धि०)—सत्रहीन ।

अच्छाया(धि०)—छाया रहित, अमृतिभ ।

अपच्छेद(पु०)—काटकर अलग करना,  
हानि, दखल ।

अपच्छेदन(म०)—पूर्ववत् ।

अपच्युत(धा० आ०)—टूट कर गिर  
पड़ना, साथ छोड़ना, नष्ट होना,  
मरना ।

अपच्युत(धि०)—नष्ट, टूटा हुआ ।

अपजय(पु०)—हार, पराजय ।

अपजात(पु०)—सुरापुत्र, पिता से कम  
योग्यता का पुत्र ।

अपजि(धा० प्र०)—हराना, जय प्राप्त  
करना ।

अपज्ञा(धा० आ०)—इंकार करना,  
अस्वीकार करना ।

अपघ्नान(न०)—इंकार, डिमाघट ।

अपटान्तर(धि०)—जिसके बीच में पदों  
न हों, अटपट रहित, आसन्न ।

अपटी(स्त्री०)—पदों, यथनिका, कनात

अपटु(वि०)—जो चतुर न हो, पटुता  
रहित, रोगी, टपथित ।

अपठ(वि०)—पढ़ने में अशक्त, न पढ़ने  
वाला, घुरा पढ़ने वाला ।

अपरिष्टम(धि०)—मूर्ख, अविद्वान् ।

अपयय(धि०)—न से जाने योग्य ।

अपयय(न०)—लंपन, रोगादि में  
भीजन न करना ।

अपयि-क(वि०)—स्वानिरहित, अवि-  
साहित

अपत्नी(स्त्री०)—अविवाहित, पति-  
रहित ।

अपत्नीक(वि०)—भार्यारहित ।

अपत्य(न०)—पुत्र, कन्या, सन्तान,  
सन्तति, प्रसूति ।

अपत्यकाम(वि०)—सन्तान की इच्छा  
करने वाला ।

अपत्यद(वि०)—सन्तान देनेवाला ।

अपत्यदा(स्त्री०)—गर्भदातृवृत्त ।

अपत्यपथ(पु०)—भग, योनि ।

अपत्यविक्रयी(पु०)—ऐसा पिता जो  
अपनी कन्या को रुपया लेकर  
बिवाहे ।

अपत्यशत्रु(पु०)—जिसका शत्रु अपत्य  
या सन्तान हो, केकड़ा, ककट ।

अपत्र(वि०)—पत्तों से रहित, पत्रहीन ।

पु०—अंकुर, पररहित पत्ती,  
सूखा वृक्ष ।

अपत्रप(वि०)—निलंबन, अपारहित ।

अपत्रविष्णु(धि०)—लज्जाशील ।

अपत्रपा-पण्यं—निलंबनता, धर्मोत्थापन

अपत्रस्त(वि०)—भयभीत, डरा हुआ ।

अपथ(धि०)—मार्गरहित । न०—कु-  
मार्ग; कुपथ, योनि ।

अपथ(अ०)—भटका हुआ, गलत  
रास्ते में ।

अपथगामी(धि०)—घुरे मार्ग में जाने  
वाला, नास्तिक ।

अपथप्रपन्न(वि०)—अन्यथा स्थान में  
टपप किया हुआ, अपटपय में  
लगाया हुआ ।

अपथ्य (वि०) - अनुचित, बेनीज़, हानिग्रह, रोगकर, अहित ।

अपथ्यकारी (वि०) - अनिष्ट करनेवाला, मुजरिम । [ पादरहित ।

अपद्-पाद् (वि०) - न जानने के योग्य,

अपद् (वि०) - पादरहित, पद [ओहदा], रहित । पु० - सप्त । न० - अनुचित

स्वान, स्वानाभाव, ईश्वर नामक वायु । [वाला ।

अपद्म (वि०) - आत्मसयम न करने

अपदान-नक (न०) - शोषन, साफ़ करना परिशुद्ध आचारण, कोई उत्तम काम, श्रुत, अयदान ।

अपदान्तर (वि०) - अव्यवहित, सयुक्त, निकट । न० - समीपता, सम्मिलन ।

अपदिश (वि०) - प्रतलाना, देना, जाहिर करना, कहना ।

अपदिश (न०) - दिशाओं का बीच, कोण । अ० - दिशाओं के बीच में ।

अपदेयता (स्त्री०) - भूत, मृत, जिन ।

अपदेश (पु०) - लक्ष्य, मिथान, खेल, बहाना, स्वप्न, स्वरूप को

आच्छादन करना, वेप बंदना ।

अपदेशी [न] (वि०) - छल करने वाला, अन्यथा रूप धारण करने वाला ।

अपद्रव्य (न०) - दूरी वस्तु ।

अपहार (न०) - वस्तु का दर्वाजा, मुख्यद्वार से निम्न द्वार ।

अपधूम (वि०) - धूमरहित ।

अपधौ (१ प०) - किसी का दुरा सोचना, मन मन में शपथ देना ।

अपध्यान (न०) - दुरा विचार, दुरा सोचना, मनमन में शपथ देना ।

अपथ्यं (१ आ०) - साफ़ करना, धूल झाड़ना, चिक्कारना ।

अपथ्यं (पु०) - अपमान, छिपावट, गिरावट । [ क्षोभजात ।

अपथ्यं सज (पु०) - वर्णसंकर, प्रति-

अपथ्यं सजा (स्त्री०) - प्रतिशोभना ।

अपथ्यं मी [न] (वि०) - नाश करने वाला, दूर करने वाला ।

अपथ्यस्त (वि०) - परित्यक्त, निन्दित, अवशेषित, दूरी तरह पिछा हुआ ।

अपथ्वान्त (न०) - अन्यथा या पठोर ध्वनि ।

अपनय (पु०) - अपकार, दूर लेजाना, रद्द करना, दुर्नीति ।

अपनयन (न०) - खण्डन, दूरीकरण ।

अपनस (वि०) - नासिकाहीन ।

अपनाम (न०) - दुरा नाम, बदनामी ।

अपनी (१ प०) - दूर करना, दूर हटाना, नाश करना । छूटना, उखाड़ना,

खींचना, इंकार करना, मुसतस्ना करना ।

अपनीत (वि०) - उद्धत, दूर किया हुआ, अदा किया हुआ, अन्यथागत ।

न० - दुरा आधार ।

अपनुद् (१ प०) - दूर करना, नाश करना, पश्चात्ताप करना ।

अपनुत्ति (स्त्री०) - दूरीकरण, खण्डन ।

अपनोद् (पु०) - पूर्ववत् ।

अपनोदन (न०) - पूर्ववत् ।

अपपयस् (वि०) - जलहीन, सूखा ।

अपपाठ (पु०) - अन्यथापाठ, अशुद्धपाठ

अपपात्र (वि०) - मोचकुल का ।

अपचिति(स्त्री०)--इानि, वय, पूजा,  
सय, ध्वस, सम्मानना ।

अपच्छत्र(वि०)--सत्रहीन ।

अच्छाय(वि०)--छाया रहित, अवतिष ।

अपच्छेद(पु०)--काटकर अलग करना,  
हानि, दखल ।

अपच्छेदन(न०)--पूर्ववत् ।

अपक्षु(धा० आ०)--टूट कर गिर  
पड़ना, साथ छोड़ना, नष्ट होना,  
मरना ।

अपक्षुत(वि०)--नष्ट, टूटा हुआ ।

अपजय(पु०)--हार, पराजय ।

अपजात(पु०)--सुरापुत्र, पिता से कम  
योग्यता का पुत्र ।

अपजि(धा० प्र०)--हराना, जय प्राप्त  
करना ।

अपज्ञा(धा० आ०)--इंकार करना,  
अस्वीकार करना ।

अपज्ञान(न०)--इंकार, छिपावट ।

अपटान्तर(वि०)--जिसके बीच में पदां  
न हो, अटपट रहित, आसन्न ।

अपटी(स्त्री०)--पदां, पयनिका, कनात

अपटु(वि०)--जो चमुर न हो, पटुता  
रहित, रोगी, टपटित ।

अपटु(वि०)--पढ़ने में अशक्त, न पढ़ने  
वाला, सुरा पढ़ने वाला ।

अपतिष्ठत(वि०)--भ्रमं, अविद्वान् ।

अपत्त्य(वि०)--न खेचने योग्य ।

अपत्त्यमन्त्र(न०)--लपन, रोगादि में  
भोजन न करना ।

अपति-का(वि०)--स्वागिरहित, अवि-  
साहित

अपत्नी(स्त्री०)--अविवाहित, पति-  
रहित ।

अपत्नीका(वि०)--भार्यारहित ।

अपत्य(न०)--पुत्र, कन्या, सन्तान,  
सन्तति, प्रसूति ।

अपत्यकाम(वि०)--सन्तान की इच्छा  
करने वाला ।

अपत्यद(वि०)--सन्तान देनेवाला ।

अपत्यदा(स्त्री०)--गर्भदातृवत् ।

अपत्यपथ(पु०)--भग, योनि ।

अपत्यविक्रयी(पु०)--ऐसा पिता जो  
अपनी कन्या को रुपया लेकर  
विवाह ।

अपत्यशत्रु(पु०)--जिसका शत्रु अपत्य  
वा सन्तान हो, कैकड़ा, ककंद ।

अपत्र(वि०)--पत्तों से रहित, पत्रहीन ।  
पु०--अंकुर, पररहित पक्षी,  
सूखं वृक्ष ।

अपत्रय(वि०)--निर्लज्ज, त्रयारहित ।

अपत्रपिप्प्ला(वि०)--लज्जाशील ।

अपत्रपा-पणं--निर्लज्जता, शर्मीलापन

अपत्रस्त(वि०)--भयभीत, डरा हुआ ।

अपथ(वि०)--नार्गरहित । न०--कु-  
मार्ग; कुपथ, योनि ।

अपथं(अ०)--भटकना हुआ, गलत  
रास्ते में ।

अपथगामी(वि०)--सुरे मार्ग में जाने  
वाला, नास्तिक ।

अपथप्रमन्न(वि०)--अन्यथा रूपान में  
ठपथ किया हुआ, अपठ्यम में  
लगाया हुआ ।

अपत्य (वि०) - अनुचित, येनोन्नत, हानिप्रद, रोगकर, भद्रित ।

अपत्यकारी (वि०) - अनिष्ट करनेवाला, मुजरिम । [ पादरहित ।

अपद्-पाद् (वि०) - न जानने के योग्य,

अपद् (वि०) - पादरहित, पद [भीड़दा] रहित । पु० - सर्प । न० - अनुचित

स्थान, स्थानाभाव, ईपर नामक वायु । [वाला ।

अपद्म (वि०) - आत्मसंयम न करने

अपदान-नक्र (न०) - शोधन, साफ करना परिशुद्ध आचारण, कोई उत्तम काम, श्रुत, अथदान ।

अपदान्तर (वि०) - अठ्यवहित, संयुक्त, निकट । न० - समीपता, सन्निकर्ष ।

अपदिश (६प०) - बतलाना, देना, जाहिर करना, कहना ।

अपदिश (न०) - दिशाओं का बीच, कोण । न० - दिशाओं के बीच में ।

अपदेयता (स्त्री०) - भूत, प्रेत, जिन ।

अपदेय (पु०) - लक्ष्य, निधान, ऐल, बहाना, स्थान, स्वरूप की

आच्छादन करना, वेप बदलना ।

अपदेशी (वि०) - छल करने वाला, अन्यथा रूप धारण करने वाला ।

अपद्रव्य (न०) - दूरी वस्तु ।

अपद्वार (न०) - प्रगल्भ का दवांजा, मुख्यद्वार से निकट द्वार ।

अपधुम (वि०) - धूमरहित ।

अपधै (१ प०) - किसी का घुरा शोषणा, नम नम में शाप देना ।

अपप्यान (न०) - घुरा विचार, घुरा शोषणा, नम नम में शाप देना ।

अपध्वंस (१ भा०) - साफ करना, धूल झाड़ना, धिक्कारना ।

अपध्वंस (पु०) - अपमान, टिपावट, गिरावट । [ क्षोभजात ।

अपध्वंसज (पु०) - वर्णमंकर, प्रति-

अपध्वंसजा (स्त्री०) - प्रतिगोमजा ।

अपध्वंसी (वि०) - नाश करने वाला, दूर करने वाला ।

अपध्वंस (वि०) - परित्यक्त, निश्चित, अवचूर्णित, दूरी तरह पिघा हुआ ।

अपध्वान्त (न०) - अन्यथा या बठोर ध्वनि ।

अपनय (पु०) - अपकार, दूर छेड़ना, रद्द करना, दुर्नीति ।

अपनयन (न०) - खरब, दूरीकरण ।

अपनस (वि०) - नासिकाहीन ।

अपनाम (न०) - घुरा नाम, बदनामी ।

अपनी (१प०) - दूर करना, दूर हटाना, नाश करना । छूटना, उखाड़ना, खींचना, इंकार करना, मुसतस्ना

करना ।

अपनीन (वि०) - बहुत दूर किया हुआ, जदा किया हुआ, अन्यथाकृत ।

न० - घुरा आधार ।

अपनुद् (६प०) - दूर करना, नाश करना, पश्चात्ताप करना ।

अपनुत्ति (स्त्री०) - दूरीकरण, खरब ।

अपनोद (पु०) - पूर्ववत् ।

अपनोदन (न०) - पूर्ववत् ।

अपपयम् (वि०) - जलहीन, घुरा ।

अपपाठ (पु०) - अन्यथापाठ, अशुद्धपाठ

अपपात्र (वि०) - मीथदुल का ।

अपचिति(स्त्री०)-हानि, व्यय, पूजा,  
क्षय, ध्वंस, सम्मानना ।

अपच्छन्न(वि०)-क्षत्रहीन ।

अच्छाप(वि०)-छायारहित, अपतिम ।

अपच्छेद(पु०)-काटकर अलग करना,  
हानि, दखल ।

अपच्छेदन(न०)-पूर्ववत् ।

अपकपु(धा० आ०)-टूट कर गिर  
पड़ना, साथ छोड़ना, नष्ट होना,  
मरना ।

अपकपुत(वि०)-नष्ट, टूटो हुआ ।

अपजय(पु०)-हार, पराजय ।

अपजात(पु०)-सुरापुत्र, पिता से कन  
योन्मत्ता का पुत्र ।

अपजि(धा० प्र०)-हराना, जय प्राप्त  
करना ।

अपज्ञा(धा० आ०)-इंकार करना,  
अस्वीकार करना ।

अपज्ञान(न०)-इंकार, ठिमाघट ।

अपटान्तर(वि०)-जिसके बीच में पदां  
न हों, अटपट, आसन्न ।

अपटी(स्त्री०)-पदां, घघनिका, कनात

अपटु(वि०)-जो चतुर न हो, पटुता  
रहित, रोमी, टपपित ।

अपठ(वि०)-पढ़ने में अशक, न पढ़ने  
वाला, घुरा पढ़ने वाला ।

अपष्टित(वि०)-भूयं, अविद्वान् ।

अपयय(वि०)-न घेघने योग्य ।

अपमर्षण(न०)-लपन, रोगादि से  
भोजन न करना ।

अपमि-क(वि०)-स्वाभिरहित, अपि-  
पाहित

अपत्नी(स्त्री०)-अविवाहित, पति-  
रहित ।

अपत्नीक(वि०)-भार्यारहित ।

अपत्य(न०)-पुत्र, कन्या, सन्तान,  
सन्तति, प्रसूति ।

अपत्यकाम(वि०)-सन्तान की इच्छा  
करने वाला ।

अपत्यद(वि०)-सन्तान देनेवाला ।

अपत्यदा(स्त्री०)-गर्भदातृवृत्त ।

अपत्यपथ(पु०)-भग, योनि ।

अपत्यविक्रयी(पु०)-ऐसा पिता जो  
अपनी कन्या को रूपया लेकर  
विवाहे ।

अपत्यशत्रु(पु०)-जिसका शत्रु अपत्य  
वा सन्तान हो, केकड़ा, ककट ।

अपत्र(वि०)-पत्तों से रहित, पक्षहीन ।  
पु०--जंकुर, पररहित पक्षी,  
सूरा वृक्ष ।

अपत्रप(वि०)-मिलेजग, प्रपारहित ।

अपत्रविप्राण(वि०)-लज्जाशील ।

अपत्रपा-पथं-मिलेजगता, धर्मीलापन

अपत्रस्त(वि०)-भयभीत, डरा हुआ ।

अपथ(वि०)-भार्गवरहित । न०--कु-  
भार्ग; कुपथ, योनि ।

अपथं(अ०)-भटका हुआ, गलत  
रास्ते में ।

अपथगामी(वि०)-घुरे मार्ग में जाने  
वाला, नास्तिक ।

अपथप्रपन्न(वि०)-अन्यथा स्थान में  
टपप किया हुआ, अपटप में

उगाया हुआ ।



अपध्य (वि०) - अनुचित, घेमीजू, हानिप्रद, रोगकर, अहित ।

अपध्यकारी (वि०) - अनिष्ट करने वाला, मुजरिम । [ पादरहित ।

अपद्-पाद् (वि०) - न जानने के योग्य,

अपद (वि०) - पादरहित, पद [ओहदा], रहित । पु०-सर्प । न०-अनुचित

स्थान, स्थानाभाव, ईश्वर नामक धारु । [वाला ।

अपदम (वि०) - आत्मसंयम न करने

अपदान-नक्र (न०) - शोधन, साफ करना परिशुद्ध आचारण, कोई उत्तम

काम, द्रुत, अवदान ।

अपदान्तर (वि०) - अवयवहित, संयुक्त, निकट । न०-समीपता, सन्निकर्ष ।

अपदिश (वि०) - बतलाना, देना, जाहिर करना, कहना ।

अपदिश (न०) - दिशाओं का धीच, कोण । अ०-दिशाओं के बीच में ।

अपदेयता (स्त्री०) - भूत, मृत, जिन ।

अपदेश (पु०) - लक्ष्य, निशान, छल, बहाना, स्थान, स्वरूप को

आकृष्ट करने, वेप बढ़ाना ।

अपदेशी (न०) (वि०) - छल करने वाला, अन्यथा रूप धारण करने वाला ।

अपद्रव्य (न०) - घुरी वस्तु ।

अपद्वार (न०) - दमल का दरवाजा, मुख्यद्वार से भिन्न द्वार ।

अपधूम (वि०) - धूमरहित ।

अपध्वे (१ प०) - किसी का घुरा सोचना, मन मन में शाय देना ।

अपध्यान (न०) - घुरा विचार, घुरा सोचना, मनमन में शाय देना ।

अपध्वंस (१ आ०) - साफ करना, धूल काटना, धिक्कारना ।

अपध्वंस (पु०) - अपमान, लिपावट, गिरावट । [ क्षीयमान ।

अपध्वंसज (पु०) - वर्णसंकर, प्रति-

अपध्वंसजा (स्त्री०) - प्रतिभोजन ।

अपध्वंसी (न०) (वि०) - नाश करने वाला, दूर करने वाला ।

अपध्वस्त (वि०) - परित्यक्त, निम्नित, कष्टपूर्ण, घुरी तरह पिशा हुआ ।

अपध्वान्त (न०) - अन्यथा या बहोर ध्वनि ।

अपनय (पु०) - अपकार, दूर लेनाना, रद्द करना, दुर्नीति ।

अपनयन (न०) - खपहन, दूरीकरण ।

अपनस (वि०) - नासिकाहीन ।

अपनाम (न०) - घुरा नाम, मदनानी ।

अपनी (१ प०) - दूर करना, दूर हटाना, नाश करना । खूटना, खराबना, खींचना, दंकार करना, मुसतस्ना

करना ।

अपनीत (वि०) - उद्धत, दूर किया हुआ, जदा किया हुआ, अन्यथागत ।

न०-घुरा आधार ।

अपनुद् (१ प०) - दूर करना, नाश करना, परमात्माप करना ।

अपनुत्ति (स्त्री०) - दूरीकरण, खपहन ।

अपनोद (पु०) - पूर्ववत् ।

अपनोदन (न०) - पूर्ववत् ।

अपपयम् (वि०) - अलक्षित, मृदा ।

अपपाठ (पु०) - अन्यथापाठ, अशुद्धपाठ

अपपात्र (वि०) - मोचकुल का ।

अपपात्रित(वि०)-जाति से बाहर किया हुआ, जिसके सम्बन्धियों ने खाने-पीने का सम्बन्ध छोड़ दिया हो ।

अपपाद(वि०)-दूरे पैर वाला ।

अपपान(न०)-धुरी शराब ।

अपप्रजाता(स्त्री०)-ऐसी स्त्री जिसका गर्भपात हो गया हो ।

अपप्रदान(न०)-रिखत ।

अपभये(वि०)-भयरहित, निडर ।

अपभाषू(१ भा०)-गाली देना, दोषारोपण करना । [ विल ।

अपभाषण(न०)-दोषारोपण, लाह-

अपभू(१प०)-दूर होना, अनुपस्थित होना ।

अपभृति(स्त्री०)-पराध, नुकसान ।

अपभृशू(१भा०)-गिर पहना, टूट पहना, गलत होना ।

अपथ श(पु०)-चाम्यभाषा, अपथकद, पतन, पथ, अपोगति ।

अपथष्ट(वि०)-गतित, घिगड़ी, दुई [ जैसे भाषा ] ।

अपम(पु०)-क्रान्ति ।

अपमर्दा(पु०)-जो कुछ काह कर भक्षण कर दिया जाय जैसे, पूछ, खाक ।

अपमर्दा(पु०)-ठूना, पाथ चुगना ।

अपमान(न०)-अनादर, अपमाना, पाथना, पराभय, येहउज्जती ।

अपमानित(वि०)-निन्दित, अपमानित, येहउज्जत ।

अपमानि[न] (वि०)-येहउज्जती करने वाला, अपमान करने वाला, गिरादर करने वाला ।

अपमान्य(वि०)-अपमान के योग्य, निन्द्य ।

अपमार्ग(पु०)-पगहपही, घुरा रास्ता, स्वगपरिमार्जन ।

अपमार्गी(वि०)-कुमार्गी, अन्यथा-चारी, दुष्ट । [ संशोधन ।

अपमार्जन(न०)-शुद्धि, सफाई, संस्कार,

अपमित्य-त्यक (न०)-कर्ज, क्राण ।

अपमुख(वि०)-विकृतानन, जिस का मुख टेढ़ा हो गया हो ।

अपमृज् ( २, १० प०)-घो डालना, मिटाना, दूर करना ।

अपमृत्यु(पु०)-आकस्मिक मृत्यु, अप-पात मृत्यु, विनर रोग के मरण ।

अपमृपित(वि०)-न सनकने योग्य,

अपयशः(न०)-बदनामी, अपमान, अपरुपाति ।

अपया(न-प०)-भक्षण होना, जुदा होना, चला जाना, अन्तर्धान होना ।

अपयान(न०)-पलायन, प्रस्थान ।

अपयोग(पु०)-घुरायोग, कुसमय ।

अपर(वि०)-जो पर न हो, पहिला, पुर्वका, पिछला, अन्य, दूसरा,

इतर, अर्थापीन, भिन्न, और ।

न०-हाथी का पिछला भाग, कपा, पैर इत्यादि । पु०-गशु ।

अपरं(न०)-फिर से, तद्विषय में ।

अपरकाल(पु०)-आने वाला समय ।

अपरक(वि०)-विरक्त, जो अनुकूल न हो ।

अपरज(पु०)-नाशकारी जग्गि ।  
अपरजन(पु०)-पश्चिम दिशा का निवासी ।

अपरता-रघम्-भिन्नता, अर्थाधीनता, परायापन । म्यायशास्त्रानुसार चौथीस गुणों में से एक, दूसरी अपरति(स्त्री०)-निवृत्ति, विरति ।  
अपरध्र(अ०)--अन्यत्र, और कभी, दूसरे समय में ।

अपरथा(अ०)--अन्य प्रकार से ।  
अपरदक्षिण(पु०)-दक्षिण और पश्चिम का कोना, नैऋत्य कोण ।

अपरदिशा(स्त्री०)-पश्चिम ।  
अपरपल(पु०)--कणपल, मुद्दई, प्रति-द्वन्द्वी । [ भाग ।

अपररात्र (पु०)--रात्रि का अन्तिम अपरस्पर(वि०)-एक के पश्चात् एक, लगातार ।

अपरलोक(पु०)-दूसरा लोक, स्वर्ग ।  
अपरा(स्त्री०)-पश्चिम दिशा, सांगो-पाङ्ग वेदपाठ, जरायु ।

अपरांग(न०)-गुणीभूत व्यंग्यप्रमेद ।  
अपराहमुख (पु०)-अविमुख, सामने आया हुआ ।

अपराजित(वि०)-नजीतहुआ, अजेय पु०-शिव, विष्णु, शारङ्ग रुद्रों में से एक, एक मुनि का नाम, एक नदरीला कीड़ा ।

अपराजिना(स्त्री०)-दुर्गा विष्णुकान्ता उना, अपोष्वा का एक नाम ।

अपराध (४,५ प०)-अपराध करना, विरुद्धाचरण करना, दिक्क करना ।  
अपराध(पु०)-पाप, दोष, दुर्म, गुनाह, गलती ।

अपराधभंजन(पु०)--पापों का नाश करने वाला अर्थात् शिव ।

अपराधी [ न् ] (वि०)--अपराध करने वाला, मुजरिम ।

अपराध (वि०)--जिसने पाप किया हो, मुजरिम, दोषी । [ गलती ।

अपराधि(स्त्री०)--दोष, गुनाह, पाप,, अपरान्त(पु०)-पश्चिम का देश, मृत्यु।  
अपरापरण(वि०)-सन्ततिहीन ।

अपरामृष्ट(वि०)-अछूता, अस्पृष्ट, जिस की किसी ने न छुमा हो, कोरा ।

अपरावर्ती(वि०)-विना काम पूरा किये न लौटने वाला, जो पीछे न हटे, मुस्तैद । [ तीसरा पहर ।

अपराह्ण(पु०)-दिन का पिछला भाग, अपरिकलित(वि०)-मघात, अघात, अश्रुत । [ अयोग्य, मुस्त ।

अपरिक्रम(वि०)-परिक्रम करने के अपरिक्रिन्न(वि०)-सूया, शुष्क ।

अपरिगत(वि०)-अघात, अपरिषित ।  
अपरिगृहीत(वि०)-न ग्रहण किया हुआ, त्यक्त ।

अपरिषद्(वि०)-सामान आदि से विहीन । पु०-दरिद्रता, दान का न लेना, त्याग ।

अपरिचय(पु०)-परिचय का अभाव,  
जाने में हिचान न होना ।

अपरिचिते(वि०)-जिसे परिचय न हो,  
जो जानता न हो, अज्ञात,  
अमज्ञान ।

अपरिच्छिन्न(वि०) गरीब, खाली हाथ,  
आवरणशून्य ।

अपरिच्छिन्न(वि०)--परिच्छेदरहित,  
असीम, अभेद्य, जो मापा न जाय ।

अपरिच्छेद(पु०)-विभाग वा अध्याय  
का क्रमाभाव ।

अपरिणत(वि०)-जो पका न हो,  
फट्टा, जिस में विकार और  
परिवर्तन न हुआ हो, ज्यों का  
त्यों । [ द्रव्यमय ।

अपरिणय(पु०)-विवाह न करना,  
अपरिणाम(पु०)-अपरिवर्तन ।

अपरिणामदर्शी(वि०)-मदूरदर्शी ।

अपरिणीता ( स्त्री० )-अविवाहिता  
कन्या ।

अपरिपक्व(वि०)-परिपाकरहित ।

अपरिमाण(वि०)-अभेदाज्ञ, बहुत ।

अपरिमित(वि०)-पूर्वशत ।

अपरिमेय(वि०)-पूर्वशत ।

अपरिम्जान(वि०)-न मुरझाने वाला ।

पु०-महामहा वृत् । [ से रहित ।

अपरिवृत(वि०)-न घिरा हुआ, बाड़

अपरिवर्तनीय(वि०)-जो परिवर्तन  
के योग्य न हो, जो बदल न सके ।

अपरिष्कार(पु०)-संस्कार का अभाव,  
अशोधन ।

अपरिष्कृत(वि०)-अमाजित, असंस्कृत ।

अपरिष्टि(स्त्री०)-पूजा, अर्चना ।

अपरिसर(वि०)-दूर, अनिकट ।

अपरिहरणीय(वि०)-अत्याज्य, न  
छोड़ने योग्य ।

अपरिहार(पु०)-अवजंजन, निवारण ।

अपरिहार्य ( वि० )-अपरिहरणीय,  
अत्याज्य ।

अपरीक्षित(वि०)-परीक्षा न किया  
हुआ, जिसकी जांच न की गई हो ।

अपरुष(वि०)-क्रोधहीन ।

अपरुष(वि०)-कुरूप, बदशकल, भद्दा ।

अपरेद्युः(अ०)-अगले दिन ।

अपरोक्ष(वि०)-जो दिखाई दे, जो  
दूर न हो ।

अपरीक्ष (अ०)-सामने ।

अपर्या(वि०)-पत्तों से रहित ।

अपर्या(स्त्री०)-दुर्गा या पार्वती ।

अपर्या(वि०)-अनवसर, निवृत्तरक्षक

अपर्यन्त(वि०)-असीम, न घिरा हुआ ।

अपर्याप्त(वि०)-नाकाफी, असम्पूर्ण,

असीम, असमर्थ । [ कमी ।

अपर्याप्ति(स्त्री०)-अपूर्णता, युटि,

अपर्याय(वि०)-क्रमहीन, क्रम या दंग

का अभाव ।

अपट्युचित(वि०)-अटपट, सद्योभव,

जो बासी न हो ।

अपल (वि०)-चलशून्य, सांभरहित ।

म०--कील, आलसी ।

अपलप(पु०)-संस्कार करना, ठिपाना ।

अपलपन(पु०)-ठिपाना, धोखा

अपलाप(पु०)-सत्य को झूठ बनाकर कहना, सत्य को छिपाना, जानी हुई बात को छिपाना ।

अपलापिका(स्त्री०)-सृष्ट्या, अति-शय छालवा । [ इच्छा रहित ।

अपलापिन्-लापुक(वि०)-प्यासा,

अपवचन(प०)-धुराई करना ।

अपवद्(१३०)-गांभी देना, धिक्कारना, इकार करना, [ आत्म० ] खण्डन करना । [ वि०-वायुरहित ।

अपघन(न०)-उपघन, बाण, बाटिका ।

अपघरक-वारक(पु०)-बासगृह, अन्त-र्युह, रहने का कमरा ।

अपघर्ग(पु०)-नील, त्याग, कर्मफल, मुक्ति, निर्घाण, समाप्ति ।

अपवर्जन(न०)-दान, मोक्ष, त्याग ।

अपवर्जित(वि०)-छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ, मुक्त । [ केर ।

अपवर्तः-नम्-परिवर्तन, पलटाई, उलट अपवर्तित (वि०)-वदर्थ । हुआ, पलटाया हुआ ।

अपवद्(१५०)-दूर लेनाना, खदेहना, त्यागना, घटाना । [ घटोत्तरी ।

अपवहर्न-वाहः--दूरीकरण, लेनाना,

अपवाद(पु०)-आघात, निन्द, धिक्कार, उत्सर्ग का विरोधी, साधारण नियमवाचक, अध्यापका निराकरण, प्रेम, विश्वास ।

अपवादक-दिन्(वि०)-दोष देने वाला, यद्नाम करने वाला, वाचक, विरोधी ।

अपवादित(वि०)-निन्दित, जिसका प्रतिरोध किया गया हो [ हुआ ।

अपवारण(न०)-अन्तर्धान, उपवधान ।

अपवारित(वि०)-अन्तर्हित, छिपा ।

अपवाहक(वि०)-एक स्थान से किसी पदार्थ को दूसरे स्थान पर ले जाने वाला ।

अपवाहित (वि०)-स्थानान्तरित करना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर लाया हुआ ।

अपवाहक(पु०)-एक रोग जिस में पाहु की नसें मारी जाती हैं, भुजस्तरुम्भ ।

अपविशत(वि०)-अक्षत । [ विग्रह रहित ।

अपविग्र(वि०)अरुद्ध, न रीका हुआ,

अपविग्र(वि०)-अशुद्ध, मलिन ।

अपविह(वि०)-निराकृत, त्यक्त ।

अपविद्या (स्त्री०)-अज्ञान, नाया, अविद्या ।

अपविप(वि०)-विपरहित ।

अपव्(५३०)-खोलना, प्रकाशित करना, जाहिर करना, टकना ।

अपवृत्(७भा०)-नाशकरना दूरकरना, फाटना, समाप्त करना ।

अपवृत्त(प०)-समाप्त, अन्त हुआ ।

अपवृत्ति(स्त्री०)-सम्पूर्णता, समाप्ति ।

अपवृत्त(वि०)-पराङ्मुखी मूढ ।

अपवृत्ति(स्त्री०)-अन्त, सीमा ।

अपवेध(प०)-गराव छेद करना ।

अपवोढा[व्] (वि०)-लेनाने वाला ।

अपव्यय(अप०)-युरी, प्रकार छेदना,  
 फेंकना, त्यागना । [ करना ।  
 अपव्यय(पु०)-सीमा से अधिक व्यय  
 अपव्ययी(वि०)-मिजूलझूठ ।  
 अपशकुन(न०)-बुरा शकुन ।  
 अपशङ्क (वि०)-निहता, भयरहित ।  
 अपशब्द(पु०)--नीच, अपसद ।  
 अपशब्द(पु०)--याच्यभाषा अपभ्रंश,  
 अयुक्त वचन । [ शीर्ष ।  
 अपाशिरस् ( वि०)--शिररहित, अप-  
 अपशु(वि०)-पशुरहित, पशुभिन्न ।  
 अपशुच[क](वि०)--शोकरहित । पु०--  
 आत्मा । [ अधोक्त वृत्त ।  
 अपशोक(वि०)--शोकरहित । पु०--  
 अपश्री(वि०)--श्रीहीन, शोभारहित ।  
 अपष्ठ(न०)--अंकुश का लयभाग ।  
 अपष्ठ(वि०)-विपरीत, सुखालिख। पु०-  
 समय, काल ।  
 अपादुर-ल(वि०)--प्रतिकूल, विरुद्ध ।  
 अपभ्रं(न०)-जल, कार्य, पक्ष ।  
 अपस्तम(वि०)-अत्यस्त कमंशील ।  
 अपसद(पु०)-नीच, लातिपतित ।  
 अपसर(पु०)-अपसरण, गमन, वनित  
 हेतु । [ भागना ।  
 अपसरण( न० )-चलाजाना, अप  
 अपसर्जन(न०)-त्याग, दान, मोक्ष ।  
 अपसर्पे--का( पु० )-भेदिता, गुप्तचर,  
 जासूस ।  
 अपमर्पण(न०)-पीछेकी ओर छोटना,  
 जामूसी करना, रेंगना ।  
 अपमर्प-क(वि०)-दक्षिण, दाहिना,  
 प्रतिफल ।

अपसर्प(अ०)-दाहिनी ओर ।  
 अपसार(पु०)-बहिर्गमन, प्रवेश का  
 प्रतिद्वन्द्वी ।  
 अपसारण-रणा(पु०)-बाहर निका-  
 लना, दूर हटा कर स्थान करना ।  
 अपसृ(१ प०)-चलाजाना, जुदा होना,  
 गल्ट होना, बच भागना ।  
 अपसृत(वि०)-गया हुआ, परित्यक्त ।  
 अपसृप् (१ प०)-रेंगना, चला जाना,  
 जामूसी करना । [ परित्याग ।  
 अपसृप्ति(स्त्री०)-बहिर्गमन, स्थान-  
 अपस्कर(पु०)-पहिये के अतिरिक्त  
 गाड़ी का कोई अङ्ग, बिठा,  
 गुच्छस्थान ।  
 अपस्मात( वि० )-भूतमु के पश्चात्  
 नहाया हुआ ।  
 अपस्मान(न०)-मृतकस्नान, नहायेहुए  
 जल में फिर से नहाना ।  
 अपस्मार(पु०)-रोग विशेष, मृगी, या-  
 ददाश्र का कम हो जाना ।  
 अपस्मृति(स्त्री०)-याद का कम हो  
 जाना, भूलना ।  
 अपहृन् (२ प०)-भारं कर जानाना,  
 बच करना, दूर करना ।  
 अपहृन्नन(न०)-दूरीकरण, अपघात ।  
 अपहृति(स्त्री०)-पूर्यवत ।  
 अपहृण(न०)-चुराना, दूरीकरण ।  
 अपहृतां(वि०)-दूर करने वाला या  
 चुराने वाला । [ करना ।  
 अपहृस् (१ प०)-हँसी उड़ाना, मजाक  
 अपहृमिर्त-हासः-मकारण हँसना ।

अपहस्त( वि० )-जिस में हटाने के लिये हाथले, गले में हाथ डाल कर निकाला गया ।

अपह्ना(२ प०)-त्यागना, छोड़ना ।

अपह्नात(न०)-परित्याग, छोड़ना ।

अपह्नाति(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

अपहार(पु०)-हानि, अपचय, अपहरण, चोरी, विनाश ।

अपहारक-हारिन् ( वि० )-अपहरणकर्ता, चोरी करने वाला ।

अपहृत (वि०)-अपहरण किया हुआ, छीना हुआ ।

अपह्नु(२ भा०)-छिपाना, बचकदलना

अपह्व(पु०)-छिपावट, अपलाप, स्नेह

अपह्वति(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

अपाक( पु० )-बढ़हज्जी, परिपक्वता का अभाव ।

अपाकरणा-कृति-दूरीकरण, त्याग, खरादन, अदायगी ।

अपाकर्म(न०)-अदायगी ।

अपाकशाक(न०)-अदरक ।

अपाकृ(८ व०)-दूर भगाना, उदेड़ना, नष्ट करना, त्यागना ।

अपाकृत(वि०)-त्यक्त, नष्ट, दूरीकृत ।

अपात्त(वि०)-उपस्थित, दिखाई देने वाला, नेत्रहीन ।

अपाङ्क-पाङ्केय ( वि० )-पंक्ति से बाहिर, जाति से बाहिर ।

अपाङ्ग ङ्ग (वि०)-अङ्गहीन । पु०-चिरचिटा, आंख का सिरा या अन्त भाग ।

अपाची(स्त्री०)-दक्षिण या पश्चिम दिशा ।

अपाचीन(वि०)-पीछे की ओर का, जोदिखाई न दे, दक्षिण या पश्चिम दिशा का, प्रतिकूल । [ णीय ।

अपाच्य(वि०)-परिचामीय या दक्षि-  
अपाट्य(न०)पटुता का अभाव, अकुशलता, अनाड़ीपन । वि०-अपटु, अनाड़ी । [ आचारहीन ।

अपात्र ( वि० )-अयोग्य, कुपात्र, मूर्ख,

अपात्रदायी ( वि० )-कुपात्र को दान देने वाला ।

अपात्रीकरण( न० )-निम्नित दान आदि लेने से उत्पन्न हुआ पाप का भेद, शूद्र की सेवा, कूठ धो-  
छना आदि सब दान लेने में अयोग्य बना देते हैं ।

अपाद्(वि०)-पदरहित ।

अपादान(न०)-हटाना, विभाग, हटा-  
करण में एक कारक का नाम ।

अपाध्वन्(न०)-झुरा रास्ता, कुपथ ।

अपान् ( २ प० )-शवास का बाहर निकालना ।

अपान(पु०)-श्वास या पांच प्रकार की वायु में से एक, शुद्ध स्याम का वायु । न०-गुदा । [ वाला वायु ।

अपानवायु(पु०)-गुदा द्वारा निकलने

अपानार्ग ( पु० )-चिरचिटा नाम ओषधि वृत्त, छटनीरा, जोंग ।

अपामार्जन(न०)-पवित्रीकरण, साफ करना ।

अपाय(पु०)-वियोग, नाश, दटना, दुःख,  
आपत्ति ।

अपायी(वि०)--नष्ट होने वाला, नश्वर,  
अनित्य, शलग होने वाला ।

अपार(वि०)--जिस का पार न हो,  
सीमारहित, अनन्त, असीम ।

अपार्य(वि०)-अर्थशून्य, निरर्थक, निष्प्र-  
योजन, व्यर्थ । [ अपार्यक भी  
इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ]

अपावरण(न०)-आवरणशून्यता ।

अपाव(५ प०)--खोलना ।

अपावत(वि०)--न टका हुआ, खुला ।

अपावति (स्त्री०)--आवरणशून्यता,  
अपावरण ।

अपावत(वि०)--लौटा हुआ, व्यक्त ।

अपावतन-वृत्तिः--छीटना, त्याग,  
यापिनी ।

अपाश्रय(वि०)--आश्रयहीन, अधीन ।

पु०--सायदान, चन्दोदा ।

अपाश्रि(१ उ०)-आश्रय ग्रहण करना,  
वस्तेनाल करना, लीकर रखना ।

अपाश्रित(वि०)-एकान्तसेवी, विरक्त ।

अपास(४ प०)--केंकना, आलस रखना,  
त्यागना । [ यथ ।

अपासन(न०)--दूर केंकना, त्यागना,

अपानित(वि०)--केंका हुआ, त्यागा  
हुआ ।

अपासरण(व०)--जुदाई, गगन ।

अपास(वि०)--मुदाई, जीवनरहित ।

अपास्त(वि०)--हारीकृत, तिरस्कार  
दिया गया ।

अपि(अ०)--सम्भावना, सन्देह, नि-  
न्द्य, उपसर्गविशेष, आहारण,  
अनुज्ञा, अस्पष्ट, समुच्चय, निश्चय,  
फिर, अंकार, एवं, वा, सत्य, एवं  
अपरस्पर आदि अर्थों में प्रयुक्त  
होता है ।

अपिगोर्ण(वि०)--वर्णित, स्तुति किया  
गया, वसन किया गया ।

अपिच(अ०)--और भी, पुनश्च, बहिक ।

अपिच्छिल(वि०)--स्वच्छ, गहरा, जो  
गदला न हो ।

अपिच(पु०)--ज्येष्ठ भास ।

अपित(वि०)--सुत्रक, जलहीन ।

अपितु(अ०)--किन्तु, बहिक ।

अपितुक(वि०)--पितारहित, जो पिता  
का न हो । [ का न ही ।

अपिच्य(वि०)--अपेक्षक, जो पिता

अपिपर(३ उ०)--दक्षता, बन्द करना,  
छिपाना ।

अपिधान(न०)--छिपावट, दङ्कन ।

अपिधि(स्त्री०)--छिपावट, दङ्कन ।

अपिनहु(वि०)--यंधा हुआ, जकड़ा  
हुआ, टका हुआ ।

अपिहित(वि०)--बन्द किया हुआ,  
टका हुआ, न टका हुआ ।

अपिमाण(वि०)--सर्वदा चेष्टमाण ।

अपिधल(पु०)--एक घेयाकरण ।

अपीति(स्त्री०)--नाश, हानि, प्रलय,  
प्रयोग । [ हुआ ।

अपीच्य(वि०)--अतिमुन्दर, क्षिपा  
अपुंन्(पु०)--हीनता ।



अपुंस्त्व(न०)-ही गहापन ।

अपुंस्का(स्त्री०)-पतिरहित स्त्री ।

अपुच्छ(वि०)-बिना पूछ का ।

अपुरय(वि०)-अपवित्र, झूठ ।

अपुत्रक(पु०)-पुत्रहीन ।

अपुनः(अ०)-फिर नहीं, मुदा के लिये

अपुनरावृत्ति (स्त्री०)-अप्रत्यागमन,  
मोक्ष ।

अपुनर्भव(पु०)-निर्वाण, मोक्ष । न०-

फिर जन्म न होगा । [ पतला

अपुष्ट(वि०)-जो पुष्ट न हो, दुबला

अपुष्ट(वि०)-पुष्टरहित, बिना फूलों  
का ।

अपुष्टफलद(पु०)-जो फूल के बिना  
फल देने वाला हो जैसे गहुंघर,  
पल्ल आदि ।

अपूत(वि०)-अपवित्र ।

अपूप(पु०)-पिष्टक, आटे का बना  
पूड़ा नामक खाद्य पदार्थ ।

अपूरणी(स्त्री०)-शास्त्रमालीवृक्ष, सि-  
न्दूर का पेड़ ।

अपूर्णा(वि०)-जो पूरा न हो ।

अपूर्व(वि०)-जो पहिले नहीं देखा  
गया, आश्चर्यमय ।

अपूर्वविधि(पु०)-मिस्र द्रव्य का ज्ञान  
प्रत्यक्ष अनुमानादि से न होकर  
उम की प्राप्ति की विधि जैसे  
स्वर्ग की इच्छा हो तो यज्ञ करे ।

अपृक्त(वि०)-असम्बद्ध, बेमेल, लगाव  
रहित ।

अपे(२ प०)-बला आना, ग्रह भागना,  
बुदा होना, नष्ट होना ।

अपेत् (१ भा०)-आशा करना, किसी

वस्तु के लिये इधर उधर देखना,

इन्तजार करना, ज़कूरत रतना ।

अपेक्षणीय(वि०)-अपेक्षा करने योग्य

अपेक्षा-क्षणा-आशा, इच्छा, ज़कूरत  
इन्तजार ।

अपेक्षानुद्धि(स्त्री०)-यह एक है यह  
एक है, इस प्रकार की जो अनेकों  
में बुद्धि हो ।

अपेक्षित(वि०)-इच्छित, अभिलषित,  
आवश्यक, ज़कुरी । न०-इच्छा,  
स्वादिष्ट, उपाय ।

अपेक्षितव्य-पेत्य(वि०)-अपेक्षा करने  
के योग्य, ज़कुरी ।

अपेक्षी[न] (वि०)-अतिछाया करने  
वाला, इन्तजार करने वाला,  
चिन्तित । [ किया हुआ ।

अपेत(वि०)-गया हुआ, नष्ट, दूर  
अपेतरातसी(स्त्री०)-तुलसी नामक  
वृक्ष ।

अपेय(वि०)-पीने के अयोग्य ।

अपोमण्ड(पु०)-विकृतांग, मोलद्वय  
से अधिक अवस्था का, किरीट,  
शिंशु, बहुत दरपोक, घालिग ।

अपोढ(वि०)-निरस्त, निकाला गया  
अपोटिका(स्त्री०)-पोहे नामक शाक  
अपोह(१ उ०)-छटाना, धकेटना, नष्ट  
करना, चगा करना, त्यागना,  
स्वीकार करना, तर्कना करना ।

अपोह(पु०)-बादी से किये हुए तर्क  
के दूर करने के लिये प्रतिवादी से  
कियर गया तर्क, तर्क, ह्यान ।

अपोहन(न०)-पूर्ववत् ।

अपोह-हनीय(वि०)-दूर करने योग्य,  
तर्कना करने योग्य ।

अपौरुष-पेय(वि०)-जो पुरुष का न  
हो, अमानुषी, हरपोक, पुरुषार्थ  
हीन ।

अप्तसु(न०)-यज्ञकर्त्ता ।

अप्सुर(पु०)-इन्द्र का विशेषण, आग,  
कार्यशील, मशगूल । [ हुआ ।

अप्स्य(वि०)-अपत्य, काम में लगा  
अप्तसु(न०)-कबूजा, जायदाद, कार्य,  
सन्तान, आकार ।

अप्नयान(वि०)-सन्तति घाला,  
गरीब । पु०-घाहू ।

अप्य(वि०)-जल से सम्बन्ध रखने  
वाला, जलयुक्त, प्राप्तियोग्य ।

अप्रवंप(वि०)-न हिला हुआ, नजबूत,  
स्तिर । [ करने वाला ।

अप्रकर(वि०)-भच्छे प्रकार काम न  
अप्रकाण्ड(वि०)-जिस के तना न हो,  
गालारहित । पु०-भाड़ी ।

अप्रकाश(वि०)-अप्रकाशित । न०-  
परव्रज, प्रकाश का न होना,  
अन्धकार ।

अप्रकाशित(वि०)-गूढ़, छिपा हुआ,  
प्रकाश न किया हुआ ।

अप्रकाश्य(वि०)-प्रकाश करने के  
अयोग्य, गोप्य ।

अप्रकृत(वि०)-अन्वाभाषिक, संता-  
पटी, मनाया हुआ ।

अप्रकृष्ट(वि०)-नीच । पु०-भीता ।

अप्रकृष्टगुण(वि०)-जिस का गुण  
उत्तम न हो, पदराया हुआ ।

अप्रखर(वि०)-अतीव्र, मृदु, शान्त ।  
अप्रगल्भ(वि०)-अप्रौढ, अपरिपक्व,  
निरुत्साह, ढीला, सुस्त ।

अप्रगुण(वि०)-जिस के गुण अच्छे न  
हों, व्याकुल ।

अप्रचलित(वि०)-जो प्रचलित न हो,  
जिस का रिवाज न हो, अप्रयुक्त,  
अप्रचरित ।

अप्रच्छेद्य(वि०)-जो छेद के अयोग्य हो  
अप्रज(वि०)-बिना सन्तान का, प्रजा  
हीन ।

अप्रणीति (वि०)-गंधार, अशंसकृत ।  
अप्रतर्क्य(वि०)-जिस के विषय में  
तर्क वितर्क न हो सके ।

अप्रताप(वि०)-प्रतापरहित, सेजहीन ।  
अप्रतिकर(वि०)-विश्वस्त, विश्वास-  
पात्र ।

अप्रति [ ती ] कार(पु०)-उपाय का  
अभाव, तदधीर का न होना ।  
वि०-जिस का उपाय न हो  
सके अर्थात् असाध्य, ला इलाज ।

अप्रतिकारी(वि०)-उपाय वा तदधीर  
न करने वाला, थदला न लेने वाला  
अप्रतिगृहीत(वि०)-जिसका प्रतिग्रह  
न किया गया हो, -जो ग्रहण न  
किया हो ।

अप्रतिग्रहण(न०)-दान न लेना,  
किसी वस्तु का ग्रहण न करना ।  
अप्रतिग्राह्य(वि०)-जो प्रतिग्रहण के  
अयोग्य हो, अप्राप्त ।

अप्रतिघ(वि०)-अजोय, जो दूर न  
किया जा सके, जामोपी ।

अप्रतिद्वन्द्व(वि०)-युद्ध में जिसका कोई शत्रु न हो, अजेय, अनुपम।  
 अप्रतिपक्ष(वि०)-अप्रतिपोगी, विपक्ष-  
 शून्य।  
 अप्रतिपत्ति(स्त्री०)-अस्वीकार, अ-  
 सम्पूर्णता, भूल, इरादे का अभाव,  
 चयराहत।  
 अप्रतिपद्(वि०)-न जाननेवाला, विकल  
 अप्रतिबन्ध(वि०)-भरहु, सीधा।  
 अप्रतिबल(वि०)-अजेय शक्तिवाला,  
 अचीनशक्तिशाली।  
 अप्रतिभ(वि०)-लज्जाशील, कुन्दज-  
 हन, अप्रगल्भ।  
 अप्रतिभट्ट(वि०)-अप्रतिद्वन्द्व। पु०-  
 अनुपम योद्धा। [ शीलता।  
 अप्रतिभा(स्त्री०)-सुदुलता, लज्जा-  
 अप्रतिम(वि०)-अनुपम, अद्वितीय।  
 अप्रतियत्न(पु०)-प्राकृतिक अवस्था।  
 अप्रतिपोगी(वि०)-अप्रतिद्वन्द्व, अपू-  
 तिपक्ष।  
 अप्रतिरय(पु०)-ऐसा योद्धा जिसके  
 सामने लड़ने वाला और कोई  
 न हो, एक क्षपि का नाम।  
 न०-पात्रा, सामवेद, मंगल।  
 अप्रतिरत्न(वि०)-जिसके सम्बन्ध में  
 कोई ऋण न हो।  
 अप्रतिरूप(वि०)-प्रतिकूल, जो अनु-  
 फूल न हो, शैरनीज।  
 अप्रतिरूपकथा(स्त्री०)-रुगजिका।  
 अप्रतिवीर्य(वि०)-अनुपम शक्तिवाला  
 अप्रतिष्ठ(वि०)-अप्रतिष्ठित, प्रतिष्ठा-  
 रहित, घेसूद।

अप्रतिष्ठा(स्त्री०)-वदनांगी, वेदज्ञती  
 अप्रतिष्ठित(वि०)-अनिश्चित, गुम-  
 नाग, असंस्कृत, अपवित्र। पु०-  
 विष्णु।  
 अप्रतिहृत(वि०)-भरहु, जो रीका  
 न का सके, अक्षत।  
 अप्रतीक(वि०)-अवयवरहित, ब्रह्म  
 का विशेषण। [ अज्ञात।  
 अप्रतीत(वि०)-अपूज्य, अप्रतिहृत,  
 अप्रतीति(स्त्री०)-अविश्वाम।  
 अप्रतुल(पु०)-तौल का अभाव, ज़रू-  
 रस, आवश्यकता।  
 अप्रत(वि०)-न दिया हुआ।  
 अप्रत्ता(स्त्री०)-ऐसी कन्या जो विद्या-  
 ही न गई हो।  
 अप्रत्यक्ष(वि०)-जो दिखाई न दे,  
 अज्ञात, अनुपस्थित। [ द्वाच।  
 अप्रत्यय(पु०)-संशय, सन्देह, अवि-  
 अप्रधान(न०)-जो प्रधान न हो,  
 प्राधान्यरहित, सातहत, निम्न-  
 पदस्थ, गीण, साधारण। [ सके।  
 अप्रध्वज(वि०)-अजेय, जो जीता न जा  
 अप्रभ(वि०)-प्रभाहीन, नीच, शून्य।  
 अप्रभु(वि०)-शक्तिहीन, स्वाभिरहित  
 अशक्त। [ यत्न।  
 अप्रभूति(स्त्री०)-यत्नाभाव, कुल २  
 अप्रमत्त(वि०)-सावधान, होशियार,  
 प्रमादहीन।  
 अप्रमद(वि०)-रंजीदा, प्रमन्नताहीन  
 अप्रमाद(वि०)-सावधान। पु०-चिंता,  
 साधनानो, ध्यान, खयरदारी।  
 अप्रमाद(अ०)-ध्यानपूर्वक, गौर से।

अप्रमय(वि०)-असीम, न नाश होने वाला ।

अप्रमा(स्त्री०)-निश्चयाज्ञान ।

अप्रमाण(वि०)-असीम, प्रमाणहीन, जो प्रमाण न हो ।

अप्रमायुक(वि०)-यक्यायक न मरने वाला, यही उम्फा ।

अप्रमित(वि०)-न तोला हुआ, असीम, प्रमाणहीन ।

अप्रमूर्(वि०)-अकृमन्द, दुर्हिमान् ।

अप्रमृष्य(वि०)-न नाश होने वाला, अवाध्य ।

अप्रमेय(वि०)-सीमारहित, प्रमाण-रहित, जो ठीक २ न जाना जावे । न०-ब्रह्म ।

अप्रमोद(अस्त्री०)-हर्ष का अभाव, दुःख दूर करने में अशक्तता ।

अप्रपत्न(वि०)-जो प्रपत्नशील न हो, उदासीन, सुस्त । पु०-प्रपत्न का अभाव, उदासीनता । [अभाव ।

अप्रयागि(स्त्री०)-अगति, गति का अग्रयुक्त(वि०)-जिनका प्रयोग न किया गया हो, जो हस्तीगाल न किया गया हो ।

अप्रयोग(पु०)-प्रयोग का अभाव, हस्तीगाल न करना ।

अप्रलम्ब(वि०)-क्षेत्र औघ्राता में काम करने वाला । न०-औघ्राता, अविलम्ब ।

अप्रसक्त(वि०)-प्रसक्ति उत्पन्न करने वाला । अक्षत, अप्रतिहत, लगातार । [का अभाव ।

अप्रसृति(स्त्री०)-प्रसृति या आसृति

अप्रशस्त(वि०)-अश्रेष्ठ, अविहित, क्षीण ।

अप्रसक्त(वि०)-न लगा हुआ, लगाव न रखने वाला, भीतदिल ।

अप्रसक्ति(स्त्री०)-अलगाव ।

अप्रसंग(पु०)-सम्बन्ध का अभाव, कुम्भवसर । [ संतुष्ट, विरक्त ।

अप्रसन्न(वि०)-जो खुश न हो, अ-अप्रसाद पु०)-नाराजी, प्रसन्नता का अभाव । [ न हो ।

अप्रसिद्ध(वि०)-अज्ञात, जो मशहूर अप्रसिद्धि(स्त्री०)-गुमनामी, अख्याति

अप्रसृत(वि०)-बांफ, सन्ततिरहित ।

अप्रस्तुत(वि०)-अनवसर, अप्रासा-ङ्गिक, बेहूदा, अनुद्यत ।

अप्रहृत(वि०)-अक्षत, बेदाग और नवीन [ जैसे कपड़ा ] ।

अप्रहित(वि०)-न भेजा हुआ, शत्रुओं ने जिस पर आक्रमण न किया हो

अप्राकरणिक(वि०)-अप्रासांगिक ।

अप्राकृत(वि०)-जो प्राकृत न हो, जो गवार न हो, जो असली न हो, असाधारण ।

अप्राचीन(वि०)-नवीन, जो पूर्व का न हो, परिधर्मीय । [ हीन ।

अप्राट(वि०)-दरपोक, मुलायम, दर्प-अप्रादा(स्त्री०)-अविययाहिता कन्या ।

अप्राण(वि०)-जीवनरहित, येनान ।

अप्राप्त(वि०)-प्राप्त न किया हुआ, न आया हुआ ।

अप्राप्तकाल(वि०)-अनवसर, बेगीक

अप्राप्तयौवन (वि०)--जो जवान न हुआ हो ।

अप्राप्तयस् (वि०)--नामालिप्त ।

अप्राप्ति (स्त्री०)--प्राप्ति वा आगम का अभाव, अनुपपत्ति ।

अप्रामाणिक (वि०)--विश्वास के अयोग्य, नाकाधिलेपितवार ।

अप्रिय (वि०)--अप्रीतिकर, अनसीद, नासुखगवार ।

अप्रियकारक-कारिन् (वि०)--अप्रिय करनेवाला । [ कहने वाला ।

अप्रियवादी (वि०)--अप्रिय [ वचन ]

अप्रीति (स्त्री०)--स्नेह का अभाव, प्रेम-हीनता, अरुचि । [ नासुखगवार ।

अप्रीतिकर (वि०)--अरुचि करने वाला, अप्लव (वि०)--जलघानरहित, न तैरने वाला ।

अप्सर (पु०)--जलजन्तु ।

अप्सरा [ स्त्री० ] (स्त्री०)--उर्वशी आदि स्वर्ग की वेश्या ।

अप्सु (वि०)--आकाररहित, असुन्दर ।

अप्सुक्षित (पु०)--देवता ।

अप्सुचर (वि०)--जलचर ।

अप्सुपोनि (पु०)--घोड़ा, वेत ।

अफल (वि०)--निष्फल, येसूद, बंजर । पु०--बकरा । [ मलकी ।

अफला (स्त्री०)--पूतकुमारी, भूम्या-अफलाकांक्षी (वि०)--प्रतिफल की इच्छा न करने वाला, बेगूरज ।

अफेन (वि०)--फेनरहित । न०--अफीम अवच्छिन्न (वि०)--आज्ञाद, स्वतन्त्र, घन्धनरहित ।

अवन्तमुन्व (वि०)--गाली देनेवाला ।

अवन्धन (वि०)--घन्धनरहित, आज्ञाद

अवन्ध-घान्धव (वि०)--घन्धहीन, अकैला । [ न रोके ।

अवन्ध्य (वि०)--सफल, जो फल को अवध्य (वि०)--जो मारने के योग्य न हो ।

अवल (वि०)--दमजोर, दुर्बल, अर-क्षित । पु०--बदल [ घटना ] वृत्त ।

न०--कमजोरी, बल का अभाव ।

अवला (स्त्री०)--भोरत, स्त्री ।

अवलावल (पु०) शिव का नाम ।

अवलास (वि०) क्षयरोगरहित ।

अवलय (न०)--कमजोरी, बीमारी ।

अवाध (वि०)--बैकाबू, बेरोक, दुःख-रहित । पु०--अखण्डन, बाधा का

अभाव । [ सम्पूर्ण जैसे चन्द्रमा ।

अवाल (वि०)--जवान, जो बच्चा न हो,

अवाह्य (वि०)--जो बाहर का न हो, आभ्यान्तरिक ।

अवुद्ध (वि०)--वेधकूफ, मूर्ख ।

अवुद्धि (स्त्री०)--बुद्धि वा समझ का अभाव, अज्ञान, मूर्खता । वि०--

मूर्ख, कमसमझ ।

अवुध-ध (वि०)--मूर्ख, कमसमझ ।

अवोध (वि०)--नासमझ, मूर्ख, घय-राया हुआ । पु०--अज्ञान, कम-समझी । [ सके ।

अवोधगम्य (वि०)--जो समझा न जा

अवोध्य धनीय (वि०)--जो समझा न जा सके, जिस में प्रबोध न हो ।

अवुध (वि०)--तलरहित, मूलरहित ।

अञ्ज(वि०)--जलोत्पन्न । न०--पद्म,  
 दधार्जुन संख्या । पु०--चन्द्र, धन्व-  
 न्तरि, निचलवृक्ष । अस्त्री०--शङ्ख ।  
 अञ्जज(पु०)--ब्रह्मा ।  
 अञ्जनयन(वि०)--कमल की सी आंखें  
 -वाला । [ दृश्, नेत्र, लोचन कोटने  
 से भी यह ही अर्थ होता है ] ।  
 अञ्जयान्धव(पु०)--सूर्य ।  
 अञ्जभोग(पु०)--वराटक, पद्मकन्द ।  
 अञ्जघोनि(पु०)--विघाता, ब्रह्मा ।  
 अञ्जवाहन(पु०)--शिव ।  
 अञ्जहस्त(पु०)--सूर्य ।  
 अञ्जा(स्त्री०)--लक्ष्मी । [ पद्मलता ।  
 अञ्जिनी(स्त्री०)--पद्मिनी, पद्मसमूह,  
 अञ्जिनीपति(पु०)--सूर्य ।  
 अञ्ज(पु०)--यादव, मुस्ता नामक घास,  
 पर्यंत विशेष्य । अस्त्री०--वर्ष, साल ।  
 वि०--जल देने वाला ।  
 अञ्जयाहन(पु०)--शिव का नाम ।  
 अञ्जशत(न०)--सदी, शीतल ।  
 अञ्जसार(पु०)--एक प्रकार का कपूर ।  
 अञ्जि(पु०)--समुद्र, कील ।  
 अञ्जिग्रह(पु०)--समुद्रकेन, समुद्रकाग  
 अञ्जिज(पु०)--चन्द्रमा, शंख ।  
 अञ्जिजौ(पु० द्विव०)--अञ्जिनीकुमार  
 अञ्जिद्वीपा(स्त्री०)--एरवी ।  
 अञ्जिनगरी(स्त्री०)--हारकापुरी ।  
 अञ्जिनयनीनक्ष(पु०)--चन्द्रमा ।  
 अञ्जिपलेन(पु०)--समुद्रकेन ।  
 अञ्जिग्रह(पु०)--विष्णु ।  
 अञ्जगिनि(पु०)--समुद्र की गति,  
 बहवान्त ।

अञ्जमेस(पु०)--सूर्य ।  
 अञ्ज(न०)--मेघ, अवरोध धातु ।  
 अञ्जमातङ्क(पु०)--ऐरावत हाथी ।  
 अञ्जलिह(पु०)--धाम्पु । [ गम ।  
 अञ्जलचर्य(न०)--असतीत्व, स्त्रीसमा-  
 अञ्जलण्य(वि०)--ब्राह्मण के अयोग्य,  
 ब्राह्मण का शत्रु । [ पु०--शत्रु ।  
 अञ्जलण्य(वि०)--जो ब्राह्मण न हो  
 अञ्ज(रमा०)--अञ्जलि करना ।  
 अञ्जलः--अर्घ्य--उपवास, भोजन नखाना  
 अञ्जल्य(वि०)--न खाने योग्य । न०-  
 अखाद्य पदार्थ ।  
 अञ्जक(वि०)--भक्ति न रखने वाला,  
 न खराबा हुआ ।  
 अञ्जक(स्त्री०)--भक्ति वा आसक्ति  
 का अभाव, अग्रहा ।  
 अञ्जग(वि०)--अद्वयनीय ।  
 अञ्जग(वि०)--न टूटा हुआ, अख-  
 विहत, समूचा ।  
 अञ्जद(वि०)--अशुभ, अमांगलिक,  
 अश्रेष्ठ । न०--युराई, पाप, दुःख ।  
 अञ्जय(वि०)--भयरहित, निहर । पु०-  
 परमात्मा का विशेषण, शिव ।  
 न०--भय का अभाव ।  
 अञ्जयकृत्(वि०)--अभयदाग देनेवाला ।  
 अञ्जयद-दायी(वि०)--अभयदाग देने  
 वाला । पु०--विष्णु ।  
 अञ्जयदान(न०)--रक्षा का यत्न देना ।  
 अञ्जययाचना(स्त्री०)--रक्षा के लिये  
 विनती । [ यत्न ।  
 अञ्जययत्न(वि०)--रक्षा करने का  
 अञ्जया(स्त्री०)--हरीतकी, ईश ।

अभयंकरः(वि०)-जी भयंकर न हो ।

अभयंका(स्त्री०)-विधवा, अविवा-  
हिता स्त्री ।

अभय(पु०)-न होना, मुक्ति, अन्त ।

अभय(वि०)-अनुचित, अशुभ, न  
होने योग्य ।

अभाग(वि०)-भागरहित ।

अभागी(वि०)-भाग्यहीनपदकिस्मत् ।

अभाग्य(पु०)-वदकिस्मती, भाग्यहीनत् ।

अभाजन(न०)-कुपात्र, अपात्र, बुरा  
आदमी ।

अभाव(वि०)-प्रेमरहित, भावरहित ।  
पु०-मरण, अघाता, नाश ।

अभावना(स्त्री०)-भावना का न  
होना ।

अभावनीय(वि०)-अचिन्तनीय ।

अभावी-भाव(वि०)-न होने वाला ।

अभाषण(न०)-न बोलना, मौन ।

अभाषि(वि०)-न कहा हुआ ।

अभि(अ०)-उपसर्गविशेष, आगने,  
धीच्छा, अभिछाप, आभिमुख्य,  
चिह्न आदि अर्थों का दीपक ।

अभि[मी] का(वि०)-कामी, कामुक ।

अभिक्रम(१०भा०)-प्रेम करना, इच्छा  
करना ।

अभिकरण(न०)-करना, जादू ।

अभिकाम(वि०)प्रेमी, इच्छुक, कामी ।  
पु०-प्रेम, इच्छा ।

अभिकामिक(वि०)-इच्छाकृत ।

अभिकाम्य(१भा०)-विशेषता से हि-  
लना या हिलाना, तरतीब देना ।

अभिकंपन(वि०)-हिलना, तरतीब ।

अभिकांता(स्त्री०)-इच्छा, दयाहिण,  
चाहना ।

अभिकांती(वि०)-इच्छा करनेवाला ।

अभिकू(८ व०)-करना, दूसरे की ओर  
से करना, प्राप्त करना ।

अभिकृति(स्त्री०)-छन्दोभेद ।

अभिकृत(वि०)-असहिष्णु, यलशाली

अभिकन्द(१ प०)-कन्दन करना,  
विल्लाना ।

अभिकन्द(पु०)-विल्लाहट, गर्जन ।

अभिकर्म(१ व०, ४ प०)-समीप पहुंच-  
चना, करीब आना, इधर उधर  
भटकना, आक्रमण करना, आरम्भ  
करना । [आक्रमण ।

अभिकर्म(पु०)-आरम्भ, मत्न, उद्योग,

अभिकर्मण(न०)-समीप आगमन,  
आक्रमण ।

अभिक्रान्ति(स्त्री०)-पूर्ववत् । [रना ।

अभिक्रुश(१ प०)-विल्लाना, मातम क-

अभिक्रुश(पु०)-विल्लाहट, भिक्कार,  
भत्सना । [करना ।

अभिविप्(६ प०)-कैंकना, अपमान

अभिविषा(स्त्री०)-नाम, शीमा, कीर्ति,  
आख्या ।

अभिविषय(न०)-वश, प्रशंसा ।

अभिगम(१ प०)-समीप पहुंचना,  
अनुगमन करना, पा लेना, समा-  
गम करना, सनकना ।

अभिगन्ता(वि०)-सगमने वाला,  
समीप जाने वाला या सहायन  
करने वाला ।

अभिगमः-नम्-समीपगमन, मुला-  
क्रात, आगमन, समागम ।

अभिगामी[न्] (वि०)-समीप जाने  
वाला, समागम करनेवाला ।

अभिगर्ज्(१ प०)-गुरोना या गर्जना ।

अभिगीत(वि०)-गाया हुआ ।

अभिगुप्(१० प०)-रक्षा करना, हिफा-  
जत करना, छिपाना ।

अभिगुप्ति(स्त्री०)--छिपाना, हिफा-  
जत, रक्षा ।

अभिगै(१ प०)-पुकारना, गीत गाकर  
गुंजाना, अनुमति देना ।

अभिग्रस्त(वि०)--अभियुक्त, शत्रुद्वारा  
आक्रान्त ।

अभिग्रह्(९ प०)--पकड़ना, छे डेना,  
मजबूती से ग्रहण करना ।

अभिग्रह्(पु०)--लूटना, पकड़ना,  
आक्रमण, शिकार ।

अभिग्रह्णा(न०)--लूटना, छीनना ।

अभिघर्षण(न०)--रगड़ना, रगड़, झूत  
पूत का चढ़ना ।

अभिघात(पु०)--आघात, प्रहार, चोट ।

अभिघातक(वि०)--चोट करनेवाला,  
प्रहार करनेवाला ।

अभिघार(पु०)--घी, घृत । [ मलना ।

अभिघारण(न०)--घी छिड़कना या

अभिघाती(वि०)--मारनेवाला, चोट  
करने वाला ।

अभिघ्रा(स्त्री०)--चूषना ।

अभिघर्(१ प०)-अनुचित व्यवहार  
करना, नाराज करना, जादू करना

आक्रान्त करना ।

अभिचर(पु०)-अनुगामी, नीकर, दास ।

अभिचरण(न०)-जादू करना ।

अभिचार(पु०)-जादू, वध, हिंसाकर्मा ।

अभिचारमंत्र(पु०)-जादू का मंत्र ।

अभिचारी[न्] (वि०)-अभिचार करने  
वाला । [ वंश, कुल ।

अभिजन(पु०)-ख्याति, जन्मभूमि,

अभिजय(पु०)--जीत, पूर्ण विजय ।

अभिजात(वि०)-शुन्दर, कुलीन ।

अभिजाति(स्त्री०)-कुलीनता, अच्छा  
वंश । [ जीस कर प्राप्त करना ।

अभिजि(१ प०)-विद्यकुल जीतना,

अभिजित्(वि०)-जतनमय । पुं-  
विष्णु ।

अभिजित(पु०)-मुहूर्तविधेय ।

अभिज्ञा(वि०)-ज्ञानकार, वाक्पति ।

अभिज्ञा(९प०)-पहिचानना, देखना,  
ज्ञानना ।

अभिज्ञान(न०)-चिन्ह, लक्षण, स्मृति ।

अभिज्ञापक(वि०)-ज्ञात करानेवाला,  
सूचना देने वाला ।

अभिज्ञह् (१० प०)-छटखटाना, ति-  
शाना मारना । [ दुःखी ।

अभिज्ञप्त(वि०)-सन्तुष्ट, जला हुआ,

अभिनर्पण(न०)-सन्तुष्टि, तरोताजा-  
गी । [ ओर, शीघ्रता ।

अभिज्ञस्(अ०)-समीप, सामने, दोनों

अभिज्ञाह्न(न०)-छटखटाहट ।

अभिज्ञाप (पु०)-अत्यन्त गर्मी, घम-  
राहट, कष्ट । [ सुख ।

अभिज्ञाय(वि०)-गहराकाल, बहुत

अभिज्ञप्(१० प०)-तृप्त करना, सन्तुष्ट

करना, तरोताजा करना ।



अभिदर्शन(न०)-प्रत्यक्षीकरण, देखना ।

अभिदृष्ट( १ प०)-घूरना, देखना ।

अभिद्यु(वि०)-स्वर्गीय, शोभायुक्त ।

अभिद्रवः-द्रवणं-आक्रमण ।

अभिद्रु( १ प०)-दीड़कर पास पहुंच-  
ना, आक्रमण करना, अस्तव्यस्त  
करना ।

अभिद्रुत(वि०)-आक्रान्त ।

अभिद्रुद्( ४ प०)--नफरत करना, मुक्त-  
सान पहुंचाने का यत्न करना,  
साजिश करना ।

अभिद्रोह(पु०)-साजिश, मुक्तसान,  
भत्सना, क्रूरता ।

अभिधा( ३ उ० )-कहना, धोखना,  
घमान करना, पुकारना ।

अभिधान(न०)-नाम, कथन, शब्द-  
कोष, चरित्र, निर्देश ।

अभिधेय(न०)-नाम, अभिधान ।

वि०-फहने के योग्य, प्रतिपाद्य ।

अभिधाव( १ प०)-दीड़कर पहुंचना,  
आक्रमण करना ।

अभिधावण(न०)-आक्रमण, पीडा ।

अभिध्या(स्त्री०)-दूसरे के भाल की  
चाहना, इच्छा ।

अभिध्यान(न०)-चिन्तन, स्वादिष्ट ।

अभिधे( १ प०)-चिन्तन करना,  
सोचना, इच्छा करना ।

अभिगन्द्( १ प०)-सुगंधी मानना, प्रसन्न  
होना, अभिनन्दन करना ।

अभिनन्दन(न०)-गुच्छा, स्वागत ।

अभिमम्( १ प०)-झुकना ।

अभिगय(वि०)-झुका हुआ ।

अभिनय(पु०)-हृदयस्थभावप्रकाशक  
क्रिया, शरीर की चेष्टादि से  
दृश्य पदार्थ को जताने वाला  
रूपक आदि दृश्यकाव्य ।

अभिनय(वि०)-विलकुल नया, ताजा ।

अभिनयोद्धित द्-द(पु०)-अंकुर ।

अभिनह( ४ प०)-घांघना ।

अभिनहन(न०)-दोनों ओर से घांघना,  
पकका घाघना ।

अभिनिर्गुक्त(पु०)-नूपास्त के वक्तु  
निद्रा के कारण छूटा हुआ उस  
वक्तु करने लायक काम ।

अभिनिर्माण(न०)-जीतने की कामना  
से गमन करना, चाखा नारना ।

अभिनिधुक्त(वि०)-मशगूल, लगा  
हुआ ।

अभिनिधोय(पु०)-गहरा लगाव, ध्यान ।

अभिनिधिष्( ६ आ० )-मन्दर प्रवेश  
करना, क्यूँ करना ।

अभिनिधिष्ट(वि०)-अन्दर प्रविष्ट  
हुआ, लगा हुआ, घसा हुआ,  
गड़ा हुआ ।

अभिनिवेश(पु०)-मनोनिवेश, किसी  
विषय में गति । योगशास्त्र में

भरसभय का हेतु अविद्याविशेष ।

अभिनिवेशित(वि०)-प्रविष्ट, घंसा  
हुआ ।

अभिनिवेशी[त्र] (वि०)-रत, लगा

अभिनिष्क्रमण(न०)-घाटर निकलना ।

अभिनिष्पत्त( १ प०)-बाहर दीड़ना,  
जारी होना, अंकुर उगना ।

अभिनिष्पद्(४ आ०)-पास जाना या जाना, दाखिल होना, जाहिर होना।  
 अभिनिष्पत्ति( स्त्री० )-सम्पूर्णता, समाप्ति । [ छेजाना । ]  
 अभिनी( १ प० )-नजदीक जाना,  
 अभिनीत(वि०)-पास लाया हुआ,  
 छेजाया हुआ, सम्पादित, अभि-  
 नय किया हुआ, योग्य ।  
 अभिनीति(स्त्री०)-चेहरे की हरकत,  
 नेहरखानी, दोस्ती, सन्न ।  
 अभिनेता(पु०)-अभिनय करने वाला ।  
 अभिनेत्री(स्त्री०)-अभिनय करनेवाली ।  
 अभिन्न(वि०)-भिन्नतारहित, वही,  
 एक ही, सम्पूर्ण, अविभक्त ।  
 अभिन्यास(पु०)-उपरविशेष ।  
 अभिपत्त(१ प०)-समीप जाना, पास  
 जाना, सड़ कर पास पहुंचना,  
 हनला करना ।  
 अभिपत्तन(न०)-समीपगमन, आक-  
 मण, जुदा होना । [ जाना । ]  
 अभिपत्ति( स्त्री० )-सम्पूर्णता, पास  
 अभिपद्(४ आ०)-पास जाना, पास  
 रींचना, पकड़ना, मगलुय करना,  
 स्वीकार करना, इज्जत करना ।  
 अभिपद्म(वि०)-ध्रुवत सुन्दर ।  
 अभिपन्न(वि०)-समीप आया हुआ,  
 मगोहा, मगलुय, स्वीकृत, दीपी,  
 मृत । [ करना । ]  
 अभिपूज(१० प०)-पूजा करना, अर्चना  
 अभिपूजन(न०)-पूजा करना, पेगन्द  
 करना । [ तार । ]  
 अभिपूष(भ०)-एक के बाद एक लगा-

अभिपूरण ( न० )-भरना, आक्रान्त  
 करना ।  
 अभिप्रणय(पु०)-प्रेम, मुष्टीकरण ।  
 अभिप्रणी(१प०)-छेजाना, पास जाना,  
 संस्कृत करना ।  
 अभिप्रतप्त(वि०)-अत्यन्तगर्म, सूख  
 हुआ, दुःख से पका हुआ ।  
 अभिप्रवृत्त( १'आ० )-दूसरे की ओर  
 बढ़ना, पहुंचना, वाकिफ होना ।  
 अभिप्रवृत्त(वि०)-छगा हुआ, नश्वूल  
 अभिप्राय(पु०)-आशय, राय, सलाह,  
 तात्पर्य, इच्छा, इरादा, उद्देश्य,  
 निश्वास, विष्णु का नाम ।  
 अभिप्रीति(स्त्री०)-इच्छा, सुखी मनाना  
 अभिप्रे ( २ प० )-समीप जाना, करीब  
 जाना, इरादा करना, सोचना ।  
 अभिप्रेत ( वि० )-इष्ट, अभिलषित,  
 चाहा हुआ, सकसूद, स्वीकृत ।  
 अभिप्रीक्षण(न०)-छिड़कना ।  
 अभिप्लव(पु०)-दुःख, गड़बड़ ।  
 अभिप्लु(४आ०)-पास जाना, फूदकर  
 पास पहुंचना, यह निकलना ।  
 अभिभव ( पु० )-पराभव, गर्वनाश,  
 तिरस्कार ।  
 अभिभा(२प०)-घमकना ।  
 अभिभार (वि०)-ग्रस्त भारी ।  
 अभिभाष्(घा०आ०)-घातें करना, घ-  
 यान करना ।  
 अभिभाषण(न०)-घातघीत, कथन ।  
 अभिसू(१प०)-पराजित करना, हराना,  
 आक्रमण करना, दपंताश करना,  
 पेदृजती करना ।

अभिभूत(वि०)-ज्ञानरहित, पराजित,  
हराया हुआ ।

अभिभूति(स्त्री०)-अवज्ञा, अनादर ।

अभिमत(वि०)-इष्ट, सम्मत, हृदय-  
ङ्गम । न०-इच्छा, रुचादिश । पु०-  
प्रेमी ।

अभिमत(स्त्री०)-इच्छा, गवें, अभिमान ।

अभिमत(पु०)-इच्छा करना, रुचा  
करना ।

अभिमतस्(वि०)-रुचादिशमन्द ।

अभिमतन्(१० आ०)-संस्कृत करना,  
निसन्धित करना । [ करण ।

अभिमतन्त्रण (न०)-आह्वान, सस्कार-

अभिमतन्त्रण(पु०)-पक्षुरोग ।

अभिमतन्त्रु(पु०)-अर्जुन का पुत्र जो  
सुभद्रा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था ।

अभिमत(पु०)-युद्ध, वध, यन्धन, अपनी  
सेना से भय ।

अभिमतदं(पु०)-पीडन, युद्ध, रण ।

अभिमतदं(न०)-सताना, दयाना ।

अभिमतः-नम्-छूना, आक्रमण, समा-  
गम ।

अभिमाति(पु०)-शत्रु ।

अभिमान(पु०)-अहङ्कार, धनादि-  
द्वारा दर्प, प्रार्थना, हिंसा ।

अभिमानिन(न०)-प्रेम, मैथुन, गर्व ।  
वि०-अभिमानयुक्त ।

अभिमानि[न्] (वि०)-अभिमानयुक्त,

अभिमान में फंसा हुआ, पगंड़ी

अभिमाप(वि०)-अभिभूत, मूर्ख, कर्त्त-  
व्य को न जानने वाला ।

अभिमुख(वि०)-सम्मुख, सामने ।

अभिसृच्छित्त(वि०)-विलकुल चरराया  
हुआ, पागल ।

अभिसृष्ट(१५०)-कुचञ्चना, सताना, वर-  
वाद करना ।

अभिसृष्ट(६५०)-छूना, पीरे र रगड़ना ।

अभिसृष्ट(वि०)-छुआ हुआ, रगड़ा  
हुआ, चमीप आया हुआ ।

अभिसा(२३०)-समीप जाना, आक्रमण  
करना, आसक्त होना ।

अभिसा(१५०)-याचना करना ।

अभिसाचन-याचना-प्रार्थना, दिनप,  
दरकवास्त । [ आक्रमणकारी ।

अभिसाता(वि०)-समीप आनेवाला,

अभिसाति(स्त्री०)-आक्रमण ।

अभिसान(न०)-पास आना, अभिक्र-  
मण, युद्ध के लिये प्रस्थान ।

अभिसु(३५०)-आसक्त होना, अपने  
आप को तैयार करना, यत्न करना,

दोष छगाना ।

अभिसुक्[ञ्] (स्त्री०)-शत्रु, दुश्मन ।

अभिसुक्त(वि०)-तत्पर, मेहनती,  
आक्रान्त, मुजरिम, कथित ।

अभियोक्ता(पु०)-शत्रु, अभियोगकर्त्ता,  
करवादी, वादी, जर्मी ।

अभियोग(पु०)-अपराध की योजना,  
किसी के किये हुए दोष व अप-

राध के दिग्दृष्ट न्यायालय में  
नियेदन करना, मुद्दा, नाटिका,

पटाई, आक्रमण, चढ़ाव, कर्त्त-  
व्य ।

अभिसृष्ट(१५०)-रगड़ करना, री-  
रगड़ करना, आसक्त करना ।

अभिरक्षा(स्त्री०)-सब ओर से रक्षा ।  
 अभिरक्त(वि०)-आसक्त, लगा हुआ ।  
 अभिरत( वि० )-प्रसन्न, सन्तुष्ट,  
 • अभिरक्त ।  
 अभिरति(स्त्री०)-प्रसन्नता, सन्तुष्टि,  
 • अमल । [ करना ।  
 अभिरम्(१ आ०)-प्रसन्न होना, खुश  
 अभिराम(वि०)-रुचिर, सुन्दर, मनोहर  
 अभिरुच्(१ आ०)-चमकना, सुन्दर  
 दीख पड़ना ।  
 अभिरुचि(स्त्री०)-इच्छा, पसन्द ।  
 अभिरुचिर(वि०)-बहुत सुन्दर ।  
 अभिरूप( वि० )-अनुरूप, अनुरूप,  
 मनोहर, परिष्ठत । पु०-पद्मना,  
 शिव, विशु, कामदेव ।  
 अभिलक्षित(वि०)-चिन्हित, अंकयुक्त  
 अभिलप्(१ प०)-प्राप्त करना, मुखा-  
 तिय करना ।  
 अभिलप्(१, ४ प०)-इच्छा करना,  
 स्वादिष्ट करना । [ हुआ ।  
 अभिलपित( वि० )-इच्छित, चाहा  
 अभिलाप(पु०)-शब्द, कथन, वाक्य ।  
 अभिलाष(पु०)-उद्देश, फाटना ।  
 अभिलाष[म] (पु०)-लोग, इच्छा,  
 आकांक्षा ।  
 अभिलाषी[न] (वि०)-अभिलाषयुक्त ।  
 अभिलापुक( वि० )-अभिलाषयुक्त,  
 लोभी । [ छोड़ा हुआ ।  
 अभिलिखित( वि० )-लिखा हुआ,  
 अभिलीन(वि०)-आसक्त, तल्लीन ।  
 अभियद्(१ व०)-प्राप्त करना, बोलना ।  
 अभियदन(न०)-पुकारना, नमस्कार

अभिवाद्:-दनम्-अभिप्राय, पदना,  
 प्रणाम ।  
 अभिवादक-दिका(वि०)-चन्दन करने  
 वाला या वाली, अभिप्रेत ।  
 अभिवद्(१ आ०)-आदरपूर्वक प्रणाम  
 करना ।  
 अभिवदन(न०)-आदरपूर्वक प्रणाम ।  
 अभिविख्यात( वि० )-सर्वत्र जाना  
 हुआ, गशहूर ।  
 अभिविधि(स्त्री०)-ठपानि, नयादा ।  
 अभिविनी(१ व०)-सिल्लाना, तालीम  
 देना ।  
 अभिविश्रुत(वि०)-अभिविख्यात ।  
 अभिवृद्धि( स्त्री० )-बढ़ोत्तरी, काम-  
 याची, अभ्युदय । [ साफ़ ।  
 अभिव्यक्त(वि०)-जाहिर, प्रकाशित,  
 अभिव्यक्ति(स्त्री०)-प्रकाशन, बजहार,  
 जाहिर होना ।  
 अभिव्यापक(वि०)-पूर्ण रूप से फैलने  
 वाला । पु०-ईश्वर ।  
 अभिव्याप्ति( स्त्री० )-पूरी तरह से  
 मिलना, सब ओर फैलना ।  
 अभिशपन(न०)-अभिशाप, मिथ्या  
 अभिशंसन, बद्दुआ, मिथ्या  
 दोषारोपण । [ हो, शापग्रस्त ।  
 अभिशप्त(वि०)-मिसे शाप दिया गया  
 अभिशंसन(न०)-दोषभिचार का मिथ्या  
 दोष लगाना ।  
 अभिशस्त( वि० )-उपयुक्त, ला-  
 ङ्घित जिस पर उपभिचार का  
 मिथ्या दोष लगा हो । [ पाचना ।  
 अभिशस्ति(स्त्री०)-लोकापवाद, शाप,

अभिधाप(पु०)-मिश्रापवाद, यद् दु-  
आ, गहरा अभिषेय ।

अभिधापन(न०)-यद्दुआ देना ।

अभिधोरु(पु०)-घना दुःख ।

अभिधोरु(घि०)-गर्भ के कारण चम-  
कने वाला । [ मन्त्रों का पाठ ।

अभिध्रवण(न०)-घ्राह के समय वेद-

अभिधाव(पु०)-प्रसिद्ध होना ।

अभिपंग( पु० )-पराजय, आक्रोश,  
शपथ, निर्यापवाद, आछिन्नन ।

अभिपय(पु०)-यज्ञस्नान, मद्यसंचान,  
शैमलतापान, यज्ञ, स्नान ।

अभिपिच्छ(ई २०)-गल का छिड़कना,  
तर करना, संस्कृत करना ।

अभिपेक(पु०)-हाना, गल से सिंचन,  
छिड़काव, धाधाशान्ति के लिये  
वा मंगल के वास्ते मंत्र पढ़ कर  
कुज वा दूध से गल छिड़कना,  
राजपद पर निर्वाचन, तिलक  
की रसन । [ घाटा ।

अभिपेक्षा( घि० )-अभिपेक कराने  
अभिपेचन(न०)-छिड़काव, राजतिलक ।  
अभिपेचन(न०)-शत्रु से प्रति सेना  
सहित गमन करना ।

अभिष्टव(पु०)-तारीफ, प्रशंसा ।

अभिष्टु ( २ प० )-तारीफ करना,  
यद्वाया देना, संस्कृत करना ।

अभिष्टुत(घि०)-वर्णित, तारीफ किया  
गया । [ का एक रोग ।

अभिष्पन्द(पु०) यद्वाय, स्वाय, आंख

अभिष्पंग(पु०)-खगाव, प्रेम, मुहुर्यत ।

अभिसंयोग(पु०)-गहरा लगाव, बहुत  
गहरा सान्द्रक ।

अभिसंवृत(वि०)-वर्ज्यक । [ स्थान ।

अभिसंश्रय(पु०)-आश्रय, रक्षा का

अभिसंमार(पु०)-दल यद्दु होकर आना

अभिसंस्कार(पु०)-खयाल, विचार,  
निरर्थक काम । [ करना ।

अभिसंस्कृ( ८ व० )-यमाना, संस्कृत

अभिसंस्तव(पु०)-निरर्थक प्रशंसा ।

अभिसंख्या( २ प० )-गिनना, अनुमान  
लगाना, । [ थोड़ा ।

अभिसंचारी(पु०)-अस्तिपर, परिवर्तन-

अभिसन्तप्(१ प०)-दुःख देना, खताना

अभिसन्ताप(पु०)-खड़ाई, भगड़ा,  
मुह । [ न्द्रिय ।

अभिसन्देह(पु०)-तथादला, उपस्थे-

अभिसन्ध-न्धक(पु०)-चोखेधाज ।

अभिसन्धा(३ व०)-एक जगह कायम  
रखना, स्वीकार करना, निशाना  
लगाना, धोखा देना, अभिस-  
न्धान करना ।

अभिसन्धा(स्त्री०)-कपन, दिमाग,  
वायदा, धोखा ।

अभिसन्धान(न०)-पूर्ववत् ।

अभिसन्धि(पु०)-पूर्ववत् ।

अभिसमशाय(पु०)-झोड़, मिलन ।

अभिसम्पत्(१ प०)-उड़ कर पहुंचना,  
जल्दी करना, पहुंचना ।

अभिसम्पद्(३ भा०)-होना, परियत्तिंत  
होना, तट्टव होना, प्राप्त करना ।

अभिसम्पराय(पु०)-ज्ञाधी, जयिपत्त ।

अभिरक्षा(स्त्री०)-सब ओर से रक्षा ।  
 अभिरक्त(वि०)-आसक्त, लगा हुआ ।  
 अभिरत( वि० )-प्रसन्न, सन्तुष्ट,  
 • अभिरक्त ।  
 अभिरति(स्त्री०)-प्रसन्नता, सन्तुष्टि,  
 अगल । [ करना ।  
 अभिरसु(१ आ०)-प्रसन्न होना, खुश  
 अभिराम(वि०)-रुचिर, सुन्दर, मनोहर  
 अभिरुचि(१ आ०)-चमकना, सुन्दर  
 दीख पड़ना ।  
 अभिरुचि(स्त्री०)-इच्छा, पसन्द ।  
 अभिरुचिर(वि०)-बहुत सुन्दर ।  
 अभिरूप( वि० )-अनुकूल, अनुरूप,  
 मनोहर, पण्डित । पु०-पद्मना,  
 शिव, विष्णु, कामदेव ।  
 अभिलक्षित(वि०)-चिन्हित, अंकयुक्त  
 अभिलप्(१ प०)-प्राप्त करना, मुखा-  
 तिय करना ।  
 अभिलप(१, ४ प०)-इच्छा करना,  
 स्वादिश करना । [ हुआ ।  
 अभिलपित( वि० )-इच्छित, चाहा  
 अभिलाप(पु०)-शब्द, कथन, वाक्य ।  
 अभिलाष(पु०)-छेदन, काटना ।  
 अभिलाप[म] (पु०)-छोम, इच्छा,  
 आकांक्षा ।  
 अभिलाषी[न] (वि०)-अभिलाषयुक्त ।  
 अभिलापक( वि० )-अभिलाषयुक्त,  
 लोभी । [ सोदा हुआ ।  
 अभिलिखित( वि० )-लिखा हुआ,  
 अभिलीन(वि०)-आमक्त, तल्लीन ।  
 अभिवद्(१ उ०)-प्राप्त करना, योचना ।  
 अभिवदन(न०)-पुकारना, नमस्कार

अभिवाद्:-दनम्-अप्रियवाक्य, वन्दना,  
 प्रणाम ।  
 अभिवादक-दिक्का(वि०)-वन्दन करने  
 वाला या वाली, अप्रियवक्ता ।  
 अभिवंदु(१ आ०)-आदरपूर्वक प्रणाम  
 करना ।  
 अभिवंदन(न०)-आदरपूर्वक प्रणाम ।  
 अभिविरुपात( वि० )-सर्वत्र जाना  
 हुआ, मशहूर ।  
 अभिविधि(स्त्री०)-ठ्याप्ति, मयोदा ।  
 अभिविनी(१ उ०)-सिखलाना, तालीम  
 देना ।  
 अभिविश्रुत(वि०)-अभिविरुपात ।  
 अभिवृद्धि( स्त्री० )-बढ़ोत्तरी, काम-  
 याची, अभ्युदय । [ साफ़ ।  
 अभिव्यक्त(वि०)-जाहिर, प्रकाशित,  
 अभिव्यक्ति(स्त्री०)-प्रकाशन, इजहार,  
 जाहिर होना ।  
 अभिव्यापक(वि०)-पूर्ण रूप से फैलने  
 वाला । पु०-ईश्वर ।  
 अभिव्याप्ति( स्त्री० )-पूरी तरह से  
 मिलना, सब ओर फैलना ।  
 अभिशपन(न०)-अभिधाप, मिथ्या  
 अभिशंसन, मदहुआ, मिथ्या  
 दोषारोपण । [ दो, शापग्रस्त ।  
 अभिशप्त(वि०)-जिसे शाप दिया गया  
 अभिशंसन(न०)-उपनिषार का मिथ्या  
 दोष लगाना ।  
 अभिशस्त( वि० )-उपधेकलंकित, ला-  
 ङ्छित जिस पर उपनिषार का  
 मिथ्या दोष लगा हो । [ याचना ।  
 अभिशस्ति(स्त्री०)-लोकापवाद, शाप,

अभिगाप(पु०)-भिष्यापवाद, बद् दु-  
आ, गहरा अभियोग ।

अभिशापन(न०)-बद्दुआ देना ।

अभिगोरु(पु०)-घना दुःख ।

अभिगोच(वि०)-गर्भों के कारण चम-  
कने वाला । [ मन्त्रों का पाठ ।

अभिग्रयण(न०)-ग्राह के समय वेद-

अभिग्राव(पु०)-प्रसिद्ध होना ।

अभिपंग(पु०)-पराजय, आक्रोश,  
शपथ, भिष्यापवाद, आलिंगन ।

अभिपय(पु०)-पञ्चस्नान, मद्यसंधान,  
सोमलतापान, यज्ञ, स्नान ।

अभिपिच्छ(६ उ०)-जल का छिड़कना,  
तर करना, संस्कृत करना ।

अभिपेक(पु०)-स्नान, जल से सिंचन,  
छिड़काव, पाषाणान्ति-के छिपे  
या मंगल के वास्ते मंत्र पढ़ कर  
कुश या दूध से जल छिड़कना,  
राजपद पर निर्वाचन, तिलक  
की रचना । [ वाला ।

अभिपेक्षा(वि०)-अभिपेक्ष कराने  
अभिपेचन(न०)-छिड़काव, राजतिलक ।  
अभिपेयन(न०)-शत्रु से प्रति भेना  
सहित गमन करना ।

अभिष्टव(पु०)-तारीफ, प्रशंसा ।

अभिष्टु (२ प०)-तारीफ करना,  
बड़ाया देना, संस्कृत करना ।

अभिष्टुत(वि०)-घणित, तारीफ किया  
गया । [ का एक रोग ।

अभिष्यन्द(पु०)-यज्ञाय, स्नाय, श्राय

अभिष्यंग(पु०)-छगाव, प्रेम, मुह्यव्रत ।

अभिसंयोग(पु०)-गहरा छगाव, दहुत  
गहरा तानलुक ।

अभिसंवृत(वि०)-वस्त्रमुक्त । [ स्थान ।

अभिसंशय(पु०)-आश्रय, रक्षा का

अभिसंसार(पु०)-दल घट्ट होकर आना

अभिसंस्कार(पु०)-छपाछ, विचार,  
निरर्थक काम । [ करना ।

अभिसंस्कृ(६ उ०)-घनाना, संस्कृत

अभिसंस्तव(पु०)-सत्यपिक प्रशंसा ।

अभिसंख्या(२ प०)-गिनना, अनुमान  
लगाना, । [ शील ।

अभिसंचारी(पु०)-अक्षिप, परिवर्तन-

अभिसन्तप्(१ प०)-दुःख देना, सताना ।

अभिसन्ताप(पु०)-छड़ाई, भगड़ा,

मुठ । [ द्विप ।

अभिमन्देह(पु०)-तथादला, उपस्थे-

अभिमन्ध-न्धक(पु०)-धोखेबाज ।

अभिमन्धा(३ उ०)-एक जगह कायम  
रखना, स्थोकार करना, निशाना  
लगाना, धोखा देना, अभिस-  
न्धान करना ।

अभिसन्धा(स्त्री०)-कपन, धिमाग,  
वायदा, धोखा ।

अभिसन्धान(न०)-पूर्ययत् ।

अभिसन्धि(पु०)-पूर्ययत् ।

अभिसमवाय(पु०)-जोड़, मिलन ।

अभिसम्पत्(१ प०)-उड़ कर पहुंचना,  
जल्दी करना, पहुंचना ।

अभिसम्पट्(४ भा०)-होना, परिवर्तित  
होना, तट्टर होना, प्राप्त करना ।

अभिसम्पराय(पु०)-भरायी, जयिपत् ।

अभिसम्पत्त(पु०)-एक स्थान पर  
मिलना, युद्ध, शाप ।

अभिसम्बन्ध(१५०)-वाहम बांधना ।

अभिसम्बन्ध(पु०)-ताल्लुक, रिश्ता,  
लगाव, मैथुन ।

अभिसर(पु०)-सहायक, अनुचर ।

अभिसरण(ग०)-भागे जाना, समीप  
जाना ।

अभिसर्ग(पु०)-उत्पत्ति ।

अभिसर्ज्जम(म०)-दान, दय [जाना ।

अभिसर्पण(न०)-बुद्धाभिप्राय से समीप

अभिषां [धां] त्व् (१० पु०)-प्रसन्न  
करना, शान्त करना, हमदर्दी  
करना । [करना, शान्ति देना ।

अभिषां [धां] त्वः-नम्-हमदर्दी

अभिषार्य(भ०)-सूरज छिपने के समय ।

अभिसार(पु०)-ब्रह्म, युद्ध, साधन, सहाय

अभिसारिका(स्त्री०)-अवस्थानुसार  
नायिका के दश भेदों में से एक,  
बहु स्त्री की संकेतस्थल में मिय  
से मिलने के लिये स्वयं जाय ।

अभिस्त (१५०)-समीप जाना, आक्रमण  
करना, मुत्ताक्रांत करना ।

अभिधृञ् (६५०)-बनाना, तैयार कर-  
ना, सोलना, देना, आक्रमण  
करना । [करना, अभ्यास करना ।

अभिधेयन(न०)-भगल करना, सेवन

अभिनेह (पु०)-मुहब्बत, प्रेम,  
प्राप्तिक ।

अभिहम(वि०)-आक्रान्त, घत ।

अभिहति(स्त्री०)-घोटकरना, चारना ।

अभिहन् (२५०)-भारना, पीटना,  
मुक्कसान पहुँचाना, आक्रान्त  
करना । [ना, आह्वान ।

अभिहय(पु०)-यज्ञ, आहुति, पुकार-

अभिहास(पु०)-म्झाक, हंसी ठहा ।

अभिहित(वि०)-उक्त, कथित, कहा  
हुआ ।

अभिहर (पु०)-दूरीकरण, लेजाना ।

अभिहरण (ग०)-पास लाना, छूटना ।

अभिहार(पु०)-दूरीकरण, छूटना,  
आक्रमण, शराधी । [गिराना ।

अभिहुति(स्त्री०)-मुक्कसान, द्वार,

अभिधृ (१५०)-दूर लेजाना, एटाना,

समीप लाना, पहिरना, आक्रमण  
करना ।

अभी (२५०)-करीब जाना, दाखिल

होना, पहुँचना । वि०-भयरहित ।

अभीक(वि०)-उत्सुक, निर्भय, कामुक,

क्रूर । पु०-प्रेमी, कवि, स्वामी ।

अभीक्ष्ण(वि०)-दोहराया हुआ,

लगातार, अत्यधिक । [तेज़ी से ।

अभीक्ष्ण(अ०)-बार बार, लगातार,

अभीक्ष्ण(पु०)-देखता ।

अभीक्ष्ण-अभीक्ष्ण(वि०)-अपरहित, निहुरा

अभीक्ष्ण(स्त्री०)-निर्भयता, आक्रमण,  
आगोच्य ।

अभीक्ष्ण (वि०)-अभिलषित,

इच्छित । न०-स्वादिष्ट, इच्छा ।

अभीक्ष्ण(वि०)-जो अपायक न हो ।

पु०-विष्णु ।

अभीक्ष्ण=अभिमान ।

अभीक्ष्ण(पु०)-सुखी ।



अभीर(पु०)-गालिया, अहीर, गोप ।  
अभीरपल्ली (स्त्री०)-गालियों का  
ग्राम या भोंपड़ा । [ खांप ।

अभीरणी (स्त्री०)-एक प्रकार का  
अभीरी (स्त्री०)-गालों की भाषा ।  
अभीरु (वि०)-जो भयानक न हो,  
निहत् । [ स्त्रीलिंग में ककारांत  
हो जाता है ] ।

अभीरु (पु०)-शिव वा सैरव । स्त्री०-  
शतावरी । न०-युद्धरूप ।

अभीरुण (वि०)-निहत्, दोषहीन ।  
अभीरुपत्री (स्त्री०)-शतमूली, शतावरी  
अभील (न०)-कठिना, दुःख ।

अभीलाप (पु०)-गुरुगू, बातचीत ।

अभीवृत्त (वि०)-टका हुआ, घिरा हुआ  
अभीशाप (पु०)-शाप, बर्ददुर्मा ।

अभीष्ट-पु (पु०)-'घोड़े' की लगान,  
किरण । स्त्री०-उंगली ।

अभीष्ट (६ प०)-फिसी वस्तु के लिये  
इच्छा करना, तलाश करना,  
प्राप्ति का यत्न करना ।

अभीष्टंग (पु०)-आक्रोश, क्रन्दन ।

अभीष्टया (स्त्री०)-निहत् होकर ।

अभीष्ट (पु०)-कान, अमुराग ।

अभीष्ट (वि०)-वाञ्छित, अभिलषित,  
प्रिय । न०-इच्छा की वस्तु, अभि-  
मत वस्तु ।

अभीष्टदेयता (स्त्री०)-प्रिय देयता,  
प्रसन्न हुआ देयता ।

अभीष्टलाभः-सिद्धिः-चाही हुई वस्तु  
का प्राप्त होना ।

अभुक्त (वि०)-न खाया हुआ, न भोगा  
हुआ, उपवास्य ।

अभुक्त (वि०)-भुनाहीन, टुण्डा ।

अभूत (वि०)-अनुत्पन्न, जो न हुआ  
हो, वर्तमान, अपूर्व, विलक्षण ।

अभूतपूर्व (वि०)-विलक्षण, अनुपम ।

अभूतशत्रु (वि०)-अज्ञातशत्रु, शत्रुरहित

अभूति (स्त्री०)-अभाव, शक्ति का  
अभाव, निर्धनता ।

अभूमि (स्त्री०) स्वामाभाव, अनाधार,  
आश्रयाभाव ।

अभूरि (वि०)-वन्द, घोड़े, अल्प ।

अभृश (वि०)-पूर्ववत् ।

अभेद (वि०)-भेदरहित, अविकल्पा ।

पु०-भेद का अभाव । [ हीरा ।

अभेद्य (वि०)-न भेदने योग्य । न०-

अभोग (पु०)-भोग का अभाव ।

अभोगन (न०)-भोगन का अभाव,  
उपवास्य ।

अभोक्ष्य (वि०)-न खाने योग्य, अखाद्य

अर्थातिक (वि०)-अपार्थिक, अप्राक्-  
तिक, मानसिक ।

अभ्यक्त (वि०)-मला हुआ, अभिषिक्त

अभ्यग्र (वि०)-निकट, सनीप ।

अभ्यङ्ग (वि०)-हाल में ही चिन्हित

अभ्यङ्ग (पु०)-तैलमर्दन, नाडिश ।

अभ्यङ्ग (अप०)-अभिषेक करना, मलना

अभ्यङ्गन (न०)-तैल, अभ्यंग ।

अभ्यङ्गीत (वि०)-गुजरा हुआ, मुर्दा ।

अभ्यधिक (वि०)-यहुत अधिक ।

अभ्यनुष्ठा (स्त्री०)-आज्ञा देना, प्रसन्न  
करना । [ हुक्म ।

अभ्यनुष्ठा-दानं-स्वीकारी, आज्ञा,

अभ्यन्तर (वि०)-भीतर का, आभ्या-  
न्तरिक, अन्दरूनी ।

अभ्यसन(न०)-आक्रमण, रोग, हानि  
 अभ्यसित(वि०)-रोगी, क्षत ।  
 अभ्यसित्र(न०) शत्रु पर आक्रमण ।  
 अभ्यसिघ्रीण(पु०)-ऐसा योद्धा जो शत्रु  
 का पूरे धल से मुकाबिला करता है।  
 अभ्यय(पु०)-पहुँच, आगमन, प्रवेश,  
 सूर्य का हूँचना ।  
 अभ्यर्च(१, १० प०)-पूजना, तारीफ़ करना  
 अभ्यर्चनं भ्यर्चा-पूजा, प्रतिष्ठा ।  
 अभ्यर्णं(वि०)-निकट, समीप ।  
 अभ्यर्ष(१० आ०)-प्रार्थना, विनय,  
 करना, इच्छा करना ।  
 अभ्यर्चना(स्त्री०)-विनय, विनती ।  
 अभ्यर्दन(न०)-कष्टदेना, सताना ।  
 अभ्यर्ह(१० प०)-पूजना, सन्मान करना ।  
 अभ्यर्हणा(स्त्री०)-पूजा, प्रतिष्ठा, इज्जत ।  
 अभ्ययकाश(पु०)-सुला हुआ स्थान ।  
 अभ्ययहार(पु०)-प्रक्षण, आहार ।  
 अभ्ययवृत्त (वि०)-भुक्त, खाया हुआ ।  
 अभ्यसू(४ प०)-अमल करना, अभ्यास  
 करना, दोहराना, सीखना ।  
 अभ्यसन(न०)--अभ्यास का करना ।  
 अभ्यस्त(वि०)--अभ्यास किया हुआ,  
 दोहराया हुआ, बार २ किया हुआ ।  
 अभ्यमूया(स्त्री०)--शुणो में दीप का  
 आरोपण, द्यौयाँ, द्वेय ।  
 अभ्याश्रयं(पु०)-लग ठोकना ।  
 अभ्याकांतित(न०)--मिथ्या असियोग,  
 इच्छा ।  
 अभ्यागत(पु०)-अतिथि ।  
 अभ्यागम(१ प०)--समीप जाना, पास  
 सीपना, मुलाकात करना ।

अभ्यागम(पु०)-सामीप्य, युद्ध, घेर,  
 अभ्युत्थान, प्रहार । [ तत्पर ।  
 अभ्यागारिक(पु०)-कुटुम्ब पालन में  
 अभ्याघात(पु०)-आक्रमण, हमला ।  
 अभ्याचर(१ प०)-समीप जाना, इस्तै-  
 माल करना, सम्पादन करना ।  
 अभ्यादा(३ आ०)-छेना, पकड़ना,  
 पहरना, यात्ता आरम्भ करना ।  
 अभ्यादान(न०)-आरम्भ, प्रथमारम्भ  
 अभ्यान्त(वि०)-रोगी, बीमार ।  
 अभ्यामर्दः-दर्शनं-सघात, युद्ध, आक्रमण  
 अभ्यायम्(१ प०)--जैलाना, लम्बा  
 करना, खँचना, निधाना लगाना,  
 मुलाकात करना ।  
 अभ्यावृह(१ प०)--चढ़ना, ऊपर जाना  
 अभ्यारोहिणं(न०)--ऊपर चढ़ना, गंत्र-  
 पाठ, अवस्थान्तर होना, तरङ्गी ।  
 अभ्यावर्त(पु०)-आवृत्ति, आवृत्तिस्तोत्र  
 अभ्यावृत्ति(स्त्री०)-पूर्ववत् ।  
 अभ्याश(वि०)-समीप, निकट ।  
 अभ्यास(पु०)--अभ्यासन, आवृत्ति,  
 दोहराना, बार २ करना ।  
 अभ्यासादन(न०)-शत्रु के सामने जाना  
 अभ्याहार(पु०)-अभिहार, चोरी,  
 ग्रहण, भोजन ।  
 अभ्युत्थान(न०)--प्रतिष्ठार्थ आसन  
 से उठना, अभ्युदय, सूर्योदय, गौरव  
 अभ्युदय(पु०)--क्षयनाश, उन्नति, समृद्धि  
 पराक्रम, प्रभाव ।  
 अभ्युदित(वि०)-उन्नत, समृद्ध ।  
 अभ्युद्यत(वि०)-विना माने आपहुँपा  
 फल आदि उद्यत, समुद्यत, तीमार ।

अभ्युन्नत(वि०)-उन्नत उच्छा, उठा  
- हुआ, उच्छपदस्थ ।

अभ्युन्नति(स्त्री०)-अभ्युदय, उद्विगति ।

अभ्युपगत(वि०)-स्वीकृत, अंगीकृत,  
समीपागत ।

अभ्युपगम(पु०)-स्वीकार, निकट आ-  
गमन, अनुमति, अनुमोदन ।

अभ्युपपत्ति(स्त्री०)-अनुग्रह, प्रसाद,  
रक्षा, परित्राण ।

अभ्युपाय(पु०)-अंगीकार, स्वीकार,  
उपाय, कौशल । [अंगीकृत ।

अभ्युपेत(वि०)-उपगत, स्वीकृत,

अभ्युप(पु०)-रोटी, पीछी ।

अभ्युपित(वि०)-समीप वा सापरहने  
वाला । पु०-नीकर ।

अभ्युद(वि०)-समीप लाया हुआ ।

अभ्युह(पु०)-बहुत, घादविवाद,  
तर्कना, अनुमान । [मण ।

अभ्येषण(न०)-इच्छा करना, आक-  
षण(पु०)-जाना, इधर उधर घूमना ।

अभ्य(न०)-नेत्र, आकाश, स्वप्न,  
अश्रुत धातु । [अत्युच्च ।

अभ्यंलिह(पु०)-वायु । वि०-नेत्रस्पर्शी,

अभ्यक(न०)-धातु, मोडल जो कहते  
हैं कि पार्वती के रज से उत्पन्न  
हुं हैं ।

अभ्यकप(पु०)-नेत्रस्पर्शी, अत्युन्नत ।

अभ्यपिशाच(पु०)-राहुग्रह । [वृत्त ।

अभ्युपगत(न०)-जल । पु०-प्रेत का

अभ्युप(वि०)-अभ्युपगत, अभ्युन्नत ।  
पु०-भूम का अभाव । [हाथी ।

अभ्युमातङ्ग(पु०)-ऐरावत, इन्द्र का

अभ्युमाता(स्त्री०) मेघमूढ, मेघश्रेणी ।

अभ्युमा(स्त्री०)-ऐरावत की स्त्री ।

अभ्युपिच(पु०)-ऐरावत हाथी ।

अभ्युन्नत(वि०)-अभ्युन्नत ।

अभ्युत्ति(स्त्री०)-स्वस्वता, मुस्तीदी ।

अभ्युत्ती(स्त्री०)-काष्ठ का कुट्टाल,  
नीका सफ करने का कुट्टाल ।

अभ्यु(पु०)-आचित्य, न्याय ।

अभ्यु(वि०)-बहुत बड़ा, शक्तिशाली

अभ्यु(अ०)-तेजी से, अल्प ।

अभ्यु(पु०)-जाना, मजन करना, शब्द  
करना, खाना ।

अभ्यु(वि०)-कच्चा । पु०-गति, योग,  
धन, भय, योन्तारी, नीकर, प्राण

अभ्युल्ल (वि०)-अशुभ, मगलहीन ।  
न०-मशकुन । पु०-परवह वृत्त ।

अभ्युल्लय(वि०)-अभ्युल्लयनक ।

अभ्युल्लय(पु०)-परवह वृत्त ।

अभ्युल्लय(पु०)-रोग, मृत्यु, काल । वि०-  
न माना हुआ, भ्रष्ट ।

अभ्युल्लय(स्त्री०)-अशुद्धि, अज्ञान । वि०-  
क्रूर, दुष्टप्रकृति, मतिहीन । पु०-  
बद्धमात्र, चन्द्र, काल ।

अभ्युल्लय(वि०)-मदरहित, बिना चमक  
का, शान्त ।

अभ्युल्लय(न०)-वर्तन, पात्र, हथियार ।

अभ्युल्लय(वि०)-अद्वेषी, उदार ।

अभ्युल्लय-मनस्क (वि०)-मन वा इच्छा  
से रहित, उदासीन ।

अभ्युल्लय(स्त्री०)-रास्ता, पथ, गति ।

अभ्युल्लय(वि०) अभ्युल्लय, अनरहित;  
पित्राच ।

अमन्द(वि०)-जो सुस्त न हो, कर्म-  
वीर, तेज । पु०-यूक्ष ।

अमम(वि०)-ममतारहित ।

अममता-त्वं-उदासीनता ।

अमर(वि०)-न मरने वाला, न नाश  
होने वाला । पु०-देवता, स्तुही  
यूक्ष, पारा, सोना, तेतीस का अंक,  
एक कोपकार का नाम, मरुद्गणों  
में से एक, विद्याएँ के पहिले घर  
कन्या के राशिवर्ण के मिलान के  
लिये नक्षत्रों का एक गण ।

अमरकंटक(न०)-विन्ध्यपर्वतपर्वत का  
यह भाग जो नर्मदा नदी के उद्भव-  
स्थान के पास है ।

अमरकोट(पु०)-एक नगर का नाम ।

अमरकोश-य(पु०)-अमरसिंह द्वारा  
रचित लिङ्गानुशासन प्रसिद्ध कोष

अमरन(पु०)-देवदारु, एक प्रकार का  
खदिर वृक्ष ।

अमरण(न०)-न मरना । [ मरना ।

अमरता(स्त्री०)-देवतात्व, कभी न

अमरद्विज(पु०)-गन्दिर का पुजारी ।

अमरपुष्पक(पु०)-रूपयूक्ष, केतक ।

अमररत्न(न०)-रफटिक ।

अमरलोक(पु०)-स्वर्ग ।

अमरवस्त्ररी(स्त्री०)-आकाशवस्त्र ।

अमरसिंह(पु०)-अमरकोष का कर्ता ।

अमरा(स्त्री०)-अमरावती नानकहन्द्र  
की राजधानी, गुह्यती, दूर्वा,

गरासु, पृथकुगारी, गंध की भास

अमराद्रि(पु०)-सुमेरुपर्वत ।

अमराटप(पु०)-अमरलोक, रंघन ।

अमर्त्य(पु०)-देवता । वि०-अत्य,  
अयिगश्वर ।

अमर्त्यभुवन(न०)-स्वर्ग ।

अमर्याद(वि०)-असीम, सीमातिक्रमण  
करने वाला ।

अमर्ष(वि०)-क्रोधशून्य, असहिष्णु ।

पु०-असहिष्णुता, क्रोध, येसयरी

अमर्षण(वि०)-क्रोधी, कोपनस्वभाव ।

अमल(वि०)-मलरहित, स्वच्छ, निर्मल  
न०-अभूत धातु, व्रत्त ।

अमला (स्त्री०)-लक्ष्मी, नाभि की  
नाड़ी, भूस्पर्शमलकी, शातला  
यूक्ष ।

अमलात्मा(वि०)-शुद्धात्मा, पवित्रात्मा

अमल्लिप्त(वि०)-स्वच्छ, वेदांग, शुद्ध

अमर्ष(पु०)-रोग, मूर्ख, काल, मूर्खता

अमा(अ०)-निकट, साय, इसलोक में  
वि०-असीम, लातादाद, । स्त्री०

अमावस्या । [ काय ।

अमांस(वि०)-दुर्बल, मांसरहित, क्षीण-

अमातृक(वि०)-मातारहित ।

अमात्य(पु०)-मन्त्री, यन्धु ।

अमात्र (वि०)-असीम, असम्पूर्ण ।

पु०-परमात्मा ।

अमानन(न०)-अनादर, अपमान ।

अमानना(स्त्री०)-पूछंघत ।

अमानव(वि०)-अमानुषी, जो मनुष्य

का न हो ।

अमानस्य(न०)-दुःख, पीड़ा ।

अमानिता-त्वं--विनय, लज्जाशीलता ।

अमानि [ नृ ] ( वि० )-लज्जाशील,  
विनयावन्त ।

अमानुष(वि०)—मनुष्यकी सामर्थ्य के बाहर का, जो मनुष्य से न हो सके, मनुष्यस्वभाव के विरुद्ध, प्राशय, पैशाचिक । पु०—जो मनुष्य न हो, देव, राक्षस ।

अमान्य(वि०)—अमाननीय ।

अमाय(वि०)—अक्रूर, सीधा, ईमानदार  
अमाया(स्त्री०)—धीछा या माया का अभाव ।

अमायिक-यी(वि०)—ईमानदार, सच्चा  
अमार(पु०)—न नरना ।

अमार्ग(वि०)—मार्गहीन । पु०—कुमानं, मार्ग का अभाव ।

अमावसी(स्त्री०)—अमावस्या ।

अमाय [ वा ] स्या (स्त्री०)—कृष्णपक्ष का १५ वां दिन, वह तिथि जिस में सूर्य व चन्द्र एक ही राशि के हों, उस दिन किया जाने वाला यज्ञ । [ बहुत, अज्ञात ।

अमित ( वि०)—असीम, लातादाद,  
अमितचक्रम ( वि० )—असीमशक्ति वाला । पु०—विष्णु ।

अमितवीर्य(वि०)—असीम शक्तिशाली  
अमित्र(पु०)—शत्रु, विपत्ती ।

अमित्रता(स्त्री०)—दुश्मनी, शत्रुता ।

अमिन्(वि०)—भीमार, रोगी ।

अमिश्र-मिश्र(वि०)—न मिला हुआ,  
मिश्रणरहित ।

अमिय(न०)—छल का अभाव, लौकिक सुख, मास, ईमानदारी ।

अमीव(पु०)—शत्रु, सताने वाला  
वि०—पाप, दुःख ।

अमुक(वि०)—कलां, जब किसी वस्तु या पुरुष का नाम न लेकर उस का निर्देश करना हो तब इसका प्रयोग होता है ।

अमुक्त(वि०)—न छुटा हुआ, अस्व-  
तन्त्र । न०—छुरीविशेष ।

अमुक्ति(स्त्री०)—मुक्ति या मोक्ष का अभाव ।

अमृगध(वि०)—विरक्त, चतुर ।

अमृत्र(अ०)—बड़ा, उस स्थान में, वहाँ से, परलोक, जन्मान्तर ।

अमुष्य(वि०)—प्रसिद्ध, विख्यात, नशूर  
अमुष्यपुत्र ( पु० )—प्रख्यातवंश में उत्पन्न, कुलीन ।

अमुष्यपुत्री(स्त्री०)—पूर्ववत् । [ चतुर ।

अमूक(वि०)—जो गुंगा न हो, वक्ता,  
अमूढ(वि०)—चतुर, विद्वान् ।

अमूर्त(वि०)—मूर्तिरहित, निराकार ।

अमूर्ति(स्त्री०)—पूर्ववत् ।

अमूर्तिमान्(वि०)—पूर्ववत् ।

अमूल-लक(वि०)—बेजड़ का, निर्मूल,  
निष्प्रा, अस्त्य ।

अमूल्य(वि०)—जिस का मूल्य निर्धारित न हो सके, बहुमूल्य ।

अमृत(पु०)—वह वस्तु जिस के पीने से जीव अमर हो जाता है, सुधा, जल, पी, अब, मुक्ति, औषध, विष, पारा, धन, सोना, मोठी वस्तु, देवता । वि०—न मरने वाला, सुन्दर ।

अमृतकर(पु०)—चन्द्रमा ।

अमृतकुण्डली(स्त्री०)-उन्द का एकभेद,  
एक प्रकार का खाजा ।

अमृतगति(स्त्री०)-एक प्रकार का उन्द ।

अमृतगर्भ(पु०)-ब्रह्म, ईश्वर ।

अमृततरंगिणी-(स्त्री०)-चन्द्रिका,  
चांदनी । [ मरजा, मोक्ष ।

अमृतता-त्वं-मरण का अभाव, न

अमृतद्रव्य(पु०)-चन्द्रमा की किरण ।

अमृतफल(पु०)-नाशपाती, परबल,  
पारावत । [ मुमङ्का ।

अमृतफला(स्त्री०)-आमला, अंगूर,

अमृतधन्पु(पु०)-देवता, चन्द्रमा ।

अमृतलता(स्त्री०)-गिलोय ।

अमृतलोक(पु०)-स्वर्ग ।

अमृतधाम(पु०)-चन्द्रमा । [ शयेल ।

अमृतवल्ली(स्त्री०)-अमरवेल, आका-

अमृतसन्मवा(स्त्री०)-गुहूची, गिलोय ।

अमृतसार(पु०)-मखन, घी ।

अमृतांशु(पु०)-चन्द्रमा ।

अमृता(स्त्री०)-हड़, आमला, तुलसी,  
पीपल, मदिरा, गिलोय ।

अमृताशन(पु०)-देवता ।

अमृताहरण(पु०)-गरुड़ ।

अमृतेश(पु०)-देवता, शिव ।

अमृत्यु(वि०)-अमर, न मरने वाला ।

अमृपा(भ०)-सच सच, बिना झूठ के ।

अमृष्ट(वि०)-अगाजित, जो साफ न  
हो । [ मूर्ख ।

अमोघाः [ स् ] (वि०)-पागल, मूढ़,

अमोघ्य(भ०)-पुत्रीय । वि०-अवविश्र ।

अमोघ(वि०)-असमीप, असंख्य, छा-  
तादाद, न जानने योग्य ।

अमोघात्मना(वि०)-महानुभाव, उदार-  
चरित । पु०-विष्णु ।

अमोक्ष(दि०)-गछूटा हुआ, अस्थिर ।

अमोघ(वि०)-सफल, अठथर्प, अविकल ।

अमोघा(स्त्री०)-विहंग, पाटलिपुत्र,  
हरितकी ।

अमोम(भ०)-चुप न रहना ।

अम्व(१ पु०)-जाना, [ आत्मनेपदी  
में अम्वि कर्त्ता अर्थ होता है ] ।

अम्व(पु०)-पिता, आदाज । भ०-  
आंख, जल ।

अम्वक(भ०)-नेत्र, ताम्बा, पिता ।

अम्वर(भ०)-वस्त्र, आकाश, कपास,  
पड़ोस, होठ, पाप ।

अम्वरद(भ०)-रुई ।

अम्वरसणि(पु०)-सूर्य ।

अम्वरस्यली(स्त्री०)-पृथिवी, जमीन ।

अम्वरीष(भ०)-भर्जनपात्र, परयात्ताप,

मुद्र, नरकविशेष, यल्ला, सूर्य,  
आश्वातक वृक्ष, विष्णु, शिव ।

पु०-सूर्यवंशी एक राजा ।

अम्वष्ट(पु०)-चिकित्सक, हकीम,  
ब्राह्मण से वैश्यकन्या में उत्पन्न

हुआ पुत्र, एक देश, हापीधान् ।

अम्वष्टिका(स्त्री०)-ब्राह्मी यूटी ।

अम्वी(स्त्री०)-माता, जननी, काशी-  
राज की लड़की, अम्वरा, दुर्गा

का नाम ।

अम्वामु(स्त्री०)-माता ।

अम्बुलिपा(स्त्री०)-माता, अच्छी माता, अम्बाहा वृक्ष, काशीराज की सब से छोटी कन्या जो विचित्रवीर्य की विवाही गई थी और पाण्डु की माता थी ।

अम्बिका(स्त्री०)-माता, अच्छी स्त्री, दुर्गा, पार्वती, काशीराज की प्रियली कन्या जो विचित्रवीर्य की विवाही गई थी और जिस के गर्भ से धृतराष्ट्र पैदा हुए थे ।

अम्बिकेय(पु०)-गणेश, कार्तिकेय, राजा धृतराष्ट्र ।

अम्बिकेयक(पु०)-पूर्ववत् ।

अम्बु(न०)-जल, पानी, रास्नावेल ।

अम्बुकण्ठक(पु०)-कुम्भीर, नाका ।

अम्बुकिरात(पु०)-पूर्ववत् ।

अम्बुकीश-कूर्म(पु०)-शिशुमार नामक जलजन्तु, सूच ।

अम्बुकेशर(पु०)-छालंग वृक्ष ।

अम्बुचक्षर(न०)-भील ।

अम्बुचामर(न०)-शैवाल, शिरवाल नामक घास ।

अम्बुज(पु०)-चन्द्रमा, कपूर । न०-कमल, हिज्जल नामक वृक्ष ।

अम्बुजन्म[न](न०)-पद्म, शंख, सारस पक्षी । वि०-जलजात, सलिलोद्भव ।

अम्बुतस्कर(पु०)-पाणी का घोर अपात्त सूर्य ।

अम्बुताल(पु०)-शैवाल, शिरवाल ।

अम्बुद(वि०)-जलदाता । पु०-मेघ, मोघा ।

अम्बुधर(पु०)-बादल, मेघ ।

अम्बुधि(पु०)-समुद्र ।

अम्बुनिधि(पु०)-समुद्र ।

अम्बुप(पु०)-जलेश्वर, वरुण, समुद्र ।

वि०-जल का पान करनेवाला ।

अम्बुपत्रा(स्त्री०)-चसटा नामक वृक्ष, मानरमोघा ।

अम्बुपास(पु०)-लहर, सैता, चश्मा ।

अम्बुप्रसाद(पु०)-कतकवृक्ष, निर्मली ।

अम्बुप्रसादन(न०)-पूर्ववत् ।

अम्बुभृत(पु०)-मेघ, समुद्र, मोघा ।

अम्बुनात्रज(वि०)-केवल पानी में उत्पन्न होने वाला । पु०-शंख ।

अम्बुमुष्(पु०)-बादल ।

अम्बुराज(पु०)-समुद्र, वरुण ।

अम्बुराशि(पु०)-समुद्र ।

अम्बुरुह(न०)-कमल, सारस ।

अम्बुरुह(अस्त्री०)-पूर्ववत् ।

अम्बुरुहा(स्त्री०)-स्थलपद्मिनी ।

अम्बुवाची(स्त्री०)-आपराध में आर्द्रा नक्षत्र का प्रथम चरण अपात्त आरम्भ के तीन दिन और बीस घड़ी निग में पृथ्वी ऋतुमती समझी जाती है और धीन होने का निषेध है ।

अम्बुवाह(पु०)-बादल, मेघ, मोघा, भील, १९ का अङ्क ।

अम्बुवाहिनी(स्त्री०)-नाव के पानी को चलीचने व फेंकने का पात्र, जल लाने वाली स्त्री ।

अम्बुविहार(पु०)-जलक्रीड़ा ।

अम्बुविस्त्रवा(स्त्री०)-विस्त्रवार ।

अम्बुसरण(न०)-पानी की लहर या मोता ।

अम्बुशायी(पु०)-विरणु ।

अम्बुसुपिणी(स्त्री०)-जलौका, जोंक ।

अम्बुसेपनी(स्त्री०)-नौका से जल निकाल कर फैलने का पात्र ।

अम्बुवृत्त(वि०)-अस्पष्ट चित्रित ।  
न०-ऐसा वचन जिस के कहने में धूँ निकले ।

अम्भू(१ आ०)-स्वप्न करना ।

अम्भा[सु](न०)-जल, आकाश, देवता, मनुष्य, राक्षस, शक्ति ।

अम्भःसार(न०)-मुक्ता, मोती । [ पन ।

अम्भःसू(पु०)-धुआँ, धूम, धुन्धियाला

अम्भोज(वि०)-जलीत्पन्न । पु०-चन्द्रमा, सारस । न०-कमल ।

अम्भोजेयानि(पु०)-ग्रन्था ।

अम्भोजिनी(स्त्री०)-पद्मलता, पद्म-समूह, नलिनी ।

अम्भोद्-धर(पु०)-मेघ, मोथा ।

अम्भोधि-निधि-राशि(पु०)-समुद्र ।

अम्भोरुह्-ह(न०)--पद्म, सारसपक्षी ।

अम्भय(वि०)--जलयुक्त, जल से बना हुआ जेमादि । [ का कल ।

अय(पु०)--आम का दूध । न०-आम

अम्बल(वि०)--खटा, गारी । पु०--खटा-पन, गार, रस विशेष, चिरका ।

न०--तक्र, भट्ठा ।

अम्बलक(पु०)-लकुण दूध, घट्टर ।

अम्बलकादह(न०)-लयनगुण नामक दूध ।

अम्बलकेशर (पु०)--घिजीरानीधू ।

अम्बलचूह(पु०)-अम्बुशक ।

अम्बलनायक(पु०)-अम्बुवेत ।

अम्बलनिशा(स्त्री०)-शठीनामक धूल, कछूर ।

अम्बलपूर(न०)-वृक्षाम्ल ।

अम्बलफल(न०)-वृक्षाम्ल, तिन्तहीक ।  
पु०-आम का पेड़ ।

अम्बलवेतस(पु०)-अम्बुवेत ।

अम्बलशोक(न०)-शाकाम्ल, वृक्षाम्ल ।

अम्बलसार(न०)-कान्ती, आमलासार गन्धक । पु०-नीधू, अम्बुवेत ।

अम्बलंकुश(पु०)-अम्बुवेतस । पु०-सहासहावृक्ष, आंवला ।

अम्बलान(वि०)-जो रुदास न हो, जो मलिन न हो, सृष्ट, प्रसन्न, बिना मुक्रीया हुआ, स्वच्छ । [ पक्षिनी ।

अम्बलानिनी (स्त्री०)-पद्मवद्भूष, अम्बिका(स्त्री०)-इनली ।

अम्बोद्गार(पु०)-खही इकार ।

अय(१ आ०)-जाना ।

अय(वि०)--जाता हुआ, गतिशील ।  
पु०-गति, सीमाव्य, मङ्गलानुष्ठान ।

अयन(न०)-गति, हरकत, रास्ता, स्थान, प्रवेशद्वार, सूर्य की गति का मार्ग, मुक्ति, उपासना ।

अयनकाल(पु०)-छः महीने का काल ।

अयनसंक्रांति(स्त्री०)--तकर और फर्क की संक्रान्ति ।

अयनांश(पु०)--सूर्य की गति विशेष के काल का भाग, अपन भाग ।



अयश्च(वि०)--यश्च न करने वाला ।

पु०--युरा यश्च, यश्चाभाव ।

अयश्चर(वि०)--यश्च के अयोग्य ।

अयश्चिय(वि०)--यश्च के अयोग्य, यश्च करने का अनधिकारी, अपवित्र ।

अयत्त(वि०)--यत्न न करने वाला ।

अयत्त(वि०)--बेरोक, बेकाबू ।

अयति(वि०)--जिधने इन्द्रियों का दमन न किया हो ।

अयत्न(वि०)--जिध में यत्न की आवश्यकता न हो । पु०--यत्नाभाव ।

अयत्नकारी(वि०)--यत्न न करने वाला कुस्त ।

अयत्नकृत(वि०)--आसानी से प्राप्त ।

अयत्नलब्ध(वि०)--आसानी से प्राप्ति-योग्य । [ अं ।

अयत्नेन(क्रि०वि०)--आसानी से, सहज अयया(अ०)--लैसा होना चाहिये उसके पितृ, गलती से ।

अययार्थ(वि०)--भूटा, गलत, बेमाने ।

अयययत्त(अ०)--गलती से,

अययेट (वि०)--नाकाफी, अपयोस, छूटा है प्रतिकूल ।

अययोचित(वि०)--अयोग्य, अनुचित अयय्य(न०)--रोक टोक का अभाव, अस्त्रविशेष ।

अयय्वित(वि०)--न रोका हुआ ।

अययित(वि०)--अयय्वित, न रोका हुआ ।

अयय(पु०)--पुरीय का एक कीड़ा जो पत्र से छोटा होता है, पितृकर्म, शुक्र, कणपक्ष ।

अयय[स्त्र](वि०)--बदनाम । न०--अकीर्ति, निन्द ।

अययस्कर(वि०)--अपमानजनक, बदनास करने वाला ।

अययस्य(वि०)--बदनाम, अयय ।

अयय[स्त्र](वि०)--गतिशील, जाने वाला ।

न०--लोहा, कीलाद, चीना, धातु, गमन । पु०--भाग ।

अययस्त्रान्त(पु०)--थकनक पत्थर ।

अययस्कार(पु०)--लोहार, जंघा का ऊपर का भाग ।

अययस्कीट(न०)--लोहे का जंग ।

अययस्कृति(स्त्री०)--पद्माकुष्ठ की चिकित्सा का एक उपाय ।

अययश्च(वि०)--जो याचना नहीं करता ।

अययचित(वि०)--न माया हुआ ।

अययस्य(वि०)--यश्च करने का अनधिकारी, गूढ़, जातिधुस ।

अययत्त(वि०)--न गया हुआ ।

अययतयस्य(वि०)--जो पुराना या कमजोर न हो, तज्ज्ञा । [ चिप ।

अययार्थ्य(न०)--अशुद्धि, गलती, अनै-

अययान(न०)--न जाना, अगति, खसलत, आदत ।

अययानय(न०)--सौभाग्य वा दुर्भाग्य ।

अयययक(वि०)--कुदरतीमुख ।

अययस्य(वि०)--अयय विरोधी । पु०--अगिरा अयय

अययि(अ०)--सम्बोधन का शब्द, हे, अय, अरे, माधन्या, प्रश्न, नयनता, प्रीति, प्यार से बुझाना ।

अयुक्त(वि०)--बाही में न जोता हुआ,  
असम्बन्धित, अश्रद्धालु, अप्रयुक्त,  
अयोग्य, अनुचित, अलत, अवि-  
याहित ।

अयुक्ति(स्त्री०)--येमेल, अलहदगी,  
येहदगी, अनौचित्य, युक्ति का  
अभाव । [ विषम संख्या ।

अयुग-गल(वि०)--अलहदा, अकेला,  
अयुगपट्ट(अ०)--सब एक साथ नहीं,  
रखता २ ।

अयुगु(स्त्री०)--पेसी स्त्री जिस में  
किपस एक धरणा ही कामा हो,  
काकयन्ध्या ।

अयुग (वि०)--अकेला, बिना जोड़े  
का, अलहदा, विषम संख्या ।

अयुगमनयन-नेत्र-लोचन(पु०)--विषम  
आखों वाला अर्थात् शिव ।

अयुगनवाण-शर ( पु० )--विषम बाणों  
वाला अर्थात् कामदेव ।

अयुगनवाह-सहि(पु०)--सात घोड़ों  
वाला अर्थात् सूर्य ।

अयुज्(वि०)--बिना जोड़े का, विषम ।

अयुज(वि०)--जिस का कोई साथी न  
हो, अलहदा, अकेला, विषम ।

अयुत(वि०)--न जुड़ा हुआ, अस-  
म्बन्धित, अलत । न०--दशसहस्र ।

अयुप(पु०)--जो योद्धा न हो, योद्धा  
से भिन्न ।

अयुप्य(वि०)--अजेय, जिस का मुका-  
बिला न किया जा सके ।

अयुव(वि०)--अलत, असम्बन्धित ।

अये(श०)--सम्बोधन में प्रयुक्त होता  
है, आश्चर्य, दुःख, क्रोध, भय,  
धकाघट आदि का बोधक ।

अयोय( वि० )--असम्बन्धित । पु०--  
जुदाई, अनौचित्य, पुरामेल,  
छड़ा यत्न, रंझवा, हपीया,  
नज़रत ।

अयोमव(पु०)--शूद्र पुरुष और वैश्य  
स्त्री से उत्पन्न पुरुष ।

अयोम(पु०)--छोहार ।

अयोमुह(पु०)--छोहे की नंद, एक  
प्रकार की बटी जिस में छोहे  
का संग होता है । [ निकम्मा ।

अयोग्य(वि०)--अनुचित, गैरमौजू,  
अयोग्य(पु०)--हथौड़ा, छोहार का  
एक छड़ा औज़ार । [ जाल ।

अयोबाल(न०)--छोहे का घना हुआ  
अयोघा(पु०)--जो योघा न हो, जिस  
के बराबर दूसरा योघा न हो ।

अयोधव(वि०)--अजेय, जिस पर आक्र-  
मण न हो सके ।

अयोध्या(स्त्री०)--सूर्यवंशीय राजाओं  
की राजधानी जो इस समय गी  
समूह नदी के तट पर अवस्थित है ।

अयोध्याकाण्ड(न०)--बाल्मीकीय रा-  
मायण का दूसरा परिच्छेद ।

अयोनि(वि०)--उत्पत्तिभूय, निरूप ।  
पु०--ग्रन्था, शिव ।

अयोनिक(वि०)--जो योनि से उत्पन्न  
न हुआ हो । पु०--विष्णु, शिव ।

अयोनिकम्प(वि०)--पूर्ववत् ।

अयोनिजा-सम्प्रदाय(स्त्री०)-सीता जो जनक की पुत्री य राजा रामचन्द्र की सध थी । [ अर्षान् कृति ।  
 अयौगिक(वि०)-जो यौगिक न हो  
 अयौक्तिक(वि०)-युक्तिशून्य, तर्कना के अयोग्य ।  
 अर(वि०)-तेज, शीघ्रगामी, पीछा ।  
 मू०-पहिये का घरा, कोण, मैदान ।  
 अरक्षित(वि०)-गैरसम्पन्न, रक्षाहीन ।  
 अरघह-हंत(पु०)-रहट, कुएं से पानी खींचने का पहिया, गहरा कुआं ।  
 अरत्न-जस्-जस्क( वि० )-चूलिरहित, सुदृढ़, स्वच्छ, रजोविकाररहित ।  
 अरनाः( स्त्री० )-रजोदर्शन से पूर्व की कन्या ।  
 अरक्षु(न०)-कैदखाना । वि०-जो रस्सी का बंधा हुआ न हो ।  
 अरणि(अवली०)-अग्नि उत्पन्न करने वाला लकड़ी का डंडा । पु०-मूर्ध, अग्नि । स्त्री०-रास्ता, मार्ग, अरनी नामक ओषधि ।  
 अरणिमुत(पु०)-व्यासपुत्र शुक्रदेव ।  
 अरणी(स्त्री०)-भाग उत्पन्न करने का काष्ठ विशेष ।  
 अरश्य(न०)-जङ्गल, वन, रेगिस्तान ।  
 अरश्यकदली(स्त्री०)-जङ्गली केला ।  
 अरश्यकाह(न०)-रामायण का तीसरा परिच्छेद जिस में विप्रशामित्र के साथ रामचरित का वर्णन है ।  
 अरश्यगज(पु०)-जङ्गली हाथी ।

अरश्यगान(न०)-सामवेद के अन्तर्गत एक गान विशेष जो जङ्गल में गाया जाता था ।  
 अरश्यचर(वि०)-जङ्गली, वनचर ।  
 अरश्यपरिहत(पु०)-मूर्ख पुष्प ।  
 अरश्यराज्-ज(पु०)-शेर या चीता ।  
 अरश्यरोदन(न०)-जङ्गल में रोना, निष्कल रोना, निरर्थक कान ।  
 अरश्यानी(स्त्री०)-बड़ा जङ्गल, वन का देवता ।  
 अरश्यायन(न०)-वानप्रस्थी वनवासी ।  
 अरश्यीय(वि०)-वनयुक्त, वनके समीप  
 अरत(वि०)-सुप्त, विरक्त, असन्तुष्ट ।  
 अरति(वि०)-असन्तुष्ट, सुस्न, वैचैत ।  
 स्त्री०-रति या आनन्द का अभाव, दुःख, कष्ट, चिन्ता, अवन्तोष, सुस्ती । [ बांह ।  
 अरतिन( अवली० )-कोहनी, धातू, अरतिनक(पु०)-पूर्ववत् ।  
 अरथी[ नू ](वि०)-जो रथ में सवार होकर नहीं लड़ता ।  
 अरद(वि०)-दन्तहीन ।  
 अरम(वि०)-नीच, कमीना । [ गधारा  
 अरमण(न०)-असन्तोषप्रद, नासुख-अरमति(स्त्री०)-शोभा, आद्यापानन, देवश्रद्धा ।  
 अरर(न०)-कपाट, किवाड़, द्वार ।  
 पु०-घुट्ट, लड़ाई, यज्ञ का भाग ।  
 अररि(पु०)-किवाड़, दवांज़ा ।  
 अररे(अ०)-अपमान वा शीघ्रता का ओषक ।

अरविन्द ( न० )-कमल । पु०-सारस ।  
 अरविन्दनरमि(पु०)--विरणु का नाम ।  
 अरविन्दसदृ(पु०)--अस्त्र का नाम ।  
 अरविन्ददास(वि०)--कमल की सी  
 आँखों वाला, विरणु का विशेषण ।  
 अरविन्दिनी(स्त्री०)--पद्म, पद्मसमूह,  
 पद्मयुक्त देश । [ कमजोर ।  
 अरुस(वि०)-रसरहित, स्वादुरहित,  
 अरुचिक(वि०)-को रुचिक न हो ।  
 अरहसू(न०)-रहस्य का अभाव ।  
 अराग-गी( वि० )-शान्त, निश्चल,  
 रागरहित । [ पड़ा हुआ ।  
 अररजक(वि०)-राजारहित, गृहभङ्ग में  
 अराजकस्थापित(वि०)-राजा द्वारा जो  
 स्थापित न किया गया हो अपात  
 नियमविरुद्ध, निरक्रान्ती ।  
 अराति(पु०)-शत्रु, दुश्मन, छा का अंक  
 अरातिभंग(पु०)-शत्रुओं का नाश ।  
 अराहि( स्त्री० )-नियमभंग, पाप,  
 गुनाह, द्वेष ।  
 अराधसू(वि०)-गरीब, कठोर, कंजूस ।  
 अराध(वि०)-निधेन, कंजूस ।  
 अराल(वि०)-टेढ़ा, झुका हुआ । पु०-  
 मदयुक्त हाथी । [ बाँसी स्त्री ।  
 अरालकेयी(स्त्री०)-पुंछराले वाली  
 अराला(स्त्री०)-असती स्त्री, अघृष्टास्त्री  
 अराप्त्र(न०)-राज्यभंगवृत्ता ।  
 अरि( वि० )-गतिथोड़ । पु०-शत्रु,  
 खदिर विशेष, छा का मङ्ग, माही  
 का फोड़ भाग, पहिया, स्वामी,  
 यामु, धार्मिक मनुष्य ।  
 अरिजुल(न०)-शत्रुओं का गिरीह, शत्रु

अरिचिन्तन( न० )-परारब्धविज्ञान  
 का प्रबन्ध ।  
 अरिणी(पु०)-गुर्गा ।  
 अरित्र(वि०)-शत्रुओं से रहित । न०-  
 पतवार, किरती ।  
 अरिनिपात(पु०)-शत्रुओं का आक्रमण ।  
 अरिन्दम(वि०)-शत्रुओं को पराजित  
 करनेवाला, कृतहन्त ।  
 अरिन्दन(न०)-पूर्ववत् ।  
 अरिप(न०)-लघात्तर यपों होना ।  
 अरिष्ट(वि०)-अक्षत, सम्पूर्ण, रक्षित ।  
 पु०-बगुला, कौआ, शत्रु । न०-  
 दुर्भाग्य, बदकिस्मती । [ नाम ।  
 अरिष्टमयन(पु०)-धिय या विष्णु का  
 अरिष्टसूदन( पु० )-अरिष्टपातिक  
 अपात विघ्नु ।  
 अरिष्टि(स्त्री०)-हिक्काजत, रक्षा ।  
 अरिसूदन(पु०)-शत्रुघ्न, अरिघ्न ।  
 अरिस्थानक(न०)-परराज्य, द्वार ।  
 अरु(पु०)-सूर्य, छाल खैर, रक्तखदिर ।  
 अरुः[स्] (अस्त्री०) अण, अत, अखन,  
 घाव । अ०-मर्मा, सन्निधस्थान ।  
 अरुण(वि०)-अरोगी, स्वल्प, अक्षत ।  
 अरुचि(स्त्री०)-अग्रहा, जनतिछाप,  
 रोग भेद ।  
 अरुचिर-रूप(वि०)-अरोचक, नाप-  
 सन्द, एका उत्पन्न करने वाला ।  
 अरुचिकर(वि०)-अरुचि करनेवाला ।  
 अरुणू(वि०)-रोगरहित, तन्दुरुस्त ।  
 अरुज(वि०)-तन्दुरुस्त, स्वल्प । पु०-  
 आरम्भ नामक वृक्ष ।



अर्कमलय(पु०)--कर्ण, यम, वैवस्वत मनु ।  
 अर्कस्थिपु(स्त्री०)--सूर्य का प्रकाश ।  
 अर्कदिनं-खासर-सूर्यवार, रविवार ।  
 अर्कमन्दन(पु०)--कर्ण, यम, वैवस्वत मनु ।  
 अर्कपत्रा(स्त्री०)--अर्कमूल, एक लता ।  
 जो विष की औषध है ।  
 अर्कयण(पु०)--आग का वृक्ष, मदार का पत्ता । [ वृक्ष ।  
 अर्कपुष्प(न०)--आक [ मदार ] का ।  
 अर्कपुष्पी(स्त्री०)--सूर्यमुखी नाम वृक्ष ।  
 अर्कमिया(स्त्री०)--जवा, जपर, गुडहर ।  
 अर्कमधु(पु०)--गौतम दुग्ध, पद्म ।  
 अर्कम(न०)--बह नक्षत्र जो सूर्यक्रान्त हो, सिंहराशि, चतुराशालमुनी नामक नक्षत्र ।  
 अर्कभक्ता(स्त्री०)--हुलहुल का वृक्ष ।  
 अर्कमूल(पु०)--ईसर मूल नामक लता ।  
 यह सांप तथा विच्छ के फाटे पर बहुत गुण करती है ।  
 अर्कवहलभ(पु०)--धन्धूक नामक वृक्ष ।  
 अर्कवहलभा(स्त्री०)--गुडहरनाम वृक्ष ।  
 अर्कवैध(पु०)--तालीचपत्र नामक वृक्ष ।  
 अर्कवोदर(पु०)--ऐरावत हाथी ।  
 अर्कशगा(पु०)--अरुणोपल, सूर्य-क्रान्त मणि ।  
 अर्कवोपल(पु०)--सूर्यक्रान्त मणि, स्फटिक मणि ।  
 अर्कम(स्त्री०)--यह लकड़ी जिसे शिवरात्रि के दिन कोड़े से आड़ी लगा देते हैं, किवाड़, यन्धन, लहर ।  
 अर्कम-मूली(स्त्री०) पुष्पमय ।

अर्गलिका(स्त्री०)--छोटी अर्गला ।  
 अर्घ् (१ प०)--योग्य होना, मोललेना ।  
 अर्घ(पु०)--मूल्य, कीमत, पूजाविधि ।  
 अर्घपात्र(न०)--एक ताम्बे का पात्र जो अर्घ के आकार का होता है, अर्घा ।  
 अर्घ्य(पु०)--शिव का नाम ।  
 अर्घ्य(वि०)--पूजनयोग्य, पूज्य, कीर्तनी ।  
 अर्घ् (१ प०)--पूजना, वन्दना करना; स्वागत करना, चमकना । १०५०--आदर करना, शरीर करना ।  
 अर्चक(पु०)--पूजक, पुनारी ।  
 अर्चन(वि०)--पूजा करने वाला । न०--अर्चना, पूजन, आदर, दीव्यपूजन ।  
 अर्चना(स्त्री०)--पूजा, देवपूजा ।  
 अर्चनीय-अर्च(वि०)--पूजनीय, पूजा-योग्य, आदरणीय ।  
 अर्चा(स्त्री०)--पूजा, प्रतिमा ।  
 अर्चि(स्त्री०)--किरण, अग्निशिक्षा ।  
 अर्चित(वि०)--पूजित, आदृत ।  
 अर्चितान्(वि०)--प्रकाशमान । पु०--अग्नि, सूर्य ।  
 अर्चिस् (न०)--किरण, अग्निशिक्षा, प्रभा । पु०--किरण, अग्नि ।  
 अर्ज् (१ प०)--प्राप्त करना, हासिल करना । १० प०--ग्रहणा, तैयार करना ।  
 अर्जक(वि०)--उपार्जनकर्ता । पु०--मित्रपणांश आदि कई वृक्षां का नाम ।  
 अर्जन(न०)--उपार्जन, प्राप्ति ।  
 अर्जनीय(वि०)--उपार्जन करने योग्य ।

अर्जित(वि०)-उपाजन किया हुआ,  
इकट्ठा किया हुआ ।

अर्जुन(पु०)-अर्जुन वृक्ष, राजा पाण्डु  
का मध्यम व तीसरा पुत्र, कर्ण-  
वीर्य । न०-वृण, नेत्ररोग । वि०-  
उज्ज्वल, स्वच्छ, चमकीला, रुपहरा ।

अर्जुनक(पु०)-अर्जुन का पुत्रक ।  
वि०-अर्जुन का ।

अर्जुनध्वज(पु०)-हनुमान् ।

अर्जुनी(स्त्री०)-गङ्गा, करतोया नदी,  
कुहनी, उषा ।

अर्ण(वि०)-येथैन । सु०-चरमा,  
शाकवृक्ष, जलर, जर्ण ।

अर्णः[सू] (न०)-जल, लहर, चरमा ।

अर्णव(पु०)-समुद्र, सूर्य, इन्द्र, अन्तरिक्ष ।

अर्णवज(अस्त्री०)-समुद्रकेत ।

अर्णवपोत(पु०)-किशती या जहाज ।

अर्णवमन्दिर(पु०)-ब्रह्म, विष्णु ।

अर्णवोद्भव(पु०)-अग्निजाल वृक्ष,  
चन्द्रमा । न०-अमृत । [मीमा ।

अर्णोद(पु०)-आदल, सुस्तक, नागर

अर्णोत्तय(पु०)-शंख ।

अर्तन(वि०)-दोष देने वाला, दुःखिन ।

न०-जुगुप्सा, दोषारोपण । [निरा ।

अर्तिका(स्त्री०)-दुःख, रज, धनुष का

अर्तिका(स्त्री०)-अन्तिका, नाटक में  
उपेक्षा भगिनी ।

अर्प(१० भा०)--विनय करना, प्रार्थना  
करना, पाने का यत्न करना,  
इच्छा करना ।

अर्प(पु०)--गरज, उद्देश्य, इच्छा,  
स्थाविर, विषय, धन, कारण,

वस्तु, शब्दप्रतिपाद्य, निवृत्ति  
प्रयोजन, प्रकार । [दामक ।

अर्थकर(वि०)-धन देनेवाला, लाभ-

अर्थकाम (वि०)-धन का इच्छुक ।

अर्थकृच्छ्र(न०)-आर्थिक कठिनाता ।

अर्थेष्ट(वि०)-सर्वोत्ता, किञ्चल, र्थ ।

अर्थेष्टितन(न०)-अर्थविभाग का  
प्रयन्ध ।

अर्थेष्टिता(स्त्री०)-पुत्रवत् ।

अर्थज्ञात(वि०)-ज्ञानाने, ज्ञातपक्ष ।

अर्थज्ञ(वि०)-अर्थ को जानने वाला ।

अर्थद(वि०)-धनदाता । पु० कुप्रे ।

अर्थद्वय(पु०)-बहु धन को किसी  
अपराध के दण्ड में अपराधी से

लिया जाय, जुर्माना । [इथास्त ।

अर्थेता(स्त्री०)-विनय, प्रार्थना, ईर-

अर्थेतिरयय(पु०)-इरादा, कैवल्य ।

अर्थेलाभ(पु०)-धनप्राप्ति ।

अर्थेमुदय(वि०)-छालपी, धनलोभुष ।

अर्थेवत्ता(स्त्री०)-धन, सम्पत्ति ।

अर्थेवान्(पु०)-पुण्य । वि०-सार्थक ।

अर्थशास्त्र(न०) सम्पत्तिशास्त्र, पोलि-  
टीकलइकामीमी ।

अर्थसंग्रह-सचय(पु०)-धन का इकट्ठा  
करना, खजाना ।

अर्थनिहि(स्त्री०)-कामयायी, इच्छित  
कार्य की पूर्ति ।

अर्थहीन(वि०)-धनहीन, गरीब, दोस्ताने

अर्थोन्म(पु०)-धन का भागजन,  
आयदनी ।

अर्थात्(अ०)-यानी, इसका प्रयोग  
विवरण करने में होता है ।

अर्धांगी(पु०)-शिव । वि०-अर्धांग रोग से पीड़ित ।

अर्धान्तर(न०)-आधा फासला ।

अर्धार्ध(अस्त्री०)-आधे का आधा अर्थात् चौथाई, आधा आधा ।

अर्धवभेदक(पु०)-आधाशीशी रोग ।

अर्धिक(वि०)-अर्धार्ध का भागी ।

पु०-आधाशीशी, वर्णसंकर को आश्रय द्वारा वैश्यकन्या में संस्पन्द हुआ हो ।

अर्धिकरण(न०)-आधा करना ।

अर्धक(वि०)-कामयाव, उन्नतिशील ।

अर्धेन्दु(पु०)-चन्द्रार्ध भाग, गलघुस्त, नखचिन्ह, अनुनासिका चिन्ह ।

अर्धौदय(पु०)-माघ का महीना, अनावस्या तिथि, श्रवण नक्षत्र और उपतिपात योग ।

अर्धय(वि०)-आधे का, वृद्धियोग्य ।

अर्पण(न०)-देना, भेंट करना, सौंपना नज़र करना ।

अर्पित(वि०)-भेंट किया गया, सौंपा गया, दिया गया ।

अर्पिस(पु०)-हृदय, हृदय का भाग ।

अर्ध(१ प०)-किन्हीं की ओर जाना, यथ करना ।

अर्धुद(अस्त्री०)-एक रोग, दश करोड़ की सख्या, आयू नामक पर्वत, सांप, आदल, भासकील ।

अर्धुदि(पु०)-एक राक्षस जिस को इन्द्र ने मारा था ।

अर्भ(वि०)-प्रभाहीन, मलिन । पु०-बालक, शिष्य ।

अर्भक(वि०)-सुदृढ़, छोटा, कमजोर, मूर्ख । पु०-बालक, मूर्ख, पागल ।

अर्म(अस्त्री०)-आंखों का एक रोग, पुराना नगर वा गांव ।

अर्मक(वि०)-तद्ग । न०-तगी ।

अर्मण(न०)-एकद्रोण की माप ।

अर्य(वि०)-उत्तम, शरीफ, सच्चा, प्यारा । पु०-स्वामी, वैश्य, श्रेष्ठ ।

अर्धमा [ नू ] (पु०)-सूर्य, उत्तराफा-सुनी, वैश्यजाति की स्त्री ।

अर्धोष्णी(स्त्री०)-वैश्य जाति की स्त्री ।

अर्यभिक(वि०)-दयार्द्र, दयालु ।

अर्ध(१ प०)-भारना, घात करना ।

अर्धती (स्त्री०)-घोड़ी, इन्द्र की अप्सरा ।

अर्धनू (वि०)-गतिशील, कुत्सित, गर्ह्य । पु०-घोड़ा, इन्द्र ।

अर्धोक्षीन(वि०)-इदानीन्तन, पश्चा-ज्जात, नवीन, हाल का ।

अर्धोवसु(पु०)-देवताओं का होता ।

अर्ध(वि०)-विपत्तिजनक, पापयुक्त, मलिन । पु०-नुकसान, चोट ।

अर्धः[ स् ] (न०)-अवासीर का रोग ।

अर्धस(वि०)-अवासीर रोग माला ।

अर्ध [ नू ] (वि०)-पूर्ववत् ।

अर्धोत्पन(वि०)-अवासीर नाशक । पु०-सूरण नामक कन्द, जिमीकन्द ।

अर्धोहर-पूर्ववत् । [ गमन ।

अर्धण(वि०)-गतिशील । न०-गति,

अर्ध(१ प०)-योग्यता रखना, हक-दार बनना, अधिकारी होना ।

अर्ध(वि०)-श्रेष्ठ, प्रतिष्ठा योग्य, योग्यतापन्न, अधिकारी, उचित ।



अर्थान्तरन्यास(पु०)-अर्थालंकारभेद ।

अर्थान्वित( वि० )-अमीर, सामाने, सायंक ।

अर्थापत्ति(वि०)-यदि या किसी इच्छित वस्तु का यत्न करने वाला ।

अर्थापत्ति(स्त्री०)-मीमांसा शास्त्र के अनुसार एक प्रकार का प्रमाण, अनुमानभेद, न कहे गये अर्थ का समझना ।

अर्थालङ्कार(पु०)-शब्दालंकार के वि-  
च्छेद अलंकार, जिसमें अर्थ का समतकार दिखाया जाता है ।

अर्थिक(पु०)-वैताणिक, रत्नक, स्तुति-  
पाठक, सोये हुए राजा की लगाने वाला ।

अर्थित(वि०)-आर्थित, इच्छित । न०-  
इच्छा, आर्पण ।

आर्थिता(स्त्री०)-मांगना दरखास्त,  
हवाइश, आर्पण ।

अर्थित्व(न०)-पुण्यवत् ।

अर्थी[न] (पु०)-याचक, चेतक, वि-  
द्यादी, धनी । वि०-इच्छा रखने  
वाला, बाहर रखने वाला, प्रयोजन  
वाला ।

अर्थी(वि०)-मांगने योग्य, योग्य,  
चर्चित, अमीर, धनवान्, सुदि-  
नान् । न०-शिल्पाश्रित ।

अर्थी(१ पु०)-कष्ट देना, मारना, घब-  
करना, विनय करना, मांगना,  
सोना, हरकत करना ।

अर्थन(न०)-याचन, पीड़न, हानन,  
गमन । वि०-कष्टदायक ।

अर्देना(स्त्री०)-भिक्षा, याचना, अथ,  
हिंसा, मति ।

अर्देनि(पु०)-अग्नि, याचना, रोग ।

अर्दित(वि०)-याचित, हिंसित, गत,  
पीड़ित । न०-वायुव्याधि विशेष ।

अर्ध-द्वं(वि०)-आधा । पु०-वृद्धि, वायु,  
अध, भाग । अस्त्री०-आधाभाग ।

अर्धकृत(वि०)-आधा किया हुआ,  
असम्पूर्ण ।

अर्धकेतु(पु०)-रुद्र का नाम ।

अर्धगंगा(स्त्री०)-कावेरी नदी ।

अर्धगुच्छ(पु०)-बहू मीठी की माला  
जिस में धीवीस लड़ियां हों ।

अर्धगोल(पु०)-आधावृत्त ।

अर्धचन्द्र(पु०)-चन्द्रार्द्ध, अष्टमी का  
चन्द्रमा, गच्छत, एक प्रकार का  
वाद्य जिसकी नोक अर्धचन्द्राकार  
होती है, गमुनासिक चिन्ह ।

अर्धदिन-दिवसः-आधा दिन, दोप-  
हरी, १२ घंटे का दिन ।

अर्धनिशा(स्त्री०)-आधी रात ।

अर्धवक्त्राश्रित(स्त्री०)-वक्त्राश्रित ।

अर्धभाग(पु०)-आधा हिस्सा ।

अर्धभास्कर(पु०)-दोपहरी । [वाङ्मा ।

अर्धताम्र(पु०)-आधा सहीना, पख-

अर्धवीक्षण(न०)-पुररग देखना, कटाक्ष ।

अर्धशत(न०)-पचास । [सामा ।

अर्धशत(न०)-आधोशत, आधा

अर्धशब्द(वि०)-धीमी आवाज वाला ।

अर्धग(वि०)-आधा अंग, छड़वा,

कालिज, पलायत ।

अर्धगिनी (स्त्री०)-स्त्री, भाग्य ।

अधोङ्गी(पु०)-शिव । वि०-अधोङ्ग रोग  
से पीडित ।

अधोन्तर(न०)-आधा फासला ।

अधोर्ध्व(अस्त्री०)-आधे का आधा  
अर्धात् अधोर्ध्व, आधा आधा ।

अधोवर्धक(पु०)-आधाशीशी रोग ।

अधोऽङ्ग(वि०)-अधोऽङ्ग का भागी ।

पु०-आधाशीशी, वर्णसंकर जो  
ब्राह्मण द्वारा वैश्यजन्या से उत्पन्न  
हुआ हो ।

अधोकरण(न०)-आधा करना ।

अधुक्(वि०)-कामयाव, उन्नतिशील ।

अध्वन्द्व(पु०)-चन्द्रार्ध भाग, गलहस्त,  
नखचिन्ह, अनुनासिक का चिन्ह ।

अधोदय(पु०)-माघ का महीना,  
अमावस्या तिथि, श्रवण नक्षत्र  
और उपतिपात योग ।

अध्वं(वि०)-आधे का, वृद्धियोग्य ।

अध्वं(न०)-देना, भेंट करना, सौंपना  
नज़र करना ।

अध्वं(वि०)-भेंट किया गया, सौंपा  
गया, दिया गया ।

अध्वंस(पु०)-हृदय, हृदय का मोंस ।

अध्वं(१ प०)-किसी की ओर जाना,  
घप करना ।

अध्वं(अस्त्री०)-एक रोग, दश करोड़  
की संख्या, आधू नामक पर्वत,  
सांप, बाइल, मासकील ।

अध्वं(पु०)-एक राक्षस जिस को  
इन्द्र ने मारा था ।

अध्वं(वि०)-प्रभाहीन, मलिन । पु०-  
बाइल, शिखर ।

अध्वं(वि०)-सुदृढ़, छोटा, कमजोर,  
मूर्ख । पु०-बाइल, मूर्ख, पागल ।

अध्वं(अस्त्री०)-आंखों का एक रोग,  
पुराना नगर वा गांव ।

अध्वं(वि०)-तद्गु । न०-तंगी ।

अध्वं(न०)-एकद्वीप की भाषा ।

अध्वं(वि०)-उत्तम, शरीर, सुखा,  
ध्याता । पु०-स्थानी, वैश्य, श्रेष्ठ ।

अध्वं [ न ] (पु०)-सूर्य, उत्तराफा-  
ल्गुनी, वैश्यजाति की स्त्री ।

अध्वं(स्त्री०)-वैश्य जाति की स्त्री ।

अध्वं(वि०)-दयालु, दयालु ।

अध्वं(१ प०)-सारना, पात करना ।

अध्वं (स्त्री०)-चोड़ी, इन्द्र की  
अम्बर ।

अध्वं (वि०)-गतिशील, कुरिखत,  
गर्हा । पु०-चोड़ा, इन्द्र ।

अध्वं(वि०)-इदानीन्तन, परचा-  
त्तात, मधीन, हाड का ।

अध्वं(पु०)-देवताओं का होता ।

अध्वं(वि०)-विपत्तिजनक, पापयुक्त,  
मलिन । पु०-नुकसान, चोट ।

अध्वं [ न ] (न०)-अध्वंशीर का रोग ।

अध्वं(वि०)-अध्वंशीर रोग काँछा ।

अध्वं [ न ] (वि०)-पूर्ववत् ।

अध्वं(वि०)-अध्वंशीर नाशक । पु०-  
सूर्य नामक कन्द, जिमीकन्द ।

अध्वंहर-पूर्ववत् । [ गमन ।

अध्वं(वि०)-गतिशील । न०-गति,-

अध्वं(१ प०)-योग्यता रखना, हक-  
दार बनना, अधिकारी होना ।

अध्वं(वि०)-श्रेष्ठ, प्रतिष्ठा योग्य, यो-  
ग्यतापन्न, अधिकारी, उचित ।

पु०-चन्द्र, विष्णु, मूल्य, योग्य-  
ता, गति ।

अहंण-या—पूजा, प्रतिष्ठा ।

अहंन् [ त ] (वि०)--अधिकारी, यो-  
ग्यतापन्न, स्तुत, स्थात ! पु०-  
बुद्ध, जैनतीर्थङ्कर ।

अहंन्त(वि०)--पूषवत् ।

अह्नां(स्त्री०)--पूजा, प्रतिष्ठा ।

अह्निन्त(वि०)--पूजित, प्रतिष्ठित ।

अलू ( १ उ० )--प्रतिष्ठा करना, योग्य  
होना, रीकना, दूर करना ।

अलक(पु०)--घाली का गुच्छा, घुंघ-  
राले घाल, लुलक, पागल कुत्ता ।

अलकनन्दा(स्त्री०)--गंगा का नाम,  
आठ से दश वर्ष तक की उस  
वाली कन्या ।

अलकप्रभा(स्त्री०)--कुवेर की राज-  
धानी, कुवेरपुरी ।

अलकप्रिय(पु०)--पीतसालनामक वृक्ष  
अलका(स्त्री०)--कुवेरपुरी, आठ से  
दश वर्ष तक की उस वाली कन्या ।

अलकाभिप(पु०)--कुवेर ।

अलक-कक( पु० )--छातारस, छास  
का रंग, लास । [ कुशकुम ।

अलङ्गण( वि० )--लसत्परिहित । न०--

अलङ्गित(वि०)--न देखा हुआ, अप्रकट,  
अप्राप्त । [ गता ।

अलङ्गरी(स्त्री०)--दुभाग्य, कष्ट, गिर्ध-  
अलङ्गदं(पु०)--जल वर्ष ।

अलङ्गु(वि०)--जो छोटा न हो, बड़ा,  
वज्रगदार ।

अलङ्ग(पु०)--एक प्रकार का पत्थी ।

अलङ्ग(वि०)--वैशर्म, लङ्गाहीन ।

अलङ्ग(वि०)--अप्राप्त । [ दुष्प्राप्य ।

अलङ्ग( वि० )--प्राप्ति के अयोग्य,

अलङ्ग(वि०)--गृहहीन, नाशरहित ।

पु०--अनाश, नित्यता, पैदापश,  
उत्पत्ति ।

अलङ्क(पु०)--बायला फुत्ता, एक कीड़ा ।

अलङ्क(वि०)--न समकता हुआ ।

अलङ्क(वि०)--आलसी, उद्योगहीन,

सुस्त, थका हुआ, मन्द । पु०--

एक मुनि का नाम, वृक्ष विशेष ।

अलङ्क(वि०)--सुस्त, आलसी ।

अलङ्क(वि०)--सुस्त, आलसी ।

अलङ्क(अ०)--काफी, पर्याप्त, पूरा, धारण,

निरपेक्ष आदि अर्थों में आता है ।

अलङ्करण(न०)--भूषण, शृंगार, तैयारी,  
सजावट । [ जशील ।

अलङ्करिण(वि०)--अलङ्कारकर्ता, सूप-

अलङ्कर्ता(वि०)--अलङ्कार करने वाला,

सजाने वाला । [ क्षम ।

अलङ्कर्माण(वि०)--कार्यकुशल, कार्य-

अलङ्कार(वि०)--भूषण, आभरण, अर्थ

भीर शब्द की यह युक्ति जिस

से काव्य में शोभा हो ।

अलङ्कारक(पु०)--आभूषण, शृंगार ।

अलङ्कारशास्त्र(न०)--काव्यके गुण और

दोष की जताने वाला शास्त्र ।

अलङ्कारहीन( वि० )--आभूषणहीन,

शृङ्गाररहित । [अलङ्कृत करना ।

अलङ्क(८ उ०)--तैयार करना, सजाना,

अलङ्कृत(वि०)--अलङ्कारपुष्प, भूषित

सजाया हुआ ।

अलंकृति(स्त्री०)--सजावट, गहना ।  
 अलंक्रिया(स्त्री०)--भूपितकाना, भूपा ।  
 अलंघन(न०)--पार न करना ।  
 अलंघनीय(वि०)--जो पार न किया जा सके, पहुँच से बाहर ।  
 अलंघ्य(वि०)--पूँयवत् ।  
 अलंजर(पु०)--मिट्टी का चड़ा ।  
 अलंजुर (पु०)--पूँयवत् ।  
 अलंजुष (वि०)--पर्याप्त, जोजर्न के लिये काफी ।  
 अलंघन(वि०)--पर्याप्त बनवाला, अभीर ।  
 अलंधून(पु०)--धूनसमूह । [ न हो ।  
 अलंपट(वि०)--जो लम्पट न हो, छनी ।  
 अलंबल(वि०)--फाँकी सज्जधूत, पर्याप्त शक्तिवाला ।  
 अलंबुप(पु०)--वसन, प्रहस्त, हाथ की हथेली । [ भेद, दुईमुई ।  
 अलंबुपा(स्त्री०)--अम्बर।ओं का एक ।  
 अलंबुसा(स्त्री०)--एक देश का नान ।  
 अलात(अस्त्री०)--आग की जलन, आधी जली हुई लकड़ी ।  
 अलावु-यू(स्त्री०)--तुम्ही, कद्दू, लता विशेष ।  
 अलाम(वि०)--लामरहित । पु०-लाम का अभाव, हानि ।  
 अलार(न०)--दवाँजा ।  
 अलाम(पु०)--जीम की जड़ों का मूलन ।  
 अलास्य(वि०)--सुस्त, बेकार ।  
 अलि (पु०)--भौरा, बिच्छू, कौआ, कौयल ।  
 अलिक(न०)--छलाट, माया ।  
 अलिगदं(पु०)--एक प्रकार का साँप ।

अलिङ्ग(वि०)--लिङ्गरहित, परमात्मा का विशेषण । [ कौआ ।  
 अलिङ्गिहा(स्त्री०)--गले के भीतर का ।  
 अलिङ्गो(स्त्री०)--सालादूबाँ नानक युक्त । [ चबूतरा ।  
 अलिन्द(पु०)--दवाँजे के बाहर का ।  
 अलिपक(पु०)--अमर, कुकर, कौयल ।  
 अलिप्रिय(म०)--रक्तोत्पल, छालकमल ।  
 अलिप्रिया(स्त्री०)--पाटला वृक्ष ।  
 अलिप्सा(स्त्री०)--छालसा का अभाव ।  
 अलिमक(पु०)--कौयल, भूनर, पद्मकेशर ।  
 अलिम्वफ (पु०)--पद्मकेशर, भूनर, कौयल ।  
 अली [ नू ] (पु०)--भौरा, भूनर ।  
 अलीक(वि०)--अप्रिय, निष्ठा, पोड़ा न०--नाथा झूठ, स्वर्ण ।  
 अलीक्य(वि०)--झूठा ।  
 अलु(पु०)--छोटी कलशी ।  
 अलुकसनास (पु०)--एक प्रकार का श्वपांच त्रिमूर्ति विभक्ति का लोप नहीं होता जैसे आत्मनेपद शब्दमें अलुप्त(वि०)--अनष्ट, अस्त, न घटा हुआ । [ चीन हो ।  
 अलुप्य(वि०)--शान्तचित्त, जो छाल-अले लेते (अ०)--निरर्थक गढ़द जो पिशाच भाषा में प्रयुक्त होते हैं ।  
 अलेपक(वि०)--वेदाङ्ग । पु०--परमात्मा ।  
 अलेश(वि०)--बहुत, जो पोड़ा न हो ।  
 अलेश(अ०)--बिलकुल नहीं ।  
 अलेशैज(वि०)--नज्जुत, स्फिर ।  
 अलीक(वि०)--जो दिखाई न दे, अनशून्य । अस्त्री०--लीकतिम्न, मलय, जनभाव, पाछाड ।

अलोक्त(न०)-न दिखलाई देना, नष्ट होना ।

अलोक्ति(वि०)-न देखा हुआ ।

अलोभ(पु०)-लोभ का अभाव ।

अलोभी(वि०)-लोभरहित ।

अलोत्त(वि०)-शान्त, स्थिर, निश्चल

अलोत्तर(वि०)-स्पष्टरहित, लालच

रहित, वैराग्य ।

अलोद्भि(वि०)-रक्तहीन, जो लाल

न हो । न०-रक्तवर्ण ।

अलौकिक(वि०)-लौकिकीत, अनाजु-

पिक, जो ऐहिक न हो ।

अलक(पु०)-वृक्ष, शरीर का अयवध ।

अल्प(वि०)-चोड़ा, छोटा, कम, म्यून

किंचित् । न०-अल्पत घोड़ा ।

अल्पक (वि०)-चोड़ा, छोटा, नीच ।

पु०-चपास वृक्ष ।

अल्पक्रीत(वि०)-मस्ता, चोड़े दानका

अल्पगन्ध(न०)-छोटा कमल ।

अल्पज्ञ(वि०)-चोड़ा ज्ञानने वाला,

चोड़े ज्ञान का ।

अल्पवृत्ति(वि०)-दुर्बल, खर्चकाय, नाटा

अल्पता-स्वम् छोटापन, मूर्धता ।

अल्पवृद्धि(वि०)-तंगदिल, चोड़े नाथ

वाला । [वाला कम गमक ।

अल्पधी (वि०)-मूर्ख, दुर्बल हृदय

अल्पपत्र(पु०)-छोटे पत्रे वाली तुलसी ।

अल्पपद्म(न०)-छोटा कमल ।

अल्पपलाणक(पु०)-तरबूत, खरबूत ।

अल्पपुत्र(वि०)-कमजोर, दुर्बल ।

अल्पपुत्रि-भक्ति(वि०)-कमजोर दिव,

मेवद्वेष, अल्पमान, मूर्ख ।

अल्पभाषी(वि०)-चोड़ा बोलने वाला, कमजोर ।

अल्पसूक्ति(वि०)-खर्चकाय, नाटा ।

अल्पवयस्(वि०)-चोड़ी उम्रका, जवान

अल्पविद्य (वि०)-अज्ञान, मूर्ख,

कुशिक्षित । [ यदा कदा ।

अल्पशः(अ०)-चोड़ा, कममात्रा में,

अल्पशक्ति(वि०)-कमजोर, दुर्बल ।

अल्पपंच(पु०)-कजूस ।

अल्पायुः(वि०)-चोड़ी उम्र का ।

पु०-छाग, खकरा ।

अल्पाहारी(वि०)-चोड़ा खाने वाला,

परहेजगार ।

अल्पिपु(वि०)-बहुत चोड़ा । [बनाना ।

अल्पीकृ(पु०)-कर्म करना, छोटा

अल्पीभूत(वि०)-चटा हुआ, छोटा-

किपा हुआ । [ चोड़ा ।

अल्पीयः [सु](वि०)-अल्पस्व, बहुत

अल्पा(स्त्री०)-परमेश्वर, नाता ।

अव्(१ व०)-रक्षा करना, सम्पुष्ट

करना, रक्षता करना ।

अव(अ०)-निश्चय, अनादर, भावमन,

शुद्धि, अव्यय, परिमय, निषेध,

पालन-हरपादि अर्थों में प्रयुक्त

होता है ।

अवकट (वि०)-चिह्न, मुखादि,

नीचे की ओर का ।

अवकर(पु०)-काटू से उड़ती हुई

भूलि आदि ।

अवकर्ण(१० व०)-पुनः ।

अवकर्ण(पु०)-कटा हुआ भाग ।

अवकर्षण (न०) - बलपूर्वक खींचना,  
एक स्थान से दूसरे स्थान पर  
हटाना । [ हुआ, झूरा ]

अवकलित (वि०) - देखा हुआ, जाना  
झूटा (स्त्री०) - बिरवाला ।

अवकाश (१, ४ भा०) - दिखलाई देना  
प्रकट होना । [ अवस्थान देश ।

अवकाश (पु०) - अवसर, मौका, अन्तर  
अवकीर्ण (वि०) - पिसा हुआ, अवचू-  
र्णित, मिश्रित, विलिप्त ।

अवकुटार (वि०) - बहुत्र गहरा । न० -  
विरूपता, विपरीतता । [ हुआ ।

अवकुहित (वि०) - कटा हुआ, तग किया  
अवकुट (१ प०) - खींचना, उखाड़ना ।

अवकृष्ट (वि०) - बहिष्कृत, दूरीकृत,  
भारक्ष, निकाला हुआ ।

अवकृ (६ प०) - छिड़कना, परिपूर्ण  
करना, फैलाना, फैलाना ।

अवकेश (वि०) - जिसके बाल नीचे की  
लटक रहे हों ।

अवकेशी (वि०) - बन्ध, अफल । पु० -  
फलहीन वृक्ष ।

अवकलप (वि०) - न कहने योग्य,  
अनुचित, झूठा, अवर्णनीय ।

अवक्र (वि०) - अकुटिल, सीधा, ईसा-  
नदार । [ करना ।

अवक्रन्द (१ प०) - चिल्लाना, गर्जना  
अवक्रन्द (वि०) - बिह्वलने वाला,  
गर्जने वाला । पु० - चिल्लाहट ।

अवक्रन्दन (न०) - झीर २ से रोना ।  
अवक्रम (१ प०, ४ प०) - भागजाना, बच

भागना, कुचलना, गालिय जाना ।

अवक्रम (पु०) - क्रयसाधन द्रव्य, मूल्य,  
माहा, बदला । [ झुकाव ।

अवक्रान्ति (स्त्री०) - उतार, अवयोगमन,  
अवक्रिया (स्त्री०) - झूल, कर्तव्य का

असम्पादन ।  
अवक्रो (६ प०) - खरीदना, खिरापा

करना, रिश्वत देना ।  
अवक्रोश (पु०) - शर्म, गाली गलोच,

मिन्दा, असह्य बोली ।  
अवक्लिन्न (वि०) - तैर, बिलकुल भीगा

हुआ ।  
अवलप (पु०) - नाश, चढ़ना, हानि ।

अवलि (१, ५, ९ प०) - हटाना, छेजाना,  
गण्ट करना । [ देना, देना ।

अवलिप (६ प०) - दूर भेजना, गाली  
अवलित (वि०) - कैंका हुआ, अपमानित

अवलेप (पु०) - ऐतराज, ऐवकीर्ष ।  
अवलेप (१० प०) - काटना, टुकड़े

करना, बरबाद करना । [ करना ।  
अवलेपन (न०) - विभागकरना, नाश

अवसात (न०) - गहरी खाई ।  
अवगण (१० प०) - अपमान करना,

अवहेलना करना ।  
अवगणन (न०) - नाफरमायरीदारी, बेह-

ज्जती, दोषारोपण, पराजय ।  
अवगणित (वि०) - अवमानित, तिर-

स्कृत ।  
अवगण्ड (पु०) - कपोल परका फोड़ा ।

अवगत (वि०) - ज्ञात, जाना हुआ,  
विदित, प्रतिपन्न । [ मात्र ।

अवगति (स्त्री०) - सामान्य ज्ञान, योग-

अवगम्(१ प०)-नीचे जाना, उतरना,  
पहुँचना, प्राप्त करना, जानना ।

अवगम(पु०)-समीपगमन, उतार,  
समझौता, ज्ञान ।

अवगमन(न०)-पूर्ववत् ।

अवगाह(वि०)-प्रविष्टे, घूँसा हुआ,  
गहरा, पतित, गज्जित ।

अवगाध(पु०)-नाथ से से जल निकालने का पात्र विशेष ।

अवगाह(१ भा०)-स्नान करना, हुयकी  
लगाना, गोता धारना, प्रवेश  
करना ।

अवगाह(पु०)-स्नान करना, मज्जन,  
प्रवेश, मध्यमन, गहाने का स्थान,  
होत ।

अवगाहन(न०)-पूर्ववत् ।

अवगीत(वि०)-निन्दित । न०-लोका-  
पवाद, अवधुगीत ।

अवगुण(पु०)-दोष, रूपा ।

अवगुह(१ प०)-ढकना, छिपाना ।

अवगुहित(वि०)-ढका हुआ, पिसा  
हुआ ।

अवगुहित(वि०)-पिसा हुआ ।

अवगुम्फित(वि०)-गूँसा हुआ, गुहा  
हुआ । [ कौली भरना ।

अवगुह(१ प०)-ढकना, छिपाना,

अवगुहन(न०)-छिपावट, आच्छिन्न

अवगह(८ प०) ढोला ढोहना, विभाग  
करना, तोड़ना, सजा देना, पक-  
दना, जाम में करना, रोकना ।

अवग्रह(पु०)-समाप्त विच्छेद करना,  
अन्ति का अभाव, वृष्टिरोध,

अनावृष्टि, गजधूष, हस्तिछटाट,  
स्वताय, प्रकृति, शाय, कोसना  
रुकावट । [ मान, ज्ञान ।

अवग्रहण(न०)-रोक, रुकावट, अप-  
वसंवाह(पु०)-शाय, रोक अलहदगी,  
छोड़ना । [ आ-दोलित करना ।

अवग्रह(१ भा०)-ढकेलना, तोड़ना,  
अवग्रह(पु०)-अग्नी का सूरारु, गुफा,  
चक्षी, गर्त । [ करना ।

अवग्रहण(न०)-पीसना, रगड़ना, साफ  
अवग्रह(पु०)-आघात विशेष, चीट ।

अवग्रह(१ प०)-मुँह से छूना, सूँघना ।

अवग्रह(१ प०)-ओर से आदिर करना,  
पुकारना, गिलावना, ध्वनि से  
भरपूर करना ।

अवग्रहण(पु०)-भयर, आघात ।

अवग्रहण(पु०)-प्रकटीकरण, विज्ञप्ति ।

अवग्रहण(स्त्री०)-विज्ञप्ति, हँसी  
पिटवा कर ज्ञात कराना ।

अवग्रहण(वि०)-मीन, चुप, वाणीरहित ।

न०-कुशब्द, गाली, मीनवाचन ।

अवग्रहण(वि०)-न कहने योग्य, दोष  
रहित ।

अवग्रहण-चाय(पु०)-ढकना करना, फूल  
फलादि तोड़ कर एकत्र करना ।

अवग्रह(१ प०)-नीचे उतरना ।

अवग्रहण(वि०)-चुप, मौनवृत्ति ।

अवग्रह(पु०)-उतराव की जगह,  
सहक, कार्यक्षेत्र ।

अवग्रह(३ प०)-पूजा करना, अर्चना  
करना । ४ उ०-इष्ट करना,  
पुनरा ।

अवचूड-चूड(पु०)-ऊपर के नीचे यथा  
हुमा कपहा ।

अवचूलक(अस्त्री०)-मीर के पक्ष या  
गाय की पूँछ के आली की यनी  
हुई सबसेरी चहाने की चीरी ।

अवचूड(१० प०)-कैलाना, ऊपर से  
ढकना, छिपाना ।

अवचूड[छा] द (पु०)-ढक्कन ।

अवचिह्न(७ व०)-काट कर अलग  
करना, टुकड़े २ करना, बीच में  
से तोड़ना, पहिचानना, सीमा-  
बद्ध करना, रोकना ।

अवचिह्न(वि०)-कटा हुआ, अलग  
किया हुआ, विभक्त, किसी वस्तु  
में इसके विशेष गुणों के कारण  
दूसरी सम्पूर्ण वस्तुओं से भेद की  
प्रकाश करने वाला ।

अवचटुरित(वि०)-मिश्रित । न०-म-  
हाहास्य ।

अवच्छेद(पु०)परिच्छेद, एक देश,  
भाग, टुकड़ा, अवयव, सीमा,  
तत्त्वकिया, व्याप्ति ।

अवच्छेदक(वि०)-जुदा करने वाला,  
निश्चय करने वाला, व्यापक ।  
पु०-सीमा, परिभाषक वा लक्षण  
बताने वाला ।

अवच्छेदन(न०)-काटना, जुदा करना,  
निश्चय करना ।

अवजय(पु०)-पराजय, जीत ।

अवजि(१ प०)-लूटना, जीतना, रोकना ।

अवजित(वि०)-पराजित, अपमानित ।

अवजिति(स्त्री०)-पराजय, जीत ।

अवज्ञा(९ प०)-अमान करना, निरा-  
दर का धर्ताय करना, अवहेलना  
करना ।

अवज्ञा(स्त्री०)-अवमानना, अवहेलना

अवज्ञात(वि०)-अवमानित, पूराभूत ।

अवज्ञान(न०)-अवहेलना, अवहेलना,  
तिरस्कार ।

अवट(पु०)-सूराख, गर्त, गड्ढा, कूप ।

अवटि(पु०)-सूराख, कुआँ, गर्त ।

अवटी(स्त्री०)-पूखवत ।

अवटु(पु०)-गर्त, कूप, गर्दन के पीछे  
का भाग, एक प्रकार का धूल ।

स्त्री०-गर्दन के पीछे का भाग ।

अवटक-हय(पु०)-बाजार, मार्केट,  
इष्ट । [ अधोगति ।

अवशीन(न०)-पक्षियों का उड़ान वा

अवत(पु०)-कुआँ, झील ।

अवतस(अस्त्री०)-कान का एक  
भूषण, माला । [ नीचे गिराना ।

अवतद्(१० प०)-कुचलना, मार कर

अवतन(८ व०)-कैलाना, तानना,  
ढकना ।

अवतत(वि०)-कैला हुआ, ढका हुआ ।

अवतति(स्त्री०)-कैलाव, प्रसारण ।

अवतप्त(वि०)-तेपा हुआ ।

अवतनस(न०)-चोटा अन्धकार ।

अवतस् [ ] (अ०)-नीचे, पाताल  
लोक में ।

अवतपण(न०)-मुखदायक इलाज ।

अवतर(पु०)-अधोगति, चतार ।

अवतरण(न०)-पानी में नहाने के  
लिये उतरना, अवतार ग्रहण



करना, पार करना, तीर्थ स्नाना-  
नुवाद, भूमिका, उद्धृतभाग, चीड़ी  
की चैड़ी ।

अवतरणिका(स्त्री०)-किसी पुस्तक  
के आरम्भ में लिखी हुई प्रार्थना,  
भूमिका, दिवापा । [क्रम ।

अवतरणी(स्त्री०)-भूमिका, कायदा,

अवतारह(न०)-कुशलता, नारना ।

अवतार(पु०)-कैलाश, उद्धृत, सायबान ।

अवतार(पु०)-उतार, उद्धृत, ईश्वर

या किसी देवता का पृथ्वी पर

जन्म ग्रहण करना, पड़ाव डालने

का स्थान, तीर्थ, तलुंगा, ता-

लाव, भूमिका, पार करना ।

अवतारकथा(स्त्री०)-बहुरावित्तय के

एक अश्वत्थ का नाम, किसी

अवतार का वर्णन ।

अवतारण(न०)-उतरवाना, अनुवाद,

भूत प्रेत का उठना, पूजा, भूमि-

का, कपड़े का दानन ।

अवतारी(वि०)-अवतार लेने वाला,

उतरने वाला ।

अवतीर्ण(वि०)-उतरा हुआ, नीचे

आया हुआ, स्नात । जिस ने

अवतार ग्रहण किया हो, पार

किया हुआ, अनुवादित ।

अवतीर्णत्रय(वि०)-त्रय से मुक्त ।

अवत(१ प०)-उतरना, नीचे आना,

अवतार ग्रहण करना, प्रवेश

करना, आरम्भ करना, ग्राह्य

माना ।

अवतीका(स्त्री०)-ऐसी स्त्री या गाय  
जिस का अकस्मात् गर्भपात  
हो गया हो ।

अवत्त(वि०)-हरा हुआ, अवशीत ।

अवदेश(पु०)-नष्टपान के समय जो

कबाख व बड़े आदि खाये जाते

हैं, पाद । [समाप्त ।

अवदत्त(वि०)-दिया हुआ, स्वदत्त,

अवदह(१ प०)-जला कर स्वाक

करना, नष्ट करना ।

अवदाय(पु०)-बर्त, जलन, प्रीतिमानु ।

अवदोष(वि०)-छुट्टा, स्वच्छ, बेदाग ।

गुणवत्, पीला । [कीर्तिकर काम ।

अवदान(न०)-पूजा किया हुआ काम

अवदान्य(वि०)-कञ्चू ।

अवदारण(न०)-जाड़ना, ठुकरा दे

करना । [जलन, यन्त्र ।

अवदाह(अस्त्री०)-धोरण की तरह,

अवदीर्ण(वि०)-कटा हुआ, विभक्त,

दो भागों में बटा हुआ, चबरा-

या हुआ । [करना ।

अवदी (४ प०)-काटना, तफसील

अवदीह(पु०)-दूध, दुधने का कार्य ।

अवद्या (वि०)-अपम, नीच, पापी,

गर्हित, निरुद्ध । न०-पाप, अनिष्ट,

निन्दा ।

अवद्वग(पु०)-वाजार, एह ।

अवप(पु०)-बच से छुटकारा ।

अवधा (३ भा०)-मोचरचना, उगा-

ना, ध्यान, देना, बन्द करना ।

अवधान(न०)-मनोयोग, समाधान,

मणिघान, यहु ।

अवधानी(वि०)-अवधान, जिस ने  
ध्यान लगाया हुआ हो ।

अवधानीय(वि०)-अवधातव्य, ध्यान  
देने योग्य ।

अवधार(पु०)-ठोक २ घरादा ।  
अवधारका(न०)-निश्चय, अवधार,  
घरादा ।

अवधारित(वि०)-कृतावधारण ।

अवधार्य(वि०)-अवधारणीय निर्णय

अवधाव(१ व०)-पीछे दीड़ना, दीड़  
कर पकड़ना ।

अवधावन(न०)-पीछा, पकड़, पीछे  
दीड़ना, घौना ।

अवधावित(वि०)-पीछा किया हुआ,  
बाण किया हुआ ।

अवधि(पु०)-सीमा, अवधाव, काछ,  
घिड, सूरख । [ रत करना ।

अवधीर(१०प०)-अवधा करना, हिका-

अवधीरण(न०)-अपमान पूर्वक बर्ताव  
अवधीरणा(स्त्री०)-अपमान, हिंसांरत

अवधीरित(वि०)-अपमानित, तिर-  
स्कृत ।

अवधू(५ व०)-दिलाना, हटाना, हर-  
कत देना, अवधा करना ।

अवधूत(पु०)-भायरहित ।

अवधूत(वि०)-कांपा हुआ, त्यागा  
हुआ, अपमानित, आक्रान्त ।

पु०-वर्णाश्रमधर्म की छोड़ने द्वारा  
सन्धाधी ।

अवधू(१०व०)-निश्चय करना, घरादा  
करना, मुनना, बाडिक होना,

सीमाबद्ध करना । [ मुना हुआ ।  
अवधूत ( वि०)-निश्चित, तयशुदा,

अवधय(वि०)-न मारने योग्य ।

अवध्वंस(पु०)-टपान, धूलि, अपमान,  
छिड़कना । [ गहिरा हुआ ।

अवध्वस्त(वि०)-नष्ट, तिरस्कृत, त्यक्त-  
अपन(न०)-रक्षा, लुप्टि, इच्छा, प्रस-

न्नता, जलदी । [ हुआ, भाजिज ।

अवमल(वि०)-भुका हुआ, लटका  
अवमंतमुख(वि०)-जिस का चेहरा

नीचे की ओर झुका हो ।

अवमति(स्त्री०)-भुका, गिरावट ।  
अवमद(वि०)-भानव, आपद्ध, आच्छा-

दित । न०-डोल । [ होना ।

अवमस(१प०)-झुकावा, झुकना, नीचे  
अपनय ( पु० )-अधःपातन । नीचे

गिरना ।

अवमाक(वि०)-चपटी नाक का ।

अवमाय(पु०)-अधीनपन, नीचेलेजातर  
अवमायक(वि०)-नीचे वसारेनेवाला ।

अवमाह(पु०)-बाधना, पेटी लगाता ।

अवनि-नी(स्त्री०)-पृथ्वी, धूमि ।

अवनिज(३ व०)-घोना, बाक करना,  
निटारना ।

अवनी(१ प०)-भीतर की ओर धके-  
लना, वतारना, नीचे गिराना,

ले जाना ।

अवनीश-नाय-पति-पाल(पु०)-पृथिवी  
का स्वामी राजा, भूपति ।

अवनी[नि]-धू(पु०)-पहाड, पर्वत ।

अवनेजन(न०)-घोना, जलसेपन ।

अवन्ति(पु०)-अवन्तीदेश, नदी विशेष,  
उज्जैन ।

अवन्तिका(स्त्री०)-उज्जयिनी नगरी ।

अवन्तिपुर(न०)-पूर्ववत् ।

अवन्तिस्रोत(न०)-काशिक, काशी ।

अवन्ती(स्त्री०)-अवन्ति के समान ।

अवन्ध(वि०)-फलवान्, फलपुष्प ।

अवपत्(१ प०)-उतारना, फूटना,  
भूषण कर गिरना ।

अवपतन(न०)-उतार, गिरावट ।

अवपात(पु०)-रूप, गुण, अवपत्तय ।

अवपूर्ण(वि०)-भरा हुआ, पूरित ।

अवभृथ(६ प०)-आपना, अकेलना ।

अवभृथ(पु०)-चौरी और से बन्धन,  
रोमधिशेष । [विरोध ।

अवभाषा(स्त्री०)-दुःख, मानसिक कष्ट,

जयमुकु(वि०)-जाना हुआ, जानने  
द्वारा ।

अवभृथ(४ आ०)-जानना सुखद्वार  
होना, जानना, समझना ।

अवबोध(पु०)-ज्ञान, जागरण, स्वप्न  
का प्रतिपत्ती शब्द ।

अवभन(पु०)-पराजय, पराभूति ।

अवभन(३ प०)-तोड़ना, तोड़ कर  
अलग करना ।

अवभाषण(न०)-कथन, धोलना ।

अवभास(१ आ०)-बनकना, प्रकट होना

अवभास(पु०)-शोभा, प्रभा, ज्ञान,  
निधया ज्ञान ।

अवभासित(वि०)-शोभित, प्रकट ।

अवतिष्ठ(३ प०)-तोड़ कर अलग करना ।

अवभृथ(६ प०)-टेंटा करना, फुलाना ।

अवभृथ(वि०)-शुद्ध हुआ, टेढ़ा  
किमा हुआ ।

अवभृथ(पु०)-दीक्षान्तपक्ष, पक्ष के  
अन्त में स्नान ।

अवभृथ(वि०)-गुणह्वार, अर्धम, निन्दित,  
कमीना, सब से छोटा । पु०-रक्त  
न०-पाप ।

अवभृथ(वि०)-अवमानित, तिरस्कृत ।

अवभृथ(पु०)-स्वामी, ईश्वर । स्त्री०-  
अवभृथ, नफरत ।

अवभृथ(४ आ०)-हिकारत करना,  
अवभृथ करना । [कारी ।

अवभृथ [ वृ ] (वि०)-अवमानना-

अवमान(पु०)-अवमान, अवभृथ ।

अवमानना(न०)-पूर्ववत् ।

अवमानो(वि०)-अवभृथ करने वाला ।

अवभृथ(पु०)-पीड़न, कथना, बरबादी ।

अवभृथ(न०)-खूटना, कुचलना ।

अवभृथ(पु०)-खूना ।

अवभृथ(पु०)-आलोचना, विचारना ।

अवभृथ(६ प०)-ढीला करना, उता-

रना, खोलना । [ दूर करना ।

अवभृथ(२ प०)-रंगद कर मिटाना,

अवभृथ(६ प०)-पीसना, कुचलना ।

अवभृथ(६ प०)-झूना, सोचना,  
विचारना ।

अवभृथ(पु०)-शरीर का अंग, अंग,

भाग, टुकड़ा, शरीर, साधन,

उपकरण । [ सम्पूर्ण वस्तु ।

अवभृथ(वि०)-अगी, अग्नी । पु०-

अवभृथ(२ प०)-अधीन होना, रुकना,

आमना, रोकना ।

अवभृथ(वि०)-चरम, कनिष्ठ, अश्रेष्ठ,

नीचे का, सब से सरास, अन्तिम

अत्यन्त छेष्ट । पु०-घोता हुआ  
काल । [ जात ।  
अक्षरज्ञ(पु०)-कनिष्ठभ्राता, हीनवश-  
अक्षरत'(अ०)-पीछे से, पीछे, नीचे,  
नीचे से ।  
अक्षरति(स्त्री०)-विराम, निवृत्ति ।  
अक्षरवर्ण(पु०)--शुद्ध, चौथे वर्ण का ।  
अक्षरव्रत(पु०)-सूर्य, यज्ञविशेष । वि०-  
हीनव्रत ।  
अक्षरस्तात(अ०)-पश्चात्, अक्षरतः ।  
अक्षरा(स्त्री०)--हुर्गा, दिशा ।  
अक्षरीण(वि०)-तिरस्कृत, निन्दित ।  
अक्षरह्र(वि०)-रौका हुआ, घन्द किया  
हुआ, रक्षित, घन्दीभूत ।  
अक्षरुष्(३ उ०)--रौकना, घन्द करना,  
घेरना । [ तल्ल से उतारना ।  
अक्षरुह्(१ प०)--उतरना, नीचे आना,  
अक्षरोप(पु०)-राधा, आच्छादन, निरोप  
राजस्त्रीरुह, राजगृह, रक्षक ।  
अक्षरोपक(वि०)--रौकने वाला, घेरने  
वाला । पु०-रक्षक । न०-खेत की  
चाड़ ।  
अक्षरोपन(न०)-घेरा, रौक टोक,  
बाधा, अन्तःपुर । [ अस्त होना ।  
अक्षरोपण(न०)--उखाड़ना, कम करना ।  
अक्षरोह(पु०)-अधोगति, यज्ञ पर  
चढ़ने वाली दील, चढ़ाव, स्वर्ग ।  
अक्षरोक्ष(न०)-चढ़ना, उतरना ।  
अक्षगं(वि०)-कक्षारहित । पु०-स्वर्ग ।  
अक्षणं(पु०)-निन्दा, परिवाद । वि०-  
घेरण का, गुणरहित, अघम ।

अवर्तन(वि०)--जीविकारहित । न०-  
जीविका का अभाव ।  
अवर्प(पु०)-वर्षा का अभाव, सूखा ।  
अवर्षण(न०)--पूर्ववत् ।  
अवलक्ष(वि०)-संश्लेष ।  
अवलम्ब(वि०)--सलम्ब, संयुक्त । पु०-  
कटि, कमर ।  
अवलम्ब(१ आ०)-छटकना, पकड़ना,  
सहारे से छटकना ।  
अवलम्बः-लम्बनम्--आश्रय, सहारा,  
टोक, सहायता, मदद ।  
अवलम्बित(वि०)--आश्रित, शीघ्र,  
विना यिलम्ब के । [ यिक्त ।  
अवलम्बित(वि०)-धन से गन्धित, अति-  
अवलम्बित(२ उ०)--चाटना ।  
अवलीढ(वि०)-चयाया हुआ, जलित  
चाटा हुआ ।  
अवलीढा(स्त्री०)--अपमान, अनादर ।  
अवलीला(स्त्री०) हिला, कीड़ा,  
'अपमान' । [ भूधा, सग ।  
अवलेप(पु०)-गर्भ, आक्रमण, अतिपेक,  
अवलेपन(न०)--तैल, गर्भ, संग, चन्दन ।  
अवलेह(पु०)--चटनी, मालून, भीषण  
जो चाटी जाय, लेही ।  
अवलेहन(न०)--जीभ से चाटना ।  
अवलेह्य(वि०)--चाटने योग्य ।  
अवलोक(१ आ० वा १० प०)-देखना,  
गौर करना । [ जाच, पड़ताल ।  
अवलोकन(न०)-देखना, देखभाल,  
अवलोकनीय(वि०)-देखने योग्य ।  
अवलोकित(वि०)-देखा हुआ, दर्शित ।

अवयवदः--वदन--अपवाद ।

अवयवाद् (पु०)--अपवाद, अपमान,  
सहारा, सूचना । [ सूरास ।

अवयवक(पु०)--सिद्धी, घृष्टा के लिये

अवयव(वि०)--विषय, परवय, लाचार ।

अवयवस्(स्त्री०)--अनुचित इच्छा ।

अवयवशिट(वि०)--यथा हुआ, शेष ।

अवयवीभूत(वि०)--स्यतन्त्र, घेवस ।

अवयवीन(पु०)--विच्छेद ।

अवयव(पु०)--यज्ञी, यथा हुआ, समाप्त

अवयवित(वि०)--यथा हुआ, अवयवित

अवयव(वि०)--अक्षर, जो वय में हो ।

अवयव(अ०)--अक्षर, यज्ञीनन, निश्चय

करके । [ अटल, निश्चित ।

अवयवभावी(वि०)--जो टले नहीं,

अवयवमेव(वि०)--अक्षर ही निश्चय

करके ।

अवयवा(स्त्री०)--स्वतन्त्र स्त्री, कोहरा

अवयवाप(पु०)--हिन, तुपार, पाला,

अभिमान । [ उत्तारना ।

अवयवण(न०)--रुद्धे पर से पक्षात्

अवयव(पु०)--अक्षरों के लिये,

भुक्तना, टकना, महारा देना,

रौकना । [ भावना ।

अवयव(पु०)--महारा, भुक्ता, मोना,

अवयव(वि०)--आश्रित, जिसे महारा

मिला हो । ध्वनि ।

अवयवाण(पु०)--आते समय हीठों की

अवयव(पु०)--राजा, मृग, अक्ष, युद्ध ।

म०--भोजन, नाकता, रसा ।

अवयव(१ पु०)--दयाले करण, रसना,

उगाना ।

अवयव(न०)--कीली भरना, विप-  
टना ।

अवयव(न०)--पक्षियों की नीचे

की ओर गति ।

अवयव(पु०)--नियामरूपान, ग्राम,

छात्राग, मठ ।

अवयव(१ पु०)--भुरभाना, मुलित

हीना, बेदिल होना, नष्ट होना ।

अवयव(पु०)--विपाद, नाश, क्षमता

का अभाव, अन्त ।

अवयव(वि०)--विपादप्राप्त, नाश

होने वाला, सुस्त, आलसी ।

अवयव(पु०)--अवकाश, मीका, समय ।

अवयव(पु०)--मोचन, स्वतन्त्रता,

मुक्ति ।

अवयव(पु०)--जाकूस, गुप्तचर ।

अवयव(वि०)--अत्यक्त, अपसक्त ।

अवयव(न०)--समाप्ति, अन्त,

सीमा, सायकाल, भरना, ठहराव ।

अवयव(पु०)--अन्त, नाश, अवयव,

समाप्ति, निश्चय ।

अवयव(वि०)--रहने वाला ।

अवयव(वि०)--बड़ा हुआ, परिपक्व,

निश्चित, समाप्त, सम्पन्न ।

अवयव(१ पु०)--कैलासा, व्याप्त होना ।

अवयव(६ पु०)--गिराना, फैकना, मुक्त

करना, सृजन करना ।

अवयव(वि०)--रूपाना हुआ, दिया

हुआ, निपाटा हुआ, त्यक्त ।

अवयव(पु०)--चक्षुरोग, दिव्काव ।

अवयव(न०)--धर्मना, म० विद्या

विध के द्वारा शरीर से पसीना

निकाशा जाय जैसे स्तीनजाय।  
 कसद खगाना । [ कपटना ।  
 अवस्कन्द(१ प०)-आक्रमण करना,  
 अवस्कन्द(पु०)-विधिर, सेना का  
 निवासस्थान, आक्रमण ।  
 अवस्कन्दन(न०)-पूर्ववत् ।  
 अवस्कर(पु०)-मलमूत्र, मुसदेस, कूड़ा ।  
 अवस्करनन्दिर(न०)-जाय जकर,  
 पाखाना, मलमूत्र का स्थान ।  
 अवस्तु(वि०)-गून्घ, तुच्छ, हीन ।  
 अवन्त्र(वि०)-वस्त्रहीन ।  
 अवस्था(१ जा०)-रहना ठहरना,  
 जीवन धारण करना, ठहरना ।  
 अवस्था(स्त्री०)-दशा, काल, उम्र,  
 स्थिति, शब्द ।  
 अवस्थान(न०)-निवासस्थान, वास,  
 स्थिति, सुता ।  
 अवस्थान्तर(न०)-उड़खी हुई दशा ।  
 अवस्थापन(न०)-स्थापन करना,  
 निदेशन, व्यवस्थित । वि०-ठहरा  
 हुआ, विद्यमान, उपस्थित ।  
 अवस्थिति(स्त्री०)-स्थिति, निवास,  
 विद्यमानता ।  
 अवस्फोट(पु०)-ज्वाहिर होना ।  
 अवस्थपन्दन(न०)-बूना, टपकना ।  
 अवह(वि०)-न छेड़ने वाला । पु०-  
 हँपर नामक वायु ।  
 अवहति(स्त्री०)-छड़ना, कूटना ।  
 अवहन्(२ प०)-गारना, नष्ट करना  
 छड़ना । [ उड़ाना ।  
 अवहत्(१ प०)-मज्जाक करना, हँसी

अवहस्त(पु०)-कर का पृथनाग, हथेली  
 के पीछे का भाग ।  
 अवहार(पु०)-ग्रहहस्ती, सूँस, घीरा  
 अवहारक(पु०)-पूर्ववत् ।  
 अवहाम(पु०)-नज़ाक, हसी ठट्ठा ।  
 अवहित्या(स्त्री०)-नाज़ारगुप्ति,  
 मनोविकार की शिवामा ।  
 अवहीन(वि०)-रक्त, त्यागा हुआ ।  
 अवह(१ प०)-लेत्राना, अभाग रचना ।  
 अवहेलः-ला-अपमान, तिरस्कार ।  
 अवहेलनम्-ला-पूर्ववत् ।  
 अवहेलित(वि०)-अमादृत, तिरस्कृत ।  
 अवहूर(वि०) टेढ़ा । पु० टेढ़ा नाग ।  
 अवाकर(पु०)-टुकमाल ।  
 अवाक्[त्](वि०)-धुप, मौन, चकित ।  
 अवाक्पुष्पी(स्त्री०)-सैफ सीया ।  
 अवाङ्मुख-मौचे की मुँह किये हुए ।  
 अवाण्ट ति(वि०)-बहिरा, गुंगा ।  
 अवाची(स्त्री०)-दक्षिण दिशा ।  
 अवाचीन(वि०)-अधोमुख, मुँह उट-  
 फाये हुए ।  
 अवाक्य(वि०)-न कहने योग्य ।  
 अवात(वि०)-वायुशून्य, गहा वायु  
 न पहुँचे, निर्वात ।  
 अवादी(वि०)-विषाद न करने वाला,  
 शान्तिप्रिय ।  
 अवान्(२प०)-अन्दर को श्वास लेना ।  
 अवान(पु०)-श्वास । वि०-सूँसा हुआ ।  
 अवान्तर(वि०)-मध्यवर्ती, बीचका ।  
 न०-बीच, मध्य ।  
 अवान्तरदिश(स्त्री०)-बीच की दिशा  
 जैसे-जानेय, वायव्य ।

अवाप्(पु०)-प्राप्त करना, पहुंचना,  
बरदाश्त करना ।

अवाप्त(वि०)-पाया हुआ, उपलब्ध।  
अवाप्ति(स्त्री०)-प्राप्ति, उपलब्धि ।

अवाप्य (वि०)-प्राप्तियोग्य, बिना  
कटा हुआ ।

अवाप्त(वि०)-सीधा, अशुभ, अविरोधी  
अवाय(पु०)-भङ्ग । [ किनारा ।

अवार(अस्त्री०)-नदी के समीप का  
अवारण (वि०)-अभिवाये, खेरोक,  
निश्चित । [ जा सके ।

अवारणीय(वि०)-जो दूर न किया  
अवारपार (पु०)-समुद्र ।

अवारिका(स्त्री०)-धनियां ।  
अवावट(पु०)-दूसरे स्वयं पति से  
उत्पन्न पुत्र ।

अवावन्(पु०)-घोर, घुराने वाला ।  
अवासस्(वि०)-वह्नीन, गंगा ।

अवास्तव(वि०)-जो असली न हो,  
अप्रमाण ।

अवि(पु०)-सूर्य, आक, झेड़, यकरा,  
पर्यंत, वायु, समूह ।

अविक(पु०)-मेघ, न०-हीरा ।  
अविकट(वि०)-जो विकट न हो ।

पु०-मेघदल ।  
अविकल(वि०)-जो विकल न हो,  
ज्यों का त्यों, पूर्ण, शान्त ।

अविकल्प(वि०)-निश्चित, असंदिग्ध ।  
अविकल्प(न०)-निस्सन्देह ।

अविकार(वि०)-विकाररहित ।  
अविक्रम (वि०)-शक्तिरहित । पु०-  
हरपोक ।

अविक्रान्त(वि०)-शक्तिरहित, कम-  
जोर, शतुलनीय ।

अविकृत (वि०)-विकाररहित, न  
बिगड़ा हुआ ।

अविकृति(स्त्री०)-विकार का अभाव।  
अविक्रम(पु०)य कायनहीना, तरोताज़गी

अविकृत(वि०)-अक्षत, पूर्ण, समूचा।  
अविकृष्ट(वि०)-न फेंका हुआ, ध्यान

देने वाला, जो उन्नत न हो ।  
अविकृत(वि०)-न गया हुआ, अक्षतमान,

अविग्रह(वि०)-अविज्ञात, निराकार,  
जो स्पष्टरूप से ज्ञात न हो ।

पु०-निरूप्य समास ।  
अविघात(वि०)-अक्षत, अरुद्ध ।

अविघ्न (वि०)-खेरोक, विघ्नरहित ।  
अविघ्नल(वि०)-अचल, स्थिर, अटल ।

अविचार(वि०)-विचाररहित । पु०-  
विचारका अभाव, अज्ञान, अन्याय

अविचारणीय(वि०)-प्रस्तुत विषय से  
भिन्न ।

अविचारित(वि०)-बिना विचारा हुआ  
अविच्छिन्न(वि०)-अटूट, लगातार ।

अविच्छेद(वि०)-पुष्पवत् । पु०-सम्पू-  
र्णता, लगाव ।

अविघ्न(वि०)-सूर्य, अविकृत, महा ।  
अविघ्नता(स्त्री०)-अज्ञानता, भूलता ।

अविघ्नत (वि०)-अज्ञात, सन्दिग्ध,  
अस्पष्ट ।

अविघ्नोप(वि०)-जो जाना न जा सके।  
पु०-परमात्मा ।

अवितत(वि०)-विरुद्ध, उल्टा ।  
अवितत(वि०)-सह्य, जो झूठा न हो ।

अविनयभाषण(न०)--अवहवह प्रकटा ।  
अविनक्ति(वि०)--निस्सन्देह, तर्कना  
रहित ।

अविन(वि०)--घनहीन, अद्विष्टपात ।  
अविनय(अस्त्री०)--पारा, पारद ।  
अविद(वि०)--अज्ञान, मूर्ख ।  
अविदग्ध(वि०)--न जला हुआ, न  
पका हुआ, मूर्ख ।

अविदित(वि०)--अज्ञात, जो विदित  
न हो, अप्रकट, अप्रसिद्ध । [ स्त्री ।  
अविदुषी(स्त्री०)--मूर्खा स्त्री, बें पढ़ी  
अविदूर(वि०)--जो दूर न हो, नजदीक ।  
अविदूरेण-दूरतः(अ०)--नजदीक से ।  
अविद्वकर्णी(स्त्री०)--पाठा नामक खेल ।  
अविद्य( वि० )--विद्यारहित, मूर्ख,  
नष्ट, नेस्तनाबूद ।

अविद्यमान(वि०)--जो विद्यमान न  
उपस्थित न हो, अनुपस्थित ।  
अविद्या(स्त्री०)--विरुद्ध ज्ञान, मिथ्या  
ज्ञान, मोह । [ मोहयुक्त ।  
अविद्यामय(वि०)--विरुद्ध ज्ञानयुक्त,  
अविद्वत्ता(स्त्री०)--मूर्खता, अज्ञानता ।  
अविद्वान्(वि०)--जो विद्वान् न हो,  
मूर्ख, बें पढ़ा । [ अनुराग, प्रेम ।  
अविद्वेष(पु०)--विद्वेष का अभाव,  
अविषया(वि०)--जो विषया [ रहि ]  
न हो, संभाष्यवर्ती ।

अविधान(न०)--विधान का अभाव ।  
वि०--विधि के विरुद्ध, उल्टा ।  
अविधि( वि० )--विधि के विरुद्ध,  
क्रायदे के खिलाफ, येक्रायदे ।  
पु०--विधि का अभाव ।

अविनय(पु०)--विनय का अभाव,  
उद्वेगवृत्ता ।

अविनयवर(वि०)--नित्य, विरह्यायी,  
जो नष्ट न हो ।

अविनाभाव(पु०)--सम्बन्ध, व्याप्य-  
व्यापक सम्बन्ध ।

अविनाशी [ न् ] (वि०)--नष्ट न होने  
वाला, नित्य, अलस ।

अविनिगम(पु०)--न्यायविरुद्ध नतीजा ।  
अविनीत(वि०)--जो विनीत न हो,  
वह्वत, दुष्ट । [ प्रारिणी स्त्री ।

अविनीता(स्त्री०)--असती वा बुरा-  
अविन्ध्य(पु०)--रायण के एक सम्प्रदाय  
का नाम ।

अविपक्ष(वि०)--कच्चा, न पका हुआ ।  
अविपद्(स्त्री०)--विपत्ति का अभाव ।

अविपन्न(वि०)--स्वस्थ, नीरोग ।  
अविपर्यय(पु०)--विपर्यय वा विकार  
का अभाव ।

अवियुध(वि०)--अज्ञानी, मूर्ख, दुहि-  
गून्ध । पु०--अक्षर, दैत्य ।

अविभक्त(वि०)--न घटा हुआ, जुड़ा  
हुआ, सम्पूर्ण । [ हुआ ।

अविभाग(वि०)--अविभक्त, न घटा  
अविमालय(वि०)--न घटने योग्य ।

अविमुक्त(वि०)--न छुटा हुआ, छुटा  
हुआ । न०--यनारस ।

अविमर्श(वि०)--असन्दिग्ध, निश्चित ।  
अविपुक्त(वि०)--अविभक्त, जुड़ा हुआ ।

अवियोग(वि०)--वियोगशून्य । पु०--  
संयोग, वियोग का अभाव ।

अविरत(वि०)--विरामशून्य, निरन्तर ।



अधिरति(स्त्री०)-नियुक्ति का अभाव,  
लोभता, विषयासक्ति । [ चिह्नः ।

अधिरल(वि०)-गिला हुआ, अधःप-  
अधिराम(वि०)-अधिरान्तःनिरन्तर,  
समाहार । [ अनुकूल ।

अधिरुद्ध(वि०)-जो विरुद्ध न हो,  
अविरोधन(न०)-कृष्ण करने वाली  
औषध । [ अभाव, नेल ।

अधिरोध(पु०)-साधर्म्य, विरोध का  
अधिरोधि(वि०)-जो विरोध करने  
वाला न हो, मित्र ।

अधिरक्षय(वि०)-उद्देश्यहीन ।

अधिरम्ब(वि०)-शीघ्र, तीव्र, जल्दी,  
होने वाला । पु०-तेजी, शीघ्रता ।

अधिरन्ध्रित(वि०)-शीघ्र, तेजी से  
किया हुआ ।

अधिरा(स्त्री०)--भेड । [ अहावान् ।

अधिरास ( वि० )--विलासित,

अधिराद ( वि० )--विवादित,

निर्ययाद । [ कुंवारा ।

अधिराहित ( वि० )--घिना ठपाहा,

अधिरिक (वि०)-तलाश न किया हुआ,

चमराया हुआ, झिलत मिलत ।

अधिरिक(वि०)-विवेकशून्य, विचार-  
हीन । पु०-अज्ञान, विवेक का

अभाव,अन्याय । [ फा न होना

अधिरिकता(स्त्री०)-अज्ञानता, विवेक

अधिरिकी(वि०)-अज्ञानी, विवेकहीन

भुद्ध ।

अधिरिक(वि०)-निर्भय, भयरहित ।

अधिरिक (स्त्री०)-भय का अभाव,

भरोसा, सन्देशहीनता ।

अधिरिकित(वि०) सन्देशरहित, निर्भय

अधिरिकेन(अ०)-निरसन्देश, विलासक

अधिरुद्ध(वि०)-अपवित्र, मलीन अशुद्ध

अधिरुद्धि(स्त्री०)-अपवित्रता ।

अधिरोध ( वि० )-विरोधितारहित,

समाप्त । [ समाहार ।

अधिरान्त(वि०)-न चका हुआ, मक्षत,

अधिरक्षस्त(वि०)-सन्दिग्ध, शकारपद

अधिरक्षसमीय ( वि० )-विश्वास न

करने योग्य ।

अधिरास(वि०)-जिस में विश्वास

न किया जासके । पु०-सन्देश, शक ।

अधिरासी (वि०)-विश्वास न करने

वाला, सन्देशी ।

अधिर(वि०)-विपरहित । पु०-समुद्र,

राजा, आकाश ।

अधिरय(वि०)-अदृश्य, अगोचर, अम-  
-तिपाद्य । पु०-अभाव ।

अधिरा(स्त्री०)-निर्ययायुज, कटुधार

अधिरि(स्त्री०)-नदी, पृथ्वी, स्थान ।

अधिर्या(स्त्री०)-गमन की पृच्छा ।

अधिर (न०)-रक्षा, गमन । पु०-प्रसा-  
-रक ।

अधिरित(वि०)-विस्ताररहित ।

अधिरित(पु०)-विस्तार का अभाव,

अधिरित ( वि० )-छोटा, विस्तार

रहित ।

अधिरित(वि०)-सकीर्ण, छोटा ।

अधिरित (वि०)-जो साफ न हो,

सन्दिग्ध ।

अधिरि(स्त्री०)-रक्तस्वला स्त्री ।

अधिरि(वि०)-सरंगरहित ।

अधीन-अन(वि०)--अधीनरहित, नपुंसक,

कारणहीन । पु०-रोक, इन्द्रियदमन

अधीन(स्त्री०)--किशकिश, अगूर

की खेल ।

अधीन(न०)--अनुमानभेद ।

अधीन(वि०)--हरपोक, सन्तानरहित,

निराश्रय, अनरहित ।

अधीन(स्त्री०) ऐसी स्त्री जिस का

पति हो न पुत्र ।

अधीन(स्त्री०)--नीचिका का अभाव,

स्थिति का न होना, आश्रयरहित

अधीन(वि०)--विना वृद्धि, वृद्धि

का उपया, सुलभ, असुल ।

अधीन(न०)--देखना, घूरना, रक्षण,

निरीक्षण ।

अधीन(वि०)--देखने योग्य ।

अधीन(स्त्री०)--देखना, ध्यान, चिन्ता,

साहिदा ।

अधीन(वि०)--देखने वाला ।

अधीन(स्त्री०)--ज्ञान का अभाव ।

अधीन(वि०)--अधीन, गुप्त । पु०-बलदा ।

अधीन(स्त्री०)--अविवाहिता, जिसका

विवाह न हो ऐसी स्त्री ।

अधीन(वि०)--अधीन, अनयसर । पु०-

ज्ञान का लिपाना ।

अधीन(स्त्री०)--लुप्तनय, चर्वित पान ।

अधीन(वि०)--कर्मरहित, यज्ञायदे,

शास्त्र के प्रतिकूल ।

अधीन(वि०)--अधीन, पु०-जल,

सेवन, नम करना ।

अधीन(वि०)--रक्षण भोजन ।

अधीन(वि०)--अधीन, अधीन, अनु-

त्पन्न, अज्ञात । पु०-विष्णु, अवि,

कानदेय । प्रकृति, सूर्य । न०-अधीन,

मुपुत्पत्यवस्था, आत्मा । प्रकृति ।

अधीनक्रिया(स्त्री०)--बीजगणित की

एक क्रिया ।

अधीनपद(वि०)--अधीन, अधीन ।

अधीनसूत्रप्रसव(पु०)--संसार, जगत् ।

अधीनरोग(पु०)--ठपाकाल की छाछी,

वि०-हलडा छाल ।

अधीनलिङ्ग(वि०) ऐसा रोग जिसके

लक्षण न पहिचाने जा सकें । पु०-

रण्यासी ।

अधीन(वि०)--शान्त, स्थिर ।

अधीन(वि०)--सम्पूर्ण, जिसका कोई

अंग विच्छेद न हुआ हो ।

अधीन(वि०)--व्यपारहित, दुःख न

देने वाला । पु०-सर्प ।

अधीन(स्त्री०)--हरीतकी, सैठ ।

अधीन(पु०)--सूर्य, समुद्र ।

अधीन(स्त्री०) रात्रि, नभ्यरात्रि ।

अधीन(वि०)--न छिदा हुआ ।

अधीन(स्त्री०)--लापरवाही ।

अधीन(पु०)--अपार्थक्य, अज्ञा,

नित्यता, स्थिरता ।

अधीन(वि०)--जो किसी भी

प्रतिकूल कारण से न हटाया जा

सके, न सकने वाला, अविचल

में प्रवृत्त ।

अधीन(वि०)--जो विकार को प्राप्त न

हो, यदि एकमात्र होने वाला,

नित्य, आद्यन्तरहित, विकार-

शून्य । पु०-विष्णु, शिव । न०-परब्रह्म, ठपाकरण में वह शब्द जिन के रूप में कभी विकार नहीं होता ।

अठययीभाव (पु०) ठपाकरण में एक प्रसिद्ध समास, जैसे-‘उपकुम्भम्’ यद्वा अनठयय भी कुम्भादि पद अठयय बन गया है । अपरिच-  
‘तनीय अवस्था । [ सार्थक ।

अठययै (वि०)-जो ०यय नहीं, सकल, अठयलीक (वि०)-जो झूठा न हो, सच्चा अठययधान (वि०)-समीप, नजदीक ।

न० निकटता, उकावट कान होना  
अठययसायी (वि०) उद्यमहीन, अलसी  
अठययस्व (वि०)-वेकायदे, अनयादे,  
अस्थिर ।

अठययस्या (स्त्री०)-नियम का अभाव,  
गहबह, मयादे का न होना,  
अस्थिरता ।

अठययस्थित (वि०)-चल्लु, अठययस्व ।  
अठययद्वय (वि०)-जो कान में न लाया  
जा सके, पतित, जातिच्युत ।

अठययसन (वि०)-ठयसनरहित, शुद्धाचारी  
अठययस्त (वि०)-शान्त, सादा ।

अठयाकृत (वि०) अपकट, जो विकार  
को प्राप्त न हो । [ अरूप ।

अठयाहपात (वि०)-ठपाहपातरहित,  
अठयाघात (वि०) ठपाघातशून्य, ये-  
रोक, अट्ट ।

अठयाण (वि०)-वपटरहित ।

अठयावन्न (वि०)-जो नारा न हो,  
लीयिन ।

अठयापारै (वि०) ठयापारशून्य । पु०-  
उद्यम का अभाव ।

अठयापी (वि०)-जो ठयापक न हो,  
जो सब जगह न पाया जावे ।

अठयापिनी (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

अठयासि (स्त्री०)-ठयासिका अभाव ।

अठयायाम (पु०)-ठयायान का अभाव

अठयाहत (वि०)-अप्रतिरुद्ध, घेरोक ।

अठयुत्पन्न (वि०)-नायाकिक, मूर्ख ।

अत्राण (वि०)-अक्षत, तन्दुरुस्त । न०-

नैत्र का रोगविशेष ।

अव्रत (वि०) व्रतरहित, नियमशून्य ।

अश (१, ५ भा०) ठयास होना, प्रवेश  
करना, पहुचना, प्राप्त करना ।

अशकुन (न०)-बुरा शकुन बुरा लक्षण ।

अशक्त (वि०)-असमर्थ, कमजोर ।

अशक्ति (स्त्री०)-निर्बलता, कमजोरी ।

अशक्य (वि०)-असाध्य, न होने योग्य ।

अशशय-कित (वि०)-निहर, निर्भय,  
रक्षित, अशत्रु । वि०-अशत्रुहित ।

पु०-चन्द्रमा ।

अशन (न०) ठयाप्ति, भोजन ।

अशना या (स्त्री०)-भोजन, खाने की  
इच्छा ।

अग्रनि (अवली०)-इन्द्र का यज्ञ, विजली ।

अशनीय (वि०)-खाने योग्य ।

अशरण (वि०)-अशरण, निराश्रय, ये  
रोजगार ।

अशरीर (वि०)-शरीररहित । पु०-

ब्रह्म, कामदेव । [ ब्रह्म, देवता ।

अशरीरी (वि०)-अपायि, स्वर्गीय,

अशर्म(वि०)-दुःखो, हंशित । न०-कष्ट,  
दुःख । [ डोल ।

अशान्न (वि०)-चन्चल, अस्थिर, डायां-  
अशान्नोत्त(वि०)-धृष्ट, ढोड ।

अशालीनता(स्त्री०)-धृष्टता, दिडार ।

अशासन (न०)-अराजकता, गड़बड़ ।

अशान्तिय(वि०)-जो काय में न आ सके ।

अशास्त्रीय(वि०)-शास्त्रविरुद्ध, अनुचित ।

अशिन (वि०)-खाया हुआ, भक्षित ।

अशिन पु०)-चोर ।

अशिर(पु०)-अग्नि, सूर्य, वायु । न०-हृत्तरा

अशिर(वि०)-असंगलकर, भावहीन । न०-  
असंगल, अशुभ ।

अशिष्ट(वि०)-गंवार, अकुलीन, अयोग्य ।

अशिष्टता (स्त्री०)-धृष्टता, असाधुता ।

अशोतकर(पु०)-सूर्य ।

अशोति(स्त्री०)-अस्त्री ।

अशील(वि०)-गंवार, अमद ।

अशुचि(वि०)-मला, गन्दा, अपवित्र । स्त्री०  
अपवित्रता, अशोच ।

अशुद्ध(वि०)-अपवित्र, असंस्पृष्ट, गलत ।

अशुद्धता(स्त्री०)-अपवित्रता, गलती ।

अशुद्धि(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

अशुभा(वि०)-अहित, अगङ्गलकर । न०-  
पाप, दुःख, असंगल ।

अशुभ्य(वि०)-जो खारी न हो, न्यापित ।

अशेष(वि०)-शेषरहित, पूरा, समाप्त ।

अशेषता(स्त्री०)-सम्पूरणता, समाप्ति ।

अशोक(वि०)-शोकरहित । पु०-एक प्रकार  
का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ आम के सी  
होती हैं । [ पालिमा ।

अशोकप्राणिना(स्त्री०)-फाल्गुननाम की  
शोकवादिना । स्त्री०)-राजकी वह  
मिड बादिना जिसमें उसने सांता  
बैठ कर रखा था ।

अशोकपट्टी(स्त्री०)-चैत्रशुक्ला पट्टी ।

अशोका(स्त्री०)-कुटकी, पारा ।

अशोकाष्टमी(स्त्री०)-चैत्रशुक्लाष्टमी

अशोच(पु०)-विन्ता का अज्ञाव,  
शान्ति । [ विहित मलिनता ।

अशोच(न०)-अशुद्ध, गलत, शास्त्र-

अशनया(स्त्री०)-भूख ।

अशनीतपियता(स्त्री०)-दावत, नोजन  
का युलावा ।

अशन(पु०)-आहार, भेष, पत्थर ।

अशनक(पु०)-द्रावणकोर प्रदेश, एक  
क्षपि का नाम ।

अशनगर्भ(अस्त्री०)-पन्ना, मरकत ।

अशनज(न०)-लोहा, थिलाकीत ।

अशनन्त(वि०)-अशुभ । न०-नरक, खेत,  
चूल्हा ।

अशनन्तक (अस्त्री०)-चूल्हा, दीवट,  
मूँचकी तरह की एक पास, दहल ।

अश्मर(वि०)-पथरीला । [ विशेष ।

अश्मरी(स्त्री०)-पथरी नामक मृत्ररोग

अश्मसार(अस्त्री०)-लोहा ।

अश्र (न०)-आसू, खून ।

अश्रु(वि०)-अहारहित । [ श्वास ।

अश्रुता(स्त्री०)-अश्रुका अभाव, अवि-

अश्रुतेय(वि०)-अश्रु के अयोग्य ।

अश्रुत(पु०)-अश्रु का न करना ।

अश्रान्त(वि०)-न थका हुआ, स्वस्थ,  
निरन्तर ।

अश्राव्य(वि०)-न सुनने योग्य ।

अश्रि-श्री(स्त्री०)-घर का कोना,  
हथियार की तीक्ष्ण ।

अश्रीमान्(पु०)-इतना, कमबख्त ।  
 अश्रु (न०)-आँसु का जल, आँसू ।  
 अश्रुत(वि०)-न सुना हुआ, वेदविरुद्ध ।  
 अश्रुतपूर्व(वि०)-जो पहिले न सुना  
 गया हो, विलक्षण ।  
 अश्रुति(स्त्री०)-न सुनना, विस्मृति ।  
 अश्रुतिधर(वि०)-ध्यान न खोचने  
 वाला, वेदानभिक्त ।  
 अश्रुपात(पु०)-रोदन, रोना ।  
 अश्रुपूर्ण(वि०)-आँसुओं से भरा हुआ ।  
 अश्रेष्ठ(वि०) जो सर्वोत्तम न हो,  
 कमीना ।  
 अश्रीत(वि०)-जो वेदविहित न हो ।  
 अश्लाघा(स्त्री०)-आत्मप्रशंसा का  
 अभाव, लज्जाशीलता । [नीच ।  
 अश्लाघ्य(वि०)-प्रशंसा के अयोग्य,  
 अविलष्ट(वि०)-असङ्गत, असम्बद्ध ।  
 अश्लील(वि०)-भद्दा, गंदार, लज्जाकर ।  
 अश्लीलता(स्त्री०)-गंदापन, भद्दापन ।  
 अश्लेषा(स्त्री०)-नयाँ नलत्र ।  
 अश्लेषात(पु०)-केतुग्रह ।  
 अश्व(पु०)-घोड़ा, सुरंग ।  
 अश्वगति(स्त्री०)-उन्मोह ।  
 अश्वगन्धा(स्त्री०)-अश्वगन्ध औषध-  
 विशेष ।  
 अश्वगोष्ठ(न०)-अश्वगन्ध ।  
 अश्वग्रीव(पु०)-हयग्रीव नामक एक  
 दैत्यविशेष । [ स्थान ।  
 अश्वपाश(पु०)-अश्वों के चरने का  
 पाश ।  
 अश्वदन्त(न०)-घोड़ों का मूँह, एक  
 प्रकार का पहिया, चलाया हुआ घर ।

अश्वचिकित्सक(पु०)-अश्ववैद्य, घोड़ों  
 का इलाज करने वाला ।  
 अश्वतर(पु०)-एक प्रकार का सर्प,  
 खिचर ।  
 अश्वदंष्ट्रा(स्त्री०)-नीखरू ।  
 अश्वत्थ(पु०)-पीपल ।  
 अश्वत्थामा(पु०)-द्रोणाचार्य का पुत्र,  
 एक हाथी का नाम ।  
 अश्वस्त=अश्वन्त ।  
 अश्वपति(पु०)-घुड़मवार, रिसालदार,  
 कैरुपदेश के राजकुमारों की  
 सपाधि ।  
 अश्वपाल(पु०)-साईंस ।  
 अश्वपाल(पु०)-कांस का पीढ़ा ।  
 अश्वमार(पु०)-कनेर का पेड़ ।  
 अश्वयाल(पु०)-एक प्रकार का साँप ।  
 अश्वमुख(पु०)-किन्नर, घोड़े के मुँह  
 वाला ।  
 अश्वमेध(पु०)-एक यज्ञ विशेष जिसमें  
 घोड़े के सस्तक पर जपपत्र बांध  
 कर उसे भूमण्डल में घूमने के  
 लिये छोड़ दिया जाता था और  
 उस की रता के लिये सेना भेजी  
 जाती थी । सेना के विजयी हो  
 कर लौट आने पर घोड़े का  
 स्वामी राजा बड़ा यज्ञ करता  
 था, जो अश्वमेध का मूँहक  
 होता था । [भाग ।  
 अश्वत्थ(पु०)-एक नीयकार त्रिपु का  
 अश्वदन्त(पु०)-घुड़मवार, एक देश  
 का प्राचीन नाम ।  
 अश्वमेध-वार (पु०)-घुड़मवार ।

अष्टशाला(स्त्री०)-पुहनाल, अस्तबल ।  
 अष्टसूक्त(पु०)-वेद का एक सूक्त,  
 जिस में अष्टवधिया का वर्णन है ।  
 अष्टस्तन(वि०)-केवल आज का ।  
 पु०-लिमके पास केवल एक दिन  
 का भोजन हो ।  
 अष्टस्तनिक ( वि० )-अविष्यत् की  
 चिन्ता न करने वाला ।  
 अष्टवारि(पु०)-भैंसा, नहिय ।  
 अष्टवारोहण(न०)-चोड़े की सवारी ।  
 अष्टवारोही(वि०)-चोड़े का सवार ।  
 अष्टियनी(स्त्री०)-प्रथम नक्षत्र, चोड़ी ।  
 अष्टिवनीकुमार(पु०)-सूर्य की स्त्री  
 अष्टियनी का पुत्र, ये दो हैं इस-  
 लिये यह शब्द द्विवचन में प्रयुक्त  
 होता है ।  
 अष्टी(वि०)-चोड़े रखने वाला ।  
 अष्टवीम(वि०)-अष्टसम्बन्धी ।  
 अष्ट(१ व०)-घमकना, जाना, हरकत  
 करना ।  
 अष्टाव(पु०)-एक मास का नाम जो  
 वरसात के आरम्भ में होता है ।  
 अष्ट(वि०)-आठ ।  
 अष्टक(वि०)-आठ भाग का । पु०-  
 विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम,  
 आठ वस्तुओं का संग्रह, अष्टा-  
 ध्यायी का छात्रा ।  
 अष्टका(स्त्री०)-अष्टमी, अष्टमी के  
 दिन का कृत्य :  
 अष्टकुली(वि०)-साँपों के आठ कुलों  
 में से किसी में उत्पन्न ।

अष्टकोण(पु०)-वह क्षेत्र जिस में आठ  
 कोण हों, एक चन्द्रविशेष ।  
 अष्टगन्ध(पु०)-आठ सुगन्धित द्रव्यों  
 का समाहार ।  
 अष्टगुण(वि०)-अठगुणा ।  
 अष्टदल(न०)-आठ दल का कमल ।  
 अष्टदूय(न०)-आठ दूय जो दूधन  
 में काम आते हैं ।  
 अष्टधातु(पु०)-आठ धातु जैसे मैना,  
 चाँदी, ताँबा, रंग, जस्त, शीशर,  
 लोहा और चार ।  
 अष्टपदी(स्त्री०)-एक प्रकारका मीन  
 जिस में आठ पद होते हैं ।  
 अष्टपाद(पु०)-मकड़ी, गरभ, एक  
 कीड़ा, कैलास पर्वत ।  
 अष्टसुजा(स्त्री०)-दुर्गा ।  
 अष्टम(वि०)-आठवां । [परिमाण ।  
 अष्टमान(न०)-आठ मुट्ठी का एक  
 अष्टमिका(स्त्री०)-चारतीले का एक  
 परिमाण ।  
 अष्टनी(स्त्री०)-शुक्ल और कृष्णपक्ष  
 की आठवीं तिथि, आठें ।  
 अष्टमूर्ति(पु०)-आठ मूर्ति वाला  
 अर्थात् शिव ।  
 अष्टवर्ग(पु०)-जीवक, अपमक आदि-  
 आठ औषधियों का समाहार ।  
 अष्टांग(न०)-यम, नियम, आसन,  
 प्राणायाम, प्रत्यहार, धारण,  
 ध्यान और समाधि नामक योग  
 की आठ क्रियाएँ ।  
 अष्टांगी(वि०)-आठ अंगवाला ।

असन्त(वि०)-दुरा, खल, दुष्ट ।  
असन्तति(स्त्री०)-सन्तति का अभाव ।

वि०-मन्तानहीन ।

अमन्तान(पु०)-पूर्ववत् ।

अमन्तुष्ट(वि०)-अप्रसन्न, अवृत्त ।

अमन्तुष्टि(स्त्री०)-मन्तोष का अभाव,  
अप्रसन्नता ।

अमन्तोषी(वि०)-मन्तोषरहित, अवृत्त  
अमन्दिष्ठ(वि०)-निश्चित, यकीनी,  
साफ ।

अमन्धि(वि०)-न जुड़ा हुआ, स्वतन्त्र ।  
पु०-मन्धि का अभाव ।

अमन्तदु(वि०)-जो तैयार न हो, अह-  
कारी, चमएही ।

अमन्तिकर्ष(पु०)-दूरी, समीप न होना  
अमन्तिकृष्ट(वि०)-दूर, अलक्षित ।

अमन्निधान(न०)-दूरी का अभाव,  
भरोसा ।

अमन्निधि(पु०)-पूर्ववत् ।

अमन्निवृत्ति(स्त्री०)-मनागमन ।

अमपिण्ड(वि०)-असंगोत्रीय ।

असम्प(वि०)-समा में बैठने के अयो-  
ग्य, उजड़, गवार ।

असम (वि०)-समतारहित, विषम,  
नीच, अनुपम । पु०-बुद्ध ।

असमय(वि०)-अधूरा, असम्पूर्ण ।

असमञ्जस(वि०)-अप्रत्यक्ष, अनुचित ।

न०-दुविधा, अहचन, कठिनाई ।

असमन (वि०)-विविध मन वाला,

। अथठस्वभाव, विषम ।

असमनेत्र(पु०)-त्रिनेत्र, शिव ।

असमय(पु०)-अनुपयुक्तता, अनुचित-  
काल । [ ऋधिल ।

असमय(वि०)-अयोग्य, अशक्त, ना-

असमयाण(पु०)-पञ्चाण, कामदेव ।

असमवायिकारण(न०)-न्याय के अनु-  
सार वह कारण जो दृढ न हो,  
गुण वा कर्म हो ।

असमस्त (वि०)-असम्पूर्ण, अधूरा,  
अलग, अठयस्त ।

असमाति(वि०)-अनुपम, अद्वितीय ।

असमान(वि०)-अनुपम, अनुत्प ।

असमाप्त (वि०)-अधूरा, असम्पूर्ण ।

असमाहार(वि०)-न जुड़ा हुआ ।  
पु०-अप्राप्ति, अनमेल । [ कर ।

असमीक्ष्य(अ०)-न देखकर, न विचार  
असम्पत्ति (स्त्री०)-नाकामयाची,  
सम्पत्ति का अभाव ।

असम्पूर्णे(वि०)-असमाप्त, अपूर्ण, अधूरा  
असम्प्रज्ञात (वि०)-अच्छे प्रकार न  
जाना हुआ, एक प्रकारकी समाधि ।

असम्तदु(वि०)-अलग, अनेक, अदृष्ट  
वगैरह । [ सम्बन्ध का अभाव ।

असम्बन्ध(वि०)-सम्बन्धरहित । पु०-

असम्बाध(वि०)-जो तग न हो, चौड़ा,  
कुनशून्य, खुला हुआ ।

असम्भव (वि०)-जो सम्भव न हो,  
अनहोना, नामुमकिन ।

असम्भार(वि०)-जो समाला न ज्ञानके,  
अपार । [ न होना ।

असम्भावना(स्त्री०)-नामुमकिनियत,

असम्भावनीय(वि०)-नामुमकिन ।

असम्भावित(वि०)-जिस की सम्भावना न रही हो, अनुमानविरुद्ध

असम्भाव्य(वि०)-पूर्ववत् ।

असम्भाष्य(वि०)-न कहे जाने योग्य ।

असम्भूति(स्त्री०)-अभाव, पुनर्जन्म का अभाव, प्रकृति ।

असम्भृत ( वि० )-कुदरती, अकृत्रिम, अच्छी तरह न पला हुआ ।

असम्भ्रम ( वि० )-शान्तचित्त । पु०-शान्ति, भ्रम का अभाव ।

असम्भृत(वि०)-जो राजी न हो, न माना हुआ । [ पसन्दीदगी ।

असम्भ्रति(स्त्री०)-विरुद्ध मति, ना-असम्मान(पु०)-मैद्वज्जती, अपमान ।

असम्मित(वि०)-असीम, बहुत ।

असम्मुख( वि० )-निष्ठ की सन्देश नहीं होता । [ चिन्ता ।

असम्मोक्ष( पु० )-स्मरणता, शान्त-अपम(म०)-लोहा, हृषिकार, एकमंत्र ।

असम्बन्ध(वि०)-दूसरे वस्तु का, दूसरी जाति का ।

असह(वि०)-न सहने योग्य, असह्य ।

असहन(वि०)-असहिष्णु, जो सहन न करे, द्वेषी । पु०-शत्रु । म०-वेगवरी, असहिष्णुता ।

असहनशील(वि०)-असहिष्णु ।

असहनशीलता(स्त्री०)-असहन करने का स्वभाव । [ योग्य ।

असहनीय(वि०)-असह्य, न सहने

असहाय(वि०)-सहायकरहित, छाया

असहिता(वि०)-अनुरहित, बेगेल ।

असहिष्य(वि०)-न सहने योग्य ।

असहिष्णु(वि०)-विद्वेषिहा, न सहने वाला ।

असहिष्णुता(स्त्री०)-न सहने की आदत, असहनशीलता ।

असह्य(वि०)-न सहन करने योग्य ।

असाक्षात्(अ०)-आँखों से दूर, जो सामने न हो ।

असाक्षात्कार(पु०)-अभ्यास, न देखना ।

असालिक( वि० )-जिस का कोई गवाह न हो ।

असाक्षी(पु०)-बहुपुत्रपुत्रिसकी वाली भगान्य हो, वाली देने का अनधिकारी ।

असाक्ष्य(म०)-माक्षी का अभाव ।

असाधन(वि०)-साधनरहित । म०-पूरा न करना । [ ध्य ।

असाधनीय(वि०)-नासुमकिन, असाधारण(वि०)-असामान्य, विलक्षण, लोकातीत ।

असाधु(वि०)-दुष्ट, घुरा, अविनीत ।

असाधुता(स्त्री०)-दुर्जनता, अशुचित

असाध्य(वि०)-साधन के अपेक्ष, असम्भव । [ समय का ।

असाधयिक(वि०)-वेधक का, बिना असामर्थ्य(म०)-शक्ति का अभाव, नियंत्रता । [ मामूली ।

असामर्थ्य(वि०)-असाधारण, गैर-असामर्थ्य(वि०)-अयोग्य, अनुचित ।

असाध्य(म०)-कफ, विभिन्नता ।

असार( वि० )-भाररहित, निःसार, शुद्ध । अस्त्री०-निर्धेक भाग, अगमचन्द्रन ।



असारता(स्त्री०)--निःसारता, तुच्छता  
असावधान(वि०)--जो सचेत न हो ।

असावधानता(स्त्री०)--चेपरवाही ।

असाहस(न०)--साधुता, नम्रता ।

असि(पु०)--तलवार, खड्ग, असीनदी,  
श्वाम ।

असिक(न०)--होट और ठुड्डी के बीच  
का भाग, देशविशेष ।

असिक्ती(स्त्री०)--अन्तःपुर की युवती,  
दासी, शिनाम नदी ।

असित(वि०)--जो सफेद न हो, काला,  
दुष्ट, कुटिल । पु०--एक ऋषि,  
पिङ्गला नाम की शाही ।

असितांग(वि०)--काळे रङ्ग का । पु०--  
एक मुनि ।

असिता(स्त्री०)--यमुना नदी ।

असिह(वि०)--जो सिह न हो, अपूर्ण,  
अधूरा, अप्रमाणित ।

असिहि(स्त्री०)--अमासि, कक्षापन,  
अपूर्णता ।

असिधावक(पु०)--तलवार आदि के  
साफ करने वाला सिकलीगर ।

असिधेनु-धेनुका (स्त्री०)--छुरी ।

असिपत्र(वि०)--तलवार की शकल के  
से पत्तों वाला । पु०--ईश । न०--  
म्यान ।

असिपुच्छ(पु०)--भगर, नाका ।

असिपुत्रिका(स्त्री०)--छुरी । [वाला ।

असिहेति(पु०)--तलवार धारण करने  
असी(स्त्री०)--यनारस के पास एक नदी ।

असीम (वि०)--सीमारहित, बेहद ।

असु(पु०)--श्वाम, जीवन, देहमे विलग  
आत्मा, जल, गर्मा । न०--विचार,  
मन, दुःख । [अभाव ।

असुख (वि०)--दुःखी । न०--सुख का

असुन्दर(वि०)--जो सुन्दर न हो, भद्दा ।

असुप्त(वि०)--न सोया हुआ ।

असुमान्(वि०)--जीवधारी, जीवित ।

असुा(वि०)--जीवधारी, अमानुषी ।  
पु०--राक्षस, सूर्य, हाथी, राहु,  
मेघ ।

असुरगुह(पु०)--दैत्यगुह, गुफाचार्य ।

असुरसूदन(पु०)--विरणु ।

असुरा(स्त्री०)--राक्षि, वैश्य । [वालि ।

असुराधिप (पु०)--भस्माद का पीत्र

असुरारि(पु०)--देवता ।

असुलभ(वि०)--जो सुलभ न हो ।

असुसू(पु०)--घाण, तीर ।

असुस्थ(वि०)--अस्वस्थ, रोगी ।

असूत(वि०)--वन्ध्या, बंजर ।

असूत(वि०)--वन्ध्या, बंजर ।

असूति(स्त्री०)--अनुत्पत्ति, रोक ।

असूतण(न०)--अपमान, अनादर ।

असूयक(वि०)--हसद करने वाला ।

असूयन(न०)--हसद, द्वेष, ईर्ष्या ।

अमूया(स्त्री०)--द्वेष, ईर्ष्या, जलन ।

अमूयु(पु०)--द्वेषी, अप्रसन्न, ईर्ष्या ।

अमूय्यमया(स्त्री०)पदों में गहने वाली स्त्री

अमूक [ ज ] (वि०)--नग्न, गिर ।

अमृगधरा(स्त्री०)--त्वचा, चमड़ा ।

अमृगवहा(स्त्री०)--रक्तवाहिनी नदी ।

अमृष्ट(वि०)--अनुपन्न, अविभक्त, निय ।

अमृत्वन(वि०)--प्रियदर्शन, लुप्ताने वाला ।

असेवन(न०)-आज्ञा न मानना, ध्यान न देना  
 असेवित(वि०)-न सेवन किया हुआ, त्यक्त  
 असौम्य(वि०)-अप्रिय, मर्दा ।  
 असौष्टव(वि०)-पूर्ववत् ।  
 असंयत(वि०)-अरुद्ध न बंधा हुआ ।  
 असंयम(पु०)-इन्द्रियग्रसन का भाव ।  
 असंयुक्त(वि०) विलग्न, न जुड़ा हुआ ।  
 असंयुत(वि०)-पूर्ववत् ।  
 असंविदान(वि०)-मूर्ख, बेचकूक ।  
 असंवृत(वि०)-खुला हुआ, न ढका हुआ  
 असंशय(वि०)-संशय रहित, असाक्षि ।  
 असंशुति(वि०)-ग्रह में तप हो जाना ।  
 असंश्रुत(वि०)-अपवित्र, अशुद्ध ।  
 असंस्थान(न०)-गद्गद, मेलका अभाव ।  
 असंहत(वि०)-असंयुक्त, विलग्न ।  
 अशकन(वि०)-दायनी, न ढका हुआ  
 अश्लक्षित(वि०)-अकल्पित, स्थिर,  
 अक्षत ।  
 अस्त(वि०)-त्यक्त, समाप्त । पु०-  
 अस्ताचल भागक पर्वत, कहते  
 हैं त्रिष के पीछे न्यून छिपता है,  
 नाश, छिपना । न०-परावि०-आस-  
 स्थान, मृत्यु ।  
 अस्तक(पु०)-मुक्ति, नील ।  
 अस्तकप(वि०)-अस्थिर, चञ्चल ।  
 अस्तमन(न०)-भ्रमस्त । [ यह ।  
 अस्तमस्न(वि०)-विचारा हुआ, गह  
 अस्ताचल(पु०)-पश्चिमीय पर्वत ।  
 अस्तिग(वि०)-एत अग्नि का नाम ।  
 अस्त्य(न०)-न पुराणा ।  
 अस्त्रपात(न०)-भिड्कार, दोषारोपण

अस्त्र(न०)-हथियार, फसाग, तीर ।  
 अस्त्रकार(पु०)-हथियार बनाने वाला  
 अस्त्रचिकित्सा(स्त्री०)--चोटकाहकी  
 विद्या, सर्जरी ।  
 अस्त्रविद्या(स्त्री०)-यनुर्वेद । अस्त्र-  
 शास्त्र । [ पार ।  
 अस्त्रशस्त्र(न०)-सब प्रकार के हथि-  
 अस्त्रशिला(स्त्री०)-कौजी कृषामद ।  
 अस्त्रसायक(पु०)-नारायण, छौहमाण ।  
 अस्त्रहीन(वि०)-बेहथियार ।  
 अस्त्री(स्त्री०)-जो स्त्री न हो, उपा-  
 रण में जो पुस्लिङ्ग नपुंसकलिङ्ग  
 का वाचक हो ।  
 अस्त्रीक(वि०)-भाष्यारहित ।  
 अस्थान(वि०)-बहुत गहरा । न०-  
 घुरी अगह ।  
 अस्थायी(वि०)-थोड़े दिन रहने  
 वाला, नाशवान्, चन्दरोजा ।  
 अस्थावर(वि०)-अस्थिर, चञ्चल,  
 लङ्गन का विरोधी ।  
 अस्थि(न०)-हड्डी ।  
 अस्थिप(पु०)-चर्मी, चमू ।  
 अस्थिप(वि०)-चञ्चल, अस्थिर ।  
 अस्थिति(स्त्री०)-स्थिरता का अभाव  
 अस्थितोद(पु०)-हड्डियों में दर्द ।  
 अस्थिपक्षर(पु०)-हड्डियों का टोचा ।  
 अस्थिभक्ष-मुकु(पु०)-कुपकुर, कुत्ता ।  
 अस्थिभङ्ग(पु०)-हड्डियों का टूट जाना  
 अस्थियोग(पु०)-टूटे अङ्ग का जोड़ना  
 अस्थिर(वि०)-जो गज्ज्वल न हो,  
 चञ्चल, अनिश्चित । [ माय ।  
 अस्थिगोप(वि०)-ग्रहण हुबला, दही-

अस्मिन्मध्य(पु०)--मुर्दे के अलाने के  
 वाद हृष्टिये का इच्छा करना ।  
 अस्थूल(वि०)--सूक्ष्म, छोटा ।  
 अस्मिन्ध (वि०)--जो चिकना न हो,  
 सूखा, रूखा । [ अभाव ।  
 अस्पृशं(वि०)--चिलग । पु०--लगाव का  
 अस्पृश्य(वि०)--जो छूने योग्य न हो,  
 नीच जाति का ।  
 अस्पृष्ट(वि०)--न छुआ हुआ ।  
 अस्पृष्ट(वि०)--जो साध न हो, स-  
 न्दिग्ध, अमर्यत ।  
 अस्फुट(वि०)--जो स्पष्ट न हो, गूढ़ ।  
 अस्मिता(स्त्री०)--अहङ्कार, एक प्रकार  
 का बलेश ।  
 अस्मद्(चर्व०)--यत्ता का बोधक जिस  
 से 'अहम्'[मैं] इत्यादि बनते हैं ।  
 अस्मदीय(वि०)--हमारा, अपना ।  
 अस्मरण(न०)--भूल, विस्मृति ।  
 अस्तं(वि०)--जो याद न हो, आस्त्र-  
 न ।  
 अस्ति(अ०)--मैं का बोधक ।  
 अस्मृति(स्त्री०)--विस्मृति, भूल ।  
 अस्त(पु०)--आँसू, कीना, रुधिर, जल ।  
 अलप(पु०)--राजस, मूल नक्षत्र । वि०--  
 रक्त पीने वाला ।  
 अलप(स्त्री०)--जोक, हाथन ।  
 अलफला(स्त्री०)--सल्लाह का पेड़ ।  
 अलजक(पु०)--श्वेत तुलसी ।  
 अल (पु०)--कीना, एक कत्तेड़ का  
 वाचक ।  
 अल (वि०)--निर्धन ।  
 अलीय(वि०)--जो अपना न हो ।

अस्वच्छन्द(वि०)--परतन्त्र ।  
 अस्वतन्त्र(वि०)--पूर्ववत् ।  
 अस्वप्न(पु०)--देवता, अनिद्रा ।  
 अस्वस्थ(वि०)--रोगी, अगमना ।  
 अस्वाभाविक(वि०)--घनाघटी, कृत्रिम  
 अस्वास्थ्य(न०)--रोग, बीमारी ।  
 अस्वीकृत(वि०)--नामजूर, अस्वीकार  
 किया हुआ ।  
 अह (१ भा०, १० उ०)--मिलकर गाना,  
 तैयार करना, बयान करना,  
 पुकारना ।  
 अह (अ०)--पूजा, जुदाई, निश्चय  
 आदि में प्रयुक्त होता है ।  
 अहत(वि०)--अक्षत, न धोया हुआ ।  
 अह[नृ] (न०)--केवल दिन, आकाश  
 विष्णु, दिनरात ।  
 अह(चर्व०)--मैं ।  
 अहङ्कार(पु०)--अभिमान, घमण्ड ।  
 अहङ्कारी (वि०)--घमण्डी, अहङ्कार  
 करने वाला । [ वाली ।  
 अहङ्कारिणी (स्त्री०)--घमण्ड करने  
 अहङ्कृति(स्त्री०)--अहकार ।  
 अहवाद(पु०)--अपनी शेरी मारना,  
 डींग मारना ।  
 अहंभाव(पु०)--गल्लू करना ।  
 अहनति(स्त्री०)--अहकार, अविद्या ।  
 अहनहमिका (स्त्री०)--लागडाट, मैं  
 पहिले मैं पहिले इस अर्थ में ।  
 अहरणीय-अहायं(वि०)--दूर करने के  
 अयोग्य ।  
 अहर्निशम्(अ०)--रातदिन, सदा ।

अहस्या(स्त्री०)-ऐसी भूमि जो जोती  
न जायके, योतम ऋषि की पहनी  
अहसिक(पु०)-मृतक, मुदोशरीर ।  
अहस्त(वि०)-बिना हाथ का ।  
अहव(अ०)-आश्चर्य, खेद, क्लेश  
और शोक का बोधक ।  
अहि(वि०)-घातक, ठपास । पु०-सर्प,  
नृप, राहु, मुसाफिर, चोखेबाज़,  
जल, पृथिवी, मेघ, शीशा ।  
अहिक(पु०)-गुप्त तारा, अन्धा सर्प ।  
अहिका(स्त्री०)-वेगल का वृक्ष ।  
अहिकान्त(पु०)-बायु, हवा ।  
अहिलेख(पु०)-दक्षिणी प्राकृत देश ।  
अहिच्छत्र(पु०)-सूर्यवत् ।  
अहिमित(पु०)-इन्द्र, कृष्ण ।  
अहिकिष्ठा(स्त्री०)-नामकिष्ठा लता ।  
अहित(वि०)-न दयाला हुआ, हानि-  
कारक । न०-हानि, भोजन ।  
अहितकारी(वि०)-सुरा पाहने वाला,  
मुकसान पहुंचाने वाला ।  
अहितेच्छु(वि०)-पूर्यवत् । [सिपेरा ।  
अहितुष्टिक(पु०)-यांय दकहने वाला,  
अहिद्रिप्-नार-रिप्(पु०)-नरुह, जोर,  
इन्द्र, कण, मकुल ।  
अहिपति(पु०)-चातुकि, बहा यांच ।  
अहिजेन(अस्त्री०)-अफीम, यांच की  
लार ।

अहिमत्त(पु०)-शिव ।

अदिम(वि०)-नये, जो टहलाने की ।

अदिमकर(पु०)-गर्भ । [ नृप ।

अदिमदेव-सुति-कवि-अंशु(पु०)-

अदिमदेवी-अपनाकुली वृत्त ।

अहिंसक(वि०)-हिंसा न करने वाला ।

अहिंसा(स्त्री०)-हिंसा का अभाव,  
किसी को न मारना, न हानि  
पहुंचाना ।

अहिंसा(वि०)-हिंसारहित, अघातक ।

अही(द्विव०)-पृथ्वी और स्वर्ग ।

अहीन(वि०)-सम्पूर्ण, अक्षत, युक्त,

पडा । पु०-सर्पकाराणा वास्तुकि

अहीनपु(पु०)-सूर्यवंशी एक राजा ।

अहीरणि(पु०)-दो शिर वाला सांप ।

अमु(वि०)-लंग, ठपावक ।

अहत(पु०)-जप, ब्रह्मयज्ञ, वेदपाठ ।

अहदय(वि०)-खेदिल ।

अहे(अ०)-धिक्कार, दुःख, जुदाई का  
बोधक ।

अहेतु(वि०)-बिना कारण का, उपर्य ।

पु०-कारण का अभाव ।

अहे [ हे ] तुक (वि०)-कारणरहित,  
अप्रामाणिक ।

अही(अ०)-कल्याण, खेद, मयंघा, नृप  
और विसयबोधक ।

अहीरात्र(न०)-दिन रात ।

अह्राय(अ०)-अस्त्री-ये, शीघ्रतया ।

अहस्य(वि०)-दीर्घ, लम्बा ।

अह्रीक (वि०)-लज्जादीन, सगह ।

पु०-धींद्र बापु ।

## आ

आ(अ०)-धर्मगाला का द्वितीय अक्षर ।

स्मरण, दुःख, शोक, भीषा, अमु-

कल्याण, टपासि, मेल, मोहा, भव-

धि, दया आदि अर्थों का बोधक ।

आकट्यन(न०)-शेखी, फस्र ।  
 आकम्प(१आ०)-हिलना, घरघराना ।  
 आकम्पन(न०)-घरघराहट, हिलना,  
 भयातुरता, [ हुआ ।  
 आकम्पित (वि०)-तयातुर, हिला  
 आकर(पु०)--समूह, खान, अच्छा ।  
 आकर्ष(पु०)-खींचना, पाशा, चकमक  
 पत्थर । [ चकमक पत्थर ।  
 आकर्षक(वि०)--खींचने वाला-पु०-  
 आकर्षण(न०)-खींचना ।  
 आकर्षणी(स्त्री०)-ऊंचे छेने हुए पत्थर  
 आदि के झाड़ने की एक लाठी ।  
 आकर्षित(पु०)-चुम्क । वि० खींचने  
 वाला ।  
 आकर्षी(वि०)-खींचने वाला ।  
 आकर्ण(१०प०)-धुनना, ध्यान देना ।  
 आकर्ण(१०प०)-चकड़ना, कायू करना,  
 देखना, घांपना, घबराना ।  
 आकर्षक(पु०)-गहना, सिंगार, रींग ।  
 आकर्षक(पु०)-अछान, सुशी, हर्ष ।  
 आकर्ष्य(न०)-धीमारी, दुःख ।  
 आकर्ष(पु०)-चकमक पत्थर, कसीटी ।  
 आकस्मिक(वि०)-अकस्मात्, अचानक  
 संचटित ।  
 आकाङ्क्ष(१०प०)--चाहना, इच्छाकरना ।  
 आकाङ्क्षा (स्त्री०)-अभिलाष, ह्वा-  
 दिश, पूछगछ ।  
 आकाङ्क्षित(वि०)-चाहाहुआ, इच्छित  
 आकाय(पु०)-घर, निवास, घिता ।  
 आकाल(पु०)-ठीक समय, कुसमय ।  
 आकार(पु०)-स्वरूप, इशारा, शकल ।  
 आकारगुप्ति(स्त्री०)-मनोभावको छि-  
 पाना, स्वरूप को छिपाना ।

आकारण ( न० )-बुलावा, बुलाना,  
 चैलेंज ।  
 आकारणा(स्त्री०)--पूर्ववत् ।  
 आकारलिक ( वि० )-क्षणिक, अनवस-  
 रीत्पन्न ।  
 आकालिकी(स्त्री०)-घिजली ।  
 आकाश(१आ०)-चमकना, पहिचानना  
 आकाश(अस्त्री०)-गगन, आसमान,  
 ज्ञाना । [ अवमन्य वस्तु ।  
 आकाशकुसुम(न०)-आकाश का फूल,  
 आकाशगङ्गा (स्त्री०)-देवताओं की  
 नदी, सन्दाकिनी । [ चोरा ।  
 आकाशमन्त्रल (न०)-आसमान का  
 आकाशयान(न०)-विमान, धेखून ।  
 आकाशवल्ली(स्त्री०)-अमरवेष्ट ।  
 आकाशवाणी(स्त्री०)-अदृष्ट पुरुष की  
 आवाज ।  
 आकिञ्चन(न०)-निर्धनता, शरीधी ।  
 आकीर्ण(वि०)-व्याप्त, फैला हुआ ।  
 आकुक्ष् (१आ०, ६प०) कुकातर, दवाना,  
 कम करना, कुकना ।  
 आकुञ्चन ( न० )-संकोच, सिकोड़ना ।  
 आकुल(वि०)-आतुर, घबहाया हुआ ।  
 आकुलता ( स्त्री० )-घमहाहट ।  
 आकूत(न०)-बरादा, अभिमाय, इच्छा ।  
 आकूति ( स्त्री० )-पूर्ववत् ।  
 आकृ ( ८ उ०, ५ प० )-समीप लाना,  
 बुलाना, चेतेल्ल करना ।  
 आकृति ( स्त्री० )-आकार, शकल ।  
 आकृप् ( १ प०, ६ उ० )-खींचना,  
 आकृष्ट करना ।  
 आकृष्ट ( वि० )-खिंचा हुआ ।

आगम्(१५०), आना, समीप पहुँचना,  
प्राप्त करना, जानना ।

आगम (पु०)-आगमन, शास्त्र, नि-  
यमानुकूल किसी वस्तु की प्राप्ति,  
धेद । [ उत्पत्ति ।

आगमन(म०)-पहुँच, वापिसी, प्राप्ति,  
आगम(पु०)-अभावस्था ।

आगत्(न०)-दोप, जुन, अपराध, सजा  
आगस्ती(स्त्री०)-दक्षिण दिशा ।

आगस्त्य(वि०)-दक्षिणीय, अगस्त्य का  
आगाध(वि०)-बहुत गहरा, दुष्प्राप्य ।

आगामी(वि०)-आने वाला, अगला,  
परदेशी । [ आने वाला ।

आगामुक(वि०)-सविष्यत् काल का,  
७ तार(न०) घर, पहरा, मकान ।

आगुर्(६ आ०)-पसन्द करना, मंजूर  
करना । स्त्री०-घायदा, स्वीकारी ।

आगु[गु]रण(न०)-क्षिपा हुआ प्रस्ताव ।  
आगु(स्त्री०)-प्रतिज्ञा, इफ़रार ।

आगै(१ प०)-गाना, गाकर प्राप्त करना ।  
आग्निक(वि०)-अग्नि का ।

आग्नीध्र(न०)-होम करने का घर ।  
पु०-होता ।

आग्नेय(वि०)-अग्नि का, आतिथी ।  
म०-स्वर्ण, धी । पु०-अगस्त्य मुनि,

अग्नि का पूजक ।  
आग्नेयी(स्त्री०)-पूर्व और दक्षिण के

मध्य की दिशा, प्रतिपदा, अग्नि  
की स्त्री स्थावा ।

आयपण(न०)-नया अन्न, अग्नि का  
एक स्वरूप ।

आयह्(९३०)-पकड़ना, खींचना, जहो-  
अहद करना ।

आयह्(पु०)-पकड़, हरादा, जहोअहद  
करना ।

आयहायण(पु०)-मार्गशीर्ष मास ।  
आयह्(१० प०)-छूना, हरकत करना,  
मारना ।

आयह्, हुँक(पु०)-छालअपामार्ग वक्ष ।  
आचर्पे-चर्पणम्-रगड़, आघात ।

आचर्पणी(स्त्री०)-बुरख, हकफ़ मिटाने  
की रवड़ । [ खाना, आघात ।

आघात(पु०)-घोट, बधस्थाण, फसाई-  
आघार(पु०)-पी छिड़कना ।

आघुप्(१ प०)-चिल्ला कर बताना,  
जाहिर करना, तारीफ़ करना ।

आघुणित(वि०)-चालित, हिलाया  
हुआ । [ बाला । पु०-सूर्य ।

आघुणि(वि०)-प्रकाशमान, बहुत धन,  
आघोष(पु०)-बिस्फाट, पुकार ।

आघोषता(स्त्री०)-विघ्नपति, सय को  
बता कर कहना ।

आघ्रा(१ प०)-सूँचना, घूसना ।  
आघ्राण(न०)-सूँचना, गन्धग्रहण ।

आघ्रात(वि०)-सूँचा हुआ, आक्रान्त,  
हुआ हुआ । [ देशोत्पन्न ।

आङ्ग(वि०)-शरीरयुक्त, अवयवी, अङ्ग-  
आङ्गिक(वि०)-शरीर का, अङ्गों से

उपजा, सुदङ्ग बाजा । [ स्पति ।  
आङ्गिरस(पु०)-अङ्गिरा का पुत्र बृह-

जाङ्गूय(पु०)-मथंसा, गीत ।  
आचञ्(२ आ०)-धोखना, मकट करना,  
सिखलाना ।

आचम्(१ प०)-वाटना, आचमन करना,  
घषघष करना।

आचमन(न०)-कुसला करना, मुख  
आदि का धोना। तपासनाके पूर्व  
जल का पीना। [का जल।

आचमनक(न०)-पीकदानी, आचमन  
आचर्(१ प०)-आचरण करना, काम  
करना, वर्तव्य करना। सम्पादन  
करना। [व्यवहार।

आचरण(न०)-वर्तव्य, क्रिया, सम्पादन,  
आचरित(वि०)-किया हुआ, व्यवहृत।

आचार (पु०)--चरित्र, चालचलन,  
ऋषियों द्वारा सम्मत व्यवहार।

आचारपुत(वि०)-शुद्धाचार द्वारा  
पवित्र। [हीन।

आचारभट्ट(वि०)-वर्तित, सुदाचार-  
आचारहीन(वि०)-पूर्ववत्।

आचार्य(पु०)-वेद की शिक्षा देने वाला,

शिक्षक, फिलासफर, सैद्धान्तिक।

आचार्यक(न०)-शिक्षा, सिसाना।

आचार्यणी(स्त्री०)-आचार्यकी स्त्री।

आचि(५ व०)--इकट्ठा करना, चुगना।

आचित (वि०)--संगृहीत, एकत्रित,  
फेला हुआ। पु०--एक गाड़ी का

कोक भराया पच्छीस गम।

आचूषण(न०)-चूमना, चूमने का कार्य।

आच्छद्(१० प०)--ढकना, छिपाना,  
पन्थमुक्त करना।

आच्छन्न(वि०)-ढका हुआ, पिरा  
हुआ, आवृत।

आच्छाद(पु०)--वस्त्र, कपड़ा।

आच्छादन(न०)-वस्त्र, चादर, पर्दा,  
ढकना [हुआ।

आच्छादित(वि०)-ढका हुआ, छिपा  
आच्छिद्(३ व०)--फाट कर छल्ला

करना, टुकड़े २ करना, तोड़ना।

आच्छुरित (न०)-खिलखिला कर  
हँसना, नाखून खजाना।

आच्छेदन(न०)-काट कर अलग करना,  
छीनने का काल।

आच्छेदन(न०)-शिकार, मृगया।

आज(न०)-वक्रे का नाँव भी।

आजक(न०) बहरों का झुंड।

आजकार(पु०)-शिव का नादिया।

आजन्(४ आ०)-उत्पन्न होना, पैदा  
होना।

आजन्म(अ०)-पैदायश से लेकर।

आजति(स्त्री०)-पैदायश, आरम्भ।

आजान(पु०)-पूर्ववत्।

आजानु(अ०)-चुटनों तक।

आजि(अक्षी०)-पुह, लड़ाई कुस्ती,  
गाली, संयामभूमि।

आजि(१ प०)-जीतना, प्राप्त करना।

आजिगीपु(वि०)-सब की जीतने की  
इच्छा करने वाला।

आजीख (१ प०)--सहारे से जीना,  
जिन्दा रहना।

आजीषक(पु०)-भित्तारी, संगत।

आजीवन(न०)-रोजी, जीविका, सहारा,  
पेशा।

आजीवनन(अ०)-जीवनपर्यन्त।

आजीविका(स्त्री०)-पेशा, जीवन-  
निर्याह का साधन।

आजू(स्त्री०)--सुख काम करने वाला ।

आज्ञप्ति (स्त्री०)--हुक्म, आह्वय ।

आज्ञा ( ९ प्र० )--ज्ञानता, समझना, सूचना पाना ।

आज्ञा(स्त्री०)--हुक्म, इजाजत ।

आज्ञानुगामी (वि०)--आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी । पु०--नौकर [ हर ।

आज्ञापक(वि०)--हुक्म देने वाला, कर्मा-  
आज्ञापन(न०)--शासनपत्र, लिखा हुआ हुक्म ।

आज्ञाजन(पु०)--नाकर्मापरदारी, धिक्कोह ।

आज्ञ्य(न०)--पुत, घी ।

आज्ञ्यपाः(पु०) पितरों की एककता ।

आज्ञ्यस्पाली(स्त्री०)--होम में चूत रखने का वर्तन ।

आज्ञ्यमुक्(पु०)--अग्नि देवता ।

आज्ञ्यन(न०)--सरहम, चर्चा, भाँस में आज्ञने का काला अलन । पु०--हनुमान् ।

आज्ञ्यनेप(पु०)--हनुमान् । [ विशेष ।

आदधिक(पु०)--जनली, घनवासी, सेना

आदीकर(पु०)--साँह, पैल ।

आदीप(पु०)--शक्र, अहंकार, वेग, पैट का दापविकार ।

आहन्वर(पु०)--गर्त, दिखलाया, हर्द, वेग, अहंकार, धाजा, धादल का गलन, भाँस के रोम ।

आहन्वरी(वि०)--उलझ, भग्नकर ।

आहू(स्त्री०)--शहतीर, लकड़ी का लहरा ।

आदक(अस्त्री०)--चारी ओर से दश अंगुल का माप, अनाज फटकने का पात्र ।

आह्वय(वि०)--युक्त, मिला हुआ, महाधनी ।

आणक(वि०)--नीच, कमीना, मैथुन का आसनविशेष ।

आण्य(वि०)--बहुत छोटा ।

आधि (अकली०)--रथचक्र के आगे की कील, नीक, कोना ।

आतक(पु०)--भय, हर, रोग, डोल का शब्द । [ घत, झाक करना ।

आतकन(न०)--नाश, उपद्रव, वेग, मुसी-

अतत(वि०)--कैला हुआ, प्रसारित ।

आततापी(वि०)--मारने को तैयार हुआ, शस्त्र चढ़ा कर मारने वाला, महापापी ।

आतन् ( ८ व० )--कैलाना, सानना, पूरा करना, प्रवेश करना ।

आतन(न०)--कैलाव, दृष्टि, प्रसारण ।

आतप्(१ प्र०)--तपना, तपाना, चमकाना । [ प्रकाश ।

आतप(पु०)--पीडा का कारण, धूप,

आतपत्र(पु०)--छातर, छत्र ।

आतर(न०)--नदी आदि तरने के लिये भाड़ा ।

आतपंश(न०)--सन्तुष्टि, मंगलाहेतव ।

आतग( पु० )--तना हुआ रस्सा, बहुत कैलाव ।

आतापि(पु०)--एक दैत्य का नाम जिसे अगस्त्य ने निगला ।

आतापी(पु०)--खरग, चील पत्नी ।

आतायी(पु०)--चील पत्नी ।

आतिथ्य(न०)--अतिथि पूजा । वि०--पतुर, कुगल ।



आतिथ्य(न०)--अतिथिसेवा ।

अतिथ्यसत्कार (पु०)--अतिथिसेवा,  
मेहमाननवाजी ।

आतिरे[र] (न०)--अधिकता, बहु-  
तायत, समादती,

आतिवाहिक(पु०)--मृत्यु के पश्चात्  
सूक्ष्म शरीर को परलोक में ले  
जाने वाला ईश्वरदूत ।

आतिथ्य=आतिरेक्य ।

आतु(पु०)--तखत, लज्जह, शहतीर ।

आतुड़ ( ६ उ० )--नारना, चुनामा,  
पुड़ी लगावा । [ एकलुक ।

आतुर(वि०)--पीड़ित, रोगी, दुबल,  
आतुरशाला(स्त्री०)--रोगिशाला, अस्प-  
ताल ।

आतुर्य(न०)--रोग, कष्टविशेष ।

आतुर(४, ५, ६ प०)--सन्तुष्ट होना वा ।  
घन करना ।

आतोद्य(न०)--नीणा आदि धावा,  
कोई खोज ।

आत्म[नू]-समास के आरम्भ में स्वार्थ  
प्रयुक्त होता है । पु०-आत्मा ।

आत्मक(वि०)-समास के अन्त में  
स्वार्थ में प्रयुक्त होता है ।

आत्मकाम(वि०)--सुखसन्द, इर्मित ।

आत्मकाय(न०)--माध्वेष्टकाम ।

आत्मकीय(वि०)--अपना, निजो,  
सुदृग्धो ।

आत्मगुप्ति(स्त्री०)--गुफा, गार ।

आत्मपात्री(वि०)--छालची, सुदृग्ध ।

आत्मपात(पु०)--सुदृग्धो, आत्महत्या  
आत्मपाप(पु०)--दोष, गुण ।

आत्मज(पु०)--पुत्र, सन्तान काश्रदेव ।

आत्मजन्म-जात-प्रपाद-सम्भव (पु०)--  
पुत्र, सन्तान ।

आत्मजा(स्त्री०)--पुत्री, तर्कदुद्धि ।

आत्मज्ञ-विद्(पु०)--ज्ञानवान्, परित्त,  
अपि ।

आत्मज्ञान(न०)--आत्मा और पर-  
मात्माका ज्ञान, अध्यात्मविद्या ।

आत्मतत्त्व(न०)--जीवात्मा और पर-  
मात्मा का वास्तविक स्वरूप ।

आत्मतुष्टि(स्त्री०)--सन्तोष, चित्त की  
शान्ति ।

आत्मव्यग(पु०)--स्वार्थव्याप ।

आत्मदर्श(पु०)--दर्पण, धीमा ।

आत्मदर्शन ( न० )--अध्यात्मज्ञान,  
आत्मा के स्वरूप की ज्ञान होना ।

आत्मनिन्दा(स्त्री०)--अपने आप की  
चिह्नारना ।

आत्मनीन(वि०)--पुत्र, सख्त, सम्बन्धी

आत्मनेयव(न०)--आत्मो के दो  
भेदों में से एक ।

आत्मप्रशसा(स्त्री०)--सुदृग्धो, अप-  
नी तारीफ़ ।

आत्मवन्धु(पु०)--सम्बन्धी, रिश्तेदार

आत्मयौथ(पु०)--आत्मज्ञान ।

आत्मयु-योगि(पु०)--ब्रह्मा, विष्णु,  
वामदेव, युर ।

आत्ममूर्ति(वि०)--छालची, स्वार्थी ।

आत्मरक्षा(स्त्री०)--अपनी रक्षा ।

आत्मयप(पु०)--सुदृग्धो ।

आत्मविक्रय(पु०)--अपने आप को  
बिक्री देना ।

आत्मविद्या(स्त्री०)--आत्माका ज्ञान

आत्मशलाघा(स्त्री०)-ओखी, खुदपसन्दी  
आत्मस्तुति ।

आत्मसंयम(पु०)-इन्द्रियदमन ।

आत्मसात्(अ०)-अपने कावू में, अप  
ने अधीन ।

आत्महत्या(स्त्री०)-अपने आप को  
मारना, खुदकशी ।

आत्मा(पु०)-जीव, ब्रह्म, बुद्धि, मन  
स्वरूप, सूर्य, देह, अग्नि, वायु,  
स्वप्नाद्य ।

आत्माधीन(वि०)-स्वाधीन । पु०-  
पुत्र, साला, विद्वयक ।

आत्मानुरूप(वि०)-अपने अनुकूल ।

आत्मीय(वि०)-अपना, निजी, सम्बन्धी

आत्मोद्भव(पु०)-पुत्र, कामदेव, दुःख  
आत्यन्तिक ( वि० )-अतिथयभात,  
अन्तहीन, यहुत अधिक ।

आत्रेय(पु०)-अत्रि मुनि का पुत्र, एक  
नदीविशेष, शिव, अत्रिवंश का  
अधिष्ठाता ।

आत्रेयी(स्त्री०)-अत्रिमुनि की कन्या,  
ऋतुमती स्त्री, एक नदी ।

आपवर्ण(पु०)-अपवर्णवेदद्वारा विहित,  
अपवर्णवेद का शितरु ब्राह्मण,  
अपवर्णवेद के अनुसार क्रिया करने  
वाला पुरोहित ।

आदत्त(वि०)-गृहीत, स्वीकृत ।

आदर(पु०)-इज्जत, प्रतिष्ठा, आरम्भ  
आदर्श (पु०)-दर्पण, शीला, उद्देश्य,  
प्रतिरूप, पुस्तक ।

आदर्श(१५०)-काटना, कुरेदना ।

आदा(३ आ०)-प्राप्त करना, लेना,  
ग्रहण करना । [ ज़ेवर ।

आदान(न०)-ग्रहण, लेना, चीड़े का  
आदाय(अ०)-ग्रहण करके, लेकर ।

आदि(वि०)-पहला, आरम्भ का,  
आरम्भिक, प्रधान । पु०-आरम्भ,  
कारण, मुख्य, हिस्सा, प्रथम ।

आदिक(वि०)-वगैरा, आरम्भ करके,  
लेकर । [ मुनि ।

आदिकवि (पु०)-ब्रह्मदेव, वाल्मीकि  
आदिकारण(न०)-ब्रह्म, प्रकृति ।

आदिकाव्य(न०)-वाल्मीकीय रामा-  
व्य । [ अर्थात् देवता ।

आदित्य(पु०)-अदिति की सुन्तान  
आदित्य(पु०)-सूर्य, देवता, आक का

वृत्त, पुनर्वसु नक्षत्र ।  
आदि [दी] नव(अस्त्री०)-दुःख, रोक,  
अपराध, ऐश ।

आदित्यसूनु(पु०)-यमराज, सुपीथ,  
शनि राजा कर्ण, वैवस्वत ननु ।

आदिदेव(पु०)-नारायण, शिव, आदि-  
कारण, ब्रह्म ।

आदिपु [३] रुद्र (पु०)-आदिकारण,  
परमात्मा, नारायण ।

आदिम(वि०)-पहिला, आरम्भिक ।  
आदिश(६ उ०)-घतलाना, दिखलाना;

हुक्म देना ।  
आदिष्ट (वि०)-आज्ञापित, कथित,  
आदेश किया गया । न०-आज्ञा,

हुक्म ।  
आट्ट(६आ०)-इज्जत करना, प्रतिष्ठा  
करना, प्रतिष्ठा पाना ।

आहूत(वि०)-पूजित, सम्मानित ।  
 आदेश(पु०)-हुक्म, आज्ञा, उपदेश,  
 शिक्षा, शासन, नियम ।  
 आदेशी(वि०)-आज्ञा करने वाला,  
 • चयन करने वाला । पु०-नमूनी,  
 कमानियर, डाइरेक्टर ।  
 आदेश(पु०)-माझाकारक, सजाह-  
 कार, यज्ञमान ।  
 आद्या(वि०)-प्रथम, आदिभूत, साद्य ।  
 न०-धान्य ।  
 आद्यान्त(न०)-शुरू और अखीर ।  
 आद्या(स्त्री०)-दुर्गा, शक्ति, काली ।  
 आद्यून ( वि०)-आदिशून्य, आरम्भ  
 रहित, शून्य, पैदू ।  
 आद्योत(पु०)-चमक, रोशनी ।  
 आद्रिचार(वि०)-लोहे का घना हुआ ।  
 आधमन(न०)-अमानत, निर्धो, मिलेप ।  
 आधमपर्य(न०)-कर्जदार होना ।  
 आधमिक(वि०)-अन्धायी, धर्मविरोधी  
 आधर्ष(पु०)-हिकारत, बलात् हानि  
 पहुंचाना ।  
 आधा(३व०)-रखना, लमा करना,  
 पीढ़ लगाना, नियुक्त करना ।  
 आधाता(वि०)-आधात करने वाला ।  
 आधात ( न०)-निपुक्ति, शोधघात,  
 मन्त्रादि से जगि स्थापन करना ।  
 आधातिव(पु०)-गर्भाधात संस्कार ।  
 आधार(पु०)-अधिकरण, आधार, नहर,  
 पुल, भाइ ।  
 आधारक(पु०) सुनिपाद ! [ देना ।  
 आधारण(न०)-धारण करना, सहारा

आधारशक्ति(स्त्री०)-माया, कगज-  
 ननी । [ अमानत ।  
 आधि(पु०)-मन की पीड़ा, आशय,  
 अधिकरणिक(पु०)-जग ।  
 आधिक्य (न०)-अधिकता, ज्यादाती,  
 बहुतायत ।  
 आधिक(वि०)-कष्ट जानने वाला ।  
 आधिदैविक ( वि०)-पशुसूत अर्थात्  
 वायु आदि से उपजा हुआ ।  
 आधिपत्य(न०)-अधिकार, स्वामित्व ।  
 आधिभौतिक(वि०)-व्याघ्र, सर्प आदि  
 से उपजा हुआ ।  
 आधिपत्य (न०)-आधिपत्य, अधि-  
 कार, रियासत ।  
 आधिपदनिक ( न०)-दुमरा विवाह  
 करने पर पहली स्त्री की दिया  
 हुआ धन ।  
 आधिकरण(न०)-अमानत, रहन ।  
 आधिक(व०)-अमानत रखना, निर्धो  
 रखना, रहन करना । [ करना ।  
 आधु(५ व०)-हिलाना, आन्दोलित  
 आधुनिक(वि०)-नया, नवीन, हालका,  
 आधु(१, १० व०)-धारण करना, सहारा  
 देना । [ घ जाना ।  
 आधु(५ व०)-आक्रमण करना, गालि-  
 आधु(वि०)-रोका हुआ, अक्रान्त ।  
 आधारण(पु०)-हाथीघात, हस्तिपदा ।  
 आध्यात(वि०)-अटिदत, फूँका गया,  
 वायुपूरित । न०-आधात, वायु  
 रोग से पेट का फूलना ।  
 आधमन ( न० )-वायुरोग, पेट  
 फूलना, भेरी, पंकिनी ।

आध्यात्मिक (वि०) - परमात्मसम्बन्धी, मनोविवार से उत्पन्न दुःख आध्यात्म (न०) - चिन्ता, शोकपूर्वक याद करना ।

आध्वनिक (वि०) - यात्रा में गया हुआ, सफर करने वाला ।

आध्वरिक (वि०) - पुरोहित, सीमण्डल का विधान करने वाला ।

आध्वर्यव (वि०) - यजुर्वेदसम्बन्धी, यजुर्वेद का ज्ञाता ।

आन (पु०) - रवास लेना, मुख, नासिका

आनक (पु०) - यात्रा, रुदन, बहुत आवाज़ करने वाला होल ।

आनकदुन्दुभि (पु०) - यजुर्वेद का नाम । स्त्री० - बड़ा होल ।

आनत (वि०) - नय, जवनत, झुका हुआ, अधोमुख ।

आनति (स्त्री०) - प्रणाम, नम्रता, सन्तोष

आनह (न०) - बंधा हुआ । पु० - डोल, घट्ट घट्ट करना ।

आनन (न०) - मुख, जिस से रवास छिपा जाता है ।

आनन्त्य (न०) - बहुत यात, अनन्त मुख ।

आनन्द् (१प०) - हर्षित होना, दिल पहलाना । [ अक्ष ।

आनन्द (पु०) - खुशी, सुख, दुःखमात्र,

आनन्दक (वि०) - सुख, हर्षित ।

आनन्दता (स्त्री०) - खुशी, प्रसन्नता ।

आनन्दन (न०) - ज्ञान धाम के समय कुशलप्रश्न से आनन्द उत्पन्न करना । वि० - आनन्द में भरा हुआ । पु० - अक्ष ।

आनन्दनदरी (स्त्री०) - शङ्कराचार्य-कृत पार्वती की प्राप्ति ।

आनन्दि (पु०) - खुशी, हर्ष, शोक ।

आनम् (१प०) - झुकना, झुकाना, प्रणाम करना ।

आनर्त (पु०) - युद्ध, लड़ाई, पिघेटर-हाल, काठियावाड़ प्रदेश । न० - लाल ।

आनर्पक्य (न०) - निरर्पकता, भनीयित्व

आनय (वि०) - मानुषी, उदार । पु० -

जग, विदेशी जन ।

आह (४३०) - बांधना, लकड़ना ।

आनय (पु०) - उपनय, लाना ।

आनयन (न०) - पूर्ववत् ।

आनाच्य (न०) - आसयहीनता, यतीनी

आनाय (पु०) - जाल, यतीप्रसीत धारण करना ।

आनायी (पु०) - बछेरा, बचिर ।

आनाह (पु०) - यन्त्र, लकड़, लम्बाई

आनिठ (वि०) - बायु का, हवा से उत्पन्न । पु० - हनुमान् ।

आनी (१प०) - छाछी, जाकर लाना, उत्पन्न करना, ले आना ।

आनीति (स्त्री०) - पास लाना ।

आनील (वि०) - कुठ कुठ फाला । पु० - फाला फोड़ा ।

आनुकूलि (वि०) - अनुकूल, सुवातिक

आनुकूल्य (न०) - अनुकूलपता, आपस में मिट कर रहना ।

आनुगत्य (न०) - वाक्यपित ।

आनुगत्य (न०) - समानता, तुल्यता, अनुकूलपता ।

आनुयागिक (वि०)-गंधार, उग्रह ।  
 आनुपदिक (वि०)-अनुगमन वा  
 पीछा करने वाला । [ नतीका ।  
 आनुपूर्व-व्यं(न०)-क्रम, सिलसिला,  
 आनुपूर्व (स्त्री०)-पूर्ववत् ।  
 आनुयागिक (वि०)-अनुमान से  
 प्राप्त, अनुमित ।  
 आनुयागिक (पु०)-पीछे जाने  
 वाला, सेवक ।  
 आनुरति (स्त्री०)-प्रेम, आसक्ति ।  
 आनुलोमिक(वि०)-क्रमबद्ध, अनुकूल ।  
 आनुविधित्ता (स्त्री०)-कृतज्ञता,  
 अक्षयानकरासोशी ।  
 आनुवेष्ट (वि०)-पक्षीसी ।  
 आनुप्रविष्ट (वि०)-वेदविहित ।  
 आनुपंगिक (वि०)-लगाने रखने  
 वाला, गीण, ज़रूरी, समान ।  
 आनुप(वि०)-तर, जलपुष्प ।  
 आनुष्टय(न०)-प्राण से छुटकारा ।  
 आनुत(वि०)-सदा क्रूढ़ कहने वाला,  
 असत्यवादी ।  
 आनुधम(वि०)-मेहरबान, रहमदिल ।  
 आनैपुरय(न०)-मूर्खता, दक्षता का  
 अभाव ।  
 आन्त(वि०)-अगोरी, अन्तिम ।  
 आन्त(वि०)-अन्दरूनी, छिपा हुआ ।  
 आन्तरतम्य(न०)-नज़दीकी, रिश्ते-  
 दारी । [ जानने वाला ।  
 आन्तराल(वि०)-अन्दरूनी बातों का  
 आन्तरीक्ष-रिक्त (वि०)-भन्तरिक्त में  
 रिक्त, स्थगित । [ छित ।  
 आन्तर्गणिक(वि०)-गिना हुआ, सम्मि-

आन्तिका(स्त्री०)-बड़ी बहिन ।  
 आन्त्र(वि०)-अन्तर्द्विष्ट, का ।  
 आन्दोल(१०प०)-इधर उधर हिलना,  
 झूलना, कांपना ।  
 आन्दोलन(न०)-चार २ झूलना, अनु-  
 सन्धान, बार २ तहरीक, एजी-  
 टेशन ।  
 आन्धसिक(पु०)-रसोइया, पाचक ।  
 आन्धय(न०)-अन्धापन ।  
 आन्धतावय(न०)-अन्ध बाकार ।  
 आन्धयिक (वि०)-कुलीन, अच्छे  
 वंश का । [ जाय ।  
 आन्वाहिक(वि०)-तो रोज़ २ किया  
 आन्वीक्षिकी (स्त्री०)-मन्तक, तर्क-  
 विद्या, अध्यात्मविद्या ।  
 आन्वीषिक(वि०)-अनुकूल ।  
 आप् (५ प०)-प्राप्त करना, पाना,  
 हासिल करना ।  
 आप(न०)-जल, जलधारा ।  
 आपकर(वि०)-क्रूर, धनु ।  
 आपक्ष(वि०)-कक्ष, आपा पका ।  
 आपगा(स्त्री०)-नदी, दरिया ।  
 आपण(न०)-बाज़ार, दूकान ।  
 आपणिक(वि०)-ठपानारी, त्रिजारी,  
 ठपकसायी ।  
 आपत (१ प०)-अपटना, आक्रमण  
 करना, समीप जाना ।  
 आपतन(न०)-आक्रमण, समीपगमन,  
 घटना, अवतार, प्राप्ति, ज्ञान ।  
 आपतिक(वि०)-आकस्मिक । पु०-  
 याज्ञ पक्षी ।

आपतित(वि०)-सङ्कटित, अवतीर्ण,  
किस्मत् में वदा हुआ ।

आपत्ति(स्त्री०)-प्राप्ति, अन्तःप्रवेश,  
दुःख, मुसीबत ।

आपत्काल(पु०)-मुसीबत-काल ।

आपत्त्य(वि०)-सन्तान का, सन्तति-  
सम्बन्धी ।

आपद्(४ भा०)-झरोख जाना, प्रवेश  
करना, संचलित होना, पहुंचना ।

आपद् (स्त्री०)-आपत्ति, मुसीबत,  
सुतरा । [ हुआ, कमबल ।

आपद्ग्रस्त(वि०)-मुसीबत में कंसा  
आपद्ग्रस्त (पु०)-ऐसा आपार जो

द्विजातियों के लिये साधारण  
अवस्था में तो वर्जित हो, किन्तु  
विपत्ति या विरहकाल में सम्मत  
ठहराया गया हो जैसे नियोग,  
सुद्धि आदि ।

आपदा(स्त्री०)-मुसीबत, कठिनाता ।

आपन्न(वि०)-प्राप्त, विपद्ग्रस्त, मुसी-  
बत में कंसा हुआ । [ मिटा ।

आपन्नसत्त्वा(स्त्री०)-गर्भवती, हा-

आपत्तिक(पु०)-हीरा, किरात ।

आपत्तिक(वि०)-तबादले में पाया  
हुआ । न०-तबादले का साल ।

आपराधिक (वि०)-दोषहर के  
पश्चात् का ।

आपन् (न०)-पाप, धार्मिक कृत्य ।

आपस्तम्भ (पु०)-धर्मशास्त्रकार एक  
आपि ।

आयाक(पु०)-कुम्हार का आया ।

आपात(पु०)-आक्रमण, जलता हुआ  
तन्दूर, कुम्हार का आया, मार्ग,

रास्ता । [ वाला ।

आपाती (वि०)-यकायक भा पड़ने

आपाद(पु०)-बदला, प्राप्ति ।

आपान(न०)-शराबियों की जमागत,  
दावत, शराब की दुकान ।

आपालि(पु०)-जू । [ पीला ।

आपिल्लर(न०)-चीना । वि०-कुछ रं-

आपी(वि०)-मोटी ताकत ।

आपीड् (१० व०)-दवाना, तंग करना,  
सिकोड़ना ।

आपीड (वि०)-कष्टदायक, दवाने  
वाला । पु०-माला, एक जैवर ।

आपीडन(न०)-दवाना, तंग करना,  
दुःख देना ।

आपीत(वि०)-मस्त, चोड़ापीला, चोड़ा  
पिया हुआ, मासिक धातु ।

आपीन (वि०)-चोड़ा मोटा, ऊप  
( हथाना ) कुप ।

आपुष्पिक(वि०)-पूड़े घेचने वाला या  
खाने वाला । न०-पूड़ों का समूह ।

आपुष्प(पु०)-नैदा, सत्तु ।

आपूरण-णं(वि०)-भरा हुआ, पूरित ।

आपृष्(३ व०)-भरना, व्याप्त करना  
मिलाना ।

आपृच्छा(स्त्री०)-आलाप, बातचीत ।

आपेक्षिक(वि०)-इन्तजार करने वाला

आपीमय(वि०)-जल का बना हुआ ।

आप्त(वि०)-विश्वस्त, पाया हुआ,  
सच्चा उपदेशक, रागद्वेष से रहित,  
सत्यप्राता ।

आप्तकाम(वि०)-जिस की इच्छा पूर्ण हो गई हो, सदावृत्त ।  
 आप्तोक्ति(स्त्री०)-आप्त का वचन, वेद का दिया हुआ फैसला ।  
 आप्यायन(न०)-तसल्ली, सन्तुष्टि, मोटापन ।  
 आपृच्छ (ई आ०)-छलविदा कहना, जुदा होते समय प्रणाम करना ।  
 आपृच्छन(न०)-अलविदा, स्वागत, अन्तिम प्रणाम । वि०-छिपा हुआ, गुप्त । [ चोशक ।  
 आप्रपद(न०)-पाँच तक पहुँचने वाली जगतीतप (पु०)-विरणु ।  
 आप्रय (पु०)-स्तान, गजजन, छिड़काव ।  
 आप्रयन(न०)-पूर्ययत ।  
 आप्राव(पु०)-पानी का चढ़ाना, माढ़ आसु (१ आ०)-फुदकना, नाचना, नहाना ।  
 आप्रुन(वि०)-न्याया हुआ, स्नात ।  
 आप्रा(पु०)-घायु । स्त्री०-गदेंत ।  
 आप्रुक(न०)-अफीम । [ मास ।  
 आप्रुद(वि०)-यंपा हुआ, लकड़ा हुआ, आयप्रु (२ पु०)-यंपना, लकड़ना, बनाना ।  
 आयप्रु(पु०)-यंप, यंपन, भूषण ।  
 आयप्रुन(न०)-पूर्ययत ।  
 आयप्रुय(न०)-कमलौरी ।  
 आयप्रु(१ आ०)-रोकना, लगाने से रोकना, बाधा दाना, दिक् करना ।  
 आयप्रु(पु०)-चनि, दु.प, हानि ।  
 आयप्रु(वि०)-काटा, नैला ।

आयुध(१प०)-समझना, देखना ।  
 आयोधन(न०)-ज्ञान, सगुण, शिला ।  
 आठिदक(वि०)-साखाना, वापिक ।  
 आभरण(न०)-भूषण, जेवर, सजावट ।  
 आभा(३प०)-चमकना । स्त्री०-प्रकाश, सुन्दरता, दीप्ति, चमक ।  
 आभाणक(पु०)-कहावत, लोकोक्ति ।  
 आभाप ( १ आ०)-बातचीत करना, मुसामिष करना, चिल्लाना ।  
 आभापण(न०)-बातचीत, गुल्लू ।  
 आभास(१ आ०)-चमकना, दिखलाई देना ।  
 आभास(पु०)-प्रतीति, सगनता, चमक, भूमिका ।  
 आभास्वर(वि०)-चमकीला, शानदार ।  
 आभिधन(वि०)-जन्मसम्बन्धी, कुल-सम्बन्धी । न०-कुलीनता ।  
 आभिजात्य(न०)-कुलीनता, विद्वत्ता, सुन्दरता, चतुराई ।  
 आभिधानिक(वि०)-शब्दकोष में का, पु०-कोशकार । [ सम्मुख होना ।  
 आभिमुख्य(न०)-सामना, मुकाबिला, आभीक्ष्य(न०)-चार २ होना, उगार-सार, दुहराना ।  
 आभीर(पु०)-ग्यालिया, अहीर, देशभेद ।  
 आभीरपल्ली(स्त्री०)-ग्यालों के घर, गोपों का ग्राम । [ रोगी ।  
 आभील ( स्त्री० )-मपायना, भयङ्कर, आभूति(स्त्री०)व्याप्ति, शक्तिशालिता ।  
 आभोग(पु०)-संपूर्णता, पूरापन, टेढ़ापन, नीत की मगरासि, चन्तुष्टि ।  
 आभ्रन्तर(वि०)-आन्दरुनी, आन्दरका

आभ्यवहारिक ( वि० )-मक्षण करने योग्य ।

आभ्यासिक (वि०)-अभ्यासगत, अभ्यास से उत्पन्न ।

आभ्युदयिक (वि०)-उदय, उत्पत्ति देने वाला, अभ्युदय करने वाला, शुभ कर्म ।

आभू (अ०)-स्वीकारी, मंजूरी, स्मृति और निश्चय का घोषक, दा, अकृता ।

आग (वि०)-ऊँचा, अपरिपक्व । पु०-अजीर्ण, दहज्वली ।

आमल्लु (वि०)-सुन्दर, मनोहर ।

आमण्ड (पु०)--अमण्ड का वृक्ष ।

आमनस्य (न०)--कष्ट, दुःख ।

आमन्त्र (१०आ०)--अलपिदा कहना, मातृचीत करना, निमन्त्रित करना ।

आमन्त्रण (न०)--निमन्त्रण, बुलावा, अभिनन्दन, स्वागत, विचार, मातृचीत ।

आमन्त्रणा (स्त्री०)--पूर्ववत् ।

आमय (पु०)--रोग, दहज्वली ।

आमयायी (वि०)--रोगी, अजीर्ण रोग वाला ।

आमरणास्तिक ( वि० )--जीवन भर रहने वाला ।

आमर्शण(न०) -टूना, विचारना,स्पर्श ।

आमर्षः-पंचमू-क्रोच, गुस्सा, घेसघरी

आमलक[की](पु०)--आमला, आंवले का पेड़ । न०--आंवले का फल ।

आमाशय (पु०)--मन्थी, वजीर ।

आमाशय (पु०)--उदर में भोजन पकने का स्थान ।

आमिक्षा (स्त्री०)--जटा हुआ दूध ।

आमिय ( न० )--मांस, खाद्य वस्तु, रिश्वत, इच्छा, कामदेव का गुण, विषय, छोम ।

आनील (१प०)--आँखें बन्द करना, ध्यानावस्थित होना ।

आनीलन(न०)--माँखों पर बन्द करना व खोलना ।

आमुग (न०)--आरम्भ, नाटक की प्रस्तावना ।

आमुष् (६ व०)--ढीला करना, मुक्त करना, छोड़ना । [ पहिरना ।

आमोचन(न०)--टपाग, मुक्ति, छोड़ना,

आमुस्मिक्(वि०)--जो ऐहिक न हो, परलोकस्थस्थी । [ दधाना ।

आमूट ( ६ प० )--रगड़ के कुचलना,

आमृश् (६ प०)--छूना, हाथ डालना ।

आमोद ( पु० )--सुधी, दिलयहलाव, तेज सुगन्ध । [ सुदार ।

आमोदित(वि०)--हर्षित, गुण, सुख-

आमोष(पु०)--घोरी, लूट ।

आम्नाय(पु०)--वेद, निगाह, आगम, परम्परा से प्राप्त उपदेश ।

आम्निकेय(पु०)--कासिकेय, पतराष्ट्र ।

आम्नस(वि०)--जलमुक्त, रसालु ।

आम्(पु०)--आम का वृत्त । न०--आम का फल ।

आमातक(पु०)--मिटाया, आगड़ा वृत्त ।

आमोदित(वि०)--बार २ कहा हुआ ।



आम्ल(पु०)-इमली का वृक्ष । न०-  
सहापन । [ वृक्ष ।

आम्ल-आम्लिका(स्त्री०)-इमली का  
आय(पु०)-प्राप्ति, आमदनी, घना-  
गम, लाभ, अन्तःपुर का रक्षक ।  
आयत(१ आ०)-यत्न करना, कोशिश  
करना ।

आयत (वि०)-घड़ा, लम्बा, लंबा  
हुआ, रोका हुआ । [ विदि ।

आयतन (न०)-जहज, घर, आश्रय-  
आयति(स्त्री०)-लम्बाई, अवधि, काल,  
मेल, प्रापण ।

आयत्त(वि०)-अधीन, पालतू वशीभूत ।  
आयत्ति (स्त्री०)--अधीनता, वशता,  
शक्ति, सीमा, लम्बाई ।

आयत् (४ पु०)-यत्न करना, चक  
जाना । [ लोहा, इधिया ।

आयस (वि०)--लोहनिर्मित । न०--  
आयस्त(वि०)--दुःखी, आहत, क्रोधित  
आया(२ पु०)-आना, पहुंचना, प्राप्त  
करना, गतीजा निकलना ।

आयात(वि०)-आया हुआ, आगत ।  
आयाति(स्त्री०)-आमद, समीप आग-  
मन ।

आयान(न०)-गिजाज, प्रकृति, आमद  
आयास (पु०)-लम्बाई, प्रसारण,  
तनाय ।

आयष्टक(पु०)-येसवरी, तीव्रदृष्टि ।  
आयास(पु०)-यत्न, कठिनाता, दुःख,  
मानसिक कष्ट ।

आयु(पु०)-मनुष्य, जानि, आदिम  
मनुष्य, जीवन, आयु, पुत्र ।

आयुः[म] (न०)-जीवन काल, जीव-  
नीयक्ति, भोजन ।

आयुक्त(वि०)-नियुक्त, मुफर्रि । पु०-  
हिष्टी, प्रतिनिधि ।

आयुक्त (३ पु०)-आयचना, मुफर्रि  
करना, लुगना ।

आयुध (४ आ०)-लड़ना, मुकामिला ।  
आयुध(अस्त्री०)-इधियार, अस्त्र ।

आयुर्वेद(पु०)-चिकित्साशास्त्र, ऐना  
शास्त्र जिस में रोगों का निदान  
और चिकित्सा घतलाई गई हो ।

आयुप् (न०)-जीवन ।

आयुष्काम (वि०)-आरोग्य चाहने  
वाला । [ अवस्था का ।

आयुष्मान् [उभय]-दीर्घजीवी, बड़ी  
आयुष्प(वि०)-हितकर, उच्च बढ़ाने,  
वाला । [ तट, किनारा ।

आयोग(पु०)-फूल, पद्म आदि भेट,  
आयोगव(पु०)-शूद्र से वैश्य की स्त्री  
में उत्पन्न हुई सन्तान ।

आयोजन(न०)-यत्न, उद्योग, तरकीब  
सामान इकट्ठा करना ।

आयोधन(न०)--युद्ध, लड़ाई, युद्धस्थल  
आर(मस्त्री०)--पीतल, लोहे का कंज,  
कोना, मधुरास फल । [ भूषण ।

आरकूट(अस्त्री०)--पीतल, पीतल का  
आरट(पु०)-अभिनयकर्ता ।

आरह(पु०)-हिरात प्रदेश ।

आरहग(पु०)-अर्धरी घोड़ा ।

आरणि(पु०)-गर्त, भवर ।

आरयक(पु०)-जगली मनुष्य । न०-

आरयक यन्त्रों के फीरे २ अथवा

इस नाम से पुकारे जाते हैं। वि०-  
 जंगल में पैदा हुआ। [ सीधा।  
 भारत(वि०)-रोका हुआ, शरीर,  
 भारत(स्त्री०) उपरम, ठहराव, निवृत्ति  
 आरग(पु०)-एक घोड़े की गाँड़ी।  
 आरुघ(वि०)-आरम्भ किया हुआ।  
 आरम्भ(१ आ०)-आरम्भ करना, शुरू  
 करना, प्राप्त करना, प्रारम्भ।  
 आरम्भ(पु०)--साहसी मनुष्य।  
 आरम्भ(स्त्री०)--साहस, खेल, नाच,  
 नटों की क्रीड़ा।  
 आरम्भ(पु०)शुरू, उद्योग, भूमिका,  
 काम, तैयारी, यत्न, जल्दी, यथ,  
 अहङ्कार।  
 आरम्भ(पु०)--ध्वनि, आवाज़, शब्द।  
 आरम्भ(स्त्री०)-छोटे का एक अस्त्र जो  
 चमड़ा फाड़ने में काम आता है।  
 आरम्भ(अ०)--निश्चय, प्रायः दूर।  
 आरम्भ(५, १० प०)--खुश करना, संतुष्ट  
 करना, पूजना।  
 आरम्भ(न०)-पूजा, चपामना, संस्तुति,  
 याचना, प्रार्थना।  
 आरम्भ(स्त्री०)--मेधा, पूजा।  
 आरम्भ(वि०)-मनोहर। पु०-खुशी,  
 वाटिका, उपवन।  
 आरम्भ(पु०)-गाम्जान, आली।  
 आरम्भ(पु०)-वालशाल, रसोइया।  
 आरम्भ(२ प०)-चिल्लाना, प्रशंसा करना।  
 आरम्भ(पु०)-सूअर, केरुहा।  
 आरम्भ(१ आ०)-पसन्द करना।  
 आरम्भ(पु०)-दहालक अपि, यम,  
 येनतेय।

आरुघ्(३ उ०)-रोकना, दूर हटाना।  
 आरुघ्(१ प०)-चढ़ना, प्राप्त करना।  
 आरुघ्(वि०)-उन्नत, चढ़ा हुआ,  
 घेठा हुआ।  
 आरुघ्(न०)-रोगाभाव, तन्दुरुस्ती।  
 आरुघ्(पु०)-अन्य में अन्य का धर्म  
 प्रतीत होना-जैसे रस्सी में सर्प  
 का ज्ञान, संस्थापन, कल्पना,  
 धनुष झुलाना।  
 आरुघ्(न०)-आरुपित करने का  
 कार्य, कायम करना, लगाना।  
 आरुघ्(वि०)-लगा हुआ, बिंचा  
 हुआ, रक्खा हुआ।  
 आरुघ्(पु०)-नधार, चढ़ना, ऊँचा  
 चढ़ना, ऊँचा स्थान, दर्प, पहाड़,  
 लम्बाई।  
 आरुघ्(न०)-चढ़ाई, चढ़ना, सीढ़ी।  
 आरुघ्(न०)-सरलता, सीधापन, शुद्ध-  
 हृदयता। [ विगाधी।  
 आरुघ्(वि०)-दुःखी, रोगी, सताया हुआ,  
 आरुघ्नाद(पु०)-कठणज्ञानरु आवाज़,  
 आरुघ्धनि, रीने की आवाज़।  
 आरुघ्(न०)-खी, का रज, स्त्रीपुष्प,  
 पुष्प।  
 आरुघ्(स्त्री०)-घोड़ी।  
 आरुघ्(स्त्री०)-श्रुतमती स्त्री।  
 आरुघ्(वि०)-घन मन्वन्धी, पण्डित,  
 वास्तविक, सच्चा। [युक्त।  
 आरुघ्(वि०)-तर, गीला, मुलायम, रस-  
 आरुघ्(न०)-अदरक।  
 आरुघ्(वि०)-झापा।  
 आरुघ्(वि०)-ग्रेष्ठ, पूजायोग्य, मान-

नीय, शरीर, उदारचरित, कुलीन ।  
 पु०-आयंजाति में उत्पन्न पुरुष,  
 द्विजाति, प्रतिष्ठित पुरुष, स्वामी,  
 प्रभु, गुरु, मित्र ।  
 आयंक(पु०)-श्रेष्ठ मनुष्य, पितरमह,  
 नाना, माननीय ।  
 आयंपुत्र(पु०)-पति, गुरु का पुत्र,  
 'नाटक में स्वामी और भर्ता के  
 लिये प्रयुक्त होता है ।  
 आयंमह(पु०)-एक ज्योतिषी का नाम  
 जिसने वीजगणित विद्या को  
 निकाला । [ लमैत ।  
 आयंमित्र(वि०)-श्रेष्ठ, पूजनीय, जयित-  
 वार्मा(स्त्री०)-पार्यंती, सासू, एक  
 छन्द, श्रेष्ठ स्त्री ।  
 आयंयर्त(पु०)-विन्ध्याचल और  
 हिमालय के बीच का प्रदेश, पूर्व  
 समुद्र से लेकर पश्चिम समुद्र तक  
 के मध्य का देश ।  
 आयं(वि०)-जी ऋषि का ह्यो, वैदिक,  
 पवित्र, मानानुषी । पु०-एक प्रकार  
 का विवाह जिस में कन्या का  
 पिता दो या चार गी वर्षक से  
 पदण करता है । [ नीय ।  
 आयंय(वि०)-ऋषि का, योग्य, मान-  
 आवंत(पु०)-जिन, जिन सिद्धान्तों के  
 भागने वाला ।  
 जाल(वि०)-पड़ा, विरतीर्ण । अस्त्री०-  
 झरताल, धोखा, फरेव ।  
 जालयम(न०)-भरपाव ।  
 जालप्(१ पु०)-बातालाप करना ।  
 जालम्(१ मा०)-छूना; प्राप्त करना;  
 पकड़ना ।

जालभन(न०)-स्पर्श; छूना, पाना ।  
 जालम्भ(१ मा०)-भुक कर सहारा  
 लेना; पकड़ना, आश्रित होना ।  
 जालम्भ(पु०)-अवलम्ब; आश्रय ।  
 जालम्भन(न०)-पूर्ववत् ।  
 जालम्भित(वि०)-आश्रित; लटका हुआ  
 जालम्भ(पु०)-स्पर्श, छूना ।  
 जालम्भन(न०)-पूर्ववत् ।  
 जालय(पु०)-गृह, छिपने का स्थान ।  
 जालवाल(न०)-यज्ञ की जड़ का  
 बांधला ।  
 जालस्य(वि०)-सुस्त, उदासीन । न०--  
 सुस्ती, यत्नरभाव ।  
 जालान(न०)-हाथी के बांधने का  
 यन्त्र वा रस्सी, बेंड़ी, जङ्गीर ।  
 जालाप(पु०)-संभाषण, बातचीत,  
 गुरुगुरु, संगीत के सात स्वर ।  
 जालाय(पु०)-तूँबी । [ पंखा ।  
 जालायर्त(पु०)-कपड़े का बना हुआ  
 जालि(वि०)-सुस्त; निकम्मा; ईमान-  
 दार । पु०-विच्छू; मक्खी ।  
 जालि-ली(स्त्री०)-पुछ; जाति; पंक्ति;  
 कतार; समवयस्क स्त्री ।  
 जालिष्(६ पु०)-छिछना; छानना  
 खींचना; मुसुबरी करना; खाका  
 खींचना । [ गिछना ।  
 जालिङ्गन(न०)-प्रेम पूर्णक आपस में  
 जालिङ्गर(पु०)-पानी भरने का गटका ।  
 जालिप्(६ पु०)-छेपना करना; मलना ।  
 जालिङ्गन(न०)-मकान में सफेदी  
 करना । [ हुआ; हात ।  
 जालीद(वि०)-छाया हुआ; चाटा

आलोचनक(न०)--ऐसी धातु जो अग्नि के खगते ही पिघल जाय जैसे रांग, शीशा ।

आलेख(पु०)-लेख; दस्तावेज; खत ।

आलेखन(न०)--लिखना, कुन्दा करना; हाइड्र ।

आलेखनी(स्त्री०)--बुद्धि; पैसिल ।

आलेख्य(न०)-विषय, मूर्ति, कृत्या ।

आलोक (१ आ०, १० पु०)-देखना, विचार करना, सोचना । [ अभ्यास ।

आलोक(पु०)-प्रकाश, दर्शन, नजारा,

आलोकन(न०)-पूर्ववत् ।

आलोकित(वि०)-देखा हुआ, दृष्ट ।

आलोच(१ आ०, १० उ०)-देखना, विचारना, सोचना । [ धाता ।

आलोचक(वि०)-गुरुदोष का बताने आलोचना (स्त्री०)-देखना; विचार करना; गुण दोष का प्रकट करना ।

आय (१ उ०)-बसेरना, इधर उधर डालना । [ घनाना, घाली ।

आयपन(न०)-वेत में धीज डालना, छौर

आयय (पु०)-आमद, आने वाला ।

आयस्क (न०) परदा, ढाँकने का वस्त्र ।

आयस्क (न०)-छिपना, ढाँकना, छिपाना, अज्ञान का पर्दा, वेदान्तमत में अविद्या के कारण आत्मज्ञान का न होना ।

आयजित(वि०)-मुका हुआ, प्रक्षिप्त, आहत ।

आयत्त (पु०)-पानी का स्वर्य चकर काटना, मँथर । न०-मासिक धातु ।

आयत्तक (पु०)-पूर्ववत् ।

आयत्तन (न०)-चकर काटना, घार ३ सौटना, अध्ययन ।

आयत्तित (वि०)-अभ्यस्त, लौटा हुआ ।

आयदय (न०)-जूरत, अनिवार्य कार्य ।

आवश्यक (वि०)-जरूरी, अनिवार्य ।

आवश्यकता (स्त्री०)-जूरत, अनिवार्य कार्य । [ होना ।

आवस (१ पु०)-रहना, बसना, मशगूल

आवसति (स्त्री०)-रात्रि, मध्यरात्रि ।

आवसथ (पु०)-घर, निवासस्थान, ग्राम, विग्रामस्थान ।

आवसित (वि०)-निश्चित, समाप्त ।

आवह (१ पु०)-ज्ञाना, लेजाना ।

आवाप (पु०)-घाने का धीज, आलवाल, अन्न भरने का घरेल ।

आवापन (न०)-हजामत बनाना, चर्खा ।

आवास (पु०)-घर, कमरा ।

आवाह (पु०)-विवाह करना ।

आवाहन (न०)-निमन्त्रण; बुलावा । उपासनार्थ देवता का बुलाना ।

आवाल (न०)-आलवाल ।

आविक (न०)-भेड़के घालों से बना हुआ कम्बल; कनी कपड़ा । वि०-ऊनी ।

आविग्न (वि०)-दुःखी, सन्तप्त ।

आविद् (धा०)-छात कराना, रिपोर्ट करना, बतलाना ।

आविद्ध (वि०)-बिंधा हुआ, पराजित ।

आविल (वि०)-गन्दा, अपवित्र, दुंधियाला

आविशु(दंड०)-प्रेम करना, कन्ने में लाना ।

आविष्ट (वि०)-प्रविष्ट, भूतादि से दबाया गया; तत्पर ।

आधी, स्त्री०)--अनुमती स्त्री, गर्भ-वती स्त्री ।

आधीत(वि०)-पहरा हुआ, धारण किया हुआ, गत ।

आधुक(पु०)-पिता, जनक [ नाटकमें ]

आधुत(पु०)-मणिनीपति [ नाटकमें ]

आधू (५, ८, १० उ०)-ढकना, छिपाना,

घेरना, पसन्द करना ।  
 आवृत्त(वि०) ढका हुआ, गुप्त, घिरा हुआ  
 आवृत्त(वि०) -अभ्यस्त, अधीन, घटा  
 हुआ । [ लिपाना ।  
 आवृत्ति (स्त्री०)--आवरण, ढकना,  
 आवृत्ति (स्त्री०)--अभ्यास, बार २  
 गुणना, लौटना ।  
 आवृष्टि(स्त्री०)--घौलार, घूँदावादी  
 आवेग(पु०)--दुःख, चयराहत, जल्दी,  
 चिन्ता, जोश ।  
 आवेश(पु०)--अहंकार, हट, दुराग्रह,  
 क्रोध, भूत प्रेतका चढना, प्रवेश ।  
 आवेशन(न०)--कारखाना, घर, प्रवेश,  
 क्रोध । [ मान, अतिथि ।  
 आवेशिव(वि०)-अनाधारण । पु० सेह-  
 आवेष्टक(पु०)-सक्तील, घेरा, माघीर  
 आवेष्टन(न०) यण्डल बनाना, चारो  
 तर्फ से घाघना, घेरा, बैठन, लि-  
 काफा ।  
 आवेष्ट(पु०)-छेदना, जड़नी करना,  
 गोली चलाना, छेदना ।  
 आवेश(वि०)-खाने वाला ।  
 आवेश(१भा०)--आश करना, इच्छा  
 करना, दूमा देना, तारीफ करना,  
 भयभीत होना ।  
 आवेशा(स्त्री०) इच्छा, उम्मेद, शक,  
 तमालीपुलाव ।  
 आवेशित(वि०)-इच्छित, वसित ।  
 आवेश(वि०)--उम्मेदवार, इच्छुक ।  
 आवेशि(स्त्री०) शक्ति, पायलिपत ।  
 आवेश(१भा०) शक करना, उम्मेद  
 करना, आशका करना ।

आशका(स्त्री०)-सहाय, सकोप, दर ।  
 आशकित(वि०) सदिग्ध, भययुक्त ।  
 आशय(पु०)--अभिप्राय, मतलब, सोने  
 का कमरा, घर, अभ्युदय, मज्जी,  
 प्रारब्ध, कटहल का वृक्ष ।  
 आशर(पु०)-अग्नि, वायु, राक्षस ।  
 आशय(न०)-सेजी, तीव्रता, आसय ।  
 आशा(स्त्री०) उम्मेद, लम्बी ख्वाहिश,  
 दिशा ।  
 आशावित (वि०)-आशा से भरा  
 हुआ, आशाजनक ।  
 आशाभङ्ग(पु०)-ना-उम्मेदी ।  
 आशादीन(वि०)--ना-उम्मेद ।  
 आशावान्(वि०)-आशा से भरा हुआ  
 आशाम्(२भा०)-दुआ देना, आशी-  
 वाँद, देना, इच्छा करना, आशा  
 करना । [ घेठ भरा हुआ ।  
 आशित(वि०)--खाया हुआ, भुक्त,  
 आशित्वा ] (स्त्री०) हुआ, शुभका-  
 मना ।  
 आशी (स्त्री०) -सपं की धिपयुक्त,  
 दय्द्रा, दुआ, शुभकामना ।  
 आशी(२भा०) सोना, छेदना, रहना,  
 आवेष्ट होना ।  
 आशीवाँद (पु०)-आशीर्वादन, शुभ-  
 कामना, शुभेच्छा ।  
 आशीविष(पु०)-जिस की दाढ़ त धि-  
 प हो अर्थात् नाप ।  
 आशु(वि०)-तेज, जल्द, शीघ्रभावी ।  
 आशुग(वि०) शीघ्रगामी, जल्दीगामी  
 वाला । पु०-वायु; नूपं, तीर ।  
 आशुता(स्त्री०)--जल्दी, तेजी ।

आशुतोष(वि०)--आशुनी से प्रसन्न होने वाला, शिव । [ वाला ।  
 आशुतोष(वि०)--लक्ष्मी से प्रान कराने वाले कुटी [न] (पु०)--पर्वत, पहाड़ ।  
 आशुतोष(न०)--सुखाना, सुखाने का काम ।  
 आशुतोष(न०)--अशुद्धि, अपवित्रता ।  
 आशुतोष(न०)--तात्त्विक, अथवा ।  
 आशुतोष(वि०)--पत्थर का घना हुआ, पथरीला, आशुतिक ।  
 आशुतोष(न०)--आसू, आस का जल ।  
 आशुतोष(अस्त्री०)--आपड़ा, यानप्रस्थियों के घर, मठ, विद्याधियों का वासस्थान, धन, आर्यजीवन के चार विभाग जो ब्रह्मचर्य सहस्रवान् प्रत्य संन्यास नाम से पुकारे जाते हैं ।  
 आशुतिक (वि०)--चार आशुतों में से किसी से सम्बन्ध रखने वाला ।  
 आशुतिक (पु०)--घर, आधार, आशुतिक, जोरावर । [ देने वाला ।  
 आशुतिक (वि०)--दूधों को आशुतिक आशुतिक(पु०)--दन्दि, अग्नि ।  
 आशुतिक (पु०)--चरना, नदी, अपराध ।  
 आशुतिक(१८०)--आशुतिक ग्रहण करना ।  
 आशुतिक(स्त्री०)--तलवार की धार ।  
 आशुतिक(वि०)--आशुतिकप्रसन्न, धरणागत आशुतिक(१८०)--सुनना, स्वीकार करना, प्रतिष्ठा करना ।  
 आशुतिक(वि०)--अंगीकृत, स्वीकृत ।  
 आशुतिक(पु०)--मुख्यन्ध, गहरा लगाव, आलिंगन ।

आशुतिक(वि०)--चोड़े का, रथ वा गाड़ी जिसमें चोड़े जुते ।  
 आशुतिक(पु०)--माईस, मालोतरी आशुतिकप्रसन्न पु०--एकत्रयि का नाम आशुतिक (पु०)--आशुतिकदान, दंडाया देना । [ कीन ।  
 आशुतिक(न०)--मरोसा, दंडाया, तस-आशुतिक (पु०)--अनीत का नहीना ।  
 आशुतिक(पु०)--अशुतिकीकुनार, नकुल और सहदेव का नाम ।  
 आशुतिक(अस्त्री०)--चोड़े की एकमंजिल आपाड़ (पु०)--आशुतिक का पहिला मास जो जून वा जुलाई में होता है आशुतिक(स्त्री०)--बड़ा जंगल, बूढ़ा ।  
 आशुतिक [आः] (अ०)--विस्मृति, कौथ, दुःख, अपाकृत का ओषक ।  
 आशुतिक(१,२आ०)--वैठना, छेदना, रहना, आराम करना ।  
 आशुतिक(पु०)--वैठने की जगह, चतुप, राख आशुतिक(वि०)--कसा हुआ, लगा हुआ, मशगूल ।  
 आशुतिक(स्त्री०)--नगाव, प्रेम, अहं, मेहनत, उत्पत्ति ।  
 आशुतिक (पु०)--अभिनिवेश, भोग की इच्छा, अनुरक्ति, सम्बन्ध ।  
 आशुतिक(स्त्री०)--दया का चक्रदार श्लोक अर्थात् बबूला ।  
 आशुतिक (१८०)--आशुतिक, जोड़ना, जकड़ना ।  
 आशुतिक (न०)--हुक, अनुक्ति, फसाव ।  
 आशुतिक (स्त्री०)--मिष्टान, गहरा मेळ, लाभ, प्राप्ति ।

आसद् ( १५० )-नीचे बैठना, पास बैठना, इन्तज़ार करना, समीप आना ।

आसन(न०)-बैठना, बैठने का स्थान, उपवेशन, आराम करना, घीकी ।

आसन्न (वि०)-समीपस्थ, उपस्थित, नज़दीक ।

आसन्द (पु०)-विष्णु या ब्राह्मदेव ।

आसन्दी(स्त्री०)-छोटा कौच, आराम-कुरसी ।

आसध (पु०)-मद्यमात्र, हर एक प्रकार की शराब, सिरका, मशोली औषध ।

आसादन (न०)-सन्निधान, रखना, आक्रमण, सम्मिलन, प्राप्ति ।

आसाधन (न०)-प्राप्ति, पूर्ति ।

आसार (पु०)-जोर की वर्षा, कड़ी, आक्रमण, रसद । [ योद्धा ।

आसिक (पु०)-तलवार चलाने वाला आसिध् ( १५० )-प्रकड़ना, हथालत में करना । [ प्रसव ।

आसुति ( स्त्री० )-शराब निकालना, भाँस (वि०)-देह्य का, भाँस प्रकार के विमर्श में से एक जिस में कन्या कीर्त की जाती है ।

आसुरी ( स्त्री० )-सर्जरीविद्या, राक्षसी । [ नीपना ।

आमेद ( पु० )-सिचन, छिड़काव,

आमेध(पु०)-हिरासत, कैद, हवालात

आमेधा-वसम्-इच्छापूर्वक बार बार प्रवृत्ति, किसी काम को बार बार करना; भले प्रकार सेवा करना ।

आस्कन्द ( १५० )-आक्रमण करना, हमला करना ।

आस्कन्दन (न०)-आक्रमण, हमला ।

आस्तर (पु०)-बिछौना, कूड, कम्बल ।

आस्तरण ( न० )-फैलाव, विस्तर, कम्बल, गद्दी ।

आस्ताव (पु०)-तारीफ़, प्रशंसा ।

आस्तिक ( वि० )-ईश्वरभक्त, वेदानुयायी, शुद्धाचारी ।

आस्तिकता (स्त्री०)-शुद्धाचार, वेद-विहित आचार । [ पुत्र ।

आस्तीक (पु०)-जरत्कास मुनि का

आस्तीण ( वि० )-विस्तीर्ण, फैला हुआ ।

आस्था ( स्त्री० )-ध्यान, चिन्ता, जाया, भक्ति, विश्वास, स्थिति ।

आस्थान ( न० )-स्थान, मुनिपाद, समूह, चिन्ता, विद्यामस्थान ।

आस्थायी ( स्त्री० )-लेश्वरहाल, वक्तृताग्रह ।

आस्थिति (स्त्री०)-दशा, हालत ।

आस्मान ( न० )-पवित्रता, गहाने का जल ।

आस्पद (न०)-स्थान, जगह, कतवा, पद, कारीदार, सहारा ।

आस्पध (स्त्री०)-रहक, चढ़ाऊपरी ।

आस्फालन (न०)-रगड़ना, पछाड़ना, पिचनना, दर्प ।

आस्फोट (पु०)-अकं घुस, डग टोकना, कांपना ।

आम्नाक (वि०)-दुगारा, अपना ।

आम्ब (न०)-जुस, चेहरा, जयाहा ।

आस्यपत्र (न०)-कमल ।  
 आस्यलांगल (पु०)-कुत्ता, मूँकर ।  
 आरपन्दन (न०)-बहना ।  
 आस्था(स्त्री०)-स्थिति, आसन, निवास ।  
 आस्थासव (पु०)-चूक, छार, मुँह का पानी ।  
 आस्र (न०)-सूत, रक्त ।  
 आस्रप (पु०)-सूँखवार, राजस ।  
 आस्रव (पु०)-दुःख, कष्ट, बहना, अपराध ।  
 आस्रव (पु०)-जड़न, छार, कष्ट ।  
 आस्रव (१आ०)-चखना, जायका लेना । [ लेना ।  
 आस्वाद (पु०)-रस, स्वाद, स्वाद ।  
 आस्वादन (न०)-जायका उठाना, खाना ।  
 आह (अ०)-पिछार, सख्ती, हुक्म, प्रेषण आदि का बोधक ।  
 आहत (वि०)-झट, ताड़ित, जामा हुआ । न०-पुराना या नया कपड़ा ।  
 आहति (स्त्री०)-घघ, आगति, गुणन ।  
 आहन् (२प०)-मारना, चीट करना, पीटना ।  
 आहव (न०)-युद्ध, छड़ाई, यज्ञ, होम ।  
 आहार (पु०)-भोजन, खाना, आहरण, खाना ।  
 आहार्य (वि०)-खाने के योग्य, आगन्तुक, ठपाप्य, यन्त्रावली । पु०-बन्ध । न०-उखाड़, वस्त्र, नाटक का पोशाक गहने आदि सामान ।  
 आहार्य(पु०)-अग्नि, लड़ाई, युलाना, चौकछा ।

आहित (वि०)-स्थापित, रक्ता हुआ, टिकाया गया ।  
 आहितुविहक (पु०)-सपेरा, सांप पकड़ने वाला ।  
 आहुत (वि०)-यज्ञाग्नि में डाला हुआ । न०-आतिथ्यसत्कार ।  
 आहुति (स्त्री०)-यज्ञ के समय साम-घी और घी का अंश बार बार मंत्र पढ़कर डालना । [ हुआ ।  
 आहुत (वि०)-निमन्त्रित, बुलाया ।  
 आह (१प०)-छाना, जाकर खाना, देना, बापिस पाना, खाना, बोलना, पुकारना ।  
 आह्वेय (वि०)-सर्वसम्बन्धी ।  
 आहो (अ०)-प्रश्न, विकल्प, विचार आदि में प्रयुक्त होता है ।  
 आहोपुसपिका (स्त्री०)-अहंकार से उत्पन्न हुआ अपनी बड़ाई का स्थान ।  
 आहोस्विद् (अ०)-आहो के समान ।  
 आन्ह(वि०)-रोजाना, दिन में किया हुआ ।  
 आन्हिक (वि०)-रोजाना, प्रत्येक दिन का । न०-प्रत्येक दिन किये जाने वाला धार्मिक कृत्य, भोजन, एक दिन का पाठ ।  
 आह्लाद(पु०)-खुशी, हर्ष ।  
 आह्वय(पु०)-नाम, जुमा ।  
 आह्वान (न०)-आकारण, आहुति, बुलाना, निमन्त्रण ।  
 आह्वय(पु०)-नाम, मन्मथ, निमन्त्रण ।  
 आह्वयक(पु०)-दूत, बुलावा देने वाला ।



## इ

- इ-देवनागरी और संस्कृत वर्णमाला का तीसरा अक्षर जो स्वर है ।  
 इ (पु०)--कासदेव । अ०--कोप, दया, तिरस्कार, आश्चर्य, रोद, सम्बोधन तथा दुःख का बोधक ।  
 इ (१. २५०)--आना, पहुँचना, छोटना, गुजरना ।  
 इकट (पु०)--सरसों का छद्म रूप तन ।  
 इलु (पु०)--गन्ना, भीठेरस का बीड़ा, इच्छा ।  
 इलुताइ (अस्त्री०)--काश और सुन्नत का नामक दो भेद ।  
 इलुबुट (पु०)--ईस काटने वाला या काट कर एकत्रित करने वाला ।  
 इलुपत्र (पु०)--उधार, चरी, जिस के पत्ते ईल के समान होते हैं ।  
 इलुनेल (पु०)--जिआयसीस, मधुमेह का रोग ।  
 इलुमन्त्र (न०)--रस निकालने की मशीन, कोरू ।  
 इलुर (पु०)--ताउमलाभा, ईस ।  
 इलुरच (पु०)--गाने का रस ।  
 इलुविका (पु०)--अक्षर, मिठाई, गुह ।  
 इलुमार (पु०)--गुह, गाने का स्वर ।  
 इलुताइ (पु०)--वैद्यकृत मनु का पुत्र जो मृत्युश का पहिलाराजा था ।  
 इलु-इलु (१५०)--आना, हरकत करना ।  
 इलु (१५०)-पुर्वपत् ।  
 इल्लिम (वि०)--दिना हुआ, घटा हुआ ।  
 न०--मनुष्य, इगारा, मनोविश्राम, मनोविकार को प्रकट करने

वाली शरीर की चेष्टा, अभिप्राय ।

- इलु (पु०)--रोग, बीमारी ।  
 इलुव-उ (पु०)--हिगोट नामक वृक्ष ।  
 इलिकिल (पु०)--तालाब, कीचड़ ।  
 इल्लक (वि०)--चाहने वाला, इवा-हिशमन्द ।  
 इल्लता (स्त्री०)--सूयादिश, मर्जी, चाहा ।  
 इल्लतादान (न०)--इल्लतापूर्ति, चाह को पूरी करना ।  
 इल्लतानियुति (स्त्री०)--इल्लतापूर्ति, इल्लता का पूर्ण होना, साक्षात्कृत विषयों के उदासीनता ।  
 इल्लतु-क (वि०)--क्याहिशमन्द, चाह करने वाला । [स्पति] ।  
 इल्लय (पु०)--शिक्षक, परमात्मा, बृह-इल्लय (स्त्री०)--पद्म, गी, प्रतिमा, दान ।  
 इल्ल (१५०)--आना, गुलती करना, बहना ।  
 इल्ल (स्त्री०)--आहुति, प्रायश्चा, पुण्यी, घरमात, भोजन ।  
 इल्ल (स्त्री०)--पुण्यी, धानी, आहुति, नाड़ीसेद, दुर्गा, स्वर्ग, गी ।  
 इल्लविका (स्त्री०)--तलछा ।  
 इल्लिका (स्त्री०)--पुण्यी, भूमि ।  
 इल्ल (२५०)--आना ।  
 इल्ल (वि०)--गया हुआ, स्मृत, प्राप्त ।  
 इल्लर (वि०)--नीच, घागर, दूसरा, छोटे दर्जे का ।  
 इल्लरतः--तु (अ०)--अन्यत्र, अन्यथा ।  
 इल्लरतर (वि०)--आपस में, अन्योन्य, परस्पर ।  
 इल्लरतः (अ०)--भीर दिग्, जगले दिग् ।

इतसु[ः] (अ०)—यहां से, इस ओर से, अब से ।

इतस्ततः(अ०)—यहां वहां, इधर उधर ।  
इति (अ०)—हेतु, अभिप्राय, प्रकार, समाप्ति, निकटता, प्रारम्भ, मत आदि अर्थों का बोधक, इस तरह, इस प्रकार ।

इतिकथा(स्त्री०)—निरर्थक बातचीत ।  
इतिवर्तक्य(वि०)—अवश्य करने लायक, अनिवार्य वर्तक्य ।

इतिवत्(अ०)—इस ही प्रकार से ।  
इतिहास(पु०)—बीती हुई बातों का वर्णन करने वाली पुस्तक, पुराने वृत्तान्त का प्रकाशक, तथारीख ।  
इत्थम् (अ०)—इस प्रकार से, इस रीति से ।

इत्थर्पं(पु०)—सार, सत्त्व, अभिप्राय ।  
इत्थं(वि०)—प्राप्तियोग्य । [क्रिये ।  
इत्थर्घम्(अ०)—इस अभिप्राय से, इस इत्थादि (वि०)—इन २ वातों वा वस्तुओं की आरम्भ में लेकर, वगैरा ।

इत्थुक्त(त०)—सूचनार्थ, रिपोरेंट ।  
इदम्(सर्व०)—वक्ता के समीप की वस्तु का बोधक, यह ।  
इदम्(अ०)—यहां, मत्र, अब ।  
इदन्तन(वि०)—नीजूदा, क्षणिक ।  
इदानीम् (अ०)—अब, इस दशा में, अभी ।  
इदानीन्तन(वि०)—नीजूदा, क्षणिक, वर्तमान काल का ।  
इह(न०)—धूप, प्रकाश । वि० निर्मल ।

इधम्(न०)—लकड़ी, समिधा, ईधन ।  
इन्दिरा (स्त्री०)—विष्णु की स्त्री, लक्ष्मी ।

इन्दो[न्दि] वर(न०)—नीला कमल ।  
इन्दु(पु०)—चन्द्रमा, कापूर, मृगशिर नक्षत्र, एक की संख्या ।

इन्दुकमल(न०)—सफेद कमल ।  
इन्दुकला (स्त्री०)—चन्द्रमा की कलाओं में से कोई ।

इन्दुकान्त (पु०)—चन्द्रकान्त मणि, केतकी, रात्रि ।

इन्दुग-पुत्र(पु०)—चन्द्रमा का पुत्र बुध ।  
इन्दुजनक(पु०)—समुद्र, अग्नि ऋषि ।  
इन्दुमा(स्त्री०)—नर्मदा नदी ।

इन्दुमणि(पु०)—चन्द्रकान्त मणि ।  
इन्दुमती(स्त्री०)—पूर्णिमा, अजराज की पत्नी । [कला ।

इन्दुलेखा(स्त्री०)—सोमलता, चांद की चन्द्रगोहक-खीह(न०)—चांदी ।  
इन्दूर(पु०)—बूझा, मूयकी ।

इन्द्र(पु०)—देवताओं का स्थानी अर्थात् परमेश्वर, प्रभु, वर्षा का अधिष्ठाता देव, सर्वोत्तम, महत्प्रभ ।

इन्द्र(न०)—सभागृह, हाल ।  
इन्द्रकील(पु०)—मन्दर पर्वत, चहान ।  
इन्दुकुञ्जर(पु०)—मेरावत हस्ती ।

इन्द्रगिरि(पु०)—महेन्द्र पर्वत ।  
इन्द्रगोप(पु०)—घोरखट्टी, तीज ।  
इन्द्रवाल(न०)—पुद्ग से एक प्रकार का दाव पेंच, छत्र, घोड़ा, गाया ।

इन्द्रमालिक(वि०)—घोरेवाल, अघा-स्तविक । पु०—छलिया, मदारी ।

इन्द्रजित्(पु०)-इन्द्र की जीतने वाला  
रावण का पुत्र मेघनाद ।

इन्द्रनील(पु०)-नीलम, पन्ना ।

इन्द्रपत्नी(स्त्री०)-इन्द्र की स्त्री,  
इन्द्राणी, शची ।

इन्द्रप्रस्थ(ग०)-यमुना के तट पर एक  
नगर जिसे पाण्डवों ने बसाया था  
यज्ञमाम में जो देहली कहलाता है ।

इन्द्रलोक(पु०)-देवताओं का लोक,  
स्वर्ग ।

इन्द्रवज्रा(स्त्री०)-एक छन्द का नाम ।

इन्द्रवल्ली(स्त्री०)-पारिजात वृक्ष ।

इन्द्रवृक्ष(पु०)-देवदारु वृक्ष ।

इन्द्रशत्रु(पु०)-इन्द्र जिस का शत्रु है  
'या इन्द्र का जो शत्रु है, पृथाशुर ।

इन्द्रसुत(पु०)-भर्जुन, गयन्त ।

इन्द्राणी(स्त्री०)-शची, इन्द्र की स्त्री,  
बड़ी इलायची ।

इन्द्रायुध(ग०)-इन्द्र का धनुष जो  
वर्षा के पशुपात आकाश में धनुषा-  
कार दिखलाई देता है ।

इन्द्रासन(ग०)-इन्द्र का सिंहासन,  
कोई सिंहासन ।

इन्द्रिय(ग०)-चिह्न, ज्ञान और कर्म के  
साधन जैसे नेत्र, कर्ण आदि ।

भगुम्य के शरीर में पाच ज्ञाने-  
न्द्रिय और पाच कर्मेन्द्रिय हैं ।

'यथा-नेत्र, कर्ण, नासिका, त्वचा  
और रचना ये ज्ञानेन्द्रिय और  
हाथ, पाय, वाणी, गुदा, और  
उपस्थ ये कर्मेन्द्रिय हैं ।

इन्द्रियधाम(पु०)-पांच कर्मेन्द्रिय,

इन्द्रियसमूह ।

इन्द्रियनिग्रह(पु०)-इन्द्रियदमन ।

इन्द्रियागोचर(वि०)-जो दिखाई न  
दे, जो अनुभव न किया जा सके ।

इन्द्रियायतन(ग०)-इन्द्रियों का निवास-  
स्थान अर्थात् शरीर ।

इन्द्रियाराम(वि०)-इन्द्रियलोलुप,  
विषयों में फसा हुआ ।

इन्धु(भ्रा०)-जलाना, आग लगाना,  
रोशन करना ।

इन्धु(पु०)-ईधन, परचाटना । [ काष्ठ ]

इन्धन(ग०)-आग रोशन करना, ईधन,

इन्धु(द्व०)-जाना, पहचना, घेरना ।

इभ(पु०)-हाथी, ब की सहाय ।

इभकणा(स्त्री०)-गजपिप्पली ।

इक्षतिमीलिका(स्त्री०)-चतुराई, सभी-  
दगी, मित्रजा, भाग ।

इभपोत(पु०)-दायी का बरवा, पोता ।

इभारि(पु०)-सिंह, शेर ।

इम्प(वि०)-धनवान्, अमीर । पु०-  
राजा, हाथीवाग, शत्रु ।

इम्पा(स्त्री०)-हथिनी ।

इयत्(वि०)-इतना, महा तक ।

इयत्ता(स्त्री०)-खेतर, हट्ट, परिमाण,  
गिनती ।

इरु(द्व०)-जाना ।

इरण(ग०)-मरुभूमि, यगर भूमि ।

इरम्भद(पु०)-चिक्छी, घाढधानल ।

इरा(स्त्री०)-घाणी, सरस्वती, पृथ्वी,  
जल, सुरा ।

इरावती(स्त्री०)-रायी नदी; रुद्र की  
स्त्री दुर्गा ।

इरावान्(पु०)-समुद्र, राजा, बादल ।  
 इरिण(न०)-यंजरभूमि, निराश्रय ।  
 इरेश (पु०)-राजा, भूपति, वरुण,  
 विष्णु, गणेश ।  
 इर्वारु-सु (वि०)-हिसक, नाशक ।  
 अवली०-ककड़ी ।  
 इल् ( इप०, १० व० )-जाना, सोना,  
 फैकना, एक जगह खड़े रहना ।  
 इलविला(स्त्री०)-कुथेर की माता जो  
 पुत्रस्त्य मुनि की कन्या थी ।  
 इला (स्त्री०)-भूमि, गौ, बाणी ।  
 इलिका (स्त्री०)-भूमि, पृथिवी ।  
 इली (स्त्री०)-छोटों सलवार ।  
 इल् (१ प०)-फैलना, व्याप्त होना ।  
 इय (अ०)-चनान, मानिन्द, उत्प्रेक्षा,  
 जानी, घोड़ा ।  
 इप् (६ प०)-चाहना, इच्छा करना ।  
 इप् ( वि० )-तीव्रगामी, इच्छुक ।  
 इये (पु०)-आश्विन मास, यलवान् ।  
 इयित ( वि० )-तीव्र, आन्दोलित,  
 प्रेषित ।  
 इयु ( पु० )-याण, धका अङ्क ।  
 इयुक ( वि० )-तीर के समान ।  
 इयुधि ( पु० )-तरकस, याण रखने का  
 घर ।  
 इष्ट ( वि० )-इच्छित, मिष्ट, प्रसन्द,  
 पूजित । पु०-प्रेमी, पति, मित्र, प्र-  
 पट वृत्त, विष्णु, यज्ञ । न०-इच्छा,  
 सहकार ।  
 इष्टका(स्त्री०)-इंष्ट, पक्का हुआ मिट्टी  
 का टुकड़ा ।  
 इष्टदेव(पु०)-मित्रदेवता, आराध्यदेव ।

इष्टापूर्त ( न० )-छोकोपकारी कार्पों  
 का सम्पादन ।  
 इष्टि (स्त्री०)-प्रार्थना, इच्छा, अभि-  
 लषित वस्तु ।  
 इष्टिपथ (पु०)-राक्षस, असुर, कलस ।  
 इष्टु (स्त्री०)-इच्छा, इवादिश ।  
 इप्प ( पु० )-धर्मगुरु ।  
 इप्पचन ( न० )-धनुष् ।  
 इइ ( अ० )-यहां, इस स्थान में, इस  
 लोक में, इस देश में, अग्र, इस  
 समय ।  
 इइफाल (पु०)-वर्त्तमान जीवन ।  
 इहतन (वि०)-इस लोक का ।  
 इहामुत्र ( अ० )-यहां और वहां, इस  
 लोक में और परलोक में ।

ई ( स्त्री० )-विष्णु की स्त्री लक्ष्मी ।  
 पु०-कामदेव, अ०-निराश्रयता, क्रोध,  
 खेद, दया, कष्ट और सम्बोधन  
 इन अर्थों का बोधक ।  
 ई (४ आ०)-जाना । (२ प०) जाना,  
 चमकना, इच्छा करना, फैकना,  
 खाना, सांगना ।  
 ईत् (१ आ०)-देखना, विन्ता करना,  
 खयाल करना ।  
 ईत्तक ( पु० )-वर्त्तमान, द्रष्टा ।  
 ईत्तय(न०)-देखना, दृष्टि, दृश्य, वस्तु ।  
 ईत्तजिरु(पु०)-उद्योतिपी, रश्माळ ।  
 ईत्ता (स्त्री०)-दृश्य, मद्रगारा ।  
 ईत्तिका (स्त्री०)-आय, दृष्टि, नजर ।  
 ईत् (१प०)-हिउना जुलना, चलना ।

ईहू (२भा०)-प्रशंसा करना, चिनय करना, प्रायश्चा करना ।

ईडा (स्त्री०)-तारीफ, सराहना ।

ईति (स्त्री०)-उपद्रवविशेष, मनुस्मृति

में खेती को हानि पहुंचाने

वाली ई इतियां गिनवाई हैं,

जैसे-"मतिवृष्टिरनायतिः, शल-

भा मूकः शुक्रः । प्रत्यासत्ताश्च

राजानः, पडता ईतयः स्मृताः" ॥

ईदूक-ई (वि०)-ऐसा, इष्ट के समान,

एतादृश ।

ईदूश-क्ष (वि०)-पूर्ववत् । स्त्री०-ईदूशी ।

ईद्विषत (वि०)-इच्छित, अभिलषित ।

ईर (२भा०, १प०)-जाना, हिलना,

उठना ।

ईरित (वि०)-गत, प्रेषित, कपित ।

ईरै (वि०)-आन्दोलित । पु०-घाजू ।

न०-जलन, घाव ।

ईर्या (स्त्री०)-ईर्या, द्वेष, द्रोह ।

ईर्य (१प०)-इसद करना, जलना ।

ईर्या (स्त्री०)-इसद, जलन, दूसरे

की उन्नति को न सहना ।

ईर्या[र्या]लु (वि०)-दूसरे की उन्नति

को न देख सकने वाला ।

ईश (२भा०)-इकूमत करना, शासन

करना, शक्तिशाली होना, स्वामी

होना ।

ईश (वि०)-स्वामी, शक्तिशाली ।

पु०-प्रभु, पति, रुद्र ।

ईशा (स्त्री०)-आधिपत्य, बहुपन्न,

दुर्गा का मान, असौर औरत ।

ईशान (वि०)-स्वामी, धनी । पु०-

प्रभु, अधिपति, शिव, ११ की

सख्या । [बहुपन्न

ईशिता (स्त्री०)-आधिपत्य, महत्त्व,

ईश्वर (पु०)-प्रभु, स्वामी, पति, पर-

मेश्वर, शिव, कामदेव ।

ईश्वरा (स्त्री०)-दुर्गा, लक्ष्मी ।

ईश्वराधीन (वि०)-स्वामी के अधीन,

प्रभु के आश्रित ।

ईप् (१उ०)-उच भागना, देखना, देना,

यथ करना ।

ईपणा (स्त्री०)-जल्दी, तेजी ।

ईपत (अ०)-कुछ २, थोड़ा २, किञ्चित् ।

ईपत्कर (न०)-बहुत थोड़ा । वि०-

सहजगत्प ।

ईपदुष्ण (वि०)-थोड़ा २ गर्म ।

ईपद्वास (पु०)-मुसकरागा, मुसकराहट ।

ईया (स्त्री०)-इसदरह, फाली ।

ईयिका (स्त्री०)-मुसठिबर का दुरुश,

तीर, हाथी की आंख का गोलक ।

ईयिर (पु०)-अग्नि ।

ईहू (१भा०)-चाहना, चेष्टा करना,

इच्छा करना ।

ईहा (स्त्री०)-इच्छा, उद्योग, चेष्टा ।

ईहावृक (पु०)-भेड़िया ।

ईहित (न०)-चेष्टा । वि०-इच्छित,

चेष्टित ।

उ

उ-नागरी व्यंजनाला का पक्षम अक्षर,

पांचवा स्वर ।

उ (१भा०)-झोर करना, गुजारना ।

उ (पु०)-शिव का नाम, ब्रह्मा । अ०-  
पुकारना, क्रीच, आह्वा । ध्वन,  
स्वीकार, दया आदि अर्थों का  
स्रोत ।

उत्तर (पु०)--उ स्वर, शिव ।

उक्त (वि०)--कहा हुआ, कथित ।

उक्ति (स्त्री०)--कहना, वचन ।

उचय ( न० )--स्तोत्र, -प्रशंसावाक्य,

मानवेद, एक प्रकार का यज्ञ ।

उत् ( १.६३० )--सींचना, बख्खरना, शुद्ध  
करना । [करना ।

उक्षण (न०)--जल सिंचन करके पवित्र

उक्षतर (पु०)--छोटा बैल या सांड ।

उक्षा (पु०)--बैल या सांड ।

उक्षाल (पु०)--धुन्दर ।

उक्ष् ( १.७० )--जाना, हरकत करना ।

उख (पु०)--डैगधी ।

उप्र (वि०)--उल्लूखार, क्रूर, भयानक,

सक्त, निर्दय, क्रोधी । पु०--शिव,

रुद्र । न०--क्रोध, गुस्सा ।

उप्रकाण्ड (पु०)--फरेला, कारखेला ।

उप्रगन्ध (पु०)--गन्धक, जमेली, लह-

सुन, हींग ।

उप्रधारिणी-चंडा (स्त्री०)--दुर्गा ।

उप्रता (स्त्री०)--कठोरता, क्रूरता, क्रोध ।

उप्रदण्ड (पु०)--ये रहम, सहन मिजान ।

उप्रशासन (न०)--कठोर शासन ।

उप्रसेन (पु०)--धृतराष्ट्र का एक पुत्र,

कंस का पिता मथुरा का राजा ।

उष् ( ४५० )--झुंझुं करना, शीकीन

होना, जादी होना ।

उचय(न०)-प्रशंसा, स्तोत्र ।

उचित(वि०)-मुनासिब, ठीक, यथापे,

मामूली, ज्ञात, प्राज्ञ ।

उच्च(वि०)-ऊँचा, उन्नत, बड़ा हुआ,

चलशाली ।

उच्चतर(पु०)-मारियल का वृक्ष ।

उच्चता ( स्त्री० )--ऊँचाई, बड़पन,

उन्नति ।

उच्चन(न०)-मन २ में हँसना । [होना,

उच्चट्(१ पु०)-चना जाना, अन्तर्धान

उच्चटा(स्त्री०)-दपे, उजड़पन ।

उच्चट्ट(वि०)-भयानक, जोरका, क्रोधी ।

उच्चर्(१ पु०)-बोलना, आवाज़ निकालना,

शीघ्र जाना, उठना, उदय

होना ।

उच्चरित(वि०)-कहा हुआ, कथित ।

उच्चल्(१पु०)-खाना होना, उड़ जाना ।

उच्चलन(न०)-खानगी ।

उच्चाटन(न०)-उखाड़ना, अपनी जगह

से अलग करना, उखाटन ।

उच्चार(पु०)--उच्चारण, कथन, गोधर,

मल । [क्षिप्त, विविध ।

उच्चावच(वि०)-कहीं ऊँचा कहीं नीचा,

उच्चा[व]रण(न०)-बोलना, शब्द की

मुँह से निकालना ।

उच्चूह-ल(पु०)-ऊँचे के ऊपर लटका

हुआ कपड़ा, पताका, भंडे के

ऊपर बांधा हुआ आभूषण ।

उच्चैः(अ०)--ऊँचा, ऊपर की ओर,

ऊँचे स्थान में, उभ्या, पूरा २ ।

उच्चैःश्रवस्(वि०)-धधिर, धहिरा । पु०-

शब्द का घोड़ा जो समुद्र में से

निकला था । [ ध्वनि ।

उद्योःस्वर(पु०)-बड़ी आवाज, दीर्घ-  
उच्चैर्घुष्ट(न०)-मनादी, होंडी ।

उद्योस्तर(वि०)-अधिक ऊँचा, उच्चतर ।

उद्योस्तर(वि०)-सब से ऊँचा ।

उच्छुर(१३०)-हिलाना, ऊपर की तरफ  
सड़ना, घड़ना ।

उच्छुरादन(न०)-ढलाना, शरीर पर दुःख-  
स्थित-ब्रह्म मलना ।

उच्छुरासन(वि०)-जो शासन में नरहे,  
कष्ट, खल ।

उच्छुरास(वि०)-शास्त्रविरुद्ध ।

उच्छुरित(वि०)-ऊँची शिखा घाला,  
छपटी घाला ।

उच्छुरित(स्त्री०)-नाथ, मलियामेट ।

उच्छुरित(३३०)-सहाइता, नाथ करना,  
मलियामेट करना । [ पदस्थ ।

उच्छुरित(वि०)-ऊँचा, शरीर, उच्च-  
उच्छुरित(वि०)-जूठा, खाने से सचा हुआ

उच्छुरित(न०)-सकिया, शीर्षोपधान

उच्छुरित(वि०)-सूखा हुआ, मुरकाया ।  
हुआ । [ सूखा हुआ ।

उच्छुरित(वि०)-कुला हुआ, मोटा, ऊँचा,

उच्छुरित(वि०)-अभियन्त्रित, अबाध,  
कमरहित ।

उच्छुरित(पु०)-नाथ करने वाला, नाम  
गितागे वाला ।

उच्छुरित-नम्-छेदन, काटना, विनाश ।

उच्छुरित(पु०)-बचा हुआ भाग, जूठन  
उच्छुरित(न०)-सुखाना, सूखा करना

उच्छुरित(वि०)-ऊँचा, उठा हुआ,  
भटा हुआ, भहंकारी ।

उच्छुरेय(वि०)-पूर्ययत् ।

उच्छुर [ छड़ा ] सम(न०)-बाहिर सांस  
निकालना ।

उच्छुरास(पु०)-सांस का बाहिर निका-  
लना, आद भरना ।

उच्छुर(६५०)-स्थापना, समाप्त करना,  
आपना ।

उच्छुर [ वि ] नी ( स्त्री० )-मालवा  
प्राप्त की प्राचीन राजधानी  
जिस का राजा विक्रमादित्य  
इतिहासकीर्तित है ।

उच्छुरासन(न०)-बध, कष्ट ।

उच्छुर(१५०)-जीतना, जीतकर प्राप्त  
करना ।

उच्छुरीय(१५०)-तरोताज्ञा करना, पुन-  
वार जीवित होना ।

उच्छुरीवन(न०)-दोकारा जिन्दगी ।

उच्छुरम्भ(१५०)-मुँह फाड़ना, मुँह  
फैलाना, चीरना । [ लना ।

उच्छुरम्भ(पु०)-विकास, स्फूर्तन, वि-  
उच्छुरम्भः-उभयम्-पूर्ययत् ।

उच्छुरम्भ(वि०)-चमकीला, चमकदार,  
शानदार, साफ, रूमरूम ।

उच्छुरम्भ(न०)-शेरों, शान, भूमि ।

उच्छुरम्भित(वि०)-चमकीला, स्वच्छ ।

उच्छुर(६५०)-स्थापना, उठाना ।

उच्छुरक(पु०)-बादल, भक्त ।

उच्छुरित ( वि० )-चमकाया हुआ,  
विलिप्त ।

उच्छुर(६५०)-विस्तार चुगना ।

उच्छुरन(न०)-मिलता चुगना, घाज़ा  
ने पड़े हुए दानों की चुगना ।

उट(न०)--पत्नी, घास ।  
उटक(अस्त्री०)--भौं पड़ा, चानप्रस्थियों ।  
। का घर, पर्याशाला ।

उटु (अपु०)--नक्षत्र, तारा, जल ।  
उटुप (अस्त्री०)--नीका, येड़ा ।

उटुपति (पु०)--चन्द्रमा; चरण ।  
उटुम्बर (पु०)--सीहुम्बर, हीजड़ा ।  
उटुमार (वि०)--मयामक, सयसे ऊँचा  
उट्टी (१, ४ भा०)--ऊँचा उड़ना,  
; पायाज करना । [ यात्रा ।

उट्टीन (न०)--आकाश में उड़ना, प्र-  
वेणादि (पु०)--प्रत्ययों का एक संप्रह  
जो 'उण्' से आरम्भ होता है ।  
उत्त (अ०)--संका, विचार, कष्ट जादि  
का बोधक ।

उत्त (अ०)--विकल्प, वितर्क, अत्यर्थ,  
प्रश्न, सन्देह, और, भी, अपवा  
आदि अर्थों का बोधक ।

उत्तय (पु०)--गृहस्पति का बहाराई  
उत्तक (वि०)--उन्नमस्क, जिस का  
मन संशयाक्रान्त हो, उलझेनका  
उत्कट (१ प०)--जारी होना, जूट  
निकलना ।

उत्कट (वि०)--जम्ना, चीड़ा, भयानक,  
अत्यधिक, कठिन । पु०-दारचीनी,  
याण, छाल गन्ना ।

उत्कण्ट (वि०)--तत्पर, उद्यत । [शोक,  
उत्कण्टा (स्त्री०)--येँचीनी, चिन्ता,  
उत्कण्ठित (वि०)--येँचीन, चिन्तित ।  
उत्कम्पन (न०)--आन्दोलन, हिलगन,  
हिलोरा ।

उत्कर (पु०)--कैलास, घासका कैलासा ।

उत्कर्य (वि०)--उच्च, अत्यधिक, आ-  
कर्षक । पु०--उच्चता, अभ्युदय,  
बढ़ोतरी ।

उत्कल (वि०)--अत्यधिक । पु०-उड़ीचा  
प्रदेश, शिकारी, कुली ।

उत्कलिका (स्त्री०)--चिन्ता, उत्कण्ठा  
उत्कषण (न०)--हल जीतना ।

उत्काशन (न०)--आघा देना ।  
उत्कीलित (वि०)--कील जड़ा हुआ,  
नान लगा हुआ ।

उत्कीर्ण (वि०)--उल्लिखित, विंघा  
हुआ, फैला हुआ ।

उत्कुच (पु०)--उटमल, जू ।  
उत्कुल (वि०)--यथ से पतित ।

उत्कूट (पु०)--छाता ।  
उत्कृष् (१ प०)--खींचना, ऊपर उठाना,  
बढ़ाना, टुकड़े २ करना ।

उत्कृष्ट (वि०)--सम्मत, उगाड़ा हुआ ।  
उत्तम, वहित ।

उत्कीच (पु०)--रिश्वत, घूस ।  
उत्कीचक (वि०)--जिमकी रिश्वत  
ही गई हो । पु०-रिश्वत, रिश्वत  
पाने वाला ।

उत्क्रम (४ प०, १ उ०)--ऊपर बढ़ना,  
अतिक्रमण करना, भवशा करना ।

उत्क्रम (पु०)--उल्टा क्रम, उन्नति की  
और बढ़ना, अतिक्रमण ।  
उत्क्रमण (न०)--उपगमन, सयक्रम,  
गमन ।

उत्क्रान्त (वि०)--गत, गिरा हुआ,  
अतिक्रान्त, गत ।

उत्क्रम (१ प०)--चिन्तना, उच्च-



स्वयं से कहना । [ चिल्लाहट ।

चतुष्टय (वि०)--चिल्लाता हुआ । न०-

चतुष्टय ( पु० )--शोरगुल, विज्रसि,

चिल्लाहट ।

चतुष्टय(पु०)--सहकना, बेचैनी, रोग,

१ समुद्रीय रोग ।

चतुष्टय(पु०)--तर होना ।

चतुष्टय(६ पु०)--ऊपर फेंकना, खड़ा

करना, हथामना, धमन करना ।

चतुष्टय( वि० )--ऊपर फेंका हुआ,

आधुत, आश्रित । पु०--धतूरा ।

चतुष्टय(पु०)--ऊपर फेंकना, प्रेषण,

हथाम, धमन ।

चतुष्टय(न०)--ऊपर फेंकना, धंसा,

धमन, धान मलने की लकड़ी ।

चतुष्टय(१ पु०)--खोदना, खोद कर

खाली करना, जड़ से उखाड़ना ।

चतुष्टय(वि०)--उखाड़ा हुआ, खोदकर

खाली किया हुआ । न०--खुदाना,

सूरास, धियम मूनि । [ लता ।

चतुष्टय(६ पु०)--खींचकर बाहर निकालना-

चतुष्टय(पु०)--बाहिर खींचना । [खाली

चतुष्टय(पु०)--शिरोभूषण, काम की

चतुष्टय(वि०)--किनारे से यह निकलने

वाला ।

चतुष्टय(८ पु०)--ऊपर की ओर फैलाना,

उठाने का यत्न करना ।

चतुष्टय(१ पु०)--गर्म करना, फुलसाना,

फुलसाना, धमकना ।

चतुष्टय(वि०)--मस्तक, तपाया हुआ,

क्रोध में भरा हुआ, नहाया हुआ ।

चतुष्टय(वि०)--सब से अच्छा, नकीस,

सब से बढ़िया, सब से बड़ा ।

पु०--विष्णु, धक्का-झेँसे अहम्,

भावाम् । [ गुण ।

उत्तमता(स्त्री०)--उम्दगी, नकी, अच्छा

उत्तमन ( न० )--बेसवरी, हिम्मत,

हारना ।

उत्तमर्ण--र्णिक(पु०)--उधार देने वाला,

नहाजन, धँकर, अधमर्ण का-

प्रतियोगी ।

उत्तमसाहस ( अस्त्री० )--सब से बड़ा

आर्थिक दण्ड, १००० या किन्हीं के

मत में ८०००० पण का दण्ड, बड़ी

दिलेरी ।

उत्तमा (स्त्री०)--उत्कृष्ट स्त्री ।

उत्तमाङ्ग (न०)--मस्नक शिर, शरीर

का सब से अच्छा अङ्ग ।

उत्तम्भ (५,८ पु०) सहारा देना, धामे

रखना, ऊँचा करना ।

उत्तम्भन ( न० )--सहारा देकर ऊपर

धामे रखना ।

उत्तर ( वि० )--अधेर का प्रतियोगी,

ऊँचा, उच्चतर, धाम, प्रधान, उम्दा,

अधिक । पु०--भविष्यत्काल, विष्णु,

शिव, विराट् राजा का पुत्र ।

न०--जवाब अदालत में डीफेंस,

नतीजा, उम्दगी, अधिकता ।

उत्तरकाल (पु०)--जाने वाला काल ।

उत्तकोशला(स्त्री०)--अयोध्या नामक

नगर ।

उत्तरक्रिया (स्त्री०)--दाहकर्म । [भाग]

उत्तरखण्ड(न०)--पुस्तक का अन्तिम-

उत्तरङ्ग (वि०)--ऊँची तरंगी वाला ।

न०-दरवाजे के ऊपर की छकड़ी।  
 उत्तरच्छन्द(पु०)-गिछाना, गिछानेकी चादर  
 उत्तरदिक् [ श्र ] ( स्त्री० )-उत्तरदिशा।  
 उत्तरदिग्पाल(पु०)-कुनेर, बुधग्रह।  
 उत्तरपत्त(पु०)-रूपपत्त, पूरणत का पि  
 रोध या जयाव।  
 उत्तरपश्चिम(वि०)-शुभाला ओर मगरयी।  
 उत्तरपत्युत्तर(न०)-विचाद, नितवडाचाद,  
 मुबाहिस्।  
 उत्तरमीमांसा(स्त्री०)-येदन्तद्वयान जिसको  
 महर्षि व्यास ने बनाया है।  
 उत्तररहित(वि०)-लाजवाय।  
 उत्तररामचरितत्र ( न० )-भवभूति कवि  
 का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध नाटक  
 जिसमें श्रीराम के अन्तिम जीवन  
 का वर्णन है।  
 उत्तरगणपत्(न०)-बुढापा, बुढावस्था।  
 उत्तरगामी(पु०)-मुदाहलह, रत्नपाएदेम्ह।  
 उत्तरसाक्षी(पु०)-सर्कार का गवाह।  
 उत्तरसाधक(पु०)-सहायक आनिस्त्रम्ह।  
 उत्तरा(स्त्री०)-उत्तरदिशा, गिरट राजाकी  
 कन्या जो अभिमन्यु की पत्नी थी,  
 अर्जुनी ऊँची, लायक। [ बाद में।  
 उत्तरात् (अ०)-उत्तरकी ओर से, पश्चात्,  
 उत्तराधिकारी ( वि० )-मृत्यु आदि के सं-  
 घटन से पहिले स्वामी का अधिकार  
 समान होने पर पुत्र, गौन आदि दया  
 द, वारिस, दायभागों।  
 उत्तराभास ( पु० )-जो उत्तर न होता  
 हुआ तद्वत् प्रतीत होता हो, गुरु  
 जवाब, मिथ्या उत्तर।  
 उत्तरायण(न०)-सूर्य की उत्तर की ओर  
 गति, मकरसंक्रान्ति अर्थात् २० डि-  
 समर से मिथुनसंक्रान्ति अर्थात् २२  
 उन तक सूर्य उत्तर की ओर वृद्धित

होता रहता है, यह उत्तरायण  
 कहलाता है।

उत्तराक्ष(न०)-शरीर का ऊपर का भाग,  
 उत्तरीय भाग, अन्तिम आधा।  
 उत्तरासंग(पु०)-ऊपर का कपड़ा, चादर,  
 दुपट्टा।  
 उत्तरीय (वि०)-उत्तर दिशा का। न०-  
 ऊपर का वस्त्र, चोगा या दुपट्टा।  
 उत्तरीय(अ०)-उत्तर की ओर से।  
 उत्तरेष्टु (अ०)-माने वाली कल।  
 उत्तरोत्तर(वि०)-अधिकाधिक।  
 उत्तरोत्तरम्(अ०)-आगे २।  
 उत्तर्जन(न०)-दूरी तरह घनकाना।  
 उत्तान(वि०)-फैला हुआ, तना हुआ,  
 विस्तारशून्य।  
 उत्तानपाद(पु०)-ध्रुव का पिता जो  
 स्वायम्भुव, मनु का पुत्र था।  
 उत्तानशय ( पु० )-छाँटा बरछा को  
 प्रायः मुल ऊपर की करके सीता है।  
 उत्तानित ( वि० )-वटा- हुआ, फैला  
 हुआ। [ चिन्ता, प्रयत्न २  
 उत्ताप ( पु० )-दुःख, अधिक गर्मी,  
 उत्तार ( वि० )-बहुत ऊँचा, अच्छी  
 पुतली वाला।  
 उत्ताल(वि०)-बहा, मज्जबूत, मयामक,  
 तीव्र। [ कामयाब, तजुर्देकार।  
 उत्तीर्ण ( वि० )-उतरा हुआ, मुक्त,  
 वृत्त य(वि०)-अत्युन्नत, बहुत ऊँचा।  
 उत्तीर्णक(वि०)-महकाने वाला, प्रेरक।  
 उत्तीजन(न०)-महकाना, प्रेरित करना,  
 जीवन डालना, तेज करना।  
 उत्तीजना(स्त्री०)-पूखवत्। [ काया हुआ  
 उत्तीजित ( वि० )-प्रेषित, तीव्र, भड.

उत्सोलन(न०)-ऊँचा उठाना, उठाकर तोलना ।

उत्पा(१ प०)-उठना, खड़ा होना, उभरना, उत्पन्न होना ।

उत्पान( न० )-ऊँचा उठना, खड़ा होना, उठान, उद्यम, युद्ध, सेना, आगरण ।

उत्पानैकादशी(स्त्री०)-कार्तिक शुक्ल एकादशी; देव उठान एकादशी । वर्षाकाल के चार मास विश्राम के लिये रामके जाते थे और इस एकादशी से यात्री तथा व्यवसायिजन पुनः निज २ कार्य सम्पादन में संलग्न होते थे ।

उत्पापन( न० )-उठाना, घर छोड़ी कराना, भड़काना, जमाना ।

उत्पिपत( वि० )-उड़ा हुआ, उड़ूँ, उत्पन्न, ऊँचा, फैला हुआ ।

उत्पिति(स्त्री०)-ऊँचाई, उठान ।

उत्पट्(१० प०)-जड़से उखाड़ना, नष्ट करना । [ होना ।

उत्पत्त(१ प०)-ऊँचटना, उठना, पैदा

उत्पत्त(पु०)-चिड़िया, पक्षी ।

उत्पत्तन(न०)-ऊँचा उड़ना, उत्पत्ति, ऊपर फैलना । [ आविर्भाव ।

उत्पत्ति ( स्त्री० )-पैदायश, जन्म, उत्पत्त(पु०)-गलत रास्ता, अनुचित मार्ग, अशुद्धि ।

उत्पट्(४ भा०)-उत्पन्न होना, पैदा होना, जन्म लेना, सघटित होना ।

उत्पन्न(वि०)-पैदा हुआ, उठा हुआ, प्राप्त, सघटित, विदित ।

उत्पल(न०)-नीला कमल । वि०-कमलोर, दुपला, बिना मांस का ।

उत्पद्यन(न०)-पथित्रीकरण, शुद्ध करना

उत्पाट(पु०)-मूलनाश, जड़ से उखाड़ना, कर्णयोगविशेष ।

उत्पाटन(न०)-उन्मूलन, उखाड़ना ।

उत्पात ( पु० )-उपद्रव, उल्लूक, अशुभ घटना, बड़ी मुसीबत, गद्गामारी, भूचाल आदि का घटन ।

उत्पाद(पु०)-पैदायश, जन्म, उत्पत्ति, जहर ।

उत्पादक(वि०)-जन्मदाता, पैदाकरने वाला । पु०-शरभ नामक आठ पाद का कल्पित वृगविशेष ।

उत्पादन(न०)-पैदाकरना, जन्म देना

उत्पादिका(स्त्री०)-नाता, दीमक ।

उत्पाली(पु०)-आरोग्य, तन्दुरुस्ती ।

उत्पीड् ( १० प० )-सताना, रगड़ना, दवाना ।

उत्पीडन(न०)-सताना, दुःख देना ।

उत्पू(९व०)-साफ करना, पथिन्नकरना

उत्प्रास(पु०)-उपहास, हँसना ।

उत्प्रासन(न०)-कँकना, उपहास, मज़ाक

उत्प्रेत् ( १ भा० )-अनुमान लगाना, आज्ञा करना, देखना, याद करना

उत्प्रेक्षण(न०)-अनुमान, अन्दाज़ा ।

उत्प्रेक्षा ( स्त्री० )-उद्भावना, आरोग्य, अर्थात्कारभेद, जिस में प्रकृत विषय की छोड़कर दूसरे विषय

एक ही होने का अनुमान किया जाय । [ पर सैरना ।

उत्प्लवत(न०)-उल्लूक, कूदना, पानी

उत्सवा(म्त्री०)-नीका, होंगी ।  
 उत्फल (१५०)-कूटना, उलटना, खो-  
 लना, खिलना । [ कुदकना ।  
 उत्फाल ( पु० )-तीव्रगति, कूदफांद,  
 उत्फुल्ल(वि०)-खिला हुआ । न०-स्त्री-  
 काज, योनि । [ हुआ पानी ।  
 उत्स ( पु० )-कटना, चटना, चढ़ना  
 उत्सङ्ग(पु०)-गोद, कोह, आलिङ्गन ।  
 उत्सङ्गन (न०)-ऊपर केंकना, ऊपर  
 चढ़ाना । [ गना ।  
 उत्सद् (१५०)-डूबना, नष्ट होना, त्या-  
 गदम्पन(वि०)-मष्ट, उखाड़ा हुआ,  
 त्यक्त ।  
 उत्सर्ग ( पु० )-उपाकरण में कहा गया  
 भागान्य नियम, त्याग, दान,  
 यज्ञयज्ञेय ।  
 उत्सर्जन ( न० )-त्याग, मुक्ति, दान,  
 अनध्याय, उपायन ।  
 उत्सर्पः-पम्-उांपना, ऊर्ध्वगति, उदय ।  
 उत्सव(पु०)-त्योहार, सुखी का अव-  
 सर, दिलचस्पता, जलसा, जवाह, कोष, साहस ।  
 उत्सवसङ्केता ( पु० य० )-एक प्रकार की  
 जंगली जाति जो हिमालय में  
 रहती है जिसमें वैवाहिक नियम  
 का प्रचार नहीं ।  
 उत्सह (१भा०)-फाविल धनना, शक्ति  
 रखना, हिम्मत करना, यत्न  
 करना, भागे बढ़ना ।  
 उत्साह(पु०)-नाश, बरसादी, क्षति ।  
 उत्साहक(वि०)-नाश करने वाला,  
 नाशक ।

उत्सादन(न०)-चढ़ना, दोयारा हल  
 जोतना, नाश करना, सारित्र  
 करना, चढ़ना । [ दयां ।  
 उत्सारक ( पु० )-पुलिमन, गारद,  
 उत्सारण (न०)-दृष्टीकरण, मार्ग का  
 साफ करना, अतिधिसत्कार ।  
 उत्साह(पु०)-यत्न, पुरुषार्थ, इच्छा,  
 सत्, इरादा, शक्ति, हिम्मत,  
 सुखी ।  
 उत्साहन(न०)-यढ़ावा, हिम्मत देना ।  
 उत्साहवर्द्धक ( वि० )-हिम्मत बढ़ाने  
 वाला ।  
 उत्साहवर्द्धन (न०)-हिम्मत बढ़ाना ।  
 उत्साहसम्पन्न(वि०)-हिम्मत वाला,  
 कर्मवीर ।  
 उत्सिक्त ( वि० )-गर्हित, जहङ्गारी,  
 चञ्चल, यढ़ा हुआ, बाढ़पुक्त ।  
 उत्सिक् ( ६५० )-डिङ्कना, डालना,  
 फैलाना, गर्हित करना ।  
 उत्सुक(वि०)-इच्छुक, घेघेन, गीकीन,  
 दुविधा में पड़ा हुआ, गिन्ता-  
 पूर्वक इच्छा करने वाला ।  
 उत्सुकता(स्त्री०)-घेघेनी, शीक, दुःस,  
 संलग्नता, जोश ।  
 उत्सूर ( पु० )-चायसन्ध्या ।  
 उत्सृ ( १५० )-बाहिरनिकालना, हटाना ।  
 उत्सृ ( ६५० )-त्यागना, पापिस  
 करना, टाहना ।  
 उत्सृ ( १५० )-ऊपर की ओर जाना,  
 उदय होना, फैलाना ।  
 उत्सृष्ट ( वि० )-त्यक्त, प्रक्षिप्त, दत्त ।  
 उत्सृक ( पु० )-गहङ्गार, उपादती,

उदिकना, याद आना ।  
 उत्सेध (वि०)-ऊँचा, उम्हा । पु०-  
 ऊँचाई, उम्हाई । न०-वध, कत्तु ।  
 उत्स्मय (पु०)-मुसकाहट ।  
 उत्स्वन (पु०)-घोर की आवाज ।  
 उत्तिस्त ( १आ० )-मुसकराना, मूँख  
 बनाना ।  
 उदक (न०)-जल, पानी । [ वाला ।  
 उदकहार (पु०)-कहार, पानी ढीने  
 उदकेचर (पु०)-जलजन्तु ।  
 उदकिष्ठ (वि०)-जलपुष्प ।  
 उदक्या (स्त्री०)-जलमती स्त्री ।  
 उदगद्गि ( पु० )-उत्तर का पहाड़,  
 हिमालय ।  
 उदगमन (न०)-उत्तरावण ।  
 उदग् (वि०) ऊँचा, उन्नत, चौड़ा,  
 बड़ा, उदार ।  
 उदङ्ग(पु०)-चमड़े का बना हुआ घो  
 वा तैल भरने का कुप्पा ।  
 उदङ्ग(१उ)-बाहिर निकालना, उदेहना  
 उदङ्ग (१उ०)-उठाना, ऊँचा करना,  
 [जल] खींचना ।  
 उदङ्ग (न०) -जल खींचने का डोल,  
 दङ्गल, ऊपर केंकना ।  
 उदङ्गपाठ(पु०)-मछली सर्पविशेष ।  
 उदघान (पु०)-घड़ा, यादल ।  
 उदधि (पु०)-समुद्र, घग्घा, घट ।  
 उदन् ( २प० )-ऊपर की ओर श्वास  
 लेना ।  
 उदन् (न०)-जल, पानी ।  
 उदन्त (पु०)-घात, घातान्त, कुगल-  
 प्रगा। भसाधार माधु ।

उदन्तक (पु०)-समाधार, स्थना ।  
 उदन्तिका(स्त्री०)-खन्तुष्टि, खन्तीय ।  
 उद-य (वि०)-प्यासा, जलपुक्त ।  
 उदन्ना (स्त्री०)-प्यास ।  
 उद-घान् [यत्](वि०)-तरङ्गो वाला ।  
 पु०-समुद्र ।  
 उदपात्र (न०)-गिलास, घर्तन ।  
 उदपान(अस्त्री०)-कुप के पास पानी  
 का चौधवा ।  
 उदय ( पु० )-उठना, ऊपर जाना,  
 चमकना, उत्पत्ति, उन्नति, ऊँचाई,  
 कामयाबी, लाभ, आनंदगी ।  
 उदयन(न०)-ऊपर उठना या चढ़ना,  
 नतीजा, परिणाम । पु०-अगस्त्य  
 मुनि, यत्सराज, उदयनाचार्य ।  
 उदर(न०)-पेट, जठर, नाभि और  
 स्तनों के बीच का स्थान, पेट  
 का रोग, लड़ाई ।  
 उदरभरि (वि०)-स्वार्थी, पेटू, पक्ष  
 भदायक के लिये बिना पेट भरने  
 वाला ।  
 उदरावर्त्त(पु०)-नाभि, नाक ।  
 उदरिक(वि०)-भोटा, बड़े पेट का ।  
 उदरिणी(स्त्री०)-गर्भवती स्त्री ।  
 उदरधि(पु०)-समुद्र, सूर्य ।  
 उदर्क(पु०)-नतीजा, परिणाम, फल ।  
 उदर्षिष् (वि०)-प्रभायुक्त चमकीला ।  
 पु०-अग्नि, शिव, कामदेव ।  
 उददं (पु०)-एक प्रकार का ज्वर जो  
 शिशिर ऋतु में होता है इस में  
 रक्तवर्ण के ददोरे निबल आते हैं ।  
 ददोरे, जुहपिती ।

उद्वसित(न०)--घर, मकान ।  
 उदत्तु(वि०)--ज़ार ज़ार रोने वाला ।  
 उदत् (४ प०)--ऊपर फेंकना, ऊपर  
 उठाना; ऊँचा करना ।  
 उदमन(न०)--ऊपर उठाना, बाहिर  
 निकालना ।  
 उदात्त(पु०)--ऊँचे स्वर से उच्चारित  
 अक्षर, दान, बड़ा ढोल । वि०--  
 । ऊँचा, उदार, बड़ा, मनोहर ।  
 उदान(पु०)--गले में रहने वाला वायु,  
 नाभि, चर्मभेद ।  
 उदार(वि०)--कृपाज; दाता, चतुर,  
 बुनादिल, ईमानदार, दयालु,  
 मनोहर ।  
 उदारचरित(वि०)--उदार हृदय वाला,  
 सच का प्रताप चाहने वाला ।  
 उदारता(स्त्री०)--कृपाशी, उदारपना,  
 चतुरता; नेकी, प्रताप ।  
 उदारदर्शन(वि०)--प्रियदर्शन, मनोहर ।  
 उदारयि(वि०)--ऊपर जाने वाला ।  
 पु०--विष्णु ।  
 उदात् (२भा०)--उपेक्षा करना, हस्त  
 होना; शौक न रखना ।  
 उदास-त्री(वि०)--रागद्वे परहित, वे  
 परवाह; उपेक्षा करने वाला,  
 मध्यस्थ ।  
 उदासीन(वि०)--पृथ्वी ।  
 उदाहरण(न०)--किसी बात को एक  
 स्थान पर प्रदर्शित कर सम्पूर्ण  
 स्थानों में दिखलाना; दृष्टान्त,  
 मिसाल । [ प्रस्तावना ।  
 उदाहार (पु०)--मिसाल; उदाहरण,

उदाहृ(१प०)--व्याख्य करना; कहना;  
 मिसाल देना ।  
 उदाहृत(वि०)--कहा, हुआ, कथित;  
 मिसाल के तौर पर दिखाया  
 हुआ ।  
 उदि (२प०)--उदय होना, दिखलाई  
 देना, उत्पन्न होना, उगना ।  
 उदित(वि०)--उगा हुआ, बढ़ा हुआ;  
 ऊँचा; कहा हुआ, उत्पन्न ।  
 उदिति(स्त्री०)--उदय; वाणी ।  
 उदीप्त (१भा०)--देखना, घूरना, आशा  
 करना, इन्तिज़ार करना ।  
 उदीची(स्त्री०)--उत्तर की दिशा ।  
 उदीचीन(वि०)--उत्तर का, उत्तर की  
 ओर झुका हुआ ।  
 उदीच्य(वि०)--उत्तर दिशा का । पु०--  
 भारतवर्ष का उत्तरीय भाग ।  
 उदीप(पु०)--पानी का चढ़ जाना, बाढ़  
 उदीरण(न०)--कटना, उच्चारण करना,  
 मोलना । [ हुआ ।  
 उदीर्ण (वि०)--उदार, बड़ा; बड़ा  
 उदुम्बर(पु०)--गूलर का वृक्ष, उदुम्बर  
 उदूट(वि०)--विवाहित, मोटा ।  
 उद्गम(वि०)--उदय हुआ उदित, नि-  
 कला हुआ ।  
 उद्गम (१प०)--उठना; निकलना, अंकुर  
 उगना, ऊपर आना ।  
 उद्गम (पु०)--बहिर्गमन, उत्पत्ति,  
 आरम्भ, ऊँचाई, अङ्कुर, वन,  
 बाहिर आना ।  
 उद्गमन(न०)--प्रत्यक्ष होना ।  
 उद्गमनीय(न०)--घुले हुए दी वस्त्र

जो कि विवाह के समय घर  
और कन्या को दिये जाते हैं ।

उद्गाढ ( वि० )--गहरा, अतिशय,  
ज्यादा ।

उद्गाता(पु०)--नामवेद का गायक ।

उद्गार( पु० )--वनन, कैं, शब्द ।

उद्गीय(पु०)--सामवेद का एक भाग ।

उद्गुर(६ आ०)--गर्जेकर खोलना ।

उद्गूर्ण ( वि० )--तैयार, उद्यत ।

उद्गूँ(१ पु०)--उच्चस्वर से गाना, आर-

म्भ करना, साम का गान करना ।

उद्गृण(१, ८ उ०)--मिलाकर बांधना,

बँडल बनाना; गूँथना ।

उद्गृण्य(पु०)--अध्याय, परिच्छेद ।

उद्गृह(८ पु०)--ऊपर उठाना, ऊँचा  
करना ।

उद्गृहा(पु०)--ऊपर उठाना, सन्धि

का नियमविशेष, ऐतराज ।

उद्गृहाहणिका(स्त्री०)--वादविवाद में

दिया हुआ प्रत्युत्तर । [अग्नि ।

उद्गृ ( पु० )--उद्गो, गहरा, सुशो,

उद्गृष्टि(न०)--दशारा ।

उद्गृपाटक(पु०)--कुल्ली, डोलरस्सी ।

उद्गृपाटन ( न० )--खोलना, परदा

उठाना, चीड़ी ।

उद्गृपाटित(वि०)--खोला हुआ, बाहिर

रुखा हुआ, उठाया हुआ ।

उद्गृपाटितान(वि०)--नगा । [वार्ता ।

उद्गृपोप(पु०)--घोषणा; सार्वजनिक

उद्गृग(पु०)--गटगल, जू, गच्छर ।

उद्गृह(वि०)--पहा, भयानक, उच्छ-

मल, देहाय ।

उद्गृहता ( स्त्री० )--उजड़पन ।

उद्गृह(पु०)--दमन करना, भीषण ।

उद्गृह(न०)--बाधना, अगोठी; समुद्र  
की अग्नि ।

उद्गृह(वि०)--साहसिक; विनयायनता

उद्गृह(वि०)--घेरोक; अरुह; मस्त;

भयानक; स्वेच्छाकारी; नगहर ।

पु० --यम; वरुण ।

उद्गृहक(पु०)--एक ऋषि का नाम ।

उद्गृह(न०)--दोपहरी ।

उद्गृह(६ उ०)--बतलाना; जाहिर

करना; नाम लेना; उपाख्या

करना । [सम्बन्ध से ।

उद्गृह(अ०)--लिये; वास्ते; वसमय,

उद्गृह(वि०)--इच्छित; कथित; उपदिष्ट

उद्गृह(४आ०)--रोशनकरना, चमकना ।

उद्गृहक(वि०)--चमकाने वाला; तेज

करने वाला ।

उद्गृह(न०)--प्रकाशन; रोशनी;

भड़काना, तेज करना ।

उद्गृह(वि०)--भड़काया हुआ, रोशन,

चमकीला ।

उद्गृह ( पु० )--अनुसंधान, अभिप्राय,

ब्रह्मा, निशान, तलाश, नाम

पर, वस्तु का नाम लेना ।

उद्गृह(स्त्री०)--श्रीमक, कुरा ।

उद्गृह ( पु० )--रोशनी, चमक, अध्याय,

परिच्छेद ।

उद्गृह ( वि० )--उजड़, भड़का हुआ, उग्रत;

गंवार । पु०--राजाओं का पहलवाना

उद्गृहमनस्य ( वि० )--उदारशय, उजड़,

मगहर ।

उद्गृह(न०)--सर्वचक्रनिकालना, [कपड़े]

उतारना, रिहाई, छुड़कारा, ऋण से मुक्ति ।

उद्धर्ष ( पु० )—बढ़ी सुशी, उत्सव ।

उद्धय ( पु० )—उत्सव, कृष्णके एक चचा का नाम । [ हुय ह्ये ।

उद्धस्त ( वि० )—जिसके हाथ ऊपर को उठे  
उद्धार ( पु० )—बचाव, रिहाई, उखाड़ना,  
छुड़कारा, मुक्ति, अभ्युदय, संगीठी ।

उद्धारक ( पु० )—उद्धार करने वाला ।

उद्धारा ( स्त्री० )—गुइली, गिलोय ।

उद्धर ( वि० )—शोक से मुक्त, जोत से  
खुला हुआ, आज़ाद ।

उद्धूत ( वि० )—फेंका हुआ, उठाया  
हुआ, हिला हुआ । [ फेंकना

उद्धूतन ( न० )—उठानना, ऊँचा

उद्धूषण ( न० )—रोंगटे भड़े होना, भय-  
भीत होना ।

उद्धृ ( १; १० प० )—उद्धार करना,  
बचाना, रिहाई दिलाना ।

उद्धूत ( वि० )—उठा हुआ, उखाड़ा हुआ  
गृहीत, नष्ट ।

उद्धूमा ( १प० )—सांस बाहिर निका-  
लना, फूंकना, त्रिगुल बजाना ।

उद्धूमान ( न० )—बृहदा, अंगीठी ।

उद्धूष ( न० )—माघना, लटकाना ।

उद्धयल ( वि० )—गजयूत, शक्तिशाली ।

उद्धाह ( वि० )—ऊपर को हाथ उठाए  
हुए ।

उद्धुदु ( वि० )—खिला हुआ, जगा हुआ ।

उद्धूषः—नम्—जागरण, घोड़ी समझ,  
याददास्त ।

उद्धट ( वि० )—उम्हा, बड़िया, उबल ।  
पु०—ऊठना, छाज ।

उद्धव ( पु० )—उत्पत्ति, जन्म, पैदायश ।  
उद्धावन ( न० )—सोचना, उत्पत्ति  
विस्मृति ।

उद्धाम् ( १आ० )—घमकना, घमकाना ।

उद्धिञ्ज ( वि० )—पृथ्वी काड़कर उत्प-  
न्न हुआ जैसे वृक्ष, झाड़ी, घन-  
स्पति आदि ।

उद्धिड् ( पु० )—अंकुर उगना, जन्म  
लेना, निकलना ।

उद्धिड् ( पु० )—अंकुर, पीदा, करना ।

उद्धिड्दिया ( स्त्री० )—यनस्पतिशास्त्र,  
घोटेली ।

उद्धिन्न ( वि० )—उदपन्न, अंकुरित,  
खिला हुआ ।

उद्धूत ( वि० )—पूर्ववत् ।

उद्धेदः—नम्—उत्पत्ति, शहर, चरमा,  
बाहिर निकालना, भेद पताना ।

उद्धूम ( पु० )—उद्धेद, व्याकुलता; पद-  
हाहत, मूल, चिन्ता ।

उद्धूमान्त ( वि० )—चिन्तातुर, पद्मापा  
हुआ, भयभीत ।

उद्धन ( वि० )—तत्पर; तत्पार; उन्नत,  
मुस्तेद । पु०—अध्याय, परिच्छेद ।

उद्धम ( पु० )—उद्योग, कोशिश, परिश्रम,  
हिम्मत । [ धीर ।

उद्धमी ( वि० )—मेहनती, परिश्रमी, कर्म-  
उद्धा ( २ प० )—उद्धय होना, घटना,  
अंकुर उगना ।

उद्धाम ( अस्त्री० )—चैर, टहलना, यात्रा,  
याटिका, क्रीडास्पर्ध, अभिप्राय ।

उद्धागक ( न० )—याटिका, यमीपा ।

उद्धागपाल [ राक ] ( पु० )—बागवान,



माली । [का अन्त ।  
 उद्यापन (न०)--समाप्ति, पूर्ति, व्रत  
 उद्योग (पु०)--यत्न, चेष्टा, उत्साह,  
 उद्यम ।  
 उद्योगपर्व (पु०)--महाभारत का पाँ-  
 चवा पर्व [ अध्याय ] ।  
 उद्योगी (वि०)--मेहनती, परिश्रमी ।  
 उद्भाव (पु०)--शोरमुल्ल, गर्जन ।  
 उद्दिप्त (वि०)--बढ़ा हुआ, अधिक ।  
 उद्देक (पु०)--बड़ोतरी, बहुतायत,  
 आरम्भ ।  
 उद्देकभङ्ग (पु०)--धिर मुहाते ही  
 , भोले पड़ना, आरम्भ में ही हि-  
 ममत धारना ।  
 उद्दम् (१प०)--बाहिर फेंकना, फ़ैकरना,  
 उद्दमन (न०)--वमन, फ़ै, व्यास ।  
 उद्दतन (न०)--उठलना, चन्दन लगा-  
 ना, मिलेपन । [हास ।  
 उद्दधन (न०)--बड़ोतरी, दयाया हुआ  
 उद्दध् (१प०)--व्याहना, घर ले  
 जाना, घामना, अनुभव करना,  
 रसना ।  
 उद्दध (पु०)--पुष, यियाह । [तेजाना ।  
 उद्दधन (न०)--वियाह, कज्जा रखना,  
 उद्दधा (स्त्री०)--पुत्री ।  
 उद्दवाप्त (वि०)--बाहिर निकला  
 हुआ, घमन बिना हुआ, उद्गीर्ण ।  
 उद्दाम- नम्--अध, रयाग, वियर्जन ।  
 उद्दाद (पु०)--वियाह, गादी, परिणय ।  
 उद्दाहिक (वि०)--विवाह मन्त्रस्थी ।  
 उद्दाहित (वि०)--विवाहित, उदा हुआ ।  
 उषा हुआ ।

उद्दिग्न (वि०)--पबहाया हुआ, बि-  
 न्तासुर ।  
 उद्दिग् (६आ०)--उद्दिग्न होना, दु खी  
 होना, भयभीत होना ।  
 उद्द्वेग (पु०)--चित्तका व्याकुल होना,  
 डर, भय, चिन्ता ।  
 उद्द्वेप (पु०)--हिलना, कापना ।  
 उद्द्वेल (वि०)--भीमा से बाहिर आने  
 वाला, किनारी से बाहिर हो  
 कर बहने वाला । [दस्ताना ।  
 उद्द्वेष्टन (न०)--घाहा, पगड़ी, जुराँय,  
 उधस्--ऊधस्, यत ।  
 उद्द्वेष्ट (१प०) तर करना, गीला करना,  
 जल छिड़कना ।  
 उद्द्वेष्ट (पु०)--सूपा, पूहा,  
 उन्न (वि०)--भीमा हुआ, गीला ।  
 उन्नत (वि०)--उन्नत, ऊँचा, गहाना,  
 यथा ।  
 उन्नति (स्त्री०)--उदय, बढ़ती, बड़ो-  
 तरी, गरुह की स्त्री ।  
 उन्नत (वि०)--अच्छी तरह से धन्धा  
 हुआ, बढ़ा हुआ ।  
 उन्नम् (१प०)--उठना, उदय होना,  
 उन्नति पाना ।  
 उन्नमिग (वि०)--उन्नत, बढ़ा हुआ ।  
 उन्नयन (न०)--वितरण, दलील, ऊँचा  
 करना ।  
 उन्नय (वि०)--ऊँची नाक वाला ।  
 उन्नय (४प०)--चारों तरफ से बांधना,  
 बाहिर भीषणा, उगमा ।  
 उन्निद्र (वि०)--जिसे नींद न आती  
 हो, सिखा हुआ, मगुा हुआ ।

उन्मी (१५०)-ऊपर ले जाना, खड़ा करना,  
रिहाई दिलाना ।

उन्मज्ज (६५०)-जल में से बाहिर निक-  
लना, उगना ।

उन्मज्जक (५०)-जल में खड़ा हो कर  
तपस्या करने वाला ।

उन्मत्त (वि०)-पागल, उन्मादयुक्त । ५०-  
घनुरा ।

उन्मद (वि०)-पागल, नशे में भरा हुआ ।

उन्मनः-स्क (वि०)-जिसका दिल उत्सङ्ग  
गया हो, वैचैन, बेसपर ।

उन्मथ (१, ६५०)-हिलाना, मथन करना  
मारना, मिलाना ।

उन्मथ-मथ (५०)-मथ, गड़गड़, आन्दोलन ।

उन्मथ्य (१, ६५०)=उन्मथ ।

उन्मथ्यन (न०)-बध, हिलोरा, छड़ी से  
मारना ।

उन्माथ (५०)-मारना, हिलाना, चढ़ा कष्ट ।

उन्माद (५०)-पागलपन, दिक्का बहुत  
धूमना, बुद्धि का स्थिरन रहना ।

उन्मादक (वि०)-पागल बनाने वाला । ५०  
घनुरा ।

उन्मादन (५०)-कामदेव के पुत्र शरी में  
से एक ।

उन्मादी (वि०)-शराबी ।

उन्मान (न०)-तौलना, नापना, घाट ।

उन्मार्ग (५०)-गलत रास्ता, अनुचित  
व्यवहार ।

उन्मित (वि०)-मापा हुआ, वीसा हुआ ।

उन्मिति (स्त्री०)-माप, मूल्य ।

उन्मिष (६५०)-आंख खोलना, खिलना,  
उगना ।

उन्मिष (५०)-आंख खोलना ।

उन्मिषित (वि०)-खिला हुआ, प्रकट,  
घोड़ाता कमका हुआ ।

उन्मील (१५०)-आंखें खोलना, जागना,  
खिलना, प्रकट होना ।

उन्मीलः-नम्-जागरण, खिलना, आंखें  
खुलना, आलस्य ।

उन्मीलित (वि०)-खिला हुआ, जगा हुआ ।

उन्मुख (वि०)-ऊपर की मुंह उठाये हुए,  
उद्यत, तैयार ।

उन्मुख (६३०)-भड़ोलना, डीला करना, मुक्ति  
देना, फँकना ।

उन्मुद्र (वि०)-बिना मुँदा हुआ, खिला  
हुआ, खुला हुआ ।

उन्मूल (१०५०)-उखाड़ना, जड़ से खोना,  
नष्ट करना ।

उन्मूलन (न०)-जड़ से उखाड़ना, अस्मरण  
नाश ।

उन्मेश (स्त्री०)-मुटापा ।

उन्मेष (वि०)-मापने योग्य । न०-तौल,  
वजन ।

उन्मेषः-णम्-घोड़ा-प्रकाश, नेत्र आदिका  
खोलना ।

उप (अ०)-समीपता, व्याप्ति, आरम्भ, पूजा,  
उपरति, उपघात आदि अर्थों का  
बोधक ।

उपकण्ठ (वि०)-नज़दीक, समीप । अस्त्री०  
समीपता, घोंटू की उछलने की आल ।

उपकथा (स्त्री०)-छोटी कहानी ।

उपकरण (न०)-प्रधान साधन जिस से  
उपकार किया जाता है ।

उपकरण (१०३०)-सुनना ।

उपकारिका (स्त्री०)-अफवाह, मिथ्या अप-  
वाद, किम्बदन्ती ।

उपकर्त्ता (वि०)-उपकार करने वाला, मित्र  
उपकार (५०)-मदद, सहायता, मेहरबानी,  
-बन्दरबार ।

उपकारक (वि०)-उपकार करने वाला,  
मददगार, सहायक ।

उपकारिका(स्त्री०)-रक्षा करने वाली,  
सहायिका, राजा का महल,  
तन्त्र, पटभवन ।

उपकारी ( वि० )-मददगार, उपकार  
करने वाला ।

उपकार्य ( वि० )-उपकार के योग्य ।

उपकार्यो ( स्त्री० )-राजभवन, शाही  
शैला । [ दयाना ।

उपकिरण ( न० )-उपासि, गाढ़ना,

उपकुक्षिका ( स्त्री० )-छोटी इलायची,  
काला कीरा ।

उपकुम्भ ( वि० )-समीप, अकेला ।

उपकुम्भा ( स्त्री० )-नहर, नाली, पोपल ।

उपकुम्भ ( १५० )-गुआ डालना ।

उपकुम्भ ( पु० )-कुम्भ के पास का जला-  
शय, चौकड़ा । [ भूमि ।

उपकुम्भ ( न० )-किनारे के पास की

उपकुम्भ ( २३० )-समीप लाना, उपकार  
करना, मदद देना, सहायता  
पहुँचाना ।

उपकुम्भ ( वि० )-उपकार पाया हुआ,  
सहाय दिया हुआ । न०-सहा-  
यता, उपकार । [ निष्ठा ।

उपकृति ( स्त्री० )-उपक्रिया, सहायता,  
उपक्रमता ( पु० )-कार्य की आरम्भ  
करने वाला ।

उपक्रम ( १आ०; ४५० )-समीप जाना,  
आरम्भ करना, आक्रमण करना,  
उपहार करना ।

उपक्रम ( पु० )-आरम्भ, साहसिक  
कार्य, दिक्रम, इलाज ।

उपक्रमण ( न० )-समीपगमन,

साहस, आरम्भ, इलाज । [ यना ।  
उपक्रमणिका ( स्त्री० )-भूमिका, प्रस्ता-  
उपक्रमणीय ( न० )-आरम्भ करने  
योग्य ।

उपकोष्ठा ( स्त्री० )-खेडने का मैदान ।

उपकुश ( १५० )-दोष देना, धिक्कारना,  
फिड़कना । [ तिन्दा, तर्जना ।

उपकोशः-नम्-धिक्कार, भर्त्सना,

उपकोष्ठा ( वि० )-निन्दक । पु०-गधा ।

उपक्षय ( पु० )-नाश, चढ़ना ।

उपक्षीण ( वि० )-नष्ट, खर्च किया हुआ,  
शक्तिरहित ।

उपक्षेप ( पु० )-केंकना, इशारा, प्रस्ता-  
व, घमकी, आरम्भ ।

उपगण ( वि० )-नीची कक्षा का । पु०-  
छोटी कक्षा ।

उपगन्ध ( पु० )-सुशब्द, सुगन्धि ।

उपगन् ( १५० )-समीप जाना, प्राप्त  
करना, मुलाक़ात करना, प्रवेश  
करना, सहायता ।

उपगन्ः-नम्-पास जाना, अङ्गीकार,  
जानना, प्राप्ति, संगत । [ हुआ ।

उपगोत ( वि० )-धारणी द्वारा गाथा

उपगोति ( स्त्री० )-आपों उद्ग का  
एक भेद ।

उपगुरु ( पु० )-कमिस्टेंट मास्टर ।

उपगुरु ( १३० )-आलिगन करना,  
ठिपाना, धारो ओर धापना ।

उपगृह ( वि० )-ठिपाना हुआ, आलि-  
गन किया हुआ ।

उपगृह्य ( न० )-आलिगन, आरम्भ,  
गुणीकरण ।

उपगै ( १ प० )--गुणानुवाद गाना,  
मिलकर गाना ।

उपग्रह ( पु० )--परराज्य, कैद, कैदी,  
मेहरबानी, राहु, केतु ।

उपग्रहण ( न० )--पकड़ना, सहारा  
देना, वेदाध्ययन ।

उपग्राह ( पु० )--नजरागा, तोहफा, भेट ।

उपघात ( पु० )--अपकार, नाश, चोट ।

उपघन ( पु० )--लगातार सहारा, शरण  
देना, रक्षा ।

उपघय ( पु० )--वृद्धि, उन्नति, बढ़ीतरी ।

उपघट्ट ( १ प० )--सेवा, करना, टहल  
करना, पूजा करना ।

उपघर ( पु० )--इलाक़ा, चिकित्सा ।

उपघार ( पु० )--सेवा, टहल, पूजन,  
आतिथ्य, इलाक़ा, घातक ।

उपघारक ( पु० )--टहल करने वाला,  
चिकित्सक, ममालिज ।

उपघारिका ( स्त्री० )--दाई, टहलनी ।

उपघाय्य ( पु० )--संस्कृत अग्नि, वेदी ।

उपभि ( ५ प० )--इकट्ठा करना, ढेर  
लगाना ।

उपचित ( वि० )--एकत्रित, वर्द्धित ।

उपचित्र ( पु० )--एक उन्दीविशेष ।

उपचुट ( पु० )--छोटा शानियाना, मशहरी

उपज ( वि० )--अधिक उत्पन्न, वर्द्धित ।

उपजन् ( ४ भा० )--जन्म लेना, पैदा  
होना, संचटित होना ।

उपजप् ( १ प० )--कानाफूसी करना ।

उपजाति ( स्त्री० )--उन्द का एक भेद ।

उपजाप ( पु० )--कानाफूसी, विरोध का  
बीज घोलना ।

उपजीव्य ( १ प० )--सहारे से जीना ।

उपजीवन ( न० )--निर्वाह का साधन ।

उपजीविका ( स्त्री० )--गुजारा, वृत्ति,  
रोजी ।

उपजीवी ( वि० )--जीकर, आश्रित ।

उपजीव्य ( पु० )--प्रीति, सेवन ।

उपज्ञा ( लमा० )--ज्ञानना, माछून करना ।

उपज्ञात ( वि० )--ईजाद किया हुआ,  
आधिकृत ।

उपडीकन ( न० )--भेट, नजरागा, तोहफा ।

उपतप् ( १ प० )--गर्म करना, अवसर-  
क्रान्त होना ।

उपताप ( पु० )--गर्मी, कष्ट, रोग, जलदी ।

उपत्य ( वि० )--अपासिपत ।

उपत्यका ( स्त्री० )--पहाड़ के नीचे की  
भूमि, तराई ।

उपदंश ( १ प० )--काटना, कुतरना ।

उपदंश ( पु० )--आतशक, गर्मी का रोग,  
काटना, हसना, हंक मारना ।

उपदर्शन ( न० )--व्याख्या, टीका ।

उपदा ( स्त्री० )--रिश्वत, नजरागा ।

उपदान ( न० )--पूर्ववत् ।

उपदिश ( इव० )--उपदेश करना, शिक्षा  
देना, बतलाना । स्त्री०--दो

दिशाओं के बीच की दिशा ।

उपदिशा ( स्त्री० )--दर्शनी दिशा या  
कोण जैसे देशान, वायव्य, नैऋत्य

और आग्नेय ।

उपदिष्ट ( वि० )--उपदेश किया हुआ,  
सिखलाया हुआ ।

उपदेश ( पु० )--शिक्षा, नलाह, भलाई  
की बात, सीख ।

संपदेशक ( पु० )-सिखाने वाला,  
शिक्षक, गुरु, रहनुर्मा ।

संपदेशा(पु०)-गुरु, शिक्षक, आचार्य ।

संपदेश(पु०)-ढकन, मलहम ।

संपद्रव ( पु० )-दुपेटना, उत्पात,

विद्रोह, भगड़ा ।

संपद्रवी(वि०)-उपद्रव करने वाला,  
विद्रोही, भगड़ा ।

संपद्दीपा(पु०)-टापू, चारो ओर से  
पानी से घिरा हुआ स्थान ।

संपधा(३ व०)-ऊपर रखना, आदेश  
करना । स्त्री०-घोखा, छल, कपट,  
ढाँकाकरण की एक संज्ञा ।

संपधातु(पु०)-सोनामाखी, नीलाघोषा  
हरताल, अभूक, खपटिया, सुमाँ  
और भनखिल ये सात धातु संप-  
धातु कहलाती हैं ।

संपधान(न०)-विशेषता, तकिया, विष,  
मेहरबानी, प्रणय, प्रेन ।

संपधानीय(न०)-तकिया ।

संपधारण(न०)-किसी दूरस्थ वस्तु को  
उड़ [उग्री] आदि से खींचना ।

संपधि(पु०)-छल, कपट, जानबूझ कर  
कुछ का कुछ कहना ।

संपधिक(पु०)-उलिया, कपटी, ठग ।

संपधूषित(वि०)-मृत्तम, मृत्युके समीप  
संपधूषित(स्त्री०)-किरण, रश्मि ।

संपध्वस्त(वि०)-मिश्रित, मट्ट, बर्बाद ।

संपनगर(न०)-पुरषा, कस्बा, छोटा  
शहर ।

संपगत(वि०)-समीपगत, समीपस्थ ।

उपनम् ( १ प० )-समीप आना, संप-  
दित होना ।

उपनय(पु०)-उपनयन, शिक्षार्थ गुरु-  
कुल में पहुँचाना ।

उपनयन ( न० )-यज्ञोपवीतसंस्कार,  
इस के पश्चात् वालक गुरुकुल में  
प्रविष्ट होता है । मनुस्मृति के  
लेखानुसार ब्राह्मणपुत्र का ८ वर्ष  
की अवस्था में, क्षत्रियपुत्र का ११  
और वैश्यपुत्र का १२ वर्ष की  
अवस्था में यज्ञोपवीतसंस्कार  
होना चाहिये ।

उपनह् ( ४ प० )-बांधना, बटल बनाना ।

उपनहन(न०)-बटल, बस्ता, बांधने  
का कपड़ा ।

उपनाम(न०)-उपाधि, छोटा नाम ।

उपनाहन(न०)-मलहम लगाना, लेप  
करना । [ नत ।

उपनिधान(न०)-समीप रखना, अना-

उपनिधि( पु० )-अमानत, दूसरे के  
विश्वास पर रखी हुई चीज ।

उपनिपात(पु०)-समीप आगमन, आ-  
कस्मिक घटना ।

उपनिवेश( पु० )-छावनी, कालोनी,  
अन्य देश ॥ वस्ती डालना ।

उपनिवेशित(वि०)-दूसरी जगह से  
आकर बसा हुआ ।

उपनिषद् (स्त्री०)-अध्यात्मज्ञान की  
प्राप्ति के लिये गुरु के पास  
बैठना । वेद और ब्राह्मणशास्त्र  
के ये सद्गुणों जिनमें अस्तविद्या  
का वर्णन है । मुत्तय उपनिषद् १०

हैं, यथा—देश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, नारदक, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छान्दोग्य और चूडारण्यक ।

उपनिष्कर(पु०)—राजपथ, आदेआन, स्टीट ।

उपनी(१५०)—पास लाना, बैठ करना, हवाले करना ।

उपनीत(वि०)—उनीत लाया हुआ, प्राप्त, यज्ञसूत्रपारी ।

उपनृत्य(न०)—नाचघर, बालकन ।

उपनेता(पु०)—आपाय, यज्ञोपवीत देने वाला गुरु ।

उपनेत्र(न०)—आंख पर लगाने का चरमा, ऐनक ।

उपन्यस(४५०)—खानने रखना, हवाले करना, व्याख्या करना ।

उपन्यास(पु०)—पास रखना, अमानत, भूमिका, वाक्यपरचना, भाषित, दिलबहलाय की कहानी ।

उपपत्ति(पु०)—ऐसा मुख्य जिस से अन्यविधाहित स्त्री प्रेम करती हो, जार, आशना ।

उपपत्ति(स्त्री०)—पुक्ति, हेतु, घटना, स्वगति, प्राप्ति, दलील ।

उपपद् (४भा०)—पहुंचना, प्राप्त होना, उपपत्ति होना ।

उपपत्त(वि०)—प्राप्त, शरणागत, सम्पन्न ।

उपपातक(न०)—छोटा पाप, मनु के अनुसार गोपध, आत्मविक्रय, परस्त्रीगमन आदि उपपातक हैं ।

उपपादन(न०)—सिद्ध करना, स्थापित करना, परीक्षा ।

उपपादित(वि०)—प्रतिपादित, सिद्ध । उपपाश्र्व ( अस्त्री० )—कधा, दूसरी तरफ़ ।

उपपुर ( न० )—पुरवा, शहर के पास की छोटी बसती ।

उपपौरिक(वि०)—पुरवे में रहने वाला ।

उपपुराण(न०)—अठारह मुख्य पुराणों से भिन्न अठारह उपपुराण भी हैं । [तन्माई ।

उपपुष्पिका ( स्त्री० )—जमाई लेना,

उपप्लव ( पु० )—विपत्ति, इछपल, घाढ़, उत्पन्न, बाधा ।

उपयहु (वि०)—चन्द, पीछे ।

उपभंग(पु०)—पीछे की ओर भागना, छीटना । [उपयहुत ।

उपभुक्त(वि०)—घतं हुआ, उच्छिष्ट, उपभोक्ता [स्त्री० क्री] (पु०)—उपभोग करने वाला, आनन्द उठाने वाला ।

उपभोग (पु०)—इस्तेनाल, उपयहार, घतंता, धिखास की सामग्री ।

उपभोग्य-कठय(वि०)—उपयहारयोग्य, कामिछे इस्तेनाल ।

उपमन्थ्री(पु०)—सहायकमन्त्री, अस्ति-स्टेण्ट सेक्रेटरी ।

उपमन्थनी ( स्त्री० )—कलार, भाग कुरेदने की छड़ ।

उपमर्दः—नम्-रगह, दयाध, नाश, भस्मना, अभियोग की तरदीद ।

उपमन्ता(पु०)—पति, घर ।

उपमा(२५०, ३भा०)—मुकाबिला करना, तोलना । स्त्री०—निघाल, ममा-नता, उदाहरण, मुलता, सादृश्य ।

उपमाता[त्री] (पु०)—उपमा देने वाला,  
मूर्ति बनाने वाला । स्त्री०—  
मौलिकी मा, धाय ।

उपमाति (स्त्री०)—तुलना, बंध ।

उपमान (म०)—वह वस्तु जिस से उप-  
मा दी जाय ।

उपमित (वि०)—जिस की उपमा दी  
गई हो, जिस पर उपमा चढ़ती हो ।

उपमिति (स्त्री०)—उपमा या सादृश्य  
से होने वाला ज्ञान ।

उपमेय (वि०)—उपमा देने योग्य,  
वर्णनीय । [करने वाला ।

उपपन्ता (पु०)—पति, स्त्री से विवाह

उपपम् (१८०)—विवाह करना, पक-  
डना, अंगीकार करना ।

उपगम—नम्—विवाह, शादी, रोक ।

उपया (२ प०)—पास जाना, पहुँचना ।

उपयाच् (१आ०)—चाहना, मागना ।

उपयाचित (वि०)—मागा हुआ । न०—  
याचना ।

उपयुक्त (वि०)—ठीक, योग्य, कार-  
भासद, भक्षित, उचित, मीजुं ।

उपयुक्त (३ आ०)—इस्तेमाल करना,  
काम में लाना ।

उपयोग (पु०)—इस्तेमाल, औपध देना  
या सेवार करना, औचित्य, अच्छा  
उपबहार ।

उपयोगिता (स्त्री०)—आवश्यकता,  
फायदा, अच्छापन, मुकीद होना,  
मेदधानी ।

उपयोगी (वि०)—अनुकूल, फायदे-  
मन्द, उचित, काम देने लायक ।

उपयोजन ( न० )—घोड़े की गाड़ी में  
जोतना ।

उपरक्ष (पु०)—शरीररक्षक ।

उपरक्ष (पु०)—पस्त सूर्य वा चन्द्र,  
राहु । वि०—विपद्ग्रस्त, रगा हुआ ।

उपरत ( वि० )—ठहरा हुआ, वैरागी,  
मुदो । [विरागता ।

उपरति (स्त्री०)—नृत्य, उदासीनता,

उपरतात् (अ०)—समीप में ।

उपरम् (१ प०)—चन्द होना, रुकना ।

उपरम्—णम्—निवृत्ति, परहेज, वियय-  
भोग का त्याग ।

उपराग (पु०)—छाली, छाल रग, तक-  
लीक, उपद्रव, भर्त्सना, चन्द्रग्रहण  
वा सूर्यग्रहण । [निधि ।

उपराज (पु०)—बाइसराय, राजप्रति-

उपराज (पु०) रुकना, ठहरना, परहेज,  
त्याग, नृत्य ।

उपरि (अ०)—ऊपर, ऊँचे पर ।

उपरिगत (वि०)—चढ़ा हुआ, ऊपर  
गया हुआ ।

उपरिभाग (पु०)—ऊपर का हिस्सा ।

उपरिष्ठात् (अ०)—ऊपर, ऊपर की  
ओर, वहाँ । [ऊँची ।

उपरुहु (वि०)—रुका हुआ, ठहरा हुआ,

उपमधू (३ प०)—रोकना, ठहराना ।

उपरोध (पु०)—रोकना, दिक् करना,  
विरोध, इन्कार । [बाध ।

उपल (पु०)—ग्रहण, पत्थर, रत्न,

उपलक्ष् (१० प०)—देखना, गौर करना,  
चिन्ह करना ।

उपलक्षण (म०)—देखना, चिन्ह, नाम ।

बह्म शब्दशक्ति कि जिस से निर्दिष्ट वस्तु से भिन्न तत्त्वदृश वस्तु का ज्ञान होता है अर्थात् अजहत्स्वार्थो लक्षणा ।

उपलक्ष्य(सि०)-प्राप्त, अधीत, ज्ञान हुआ । [ अनुमान ।

उपलब्धि(स्त्री०)-प्राप्ति, ज्ञान, समझ,

उपलभ्(१ भा०)-ज्ञानगा, समझना, सीखना, प्राप्त करना ।

उपलम्भ(पु०)-ज्ञान, अनुभव, प्राप्ति ।

उपलालिका(स्त्री०)-प्यास, पिपासा ।

उपलिप्सा( स्त्री० )-प्राप्त करने की इच्छा । [ करना ।

उपयद्(१ भा०)-पार्ते करना, सुधामद

उपयत्(म०)-याग, उद्यान, कुल्ल ।

उपयण् (१० प०)-उपाह्वय करना ।

उपयर्णग(न०)-एक बात की उपाख्या या ख्यात । [ विरहाना ।

उपयर्ह ( पु० )-शिरीषान, तकिया,

उपयस्(१ प०)-रहना, आवाह होना ।

उपयस्य(पु०)-प्राप्त, उपवास का दिन ।

उपयस्त(न०)-उपयान, निराहार ।

उपयस्ति(स्त्री०)-जीवन का आश्रय वा आधार जिसे अन्न, निद्रा ।

उपयत्(१ प०)-पास लेजाना, आरम्भ करना । [ करना ।

उपवास (पु०)-अनाहार, भोजन न

उपवासा[स्त्री० एवा] (पु०)-रात्रा की सवारी घालकी, शायी आदि ।

उपविद् ( वि० )-प्राप्त करने वाला, जानने वाला । [ बैठना ।

उपविष् (६ प०)-तम्बू गाड़ना, पाँच

उपवीत(न०)-जनेक, यज्ञसूत्र ।

उपवीती ( पु० )-यज्ञोपवीत धारण करने वाला ।

उपवृद्धि(वि०)-वर्द्धित, बढ़ा हुआ ।

उपवेद(पु०)-गौण वेद । चार वेदों के चार उपवेद हैं, यथा-ऋग्वेद का भाग्यवेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद,

सामवेद का गान्धर्ववेद और अथर्ववेद का शिखरवेद ।

उपवेश(पु०)-समीप बैठना ।

उपवेशन(न०)-पूर्यवत् ।

उपशम्(४ प०)-शांत होजाना, नकना, ठहरना ।

उपशमः-नम्-आराम, शान्ति, इन्द्रियदमन ।

उपशय(पु०)-समीप सेना ।

उपशस्य(न०)-प्राप्त के पास खुला हुआ मैदान ।

उपशिष्य(पु०)-शिष्य का शिष्य ।

उपशी(२ भा०)-समीप सेना, समागम करना ।

उपश्रु (५ प०)-सुनना, याचना करना ।

उपश्रुत (पु०)-यज्ञ ।

उपश्रुति (स्त्री०)-स्वीकारी, याचना, भाग्य बताना ।

उपश्लिप् ( ४ प० )-आलिंगन करना, समीप जाना ।

उपश्लिप्य(पु०)-एक ओर से मिलना ।

उपश्लिप्तक(न०)-रोकनेवाला, स्तम्भक, न०-स्तम्भ, रूँट, स्तूपना ।

उपशंयम(पु०)-उपशंहार, महामलय, रोकना, बांधना ।



उपसयोग(पु०)-गीणसयोग, तबदीली ।

उपसवाद(पु०)-साहिदा, ठेका ।

उपसव्यान (न०)-नीचे पहिरने का

वस्त्र, अधोवस्त्र ।

उपसहार(पु०)-समाप्ति, नाश, पूर्ति,  
इकट्ठा करना ।

उपसलेप (पु०) सुलासा, साक ।

उपसदयान (न०)-धोती, पहिरने का  
वस्त्र ।

उपसग्रह (९ पु०)-अनुसन्ध करना, मह-  
सूच करना, पकड़ना, अपनी ओर  
करना ।

उपसग्रह (पु०)-चरणवन्दना, कुकना,  
पैर छूकर प्रणाम करना उपकरण ।

उपसन्धि (स्त्री०)-लगाव, सेवा, पूजा  
दान ।

उपसद् (१, ६ पु०)-सेवा करना, समीप  
जाना, पैर पड़ना । स्त्री०-चैरा,  
पूजा ।

उपसद (पु०)-समीपगमन, दान,  
यज्ञविशेष ।

उपसदन(न०)-शिष्यता ग्रहण करना,  
समीप पहुंचना ।

उपसधा (३ पु०)-एक जगह रखना,  
देर लगाना । [ गुरुगू ।

उपसभाग(पु०)-भातघीत, दोस्ताना

उपसर्ग(पु०)-बीमारी, दुख, ग्रहण  
पड़ना, उपद्रव ।

उपसर्ग(न०) गीण, विपत्ति, विशेषण ।

उपसर्ग(पु०)-प्रसूत, अनुगमन ।

उपसर्ग (६ पु०)-जोड़ना, ग्रहण करना,  
पेदा करना ।

उपसृप् (१ पु०)-अचानक मिलना;  
हरकत करना, आक्रमण करना ।

उपसृष्ट(न०)-मैथुन, भोग । वि०-जुष्टा  
हुआ, आक्रान्त ।

उपसेक(पु०)-सौजन्य भुजायम करना ।

उपसेचन (न०)-पूर्ववत् ।

उपसेव् (१ आ०)-सेवा करना, पूजा  
करना, इस्तेमाल करना, लेपन  
करना ।

उपसेवा(स्त्री०)-पूजा, प्रतिष्ठा, सेवा ।

उपस्कर(पु०)-अपवाद, आभूषण, चरेलू  
काम की वस्तु, उपकरण, मसाला,  
सामान ।

उपस्करण(न०)-ब्रथ, भेट, तबदीली ।

उपस्तम्भन(न०)-आश्रय, जीवनाधार,  
बढ़ावा । [ हरी ।

उपस्तरण(न०)-विस्तर, फैलाना, नश-

उपस्री (स्त्री०)-उपपत्नी, करी हुई  
औरत ।

उपस्थ(पु०)-गोद । अस्त्री०-जननेन्द्रिय

उपस्था(१ पु०)-समीप रुका होना,  
सेवा करना ।

उपस्थाता(पु०)-सेवक, भृत्य, पुरोहित

उपस्थान(न०)-मौजूदगी, उपस्थिति,  
निकटता, जनसमूह, याददाश्त ।

उपस्थायक(पु०)-नौकर, बुहानुयायी ।

उपस्थित (वि०)-समीपगत, हाजिर  
मौजूद, प्राप्त ।

उपस्थिति(स्त्री०) हाजिरी, मौजूदगी, प्राप्ति,  
याददाश्त ।

उपस्थान-नम-इना, स्नान, आचमन  
करना ।

उपसर्ग (न०)-स्त्रियों का मानिकर्षण।  
उपसर्ग (न०)-भूमिकर, इनकमिटैस  
आदि की आय।

उपहन (वि०)-हत, हानि पहुंचाया हुआ।

उपहति (स्त्री०)-मघ, चोट, हानि।

उपहर (पु०)-गुह, छद्म।

उपहस (१५०)-हंसना, मज़ाक उड़ाना।

उपहस्तिका (स्त्री०)-पानदानी, पान  
रखने की जेबो दिखिया।

उपहार (पु०)-भेट, नज़राना, इज्जत।

उपहृति (स्त्री०)-निमन्त्रण, बुलाना।

उपाशु (पु०)-मन मन में जाप करना,  
मीनसा।

उपाकरण (न०)-तैयारी, आरम्भ,  
आयण की पूर्णिमा के दिन का  
किये जाने वाला कर्म।

उपाकर्म (न०)-पूर्ववत्।

उपाक (८५०)-छाना, निमन्त्रित  
करना, देना, आरम्भ करना।

उपास्या (२५०)-अपान करना, कहना।

उपास्यान-क (न०)-कहानी, छोटी  
कथा, सुनी हुई कथा को फिर  
से कहना।

उपागत (वि०)-समीपागत, संप्रति  
प्रतिष्ठातः। [स्वीकारे, घटना।

उपागम (पु०)-समीपागमन, प्रतिष्ठा,

उपाग्रहण (न०)-उपनयनसंस्कार के  
परचात् वेदाध्ययन।

उपाङ्ग (न०)-मीज अङ्ग। जैसे हाथ  
की अंगुली, अंगुठा आदि। प्रा-  
चीन संस्कृत साहित्य में वेदांगों  
के सहायक सुस्तक उपाङ्ग कह-

लाते हैं जो चार हैं, यथा—  
पुराण, न्याय, मीमांसा और  
धर्मशास्त्र।

उपात्त (वि०)-गृहीत, प्राप्त, पकड़ा हुआ,  
कायित। पु०-ऐसा हाथो निम का  
मद प्रकट न हुआ हो।

उपात्यय (पु०)-उज्ज्वल, अनाचार,  
सौमामंग।

उपादा (३५०)-लेना, ग्रहण करना,  
प्राप्त करना, पकड़ना।

उपादान (न०)-प्राप्ति, ग्रहण, यपान,  
कथन, हेतु।

उपादानकारण (न०)-यह कारण जो  
स्वयं कार्य रूप में परिणत हो जाय।  
ऐसी सामग्री जिससे कोई वस्तु प्रकट  
हो या तैयार हो।

उपादेय (वि०)-करने योग्य, उम्दा, प्रायः,  
उत्कृष्ट।

उपाधा (३५०)-समीप रखना, धारण  
करना, पहनना।

उपाधि (पु०)-मण्डा, डल, चिन्ह, उप-  
नाम, निताप, टैटिल।

उपाध्याय (पु०)-शिक्षक, गुरु, आचार्य,  
उस्ताद।

उपाध्यायी-यानी (स्त्री०) उपाध्याय की  
स्त्री, गुरुपत्नी।

उपान्त (३५०)-अन्त, पहरा, चर्म-  
पादुका।

उपान्त (पु०)-किताब, सिपा, मोमा निक-  
टना।

उपान्तिक (न०)-निकटना, समोपना।

उपान्त्य (न०)-पहरा। पु०-नेत्र का कोना।  
वि०-अन्तिम में पहना।

उपाय (पु०)-उपारि, डाग, साधन, यत्न,

कोशिश हिकमत, तरीका, प्रकार,  
तरकीय ।  
उपायचतुष्टय ( न० )-विजयप्राप्ति के  
कार साधन यथा-साम, दान इत्यु  
और भेद ।  
उपायन (न०)-समीप गमन, पास जाना,  
भेट, उपहार ।  
उपाय (पु०)-अशुद्धि, अपराध ।  
उपाय (वि०)-निवृत्त, हटा हुआ, भग्न ।  
उपायम् (१ प०)-दिलबहुलाना, रुकना,  
निवृत्त होना ।  
उपायम् (पु०)-आरंभ, शुरु ।  
उपायन (न०)-प्राप्ति, हासिल ।  
उपायम् (१ प०)-ताना देना, धिक्कारना,  
निन्दा करना ।  
उपायम् (पु०)-निन्दा, उलाहना, ताना-  
जनी, देरी ।  
उपायम् (न०)-पूर्वयत् ।  
उपाय (पु०)-थकान उतारने के लिये  
पृथीपर लोटने वाला घोड़ा ।  
उपाय (पु०)-आश्रयस्थान, आधार-  
स्थान ।  
उपाय (२ प०)-समीप बैठना, पास २  
बैठना, पूजा करना ।  
उपायक (पु०)-पूजा करने वाला, अनु-  
गामी शूद्र ।  
उपायना-नम् (न०)-सेवा शुभूषा, देवा  
साधन पाण्डविषा ।  
उपाय (स्त्री०)-सेवा, पूजा ध्यान ।  
उपायिता [वि०]-आराधक ।  
उपे (२ प०)-समीप आना, पहुंचना, प्राप्त  
करना, समागम करना ।  
उपे (१ प०)-भूलना, विस्मरण करना,  
छाड़ना, अवमानना करना ।  
उपे (स्त्री०)-उदासीनता, बे परवाही,

त्याग, अवमानना ।  
उपेत (वि०)-समीप में आया हुआ,  
उपस्थित, युक्त ।  
उपेन्द्र (पु०)-वृष्ण, विष्णु ।  
उपेन्द्रवज्रा (स्त्री०)-११ अक्षर के पाद-  
वाला एक कुन्द ।  
उपोद (वि०) विवाहित, समीप ।  
उपोदक (वि०)-अलके समीप ।  
उपोदग्रह (पु०)-ज्ञान ।  
उपोदघात (पु०)-आरंभ, भूमिका, प्रस्ता-  
वना, उदाहरण ।  
उपोदघातन (न०)-तस्दीक ।  
उपोषण (न०)-उपवास, व्रत, रोजा ।  
उप्त (वि०)-घोषा हुआ ।  
उठ (६ प०)-दखाना, काबू में रखना,  
सीधा करना ।  
उम् (६, ७, ८ प०)-कैद करना, ठकना ।  
उम् (सर्व०)-दो, यह शब्द केवल द्वि-  
चन में प्रयुक्त होता है, जैसे "उम्मी  
वालकी" ।  
उभय (वि०)-दोनों, यह सर्वनाम है  
और प्रायः एकवचन और बहु-  
वचन में प्रयुक्त होता है ।  
उभयत [स्] (अ०)-दोनों ओर से,  
दोनों दशाओं में ।  
उभयत (अ०)-दोनों स्थानों में, दोनों  
दशाओं में । [तरह ।  
उभयता (अ०)-दोनों प्रकार से, दोनों  
उभयविध (वि०)-दोनों प्रकार का ।  
उभयसम्भय (पु०)-अनिश्चयता ।  
उभयात्मक (वि०)-दोनों से सम्बन्ध  
रखने वाला । [का बोधक ।  
उम् (अ०)-प्रश्न, स्वीकार, क्रोध आदि

उमा (स्त्री०)—हिमालयराज की पुत्री ।  
पावन्ती, हल्दी, रात्रि, शान्ति,  
कीर्ति, कान्ति । [ देव ।

उमापति(पु०)—उमाभव, शिव, महा-  
उमासुत(पु०)—कान्तिकेय, गणेश ।

उमेश(पु०)—शिव, महादेव ।

उम्न(६, ७, ८ प०)—कैद करना, डकना ।

उरग(पु०)—सांप, सर्प, छाती से चलने  
वाला ।

उरगारि(पु०)—गरुड़, मोर ।

उरगाशन(पु०)—गरुड़, मोर ।

उरंग(पु०)—सांप, सर्प ।

उरण(पु०)—मैंदा, भेड़ ।

उरणक(पु०)—मैंदा, बादल ।

उरभ(पु०)—मैंदा, बादल, मेघ ।

उररी(अ०)—स्वीकारी, विस्तार अर्पण  
का बोधक ।

उररीकार(पु०)—स्वीकारी, वापदा ।

उरसू(वि०)—उत्तम । न०—छाती, वक्षःस्थल

उरःक्षत(न०)—छाती का घाव ।

उरु(वि०)—चीड़ा, विस्तीर्ण, अत्यधिक,  
उत्तम ।

उरुता(स्त्री०)—यङ्गपन, विस्तीर्णता ।

उरुप्या(स्त्री०)—रक्षा करने की इच्छा ।

उरुसख(वि०)—शक्तिशाली, पराक्रमी ।

उरुल(वि०)—स्वतन्त्र, स्वेच्छानुगामी ।

उरोज(न०)—स्त्रीस्तन ।

उर्णनाभ(पु०)—नकड़ी । [ रेखा ।

उर्णा (स्त्री०)—ऊन, भैं के बीच की

उड़ (१ भा०)—जायका लेना, देना,  
सेलना ।

उब् (१ प०)—भारना, नुकसान पहुंचाना ।

उर्वट(पु०)—यकड़ा, बयें, साल ।

उर्वरा(स्त्री०)—जलस्रोत जमीन, सर्व-  
धान्यसम्पन्न भूमि ।

उर्वरी(स्त्री०)—श्रेष्ठ स्त्री ।

उर्वशी(स्त्री०)—स्वयं की वेश्या, दूर,  
अप्सरा विशेष जो पुरुषों को  
पहली होगई थी ।

उर्वाक(पु०)—खरबूजा, ककड़ी ।

उर्वी(स्त्री०)—भूमि, पृथ्वी, जमीन ।

उल(पु०)—एक जंगली जानवर ।

उलिन्द(पु०)—देवविशेष, शिव का  
नाम ।

उलूक(पु०)—वहलू ।

उलूल(न०)—ओखली, गुगुलु ।

उलूपी(स्त्री०)—पातालदेशस्थ नाम-  
राज की कन्या जिसने अर्जुन से  
विवाह किया था ।

उलका (स्त्री०)—छन्ने आकार का  
आकाश से गिरा हुआ तेजःसमूह ।

उलकापात(पु०)—उपरोक्त तेजःसमूह  
का पृथ्वी पर गिरना ।

उलकामुखी(स्त्री०)—गोदही ।

उलघ(न०)—धानि, जेल, जरायु ।

उलमुय(पु०)—मशाल, अंगार ।

उलवण(वि०)—घटित, घना, पड़ा हुआ ।

उल्लंघ(१ भा०, १० प०)—छांपना,  
अतिक्रमण करना, पार करना ।

उल्लंघन (न०)—अतिक्रमण, पार  
पहुंचना । [ श्रान्त ।

उल्लंघित(वि०)—छांपा हुआ, अति-

उल्लङ्घ(१ प०)—कूदना, सेलना, मचलना  
होना ।

उल्लसर्ग(न०)-सुखी, आनन्द ।

उल्लास(पु०)-प्रकाश, चमक, आल्हाद,  
ग्रन्थ का अध्ययन, आरम्भ ।

उल्लासित(वि०)-प्रसन्न, आल्हादयुक्त

उल्लिख् (६ पु०)-नक्श करना, मुच-  
ः क्वरी करना, लिखना, लकीर  
खींचना ।

उल्लिखित ( वि० )-उपर्युक्त, ऊपर  
लिखा हुआ, ऊपर जैसा हुआ,  
देखाकित ।

उल्लेख (पु०)-इयात्ता, वयान, कथन,  
उच्चारण, लिखना, कुन्दा करना ।

उल्लेखन ( न० )-धमन, कै करना,  
खोदना ।

उल्लिखित (वि०)-ज्ञात, प्रसिद्ध ।

उल्लोच ( पु० )-मशहरी, चादनी,  
चन्दोबा ।

उल्लोल(पु०)-महातरंग, बड़ी लहर ।

उल्ल (न०)-जरायु, गर्त ।

उल्लती (स्त्री०) नुकसान देने वाली  
घातशील, हानिकर घातालाप ।

उल्लनस् (पु०)-भृगु का पुत्र शुक्राचार्य ।

उल्लर (अस्त्री०)-वीरनमूल, खस ।

उल् (१प०)-ललाटा; मारना, सजा देना ।

उप(पु०)-गुग्गुलु, खारी मिही, काजी  
सुरुप, दिन निकलना ।

उपण(न०)-कालीमिर्च, पीपल, चोठ ।

उपप (पु०)-अग्नि, सूर्य ।

उपप (स्त्री०)-सुवह, प्रत्युप, अहर्भुज ।

उपप (स्त्री०)-मातृ, सम्भवा ।

उपा (स्त्री०)-सुवह, प्रत्युप, रात्रि,  
खारी मिही, गाय, स्थाली,

माण राजा की पत्नी ।

उपाकाल (पु०)-सुर्गा, कुक्कुट, दिन  
निकलने का समय ।

उपापति ( पु० )-कामदेव का बेटा  
अनिरुद्ध, सूर्य ।

उपित(वि०)-ठहरा हुआ, घासी हुआ ।

उप्ट (पु०)-ऊट, साह, ठकड़ा ।

उप्टी (स्त्री०)-ऊटनी ।

उपण (वि०)-गर्भ, लपा हुआ, कार्य-  
शील, तेज । अस्त्री०-गर्मी, पीपल  
श्रुत, धूप । पु०-प्याण ।

उपणाशु (पु०)-सूर्य, सुरज । [ श्रुत ।

उपणक (पु०)-उपर, सुखार, योद्ध

उपणकाल (पु०)-गर्मी का मौसम ।

उपणता (स्त्री०)-गर्मी, तीव्रता ।

उपणागम (पु०)-उपणाभिगम, गर्मी  
का मौसम ।

उपणीय ( अस्त्री० )-पगड़ी, दुपहा,  
किरीट, मुकुट ।

उपम (पु०)-निदाय, गर्मी ।

उपम (पु०)-फिरण, बैल, सूर्य, दिन ।

उपमिक (पु०)-मटिया, घूटा बैल ।

उह् ( १प० )-दुःख देना, मारना ।

उह् (पु०)-साह, बैल । [ हुआ ।

उह्यमान (वि०)-खोया हुआ, उठा

## ऊ

ऊ ( पु० )-चन्द्रमा रत्नक, शिष ।

ऊ०-सम्बोधन, दया, रत्ना इन  
अर्थों का बोधक ।

ऊट(वि०)-विवाहित, उठाया हुआ,  
उठाया हुआ ।

कत (वि०)—सींया हुआ, गुंथा हुआ,  
घुंथा हुआ ।

कति (स्त्री०)—सीना, धुनना, रक्षा,  
दिलयद्वाव, अनुकूलता, सहायता ।  
कधस् (न०)—धन, गौंके दूध का भा-  
धार, छाती, घसःस्थल ।

कधस्य (न०)—दूध, दुग्ध ।

कन (वि०)—कम, नाकाफी, अपर्याप्त, अ-  
सम्पूर्ण, हीन । [पन आदि अर्थोकावोचक ।  
कम् (अ०)—निन्दा, लोम, क्रोध, उज्जङ्क-  
क्यु ( १ आ० )—धुनना, सीना ।

कल्य (पु०)—वैश्य, ऊरु से उत्पन्न हुआ ।  
ऊरु (पु०)—जांघ, जानु से ऊपर का  
भाग । [ पु०—वैश्य ।

ऊरुज-सम्भव (वि०)—जांघ से उत्पन्न ।  
ऊरुपर्व ( अस्त्री० )—घुटना, जानु ।

ऊर्ज ( १० उ० )—बल लगाना, जीना । स्त्री०—  
बल, रस, जल । [ उत्साह

ऊर्ज (वि०)—कार्तिक मास का नाम, बल,  
ऊर्ध्वनाम ( पु० )—मकड़ी । [ मेघलोम ।

ऊर्णा ( स्त्री० )—भाँ के बीचके रोम, ऊन,  
ऊर्णापु (पु०)—कम्बल, मकड़ी ।

ऊर्णु ( २ उ० )—घेरना, छिपाना, ढकना ।  
ऊर्दर ( पु० )—राजस, धादुर ।

ऊर्ध्व ( वि० )—सोधा, खड़ा हुआ, ऊँचा,  
उपरिष्ठित ।

ऊर्ध्वक्व ( पु० )—केतु का नाम ।

ऊर्ध्वकण्ठी ( स्त्री० )—महाशतावर ।

ऊर्ध्वकाय ( अस्त्री० )—शरीर का ऊपरका भाग  
ऊर्ध्वगामी ( वि० )—ऊपर जाने वाला ।

ऊर्ध्वगमन ( न० )—चढ़ाई, ऊँचाई, स्वर्गारोहण  
ऊर्ध्वजानु ( वि० )—जिसके घुटने ऊँचेहों

ऊर्ध्वदेह ( पु० )—दाहकर्म ।

ऊर्ध्वबाहु [ पु० ]—पेसा तपस्वी जो बाहुओं

को सत्रा ऊपरकी ओर उठावे रखता है  
ऊर्ध्वभाग [ पु० ]—ऊपर का भाग ।

ऊर्ध्वरेताः [ स्० ] ( पु० )—पेसा मनुष्य जिस  
का धीरे ऊपर को जाता है स्थलित  
नहीं होता, भीष्म, शिव, सन्यासी ।

ऊर्ध्वलोक [ पु० ]—ऊपरका लोक अर्थात् स्वर्ग  
ऊर्ध्वशायी [ वि० ]—ऊपर को मुँह करके

सोने वाला । [ श्वास ऊपर को लेना  
ऊर्ध्वश्वास [ पु० ]—श्वास का बाहर निकालना

ऊर्मि [ अस्त्री० ]—लहर, प्रकाश, तरंग, नेजी,  
लाइन, पङ्क्ति ।

ऊर्मिका [ स्त्री० ]—लहर, तरंग, पञ्चाचाप ।  
ऊर्मिमाली [ पु० ]—समुद्र ।

ऊर्मिजा [ स्त्री० ]—लक्ष्मण की स्त्री का नाम  
ऊर्ध्वा [ स्त्री० ]—रानि । [ की अग्नि, बादल ।

ऊर्ध्व [ वि० ]—विस्तारण, बढ़ा । पु०—समुद्र  
ऊर्ध्वरा [ स्त्री० ]—अरवेज्ज जमीन ।

ऊलूक ( पु० )—वरलू । [ हीना ।

ऊप ( १ पु० )—रोगी होना, अस्वस्थ

ऊप ( पु० )—खारी भूमि, मातःकाल,  
प्रभात ।

ऊपक ( न० )—ऊपकाल, कालीमिष ।  
ऊपक ( न० )—कालीमिष, अदरक ।

ऊपर ( अस्त्री० )—खारीभूमि, ऐसी भूमि  
मिष में बोया हुआ बीज नहीं

जमता, वंशरभूमि ।  
ऊष्म ( पु० )—गर्मी, गर्मी का मोक्षन,

जोश, भाप ।  
ऊह ( १ उ० )—वितर्क करना, अनुमान

लगाना, समझना ।  
ऊह ( पु० )—अनुमान, तकला, परीक्षा,

समझ, परिवर्तन ।  
ऊहन ( न० )—अनुमान लगाना ।

कहा (स्त्री०) - अर्थ पूरा न होने के कारण अन्य स्थान से शब्दों का ग्रहण करना, अध्याहार ।  
कहिनी (स्त्री०) - देर, सेना, समूह ।

## कृ

कृ - नागरी घणमात्रा का सप्तम अक्षर ।  
कृ (अ०) - उपहास, भर्त्सना, सम्बोधन ।  
कृ (१५०) - जाना, हिलना, प्राप्त करना, आक्रमण करना ।  
कृक्व (न०) - धन, सम्पत्ति, सोना ।  
कृक्वग्राह (पु०) - दायभागी, धारिण ।  
कृक्वण (वि०) - लत, जहमी ।  
कृल (पु०) - रीछ, भालू, एक पक्षी ।  
कृत्तगन्धा (स्त्री०) - विदारीकन्द ।  
कृत्तनाथ - राद (पु०) - चन्द्रमा, जाम्बवान् ।  
कृत्तर (पु०) - कृत्तिक; फाँटा ।  
कृत्ता (स्त्री०) - उत्तरदिशा ।  
कृत्तीक (वि०) - भालू के समान भयानक ।  
कृत्संहिता (स्त्री०) - वेदों का मन्त्रभाग ।  
कृत्वेद (पु०) - चार वेदों में से पहिला जो अग्नि द्वारा प्रकट हुआ है और जिस में विशेषतः ब्रह्मज्ञान का वर्णन है । यह धर्मों का प्राचीनतम धर्मपुस्तक है ।  
कृम् (६५०) - भाना, तारीफ़ करना, चमकना ।  
कृन् [ व ] (स्त्री०) - सुक, गीत, श्लोक ।  
कृन्ति, पूजा, कृत्वेद का मन्त्रसमूह ।  
कृन्तीक (पु०) - जमदग्नि या पिता ।  
कृन्तीप (पु०) - नरक धिरोप ।  
कृच्छ्र ( ६५० ) - बडोर होना, जाना, दरबत करना, मोह करना ।

कृच्छ्रका (स्त्री०) - प्लाष्टि ।  
कृज् ( १ आ० ) - जाना, प्राप्त करना ।  
कृजीप (न०) - नरकधिरूप, कढ़ाई ।  
कृजु (वि०) - सरल, सीधा ।  
[ स्त्रीलिंग में कृज्या, कृजु दोनों, होते हैं ] ।  
कृजुता (स्त्री०) - सीधापन, ईमानदारी, समझ ।  
कृजूयु (वि०) - सीधा, ईमानदार ।  
कृज्जु ( ६३० ) - आगे की उछलना, दीहना, यत्न करना ।  
कृण् ( ६३० ) - जाना ।  
कृण ( न० ) - कर्ज, उपहार, किला, किले की पृथ्वी; दुर्ग, जल, भूमि, क्षयिष्ठल, देवक्षेत्र और पितृक्षेत्र, तीन प्रकार के कृण होते हैं जिन का चतारना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है ।  
कृणप्रस्त (वि०) - कर्ज में फँसा हुआ ।  
कृणग्राही (वि०) - कर्जदार, अधमर्ण ।  
कृणदाता (वि०) - कर्ज देने वाला, कर्ज अदा करने वाला ।  
कृणमार्यण (न०) - प्रतिभू, जामिन ।  
कृणमुक्त (वि०) - कृण से छुटा हुआ ।  
कृणलेख्य (न०) - दस्तावेज जिसमें कर्ज लेने का इकरार होता है ।  
कृणिक (पु०) - कर्जदार, अधमर्ण ।  
कृणी (पु०) - पूर्ववत् ।  
कृत् ( २ आ० ) - जाना, भर्त्सना करना, मुकाबिला करना ।  
कृत (वि०) - उचित, ईमानदार, सचवा पूजित, दीप्त, गया हुआ । न० - ब्राह्मण का भोज्य आहार, मोक्ष

जल, सत्य । [ परमेश्वर ।

अतधाम (वि०)-सत्यस्थान अर्थात्  
अनम्(अ०)-सत्य, सच ।

अतम्भर ( पु० )-परमेश्वर, सच्चाई  
का रक्षक ।

अति ( पु० )-सेना । स्त्री०-आक्रमण,  
निन्दा, स्पर्धा, गति, मार्ग,  
अभ्युदय, सच्चाई, स्मृति ।

अतीया ( स्त्री० )-लज्जा, निन्दा,  
पिङ्कार ।

अतु ( पु० )-सौमन, वर्ष का उठा  
भाग, बहार, वह काल जब कि  
स्त्रियो का रज स्राव होता है,  
हेतु, दीप्ति, चमक । वर्ष में उः  
अतु होते हैं, जिन के नाम ये  
हैं-शिशिर, वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा  
शरद और हेमन्त, शिशिर माघ  
से भारम्भ होती है ।

अतुकाल ( पु० )-स्त्री के रजोदर्शन  
का समय जो प्रायः चार दिन  
तक होता रहता है, उसके पश्चात्  
गर्भधारण का समय होता है ।

अतुगामी ( पु० )-रजोदर्शन के पश्चात्  
ही स्त्री से समागम करने वाला,  
सम्भोग में नियमाचारी ।

अतुपर्ण ( पु० )-अयोध्या के एक राजा  
का नाम ।

अतुपा ( पु० )-इन्द्र का नाम ।

अतुनती ( स्त्री० )-हेतु वाली स्त्री,  
रजस्वला ।

अतुराज ( पु० )-अतुओं का राजा  
अर्थात् असुर ।

अनुस्नाता ( स्त्री० )-रजोदर्शन के  
पश्चात् नहाई हुई स्त्री, गर्भ  
धारण करने योग्य स्त्री ।

अते(अ०)-विना, सित्राय । [ वाला, पुरोहित  
अतिव्र [ क ] ( पु० )-याज्ञ, यज्ञ कराने  
अद्व ( वि० )-अमीर धनवाला, उन्नत समृद्ध  
न०-बढ़ोत्तरी, सिद्धान्त ।

अदि ( स्त्री० )-अभ्युदय, सम्पत्ति, कामयाबी,  
उन्नति, शोभा ।

अदिकाम ( वि० )-उन्नति चाहने वाला ।

अष्ट ( ४, ५ प० )-उन्नति करना, बढ़ना, काम-  
याप होना । [ बढ़ाई करना ।

अष्ट ( ६ प० )-देना, भारना, निन्दा करना,

अमु ( पु० )-देव, देवता ।

अमुल ( पु० )-इन्द्र, चम्र, स्वर्ग ।

अश्य ( वि० )-मारने योग्य, घृण्य ।

अदयकेतु ( पु० )-प्रयुक्त का पुन अनिरुद्ध ।

अष्ट ( १, ६ प० )-जाना ।

अष्टपथ ( पु० )-बैल, सांड, एक औषध, जनों  
का पहिला अग्रतार । [ पुरुष या नर  
शब्द पूर्वपद होने पर यह शब्द श्रेष्ठ  
अर्थ बोधक है जैसे पुरुषपथ ] ।

अष्टपथर ( पु० )-एक छोटा या जवान बैल

अष्टपथदेव ( पु० )-नागवत के अनुचार

राजा नासि के पुत्र जो विष्णु  
के २४ अवतारों में गिने जाते हैं,  
जैनियों के आदि तीर्थंकर ।

अष्टपथज ( पु० )-शिव, महादेव ।

अष्टपथ ( स्त्री० )-पुरुष के स्वरूप वाली  
स्त्री, शूकशिम्वी ।

अष्टि ( पु० )-वेदमन्त्रार्थ को प्रकाशित  
करने वाला, अनुष्ठान कर्म को  
बताने वाला, सूत्रकर्ता । मुनि,



आचार्य, गोत्र और प्रवर को  
बलाने वाला मुनि ।

अधिकृत्या (स्त्री०)-महानदी ।

अधिकृत (वि०)-प्रकट होने वाला ।

अपितर्पण (न०)-अपिपो का तर्पण ।

अपिमोक्षा (स्त्री०)-मायवर्णी नामक  
औषध । [ पट्टना ।

अधियक्ष (पु०)-अक्षयक्ष, वेद का  
अष्टि (स्त्री०)-दीर्घों और धारा  
वाला तन्त्र । [ हरिण ।

अध्व (पु०)-अग्निसेद, एक प्रकार का  
अध्वमूक (पु०)-पम्पा सरोवर के पास  
पुष्पित बूटी वाला एक पर्वत  
जिस का ध्वनन रामायण में  
आया है, जहां रामचन्द्र गुप्त  
के पास कुछकाल तक रहे ।

अध्वशृङ्ग (पु०)-विताहडक अपि का  
पुत्र, लोमपाद नामक राजा की  
कन्या शास्ता का पति, मुनि-  
विशेष । [ पु०-इन्द्र, अग्नि ।

अध्व (वि०)-बड़ा, ऊँचा [ वेद में ] ।

## अ

अ (अ०)-दूरीकरण, भय, निन्दा,  
स्मृति, दया इत्यादि अपों का  
योपक। स्त्री०-स्मृति, गति, देवमाता,  
भैरव, दानव, असुर । न०-वस्तु, स्थल

अ (प०)-जाना, हरकत करना ।

## अ

अ (अ०)-देवमाता, देवमाता, पृथिवी,  
पर्वत ।

## ल

ल (अ०)-माता । पु०-शिव । स्त्री०-  
पृथिवी, पर्वत, देवमाता ।

## ए

ए-नागरीवर्णमाला का अक्षर।

ए (अ०)-दया, स्मृति, निन्दा, सखीधन,  
हंसा अपों का योपक । पु०-  
विष्णु ।

एक (स०)-एक की संख्या, अकेला, सिर्फ,  
केवल, एकाकी, बही, अद्वितीय,  
अल्प, छोड़ा ।

एक (वि०)-अकेला, तन्हा, असहाय ।

एकाल (अ०)-एकदा, एक समय, एक  
ही समय ।

एकालीन (वि०)-समकालीन, एकही  
समय में रहने वाला ।

एकगुरु (पु०)-सहपाठी, सहाध्यायी ।

एकचक्र (पु०)-सूर्य का चक्र ।

एकचरवारिगत (स्त्री०)-इकतालीस ।

एकचारी (वि०)-अकेला रहने वाला  
अकेला ।

एकचित्त (वि०)-एकही विषय का ध्यान  
करने वाला ।

एकजाति (पु०)-शूद्र ।

एकजातीय (वि०)-एक ही, वंश का ।

एकतम (वि०)-बहुतसे में से एक ।

एकतर (वि०)-दो में से एक, अन्य ।

एकता-स्थम्-एका, मेघ, इतिहास ।

एकत्र (अ०)—एक स्थान में, बाह्य,  
परस्पर ।

एकदा (अ०)—एक बारगी, एक समय,  
किसी काल में, साथ २ ।

एकधा (अ०)—एक प्रकार से, तुरन्त,  
बाह्य । [ आसक्त ।

एकनिष्ठ (वि०)—एक ही विषय पर  
एकनेत्र-नयन-दृष्टि (वि०)—काण्ड, एकाक्षी  
पु०—कीर्त्ति, शिव, तत्त्ववेत्ता,  
कुंभेर ।

एकपक्ष (वि०)—उस ही पाटी का,  
बहापक । पु०—एक पाटी ।

एकपक्षिक (वि०)—सीत, पतिव्रता ।

एकपञ्चाशत् (खी०)—इक्यावन की  
संख्या ।

एकपत्नी (खी०)—सपत्नी, सीतल,  
पतिव्रता, सती स्त्री । [ कैलास ।

एकपद् (वि०)—लगाडा । पु० बैरुण्ड,

एकपदी (खी०)—पद्मदण्डो, पद्म । वि०—  
एक घेर वाली स्त्री ।

एकपदे (अ०)—अपागव, यकायक ।

एकपर्णिका (खी०)—दुर्गा की छोटी  
बहिर्ग, दुर्गा ।

एकपाती (वि०)—आकस्मिक ।

एकपाद (पु०)—विष्णु, शिव ।

एकपिण्ड (पु०)—कुंभेर जिस की एक  
आँख पीली थी ।

एकपुरुष (पु०)—ब्रह्म, प्रधान ।

एकप्रकार (वि०)—एक ही तरह का ।

एकप्रभुत्व (न०)—सम्पूर्ण आधिपत्य ।

एकभक्त (वि०)—खफादार, एक ही  
की सेवा करने वाला ।

एकमति (वि०)—एक राय का । \*

एकमत्ता (वि०)—जिस का एक ही  
विषय पर ध्यान लगा हो ।

एक्योनि (वि०)—एक ही वश का ।

एकरस (वि०)—एकसा, न बदलने  
वाला । [वृत्ती राजा ।

एकराट्—ज (पु०)—सावर्जनैम, चक्र-

एकराशि (पु०) डेर, समूह ।

एकरूप (वि०)—अनुरूप, समान ।

एकवचन (न०)—एक संख्या का बोधक ।

एकधार-धारे (अ०)—एकदा, एक-  
स्मात्, तुरन्त । [सादा ।

एकविध (वि०)—एक ही प्रकार का,

एकवृत् (स्त्री०)—स्वर्ग ।

एकवेश्म (न०)—सूना घर । [वाला ।

एकव्यवसायी (वि०)—एकसा पेशा करने

एकशत (न०)—एक सौ एक ।

एकपट्टि (स्त्री०)—इकसठ, ६१ ।

एकसप्तति (स्त्री०)—इकहत्तर, ७१ ।

एकसाथै (अ०) परस्पर, बाह्य ।

एकस्थ (वि०)—गृह स्थान में रहने  
वाला, शान्त ।

एकाकी (वि०)—अकेला, सन्हा ।

एकाक्ष (वि०)—एक आँख वाला । पु०—  
कीर्त्ति, शिव ।

एकाक्षी (वि०)—पूर्ववत् ।

एकाग्र (वि०)—एक ही देश पर जमा  
हुआ, एक ही विषय का ध्यान

करने वाला, शान्त ।

एकौल (वि०)—एक अंग का । पु०—  
शरीररक्षक, बुध, विष्णु । न०—  
शिर, चन्दन ।

एकादश (वि०)—ग्यारहवा ।

एकादशक ( वि० )—ग्यारह भाग का  
यत्ना हुआ ।

एकादशन् ( वि० )—एक और दश  
अर्थात् ग्यारह ।

एकादशो ( स्त्री० )—प्रत्येक कृष्णपक्ष  
और शुक्लपक्ष की ग्यारहवीं  
तिथि ।

एकान्त(वि०)—अकेला, तन्हा, केवल,  
एक, अत्यन्त, ज़रूरी ।

एकान्तर(वि०)—एकको छोड़कर अगला  
एकांतिक(वि०)—अन्तिम, परिष्कृत-  
सूचक ।

एकान्न(वि०)—एक साथ खाने वाला,  
एक ही वार अन्न खाने वाला ।

एकाब्दा(स्त्री०)—एक वर्ष की गी ।

एकाग्र ( वि० )—एकाग्रमन, एक ही  
बात की चिन्ता करने वाला ।

एकार्यं(वि०)—समान अर्थवाला, समान  
हूँडा वाला ।

एकाशीति (स्त्री०)—इक्यासी, ८१ ।

एकाग्रय (वि०)—अग्रन्यगति ।

एकाह (पु०)—एक दिन ।

एकाहार ( वि० )—दिन में एक बार  
भोजन करने वाला ।

एकीक(८ व०)—इकट्ठा करना, जोड़ना,  
मिलाना । [ संगति ।

एकीभाव(पु०)—एकपन, एकत्व, जोड़,  
एकीभू (१, पु०)—एक होना, मिलना,  
जुड़ना । [ महायक ।

एकीय ( वि० )—एक पक्ष का, पु०—  
एकैक-कथ (अ०)—एक २ करके ।

एकीक्ति(स्त्री०)—एकहीवचन या वाता  
एकीदर(वि०)—सहोदर, एक ही उदर  
से उत्पन्न ।

एकीन(वि०)—जिस में एक कम हो ।

एकीनविशति(स्त्री०)—उत्तीस ।

एज् (१ आ०)—आना, हरफ्त करना ।

एह(पु०)—मेघ, भेड़, बहिरा ।

एहक(पु०)—जगली बकरा ।

एण(पु०)—फाले रंग का मृग ।

एत(वि०)—गतिशील, प्राप्त, आगत ।  
पु०—हरिण, मृगछाला ।

एतत्कालीन(वि०)—इदानीन्तन, इस  
समय का ।

एतत्संज्ञात(अ०)—यहाने, इससे आने  
एतद्[पु०—एयः, स्त्री०—एया, न०—एतद्]  
(सर्व०)—यह, पुरुषर्त्तु वस्तु का

बोधक ।

एतदीय(वि०)—इसका, एतत्सम्बन्धी ।

एतादृश्-श्(वि०)—ऐसा, इस नानिन्द,  
इस प्रकार का ।

एतावत्(वि०)—इतना, यहा तक, इस  
परिमाण का । [ उटना ।

एध्(१आ०)—बढ़ना, उन्नति पाना,

एध(पु०)—बैधन, काष्ठ ।

एधस् (न०)—पृथ्वयत् ।

एधा(स्त्री०)—अम्पुद्ग, सुधी ।

एधित(वि०)—बढ़ा हुआ, वर्द्धित ।

एनस्(न०)—पाप, मुनाह, निर्दिष्ट ।

एनी (स्त्री०)—नदी, चरमा ।

एरक(न०)—ऊनी कम्बल ।

एरयह(पु०)—अरयह वृत्त ।

एरयिल(पु०)—कुबेर ।

एला(स्त्री०)-इलायची, इलायची वृक्ष  
एलिका(स्त्री०)-छोटी इलायची ।

एध(अ०)-विरस्कार, बराबरी, निश्चय,  
योद्धापन, सादृश्य आदि अर्थों  
का बोधक, ही, भी, निश्चय ।

एधम् ( अ० )-इन प्रकार, ऐसा, हां,  
स्वीकारो, निश्चय ।

एप्(१३०)-पास जाना, जलदी से पहुंच-  
ना, रँगना, हल्ला करना ।

एपणा (स्त्री०)-तलाश, हल्ला, खोज-  
बिज, मायना ।

एपा (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

एपि (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

## ऐ

ऐ-नागरी वर्णमाला का चारहवां स्वर

ऐ(पु०)-शिव । अ०-स्मृति, निमंत्रण,  
सम्बोधन, जय, ओ ।

ऐक (वि०)-एकता, एकसम्बन्धी ।

ऐकपत्य ( अ० )-अपतिहृतप्रभुता,  
सम्पूर्ण अधिकार ।

ऐकनत्य(न०)-मेलनिलाय, इतिष्ठाकृ,  
सर्वसम्पत्ति ।

ऐकागारिक(पु०)-घोर, केवल एक घर  
का मालिक ।

ऐकाग्र ( वि० )-अनन्दासक्तचित्त,  
स्वस्थचित्त ।

ऐकाग्र (पु०)-शरीररक्षक, सेना का  
सिपाही ।

ऐकात्म्य(न०)-परमात्मा में लय हो  
जाना, एकता, आत्मा का मेल ।

ऐकान्तिक(वि०)-सम्पूर्ण, पूरा, अंम-  
तिहत, अग्र्यभिचारी, बृह ।

ऐकान्तिके ( अ० )-अकेले में, एकान्त  
में, दूसरों से अलग होकर ।

ऐकाग्र्य (न०)-उद्देश्य का एक होना,  
अर्थ में समानता होना ।

ऐकाहिक(वि०)-एक दिन का, एक  
दिन को छोड़ कर होने वाला ।

ऐ०-तेहया नामक ज्वर, प्रतिदिन  
नियतसमय पर होने वाला ज्वर ।

ऐक्य(न०)-एकता, एका, मेल, जोड़ ।

ऐक्य(न०)-शुद्ध, मुद्ध, सुरभेद ।

ऐक्यक(पु०)-इस्वाकुवंश की संतान,  
सूर्यवंशी राजा । वि०-इस्वाकु-  
कुलोत्पन्न ।

ऐच्छिक ( वि० )-बहुता पर निर्भर,  
इच्छानुकूल, अस्त्यारी ।

ऐहिक(वि०)-मेषसम्बन्धी ।

ऐहविह(पु०)-कुघेर । [आदि ।

ऐष्य( वि० )-काले हरिण का चर्म

ऐषिक(वि०)-हरिण का मारने वाला ।

ऐलरेय ( पु० )-इतरा ऋषि की  
सन्तान जो ऐतरेय ब्राह्मण का  
सहस्रोपनयनो है । [निबद्ध ।

ऐतरेयोपनिषद्(स्त्री०)-आठवां उप-

ऐतिहासिक(न०)-इतिहास सम्बन्धी ।

पु०-इतिहास का ज्ञानने वाला ।

ऐतिहा ( न० )-तथारीक्षी, इतिहास-  
सम्बन्धी, परम्परा से प्राप्त उपदेश,  
एक प्रकार का प्रमाण ।

ऐनस(न०)-पाप, अपराध ।

ऐन्द्य (वि०)-चन्द्रमासम्बन्धी । पु०-

चन्द्रमास । [वालि, एक सप्तमः ।  
ऐन्द्र (वि०) - चन्द्र का । पु० - अजुन,  
ऐन्द्रनालिक (वि०) - खलपुक्त, मायिक,  
ठगने वाला । पु० - खलिमा,  
वाजीगर । [वालि ।

ऐन्द्रि (पु०) - कौआ, जघन, अजुन,  
ऐन्द्रिय (वि०) - इन्द्रियों से सम्बन्ध  
रखने वाला, प्रत्यक्ष ।

ऐन्द्री ( स्त्री० ) - पूर्वदिशा, दुःख,  
विपत्ति, दुर्गा, छोटी इलायची ।

ऐन्धन (पु०) - धूँयें । वि० - ऐंधन का  
बना हुआ ।

ऐभ (वि०) - इक्षितसम्बन्धी ।

ऐषय्य (म०) - सरया, परिमाण ।

ऐरायत ( पु० ) - इन्द्र का हाथी जो  
कहते हैं कि समुद्र में से उत्पन्न  
हुमा था ।

ऐरिण (म०) - बैँधा मसक ।

ऐरेप (म०) - मद्य, शराब ।

ऐल (पु०) - हना और युधका पुत्र पुतरया

ऐलविल (पु०) - कुवेर ।

ऐथानी (स्त्री०) - उत्तर और पूर्व की  
दिशा, दुर्गा का नाम ।

ऐम्बर ( वि० ) - प्रभावशाली, शक्ति-  
मय, स्वर्ण ।

ऐयरिक (पु०) - ईश्वर का मानने वाला ।

ऐरययं (म०) - मडिना, प्रभुत्व, शक्ति,  
प्राधान्य, धनसम्पत्ति ।

ऐयगस (म०) - इस वर्णमें, यतनाम वर्णमें

ऐयगस्तन (वि०) - पुनर्द्वर्णीय ।

ऐटिन (वि०) - इटि वस्तुवर्णी । [मान् ।

ऐरमोदिक (वि०) - इसलोक का, नाग-

ऐहिक (वि०) - पूर्ववत् ।

ऐहिकदर्शी ( वि० ) - संसारी, जेष्ठ  
संसार की चिन्ता करने वाला ।

## ओ

ओ-नागरी वर्णमाला का तेरहवाँ स्वर  
जो (पु०) - प्रज्ञा, वाग्व्यपत्ति । म० -  
सम्बोधन, दया, स्मरण ।

ओक (पु०) - घर, पत्नी, भूँ, पुष्प ।

ओकः [सु] (म०) - घा, निवासस्थान,  
रक्षा की जगह ।

ओकण (पु०) खटमल ।

ओकुल (पु०) - चपाती, आटे की बनी  
हुई रोटी ।

ओकोदनी (स्त्री०) - लू, लेशकीट ।

ओक्य (म०) - शर्प, सम्बोध, आराम की  
जगह । [संज्ञाना, सामर्थ्य रखना ।

ओख् ( १ प० ) - सुखाना, दटना,

ओप (पु०) - मसूद, चरना, जलधारा,  
बाढ़, एक प्रकार का नाव ।

ओझार (पु०) - प्रणय, परमात्मा का  
सबोत्तम नाम जिसकी ओह में  
सर्वत्र महिमा गाई है । [महना ।

ओज् ( १० व० ) - सामर्थ्य रखना,

ओज [स] ( म० ) - सामर्थ्य, शारीरिक  
धामुविशेष । [तेजस्वी ।

ओजिष्ठ ( वि० ) - दृढ़ जलधारा,

ओजस्वी (वि०) - मज्जयुक्त, शक्तिशाली,  
दीप्तिमान् ।

ओरी ( स्त्री० ) - लंगरी बादल ।

ओण ( १ प० ) - इदानी, सींच कर ले

जाना । [ अन्तर्व्याप्त ।

श्रोत (वि०)—तागे से सिला हुआ,  
श्रोतश्रोत(वि०)—चारों ओर को फैला  
हुआ, आड़ा और लम्बा दोनों  
ओर से सिला हुआ ।

श्रोतु (पु०)—गिलाब, बिल्ली ।  
श्रोवन (अस्त्री०)—भात, चबले हुए  
चावल, ज्ञानाज ।

श्रोधस् (न०)—ऊधू, गाय का घास ।  
श्रोम् (अ०)—अ, स और न इन तीनों  
से बना हुआ एक अक्षर जो पर-  
मात्मा का सर्वोत्तम नाम है ।  
आरंभ, स्वीकार, संग्रह, ज्ञान,  
हरीकरण ।

श्रोमात्रा (स्त्री०)—रक्षा, दयालुता,  
सहायता ।

श्रोम(वि०)—तर, गीला ।

श्रोप(पु०)—दाह, ललन, पकाना ।

श्रोपधि-धी (स्त्री०)—दघाई, चौदा,  
फलपाकान्त ब्रह्म ।

श्रोपधिपर-पति(पु०)—चन्द्रमा, अक्षर ।

श्रोपधिप्रस्थ(पु०)—हिमालयपुर ।

श्रोपम्(अ०)—कीरन, तुरन्त ।

श्रोष्ठ(पु०)—ढोठ, दातों का पद ।

श्रोष्ठाघर(न०)—ऊपर और नीचे का  
ढोठ । [ सञ्चारण होता है ।

श्रोष्ठ्य(पु०)—वेपथु जिनका ढोठों से

## श्री

श्री(अ०)—मन्मोहन, पुकारना, मुझा-  
घिटा ।

श्रीत(न०)—शैलों का समूह ।

श्रीतक(न०)—पूर्ववत् ।

श्रीरूप (वि०)—पतीली या घटछोई में  
पकाई हुई [ वस्तु ] ।

श्रीघ(पु०)—वाह ।

श्रीधित्ती(स्त्री०)—उचितपन, उपयुक्त-  
ता, मुनासिब बात, योग्यता ।

श्रीधित्य(न०)—पूर्ववत् ।

श्रीजस(न०)—स्वर्ण, मोना ।

श्रीज्जल्य-(न०)—चमक, तेज़ी, सुन्दरता

श्रीह(वि०)—तर, गीला ।

श्रीहव(वि०)—नक्षत्र सम्बन्धी ।

श्रीहुपिक(पु०)—नीका का सवार ।

श्रीहुम्बर(पु०)—गूलर का फल, ताँबे  
की बनी हुई वस्तु, एक प्रकार  
का कुष्ठरोग ।

श्रीत्कदम्प(न०)—उत्कट इच्छा, चिन्ता

श्रीत्कर्ष(न०)—उत्कर्ष, महत्त्व ।

श्रीत्तर(वि०)—उत्तरदिशा का, मुमाली ।

श्रीत्तरेय(पु०)—राजा परीक्षित ।

श्रीत्तानपादि(पु०)—भुव ।

श्रीत्र(वि०)—सुदृढ़, विपन ।

श्रीत्तमिक(वि०)—प्राकृतिक, व्याज्य,  
स्वानाविक, साधारण ।

श्रीत्तुष्य ( न० )—चिन्ता, शैथनी,  
उत्कट इच्छा । [ घाला ।

श्रीद्व(वि०)—जलयुक्त, पानी में रहने

श्रीद्विक ( पु० )—रसोदया, भाषक,  
याचर्थी ।

श्रीद्विक(वि०)—केवल पेट की चिन्ता  
करने वाला अर्थात् पेट । [ प्यन ।

श्रीदाय(न०)—उदारता, कैपाजी, धड़-

श्रीदामिनीय (न०)-उदासीनता, उपेक्षा,  
छापरवाही, घेराव ।

श्रीदामिनीय (न०) पूर्ववत् ।

श्रीदामिनीय (न०)-गुलर का फल, गुलर  
का फाण्ड, ताम्बा, कुष्ठरोगमद ।

पु०-यसरज । [ साहसिकता ।

श्रीदामिनीय (न०)-उद्वेगपन, उद्वेगपन,

श्रीदामिनीय (न०)-पृथ्वी से उत्पन्न होने  
वाला नमक ।

श्रीदामिनीय (वि०)-विवाह सम्बन्धी,  
विवाह में प्राप्त ।

श्रीदामिनीय (न०)-दुग्ध, दूध ।

श्रीदामिनीय (पु०)-कामो के पास का ।

श्रीदामिनीय (पु०)-ग्रहण, सूर्य वा  
चन्द्रग्रहण ।

श्रीदामिनीय (वि०)-गौण, उपचारयुक्त  
श्रीदामिनीय (न०)-असत्य सिद्धान्त,  
नास्तिकता ।

श्रीदामिनीय (वि०)-धीखेयाक, मायिक ।

श्रीदामिनीय (वि०)-जिस का वर्णन  
उपनिषद् में हो ।

श्रीदामिनीय (वि०)-हाथ के पास  
अर्थात् समीप ।

श्रीदामिनीय (अस्त्री०)-उपाय, इलाज ।

श्रीदामिनीय (न०)-मादृश्य, घरायरी ।

श्रीदामिनीय (वि०)-उपभाग में आने  
वाला ।

श्रीदामिनीय (वि०)-पथरीला, पत्थर का ।

श्रीदामिनीय (न०)-उपवास, रोजा ।

श्रीदामिनीय (न०)-पूर्ववत् ।

श्रीदामिनीय (पु०)-राजा का हस्ती,  
राजा की सवारी ।

श्रीदामिनीय (पु०)-यातादि सन्निपात  
से उत्पन्न हुआ रोगविशेष ।

श्रीदामिनीय (न०)-मैघन, समागम ।

श्रीदामिनीय (वि०)-मग्न, उपाधि से  
उत्पन्न हुआ ।

श्रीदामिनीय (न०)-मेघमास, जूनी कपड़ा ।

श्रीदामिनीय (न०)-भेटो का समूह, भेटो  
का गल्ला ।

श्रीदामिनीय (पु०)-गहरिया ।

श्रीदामिनीय (वि०)-हाथी से उत्पन्न, आ-  
त्मज । पु०-विवाहित पत्नी से

उत्पन्न हुआ पुत्र । [क्रिया ।

श्रीदामिनीय (न०)-दाहकर्म, अग्नेष्टि

श्रीदामिनीय (पु०)-उब की सन्तान वा  
दावानल । न०-पहाड़ी नमक ।

श्रीदामिनीय (वि०)-पार्श्व ।

श्रीदामिनीय (न०)-पानी का हौज, भाखरा

श्रीदामिनीय (न०)-रस्सुआ का समूह ।

श्रीदामिनीय (पु०)-कणार्ध मुनि । [हुमा

श्रीदामिनीय (वि०)-इच्छुक, जोश से भरा

श्रीदामिनीय (पु०)-उशीर का पुत्र ।

श्रीदामिनीय (न०)-विस्तरा, कुसी, चौकी,  
पखा ।

श्रीदामिनीय (न०)-काली मिर्च ।

श्रीदामिनीय (न०)-उपाधि, भयज, रोग-  
नाशक द्रव्य ।

श्रीदामिनीय (वि०)-पूर्ववत् ।

श्रीदामिनीय (वि०)-उपाकाल का, सुखदा

श्रीदामिनीय (वि०)-उपाकाल ।

श्रीदामिनीय (न०)-कट का दूध ।

श्रीदामिनीय (न०)-उटो का समूह ।

श्रीदामिनीय (वि०)-झोठ, झूठ के द्वारा

उच्चारण किया हुआ ।

औष्ण (न०)-गमी, उष्णता ।

## क

क-नागरी वर्णमाला का प्रथम व्यंजन, कर्ण का प्रथमाक्षर ।

क (पु०)-ब्रह्म, वसु, सूर्य, आत्मा, पत्नी, शरीर, मन, काल, तेज, सम्पत्ति, अग्नि, कामदेव । न०-जल, द्रव्य ।

क (प्रत्यय)-स्वायं और अल्पायं में प्रत्युक्त होता है ।

कञ् (२भा०)-गाना, गाथा करना, गद्य करना ।

कंस ('अस्त्री०)-प्याला, फटोरा, आढल नामक परिनाय । पु०-

मथुरा का एक राजा ययनेन का पुत्र जो रुक्म का भाग्य था ।

कंसक (न०)-हीराकसीस नामक नेत्र-औषधविशेष ।

कंसकार (पु०)-कमेरा नामक जाति ।

कंसजित्-द्विप् (पु०)-कंस का मारने वाला अर्थात् रुक्म ।

कंसवध (पु०)-राजा कंस का हनन जो श्रीकृष्ण जी ने किया था और जो कृष्णजीवन की एक प्रसिद्ध घटना है । [अर्थात् रुक्म ।

कंसारि-राति (पु०)-कंस का शत्रु कफ् (१ भा०)-चाहना, दर्पित होना ।

कक (१ भा०) [रदित्]-गाना ।

ककन्द (पु०)-सीमा, स्वर्ण ।

ककुञ्जल (पु०)-चातक पत्नी ।

ककुत्स्थ (पु०)-सूर्यवंशीय एक राजा का नाम जो इंद्रवाकु का पोता था ।

ककुद् (स्त्री०)-चोटी, शिखर, बेल का बुड्ड, प्रधान, सरदार, छत्र चामर आदि राजा का चिन्ह ।

ककुद् (अस्त्री०)-बेल का बुड्ड, प्रधान, पर्वत की चोटी ।

ककुद्मती (स्त्री०)-कटि, कमर ।

ककुद्मान् (पु०)-बेल, पर्वत ।

ककुद्मी (पु०)-बुड्ड वाला बेल ।

ककुन्दर (न०)-अपनकूप, पृष्ठबंध नीचे का गतांकार ।

ककुन् (स्त्री०)-दिशा, कोण, शोभा, चोटी, रागनी का एक भेद ।

ककैक (पु०)-पेट का एक कीड़ा ।

ककु (१प०)-हंचना ।

ककतटी (स्त्री०)-खड़िया, चाक ।

कक (पु०)-स्त्रियों के दामन का आंचल-नता, घास, सूना हुआ वन, छिपने का स्थान, घर की दीवार, माय, तड़ागी ।

कक (स्त्री०)-कमर, माथीर, अन्तःपुर, स्पर्शा, दर्जा, बलास ।

ककान्ति (पु०)-दाशानन, घनाग्नि ।

ककान्त्या (स्त्री०)-नागरभोया ।

कक्या (स्त्री०)-हाथी के बांधने की रस्सी, स्त्रियों के पहनने की तमड़ी, दीवार, घेरा, समानता ।

कक (१प०)-हंचना, मज्जा उड़ाना ।

कक्या (स्त्री०)-घेरा, किसी बड़े मड़ल का भाग या कमरा ।



कम् (१ प०)-कास करना, सम्पादनक०

कक (पु०)-युधिष्ठिर का नाम जो  
दबने राजा विराट् के यहाँ  
धारण किया था, बगुला ।

ककट(पु०)-अकुश, कवच, लोह वस्त्र ।

ककूण(अस्त्री०)-हाथ में पहनने का  
एक आभूषण, आभरण ।

ककूत(अस्त्री०)-बालों के साफ करने  
की कपी या कषा ।

ककुलिका(स्त्री०)-कपी, नागबला ।

ककुली(स्त्री०)-कपी, प्रसापनी ।

ककुपत्र(पु०)-एक प्रकार का पाषाण  
जिस में कक नामक पत्ती के पत्र  
लगे हुए होते हैं । [यन्त्रविशेष ।

कंकपुय (अस्त्री०) -सहासी नामक

ककर(वि०)-बुरा, कमीना ।

ककाल (अस्त्री०)-हड्डियों का पिछुर,  
मांसरहित शरीर का दावा ।

ककालमाली(पु०)-शिव का नाम ।

ककालशेप(वि०)-जिस के शरीर में  
केवल चट्टी शेप रह गई हो ।

ककु(पु०)-ककुनी नामक अनाज ।

ककू(पु०)-अमृदहनी शरीर ।

ककुल(पु०)-अशोक वृक्ष ।

ककुल (पु०)-हाथ ।

कक् (१ प०)-चिगलाना, चमकना ।

कष (पु०)-वाल, केश, घन्य, ऊपड़े  
की गोद, बादल, दृढरूपिता का  
एक पुत्र ।

कषगन (न०)-यात्रा, दृढ ।

कषगल (पु०)-धमुद्र ।

कषगात्र (पु०)-पुत्रा, धूम ।

कषाकु(वि०)-कमीना, क्रूर, कटसाध्य ।

पु०-सर्प ।

कषु (स्त्री०)-हल्दी, कपूर । [ मृदा ।

कषयर (वि०)-मैला, क्रूर । न०-छाउ,

कषिचत्त(अ०)-हर्ष, मंगल, दृढता, प्रशन्न  
आदि अर्थों का बोधक ।

कषळ (पु०)-दलदल, राखी, किर्नार,  
केवर का दूध, तुम का पेड़ ।

कषलप (पु०)-कलुमा, एक प्रकार का  
घृत, कुवेर का धनागार ।

कषलभू (स्त्री०)-दलदल ।

कषलुर (वि०)-व्यभिचारी, बदमाश ।

कषवी(स्त्री०)-हल्दी, वृक्षविशेष ।

कल् (१ प०)-सुख होता, अधिक  
दुःख का सुख से उन्मत्त होजाना ।

कज (वि०)-जलोत्पन्न ।

कज्जल (न०)-कानल, रखाही, आँख  
में लगाने का अजान, रोशवाई ।

कज्जलध्वज (पु०)-चिराम, लैम्ब ।

कज्जलीचक(अस्त्री०)-दीवट, शनादानी

कक् (१ आ०)-घाघना, चमकना ।

कषार (पु०)-मूर्ख, क्रूर ।

कषुक (पु०)-कवच, शिरद्वारतर ।

कषुकालु (पु०)-सर्प, साप ।

कषुलिका (स्त्री०)-सर्प की केंदुली ।

कषुकी (पु०)-अन्त पुराध्यक्ष, साप,  
नार, कवचधारी ।

कषुली (स्त्री०)-साप की केंदुली ।

कज्ज (पु०)-बाल । न०-कमल, अमृत

कज्जक(पु०)-मैना पक्षी, कोयल ।

कज्जोर(पु०)-मूय, पेट, चपूर, हाथी ।

कट् (१ प०)-नाना, गमन करना ।

घेरना, बारिश होना ।

कट (पु०)—चटाई, चप्प, जुर्दे की रंगी, बाण, शमशानभूमि, विवाद, तरुना । न०—पुष्पधूलि ।

कटक (अस्त्री०)—हाथका सोनेका कड़ा, चटाई, घर, राजधानी, सेना, कम्प, छावनी, टैबिलेलेपह, घेरा, उड़ीसा प्रदेश का मुख्यनगर ।

कटकी [कू] (पु०)—पहाड़, पर्वत ।

कटकोल (पु०)—पीठदानी ।

कटरादक (पु०)—गीड़, कौशा, कंच का गिलास ।

कटकुट (पु०)—अग्नि, सोना, गणेश, शिव, घरकी छत, छप्पर ।

कटमोप (अस्त्री०)—छूतड़ ।

कटभंग (पु०)—सेनाके पराजय से राजा का विनाश, हाथसे दाने मिछोलना ।  
कटम्भ (पु०)—तीर, एक प्रकार का वाजा ।

कटाश- (पु०)—तिरछी निगाह, आंख के कोने में से देखना, प्रेमयुक्त दृष्टि, मिथ्या दीपारीपण, मोह-तान ।

कटावटक (पु०)—शिव का नाम ।

कटार (पु०)—नागरिक ।

कटाइ (पु०)—तैल, घी आदि पकाने का पात्रविशेष, पड़ाही, कूर, नरक, छोटी भैंस ।

कटाईक (न०)—कड़ाही, वतन ।

कटि (स्त्री०)—कमर, घून्हा, घोषि-देश, दापी के कपोल ।

कटिकूप (पु०)—अघनकूप, पृथ्वी के नीचे गताकार स्वानविशेष ।

कटिन्न (न०)—कटियस्त्र, तगड़ी ।

कटिदेश (पु०)—कमर ।

कटिवट्ट (घि०)—सञ्जदु, उद्यत, तपार ।

कटिमातिका (स्त्री०)—स्त्रियोंके पह-रने की तगड़ी ।

कटिल्ल (पु०)—करेला, कारखेल ।

कटिसूत्र (न०)—तगड़ी, मेखना, कमर पर पहरने का आभूषण ।

कटी (स्त्री०)=कटि । [पार ।

कटीतल (पु०)—सुगड़ी गानका दधि-

कटीर (न०)—गार, गर्त, गुफा, कटि के ऊपर गताकार ।

कटु (घि०)—कड़वा, दूषित, बदबूदार ।  
न०—दूषण, दूषित काय, दुर्गन्धि ।

कटुकन्द (अस्त्री०)—अदरक, अड़सुन ।

कटुकणं (घि०)—जो सुनने में कटीर प्रतीत हो ।

कटुकीट (पु०)—मच्छर, मशक ।

कटुक्षान (पु०)—टिटीदरी पत्ती ।

कटुपन्थि (अस्त्री०)—सोंठ, पिप्पली ।

कटुप्रय (न०)—काली मिर्च, पीपल और सोंठ इन तीन चीजों का संग्रह ।

कटुर (पु०)—कटुफल, कायफल । न०—छाछ, तक्र, नट्टा ।

कटुरथ (पु०)—मैडक, कटोर शब्द ।

कटुरम (घि०)—कड़वे रस वाला ।

कटुघोषा (स्त्री०)—पिप्पली ।

कटोर (न०)—मिट्टी का एक यंत्रण ।

कटोरा (स्त्री०)—कटोरा नाम का  
मसिद्ध वस्त्रम् ।

कटोला (पु०)—चण्डाल । वि०—कड़वा ।

कटार (पु०)—कटार नामक मसिद्ध  
हथियार ।

कटवर (न०)—नट्टा, छाल, चटनी ।

कट (१प०)—दुःख का जीवन व्यतीत  
करना । [ भेद ।

कठ (पु०)—मुनिविशेष, ब्राह्मण, श्रग्-  
कठर (वि०)—कठोर, सख्त ।

कठिका (स्त्री०)—खड़िया, चाक ।

कठिञ्जर (पु०)—तुलसी वृक्ष ।

कठिन (वि०)—कठोर, सख्त, कूर,  
घेरहन्, तीव्र । पु०—झाड़ी ।

कठिनता (स्त्री०)—घेरहनी, कठोरता,  
सख्ती, मुश्किल ।

कठिना (स्त्री०)—घटछोई, रकायी,  
मिठाई ।

कठिनिका (स्त्री०)—खड़िया मिट्टी,  
मछेट पर लिखने का क्लृप्तम् ।

कठिनी (स्त्री०)—पूयंवत् ।

कठोर (वि०)—घेरहन्, तीव्र, मरु भुआ,  
सख्त, कठिन । [ कठिनता

कठोरता (स्त्री०)—सख्ती, मजबूती,  
कष्ट (१प०)—रक्षा करना, बचाना, भेदन  
करना, दपित होना ।

कठ (वि०)—मूर्ख, अनजान, भूया ।

कटत्र (न०)—कलत्र ।

कटार (पु०)—गीला रंग, गीकर, भूतम् ।

कट्ट (१प०)—मृग हीना, रक्त हीना ।

कट्ट (१प०)—अल्प हीना, मनीष जाणा,  
भाय तरना ।

कण (पु०)—बहुत छोटा अंश, लेश,  
टुकड़ा, अनाज का टुकड़ा, अणु,  
संकेद जीरा ।

कणजीरक (न०)—छोटा जीरा ।

कणमल (पु०)—काली बिड़िया, कणाद  
अपि ।

कणमलक (पु०)—पूयंवत् ।

कणाद (पु०)—कणी का खाने वाला  
अर्थात् कणाद मुनि, स्वर्णकार ।

कणिक (पु०)—भगरज, नैदा, शत्रु, भाटा ।

कणिका (स्त्री०)—अत्यन्त छोटा टुकड़ा,  
जीरा, जल की बिन्दु ।

कणिष्ठ (वि०)=कनिष्ठ ।

कणी (स्त्री०)—जीरा, अणु, घूँद ।

कणीक (वि०)—बहुत छोटा ।

कणीचि (स्त्री०)—बूँद, आवाज़, लता ।

कणेर (पु०)—कनेर का वृक्ष ।

कणेरा (स्त्री०)—हथिनी, घेइया ।

कणेर (पु०)—कनेर । स्त्री०—हथिनी,  
घेइया ।

कण्टक (अस्त्री०)—कांटा, नोक, दुःख-

दामी पुरुष, उपद्रवी, रोंगटे खड़े

होना, नाखून, रोक । पु०—दोष,

कारणाना, पाँच । [ का वृक्ष ।

कण्टकद्रुम (पु०)—कांटेदार वृक्ष, सँवल

कण्टकमर्दन (न०)—वपद्रव का शास्त्र  
करना ।

कण्टकाशन (पु०)—कांटों के खाने वाला

अर्थात् अट ["कण्टकमलक" शब्द

भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है]

कण्टकित (वि०)—कांटेदार, पुनका-

न्वित, जिम में रोंग राखे हुए हों ।

कण्टकी(वि०)--कांटोंदार, दुःखदायी,  
चपद्रवी । पु०--मछली, खजूर का  
वृक्ष, बांस, घेरी । [ वृक्ष ।

कण्टकफल(पु०)--धनूरा, गोक्षुर, अरहर  
कण्टालु (स्त्री०)--प्रास, कोकर ।

कण्ट (१० सं०)--रक्ष करना, बाहना,  
शोकपूर्वक याद करना [ अन्तिम  
, श्रम का बोधन करने के लिये  
, इस धातु के पूर्व " उद्य " उपसर्ग  
जोड़ लगता है ] ।

कण्ठ (पु०)--गला, ग्रीवा का अगला  
भाग, गले का थूढ़, मेंढकल  
का वृक्ष, जनीप, पास ।

कण्ठभीषक(पु०)--मशाल, प्रकाश का  
एक साधन ।

कण्ठलता(स्त्री०)--कांठर, लगान ।

कण्ठाग्नि(पु०)--एक प्रकार का घसी ।

कण्ठागत(वि०)--गले में आया हुआ ।

कण्ठाख(पु०)--गुह, छड़ाई, नौका ।

कण्ठिका(स्त्री०)--गले में पहरने की  
माला, कण्ठी ।

कण्ठी(स्त्री०)--गर्दन, गला, कांठर,  
गले की माला ।

कण्ठीरव(पु०)--सिंह, क्यूतर ।

कण्ठील(पु०)--खट, दूध बिलोने का  
वर्तन । [ भक्षण करना ।

कण्ठन(न०)--अनाज्ञ से भूखी का

कण्ठनी(स्त्री०)--ओखली, मुसल ।

कण्ठिका(स्त्री०)--एक देश का नाम,  
वेद का छोटा भाग ।

कण्डू (अ०)--खुजली, अङ्गों का रग-  
हना, खान ।

कण्डूप्र(पु०)--सन्नेद सरसों ।

कण्डू-ति(स्त्री०)--खान, खुजली, खुर्चना

कण्डूयनी(स्त्री०)--मलने का युग्म ।

कण्ठोष्ठ(पु०)--टोकरा, धान्य रखने  
का यांस का घना हुआ पात्र, जंठ ।

कण्ठोलक(पु०)--टोकरी, सन्दूक, कोठार

कण्ठ(पु०)--एक ऋषि जिसने शकुन्तला  
का पालन किया था । न०--पाप,  
गुनाह ।

कण्ठसुता(स्त्री०)--शकुन्तला का नाम

कन्तफल(पु०)--एक ऐसा वृक्ष जिस के  
फल के संयोग से पानी साफ  
हो जाता है ।

कन्तन(सर्व०)--यहुतों में से एक ।

कन्तर(सर्व०)--दो में से एक, दो में से  
कीमती ।

कन्ति(सर्व०)--कितने, संख्या को जानने  
के लिये इस का प्रयोग किया  
जाता है ।

कन्तिपय(वि०)--कुछ, चन्द, कुछेक ।

कन्तन(न०)--चुरी धान, नैत्रमाला ।

कन्तोम(न०)--गराय, गद्य ।

कण्डू (१ भा०)--चनयन करना, श्रेणी  
बघारना, सुशान्द करना ।

कण्डूयन(न०)--श्रेणी ।

कण्डू (१० प०)--कहना, बयान करना,  
बार्ते करना ।

कण्डू (पु०)--कथा कहने वाला, वक्ता ।

कण्डूार(अ०)--किस प्रकार से, कैसे ।

कण्डूज(अ०)--कैसे, किस तरह ।

कण्डूयित(अ०)--कठिनाता से, येनयेन,  
जैसे तैसे ।

कथन(न०)-वयान, कथा, कहना ।

कथनीय(वि०)-कहने योग्य, वयान करने लायक ।

कथन(भ०)कैसे, किस प्रकार से, कहाँ से, क्योंकर ।

कथमपि(अ०)-जैसे तैसे, वैसे यन्त्र से ।

कथम्भूत(वि०)-किस प्रकार का ।

कथा(स्त्री०)-कहानी, वार्ता, वक्तृता, वगनावटी कहानी, ऐतिहासिक ज्ञान ।

कथाक्रम(पु०)-वातचीत का आरंभ ।

कथामसंग(पु०)-वातचीत, दौरान गुलगुल ।

कथारम्भ(पु०)-किसी कहानी या किस्से की शुरुआत ।

कथित(वि०)-कहा हुआ, वर्णित ।

कथोदय(पु०)-कथारम्भ ।

कद्व (४ भा०)-मानसिक दुःख उठाना, परेशान करना ।

कदरु(न०)-मशहरी, तम्बू ।

कदध्या(पु०)-कुमारी, कुपय ।

कदन(न०)-मुद्र, पाप, खूबसूरती, नाश ।

कदम्ब(पु०)-एक नामक वृक्षविशेष, देवताइ ।

कदर(पु०)-अंकुश, आरा ।

कदचित्त(वि०)-सुदृढ़, दृढित, चूना-स्पर्ध, तिरस्कृत ।

कदर्य(वि०)-कटू, जो स्वयं पर टूटाकर और अपने परिवार को बर्ष देकर धमकटा करे ।

कदली(स्त्री०)-बेलें या वृक्ष । पु०-एक प्रकार का हरिण जिस का रक्त काटा और टाल होता है ।

कदलीसता(स्त्री०)-ककड़ीभेद, अति मीन्द्रयंपती स्त्री ।

कदा(अ०)-किस समय, कब ।

कदापन(अ०)-कभी, किसी समय, कभी न कभी । [ वक्त में ।

कदापि(अ०)-कभी, यदा कदा, किसी कदुण (वि०)-बोहा या गर्म ।

कट्ट (पु०)-पीलारंग । वि०-पीला ।

कट्ट (स्त्री०)-ऊपर की स्त्री, नागों की माता ।

कट्टर (न०)-ठाल, मट्टा । [ करना ।

कन् ( १ पु० )-प्रसन्न होना, खेद न

कनक ( पु० )-धनूरा, किशुक वृक्ष । न०-स्वर्ण ।

कनकहार(पु०)-शुभागा । [ करनेकादय

कनकदय (न०)--राजा के चारण

कनकपत्र(न०)--स्वर्ण, आभरण । [ धातु

कनकरस (पु०)--हरताल नामक उप-

कनकचूत्र (न०)--सोने की घनी हुई गले की माला । [ पर्यंत

कनकाचल (पु०)--कनकगिरि, छमेर ।

कनकाध्यक्ष (पु०)-सज्जनगी । [ वृक्ष ।

कनकारक (पु०) कचमाल, कीचिदार

कनखल (न०)-एक तीर्थ का नाम जो हरद्वार के समीप है ।

कनिष्ठ(वि०)-सबसे छोटा, अत्यल्प ।

पु० मिथ, सब से छोटा भाई ।

कनिष्ठा (स्त्री०)-कनकी उगली, सब से छोटी बहिन ।

कनी (स्त्री०)-कन्या, पुत्री ।

कनीचि (स्त्री०) छत्र, एता ।

कनीन(वि०) [चिद में] सबसे छोटा ।

कनीनक(पु०)-वालक, आंखकी पुतली  
 कनीयन् (वि०)-उनिष्ट, सबसे बड़ा।  
 कनीयस (न०)-तांया।  
 कनीयसी (स्त्री०)-पूर्वयव।  
 कनेरा (स्त्री०)-वेरया, इचिनी।  
 कन्तु (पु०)-हृदय वा मन, कोठार,  
 कानदेव। [पीपरा, दीवार, गुदड़ी  
 कन्धा (स्त्री०)-कटा हुआ कपड़ा,  
 कन्धाधारी (पु०)-साधु, तपस्वी,  
 योगसाधक, वैरागी। [घगराना।  
 कन्द (१ पु०)-बिलछाना, शोफ करना,  
 कन्द (पु०)-खादल, मेघ, कापूर।  
 अस्त्री०-प्रत्येक वस्त्र की लड़,  
 ऐसी भाजी जो मूनि के अन्दर  
 चतपन्न होती है, जैसे-गाजर,  
 आलू आदि।  
 कन्दक (पु०)-पालकी।  
 कन्दर(अस्त्री०)-घाटी, गुफा। न०-घोंट  
 कन्दरा-री (स्त्री०)-गुफा, गर्त, घाटी  
 कन्दराकर (पु०)-पर्यंत, पहाड़।  
 कन्दराल(पु०)-अखरोट, मूछ, पिलखन  
 कन्दर्प (पु०)-कामदेव, प्रेम।  
 कन्दर्पकूप (पु०)-स्त्री की योनि।  
 कन्दर्पदहन (पु०)-शिव का नाम।  
 कन्दर्पमुसल (पु०)-उपस्थेन्द्रिय,  
 पुनपचिन्ह, लिङ्ग। [मुह।  
 कन्दल (पु०)-स्वर्ण, लड़ाई, धाक्य-  
 कन्दली (स्त्री०)-कगलहोहा, नृग-  
 विशेष, कगल का बीज।  
 कन्दिरी (स्त्री०)-छुईमुई का पेड़।  
 कन्दु (अस्त्री०)-छोड़े का पात्रविशेष  
 जिस पर रोटी पकाई जाती है।

कन्दुक(न०)-गद्दी, तकिया। अस्त्री०-  
 खेले की गेंद।  
 कन्दुककीड़ा (स्त्री०)-किरफिट वा  
 हाकी का खेल। फुटबाल की  
 'पादकन्दुक' कहते हैं।  
 कन्दोद-त (पु०)-सज्जेद कमल,  
 नीलोत्पल।  
 कन्ध (पु०)-बादल, वृणपिथेप।  
 कन्धर (पु०)-बादल, कंधा।  
 कन्धरा (स्त्री०)-गर्दन, गलदेश।  
 कन्धि (स्त्री०)-गर्दन, प्रीया।  
 कन्पका (स्त्री०)-छोटी लड़की, अवि-  
 वाहिता कन्या, दशवर्ष की कन्या।  
 कन्पसा (स्त्री०)-कनिष्ठा रंगली।  
 कन्या (स्त्री०)-क़ारी लड़की, दश  
 वर्ष की कुमारी, यही इलायची।  
 कन्याट (पु०)-लड़कियों के खेलने  
 का स्थान, अन्तःपुर।  
 कपट (अस्त्री०)-धोखा, फरेब, लाल,  
 छल।  
 कपटतापस (पु०)-धनापटी साधु।  
 कपटलेख्य (पु०)-प्रनापटी दस्तावेज।  
 कपटवेप (पु०)-छिपा हुआ वेप,  
 वनापटी धाकार, दुरुूपिया।  
 कपटिक (पु०)-टग, बदमाश।  
 कपटी (वि०)-छलिया, धैर्यमान।  
 कपटिका (स्त्री०)-कौड़ी।  
 कपाट (अस्त्री०)-द्वार को बन्द करने  
 के लिये काठ के जो दो पट  
 लगाये जाते हैं, किवाड़।  
 कपाल (अस्त्री०)-खोपड़ी, खप्पर,  
 घड़े का टुकड़ा।

कपालिका (स्त्री०)--छोटी २ ठीकरी,  
छोटा खप्पर ।

कपि (पु०)--घादर, चुर्चु, विष्णु ।

कपिल्लल (पु०)--चातकपक्षी, पपीहा ।

कपिल्य (पु०)--एक प्रकार का वृक्ष  
जिसपर घाजर अधिक बैठता है ।

कपिल्वन (पु०)--अर्जुन । कपिलेन  
भी कहते हैं ।

कपिल्य (पु०)--रामचन्द्र, अर्जुन ।

कपिलोह (न०)--पीतल ।

कपिल (पु०)--सौर्यशास्त्र के कर्ता  
ऋषिबिंशेय, कुत्ता, पीला रंग ।

वि०--पीला ।

कपिलद्युति (पु०)--सूर्य, सूरज ।

कपिलपारा (स्त्री०)--सुरनदी, गगननदी ।

कपिला (स्त्री०)--ग्रीन रंग की नाय  
को बहुत शुभ मानी गई है ।

कपिलाङ्गन (पु०)--शिव ।

कपिश पु०--छाल और काला रंग  
मिला हुआ, ग्रीन रंग ।

कपिश (स्त्री०)--माधवी लता, एक  
नदी का नाम, नद्य ।

कपोन्द्र (पु०)--यानरी का राजा अ-  
र्थात् सुयोध, हनुमान् ।

कपूय (वि०)--कमीना, मीच, कुत्सित ।

कपोत (पु०)--कपोतर, घांसी, पक्षी ।

कपोतक (पु०)--सुमा नामक उपधातु ।  
पु०--छोटा कपोतर ।

कपोतपाली (स्त्री०)--कपोतों के बैठने  
की छत्री ।

कपोतपर्णी (स्त्री०)--छोटी दलायची ।

कपोतसार (न०)--सुमा नामक उप-  
धातु ।

कपोतारि (पु०)--कपोतों का शत्रु  
इत्येवनामक पक्षी, घातृ ।

कपोल (पु०)--गाछ, गणहदेश ।

कपोलराग (पु०)--गाछों पर सुर्ती का  
आना ।

कफ (पु०)--शरीर के तीन दोषों में  
एक, श्लेष्मा, यलग्न [ अन्य दो  
दोष वात और पित्त होते हैं ] ।

कफकुर्विका (स्त्री०)--धूर, छार, राल ।  
कफपि (पु०)--कोहनी, बाजू और हाथ  
का जोड़ ।

कफविरोधी (पु०)--काली मिर्च ।

कफारि (पु०)--चौंठ, शयनी ।

कफेष्टु-कफी (वि०)--कफ की अपेक्षा  
से पोहित ।

कय् (१प०)--रंजना, तारीफ करना ।

कयप (अस्त्री०)--मादल, राहु, जल, पेट,  
धूमकेतु, बिना गिर का देह ।

कयन्धी (पु०)--काटपापन ऋषि का  
नाम । [ होना, हकना करना ।

कय् (१० अ०)--प्रेम करना, आसक्त ।

कमठ (पु०)--कुछवा, कमबहलु, घास ।

कमयहलु (अस्त्री०)--सन्धासियों का  
जल पीने का पात्रविशेष ।

कमन (वि०)--कामी, प्रियदर्शन । पु०-  
कामदेव, अशोकदत्त, ब्राह्मण ।

कमनीय (वि०)--मनोहर, सुन्दर, प्रिय-  
दर्शन ।

कमर (वि०)--कामी, विपदायक ।

कमल ( पु० )-सारस पक्षी : न०-जल, पद्म, ताँघा, औपचि ।

कमलयोगि(पु०)-ब्रह्मा [ इसी अर्थ में कमलजन्म और कमलमय भी प्रयुक्त होता है ] ।

कमला(स्त्री०)-सुन्दर स्त्री, लहनी ।

कमलाक्षी(स्त्री०)-कमलनयनी, सुन्दर नेत्रों वाली ।

कमलापति(पु०)-विष्णु का नाम ।

कमलावन(पु०)-कमल के आसन वाला । अर्थात् ब्रह्मा ।

कमलिनी(स्त्री०)-पद्मसमृद्ध, पद्मलता

कमा(स्त्री०)-सूयसूती, खोन्दप ।

कम्प(१भा०)-हिलना, कांपना ।

कम्प (पु०)-शरीर आदि का हिलना ।

कम्पन(न०)-कांपना, शिजिर झटु ।

कम्पित(वि०)-कांपा हुआ ।

कम्पिल(पु०)-कच्छ, घनविशेष ।

कम्प(१प०)-जानर, हरकत करना ।

कम्बल(पु०)-कम्बल नामक शुद्ध वस्त्र, जन का बना हुआ ओढ़ने का वस्त्र, दीपार ।

कम्बलिका(स्त्री०)-छोटा कम्बल, एक प्रकार की हरिणी ।

कम्बली(पु०)-घैल, सांघ, कम्बल ओढ़ने वाला पुरुष । [ शंख ।

कम्बु(वि०)-रंगधिरंगा । पु०-हाथी,

कम्बुक ( पु० )- गख, घोंघ, कमीना आदमी ।

निवासी । [ कम्बोज देश भारत के उत्तर पश्चिम में है और यह शब्द यहुज्जन में प्रयुक्त होता है ]

कयाधू (स्त्री०)-प्रह्लाद की माता ।

कर (पु०)-हस्त, हाथ, प्रकाश की किरण, हाथी की सूँढ़, महसूख, टैक्स, चुगी, ओला । [ पेड़ ।

करक (पु०)-हाथ, महसूख, अनारज्ज करकटक (मस्त्री०)-हाथ की अंगुलिओं के रोफने वाला नख, नामून

करकमल(न०)-पद्मनाभ सुन्दरहाथ ।

करकाजल(न०)-ठक, ओछी का पानी ।

करकाम्भ [ स् ] ( पु० )-नारियल का दूत ।

करकुइल (न०)-अगुलि ।

करघहण (न०)-विवाह, पाणिप्रहण, महसूख इकट्ठा करना ।

करयाह (पु०)-महसूख इकट्ठा करने वाला, पति ।

करक(पु०)-नापे की खोपड़ी, अदिप-विजगर, कमरटलु, नारियल का खोल ।

करकजद(पु०)-तुन का दूत, विहीड़ा ।

करज (पु०)-हाथ में उत्पन्न होने वाला नख, नाखून ।

करज्ज (पु०)-करज्जुषा नामक दूत ।

करट ( पु० )-हाथी का गण्डमूख, जीआ, नास्तिक, नीच दूत का अनुष । [ से दुही नाप ।



करण ]

करण(न०)-सम्पादन, साधन, शरीर,  
इन्द्रिय, एक कारक का नाम,  
वर्ण, हेतु, परमात्मा, उच्चारण ।

करणप्राम(पु०)-इन्द्रियों का समूह ।  
करणाधिप(पु०)-इन्द्रियों का स्वामी  
अर्थात् जीवात्मा ।

करणह(पु०)-हारद्वय नामक पक्षी,  
तलवार, नक्षियों का छत्ता,  
घाँघ की घड़ी हुई टोकरी ।

करतल(पु०)-हाथ की हथेली, नस्ततल  
करताल(न०)-हथेली घमाना, एक  
प्रकार का वाद्य जैसे माता ।

करतालिका(स्त्री०)-करतलध्वनि,  
करताल ।

करद(वि०)-कर देने वाला, खिराज  
जदा करने वाला ।

करन्धय(वि०)-दाय घूमनेवाला ।

करपत्र(न०)-भारा नामक यन्त्र-  
विशेष, ललकीड़ा । [ का पेड़ ।

करपत्रयान्(पु०)-ताड़ का तृप्त, ताल

करपात(पु०)-तलवार, चोंटा, चङ्ग ।

करपालिका(स्त्री०)-पूर्यवत् ।

करपीडन(न०)-विवाह, पाणिपट्टन ।

करपुट(पु०)-दाँतों दाँतों की गिला

पर दनाया हुआ गन्त, अङ्गुलि ।

करपुट(न०)-दाय की पुत्र ।

करपा [वा] ल (पु०) तलवार, चङ्ग,

गल, मारून, हवाय ।

करम(पु०)-दाँती का पोता, दाँती

की पुत्र, छट, कोदनी से छेका

अङ्गुलिपं तक दाय का बाहर

का भाग ।

करभी(स्त्री०)-कंटनी । पु०-हाथी ।

करभीर(पु०)-शेर ।

करभू(पु०)-अनुलि का नाखून ।

करमरी(पु०)-कैदी ।

करम्भ(वि०)-मिला हुआ, मिश्रित ।

पु०-कीचड़ ।

करम्भिन(वि०)-जुड़ा हुआ ।

करम्भ(पु०)-दधियुक्त सतू, कीचड़ ।

करलह(पु०)-हाथ का नाखून, तलवार

करवालिका(स्त्री०)-हाथ की छड़ी ।

करवाला(स्त्री०)-हाथ की डाली

अर्थात् चंगली ।

करभूक(पु०)-दाय की छड़, अर्थात्

नख, नाखून ।

करभूय(न०)-विवाह के समय हाथ

में बाँधी हुई छोरी, जंगना ।

करदाटक(पु०)-दाय का ज़ेवर, छुपण ।

करायन(पु०)-नहसूल एकट्ठा करने

का स्थान, तहसील ।

कराल(वि०)-भयानक, अपकार, विकट

करालिक(पु०)-घृत्त, तलवार ।

करास्कोट (पु०)-घत्तःस्फल, घन

दोकना ।

करिणी (स्त्री०)-इपिनी ।

करिदन्त (पु०)-दाँतीदाँत ।

करिदारक (पु०)-शेर ।

करिप (पु०)-दाँतीदान, पीलवान ।

करिपोत (पु०)-छोटा दाँती, करि

जायक, करभ ।

करिमाणग (पु०)-शेर ।

करिमुग (वि०)-गणेश ।

१री (पु०)-हरमी, जुड़ती जिन

हाथ का काम देती है ।  
 करीर (पु०)-हाथी के दांत की जड़, बांस  
 का अंखुआ, बांस का नया फल्ला,  
 करील का पेड़, चड़ा ।  
 करीरक (न०)-युद्ध, लड़ाई ।  
 करीय (अस्त्री०)-सूखा गोबर, उपला,  
 आगना, धनकड़ा ।  
 करीपिणी (स्त्री०)-सम्पत्ति की अग्नि-  
 प्राप्ति देवी, लक्ष्मी ।  
 करण (वि०)-सहृदय, दयालु, दयायोग्य  
 पु०-दया, कृपा, सहृदयता ।  
 करणचरित (पु०)-हीनता स्त्री आचार्य, ऐसी  
 चरित जिसे सुनकर हृदय में दयाभाव  
 उत्पन्न हो ।  
 करणहृदय (वि०)-दयालु, दयार्द्रचित्त ।  
 करण्यु (स्त्री०)-दया, सहृदयता, रहम ।  
 करणानिधि (पु०)-कृपा या दया का  
 सजाना, दयासागर ।  
 करणामय (वि०)-उड़ी दया वाला, करुणा  
 से भरा हुआ, दयासागर ।  
 करोट (पु०)-हाथ का नागून ।  
 करोट (पु०)-हाथी, हस्ती । स्त्री०-हथिनी ।  
 करोड (न०)-शिर की हड्डी, रोपड़ी,  
 प्याला ।  
 करोटि (स्त्री०)-पुंयत् ।  
 कर्क (पु०)-हमि, चड़ा, दर्पण, घोड़ा,  
 केरड़ा ।  
 कर्कचिर्मट (स्त्री०)-कर्म-जर्मक फल-  
 विशेष ।  
 कर्कट (पु०)-केरड़ा पत्नी, कांटा, रति-  
 धन्य, छोटा आंचना ।  
 कर्कटक (पु०)-केरड़ा, रुद्ध ।  
 कर्कटि-टी (स्त्री०)-केरड़ी नामक फल ।  
 कर्कटु (पु०)-एक प्रकार का चारु  
 पत्ती ।

कर्कण्यु (स्त्री०)-वेर, उनाय, बदरीफल ।  
 कर्कर (पु०)-हथौड़ा, दर्पण, धमड़े  
 का तस्मा । [ में की देवता ।  
 कर्कराटु (पु०)-कटाक्ष, आंस के कोने  
 कर्कश (पु०)-नलवार, गन्ना । वि०-कटार,  
 क्रूर, निर्दय, वेरटन, मरुत ।  
 कर्काक (पु०) चेटा, कूप्ताग्रह ।  
 कर्कोट (पु०)-मर्षभेद, गन्ना, मिश्रा चाप  
 जिन के देखने से ही विष प्रवेश  
 कर जाता है ।  
 कर्कोटक (पु०)-पूयंयत् । [ उपधातु ।  
 कर्पूर (न०)-स्वर्ण, हरताल नामक  
 कर्ज (१५०)-दुःख देगा, बेचैन करना ।  
 कर्ण (१०८२)-सुनना, उदना, मूरास  
 करना, फाड़ना ।  
 कर्ण (पु०)-श्रोत्रनिद्रय, कान, कुन्ती-  
 पुत्र-अंगराज का नाम, गौका  
 चलाने की लकड़ी, तीन मुना का  
 बना हुआ क्षेत्र ।  
 कर्णकीटा-कीटी (स्त्री०)-कानसज्जरा  
 नामक कीटविशेष ।  
 कर्णगूष (न०)-कान का मैल ।  
 कर्णपाद (पु०)-कर्णवार, नलछाद ।  
 कर्णजप (पु०)-भेदिया, गुप्तघर, गुलछोर ।  
 कर्णमल्लिका (स्त्री०)-कर्णकीटी ।  
 कर्णमार (पु०)-नीका चलाने वाला,  
 नलछाद, नाविक । [ पर्य ।  
 कर्णवर्ष (न०)-महाभारत का आठवां  
 कर्णपुट (न०)-नगड़ के समीप मान-  
 निर्मित कर्ण का जग, कर्णघोटक ।  
 कर्णपूर (पु०)-मीला कमल, अशोक  
 मृत्त, कान का आभूषण, घाली  
 नामक जालूयन ।

कण्वजित (पु०)-सर्प । वि०-बहिरा ।  
 कण्विप् (स्त्री०)-कान का सैन ।  
 कण्वेय (पु०)-सोलह संस्कारों में से  
 एक जिस में कान धोये जाते हैं ।  
 कण्वकुली (स्त्री०)-कण्वगोलक, कान  
 का यह स्थान जिस पर वायु के  
 आघात से शब्द सुनाई देता है ।  
 कण्वमूल (भस्त्री०)-कान का दंड ।  
 कण्वस्त्राव (पु०)-कान का ब्रह्म, कान  
 में से सवाद जाना ।  
 कण्वहीन (पु०)-सर्प । वि०-कानों  
 से रहित । [ दक्षिण का प्रदेश ।  
 कण्वट (पु०)-भारतीय प्रायद्वीप के  
 कण्वान्तिक (वि०)-कान के पास ।  
 कण्वपंथ (न०)-कान देना, ध्यान देना,  
 सुनना ।  
 कण्वि (पु०)-एक प्रकार का तीर ।  
 कण्विक (पु०)-कण्वधर । वि०-कानोंवाला  
 कण्विका (स्त्री०)-कान की घाली,  
 छोटा कलम, मध्यमा अंगुली,  
 बहिष्वा ।  
 कण्वार (न०)-कनेर का फूल ।  
 कण्विल (वि०)-छम्मे कानोंवाला ।  
 कण्वी (स्त्री०)-एक प्रकार का तीर,  
 एक स्त्री का नाम ।  
 कण्वीर्य (पु०)-पालकी, डोली, कंघा ।  
 कण्वप्रप (पु०)-कण्वप्रप, शब्द छाने  
 वाला, यह कहने वाला ।  
 कर्त् (१० प०)-हटाना, शिथिल होना,  
 गोलना ।  
 कर्त्तन (न०)-काटना, घुनना, छेदना ।  
 कर्त्तनी (स्त्री०)-काटनेवा यन्त्र, क्रैंची ।

कर्त्तरिका (स्त्री०)-छुरी, छुरा, क्रैंची ।  
 कर्त्तव्य (वि०)-काटने के लायक, नष्ट  
 करने योग्य । न०-करने योग्य,  
 फर्ज, करने योग्य काम ।  
 कर्त्तौ [विं] (वि०)-करने वाला, धनाने-  
 वाला, सम्पादक, परमात्मा,  
 पुरोहित । [वाला, एजेंट ।  
 कर्त्तृक (वि०)-किसी काम को करने  
 कर्त्त (१ प०)-कांय कांय करना, प्रेद-  
 का मुड़मुड़ाना ।  
 कर्त्त (पु०)-कीचड़, मिट्टी ।  
 कर्त्तन (न०)-पेट की मुड़मुड़ाहट ।  
 कर्त्तन (पु०)-कीचड़, पाप, मैला, कुहाना ।  
 कर्त्तमित (वि०)-कीचड़युक्त ।  
 कर्त्त (अस्त्री०)-कपड़े की पानी, धीपड़ा,  
 हमाल ।  
 कर्त्त (पु०)-शस्त्रविशेष ।  
 कर्त्त (पु०)-कड़ाही, कड़ाह, बर्तन,  
 ठीकरा, खोपड़ी ।  
 कर्त्तार (पु०)-कंकड़, रत्ता ।  
 कर्त्त (अस्त्री०)-कपास का पेड़ ।  
 कर्त्त (अस्त्री०)-काफूर, सुगन्धविशेष ।  
 कर्त्त (पु०)-दर्पण, आयना ।  
 कर्त्त (१ प०)-जाना, हरफस करना,  
 पहुंचाना ।  
 कर्त्त (पु०)-पाप, भूतप्रेत, धनूरा,  
 अनेक रंगों से सिंघित रंग । न०-  
 स्वर्ण, जल ।  
 कर्त्त (पु०)-पूर्ववत् ।  
 कर्त्त [न] (न०)-काम, कायं, सम्पादन,  
 कर्त्तव्य, परिश्रम, परिणाम, प्रार-  
 द्य, कर्त्तों द्वारा क्रिया का प्रभाव

त्रिषु वस्तु पर ही उसे व्याकरण में कर्म कहते हैं।

कर्मकर (पु०)—मजदूर, दुली, यमराजा

कर्मकाण्ड (अष्टांग) —ज्ञानकाण्ड का

सहयोगी यज्ञयागादि कर्म, वेद

में परमपदप्राप्ति के दो साधन

बतलाये हैं, एक ज्ञानकाण्ड दूसरा

कर्मकाण्ड, इन दोनों की सम्पा-

दित करता हुआ ही मनुष्य मोक्ष

पर सकता है।

कर्मकर (पु०)—कारीगर, मजदूर, दुहार

कर्मकारों [न] (पु०)—वृंशधत्त।

कर्मकोलक (पु०)—धोयी।

कर्मलभ (वि०)—काम करने में समर्थ।

कर्मण (वि०)—प्रारब्ध से उत्पन्न। पु०—

वट वृक्ष। [ निपुण।

कर्मठ (वि०)—कर्मशूर, चतुर, कार्य में

कर्मण्य (वि०)—काम के लायक, चतुर।

न०—कार्यशीलता, कर्मवीरता।

कर्मयया (स्त्री०)—मजदूरी, वित्त।

कर्मत्याग (पु०)—वैदिक यज्ञ यागादि

का छोड़ना। [ चित्र।

कर्मदोष (पु०)—अपराध, गुनाह, नलती,

कर्मपारय (पु०)—सगामभेद, विशेष

भीर विशेषण का समास।

कर्मन् (न०)=कर्म।

कर्मफल (न०)—प्रारब्ध, किये हुए

कामों का सुख दुःखादि जो

प्राप्त होता है।

कर्मनिष्ठ (वि०)—कर्म में लगा हुआ,

धार्मिक कृत्यों का सम्पादन करने

वाला।

कर्मभूमि (स्त्री०)—धार्मिक कृत्यों के

सम्पादन के लिये उपयुक्त स्थान,

आराधन, भारतवर्ष।

कर्ममीमांसा (स्त्री०)—जैमिनिवृत्त पूर्व-

मीमांसा जिसमें कर्मकाण्ड की

विशेषता दी गई है।

कर्ममूल (न०)—कुशा नामक पाश।

कर्मयुग (न०)—कलियुग का नाम।

कर्मयोग (पु०)—धार्मिक और सांसारिक

सब प्रकार के कर्मों का सम्पादन,

कर्मलिप्ता।

कर्मरी (स्त्री०)—वंशलोचन।

कर्मविपाक (पु०)—कर्म का एकता,

समाशुभ जो कर्म किये हैं उनके

फलरूप सुख दुःख की प्राप्ति।

कर्मशाला (स्त्री०)—काम करने का

स्थान, कारखाना।

कर्मशील (वि०)—कर्मशील, मेहनती।

कर्मशूर (वि०)—कर्म करने में बहादुर।

कर्मसाक्षी (पु०)—आखिरी देखा गया,

चटनस्थल का गवाह।

कर्मसिद्धि (स्त्री०)—कामयाची, इच्छित

वस्तु की प्राप्ति। [ मधे।

कर्मलभ (वि०)—काम करने में लभ-

कर्मनुष्ठान (न०)—धार्मिक कृत्यों का

सम्पादन।

कर्मनुषार (वि०)—प्रारब्ध के अनुरूप।

कर्मरि (पु०)—दुहार, धामभेद।

कर्मिष्ठ (वि०)—काम में लगा हुआ,

चतुर, मेहनती।

कर्मोद्भव (न०)-हाथ, पाय, मुख,  
मुदा और उपस्थ, ये पात्र  
कर्मोद्भव कहलाती हैं ।

कर्म (१ प०)-शेखरी मारना, चम-  
एड करना, मगकर होना ।

कर्म (पु०)-प्रेम, इच्छा, चूड़ी ।

कर्मट (पु०)-तिमाराती भद्र, कपड़ी,  
मधानगर ।

कर्मर (पु०)-पाय, रातच, चीता ।

कर्मरी (स्त्री०)-रातसो, रात्रि, दुर्गा ।

कर्मन (पु०)-आग्नि ।

कर्म (पु०)-सीधना, हल गोतना,  
सरोप, आकपुण ।

कर्मक (पु०)-किमान, खेतीहर ।

कर्मण (न०)=कर्म ।

कर्मित (वि०)-गुता हुआ, इस्तेमाल-  
हुदा, सिपा हुआ ।

कर्मणी (स्त्री०)-चोड़े की लगान का  
छोटा । [कीविका ।

कर्म (पु०)-आरने की भाग, खेती,

कर्मित (अ०)-किसी समय ।

कर्म (१ आ०)-गिनना, आवाज कर-  
ना । [१०५०] एकदना, छे जाना,  
रचना ।

कर्म (वि०)-अस्पष्ट मधुर शब्द, दुर्बल,  
मुलायम, मनोहर । पु०-धीमी  
आवाज ।

कर्मकट (पु०)-कोयल, हंस, क्यूतर ।  
वि०-मधुरप्यगि वाला ।

कर्मकल (पु०)-गुणगुमाइत, रीठा,  
कोलाइल ।

कर्मोप (पु०)-कीयक ।

कलक (पु०)-दीप, धडवा, दाग, ऐय,  
अपवाद, अपयथ ।

कलकित (वि०)-दीपी, दागदार,  
बदनाम ।

कलक (पु०)-पत्नी, तम्बाकू, विप-  
पूर्ण धाण से सिद्ध मृग ।

कलक (न०)-छत्पर, छान ।

कलक (न०)-स्त्री, भार्या, शूकरों

कलधूत-पोत (न०)-जादी, स्वर्ण ।

कलक (न०)-दीप, बिन्दू, ऐय, सन-  
कता ।

कलक (पु०)-वर्णचक्र, -हीनवर्ण  
पुरुष के उपयोग से उत्पन्न सन्तान ।

कलक (स्त्री०)-प्रतिभा, सर्वधि-  
आर्षों के ग्रहण करने की शक्ति ।

कलक (पु०)-छोटा हाथी, इस्ति-  
पोत, ऊट का बच्चा, भूरा ।

कलक (पु०)-लेखनी, बीर, एक प्रकार  
का धान्य, बदमाश ।

कलक (पु०)-तीर, कदम्ब का वृक्ष,  
नाली का साग ।

कलक (न०)-सारा घी, जीनी ।

कलक (पु०)-धीमी गीटी आवाज,  
कोयल, क्यूतर ।

कलक (अस्त्री०)-गरायु, विरहली ।

कलक (पु०)-पद्मा, दाग, चटक  
पत्नी ।

कलक-स (अस्त्री०)-कलक, पहा,  
पात्रविशेष ।

कलक (स्त्री०)-पहा, पानी भरने  
का छोटा घात ।

कलह ( शस्त्री० )—झगड़ा, विवाद,  
चिल्लाहट, मुहु, तलवार का  
टुकन ।

कलहंस ( पु० )—राजहंस । [ नारद ।  
कलहप्रिय ( वि० )—झगड़ाछू । पु०—  
कलहप्रिया ( स्त्री० )—मैना, सारिका ।  
कला ( स्त्री० )—अंग, टुकड़ा, सूद,  
राशि के तीसरे भाग का साठवां  
भाग, हुनर [ चौंसठ कला प्रसिद्ध  
हैं ], नाव, भीखा ।

कलाकुन ( न० )—इलाहल धिप ।  
कलाकुर ( पु० )—कांस, चारस पत्नी ।  
कलाद्र ( पु० )—फारीगर, स्वयंकार,  
हुनार ।

कलादक ( पु० )—पूर्ववत् ।  
कलाधर ( पु० )—चन्द्रमा, फारीगर ।  
कलाधिक ( पु० )—मुर्गा, कुकट ।  
कलानिधि ( पु० )—चन्द्रमा ।  
कलानुनाही ( पु० )—भीरा, चटकपत्नी ।  
कलाप ( पु० )—चन्द्रमा, तर्कस, तोर,  
अलंकार, तोर की पूंछ ।

कलापिनी ( पु० )—रात्रि, रात ।  
कलापी ( पु० )—तोर, कीयल, पिलखन ।  
कलाभृत् ( पु० )—चन्द्र, हुनरमन्द ।  
कलान्त्रि ( स्त्री० )—मूदखोरी, माहूकारा ।  
कलाप ( पु० )—मटर नाम का अनाज ।  
कलाधान् ( पु० )—चन्द्रमा ।

कलि ( पु० )—धीया युग, वर्तमान युग,  
कलह, विवाद, झगड़ा, बहादुर,  
तोर । स्त्री०—कली, बिना छिछा  
हुआ फूल ।

कलिका ( स्त्री० )—दिना गुला हुआ  
फूल, कली ।

कलिकार ( पु० )—नारदमुनि । [ इन्द्रजी ।  
कलिङ्ग ( वि० )—चतुर, चालाक । न०—  
कलिङ्गाः ( पु० बहुर० )—कारुमण्डल तट  
की ओर एक प्रदेश तथा वहां के  
निवासियों का साधक । [ हुआ ।

कलित ( वि० )—कथित, गणित, जाना  
कलिन्द ( पु० )—सूर्य, विभीतक वृक्ष,  
बह पर्यंत वहां पर यमुना का  
चक्रमस्थान है ।

कलिन्दतगया ( स्त्री० )—यमुना नदी ।  
कलिन्दनन्दिनी—कन्या ( स्त्री० )—पूर्व-  
वत् । [ निम्ना हुआ, गहन ।

कलिल ( न० )—बड़ा डेरावि० ढका हुआ,  
कलुप ( न० )—कीचड़, मैला, क्रोध,  
अपराध । पु०—नहिप, मैला ।  
वि०—बुरा, गलीज, अपवित्र,  
क्रूर, सुस्त, पापी ।

कलुपित ( वि० )—क्रूर, क्रोधित, अपवित्र  
कलेश्वर ( अस्त्री० )—शरीर, लिस्म ।

कल्क ( अस्त्री० )—तलछट, क्रूरता,  
जीबता, मैल, कानका मैल, गन्ध-  
विशेष । वि०—क्रूर, अपराधी, दीपी ।

कल्कफल ( पु० )—अनार का वृक्ष ।

कलिक ( पु० )—विष्णु का दशवां अव-  
तार जो पुराणों के अनुसार  
अम्बल नगर में विष्णुधर्म नामक  
ब्राह्मण के घर में प्रकट होगा ।

कल्की [ न् ] ( वि० )—क्रूर, अपवित्र,  
पस्कयुक्त ।

कल्प (पु०)—एक वेदाङ्ग का नाम जिस में यज्ञक्रियाओं का विधान है, ब्रह्मा का एक दिन जो चार अर्घ्य यज्ञों में करोड़ सवत्सर का होता है, महाप्रलय, कल्पवृक्ष । वि०—वसित, मज्जवूत, मुमकिन ।

कल्पक (पु०)—नापित, यज्ञ, बाल काटने वाला ।

कल्पकार (पु०)—नापित, नार्ह, कल्प-सूत्रों का बनाने वाला ।

कल्पद्रुम (पु०)—रूपवत्, कल्प वृक्ष जो कहते हैं समस्त वृक्षाओं के पूर्ण करने में समर्थ होता है ।

कल्पन (न०)—तर्तीय, सम्पादन, रचना, काटना ।

कल्पना (स्त्री०)—रचना, शृंगार, ईर्ष्या, खयालीपुनाय, खयाल, विचार ।

कल्पनी (स्त्री०)—ईर्ष्या ।

कल्पान्त (पु०)—महाप्रलय ।

कल्पित (वि०)—बनावटी, कल्पना किया हुआ, झगली ।

कल्पय (अस्त्री०)—पाप, दण्ड । पु०—तर्क । वि०—मैला, पापी ।

कल्पय (पु०)—राजस, कालारण्य, अनेक रङ्गों का मैल ।

कल्पयो (स्त्री०)—यमुना नदी, जम-दग्नि की गाय ।

कल्प (न०)—उपाकाल, प्रभात, स्याद, भागीर्षाद । वि०—यगा, नीरीन, मद्यन । [घाद ।

कल्प (स्त्री०)—दरीतकी, गुवारिक-

कल्याण (वि०)—सुखी, भाग्यवान्, शुभ । न०—अच्छा भाग्य, सुख, नेकी, स्वयं, उत्सव, स्वर्ण ।

कल्याणवचन (न०)—दोस्ताना मध-यता, भलाई की बात, लाल-शक्ति ।

कल्याणो (वि०)—प्रसन्न, महाभाग ।

कल्याण (पु०)—नाशता, सुख का खाना ।

कल्याणविधि—कल्याणमें भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं ।

कल (१ आ०)—घुप रहना, कूना ।

कल (वि०)—बहिरा, धीर ।

कलोल (पु०)—शत्रु, लहर, महातरङ्ग, हर्ष, सुधी ।

कलोलिनी (स्त्री०)—नदी, इरिया ।

कल (१ आ०)—कथित करना, चित्र बनाना । [बहुतर, मुहु का बाल]

कल (अस्त्री०)—लीहवस्त्र, निरव कलटी (स्त्री०)—कियाह ।

कल (न०)—जल, पानी ।

कल (अस्त्री०)—नमक, सारीपन । पु०—लुप्त, बालों का गुच्छा, लेक-चर देने वाला, यक्षता कनेवाला ।

कलकी (पु०)—कैदी, बन्दी ।

कल (अस्त्री०)—सास, एक बार मुह में जितना अन्न खा सके ।

कलित (वि०)—वसित, वसित, निगला हुआ ।

कल (पु०)—रथ, काटेदार काही ।

कल (न०)—कल, कियाह ।

कल (पु०)—सुय, प्रज्ञा, वाल्मीकि, शाहर, भोगान्, विलासक,

काव्यकर्ता । वि०-पण्डित, बुद्धि-  
मान्, विचारशील, सर्वज्ञ । स्त्री०-  
कज्ञे, लगाम । [ग्रन्थ ।  
कविता (स्त्री०)-काव्य, उन्नीषद्-  
कविपुत्र(पु०)-गुणाचार्य ।  
कविराज(पु०)-बड़ा कवि, कविश्रेष्ठ ।  
कवोत्पन्(वि०)-कुछ २ गर्भ, सोलगर्भ ।  
कडप(न०)-पितरों के निमित्त दिया  
हुआ अन्नादि ।  
कड(१ पु०)-करना ।  
कथा(स्त्री०)-कौड़ा, चायुक ।  
कशब् [ः] (न०)-जल, पानी ।  
कशिपु (पु०)-भीमन, कपड़ा, अस्त्र,  
चढ़ाई, विस्तरा ।  
कशेरु (अस्त्री०)-जखोत्पन्न कन्द  
विशेष, मेहदण्ड, रीढ़ की हड्डी ।  
कशेरुका (स्त्री०)-रीढ़ की हड्डी ।  
कश्मल (न०)-झुंझा, पाप । वि०-  
गन्दा, मैला ।  
कश्मीर (पु०)-कश्मीर नामक देश  
जो पञ्जाब के उत्तर में है ।  
कश्मीरन (अस्त्री०)-केशर, कुंकुम ।  
कश्यप (पु०)-ब्रह्मा का पोता नरी-  
चि का पुत्र जिस की दिति और  
अदिति दो भार्या थीं, कछुवा ।  
कप् (१ व०)-रखना, मारना, छुड़ना,  
छुड़वना । [पत्यर ।  
कप (पु०)-रगड़ना, कसीटी नाम का  
कपण (न०)-रगड़ना, चिन्ह लगाना,  
कसीटी पर लगाना ।  
कपाकु (पु०)-अग्नि, भास्कर ।

कषाय (अस्त्री०)-छःरसा में से एक,  
कसैला, काढ़ा, क्षाप, कलिपुग,  
मनोविकार ।  
कष्ट (न०)-धुराई, कठिनता, दुःख,  
उपधा । वि०-धुरा, दुःखी ।  
कष्टकर (वि०)-दुःखदायी, कष्ट देने  
वाला ।  
कष्टसाध्य (वि०)-जो कठिनता से  
पूरा हो सके ।  
कटि (स्त्री०)-दुःख, आज्ञाप्रथ,  
परीक्षा, हानि ।  
कस (पु०)-कसीटी, पपरी ।  
कसेरु (पु०)-कशीर ।  
कस्तूर(न०)-टीन, रांग नामक धातु ।  
कस्तूरिका (अस्त्री०)-कस्तूरी, सुग-  
न्द, सुरभ ।  
कस्तूरी (स्त्री०)-पूर्ववत् ।  
कस्तूरीसुग (पु०)-ऐसा सुग जिसकी  
नाभि में कस्तूरी पाई जाती है ।  
कहाड़ (पु०)-मैंसा, महिर्सा ।  
कलहार (न०)-सफेद कमल ।  
कांसीय (न०)-कांसा नामक ध्व-  
धातु जो ताँबे के मेल से बनता है  
कांस्य (न०)-कांसा नामक उपधातु,  
जल पीने का एक वस्तु ।  
कांश्यकार (पु०)-कसेरा नामक जाति  
काक (पु०)-कौआ, काँगड़ा, नीच  
मनुष्य ।  
काकचिचा (स्त्री०)-चोंटछी, गुस्सा ।  
काकजात (पु०)-काँयल ।  
काकतालीय (न०)-अमानक होने  
वाली बात, आकस्मिक घटना ।



काकदन्त (पु०)—आकाशकुसुम, अम-  
न्मय वाता ।

काकनिद्रा ( स्त्री० )—देवी नींद की  
आसानी से भग हो जाय, नीक-  
नींद ।

काकपुच्छ (पु०)—कौयल ।

काकपेय ( वि० )—जो गहरा न हो,  
थपला ।

काकभीरु (पु०)—उल्लू, उल्लूक ।

काकलक (वि०)—हरषोरु, मूढ़, मूर्ख ।  
पु० स्त्रैण, आर्याधीन ।

काकली ( स्त्री० )—मोठी और घनी  
आवाज़, चोटली ।

काकारि (पु०)—उल्लू, उल्लूक ।

काकिणी (स्त्री०)—कौड़ी, दमड़ी ।

काकु (स्त्री०)—मनोविकार के कारण  
शब्द का गलतना, वक्रोक्ति ।

काकुत्स्थ (पु०)—सूर्यवंशी राजा ।

काकुद (न०)—तालु, मिह्रा का आसप-  
र्याल ।

काकोदर (पु०)—चाप, धपे । [सूअर ।

काकोल ( पु० )—नपे; पहाड़ी कौवा,

काक (पु०)—फटाक, तिरछी चितवन ।

काग (पु०)—कौवा ।

काङ्क्ष ( स्त्री० )—चाहना, इच्छा करना ।

कांता ( स्त्री० )—इच्छा, इच्छादिज ।

कांताक (पु०)—यगुला ।

काप (पु०)—एक प्रकार का उपरस्त्र  
जो गुराई मिट्टी को पका कर  
नियाला जाता है, कप, मोम ।

कापल (न०)—पाला नून, खोरा ।

कापिप (पु०)—स्वर्ण, सुदा, सुदी ।

काचक (पु०)—मुर्गा, चकवा पक्षी ।

काच ( स्त्री० )—चमकना, धापना ।

काञ्चन (न०)—स्वर्ण, चमक, चमकति,  
हरताछ । पु०—चम्पक वृक्ष, चतूरा  
काञ्चनक (न०)—हरताछ ।

काञ्चनकन्दर (पु०)—स्वर्ण की खान ।

काञ्चनदली (स्त्री०)—स्वर्णकंदली ।

काञ्चनसन्धि (पु०)—हिम प्रदार की  
सन्धि जिसमें दोनों पक्षों की कुछ  
हानि न उठानी पड़े ।

काञ्चनार (पु०)—कचनाल, कोविंदार,  
काचनाल वृक्ष ।

कांथि (स्त्री०)—भारत के दक्षिण में  
एक नगर का नाम, द्रिपयो के  
पहरने का एक आशुषण [ कांथी-  
का भी यही अर्थ है ]

काठिन्ध (न०)—कठोरता, मक्ती, मुश्किल ।

काण (वि०)—काणा, एक आख धाला,  
कौवा ।

काणूक (पु०)—हंसभेद, मुर्गा, कौवा ।

कावह (अस्त्री०)—अध्याग, परिच्छेद,

स्तम्भ, मरकवा, लड़ी, घल,

भीका, एकान्तस्थान, परस्पर, तीरा ।

कावहपुत्र (पु०)—शत्रुप्राप्ति, विपत्ति,  
गोध लिया हुआ पुत्र ।

कावहीर ( वि० )—तीरन्दाज, प्राण

धारण करने वाला । न०—गनीठ ।

कावहेलु ( पु० )—तालमखाना, हल-  
विशेष ।

कातर ( वि० )—हरषोक, हरा मुर्गा,  
दुःखी, भयानक । पु०—गरुडभेद  
नीका ।

कातर्य (न०)-उरपोकपन; भीति ।  
 कान्ति (न०)-प्रती घास, कुत्तिनत घास ।  
 कात्यायन (पु०)-चरुनि नामक वैया-  
 करण, धर्मशास्त्रकार एक श्रुति-  
 विशेष ।

कात्यायनी (स्त्री०)-याज्ञवल्क्य की स्त्री का  
 नाम, पवित्री, रक्तवस्त्र धारण किये  
 हुए विशेष ।

काथिक (पु०)-कथझड़, कहानी कहने  
 वाला ।

कादम्ब (पु०)-ईश का सरसङ्गा, कदम  
 का वृक्ष, कजहंस ।

कादम्बर (पु०)-तोर, बाण ।

कादम्बरी (स्त्री०)-सरस्वती, मादा कोयल,  
 सारिका, मैना, सुगमेद, एक काव्य  
 जो घास कवि का रचा हुआ है ।

कादम्बिनी (स्त्री०)-मेघमाला ।

कादाचित्क (वि०)-आकस्मिक, घटनावश ।

कानन (वि०)-सुनहरा ।

कानन (न०)-जंगल, वन, घर ।

काननाग्नि (पु०)-दाघानल, घनाग्नि ।

कान्ति (पु०)-अभिजाहिता स्त्री की सन्तान,  
 व्यास और कर्ण का नाम, पुत्रमेद ।

कान्त (पु०)-पति, चन्द्रमा, प्रेमी, वसन्त ।  
 न० — जातरान, केशर । वि० —  
 इच्छित, प्यास, प्रियदर्शन ।

कान्तपत्नी (पु०)-लोहे का बना हुआ मयूर ।

कान्तलोह (न०)-स्टील नामक लोहा, एक  
 प्रकार का मज्जित लोहा ।

कान्ता (स्त्री०)-भार्या, पत्नी, प्यारी स्त्री,  
 पढ़ी इनायती, पृथिवी ।

कान्तार (न०)-रमल । पु०-कचनाल,  
 पाल, उपद्रव, जंगल, गर्ल ।

कान्ति (स्त्री०)-दीप्ति, शोभा, ज्योति, इच्छा ।

कान्तिकर (वि०)-कान्ति बढ़ाने वाला ।

कान्तिमृत् (पु०)-चन्द्रमा ।

कान्दविक (पु०)-हलवाई, मिठाई बनाने  
 वाला । [ भयाहुर ।

कान्दिशीरु (वि०)-भगोड़ा, भयभीत,  
 कान्यकुसुम (पु०)-देशविशेष, कर्नाट ।

कापटिक (पु०)-सुरामदी, छली, विद्यार्थी  
 वि०-घोड़ेबाज़, वेदज्ञान ।

कापट्य (न०)-कपटता, कपटीपन, झूठता ।

कापथ (पु०)-सुरा रस्सा, कुमार्ग ।

कापालिक (पु०)-भैरवमतानुयायी, घामा-  
 चारी ।

कापालिनी (स्त्री०)-चतुर स्त्री, कपालों  
 की बनी हुई माला ।

कापाली (पु०)-मैरव, शिव ।

कापिल (पु०)-पेला रंग, कपिलमता-  
 नुयायी ।

कापिय (न०)-सुरामेद ।

कापुरुष (पु०)-सुरामेदमी, उरपोक, कम-  
 बरत, नीच मनुष्य ।

कापोत (पु०)-भूरा रंग । न०-सुर्मा, कटू-  
 तरों का झुण्ड ।

काक्य (पु०)-कड़वा बीज ।

काम (पु०)-इच्छा, प्यास, शोषित  
 यस्तु, प्रेम, कामदेव, बलराम ।

कामरुता (स्त्री०)-कामदेव की स्त्री रति ।

कामकार (वि०)-स्वतन्त्र, स्वच्छाचारी ।

कामकृत (वि०)-पूर्ववत् ।

कामकेशि (पु०)-कामक्रीडा, विषयगोन,  
 स्निग्धमागम ।

कामक्रीडा (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

कानगा (स्त्री०)-असती रानी, वृत्ति-  
 चारिणी ।

कामचार ( वि० )-न रोका हुआ,  
स्थितम् । पु०-स्वेच्छाचारिता ।

कामजित् ( वि० )-विषयवासना पर  
काबू पाने वाला । पु०-शिव,  
स्कन्द ।

कामताल ( पु० )-कोयल ।

कामद ( वि० )-कामना पूरी करने  
वाला, अभीष्टदायक ।

कामदर्शन ( वि० )-प्रियदर्शन, मनोहर ।

कामदुषा ( स्त्री० )-कामधेनु, सुरभी ।

कामदुग् ( स्त्री० )-पूष्यवत् ।

कामदृष्टी ( स्त्री० )-मादा कोयल ।

कामदेव ( पु० )-प्रद्युम्न, भारतीयों के  
धीरे कामदेव प्रेम का देवता  
माना गया है जो कृष्ण और  
सखिमणी का पुत्र कहा जाता है  
और मिथ की स्त्री रति है ।

कामधेनु ( स्त्री० )-धीरानिर्गतानु-  
सार स्वर्ग में इस नाम की एक  
गौ धियोपरहती है जिस में समस्त  
इच्छाओं के पूर्ण करने की शक्ति  
विद्यमान है ।

कामध्वजी ( पु० )-शिव का धोषक ।

कामन ( म० )-इच्छा, चाहना । वि०-  
कामी, विषयासक्त ।

कामना ( स्त्री० )-इच्छा, स्याद्दिश ।

कामनीय ( वि० )-मनोहर, चित्ताकर्षक  
कामवर्ती ( स्त्री० )-कामदेव की स्त्री,  
रति । [ शिषु ।

कामपाल ( पु० )-प्रद्युम्न, यलराज,

कामप्रद ( वि० )-इच्छाओं का पूर्ण  
करने वाला । पु०-परमेश्वर ।

कामम् ( म० )-इच्छानुकूल, यथेच्छ,  
इच्छापूर्वक, अच्छा, बहुत  
अच्छा, हाँ ।

काममह ( पु० )-चैत्रमास की पूर्णिमा  
के दिन कामदेव की पूजा का  
एक उत्सव ।

काममोहित ( वि० )-प्रेमासक्त, काममूढ ।

कामरसिक ( वि० )-कामासक्त, कामी ।

कामरूप ( वि० )-इच्छानुसार रूप  
धारण करने वाला, मनोहर,  
सुन्दर । पु०-आवासका एक प्रान्त

कामरेख ( स्त्री० )-वैश्या ।

कामल ( पु० )-वसन्त ऋतु, रोगभेद,  
मरुभूमि । वि०-कामी, कामासक्त,  
पीछिया रोग वाला ।

कामवल्लभ ( पु० )-आम का पुत्र,  
चन्द्रमा, वसन्तऋतु । [ ज्योतिष्मा ।

कामवल्लभा ( स्त्री० )-चादनी, चन्द्रिका,  
कामवश्य ( वि० )-काम के वशीभूत ।

कामयुक्ति ( स्त्री० )-काम करने की  
स्वतन्त्रता ।

कामख ( पु० )-वसन्तकाल, चैत्रमास,  
आमयुध ।

कामयुत ( पु० )-कामदेव का पुत्र  
अनिकटु ।

कामाग्नि ( पु० )-प्रेम की आग, तीव्र  
इच्छा, तीव्रकामव्यथा ।

कामातुर ( वि० )-प्रेमासक्त, कामात्म,  
प्रेम का भरा हुआ ।

कामाश्रय ( वि० )-काम के योगीभूत,  
विषयभूष्य । पु०-कोयल ।

कामारि ( पु० )-शिव का धोषक ।

कामासक्त (वि०)-प्रेम में कसा हुआ,  
कामी । [ न०-इच्छा, प्रेम ।

कामित (वि०)-इच्छित, ईप्सित,  
कामिनी (स्त्री०)-मनोहर स्त्री, नारी,  
अबला, काम को उत्पन्न करने  
वाली स्त्री ।

कामी (वि०)-कामासक्त । पु०-प्रेमी,  
शिव, चन्द्रना, क्यूतर, चटकपत्नी ।

कामुक (वि०)-कामना करने वाला,  
कामासक्त । पु०-प्रेमी, कामी,  
चटकपत्नी ।

काम्बिस्व (पु०)-एक देश का नाम ।

काम्बल (पु०)-एक प्रकार का रथ  
जो कपल से ढका रहता है ।

काम्यधिरु (पु०)-शंखसार ।

काम्योज (पु०)-कम्बोज देश का नि-  
वासी, कम्बोज देश का घोड़ा,  
पुत्रागवृत्त, कयोह जाति ।

काम्य (वि०)-कामनायोग्य, इच्छा  
पर निर्भर, मनोहर ।

काम्यमरण (न०)-सुदक्षी, जातसघात ।

काम्यवृत्त (न०)-इच्छा से की हुई  
प्रतिष्ठा । [ प्राय ।

काम्या (स्त्री०)-इच्छा, प्रार्थना, अभि-  
काय (अस्त्री०)-शरीर, देह, प्राजा-  
पत्य विवाह, स्थनाव, मूलधन ।

कायम्लेश (पु०)-शारीरिक कष्ट ।

कायचिकित्सा (स्त्री०)-शाठ प्रकार  
के चिकित्साज्ञेदों में से एक ।

कायमान (न०)-पूँस का घना हुआ  
भोपड़ा, शरीर का परिमाण ।

कायस्थ (पु०)-परब्रह्म, लिखने का  
काम करने वाला, एक धाति-  
भेद जो क्षत्रिय और शूद्र के  
संसर्ग से उत्पन्न हुई है ।

कायस्थित (वि०)-शारीरिक, शरीर  
में रहने वाला-॥

कायिक (वि०)-दैहिक, शारीरिक, जो  
देह से किया जाय ।

कायिका (स्त्री०)-रूपों का सूक्ष्म, व्याप्त  
कार (पु०)-क्रिया, काम, प्रयत्न, पति,

इरादा, हिमालय पर्वत, महसूल,  
वध । वि०-करने वाला, मन्त्रादक ।

कारक (वि०)-क्रियाजनक, करने वाला ।  
न०-व्याकरण में क्रिया और  
संज्ञाके सम्बन्धसे उ कारक माने  
गये हैं, यथा-कर्त्ता, कर्म, करण,  
सम्प्रदान, अपादान और अधिक-  
करण ।

कारण (न०)-सबब, हेतु, उद्देश, साधन,  
करण, शरीर, कार्य, क्रिया,  
वध । न्याय में वह वस्तु जिस  
से बिना कार्य की उत्पत्ति नहीं  
हो सकती । ५६ [ पीछा ।

कारणा (स्त्री०)-दुःख, कष्ट, नास्तिक  
कारणवादी (पु०)-मुद्दई, अपर ।

कारणविहीन (वि०)-हेतुरहित, बेदु-  
नियाद ।

कारणशरीर (न०) लिङ्गशरीर का नाम  
कारणिक (वि०)-परीक्षक, ज्ञा, कारण-

युक्त ।  
कारणद्वय (पु०)-एक प्रकार का हंस ।

कारण ( वि० )—चष्टसम्बन्धी, चष्ट  
से सम्बन्ध ।

कारसिद्धिका ( स्त्री० )—पापूर, पपूर ।

कारत्र ( पु० )—कीटा, काक ।

कारा ( स्त्री० )—क्रोध, जेल, दूती, कुमारी,  
हु.च, अग्नि ।

कारावृद्ध-गार(न०)—कैदखाना, जेल-  
खाना । [ निरिच्छक ।

कारापाल ( पु० )—जेलर, बन्दिपुत्र का

कारि ( पु० )—कारीगर, दस्तकार ।

दस्त्री०—काम, कार्य ।

कारिका ( स्त्री० )—चूड़, बण्ड, ठप-  
साय, मत्तकी, श्लोकभेद ।

कारीरी ( स्त्री० )—ऐसी यज्ञक्रिया  
जिस को द्वारा पानी भरच सुंछे ।

कार(वि०)—छाने वाला, बनाने वाला,  
शिल्पकार, कारीगर, भवानक ।

पु०—विशयकर्ता, शिल्प ।

कारक ( पु० )—शिल्पी, कारीगर ।

कारका ( पु० )—प्रतिपक्ष, यस्मिन्क,  
शरीर का गिलादि चिह्न, नाग-  
वेधर । [ द्याद्रूपिण ।

कारणिक ( वि० )—दयालु, मुलायम,

कारण्य ( न० )—दया, रहन, दयालुता ।

कारण्य ( न० )—कठोरता, उग्रहृषण,  
घोरदुर्गति ।

कारण ( न० )—बान का पैल, बाजी ।

वि०—कर्णमयस्थी । [ वृत्त ।

कारावर ( न० )—स्वर्ण, धनूरा, वायुम  
यातागिह(पु०)—नाम प्रदाने वाला,  
उपाधि ।

कारि ( पु० )—कारि नाम का नाम

औ धनूवर या नयस्वर में होता  
है, स्वाभिकार्तिक, स्कन्द ।

कात्तिकी ( स्त्री० )—कात्तिक मास की  
पूर्णिमा ।

कात्तिकेय ( पु० )—शिवपुत्र स्कन्द  
जिस का कृतिकाओं ने पालन  
किया था । [ सातपथ ।

कार्त्स्न्य ( न० )—सम्पूर्णता, साकल्य,  
कादंन ( वि० )—कीचड़युक्त, कीचड़ से  
भरा हुआ ।

कार्पटिक ( पु० )—तीर्थयात्री, तीर्थ-  
सेवी, अनुभवी पुरुष ।

कार्पण्य(न०)—कलूषी, सुमर्ष, दीनता ।

कार्पास(वि०)—कपास का बना हुआ ।  
अस्त्री०—कापड़ ।

कार्पासी ( स्त्री० )—कपास का वृक्ष ।

कार्म ( वि० )—सोहनती, परिश्रमी ।

कार्मेय ( वि० )—काम करने में होश-  
वार । न०—जादू, छल, यन्त्र-  
मन्त्र ।

कार्मार ( पु० )—दस्तकार, शिल्पी ।

कार्मिन्ध ( न० )—कार्यकुशलता, परि-  
श्रम ।

कार्मुक ( न० )—धनुष, कमान, बाण,  
गद्गानिध्या पु०—बाण करने योग्य,  
कार्यकुशल ।

कार्य ( वि० )—करने योग्य, स्रष्टादनीय  
न०—बाग, वसंठप, साहस, अति-  
माध, ठपपदार, कारण का कल,  
आरम्भ ।

कार्यकर ( वि० )—छातादायक, मुफीद ।

कार्यकर्ता ( पु० )—कारीगर, करने वाला ।

कार्यकाल (पु०)—काम करने का उचित समय ।

कार्यकुशल (वि०)—कार्य करने में चतुर ।

कार्यक्षुब्ध (वि०)—वेकार, कर्तव्यवि-  
मुख, बर्त्तास्त ।

कार्यपटु (वि०)—काम करने में होशि-  
यार, अनुभवी ।

कार्यसिद्धि (स्त्री०)—कामयाही, सफलता ।

कार्याक्षम (वि०)—काम करने में अध-  
मर्थ ।

कार्याकार्य (न०)—करने और न करने  
योग्य बात ।

कार्याधिप (पु०)—काम का निरीक्षक,  
सुपरिण्टेण्डेण्ट ।

कार्यार्थी (वि०)—मतलबी, गर्जी ।

कार्य (न०)—कृयता, हुसलापन ।

कार्यापण ( अस्त्री० )—रूपया, पण,  
खोलइ पण ।

कार्यिक (पु०)—पण का चौथा भाग,  
तोलाभर । [ पन ।

कार्ययं (न०)—काठापन, धुंधियाला-

काल (पु०)—काला रंग, समय, सृष्ट्यु,  
यम, प्रारब्ध, बाल की पुतली,  
फोयल, शिय, कृष्ण, शनि । वि०—  
काला, हानिकर ।

कालकण्ठ (पु०)—काली शीया वाला,  
महादेव, नीलकण्ठ, मोर ।

कालकण्ठक (पु०)—जल में रहने वाला  
सर्प । [ वत ।

कालकणिका (स्त्री०)—विपत्ति, मुगी-  
कालकर्म (न०)—सृष्ट्यु, मौत ।

कालकुण्ठ (पु०)—यमराज ।

कालकूट (अस्त्री०)—एक प्रकार का  
भयङ्कर विष जो मनुष्यमृत्यु समय  
उत्पन्न हुआ था ।

कालकृत (पु०)—परब्रह्म, सूर्य, मयूर ।

कालकन (पु०)—समय का घीतना ।

कालक्रमेण (अ०)—कृष्ण समय घीतता  
गया ।

कालक्षेप (पु०)—दीर्घमूत्रता, देरी ।

कालगंगा (स्त्री०)—यमुना नदी ।

कालग्रन्थि (पु०)—संवत्सर, एक वर्ष ।

कालचक्र ( न० )—समय का घीतना,  
यक्ष का दौरे, जीवन का उतार  
चढ़ाव ।

कालज्ञ (वि०)—समय की जानने वाला ।  
किंकर्तव्य-का छाता । पु०-कुवकुट,  
ज्योतिषी ।

कालदर्शी (वि०)—पूर्ववत् ।

कालधर्म (पु०)—समयानुसार कर्तव्य-  
कर्म, सृष्ट्यु, मौत ।

कालनियोग (पु०)—दैवाज्ञा, प्रारब्ध  
का अटल आदेश ।

कालपक्ष ( वि० )—समय से परिपक्व,  
अनुभवी ।

कालपाशिर (पु०)—जलडाढ़, हत्थारा ।

कालपुच्छ (पु०)—बारहसिंगा, मृगविशेष

कालमुख (पु०)—लंगूर । [ करना ।

कालयापन (न०)—समय बिताना, देरी

कालरात्रि (स्त्री०)—यम की बहिन,  
कल्पान्त रात्रि । [ विशेष ।

कालखोह (न०)—स्टील नामक खोह

कालसम्पन्न ( वि० )—जिसके ऊपर  
तियि सिखी हुई हो ।

कालस्वरूप(वि०)--मृत्यु के समान ।  
काला(स्त्री०)--नील, मज्जीठ, काला  
लोरा ।

कालाग्नि(पु०)--प्रलय के समय भावकर  
अग्नि, रुद्र का दोषक, कालानल ।  
कालातिक्कमण(न०)--समय विताना,  
देरी करना ।

कालातिपात(पु०)--पूर्ववत् ।  
कालातिरेक(पु०)--पूर्ववत् । [हुआ ।  
कालातीत(वि०)--घोटा हुआ, गुजरा  
कालान्तर(न०)--समयान्तर, समय-  
विभाग ।

कालावधि(पु०)--नियतकाल ।  
कालिक(पु०)--सारस, बगुला । वि०--  
कालमन्त्रस्थी ।

कालिका(स्त्री०)--दुर्गा, कलौंस, काला  
रंग, स्याही, रोजगार, काकी,  
हरीतकी ।

कालिग(पु०)--हाथी, हस्ती, सर्प, एक  
प्रकार का छोटा, कालिग देश का  
राजा । न०--तरयूज नामक फल ।

कालिन्द(न०)--तरयूज ।

कालिन्दी(स्त्री०)--यमुना नदी, श्री-  
कृष्ण की एक साथी ।

कालिन्दीभेदग(पु०)--श्रीकृष्ण के बड़े  
भाई बलराम का नाम ।

कालिमा(पु०)--कालापन, कलौंस,  
पट्टा, दोष ।

काली ( स्त्री० )--रोजगार, काली-  
स्याही, पायेंती, गन्धवती, रात्रि,  
निद्रा, अग्नि की निद्राविशेष,  
दुर्गा का भेद, समयगिनी,  
गदाविद्या ।

कालीक(पु०)--बगुला पक्षी । [सत ।  
कालीची(स्त्री०)--यमराज की अदा-  
कालीन(वि०)--समयानुकूल ।

कालुष्य(न०)--मैलापन, गन्दापन ।  
कालेय (न०)--जिगर, कुकुम, काला  
चन्दन । पु०--हल्दी, दैत्यविशेष ।  
वि०--कलियुगसम्बन्धी ।

कालेयक(पु०)--शिकारी कुत्ता । न०--  
एक प्रकार का पीछिया रोग,  
चन्दनभेद । [झपाती ।

कालपनिक(वि०)--कल्पित, घटावटी-  
काल्य ( न० )--उपाकाल, पीकटना ।  
वि०--समयानुकूल, मंगलकर ।

काल्या ( स्त्री० )--गर्भ धारण करने  
के योग्य गाय, रजोदर्शन के  
पश्चात् की स्त्री ।

काधार (न०)--कार्द, कुम्भिका ।

कायूक (पु०)--चकया पक्षी, कुक्कुट ।  
कावेरी (स्त्री०)--वेश्या, हल्दी, भारत-  
वर्षके दक्षिणमें एक नदीका नाम ।

काठय (न०)--कवि की कृति, कविता,  
कुशलसेम, मुद्दि । पु०--शुक्राचार्य  
वि०--प्रभाकरयोग्य, वर्णनीय, आर्य-  
गुणयुक्त । [ चुराने वाला ।

काठयघोर (पु०)--दुर्गर के सयालात  
काठयस्थिक (वि०)--कविता के गुण  
दोष जानने वाला ।

काश ( पु० )--यमरना, मनोहर  
दिगलार देना ।

काश (पु०)--पाश पाप की प्रशिद्धि  
पाप, दोष, पापी ।

काशि (पु०)-सूर्य, मुहूर्त, प्रभा, दीप्ति ।

स्त्री०-वनारस नामक नगर ।

काशिका (स्त्री०)-वनारस नामक नगर, पाणिनिकृत सूत्रों पर एक टीका ।

काशिराज (पु०)-धन्वन्तरि, वनारस का राजा, विशेष कर अम्ब्रा, अम्ब्रिका, अम्ब्रालिका के पिता का नाम है ।

काशी (स्त्री०)-वनारस नामक प्रसिद्ध नगर जो पौराणिकों के निकट एक पवित्र स्थान है और शिव का निवासस्थल कहा गया है ।

काशीनाथ (पु०)-शिव, एक प्रसिद्ध ज्योतिषी जो श्रीप्रदीप नामक ग्रन्थ का कर्ता है ।

काशीमात्रा (स्त्री०)-तीर्थस्थान के लिये काशीयान में जाना ।

काश्मीर (न०)-कुंकुम, केशर, सुहागा पु०-कश्मीर का निवासी ।

काश्मीर्य (न०)-केशर, कुंकुम ।

काश्यप (पु०)-मुनिविशेष, कश्यप-पुत्र, कणाद, अरुण । न०-मांस ।

काश्यपि (पु०)-गरुड, अरुण ।

काषाय(न०)-मुख कपड़ा । वि०-छाल, कुष्ठ र मुख ।

काष्ठ (न०)-लकड़ी, दन्धन । [केला ।

काष्ठरुद्री (स्त्री०)-वगदेवा, जंगली

काष्ठकीट (पु०)-घुण नामक कीड़ा ।

काष्ठकूट (पु०)-सुटवडैया नामक पत्नी

काष्ठतण्ड (पु०) बढ़ई ।

काष्ठतक्षक (पु०)-बढ़ई ।

काष्ठदारु (पु०)-देवदारु वृक्ष ।

काष्ठभारिक(पु०)-लकड़ी ढोने वाला ।

काष्ठलेखक (पु०) घुण, काष्ठकूट ।

काष्ठा (स्त्री०)-दिशा, सीमा, चिन्ह, निशान, जल, सूर्य, कला का

तीसरा भाग, दुसरी पुत्रीकानाम

काष्ठिक (पु०)-लकड़हारा ।

काष्ठीला (पु०)-केले का वृक्ष ।

कास् ( १ आ० )-चमकना, खांसना, ऊर्ज करना ।

कास (पु०)-खांसी, कफरोग ।

कासग्री (स्त्री०)-कटेली, कण्टकारी ।

कासर (पु०)-महिष, भैंसा ।

कासार (अस्त्री०)-तालाव, सरोवर ।

कासीस ( न० )-हीराकसीस नामक औषध विशेष ।

कासू ( स्त्री० )-प्रभा, चमक, रोग, मक्ति, समस्त, अक्षुट वाणी ।

कासूति ( स्त्री० )-गुप्तमार्ग, छिपा हुआ रास्ता ।

काइल (पु०)-कौवा, कुक्कुट, घिझी, ध्वनि । वि०-मूखा, नीप, झूठ, बहुत ।

किंवदन्ती (स्त्री०)-जनश्रुति, लोकोक्ति, झूठापवाद, अफवाह ।

किंवा (अ०)-अथवा, या, या, यिक-लुप्तबोधक ।

किशारु (पु०)-बाण, तीर, बगुला, अनाज का तूर ।

किशुड (पु०)-पलाशवृक्ष, टेसू । न०-टेसू का फूल ।

किकि (पु०)-चातक पक्षी ।



किरि (पु०)-शूकर, सूअर, बादल  
 किरंट ( स्त्री० )-मुकट पगड़ी, ताज,  
 राजचिन्ह, व्यवसायी ।  
 किरोटधारी (पु०)-राजा ।  
 किरोटमाली (पु०)-अर्जुन का नाम ।  
 किरोटो (पु०)-अर्जुन । पि० मुकुटधारी ।  
 किर्मि ( स्त्री० )-स्पर्शमूर्ति, पलासवृक्ष,  
 मकान, हवाल ।  
 किर्मोर ( पु० )-नारंगी का पेड़, एक  
 राक्षस का नाम ।  
 किर्यायी (पु०)-जंगली सूअर ।  
 किन् ( १ पु० )-किलो करना, दबे  
 हो जाना ।  
 किल(अ०)-निश्चय, प्रसिद्धि, पश्चात्ताप,  
 असन्तुष्टि, मधका, हेतु आदि अर्थों का  
 बोधक ।  
 किलकिल (पु०)-आम्रज, हर्षजनरूपानि,  
 बन्दरों की किलकारी ।  
 किलकिला (स्त्री०)-पूर्णरत्न ।  
 किलाड (पु०) खोया, भागा, दुग्धविभार ।  
 किलाटर (पु०)-पूर्णरत्न ।  
 किलाटी (पु०)-याँझ, वण ।  
 किलिज (न०)-चटाई, घैटने का तख्ता ।  
 किलिजण (पु०)-पूर्णरत्न ।  
 किलिम (न०)-समूर का पद ।  
 किलियन ( न० )-अपराध, पाप, अनिष्ट  
 राग ।  
 किल्या [न.] (पु०)-बाढा, अश्रु ।  
 किशन (न०)-अरुमा, अकुर ।  
 किशलय (अस्त्री०)-पहन पता, अरुमा ।  
 किशार (पु०)-पंद्रह वर्ष से कम अवस्था  
 या लड़का, नागलिंग, प्रत्येक जान  
 घर का प्रथा ।  
 किशोरावस्था (स्त्री०)-१० वर्ष से लेकर  
 पंद्रह वर्ष की अवस्था ।

किशोरी (स्त्री०) कुमारीबन्धा, युवति  
 किष्किन्ध [न्ध्या] (पु०)-भारतवर्ष के  
 दक्षिण में एक प्रदेश, भीरु देश का  
 एक पर्वत । [देश की राजधानी ।  
 किष्किन्धा-न्ध्या (स्त्री०)-किष्किन्ध  
 किष्किन्धा न्ध्याकाण्ड (अस्त्री०)-  
 वाल्मीकीयरामायण का पाचवा  
 अध्याय जिसमें श्रीराम की सुग्रीव  
 आदि के साथ भेटादिका वर्णन है ।  
 किशु ( अस्त्री० )-हाथ की नाप,  
 माण्डित, ग्राह त्रगुन की नाप ।  
 थि०-नीच, युवा ।  
 किसल (अस्त्री०)-छोटा पत्ता, अकुर,  
 नयपहनय ।  
 किसलय ( अस्त्री० )-पूर्वघत् ।  
 कीकट ( पु० )-घोड़ा, विहारप्रदेश ।  
 थि० कन्नूष, गरीय ।  
 कीकथ (पु०)-चषडाल ।  
 कीकस (थि०)-मजबूत, दृढ़, सख्त ।  
 न०-हठी, अस्थि ।  
 कीकक (पु०)-राना विराट का भाला  
 जिसकी कथा महाभारत के विराट-  
 पर्व में वर्णित है और जो राना  
 विराट का सेनापति था । खोसला  
 बास जिसमें वायु के भर जाने  
 से गड़द हुआ करता है ।  
 कीकचजित (पु०)-कीकक के नारने  
 वाला भीममेन । [निधिसमय पांचो  
 पाण्डव द्रौपदी सहित वेप बदल  
 कर राना विराट से यदा नौदण्ड  
 हो गये थे उस समय विराट के  
 सेनापति कीकक ने द्रौपदी के

सतीत्येतत्तम की चेष्टा की; इस पर  
योगसेन ने कौशलपूर्वक उसे मार  
हालायान।

कीट् (१० प०)-घोंघना, जकड़ना, रंगना  
कीट (पु०)-कीड़ा, सुद्रुक्लन्तु। वि०-  
कटोर, खरून।

कीटफ (पु०)-कीड़ा; भागधियों का  
वन्दिजन। वि०-कठिन, कर्कश।

कीटम (पु०)-बन्धक, कीट का घातक।

कीटम (न०)-रैशम व०

कीटणा (पु०)-कीड़ों से निकली हुई  
वस्तु अर्थात् लाश।

कीटमणि (पु०)-खद्योत, जुगनू।

कीटिका (स्त्री०)-छोटा कीड़ा।

कीटय (वि०)-किस प्रकार का, किस  
दृग का, किस तरह का।

कीटय-त (पि०)-किस प्रकार का,  
किस तरह का, किस दृग का।

कीटधी-सी (स्त्री०)-पूर्वपत्नी।

कीम (ब०)-मांस, गोशत १०

कीमाय (पु०)-मगराज का बोधक,  
यागरविशेष। वि०-कमीना, सुद्र,  
निधन।

कीम (पु०)-तीता। वृद्ध-काशपीर  
प्रदेश अथवा वहाँ के निवासी।  
न०-माय।

कीरिह (पु०)-भाग का घृत।

कीरुं (पि०)-दबा हुआ, रफा हुआ,  
घत, बिगड़ा हुआ।

कीरुन (न०)-वचन, वर्णन, प्रशंसा,  
पुनरावयव, आराधना।

कीरुना (स्त्री०)-यश, वर्णन, वचा।

कीर्ति (स्त्री०)-यश, ओहरत, वर्णन,  
कीचड़, शोभा।

कीर्तित (वि०)-कथित, यादकिया  
हुआ, नाया हुआ, प्रशंसित।

कीर्तिमान् (पु०)-यशस्वी, मशहूर।

कीर्तिशेष (पु०)-केवल यश शेष  
नाम का शेष रह जाना-अर्थात्  
मृत्यु, नामशेष।

कीर्त् (१ प०)-घोंघना, कील लगाना।

कील-लक (पु०)-कील; आलपीन;  
स्तम्भ, भाला, शस्त्र, खोटा।

कीलाल (न०)-बल, रक्त, लहू। पु०-  
शहद, यश, अमृत।

कीलालधि (पु०)-समुद्र, जलधि।

कीलालध (पु०)-राक्षस, अक्षर।

कीलित (वि०)-खिदा हुआ, जमा हुआ,  
धंधा हुआ, कीला गया।

कीम (पु०)-बन्दर, वानर, पत्नी, सूर्य।  
वि०-वस्त्रहीन, नंगा।

कु (स्त्री०)-पृथिवी, भूमि। अ०-पाय,  
धिक्कार, शत्रु, सुरासन आदि  
वर्षों का बोधक।

कु (१ आ०)-शब्द करना, चिल्लाना,  
आह भरना। [ दायं।

कुकुम् (न०)-सुरा काय, पाय, गहिंता-  
कुकील (पु०)-वर्तन, पदार्थ।

कुकुद् (पु०)-आदरपूर्वक अलङ्कृत वस्त्र  
का देगे वाला।

कुकुद् (पु०)-जघनकूप, शेरदण्ड के  
नीचे गताकार।

कुकुल (न०)-बघव, सादे, गत।

कुपकुट-दब (पु०)-मुगां, कुदड़ पत्ती,

चिनगारी, वर्णसङ्करभेद ।

कुक्कुटि(स्त्री०)-अगुलाभक्ति, स्वार्थ  
के लिये धार्मिक कृत्यों का  
गणपादन । [ अगुलाभक्ति ।

कुक्कुटी ( स्त्री० )-मुर्गी, लिपकली,

कुक्कुर(पु०)-कुत्ता, श्वान ।

कुक्कुरी (स्त्री०)-कुत्तिया ।

कुक्ष(पु०)-पेट, कोख ।

कुक्षि (पु०)-पेट, अन्दरूनी भाग,  
खोखला स्थान, गर्त, यात्रि का  
मान, खाड़ी, झुलीज, पेट का  
बांया भीरू, दाहिना भाग जिसे  
कोख कहते हैं ।

कुक्षिम्भरि ( वि० )-पेट, बलिवैश्व-  
देवादि यज्ञ न करके खाने वाला,  
स्वार्थी ।

कुङ्कुम(न०)-जोगर, जलफरान [ यह  
सुगन्धिपत्र द्रव्य कश्मीर में उत्पन्न  
होता है ] ।

कुच् ( ६ प० )-कूजना, गमन करना,  
रोकना, मोड़ना ।

कुच(पु०)-स्त्रीवक्षःस्थल, स्तन, दूधी ।

कुचकल(पु०)-मनार का वृक्ष ।

कुचर( वि० )-एवज, दूसरे का दीप  
बताने वाला, मन्दगति ।

कुचर्या(स्त्री०)-कुच्यवहार, कुटिलता ।

कुचाग्र(न०)-स्तन, दूधी ।

कुज् ( १ प० )-चुराना, चोरी करना ।

कुज ( पु० )-मगलग्रह, असुरविशेष,  
वृक्ष ।

कुजा(स्त्री०)-घीता, दुर्गा, कात्यायनी ।

कुजन्म(वि०)-नीचवशोज्ज्व ।

कुक्कुटि-टी(स्त्री०)-कोहरा, पाला ।

कुक्कुटिका(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

कुक्ष् ( ६ आ० )-आह भरना, चिल्लाना ।

कुक्षन(न०)-कुटिलता, टेढ़ापन, चकू-  
रोगभेद ।

कुक्षि(पु०)-आठ मुट्ठी का माप ।

कुक्षिना(स्त्री०)-कुक्षी, चाधी, मत्स्य-  
भेद, वास का अंकुश ।

कुक्षित(वि०)-झुका हुआ, टेढ़ा ।

कुक्ष् ( १ प० )-मिन्मिनाना, कूजना ।

कुक्ष् ( अस्त्री० )-लताग्रह, हाथी का  
दांत, नीचे का जघाहा ।

कुक्षुर(पु०)-हस्ती, हाथी ।

कुक्षुराशन(पु०)-बड़ का पेंड ।

कुक्षुरी(स्त्री०)-दुपिनी ।

कुट् ( ६ प० )-कुटिल होना, टेढ़ा होना,  
घोखा देना, ठगना । ( ४ प० )-

खांटना, तोड़ना, टुकड़े २ करना-  
गमें होना ।

कुट(पु०)-प्रबल, वृक्ष, घर, हथौड़ा ।  
अस्त्री०-पड़ा, सुराही ।

कुटक(पु०)=कुटर ।

कुटंक(पु०)-उप्पर, घर की छत ।

कुटङ्क(पु०)-भोंपड़ा, छोटा घर ।

कुटज(पु०)-अगस्त्यमुनि, द्रोणाचार्य,  
वृक्षविशेष । [ वग्नीचा ।

कुटप(पु०)-मुनि, ऋषि, तपस्वी ।

कुटर(पु०)-ऐसा तरता वन दीवार  
निर्म में मन्थनी की रस्सी [ नेती ]

वांच दी जाती है ।

कुटल(न०)=कुटंक ।

कुटि ( पु० )-वृक्ष, शरीर । स्त्री०-

कुड्यच्छेदी (पु०)—कूमल करने वाला, चोर ।

कुश ( १०प० )—प्रणाम करना, निमन्त्रित करना, बातचीत करना, सहारा करना । (६प०)—सहायता करना, सहारा देना ।

कुणक (पु०)—सद्यः उत्पन्न पशु ।

कुणप (पु०)—बदधू, दुर्गन्धि, माला, मृतदेह, शय ।

कुण्टक (पु०)—मोटासाजा ।

कुण्ठ ( १प० )—सुस्त होना, लंगड़ा होना, कुन्द होना । [ सुस्त ।

कुण्ठ (वि०)—मन्द, कुन्द, सूख, दुर्बल, कुण्ठित (वि०)—पूर्ववत् ।

कुण्ड ( अस्त्री० )—पानविशेष, पुरवी  
■ जल इकट्ठा करने का गत्त, होम-करणार्थ वेदी ।

कुण्डल (अस्त्री०)—कानों की बाली, बेंड़ी, धृत्ताकार वस्तु ।

कुण्डलिनी (स्त्री०)—सर्पिणी, मोरनी, धृत्ताकारचित्र, गोल वस्तु धान-मार्गियों की शक्ति नामक देवी ।

कुण्डली (पु०)—पेरां डालने वाला सर्प, धृत्ताकार चित्र, मोर, सर्प, शिव ।  
स्त्री०—कूंडी, गोल सूरारू ।

कुतप (पु०)—अग्नि, सूर्य, अतिथि, देवता, भाऊजा, व्याख्यान, द्विजन्मा, आठवां सुहृत् ।

कुतकं (पु०)—तर्कभास, बुरी तर्कना, गलत मन्तक ।

कुतस् [कुतः] (अ०)—कहां से, कहां, कैसे, क्योंकर, किस प्रकार ।

कुतुक (न०)—इच्छा, कौतुहल, शीक, चित्त का झुकाव ।

कुतू (स्त्री०)—चगड़े का एक छोटा या कुप्पा [ कुतुप भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ] ।

कुतूहल (न०)—इच्छा, आतुरता, शीक, खुशी, दिग्बदलाव, कौतुक । वि०—अच्छा, आश्चर्यमय, कीर्तित ।

कुतूहलाक्रान्त (वि०)—शीक से भरा हुआ, तीव्रपणा से आतुर, अचभे में पड़ा हुआ । [ अपों ।

कुत्र (अ०)—कहां, किस स्थान में, कुत्स् ( १०भा० )—निन्दा करना, बुरा मला कहना, धिक्कारना ।

कुत्सना—कुत्सा (स्त्री०)—पूर्ववत् ।

कुत्सित (वि०)—गर्हित, निन्दित, नीच ।

कुथ (पु०)—कालीन, कुशागामक घास

कुद्दार-दाल (पु०)—कपनाल का पेड़, कस-ला, मिट्टी खोदने का यन्त्रविशेष ।

कुदिनं (न०)—बुरा दिन, ऐसा दिन जो भेषों से आच्छादित हो, दुर्दिन

कुधू (पु०)—पहराह, पर्वत ।

कुनक (पु०)—कौवा, काक ।

कुनय (पु०)—नखसम्बन्धी रोगविशेष

कुनालिका (स्त्री०)—कोयल, कीकिल

कुन्त (पु०)—कौड़ा, धान्याविशेष, बर्छा, भाला, मनोविकार ।

कुन्तल (पु०)—हल, जी, केशगुच्छ, बालों के पट्टे ।

कुन्ती (स्त्री०)—कुन्तिर्भोज की गोद ली हुई कन्या पृथा नाम्नी जिस का विवाह पाशु के साथ हुआ

कुड्यच्छेदी (पु०)—कूमल करने वाला, चोर ।

कुण् ( १०५० )—प्रणाम करना, निमन्त्रित करना, वातचीत करना, मशवरा करना । (६५०)—सहायता करना, सहारा देना ।

कुणक (पु०)—सद्यस्तपन्न पशु ।

कुणप (पु०)—बदलू, दुर्गन्धि, माला, मृतदेह, शव ।

कुण्टक (पु०)—मोटासाका ।

कुण्ड ( १५० )—सुस्त होना, लगडा होना, कुन्द होना । [सुस्त ।

कुण्ड (वि०)—मन्द, कुन्द, मूर्ख, दुर्बल, कुण्ठित (वि०)—पूर्ववत् ।

कुण्ड ( अस्त्री० )—पात्रविशेष, पृथ्वी ॥ कल इकट्ठा करने का गर्त, होम-करणार्थ बेदी ।

कुण्डल (अस्त्री०)—कानों की धाड़ी, बेड़ी, धृत्ताकार वस्तु ।

कुण्डलिनी (स्त्री०)—सर्पिणी, मोरनी, धृत्ताकारचित्र, गोष्ठ वस्तु, वाम-भागियों की शक्ति मानक देवी ।

कुण्डली (पु०)—घेरा डालने वाला सर्प, धृत्ताकार चित्र, मोर, सर्प, शिव । स्त्री०—कूड़ी, गोष्ठसूरास्र ।

कुतप (पु०)—अग्नि, सूर्य, अतिथि, देवता, भाऊजा, ब्राह्मण, द्विजन्मा, आठवा मुहूर्त ।

कुतकं (पु०)—तर्काभास, बुरी तर्कना, गलत मन्तक ।

कुतस् [कुत ] (अ०)—कहा से, कहा, कैसे, क्योंकर, किस प्रकार ।

कुतुक (न०)—इच्छा, कौतुहल, शौक, चित्त का झुकाव ।

कुतू (स्त्री०)—चमड़े का एक छोटा सा कुप्पा [ कुतुप भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ] ।

कुतूहल (न०)—इच्छा, आतुरता, शौक, सुश्री, दिनबहलास, कौतुक । वि०—अच्छा, आश्चर्यमय, कीर्तित ।

कुतूहलाक्रान्त (वि०)—शौक से भरा हुआ, तीव्रपणा से आतुर, अवशे से पहा हुआ । [ वयो ।

कुत्र (अ०)—कहा, किस स्थान में, कुत्स् ( १०भा० )—निन्दा करना, बुरा भला कहना, धिक्कारना ।

कुत्सना—कुत्सा (स्त्री०)—पूर्ववत् ।

कुत्सित (वि०)—गर्हित, निन्दित, नीच ।

कुय (पु०)—फालीन, कुशानामक पास कुद्दार ढाल (पु०)—कथनाल का पेड़, कस-ला, मिट्टी खोदनेका यन्त्रविशेष ।

कुदिन (न०)—धुरां दिन, ऐसा दिन जो मेषों से आच्छादित हो, दुर्दिन

कुधू (पु०)—पहरा, पर्वत ।

कुनक (पु०)—कौवा, काक ।

कुनख (पु०)—नखसम्बन्धी रोगविशेष कुनालिका (स्त्री०)—कोयल, कोकिल

कुन्त (पु०)—कीड़ा, धान्यावशेष, धड़ों, माला, मनोविकार ।

कुन्तल (पु०)—इल, ली, केशगुच्छ, धाड़ों के पट्टे ।

कुन्ती (स्त्री०)—कुन्तिभोज की गोद ली हुई कन्या पृथा नाम्नी जिस का विवाह पाशु के साथ हुआ

कुन्द ]

था और जिसके युधिष्ठिर, भीमसेन  
और अर्जुन तीन औरस पुत्र थे ।

कुन्द (पु०)—विष्णु का वाचक, कमल,  
ए की सरपा, कुन्दक वृक्ष । न०—  
कुन्दकवृक्ष का फूल ।

कुन्द (पु०)—चूही, मूषकी ।

कुम् ( ४ प० )—कोप करना, क्रोधित  
होना, बढ़ना । [ विद्वान्त ।

कुम्प (पु०)—कुमांग, वरारस्ता, अनार्य

कुम्प (पु०)—हानिकर खाद्य वस्तु ।

कुपाणि (वि०)—घुरे हाथ वाला ।

कुपिनी [त्रि०] (पु०)—ग्रथिक, मछेरा ।

कुपिन्द (पु०)—जुलाहा, तन्तुवाय ।

कुपुत्र (पु०)—घुरा वा क्रूरपुत्र ।

कुपूय (वि०)—नीच, कमीना, गहिंत ।

कुप्रिय (वि०)—जो प्यारा न हो ।

कुप्प (न०)—स्वर्ण और चांदी को छोड़  
कर अन्य धातु ।

कुबेर (पु०)—चनसम्पत्ति का अध्यक्ष  
देवता जो उत्तरदिशा का अधि-  
पति है ।

कुबेरदिक् [त्रि०] (स्त्री०)—उत्तरदिशा ।

कुडज (वि०)—कुम्हड़ा । पु०—कनर का  
कूय, टेढ़ी तलवार । [ वन ।

कुड (न०)—लकड़ा, तागा, घाली,

कुम्भ (पु०)—राजा, पर्यंत ।

कुम्भ (पु०)—धुरी मछाड़ ।

कुमार (पु०)—पाप वयं तक का बालक,  
राजपुत्र, कातिकेय, युयु, पुत्र,  
मोता ।

कुमारक (पु०)—पुंयक, आंत का तारा ।

कुमारभूषा (स्त्री०)—धार्मीकर्म, यद्यो  
का पाठमपोषण ।

कुमारिका ( स्त्री० )— दश वयं  
से धारह वयं तक की कन्या,  
अविवाहित कन्या, चीता, दुर्गा,  
वहो इलायची, भारतवर्ष के  
दक्षिण में राक्ष कुमारी ।

कुमारी (स्त्री०)—पूर्ववत ।

कुमुद् (न०)—सफेद कमल, रक्तपद्म ।

कुमुद (न०)—चांदी । पु०—विष्णु, काकूर,  
दक्षिणदिशा का स्वामी । अस्त्री०—

रक्तपद्म, श्वेतकमल ।

कुमुदनाथ-पति (पु०)—चन्द्र, चन्द्रमा ।

कुमुदवती (स्त्री०)—कमललता ।

कुमुदिका (स्त्री०)—कटफला नाम का  
पौधा । [ पद्मस्यली ।

कुमुदिगी (स्त्री०)—कमलभेद, पद्मशूङ्ख,

कुमुदिनीपति (पु०)—चन्द्रमा, चांद ।

कुमुदीश (पु०)—पूर्ववत ।

कुम्भ (पु०)—घट, चढ़ा, २० द्रोण का  
परिमाण । छद्मरोगविशेष । न०—

गुग्गुल नामक सुगन्ध द्रव्य ।

कुम्भकण्ठ (पु०)—रावण के छोटे भाई  
का नाम ।

कुम्भकर (पु०)—सर्प, साँप, कुम्हार, चढ़े  
या मिट्टी के ब्रतन बनाने वाला ।

कुम्भाकारिका-कारी (स्त्री०)—कुम्हारी,  
कुम्हार की स्त्री ।

कुम्भज ( पु० ) द्रोण तथा जगत्पति

श्रुति का वाचक, अविष्ट मुनि

का बोधक [ कुम्भ के परचात,

‘ जन्म, योनि और सम्भ्रम ’

शब्द के जोड़ देने से भी यही  
अर्थ होता है ] ।

कुम्भदासी (स्त्री०)—दूती, कुटनी ।

कुम्भशाला (स्त्री०)—कुम्हार का घर,  
कुम्हार का कारखाना ।

कुम्भिका (स्त्री०)—घड़िया, छोटा घड़ा,  
घेरया, चसूरीय । [ चोर ।

कुम्भिला (पु०)—छाला, सेंप लगाने वाला

कुम्भी (नृ) (पु०)—हाथी, मछली,

गुग्गुलु नामक सुगन्ध द्रव्य, जल-  
जन्तुविशेष । [ नाम ।

कुम्भीपाक (पु०)—एक घोर नरक का

कुम्भीक (पु०)—पुनर्जात वृत्त ।

कुम्भीर (पु०)—नगर, नाका, जलजन्तु ।

कुम्भीरक (पु०)—चोर । [ करना ।

कुर (६ प०)—आयाज करना, शब्द

कुरकर (पु०)—चारस पत्नी ।

कुरग (पु०)—हरिण, नृगभेद ।

कुरगनेत्रा (स्त्री०)—नृगनयनी, हरिण

के बीं आंखों वाली स्त्री ।

कुरङ्गनामि (पु०)—मुंश्क, केर ।

कुट (पु०)—चमार, मोची, कृता बनाने

वाला ।

कुरण्ड (पु०)—अण्डकेशवृद्धि ।

कुरर (पु०)—कुंज पत्नी, कुं ।

कुरल (पु०)—बुरा रस, मद्यभेद । पि०—

बुरे रस वाला ।

कुल (पु०)—पुरीहित, भात, चयले हुए

चायल, दिल्ली के आसपास के

प्रदेश का प्राचीन नाच, चन्द्रवध

के एक राजा का नाम ।

कुल्लेय (न०)—एक विस्तीर्ण मैदान

जो आज कल यानेश्वर के नाम

से विदित है शीर जहा पर

महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध चप-  
टित हुआ था ।

कुत्तरी (नृ) (पु०)—घोड़ा, शरव ।

कुरुटी (स्त्री०)—काण्डनिर्मित  
कठपुतली ।

कुराण (पु०)—दुर्योधन का वाक्क ।

कुरुल (पु०)—केशगुच्छ, लुल ।

कुत्तवत् (पु०)—रक्तक्षिण्ट, पुष्पवृत्त-  
विशेष ।

कुलविन्द (पु०)—छाला न०—कालानग,

दृप्य, छाल, रुत । [ नाप ।

कुलविस्त (पु०)—चार तीले खोने की

कुलवृद्ध (पु०)—भीष्मपितामह का

वाक्क । [ शकल ।

कुरुपता (स्त्री०)—वदशकली, वेदंगी

कुरुप्य (न०)—रांग नामक धातु ।

कुर्कुट (पु०)—मुर्गा, कुक्कुट ।

कुर्कुर (पु०)—कुत्ता, श्वान, कुक्कुर ।

कुर्पर (पु०)—भानु, पुटन ।

कुर्वन् (पु०)—मोकर, मोची ।

कुल (१ प०)—इकट्ठा करना, बड़े धामा,

गिनना ।

कुल (न०)—वध, जाति, घर, कुलीन

वध, समूह, गिरोह, शरीर आदि

का भाग, गिरादरी, क्रीम ।

कुलक (पु०) कुलीन, खनी, धत्मीक,

वध या समूह का सरदार । न०—

समूह, गिरोह ।

कुलकल (पु०)—जो अपने वध के

द्विये कलक या घट्टे के समान हो ।

कुलधय (पु०)—वध का नाथ ।

कुलगुरु(पु०)-गोत्रकर्त्ता वंशकर्त्ता, निम्नी  
वंश का धर्मगुरु वा शिक्षक ।

कुलगुरु (वि०)-कुलीन, अच्छे वंश  
का, पैतृक । [ पु० ।

कुलट(पु०)-दत्तक पुत्र, औरसभिन्न  
कुलटा ( स्त्री०)-असती स्त्री, कर्मशा  
नारी ।

कुलत (अ०)-खानदान के लिहाज से ।

कुलदेवता(स्त्री०)-वंश का रक्षक देव  
वा देवता ।

कुलधर्म(पु०)-वंश का विशेषधर्म वा  
कुलपरम्परासे प्राप्त रीतिरिवाज ।

कुलधारक (पु०) पुत्र, आने को वंश  
चलाने वाला ।

कुलनारी(स्त्री०)-शरीफ औरत ।

कुलन्धर(वि०)=कुलधारक ।

कुलपति(पु०)-वंश का सरदार वा  
मुख्य पुरुष, ऐसे गुरुकुल का  
अधिष्ठाता जिस में १०००० ब्रह्म-  
चारी शिक्षा पाते हों ।

कुलपुरुष (पु०)-कुलीन गुरुपुत्र, श-  
रीफ आदमी, प्रजुग ।

कुलभर (पु०)-घोर, घोर ।

कुलनयादा (स्त्री०)-वंश की गर्मादा  
वा उत्पत्ति ।

कुल्यधू (स्त्री०) शरीफजादी, कुलीन  
स्त्री । कुल्योपित का भी यही  
अर्थ है ।

कुलपान्(पु०) कुलीन, शरीफ, कुलधर्म ।

कुलपुत्री (स्त्री०)-गती और युद्धा-  
चारिणी स्त्री, कुलीन नारी ।

कुलपार (पु०)-वंशनाशक गुरुपुत्र ।

कुलाधार (पु०)-कुलधर्म ।

कुलाभिमान (पु०)-वंशीयता का दर्प,  
कुलीनता का भाव । [ गार ।

कुलानि (पु०)-गमाना, निधि, धन-  
कुलाय ( अस्त्री० )-घोंसला, शरीर,  
देह ।

कुलायिका (स्त्री०) पिंजड़ा । [ कार ।

कुलाल (पु०)-कुम्हार, उल्लू, कुम्भ-  
कुलाहक (पु०)-छिपकली ।

कुलि (पु०) हाथ, हस्त ।

कुलिक (पु०)-रिश्तदार, वंश का  
मुखिया । वि०-कुलीन, अच्छे  
वंश का ।

कुलिन (पु०) चटक पक्षी, पक्षीमात्र,  
मूपरभेद ।

कुलिन्दा (पु० बहु०) देशविशेष और  
उसके निवासी ।

कुलिश (अस्त्री०)-इन्द्रवज्र वज्र ।

कुली (न०) (न०)-पर्यंत, पहाड़ ।

कुलीन ( वि० )-अच्छे वंश का, शा-  
स्त्रज्ञानी, शरीफ । पु०-अच्छी  
मरल का घोड़ा ।

कुलीनस (न०)-जल, पानी ।

कुलीश (अस्त्री०)=कुलिश ।

कुलमल (न०) पाप, गुनाह ।

कुल्य (वि०)-कुलीन ।

कुलया ( स्त्री० )-नाली, घमघा, रज  
वादा, नक औरत ।

कुल (न०)-कुल, कमल ।

कुल (न०)-मीती, नल, सुर्मादर,  
नीला कमल ।

कुवाद(वि०)-कमीना, नीच, निन्दक ।



कुवाहुल (पु०)-ऊँट, उष्ट्र ।  
 कुविन्द(पु०)-जुलाहा ।  
 कुवेल(न०)-कमल, पद्म ।  
 कुश(पु०)-कुशा नाम की घास, श्री  
 रामचन्द्र का उषेष्ठ पुत्र । वि०-  
 घासल, क्रूर, रुध । [ भाई ।  
 कुशध्वज(पु०)-राजा जनक का छोटा  
 कुशपुष्प(न०)-यन्यपर्वनामक वृक्ष ।  
 कुशल(न०)-कल्याण, शुभ, नेकी ।  
 पु०-शिव का वाचक । वि०-  
 सुखी, कार्यपटु, चतुर, योग्य,  
 उचित, शुभ ।  
 कुशलप्रश्न(पु०)-मित्रसमागम के समय  
 परस्पर राजीखुशी पूछना ।  
 कुशस्थली(स्त्री०)-द्वारकानामक नगर  
 कुशा(स्त्री०)-लगान, रस्सी ।  
 कुशाग्रीव(वि०)-तीव्र तेज धारा वाला  
 कुशावती(स्त्री०)-रामपुत्र कुश की  
 राजधानी ।  
 कुशासन(न०)-कुशा नामक घासनी बनी  
 हुई चट्टाई, अराजकता ।  
 कुशिक(पु०)-विश्वामित्र के पितामह का  
 नाम, चहेड़ा ।  
 कुशीद(न०)-सूदयौरी, ध्याज ।  
 कुशीनय(पु०)-चारण, नट, वास्तीकि  
 को, वास्तव, वर्यता ।  
 कुशुम(पु०)-संन्यासी का कमण्डलु ।  
 कुशल(पु०)-फोहार, अनाज की खेती,  
 तुपानि ।  
 कुश(६ पु०)-फाड़ना, खींचना, चमकना,  
 परचना ।  
 कुपल(वि०)-चालाक, चतुर, दल ।  
 कुपाकु(पु०)-वानर, सूर्य, अग्नि, शरीर  
 वि०-रुमीना, दबाव ।

कुपीद(न०)=कुसीद । [ रोग ।  
 कुष्ठ(अस्त्री०)--विषभेद, कीड़ नामक  
 कुष्ठारि(पु०)-गन्धक, पटील ।  
 कुष्ठी[न०](वि०)-कुष्ठरोग से पीड़ित ।  
 कुम्भासह(पु०)-लताभेद, कुम्भानामक  
 वृक्ष, सफेद पेठा ।  
 कुम् (४ पु०)-घेरना, आलिंगन करना ।  
 कुसीद(न०)-छाज पर दी हुई वस्तु,  
 साहूकारा, लेनदेन । पु०-साहू-  
 कार, बैकर । [ करने वाला ।  
 कुसीदिक(पु०)-साहूकार, लेनदेन  
 कुसुम(न०)-फूल, फल । स्त्रीरज,  
 चक्षुरोगविशेष, फूला नामक रोग ।  
 कुसुमधन्वा(पु०)-कापदेव का वाचक ।  
 कुसुमपुर(न०)-पाटलीपुत्र नाम  
 नगर, पटना ।  
 कुसुमशयन(न०)-फूलों की सैज ।  
 कुसुमाकर(पु०)-वर्षेन्त वस्तु ।  
 कुसुमाञ्जलि(पु०)-फूलों की भेंट ।  
 कुसुमाल(पु०)-बोर । [ शहद ।  
 कुसुमासय(न०)-फूल का मद्य अपात  
 कुसुमास्त्र(पु०)-कामदेव का वाचक ।  
 कुसुमोच्चय(पु०)-फूलों की साला,  
 गुच्छा ।  
 कुसुम(अस्त्री०)-जाफरान, केथर ।  
 न०-स्वर्ण, कमण्डलु, कुसुमा  
 नामक वृक्ष ।  
 कुसुल(पु०)-खेती, फोहार, अनाज  
 उठ्ठा करने का घर ।  
 कुसुति(स्त्री०)-धोखा, करेब, शठता ।  
 कुन्तुमे(पु०)-समुद्र, सागर, विष्णु ।  
 कुइ(१२ आ०)-धोखा देना, ठगना,  
 विस्मृत करना ।

कूह ]

कुह(अ०)-कुत्र, कहा, किस स्थान पर  
पु०-कुत्रे, ठग, शठ ।

कुहक(पु०)-ब्राजीगर, ठग, बदमाश ।  
न०-धोखा, ठगी, छल ।

कुहकस्वर(पु०)--सुगो, कुक्कुट ।

कुहका(स्त्री०)--आदूगरी, इन्द्रजाल,  
नाया, कपट ।

कुहन(पु०)-सर्प, मूषक । वि०-हासिद ।  
धोखेबाज । न०-कच का वर्तन ।

कुहना(स्त्री०)--कपटजाल; धूर्तता,  
चकवृत्ति; दम्भ ।

कुहनिका(स्त्री०)-पूर्ववर्त । [गला ।

कुहर(न०)-सूरास, कान, गर्त, गुफा,

कुहु(स्त्री०)--आभावस्या जिस में  
चन्द्रमा दिखलाई न दे, कोयल  
की बूक ।

कुहुकण्ठ(पु०)--कोयल, कोकिल ।

कुहुरय-शब्द(पु०)-कोयल, कोकिल ।

कू(१, ६ जा०)--आह भरना, आवाज  
करना, शोर मचाना ।

कूकुद(पु०)--घस्त्राभूषण से अलंकृत  
कन्या को देने वाला ।

कूच(पु०)=कुच ।

कूपिका(स्त्री०)-कुंजी, बालों का  
घना हुआ कलन, मुन्ध, कूची ।

[कुची शब्द भी इसी अर्थ में  
प्रयुक्त होता है] ।

कूज(१ पु०) गुंजा, भिन्नभिन्नाना,  
गुंजा हालना । [भिन्नभिन्नादृष्ट ।

कूजन-जित (न०)-गुंजार; कलना,

कूट(१० उ०)-मलमल देना, दुःखित  
होना, पुकारना ।

कूट(पु०)-घर, भगस्त्य मुनि । अस्त्री०-  
कपट, छल, माया, झूठ, धिक्कर,  
सींग; ढेर; हथौड़ा; नगरद्वार ।  
वि०-झूठा, कुटिल; गहित ।

कूटकार(पु०)-झूठा गवाह; बदमाश ।

कूटस्त(पु०)-कायस्थ; शिव । वि०-  
धोखेबाज, धूर्त ।

कूटल(पु०)-ठग, कपटी । [आवा ।

कूटपालक(पु०)-कुम्हार; कुम्हार का

कूटपुद्ग(न०)-उल्लुख लताई ।

कूटसाली(पु०)-झूठा गवाह ।

कूटस्थ (पु०)-ब्रह्म । वि०-एकरस,  
शिरःस्थित । [खेलने का स्थान ।

कूटाचार (न०)-द्यूतपर, भटारी,

कूण(१० उ०)-बोखना, बातें करना ।

कूणिका(स्त्री०)-पशु का सींग, पाखी  
की सूंटी ।

कूदी(स्त्री०)-पैर की घड़ी ।

कूप(१० उ०)-कमजोर होना या करना ।

कूप(पु०)-कुभों, गर्त, तेल भरने की  
कुटवी, गस्तूल । [नीका, कुइया ।

कूपक(पु०)-गर्त, गुफा, नघनकूप, चिता,

कूपार(पु०)-चमुद्र, सागर । [घोतल ।

कूपी(स्त्री०)-छोटा कुभों, कुइया,

कूपर(पु०)-कुचड़ा आदमी, रथ का  
मुग्ध ।

कूपरी[न] (पु०)-गाड़ी, रथ ।

कूम(न०)-तालाब, जोड़ह, तलिया ।

कू(अस्त्री०)-पके हुए चावल, भात,  
भोजन ।

कूचं(अस्त्री०)-गौर का पल, कुशा की

मुट्टी, डाढ़ी, घंडल, दम्न, शेखी,  
उल ।

कूर्चशीर्षं(पु०)-नारियल, नारिकेल ।

कूर्चशेखर(पु०)-पूर्ववत् ।

कूर्द(१ उ०)-कूदना, चढना ।

कूर्दनी(स्त्री०)-चैत्र की पूर्णिमा के  
दिन कामदेव की प्रतिष्ठा में जो  
व्रतस्र किया जाता है ।

कूपर(पु०)-घुटना, जानु, कोहनी ।

कूर्म(पु०)-कछुआ, कछप, देहस्थ  
एक वायु ।

कूर्मावल(पु०)-पर्वतविशेष ।

कूर्मावतार(पु०)-पुराणों के अनुसार  
विष्णु का दूसरा अवतार जो  
कच्छपयोनि में हुआ था ।

कूल(१ उ०)-छिपाना, ढकना, रोकना,  
धरना ।

कूल(न०)-किनारा, घट, तालाब,  
हालू ।

[वस्त्रीक ।

कूलक(अस्त्री०)-मूर्ध्वत् । पु०-वमी,

कूलकय(पु०)-जलधारा/समुद्र/सागर ।

वि०-किनारों को तोड़ने वाला,  
चढ़ेल ।

कूलकपा(स्त्री०)-नदी, दरिया ।

कूलभू(स्त्री०)-किनारे की भूमि ।

कूलवती(स्त्री०)-नदी, दरिया ।

कूलहण्डक(पु०)-भवर आवर्त ।

कूपार=कूपार ।

कूहा(स्त्री०)-कोहरा, पाला ।

कूह(स्त्री०)=कुह ।

क(८ उ०)-करना, बनाना, पढ़ना

वत्पत्र करना-लिखना । (प्र३०)-

मारना, बघ करना ।

कक(पु०)-गला, गीवा ।

ककला(स्त्री०)-पिप्पली ।

ककलाश[स](पु०)-छिपकली ।

ककवाकु(पु०)-कुम्कुट, मोर ।

ककाटक(न०)-गीवा, गर्दन ।

ककू(अस्त्री०)-मुषिकर्क, आपत्ति,  
खतरा, दुःख, कष्ट, शरीरकष्ट,  
प्राजापत्ययुत । न०-पाप । वि०-  
कष्टदायक, आपदापन्न, शठ ।

ककूसाध्य(वि०)-कष्टसाध्य, कठि-  
नता से सिद्ध होने वाला ।

कूत(१, ६ प०)-काटना; काट कर  
अलग करना, टुकड़े २ करना ।  
वि०-पूरा करने वाला, सम्पादक,  
कर्ता, बगाने वाला, [इन अर्थों  
में यह चत्वार के अन्त में प्रयुक्त  
होता है] ।

कूत(वि०)-किया हुआ, सम्पादित,  
बनाया हुआ । न०-काम, सेवा,  
लाम, उद्देश । [इच्छा पूर्ण हो गई

कूतकाम(वि०)-ऐसा मनुष्य जिस की  
कूतकार्य(वि०)-कामयाब, सफल मनोरथ,  
कूतकृत्य(वि०)-कृतार्थ, विद्वान् ।

कूतक्षण(वि०)-जिसे अवकाश मिल  
गया हो, लब्धभावसर ।

कूतघ्न(वि०)-किये हुए को नाश करने  
वाला, उपकार को न मानने वाला ।

कूतघ्न(वि०)-किये उपकार को जानने  
वाला, अहसानमन्द । पु०-कुत्ता,  
शिव ।

कूतधी(वि०)-धीमान्, शिखित ।

कृताग्निश्चय (वि०)-पक्के इरादे का,  
यकीनी ।

कृतपूर्व (वि०)-पहिले कृपा हुआ ।

कृतप्रतिष्ठा (वि०)-जिस से प्रतिष्ठा की  
हो, मग में बधा हुआ ।

कृतम् (न०)-उम करो, अलम्, पर्याप्त,  
निषेध । [ निश्चय खाडी ।

कृतप्रतिष्ठा (वि०) प्रितित, अवलम्ब, दृढ

कृतमति (वि०)-दृढ निश्चय धारा,  
पक्के इरादे का । [ललित ।

कृतललित (वि०)-चिन्तित, अलित,

कृतबन्धन (पु०)-महाभारत के एक  
महिष घोड़ा का नाम जो कीरखो  
की ओर से लड़ा था और युद्ध के  
पश्चात् बच रहा था । [घाफता ।

कृतविद्या (वि०)-शिक्षित, साक्षीम

कृतवीर्य (वि०)-वीरकण्ठवाली, शक्ति  
सम्पन्न । पु०-सहराजुन के पिता  
का नाम ।

कृतधेय (वि०)-अलकृत, सुचरित्रित ।

कृतशीत (वि०)-शानदार, सुखसूरत ।

कृतशीघ्र (वि०)-पवित्र, शुद्धतायुक्त ।

कृतश्रम (वि०)-कृतविद्या, कृतसाधुक्त,  
जिसने मेहनत की हो ।

कृतमन्त्र (वि०)-विकल्परहित,  
मन्त्रयुक्त, दृढ निश्चय खाडी ।

कृतदस्ता (वि०)-हाथ का दुश्मन, चतुर

कृतदस्ता (स्त्री०)-चतुराई, कौशल ।

कृतारण (वि०)-बुल किया हुआ और  
कुछ न किया हुआ, अपरा  
धिया हुआ । [ हुआ ।

कृतार (वि०)-अवित, चिन्तित, गिरा

कृताञ्जलि (वि०)-हाथ जोड़े हुए ।

पु०-छुईमुई का यत्न । [ चित ।

कृतात्मा (वि०)-शुद्धान्त करण, स्वस्व-  
वृत्ता-त (पु०)-यग, आरुध्य, निश्चय,

चिद्धान्त, शनैःपर ।

कृतान्न (न०)-पका हुआ अन्न ।

कृतापराध (वि०)-मुक्तिरिक्त, दोषी ।

कृताभ्यास (वि०)-अभ्यास किया हुआ

कृतार्थ (वि०) कृतकार्य, कामपात्र ।

कृतास्त्र (वि०)-जिसने कौशी तालीम  
पाई हो, अस्त्रविद्या को सीखा

हुआ ।

कृति (स्त्री०)-करना, अनामा सम्पा-  
दन कार्य, साधन, माया, दुरी,  
बादू ।

कृतिकर (पु०)-रावण का बोधक ।

कृती [न] (वि०)-अन्तुष्ट कामयाब  
सुख कार्य को जिसने पूरा कर

दिया है ।

कृते (अ०)-वास्तव, सिद्धे, बसबस ।

कृतेन (अ०)-पूर्ववत् ।

कृत (वि०)-इच्छित, कटा हुआ  
विभक्त ।

कृति (स्त्री०)-धनदा, स्वधा, धन-  
लाभा भोजन, घर ।

कृत्तिका (स्त्री०)-तीक्ष्ण नक्षत्र ।

कृत्तु (पु०)-कारीगर दस्तकार ।

कृत्य (न०)-कृतंय काम कार्य,  
हृष्टी, कर्ण । वि०-करने योग्य,  
उचित शीक सम्भाव । [विली ।

कृत्यका (स्त्री०)-जादूगारी, माया-

कृत्या (स्त्री०)-कार्य, काम, जादू

जादूगरों की उपास्यदेवी ।

कृत्रिम (वि०)-बनावटी, मुतबन्ना ।

न०-सुगन्धिमेद, लघणविशेष ।

कृत्रिमपुत्र (पु०)-भोद लिया हुआ पुत्र, १२ प्रकार के पुत्रों में से एक ।

कृत्रिमपुत्रक (पु०)-गुड़िया, कठपुतली

कृत्रिमभवन (न०)-घाग, वांटिका ।

कृत्स्न (न०)-जल, समूह । पु०-पाप, अपराध, गुनाह ।

कृत्स्न (न०)-जल, कीस, पेट, पानी ।

वि०-सम्पूर्ण, सारा, तन्मात्र ।

कृत्तन (न०)-काटना, अलग करना ।

कृप् (१०५०)-रहम करना, दया दिल-  
छाना, दुःख प्रकाश करना ।

( १ आ० )-रहम खाना, दयालु  
होना ।

कृप (पु०)-द्रोणाचार्य का साला और  
अश्वत्थामा का मामा ।

कृपणः (वि०)-कजूस, नकलीबूस,  
गरीब, खून, अदाता, सूख । न०-

कमबख्शी, हतभोम्यता । पु०-  
कीड़ा, कजूस ।

कृपणधी (वि०)-मीचमना, लंगदिल ।

कृपा (स्त्री०)-दया, नम्रता, सहद-  
यता ।

कृपाण (पु०)-छुरी, तलवार ।

कृपाणकः-णिका=कृपाण ।

कृपाणी (स्त्री०)-झुझर, कैंची ।

कृपादृष्टि (स्त्री०)-दयायुक्त दृष्टि,  
मेहरबानी, नजरे इनायत । [दय ।

कृपान्वित (वि०)-दयाईंचित, सह-

कृपालु (वि०)-कृपान्वित ।

कृपापूर्वकम् (स०)-दया करके, अराय  
मेहरबानी ।

कृपी (स्त्री०)-कृपाचार्य की सहन  
और द्रोण की पहनी ।

कृपीट (न०)-जल, पेट, जगल, ईधन ।

कृपीटयोनि (पु०)-अग्नि, आग ।

कृपीमुत (पु०)-अश्वत्थामा ।

कृमि (पु०)-कीड़ा, मकड़ी, लाख,  
गधा, पेट के कीड़े, चींटी ।

कृमिक (पु०)-छोटा कीड़ा, कीड़ी ।

कृमिकरटक\* (न०)-विहग, उदुम्बर,  
चित्राङ्ग नामक वृक्ष ।

कृमिकीशोत्प (न०)-रेशम, रेशमी  
कपड़ा, कौपेय ।

कृमिचन (पु०)-वायविहग, दुँडही ।

कृमिचनी (स्त्री०)-हलदी ।

कृमिण (वि०)-कीड़ी वाला ।

कृमिपर्वत (पु०)-बनी, बरनीक ।

कृष् ( ॥ ५० )-कमज़ोर होना, अस्त  
होना ।

कृश (वि०)-पतला, दुबला, कमज़ोर,  
छोटा, गरीब ।

कृशर (पु०)-खिचड़ी ।

कृशात्त (पु०)-मरुड़ी ।

कृशाङ्ग (वि०)-दुबला, पतला ।

कृशानु (पु०)-अग्नि ।

कृष् ( ६ ३० )-खींचना, हल जोतना,  
काटना, गरीब आना ।

कृष्क ( पु० )-किसान, खेतीहर, बैल ।

वि०-खींचनेवाला, हल जोतनेवाला ।

कृपाण (पु०)-किसान, खेतीहर, काश्तकार

रुपि (स्त्री०)-खेती, काश्तकारी ।

कृषिक ]

कृषिक (पु०) = कृषाण ।

कृषिकर्म (न०) - खेती का व्यवसाय ।

कृषिजीवी (वि०) - खेती के सहारे रहने वाला, काश्तकार ।

कृषिचल (पु०) - कृषिजीवी ।

कृषकर (पु०) - शेष का वाचक ।

कृष्ट (वि०) - हल जुता हुआ, खिंचा हुआ ।

कृष्टफल (न०) - खेती की पैदावार ।

कृष्टि (स्त्री०) - खींचना, जमीन जोतना ।

कृष्टोत्त (वि०) - जोतकर बोया हुआ ।

कृष्ण (पु०) - काला रंग, काला हरिण, कौचा, फोयल, चन्द्रमास का प्रथम

पक्ष, कलिपुग, देवकीनन्दन, वासुदेव

जो भाग्यवत के अनुसार विष्णु का

दवां अवतार माना गया है, व्यास,

अर्जुन, काली मिर्च, लोहा ।

कृष्ण (वि०) - काला, पुंघियाला,

फाटा, नीर, मोला, क्रूर, घुरा ।

न० - रूपाही, अन्धकार आंख

की पुतली, शीशा, सुमां, काली

मिर्च, लोहा ।

कृष्णक (न०) - काले हरिण का चमड़ा ।

कृष्णकर्म (वि०) - अपराधी, मुलजिन ।

कृष्णकाय (पु०) - शैवा, महिष ।

कृष्णगति (स्त्री०) - अग्नि ।

कृष्णवीथ (पु०) - मिथ का वाचक ।

कृष्णचन्द्र (पु०) - यदुवंशी वसुदेव के

पुत्र ।

कृष्णपन (न०) - गुरे साधनों से प्राप्त

दिया हुआ पन ।

कृष्णवैवायन (पु०) - ठयास का नाम ।

कृष्णवत्त (पु०) - अर्जुन, चन्द्रमास का

प्रथमाग ।

कृष्णमृग (पु०) - काला हरिण ।

कृष्णमुख-वदन (पु०) - काले मुख का

चन्द्र अर्थात् लंगूर ।

कृष्णयजुर्वेद (पु०) - यजुर्वेद की तैत्ति-

रीयशाखा ।

कृष्णयाम (पु०) - अग्नि का वाचक ।

कृष्णरक्त (पु०) - गहिरा लाल रंग ।

कृष्णवर्ण (पु०) - काला रंग ।

कृष्णशृङ्ग (पु०) - शैवा, महिष ।

कृष्णसख (पु०) - अर्जुन ।

कृष्णसारथि (पु०) - अर्जुन ।

कृष्णिका (स्त्री०) - राई ।

कू (इ पु०) - बखेरना; विकीर्ण करना;

हथर उधर फैलना ।

कृत (१० व०) - कीर्तन करना, दोहराना ।

केकय (पु०) - एक देशविशेष तथा वस

के निवासियों का नाम ।

केकयी (स्त्री०) - राजा दशरथ की

एक रानी ।

केकर (वि०) - नीची लकी आँखों

वाला पुरुष, टेरेने, घाला ।

केका (स्त्री०) - मयूरवाणी ।

केकावल-केकिक (पु०) - मयूर, नीर ।

केकी [व] (पु०) - नीर, मयूर । [निर्भी ।

केता (पु०) - पर, निवासस्थान, निमन्त्रण ।

केतक (पु०) - केवड़े का वृक्ष, केतकी,

प्यजा ।

केतन (न०) - प्यजा, स्वाग, जगह,

भंडा, घर, बिन्ह, अनिवार्य कार्य ।

केतित (वि०) - निमन्त्रित ।

केतु (पु०) - कंड़ी, सरदार, पूगकेतु,

बिन्ह, रोग, शत्रु ।

केतुग्रह(पु०)-नक्षत्रों में से एक ।  
 केतुत(पु०)-बादल, भेड़ा ।  
 केदर(वि०)=केकर ।  
 केदार(पु०)-चराहगाह, आलवाल, पर्वत,  
 शिव का एक रूप, हिमालय का  
 भाग केदारपर्वत । [गाल ।  
 केनार(पु०)-छोपड़ी, नरकविशेष,  
 केनिपात(पु०)-भरिष, पतवार ।  
 केन्द्र(न०)-मकैज, दम्पती लुक्ता ।  
 केयूर(अस्त्री०)--बाजू नामक आभरण  
 केरल(पु०)-मालावारप्रदेश । [बाला ।  
 केरक(पु०)-नाथने वाला, नृत्य करने  
 केरि (अस्त्री०)-नखौल, परिहास,  
 क्रीडा । स्त्री०-पृथिवी ।  
 केरिक (पु०)-अशोकवृक्ष ।  
 केरिनागर (पु०)-काशी पुरुष ।  
 केरिरा (पु०)-क्रीडास्थल ।  
 केरिथयन (न०)-आरामकुर्सी ।  
 केरी (स्त्री०)=केरि ।  
 केर (१ आ०)-सेवा करना ।  
 केरल (वि०)-एक, अकेला, सम्पूर्ण,  
 साफ, छुट्ट, एक ही ।  
 केवलम् (अ०)-विफ, महज, बिल्कुल  
 केश (पु०)-माल, शेर वा घोड़े की  
 अयाल, किरण, वरुण और विष्णु  
 का वाचक ।  
 केशकर्म (न०)-हजामत बनवाना,  
 बाल साफ करना ।  
 केशकीट (पु०)-जू ।  
 केशचिड्ड (पु०)-हजाम, नाई ।  
 केशट (पु०)-सटमल, जूनाई, बन्धु,

विष्णु का वाचक, शीपण नामक  
 कामदेव का एक बाण, अज ।  
 केशप्रसाधनी (स्त्री०)-बाल साफ  
 करने की कपी, कंचा ।  
 केशभार्जक-भार्जक (न०)-पूर्ववत् ।  
 केशरचना (स्त्री०)-बाल बनाना, बाल  
 सुधारना ।  
 केशव (पु०)-कृष्ण का वाचक, विष्णु ।  
 वि०-अच्छे बालों वाला ।  
 केशिक (वि०)-अच्छे बालों वाला ।  
 केशिका (स्त्री०)-अतावरी वृक्ष ।  
 केशी [न] (वि०)-अच्छे बालों वाला ।  
 (पु०)-विष्णु, शेर, सिंह, एक दैत्य  
 का नाम ।  
 केश[श]र(अस्त्री०)-अयाल, नीलबिरी  
 पुन्नाग वृक्ष; जाफ़रान; कुंकुम ।  
 केशरि(पु०)-इनूनान् के पिता का  
 नाम ।  
 केश[श]री[न०] (पु०)-शेर; सिंह;  
 घोड़ा; अश्व, पुन्नाग वृक्ष; इनू-  
 नान् के पिता का नाम ।  
 केशरिभुत(पु०)-इनूनान् का वाचक ।  
 कै(१ पु०)--शब्द करना ।  
 कैकेय(पु०)-कैरुपों का राजा वा  
 अचिपति ।  
 कैकेयी(स्त्री०)--राजा दशरथ की सध  
 से छोटी स्त्री जो भरत की  
 माता थी ।  
 कैटभ(पु०)-एक राक्षस का नाम ।  
 कैटभारि(पु०)-विष्णु ।  
 कैतव(न०)-ठल, जूआ, झूठ; कपट ।  
 पु०--जुआरी; घसूरे का पेड़ ।

कैतयक(न०)--दूनफ्रीडा ।

कैरय(पु०)--जुआरी; शयु; बड़माथ ।

कैरवी(स्त्री०)--चन्द्रिका, ज्योत्स्ना ।

कैरवी[न] (पु०)--चन्द्रमा ।

कैल (न०)--फ्रीडा; खेतकूद ।

कैलास(पु०)--हिमालय की एक चोटी का नाम, जहां पर शिव और कुवेर निवास करते हैं ।

कैलासनाथ(पु०)--शिव; कुवेर ।

कैलासपति(पु०)--शिव; महादेव; शंकर ।

कैवर्त(पु०)--नठेरा; यधिक, नरलाह ।

कैवर्तक(पु०)--पूर्ववत् ।

कैवल्य(न०)--छूट जाना, अलग होना, मुक्त होना; मुक्ति, निर्वाण ।

कैशिक(पु०)--क्रामेछा ।

कैगोर(न०)--पन्द्रह वर्ष से पूर्व की अवस्था ।

कैश्य(न०)--घाली का समूह ।

कोक(पु०)--मेड़िया, चकवा, कोयल, मैदक, घिण्ण, खजूर का पेड़ ।

कोकदेव(पु०)--कपोत, कबूतर ।

कोकगद(न०)--छाल कमल, रक्तपद्म ।

कोकिल(पु०)--कोयल, उलहा ।

कोकिला(स्त्री०)--पूर्ववत् ।

कोकिलावास(पु०)--आम का वृक्ष ।

कोकण(पु० बहु०)--महाराष्ट्र देश का एक भाग । [का नाम ।

कोकणा(स्त्री०)--जमदग्नि की स्त्री

कोप(पु०)--आतिशेद, गुस्सा ।

कोशागर(पु०)--आश्रयण नाम की पूर्णिमा के दिन का उत्सव ।

कोट(पु०)--झिंझा, दुर्ग, कुटिलता, दादो । [कुटिया ।

कोटर(अस्त्री०)--वृक्ष की खोखल,

कोटरी(स्त्री०)--दुर्ग, नंगी स्त्री ।

कोटवी(स्त्री०)--पूर्ववत् ।

कोटि-टी(स्त्री०)--कक्षा, दर्जा, हथि-पार की धार या सिरा, एक करोड़ ।

कोटिर(पु०)--तपस्वियों और साधुओं के नस्तक पर जो बाल गुच्छे के रूप में बांध दिये जाते हैं, जटा, पुंन का बापक ।

कोटिशः(अ०)--असंख्य; लातादाद; बहुत २ ।

कोटीर(पु०)--जटा; मुकुट; किरीट ।

कोटीश्वर(पु०)--करोड़पति ।

कोह(पु०)--झिंझा; तहल; दुर्ग ।

कोहार(पु०)--कुप; चहारदीवारी से घिरा हुआ नगर, झिंझा ।

कोण(पु०)--कोना; अस्त्र का सिरा; घर आदि का भाग या देश, भौ की लता ।

कोदण्ड(पु०)--देशविशेष, भौ । अस्त्री० धनुष, कमल ।

कोद्वय(पु०)--घातडा, धान्यभेद ।

कोप(पु०)--क्रोध; अनोखिकार; गुस्सा ।

कोपन(न०)--क्रोध, गुस्सा करना ।

कोपित(वि०)--क्रोधित, गुस्से से भरा हुआ ।

कोपित (वि०)--क्रोधित, कोपाविरट, भड़काया हुआ ।

कोमल(न०)--मल, पृथ्वी, मिट्टी ।

कोमल-मुन्दर, मुलापम, गर्म, गाजुक ।



कोरक (अस्त्री०)-कली, न खिली हुआ  
फूल, गन्धभेद, पराग ।

कोल (पु०)-सूअर, शूकर, गोद, कोठे,  
छाती, जातिच्युत, चहशी । न०-  
एक लोला का परिमाण, पिप्पली ।

कोलकुण (पु०)-खटमल ।

कोलपुच्छ (पु०)-यगला, चक ।

कोलमूल (न०)-पिप्पलीमूल ।

कोलम्वक (पु०)-बीणा का देह ।

कोलाहल (अस्त्री०)-शोरगुल, रौला, हुल्लड़ ।

कोल्या (स्त्री०)-पिप्पली ।

कोविद (वि०)-पाण्डित्य, धीमान्, कुशल,  
तज्ज्ञकार ।

कोविदार (अस्त्री०)-कचमाल का पेड़ ।

कोश[प](अस्त्री०)-पूजाना, धनागार, कोठार,

म्यान, मद्यपात्र, घन, आहूनी सन्दूक,

अभिधान, डिक्शनरी, लुगत, अण्डा ।

कोशक (पु०)-अण्डा, अण्डकोश ।

कोशकार (पु०)-अभिधानकर्ता, ज्ञान्त  
लिपिमें वाला, म्यान बनाने वाला ।

कोशगृह (न०)-पूजाना, धनागार ।

कोशनायक (पु०)-कोशाध्यक्ष, कुबेर ।

कोशल = कोसल ।

कोशवृद्धि (स्त्री०)-धनकी बढ़ोतरी, आँतों  
का उत्प्रेरणा, अण्डकोश का वृद्धिमान ।

कोशतिरु (न०)-रिश्तत, वंश ।

कोशहीन (वि०)-नदीय, निर्धन ।

कोशगार (अस्त्री०)-धनागार, खजाना ।

कोशानकी[न] (पु०)-याडवानल, व्यव-  
सायों, निज्जार, मोल्दानी, दिज्जारत ।

कोशाध्यक्ष (पु०)-कोश, धिगले, पूजामन्त्री,  
कुबेर, आयन्वय का हिसाय रखने  
वाला ।

कोष्ठ(न०)-माचीर, घूँपा । पु०-पेट,

अन्दरूनी कमरा, कोठार, धान्या-  
दि भरने का घर, कोठा, भण्डार ।

कोष्ठक(पु०)-माचीर, कोठार ।

कोष्ठपाल(पु०)-कोषाध्यक्ष, भण्डारी ।

कोष्ठागार(न०)-खता, कुठला ।

कोष्ठागारिक(पु०)-भण्डारी ।

कोष्ण(न०)-कुष्ठ २ गर्मी । वि०-कुष्ठ २  
गर्म, ईषदुष्ण । [ के निधानी ।

कोसल (पु०यहु०)-अवधदेश तथा चर्मा

कोस[श]ला (स्त्री०)-मयोध्या नगरी,  
अवध की राजधानी ।

कोहल (पु०)-वाद्य भेद, मद्य सार ।

कौकल्य(न०)-क्रूरता, पशुघाताप, बुरा  
काम ।

कौकुटिक(पु०)-पाखण्डी, दम्भी, ऐसा  
साधु जो कोटादि के नरने के भय  
से पृथ्वी की ओर दृष्टि करके  
चलता है ।

कौस(वि०)-कुक्षिगत, पार्श्वगत ।

कौलेयक(पु०)-खट्वा, कोख में छिपाई  
हुई तलवार ।

कौकण=कौकण ।

कौट (पु०)-छन, कपट, फरेब । वि०-  
छली, दम्भी, स्वतन्त्र, घरेलू ।

कौटिक (पु०)-शिकारी, वधिरु,  
भठेरा ।

कौटमांसी(पु०)-कूँठा गवाह ।

कौटसाहय (न०)-भूँटी या बनावटी  
गवाही । [ वेदपान, कपटी ।

कौटिक(पु०)-वधिरु, शिकारी । वि०-

कौटिलिक (पु०)-शिकारी, वधिरु,  
लुहार ।

कौटिल्य(पु०)-नीतिज्ञान वाणिक्य का नाम जो मौर्यवंशीय चन्द्रगुप्त का मित्र था । न०-कुटिलता, छल, कपट ।

कौटुम्भ(वि०)-कुटुम्बसम्बन्धी ।

कौटुम्भिक(पु०)-कुटुम्भ का जनक ।

कौणप(पु०)-राजसू ।

कौतुक ( न० )-चाय, इच्छा, कंगना, सुशो, सभाशा ।

कौतुकागार ( अस्त्री० )-अनायसघर, दिव्यब्रह्माय का स्थान ।

कौतुकित(वि०)-कौतुकयुक्त, चाय से भरा हुआ ।

कौतूहल(न०)-तमाशा, कौतुक, कुतूहल, अवस्थे की वस्तु, इच्छा, शौक, विवाहादि कृत्य ।

कौतूहल्य(न०)-पूर्ववत् ।

कौदाहिक(पु०)-मठेरा, वर्णसंकर ।

कौन्तिक(पु०)-भालेवर्दार । [ आदि ।

कौन्तेय ( पु० )-कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर

कौप ( न० )-कुएं का जल ।

कौपीन(न०)-पाप, अपराध, लंगोटी ।

कौमार(न०)-यशपन, कुवारापन । वि०-कुवारा, यशान, मुलापन ।

कौमारभृत्य(न०)-घरवा का पालन पोषण । [ की अवस्था ।

कौमार्य(न०)-यशपन, पांच वर्ष तक

कौमारिक(पु०)-लटकियों का पिता ।

कौमारिकेय(पु०) अविवाहित स्त्री का पुत्र ।

कौमारी(स्त्री०)-वासिकेय की शक्ति ।

कौमुद(पु०)-तान्त्रिक नाय ।

कौमुदी (स्त्री०)-चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, असौजन्य वा कार्तिक की पूर्णिमा ।

कौमुदीपति(पु०)-चन्द्रमा ।

कौमोदकी (स्त्री०)-विष्णु की गदा ।

कौमोदी(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

कौरव ( पु० )-कुरु की सन्तान, कुरु-

वंशीय राजा [ यद्यपि पाण्डु और

धृतराष्ट्र दोनों की ही सन्तान

कौरव कहला सकती है, परन्तु

विशेष कर यह शब्द धृतराष्ट्र

की सन्तान का ही बोधक है । ]

कौरव्य(पु०)-कुरुवंशीय राजा ।

कौल(वि०)-अच्छे कुल का, कुलीन ।

पु०-तान्त्रिक । [ का पुत्र ।

कौलदिनेय(पु०)-व्यभिचारिणी स्त्री

कौलटेय(पु०)-पूर्ववत् ।

कौलटेर(पु०)-पूर्ववत् ।

कौलिक ( पु० )-कुलाहा, नास्तिक,

तान्त्रिक । वि०-कुलगम्बन्धी,

कुलक्रम से प्राप्त ।

कौलीन ( पु० )-ककीरनी का पुत्र,

वानमार्गी । न०-अपवाद, घुरी

अकवाद । वि०-अच्छे कुल का,

कुलीन ।

कौलिन्य(न०)-वक्ष्यशीलता, कुलदोष,

कुनप्रतिष्ठा, कुलच्छिद्र ।

कौलेयक(पु०)-यशान, शिकारी कुल ।

वि०-कुलीन ।

कौल्य(वि०)-तान्त्रिक, वाचमार्गी ।

कौल्येय(वि०)-कुचरसम्बन्धी ।

कौमरी(स्त्री०)-उषादिशा ।

कौश(वि०)-देशी, कुशा पास का

धना हुआ । [राज्ञीखुशी ।

कौशल (न०) - चतुराई, कुशलसेम,  
कौशलिक (न०) - रिश्वत, घूस ।

कौशलिका (स्त्री०) - कुशलसेम पूछना,  
भेट, नज़राना ।

कौशली (स्त्री०) - पूर्ववत् ।

कौशलेय (पु०) - राम का वाचक ।

कौशल्य (न०) = कौशल ।

कौशल्या (स्त्री०) - राजा दशरथ की  
यही रानी । [राम ।

कौशल्यायनि (पु०) - कौशल्या के पुत्र

कौशान्धी (स्त्री०) - गंगा तट पर एक  
प्राचीन नगरी का नाम ।

कौशिक (पु०) - विश्वामित्र, उल्लू,  
कोशकार, सर्प पकड़ने वाला,  
कोषाध्यक्ष, सञ्जानी, इन्द्र, ऋगार,  
गुग्गुलु ।

कौशिकमित्र (पु०) - राम का वाचक ।

कौशिककल (पु०) - नारियल ।

कौशिका (स्त्री०) - प्याला, पानी  
पीने का बर्तन । [यण ।

कौशिकात्मज (पु०) - अर्जुन का विशेष-

कौशिकाराति (पु०) - कौमा, काक ।

'कौशे[पि]य (न०) - रेशम, रेशमी कपड़ा ।  
वि० - रेशमी ।

कौशल्य (पु०) - जयोप्यापति ।

कौशल्य (स्त्री०) - दशरथ की यही  
रानी और राम की माता ।

कौशल्यनन्दन (पु०) - राम का वाचक ।

कौसीद्य (न०) - सुस्ती, सेनदेन का  
कारोवार ।

कौसुम (न०) - पराग, पुष्प की धूलि ।

कौस्तुभिक (पु०) - सादृश, ब्रह्माश, ठग ।  
कौस्तुभ (पु०) - समुद्रमन्थन के समय  
निकला हुआ रत्नविशेष ।

कौस्तुभवक्षः (पु०) - विष्णु का वाचक ।  
कृष् (१, १० प०) - मारना, नुक्सान  
पहुँचाना । [यन्त्र ।

ककच (पु०) - मारा, बड़ई का एक  
ककचपत्र (पु०) - तून का वृक्ष ।

ककचपाद [इ] (पु०) - ककलाच, करकेंटा  
ककचा (स्त्री०) - केतकवृक्ष ।

ककर (पु०) - गरीब आदमी, रोग, आरा ।  
कतु (पु०) - यज्ञ, विष्णु, प्रतिज्ञा,  
शक्ति, तरकीब, इच्छा, पराजिता,  
अर्चना, आवाड़नास ।

कतुदुह (पु०) - राक्षस, अक्षर ।

कतुद्विष् (पु०) - पूर्ववत् ।

कतुराज [ज] (पु०) - राजसूय यज्ञ ।

कप् (१ प०) - मारना, चोट लगाना ।

कपन (न०) - बघ, काटना ।

क-दु (१ प०) - रोना, चिल्लाना, आंसू  
बहाना, आर्त्तनाद करना ।

कन्दन (न०) - आर्त्तनाद, रोना, चिल्लाना -  
ना । पु० - चिल्ली ।

कन्दित (न०) - आर्त्तनाद, चिल्लाहट ।  
वि० - रोया हुआ, चिल्लाया हुआ ।

कप् (१ आ०) - दया करना, शोक कर-  
ना, इच्छा करना ।

कम् (४ प०, १ स०) - चलना, जाना,  
गुजरना, कदम आगे रखना,  
कूदना ।

कम (पु०) - सिलसिला, कदम, गमन,  
नियम, साधन, शक्ति, विष्णु ।

क्रमक ( वि० ) क्रमपूर्वक, सिलसिले  
घार, गतिशील ।

क्रमण ( न० )—चलना, आगे बढ़ना,  
बढ़ना, अतिक्रमण । पु०—पैर,  
घोड़ा ।

क्रमत ( अ० )—क्रमपूर्वक, रक्षा २ ।

क्रमगत ( पु० )—सिलसिले का टूट  
जाना, बेकायदगी ।

क्रमयोग ( पु० )—वाकायदा, सिल-  
सिला, तरतीब ।

क्रमश ( अ० )—सिलसिलेवार ।

क्रमिक ( वि० )—क्रमागत, सिलसिले  
वार ।

क्रमु ( पु० )—सुपारी, मद्रनोया ।

क्रमुक ( पु० )—पूर्वघत् ।

क्रमेल—व ( पु० )—ऊट, उल्ट ।

क्रम ( पु० )—दान देकर वस्तु लेना,  
खरीदना, खरीद ।

क्रमण ( न० )—पूर्वघत् ।

क्रमलैरप ( न० )—चैनाना, फरोखगी की  
दस्तावेज । [ दार ।

क्रमविक्रयिक ( पु० )—भीदागर, दूकान  
फविक ( पु० )—भीदागर खरीद करने  
वाला । [ कैलाई वस्तु ।

क्रमपि ( वि० )—चैवने के लिये दूकान पर  
ब्रह्म ( न० )—आम आम, बघा आम ।

क्रमपाद [ दृ ] ( पु० )—कथा भास खाने  
वाला, राक्षस, गिहू, घेर ।

पथित ( वि० )—दुपला किया हुआ,  
हीन ।

क्राकपि ( पु० )—आरा खींचनेवाला ।

क्रान्त ( पु० )—घोड़ा, बढ़ना । वि०—गया

हुआ, अतिक्रान्त, धीता हुआ ।

क्रान्तदर्शी ( वि० )—धीती घात के  
जानने वाला, सयंद्रष्टा ।

क्रान्ति ( स्त्री० )—आक्रमण, गमन,  
फदम, दवाना, आकाश की गोल  
रेखा जहाँ से सूर्य गति करता है ।

क्रा-स्तु ( पु० )—पक्षी, चिहिया ।

क्राय ( पु० )—धध, कल । [

क्रिचि=कृमि ।

क्रिमिशैल ( पु० )—धमी, वल्मीक ।

क्रिया ( स्त्री० )—कर्म, सम्पादन, काम,  
परिश्रम, शिक्षा, जमल, पूजा,  
उपाय, हलान करना ।

क्रियाकलाप ( पु० )—समस्त धार्मिक  
अनुष्ठान ।

क्रियापटु ( वि० )—कुशल, होशियार ।

क्रियापद ( न० )—धातु, उपसहार का  
तीसरा पाद ।

क्रियापद ( पु० )—उपसहार का तीसरा  
पाद [ मध्यम गवाह, दूसरा लक्ष्य  
और तीसरा किये गये दावे को  
पूरा करना ये उपसहार के तीन  
पाद कहलाते हैं । ]

क्रियालोप ( पु० )—धर्मानुष्ठान का त्याग ।

क्रियावादी ( पु० )—मुद्दह ।

क्रियाविशेषण ( न० )—अव्यय का एक  
भेद जिस को वाक्य में जोड़ देने  
से क्रिया के अर्थ में विशेषता  
आजारी है ।

क्रियासमिहार ( पु० )—किसी काम  
को बार २ करना ।

क्रो ( २ व० )—खरीदना, मोल लेना,  
खीदा करना । ।

क्रीड् (१५०)-खेलना, दिल बहलाना,  
जुआ खेलना, मजाक करना ।

क्रीडक(पु०)-खिलाडी, दरवान ।

क्रीडन (न०)-खेल, दिलबहलाव,  
खिलौना । [ की वस्तु ।

क्रीडनक( अस्त्री० )-खिलौना, खेलने

क्रीडा ( स्त्री० )-खेल, दिलबहलाव,  
मजाक ।

क्रीडाकानन ( न० )-बगीचा, दिल  
बहलाने का स्थान, क्रीडामूनि ।

क्रीडामन्दिर (न०)-दिलबहलाने का  
स्थान ।

क्रीडानारी(स्त्री०)-वेश्या ।

क्रीडावन=क्रीडाकानन ।

क्रीडास्थल(न०)-पूर्ववत् ।

क्रीत(वि०)-खरीदा हुआ । पु०-१२  
प्रकार के पुत्रभेदों में से एक ।

क्रीतक(पु०)-खरीदा हुआ पुत्र ।

क्रुध् (१५०)-टेंड़ा करना, टेंड़ा होना,  
कम करना, पहुंचना ।

क्रुध्(पु०)-बीणाभेद, क्रीडनामक पर्यंत ।

क्रुड् (६५०)-डूटना, गीता लगाना ।

क्रुप् (९५०)-मारना, फटल करना ।

क्रुट् ( वि० )-क्रोधित, कोपाविष्ट,  
खूँखवार ।

क्रुध् (४५०)-क्रोध में भरना, गुस्सा  
करना । स्त्री०-क्रोध । [ उठाना ।

क्रुन्ध् (९५०)-आलिंगन करना, कट

क्रुश् (१५०)-चिल्लाना, रज करना,  
पुकारना ।

क्रुषवन् (पु०)-गीदह । [ या हुआ ।

क्रुष्ट (वि०)-चिल्लाया हुआ, घुछा-

क्रूर ( वि० )-सख्त, कठोर, योगहन,  
निर्दय, गर्म । अस्त्री०-भात ।

पु०-बाज, ककपत्नी । न०-घाव,  
वध, भयानक काम । [ रावी ।

क्रूरकर्म (न०)-भयङ्कर काम, खूनखून-  
क्रूरगन्ध (पु०)-गन्धक ।

क्रूरप्रकृति(वि०)-कुटिल प्रकृतिवाला ।

क्रैजि-णी ( स्त्री० )-खरीद, मोल  
लेना ।

क्रैता ( पु० )-खरीद करने वाला,  
मोल लेने वाला ।

क्रैप (वि०)-मोल लेने योग्य ।

क्रोड् (पु०)-गोद, अक, सूअर, छाती ।

क्रोडपत्र ( न० )-पत्र वा अङ्गवार में  
धातु में बड़ाया जाने वाला छेद,

सल्लीमेवट ।

क्रोध ( पु० )-गुस्सा, कोप, दूसरे के  
अपकार को चाहना ।

क्रोधकृत् (वि०)-कोपाविष्ट, क्रोधी ।

क्रोधज ( पु० )-क्रोध से उत्पन्न होने  
वाले आठ मगोधिकार जैसे चुग-

छत्तरी, ईर्ष्यादि ।

क्रोधन (वि०)-क्रोधयुक्त, गुस्सेवाला ।

पु०-कौशिक के एक पुत्र का नाम ।  
न०-क्रोध ।

क्रोधनीय (वि०)-क्रोध उत्पन्न करने  
वाला, महकाने वाला ।

क्रोधातु(वि०)-कोपाविष्ट, क्रोधयुक्त ।

क्रोधी ( वि० )-क्रोध में भरा हुआ ।

पु०-कुत्ता, भैंसा ।

क्रोश ( पु० )-चिल्लाहट, एक कोश,  
योजन का चौथाई भाग ।

क्रीष्टु (पु०)-गीदह ।

क्रीशु (पु०)-एक पर्वत का नाम, एक राक्षस का नाम; कुई, कुञ्जपत्नी ।

क्रीश्वदारक-ण ( पु० )-कान्तिकेय, परशुराम । [ डंढी ।

क्रीश्वान ( न० )-सृणाल; कमल की

क्रीर्य ( न० )-क्षूरता, नयंकरता ।

क्लान्द ( १५० )-पुकारना, चिल्लाना, शोक करना, रोना ।

क्लम् ( १, ४५० )-चकना, दुःख मानना ।

क्लम-मयु ( पु० )-चकान, चकावट ।

क्लान्त ( वि० )-थका हुआ, मुरकाया हुआ, दुबला, पतला, उदास ।

क्लान्ति ( स्त्री० )-थकावट ।

क्लान्तिक्लिद् ( वि० )-थकावट उतारने वाला, क्लान्ति दूर करने वाला ।

क्लिद् ( ४५० )-तर होना, गीला होना, नम होना ।

क्लिद् ( १८० )-शोक करना ।

क्लिन्न ( वि० )-गीला, तर, नम ।

क्लिन्मद् ( वि० )-नर्मदिल ।

क्लिश् ( ४५० )-क्लेश मानना, दुःख सहना, दिक् करना । ( ८५० )-

घरदाश्त करना, दिक् करना, क्लेश पहुंचाना ।

क्लिथित ( वि० )-दुःखी, क्लेशित, मुर्काया हुआ, थका हुआ, सत, कठिन ।

क्लिष्ट ( वि० )-पूयंयत् ।

क्लिष्टि ( स्त्री० )-दुःख, कष्ट, मेधा ।

क्लीय ( १५० )-नपुंसक होना, सादा यगना ।

क्लीय-व ( नस्त्री० )-नपुंसक आदमी,

हीनडा, नपुंसकलिंग । वि०-नपुंसक, कमजोर, भयभीत, कमजोर-दिल, कमीना, सुस्त, कापुश्य ।

क्लेद ( पु० )-तरी, नमी, घहाव, उपद्रव ।

क्लेदन ( पु० )-कफ दोष । न०- तर करना, मिगोना ।

क्लेदु ( पु० )-चन्द्रमा, शरीररूप तीनों दोषों का विकार, चन्निपात ।

क्लेश ( १५० )-रोकना, मारना, दुःख देना ।

क्लेश ( पु० )-दुःख, तकलीफ, बिन्ता ।

क्लेशक ( वि० )-कष्टदायक, दुःखदायक ।

क्लेशकर-कारक ( वि० )-कष्टदायक, दुःखदायक ।

क्लेशित ( वि० )-दुःखी, सन्तप्त ।

क्लेद्य-व्य ( न० )-नपुंसकता, कायरता, शक्तिहीनता ।

क्लोम ( न० )-फेफड़ा, मसाना ।

क्ल ( अ० )-किधर, कहा ।

क्लित-चन ( अ० )-पूयंयत् ।

क्लश ( १५० )-अरुण्ट ध्वनि करना ।

क्लण-क्लाण्य ( पु० )-ध्वनिनात्र, बाजे की गाम्वाज ।

क्लय ( १५० )-काढ़ा निकालना, पकाना ।

क्लप-क्लाप ( पु० )-काढ़ा, धीमी अग्नि से बहुत देर तक पका कर रस निकालना । [ पकाया हुआ ।

क्लपित ( वि० )-काढ़ा किया हुआ, क्लृ ( १५० )-हिलना, हरकत करना ।

क्ल ( पु० )-नाश, अभाव, किसान, राक्षस, विष्णु का शीघा अवतार,

विगली, खेत ।

क्षण(कच०)-मारना, मुक्कसान पहुँचाना,  
घायल करना, तोड़ना ।

क्षण(अस्त्री०)-पल, लहमा, सेकियह  
का चतुःपञ्चमांश, अवसर,  
फुरसत, उत्सव, सेवा, केन्द्र ।

क्षणतु(पु०)-जड़म, घाव ।

क्षणद(पु०)-अपोतिपी । न०-जल, रात  
का अन्धेरा ।

क्षणदा(स्त्री०)-रात्रि, रात ।

क्षणद्युति(स्त्री०)-विजली ।

क्षणम(न०)-यघ, घाव करना ।

क्षणमयुर (वि०)-क्षणिक, नाशवान्,  
अनित्य ।

क्षणमात्रभू(ज०)-लहमे भरके लिये ।

क्षणविष्यसी[न](वि०)-क्षणभगुर ।

क्षणिक(वि०)-दम भर का, एक क्षण  
का, अस्थायी, अनित्य ।

क्षणिका(स्त्री०)विजली, विद्युत् ।

क्षणिनी(स्त्री०)-रात्रि, रात ।

क्षत्त(स्त्री०)-घभ, हानि, चीट, काटना ।

• क्षत्त (वि०)-जड़गी, हानि पहुँचाया  
हुआ, फाटा हुआ, काड़ा हुआ,  
तोड़ा हुआ । न०-जड़म, चीट,  
चिाँट, खतरा ।

क्षत्तन(न०)-रक्त, रूग, राध ।

क्षत्तयोनि(स्त्री०) ऐसी स्त्री जो क्वारी  
न हो अपांत जिस का पुरुष के  
साथ सुनायग होगया हो ।

क्षत्तयिक्त (वि०)-घायल, अनेक  
स्थान पर क्षतमी ।

क्षति(स्त्री०)-हानि, घाव, भाँस, बर्-  
बादी, भयःपात, फाटना, फाड़ना ।

क्षत्र ( अस्त्री० )-राज्य, आधिपत्य,  
अधिकार, शक्ति, योद्धा, सिपाही ।

क्षत्रधर्म(पु०)-बहादुरी, क्षीत्रोपेशा,  
क्षत्रिय का कर्तव्य ।

क्षत्रप(पु०)-गवर्नर, शासक, वाइस-  
राय, प्रतिनिधि । [ योद्धा ।

क्षत्रिय(पु०)-द्वितीय वर्ण का पुरुष,  
क्षत्रियका-या(स्त्री०)-क्षत्रिय की स्त्री,  
क्षत्रियाणी । [ वाचक ।

क्षत्रियहम-ण ( पु० )-परशुराम का  
क्षत्रियाणी ( स्त्री० )-क्षत्रियजाति की  
स्त्री, क्षत्रिय की पत्नी ।

क्षत्रिपी(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

क्षत्री ( स्त्री० )-क्षत्रियवर्ण की स्त्री,  
क्षत्रपद, घन, शरीर, जल ।

क्षद्(१ आ०)-पीसना, [चिदमै]काटना;  
मारना, खाना, रक्षा करना ।

क्षद्[न](न०)-जल, भोजन ।

क्षन्तव्य (वि०)-क्षमा करने योग्य,  
सहन करने योग्य ।

क्षन्ता[व] (वि०)-साक्षिर, सहन करने  
वाला, क्षमा करने वाला ।

क्षप्(१ व०)-दपवाच करना, फाँका  
करना ।

क्षप(पु०)-जल, पानी, तोय ।

क्षपण (पु०)-बौद्धसाधु । न०-अश्वीच,  
अपवित्रता, नाश ।

क्षपणन(पु०)-बौद्ध वा लैनसाधु ।

क्षपणी ( स्त्री० )-जाल, नाच रुने  
की बल्ली ।

क्षपा(स्त्री०)-हल्दी, रात्रि ।

क्षपाट(पु०)-निशाचर, राक्षस ।

क्षपानाथ-कर(पु०)-चन्द्रमा, कर्पूर ।  
क्षम( ४ प०, १ आ० )-आज्ञा देना,  
वरदायक करना, माफ करना,  
रोकना, योग्य होना ।

क्षम(वि०)-साधिर, सतुष्ट, आछा-  
कारी, योग्य, शक्तिसम्पन्न,  
क्राविल । न०-बुद्ध, औचित्य,  
सपयुक्तता । पु०-शिव ।

क्षमणीय=क्षान्तव्य ।

क्षमा(स्त्री०)-सवर, वरदायक, मुआफी,  
पुष्पिणी, दुर्गा ।

क्षमाभुज(पु०)-राजा, शासक ।

क्षमान्वित(वि०)-क्षमा वाला, वरदायक  
करने वाला, माफी देने वाला ।

क्षमावान् युक्त(वि०)-पूर्ववत् ।

क्षमिता[तृ] ( वि० )-साधिर, योग्य,  
क्राविल, माफ करने वाला ।

क्षम(पु०)-हानि, नाश, संहता, कम  
होना, गिरावट, अन्त, प्रलय,

राजपक्षमा, घर, मकान, वश ।

क्षमकर-ह्वर(वि०)-नाश करने वाला,  
वरदायक करने वाला ।

क्षमण(न०)-घर, आवासस्थान । पु०-  
चन्द्रमाह, खाड़ी ।

क्षमण(पु०)-क्षयरोग, राजपक्षमा ।

क्षमण(पु०)-चन्द्रमास का क्षरणपक्ष ।

क्षयरोग(पु०)-राजपक्षमा ।

क्षमम्पद्(स्त्री०)-अत्यन्तमाश ।

क्षमी ( वि० )-क्षयरोग से पीड़ित,  
नाशवान्, दिन पर दिन घटने  
वाला । पु०-चन्द्रमा ।

क्षर(१प०)-क्षिप्ता, बाहर निकलना,

टपकना, घटना, गलट होना,  
पिघलना ।

क्षर(न०)-जल, शरीर, अज्ञान, परब्रह्म ।  
पु०-यादत, मेघ । वि०-घटने वाला,  
नाशवान् ।

क्षरण(न०)-टपकना, नूना, गसीना आना ।  
क्षरित(वि०)-टपका हुआ, गिरा हुआ,  
गला हुआ ।

क्षरी [न.] (पु०)-वर्षा ऋतु । [मिटाना ।

क्षन् (१० उ०)-साफ करना, धोना, धोकर

क्षय (पु०)-छोँक कर, घाँसी ।

क्षययु (पु०)-छोँक, नाक साफ करना, गले  
की पराश ।

क्षत्र(न०)-क्षत्रियवर्ण क्षत्रिय के लक्षण  
वि०-क्षत्रियसम्बन्धी, क्षत्रिय जाति का

क्षत्रि (पु०)-क्षत्रियभिन्न माता से  
उत्पन्न पुत्र ।

क्षान्त ( वि० )-क्षमा किया गया, वर-  
दायक किया हुआ, सन्तोषयुक्त ।  
पु०-शिव ।

क्षान्ता (स्त्री०)-क्षमा, सवर, वरदायक ।

क्षान्तु (पु०)-पिता, क्षमा करने वाला ।

क्षाम (पु०)-निष्ण । वि०-छोटा, कमजोर,  
• दुर्बल शीघ्र ।

क्षार (पु०)-रस, खार, कपफा, कंघ, नमर,  
राख, ठग, लपटो । वि०-पारा । न०-  
काला नमक, जरा ।

क्षारक (पु०)-सुहाना, धोयाँ, पिजरा,  
कला, कलिया ।

क्षारभूमि(स्त्री०)-खारी जमीन, समुद्र  
के निकट की भूमि ।

क्षारभूमिका(स्त्री०)-खारी मिट्टी ।

क्षारुका(स्त्री०)-भूख, लुधा ।

क्षारित(वि०)-बदनाम किया हुआ,  
खारदार मिट्टी से निकला हुआ ।



झालन( न० )--घोना, साफ करना, छिड़कना । [ किया हुआ ।

झालित( वि० )--घोया हुआ, साफ सि (१५०)--नष्ट होना, सड़ना, हफ्त मत करना, बरखाद करना, घटना, मारना, खर्च करना, बसना ।

झि ( स्त्री० )--निवासस्थान, गमन, नाश, क्षय होना ।

झिण् ( ५३० )--मारना, चोट करना ।

झित ( वि० )--नष्ट, कमजोर, गरीब, दुःखी । न०--यथ, चोट ।

झिता ( स्त्री० )--पृथिवी, भूमि ।

झिति ( स्त्री० )--पृथिवी, घर, आवासस्थान, प्रलय, नाश ।

झितिकम्प ( पु० )--धूल, झाक ।

झितिकम्प ( पु० )--भूकम्प, भूचाल ।

झितिक्षिप् ( पु० )--राजा, शासक, हाकिम ।

झितिज ( पु० )--वृत्त, मंगल ।

झितितज ( न० )--पृथ्वीतल, जमीन की सतह ।

झितिदेव ( पु० )--भूदेव, ब्राह्मण ।

झितिधर ( पु० )--परंत, पहाड़ ।

झितिनाथ-भुज्( पु० )--राजा, हाकिम, शासक ।

झितिप-पति-पाल( पु० )--पूर्वपति ।

झितिपुत्र( पु० )--नरकासुर, मंगल ग्रह ।

झितिभूत( पु० )--पर्वत, पहाड़ ।

झितिरन्ध्र( न० )--खार्दे, गड्ढा ।

झितिरुह ( पु० )--वृक्ष, पेड़ ।

झितिवर्षन( पु० )--शव, मुदां, मृतदेह ।

झित्वन् ( पु० )--वायु, मरुत ।

झिद्र ( पु० )--मूर्ध, सूरज, शक्ति, शक्ति, रोग ।

क्षिप्(इ३०)--फेंकना, भेजना, त्यागना, तोड़ना, रखना, झालना, अपमान करना ।

क्षिप( पु० )--त्याग, अपमान, फेंकना ।

क्षिपक ( पु० )--योद्धा, तीरन्दाज ।

क्षिपण( न० )--प्रेषण, फेंकना, झालना, निन्दा ।

क्षिपणि( पु० )--घायुक लगाना । स्त्री०--जाळ, हथियार, बरुही, पुरोहित ।

क्षिपणी( स्त्री० )--क्षिपणि[ स्त्रीलिङ्ग में ]

क्षिपणु ( पु० )--तीरन्दाज, हथियार, घायु ।

क्षिपा( स्त्री० )--रात्रि, प्रेषण, फेंकना ।

क्षिप्त( वि० )--फेंका हुआ, त्यागा हुआ, पागल, अपमानित, न्यस्त । न०--गोली का जखम ।

क्षिप्तचित्त( वि० )--ठपाकुल, विभिन्नमना ।

क्षिप्ता( स्त्री० )--रात्रि, रात । [ प्रेषण ।

क्षिमि( स्त्री० )--पहेली यताना, फेंकना, क्षिप्र ( न० )--मुहूर्त का १ घटा १५वां भाग, वालिशत । वि०--तीव्र, शीघ्र-गामी, झूठ जाने वाला ।

क्षिप्रकारी[ न् ] ( वि० )--पाछाफ, जल्दी काम करने वाला । [ पूर्वक ।

क्षिप्रम्( न० )--नेज़ी से, फौरन, शीघ्रता-

क्षिप्रपाकी [ न् ] ( वि० )--जल्दी पकाने वाला । [ पड़ुपाना ।

क्षी( १३० )--मारना, कत्ल करना, चोट

क्षीज्( १५० )--अस्फुटप्वनि निकालना ।

क्षीक( वि० )--पतला, दुमला, कमजोर, गरीब, शक्तिहीन, कम हुआ,

नाजुरु, खर्च किया हुआ, मृत,  
क्षत । [ वाला ।

श्रीणधन(वि०)-अमीर से गरीब होने

श्रीणधन(वि०)-श्रीणधन, जिस का  
यल घट गया हो ।

श्रीर(अस्त्री०)-दूध, पानी ।

श्रीरकट(पु०)-दूध पीने वाला बच्चा ।

श्रीरदुम(पु०)-घटबूझ । [ दया ।

श्रीरधानी(स्त्री०)-दूध पिलाने वाली

श्रीरनिधि(पु०)-दूध का समुद्र ।

श्रीरप(पु०)-बच्चा, दूधमु हा बालक ।

श्रीरशक्ति(स्त्री०)-कटा हुआ दूध ।

श्रीरशर(पु०)-मलाई ।

श्रीरसमुद्र(पु०)-दूध का समुद्र ।

श्रीरसार(पु०)-नक्कन, घी, घृत ।

श्रीरस्वामी ( पु० )-अनरकोप का एक  
टीकाकार ।

श्रीरी (वि०)-दूध देने वाला । पु०-

आक, पिलवन, गूलर ।

श्रीरीद(पु०)-श्रीरसमुद्र ।

श्रीरीदतनय(पु०)-चन्द्रना ।

श्रीरीदतुता (स्त्री०)-लक्ष्मी, श्रीरीदतनया  
श्रीप [ प ] ( १, ४ प० )-मत्त होना, शराय  
पीना, थकना ।

श्रीय (वि०)-मदमस्त, मड़का हुआ ।

श्री ( २ प० )-टीक लेना, खजाना ।

श्रीण ( वि० )-पिसा हुआ, अभ्यसित,  
दुबड़े २ किया हुआ, चूर्णित, परास्त ।

श्रीणमना. (वि०)-दशाकुल, उद्विग्नमना ।

श्रीद (स्त्री०) टीक, भूषण, सुधा ।

श्रीद ( ७३० )-बुचलना, पैरन बोले दशना,  
पासना । [ अनाज ।

श्री ( वि० ) आटा, मैदा, पिसा हुआ

श्रीद (वि०)-छोटा, कमीना, भ्रू, गरीब,  
कंजूस, नाचीज़, निर्दय । पु०- ततैया,  
मक्खी, हटा हुआ चावल ।

श्रीदजन्तु (पु०)-छोटा जानवर ।

श्रीदता ( स्त्री० )-नीचता, छोटापन,  
शोकापन ।

श्रीदवृद्धि (वि०)-नीचमन, कमीना ।

श्रीदा (स्त्री०)-मधुमक्खी, मक्खी, नग  
काल् स्त्री, वेश्या ।

श्रीदाशय ( वि० )-गोले मन वाला,  
तनदिल । [ इच्छा होना ।

श्रीप ( ४५० )-भूख लगना, भोजन की

श्रीपा ( स्त्री० )-भूख, खाद्य पदार्थ,  
भुक्षता । [ इसी अर्थ में सुद्ध भी

यनता है । ] [ पीड़ित ।

श्रीपान्वित ( वि० )-भूखा, भूख से

श्रीपार्श्व (वि०)-पूर्ववत् ।

श्रीपालु-धित (वि०)-पूर्ववत् ।

श्रीधुन (पु०)-स्लेच्छ, राक्षसजाति ।

श्रीप (पु०)-काढ़ी ।

श्रीपथ (वि०)-कम्पित, ठपाकुल, पथ-

हाया हुआ । पु०-मन्थनदण्ड,  
दूधमिलोने की रई ।

श्रीभू ( ४, ९ प०, १ आ० )-सकोप करना,  
सिकोहना, चलायमान होना,

सद्विग्न होना ।

श्रीभित (वि०)-कम्पित, सद्विग्न ।

श्रीमा ( स्त्री० )-अलसी, सन, नील  
रस । [ सीधना ।

श्री ( ६५० )-काटना, सुरचना, उकीर

श्री ( पु० )-सस्तरा, माछ मूँडने का  
यन्त्र, घाण, तीर, पशुओं का

सुर, गोसुर।

[सौर।

सुरकर्म (न०)—हजामत बनवाना,

सुरक्रिया (स्त्री०)—पूर्ववत्।

सुरधार (वि०)—उस्तरे के समान तेज।

सुरमर्दी [न.] (पु०)—नापित, नाई,

हजाम।

सुरमुखी [न.] (पु०)—पूर्ववत्।

सुरिका (स्त्री०)—छोटा उस्तरा, सुरी,

खंजर। [सुरी भी इसी अर्थ में

प्रयुक्त होती है]।

सुरिणी (स्त्री०)—नापितभायाँ,

नाई की स्त्री।

सुरी [न.] (पु०)—नाई, हजाम, पशु।

सुलल (वि०)—छोटा, हलका, लघु,

थोड़ा।

सुललक (वि०)—नाथीजू, दरिद्र,

हुंसी, कठोर, थोड़ी उन्न का,

कूर। [भाई अर्थात् घचा।

सुललतात (पु०)—पिता का छोटा

क्षेत्र (न०)—खेत, भूमि, जमीन, स्थान,

सीधे, झाड़ा, चयंराभूमि, चङ्ग-

गमस्थान, स्त्री, भायाँ, शरीर,

इन्द्रियसमूह, मन, घर, नगर।

क्षेत्रकर—कृत (पु०)—किसान।

क्षेत्रगणित (पु०)—रेखागणित, ज्यो-

मैट्री।

क्षेत्रज (पु०)—१२ प्रकार के पुत्रों में

से एक, अपनी स्त्री में नियोग

से उत्पन्न सन्तान।

क्षेत्रज्ञ (वि०)—चतुर, कुशल। पु०—

आत्मा, किसान, साक्षी, परमात्मा।

क्षेत्रपति (पु०)—जमींदार।

क्षेत्रपाल (पु०)—खेत का रखवाला,

शिव का वाचक।

क्षेत्रफल (न०)—क्षेत्र का परिमाण,

क्षेत्र की लम्बाई और चौड़ाई

को आपस में गुणन करने से जो

फल निकलता है, रकबा।

क्षेत्राजीव (पु०)—क्षेत्रकर।

क्षेत्रिक (पु०)—पति, किसान।

क्षेत्रिय (पु०)—असाध्य रोग, क्षेत्रज-

पुत्र। न०—चरानाह की घास।

क्षेत्री [न.] (पु०)—नियुक्त पति, किसान,

काश्तकार, आत्मा, परमात्मा।

क्षेप (पु०)—अपमान, निन्दा, प्रेषण,

देरी, लांघना।

क्षेपक (वि०)—झंकेनेवाला, भेजने वाला,

अपमानकारक। पु०—प्रक्षिप्तवाक्य,

ग्रन्थकर्ता के अतिरिक्त अन्य का

बढ़ाया हुआ पाठ।

क्षेपण (न०)—निन्दा, त्याग, प्रेषण,

खिताना, गुजारना।

क्षेपणिका (स्त्री०)—खेने की बल्ली,

नीकादण्ड, मछली पकड़ने का

जाल।

क्षेपणीय (वि०)—त्यागने योग्य।

क्षेपिष्ठ (वि०)—बहुत जल्दी जानेवाला।

क्षेम (अस्त्री०)—कुशल, राजीसुखी,

सेरोआस्थित, रक्षा, मुक्ति, सुनि-

याद, नक्षत्र, आरामगाह।

क्षेमकर—कार (वि०)—मंगल करने

वाला, शुभकारक।

क्षेमा (स्त्री०)—दुर्गा का वाचक।

क्षेमी [न.] (वि०)—रहित, सहज,

कुशलसम्पन्न।

[ क्षे ]

क्षे(१ प०)-घटना, कम होना, नष्ट होना । [ कृत ।

क्षेय(न०)-दुखलापन, नाश, मज्जा-

क्षेत्र(न०)-क्षेत्रसमूह ।

क्षेत्रज्ञ(न०)-अध्यात्मज्ञान ।

क्षेत्र(न०)-तेजी, जल्दी, शीघ्रता ।

क्षोणि[जी] (स्त्री०)-पृथ्वी, भूमि ।

क्षोद(पु०)-धूली, पूर्ण, खाक, पेपण ।

-क्षोदः[स] (न०)-जल, पानी, तोय ।

क्षोदित(न०)-चूर्ण, आटा । वि०-

पिचा हुआ, चूर्णित ।

क्षोभ(पु०)-व्याकुलता, उद्वेग, कम्प,

पथराहत, कांपना, भड़काव ।

क्षोभण(पु०)-कामदेव के पञ्चशरीं में से एक ।

क्षोभ(अस्त्री०)-अटारी, अटालिका ।

क्षीणीपति(पु०)-राजा ।

क्षीद्र(पु०)-चम्पकवृक्ष । न०-क्षुद्रता,

शहद, जल ।

क्षीद्रत(न०)-मीम ।

क्षीद्रधातु(पु०)-मासिक, शहद ।

क्षीद्रेप(न०)-मीम ।

क्षीम(अस्त्री०)-मम का यना हुआ

कपड़ा, अटालिका ।

क्षीर(न०)-दूधानत, घाल बनवाना ।

क्षीरि(पु०)-इज्जत, नाई ।

क्षु(२ प०)-तेज भरना, पथरी पर

लगाना ।

क्षमा(स्त्री०)-पृथ्वी ।

क्षमा(पु०)-मंगल ।

क्षमापति-भुज्(पु०)-राजा ।

क्षमाभूत(पु०)-राजा, पर्यंत, पहाड़ ।

हमाय्(१ आ०)-कांपना, हिलना ।

ह्विद्(१ प०)-कूजना, भिनभिनाना ।

ह्वेह(पु०)-आवाज, विष, त्याग ।

ह्वेहा(स्त्री०)-सिंह की गर्ज, सिंह

का दहाड़ना, बांस ।

ह्वेहित(अस्त्री०)-सिंहनाद, दहाड़ना

ह्वेल्(१ प०)-कूदना, खेलना, कांपना,

जाना ।

ह्वेला(स्त्री०)-खेल, उपहास, क्रीडा ।

## ख

ख (पु०)-सूर्य, सूरज । न०-आकाश,

स्वर्ग, शून्य, हिन्दु, ज्ञान,

ब्राह्मण, हर्ष, अनुस्वार ।

खख(१ प०)-हंसना, मजाक उड़ाना ।

खखट(न०)-चाक, खड़िया ।

खग(पु०)-सूर्य, पत्नी, वायु, पह, तीर,

देवता ।

खगपति(पु०)-गरुड ।

खगस्थान (न०)-पेड़ की खोखल,

चिड़िया का घोंसला ।

खगान्तक(पु०)-जंकपत्ती, बाज़ ।

खगेन्द्र-श्वर(पु०)-गरुड ।

खगोल(पु०)-ऊपर की ओर जो गोला-

कार आकाश दिखाई देता है ।

खट्टर (पु०)-केशगुच्छ, जुल्फ ।

खख(१० ठ०)-बांधना । (१, ८ प०)-

पवित्र करना, फिर से उत्पन्न

होना ।

खखनम(पु०)-खन्डमर, चांद ।

खख[खेखर] (पु०)-सूर्य, पत्नी, बादल,

वायु, रातस, गन्धर्व, पारा, पह ।

खचारी[न्](पु०)-स्कन्द का वाचक ।

खचित(वि०)-बधा हुआ, जुड़ा हुआ,

संयुक्त, बद्ध ।

खज्(१ प०)-बिलोना, उद्विग्न करना,  
आन्दोलित करना ।

खज(पु०)-मन्यमदयह, दूध बिलोने  
की रहै, चमचा करली ।

खजक(पु०)-मन्यमदयह ।

खजिका(स्त्री०)-चमचा, करली ।

खजप(न०)-घी, घृत ।

खजल(न०)-ओस, शयनम ।

खजाक(पु०)-पत्नी, परिन्द ।

खजाजिका(स्त्री०)-चमचा, करली ।

खज्योसिस्(पु०)-जुगनू, खद्योत ।

खज्ज्(१ प०)-लंगड़ाना ।

खज्ज(वि०)-लंगड़ा; लूला ।

खज्जन(पु०)-पतिभेद । न०-गमन,  
जाना; लंगड़ा कर चलना ।

खट्(१ प०)-इच्छा करना, चाहना ।

खट(पु०)-कफदीय, बलग्न, अन्धकूप,  
हल, तृण, मुद्दी ।

खटफ(पु०)-विवाह की जोड़तीड़  
लगाने वाला, मुक्का ।

खटखादक(पु०)-कौवा, जानवर,  
गोदह ।

खटिक(पु०)-आधा खन्द किया हुआ  
हाथ, टेढ़े हाथ वाला ।

खटिका(स्त्री०)-राहिया, चाक ।

खटिनी (स्त्री०)-पूर्ववत् [खटी भी  
इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है] ।

खट्(१०प०)-घेरा देना, दकना ।

खहन(पु०)-घीना, वामन ।

खहा ( स्त्री० )-खाट, चारपाई, तृण-  
भेद ।

खटिक(पु०)-खटीक, कसाई, शिकारी ।

खटिका ( स्त्री० )-छोटी चारपाई,  
खटोला ।

खटा (स्त्री०)-पलंग, सेज ।

खटाकु ( पु० )-महादेव का शस्त्र-  
विशेष, पीठ का बांध, दिछीप  
राजा ।

खटारुद ( वि० )-पलंग पर बैठे  
हुआ, छापरवाह, प्रमादी ।

खट् (१आ०)-तोड़ना, खण्ड २ करना,  
फाड़ना ।

खटिका[खटी](स्त्री०)-खड़िया मिट्टी ।

खटु-डू ( अक्की० )-जमाजा, मुर्दे की  
अर्धी ।

खट्ग (पु०)-तलवार, असि, नैंहे का  
सींग, नैंहा । न०-छोहा ।

खट्गकोश ( पु० )-म्यान, तलवार  
रखने का घर । [वाला ।

खट्गधर (पु०)-तलवार धारण करने  
खट्गपत्र (न०)-तलवार का फलका ।

खट्गपुत्रिका ( स्त्री० )-छुरी, छोटी  
तलवार

खट्गप्रहार (पु०)-तलवार की चोट ।

खट्गाघात(पु०)-तलवार का घाव ।

खट्गाधार(पु०)-म्यान ।

खट्गामिध(न०)-नैस का भांश ।

खट्गारीट(पु०)-ढाल, रत्ता का शस्त्र,  
विशेष ।

खट्गिक(पु०)-नैस के दूध की नलई,

तलवार धारण करने वाला,  
फ़साहे ।

खट्गी [न] (पु०)-जैहा, शिव, हचि-  
यारखन्द ।

खरह (१० पु०)-तोड़ना, टुकड़े २ करना,  
पूर्ण पराजय देना, निराश करना,  
घापा डालना ।

खरह (अस्त्री०)-टुकड़ा, तोड़ा हुआ  
भाग, अध्याय, परिच्छेद, खाह,  
गन्ने का विकार ।

खरहकप (स्त्री०)-छोटी फहानी ।

खरहकाठ (न०)-सेपटू के समान  
छोटा काठ ।

खरहधारा (स्त्री०)-झँघी, कर्तनी ।

खरहन (न०)-तोड़ना, काड़ना, तरदीद,  
नाश, घापा डालना, खासास्तगी ।

खरहनीय (वि०)-खरहन करने योग्य ।

खरहपरशु (पु०)-महादेव, परशुराम ।

[ खरहपर्शु भी इसी अर्थ में ] ।

खरहल (अस्त्री०)-टुकड़ा, भाग ।

खरहविकार (पु०)-झुंझ, खाह ।

खरहय (अ०)-टुकड़े २ करके ।

खरिहक (पु०)-छाह पकाने वाला ।

खरिहत (वि०)-काटा हुआ, तोड़ा  
हुआ, तरदीद किया हुआ, निराश ।

खरिहनी (स्त्री०)-पूखी, घरा ।

खरहीट (८ स०)=खरह ।

खरह्य (वि०)-खरहनीय, खरहन  
करने योग्य ।

खतमाल (पु०)-बादल, घूम ।

खतिलर (पु०)-सूर्य, खूर ।

खट् (१ पु०)-नारना, घात करना, मज-

बूत रहना, स्थिर होना ।

खदिर (पु०)-यक्षविशेष, रौर की  
छकड़ी, चन्द्रमा, इन्द्र का योधक ।

खदिरसार (पु०)-कतथा ।

खद्योत (पु०)-जुगनू, पटमीलना, सूर्य ।

खन (१ स०)-खोदना, गढ़ा करना, खोद  
कर खाली करना ।

खनक (पु०)-खान खोदने वाला, बूढ़ा,  
सुँघ लगाने वाला, खान । वि०-  
खोदने वाला ।

खनक (न०)-खोदना, गाड़ना । [खान ।

खनि-नी (स्त्री०)-नार, गुफा, कान,

खनिता [त] (वि०)-खोदने वाला ।

खनित्र (न०)-खोदने का हथियार,  
कसला ।

खपराग (पु०)-अम्पेरा, अम्पेर ।

खपूर (पु०)-झुपारी का वृक्ष ।

खर (पु०)-गधा, खिखर, कौआ, बर्क,  
अमृद, एक राक्षस का नाम जो  
रात्रण का भाई था । वि०-कटोर,  
हानिकर, तेज धार वाला ।

खरकुटी (स्त्री०)-इज्जत की दूकान,  
गदंभशाला ।

खरदह (न०)-कमल, कवल ।

खरदूषण (पु०)-धतूरा, खर और दूषण  
नाम के प्रसिद्ध राक्षस के दो  
भाई, जिन्हें पञ्चवटी में श्रीराम  
ने मारा था ।

खरगाद (पु०)-नखे का रेंकना ।

खरांशु (पु०)-सूर्य, भास्कर ।

खरालिक (पु०)-हज्जाम, तकिया,  
छीहवाण ।

खरी(स्त्री०)-गधी, गदमी ।  
खरु(पु०)-घोड़ा, दात, कामदेव,  
शिष, अहंकार । वि०-मूर्ध, नादान, क्रूर सफेद ।

खर्ज(१ पु०)-कष्ट देना, पूजा करना, साज करना ।

खर्जन(न०)-खुजली करना, खुजलाना ।

खर्जु-जु(स्त्री०)-खारिश, साज, खजूर का पेड़, धतूरा, कीटविशेष ।

खर्जुन(पु०)-धतूरा, आम का पेड़ ।

खर्जु [जु] र (न०)-चादी ।

खर्जूर(पु०) खजूरवृक्ष, बिछलू । न०-चादी, हरताल, खजूरफल ।

खर्जूरफ(पु०)-बिछलू ।

खड़(१ पु०)-काटना, डक मारना ।

खपर(पु०)-धीर, ठग, भीख मागने का पात्र, धूर्त, खोपड़ी, उभरी ।

खर्च(१ पु०)-जाना, घमसह करना ।

खर्च[र्च] (वि०)-धीना, वामन, अधूरा ।

अस्त्री०-१०००००००००० इतनी ।

खसपा का बोधक ।

खर्चट(अस्त्री०)-पर्यंत की तराई का थान, मगही, ऐसा ग्राम जिस में पीठ लगती हो ।

खर्चु[र्चु]न(न०)-खर्बूजा ।

खल्(१ पु०)-हिलना, झकड़ा करना ।

खल(पु०)-धूर्त, क्रूर, शठ, सूर्य ।

अस्त्री०-पृषिधी, भूमि, स्थान, घड़ी, लड़ाई, युद्ध ।

खलति(वि०)-गजा ।

खलतिव(पु०)-पर्वत ।

खलि-ली(स्त्री०)-खल, सरसो वा

तिलो का वह अंश जो तेल निकलने पर शेष रह जाता है ।  
खलि [ली] न (अस्त्री०)-लगाम का छोड़ा ।

खलु(अ०)-निश्चय, प्रश्न, निषेध, इच्छा, प्रार्थना, विनय आदि अर्थों का बोधक, निश्चय करके ।

खलूरिका(स्त्री०)-बादमारी की जगह, शस्त्राभ्यास करने का स्थान ।

खस्या(स्त्री०)-धान्य नलने के स्थान का समूह, पैर, पैरी ।

खल्ल (पु०)-खरलनामक औषध पीसने का पात्र, चातक पत्नी, धानी भरने का बमड़े का नयक, मरली ।

खल्लिट(वि०)-गजा, खलति ।

खल्लाट(वि०)-पूर्ववत् ।

खश(पु०)-देशभेद, हिमालय के पास का देश ।

खशरीर(न०)-स्वर्गीय देह ।

खश्वास(पु०)-धायु, हवा ।

खप्(१ पु०)-मारना, नुकसान पहुंचाना ।

खप्प(पु०)-क्रोध, क्रूरता ।

खस(पु०)-साज, सारिस । [भेद ।

खसतिल रुख(पु०)-पोस्त नामक वृक्ष-

खस्खसरस (पु०) अहिर्नेल, अफीम ।

खानिक(पु०) मुना हुआ जनाज ।

खाद्(अ०)-खकार खकार ।

खाट टि (पु०)-मृतक के लेजाने की चारपाई, जनाजा ।

खाटा टिका(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

खाण्डय (न०)-एक प्राचीन वन का

भास लो वतंभास देहली के भास  
पास था :

खात(वि०)--खोदा हुआ, काटा हुआ,  
छेदा हुआ । न०--खाई, गार, मूराख  
खातक(न०)--खाई । पु० खोदने वाला,  
अधमर्श ।

खाति(स्त्री०)--खोदना, गढ़ा यमाना ।

खात्र(न०)--कसला, तागा, जगल ।

खाद् (१ प०)--खाना, भक्षण करना,  
कुत्तरना ।

खाद(पु०)--चर्वण, भक्षण, भोजन ।

खादक(पु०)--खाने वाला, भक्षक, अध-  
मर्श । वि०--भक्षण करने वाला ।

खादन(पु०)--दात, दन्त । न०--भोजन,  
चर्वण ।

खादिर ( पु०)--कट्या ।

खादुक(वि०)--कुरप्रकृति ।

खादा(न०)--भोजन, खाने योग्य पदार्थ  
वि०--भक्षण करने योग्य ।

खान(न०)--लुकवान, खोदना ।

खानक(वि०)--खान खोदने वाला ।

खानि (स्त्री०)--खान, फान ।

खानिल ( पु० )--घर में खेप लगाने  
वाला, चौर । [ माण ।

खार-रि(पु०)--मोछह द्रोण का परि-

राक्षार ( पु० )--खरनाद, गधे का रेंकना ।

खारा ( स्त्री० )--वेतायुग ।

खिदि ( पु० )--लोमड़ी ।

खिगिर ( पु० )--लोमड़ी, चारपाई का पाया ।

खिद् ( १ प० )--छरना, छराना ।

खिद् ( ४ ७ आ० )--दुग्धो होना, कष्ट  
उठाना । ( ६ प० )--दुःख देना, दुवाना ।

खिदिर ( पु० )--तपस्वी, दक्षिण इन्द्र चन्द्र ।

खिद्र ( पु० )--इन्द्रि, रोम ।

खिन्न ( वि० )--यका हुआ, उदासीन, जिस  
का चेहरा उतर गया हो ।

खिल ( अस्त्री० )--रिक्तस्थान, बाद में  
बढ़ाया हुआ अंश, अंगल, पंजरमूमि ।

खु ( १ आ० )--आवाज़ करना ।

खुर ( १ प० )--खूटना, खुपना ।

खुर ( ६ प० )--काटना, धिरोट करना,  
टुकड़े २ करना ।

खुर ( पु० )--गन्धविशेष, उत्तरा, चारपाई  
का पाया, पशु का खुर ।

खुरखत ( वि० )--चपटी नोक वाला ।

खुज्जी ( स्त्री० )--चांदमादी ।

खुपक ( पु० ) पशु, जानवर ।

खुरमात ( पु० ) पक्षी लगाना ।

खुद् ( १ आ० )--खेडना ।

खुल्ल ( वि० )--छोटा, नीच, खुद्र ।

खुल्लम ( पु० )--सहक रास्ता ।

खेवर--खपर ।

खेद् ( १० प० )--खाना, खूब करना ।

खेट ( भस्त्री० )--शिकार, मृगया, डाल ।  
पु०--गाव, छोटी भस्ती, कफरीय,  
घाहा । न०--तृण, घमहा, त्वषा ।

खेटक ( भस्त्री० )--घुलरास का दण्ड,  
डाल । पु०--बहुत छोटा प्राण,  
पल्लो ।

खेटी[न] ( पु० )--बहरी, नागरिक ।

खेटिलम ( पु० )--वैतालिक ।

खेद ( पु० )--दुःख, कष्ट, चढ़ाणी,  
पतन, रोम ।

खेदन ( न० )--पुन्यवत् ।

खेदित ( वि० )--दुःखी, सन्तप्त स्तेथि ।



खेय ( वि० )-खोदने लायक । न०-  
परिखा, खाई ।

खेल् ( १ प० )-खेलना, क्रीडा करना,  
आने पीछे हरकत करना ।

खेलन ( न० )-खेल, दिलवहलाव,  
हरकत, दृश्य ।

खेला ( स्त्री० )-पूर्ववत् । [ करना ।

खेव् ( १ आ० )-सेवा करना, सेवकाई  
खेसर ( पु० )-विचर ।

खोट ( १ प० )-लंगड़ा कर चलना ।

खोटि ( स्त्री० )-चालाक स्त्री ।

खोर ( वि० )-लंगड़ा ।

खोल ( न० )-कलगी, उठा हुआ टोपी  
का भाग । वि०-लंगड़ा ।

खोलक ( पु० )-कलगी, घर्तन, घनी ।

खपा ( २ प० )-कहना, यथ पाना, घात  
कराना ।

ख्यात ( वि० )-ज्ञात, प्रसिद्ध, नशदूर,  
विदित । न०-घोषणा, प्रसिद्धि ।

ख्याति ( स्त्री० )-यश, शोहरत, नाम,  
तारीफ़, प्रसिद्धि ।

ख्यातिकर ( वि० )-यथदेने वाला, नश-  
दूर करने वाला ।

ख्यापक ( वि० )-पूर्ववत् ।

ख्यापन ( न० )-घोषणा, प्रकाशन, घात  
कराना, प्रसिद्धि देना ।

## ग

ग ( वि० )-जाने वाला, गतिशील,  
स्थिर [ इन अर्थों में सदा समास  
के अन्त में प्रयुक्त होता है ] ।

गु०-गन्धर्व, गणेश का पात्रक ।  
न०-गीत ।

गयन ( न० )-भाकाश, शून्य, स्वर्ग ।

गगन [ ने ] घर ( पु० )-पत्नी, बादल,  
मेघ, ग्रह, तारा, राशिचक्र ।

गगनचक्र ( पु० )-सूरज, भास्कर, बादल ।

गग् ( १ प० )-हसना, मजाक उठाना ।

गगा ( स्त्री० )-गंगा नामक प्रसिद्ध नदी,  
दुर्गा, हिमालय की बड़ी पुत्री ।

गंगाका-गंगिका ( स्त्री० )-पूर्ववत् ।

गगाक्ष ( पु० )-भीष्म पितामह, कार्तिकेय  
गगाद्वार ( न० )-दरद्वार ।

गगाघर ( पु० )-शिव, समुद्र ।

गगापुन ( पु० )-भीष्म, कार्तिकेय, गंगा-  
तीर्थों पर रहने वाले पण्डे जो  
यात्रियों की तीर्थकर्म में सहायता  
देते हैं ।

गगालहरी ( स्त्री० )-जगन्नाथ पवित्र  
का खनाया हुआ एक स्तीत्र ।

गगल ( पु० )-घृत, घेहूँ, गणित का एक  
अक्षरेद । [ आवाज़ करना ।

गज ( १ प० )-नस्त होना, गर्जना, घोरना,  
गज ( पु० )-हाथी, हस्ती, आठ की

सख्या, एक गज, ३६ इंच की माप,  
एक दैत्य जिसे शिव ने मारा था ।

गजगति ( स्त्री० )-हाथी के सम्मान  
शानदार चाल ।

गजगामिनी ( स्त्री० )-हस्ती के समान  
चाल वाली स्त्री ।

गजता ( स्त्री० )-हस्तिमुख ।

गजदंत ( पु० )-हाथीदांत, सूटी, गुणेश  
का घोषक ।

गजपति(पु०)-सर्वश्रेष्ठ हाथी, हाथियों का स्वामी ।

गजपुर(न०)-हस्तिनापुर ।

गजयन्धनी-न्धिनी(स्त्री०)-हाथीखाना

गजमहापा-वल्लभा(स्त्री०)-गजलकीचूत

गजमाचल(पु०)-शेर, सिंह, केसरी ।

गजमुख-वदन(पु०)-गणेश का वाचक ।

गजयूथ(न०)-हस्तिसमूह ।

गजराज(पु०)-श्रेष्ठ या सर्वोत्तम हाथी ।

गजमाह्वय(न०)-हस्तिनापुर का नाम

गजस्नान (न०)-निरर्थक कार्य, बेसूद काम । [वान् ।

गजाजीव (वि०)-हस्तिपालक, हाथी-

गजानन(पु०)-गणेश ।

गजारोह(पु०)-हाथीवान्, हस्तिपक ।

गजेन्द्र (पु०)-ऐरावत हाथी, सर्वश्रेष्ठ हस्ती ।

गंग ( पु० )-स्रजाना, खान, सगही, अपमान, मोथाछा । न०- खनि, घनागार ।

गंगा(स्त्री०)-खान, रत्नखनि, सराय, भाँपड़ा, पीने का पात्र, मद्योपण ।

गंगिका ( स्त्री० )-सराय, कलाल की दुकान । [ खीचना ।

गह ( १ पु० )-बाहर गिकाखमा, अर्क गह(पु०)-गार्द, परिखा, रोक, बाड़ा, परदा ।

गहयन्त(पु०)-पादन, जेप ।

गहि (पु०)-गलिपा घैल, सुस्त घैल ।

गह (पु०)-दुह, पृथ, कुवड़ा आदमी ।

गहर (पु०)-मेप, भेद ।

गण (१०४०)-गिनना ।

गण ( पु० )-समूह, गिरोह, कक्षा, संख्या, गिनती, स्वादि आदि घातुओं के दश समूह, गणेश का शोधक, संगति, सेना का एक विशेषभाग जिसमें २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े और १३१ पैदल होते हैं, ज्योतिष में नक्षत्रविशेष ।

गणक (पु०)-ज्योतिषी, गणित का जानने वाला, दैवज्ञ ।

गणदेयताः ( स्त्री० बहु० )-आदित्य, शिवदेवा, तुषित आदि देव-साओं का समूह ।

गणद्वय (न०)-सर्वजनिक सम्पत्ति ।

गणधर (पु०)-किसी जाति या कक्षा का प्रधान, पाठशाला का मुख ।

गणन (न०)-गिनना, हिसाब, सोच-विचार ।

गणना (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

गणनाथ (पु०)-गणेश, शिव ।

गणनीय(वि०)-गिनने योग्य, इयाज करने योग्य ।

गणपति (पु०)-गणेश, शिव ।

गणपीठक (न०)-छाती, वस्त्ररूपल ।

गणभोजन (न०)-दायत मिलकर एक साथ खाना ।

गणि (स्त्री०)-गिनती, गणना ।

गणिका(स्त्री०)-दृष्टिहीन, अनेक प्रति वाली जथाँसू घेरमा, वाराङ्गमा ।

गणित (न०)-गिनना, हलमहिदस, दीनगणित, अकगणित और रेखा-

गणित आदि का समूह, गद्याल । वि०-गिना दुभा ।

गणिती [न] (पु०)—गणित निकालने वाला, हिसाबदां ।

गणेश(वि०)—गिनने लायक, गणनीय ।

गणेश (स्त्री०)—हथिनी, चेरया, चारनारी । पु०—कनेर का वृक्ष ।

गणेशका (स्त्री०)—कुटनी, नायका, दासी ।

गणेश(पु०)—परमात्मा, सर्वोत्तम देव, शिव तथा शिवपुत्र गजानन का शोषक ।

गरह (पु०)—गाल, कपोल, कुम्भ, घुलघुला, चिन्ह, गेंडा, चंदूकची, सूजन ।

गरहक (पु०)—गेंडा, जोड़, गांठ, चार फौड़ी अर्थात् गरहा, रुकावट ।

गरहकी (स्त्री०)—गेंडी, गंगा की एक सहायक नदी ।

गरहकीपुत्र (पु०)—शास्त्राग्राम नामक पत्थर । [गरहकीशिला भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होती है] ।

गरहदेश—प्रदेश (पु०)—गाल, कपोल ।

गरहनाला (स्त्री०)—एक रोगविशेष जिसमें गर्दन पर फोड़े निकलते हैं ।

गरहमूर्ख (वि०)—अत्यन्त मूर्ख ।

गरहशिला (स्त्री०)—बड़ी चट्टान ।

गरहस्थल (न०)—कपोल, गाल, हाथी का कुम्भ ।

गगिड (पु०)—पेड़ का तना ।

गगडीर (पु०)—घोहरा, यीर, बहादुर ।

गरहु—गहू (अकसी०)—गह्रा, तफिया, गांठ ।

गरहूल (वि०)—क्रुका हुआ, टेढ़ा ।

गरहूप(पु०)—हाथ की चंगली, हस्ति-शृण्ड की नोक, चुल्हू, इतना पानी जितना एक बार मुंह में आजावे ।

गत (वि०)—गया हुआ, गुजरा हुआ, मृत, समझा हुआ, गिरा हुआ । ग०—गति, घटना ।

गतक(न०)—हरकत, गति ।

गतकलम(वि०)—जिस का एकान्त चतर गया हो, तरीताजा ।

गतचेतन(वि०)—नूर्तिंत, बेखबर ।

गतप्राण(वि०)—जिस के प्राण निकल गये हों, मुर्दा ।

गतागत(न०)—जाना और आना, जा कर आया हुआ ।

गतानुगतिक(वि०)—अन्यविरवासी, दूसरों के पीछे चलने वाला ।

गतात्तया(स्त्री०)—घांभ स्त्री, धन्ध्या, बूढ़ी औरत ।

गति(स्त्री०)—जाना, गमन; ज्ञान, गमन और प्राप्ति इन तीन अर्थों का बोधक, दशा, यात्रा, उपाय, कर्मफल, युद्धि ।

गतिछा(स्त्री०)—नदी, क्रम, सिलसिला ।

गद् (१ पु०)—कहना, बोलना, कथन करना, स्पष्ट बोलना ।

गद्(पु०)—कपन, वाणी, वाक्य, रोम, श्रीकृष्ण का लघु भ्राता ।

गद्गद्(न०)—अस्फुट उच्चारण ।

गदाघणी(पु०)—सारे रोगों का सरदार अर्थात् राजपदना [लोहेका शस्त्र] ।

गदा(स्त्री०)—गदा नामक प्रसिद्ध दण्ड,

गदाधर(पु०)-विष्णु ।

गदायुद्ध(न०)-गदा या छोड़े के दण्ड से युद्ध करना ।

गदाराति(पु०)-दवाह, ओषध ।

गदित(वि०)-कथित, वर्णित ।

गद्गद(अस्त्री०)-आवेशध्वनि, अस्फुट और अव्यक्त स्वर ।

गद्गदवाणी ( स्त्री० )-गद्गदध्वनि, अस्फुट और गठयक्त वाणी ।

गद्गदस्वर(पु०)-पूर्ववत् ।

गद्य(वि०)-कथनीय, वर्णनीय । न०-  
नगर, वाक्परायणता के तीन भेदों में से एक, पद्यभिन्न काव्य, ऐसी रचना जो श्लोकबद्ध न हो ।

गद्यात्मक(वि०)-गद्ययुक्त, श्लोकभिन्न ।

गन्तव्य ( वि० )-जाने योग्य, जाने वाला, प्राप्तियोग्य ।

गन्तु(पु०)-पथिक, मार्ग, रास्ता ।

गन्ता[र] (वि०)-जाने वाला, गमन-शील, संचालकारी ।

गन्त्री(स्त्री०)-जाने वाली, चालगाड़ी ।

गन्त्रीरथ(पु०)-चालगाड़ी ।

गन्धु(१० शा०)-विनय करना, मांगना, जाना, घोट करना ।

गन्ध(पु०)-नासिका इन्द्रिय से प्राप्त गुणभेद । सुशयू, गन्धक, पिसा हुआ चन्दन, पद्मीसी, जहङ्गार, शिथ । [द्रव्य ।

गन्धक (पु०)-इसी नाम का प्रसिद्ध गन्धकाशी (स्त्री०)-ठ्यास की जाता सत्यवती का नाम ।

गन्धदेहिका(स्त्री०)-मुख, लाकरान ।

गन्धघ्राण(न०)-सुशयू या यदू का सूँघना ।

गन्धघ्ना (स्त्री०)-नाक, नासिका ।

गन्धनालिका-नाली(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

गन्धपाषाण(पु०)-गन्धक ।

गन्धबन्धु(पु०)-आम का पेड़ ।

गन्धमाता(स्त्री०)-पृथिवी । . .

गन्धमादन ( पु० )-गन्धक, रावण ।

अस्त्री०-एक पर्वत का नाम ।

गन्धमादिनी ( स्त्री० )-छाया नामक द्रव्य ।

गन्धमृग(पु०)-कस्तूरिया मृग ।

गन्धर्व ( पु० )-कौमल, सूर्य, घोड़ा, कस्तूरीमृग, गायक, देवयोनिभेद जो गानविद्या में प्रवीण होते हैं ।  
गन्धर्वनगर ( अस्त्री० )-एक कल्पित स्वर्गीय नगर, इन्द्रनाल । [गन्धर्व-पुर भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है] ।

गन्धर्वलोक(पु०)-विद्याधरों के लोक के नीचे और सुहृदलोक के ऊपर, जो लोक माना जाता है ।

गन्धर्वविद्या(स्त्री०)-गाने की विद्या, गाने का इत्थ ।

गन्धर्वविवाह ( पु० )-आठ प्रकार के विवाहों में से एक जिस में कुमार और कुमारी की वृत्ता हो अपेक्षित होती है और किसी प्रकार का साधेनिक कृत्य नहीं किया जाता ।

गन्धर्ववेद(पु०)-सामवेद का उपवेद जिस में गानविद्या का वर्णन है ।

गन्धवद्ग(स्त्री०)-नासिका, नाक ।

गन्धसार(पु०)—चन्दन, सन्दल ।

गन्धा(स्त्री०)—चम्पे की कली ।

गन्धाजीव ( पु० )—सुगन्धित वस्तु  
बेचने वाला, गन्धी ।

गन्धाद्य(न०)—चन्दन का दूध । पु०—  
नारंगी का दूध ।

गन्धार( पु० )—पञ्चाय के पश्चिम में  
एक देश का नाम [ इस अर्थ में  
यह बहुवचन में प्रयुक्त होता है ],  
विन्दूर, स्वरभेद ।

गन्धालु(वि०)—सुशयूदार ।

गन्धिक(पु०)—गन्धक, सुशब्द बेचनेवाला  
गन्धिनी(स्त्री०)—शराब, मद्य, गन्ध-  
बाला नामक द्रव्य ।

गन्धी[न] (पु०)—खटमल । वि०—गन्ध-  
युक्त, गन्धालु । [ शराब ।

गन्धोत्तमा(स्त्री०)—उत्तम मुरा, अच्छी

गन्धोली(पु०)—ततैया, गुण्ठी, सैंठ ।

गमस्ति(पु०)—सूर्यकिरण, चन्द्रकिरण,  
रश्मि, सूर्य । स्त्री०—स्वाहा ।

गमस्तिकर(पु०)—सूर्य, आदित्य ।

गमस्तिमाखी-दस्त(पु०)—पूयंत्र ।

गम्भीर( वि० )—गम्भीर, गहन, गहरा,  
अथाह, संजीदा, गुप्त ।

गम्भीरिका(स्त्री०)—बहुत बड़ा ढोल ।

गम(१ पु०)—जाना, चलना, हरकत  
करना, रवाना होना, पहुंचना,  
गुजरना, बीतना, दिताना ।

गम(पु०)—गति, पहुंच, सहकर्म, सैद्युन ।

गमक(वि०)—बोधक, समझाने वाला,  
सप्रमाण, निश्चय कराने वाला ।  
पु०—ग्रामों का स्वरभेद ।

गमय(पु०)—रास्ता, सहकर्म, पथिक ।

गमन( न० )—गति, जाना, हरकत,  
चढ़ाई, प्राप्ति, सैद्युन ।

गमनीय-गम्य( वि० )—आसानी से  
समझ में आने वाला, करनेयोग्य,  
प्राप्तियोग्य, जिस के साथ सैद्युन  
करना उचित है ।

गम्भीर(वि०)=गम्भीर । पु०—कमल ।

गम्भीरवेदी[न] (पु०)—हाथी, जिस के  
शरीर पर प्रहारों का कुछ प्रभाव  
नहीं होता ।

गय(पु०)—घन, घर, कुटुम्ब, सन्तान,  
आकाश, असुरविशेष ।

गया(स्त्री०)—विहार में एक प्रसिद्ध  
नगर को तीर्थस्थान है ।

गर ( अस्त्री० )—विष, जहर । पु०—  
रोग, पेय, निगलना ।

गरुध्न(वि०)—रोगनाशक, विषनाशक,  
तन्दुरुस्त ।

गरव(पु०)=गर्व । [ तृणमूल ।

गरल(अस्त्री०)—सर्पविष, जहर । न०—

गरित्त(वि०)—विषयुक्त, जहरीला ।

गरिमा [न] ( पु० )—गौरव, बड़ाई,  
सिद्धिभेद, भारीपन ।

गरिष्ठ(वि०)—बहुत बड़ा, बहुत भारी,  
सकौल ।

गरीयस्(वि०)—अधिक भारी, गुरुतर ।

गरीयसी(स्त्री०)—पूर्ववत ।

गरुड(पु०)—पक्षियों का राजा, एक,  
पक्षी जिसका पौराणिक नायकों  
में विशेष वर्णन आता है । दिनता  
के गर्भ से कश्यप का वेदा ।

गल् ( १ प० )--गेरना, गिराना, खाना,  
निगलना, अन्तर्धान होना, गलना,  
पिचलना ।

गल (पु०)--गला, गढ़ने, घीवा, रस्सी,  
रक्षा, यात्रा, गच्छी ।

गलक (पु०)--पूर्ववत् । [ सूज जाना ।

गलगह (पु०)--गले की गिलटियों का  
गलनिका (स्त्री०)--जलहरी ।

गलद्वार (न०)--मुँह, मुरा ।

गलस्तन ( न० )--बकरी के गले में जो  
साँस छटका रहता है ।

गलस्तनी (स्त्री०)--बकरी, छाजा ।

गलित (वि०)--गला हुआ, बहा हुआ,  
गिरा हुआ, गड़, सड़ा हुआ, घटा  
हुआ ।

गलितकुष्ठ (न०)--कुष्ठरोगकी वह दशा  
जब संगलिपां गलने लगती हैं ।

गलितनयन (वि०)--अन्धा, जिस की  
आंखें जाती रही हों ।

गलितयीवन (वि०)--जिसकी युवावस्था  
घीत गई हो, वृद्ध ।

गलि (पु०)--गलिया घेल ।

गहम (वि०)--साहसी, घमण्डी, अहङ्कारी

गल (पु०)--गाल, कपोल, कलसार ।

गलक ( पु० )--महापात्र, शराव का  
धाला ।

गव--किन्हीं समासों के आरम्भ में गो  
को गव आदेश हो जाता है ।

गवराज (पु०)--साँड, बैल ।

गवय (पु०)--नीलगाय, जिस की घूँट  
का घंवर घनाया जाता है ।

गवल (पु०)--जंगली भैंसा, वनमहिष ।

गवाक्ष ( पु० )--मूरास, करीसा, गोल  
खिड़की । [ भूर्य, अग्नि ।

गवांपति (पु०)--ग्वालिया, साँड, बिजार,

गवाशन (पु०)--चमार, चाखाल ।

गविनी (स्त्री०)--गायों का समूह ।

गविष्ठ (पु०)--सूर्य, इविर्गुब्ज ।

गवेन्द्र ( पु० )--अच्छा साँड, बहिषा  
साँड, गायों का स्वामी ।

गवेनक (न०)--गैर ।

गवेप् ( १०प०, २भा० )--ढूँढ़ना, तालाश  
करना, पूछगछ करना, बूछा  
करना । [ ढूँढ़ ।

गवेपः--णम्-तलाश, पूछगछ, कोशिश,

गवेपणा (स्त्री०)--पूर्ववत् ।

गठय (न०)--गोदुग्ध, चरामाह, गी-  
समूह, गोवर, गोमूत्र, गोघृत ।

गठयुति (स्त्री०)--दो कोस ।

गह ( १० व० )--गाढ़ा होना, गहरा  
होना, कठिणता से प्रवेश करना ।

गहन ( वि० )--गहरा, घना, जिस में  
प्रवेश न किया जा सके, संजीदा,  
कठिन । न०--गहराई, कठिनाई,  
जंगल, भाड़ी, मुफा, छिपने की  
धगह, जल, अभूषण । पु०--पर-  
मात्मा ।

गहूर (पु०)--लतागृह, कुञ्ज । न०--  
गहन । वि०--गहरा, दुष्प्रवेशनीय ।

गा ( १भा० )--जाना, गमन करना ।

( ३प० )--गाना, तारीफ करना ।

स्त्री०--गीत, नजम ।

गाङ्गेय ( पु० )--गोष्म, कार्तिकेय ।

न०--स्वर्ग, धनूरा ।

गाजर ( न० )-गाजर नामक कन्द ।  
 गाहव (न०)-वादल, मेघ ।  
 गाढ (वि०)-गहरा, अतिशय, दृढ़,  
 घना, मजबूत, नहाया हुआ ।  
 गाढम् ( भ० )-मजबूती से, अधिक,  
 अतिशयेन ।  
 गाणपत (वि०)-गणेशसम्बन्धी ।  
 गाणपत्य ( पु० )-गणेश का पूजक ।  
 न०-गणेशपूजा, सेना की अधि-  
 नायकता, कप्तानी ।  
 गाह्वीच (न०)-धनुष्, अर्जुन का वह  
 धनुष् जिसकी चरने अग्नि से  
 प्राप्त किया था ।  
 गाह्वीवी (पु०)-अर्जुन, धनुषोरी ।  
 गातु (पु०)-गीत, गायक, कोयल ।  
 गात्र(न०)-शरीर, शरीर का अवयव ।  
 गात्रमार्जनी(स्त्री०)-तौलिपा, अगोछा  
 गात्रहृत् ( न० )-शरीर पर उपजने  
 वाले घात ।  
 गात्रा (स्त्री०)-भूमि, पृथ्वी ।  
 गायक (वि०)-गवैया, गायक; गाकर  
 जीने वाला ।  
 गाया ( स्त्री० )-आर्पाउन्द, कषा,  
 कदानी, आर्याधिका ।  
 गाय ( १ न० )-हुज्जी लगाना, लड़ाई  
 करना, ठहरना ।  
 गाय ( न० )-तली, तलहटी, जगह,  
 जगह जगह । वि०-उपला, जो  
 बहुत गहरा न हो । [ नाम ।  
 गाधि (पु०)-विश्वामित्र के पिता का  
 नाथिनगर(न०)-वर्तमान कपील ।  
 गाधेय(पु०)-विश्वामित्र ।

गान्तु(पु०)-मुसाफिर, गवैया ।  
 गान्त्री(स्त्री०)-थैलगाही, ठकड़ा ।  
 गान्दिनी(स्त्री०)-गंगा का याचक ।  
 गान्धर्व ( पु० )-गवैया, विवाहभेद,  
 सामवेद का उपवेद, घोड़ा ।  
 गान्धर्विक(पु०)-गवैया, गायक ।  
 गान्धर्वी(स्त्री०)-दुर्गा ।  
 गान्धार(पु०)-क्रन्धार देश का प्राचीन  
 नाम, सिन्दूर, राग का तीसरा  
 स्वर । [शकुनि का विशेषण ।  
 गान्धारि ( पु० )-दुर्योधन का मामा,  
 गान्धारी(स्त्री०)-गान्धारराज समल  
 की कन्या जो धृतराष्ट्र की  
 विवाही थी ।  
 गान्धार्य(पु०)-दुर्योधन का याचक ।  
 गान्धिक (पु०)-गन्धी, सुगन्ध बेचने  
 वाला, छेत्तक । [वाला ।  
 गामी[न्] (वि०)-गमनशील, जाने  
 गाम्भीर्य( न० )-गहराई, गम्भीरता,  
 सज्जीदगी ।  
 गाय(पु०)-गाना, गीत ।  
 गायक(पु०)-गानेवाला, गवैया ।  
 गायत्री (स्त्री०)-चीथीस मात्राओं का  
 एक वैदिक उन्द, एक प्रसिद्ध वेद-  
 मन्त्र जो इस प्रकार है-"ओं सू-  
 भ्रुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो  
 देवस्य धीमहि । धियो यो नः  
 प्रचोदयात्" ।  
 गायन(पु०)-गाने वाला, गवैया ।  
 गायं(वि०)-गमं श्रयि से उत्पन्न ।  
 गायं(न०)-लाछन । [स्थिति ।  
 गाहपत्य(न०)-गृहस्थ का पद और

गार्हपत्य (न०)-कुटुम्ब का शासन ।  
पु०-अग्निभेद जो गृहस्थ को  
सर्वदा अपने घर में सुरक्षित  
रखना चाहिये ।

गार्हस्थ्य (न०)-गृहस्थाश्रम, कुटुम्ब-  
पालन, पशुपक्ष ।

गालव (पु०)-एक ऋषि, लोघवृक्ष ।

गालि (स्त्री०)-निन्दा, कुत्तिवतयाणी ।

गाह (१भा०)--नहाना, हुयकोलगाना,  
बिलोहन करना, हिलाना ।

गाहा-नम्--नहाना, हुयकी लगाना ।

गिन्दुक (पु०)--खेडने की गेंद ।

गिर्-रा (स्त्री०)-घाणी, भापा,  
भावाज, कथन, शब्द ।

गिरि (पु०)-पर्वत, पहाड़, ऊँचाई,  
बहान, सन्धासियों की एक सभा-  
धि, यादल, ७ का अंक । स्त्री०-  
गिरालना, चूड़ी, मूषी ।

गिरिक (पु०)-शिव का धावक, खेलने  
की गेंद ।

गिरिकन्दर (पु०)-गार्ह, गुफा ।

गिरिकर्षिका (स्त्री०)-भूमि, पृथ्वी ।

गिरिका (स्त्री०)-गृहिणा, चूड़ी ।

गिरिजा (स्त्री०)-हिमालय की पुर्या  
पार्वती पर्वतकदली ।

गिरिदुर्ग (न०)-पहाड़ी किला ।

गिरिधार (न०)-पहाड़ी रास्ता, दर्रा,  
पास ।

गिरिराज (पु०)-ऊँचा पर्वत हिमालय का  
बोधक ।

गिरिशृङ्गा (न०)-पर्वत की चोटी ।

गिरिश (पु०)-शिव का धावक ।

गिरिसार (पु०)-लोहा टोत ।

गिरिसुता (स्त्री०)-पार्वती ।

गिरेश (पु०)-पहादेव ।

गिल् (६ प०)-नृ ।

गिलित (वि०)-मांसित, खाया हुआ ।

गीत ( वि० )-गाया हुआ, कहा हुआ,  
कान्तित । पु०-गाना, गाने की वस्तु ।

गीता (स्त्री०)-गुरु और शिष्य के संवाद  
रूप से धर्मोपदेश । यद्यपि गीता नाम  
की कई एक पुस्तकें विद्यमान हैं  
परन्तु इस नाम से विशेष कर “मग  
वद्गीता” का ही बोध होता है ।

गीति (स्त्री०)-छन्दमेद ।

गीतिका (स्त्री०)-छोटी गीत ।

गीया (स्त्री०)-गीत, धारी ।

गीयि (स्त्री०)-स्तुति, बड़ाई, खाना ।

गु (६ प०)-मल त्यागना, पापाने जाना ।

गुगल-लु (पु०)-सुगन्धित द्रव्य, गुगल ।

गुच्छ-क (पु०)-गुच्छा, पुष्पसमूह, मोर  
के पर, मोतियाँ का हार, गुलदस्ता ।

गुच्छपत्र (पु०)-ताड़का पेड़ ।

गुच्छफल (पु०)-कदली वृक्ष, करंजा, अंगूर  
की बेल ।

गुञ्-ञ् (१ प०)-गूँजना, शब्द करना,  
मिममिनाना ।

गुञ्ज-नम्-मिममिनाहट, कूँज ।

गुथा-झिवा (स्त्री०) चोटली, चोटली का  
वृत्त, तीन जाँ का परिमाण ।

गुटी-टिका (स्त्री०)-गोली, मोती, कोई गोत  
वस्तु ।

गुह् (६ प०)-हिफाजत करना, रक्षा  
करना, चारना ।

गुड (पु०)-इसी नाम से प्रसिद्ध इक्षु-  
विकार, खेडने की गेंद, हाथी  
का सन्नाह [फन्दा ] ।



गुहत्वक् [ घ ] (पु०)-दालचीनी ।

गुहल(न०)-गुह की शराय ।

कुहाकेश(पु०)-अर्जुन का शाखक, शिथ ।

गुह [ झ ] ची (खी०)-गिलोयनामक प्रसिद्ध खैर ।

गुण ( १० व० )-सलाह देना, गुणन करना, सुलाना ।

गुण ( पु० )-लक्षण, शिक्त, तारीक, खूबी, विशेषता, लाभ, असर, प्रभाव, कर्मान की उपा, बाजे का तार, नस, रग, घसी, रस्वी; रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और विषय ये पाच इन्द्रियविषय । उपाकरण में ह, उ, झ और छ को ए, ओ, अर और झलू का आदेश होना ।

गुणक ( पु० )-गुणा देने वाला, गुणन करने वाला । [ बखानना ]

गुणकीर्त्तन(न०)-गुणानुवाद, गुणों का गुणगान(न०)-पूर्ववत् ।

गुणग्रहण(न०)-अच्छे गुणों का छे लेना, गुणगान ।

गुणग्राहक(पु०)-कदरदान ।

गुणग्राम(पु०)-गुणों का समूह ।

गुणघ (वि०)-गुणों का जानने वाला, कदरदान । [ गुणनक्षिप्रा ।

गुणता-रघु-नेकी, अच्छा गुण, ज़रय, गुणन ( न० )-गिनना, गुण दीय का योजन करना, ज़रय देना ।

गुणयान् [ घत् ] ( वि० )-गुण वाला, अच्छा, गुणी । [ निरर्थक ।

गुणदोम (वि०)-गुणरहित, निकम्मा,

गुणातीत (वि०)-लक्षणरहित । पु०-

परमात्मा । [ नेक, योग्य ।

गुणान्वित(वि०)-अच्छे गुणों वाला,

गुणाकर(पु०)-गुणों की खान, जिस में सारे गुण अच्छे पाये जाय ।

गुणी [ न् ] (वि०)-गुणवाला ।

गुण्ट(१० व०)-घेरना, छिपाना, डटना ।

गुणित(वि०)-घिरा हुआ, छिपा हुआ, घटा हुआ ।

गुबह ( १० व० )-ढकना, छिपाना, पोसना, घुण करना ।

गुणिक(पु०)-आटा, मैदा, घुण ।

गुत्त(पु०)-गुच्छ, गुच्छा ।

गुत्सुक(पु०)-नवखी उड़ाने की बोरी, गुच्छा, बंडल ।

गुह ( १ आ० )-खेलना ।

गुद(न०)-गुदा, यरयु, अपान ।

गुदकील-क(पु०)-मर्शरोग, दवाहीर ।

गुदाङ्गुर-गुदीद्रव (पु०)-पूर्ववत् ।

गुधित(वि०)-घिरा हुआ, बन्द किया हुआ ।

गु-दाल(पु०)-घातक पत्नी ।

गुप् ( १ व० )-छिपाना, ढकना, छिपा-जत करना, निगहबानी करना,

रक्षा करना । ( १ आ० )-परहेज करना, नफरत करना, छिपाना ।

( १० व० )-घमकना, झेलना, छिपाना ।

गुणिल(पु०)-राजा, रत्नक ।

गुल(वि०)-रक्षित, छिपा हुआ । पु०-घैश्य की उपाधि, धिरणु ।

गुलधर(पु०)-घलराम, जामून, मैदिया ।

गुप्तदान(न०)--ऐसा दान जिसमें दाता अपने नाम को प्रकाशित नहीं करता ।

गुप्ति ( स्त्री० )--रक्षा, छिपावट, रक्षा का उपाय, पहरा, जेलखाना, नैला हालने की जगह, रोकथाम ।

गुफ् [ स्फ ] (६५०)--गूँथना, बाँधना, गाठना ।

गुम्फित(वि०)--घुमिल, गुंथा हुआ ।

गुर् (६ भा०)--पलन करना, कोशिश करना । (४भा०)--भारना, नुकसान । पहुंचाना ।

गुह(वि०)--भारी, बजनी, बड़ा, छद्म, महत्त्वपूर्ण, अतिशय, पूजनीय, प्यारा, अहङ्कारयुक्त, सक्रोध, कीर्त्तनी । ( पु० )--पिता, पितामह, बड़ेरा, पूजनीय पुरुष, स्वामी, शासक, आचार्य, पाठक, उस्ताद, बहुस्पति, द्रोण का आचक, परमात्मा ।

गुहकार्य(न०)--बड़ा काम ।

गुहजन(पु०)--रिश्ते में बड़ा, पूजनीय मनुष्य । [ बोझ ।

गुहतर ( वि० )--अधिक भारी, अधिक

गुहतम(वि०)--सब से भारी, सर्वोत्कृष्ट ।

गुहता(स्त्री०)--बड़प्पन, महत्त्व, भारी-पन, मान ।

गुहत्व(न०)--पूर्वधत् ।

गुहदक्षिणा (स्त्री०)--विद्यासमाप्ति के पश्चात् गुरु की भेंट ।

गुर्जर (पु०)--गुजरातप्रदेश, गुजराती ।

गुर्विणी(स्त्री०)--गर्भिणी, गर्भवती ।

गुर्वी(स्त्री०)--गुरु की स्त्री, गर्भिणी ।

गुलिका(स्त्री०)--मोती, मुक्ता, गेंद ।

गुल्फ ( पु० )--गढ़ा, पैर की गाँठ, पादग्रन्थि ।

गुल्म ( अस्त्री० )--वृक्षसमूह, झाड़ी, जंगल, सेना का एक बहुत छोटा भाग, प्लीहा, दुर्ग, भात ।

गुल्मवेश(वि०)--घुघराटे वालोंवाला ।

गुयाक(पु०)--मुपारी का पेड़ ।

गुह् (१ व०)--छिपाना, ढांकना ।

गुह(पु०)--घोड़ा, कार्तिकेय, राम के मित्र एक निपादराज का नाम ।

गुहा(स्त्री०)--छिपने की जगह, गुहा, गुफा । [परमात्मा ।

गुहायप(पु०)--सिंह, चीता, बूहा,

गुहिन(न०)--झाड़ी, झाड़ीदार जंगल ।

गुहिल(न०)--सम्पत्ति, धनधान्य ।

गुहैर(पु०)--रत्नक, चरत्नक, लुहार ।

गुह्य ( वि० )--छिपा हुआ, छिपाने योग्य, अज्ञात । पु०--चूर्त्ता, कलुषा । न०--नेद, रहस्य, गुप्तेन्द्रिय, गुदा ।

गुह्यनिष्पन्द(पु०)--पेशाब, मूत्र ।

गू (६५०)--मल त्यागना । स्त्री०--मल, गिलाजत ।

गूढ(वि०)--छिपा हुआ, ढका हुआ, वेधयुक्त, अप्रत्यक्ष । [ मृग ।

गूढपथ-मार्ग(पु०)--छिपा हुआ रास्ता,

गूढपुरुष(पु०)--गुप्तधर, भेदिया ।

गूढमैथुन(पु०)--काक, कौया ।

गूय(अस्त्री०)--विष्टा, मल, गू ।

गूर्=गुर् घातु ।

शूयाक(पु०)-सुपारी ।

शूहन(न०)-छिपाना ।

शु (१ प०)-तर करना, सींघना, देना,  
स्थोकार करना ।

शुक्ल ( अस्त्री० )-शलगम, कोई २  
गाजर भी इस का लय करते हैं ।

शुध्(४प०)-छालव करना, चाहना ।

शुध्(वि०)--कानी । पु० कामदेव ।

शुध्नु(वि०)--लालची, लुटव, आतुर ।

शुध्( वि० )-लोभी । अस्त्री०-गोध,  
गिज्ज । [तकंघुट्टि ।

शुध् ( स्त्री० )-अपानदायु, समझ,  
सृष्टि (स्त्री०)-एक चार जनने वाली  
गी । [ गकान, भाषा ।

शुह ( न० )-घर, रहने का स्थान,  
शुहकरण ( न० )-अमूरखानगी, घरेलू  
कारबार, शुहनिर्माण ।

शुहकलह(पु०)-घरेलू झगड़े ।

शुहच्छिद्र (न०)-घर के भेद, घर की  
घटनामी ।

शुहजन ( पु० )-कुटुम्ब का मनुष्य,  
कुटुम्ब ।

शुहदेहली (स्त्री०)-घर की दहलीज,  
दुपारी ।

शुहपति (पु०)-शुहस्थ, घर का आ-  
डिफ, कुटुम्ब में सब से बड़ा  
मनुष्य ।

शुहपतनी(स्त्री०)-घर की मालकिन ।

शुहप्रवेश (पु०)-किसी नवीन घर में  
प्रवेश करते समय अग्निहोत्रादि  
शुभकर्म का अनुष्ठान ।

शुहपाम्य (पु०)-शुहस्थानी, शुहस्थ ।

शुहरन्ध्र (न०)-घरेलू झगड़े ।

शुहसंवेशक (पु०)-राज, मीनार, घर .  
बनाने वाला ।

शुहस्थ ( पु० )-घर में रहने वाला  
अर्थात् दूसरे आश्रम में स्थित ।

शुहस्थाश्रम ( पु० )-ब्रह्मचर्याश्रम के  
पश्चात् दूसरा आश्रम जिस में  
पुरुष पुत्रकलत्र के साथ निवास  
करता हुआ सांसारिक सुखों का  
अनुभव करता है ।

शुहामत (पु०)-मेहमान ।

शुहाश्रम=शुहस्थाश्रम । [की पतनी ।

शुहिणी (स्त्री०)-शुहस्थित, शुहस्थ

शुही[न](पु०)-घर का स्वामी, शुहस्थ ।

शुह्य (वि०)-घरेलू, पालतू ।

शुहीत ( वि० )-ग्रहण किया हुआ,  
पकड़ा हुआ ।

शु (६प०)[गिरति, गिलति]-गिरलता,  
खाना, बूकना । (९ प०) जताना,  
जनाना, पुकारना, चोपना करना ।

शेन्दु[शु]क (पु०)-खेले की गेंद ।

शेय (वि०)-माने योग्य । न०-गीत ।

शेय् (१आ०)-तलाश करना, ढूँढना,  
तहकीकात करना ।

शेय्य-य्यु (पु०)-गधैया, गायक ।

शेह (न०)-घर, रह, रहने का स्थान ।

शेहिनी (स्त्री०)-शेहिनी, शुहस्थित ।

शेही [न] (वि०)-शुही, शुहस्थ ।

शेहेशूर ( पु० )-जो घर में बड़ादुरी  
जतलाता हो अर्थात् चमकड़ी  
किन्तु कापुरुष ।

शे(१प०)-गीत गाना, कीर्तन करना ।

नैरिक-रेय ( वि० )-पहाड़ी । न०-  
गेरू ॥

नो ( अवली० )-गाय नामक प्रसिद्ध  
पशु, बैल, आकाश, किरण,  
स्वर्ग, वज्र, तीर, हीरा । स्त्री०-  
गाय, पृथ्वी, वाणी, सरस्वती,  
माता, चतुः । पु०-बैल, चाँड,  
सूर्य, चन्द्रमा, गवैया, घर ।

नोकरण ( पु० )-खिचर, साप, गाय  
का कान, एक तीर्थ ।

नोकृत ( न० )-गोबर ।

नोघातक ( पु० )-गाय का मारने वाला,  
गोबर ( पु० )-घरागाह ।

नोघारक ( पु० )-ग्यालिया ।

नोतम ( पु० )-एक ऋषि का नाम,  
अहल्या का पति ।

नोतनी ( स्त्री० )-नोतम की स्त्री  
: अर्थात् अहल्या ।

नोत्र ( न० )-वंश, कुटुम्ब, अस्तबल,  
- नोशाला, उपनाम, उपाधि । पु०-  
पर्वत ।

नोत्रज ( वि० )-सगोत्र, एक ही गोत्रका ।  
नोत्रप्रवर ( पु० )-वंश का आदिपुरुष  
जिसके नामपर वंश की प्रवृत्ति  
हुई । [ अर्थात् इन्द्र ।

नोत्रभिद् ( पु० )-पर्वतों के फाड़ने वाला  
गोत्रा ( स्त्री० )-पृथ्वी, धरा ।

नोदन्त ( न० )-हरताल ।

नोदान ( न० )-गाय का दान करना,  
केशमुष्मन्त संस्कार ।

नोदारण ( न० )-हल जोतना, फावड़ा,  
कुदाँड, हल ।

गोदावरी ( स्त्री० )-दक्षिण में एक नदी ।  
गोदोहनी ( स्त्री० )-दूध निकालने का  
पात्र ।

गोदूव ( न० )-गोमूत्र । [ गाय ।

गोधन ( न० )-गायका धन, बहुत सी  
गोधर ( पु० )-पर्वत, पहाड़ ।

गोघा ( स्त्री० )-धनुष के चिल्ले की  
चोट से वस्त्र के लिये आकड़ी पर  
बधा हुआ धमड़ा ।

गोधि ( पु० )-मस्तक, नाका, मगर ।

गोधूम ( पु० )-गेहूँ, मारंगी ।

गोघ्न ( पु० )-पर्वत, पहाड़ ।

गोप ( पु० )-रक्षक, छिपाना, शोभा,  
दीप्ति, ग्यालिया, गोपाल ।

गोपन ( न० )-रक्षा, हिक्ताजत,  
छिपाना, खतरा, आभा, ईर्ष्या,  
घबड़ाहट ।

गोपना ( स्त्री० )-रक्षा, प्रकाश, शोभा ।

गोपनीय ( वि० )-छिपाने योग्य, रक्षा  
करने योग्य ।

गोपा ( स्त्री० )-श्यामालता ।

गोपानसी ( स्त्री० )-उज्जा, घरो के  
आगे लगी हुई तिरछी लकड़ी ।

गोपाल ( पु० )-गौओं का रखवाला,  
ग्यालिया, श्रीकृष्ण ।

गोप्ता[तृ] ( वि० )-रक्षक, छिपाने वाला ।

गोप्य ( वि० )-रक्षा के योग्य, छिपाने  
योग्य । [ गोप्तृसूत्र ।

गोमयहल ( न० )-आकाशमण्डल,

गोमती ( स्त्री० )-एक नदी का नाम,  
वेद का मन्त्रविशेष ।

गोमय (पु०)-ग्यालिया ।  
 गोमय(अस्त्री०)-गाय का गोबर । न०-  
 चपला, कहा, गोसा ।  
 गोमायु (पु०)-गोदह, गृगाल, एक  
 गन्धर्व का नाम ।  
 गोमुख (पु०)-जिसका मुख गौके समान  
 हो, वायुभेद, नगर ।  
 गोसूत्र (न०)-गाय का सूत ।  
 गोमृग (पु०)-नीलगाय, गवय ।  
 गोनेध (पु०)-एक प्रकार का यज्ञ,  
 इन्द्रियदमन, अश्वमेधयज्ञ ।  
 गोरक्ष (पु०)-ग्यालिया ।  
 गोरस (पु०)-गाय का दूध ।  
 गोरोच(न०)-हरताल नामक उपधातु ।  
 गोल (अस्त्री०)-गेंद, घेरा, दूत, गोल  
 वस्तु, सुगोल । पु०-विधवा का  
 पारपुत्र ।  
 गोलक (पु०)-भूगोल, गेंद, काष्ठगेन्दुक,  
 एक राशि में छः ग्रहों का जुहना,  
 न०-कूटलोक ।  
 गोला (स्त्री०)=गोल ।  
 गोलागूल (पु०)-यद्वर्भेद, लंगूर ।  
 गोलीक (पु०)-स्वर्ग के एक भाग का  
 नाम, विष्णुलोक ।  
 गोलीमो (स्त्री०)-घेरया, वारनारी ।  
 गोवधंग (पु०)-युन्दायन के पक्ष  
 एक छोटी पहाड़ी का नाम ।  
 गोविन्द (पु०)-कृष्ण, धृष्टपति,  
 गोपाल ।  
 गोविष्टा (स्त्री०)-गाय का गोघर ।  
 गोवाला (स्त्री०)-गायों के बाधने  
 का स्थान ।

गोष्ठ ( १ आ० )-इकट्ठा होना, एक  
 स्थान पर जमा होना ।  
 गोष्ठ (न०)-गोशाला, ग्याल, गूगद,  
 गोस्थान ।  
 गोष्ठि-ष्ठी (स्त्री०)-सप्ता, कम्पनी,  
 समिति, कानाफूसी, समूह, डेर,  
 मुकुतू, नजमना ।  
 गोष्ठपद ( न० )-वह देश जहा बहुत  
 गौ हो, गाय के घेर पहने से  
 उत्पन्न गडा । [कृतु ।  
 गोच (पु०)-उपाकाल, सचेरा, चीन्म  
 गोस्तन ( पु० )-गाय का घन, घाट  
 लड़ी का हार ।  
 गोस्थान-नक (न०)-गाय बाधने की  
 जगह, गोष्ठ, गोवाहा ।  
 गोहन (न०)-छिपाता, गुप्तनाथ ।  
 गौशिक (पु०)-सुनार, स्वर्णकार ।  
 गौह ( पु० )-उत्तरभारत के भाग का  
 नाम, ब्राह्मणों का एक भेद जो  
 गौहदेश में रहते हैं, गौहदेश-  
 निवासी ।  
 गौही ( स्त्री० )-गुह से बनी हुई एक  
 प्रकार की मदिरा ।  
 गौहिक (पु०)-ईस, शम्ना, इस्तु ।  
 गोण (वि०)-सहायक, मुख्य से भिन्न,  
 गोरजकरी, छोटा, गुण से उत्पन्न ।  
 गोणपक्ष ( पु० )-युक्ति का निबंध  
 भाग, दलील की कमजोरी ।  
 गोतम(पु०)-गोतम श्रमि की सन्तान,  
 गोतमवशज या गोचज, युद्धदेव,  
 न्यायदर्शन के कर्ता, कृप, भारद्वाज ।  
 गोतमी(स्त्री०)-रूपी का नाम, मुद्द

की शिक्षा, गोदावरी, गोमती, दुर्गा ।

गौनर्द (पु०)--पतञ्जलि ।

गौत्रेय(पु०)--वैश्यस्त्री का पुत्र ।

गौधार(पु०)--निरमिट ।

गौर( वि० )--श्वेत, सफेद, स्वच्छ,

सुन्दर । पु०--श्वेत रत्न, चन्द्रमा,

चैतन्य, गुलाबी रत्न, सफेद सरसों ।

न०--स्वर्ण, कुंकुम, पद्मपराग ।

गौरव (न०)--गुरुता, गुरुत्व, व्रजन,

भारीपन, बड़प्पन, महिमा,

आदरसत्कार ।

गौरिका ( स्त्री० )--कुमारी कन्या,

अस्तयौनि ।

गौरिल(पु०)--सफेद सरसों, लौहचून ।

गौरी(स्त्री०)--पार्वती, आठ वर्ष की

कन्या, सुन्दरी, पृथ्वी, गौरीवना,

सुखसी, बाणी ।

गौण्ठीन(न०)--पुराना गोवाड़ा ।

ग्रध्(१ भा०)--झुकाता, तिरछा करना,

झूर होना ।

ग्रपित(वि०)--गुया हुआ, पकड़ा हुआ ।

ग्रन्ध्(१० व०, १ भा०, १, २ प्र०)--बाधना,

जकड़ना, क्रमबद्ध करना, लिखना,

बताना ।

ग्रन्ध( पु० )--पुस्तक, किताब, रचना,

दौलत, सम्पत्ति, गुम्फन, अनुष्टुप्

छन्द का श्लोक ।

ग्रन्धनम्-ना-ग्रन्धना, गुम्फन, रचना ।

ग्रन्धि(पु०)--गाँठ, जोड़, घैली, गुच्छा,

क्रूरता, कुटिलता, शरीर का जोड़,

धन ।

ग्रन्धिक(प०)--उपेक्षित, दैवज्ञ, नकुल

का नाम जो उसने विराट के

यहां धारण किया था ।

ग्रन्थिवन्धन ( न० )--विवाहसमय में

वर यधू का आंचल बांधना ।

ग्रन्थिमूल(न०)--गुल्लन, लहसुन ।

ग्रन्थी[ न् ] (पु०)--किताब का कीड़ा,

विद्वान्, शास्त्रज्ञ ।

ग्रन्थिल(वि०)--गाँठदार । न०--अदरक,

पिप्पलीमूल ।

ग्रन्ध् (१भा०)--निगलना, खाना, खर्च

करना, पकड़ना ।

ग्रस्त(वि०)--खाया हुआ, पकड़ा हुआ,

बूझा, गढ़ा हुआ ।

ग्रस्तोदय(पु०)--ग्रहण के पश्चात् सूर्य

वा चन्द्र का उगना ।

ग्रह् (२व०)--पकड़ना, ग्रहण करना,

लेना, बन्दी बनाना ।

ग्रह ( पु० )--ग्रिह्, ग्रहण, पकड़, छूट,

रसोद, आकाश के [ सूर्य, चन्द्र,

भीम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि-

श्चर, राहु और केतु ] ग्रह, चन्द्र

और सूर्य का ग्राम, नगर, आशंका,

अनुग्रह, घर ।

ग्रहक(पु०)--कैदी, बन्दी ।

ग्रहण(न०)--वन्धन, कैद, पकड़, स्वी-

कारी, आदान, इन्द्रिय, सूर्य वा

चन्द्र का ग्रहा जाना ।

ग्रहणीय(वि०)--स्वीकार करने योग्य ।

ग्रहणीहर (पु०)--छवंग, छोंग ।

ग्रहनेमि (पु०)--चन्द्रमा, चांद ।

ग्रहपति (पु०)--चन्द्रमा, चांद, सूर्य ।

ग्रहपोहा ( स्त्री० )—सूर्य वा चन्द्रग्रहण,

ग्रहों द्वारा उत्पन्न कष्ट ।

गृहराज ( पु० )—सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति ।

ग्रहविग्र ( पु० )—ऊँचोतिथी, दैवज्ञ ।

ग्रहशान्ति ( स्त्री० )—यज्ञकर्म से ग्रहों

द्वारा उत्पन्न पोहा को शान्त करना

ग्रहीतव्य ( वि० )—ग्रहण करने योग्य,

सीखने योग्य ।

ग्रहीता [ वृ ] ( वि० )—लेनेवाला, स्वीकार

करने वाला, अधमर्ण, खरीदार ।

ग्राम ( पु० )—गाव, पिण्ड, समूह, डेर,

जाति, कुटुम्ब, वाद्यका स्वरसमूह ।

ग्रामक ( पु० )—गाव का रहने वाला,

गधार, ग्रामीण ।

ग्रामचर्या ( स्त्री० )—खीसभोग ।

ग्रामज ( वि० )—गवार, अधिशित ।

ग्रामणी ( पु० )—गाव का प्रधान, गाव

का नेता, नायित, विष्णु ।

ग्रामपत्रं ( पु० )—मैथुनकायं, खीसभोग

ग्राममुख ( न० )—पोंठ, बाजार ।

ग्राममृग ( पु० )—कुत्ता, कुक्कुर ।

ग्रामलुण्ठन ( न० )—गाव का लूटना ।

ग्रामवास ( पु० )—गाव में रहने वाला,

ग्रामीण ।

ग्रामपण्ड ( पु० )—कलीय, नपुंसक ।

ग्रामचप ( पु० )—गाव की पथरायत ।

ग्रामदास्य ( पु० )—ग्रहगोष्ठ, भगिनीपति

ग्रामिक ( पु० )—गाव का सरदार,

ग्रामनिवासी ।

ग्रामिणी ( भस्त्री० )—नील वा हल ।

ग्रामीण ( वि० )—गवार, गेहूँदा पु०--

ग्रामनिवासी । कुत्ता, कीया ।

ग्रामेय ( वि० )—ग्रामज, गधार ।

ग्रामेटी ( स्त्री० )—वेश्या, गारनारी ।

ग्राम्य ( वि० )—ग्राम में उत्पन्न, ग्राम-

सम्बन्धी, गवार, पालतू, नीच, मूढ़

ग्राम्यधर्म ( पु० )—ग्रामीण का कर्तव्य,

स्त्रीसमागम ।

ग्राम्यबुद्धि ( वि० )—गवार, अनजान, मूर्ख

ग्रावन् ( पु० )—पर्वत, घादल, पत्थर,

शिला । वि०—कठोर, सह्य ।

ग्रास ( पु० )—अन्न का टुकड़ा, इतना

अन्न जितना मुख में एक बार

आजाये, ग्रहण ।

ग्राह ( पु० )—पकड़, चिपट, नाका, मगर,

कैदी, समझ, हरादा, रोग, आरम्भ

ग्राहक ( वि० )—ग्रहण करने वाला ।

पु०—खरीदार, पुलिसअकसर,

याज, कक्षपक्षी ।

ग्राह्य ( वि० )—ग्रहण करने योग्य,

समझने योग्य । न०—पेट ।

ग्रीवा ( स्त्री० )—वर्दन, गर्दन की पीछे

का भाग ।

ग्रीष्म ( वि० )—गर्म, तप्त । पु०—गरमी

का मौसम, ज्येष्ठ आषाढ मास ।

गुप् ( १ प० )—लूटना, चोरी करना ।

ग्रेविय ( भस्त्री० )—फालर, गले का हार,

कण्ठी ।

गुम् ( १ आ० )—खाना, भक्षण करना ।

गुह् ( १, १० ख० )—जूआ खेलना, छेना,

प्राप्त करना ।

गुह ( पु० )—जूआ, द्यतकीड़ा, जुआरी ।

गुहान ( वि० )—चका हुना । न०—पका-

घट, रोग ।

ग्लानि( स्त्री० )--यकावट, नफरत, कमजोरी, रोग, नाखुशी, नाराजी, अयःपात ।

ग्लुब् (१प०)--चुराना, छीनना, जाना ।

ग्लेव् (१आ०)--पूजना, सेवा करना ।

ग्ले (१प०)--मापसन्द करना, पकना, उदासीन होना, मुरझाना ।

ग्ली (पु०)--बन्दमा, पृथिवी ।

## घ

घ (वि०)--समाप्त के अन्त में इस का अर्थ मारने वाला नाश करने , वाला होता है, जैसे-राजघ ।

घु०--घण्टी, घण्टी की आवाज ।

घम् (१प०)--हँसना, मजाक उठाना ।

घट् (१आ०)--मशगूल होना, हरकत करना, काम करना, पूरा करना, बनाना । ( १०ठ० )--मारना, चीट पहुँचाना, जोड़ना, चमकना ।

घट (पु०)--घड़ा, जटका, कलश, २०-द्वीप का परिमाण ।

घटक (वि०)--योगक, जोड़ने वाला, पूरा करने वाला । पु०--विवाहादि का जोड़ मिलाने वाला ।

घटना (स्त्री०)--घटन, कीशिश, पूर्ति, बाकात, किसी विषय का सयात, किसी अललित बात का होना ।

घटा ( स्त्री० )--घटन, समूह, सेना, जमाअत । [वाला ।

घटिक ( पु० )--कहार, पानी भरने

घटिका ( स्त्री० )--घड़ी अर्थात् २४

मिनट का परिमाण, पैर का गढ़ा, घड़, चूतड़ ।

घटित(वि०)--घटना में आया हुआ,

जुड़ा हुआ, उत्पन्न, घना हुआ ।

घटी ( स्त्री० )--छोटा घड़ा, एक घड़ी अर्थात् आधा मुहूर्त, काल का परिमाण ज्ञानने के लिये जो घटित पानी में डुबका पड़ा रहता है ।

घटीयन्त्र(न०)--कुएं में से पानी निकालने का यन्त्र, अरघट, रहट ।

घटोत्कच (पु०)--हिडिम्बा राजसी के गर्भ से भीमसेन का एक पुत्र ।

घट् (१आ०)--हिलना, रगड़ना, छूना ।

घट् (१०ठ०)--पूखंवल ।

घट(पु०)--दरिया में चतरने की जगह, घाट, घुंभीघर ।

घटना (स्त्री०)--जीविकीपाय, पेधा, कम्पन, आन्दोलन ।

घण्ट (८ठ०)--चमकना । [ कहना ।

घण्ट (१, १० प०)--बोलना, चमकना,

घण्टा (स्त्री०)--घण्टी, कांसी आदि धातु से घना हुआ पात्रविशेष जो कालपरिमाण करने में काम आता है ।

घरटापग(पु०)--राजमार्ग, बड़ा रास्ता, नगर का प्रधान मार्ग ।

घण्टिका (स्त्री०)--छोटी घंटी, टाल जो पशुओं के गलेमें बांधी जाती है ।

घण्ट(पु०)--मधुमक्षिका ।

घन(वि०)--मजबूत, सख्त, कठोर, मुझ-निद, घना, गहरा, अववेश्य, पूरा, शुभ । पु०--मादल, शरीर, समूह,



लौहदण्ड, फफ, कठोरता । न०-  
लोहा, चमड़ा, टीन ।  
चनकफ(पु०)-ओले का वाचक ।  
चनगर्जित (न०)-घाटल की गरज,  
बहुत गहरा और जोर का शब्द ।  
चनज्वाला(स्त्री०)-विद्युत्, बिजली ।  
चनताल(पु०)-सारस पक्षी ।  
चनतोल(पु०)-बासक पक्षी, यपीहा ।  
चनतामि(पु०)-धूम, धुआ ।  
चनप्रदीप (स्त्री०)-घाटल का मान  
अर्थात् आकाश ।  
चनफल (न०)-रेखागणित में किसी  
वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई और  
गहराई की माप का गुणन ।  
चनरस(पु०)-काफ़र, पानी, गाढ़ा रस ।  
चनशयाम ( वि० )-मतिशय काला ।  
पु०-कृष्ण, रात ।  
चनाकर(पु०)-वर्षाकाल, बरसात ।  
चनायम(पु०)-पूर्ववत् ।  
चनाचन (वि०)-सुनी, खुरखार । पु०-  
हन्द्र, काला घाटल ।  
चनात्पय(पु०)-गरु अतु ।  
चान्त(पु०)-पूर्ववत् ।  
चानमय(पु०)-खजूर का पेड़ ।  
चगोदण(पु०)-चनाकर ।  
चनोपल(पु०)-घाटल का पट्टर अर्थात्  
ओला । [ करना ।  
चर ( १० प० )-ढकना, आछाड़ित  
पर(पु०)-मकान, गढ़, रहने की जगह ।  
चरह (पु०)-पीसने की चक्री ।  
चरघरा(वि०)-मस्फुट, जटपट । पु०-  
गार, गोर, करकराहट, जलते

हुए पानी का शब्द ।  
चर्च(१५०)-जाना, चलना ।  
चर्मे ( वि० )-नुष्ण । पु०-गर्मी, ग्रीष्म  
अतु, पसीना, घाम, घूप, गोदुग्ध ।  
चर्मद्युति(पु०)-आदित्य, सूर्य ।  
चर्च(पु०)-रगड़, घीसना ।  
चर्चण(न०)-रगड़ना, पीसना ।  
चर्मोदक-जल -पयस् (न०)-पसीना ।  
चस्मर(वि०)-पेटू, खुरखार ।  
घाट(पु०)-चहा, दरिया पर सतारने  
की जगह, ग्रीवा ।  
घासिटक( पु० )-पतूरा, घटा बजाने  
वाला, बैतालिक ।  
घात(पु०)-चोट, प्रहार, बध, नाश,  
तीर, शक्ति ।  
घातक(वि०)-नाश करने वाला, मारने  
वाला, कातिल ।  
घाति(पु०)-घात ।  
घाती [न] (वि०)-घातक ।  
घातुक(वि०)-घातक ।  
घार(पु०)-सेचन, सींचना, छिड़कना ।  
घास(पु०)-खाना, लूण, चारा, चरा-  
गाह का लूण ।  
घु ( १ भा० )-आवाज करना, अस्फुट  
शब्द करना ।  
घुट् ( १, ६ प० )-फिर से मारना, बदला  
लेना, रोकना । हिफाजत करना ।  
( १ भा० ) लीटना, बदला करना ।  
घुट टिक(पु०)-पाव की गाठ, गढ़ा ।  
घुग ( ६ प०, १ भा० )-घूमना, चक्कर  
काटना ।  
घुण(पु०)-छकरी का पीड़ा ।

घुगट-क(पु०)-पैर की एड़ी वा गद्दा ।  
घुर(६ प०)-गुरगुराना, सरांटे भरना,  
शब्द करना ।

घुरण(पु०)-ध्वनि, आवाज ।  
घुर्घुर(पु०)-कीटविशेष, गुरगुराहट ।  
घुप् ( १० उ०, १ प० )-शब्द करना,  
आहिर करना, तारीक करना,  
मुजाना ।

घुष्ट(न०)-नाड़ी, छकड़ा ।  
घुस्सण(म०)-कुकुन, केसर ।  
घूक(पु०)-ठसलू, उल्लूक ।  
घूकनादिनी(स्त्री०)-गंगा नदी ।  
घूकारि(पु०)-काक, कौआ ।  
घूर् ( ४ भा० )-कल करना, नारना ।  
घूर्ण ( ६ प०, १ भा० )-घूमना, आगे  
पीछे सरकना, चक्कर काटना ।

घूर्णवायु(पु०)-हवा का बगूला ।  
घृ(१ प०)-खींचना, छिड़कना । [इसी  
अर्थ में यह घातु १० उ०, ५ उ०  
'भी होती है] ।

घृण् ( ८ प० )-घनकना, जलना ।  
( १ भा० )-पकड़ना ।

घृण(पु०)-घूप, दिन, गर्मी, तेज़ी ।  
घृणा(स्त्री०)-दया, नम्रता, हिंकारत,  
नकरत, निन्दा ।

घृणालु(वि०)-दयाद्रंघित, दयावान् ।  
घृणारूपेद( वि० )-त्याज्य, काबिले  
नकरत ।

घृत(वि०)-सींचा हुआ, प्रकाशित ।  
न०-घी, जल, मक्खन ।

घृतकेश(पु०)-अग्नि, आग ।  
घृतधारा(स्त्री०)-घी की नदी ।

घृतवान्(वि०)-चिकना । [कद ।  
घृतकुमारी(स्त्री०)-घीकुंवार, जिमी-  
घृताची ( स्त्री० )-रात्रि, सरस्वती,  
अप्सर। वि०-चिकना, चमकदार ।

घृताहुति(स्त्री०)-अग्नि में सरावे में भर  
कर घी का डालना ।

घृय ( १ प० )-रगड़ना, घिसना, घिस-  
कर चमकाना, पीसना ।

घृष्ट(वि०)-रगड़ा हुआ, घिसा हुआ ।  
घृष्टि (स्त्री०)-रगड़, पिसाई, रूपाई ।  
घु०-सूजर ।

घोट [क] (पु०)-घोड़ा, अश्व । [शत्रु  
घोटकारि (पु०)-भैंसा, भैंस, घोड़े का  
घोटी-टिका (स्त्री०)-घोड़ी ।

घोषा (स्त्री०)-नासिका, घोड़े की  
नाक, सूजर की घूपरी ।

घोर(वि०)-अमानक, खौफनाक । पु०-  
शिव, ऋषिविशेष । न०-कुंकुन,  
अयकरता, खीक ।

घोरा (स्त्री०)-रात्रि, रात । [मन्त्र ।

घोल (अस्त्री०)-छाछ, तक्र, जलरहित  
घोष (पु०)-धोर, बादलों की गरज,  
घोषणा, किंवदन्ती, ग्वालिया,  
अहीर, घोषी, कापस्य, स्वर,  
मच्छर, अहीरों का गाध ।

घोषण (न०)-विद्युत्ति, रिपोटे, किसी  
घात को मंत्रसाधारण के जत-  
छाने के लिये उच्चस्वर से कहना,  
मनादी, डोही, टिंडोरा पीटना ।

घोषणा (स्त्री०)-पूर्ववत ।

घ्रा (१ प०)-संघना, गन्धलेना, घूमना  
घ्राण (वि०)-सूंधा हुआ । न०-गन्ध,

नासिका, सूचना, सूचने की वस्तु  
प्राणतर्पण (न०)-सुश्रू, सुगन्धि ।  
प्राणेन्द्रिय (न०)-सूचने की इन्द्रिय  
अर्थात् नासिका । [ योग्य ।  
प्रातव्य (न०)-सुगन्धि । वि०-सूचने  
प्रेम (न०)-दू, गन्ध ।

## ड

ड-कवर्ग का पञ्चम अक्षर, कोई  
शब्द जो इस अक्षर से आरम्भ  
होता हो देखने में नहीं आता ।  
पु०-शिवका घाघक, इच्छा, उच्चा-  
हिष, इन्द्रियविषय ।

## च

च (अ०)-और, तथा, भी, अभी, तात्पर्य,  
गिरचप, यक्षीन, यदि, अन्वाचय ।  
यह अवयव नीणवाक्य को  
प्रधान वाक्य के साथ मिलाने में  
प्रयुक्त होता है । वि०-युरा, चीज-  
रहित । पु०-चन्द्रमा, कलुआ,  
चौर, शिव । [ होना, समकना ।  
चक् ( १ च० )-तप्त होना, प्रसन्न  
चक्रास् ( २ च० )-समकना, दीप्त होना ।  
चक्रित ( वि० )-भयातुर, डैरान, डीक-  
लादा, डरा हुआ, डरपोक, विस्मित  
न०-भय, कम्पन ।  
चकीर ( पु० )-चकवा, पहिलिथोप ।  
चन्द्रमा को देखकर यह पक्षी ऊपर  
को उड़ा करता है ।

चक्र ( १० य० )-दुःखी होना, कष्टदेना ।  
चक्रकल ( वि० )-घेरेदार, गोल ।  
चक्रम ( पु० )-कुटिलता, शठता, बेईमानी  
चक्र ( पु० )-चकवा पक्षी, गिरोह,  
समूह । न०-गाड़ी का पहिया,  
कुम्हार का घाक, प्रान्त, घेरा,  
अध्याय, परिच्छेद, चक्रकाटना,  
विभाग ।

चक्रक ( वि० )-गोल, घेरेदार । पु०-  
एक प्रकार का तर्काभास ।

चक्रगति ( स्त्री० )-घूमना, चक्कर  
काटना ।

चक्रजीवक ( पु० )-कुम्हार, कुम्हार ।

चक्रदण्ड ( पु० )-शूकर, सूअर ।

चक्रधर ( पु० )-विष्णु, राजा, सांपा वि०-  
पहियेवाला ।

चक्रनायक ( पु० )-सेनानायक, कप्तान ।

चक्रनेमि-धारा ( स्त्री० )-पहिये के चारों  
ओर का घेरा ।

चक्रपाणि ( पु० )-विष्णु का हाथक ।

चक्रपाद-क ( पु० )-हाथी, रथ, गाड़ी ।

चक्रपाल ( पु० )-प्रादेशिक शासक ।

चक्रवर्धु-वाग्धय ( पु० )-सूर्य ।

चक्रवाल ( स्त्री० )-घेरा, अगूठी, डेर,  
समूह ।

चक्रभेदिनी ( स्त्री० )-रात, रात्रि ।

चक्रवर्ग ( पु० )-घीसने की चक्री ।

चक्रमुख ( पु० )-शूकर, सूअर ।

चक्रवर्ती ( पु० )-शाहंशाह, सम्राट् ।

चक्रवाक ( पु० )-चकवा पक्षी ।

चक्रवृद्धि ( अस्त्री० )-सूद दर सूद, व्याज  
पर व्याज बढ़ना ।

चक्रहस्त (पु०)—जिसने हाथ में चक्र धारण किया हो अर्थात् विष्णु ।

चक्रा (स्त्री०)—मागरमोया ।

चक्राङ्ग (पु०)—हंस, रथ, चक्रवाकपक्षी ।

चक्राट (पु०)—घाजीगर, चपेरा, शठ, ठग ।

चक्री [न्] (पु०)—विष्णु, कुम्हार, नैशीतमैन, सम्राट्, गदंज, प्रादेशिक शासक, सर्प, कौआ ।

चक्रीबान् [वत्] (वि०)—चक्र के समान घूमने वाला, गधा ।

चक्षू (२ भा०)—कहना, बोलना, व्यागना, देखना ।

चक्षुण (न०)—कहना, कथन, बूझबढ़ाने की एक प्रकार की चटना ।

चक्षुः [स्] (न०)—आंख, दृष्टि, देखने की इन्द्रिय, शोभा, प्रकाश ।

चक्षुर्गोचर (वि०)—दिखाई देने वाला ।

चक्षुःशब्दस् (पु०)—साँप, जिसके आंख ही काम हैं ऐसा जन्तु ।

चक्षुष्मान् (वि०)—आंखों वाला ।

चक्षुष्य (पु०)—नेत्र में हाठने का अंजन, सुर्मा, काजल ।

चक्षुरोग (पु०)—आंखों की बीमारी ।

चक्षुष्य (पु०)—गाड़ी, रथ, दल ।

चक्षुण (न०)—टेढ़ी चाल चलना, धीरे २ चलना ।

चक्षु (वि०)—खूबसूरत, चतुर, तन्दुरुस्त चक्षु (१ प०)—जाना, हरकत करना, हिलना, कूदना ।

चक्षु (पु०)—पांच अंगुलियों का परिमाण

चक्षुरि (पु०)—हंगारा बकली ।

चक्षुष (वि०)—अस्थिर, न जमने वाला, कम्पित, कामुक, चपल । पु०—वायु, प्रेमी, कामी ।

चक्षुषा (स्त्री०)—विजली, लक्ष्मी ।

चक्षुषा (स्त्री०)—बेत की बनी हुई वस्तु, चटाई, घास की गुहिया ।

चक्षु (पु०)—हरिण । स्त्री०—चोंच । वि०—चतुर, प्रसिद्ध ।

चक्षुभूत (पु०)—पक्षी, बिड़िया ।

चक्षु-चुका (स्त्री०)—पक्षी की चोंच ।

चट् (१ प०)—तोड़ना, अलग करना, हकना । (१० प०)—भारना, ठेदना ।

चटक (पु०)—खुटसदैया पक्षी ।

चट [टि] का (स्त्री०)—पूर्ववत् ।

चटन (न०)—चटखना, टूटना ।

चटु (पु०)—पेट । अस्त्री०—सुधासद की बाणी । [सुन्दर, प्रियदर्शन ।

चटुल (वि०)—चक्षुष, अस्थिर, चपल, चटुला (स्त्री०)—बिद्युत्, बिजली ।

चण् (१ प०)—आवाज करना, जाना, भारना । [ का नाम ।

चणक (पु०)—सक्यभेद, चना, एक मुनि चणकात्मज (पु०)—चाणक्य मुनि ।

चण्ड (वि०)—भयाङ्क, तीक्ष्ण, तीव्र, कोधालु, क्रूर । पु०—राक्षस, शिव, इमली का पेड़ ।

चण्डमुगहा (स्त्री०)—दुर्गा का एक भेद ।

चण्डविक्रम (वि०)—अत्यन्त बलशाली ।

चण्डा (स्त्री०)—छोयालु स्त्री ।

चण्डांशु (पु०)—जिस की किरण तीव्र हो अपांत् सूर्य ।

चण्डालक(भस्त्री०)-द्विषो के पहरे  
का अधोवस्त्र, लहरा ।

चण्डाल (वि०)-झूर, कुकरी । पु०-  
अपने नाम से प्रसिद्ध एक जाति,  
महानोच, अन्त्यध ।

चण्डी ( स्त्री० )-अतिकोपना रत्री,  
दुर्गा का रूप, चोट ।

चत(१ च०)-भागना, घाबना करना ।

चतु[र] (वि०)-चार की गिनती ।

चतु गाला(स्त्री०)-चौखण्डी, चार चरो  
वाला मन्दिर ।

चतुर(वि०)-होशियार, कुशल, सुन्दर  
पु०-हाथीखाना, मोल तकिया ।  
न०-चतुराई ।

चतुरथ(पु०)-चोथा भाग ।

चतुरग ( वि० )-चार प्रकार का, चार  
अंगों वाला । न०-हाथी, घोड़ा,  
रथ और पैदल इन चार अंगों से  
युक्त सेना, चौपट । [ वाचक ।

चतुरशीति ( स्त्री० )-८४ सख्या का  
चतुरस्र[म] (वि०)-चौकोन, चारकोण

वाला । पु०-चार कोण का खेत  
चतुरानन(पु०)-ब्रह्मा ।

चतुराश्रम(पु०)-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वान-  
प्रस्थ और सन्यास ये चार आश्रम

चतुर्गव(पु०)-चार बैल की गरी ।

चतुर्गुण(वि०)-चौगुणा ।

चतुर्थ(वि०)-चौथा ।

चतुर्थांश(पु०)-चार भागों में से एक ।  
वि०-चौथा ।

चतुर्थी(स्त्री०)-चौथी तिथि ।

चतुर्दश(वि०)-चौदहवा ।

चतुर्दशन् (वि०)-चौदह ।

चतुर्दिशम्(न०)-चारों ओर ।

चतुर्दशी(स्त्री०)-कृष्ण और शुक्लपक्ष  
की चौदहवीं तिथि । [ वि० ।

चतुर्धा(न०)-सब तरह से, चारों प्रकार

चतुर्भांशु-भुंज(पु०)-विष्णु का वाचक ।  
न०-चतुष्कोण क्षेत्र ।

चतुर्भाग(पु०)-चौथा हिस्सा, चौथाई ।

चतुर्मास (न०)-आषाढशुक्ला एका-  
दशी से कार्तिकशुक्ला एकादशी  
तक का समयविभाग, चोमासा,  
घरसात ।

चतुर्मुख (पु०)-ब्रह्मा का वाचक ।

चतुर्युग (न०)-चारो युग, सत्ययुग,  
त्रेता, द्वापर और कलियुग ।

चतुर्वेत् (पु०)-ब्रह्मा ।

चतुर्वर्ग (पु०)-चार वर्ग अर्थात् धन,  
अर्थ, कान और मोल का समुदाय ।

चतुर्वर्ण(पु०)-चारवर्ण अर्थात् ब्राह्मण,  
क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।

चतुर्विंश(वि०)-चौबीस सख्या वाला,  
चौबीसवा ।

चतुर्विंशति ( स्त्री० )-२४ की सख्या  
का वाचक ।

चतुर्विद्य(वि०)-चारों वेदों का ज्ञाता ।

चतुर्विद्या (स्त्री०)-चार वेद अर्थात्  
आफ, यजु, साम और अथर्व ।

चतुर्विध (वि०)-चार प्रकार का ।

चतुर्विधशरीर (न०)-चार प्रकार के  
शरीर अर्थात् जरायुज, जलज,  
स्थेदज और सद्भिज ।

चतुर्वेद (पु०)=चतुर्विद्या ।

चतुर्थ्युह (पु०)—विष्णु, संसारोत्पत्ति के चार हेतुसमूह यथा—वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ।

चतुल (वि०)—रखने वाला, स्थापयिता । [ चारों ।

चतुष्क (न०)—चार खम्भों वाला घर,

चतुष्की (स्त्री०)—मशहरी, नदीविशेष ।

चतुष्टय (वि०)—ऐसी वस्तु जिसके चार भाग हों, चार प्रकार का ।

चतुष्टयी (स्त्री०)=चतुष्टय ।

चतुस्त्रिंशत् (वि०)—चौतीस की संख्या का बोधक । [ का वाचक ।

चतुष्पद्माशत् (वि०)—चौवन की संख्या

चतुष्पथ (पु०)—चार आश्रमों वाला ब्राह्मण । न०—ऐसा प्रदेश जहां से चारों ओर को रास्ता जाता हो अर्थात् चौराहा ।

चतुष्पद (पु०)—चौपाया, पशु, चार पैरों

वाला, ज्योतिष में एक करण ।

चतुष्पदी (स्त्री०)—चार पांव वाली, चार हिस्सों वाली, चौपदी, छन्दोभेद ।

चतुष्पाटी (स्त्री०)—चारों दिशाओं के विदीर्ण करने वाली नदी ।

चतुष्पाठी (स्त्री०)—वह छात्रालय जिस में चारों वेदों का पाठ पढ़ाया जाता हो अर्थात् चौपाठी ।

चतुष्पाणि (पु०)—विष्णु का वाचक ।

चतुष्पाद-द् (वि०)=चतुष्पद ।

चतुष्पार्श्व (न०)—चारों ओर ।

चतुःपट्टि (स्त्री०)—चौंसठ की संख्या का वाचक ।

चतुःपट्टिकला (स्त्री०)—चौंसठ कला ।

चत्वर (न०)—आंगन, होमार्थ निमित्त वेदी, स्थाण्डिल, वेहा ।

चत्वारिंशत् (स्त्री०)—चालीस की संख्या का नाम । [ चास ।

चत्वाल (पु०)—होमकुण्ड, कुश नामक

चद् (१ प०)—मांगना, याचना करना, पूछना । [ चमकना ।

चद् (१ प०) [ इदित् ]—प्रसन्न होना,

चन् (१ प०)—शब्द करना, नारना ।

चन (अ०)—अपूर्ण, न पूरा, जो कुछभी ।

चञ्च (१ प०)—गति, जाना, गमन करना ।

चन्द्र (१ प०)—चमकना, खुश होना, प्रसन्न होना ।

चन्द्र-क (पु०)—चन्द्रमा, कपूर, काफूर, मत्स्वभेद ।

चन्द्रमः-नम्-चन्द्रम नामक प्रसिद्ध सुगन्धित वृक्ष, एक वानर ।

चन्द्रमधेनु (स्त्री०)—वह गी जिसके शरीर पर चन्द्रम लगाया गया हो, पति और पुत्र के जीवित होने पर मृत स्त्री के उद्धारार्थ चन्द्रमाकृत जो गी ब्राह्मण को दान करदी जावे ।

चन्द्र(पु०)—चन्द्रमा, मृगशीर्ष नामक नक्षत्र, कपूर, पानी, हीरा, मोर के पंख का चन्द्रा ।

चन्द्रक(पु०)—मोर के पंख का चन्द्रा, एक प्रकारकी मच्छी, खरूद मिर्च ।

चन्द्रकला(स्त्री०)—चन्द्रमा की सोलह कलाओं मेंसे एक, द्रविड देश का एक प्रकार का वाजा ।

चन्द्रकान्त(पु०)—एक प्रकार की मणि जो चन्द्रमा की देख कर द्रवीभूत हो जाती है। न०—कमल, चन्दन ।

चन्द्रकान्ता(स्त्री०)—चन्द्रमा की स्त्री, चादनी, रात ।

चन्द्रकान्ति(स्त्री०)—रौशनी, चन्द्र की आभा । न०—चादी ।

चन्द्रकी [नृ] (पु०) -मयूर ।

चन्द्रकूट(पु०)—इसी नाम से प्रसिद्ध एक पर्वत ।

चन्द्रगुप्त(पु०)—मगध देश का राजा, पुराणा के लेखानुसार यमराज की सभा में मनुष्यों के शुभाशुभ कर्म का लेखक अर्थात् चित्रगुप्त ।

चन्द्रगालस्या (पु०/महु०)—चन्द्रलोक में स्थित दिव्यपतिर । [पसा जाना ।

चन्द्रपदण (न०)—राहु से चन्द्रमा का चन्द्रचबला ( स्त्री० )—एक प्रकार की छाटी मछली, चन्द्रकमत्स्य ।

चन्द्रपृष्ठ (पु०)—महादेव का ओषधक ।

चन्द्रद्वारा (पु०/महु०)—भद्रवती आदि नक्षत्र । [ चन्द्रमा की ज्योति ।

चन्द्रद्युति(स्त्री०)—चन्दन की लकड़ी, चन्द्रपुष्पा (स्त्री०)—श्वेतपुष्प वाली ककटफारी ।

चन्द्रप्रभ(पु०)—उग्रविशेष ।

चन्द्रप्रभा ( स्त्री० )—आकुची नामक ओषधि चन्द्रमा की ज्योति ।

चन्द्रपाला(स्त्री०)—ग्रही इलायची ।

चन्द्रविन्दु ( पु० )—शार्ङ्गचन्द्राकार शम्भुधार ।

चन्द्रभाग(पु०)—पर्वतविशेष ।

चन्द्रभागा(स्त्री०)—दक्षिण में एह नदी विशेष ।

चन्द्रमणि(स्त्री०)—एक प्रकार की मणि ।

चन्द्रमण्डल(न०)—चन्द्रमा का गोलाकार स्वरूप, चन्द्रबिम्ब ।

चन्द्रमत् ( पु० )—चन्द्रमा, आनन्द देने वाला ।

चन्द्रमीलि(पु०)—महादेव ।

चन्द्रमुखी ( स्त्री० )—चन्द्रमा के समान मुख वाली स्त्री ।

चन्द्ररेखा-लेखा(स्त्री०) चाकुचीनामक ओषधि ।

चन्द्ररेणु(पु०)—काठपत्थर ।

चन्द्रलोक(पु०)—चन्द्रस्थित दुनिया ।

चन्द्रबोहक—छौह(न०)—चादी, रूपा ।

चन्द्रवश(पु०)—कौरववश, हस्तिनापुर के राजगण । [ मुखवाला ।

चन्द्रवदन ( वि० )—चन्द्रमा के समान चन्द्रबिहगम ( पु० )—मंगुला, वन नामक पक्षी । [ प्रसिद्ध व्रत ।

चन्द्रव्रत (न०)—चान्द्रायण नामका चन्द्रवल्लरी (स्त्री०) सोनलता ।

चन्द्रशाला ( स्त्री० )—अहालिका, गटारी, ऊपर का घर ।

चन्द्रशेखर(पु०)—महादेव, पूर्व की दिशा से एक पर्वत ।

चन्द्रसम्पन्न (पु०)—चन्द्रमा से उत्पन्न हुआ पुत्र, युध ।

चन्द्रसम्पन्ना ( स्त्री० )—नर्मदा नदी, यही इलायची ।

चन्द्रहास (पु०) तलवार, रावण की

तलवार, केरल देश का राजा ।

न०--चांदी ।

चन्द्रहासा(स्त्री०)--गिलोय, सीमलता ।

चन्द्रा (स्त्री०)--इलायची, चंदोवा ।

चन्द्रातप (पु०)--चंदोवा, बितान, चन्द्र-  
मा की किरण, चांदनी ।

चन्द्रापीड (पु०)--महादेव का नाम,  
काश्मीर देश का एक राजा जो  
तारापीड का पुत्र था ।

चन्द्रावली (स्त्री०)--गोपीविशेष ।

चन्द्रिका (स्त्री०)--चांदनी, यही इला-  
यची, तेरह अक्षर के पादवाला  
एक छन्द ।

चन्द्रिकाद्राव (पु०)--चन्द्रकान्त मणि ।

चन्द्रिकापायी [न] (पु०)--चकीरपत्नी ।

चन्द्रिकाम्युज (न०)--श्वेतकमल ।

चन्द्रिल (पु०)--शिव, नापित, हज्जाम ।

चन्द्रेष्टा (स्त्री०)--कुमुदिनी ।

चन्द्रोदय (पु०)--चन्द्रना का निकलना ।

चन्द्रोपल (पु०)--चन्द्रकान्त मणि ।

चप् (१ प०, १० व०)--चूर्णिकरण, पीसना,  
शान्तवना देना, शान्ति देना ।

चपट (पु०)=चपेट ।

चपल (पु०)--धीरे २ चलता, पारा,  
मछली, एक प्रकार का पत्थर ।

वि०--चञ्चल, क्षणिक, चराराया  
हुआ ।

चपलता-त्वम्=चञ्चलता ।

चपला (स्त्री०)--पीपल, लहमी,  
विजनी, झराय औरत, मदिरा,  
विजया ।

चपेट (पु०)--फँसी हुई उंगलियों वाला

हाथ, चपेट, चप्पड़, चांटा ।  
[चपेटक भी इसी अर्थ में प्रयुक्त  
होता है] ।

चम् (१ प०)--खाना ।

चमत्करणम्--कारः--कृतिः=विस्मय,  
हैरानी, आश्चर्य ।

चमत्कारी (वि०)--अजीब, आश्चर्ययुक्त

चमर (पु०)--एक प्रकार का हरिण ।

न०--चमर पंखा ।

चमरी (स्त्री०)--चौरी ।

चमसः-चम्=लकड़ी का बना यज्ञ का  
एक पात्र, सोमरस पीने का पात्र ।

चम् (स्त्री०)--सेना, ऐसी सेना जिस में  
३२९ हस्ती, ३२९ रथ, २१८७ घोड़े,  
और ३६४५ पैदल होते हैं ।

चमूक (पु०)--मृगभेद, कचनाल का वृक्ष ।

चम्प (१० व०)--गाना, हरकत करना ।

चम्प (पु०)--कोविदार नामक वृक्ष ।

चम्पक (पु०)--चम्पा नामक पुष्पलता,  
केला । न०--चम्पे का फूल,  
कदलीफल ।

चम्पकमाला (स्त्री०)--छन्दोभेद, गले  
में पहरने का एक स्वर्णभूषण,  
चम्पकपुष्पों की बनी हुई माला ।

चम्पू (स्त्री०)--काव्यभेद, गद्य और  
पद्य का मिश्रित एक अत्युत्तम  
काव्य ।

चम् (१ प०)=चम्प । [जाना ।

चम् (१ आ०)--हरकत करना, पास

चम् (१ प०)--चलना, घूमना, करना,  
पूरा करना, व्यवहार करना, पास  
चरना, खाना, मशगूल होना,  
फैलना, जीना ।



घर (वि०)—गतिशील, करने वाला ।

पु०—मगल, जासूस, कीड़ी, दूत, मेघ, कंक, तुला और मकर राशि ।

चरक(पु०)—गुप्तघर, भिखारी, अपने नाम से अधिक एक अपि जिन्होंने चरकसहिता निर्माण की है ।

चरण (अस्त्री०)—पाद, पैर स्तम्भ, लङ्, आश्रय, श्लोक का प्रथम भाग । पु०—किरण, पदाति । न०—हरकत, सम्पादन, आचरण, पुर्ति । [शरणगत ।

चरणगत(वि०)—पैरों में पड़ा हुआ, चरणपथ [न] (न०)—पैर का गहरा, एड़ी ।

चरणप(पु०)—बृक्ष, पेड़, पादप ।

चरणसेवा(स्त्री०)—गुरु आदि की सेवा के लिये एक विनयबोधक शब्द ।

चरणामृत(न०)—किसी पूजनीय ब्राह्मण का आचार्य के पैर धोकर जो लक्ष प्राप्त किया जाता है ।

चरणि(पु०)—मनुष्य, आदमी ।

चरणोदक(न०)—चरणामृत ।

चरन(वि०)—अन्तिम, आखिरी, पश्चिमीय, सब से छोटा, अन्त का ।

चरनकाल(पु०)—मृत्यु का समय ।

चरमाचल (पु०)—अस्ताचल, पश्चिमीय पर्वत जिस के पीछे सूर्य और चन्द्र का अस्त होना बतलाया जाता है ।

चराचर (न०)—संसार, आकाश, स्वयं ।

वि०—अंगभ और स्थावर । [घाग ।

चरि (पु०)—जन्तु, जानवर, पशु, हे-

चरित(न०)—जीवन, इतिहास, जीवन-चरित्र, हरकत, व्यवहार, कार्य, स्वभाव । वि०—किया हुआ, प्राप्त, प्रप्त, प्रभा हुआ ।

चरितार्थ (वि०)—कामयाय, सकल-जनोरथ, संघटित, उपपुष्प, च-स्तुष्ट ।

चरित्र ( न० )—जीवन, जीवनचरित, जीवनवृत्तान्त, स्वभाव, काम, व्यवहार, आदत, सम्पादन गति, पैर ।

चरित्रा (स्त्री०)—इनली का पेड़ ।

चरीत्र (न०)=चरित्र ।

चरु (पु०)—मेघ, पितरों के लिये हव्य, हठयाच ।

चर्च (इ पु०)—बहस करना, चोटपहु-चाना, खेपन करना, गाली देना, धमकाना ।

चर्च (१० उ०)—अध्ययन करना, पढ़ना ।

चर्च—नम्=ध्यान, अध्ययन, बार २ पढ़ना, सुगन्धलेपन ।

चर्चटिका-चर्चरी(स्त्री०)—उत्सव, सुधा-मद, गतिभेद, गाते समय हथेली खजाना ।

चर्चा (स्त्री०)—गवेषणा, ध्यान, अङ्ग-लेपन, अध्ययन, बार २ दुहराना, याता, लोकसवाद, दुर्गा का नाच, विचारणा ।

चर्चि का (स्त्री०)—पूर्यवत् ।

चर्पट (पु०)—हाथ का फेंकाना, चपेट, चपेटा ।

चर्च (१५०)—खाना, खरता, घलगा ।

धर्म [नृ]- (न०)-धर्मज्ञ, स्वर्णा, धाम,  
स्पर्शेन्द्रिय, डाल ।  
धर्मकारक-धर्मक (पु०)-जुते बनाने  
वाला, धनार ।  
धर्मघटी (स्त्री०)-धामचिड़ी, धिमगा-  
दड़ ।  
धर्मचित्रक (न०)-चफेद कोट ।  
धर्मज्ञ (न०)-बाल, रक्त, सून ।  
धर्मण्य (वि०)-धमड़े का धना हुआ ।  
धर्मपादुका (स्त्री०)-धमड़े का धना  
हुआ जूता ।  
धर्मरूप (पु०)-धमड़े का तस्मा ।  
धर्ममय (वि०)-धमड़े का धना हुआ,  
धर्मरय ।  
धनार (पु०)-धनार, जुते बनाने  
वाला, धमड़े का काम करने वाला ।  
धर्मा (स्त्री०)-इधर उधर भ्रमना,  
धैर, गति, व्यवहार, जमल, भौ-  
जन, रीति ।  
धर्म (१० व०, १५०)-धवाना, काटना,  
दांती से कुतरना, जामका लेना,  
चूसना ।  
धर्मण (न०)-धवाना, चूसना, भक्षण ।  
धर्मित (वि०)-धवाया हुआ, धाया  
हुआ, धक्का हुआ ।  
धर्मितधर्मण (न०)-धवायेहुये की फिर  
धवाना, मिष्टपेयण, निरर्थक पु-  
नरावृत्ति ।  
धर्मितपात्र (न०)-पीकदाना ।  
धर्म (१ प०)-धलना, हरकत करना,  
हिलना, जाना ।  
धर्म (पु०)-वायु, हवा, आन्दोलन,

कम्पन । वि०-धला हुआ, गति-  
शील, चञ्चल, क्षणिक, गड़बड़ ।  
धलचित्त (वि०)-धंचलस्वभाव, अस्थि-  
रमनाः । [ हरकत ।  
धलन (पु०)-धैर, हरिण । न०-हिलना,  
धलित (वि०)-धला हुआ, कम्पित,  
आन्दोलित, गत, प्राप्त, ज्ञात ।  
धलु (पु०)-धल्लू, धल्लूभर पानी ।  
धलुक (पु०)-धलवत ।  
धप् (१ प०, १ व०)-धाना, धारना ।  
धयक (न०)-शहद, सुरा, मद्यपात्र ।  
धह (१ व०, १ प०)-धोखा देना,  
धके करना, पीसना ।  
धाकधक्य (न०)-धोभा, दीप्ति, धमक ।  
धाकिक (पु०)-कुम्हार, 'गादीवान',  
धारण, तैली । [ पुत्र ।  
धाकिण (पु०)-कुम्हार या तैली का  
बाधुय (न०)-नेत्रद्वारा प्राप्त ज्ञान ।  
पु०-छटे मनु का नाम । वि०-नेत्र-  
धन्यस्थी । [ क्षणिकताव ।  
धाधुल्य (न०)-चञ्चलता, अस्थिरता,  
धाटु (न०)-धुगामद, दिग्लुभाना,  
प्रियवाणी ।  
धाटुक (अस्त्री०)-धुगामद की धाटी ।  
धाटुकार (वि०)-धुगामदी, प्रिय-  
भात्री । [ जरीफ ।  
धाटुवटु (पु०)-मत्ताक करने वाला,  
धाणक्य (पु०)-धाणक्य नीति का  
बनाने वाला एक प्रसिद्ध नीतिज्ञ,  
विष्णुगुप्त, कौटिल्य । [ नाम ।  
धासूर (पु०)-धंस के एक मोट्टा का

चारण्ड ( न० )—चटुतता, उद्वेगता,  
घरहता ।

चारण्डाल [स्वाचैः] ( पु० )—अन्त्यज,  
जातिव्युत्, भगी ।

चातक ( पु० )—एक पक्षिविशेष जो  
स्वातिनक्षत्र की धरों को ही जल  
का पान करता है ।

चातुर ( वि० )—चारसम्बन्धी, चतुर,  
कुशल, प्रत्यक्ष । न०—चार पहिये  
की गाड़ी ।

चातुरक ( वि० )—सुशानदी, प्रत्यक्ष ।

चातुराश्रमिक ( वि० )—चारों आश्रमों में  
से किसी में निवास करने वाला ।

चातुरिक ( पु० )—गाड़ीवान, हाँकने  
वाला, कोषवान ।

चातुर्भातिक ( वि० )—चार अंशों वाला,  
चार भूतों से उत्पन्न हुआ ।

चातुर्मासक ( वि० )—चातुर्मास्य नामक  
यज्ञ करने वाला ।

चातुर्मास्य ( न० )—एक यज्ञ जो प्रत्येक  
चौपंचास अर्थात् कार्तिक, काल्गुन  
और आपाढ़ के आरम्भ में की  
जाती है । [ कौशठ ।

चातुर्य ( न० )—चतुराई, सुन्दरता,  
चातुर्यवर्ण्य ( न० )—प्राज्ञ, सन्निय,  
वेदय और शूद्र नामक चार वर्ण,  
चारों वर्णों के अर्तव्यकर्म ।

चातुष्क्रादिक ( वि० )—चार भागों में  
बटा हुआ ।

चान्द्र ( वि० )—चन्द्रसम्बन्धी । पु०—  
चन्द्रमास, शुक्लपक्ष । न०—चान्द्रा-  
यण द्वय ।

चान्द्रक ( न० )—सौत, शुण्ठी ।

चान्द्रमस ( वि० )—चन्द्रसम्बन्धी, चान्द्र ।

चान्द्रमास ( पु० )—वर्ष का वह मास  
जिस में चन्द्रमा के उदय और  
अस्त से गणना की जाती है ।

चाय ( पु० )—कमाग, धनुष्, रत्न का  
अंश । [ तीव्र गति ।

चापल ( न० )—चपलता, चञ्चलता,  
चापल्य ( न० )—पूर्यवत् ।

चानर ( अस्त्री० )—चमरसृग के बालों  
से बनी हुई चोरी ।

चामरी [ न० ] ( पु० )—चोटा, अश्व ।

चामीकर ( न० )—धतूरा, स्वर्ण, सोना ।

चामुख ( स्त्री० )—दुर्गा का रूपभेद ।

चाम्य ( न० )—भोजन, खुराक ।

चाय् ( १३० )—देखना, अवलोकन कर-  
ना, पूछना ।

चार ( पु० )—गति, चलना, दहलना,  
कैदखाना, बेड़ी, जामूस ।

चारक ( पु० )—जामूस, खालिया, नेता,  
कैदखाना, बेड़ी, गति ।

चारण ( पु० )—पात्री, गवैया, माद,  
जामूस । [ अनुचरी ।

चारिका ( स्त्री० )—दासी, नौकरानी,  
चारित्र्य ( न० )—व्यवहार, कीर्ति,  
स्वभाव, कुलाचार ।

चारु ( वि० )—सूक्ष्मरस, मनोहर, पव-  
न्दीर्घ । न०—कु कुम ।

चारुदशन ( वि० )—प्रियदशन, मनोहर ।

चारुलोचन ( वि० )—मनोहर नेत्रों  
वाला ।

चार्य ( वि० )—चमड़े का बना हुआ ।

धार्मिक (वि०)-पुंल्लवत् ।

धार्वाक ( पु० )-वामसागंमत का  
आदि आचार्य ।

धार्वा ( स्त्री० )-प्रतिभा, शोभा,  
ज्योत्स्ना, कुबेरपत्नी, सुन्दर  
स्त्री ।

धाल -नम् ( न० )-हरकत, चलाना,  
चलनी नामक पात्र ।

धालनी (स्त्री०)-छाक, छलनी ।

धि (५, १८०)-इकट्ठा करना, एक-  
त्रित करना, तलाश करना ।

धिकित (वि०)-छात, समझा हुआ ।

धिकित्वक(पु०)-वैद्य, हकीम, मन्त्रा-  
लज । [औषध देना ।

धिकित्सन ( न० )-इलाज करना,

धिकित्सा(स्त्री०)-इलाज, रोगोपचार,  
औषधप्रयोग ।

धिकित्सित ( वि० )-इलाज किया  
हुआ, जिसने आरोग्य प्राप्त कर  
लिया हो ।

धिकिल (पु०)-कीचड़, कीच ।

धिकीर्षक ( वि० )-कटने की इच्छा  
वाला । [मूर्खी, लबाड़ि ।

धिकीर्षा ( स्त्री० )-कार्य की इच्छा,

धिकुर ( पु० )-धिर के बाल, सर्प,  
पर्वत । [न०-मुपारी ।

धिकृण (वि०)-चिकना, घमकदार ।

धिकृष (पु०)-नी का आटा ।

धिक्रि (पु०)-चूड़ा, मूषकी ।

धिक्षु (पु०)-कीचड़, कीच ।

धिष्ठा (स्त्री०)-इमली का पेड़, इमली  
का फल, चोटली का वृक्ष ।

चित् ( १० आ०, १५० )-देखना, अव-  
लोकन करना, जानना ।

चित् (स्त्री०)-मयाल, विचार, समझ,  
मन, आत्मा, ब्राह्मण ।

चित (वि०)-इकट्ठा किया हुआ, एक-  
त्रित, प्राप्त ।

चिता (स्त्री०)-देंर, समूह, मृतकदाह  
के लिये संक्षिप्त काष्ठनमूह ।

चितानि(पु०)-मृतकदाह की अग्नि ।

चिति(स्त्री०)-चेतना, समझ, चिता,  
देंर, सह, समूह ।

चित्त (न०)-सयाल, चेतना, मन, चिह्न,  
तर्कबुद्धि, विचार, चिन्तन । वि०-

इच्छित, दृष्ट, चिन्तित ।

चित्तकलित (वि०)-पूर्व से सोचा हुआ,  
आशंकित ।

चित्तन-भू (पु०)-कामैषणा, कामदेव ।

चित्तनाश (पु०)-चेतना का अभाव ।

चित्तिनिवृत्ति (स्त्री०)-सन्तुष्टि, खुशी  
प्रसन्नता ।

चित्तवान् [ वत् ] ( वि० )-बहुदय,  
मार्कलपसन्द, युद्धिमान् ।

चित्तविकार(पु०)-मनोभाव का बदलना

चित्तविशेष (पु०)-चित्तका दृष्टता ।

चित्तवृत्ति (स्त्री०)-मनोभाव ।

चित्तापकर्षक (वि०)-दिछ को खींचने  
वाला, मनोहर ।

चित्ताभोग (पु०)-दिछ का एक ही  
विषय पर लगना ।

चित्तासग (पु०) प्रेय,मुहुरत । [भक्ति

चित्ति(स्त्री०) धारणा, विचारणा, रूपाति,

चित्र ( वि० )-चमकीला, स्वच्छ,

रगविरंगा, विविध, विस्मयकर,  
विषय । पु०-यमभेद, अशोकवृक्ष ।  
न०-तस्वीर, आकाश, श्वेतकुष्ठ,  
विज्ञापकपत्रक वस्तु ।

चित्रकण्ठ (पु०)-कवूतर, पारावत ।

चित्रकर-कार (पु०)-मुसविर, तस्वीर  
बनाने वाला, अभिनयकर्ता ।

चित्रकूट (पु०)-प्रयाग के पास एक  
छोटी पहाड़ी । [नाम ।

चित्रगुप्त (पु०)-यशराज के मन्त्री का  
चित्रपट (पु०)-मूर्ति, तस्वीर ।

चित्रपांदा (स्त्री०)-मैना, सारिकापक्षी  
चित्रपृष्ठ (पु०)-खुटवहैया पत्ती । [शिव

चित्रभानु (पु०)-अग्नि, सूर्य, अकम्बल,  
चित्ररथ (पु०)-सूर्य, एक मन्धरांश

का नाम ।

चित्रल (वि०)-रंगविरंगा, चितकपरा ।

चित्रलेखा (स्त्री०)-एक अक्षरा, १८  
अक्षरों के बाद वाला एकप्रकार का  
उद्ग ।

चित्रविचित्र (वि०)-विविध प्रकार का,  
रगविरंगा ।

चित्रविद्या (स्त्री०)-मुसविर की हुनर  
चित्रशाला (स्त्री०)-मुसविर की दुकान ।

चित्रा (स्त्री०)-एक नक्षत्र का नाम, भाषा  
चित्रागद (पु०)-शान्तनु राला का

पुत्र, विविधदीप का भार ।

चित्राङ्गी (स्त्री०)-मशिट, कर्णजडीका,  
कामभलाई नामक जन्तु ।

चित्राटीर (पु०)-चन्द्रमा, चाँद ।

चित्रागवा (स्त्री०)-टपाशाल, सवेरा ।

चित्रिक (पु०)-चैत्रमास ।

चित्रिणी (स्त्री०)-स्त्रियों का एक भेद ।

चित्रित (वि०)-रंगविरग, लिखा हुआ,  
लिखा हुआ ।

चित्रोकरण (न०)-आश्चर्य, अवस्था ।

चिदाकाश (न०)-चैतन्यरूप आकाश  
अर्थात् ब्रह्म । [शक्ति ।

चिदात्मा (पु०)-परब्रह्म, विवेचना-

चिदाभास (पु०)-जीव, जीवात्मा ।

चिन्त (१० व०)-सोचना, विचारना,  
चिन्तन करना, याद करना ।

चिन्तन (न०)-विचारणा, धारणा,  
झिंक, गौरव ।

चिन्तनीय-व्य (वि०)-सोचने योग्य,  
विचारणीय । [खयाल, विचार ।

चिन्ता (स्त्री०)-सोचविचार, झिंक,  
चिन्ताकुल (वि०)-झिंक के कारण

घबराया हुआ ।

चिन्तातुर=चिन्ताकुल ।

चिन्तामणि (पु०)-पारसपथरी, एक  
कल्पितमणि कहते हैं कि जिस के  
सम्पर्क से छोटा मोटा ब्रमकाता है ।

चिन्तित (वि०)-सोचा हुआ, विचार  
किया हुआ ।

चिन्मय (न०)-चेतनशक्ति, परमात्मा ।

चिन्मात्र (न०)-पूर्ववत् ।

चिपिट (वि०)-चोड़ी नाक वाला ।

चिपु (पु०) क (न०)-ठोड़ी ।

चिर (वि०)-लम्बा, दीर्घकालीन ।

चिरकाल (पु०)-दीर्घकाल, लम्बा समय ।

चिरकालीन (वि०)-पुराना, बहुत

समय कर। [जीने वाला।  
चिरजीवी (वि०)—अनन्तकाल तक  
चिरजीव (वि०)—आयुमानु, बहुत  
समय तक जीने वाला।

चिरन्तन (वि०)—पुराना, बहुत कालका।  
चिरम् (अ०)—अधिक काल, देरी से।  
चिरात् (अ०)—देरी से, बहुत काल से।  
चिराय (अ०)—दीर्घकाल के लिये।  
चिरायुः [च] (वि०)—दीर्घजीवी,  
आयुमानु।

चिरि (पु०)—तोता, शुक, कीर।  
चिरेण (अ०)—देर से, धिलम्बपूर्वक।  
चिर्मंटी (स्त्री०)—ककड़ी, खीरा, छूट  
कचरा।

चिरल् (१प०)—बल्ल होना, धिधि-  
ल होना, ढीला पड़ना।

चिरल (पु०)—चील पत्ती। वि०—  
जिसकी आंख दुखती हों।

चिल्लका—ल्लिका (स्त्री०)—कन्दुक-  
क्रीडा, क्रिकेट का खेल।

चिल्लान्न (पु०)—गठकटा, चीर।

चिवि (पु०)—चिबुक। [लगाना।

चिह्न (१०उ०)—अंकित करना, निशान

चिह्न (न०)—निशान, अंक, मुहर,  
दाग, पताका, लक्षण।

चिह्नित (वि०)—अंकित, मुहरशुदा।

चीक् (१,१०प०)—बरदाश्त करना, छूना,  
आतुर होना।

चीत्कार (पु०)—चिल्लाहट, चीख  
पुकार, चीखना, चिघाड़।

चीन (पु०)—चीन नामक प्रसिद्ध देश,  
तागा, डोरा। न०—पतारका, ध्वजा,  
सीसा।

चीर (न०)—चीथड़ा, कपड़े का टुकड़ा,  
छाल, सीसा, चोटी।

चीर्ण (वि०)—किया हुआ, सम्पा-  
दित, अधीत।

चीव् (१, १०उ०)—पहरना, ढकना,  
पकड़ना, चमकना। [चोगा।

चीवर (न०)—चिपड़ा, संध्यासी का

चुक्रार (पु०)—थेर की दहाड़।

चुका (स्त्री०)—इमली का पेड़।

चुचि (पु०)—दूधी, स्त्रीस्तन।

चुंचु (वि०)—प्रसिद्ध, कीर्तित।

चुङ् (१, ६प०)—छिपाना, ढकना।

चुत्त (१प०)—चूना, टपकना।

चुइ (१० उ०)—जेजना, जँकना, प्रेरणा  
करना, प्रार्थना करना।

चुन्दी (स्त्री०)—कुटनी नायिका।

चुप् (१प०)—रेंकना, धीरे २ चलना।

चुसक (पु०)—ठोड़ी।

चुम्प् (१, १०उ०)—चूमना, बोसा लेना।

चुम्बः—म्बा (स्त्री०)—चूना, बोसा।

चुम्बक (पु०)—बोसा लेने वाला,

कानी पुरुष, ठग, अयस्कान्त

नणि, चुम्बक पत्थर।

चुम्बन (न०)—बोसा लेना, चूमना।

चुर् (१० उ०)—चुराना, लूटना।

चुरा (स्त्री०)—चोरी, चौरकर्म।

चुल् (१०प०)—ऊँचा करना, उठना,

उठाना, जोता लगाना। [हांडी।

चुलुक (पु०)—गहरी कीचड़, छोटी

चुल् (१प०)—हेलना, क्रीडा करना।

चुलुक (पु०)—हस्ताञ्जलि, हाथ की

अञ्जलि।

चुल्लि-लछी(स्त्री०)-अमीठी, चूल्हा ।

चुस्त (अस्त्री०)-कयाब, भुस्ती ।

चूचुक (न०)-स्त्री की दूधो, स्त्रीस्तन का अग्रभाग ।

चूहा (स्त्री०) चूहाकर्म संस्कार जिसमें बाल मुड़ाये जाते हैं, चोरी, कूप, शिरा, मयूरशिखा ।

चूहाकर्म (न०)-बोसह संस्कारों में से एक जो बालक के जन्म से पहिले या तीसरे वर्ष कराया जाता है ।

चूहामणि (पु०)-शिरोरत्न । वि०-सर्पोत्तम, सर्पोत्कट ।

चूत (पु०!)-आम्रवृक्ष, आम का पेड़, कामदेव के पक्षु बाणों में से एक, पर का दर्पणा । न०-गुदा, स्त्रीयोनि, कृषक ।

चूति (स्त्री०)-स्त्रीयोगि, गुदा ।

चूर्ण (१०३०)-पीसना, कुचलना, पीस कर राक करना ।

चूर्ण (पु०)-छहियामिही, चूना ।

स्त्री०-आटा, मैदा, पिंसी हुई धातु, राक । [त्रुणक ।

चूर्णकुम्भ (पु०)-देशगुच्छ, शलक,

चूर्णित (वि०)-टुटा हुआ, पिंसा हुआ, कुचला हुआ ।

चूट (पु०)-घाँट, पेश ।

चूटिना (स्त्री०)-चूटचूटगिया ।

चूप् (१५०)-पीना, चूमना ।

चूटव (न०)-चूटने योग्य पदार्थ, भोजन ।

चूत (६५०)-भारमायाधना, जोड़ना ।

चेट-ह (पु०)-खेवक, नौकर, दास ।

चेत[ दू ] (अ०)-अगर, यदि, अवर्ष, वधर्ष ।

चेतन (पु०)-जीवात्मा, परमात्मा, प्राणी । वि०-चेतनायुक्त ।

चेतना (स्त्री०)-समझ, बुद्धि, ज्ञान-शक्ति ।

चेतस् [ ] (न०)-चित्त, दिल, आत्मा ।

चेदि (पु०)-एक देश का नाम ।

चेल् (१५०) जाना, हरकत करना, कापना ।

चेष्ट (१ आ०)-चेष्टा करना, चल करना, हरकत करना, काम करना ।

चेष्टनम्-चेष्टा=चलन, पुष्पाय, हरकत, काम ।

चेष्टित (न०)-इच्छित, हरकत, वृत्ति ।

चेतन्य (न०)-आत्मा मन, जीवन, चेतनता, सहमूस करने की शक्ति । पु०-एक वैष्णवमुपाक का नाम ।

[सम्बन्धी ।

चेतिक (वि०)-गन सम्बन्धी, चित्त-

चैत्र (पु०)-एक चन्द्रमास का नाम जिस की पूर्णिमा चित्रानक्षत्र युक्त होती है, चैत का महीना ।

चैत्राय (न०)-चैत्र का उद्यान ।

चोप (न०)-चोपड़ा, छाल, बदली ।

चोद (वि०)-प्रेरक, प्रताप देने वाला ।

चोदन (वि०)-प्रेरक न०-प्रेरणा करना, आदेश, शासन ।

चोदना (स्त्री०)-प्रेरणा, प्रोत्साहन, आदेश ।

चोदित (वि०)-प्रेरित, शासित ।

घोर (पु०)-च राने वाला, स्तेय-  
(कर्ता, तस्कर ।

चौल (पु०)-दक्षिण में एक प्रदेश का  
नाम, तंजीर प्रान्त । न०-ऊपड़ा,  
घर ।

चौली (स्त्री०)-चासकट, अंगिया ।

चोप्य (वि०)-चूचने लायक, भक्ष्य ।

चौह [उ] (न०)-चूहाकर्म । वि०-  
शिक्षायुक्त ।

चौर (पु०)-चोर ।

चौर्य (न०)-चोरी, छिपावट, ठगी ।

चपवन (न०)-गति, गमन, नाश, हूचना,  
जुदाई । पु०-एक ऋषि का नाम ।

चु (१० प०)-घरदाश्त करना, हंसना ।  
(१ आ०) गिरना, हूचना, टपकना  
चूना, कन होना ।

च्युत (१ प०)-चूना, यहना, टपकना ।

च्युति (स्त्री०)-गिरावट, टपकना,  
खोया जाता, नष्ट होना, भय,  
गुदा । [ हसना ।

च्युत् (१० प०)-स्यागना, नारना,

च्युत (पु०)-आम का पेड़, आम्रवृक्ष ।

—०—

छ

ख (पु०)-ऊर्जन, धिमाग, टुकड़ा ।

न०-घर । वि०-अस्थिर, स्वच्छ ।

छग (पु०)-बकरा, अज ।

छगल (पु०)-बकरा, अत्रि ऋषि का नाम ।

छटा (स्त्री०)-दीप्ति, प्रकाश, चमक,  
पंक्ति, मलक ।

उत्र (न०)-छाता, छत्री ।

उत्रघर (पु०)-छत्री लगाने वाला ।

उत्रपति (पु०)-राजा जिसके ऊपर  
छत्र लगा रहता है, सम्राट् ।

उत्रमङ्ग (पु०)-राज्य का नाश, परा-  
धीनता, बंधन, बेकसी ।

उत्रिक (पु०)-उत्रघर ।

उत्तर (पु०)-लतागृह, कुल्लू, घर ।

उट् (१० उ०)-ढकना, परदा डालना,  
आच्छादित करना ।

उदन (न०)-ढक्कन, 'आच्छादन',  
झ्यान, पत्ती ।

उदपत्र (पु०)-भोजपत्र ।

उष [न्] (न०)-कपटवेध, धोखा,  
बहाना, घर की छत ।

उषतापन (पु०)-ऊपटी साधु ।

उष्मवेपी (पु०)-ठग, धुक्कपिया ।

उट् (१० उ०)-ढकना, प्रसन्न होना,  
यहकाना, खुश करना ।

उन्द (वि०)-मनोहर गुप्त । पु०-इच्छा,  
चाहना, मर्जी, अभिप्राय, विष,  
खुशी ।

उन्द [म्] (न०)-इच्छा, मर्जी, अभि-  
प्राय, धोखा, वेद, पद्य, उन्द-  
शास्त्र ।

उन्दोन (पु०)-सामवेद का गायक ।

उन्दोमङ्ग (पु०)-उन्दःशास्त्र के  
नियम का चरलघन ।

खल (वि०)-टका हुआ, छिपा हुआ,  
आच्छादित । न०-रहस्य ।

उमण्ड (पु०)-अनाथ, एकाकी ।

उद् (१ उ०)-वसन करना, क्री करना ।



खदः-नम्=वमन, फे, रोग ।  
 खल (अस्त्री०)-धोखा, फरेब, कपट,  
 यहाना, इरादा, यथ ।  
 खलाक (वि०)-खलिपा, कपटी ।  
 खलज (न०)-ठगड़े, धोखा ।  
 खल्लि-सली (स्त्री०)-खाल, यस्कल  
 मन्तान, लता ।  
 खलि (स्त्री०)-शोभा, कटा, कान्ति,  
 भङ्ग, सुन्दरता । [ काट्टप ।  
 खान (पु०)-यकरा, अन्न । न०-यकरी  
 खागिका (स्त्री०)-यकरी, अन्ना ।  
 खात (वि०)-हुमला, पतला, कमजोर,  
 विभक्त । [ न०-शहद का खता ।  
 खात्र (पु०)-जानिद, चेला, शिष्य ।  
 खाद (न०)-छत । [ पर्दा, कपड़ा ।  
 खादन (न०)-गुप्तीकरण, छद्मन,  
 खादनी (स्त्री०)-घमड़ा, स्वभा ।  
 खादित (वि०)-ढका हुआ, गुप्त ।  
 खादिक (पु०)-ठग, छली ।  
 खान्दस (पु०)-खेदपाटी ब्राह्मण ।  
 खाया (स्त्री०)-परछाई, प्रतिबिम्ब,  
 साया, समानता, शोभा, जपेरा,  
 रिश्वत, कान्ति, पक्षि, कृतार ।  
 खायाग्रह (पु०)-आयना, दर्पण ।  
 खायातनय (पु०)-शनेश्चर का  
 पोषक ।  
 खायापय (पु०)-पितरों का भाग ।  
 खायापय (वि०)-सायावाला, शीतल  
 [ युक्त ] ।  
 खायामान (पु०)-चन्द्रमा, चांद ।  
 खाल (अस्त्री०)-यस्कल, युक्त की  
 रचना, करकल ।

छि (स्त्री०)-नफरत, घृणा, धिक्कार ।  
 छिक्का (स्त्री०)-छोंक ।  
 छिद् (१ उ०)-काटना, छेदन करना,  
 काटना, अलग करना ।  
 छिद् (वि०)-समाप्त के अन्त में विभा-  
 जक और नाशक का बोधक  
 होता है ।  
 छिदक (न०)-हीरा, इन्द्रवज्र ।  
 छिदिर-छिदि (स्त्री०)-कुसहाड़ी,  
 छेदन ।  
 छिद् (१० उ०)-छेदना, भेदना, काटना  
 छिद् (न०)-मुरार, गदा, ऐश, दण्ड,  
 गर्त ।  
 छिद्रित (वि०)-मुरारदार, छिद्रयुक्त ।  
 छिन्न (वि०)-कटा हुआ, फाड़ा हुआ,  
 तोड़ा हुआ ।  
 छिन्नवस्त (वि०)-जिस का धार कट  
 गया हो, चढ़ ।  
 छिन्नमूल (वि०)-जड़ से कटा हुआ ।  
 छुछुन्दर (पु०)-अपने नामसे प्रसिद्ध पक्षी  
 छुट् (६ १० प०)-काटना ।  
 छुप् (६ प०)-छूना ।  
 छुर् (१ प०)-काटना, खीदना, छिलना ।  
 छुरा (स्त्री०)-चूना ।  
 छुरिका-छुरी (स्त्री०)-छुरी नामक एक  
 हलका हथियार ।  
 छेक (पु०)-पालतू जानवर, मधुमक्षिका  
 वि०-नागरिक, शहरी ।  
 छेत्ता [तृ] (वि०)-काटने वाला, छद्म  
 द्वारा, नाशकारी ।  
 छेदः-नम्=वमन, काटना, विभाग,  
 टुकड़ा, नाश ।

उद्दिष्ट (वि०)-काटा हुआ, छिन्न ।  
 उन्नयन (पु०)-उत्थान, अनाथ ।  
 उलक (पु०)-झरना ।  
 उ० (१५ प०)-काटना, कुतरना ।  
 उटिका (स्त्री०)-चुटकी ।

## ज

ज (पु०)-पिता, उत्पत्ति, विष, विजेता,  
 विष्णु, शिव, तेज़ी । वि०-मनास  
 के अन्त में 'उत्पन्न' अर्थ का  
 बोधक होता है ।

जल (२ प०)-पाना, हमना, भक्षण करना  
 जलन (न०)-भोजन, भक्षण, खर्च ।  
 जगत् (न०)-संसार, विश्व, भूमण्डल ।  
 पु०-वायु, हवा ।

जगत्प्राण-बल (पु०)-वायु, हवा ।  
 जगत्प्राणी (पु०)-सूर्य, परमात्मा ।  
 जगती (स्त्री०)-पृथ्वी, गाय, उन्दीभेद  
 मानवजाति । द्विपञ्च-पृथ्वी और  
 स्वर्ग ।

जगतीधर (पु०)-पर्यंत, पहाड़ ।  
 जगतीश्वर (पु०)-राजा, हाकिम ।  
 जगद् (पु०)-मेघक, अनुवर, सरतक ।  
 जगदम्बा (स्त्री०)-जगज्जननी, पर-  
 मेरवर ।

जगदादि (पु०)-परब्रह्म ।  
 जगदाधार (पु०)-परमात्मा, वायु, काल  
 जगदीश-पति (पु०)-परमात्मा, सर्वो-  
 त्तम देव ।

जगद्गुरु (पु०)-नारद, ब्रह्मा, विष्णु ।  
 जगद्गोत्री (स्त्री०)-जगत् का धारक

करने वाली शक्ति, परमात्मा ।  
 जगद्योनि (पु०)-पूर्ववत् ।  
 जगन् (पु०)-अग्नि, पञ्च । सम्भवतः यह  
 शब्द जुगन् [सद्योत] का भी  
 वाचक है ।

जगन्नाथ (पु०)-परमात्मा, विष्णु,  
 दत्तात्रेय, एक कविका नाम, पुरी  
 में एक मन्दिर का नाम ।

जगल (न०)-गोबर, कवच, मुराजेंद ।  
 जगध (वि०)-मलिन, खारा हुआ ।  
 न०-भोजन ।

जग्धि (स्त्री०)-भोजन, अन्न, खाद्य  
 पदार्थ । [अगला भाग, नाँप ।  
 जपन (न०)-चूतड़, अघःशरीर का  
 जपन्य (वि०)-अभितम, आगिरी,  
 निफुट, निन्दनीय, नीच ।

जङ्गल (वि०)-गतिशील, चलने वाला,  
 जिस का स्थानपरिवर्तन किया  
 जा सके, रुगावर का विरोधी ।  
 जङ्गल (न०)-मित्रता, यत्न, काड़ीदार  
 स्थान, एकान्तभूमि, मांस ।

जगुल (न०)-विष, जहर ।  
 जङ्घा (स्त्री०)-टांग का ऊपर का  
 भाग, पैर की गाँठ और पटने  
 के बीच का भाग, छात, नाँप ।

जंघाकारिक (पु०)-टूट, घाएक, दीड़ने  
 वाला ।  
 जंघाम (वि०)-तेज़ दीड़ने वाला,  
 शीघ्रगामी । पु०-हरिण ।

जङ् (२ प०)-लड़ना, युद्ध करना ।  
 जङ् (पु०)-चोटा, शिवाही । [जंघा भी  
 इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है] ।

जटा(स्त्री०)-बालों का गुच्छा, बनाना,  
आपस में जुड़े हुए बाल, वान-  
प्रस्थियों की शिखा, यक्षमूल,  
जता, शाखा, शतावरी ।

जटानूट ( पु० )-जटाओं का सघन,  
अनेक जटाएं ।

जटाधर(पु०)-साधु, तपस्वी ।

जटायु[स्] (पु०)-इसी नाम का एक  
। पक्षी जिसका रामायण में वर्णन  
आता है ।

जटाल(पु०)-बड़ का पेड़, गुग्गुलु ।  
वि०-जटा बांधा ।

जटि-टी-बड़ का पेड़, जटा, समूह ।

जटिल ( वि० )-जटाघाता, गड़बड़,  
गहरा, कटसाध्य, दिक्कतलक्ष्य ।

पु०-ब्रह्मचारी, तपस्वी, मिष्ट, भजा  
जटिलीभाष(पु०)-गड़बड़, अस्तव्य-  
स्तता ।

जटर(वि०)-घूटा, बंधाहुआ, कठोर ।  
अस्त्री०-पेट, शिकन, गंध, गन्त ।

जटराग्नि(पु०)-पेट की अग्नि, जटर-  
ज्वाला ।

जट(वि०)-मुस्त, गतिरहित, चेतना-  
रहित, दहरा हुआ । पु०-ठंड,  
कोहरा, मूर्खता । न०-जल, नीला ।

जडना(स्त्री०)-मुस्ती, अज्ञान, मूर्खता,  
कायरता ।

जडरव(न०)-पूर्ववत् ।

जडभरत(पु०)-विश्वित, पारंगत ।

जटु(न०)-साया, छाया ।

जटुका-जटुनी (स्त्री०)-विपनादर ।

जटु(ध्रुवा०)-पैदा होना, जन्म लेना,

उगना, संपदित होना ।

जन (पु०)-जीवधारी, अनुप्य, व्यक्ति,  
बंध, जाति ।

जनक (पु०)-पिता, उत्पादक, सीता  
के पिता का नाम । [पञ्चलिक ।

जनता (स्त्री०)-उत्पत्ति, लोकसमूह,

जनत्रा(स्त्री०)-छाता, उन्नी ।

जनन (वि०)-उत्पादक । पु०-परमा-  
त्मा । न०-उत्पत्ति, जन्म, जीवन,  
बीजा ।

जननि(स्त्री०)-माता, उत्पत्ति ।

जननी ( स्त्री० )-दया, कृपा, छाता,  
माता ।

जनपद (पु०)-जाति, नेशन, राज्य,  
आबाद मुलक, प्रदेश, जनसमूह ।

जनप्रवाद(पु०)-लोकापवाद, अकबाई,  
खदनामी ।

जनमेजय (पु०)-अर्जुन का प्रपौत्र,  
परीक्षित का पुत्र, चन्द्रवंशका एक  
राजा । [उत्पादक, जन्मदाता ।

जनपिता [त्] ( पु० )-पिता । वि०-

जनपित्रो(स्त्री०)-माता, जननी ।

जनरव(पु०)-अकबाई, लोकापवाद ।

जनवाद(पु०)-पूर्ववत् । [को जात ।

जन्मश्रुत (वि०)-प्रसिद्ध, भयंसाधारण  
जन्मश्रुति ( स्त्री० )-लोकापवाद, किं-  
वदती ।

जन्मवान (न०)-दुष्टक वन के एक  
कृषान का नाम ।

जन्मादेन(पु०)-कृष्ण, विष्णु का नाम ।

जन्मत्रय(पु०)-संसार ।

जनि-नी(स्त्री०)-पैदायश, उत्पत्ति,  
स्त्री, पुत्रवधू, माता ।

जनित(वि०)-उत्पन्न, संघटित ।

जनिता[त्] (पु०)-पिता, जन्मदाता ।

जनित्री(स्त्री०)-माता, जननी ।

जनु-नू(स्त्री०)-उत्पत्ति, पैदायश ।

जनुस्(न०)-पूर्ववत् ।

जन्तु (पु०)-ज्ञानदार, जीवधारी,

ज्ञानधर, जनुप्य ।

जन्तुमती(स्त्री०)-पृथिवी, भूमि ।

जन्म(न०)-उत्पत्ति, पैदायश ।

जन्म[न्] (न०)-पूर्ववत् ।

जन्मकृत(पु०)-पिता, जनक ।

जन्मक्षेत्र(न०)-जायपैदायश, जन्म-  
स्थान । [ दिन ।

जन्मतिथि (अस्त्री०)-उत्पत्ति का

जन्मपत्र-पत्री (स्त्री०)-उत्पत्ति के

समय यहाँ की चाल की देखकर

जो शुभाशुभ का बोधक फलपत्र

बनाया जाता है ।

जन्मभाषा(स्त्री०)-मातृभाषा ।

जन्मभूमि(स्त्री०)-जन्मस्थान, वतन ।

जन्मयोग(पु०)-जन्मपत्र ।

जन्मस्थान(न०)=जन्मभूमि ।

जन्महेतु(पु०)-उत्पत्ति का कारण,

जनक । [ योनि, पुनर्जन्म ।

जन्मान्तर(न०)-दूसरा जीवन, अन्य-

जन्माप(वि०)-जो जन्मा ही पैदा

हुआ हो ।

जन्माष्टमी (स्त्री०)-भाद्रपदकृष्ण

अष्टमी जिस दिन श्रीरुद्र का

जन्म हुआ था ।

जन्म(वि०)-उत्पन्न, संघटित, जन-

सम्बन्धी- गंवार, जातीय । न०-

उत्पत्ति, पैदायश, लोकापवाद ।

पु०-पिता ।

जप्(१ प०)-धीमे स्वर से उच्चारण

करना, मन मन में मोलना, गुन

गुन करना, जाप करना ।

जप(पु०)=जाप । [ पढ़ना ।

जपन (न०)-तन्त्र जपना, मार्गना

जम्[जन्म] (१ आ०)-मुंह काड़ना,

मुंह बाना, जन्माई लेना ।

जमदग्नि(पु०)-भृगुवंशज परशुराम

का पिता जिस की स्त्री का

नाम रेणुका था ।

जम्पती=दम्पती ।

जम्बाल(पु०)-काई, कीचड़, केवड़ा ।

जम्बालिनी(स्त्री०)-नदी, दरिया ।

जम्बु-म्यू(स्त्री०)-जामन का पेड़ ।

जम्बुक-म्यूक(पु०)-गोदड़, जामन,

जीव मनुष्य । [ मैं से एक ।

जम्बुखण्ड(पु०)-पृथ्वी के सात खण्डों

जम्भ(पु०)-जवाड़ा, दांत, टुफड़ा,

ठोड़ी, जम्माई, दैत्यविशेष ।

जम्भारारति(पु०)-इन्द्र ।

जम्भारि(पु०)-अग्नि, इन्द्र ।

जम्भिका जम्भा (स्त्री०)-जम्माई,

मुंह बाना ।

जय(पु०)-शत्रुओं का नाश, जीतना ।

जयद्रथ(पु०)-दुर्योधन का सहनोई,

जो सिन्धु देश का राजा था ।

जयन्त(पु०)-इन्द्र के एक पुत्र का नाम,

विष्णु, चन्द्रमा, शीम का नाम

जटा(स्त्री०)-बालों का गुच्छा, बनाना,  
आपस में जुड़े हुए घाल, वान-  
प्रस्थियों की शिखा, यक्षमूँछ,  
लता, शाखा, शतावरी ।

जटानूट (पु०)-जटाओं का सघड़,  
अनेक जटाएँ ।

जटाधर(पु०)-साधु, तपस्वी ।

जटापु[स्] (पु०)-इसी नाम का एक  
; पत्नी जिसका रामायण में वर्णन  
जाता है ।

जटारु(पु०)-घड़ का पेड़, गुग्गुलु ।  
वि०-जटा घाला ।

जटिः-टी-घड़ का पेड़, जटा, समूह ।

जटिल ( वि० )-जटावाला, गड़बड़,  
गहरा, कष्टसाध्य, दिक्कतलक्ष्य ।

पु०-ब्रह्मचारी, तपस्वी, सिद्ध, भक्त ।  
जटिलीभाय(पु०)-गड़बड़, अस्तव्य-  
स्तता ।

जठर(वि०)-घूटा, घंघाहुआ, फटोर ।

अस्त्री०-पेट, शिकन, गर्म, गर्त ।

जठराग्नि(पु०)-पेट की अग्नि, जठर-  
ज्वाला ।

जह(वि०)-मुस्त, गतिरहित, चेतना-  
रहित, ठहरा हुआ । पु०-ठह,  
कोहरा, मूर्खता । म०-जल, बीमा ।

जहता(स्त्री०)-मुस्ती, अज्ञान, मूर्खता,  
कायरता ।

जहत्त(म०)-पूर्ववत् ।

जहत्तरत(पु०)-विशेष, धागल ।

जतु(म०)-लाता, लाय ।

जतुका-जतुनी (स्त्री०)-पिमगादर ।

जम्(ध आ०)-वेदा बीजा, जन्म लेना,

उगना, संचटित होना ।

जन (पु०)-जीवधारी, मनुष्य, व्यक्ति,  
वंश, जाति ।

जनक (पु०)-पिता, उत्पादक, सीता  
के पिता का नाम । [पञ्चलिक ।

जनता (स्त्री०)-उत्पत्ति, लोकसमूह,

जनत्रा(स्त्री०)-छाता, छत्री ।

जनन (वि०)-उत्पादक । पु०-परमा-  
हन्ता । म०-उत्पत्ति, जन्म, जीवन,  
हीता ।

जननि(स्त्री०)-माता, उत्पत्ति ।

जननी ( स्त्री० )-दया, रुपा, छाता,  
भाता ।

जनपद (पु०)-जाति, नेशन, राज्य,  
आपाद मुल्क, प्रदेश, जनसमूह ।

जनप्रवाद(पु०)-लोकापवाद, अफवाह,  
बदनामी ।

जनमेजय (पु०)-अर्जुन का प्रपौत्र,  
परीक्षित का पुत्र, चन्द्रवंशका एक  
राजा । [उत्पादक, जन्मदाता ।

जनमिता [तु] ( पु० )-पिता । वि०-  
जनमित्री(स्त्री०)-माता, जननी ।

जनरथ(पु०)-अफवाह, लोकापवाद ।

जनवाद(पु०)-पूर्ववत् । [को ज्ञात ।

जन्मश्रुत (वि०)-प्रसिद्ध, सर्वसाधारण  
जन्मश्रुति ( स्त्री० )-लोकापवाद, किं-  
बदती ।

जन्मस्थान (म०)-दयहक जन के एक  
स्थान का नाम ।

जन्मार्दन(पु०)-कृष्ण, विष्णु का नाम ।

जन्मश्रम(पु०)-संराय ।

जनि-नी(स्त्री०)-पैदायश, उत्पत्ति,  
स्त्री, पुत्रवधू, माता ।

जनित(वि०)-उत्पन्न, संचटित ।

जनिता[त्] (पु०)-पिता, जन्मदाता ।

जनित्री(स्त्री०)-माता, जननी ।

जनु-जू(स्त्री०)-उत्पत्ति, पैदायश ।

जनुस्(न०)-पूर्ववत् ।

जन्तु ( पु० )-जानदार, जीवधारी,

जामवर, ननुष्य ।

जन्तुमती(स्त्री०)-पृथिवी, भूमि ।

जन्म(न०)-उत्पत्ति, पैदायश ।

जन्म[न्] (न०)-पूर्ववत् ।

जन्मकृत्(पु०)-पिता, जनक ।

जन्मक्षेत्र( न० )-जायपैदायश, जन्म-  
स्थान । [ दिन ।

जन्मतिथि( सस्त्री० )-उत्पत्ति का

जन्मपत्र-पत्री ( स्त्री० )-उत्पत्ति के

समय ग्रहों की चाल को देखकर

जो शुभाशुभ का बोधक फलपत्र  
बनाया जाता है ।

जन्मभाषा(स्त्री०)-मातृभाषा ।

जन्मभूमि(स्त्री०)-जन्मस्थान, वतन ।

जन्मयोग(पु०)-जन्मपत्र ।

जन्मस्थान(न०)=जन्मभूमि ।

जन्महेतु( पु० )-उत्पत्ति का कारण,  
जनक । [ योनि, पुनर्जन्म ।

जन्मान्तर(न०)-दूसरा जीवन, अन्य-

जन्मान्ध(वि०)-जो जन्मा ही पैदा  
हुआ हो ।

जन्माष्टमी ( स्त्री० )-माद्रपदकृष्ण  
अष्टमी जिस दिन श्रीकृष्ण का  
जन्म हुआ था ।

जन्म(वि०)-उत्पन्न, संचटित, जन-  
सम्बन्धी, गंवार, जातीय । न०-  
उत्पत्ति, पैदायश, लोकापवाद ।  
पु०-पिता ।

जप्(१ प०)-धीमे स्वर से उच्चारण  
करना, मन्त्र मन्त्र में बोलना, गुण  
गुण करना, जाप करना ।

जप(पु०)=जाप । [ पढ़ना ।

जपत् ( न० )-मात्र जपना, प्रार्थना

जम्[जम्भ] (१ आ०)-मुंह फाड़ना,  
मुंह धाना, जम्भाई लेना ।

जम्दग्नि( पु० )-भृगुवंशज परशुराम  
का पिता जिस की स्त्री का  
नाम रेणुका था ।

जम्पती=दम्पती ।

जम्बाल(पु०)-काई, कीचड़, केवड़ा ।

जम्बालिनी(स्त्री०)-नदी, दरिया ।

जम्बु-ज्यू(स्त्री०)-जामन का पेड़ ।

जम्बुक-ज्यूक( पु० )-गोदड़, जामन,  
जीव ननुष्य । [ में से एक ।

जम्बुखण्ड(पु०)-पृथ्वी के सात खण्डों

जम्भ(पु०)-जवाहर, दात, टुकड़ा,  
ठोड़ी, जम्भाई, दैत्यविशेष ।

जम्भाराति(पु०)-इन्द्र ।

जम्भारि(पु०)-अग्नि, इन्द्र ।

जम्भिका जम्भा ( स्त्री० )-जम्भाई,  
मुंह धाना ।

जय(पु०)-शत्रुओं का नाश, जीतना ।

जयद्रम(पु०)-दुर्योधन का बहनोई,  
जो सिन्धु देश का राजा था ।

जयन्त(पु०)-इन्द्र के एक पुत्र का नाम,  
विष्णु, चन्द्रमा, भीम का नाम

जो उसने विराट के यहां धारण किया था, शिव ।

जयन्ती (स्त्री०)—पताका, उत्पन्न जैसे रजतजयन्ती, स्वर्णजयन्ती ।

जयपत्र (न०)—जीत का लेख, वह दस्तावेज जिस में विजेता की जीत स्वीकार की गई हो, अश्व-मेध में घोड़े के मस्तक पर जो पत्र बांधा जाता था ।

जयपाल(पु०)—ब्रह्मा, विष्णु, राजा, जमालगोटा । [ जयन्ती ।

जंघा(स्त्री०)—हरीतकी, आंग, कबड़ी, जंठ(वि०)—कठोर, कर्कश, सखील, जीर्ण ।

जरत(वि०)—बूढ़ा, बूढ़ा, दुर्बल ।

जरद्वज(पु०)—बूढ़ा बैल, पशुतन्त्र में एक गिह का नाम ।

जरन्त(पु०)—महिष, भैंसा । वि०—विपिल, ढीला । [ वस्था ।

जरा(स्त्री०)—बुढ़ापा; कमजोरी, बूढ़ा-जरायु(न०)—सांप की केंचुली, जेल, किरली ।

जरायुज(वि०)—किरली से उत्पन्न ।

जर्च्(१, ६ प०)—कहना, बोलना, धमकाना । [ क्षत ।

जर्जर(वि०)—पूढ़ा, कमजोर, श्रान्त, जर्जरित(वि०)—पूछंछत ।

जल(१ प०)—ढकना, परदा डालना, घेरना, टंढा होना; अमीर बनना ।

जल(न०)—पानी, पेय, द्वीपेर मानक शुग्निधद्रव्य, पूर्वापादा ।

जलक(न०)—पोंपा, शंख ।

जलकण्टक(पु०)—मगर, नाका ।

जलकुन्तल(पु०)—काई ।

जलक्रीडा(स्त्री०)—जल में खेलना, दिलबहलाना । [ देना ।

जलक्रिया(स्त्री०)—पितरों को जल जलङ्गन(पु०)—चायहाल ।

जलधर(वि०)—पानी में रहने वाला । पु०—मछली, जलजन्तु ।

जलजन्तुका(स्त्री०)—जलीका, जौंक । जलजीवी(पु०)—मछेरा, धीवर ।

जलतरंग(पु०)—लहर ।

जलत्रा(स्त्री०)—जाता, उत्तरी ।

जलद(पु०)—बादल, मेघ ।

जलधर(पु०)—समुद्र, सागर, बादल ।

जलधार(स्त्री०)—पानी का सेता, बहता हुआ पानी ।

जलधि(पु०)—समुद्र, सागर ।

जलनिधि(पु०)—पूर्ववत् ।

जलगर्भ(पु०)—पानी बहने का स्थान, नाली ।

जलपात्र(न०)—जल पीने का बर्तन ।

जलपूर(पु०)—बाढ़, पानीका चढ़ाना

जलप्रलय(पु०)—बाढ़ से नाश ।

जलप्रायन=जलपूर ।

जलभूत(पु०)—बादल, घड़ा, कपूर ।

जलभाग(पु०)—पानी निकलने का रास्ता, नाला ।

जलमुक्-च्(पु०)—बादल, मेघ ।

जलयन्त्र (न०)—पानी खेंचने की मशीन; याटरवक्सा ।

जलराशि(पु०)—समुद्र, सागर ।

जलवाह(पु०)—बादल, जल लेजाने

वाला, कहार ।

जलाका-लूका, ठोका(स्त्री०)--जोंक ।

मलाञ्जलि(पु०)--अल्लुलि में जल भरना ।

जलाघार(पु०)--समुद्र, झील, हीज ।

जलाणव(पु०)--बर्षाकाल ।

जलाशय(पु०)--तालाब, झील, समुद्र ।

जलेबाह ( पु० )--गोतेगोर, गोता

लगाने वाला ।

जलोदर(न०)--एक प्रकार का रोग

जिस में पेट की भरी में पानी

भर जाता है ।

जलम् (१ पु०)--पार्ले करना, तारीफ

करना, कानाफूसी करना ।

जल्प(पु०)--बाणी, यातचीत, काना

। फूसी, यहल, मुयाहिसा ।

जल्पक(वि०)--घातूनी ।

जल्पन(न०)=जल्प ।

जव(पु०)--वेग, लोर, तेजी ।

जवन(पु०)--तेज छोड़ा । न०--तेजी,

जलदवाजी ।

जवनिका(स्त्री०)--पर्दा, कनात । [जवनी

भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है] ।

जवम (पु०)--पास ।

जस्(१० पु०)--भारना, अपमान करना ।

४१०--मुक्त करना, पकना, त्यागना ।

जस्र (न०)--पकावट, पकान ।

जहामक (पु०)--संसार का अत्यन्त नाश

वा ( स्त्री० )--माता, देवरानी या

बेटाभी, जाति ।

जागर (पु०)--जागृति, जागना । वि०-

सावधान, जागता हुआ ।

जागरण (न०)--जागना, सावधानी,

निद्रा का अभाव ।

जागरित (वि०)--जागा हुआ । न०-

जागरण ।

जागरूक(वि०)--निद्रारहित, सावधान,

जागरणशील ।

जागू(रप०)--जाना, न सोना, नींद से

उठना ।

[अप्रसन्न ।

जापत्त (वि०)--जागता हुआ, सावधान,

जागल (वि०)--जंगली, मंदार, प्रवृत्ति ।

न०--मनमांस, मांस ।

जांगुलिक (पु०)--विषवेद्य, सर्प काटे

की भीषण करने वाला ।

जाह्य (वि०)--उदासीनता, मन्दता,

सर्दी, लाड़ा ।

जात(न०)--जन्तु, जीव, उत्पत्ति, वृद्धा

वि०--उत्पन्न, संघटित, प्रत्यक्ष ।

पु०--पुत्र ।

जातक (पु०)--सद्य उत्पन्न बालक,

जातकर्म, मिथारी । वि०--उत्पन्न

जातकर्म (न०)--पुत्रजन्म के समय का

कतंव्य संस्कारविशेष ।

जाता (स्त्री०)--पुत्री ।

जाति (स्त्री०)--उत्पत्ति, पैदायश, लीम,

थर्ष, फोटि, चूल्हा, एक अलंकार ।

जातिब्राह्मण (पु०)--जो केवल जाति

से ब्राह्मण ही अर्थात् अपने कतंव्य

का पालन न करता हो ।

जातिभूट (वि०)--जाति से बाहर,

जाति से च्युत ।

जातिघेर(न०)--स्वाभाविक शत्रुता ।

जातिहीन (वि०)--जातिच्युत, नीच-

यशज ।



जातीय(वि०)--जातिमन्धन्वी, स्वजा-  
तीय, एक जातिका, कीमो, नेत्रमल।

जातु (अ०)--शायद मुमकिन, कदा-  
चित्, एकदा, कभी किसी समय  
जातू (पु०)--वज्र । [ सगोत्रीय ।

जात्ये (वि०)--कुलीन, श्रेष्ठ, खानदानी,  
जात्यन्ध (वि०)--जन्मान्ध, जो अंधा  
जन्मा हो ।

जानकी(स्त्री०)--जनकपुत्री, रामप्रिया  
सीता ।

जानपद(पु०)--ग्रामीण, गंधार, ग्राम  
से प्राप्त कर आदि ।

जानपदी(स्त्री०)--करोदार, पेशा ।

जानु(न०)--पुटना, गोडा, जाघ और  
पैर के बीच का भाग ।

जाप (पु०)--मन्त्रोच्चारण, मन २ में  
किसी बात को दोहराना, धार २  
व्यारण । [का नाम ।

जायाल (पु०)--अजाजीवी, एक ऋषि

जायालि(पु०)--एक ऋषि का नाम ।

जामा(स्त्री०)--पुत्री, पुत्रयधु ।

जामाता [त] (पु०)--दामाद, पुत्री का  
पति, स्वामी, जमाई ।

जामि ( स्त्री० )--कुल स्त्री, पुत्री,  
भगिनी, पुत्रयधु ।

जामेय(पु०)--भार्या, यहीन का पुत्र ।

जाम्यवान् [वत्] (पु०)--श्रेष्ठराज  
जिध का रामायण में वर्णन  
आता है ।

जाम्यूनद (न०)--स्वर्ण, मोना, धतूरा ।

जाया (स्त्री०)--पत्नी, भार्या ।

जायाजीध(पु०)--धेरया का पति-नट ।

जायापती(पु०द्विव०)--पति और पत्नी,  
दम्पती ।

जायु (पु०)--औषध, दवाई, भेषज ।

जार (पु०)--उपभिक्षारी, आशना, यार-  
उपपति ।

जारज-जात ( पु० )--उपभिक्षार से  
उत्पन्न पुत्र ।

जारिणी (स्त्री०)--उपभिक्षारिणी ।

जाल ( पु० )--कदम्बवृक्ष । न०--अपने  
नाम से प्रसिद्ध वस्तु, खिड़की,  
गवाह, जादू, छल, चतूरीग ।  
जालकारक (पु०)--मकड़ी, जाल बना-  
ने वाला ।

जालमाया (स्त्री०)--कवच, लोहवस्त्र ।

जालिक (पु०)--मछेरा, सट्याद, जादू-  
गर, मकड़ी, धीवर । [ नगर ।

जालन्धर (पु०)--पनाब में एक प्रसिद्ध

जालम (पु०)--ठग, बदमाश, निर्धन ।  
वि०--क्रूर, अदूरदर्शी ।

जायन्म (न०)--शीघ्रता, तीव्रता ।

जायाल (पु०)--एक ऋषि का नाम ।

जाहूवी(स्त्री०)--गङ्गानदी का वाचक ।

जि ( १ प० )--जीतना, हराना, ना-  
लिय आना ।

जिगीया (स्त्री०)--जीतने की इच्छा ।

जिगीयु(वि०)--जीतनेकी इच्छावाला ।

जिघत्सा (स्त्री०)--खाने की इच्छा ।

जिघासा (स्त्री०)--भारने की इच्छा-  
बदला लेने की वृत्ति ।

जिघामु ( वि० )--भारने का इच्छुक,  
सुरवार ।

जिज्ञासा (स्त्री०)—ज्ञानने की इच्छा,  
कौतूहल, तलाश ।

जिज्ञासित (वि०)—गवेषित, जाना हुआ ।

जिज्ञासु (वि०)—ज्ञानने का इच्छुक ।

जित (वि०)—जीता हुआ, पराभूत ।  
ग०—जीत ।

जित्य (वि०)—जीतने के योग्य ।

जिन (पु०)—युद्ध, जैनतीर्थङ्कर, यदुपुरुष

जिनेन्द्र (पु०)—जैनअर्हन्त, जैनों का  
सर्वोत्तम उपास्यदेव ।

जिष्णु (वि०)—विजयी । पु०—सूर्य, इन्द्र,  
विष्णु, अर्जुन ।

जिष्वाजिघ (पु०)—चकोर पक्षी ।

जिह्वा (वि०)—मन्द, कुटिल, क्रूर, तिरछा  
न०—वेईमानी, कुटिलता ।

जिह्वा (वि०)—छालपी, गुप्त, चटोरा ।

जिह्वा (स्त्री०)—जीभ, रसनेन्द्रिय,  
रसना, ज्ञान ।

जिह्वामूलीय (पु०)—जिह्वा की मूल से  
जिन शब्दों का उच्चारण होता है,  
जैसे — क — ख से पूर्व अर्ध  
विसर्ग ।

जिह्वारद (पु०)—पत्नी, परिन्द ।

जीति (स्त्री०)—जय, विजय, फ़तह,  
पराभव ।

जीने (पु०) यमहे का बना हुआ  
वस्त्र । वि०—पुराना, बूढ़ ।

जीमूत (पु०)—पर्वत, यादल, इन्द्र,  
देवदातृ वृत्त ।

जीर (वि०)—छोटा, अल्प । पु०—अमि,  
तलवार । [पु०—जीरा ।

जीर्ण (वि०)—कटा हुआ, पुराना, बूढ़ ।

जीर्णोद्धार (पु०)—किनी टूटी फूटी  
इमारत की फिर से मरम्मत  
कराना, संस्कार ।

जीर्वि (पु०)—कुठार, पशु, काया ।

जीव् (१ पु०)—जीना, प्राण धारण  
करना । [प्राणी ।

जीव (पु०)—आत्मा, चेतनशक्ति, ब्रह्म,

जीवक (पु०)—श्रीपथविशेष । वि०—  
जीवी, मेधक ।

जीवद (पु०)—वेद्य, जीवनदाता ।

जीवन (न०)—जिम के सहारे से जीते  
हैं, जीविका, वृत्ति, जल, छाती  
पी । पु०—जीवकौषध, घात ।

जीवनक (न०)—अथ, जीवन का सहारा ।

जीवनहेतु (पु०)—जीवन का कारण  
जैसे धित्य, याणिउप, कृपि ।

जीवनाघात (न०)—विप, बृहर ।

जीवनिता (स्त्री०)—हरीतकी, हैड़ ।

जीवनी (स्त्री०)—जीवन्ती, जीवगयन्त्रि,  
सवानेवन्ती ।

जीवन्तिता-न्ती (स्त्री०)—गुहूषी,  
मिलोय, हरीतकी ।

जीवन्मुक्त (पु०)—जिबने पथरीर परमा-  
नन्दको पा लिया, जिने आत्मा-  
नुमय कर लिया, ईश्वर की  
साक्षात्कार करने वाला ।

जीवन्दिन (न०)—शरीर, देह ।

जीवस्थान (न०)—नर्मस्थल, जहां पर  
चोट लगने से प्राणपरेक उड़ जाय ।

जीवात्मा (पु०)—देहाभिमान जीव ।

जीविका (स्त्री०)—वृत्ति, जीवन,  
जीवनाचार, रोजी, कारोबार ।

जीवित (न०)-जीवन, जान । वि०-  
जीता हुआ ।

जीवितेश (पु०) यशराज का घोषक ।

जीवी[न] (पु०)-प्राणी, जीवपारी ।

जू (१प०)-येग से बहना, जोर से  
चलना ।

जुग (१प०)-[इदित]-स्वागना, छोड़ना ।

जुगुप्सनम्-रसा ( स्त्री० )-निन्दा,  
सुराई ।

जुटक (न०)-जुटा, केशगुच्छ ।

जुटिका (स्त्री०)-शिखा, छोटी, बचे  
हुए घाल । [करना ।

जुह् (५ प०)-जाना, याचना, गमन

जुस ( १ भा० )-चमकना, दोसिनाग्न  
होना ।

जुल् (५प०)-जाना, गमन करना ।

जुल् (१०प०)-पीसना, कुचलना, रग-  
हना ।

जुप् (५भा०, १प०)-सुध होना, हृयं  
मानना, प्रसन्न होना ।

जुष्ट ( न० )-जूठा, उच्छिष्ट, सेवन  
को हुई वस्तु । [दद्य ।

जुहुवान् (पु०)-गग्नि, यज्ञ, कठोर-  
श ( ए० )-प्राकाश, सरस्वती,  
विद्यापी ।

जुति (१०)-येग, जोर, शीघ्रगतिता ।

जुधिं सि (स्त्री०)-येग, ऊपर, ताप ।

जुप् (१३०) मारना, बध करना ।

जुष (न०)-मुद्ग आदि द्राघरस, बाटे  
का रस, घृत ।

जृम्-जृम् ( १भा० ) मुह यात्रा, मुह  
खोलना, जभाई लेना ।

जृम्भ-जृम्=जभाई, मुखविकाश,  
मुह खाना ।

जृम्भा-म्भिका (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

जू (५ प०)-जूड़ा होना । [हमन्द ।

जेता [तृ] (वि०)-जीतने वाला, फत-

जेमन (न०)-भोजन, भक्षण, पूराक ।

जेय (वि०)-जीतने योग्य ।

जै (१प०)-नष्ट होना, क्षय को प्राप्त  
होना । [पु०-पारा ।

जैत्र ( न० )-औषध । (वि०)-जैता ।

जैन (पु०)-जिनधर्मावलम्बी, बुद्धानु-  
यायी, अर्हत् का उपासक ।

जैमिनि-नी ( पु० )-उपास का एक  
शिल्प ।

जैवात्क (पु०)-कर्पूर, चन्दना, औषध ।  
वि०-दीर्घायु, कृम ।

जैह्म्य (न०) कुटिलता, जित्पता ।

जोषम् (भा०)-पुष, तूष्णीम् ।

जोषिता ( स्त्री० )-घोषित, नारी,  
जीरल ।

ज (पु०)-युध, परिहृत, प्रह्ला ।

जप् (१०प०)-मतलाना, मारना, प्रकट  
करना, प्रसन्न करना ।

जपित (वि०)-घापित, मारा गया,  
घात किया गया ।

जप्ति (स्त्री०) युद्धि, अकल ।

ज्वा (८प०)-ज्वरना, समानता, अव  
गत करना । [ अवगत ।

ज्वात ( वि० )-जाना हुआ, विदित,  
प्रातः ( वि० )-प्राप्तने योग्य समय,  
योग्य । [घाला, शास्त्र ।

ज्वातविद्वान्त (पु०)-विद्वान्त का ज्ञान

ज्ञाता[त्] (वि०)-ज्ञानशील, विदुर,  
ज्ञानने वाला ।

ज्ञाति (पु०)-जाति, सगोत्रज, एक-  
वंशीय, बिरादरी, स्वजन, पांचव ।

ज्ञान (न०)-ज्ञाननर, बुद्धि, समझ,  
ज्ञानकारी । [का उपाय ।

ज्ञानयोग (पु०)-ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति  
ज्ञानी[त्] (पु०)-दैवज्ञ, ज्ञानने वाला,

तत्त्वज्ञानी, ज्योतिषी, समझदार ।  
ज्ञानेन्द्रिय (न०)-जिम इन्द्रिय के

द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाय;  
अन्तःकरण, मन, आंख, कान,

नाक, जिह्वा और त्वचा ये पांच  
ज्ञानेन्द्रिय कहलाती हैं ।

ज्ञापन (न०)-घोषन, ज्ञानाना, बतलाना ।  
ज्ञेय (वि०)-ज्ञानने योग्य, ज्ञातव्य ।

ज्या (८ प०)-बूढ़ा होना ।  
ज्या (स्त्री०)-धनुष का बिलछा, भीर्वा,

प्रत्यक्षा, माता, समुधा । [हानि ।  
ज्यानि (स्त्री०)-जीर्णता, सुढ़ापा,

ज्यु (१ भा०)-ज्ञाना, मनन करना ।  
ज्येष्ठ (वि०)-बड़ा, बृह, श्रेष्ठ, अग्रज ।

पु०-बड़ा भाई, वैशाख के पञ्चात  
जाने वाला मास ।

ज्येष्ठा (स्त्री०)-यही बहिन, गया, १८  
वां नक्षत्र ।

ज्येष्ठामूलीय (पु०)-ज्येष्ठ मास ।  
ज्येष्ठाश्वी[त्] (वि०)-गृहस्थी, क्योंकि

गृहस्थ सब आश्वी में श्रेष्ठ कहा  
गया है ।

ज्यैष्ठ्य (न०)-बृहस्पति, बड़ा होना ।  
ज्योक् (अ०)-अव, इम धनप, सम्प्रति,

बल्दी । [प्रकाश, अग्नि, सूर्य ।  
ज्योतिः [स्] (न०)-दृष्टि, नक्षत्र,

ज्योतिरिग (न०)-खद्योत, जुगनु ।  
ज्योतिर्विद् (पु०)-ज्योतिषशास्त्र की

ज्ञानने वाला ।  
ज्योतिर्वीज (न०)-खद्योत, जुगनु ।

ज्योतिषचक्र (न०)-सत्ताईस नक्षत्रों  
वाला राशिचक्र ।

ज्योतिष (न०)-एक वेदाङ्ग जिस में  
आकाश के ग्रहों के सम्बन्ध का

ज्ञान वर्णित है । [ज्ञानने वाला ।  
ज्योतिषी (पु०)-ज्योतिषशास्त्र के

ज्योतिषी (पु०)-एक यज्ञ जिसमें  
१६ पुरोहित बैठते हैं ।

ज्योतिष्मत् [मान्] (वि०)-दीप्तिमान्,  
चमकीला, प्रकाशयुक्त ।

ज्योतिष्मती (स्त्री०)-मालकंगनी नामक  
जता, निशा, रात्रि । [जीमुदी ।

ज्योत्स्ना (स्त्री०)-चन्द्रिका, चांदनी,  
ज्योत्स्नामिष (पु०)-चबोरपत्नी ।

ज्योतिषिक (पु०)-दैवज्ञ, ज्योतिषी ।  
जि (१ प०)-दयाना, तिरस्कार करना ।

जी (१० उ०, ८ प०)-बूढ़ा होना, जीर्ण  
होना, यथोक्त होना ।

ज्वर (१ प०)-रोगी होना, आतुर होना ।  
ज्वर (पु०)-जुझार, ताप, देहोष्णता,

झुझार की गर्मी, रोगविशेष ।  
ज्वरघ्न (पु०)-मिलोय, गुहूची, ज्वर-

नाशक औषध ।  
ज्वरान्तरु (पु०)-ज्वर का नाश करने

वाला रस ।  
ज्वरित (वि०)-बुखार, बड़ा हुआ ।

ज्वल (१५०)-घमकना, दीप्तिमान् होना  
ज्वलना (स्त्री०)-अग्निशिखा ।

ज्वलन (पु०)-अग्नि, चित्रक वृक्ष । न०  
दाह, दहन, दीप्ति, जलन ।

ज्वलनाशना[न] (पु०)-सूर्यकान्तमणि,  
दूरज का पत्थर, आतशी शीशा ।

ज्वलित (वि०)-प्रदीप्त, प्रकाशमान,  
धमकोला । [छपट ।

ज्वाला (स्त्री०)-अग्निशिखा, आग की  
ज्वालानिहु (पु०)-अग्नि, आग ।

ज्वालामुखी (स्त्री०)-पर्वतविशेष  
जिस में से आग निकलता करती  
है, क्रोह आतिशयिणी ।

## झ

झ (पु०)-झकाघात, झुन्द, ध्वनि ।

झगति-गिति (अ०)-शीघ्र, जल्दी,  
झटिति, तुरन्त ।

झकार (पु०)-भीरे आदि का शब्द,  
गूँगने की आवाज़ ।

झका (स्त्री०)-तीव्रवायु, तेज हवा,  
आधी, ध्वनिविशेष ।

झकाघात (पु०)-आधी, तीव्रवायु ।

झट (१५०)-झट्टा होना, एकत्रित होना ।

झटि (पु०)-छोटा चेह ।

झटिति (अ०)-शीघ्र, जल्दी, झटपट ।

झति (अ०)-पूर्यवत् ।

झलझकार (पु०)-झकार की आवाज़,  
आभूषणों का घञना, झमझम

का शब्द । [कम्पातपतन ।

झम्प (पु०)-घलपूर्यक गोथे की गिरना,

कम्पाक (पु०)-धानर, यन्दर ।

कम्पी [न] (पु०)-धानर, यन्दर ।

कम (पु०)-निर्झर, झरना, जलप्रवाह ।

करा-री (स्त्री०)-पूर्यवत् । [करना ।

कर्य-छं (६५०)-फिड़कना, भ्रष्ट करना

कर्मर (पु०)-एक प्रकार की ध्वनि

जो ढोल या बाजा घनाते समय

निकलती है ।

कर्मरक (पु०)-कलियुग, नदविशेष ।

कर्मरा (स्त्री०)-वेश्या, चाराङ्गना ।

कला (स्त्री०)-कन्या ।

कल्ल (पु०)-एक वर्णसङ्कर जाति,

भांड, प्रहासक, नक्काल ।

कल्लक (न०)-सजीरा नामक वाद्य-

मेद, कांसे के बने करताक्षक ।

कल्लकवट (पु०)-कवूतर, पारावत ।

कप (१५०)-मारना, बध करना ।

(१५०)-लेना, ग्रहणकरना, ठकना ।

कप (पु०)-मछली, मत्स्य, धूप, गर्मी,

ताप, भीनराशि ।

कपकेतन-केतु (पु०)-जिसकी ध्वजा

में मत्स्य का चिन्ह हो, कामदेव,

मदन ।

कपाङ्क (पु०)-अनिरुद्ध, कन्दर्प ।

काट (पु०)-कान्तार, निकुञ्ज, चाप

आदि का धोना ।

काटा-टिका (स्त्री०)-भूम्यामलकी ।

कामक (न०)-अतिदृग्घ ईंट अर्थात्

कामा, कया ।

कावु-क (पु०)-काक नामक वृक्ष,

काही का मेद ।

कमिनी (स्त्री०)-उल्हा, पृथ्वीविशेष ।

क्रिस्तिम ( पु० )—दात्राग्नि, वनाग्नि ।

क्रिम्भी—क्रिरिका—क्रिरी ( स्त्री० )—

क्रिलली, पतली छाल ।

क्रिल्लिका—क्रिलली ( स्त्री० )—फोंगर,  
कीटविशेष ।

क्रु ( १ आ० )—जाना, गमन करना ।

क्रुष्ट ( पु० )—क्राष्टी, गुल्म ।

क्रोड ( पु० )—गुवाफ नामक वृक्ष ।

## ज

ज—वर्ण का पञ्चम अक्षर । पु०—शुक,  
तोता, गामन, बैल, घघरध्वनि ।

## ट

ट—वर्ण का प्रथम अक्षर, ग्यारहवा  
व्यञ्जन । ( पु० )—घीना, खर्ब,  
बामन, पैर, चुपचाप, निस्स्वन ।  
न०—ऊरक, टकार ।

टक् ( १० प० )—घाघना ।

टगर ( पु० )—सुहागे का तार ।

टंक ( पु० )—कीप, भसि, म्यान, चार  
साथे की भाप, जवा, अहकार,  
दुर्ग ।

टंकक ( पु० )—रूपया, सुद्रा, टकमान ।

टंककपति ( पु० )—टकवाल का  
अध्यक्ष । [ का घर ।

टंककशाला ( स्त्री० )—रूपया ढालने

टंकण ( पु० )—सुहागा, क्षारविशेष ।

टका ( स्त्री० )—जघा ।

टकार ( पु० )—धनुष पर बना चढ़ाते  
समय जो ध्वनि निकलती है, वि-  
स्मय, आश्चर्यध्वनि ।

टंग ( अस्त्री० )—टांग, जंघा, कुदाल,  
यन्त्र । पु०—सुहागा । [ तार ।

टंगण(अस्त्री०)—सुहागा नामक प्रसिद्ध

टा ( स्त्री० )—पृथिवी, जमीन ।

टार ( पु० )—छंग, तुरंग ।

टिक् ( १ आ० )—जाना, गमन करना,  
चलना ।

टिटिभक ( पु० )—टिटिभ ।

टिटिभ—भक ( पु० )—पक्षिविशेष,  
टिटोहरी, टी टी करने वाला  
जानवर ।

टिप् ( १० प० )—प्रेरणा करना,  
बलाना, प्रेरना । [ बीट ।

टिप्पनी ( स्त्री० )—टीका, व्याख्या,

टीका ( स्त्री० )—व्याख्याग्रन्थ,  
व्याख्यान, विस्तारपूर्वक कथन ।

टुटुक ( वि० )—क्रूर, शठ, नीच ।

टोरक ( वि० )—तिरछी निगाह वाला,  
केदर, सकलसु ।

## ठ

ठ—वर्ण का दूसरा अक्षर । पु०—धिव,  
चन्द्रमण्डल, महाध्वनि, शून्य ।

ठक्कुर ( पु० )—देवता, ढाकुर, देव-  
भूर्ति, ब्राह्मण की उपाधि ।

ठेर ( पु० )—बूढ़, बूढ़ा ।

## ड

ड—वर्ण का तीसरा अक्षर । पु०—  
धाहवानठ, भय, धिव, ध्वनि ।

हप् ( १० आ० )-इकट्ठा करना, ढेर लगाना ।

हम ( पु० )-होम, मंगी, अन्त्यज ।

हमर ( पु० )-दंगफिसाद, कोलाहल ।

हमरु ( पु० )-एक प्रकार का चाद, जो इसी नाम से प्रसिद्ध है ।

हयन ( न० )-चहान, ऊर्ध्वगति, पालकी ।

हम्भ ( १० व० )-जैकना, आदेश करना, देखना, भोजना ।

हम्भर ( पु० )-समूह, निरोह, आह्वय, अहंकार ।

हम [ ल ] क ( न० )-घाँस की बनी हुई कलिया ।

हा ( स्त्री० )-हाकिनी ।

हाकिनी ( स्त्री० )-एक प्रकार की भयानक स्त्री, दुर्गा का भेद ।

हामर ( वि० )-भयानक, झीफनाक । पु०-थोरगुल, कोलाहल ।

हाहल ( पु० )-देशविशेष और वहाँ के निवासी ।

हिंगर ( पु० )-मोटा आदमी, अपमान, शठ, नीकर ।

हिडिग ( पु० )-ढोलकी, छोटा ढोल ।

हित्य ( पु० )-काष्ठहस्ती, स्वल्पमान् कृणवर्ण युवा युव्य जो प्रत्येक शास्त्र को जानता हो ।

हिप् ( १० ग० )-इकट्ठा करना, ढेर लगाना ।

हिम् ( १५० )-नारना, चोट पहुँचाना ।

हिम्भ ( पु० )-कोलाहल, यच्छा, मिश्र, अपटा, प्लीहा, तिफली ।

हिमिरा ( स्त्री० )-दयानिषारिणी,

बुलबुला ।

[ जाना ।

ही ( १, ४ आ० )-चहना, आकाश में डीन ( न० )-चहना, पक्षियों की ऊर्ध्वगति, चह्नीन, अवहीन ।

हुंहुम ( पु० )-विपरहित सर्प, दुमी ।

होम ( पु० )-भगी, अन्त्यज, अपने नाम से प्रसिद्ध जाति । [ होम्य भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ] ।

होर ( पु० )-बटा हुआ सागा, टिन ।

## ह

ह-द्वय का चतुर्थ अक्षर । पु०-बड़ा ढोल, कुत्ते की दुम, सर्प, कुत्ता, ध्वनि ।

हन्का ( स्त्री० )-बहुत बड़ा ढोल, नाश, लालच ।

हाल ( न० )-प्रायः गँडे की खाल का बना हुआ शस्त्रप्रहार रोकने का साधन, अपने नाम से प्रसिद्ध वस्तु ।

हुदन ( न० )-तलाश, दूँटना ।

होड ( पु० )-अपने नाम से प्रसिद्ध साधविशेष ।

हीक् ( १ आ० )-जाना, पाग पहुँचना ।

हीकन ( न० )-भेद, नज़राना, पूँस ।

## शु

श-द्वय का प्रथम व्यंजन । पु०-ज्ञान, निश्चय, आभूषण, दान, लता-पुल्ल, निषेधवाचक । [ कोई शब्द भी 'क' से आरंभ नहीं होता है,

कोई २ नकारादि धातु 'ण' से लिखी जाती हैं जिनके अर्थ 'न' शीर्षक में ही दीसलाये जावेंगे जैसे णइ, णथ, णइ, निज, निस्, पी, पु ]।

## त

त-तयगेका प्रथम अक्षर। (पु०)-चौर, स्लेच्छ, सुहुदेघ, अमृत, रत्न, योद्वा, छाती, दुम, क्रूरजग। न०-नेकी, पार करना।

तक् (१ प०)-ठहना, कपटना, मज्जाक उठाना, सहना।

तकिल (वि०)-चालाक, क्रूर, ठग।

तकृन् (न०)-बच्चा, शिशु, बालक।

तक (न०)-मट्टा, छाछ, मधोहुई इही जिस में जल का घीघाई भाग होता है।

तकाट (पु०)-रई, मन्थनी, मन्थनदण्ड।

तल् (१, ५, प०)-काटना, छीलना, छेपटी उतारना, जलसी करना, ठकना।

तसक (पु०)-यहई, लकड़ी काटने वाला, भूतपार, स्वर्गोद।

तक्षण (न०)-काटना, पीरना, काटना।

तसन् (पु०)-बहई, विश्वकर्मा।

तलशिला (स्त्री०)-वर्तमान रामन-विरही के पास एक प्राचीन नगर।

तल्लुः तूनम्=दुःसमयजीवन, विरह, भय।

तल्लु (१ प०)=तक्।

तगर (पु०)-एक गुणनिष्ठ औषध।

तल्लु ज्ञ (३ प०)-चिकुड़ना, पीछे हटना।

तट् (१० उ०)-मारना, पीटना। (१ प०)-उठना, उभरना होना।

तट (पु०)-आकाश, शिव, ढाल, ढालवां चटान। अस्त्री०-किनारा, कूल। न०-सेत।

तटग (पु०)-तालाब, तटग।

तटस्थ (वि०)-तीरस्थित, कूलगत, उदासीन, अकर्मण्य। पु०-उदासीन पुरुष।

तटा-टो (स्त्री०)=तट।

तटाक (अस्त्री०)-तालाब, जलाशय।

तटिलो (स्त्री०)-नदी, दरिया।

तट् (१० उ०)-ताड़ना करना, मारना, पीटना।

तटग-हाक (पु०)-तालाब, जलाशय।

तटग (अस्त्री०)-तालाब, जलाशय।

तटित (स्त्री०)-बिजली, बध, चोट।

तटिङ्गर्भ (पु०)-बादल, मेघ।

तट्ट (१ आ०)-मारना।

तट्टक (पु०)-ठग, धात्रीगर, कौन, भाग, अधिक सचाहीं वाशा वाक्य।

तट्टुरीन (पु०)-स्लेच्छ, मूर्ख।

तट्टुल (पु०)-पान्थ, दासक।

तत (वि०)-कैला हुआ, झुका हुआ, तना हुआ।

ततसुतत (अ०)-वहां से, वहां, तब, तिस पर, पश्चात्, इन्तलिमे, अतएव, उस अवस्था में।

ततस्त्य (वि०)-तत्रभव, वहां का, वहा होने वाला।

तति (स्त्री०) पत्ति, सनूह, अनुष्ठान। सर्व०-सतता, उस कदर।

तत्काल (पु०)-वर्तमान क्षण, उपस्थित



समय ।

तत्कालधी(वि०)-प्रत्युत्पन्नमिति ।

तत्कालम् (अ०)-फीरन, तुरन्त, उस

समय । [ नानकाल ।

तत्क्षण(पु०)-उपस्थित समय, घर्त्त-

तत्क्षण-तत्क्षणम्(अ०)-तुरन्त, फीरन,

उसी समय ।

तत्त्व(न०)--सच्चाई, वास्तविक बात,

तथ्य, मम, सार, परमात्मा ।

तत्त्वज्ञ-विद्व(वि०)-तत्त्ववेत्ता, फिला-

सफर । पु०-ब्राह्मण ।

तत्त्वज्ञान(न०)-फिलासफी, वास्तविक

ज्ञान । [ निश्चयपूर्वक ।

तत्त्वतः ( अ० )-वास्तव में, ठीक २,

तत्पर(वि०)-तत्पार, उद्यत ।

तत्परापण (वि०)-तदासक्त, उसी में

लगना हुआ ।

तत्पुरुष (पु०)-मुख्य पुरुष, परमात्मा,

कमानो में से एक किस में पहिला

पद दूसरे पद के अर्थ को

जनाता है ।

तत्काल ( पु० )-विस्तृतकाल वाला,

सुगन्धिद्रव्यविशेष ।

तत्र ( अ० )-उत्र समय, उस जगह,

यहां सम में । [ की चीज ।

तत्रत्य ( अ० )-यहां होने वाला, यहा

तत्रतवान् ( पु० )-रलाध्य, पुननीय

पुरुष । [ निश्चय ।

तथा ( अ० )-यैसेही, उस प्रकार से,

तथागत ( पु० )-जिस प्रकार पुनरा-

गमि न दो उस प्रकार गया हुआ,

यथार्थ ज्ञानी, दृढ़ ।

तथापि(अ०)-परिच्छेद कहें गये अर्थ को

दृढ़ करना, उस पर भी, जैसा कि ।

तथापि(अ०)-तौ भी, तिस पर भी ।

तथादि ( अ० )-दृष्टान्त, मिमांश,

प्रसिद्ध है, जैसा कि ।

तथैव ( अ० )-जैसा ही, उसी प्रकार ।

तथ्य ( न० )-तथ्य, यथार्थ ।

तद् ( वि० )-पूर्वोक्त, छुट्टि में स्थित,

विचार्य । न०-ब्रह्म ।

तदा ( अ० )-उस काल में, उस समय ।

तदास्मा [ न ] ( वि० )-जिस का वह

स्वरूप हो, तत्स्वरूप, तत्सदृश ।

तदात्थ ( न० )-वर्तमान, वर्तमान काल ।

तदानीम् ( अ० )-उसी समय, तथ ।

तदानीन्तन ( वि० )-उसी काल में

होने वाला ।

तदामुख ( न० )-आरम्भ, शुरु ।

तदीय ( वि० )-उस का, तत्सम्बन्धी ।

तद्गत ( वि० )-तत्पर, उसी में

लगना हुआ ।

तद्गुण ( पु० )-अर्थालंकारभेद ।

तद्दिनम् ( अ० )-प्रतिदिन, दिन का

नध्य । न०-पूर्वोक्त दिन, वह

दिन ।

तद्गुण ( वि० )-कृपण, सूप, कजूस ।

तद्दित ( पु० )-उप के छिये दितकारी,

व्याकरण में नाम के आगे लगने

वाले प्रत्यय ।

तद्गत(अ०)-उस की न्यायें, तत्सुल्य ।

तद्गल ( पु० )-घाणविशेष ।

तन् ( १, ४३० )-फिलना, विस्तृत होना ।

तनय ( पु० )-पुत्र, सन्तान, बेटा ।

तनया (स्त्री०)-स्त्रीसन्तान, पुत्री,  
बेटी, जिमीकन्द । [यारीकी ।  
तजिमा [ न ] (पु०)-कुटाई, काश्यं,  
तनीपान्(वि०)-बहुत पतला, कृशतर ।  
तनु-नू (स्त्री०)-शरीर, देह ।

तनुक्षीर (पु०)-अमाहा नामक वृक्ष-  
विशेष ।

तनुच्छाप्र (पु०)-जिस की घोड़ी छाया  
हो अर्थात् घबूळ [धीकर] का  
पेह, शरीर की शोभा वा छाया ।

तनु[नू]ज (पु०)-पुत्र, बेटा । वि०-  
शरीर से जो उत्पन्न हो ।

तनुजा (स्त्री०)-पुत्री, तनया, बेटी ।

तनुज-त्राण(न०)-कवच, जिरहयस्तर ।

तनुपत्र (पु०)-इक्षुदी नामक वृक्ष-  
विशेष ।

तनु [नू] भघ (पु०)-पुत्र, बेटा ।

तनुभस्त्रा (स्त्री०)-नासिका, नाक ।

तनुभूत(पु०)-जीव, शरीरधारी ।

तनुरस (पु०)-पसीना, स्वेद । [वाल ।

तनु [नू] रुह् (न०)-शरीर के छेन,

तनुल(वि०)-विस्तृत, फैला हुआ ।

तनुवात(पु०)-नरकविशेष ।

तनुवार(न०)-कवच, जिह, सन्नाह ।

तनुवीज (पु०)-राज्यदर, बड़ा खेर  
जिस में छोटी भी गुठली होती है ।

तनुम(न०)-देह, शरीर, जिस्म ।

तनुयक्षारिणी (स्त्री०)-पुवति स्त्री,  
वालिका ।

तनू(स्त्री०)=तनु ।

तनूकृत (वि०)-सूझ किया हुआ,  
अल्पीकृत, छोटा किया हुआ ।

तनूनप(न०)--घृत, घी । [का पेह ।

तनूनपात्-द्रु(पु०)-अग्नि, आग, चीते

तनूरुह(पु०)-पुत्र, पंख, गरुड ।

तन्तु (पु०)-ग्राह, जलजन्तु विशेष,

अपत्य, औलाद, सूत्र, सूत, धागा ।

तन्तुक(पु०)-सरसों । [सींक ।

तन्तुकाष्ठ (न०)-तूली, ताँतेरकाट,

तन्तुकी(स्त्री०)-नाड़ी, मन्त्र ।

तन्तुनाम(पु०)-जिसकी नाति में सूत  
हो अर्थात् नकही ।

तन्तुपयं [नू] (न०)-ग्रावणनास की  
पूर्णना, यज्ञोपवीत देने का पयं ।

तन्तुर[ल] (न०)-मृणाल, कमल की  
हड्डी, तांतवाला ।

तन्तुवाप-य (पु०)-तुलाहा, कपड़ा  
बुनने वाला, कोली ।

तन्तुविग्रहा (स्त्री०)-कदली, कैला  
इन में सर्वत्र नूत से एी होते हैं ।

तन्तुधाला (स्त्री०)-वस्त्र बुनने का  
घर, जुलाहे का घर ।

तन्तुसन्तत (वि०)-जो तन्तुओं से  
व्याप्त हो, सिंघा हुआ ।

तन्त्र (न०)-फैसला, नीयध, तन्तु,  
प्रधान, परिच्छेद, नीकर धाकर,  
परिजन, शपथ, कुल, वेद की एक  
शाखा, तन्त्रशास्त्र नामक प्रसिद्ध  
ग्रन्थ । [कपड़ा ।

तन्त्रक(न०)-नूतन वस्त्र, नवीन  
तन्त्रिका(स्त्री०)-गुडूची, गिलोय ।

तन्त्री (स्त्री०)-गिलोय, एक प्रकार  
का वीणा नामक वाद्य, शरीर की  
नाड़ी, एक नदी, रस्सी, विशेष-

गुणसम्पन्ना युवति स्त्री ।

तन्द्रा (स्त्री०)—आलस्य, ऊपना, नींद ।

तन्द्रालु (वि०)—निद्रालु, बहुत सोने वाला, स्वापशील ।

तन्द्नीत (वि०)—तन्द्रायुक्त, सोया हुआ ।

तन्मय (वि०)—तद्रूप, धर्मी, अनेक ।

तन्मात्रा (स्त्री०)—अपेक्षीकृत रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दों की सच्चा ।

तन्वित (पु०)—रात्रि, चिद्युत, अशनि, धातु, गर्जना ।

तन्वी (स्त्री०)—कृपाङ्गी, शालपर्णी ।

तप् (१ प०)—चमकना, जलना, गर्म होना, दाह करना, सहन करना ।

(१० व०) जलाना, दुःख देना, सताना ।

तप (पु०)—गर्मी, तप्यता, सूर्य, धूप, योग्यप्राप्त, इन्द्रियदमन, शारीरिक कष्ट सहन करना, व्रतानुष्ठान ।

तपः [ न् ] (न०)—पूर्यवत् ।

तपन (न०)—जलन, शारीरिक कष्ट, मानसिक दुःख, गर्मी । वि०—दाहक, चमकीला, कष्टदायक ।

तपनकर-तपनाशु (पु०)—सूर्य, सूर्यरश्मि ।

तपनतनया (स्त्री०)—पमुनागदी, गोदावरी नदी ।

तपनी ( स्त्री० )—गर्मी, गोदावरी, सापती ।

तपनीय (वि०)—गर्म करने योग्य, मद्य ।

तपस (पु०)—तन्द्रा, सूर्य, पत्नी ।

तपस्वर ( वि० )—तप करने वाला, तपस्वी ।

तपस्या (स्त्री०)—शरीर को कष्ट देकर धर्म का अनुष्ठान, इन्द्रियदमन ।

[ तपश्चर्या और तपश्चरण का भी यही अर्थ होता है ]

तपस्विता (स्त्री०)—तप, तपस्या, भक्ति, यन्त्राचार ।

तपस्वी [ न् ] (पु०)—तपोधारी, धान-प्रस्थाश्रमी, वृत्तधारी, साधु,

सुदृढवैद्या पत्नी [स्त्री०-तपस्विनी]

सपःस्पृष्टी (स्त्री०)—तपोभूमि, वना-रस का नाम ।

तपित (वि०)—तप्त, दग्ध, जला हुआ ।

तपु[स्] (पु०)—अग्नि, सूर्य, शत्रु ।

तपोधन (वि०)—यही तपस्या करने वाला, तपस्वा ही जिस का एक मात्र धन है । पु०-तपस्वी ।

तपोवल (न०)—तपस्या द्वारा प्राप्त शक्ति

तपोवय (पु०)—परमात्मा, परब्रह्म ।

वि०-तपस्वी ।

तपोमूर्ति (पु०)—तपस्वी, परमात्मा ।

तपोवन (न०)—ऐसा वन जिस में तपस्वी निवास करते हैं ।

तप्त ( वि० )—दुःखित, सन्तप्त, गर्म किया हुआ, सपा हुआ ।

तप्तकृच्छ्र (न०)—कठिन तपस्या जिस में गर्म जल, गर्म धूप और तप्य धातु का सेवन किया जाता है ।

तप् ( ४ प० )—चक जाना, सफलीकृत होना, गला घटना ।

तप्त (पु०)—तप्तान वृक्ष, अधेरा, राहु । न०—अन्धकार ।

तप्तः [ न् ] (न०)—अधेरा, अन्धकार, अज्ञान, दुःख, पाप ।

तप्तस (पु०)—गन्धवार, धूप । वि०-

गुणसम्पन्ना युवति स्त्री ।

तन्द्रा(स्त्री०)—आलस्य, जपना, नींद ।

तन्द्रालु (वि०)—निद्रालु, बहुत सोने वाला, स्वापशील ।

तन्द्रित(वि०)—तन्द्रायुक्त, सोया हुआ ।

तन्मय(वि०)—तद्रूप, वही, अभेद ।

तन्मात्रा (स्त्री०)—अपञ्चोरुत रूप, रस,

गन्ध, स्पर्श और शब्दों की सच्चा।

तन्वित(पु०)—रात्रि, विद्युत्, अशनि,

वायु, गर्जना ।

तन्वी (स्त्री०)—कृशाङ्गी, शालवर्णी ।

तप (१ पु०)—जगफना, जलना, गर्म होना, दाढ़ करना, सहन करना ।

(१० पु०)जलाना, दुःख देना, घताना ।

तप (पु०)—गर्मी, उष्णता, सूर्य, धूप,

प्रीप्नञ्जलु, इन्द्रियदमन, शारीरिक

कष्ट सहन करना, प्रतानुष्ठान ।

तपः [न्] (न०)—पूर्ववत् ।

तपन (न०)—जलन, शारीरिक कष्ट,

भागसिद्धि, गर्मी । वि०—दाहक,

जमकीला, कष्टदायक ।

तपनकर-तपनाशु(पु०)—सूर्य, सूर्यरश्मि ।

तपनतनया(स्त्री०)—यमुनागदी, गोदावरी नदी ।

तपनी (स्त्री०)—गर्मी, गोदावरी, तापनी ।

तपनीय(वि०)—गर्म करने योग्य, मत्स्य ।

तपस्य (पु०)—चन्द्रमा, सूर्य, पत्नी ।

तपस्कर (वि०)—तप करने वाला, गरुडस्त्री ।

तपस्या (स्त्री०)—गरीब को कष्ट देकर प्र । आ अनुष्ठान, इन्द्रियदमन ।

[ तपश्चर्या और तपश्चरण का भी यही अर्थ होता है ]

तपस्विता (स्त्री०)—तप, तपस्या, भक्ति, पवित्राचार ।

तपस्वी [न्] (पु०)—तपोधारी, धान-प्रस्थाश्रमी, व्रतधारी, साधु, खुटवटैया पत्नी [स्त्री०-तपस्विनी]

तपःस्थली (स्त्री०)—तपोभूमि, वनारस का नाम ।

तपित(वि०)—तप्त, दग्ध, जला हुआ ।

तपुः[स्] (पु०)—अग्नि, सूर्य, शत्रु ।

तपोधन (वि०)—वही तपस्या करने वाला, तपस्या ही जिस का एक मात्र धन है । पु०-तपस्वी ।

तपोयज्ञ(न०)—तपस्याद्वारा प्राप्त शक्ति

तपोमय (पु०)—परमात्मा, परब्रह्म ।

वि०-तपस्वी ।

तपोमूर्ति (पु०)—तपस्वी, परमात्मा ।

तपोधन (न०)—ऐसा धन जिस में तपस्वी निवास करते हैं ।

तप्त (वि०)—दुःखित, सन्तप्त, गर्म किया हुआ, तपा हुआ ।

तप्तकण्ठ (न०)—कठिन तपस्या जिस में गर्म जल, गर्म दूध और उष्ण वायु का सेवन किया जाता है ।

तप्त (४ पु०)—एक जागा, तफलीक उठाना, गला घुटना ।

तप्त(पु०)—तमाग वृक्ष, अधेरा, रातु । न०-अन्धकार ।

तप्तः [न्] (न०)—अधेरा, अन्धकार, अज्ञान, दुःख, पाप ।

तप्तम (पु०)—अन्धकार, कृप । वि०-

गुणसम्पन्ना युवति स्त्री ।  
 तन्द्रा(स्त्री०)-आलस्य, लपना, नींद ।  
 तन्द्रालु (वि०)-निद्रालु, बहुत सोने  
 वाला, स्वापशील ।  
 तन्द्रित(वि०)-तन्द्रायुक्त, सोया हुआ ।  
 तन्मय(वि०)-तद्रूप, चही, अभेद ।  
 तन्मात्रा (स्त्री०)-अपञ्चीकृत रूप, रस,  
 गन्ध, रूप्य और शब्दों की सच्चा।  
 तन्वित(पु०)-रात्रि, विद्युत्, अशनि,  
 वायु, गर्जना ।  
 तन्वी (स्त्री०)-कृशाङ्गी, शालपर्णी ।  
 तप् (१ पु०)-चमकना, जलना, गर्म  
 होना, दाह करना, सहन करना ।  
 (१० व०)जलाना, दुःख देना, सताना ।  
 तप (पु०)-गर्मी, उष्णता, सूर्य, घूप,  
 ग्रीष्मऋतु, इन्द्रियदमन, शारीरिक  
 कष्ट सहन करना, श्रतानुष्ठान ।  
 तपः [म्] (न०)-पुण्यवत् ।  
 तपन (न०)-जलन, शारीरिक कष्ट,  
 मानसिक दुःख, गर्मी । वि०-दाहक,  
 चमकीला, कष्टदायक ।  
 तपनकर-तपनाशु(पु०)-सूर्य, सूर्यरश्मि ।  
 तपननया(स्त्री०)-यमुनागदी, गोदा-  
 वरी मदी ।  
 तपनी ( स्त्री० )-गर्मी, गोदावरी,  
 तापनी ।

[ तपश्चर्या और तपश्चरण का  
 भी यही अर्थ होता है ]  
 तपस्विता (स्त्री०)-तप, तपस्या, प्रक्ति,  
 पवित्राचार ।  
 तपस्वी [न्] (पु०)-तपोधारी, यान-  
 प्रस्थाश्रमी, व्रतधारी, साधु,  
 सुदृढव्रतवा पक्षी [स्त्री०-तपस्विनी]  
 तपःरुण्णी (स्त्री०)-तपोभूमि, वना-  
 रस का नाम ।  
 तपित(वि०)-तप्त, दग्ध, जला हुआ ।  
 तपुः[स्] (पु०)-अग्नि, सूर्य, शत्रु ।  
 तपोधन (वि०)-वही तपस्या करने  
 वाला, तपस्या ही जिस का एक  
 मात्र धन है । पु०-तपस्वी ।  
 तपोधन (न०)-तपस्याद्वारा प्राप्त शक्ति  
 तपोमय (पु०)-परमात्मा, परब्रह्म ।  
 वि०-तपस्वी ।  
 तपोमुक्ति (पु०)-तपस्वी, परमात्मा ।  
 तपोधन (न०)-ऐसा धन जिस में  
 तपस्वी निवास करते हैं ।  
 तप्त ( वि० )-दुःखित, मन्तप्त, गर्म  
 किया हुआ, तपा हुआ ।  
 तप्तकच्छ (न०)-कठिन तपस्या जिस  
 में गर्म जल, गर्म दूध और उरण  
 वायु का सेवन किया जाता है ।

गुणसम्पन्ना प्रवृत्ति स्त्री ।

तन्त्रा (स्त्री०)—आलस्य, लज्जा, नींद ।

तन्त्रालु (वि०)—निद्रालु, बहुत सोने वाला, स्वापशील ।

तन्त्रित (वि०)—तन्त्रायुक्त, सीया हुआ ।

तन्मय (वि०)—तद्रूप, वही, अभेद ।

तन्मात्रा (स्त्री०)—अपेक्षीकृत रूप, रस, गन्ध, रूप और शब्दों की सत्ता ।

तन्वित (पु०)—राशि, चिद्युत, अशनि, वायु, गर्जना ।

तन्वी (स्त्री०)—कृशाक्षी, शालपर्णी ।

तप (१ प०)—चलकमा, ललना, गर्म होना, दाह करना, सहन करना ।

(१० प०) बलाना, दुःखदेना, सताना ।

तप (पु०)—गर्मी, उष्णता, सूर्य, धूप, ग्रीष्मऋतु, इन्द्रियदमन, आरीरिक् कष्ट सहन करना, ब्रतानुष्ठान ।

तपः [स्] (न०)—पूर्यवत् ।

तपस (न०)—जलन, आरीरिक् कष्ट, ज्ञानविद्बुद्धि, गर्मी । वि०—दाहक, चमकीला, कष्टदायक ।

तपनकर-तपनाशु (पु०)—सूर्य, सूर्यरश्मि ।

तपनतनया (स्त्री०)—यमुनानदी, गोदावरी नदी ।

तपनी (स्त्री०)—गर्मी, गोदावरी, तापती ।

तपनीय (वि०)—गर्म करने योग्य, सक्ष ।

तपस (पु०)—चन्द्रमा, सूर्य, पक्षी ।

तपस्कर (वि०)—तप करने वाला, तपस्वी ।

तपस्या (स्त्री०)—आरीर को बट देकर प्रा ५ अनुष्ठान, इन्द्रियदमन ।

[ तपश्चर्या और तपश्चरण का भी यही अर्थ होता है ]

तपस्विता (स्त्री०)—तप, तपस्या, भक्ति, पवित्राचार ।

तपस्वी [स्] (पु०)—तपोधारी, पान-प्रस्थाश्रमी, व्रतधारी, साधु,

सुदृढहृया पक्षी [स्त्री०—तपस्विनी]

तपःस्वली (स्त्री०)—तपोभूमि, वना-रस का नाम ।

तपित (वि०)—तप, दग्ध, जला हुआ ।

तपुः[स्] (पु०)—अग्नि, सूर्य, शत्रु ।

तपोधन (वि०)—वही तपस्या करने वाला, तपस्या ही जिस का एक मात्र धन है । पु०—तपस्वी ।

तपोवल (न०)—तपस्याद्वारा प्राप्त भक्ति तपोमय (पु०)—परमात्मा, परब्रह्म ।

वि०—तपस्वी ।

तपोमूर्ति (पु०)—तपस्वी, परमात्मा ।

तपोवन (न०)—ऐसा वन जिस में तपस्वी निवास करते हैं ।

तप्त (वि०)—दुःखित, सन्तप्त, गर्म किया हुआ, तपा हुआ ।

तप्तकच्छ (वि०)—कठिन तपस्या जिस में गर्म जल, गर्म दूध और उष्ण वायु का सेवन किया जाता है ।

तप् (४ प०)—घट जाना, तफलीक उठाना, गला पटना ।

तप्त (पु०)—तप्तान्न चूथ, अपेरा, रातु । न०—अन्धकार ।

तप्तः [स्] (न०)—अपेरा, अन्धकार, अज्ञान, दुःख, पाप ।

तप्त (पु०)—अन्धकार, कूप । वि०—

गुणसम्पन्ना युवति स्त्री ।

तन्द्रा (स्त्री०)—आलस्य, ऊँचना, नींद ।

तन्द्रालु (वि०)—निद्रालु, बहुत सोने वाला, स्वापशील ।

तन्द्रित (वि०)—तन्द्रायुक्त, सोया हुआ ।

तन्मय (वि०)—तद्रूप, वही, अभेद ।

तन्मात्रा (स्त्री०)—अपञ्जीकृत रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दों की सञ्चालन शक्ति (पु०)—रात्रि, विद्युत्, अशनि, धातु, गर्जना ।

तन्वी (स्त्री०)—कृशाङ्गी, शाल्वर्णी ।

तप् (१ प०)—चमकना, जलना, गर्म होना, दाह करना, सहन करना ।

(१० व०) जलाना, दुःख देना, सताना ।

तप (पु०)—गर्मी, उष्णता, सूर्य, धूप, ग्रीष्मऋतु, इन्द्रियदमन, आरौरिक कष्ट सहन करना, प्रतापमान ।

तपः [त्] (न०)—पूर्यवत् ।

तपन (न०)—अन्न, आरौरिक कष्ट, मानसिक दुःख, गर्मी । वि०—दाहक, चमकीला, कष्टदायक ।

तपनकर-तपनांशु (पु०)—सूर्य, सूर्यरश्मि ।

तपनतनया (स्त्री०)—यमुना नदी, गोदावरी नदी ।

तपनी (स्त्री०)—गर्मी, गोदावरी, सापथी ।

तपनीय (वि०)—गर्म करने योग्य, सक्ष ।

तपस (पु०)—चन्द्रमा, सूर्य, पत्नी ।

तपस्वर (वि०)—तप करने वाला, तपस्वी ।

तपस्या (स्त्री०)—शरीर को वष्ट देकर प्रगल्भा अनुष्ठान, इन्द्रियदमन ।

[ तपश्चर्या और तपश्चरण का भी यही अर्थ होता है ]

तपस्विता (स्त्री०)—तप, तपस्या, भक्ति, पवित्राचार ।

तपस्वी [त्] (पु०)—तपोधारी, धान-प्रस्थात्रमी, वृत्तधारी, साधु, सुदृढवैद्या पत्नी [स्त्री०—तपस्विनी]

तपःस्थली (स्त्री०)—तपोभूमि, वनारस का नाम ।

तपित (वि०)—तप्त, दग्ध, जला हुआ ।

तपुः[त्] (पु०)—अग्नि, सूर्य, शत्रु ।

तपोधन (वि०)—वही तपस्या करने वाला, तपस्या ही जिस का एक मात्र धन है । पु०—तपस्वी ।

तपोवक्त्र (न०)—तपस्या द्वारा प्राप्त शक्ति

तपोभय (पु०)—परमात्मा, परब्रह्म ।

वि०—तपस्वी ।

तपोभूर्ति (पु०)—तपस्वी, परमात्मा ।

तपोधन (न०)—ऐसा धन जिस में तपस्वी निवास करते हैं ।

तप्त (वि०)—दुःखित, सन्तप्त, गर्म किया हुआ, तपा हुआ ।

तप्तकच्छ (न०)—कठिन तपस्या जिस में गर्म जल, गर्म धूप और उष्ण धातु का सेवन किया जाता है ।

तप्त (४ प०)—चक जाना, तकलीफ उठाना, गला घुटना ।

तप्त (पु०)—तपान् वृत्त, अधेरा, राहु । न०—अन्धकार ।

तप्तः [त्] (न०)—अधेरा, अन्धकार, अपान, दुःख, पाप ।

तप्त (पु०)—अन्धकार, कृप । वि०—

काला, कृष्णवर्ण । न०-अंधेर ।

तमसा (स्त्री०)-एक नदी का नाम ।

तमङ्ग (पु०)-घवूतरा, प्लेटकार्म ।

तमर (न०)-मीठा, टिन ।

तमसा-म्यिका (स्त्री०)-गाय ।

तमस्वती-स्विती (स्त्री०)-रात्रि, रात

[ तमा का भी यही अर्थ है ] ।

तमाल (पु०)-भपने नाम से प्रसिद्ध वृक्ष, तिलक, तलवार, बांस की छाँट, तमबाकू ।

तमालपत्र(न०)-तमाल वृक्ष का पत्ता, तिलक, तमबाकू का पत्ता ।

तमि-तमी (स्त्री०)-अंधेरी रात, हल्दी, गुग्गुलु, मूकछाँ । [कोध ।

तमिस्त्र(न०)-अंधेरा, अज्ञान, माया,

तमिस्त्रा(स्त्री०)-अंधेरी रात, अंधेर ।

तमोगुण (पु०)-सत्त्व, रज, तम ये तीन गुण माने गये हैं; जिस गुण में अंधकार, गड़तरा, मन्दता की अधिकता हो वह तमोगुण कहलाता है ।

तमोग्ग (पु०)-अंधेरनाशक, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, ज्ञान, परमात्मा ।

तमोज्योतिः (पु०)-जुगनू, सद्योत ।

तमोमय (वि०)-मूर्छा, अज्ञानी, अन्धकारयुक्त ।

तमोद्गर(वि०)-अन्धकारनाशक । पु०-सूर्य, चन्द्रमा ।

तप (पु०)-रक्षा, हिफाजत ।

तर-एक तद्धितप्रत्यय । पु०-सड़क, नौका, अग्नि, पार उतरना,

किराया । [ उधर हिलना ।

तरंग (पु०)-लहर, कूद, वस्त्र, इधर

तरङ्गित (वि०)-तरंगयुक्त, विलोहित ।

तरङ्गिणी (स्त्री०)-नदी, दरिया ।

तरण (न०)-पार उतरना, जीतना, नौकादण्ड । पु०-स्वर्ग, किरती ।

तरणि (पु०)-सूर्य, किरती, अर्क-वृक्ष, सूर्यकिरण ।

तरणी (स्त्री०)-वेड़ा, किरती ।

तरन्त (पु०)-राजस, समुद्र, मंदक, भक्तजन ।

तरन्ती (स्त्री०)-नौका, किरती ।

तरपण्य (न०)-नदी आदि के पार जाने का नहसूल ।

तरल(वि०)-बहता हुआ, द्रव, शोभायमान, चञ्चल, कम्पित, विस्तृत । पु०-हार, धीरस भूमि, तलहटी, लोहा, हीरा । [ लता ।

तरलायित (पु०)-बड़ी लहर, चञ्चलतरलित (वि०)-कम्पित, हिला हुआ ।

तरवारि (पु०)-तलवार, रङ्ग ।

तरस (न०)-तेजी, शक्ति, तट, वेड़ा, रोग ।

तरस (न०)-गोश्त, मांस ।

तरसाग (पु०)-किरती, नौका ।

तरस्विन् (वि०)-तेज, मजबूत, शक्तिशाली । पु०-बापु, धीर, गरुड ।

तरि [री] (स्त्री०)-किरती, नौका, कपड़े रखने का बकस, आंचल, मोटा । [ नौका ।

तरिक (पु०)-मल्लाह, नाविक,



तरित्र ( न० )—नौका, किशती, जल-  
याग, जहाज ।

तरित्री—तरिणी ( स्त्री० )—पूर्ववत् ।

तरीय ( पु० )—स्वर्ग, व्यवसाय,  
किरती, नौका ।

तरु ( पु० )—वृक्ष, पेड़, दरुत ।

तरुण ( वि० )—जवान, युवक, सुखा-  
यम, नया, नवीन । पु० युवा-  
पुरुष । न०—अकुर, अकुआ ।

तरुण ( पु० )—विजेता, फतहमद ।

तर्क ( १० व० )—अनुमान करना,  
आशंका करना, तर्कना करना,  
सोचना, समझना, कहना, धोखना,  
चमकना ।

तर्क ( पु० )—अनुमान, दलील, सभा-  
यना, विचार, ऊह, न्यायशास्त्र,  
हेतु, आशंका, तर्कशास्त्र, मन्तक,  
आकाशा, दृच्छा ।

तर्कज ( न० )—वितर्क, वादविवाद,  
सोचविचार, मन्तक ।

तर्कविद्या—शास्त्र ( न० )—न्याय-  
शास्त्र, इलमेमन्तक, फिलास  
फ़ी, तर्कशास्त्र ।

तर्काग्राम ( पु० )—झूठा मन्तक,  
मूलम दलील । [ अनुमित ।

तर्कित ( वि० )—आशंकित, परीक्षित,

तर्की [ नृ ] ( पु० )—मन्तकदा, तार्किक,  
निर्वायिक ।

तर्कु ( अव्ययी० )—तर्कवा, चर्चने में  
जो छोट्टी चीं मुँह लगा रहती है,  
मिम पर लागना वचन कर लिप-  
टता आवाज है ।

तर्ज ( १० ज्ञा०, १ प० )—धमकाना,  
फिहकना, मत्संन करना ।

तर्जन-ना ( स्त्री० )—मत्संन, निन्दा,  
फिहक । [ अगुली ।

तर्जनी ( स्त्री० )—अंगूठे के पास की

तर्जि ( पु० )—वेडा, सूर्य ।

तर्द ( १ प० )—हिंसा करना, मारना

तर्पण ( न० )—सुध करना, प्रसन्न  
करना, पितृयज्ञ, यज्ञसन्निधा,  
देवताओं को जल देना ।

तर्हि ( अव० )—तब, तदा, उस समय,  
तौ, उस दशा में ।

तल् ( १० व०, १ प० )—स्वियर होना, जम-  
ना, पूरा करना, फ़ायम करना ।

तल ( अव्ययी० )—तलहटी, सतह, भूमि,  
हाथ की हथेली, गीचे का भाग,  
गढ़ा, मुरार । न०—तालाब, जग-  
छ, हेतु, कारण ।

तलताल ( पु० )—हाथ बजाना, हथेली  
बजाना ।

तलमहार ( पु० )—तमाषा मारना,  
घटवह लगाना ।

तलवारण ( न० )—तलवार, असि ।

तलखोब ( पु० )—पाताल, अमेरिका ।

तलित ( वि० )—तलमुक्त, घाहवाला ।  
न०—भुना हुआ मांस ।

तलिन ( वि० )—पतला, छोटा, साफ,  
कमज़ोर, मिम्नरूप ।

तलग ( पु० )—जवान, चापू, आंधी ।

तलक ( न० )—गमन, घन ।

तल्प ( अव्ययी० )—पलग, विस्तरा,  
गाथा, भीमार, अहारिका ।

तत्पल (न०)-हस्ती का पृष्ठवश ।  
 तत्पल (पु०)-ताल, वालाव । न०-  
 गड़ा ।  
 तत्पिका (स्त्री०)-कुछी, ताली ।  
 तत्पली (स्त्री०)-युवती, धरुणपत्नी,  
 नीका । [यहा हुआ ।  
 तत्पट (वि०)-कटा हुआ, धमा हुआ,  
 तत् (४५०)-मुरझाना, घकना, सड़ना,  
 नष्ट होना, त्यागना ।  
 तत् (१०५०)-सजागा, अहंकार करना ।  
 तत्कर (पु०)-चीर, लुटेरा, कर्ण ।  
 तत्करता (स्त्री०)-चीरी, श्रवण ।  
 तत्पु (वि०)-टहरा हुआ । [पता ।  
 ताटस्थ (न०)--उदासीनता, समी-  
 ताड (पु०)-सजा, थोर, पर्वत, चोट ।  
 ताडका (स्त्री०)-एक राक्षसी जिस  
 का रामायण में वर्णन आता है ।  
 ताडना (स्त्री०)-भर्त्सना, मारना,  
 पीटना, सजा ।  
 ताडनी (स्त्री०)-कीड़ा, शमूक ।  
 ताहित (वि०)-पीटा हुआ, सजाया हुआ ।  
 ताडव (अस्त्री०)-नृत्य, नाच, आखें  
 मटकाना ।  
 ताडिह (पु०)-नृत्यविद्या ।  
 तात (पु०)-पिता, प्रेनयोधक शब्द ।  
 [यह शब्द बृह और कनिष्ठ दोनों  
 प्रकार के वान्धवों के लिये प्रयुक्त  
 होता है ]  
 तातन (पु०)-खज्जनपक्षी ।  
 तातल (पु०)-रोग, गर्मी, ज्येष्ठ वा-  
 न्धव । वि०-पिदरी, गर्म ।  
 तात्कालिक (वि०)-उसी काल का,

सद्य उत्पन्न । [उद्देश्य, गरज ।  
 तात्पर्य (न०)-अभिप्राय, मतलब,  
 तात्त्विक (वि०)-सच्चा, तत्त्वयुक्त,  
 असली ।  
 तादर्थ्य (न०)-उद्देश्य की समानता,  
 अर्थतुल्यता, उद्देश्य ।  
 तादात्म्य (न०)-स्वभाव की समान-  
 ता, एकीभाव । [समान ।  
 तादृक्ष (वि०)-सब प्रकार का, सब के  
 तान (पु०)-धागा, डोर, फैलाव,  
 झुर, लम्बी आवाज । [अल्पता ।  
 तानय (न०)-पतलापन, दुबलापन,  
 तान्त्रिक (वि०)-तन्त्रसम्बन्धी, शास्त्र-  
 च । पु०-तन्त्रग्रन्थों का अनु-  
 यायी, धारुभागी । [कष्ट ।  
 ताप (पु०)-गर्मी, घमक, दुःख, सन्ताप,  
 तापत्रय (न०)-तीन प्रकार के सांसा-  
 रिक कष्ट अर्थात् आध्यात्मिक,  
 आधिदैविक, आधिभौतिक ।  
 तापन (पु०)-सूर्य, सूर्यकान्तनणि,  
 गीष्म जलु । न०-जलन, सजा  
 देना, कष्ट, स्वर्ण ।  
 तापस (न०)-तमालपत्र । पु०-दम-  
 नक वृक्ष । वि०-तपस्वी ।  
 तापसतक (न०)-इक्षुदी का पेड़, जिस  
 की सहायता से तपस्वियों की  
 सब आवश्यकतायें पूरी होती हैं ।  
 तापस्य (न०)-तपस्या, व्रतानुष्ठान ।  
 तापिच्छ (पु०)-तमालवृक्ष । [नदी ।  
 तापी (स्त्री०)-तापती नदी, यमुना  
 तान (पु०)--भयानक वस्तु, दीप,  
 पिन्ता, झुछा, थकान ।

तामर (न०)--घी, घृत, जल ।

तामरस (न०)--रक्षण, रक्षपद्म, तांवा ।

तामस (वि०)--अन्धकारयु, कषुधियाला  
अज्ञासी । पु०--सर्प, उल्लू, शठ,  
अन्धेरा ।

तामसिक (वि०)--धु धियाला, तमोगुणी

तामसी (स्त्री०)--रात्रि, निद्रा, दुर्गा ।

तामिल (पु०)--कण्ठपक्ष, क्रोध, नक्र  
रत्न, रातस, नरकविशेष ।

ताम्रमूल (न०)--पान जो ताम्रवल्ली  
या पत्र होता है, गुवाक, सुपारी ।

ताम्रमूलिक (पु०)--तमोली, पनवाड़ी ।

ताम्रयूली (स्त्री०)--पान का पेड़,  
नागवल्ली ।

ताम्र (वि०)--ताँवे का यन्त्र हुआ,  
छाछ । न०--ताँवा ।

ताम्रक (न०)--ताँवा, धातुविशेष ।

ताम्रकणी (स्त्री०)--पश्चिमदिशा की  
हमिनी, एक नदी ।

ताम्रकार (पु०)--कसेरा, ताँवे के बर्तन  
यन्त्र बाला ।

ताम्रकूट (न०)--तम्बाकू ।

ताम्रधूट (पु०)--मुर्गा, कुक्कुट ।

ताम्रप्रभ (न०)--पीतल ।

ताम्रपट्टः--पत्रम्=ताँवे की पट्टी,  
ताँवे की तट्टी जिस पर दाग  
या मुताफ़ी की सापदादों का  
टपीरा लिखा जाता था ।

ताम्रपल्लव (पु०)--जिस के पत्ते ताँवे के  
रंग के हों अर्थात् अशोकपत्र ।

ताम्रमुग (पु०)--जिस का मूल ताँवे  
के रंग का हो, जैसे योरोप-  
निवासी ।

ताम्रवल्ली (स्त्री०)--मंजीठ, मंजिष्ठा ।

ताम्रशिली [न] (पु०)--मुर्गा, कुक्कुट ।

ताम्रिक (वि०)--ताँवे का यन्त्र हुआ ।  
पु०--कसेरा, कास्यकार ।

ताय् (१ आ०)--फैलाना, रक्ता करना ।

तायन (न०)--वृद्धि, बढ़ोतरी ।

तार (पु०)--नदफूल, नदी का किनारा,  
मनोहर, भीती, प्रणय, शिव और  
विष्णु का वाद्यक, रत्ता । अस्त्री०-  
मुक्ता, आख का तारा, आकाश-  
ग्रह । वि०--चमकीला, जवा ।

तारक (पु०)--आख की पुतली, नाभि,  
एक दैत्य का नाम जिसे कार्ति-  
केय ने मारा था ।

तारका (स्त्री०)--आख की पुतली, यद्-  
स्पति की स्त्री का नाम, पुच्छल  
तारा, सितारा ।

तारकारि (पु०)--कार्तिकेय का नाम ।

तारकित (वि०) तारी से भरा हुआ ।

तारण (पु०)--शिव, विष्णु, नौका ।  
न०--पार उतारना । वि०--पार  
करने वाला । [नौका ।

तारणि -णी (स्त्री०)--बेड़ा, किरती,

तारतम्य (न०)--मिलसिला, भेद, क्रम,  
सापेक्ष मूल्य ।

तारा (स्त्री०)--सितारा, आख की  
पुतली, माती, बालि की स्त्री  
का नाम ।

ताराधिप (पु०)--चन्द्रमा, शिव, सुग्रीव,  
बालि, यद्स्पति ।

ताराप्रति (पु०)--प्रत्यक्ष ।

तारापीड (पु०)--चन्द्रमा, चाँद ।

ताराश्र(पु०)-काफूर, कपूर ।

तारिक(न०)-नाम का भाड़ा, उत्तरने का किराया ।

तारिणी(स्त्री०)-पार्वती, नौका ।

तारुण्य(न०)-जवानगी, नयापन ।

तारेय(पु०)-घालिपुत्रअद्भुत, बुधग्रह ।

तार्किठ (पु०)-तर्कशास्त्र का छाता, मन्तकदां, फिल्लासज़र ।

तार्क्य (पु०)-गरुड़, अरुण, घोड़ा, आरु, शिव, वर्ण, स्वर्ण ।

तार्तीय(वि०)-तीसरा । न०-तृतीयान्न ।

ताल (पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध वृक्ष, हथेली बजाना, मंजीरा, हाथ की हथेली, तलवार की मूठ, गानपरिमाण । न०-हरताल ।

तालक(न०)-हरताल, ताला, चटखनी ।

तालकेतु (पु०)-भीष्म का याचक ।

तालध्वज(पु०)-बलराम का विशेषण ।

तालपत्र (न०)-कणभूषण, कान का ज़ेवर, ताड़का पत्ता जो छिपने के काम में आता था ।

तालमन्त्र (न०)-ताला ।

तालाङ्क (पु०)-बलराम, ताड़ का पत्र, किताब, शिख, आरा ।

तालिज (पु०)-हाथ से ताल देना, घटपड़, चपेट ।

तालिश (पु०)-पर्वत, पहाड़ ।

तालु (न०)-ऊपर के जवाड़े के पीछे का मां भाग है उसे तालुकहते हैं अर्थात् तालुवा ।

तालुजिह्व (पु०)-तालु ही जिस की जिह्वा का काम देता है जैसे मगर ।

तालूर (पु०)-आवर्त, जलधम, भवर ।

वाधत् ( वि० )-उतना, उध क़दर, समस्त । अ०-प्रथम, पहिले, अथ, वास्तव में ।

ताविप (पु०)-समुद्र, स्वर्ग ।

तास्क्य (न०)-धोरी, श्रवण ।

तिक् (५ प०)-माक्रमण करना, जहनी करना, मारना, जाना । (१ आ०)-जाना, हरकत करना ।

तिक् (वि०)-कपेला, छः रसों में से एक, कटु । पु०-कटुरस, कपेला-पत्त, सुगन्धि ।

तिक्क (पु०)-खदिरवृक्ष, विरायता ।

तिग्म (वि०)-तीक्ष्ण, तेज़, कीधालु, कपेला ।

तिग्मांशु (पु०)-सूर्य, अग्नि, शिव ।

तिज्(१ आ०)-सहना, चर्दाश्त करना ।

( १० उ० )-तीक्ष्ण करना, तेज़ करना, महकाना ।

तिजिल (पु०)-चन्द्रना, रालस ।

तितठ (पु०)-उठनी, जानने का पात्र ।

न०-छाता । [ क्षमा ।

तितिक्षा (स्त्री०)-सहनशक्ति, अर्दाश्त, तितिक्षु (वि०)-सहारने वाला, सह-नशील ।

तितिष्ठ (पु०)-नीज गानक कीट ।

तिष्ठिर (पु०)-तीतर पत्नी ।

तिथ (पु०)-प्रेम, समय, अग्नि ।

तिथि (अकली०)-चन्द्रना की कलाओं के समय तथा वृद्धनुसार प्रतिप-दादि दिवस ।

तिथितय (पु०)--जिस में चन्द्रमा की कलाओ का तय होजाता है अर्थात् अमावास्या, प्रतिपदादि तिथि का कम होजाना ।

तिथिपत्री (स्त्री०)--जन्त्री, पत्रा ।

तिन्तिह (पु०)--इमली । न०--इमलीफल

तिम् ( १५० )--तर करना, भिगोना ।

( ४५० )--गीला होना, भीग जाना ।

तिमि (पु०)--मत्स्य, मछल, समुद्र, झील के समान एक घड़ी मछली ।

तिमित (वि०)--गीला, तर, निश्चल ।

तिमिर (स्त्री०)--अधेरा, अन्धापन, अक्षरोग । वि०--धुंधियाला ।

तिमिरारि ( पु० )--नूर्य, सूरज ।

तिरस् ( भ० )--छिपकर, टेढ़ेपन से पार, धौंर ।

तिरस्करिणी (स्त्री०)--पदां, कमात ।

तिरस्कार ( पु० )--अनादर, अपमान, झिड़क, छिपाना, अन्तर्धान ।

तिरस्कृ ( ८५० )--अपमान करना, निन्दा करना, छिपाना ।

तिरस्कृत(वि०)--अनादृत, अपमानित ।

तिरस्कृति--तिरस्क्रिपा ( स्त्री० ) = तिरस्कार । [ पदां ।

तिरोधान (भ०)--अन्तर्धान, छिपाना, तिरोभाव ( पु० )--अन्तर्धान, अभाव, छिपाना ।

तिरोभू ( १५० )--गष्ट होमा, छिपना ।

तिरोहित ( वि० )--छिपा हुआ, दृष्टि से अगोचर, अन्तर्हित ।

तिपंक् [ ए ] ( भ० )--टेढ़ा, टेढ़ेपन से ।

वि०--टेढ़ा, चक्रयुक्त । अश्वी०--पक्षी, पशु ।

तिष् ( ६५०, १०८० )--लेपन करना, तेल मलना, चिकना होना ।

तिल ( पु० )--अपने नाम से प्रसिद्ध सस्य, शरीर का एक काला चिन्ह जिसे तिल कहते हैं ।

तिलक ( पु० )--पूषंघत् । चन्द्रनादिका साथ पर लेपन । न०--धाकनी, ओकड़ा, अलकारभेद ।

तिलकलक ( पु० )--विषे हुए तिलों की घनी हुई खल ।

तिलतैल ( भ० )--तिलोंमें से निकला हुआ तैल ।

तिलरत्न--स्नेह ( पु० )=तिलतैल ।

तिलीक्षणा ( स्त्री० )--एक जप्तरा का नाम ।

तिष्य ( भ० )--कलियुग । पु०--पीप मास, आठवां मसत्र । वि०--शुभ, मङ्गलकर ।

तीक् ( १भा० )--जाना, हरकत करना ।

तीक्ष्ण (वि०)--तेज, कड़वा, क्रोधाहु, कठोर, अशुभ, चतुर, उत्साही ।

न०--युद्ध, विष, मृत्यु, शीघ्रता, हचियार, छोड़ा, गर्मी । पु०--विप्लव, काली सरणो, काली मिर्च ।

तीक्ष्णकन्द ( पु० )--प्याज, पलाशु ।

तीक्ष्णतण्डुला ( स्त्री० )--विप्यणी ।

तीक्ष्णदंष्ट्र ( पु० )--चीना ।

तीक्ष्णधार ( पु० )--तलवार, अस्त्र ।

तीक्ष्णपुष्प ( भ० )--नीम, लवंग, केतकी ।

तीक्ष्णबुद्धि ( वि० )--जल्दी ही यात

को सयक्तने वाला, चतुर, तीव्र-  
बुद्धि ।

तीक्ष्णमूय (पु०)--शी, यय ।

तीक्ष्णसार (पु०)--ढोहा ।

तीम् (४५०)--गीला होना, भीगना ।

तीर् (१०३०)--पार जाना, समाप्त  
करना पूरा करना तैर जाना ।

तीर ( न० --किनारा, कूड, तट ।  
पु०--सीसा घाणभेद ।

तीर (पु०)--शिव का नाम ।

तीर्ण (वि० --पार उत्तरा हुआ, जैना  
हुआ, पराजित, बढ़ा हुआ ।

तीर्थ (न०)--भार्ग, रास्ता, पाठ, जल-  
स्नान, पवित्रस्नान, उपाय, द्वारा,  
इलाज, पूजनीय जन, गुह, यज्ञ,  
शिक्षा, शास्त्र, ब्राह्मण, अग्नि)  
रोगनिदान ।

तीर्थंकर-तीर्थंकर ( पु० )-विष्णु,  
जैनों का उपास्य देव, सपरिवी,  
शास्त्रप्रवर्तक जैसे भोतम, कपिल,  
कणाद आदि ।

तीर्थंभूत ( वि० )-पवित्र, अद्वेय ।

तीर्थयात्रा ( स्त्री० )-हरद्वार, काशी  
आदि तीर्थस्थानों पर स्नान  
ध्यानादि के लिये जाना ।

तीर्थराज ( पु० )-प्रयाग, इलाहाबाद

तीर्थिक ( पु० )-तीर्थसेवी, तीर्थयात्री ।

तीम् (१५०)--ढोटा होना, बल पाना ।

तीवर ( पु० )-शिकारी, समुद्र,  
वर्णसंहर ।

तीम् ( पु० )-शिव, महादेव, तेजी ।

वि०--तेज, गहन, भयानक, असीम,  
उष्ण, कठोर । न०--ढोहा, गर्मी ।

तीव्रगति ( वि० )-शीघ्रगामी, द्रुत-  
गामी ।

तीक्ष्णैरूप ( न० )--ऐसा सादृश जिम  
में जान का हर हो ।

तीक्ष्णवेदना (स्त्री०)--सूक्ष्म तकलीफ ।

तु ( २ ५० )--पाना, प्राप्त करना,  
जाना, बढ़ना, मारना, शक्ति-  
शाली होना ।

तु ( अ० )--किन्तु, परन्तु, लेकिन,  
भी, तीसी, प्रत्युत । यह शब्द  
वाक्य के आरम्भ में प्रयुक्त नहीं  
होता है ।

तुङ्ग ( पु० )--ऊँचाई, पर्यंत, चोटी,  
कुप ग्रह, गैडा, शिव, सिंहासन,  
बुद्धिमान् । वि०--ऊँचा, प्रधान,  
मजबूत ।

तुगवीज ( पु० )--पारा

तुङ्गभद्रा (स्त्री०)--दक्षिण में एक नदी ।

तुङ्गी ( स्त्री० )--रात्रि, हल्दी ।

तुङ्गीपति ( पु० )--चन्द्रमा, चांद ।

[ तु गीश का भी यही अर्थ है । ]

तुष्ट (वि०)--ताबीज, नीच, निष्कर्मा,  
झाली, छोटा । न०--भूसी ।

तुज् ( १५० )--मारना, फल्ल करना ।

तुद् ( ६५० )--ऊगड़ना, खडगना, मारना ।

तुटुम ( पु० )--मूषक, मृग, चूहा ।

तुड् ( १५० )--अपमान करना, जना-  
दर करना, तोड़ना, छेड़ना ।

तुण् ( ६५० )--टेढ़ा करना, फुफाना,  
धोखा देना ।

तुगड (न०)--हाथी की सूड़, मूसर की  
मूचड़ी, चेहरा, मुह ।

तुलुह ( पु० )-घोष, चेहरा. पुं० ।  
 तुलुहभ-ल ( वि० )-बड़ी नाभि  
 वाला, यातूनी ।  
 तुलप् ( १०३० )-तारीफ करना, सरा-  
 हना, फैलाना, बढ़काना ।  
 तुल्य ( पु० )-अग्न, पत्थर । न०-  
 एक प्रकार का अंजन ।  
 तुलु ( ६३० )-गारना, जखमी करना,  
 घाव करना, मोचना, सताना ।  
 तुलुद ( न० )-पेट, मोटा पेट । पु०-  
 नाभि ।  
 तुलुदकूपी ( स्त्री० )-पेट की नाभि ।  
 तुलु ( वि० )-लत, सताया हुआ,  
 जखमी ।  
 तुलुधाय ( पु० )-दर्जी, चौबिक ।  
 तुलु-स्व ( १, ६५० )-नारना, हानि  
 पहुंचाना ।  
 तुलु ( ९, ४५० )-पूर्ववत् ।  
 तुलुल ( अस्त्री० )-कोलाहल, शोर-  
 गुल, लड़ाई, झगड़ा । वि०-  
 सपानक, भड़का हुआ ।  
 तुलुश-स्त्रा ( स्त्री० )-अपने नाम से  
 प्रसिद्ध पात्रविशेष, सूखे हुए  
 कद्दू का बकल । [ वाद्यभेद ।  
 तुलुवर-रु ( पु० )-एक गन्धर्व का नाम,  
 तुलु ( ६३० )-जलदी करना, चोट  
 पहुंचाना । ( ३५० )-दीड़ना ।  
 तुलुह ( पु० )-जातिविशेष, तुलुकाति ।  
 तुलुग ( पु० )-घोड़ा, मन, दिल, विचार ।  
 तुलुगाओह ( पु० )-घुड़सवार ।  
 तुलुगी ( स्त्री० )-घोड़ी । [ अङ्क ।  
 तुलुह ( पु० )-घोड़ा, दिल, मन, ७ का

तुलुहक ( पु० )-घोड़ा, अश्व ।  
 तुलुहमिय ( न० )-जी, यय ।  
 तुलुगवदन ( पु० )-किन्नर । [ यल ।  
 तुलुगशाला ( स्त्री० )-घोड़ों का अस्त-  
 तुलुगस्कन्द ( पु० )-घोड़ों का समूह ।  
 तुलुगारि ( पु० )-सहिय, भैंसा ।  
 तुलुगाकूट पु०-अश्वारोही, घुड़सवार ।  
 तुलुगिम ( पु० )-घोड़ा ।  
 तुलुगण ( न० )-असंग, अनासक्ति ।  
 तुलु-री ( स्त्री० )-कपड़ा धुनने का  
 औजार, तुलाहे का यन्त्रविशेष ।  
 तुलुय ( वि० )-चौपा, चार अङ्क वाला,  
 शक्तिशाली । न०-चतुर्थांश ।  
 तुलुयवर्ण ( पु० )-चतुर्थ अर्थात् शूद्रवर्ण ।  
 तुलुयक ( पु० )-तुलुकाति ।  
 तुलुय ( वि० )-चौपा, चार अङ्क वाला ।  
 तुलु ( १०३०, १५० )-तोड़ना, नापना,  
 परिमाण करना, उठाना, तुलना  
 करना । [ बिला, उठाना ।  
 तुलुन ( न० )-वजन, परिमाण, मुका-  
 तुलना ( स्त्री० )-उठाना, तोड़ना मुका-  
 बिला, सादृश्य, परीक्षण ।  
 तुलुसी ( स्त्री० )-अपने नाम से प्रसिद्ध  
 एक वृक्ष, हिन्दुओं के निकट यह  
 वृक्ष बड़ा पवित्र माना गया है,  
 इस वृक्ष में मलेरिया घिप के दूर  
 करने की शक्ति होती है ।  
 तुलुसीपत्र ( न० )-तुलुसीवृक्ष का पत्ता ।  
 तुलु ( स्त्री० )-तराजू, तोड़ने की हथड़ी,  
 माप, परिमाण, सादृश्य । ७वीं  
 राशि ।  
 तुलुकाकूट ( पु० )-असत्य परिमाण ।

तुलाकोटि-टी (स्त्री०)—पाजेष, भावर,  
नूपुर ।

तुलादान (न०)—स्वशरीर के बराबर  
। तौल कर पहिये को सुवर्ण, रजत  
या अन्न का दान करना ।

तुलाधर (पु०)—वणिक्, खौदागर,  
। तुला नामक राशि ।

तुलाधार (पु०)—पूर्ववत् ।

तुलापुस्त्य (पु०)—स्वशरीर के बराबर  
किसी बहुमूल्य धातु का दान ।

तुलामान (न०)—तराजू की इयद्दी ।

तुलासूत्र (न०)—तराजू की रस्सी ।

तुलित (वि०)—तुला हुआ, परीक्षित,  
। परिमित ।

तुल्य (वि०)—समान, बराबर, सदृश ।

तुल्यरूप (वि०)—पूर्ववत् । [कसेला ।

तुवर (अस्त्री०)—कसेला रस । वि०—

तुवरिका (स्त्री०)—फिटकरी ।

तुम् (४ प०)—प्रसन्न करना, सन्तुष्ट  
होना, सुख होना ।

तुय (पु०)—अनाल की भूसी, विभीतक  
घृत, घहेड़ा ।

तुपाग्नि-भनल (पु०)—भूसी की जाग,  
तोड़ की अग्नि ।

तुपार (पु०)—हिम, बर्फ, कपूर, पाला,  
शबनम, कोहरा । वि०—शीतल,  
ठण्डा ।

तुष्ट (वि०)—प्रसन्न, सन्तुष्ट । पु०—विष्णु ।

तुष्टि (स्त्री०)—सन्तोष, सखर, कनात,  
प्राप्त पदार्थों से मिल वस्तुओं में  
उदासीनता ।

तुष्ट्य (पु०)—शिव का नाम ।

तुस्त (न०)—खाक, रेणु, धूलि ।

तुहिन (न०)—हिम, बर्फ, कपूर,  
बन्द्रिका, ओस, पाला ।

तुहिनकर-किरण (पु०)—चन्द्रमा, कपूर ।

तुहिनाशु-रश्मि (पु०)—पूर्ववत् ।

तुहिनाचल (पु०)—हिमालय पर्वत ।

तूण (१० व०) सकोच करना, सिक्कना ।

तूण (पु०)—तरफस, तीर रखने का घर ।

तूणि (पु०)—पूर्ववत् ।

तूणीर (अस्त्री०)—पूर्ववत् ।

तूघर (पु०)—विना डाढ़ी का मनुष्य,  
शुद्धरहित सार, क्लेश मनुष्य ।

तूर (४ भा०)—जल्दी से जाना, मारना ।

तूर्ण (वि०)—जल्दी वाला । न०—शीघ्रता,  
जल्दी ।

तूर्य (अस्त्री०)—वाद्यमेद ।

तूल (१ प०)—तोड़ना, नापना । १० भा०—  
मरना, पूर्ण करना ।

तूल (अस्त्री०)—कपास, रुई । न०—आ-  
काश, आसमान ।

तूलक (न०)—रुई, कपास ।

तूलशर्करा (स्त्री०)—कपास का बीज  
अर्थात् बिनौला ।

तूलिका (स्त्री०)—मुषवित्र का कलम ।

तूवरक (वि०)—नपु सक, कापुरुष ।

तूणीक (वि०)—शान्त, चुप, मौनपुक्त ।

तूणीम् (अ०)—चुपचाप, मौन ।

तूस्त (न०)—घाघे हुए बाल, जटा,  
कण, पाप, धूलि ।

तूस्त (पु०)—कश्यप ऋषि का नाम ।

तूण (८ व०)—घाना, घास चरना ।



तृण (न०)-तिनका, घास, घास की  
यनी हुई चटार्थ ।

तृणकूट-कायक (न०)-घास का अंघार ।  
तृणद्रुम (पु०)-क्षेत्रक वृक्ष, खजूर,  
नारियल । [नीवार।

तृणधान्य (न०)-स्वयंभूत अनाज,  
तृणमाय (वि०)-तुच्छ, निकम्मा ।

तृणराज (पु०)-घास, तालवृक्ष ।

तृणौकसू (न०)-तिनकों का बना घर ।

तृणया (स्त्री०)-घास का अंघार ।

तृतीय (वि०)-तीसरा । न०-तृतीयांश ।

तृतीयप्रकृति (अपली०)-नपुंसक,  
बलीप्रलिंग ।

तृतीया (स्त्री०)-चन्द्रनाथ के उत्पन्न-  
पक्ष की तीसरी तिथि ।

तृद्व (३ व०, १ प०)-गारमा, नष्ट करना,  
अनादर करना ।

तृप् (४, ५, ६ प०)-चन्तुष्ट होना, सुशु-  
प्त होना, तृप्त होना ।

तृप्त (वि०)-शान्त, चन्तुष्ट ।

तृप्ति (स्त्री०)-चन्तुष्टि, प्रसन्नता,  
सन्तोष ।

तृ [त्रि] कटा (स्त्री०)-हरीतकी,  
पेट्टा भीर भाँचला इन तीन  
र्वापधियों का समूह ।

तृप् (४ प०)-प्यासा होना, चाहना ।  
स्त्री०-तृप्तकट दण्डा, आसुरता,  
प्यास ।

तृणा (स्त्री०)-विषासा, प्यास, तृप्तकट  
दण्डा, प्यासदेवता ।

तृपित (वि०)-प्यासा, लालची, तृप्तकट ।

तृणा (स्त्री०)-प्यास, लालच, दण्डा ।

तृणालु (वि०)-बहुत प्यासा, तृप्तकट  
दण्डक ।

तृ (१प०)-तरना, पार होना, पार  
जाना, प्राप्त करना, गालिय  
आना ।

तेज (१प०)-रत्ना करना, बचाना ।

तेज (पु०)-कसेलापन, तेजी, चमक,  
साहस ।

तेजन (न०)-हथियार की भार, घांस;  
तेज करना, पार रखना ।

तेजस् [ः] (न०)-तेजी, तीव्रता,  
अग्निश्रिया, चमक, रोश-  
नी, ओज, उत्साह, शक्ति, धीर्य,  
अग्नि, सार, चर्चा, स्वर्ण, दिनाग ।

तेजस्विनी (स्त्री०)-तेज वाली स्त्री,  
व्योतिष्मती उता ।

तेजस्वी [न्] (वि०)-तेजोयुक्त, धीर्य-  
वान्, प्रसिद्ध, प्रसन्न ।

तेजित (वि०)-तीव्र, भड़का हुआ,  
तेज पार वाला, शरण पर लगा  
हुआ ।

तेजोभद्र (पु०)-अपमान, गौरव का  
नाश, उत्साहहरण ।

तेजोमय (वि०)-चमकीला, भीमा-  
यमान, उत्साही ।

तेजोमूर्ति (पु०)-सूर्य, तेजस्वी पुरुष ।

तेप् (१भा०)-टपकना, दिखना, चम-  
कना ।

तेमः-नमू-तर करना, नमी, गीला-  
पन । 'तेमन' कढ़ी का भी वा-  
चक है ।

तेदरय (न०)-तेजी, कसेलापन, सू-  
रवारी, शरी, निर्दयता ।

तैजस (वि०)-चमकीला, शोभायमान,  
तैजोयुक्त, पराक्रमी, बलशाली ।  
न०-घृत, शक्ति, बल, पातुमात्र ।

तैतिर (पु०)-तीतर पक्षी ।

तैतिल (पु०)-देवता, गेंडा ।

तैतिरिक्त (पु०)-तीतरमार ।

तैत्तिरीय (पु०)-यजुर्वेद की तैत्तिरीय  
शाखा, एक उपनिषद् का नाम ।

तैथिक (न०)-तीर्थ से लाया हुआ  
जल । पु०-तपस्वी, सिद्धान्त-  
प्रवर्तक । वि०-पवित्र, तीर्थी-  
भूत । [वस्तु, तेल ।

तैल (न०)-अपने नाम से प्रसिद्ध  
तैलकार (पु०)-तेली ।

तैलपर्णिका (स्त्री०)-चन्दन, धूप,  
तिरपनतेल ।

तैलफल (पु०)-इक्षुदी वृक्ष ।

तैलयन्त्र (न०)-तेली का फोल्हू ।

तैलिक-तैली (पु०)-तैलकार, तैली  
जाति । [ की बत्ती ।

तैलिनी (स्त्री०)-छम्प वा चिराग ।

तैलंग (पु०)-कर्णाटक प्रदेश का नाम ।

तैप (पु०)-पीपमास ।

तौक (न०)-सन्तान, बच्चा, सन्तति ।

तौकक (पु०)-घातक पक्षी ।

तौकन (न०)-कान का मैल । पु०-  
यादल, हरा रंग ।

तौटक (न०)-१२ अक्षर के पाद  
वाला छन्द । [फाड़ना ।

तौहन (न०)-तौड़ना, विभक्त करना,

तौद (पु०)-कष्ट, सूर्य, सूर्य तच्छलीफ ।

तौदन (न०)-कष्ट, मुच, अंकुश ।

तोमर (अस्त्री०)-छौहदण्ड, रायचांस ।

तोय (न०)-जल, पूर्वापादा, पानी ।

तोयकाम (वि०)-प्यासा, पिपासित,  
जलेच्छुक ।

तोयकीडा (स्त्री०)-जलकीड़ा ।

तोयगर्भ (पु०)-नारियल, नारिकेल ।

तोयद (न०)-घी, घृत । पु०-मेघ,  
यादल ।

तोयधर (पु०)-मेघ, यादल ।

तोयमल (न०)-समुद्रफेन ।

तोयधर (पु०)-नमी, तरी ।

तोयराज (पु०)-वरुण, समुद्र, सागर ।

तोयवेला (स्त्री०)-समुद्रतट, किसी  
जलाशय का किनारा ।

तोरण (अस्त्री०)-विवाहादि उत्सव  
पर बगस्पति के जो दरवाज़े  
आदि बनाये जाते हैं, बन्दर-  
बार, बाहर का दरवाज़ा । पु०-  
शिव । न०-गर्दन, गला ।

तोड (अस्त्री०)-तुला हुआ सामान,  
परिमाण, तोल, तोला ।

तोडन (न०)-तोड़ना, उठाना ।

तोड्य (न०)-तोड़ । वि०-तुलने  
लायक ।

तोपः-तोपणम् (न०)-प्रसन्नता,  
सुशी, सन्तोष, तुष्टि ।

तोपित (वि०)-सन्तुष्ट, प्रसन्न ।

तोपल (न०)-मूसल, दण्ड ।

तौर्य (न०)-आज्ञे की आज्ञा ।

तौन (न०)-तौल, धज़न ।

तौलिक (पु०)-मुसगिर, चित्रकार

तौल्य (न०)-तौल, धज़न, समानता ।

त्यक्त (वि०)-त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ,  
पूजित ।

त्यक्तलज्ज (वि०)-वैशर्म, लज्जाहीन ।

त्यज् ( १ प० )-त्यागना, छोड़ना,  
घरखास्त करना, परहेज करना,  
छुटकारा पाना ।

त्यजन् (न०)-त्याग, अलहदगी, दान ।

त्याग (पु०)-छोड़ना, दान, उदारता,  
व्यवसाय ।

त्यागपत्र (न०)-हस्तीका, तलाकनामा

त्यागशील (वि०)-उदार, मुक्तहस्त,  
कैयाल ।

त्यागी [न्] ( वि० )-छोड़ने वाला,  
दाता, वीर, उदार, नित्यकर्म का  
त्याग करने वाला ।

त्याजित (वि०)-त्याग कराया हुआ,  
छुड़ाया हुआ ।

त्याज्य (वि०)-छोड़ने योग्य, त्यक्तव्य,  
देने योग्य ।

त्र ( १ भा० )-शर्मिन्दा होना, शर्म करना  
त्रया ( स्त्री० )-लज्जा, शर्म, कुटुम्ब,  
मध, कुलटा ।

त्राहीन (वि०)-लज्जाहीन, वैशर्म ।

त्रपु [पुष्] (न०)-चीसा, टिनधातु ।

त्रपुल [प] (न०)-टिन धातु ।

त्रय (न०)-तीन वस्तुओं का समूह ।  
वि०-तियुगा ।

त्रयम् (पु०)-तीन का वाचक ।

त्रयी (स्त्री०)-प्राक, यजु, साम तीनों  
वेदों का समुदाय, ऐसी स्त्री  
जिस के पति और पुत्र उपस्थित  
हों, तिगूना, समस्त, मुक्ति ।

त्रयीमुख (पु०)-ब्राह्मण, वेदवेत्ता ।

त्रयोदश (वि०)-तेरहवाँ ।

त्रयोदशन् (वि०)-तेरह ।

त्रयोदशी (स्त्री०)-चन्द्रमास के प्रत्येक  
पक्ष की तेरहवीं तिथि ।

त्रय् ( १, ४ प० )-हिलना, कापना, भय-  
भीत होना, डरना, डरसे भागना ।

त्रय (पु०)-हृदय, दिल । न०-जंगल-  
वन, जीवधारिसमूह ।

त्रयन् (न०)-तय चिन्ता, वैचैती ।

त्रयरेणु (पु०)-धूलिकण, तीस परमा-  
णुओं का समूह । [ कायर ।

त्रस्त ( वि० )-भयभीत, छोड़कर,

आ ( २ भा० )-रक्षाकरना, बचाना ।

त्राण ( न० )-रक्षा, बचाव, पनाह,  
कवच । वि० रक्षित, बचाया हुआ

त्रात (वि०)=त्राण ।

त्राता [त्] वि०-रक्षक, बचाने वाला

त्रास (पु०)-भय, डराव, डर । वि०-  
भयातुर ।

त्रासन (न०)-डराना, भयहेतु ।

त्रासित (वि०)-भयातुर, डराकर ।

त्रि (वि०)-तीन की संख्या वाला, तीन

त्रिक ( न० )-तीन का समुदाय,  
त्रयमकूप, कटिरूप, त्रिकला, त्रिकुट

त्रिकुट (न०)-छोँट, निचोँ और पोपल ।

त्रिकुट ( पु० )-सिरण, कण, त्रिकूट  
पर्यंत । वि०-सर्वप्रधान ।

त्रिकाय ( पु० )-युध का वाचक ।

त्रिकाल (न०)-सूत, भविष्यत्, वर्त-  
मान नामक तीन काल, सायं,  
प्रातः और दोपहर नामक दिन  
के तीन प्राण ।

त्रिकालज्ञ (वि०)—सर्वज्ञ, परमात्मा।  
त्रिकूट (पु०)—मिहलद्वीप में एक  
पर्वत जिस की चोटी पर लंका  
बसती थी।

त्रिकोण (वि०)—तीन कोन वाला,  
भुज वाला। पु०—त्रिभुज, तीन  
कोने का क्षेत्र, स्त्रीभग, मंगल  
की आकृति।

त्रिगतं (पु०)—गालम्बरप्रदेश और  
वहाँ के निवासी।

त्रिगुण (वि०)—तिगुना, तीन गुणों  
का नेल, सांख्यशास्त्र में प्रधान  
का नाम।

त्रिचतवारिण (वि०)—तैंतालीस।

त्रिजगती (स्त्री०)—पृथिवी, द्यौः और  
अन्तरिक्ष नामक तीन लोक।

त्रिजटा (स्त्री०)—एक राजसी का  
नाम जो अशोकवन में सीता  
के पास रहती थी।

त्रिणीता (स्त्री०)—स्त्री, भार्या।

त्रिणे [ ने ] त्र (पु०)—तीन आंख  
वाला अर्थात् शिव।

त्रिदशाधिप (पु०)—इन्द्र।

त्रिदिन (न०)—तीन दिन एक साप

त्रिदिन (न०)—आकाश, स्वर्ग, सुर।

त्रिदोष (पु०)—वात, पित्त, कफ ना-  
मक तीन शरीरस्थ दोष।

त्रिपा (अ०)—तीन प्रकार से।

त्रिपारा (स्त्री०)—गंगा नदी।

त्रिपञ्चाशत् (स्त्री०)—तरीपन।

त्रिपटु (पु०)—कांष, कस्यु।

त्रिपत्रक (पु०)—पलाश वृक्ष।

त्रिपाठी (वि०)—संहिता, पद और  
क्रम का जानने वाला।

त्रिपाद (पु०)—परमात्मा, ज्वर।

त्रिपुट (पु०)—त्रिकोण, तीर, तट,  
हाथ की हथेली।

त्रिपुर (पु०)—एक राक्षस का नाम।

त्रिफला (स्त्री०)—हैड, बहेडा, और  
आंवला नामक औषध।

त्रिभाग (पु०)—तीनरा हिस्सा।

त्रिभुज(न०)—तीन भुजा वाला क्षेत्र।

त्रियामा (स्त्री०)—रात्रि, हन्दी,  
यमुना, नील।

त्रिलिङ्ग (वि०)—ऐसा शब्द जो तीनों  
लिङ्गों में प्रयुक्त हो सके जिसे  
विशेषण कहते हैं।

त्रिवर्ण (पु०)—धर्म, अर्थ और काम  
नामक तीन विषय; सत्त्व, रज,  
और तम नामक तीन गुण; ब्रा-  
ह्मण, क्षत्रिय और वैश्य नामक  
तीन वर्ण।

त्रिविद्य (वि०)—वेदत्रयी का ज्ञाता।

त्रिविध (वि०)—तीन प्रकार का।

त्रिशङ्कु (पु०)—सूर्यवंशी एक राजा  
का नाम जो हरिश्चन्द्र का पिता  
था। यह राजा कहते हैं कि सश-  
रीर स्वर्ग में पहुँचना चाहता  
था, एतद्दर्श समने अपने कुलगुरु  
वशिष्ठ से यज्ञ की प्रार्थना की,  
किन्तु वशिष्ठ ने अस्वीकार कर-  
ने पर विश्वामित्र ने यज्ञ करा-  
ना अङ्गीकार कर लिया। विश्वा-  
मित्र ने त्रिशङ्कु को सशरीर

स्वर्ग की ओर बढ़ाना आरम्भ किया परन्तु ऊपर पहुँचने पर इन्द्रादि देवताओं ने उसे दकेल दिया और वह नीचे की ओर गिरने लगा। तब विश्वामित्र ने उसे अपने तपोव्यय से आकाश में ही स्थित रखवा, जो कि अब तक आकाश में ही लटक रहा है, ऐसी एक घौराणिक गाथा है।

त्रिशत् (न०)—तीन सौ वा एक सौ तीन। [ अस्त्रविशेषः।

त्रिशूल (न०)—तीन शोक का एक त्रिशूलधारी (पु०)—शिव का वाचक। त्रिशुल (पु०)—विभक्त पर्यंत और त्रिशुल।

त्रिपट्टि (स्त्री०)—तरेपठ।

त्रिसहस्रि (स्त्री०)—तिहत्तर।

त्रिसप्त (वि०)—बराबर सुनाओं वाला त्रिभुज।

त्रिग (वि०)—तीसवा।

त्रिधक (वि०)—तीस का घना हुआ।

त्रिंशत् (स्त्री०)—तीस।

त्रिशप्तप्र (न०)—चन्द्रमुखी, कुमुदनी।

त्रिगति (स्त्री०)—तीस।

त्रुट् (४, ६ प०)—काटना, तोड़ना।

त्रुटि-टी (स्त्री०)—काटना, छेद, दो निमेष का समय, शक, सन्देह, गलत, छोटी इलायची।

त्रुटिम (वि०)—फटा हुआ।

त्रुप् स्प् (१ प०)—गारना, कटन करना।

त्रिता (स्त्री०)—चार युगों में दूसरा युग, क्षुद्र में एक नाम दाव, तीन कीटों का ऊँचे होकर गिरना।

त्रै (१ आ०)—रक्षा करना, यथाना, पालन करना।

त्रैकालिक (वि०)—तीन काल अपात् भूत, भविष्यत्, वर्तमान से सम्बन्ध रखने वाला।

त्रैगुणिक (वि०)—त्रिगुणा।

त्रैदशिक (वि०)—स्वर्गीय, आसनामी।

त्रैष (वि०)—तीन प्रकार का। न०—तीन प्रकार।

त्रैमासिक (वि०)—तीन मास का, तीन मास में होने वाला।

त्रैमास्य (न०)—तीन मास का काल।

त्रैराशिक (न०)—अङ्कगणित का एक विशेष नियम।

त्रैलोक्य (न०)—पाताल, भूलोक और स्वर्ग नामक तीन लोक।

त्रैयर्गिक (वि०)—धर्म, कार्य और काम इन तीन विषयों से सम्बन्ध रखने वाला।

त्रैयर्गिक (वि०)—द्विजाति से सम्बन्ध रखने वाला। [ वर्ष का।

त्रैयर्गिक (वि०)—तीनछाटा, तीन त्रैविष्टप (पु०)—देवता।

त्रौटक (न०)—नाट्यभेद।

त्वष्ट् (१ प०)—पतला करना, ढकना।

त्वग् (१ प०)—आना, हरकत करना, उल्लांग गारना।

त्वच् [क्] (स्त्री०)—त्वचा, चमड़ा, खाल, स्पर्शेन्द्रिय।

त्वप् (न०)—छाल, त्वचा।

त्वषा (स्त्री०)—त्वष्ट्।

त्वदीय (वि०)—तेरा, तुम्हारा।

स्वर ( १ आ० )-जल्दी करना, जल्दी से जाना ।

त्वरण ( न० )-शीघ्रता, जल्दी ।

त्वर-रि ( स्त्री० )-जल्दी, तेजी, शीघ्रता ।

त्वरित ( न० )-जल्दी, तेजी, शीघ्रता ।

वि०-तीव्र, शीघ्रगामी ।

त्वरितम् ( अ० )-शीघ्रता से, जल्दी से, तेजी से ।

त्पटा [ पट् ] ( पु० )-कारीगर, बढ़ई, विश्वकर्मा ।

त्वाहय [ घृ ] ( पु० )-तेरे सगान, तुम्हारी तरह का ।

त्विप् ( १ ट० )-चमकना, दीप्तिमान होना ।

त्विप् ( स्त्री० )-दीप्ति, चमक, हठ्ठा, रिवाज, यज्ञ, बाणो ।

त्विपा ( स्त्री० )-पूर्ववत् ।

त्विपि ( पु० )-प्रकाशकरण, खुन्द-रता, घोषा, तेज ।

त्वंक ( पु० )-तलवार की मूठ, रैगने वाला जम्तु ।

## थ

थ-तयगं का द्वितीय अक्षर । पु०-पर्वत, रत्न, भक्षण, रोगविशेष, मय, आशंका । न०-रक्षा, मय ।

थयं ( १ प० )-जाना, चमना ।

थुह ( ६ प० )-टकना, छिपाना ।

थुत्कार ( पु० )-धूकते समय जो शब्द होता है ।

थुं ( १ प० )-मारना, थोट पहुंचाना ।

थुत्कार ( पु० )=थुत्कार ।

## द

द-तयगं का तीसरा अक्षर । न०-खी ।

पु०-दान, पर्वत । वि०-दाता, उत्पादक वा नाशक ।

दंश् ( १ प० )-काटना, डंक मारना, हसना ।

दंश् ( पु० )-काटना, हसना, डंक, कटा हुआ स्थान, दांत, जोड़, भयव्य, सांप का डंक मारना, दोष, धन-मक्खी । काटने वाला ।

दंश्क ( पु० )-कुत्ता, भयव्य । वि०-

दंश्न ( न० )-डंक मारना, कवच ।

दंष्ट्रा ( स्त्री० )-यह दांत, दाढ़, कीला, हाथीदांत ।

दंष्ट्राल ( वि० )-बड़े २ दांतों वाला ।

दंष्ट्रिक ( वि० )-पूर्ववत् ।

दंष्ट्रिका ( स्त्री० )-दाढ़, दंष्ट्रा ।

दंष्ट्री [ नृ ] ( पु० )-जंगली भूभर, मय ।

दंश् ( १ आ० )-बढ़ना, उगना, मारना, बसना, योग होना ।

दक्ष ( वि० )-चतुर, योग्य, उपयुक्त, तत्पर, ईमानदार । पु०-एक प्रजापति का नाम, जो प्रजा का पुत्र था ।

दक्षकन्या ( स्त्री० )-दक्ष प्रजापति की कन्या, अश्विनी अपदि तारा, दुर्गा ।

दक्षिण ( वि० )-दाहना, सीधा, चतुर, कुशल, नीची ओर का, दक्षिण दिशा का । पु०-दाहना हाथ, विष्णु, शिव । अस्त्री०-दक्षिण, सीधी ओर वा तरफ ।

दक्षिणतः (अ०)-दक्षिण दिशा से,  
दाहनी ओर से ।

दक्षिणपरिवन ( वि० )-मगरवी व  
जनूची । [ जनूची ।

दक्षिणप्राग्-पूर्व ( वि० )-मगरवी व

दक्षिणममुद्र-सागर ( पु० )-दुनिया के  
जनूच में जो समुद्र है ।

दक्षिणा ( स्त्री० )-धनदान, संस्कार  
आदि वस्तुओं पर याज्ञिकों को  
जो भेंट दी जाती है, यज्ञ की  
पत्नी, प्रतिष्ठा, प्रजापति की  
कन्या, दक्षिणदिशा, यश ।

दक्षिणात् (अ०)-दक्षिण से ।

दक्षिणापथ(पु०)-भारतवर्षका दक्खिनी  
भाग ।

दक्षिणापथ (न०)-ऊर्ध्व राशि में सूर्य  
का यदुत्तम । २२ जून से २२ दिसम्बर  
तक का समय जब कि सूर्य की  
गति दक्षिण की ओर रहती है ।

दक्षिणार्ध (वि०)-दक्षिणापथके योग्य

दक्षिणीय-तिथय ( वि० )-दक्षिणा  
पथ के योग्य ।

दाय ( वि० )-जला हुआ, दागल,  
भस्मीकृत ।

दध् ( ५ प० )-घातकरना, भारना,  
रत्ता करना, जाना ।

दध् ( १ प० )-रवागता, रवा करना,  
पालना ।

दध् ( १० उ० )-मज्जादेना, दध् देना ।

दध् (अरती०)-दध्, लध्, मज्जा,  
माटी, अगुह, कोण, पोहा, यम-

राज, साठ पल का काठ ।

दण्डक ( पु० )-उड़ी, डण्डा, कतार,  
पंक्ति, एकलन्दकानाम । अस्त्री०-  
नर्मदा और गोदावरी के बीच के  
स्थल का नाम ।

दण्डकारण्य ( न० )-प्राचीन काल में  
दक्षिण की ओर एक बड़े यम  
का नाम ।

दण्डग्रहण ( न० )-ग्रहग्रहण या वान-  
प्रस्थ आश्रम में प्रवेश करना ।

दण्डदेवकुल(न०)-न्यायालय, अदालत,  
दण्डधर[धार](पु०)-यमराज, न्याया-  
धीश, कुम्भकार, राजा, फकीर,  
साधु, ब्रह्मचारी ।

दण्डनायक ( पु० )-जज, कोतवाल,  
राजा, हाकिम, सिपाही ।

दण्डनिपातन (न०)-सजा देना ।

दण्डनीति (स्त्री०)-कानून, नैतिकद्वारा,  
शुक्राचार्य आदि के नीतिग्रन्थ  
जिन में दण्ड का विधान है ।

दण्डनीय(वि०)-दण्डयोग्य, फाँसिलेसजा  
दण्डनेता [य] (पु०)-राजा, यमराज,  
न्यायाधीश ।

दण्डवाणि(पु०)-यमराज, न्यायाधीश

दण्डपातन (प०)-सजा देना, दण्डित  
करना ।

दण्डपारुष्य (न०)-कठोरदण्ड, दण्ड  
की कठोरता, आक्रमण ।

दण्डपाल लक्ष्(पु०)-मुख्य न्यायाधीश,  
द्वारपाल । [ लक्ष्मण ।

दण्डपाशक (पु०)-जालाद, पुलिस का

दण्डबालपि (पु०)—हाथी, हस्ती ।  
 दण्डभृत् (पु०)—कुम्हार, यमराज ।  
 दण्डवत् (अ०)—सड़े होकर, छेदकर ।  
 दण्डविधि (पु०)—कानूनफौजदारी ।  
 दण्डहस्त (पु०)—द्वारपाल, यमराज ।  
 दण्डाष्टा (स्त्री०)—सजा का हुकम ।  
 दण्डाधिप (पु०)—प्रधान न्यायाधीश ।  
 दण्डानीक (न०)—सेना का एक भाग ।  
 दण्डार (पु०)—गाड़ी, किरती, कुम्हार  
 का पहिया ।

दण्डार्ह (वि०)—क्राविले सजा ।  
 दण्डिका (स्त्री०)—रस्सा, छड़ी, पंक्ति,  
 मोतियों की माला ।

दण्डी [न०] (पु०)—ब्राह्मण, संन्यासी,  
 द्वारपाल, राजा, यमराज, भिक्षु,  
 एक कवि का नाम जिस ने दण्ड-  
 कुमारचरित बनाया है ।

दण्ड्य (वि०)—दण्डनीय ।

दत्त (वि०)—दिपा हुआ, रक्षित, भेट में  
 दिया हुआ । पु०—ब्राह्म पुत्रों में  
 से एक, धैर्य की उपाधि । न०—  
 दान, भेट ।

दत्तक (पु०)—वसंगाम्त्र के अनुसार १२  
 प्रकार के पुत्रों में से एक, गोद  
 लिया हुआ पुत्र ।

दत्ति (पु०)—दान, भेट ।

दत्तिवत् (पु०)—दत्तकपुत्र ।

दद (१ आ०)—देना, भेट करना ।

ददन (न०)—दान, भेट ।

ददु (पु०)—एक रोग जो अंपात्रों में  
 होता है, दाद का रोग, कलुआ ।

ददु (१ आ०)—पारण करना, रचना,

देना, भेट करना ।

दधि (न०)—दही, जमा हुआ दूध, दख ।

दधिधार (पु०)—मन्थनदण्ड ।

दधिज (न०)—ताजा घी, लोनी ।

दधित्थ (पु०)—कपित्थ ।

दधीच-वि (पु०)—कदंम प्रजापति की  
 कन्या के गर्भ से अयवं मुनि का  
 पुत्र जिस की हड्डियों से देवताओं  
 का उद्भव निमित्त हुआ था, जिससे  
 इन्द्र ने द्युनाभुर का वध किया ।

दनु (स्त्री०)—दत्त प्रजापति की एक  
 कन्या का नाम जो कश्यप की  
 पत्नी थी जिस के गर्भ से दानव  
 उत्पन्न हुए ।

दनुज-पुत्र (पु०)—राक्षस का नाम ।

दन्त (पु०)—दांत, चबाने का साधन,  
 हाथीदांत । [ शिखर, दांत ।

दन्तक (पु०)—नागदन्त, खूंटी, पर्वत-  
 दन्तकाष्ठ (पु०)—दांत साफ करने का  
 काष्ठ जैसे कीकड़, मिहीड़े की  
 लकड़ी ।

दन्तकूर (पु०)—लड़ाई, युद्ध ।

दन्तघर्ष (पु०)—दांत पीसना ।

दन्तकूट (पु०)—जिस से दांत टूट  
 रहते हैं आँठ, होठ ।

दन्तधावन (न०)—दांतों के साफ करने  
 का युक्त, दांतों का साफ करना ।  
 पु०—सैर का पेड़, बकुल, दांतोत ।

दन्तपात (पु०)—दांतों का गिरना,  
 दांत टूटना ।

दन्तप्रतापन (न०)—दांतों का पीसना ।

दन्तधीज (पु०)—अगर का पेड़,  
 दाहिम ।



दन्तवेष्ट(पु०)-सूहा ।

दन्तशूल(अस्त्री०)-दांतों का दर्द ।

दन्तायुध(पु०)-सूअर, शूकर ।

दन्तावल (पु०)-हाथी, हस्ती ।

दन्ती[न] (पु०)-पूवेवत् ।

दन्तुर(वि०)-जिस के दात ऊंचे हों  
या बाहिर की निकले हो ।

दन्त्य(वि०)-दांतों का, दांत की जड़  
से निकला हुआ, दांतों के लिये  
उपयोगी । पु०-जिस वस्त्र का  
रूपान दांत है ।

ददश(पु०)-दांत ।

ददशूक(पु०)-सर्प, सांप, राक्षस ।

दम्(१० उ०)-मरेना, आगे की धके-  
लना । ( ५ प० )-धीखा देना,  
ठगना, दम्भ करना ।

दम्(पु०)-समुद्र । वि०-छोटा, अल्प ।

दम्(४ प०)-शान्त होना, पाउतू  
बनाना, दण्ड देना रोकना ।

दम्(पु०)-मन का दमन, दण्ड, कीचड़,  
विष्णु, दमयन्ती के एक भाई का  
नाम, मगीवृत्तियों का रोकना ।

दमक(वि०)-दमन करने वाला, पाउतू  
बनाने वाला । [ नाम ।

दमपोष(पु०)-शिशुपाल के पिता का  
दमघ ( पु० )-इन्द्रियदमन, आत्म-  
निग्रह, दण्ड ।

दमन (न०)-पाउतू करना, दयाना,  
सजा देना, आत्मनिग्रह, धर्म ।  
पु०-पोंट्रा, विष्णु ।

दमयन्ती(स्त्री०)-विदेहराज भीम की  
पुत्री, गल की पत्नी ।

दमिप्त( वि० )-दान्त, पाउतू, दमन  
किया हुआ पराभूत ।

दम्[सु] नन्(पु०)-अग्नि, शुक्राचार्य ।

दम्पती(पु० द्वि०)-पतिपत्नी ।

दम्भ(५ प०, १० उ०)=दम् ।

दम्भ(पु०)-धीखा, फरेष, शठता, इन्द्र-  
वज्र, छद्मवेप ।

दम्भन(न०)-धीखा देना, ठगना ।

दम्भी[न] (पु०)-ठग, छद्मवेपी । वि०-  
झूठा, मगूर ।

दम्भोलि(पु०)-हीरा, रत्न, वज्र ।

दय(१ अ०)-दया करना, रहम करना,  
रक्षा करना, पालन करना, जाना,  
देना, मारना । [ नया देल ।

दम्प(वि०)-दमन करने योग्य । पु०-  
दया(स्त्री०)-रहम, कृपा दयालुता,  
मेहर्षाणी ।

दयाकर(पु०)-दयावान्, मेहर्षान ।

दयाद्रुपित्त(पु०)-दयाभाव से जिसका  
मन विचल गया हो ।

दयालु ( वि० )-मेहर्षान, दयापुष्क,  
सहृदय । [ होना ।

दयालुता( स्त्री० )-दयाभाव, दयालु  
दयावान् [ धत्त ] ( वि० )-दयालु,  
कृपान्वित । [ पति, प्रेमी ।

दयित(वि०)-प्यारा, पसन्दीदा । पु०-  
दयिता (स्त्री०)-माया, पत्नी ।

दयितालित(पु०)-माया के धर्मीभूत,  
ओरू का गुलाम ।

दर (अस्त्री०)-गढ़ा, शार । पु०-भय,  
तूफान, जलधारा ।

दरुष(वि०)-कायर, कापुट्य ।

दरण(न०)-तोड़ना, फाड़ना, चीरना ।  
 दरघ(पु०)-गार, गुफा, जान बचाकर भागना । [ हृदय ।  
 दरद्(स्त्री०)-ढालू चहान, प्रवृत्त, मय, दरसु(अ०)-प्रवृत्त, किञ्चित्, थोड़ा ।  
 दरि-री(स्त्री०)-कन्दरा, गुफा, पाटी ।  
 दरित (वि०)-मयभीत, झीफजड़ा, फाड़ा हुआ ।  
 दरिद्र(वि०)-निधन, गरीब, दीन ।  
 दरिद्रा(२ प०)-दुःखी होना, गरीब होना, निधन होना ।  
 दरिद्राण-द्रता(स्त्री०)-निधनता, गरीबी ।  
 ददर(पु०)--प्रवृत्त, टूटा हुआ घड़ा ।  
 ददरीफ(पु०)--प्राद्यभेद, नैटक, घादल ।  
 ददुर(पु०)-घादल, नैटक, प्रवृत्त, घाद्य-ध्वनि, घाद्यभेद । न०-मान्त, निहा, ग्राममण्डल ।  
 ददुं-दूँ(स्त्री०)--दाद नामक रोग ।  
 दपे ( पु० )--अहङ्कार, घमण्ड, गहर, अजडपन, गर्भी ।  
 दपेक(पु०)--कामदेव ।  
 दपेच्छिद्र-हर ( वि० )--घमण्ड को दूर करने वाला, दपे की दूर करने वाला ।  
 दर्पण ( पु० )--आयना, शीशा, कुयेर का प्रवृत्त । न०-आंख, घमण्ड करना ।  
 दर्पित ( वि० )--घमण्डही, मगलूर [ दर्प भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ]  
 दर्म ( पु० )--कुशा नाम की घास ।  
 दर्मपत्र ( न० )--कांस नामक घास ।  
 दवं ( पु० )--हिल पुरुष, राक्षस, कर-छो, चोट । [ द्वारपाल ।  
 दवंट ( पु० )--गांव का चौकीदार,

दर्विक ( पु० )--करछी, घमचा, घमच ।  
 [ दिविं--र्वी का भी यही अर्थ है ] ।  
 दर्वीकर ( पु० )--सर्प, सांप ।  
 दशं ( पु० )--दृश्य, नज़ारा, अभाव-रूपा, नवचन्द्रोदय ।  
 दशंक ( वि० )--देखने वाला, परीक्षक । पु०-द्वारपाल, कारीगर, नुमायशी ।  
 दशनं ( वि० )--देखने वाला, दिखाने वाला । न०-ज्ञान, आंख, परीक्षा, दिखाने देना, मुलाकात, प्रत्यक्षीकरण, स्वप्न, अध्यात्म-ज्ञान, सिद्धान्तविधेयता, दर्पण, राय, दुरादा ।  
 दशनीय ( वि० )--देखने योग्य, मनो-हर, सुन्दर ।  
 दशंयिता [ त् ] ( वि० )--दिखाने वाला, दशंक । पु०-द्वाररक्षक, रहनुमा ।  
 दशित ( वि० )--दिखाया हुआ, व्या-रुपाकृत, प्रत्यक्ष । भेदना ।  
 दल ( १ प० )--तोड़ना, दलना, फाड़ना, दल ( अस्त्री० )--दुकड़ा, भाग, अहंश, म्यान, घादल, पत्तर ।  
 दलकोमल ( न० )--कमल, पद्म ।  
 दलन ( न० )--तोड़ना, टूट पड़ना, पीसना, विनाश करना ।  
 दलप ( पु० )--स्वर्ण, आस्त्र, हथियार ।  
 दलिक ( न० )--लकड़ी, खेपटी ।  
 दलित ( वि० )--खिटा हुआ, मफुल्ल, दलन किया हुआ, तोड़ा हुआ ।  
 दलम ( पु० )--पाप, कादिकता, बक ।  
 दव ( पु० )--अग्नि, क्वर, कट, जंगल, यन, वनाग्नि ।

दयधु (पु०)-बासो की सोजिश,  
चिन्ता, दुःख, अग्नि, गर्मी ।

दयदहन (पु०)-दाघानल, वनाग्नि,  
दावाग्नि ।

दयिष्ठ (वि०)-अत्यन्त दूर ।

दय [न] (वि०)-१० की संख्या का  
वाचक ।

दयक (वि०)-दश का, दशगुणा, दश  
भाग का बना हुआ । न०-दश  
वस्तुओं का समूह । [वाचक ।

दयकण्ठ-कन्धर (पु०)-राघण का  
दशकुमारपरित (न०)-कविचरद्विह-  
कृत गद्य का एक ग्रन्थ ।

दयगुण (वि०)-दश बार अधिक ।

दयन (अस्त्री०)-दात, काटना, हस-  
ना । न०-कयच । पु०-पर्यंतशि-  
खर । [ या अच्यत ।

दयप (पु०)-दश नार्यों का पधाग

दयपुर (न०)-एक प्राचीन नगर ।

दयभुजा (स्त्री०)-दुर्गा का वाचक ।

दयन (वि०)-दशवा । न०-दशश ।

दयनास्य (वि०)-दश महीने का ।

दयनी (स्त्री०)-कृष्णपक्ष और शुक्ल  
पक्ष की दशवीं तिथि ।

दयमूल (न०)-जंगल की दश जड़ों  
की सैवार की एक जीधय ।

दयरप (पु०)-मयोधना का एक राजा,  
अग का पुत्र, श्रीरामचन्द्र का  
पिता ।

आश्विनशुक्ला दशमी का एक  
देशठयापी उत्सव जो राघण-  
वध और दुर्गापूजा के उपलक्ष्य  
में होता है, और ज्येष्ठशुक्ला  
दशमी को मगावतरण के उप-  
लक्ष्य में इस नाम का एक उत्स-  
व होता है ।

दशा (स्त्री०)-मवस्था, हालत, चि-  
राग की दसवीं, आचल, पल्ला,  
शालकपन, जवानी आदि अव-  
स्थाएँ, मानसिक अवस्था, प्रार-  
रथ समझ, बुद्धि ।

दशाकर्म (पु०)-चिराग, दीपक,  
यस्त्रासुख ।

दशाधिपति (पु०)-सूर्य, सूरज, दश  
मनुष्यों का अध्यक्ष ।

दशान्त (पु०)-जीवन का अन्त, दसवीं  
इतना हो जाना । [दुर्भाग्य ।

दशाधिपपांश (पु०)-यदक्रिस्मती,

दशारव (पु०)-दश घोड़ों वाला अर्थात्  
चन्द्रमा, चाँद ।

दशेन्धन (पु०)-दीप, चिराग, लक्ष्य ।

दम् (४ प०)-नष्ट होना, चढ़ना, फेंकना ।

(१ प०, १० प०)-काटना, हसना,  
मत्तपूय करना, देखना ।

दमग (न०)-धरारास्तगी, नाश, फेंकना ।

दस्त (वि०)-नष्ट, खराब, फेंका हुआ ।

दस्व्य (वि०)-सुन्दर, सुखसूत्र ।

दस्यु (पु०)-चौर, लुटेरा, ठग, छेड़वा,  
धर्मश्रिया में रक्षित, मत्ताने वाला ।

दस्यु (१ प०)-जलाना, दाइकरना,  
घाव करना, दुःख देना ।

दहन(न०)--जलाना, जलना, दाह ।

पु०--अग्नि, कबूतर, चित्रक,  
भरलातके वृक्ष । वि०--हानिक,  
नष्ट करने वाला, जलाने वाला ।

दहर (पु०)--यच्छा, सद्य उत्पन्न  
घालक, अनुज । वि०--छोटा,  
ठण्डा, कमरम् ।

दा(१ पु०)--देना [ यच्छति ] । इव०--  
देना, दान देना, त्यागना । २ पु०--  
काटना, छेदना । [ करना ।

दा(स्त्री०)--रक्षा, साफ करना, पवित्र

दाक(पु०)--दाता, दक्षिणा देने वाला ।

दाक्ष(न०)--दक्षिणदिशा ।

दाक्षायण(न०)--स्वर्ण, सोना, स्वर्णा-  
भूषण । पु०--दक्ष का पुत्र ।

दाक्षायणी (स्त्री०)--अश्विनी आदि  
कोई नक्षत्र, दक्षपुत्री दिति की  
कश्यप की पत्नी थी, पार्वती,  
रेवती नक्षत्र, अदिति ।

दाक्षायणीपति(पु०)--यमूना, शिव ।

दाक्षाय(पु०)--गिज, गिघ ।

दाक्षि(पु०)--दक्ष का पुत्र ।

दाक्षिण ( वि० )--दक्षिणासम्प्रन्धी,  
दक्षिणदिशा का ।

दाक्षिणात्य (वि०)--दक्कनी, दक्षिण  
दिशा का । पु०--दक्षिणदेशनि-  
वासी, नारियल ।

दाक्षिण्य (न०)--उदारता, अनुकूलता,  
तहजीब, दया, ईमानदारी, प्रतिभा,  
चतुराई ।

दाक्षी(स्त्री०)--दक्ष की पुत्री, पाणिनि  
की माता का नाम ।

दाक्षीमुत-पुत्र (पु०)--अष्टाध्यायी के  
कर्ता पाणिनि अपि । [ योग्यता ।

दाक्ष्य (न०)--दक्षता, चतुराई, कौशल,  
दाहक(पु०)--दांत, दाढ़ ।

दाहि [लि]म(पु०)--अनार का पेड़,  
छोटी इलायची । न०--अनार का  
फल ।

दाहिमप्रिय(पु०)--तीता, शुक ।

दाहिम(पु०)--अनार का पेड़ ।

दाढा(पु०)--दाढ़, बड़ा दांत, दाढ़ा,  
सहाहिश, समूह ।

दात(वि०)--छिन्न, शुद्ध, काटा हुआ ।

दातव्य (वि०)--देने योग्य, दियाहने  
योग्य, छोटाने लायक ।

दाता[त्] (वि०)--देने वाला, नरकने  
वाला, उदार । पु०--दान देने  
वाला, उत्तमर्ण, शिल्पक ।

दात्र(न०)--दांसी, काटने का औजार ।  
दात्री(स्त्री०)=दाना ।

दाद(पु०)--दान, दक्षशील ।

दाधिक(वि०)--दही का, दधिनिश्चित ।

दान्(१ व०)--काटना, धिक्क करना ।

दान (न०)--देना, दक्षता, दक्षशील,  
उदारता, शिला, भेट, रिश्वात,  
कर्त्तन, रक्षा, बढ़ोतरी, चरागाह ।

दानक(न०)--छोटा दान, अनुचित दान ।

दानकाम(वि०)--उदार, फैयाज ।

दानपति(पु०)--कृष्ण का मित्र अक्रूर ।

दानपत्र ( न० )--दक्षकनामा, ऐसी  
दस्तावेज जिसमें दान दिये जाने  
का ठीका हो । [कारी ।

दानपात्र(न०)--दान पाने का अधि-

दानप्रतिभाष्य(न०)- कर्ज की अदा-  
यगी की जमानत ।

दानव(पु०)--राक्षस, अशुर ।

दानवगुरु(पु०)- शुक्राचार्य ।

दानवारि(पु०)--देवता, विष्णु ।

दानधीर(पु०)-अत्यन्त उदार मनुष्य,  
दानशूर । [ देने वाला ।

दानी [नृ](वि०)-उदार, क्रियाज, दान

दानु (पु०)--दाता, सन्तोष, दाय,  
राक्षस, अभ्युदय । वि०--वीर,  
विजेता ।

दान्त(वि०)--पराजित, दमन किया  
हुआ, पालतू, स्वतः, उदार, दन्त-  
सम्बन्धी ।

दान्ति(स्त्री०)--आत्मनियह, तपश्च-  
रण, पराभव । [हुआ ।

दान्तिक (वि०)-ह्यापीदात का यना  
दापन(न०)--दिलवाने का काम ।

दापित(वि०)--दिलवाया हुआ ।

दान [नृ] (न०)-रस्सी, पक्ति, गाला,  
गाय जादि बाधने का रस्सा ।

दागा (स्त्री०)-रस्सी, रज्जु ।

दानिनी (स्त्री०)-विद्युत, बिजली ।

दागीदर (पु०)-विष्णु या कृष्ण का  
योग्यक ।

दान्जय (न०)-विवाहसम्बन्ध ।

दान्जिक(पु०)-ठग, छद्मयेयी । वि०-  
धीमा देने वाला, छद्मकारी,  
गधिन ।

दाय (पु०)-दान, भेंट, विवाह की  
दात, विरासत में पाया हुआ  
माल, दानि, नाग, रपान ।

दायक (पु०)-वारिस, दायभागी,  
दाता । [ वाला, सपिण्ड, पुत्र ।

दायाद (पु०)-दाय का ग्रहण करने  
दायबन्धु (पु०)-सगा भाई, सहो-

दर । [ तकसीम ।

दायभाग (पु०)-बाप के विरसे की  
दायी [नृ] (वि०)-देने वाला, दाता,  
सत्पादक ।

दार (पु०)-जोता हुआ खेत, सूरस,  
फड़ाव । बहु०-स्त्री, भार्या ।

दारक (पु०)-पुत्र, सन्तति, घालक,  
ग्रामशूकर । वि०-फाड़ने वाला,  
जुदा करने वाला ।

दारकर्म (न०)-विवाह, शादी ।

दारग्रहण (न०)-पूर्यवत् ।

दारण (न०)-फाड़ना, दो टूक कर-  
ना, सूरस करना ।

दारद (पु०)-पारा, समुद्र ।

दारपरिग्रह (पु०)-विवाह, शादी ।

दारिका (स्त्री०)-पुत्री, सूरस, वेश्या ।

दारित (वि०)-फाड़ा हुआ, विभक्त ।

दारिद्र-दारिद्र्य (न०)-जगाली, ग-  
रीबी, भाग्यहीनता ।

दाह (पु०)-पुनरन्वद, दाता, उदार  
मनुष्य । न०-लकड़ी, देवदाह-  
यल, धौतल, कारीगर । वि०-  
दमोयान्, उदार ।

दाहक (पु०)-देवदात का वृत्त, कठ-  
पुतली, श्रीकृष्ण का पारपि ।

दाहकृत्य (न०)-लकड़ी का काम ।

दाहण (वि०)-गठोर, मज्ज, भारी,  
गम्भीर । न०-कठोरता, दूरता ।

दास्यव(न०)-कठोरता, क्रूरता, सखी,  
भयानकता ।

दास्यार (पु०)-चन्दन ।

दास्यसिता (स्त्री०)-दालचीनी ।

दास्युर (अस्त्री०)-जल, लाख, पानी ।

दास्यं (वि०)-लकड़ी का बना हुआ ।

दास्यंठ (न०)-विचारालय, कचहरी,  
मन्त्रणाशुद्ध ।

दास्यनिक (पु०)-दर्शनशास्त्र की फि-  
लासफी के जानने वाला । वि०-  
दर्शनसम्बन्धी ।

दास्यन (न०)-दास का दंड ।

दास्य (पु०)-दस, धन ।

दास्यगिन् (पु०)-धन की आग ।

दास्य (१०३०)-देना, सकृशता । (५५०)-  
सारना, कटल करना ।

दास्य (पु०)-मछेरा, कैवर्त्त, नौकर, दास ।

दास्यनन्दिनी (स्त्री०)-सत्यवती  
का नाम ।

दास्यरथ-वि(पु०)-दशरथ की सन्तान ।

दास्यर (पु०)-मछेरे का पुत्र, ऊट ।

दास्य (१ घा०)=दास्य ।

दास्य (पु०)-गुलाम, भूत, कैवर्त्तक, शूद्र,  
राक्षस, दस्यु ।

दास्यगम (पु०)-गुलाम, नौकर ।

दास्यभाव (पु०)-गुलामी, नौकरी ।

दास्यनुदास्य (पु०)-दासी का दास ।

यह शब्द पत्रलेखक अपना वि-  
नीतभाव दर्शाने के लिये अपने  
नाम से पूर्व लिखा करते हैं ।

दासिका (स्त्री०)-नौकरी, दासी ।

दासी (स्त्री०)-नौकरनी, शूद्रा, कैव-  
र्त्तकी, अधिकभार्या, वेश्या ।

दासीपुत्र (पु०)-दासी के गर्भ से  
उत्पन्न पुत्र ।

दास्यर (पु०)-कैवर्त्तक, शूद्र, दासीपुत्र ।

दास्यव(न०)-गुलामी, बधन, सेवकाई ।

दास्य (पु०)-जलाना, खाक़ करना,  
भस्मीकरण, शरीर को दास्यना ।

दास्यकर्म(न०)-अन्तर्देष्टि संस्कार ।

दास्य (पु०)-हाथी का बच्चा, पोता ।

दास्यर(पु०)-युवा पुरुष, तरुण, जवान ।

दास्यपति--पाल (पु०)-दिशाओं के  
रक्षक-इन्द्र, वह्नि, मिथुपति, जै-  
श्रंत, वरुण, पवन, कुबेर और  
इंश ये क्रमशः पूर्वोदि दिशाओं  
के अधिपति हैं ।

दिगम्यर (पु०)-दिशा ही जिस का  
सम्बन्ध है अर्थात् शिव, जैनों का  
एक सम्प्रदाय, दूसरा सम्प्रदाय  
श्वेताम्बर कहलाता है; सन्यासी,  
नाग ।

दिगज(पु०)-दिशाओं में पृथ्वी को  
पकड़ने के लिये जो ऐरावत  
आदि हस्ती स्थित हैं ।

दिग्घ (वि०)-भीगा हुआ, लिप्त,  
विषयुक्त । पु०-अग्नि, तैल, कषा,  
विष का लुप्ता हुआ वाण ।

दित (वि०)-कटा हुआ, विभक्त ।

दिति [त्री] (स्त्री०)-दस की कन्या,  
दैत्यो की माता, उदारता, कर्त्तन ।  
पु०-राजा ।

दितिज (पु०)-राक्षस, दैत्य ।

दित्य (पु०)—राक्षस, दैत्य ।

दिधिपु ( पु० )—विधवा का पति,  
पति । स्त्री०—अज्ञतयोनि कन्या  
जिस का पुनर्विवाह हो गया हो ।

दिधि [धी] पू (स्त्री०)—पुनर्विवाहित  
स्त्री, ऐसी कन्या जिस की छोटी  
बहिन का विवाह हो गया हो ।

दिधिपूषति ( पु० )—अपने भाई की  
विधवा से संयोग करने वाला,  
विधवा का पति, नियुक्तपति ।

दिन (अस्त्री०)—दिवस, दिन, दिनरात,  
२४ वा १२ घंटे का काल ।

दिनकर-कृत् (पु०)—सूर्य, सूरज

दिनकेधर (पु०)—अधिरा, अन्धकार ।

दिनक्षय (पु०)—सायंकाल, शाम ।

दिनचर्या (स्त्री०)—दिनभर में करने  
का काम, प्रत्येक दिन की कार्या-  
यली ।

दिनप-पति (पु०)—सूर्य, आदित्य ।

दिनमृत (न०)—प्रातःकाल, उषा ।

दिग्दीयत (न०)—दीपहरी ।

दिग्नादि ( पु० )—दिन का आरम्भ,  
प्रातःकाल ।

दिग्नान्त (पु०)—दिन का अन्त अर्थात्  
सायंकाल ।

दिग्निवा (स्त्री०)—एक दिन का चेतन ।

दिग्नेश (पु०) मृग, रवि ।

दिग्ध (१० भा०)—राग होना, प्रसन्न  
होना या करना ।

दिग्भ (१० भ०)—चलाना, घेरना ।

दिग्धीव (पु०)—मृग्यंशी एक राजा,

जो रघु का पिता और अशुमान्  
का पुत्र था ।

दिव् (४ प०)—चमकना, बँकना, जुआ  
खेलना, शर्त लगाना, तारीफ  
करना, सुश्रु होना । स्त्री०—स्वर्ग,  
आकाश, दिन, अग्नि, चमक ।  
पु०—देवता, चातक, हरिण, हाथी ।

दिव (न०)—आकाश, दिन, जंगल,  
स्वर्ग, द्यौः ।

दिव[न्] (पु०)—दिन । न०—स्वर्ग ।

दिवस (अस्त्री०)—दिन ।

दिवसमुष (न०)—उषाकाल, सवेरा ।

दिवस्पति (पु०)—स्वर्ग का स्वामी,  
इन्द्र, देवराज ।

दिवा (अ०)—दिन में, दिन के समय ।

दिवाकर (पु०)—सूर्य, रवि, सूरजमुखी,  
कुक्कुट । [नापित ।

दिवाकीर्ति ( पु० )—घाघवाल, उल्लू,

दिवाचर (पु०)—इयामा पत्नी, घाघवाल ।

दिवातम (वि०)—दिन में होने वाला ।

दिवानिशम् (अ०)—दिनरात ।

दिवाभीत (पु०)—उल्लू, उल्लूक ।

दिवारात्रम् (अ०)—रातदिन, इनेशा ।

दिवास्वाय (पु०)—दिन में सोना, उल्लू,  
उल्लूक ।

दिवीकसु[च] (पु०)—देवता ।

दिठ्य ( वि० )—स्वर्गीय, चमकीला,  
शोभायमान, मनोहर । पु०—घन,  
तत्त्ववेत्ता, यय । न०—आकाश,  
दिठयसाय, लौह, चन्दन, शयय,  
गुग्गुल, स्वर्ग की चीज ।

दिठयगन्ध (न०)—लौह । पु०—गन्धक,  
उत्तम गन्ध ।

द्विचयगन्धम(खी०)-बही इलायची ।  
 द्विचयगामन(पु०)-गन्धर्व ।  
 द्विचयचक्षुः [ख] (वि०)-स्वर्गीय नेत्र  
 वाला, मनोहर आंखों वाला,  
 अन्धा । पु०-बन्दर । न०-वाछा  
 चक्षुओं से जो अगोचर हो सब  
 को देखने की शक्ति ।  
 द्विचयदृश(पु०)-उद्योतिषी, देवदृश ।  
 द्विचयरत्न (पु०)-पारा, मेनकर ।  
 द्विचयसार (पु०)-सालवृक्ष ।  
 द्विचयांशु(पु०)-सूये, रत्न ।  
 द्विचयांगना (खी०)-अप्सर, स्वर्गीय  
 स्त्री । [ द्विचयगारी और द्विचय-  
 स्त्री का भी यही अर्थ है ] ।  
 द्विचयौपधि (खी०)-नगशिल, नैरिक  
 आदि दवाएँ ।  
 दिश ( ६ उ० )-दिखलाना, ज़ाहिर  
 करना, बतलाना, देना, हवाले  
 करना, राजी होना, आदेश  
 करना, हुक्म करना ।  
 दिश-दिशा (खी०)-अपने नाम से  
 प्रसिद्ध, पूर्व, पश्चिमादि दिशाओं  
 का बोधक । मुख्य दिशा चार हैं  
 यथा--पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और  
 उत्तर । इन चार दिशाओं के  
 बीच में चार उपदिशा हैं, यथा-  
 ईशान, आग्नेय, नैऋत्य और  
 वायव्य । एक आकाश और  
 दूसरा पाताल ये सब मिलकर  
 दश दिशा होती हैं ।  
 दिशोभाक् [क्] ( पु० )-जो चारों  
 दिशाओं में भागता है अर्थात्  
 अगोचर ।

दिश्य(वि०)-दिशाओं में होने वाला,  
 दिशामन्वन्धी ।  
 दिष्ट(पु०)-सनय, काल । न०-भाग्य;  
 किस्मत, आदेश, उद्देश्य । वि०-  
 दिखाया हुआ, उपदेश किया हुआ ।  
 दिष्टान्त(पु०)-भाग्य का अन्त, मरण;  
 मौत । [आदेश, उपदेश ।  
 दिष्टि ( स्त्री० )-मारुत, किस्मत,  
 दिष्टया (अ०)-भाग्य से, ईश्वर की  
 कृपा से, आदेश, मैं बहुत प्रसन्न हूँ ।  
 दिष्णु(पु०)-दाता ।  
 दिह ( २ उ० )-लेपन करना, लीपना,  
 फैलाना । स्त्री०-लेपन, मलना ।  
 दी ( ५ आ० )-नरना, नष्ट होना,  
 घटना । स्त्री०-माश, क्षय ।  
 दीत् ( १ आ० )-दीक्षा देना, दीक्षित  
 करना, यज्ञ करना, व्रत की आज्ञा  
 करना, यज्ञोपवीत धारण कराना ।  
 दीतक ( पु० )-आचार्य, दीक्षा देने  
 वाला ।  
 दीक्षा ( स्त्री० )-व्रत, नियम, संस्कार,  
 मन्त्रोपदेश, ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश ।  
 दीक्षागुरु (पु०)-गुरुआदि का उपदेश  
 करने वाला आचार्य ।  
 दीक्षान्त ( पु० )-बड़े यज्ञ की  
 न्यूनतापूर्ति के लिये छोटे यज्ञ का  
 अनुष्ठान, ब्रह्मचर्याश्रम में गुरुकुल से  
 छीटते सनय जो संस्कार किया  
 जाता है ।  
 दीक्षित ( वि० )-जिसने दीक्षा ग्रहण  
 की हो, दीक्षागुरु, व्रतधारी ।



दीदिवि ( पु० )-भात, स्वर्ण, अग्नि,  
बृहस्पति ।

दीधिति ( स्त्री० )-प्रकाश की किरण,  
शोभा, शोज, अगुली ।

दीधी ( स्त्री० )-चमकना, ज़ाहिर  
होना ।

दीन ( वि० )-शरीर, दुःखी, निर्धन,  
कामर । पु०-निर्धन मनुष्य । न०-  
कष्ट, वेदना ।

दीनार ( पु० )-स्वर्णमुद्रा, मोहर,  
स्वर्णशुष्क, सिक्का ।

दीप् ( पु० )-चमकना, जलना, रोशन  
होना, चमकाना, जलाना ।

दीप ( पु० )-दीपक, दीपा, चिराग,  
लैम्प ।

दीपक ( पु० )-पूर्ययात् । वि०-जलाने  
वाला, रोशन करने वाला । न०-  
कुपुम ।

दीपन ( न० )-रोशन करना, जड़-  
काना, बर्ताना, कुपुम ।

दीपनीय ( वि० )-जलाने योग्य, जो  
जाग को पकड़ सके ।

दीपमानिका ( स्त्री० )-जिस में  
दीप की कृति हो अर्थात् दीवाली  
का शरणाव ।

दीपिका ( स्त्री० )-मशाल, जलिका ।

दीपित ( वि० )-जला हुआ, प्रका-  
शपुष्क, मशाल हुआ ।

दीप्न ( वि० )-रोशन, चमकीला,  
जला हुआ । पु०-गौर, शिष्ट । न०-  
स्वर्ण ।

दीप्तकिरण ( पु० )-शूर्य, रवि ।

दीप्तकीर्ति-वर्ण ( पु० )-कार्तिकेय  
का नाम ।

दीप्तकिहू ( स्त्री० )-उत्कामुखी,  
फकंशा स्त्री ।

दीप्तपिङ्गल ( पु० )-सूर्य ।

दीप्तमूर्ति ( पु० )-विष्णु ।

दीप्तलोचन ( पु० )-विल्ली ।

दीप्तलोह ( न० )-पीतल ।

दीप्ताग्नि ( वि० )-जिस की 'जठराग्नि'  
उद्दीप्त हो ।

दीप्ति ( स्त्री० )-कान्ति, चमक, भड़क,  
छाछ, पीतल ।

दीप्तिमान् [ मत् ] ( वि० )-चमकीला,  
शोभायमान ।

दीप्ति ( वि० )-चमकीला । पु०-अग्नि ।

दीर्घ ( वि० )-लम्बा, चिरस्थायी,  
जंबा, विस्तृत, द्विमात्रिक । पु०-  
कट, द्विमात्रिक स्वर ।

दीर्घकण्ठ ( पु० )-सारस पक्षी, घण्टा ।

दीर्घकाय ( वि० )-बड़े शरीर वाला,  
बड़े शरीर का ।

दीर्घकेश ( पु० )-भालू, रीठ ।

दीर्घगति-पीय ( पु० )-कट, उष्ण ।

दीर्घच्छद ( पु० )-जिस में छद मते  
हों, हंज, गंधा ।

दीर्घजघ ( पु० )-जिस की लंबी जंघा  
हों, कट, घण्टा ।

दीर्घजिह्वा ( पु० )-लंबी जीभ वाला ।

दीर्घतक ( पु० )-सज्जन का पुत्र ।

दीर्घतुहो ( पु० )-एलुद्र ।

दीर्घदर्शी [ न ] ( वि० )-जनामत की  
विश्वास करने वाला, अवलम्ब, द

बुद्धिमान् । पु०-बल्लू, गधू,  
भालू, रीछ ।

दीर्घदृष्टि ( वि० )-जिस की लम्बी  
नज़र हो, पण्डित ।

दीर्घनाद ( पु० )-कुत्ता, मुर्गा ।

दीर्घनिद्रा ( स्त्री० )-लम्बी नींद  
अर्थात् नृत्य ।

दीर्घपर्व ( पु० )-गन्ना, ऊख ।

दीर्घपाद ( पु० )-बगुला, चारस, खजूर  
का वृक्ष ।

दीर्घपृष्ठ ( पु० )-सर्प, साप ।

दीर्घपद्म ( वि० )-चतुर, दीर्घदर्शी,  
दूर की सोचने वाला ।

दीर्घमानस ( पु० )-हाथी, हस्ती ।

दीर्घरङ्गा ( स्त्री० )-हरिद्रा, हल्दी ।

दीर्घरस ( पु० )-कुत्ता, कुस्फुर ।

दीर्घरसन ( पु० )-सर्प, साप ।

दीर्घरोम [ नृ ] ( पु० )-भालू, रीछ ।

दीर्घवक्त्र ( पु० )-हाथी, हस्ती ।

दीर्घवक्त्र ( न० )-धिरकाल में समाप्त  
होने वाला वक्त्र ।

दीर्घसुरस ( पु० )-कुत्ता, कुस्फुर ।

दीर्घसूत्र-सूत्री ( वि० )-सुस्ती से काम  
करने वाला, दील से काम करने  
वाला ।

दीर्घायुष्य ( पु० )-बहुत बड़ी उम्र  
वाला, मार्कण्डेय ।

दीर्घायुस् ( पु० )-दीर्घजीवी, बहुत  
दिन तक जीने वाला, सेमल  
का वृक्ष ।

दीर्घिका ( स्त्री० )-बड़े फैलाव का  
जलाशय, बावड़ी ।

दीर्घा ( वि० )-फटा हुआ, डरा हुआ,  
विदारित । [ देना ।

दु ( ५ प० )-जमाना, तपाना, दु-ख  
दु-ख ( १० व० )-दु-ख देना, कष्ट पहुंच-  
वाना ।

दु-ख ( न० )-कष्ट, दिल की बेचैनी,  
पीड़ा, तकलीफ़ ।

दुःखकर ( वि० )-दुःखदायक, कष्टकर ।

दुःखत्रय ( न० )-आध्यात्मिक, आ-  
धिदैविक और आधिभौतिक  
नामक तीन प्रकार के दुःख ।

दुःखप्राप-यहुल ( वि० )-कष्टों से  
भरा हुआ ।

दुःखित ( वि० )-कष्टग्रस्त, रज़ीदा,  
कष्ट में फंसा हुआ ।

दुःखी [ नृ ] ( वि० )-पूर्ववत् ।

दुःशासन ( पु० )-जो कठिनता से  
शासित किया जाय, धृतराष्ट्र-  
पुत्र दुर्योधन का छोटा भाई ।

दुःसह ( वि० )-मसहनीय, कष्ट से  
सहन करने योग्य ।

दुःस्थित ( वि० )-बेचारा, दुःख में  
पड़ा हुआ ।

दुःस्पर्श ( पु० )-आँकाशचेल, कठिमाारी ।

दुःकूल ( न० )-रेशमी कपड़ा, सहित  
कपड़ा, दुपट्टा ।

दुग्ध ( न० )-दूध । वि०-दुहा हुआ,  
निकाला हुआ ।

दुग्धुक ( वि० )-बेहमान, छलिया,  
कपटी ।

दु-दुस्ति ( पु० )-बड़ा दोल, नज़ारा,  
नीयत, एक दैत्य, एक राक्षस,  
विष, जहर । स्त्री०-पांसा ।

दुन्दुमा (स्त्री०)--ढोल या नक्कारे की आवाज़ ।

दुन्दुमार (पु०)--घर का धुआं, बिल्ली, कीटविशेष ।

दुर्[स्] (अ०)--यह उपसर्ग दुरा, कुत्सित, कठोर, कष्टसाध्य आदि अर्थों में कुछ शब्दों के पूर्व लगाया जाता है ।

दुरस्त (वि०)--जिसकी चाल कमजोर हो । पु०--छलपूर्ण शूतक्रीड़ा ।

दुरतिक्राम्य (वि०)--जो कठिनता से पार किया जा सके ।

दुरत्पय (वि०)--दुरतिक्रमणीय, दुस्तर, कष्टसाध्य ।

दुरदृष्ट (न०)--दुर्भाग्य, बदकिस्मती ।

दुरधिगम (वि०)--जो कठिनता से प्राप्त हो सके, दुष्प्राप्य ।

दुरधिष्ठित (वि०)--दुरी तरह किया हुआ ।

दुरध्व (पु०)--कुमार्ग, गुरा रास्ता ।

दुरान्त (वि०)--जिस का फल दुरा हो, जिस का अन्त दूर हो, अनन्त, असीम ।

दुरभिग्रह (वि०)--जो अशकिल से पकड़ा जा सके ।

दुरनिप्राय (पु०)--दुरा वरादा ।

दुरवगम (वि०)--जो कठिनता से समझ में आवे ।

दुरवधोष (वि०)--न समझने योग्य ।

दुरवस्था (वि०)--दुरी दायित्व, अधोगति, गिरावट ।

दुराकृति (वि०)--यदृशकल, कुरूप ।

दुराक्रन्द (वि०)--जोर से रोने वाला ।

दुराग्रह (पु०)--दृष्ट, अपनी बात पर ही दृष्ट रहना ।

दुराचार (पु०)--दुरा आचरण, व्यभिचार, बदचलनी ।

दुरात्मता (स्त्री०)--क्रूरता, कमीनापन ।

दुरात्मा [न] (वि०)--दुष्प्रवृत्ति, क्रूर, कुटिल, कमीना, नीच ।

दुराधर्ष (वि०)--जिसपर आसानी से आक्रमण नहीं हो सकता, मज़कुर, घमसही । पु०--सज्जद सरसों ।

दुराय (वि०)--दुष्प्राप्य ।

दुरारोह (वि०)--जिस पर कठिनता से चढ़ा जावे, नारिपल, खजूर ।

दुरालाप (पु०)--शाप, कुत्सित वचन, कुवाणी ।

दुराशय (वि०)--दुरात्मा, क्रूर ।

दुराशा (स्त्री०)--दुरी इच्छा, निराशा, आशा के विरुद्ध आशा करना ।

दुरासद (वि०)--जिस के पास पहुंचना कठिन है, दुर्घर्ष, दुर्गम्य ।

दुरित (वि०)--कठिन, पापयुक्त । न०--पाप, अपराध, दुरा काम ।

दुरिष्ट (न०)--शाप, बददुभा ।

दुरुक्त (वि०)--दुरा कहा गया । न०--शाप लाभत ।

दुरच्छेद (वि०)--जिसका नाश कठिनता से किया जा सके ।

दुरुत्तर (वि०)--दुस्तर, छानवाय ।

दुरुह (वि०)--दुर्विज्ञेय, जो दुःख से कष्टाल में लाया जा सके ।

दुरेषणा (स्त्री०)--कुत्सित इच्छा ।

दुर्ग (वि०)—कष्टसाध्य, दुर्घर्ष, दुष्प्राप्य  
अस्त्री०—फिला, घाटी, मुसीबत,  
खतरा, विषमज्ञप्ति ।

दुर्गेत (वि०)—निर्धन, मुसीबत में  
फसा हुआ, हतभार्य ।

दुर्गन्तता (स्त्री०)—दुर्गन्ति, मुसीबत ।

दुर्गन्ति (स्त्री०)—निर्धनता, दुरी  
हालत, मुसीबत, नरक, दुरा मार्ग ।

दुर्गन्ध (वि०)—दुरी गन्ध वाला ।  
पु०—दुरी गन्ध, प्याज, बदबू ।

दुर्गपाल—रत्नक-अक्षय (पु०)—झिले-  
दार, झिले का रत्नक ।

दुर्गम (वि०)—दुर्घर्ष, दुष्प्राप्य, दुष्प्र-  
वेशनीय ।

दुर्गा (स्त्री०)—विषयपत्नी पार्यन्ती  
का नाम ।

दुर्गानवमी (स्त्री०)—कार्तिक शुक्ला  
। नवमी जिस दिन दुर्गा की पूजा  
होती है ।

दुर्गाष्टमी (स्त्री०)—मास्विनशुक्लाष्टमी  
दुर्घट (वि०)—कठिन, कष्टसाध्य,  
असम्भव ।

दुर्घोष (पु०)—कटोर शब्द, ऐसी  
आवाज जो कर्णप्रिय न हो ।

दुर्जन (वि०)—कमीना, क्रूर, नीच ।  
पु०—क्रूरजन, दुरा आदमी ।

दुर्जय (वि०)—जो जीता न जा  
सके । पु०—विष्णु ।

दुर्जर (वि०)—जो कठिनता से अजं-  
रित हो, जो मुश्किल से चीरें

हो । स्त्री०—उपोतिष्मती नामक  
एक लता ।

दुर्जांत (न०)—आपत्ति, मुसीबत,  
व्यसन, अलुचित ।

दुर्जाना (वि०)—निन्दित नाम  
वाला, जिस का दुरा नाम हो ।

दुर्दान्त (पु०)—कलह, लड़ाई, कठि-  
नता से रोका गया, शान्तिरहित  
न०—बलहा ।

दुर्दिन (न०)—दुरा दिन, वह दिन  
जिस में मेघों से अन्धकार छाया  
हुआ हो ।

दुर्धर (पु०)—जो कठिनता से धारण  
किया जाय, जो मुश्किल से भी  
धारण न किया जा सके अर्थात्  
विष्णु, एक दैत्य ।

दुर्बल (वि०)—दुरे बल वाला,  
कश, अल्पभावं वाला, कमजोर ।

दुर्भंग (वि०)—दुरे भाग्य वाला, कम-  
बल्लत, पोढ़े भाग्य वाला ।  
स्त्री०—वह स्त्री जो अपने पति  
से प्रेम न करती हो, जमागा ।

दुर्भित (न०)—अकाल, छोटा समय,  
वह समय जिस में अन्न न मिल  
सके, ऊँहत ।

दुर्भन्ति (वि०)—दुष्टबुद्धि वाला, मूर्ख,  
वेवकूफ । पु०—६० संवत्सरों में से  
एक, दुरी अकूल ।

दुर्भन्ता [स] (वि०)—वह पुरुष जिसका  
मन ठग्याकुल हो, धिगड़े हुए  
दिख वाला, विमत्तस्क ।

दुर्मुख ( वि० )--जिस का मुख  
धुरा हो; कुत्सितमुख, भस्व, घोड़ा,  
एक दैत्य, वानर, बन्दर, अग्रिम-  
वका, कटुवादी ।

दुर्मेधा ( वि० )--दुष्ट बुद्धि वाला,  
नन्दपी, जो सदस्य का विचार  
नहीं कर सकता ।

दुर्योधन ( पु० )--राजा धृतराष्ट्र का  
बड़ा पुत्र । वि०--दुःख से युद्ध  
करने योग्य ।

दुर्लभ ( पु० )--कचूर । वि०--दुर्लभाप्य,  
जिसका मिलना कठिन हो ।

दुर्लभित ( न० )--बुरी इच्छा, दुश्चेष्टा ।

वि०--दुष्ट आशयवाला, असह्यरित्र ।

दुर्घ ( १ प० )--मारना, घघ करना ।

दुर्वर्ण ( न० )--धुरा वर्ण । वि०--बुरे रंग  
वाला, मैला, गन्दा । [ दरिद्र ।

दुर्विध ( वि० )--जिस की हालत बुरी हो,

दुर् ( १००० )--ऊपर की फेंकना, कुलाना,  
हिलना । [ विशेष ।

दडि-डी ( स्त्री० )--कंठपी । पु०--मुनि-

दुश्चर्मा [ न् ] ( पु० )--यह पुरुष जिस  
की त्वचा झराय हो गई हो ।

दुश्चयन ( वि० )--जिस का यत्न  
कठिगता से हो; जिस पर चयन  
आपि कुपित हुआ । पु०--दुन्द ।

दुष् ( ४ प० )--धुरा होना, घेर करना,  
यदग जाना, विकृत होना ।

दुष्कर ( वि० )--दुःख से जो किया  
जाये; कठिन । न०--आकाश ।

दुष्कर्म ( न० )--पाप, कुत्सित कार्य,  
धुरा काम । वि०--पापी, पापयुक्त ।

दुष्कृत ( न० )--पाप, कुत्सित आच-  
रण । वि०--पापी, पापयुक्त ।

दुष्ट ( न० )--कुष्ठ नामक रोग । वि०--  
अघम, नीच, धुरा, दुर्बल ।

दुष्टचेतार्थ [ स् ] ( वि० )--बुरे चित्त  
वाला, दुष्टबुद्धि ।

दुष्टप्रण ( पु० )--एक प्रकार का वृत्तरोग ।

दुष्टा-ष्टि ( स्त्री० )--व्यभिचारिणी  
स्त्री, बदमाश औरत ।

दुष्टात्मा ( वि० )--क्रूर, बुरे विचारवाला ।

दुष्प [ दम् ] न्त ( पु० )--एक चन्द्रवंशीय  
राजा जो कि राजा भरत का  
पिता और शुक्रन्तलाका पति था ।

दुह् ( १ प० )--घघ करना, मारना ।

२३०--दोहना, दूध निकालना ।

दुहिता ( स्त्री० )--पुत्री, सुता, लड़की ।

दुहितुःपति ( पु० )--लड़की का पति,  
दानाद, नामांता ।

दुह्य ( वि० )--दुहने योग्य, दूध काढ़ने  
छायक । न०--दूध ।

दू ( ४ भा० )--दुःख उठाना, तकलीफ  
भोगना, दुःख पाना ।

दूदास ( वि० )--पीड़ा उठाने वाला,  
दुःख पाने वाला ।

दूह्य ( वि० )--अघम, नीच ।

दूत-तक ( पु० )--क्रासिद, सन्देशहर ।

दूतिका-दूती ( स्त्री० )--सन्देशा पहुंचाने  
वाली स्त्री, क्रासिद का काम  
करने वाली स्त्री ।

दूत्य ( न० )--दूत का कर्तव्यकार्य, दूत  
की प्रकृति, दूतभाव ।

दून (वि०)-ग्रान्त, भाग के चलने से  
यका हुआ, दुःखित ।

दूर (वि०)-अनिकटवर्ती, जो समीप  
में न हो ।

दूरतः (अ०)-दूर से ।

दूरदर्शी दृष्टि (पु०)-दूर से ही देखने  
वाला, अगागत को जानने वाला ।

पु०-गृह, विद्वान् पुरुष, योगी ।

दूरम् (अ०)-दूर, अनिकट ।

दूरसूत (पु०)-सूत्र नामक ग्रन्थविशेष ।

दूरधर्ती (वि०)-दूर रहने वाला, दूरस्थ ।

दूरस्थित (वि०)-पूर्ववत् ।

दूरात् (अ०)-दूर से ।

दूरीकृत (वि०)-दूर किया हुआ, पृथक्-  
कृत, अलग किया हुआ ।

दूरीभू (१ पु०)-दूर होना, अलग होना ।

दूरीभूत (वि०)-अलग हुआ, दूर  
हुआ ।

दूरे (अ०)-दूर, असमीप ।

दूरेण (अ०)-असमीप से, दूर से ।

दूष (न०)-शही, कचूर नामक एक  
ओषधि, मल, विष ।

दूषा (स्त्री०)-दूष नामक घास ।

दूषाकांड (न०)-दूष का समूह ।

दूषांकुर (पु०)-दूष का अंकुर ।

दूषक (वि०) दोष देने वाला, दूषित  
करने वाला, लांछन लगाने वाला ।

दूषण (न०)-दोष, ऐश, दोष देना,  
लांछन लगाना । पु०-एक राजस  
जो कि रावण की मौसी का बेटा

था और जिसका वर्णन रामायण  
में आया है ।

दूषणारि (पु०)-श्रीरामचन्द्र ।

दूषिका (स्त्री०)-आंग का मैल, नेत्र-  
मल, आंख की ढीठ ।

दूषित (वि०)-शापित, निन्दित,  
दोषयुक्त ।

दूषितकर्म (न०)-धुरा काम, दोष-  
युक्त काम, नीनकर्म ।

दूषिता (न०)-दूषयुक्ता कन्या,  
प्रमादवती स्त्री, स्वदूषिता स्त्री ।

दूष्य (न०)-वस्त्रनिर्मित घर, तम्बू,  
छेना । वि०-दोष देने योग्य,  
दूषणीय ।

दूष्या (स्त्री०)-हापी की स्त्री सन्तान,  
हापी के बांधने की रस्सी ।

दू (१, ६ भा०)-आदर करना, श्रद्धा  
करना, पूजना, इच्छा करना ।

दूकृप्यं (पु०)-सर्प, सांप [दूकृति भी  
इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है] ।

दूकृत्य (पु०)-दूषि का कम होना,  
मन्ददूषि । [देखना ।

दूकृतात् (पु०)-नज़र, आंख चटाकर  
दूषिप्रया (स्त्री०)-सौन्दर्य, शोभा ।

दूकृतात् (स्त्री०)-देसने की ताकत ।

दूगोचर (वि०)-प्रत्यक्ष, दिखाई देने  
वाला ।

दूगुल (न०)-आंसू, नेत्रों का जल ।

दूनिवप (पु०)-सर्प, सांप ।

दूढ (वि०)-मजबूत, स्थिर, कायम,  
गहन, निश्चल ।

दूढकाप (वि०)-मजबूत शरीर वाला ।

दृढदंशक (पु०)-भाका, मगर ।  
 दृढघन (घि०)-युद्धदेव का घौपक ।  
 दृढनिश्चय (घि०)-पक्के इरादे का ।  
 दृढप्रतिष्ठा (वि०)-जो अपनी यात  
 का सच्चा हो, यायदे का पूरा ।  
 दृढसक्ति (वि०)-भासक, यत्प्रादर ।  
 दृढमति (वि०)-दृढनिश्चय ।  
 दृढमुष्टि (घि०)-जिसकी मुट्ठी पक्की  
 है, कृपण, सूत, संजूस ।  
 दृढधृत (घि०)-धृत पालने में दृढ़, दृढ-  
 प्रतिल, नियमपालन में पक्का ।  
 दृढसन्धि (घि०)-पक्के जोड़ वाला ।  
 दृढीकरण (न०)-तसदीक ।  
 दूत (घि०)-अर्चित, पूजित ।  
 दूता (स्त्री०)-जीरा ।  
 दूति (पु०)-पानी भरने का घमड़े का  
 पात्र, भशक, घमड़ा, नत्स्य ।  
 दूतिहार (पु०)-चक्का, गधक लेजाने  
 वाला ।  
 दून्धू (पु०)-खर्प, खाप, चक्र, खज् ।  
 दून्धू (पु०)-सूर्य, सूरज, राजा, यमराज ।  
 दुष् (६प०)-उताना, दुःख देना । १प०,  
 १० व०-सुलगाना, घमकाना ।  
 ४प०-गर्व करना, अहंकारी बनना ।  
 दूत (घि०)-मगझा, उन्मत्त, उलझ ।  
 दूफ् (६प०)-तफलीफ भरना, कष्ट  
 उठाना । [ गुंथा हुआ ।  
 दूठप (घि०)-मयभीत, शीफज्जदा,  
 दूम् (१० व०) [दर्भयति, ते]-याचना,  
 जकड़ना, हरना । ६प० [दर्भति]-  
 गाठना, बांधना ।  
 दृग्, (१ प०)-देखना, अवलोकन

करना, मुलाक़ात करना, निरीक्षण  
 करना [पश्यति, ददंश ] ।  
 दृग् (स्त्री०)-प्रेक्षण, अवलोकन, गज़र,  
 आख, २ का अङ्ग, ज्ञान । समा-  
 सान्त में इसका अर्थ 'देखने वाला'  
 होता है ।  
 दृग्दृ (स्त्री०)-चटान, पत्थर, दृपद् ।  
 दृग्ध्यत (पु०)-सूर्य, रवि ।  
 दृशा (स्त्री०)-चक्षु, नेत्र, आंख ।  
 दृशान (पु०)-ब्राह्मण, आचार्य । न०-  
 रोशनी, घमक ।  
 दृश्य (न०)-नजारा, प्रत्यक्ष वस्तु ।  
 वि०-देखने योग्य, काबिलदीद,  
 मनोहर ।  
 दृपद् (स्त्री०)-चटान, थिला, घड़ा  
 पर्वत, चक्की का पत्थर ।  
 दृपदुपल (पु०)-चक्की का पाट ।  
 दृपद्वती (स्त्री०)-प्राचीन काल में  
 पञ्चवनद प्रदेश में एक नदी जो  
 आर्यावर्तकी पूर्वोपसीमा पर थी ।  
 दृष्ट (न०)-प्रेक्षण, अपनी या शत्रु की  
 सेना का भय । वि०-देखा हुआ,  
 अवलोकित, प्रत्यक्ष ।  
 दृष्टकूट (न०)-कठिन पक्ष, पहेली ।  
 दृष्टपक्ष (वि०)-जिसने पीठ दिखा दी  
 हो, रण से भागा हुआ ।  
 दृष्टादृष्ट (वि०)-प्रथम धार ही देखा  
 गया ।  
 दृष्टान्त (अस्त्री०)-उदाहरण, मिसाल ।  
 दृष्टि (स्त्री०)-आख, चक्षु, गज़र,  
 दर्शन, ज्ञान, बुद्धि, विचार, प्रकाश,  
 २ की सहाय ।

दृष्टिलेप ( पु० )-मलर, अवलोकन ।

दृष्टिगोचर ( वि० )-दिखलाई देने वाला, प्रत्यक्ष ।

दृष्टिपात ( पु० )-दृक्पात ।

दृष्टिपूज ( वि० )-स्वयं देखकर श्रुतता का निरूपण करना । [ ग्राह ।

दृष्टिविलेप ( पु० )-कटाक्ष, तिरछी नि-  
दृष्ट् ( १ पु० )-बढ़ना, घांघना, उन्नति पाना ।

दृ ( ४ पु० )-फाड़ना, दीदूक करना, फूट पड़ना, अलग होना [ यह धातु ८ पु० भी होती है ] ।

दे ( १ भा० )-रत्ना करना, धारण ।

देदीप्यमान ( वि० )-अत्यन्त चमकीला, प्रकाशमान ।

देव ( १ भा० )-जुगा खेलना, फेंकना, चमकना, खेलना ।

देव ( पु० )-देवता, अमर, ब्राह्मण, राजा, बादल, मेघ, पारा, यज्ञ, पूजनीय पुत्र, परमात्मा, शून-  
फ्रीडा । वि०-स्वर्गीय, चमकीला, पूजनीय ।

देवक ( पु० )-देवता, देवकी का पिता, श्रीकृष्ण का माता । वि०-खिलाही, स्वर्गीय ।

दे [ दे ] वकी ( स्त्री० )-राजा देवक की कन्या, वसुदेव की भार्या जोर श्रीकृष्ण की माता ।

देवकीनन्दन ( पु० )-श्रीकृष्ण ।

देवकुट [ उ ] ( न० ) देवालय, मन्दिर ।

देवकुन्धा ( स्त्री० )-आकाशगङ्गा ।

देवकुसुम ( न० )-सुवर्ग, लीम ।

देवगण ( पु० )-देवताओं का समूह ।

देवगणिका ( स्त्री० )-अप्सर ।

देवगर्जन ( न० )-बादलों की गड़-  
गड़ाहट ।

देवगिरि ( पु० )-मृकटपर्वत का नाम ।

देवगुह ( पु० )-बृहस्पति, कश्यप ।

देवगृह ( न० )-देवालय, राजमहल ।

देवतक ( पु० )-वटवृक्ष, कल्पवृक्ष,  
हरिचन्दनादि स्वर्गीय वृक्ष ।

देवता ( स्त्री० )-दि०पुण्यपुत्र पुत्र्य  
वा मैत्रीगुरु शक्ति, जैसे-विद्युत् ।

देवदत्त ( पु० )-अर्जुन का शङ्ख, एरी-  
रूप एक यायु, युद्धदेव का  
अन्ननाम, किसी व्यक्तिको नाम ।

देवदास ( अस्त्री० )-देवताओं का प्रिय  
वृत्त, अपने नाम से प्रसिद्ध एकही ।

देवदासी ( स्त्री० )-वामनमार्गमत के  
प्रभाव से पौराणिक मन्दिरों में  
देवमूर्ति के आगे नृत्य करने के  
लिये कुछ कुमारी कन्यायें रक्ष  
करती हैं जो देवदासी नाम से  
पकारी जाती हैं ।

देवद्वीप ( पु० )-वसु, आँख ।

देवदूत ( पु० )-स्वर्गीय दूत, करिश्ता ।

देवदेव ( पु० )-ब्राह्मण, विष्णु, शिव ।

देवन ( पु० )-पाशा, फाँस । न०-

चमक, खेल, शोभन, स्त्रीधारण,  
स्पर्धा, स्तुति, दुःख, गति, कमल ।

देवनदी ( स्त्री० )-पवित्र नदी, गङ्गा ।

देवना ( स्त्री० )-शूनकोटा, खेल,  
रज्ज ।

देवनागरी ( स्त्री० )-इस लिपि का



मानसिचमें सस्कृत स्थिती जाती है ।  
 देवनिन्दक (पु०) - नास्तिक, अविश्वासो  
 देवपति (पु०) - इन्द्र का वाचक ।  
 देवपथ (पु०) - देवताओं का मार्ग,  
 जायापथ । [अमरावती ।  
 देवपुरी (स्त्री०) - इन्द्र की राजधानी,  
 देवप्रतिमा (स्त्री०) - देवता की मूर्ति ।  
 देवप्रिय (पु०) - शिव, अन्न, तपस्वी,  
 मूर्ति । [छाता, पुजारी ।  
 देवप्राक्षण (पु०) - देवालय का अधि-  
 देवमणि (पु०) - कोस्तुभमणि, सूर्य,  
 चोडे की अपाल ।  
 देवगाता (स्त्री०) - कश्यप की पुत्री  
 अदिति, देवताओं की माता ।  
 देवगण (पु०) - अग्निहोत्र, होमपत्र,  
 पञ्चमहायज्ञों में से एक ।  
 देव्या-यात्री (स्त्री०) - शृद्धाचार्य की  
 पुत्री । [शुद्ध ।  
 देवपु (पु०) - देवता । वि० - पवित्र,  
 देवयुग (न०) - सप्तयुग, कृतयुग ।  
 देवयोनि (पु०) - अमानुषीय व्यक्ति,  
 अहं देवता, ममिषा ।  
 देवर (पु०) - पति का कनिष्ठ या  
 ज्येष्ठ भाई ।  
 देवराट्-ज (पु०) - देवताओं में राजा  
 अर्थात् इन्द्र, सुतदेव का नाम ।  
 देवराज (पु०) - परीक्षित राजा ।  
 देवर्षि (पु०) - मन्त्रद्रष्टा ऋषि ।  
 देवता (पु०) - नारद देवर, धीम्य  
 ऋषि का महा भार्गव, देवता के  
 मणारे जीने वाला, पुजारी ।  
 देवलाय (पु०) - स्वर्ग, यक्षित ।

देववाणी (स्त्री०) - ग्रीव की आवाज ।  
 देववाहन (पु०) - अग्नि ।  
 देवघा (पु०) - इन्द्रियों को मारने  
 दमन कर लिया है ऐसा पुरुष,  
 भीष्म पितामह । न० - देवता  
 आदि के नाम व्रतानुष्ठान ।  
 देवशत्रु (पु०) - वैद्य, राजा ।  
 देवश्रुत (पु०) - नारद, देवता ।  
 देवमन्त्र (स्त्री०) - सभ्य पुरुषों की  
 मनिति, देवताओं का मन्त्राण,  
 राजसभा, द्यूतगृह ।  
 देवमातृ (अ०) - देवताओं के अधीन ।  
 देवसिंह (पु०) - शिव ।  
 देवसेनापति (पु०) - देवताओं की सेना  
 का अध्यक्ष, स्वानिकातिक्रिय ।  
 देवस्व (न०) - देवार्पित धन, वह जाय-  
 दाद जो धर्मार्थ मन्दिरों के नाम  
 कर दी जाती है ।  
 देवहूति (स्त्री०) - स्वायम्भुय मनु की  
 कन्या और कदम्ब ऋषि की  
 पत्नी ।  
 देवागार (अस्त्री०) - देवालय ।  
 देवाङ्गना (स्त्री०) - अक्षरा । [मातृमा ।  
 देवातिदेव (पु०) - सर्वोत्तम देव, पर-  
 देवाजीव (पु०) - पुजारी, देवछ ।  
 देवाभीष्ट (वि०) - जो देवताओं की  
 प्रिय हो । [वकरा ।  
 देवानामिष (पु०) - मूर्त, ज्येष्ठक,  
 देवानि (पु०) - मन्त्रवक्ता का एक राजा ।  
 देवार्चना (स्त्री०) - देवता की पूजा ।  
 देवाहं (न०) - सुरपण । वि० - देवता  
 के योग्य ।

देवालय(पु०)-स्वर्ग, देवमन्दिर ।  
 देविका(स्त्री०)-धनूरा, एक नदी ।  
 देवी (स्त्री०)-देवता की स्त्री, राज-  
 नद्विपी, कुलीन स्त्रियों की  
 उपाधि, सासुरी, मावित्री ।  
 देव (पु०)-नियुक्त पति, पति का  
 छोटा भाई ।  
 देवेश (पु०)-देवताओं का स्वामी,  
 गदादेव, इन्द्र ।  
 देव्य(न०)-देवतापन, स्वर्गीयभाव ।  
 देश (पु०)-स्थान, भूगोल का कोई  
 भाग, मुलक, प्रान्त, भाग ।  
 देशक(पु०)-शासक, गुरु ।  
 देशकाल (पु०)-स्थान और समय ।  
 [यह द्विवचन में प्रयुक्त होता है]  
 देशकालज्ञ (वि०)-उचितानुचित  
 समय और मुक्तयुक्त स्थान का  
 जानने वाला ।  
 देशभाषा(स्त्री०)-मातृभाषा, साधा-  
 रण बोलीबाल ।  
 देशान्तर(न०)-दूररा देश । [का ।  
 देशान्तरा(वि०)-प्रजननी, गैरमुक्त  
 देशिक(पु०)-गुरु, पथिक, पथप्रदर्शक,  
 उपदेशक ।  
 देशिनी(स्त्री०)-तर्जनी अंगुली ।  
 देशीय (वि०)-स्थानिक, प्रान्तिक,  
 अपने देश का ।  
 देह(अस्त्री०)-शरीर, जिस्म । पु०-  
 लेपन ।  
 देहकोष(पु०)-शरीर का आच्छादन,  
 पर, पंख, घमड़ा आदि ।  
 देहन (पु०)-पुत्र, बेटा ।

देहत्याग(पु०)-शरीर का छोड़ना,  
 इच्छाकृत मृत्यु, देहतिमर्जन ।  
 देहद(पु०)-पारा ।  
 देहधारक(न०)-अभ्य, हड्डी ।  
 देहधारण (न०)-जीवन, जिनंदगी ।  
 देहघ्न्य (पु०)-शरीरपिष्टर ।  
 देहमृत(पु०)-जानदार मनुष्य, जीवन ।  
 देहभूर(वि०)-पेट, स्वार्थी ।  
 देहलक्षण(न०)-शरीर पर का तिल ।  
 देहली (स्त्री०)-घर का दरवाजा,  
 घर के दरवाजे की देहल ।  
 देहानु[वत्] (वि०)-शरीरी । पु०-  
 मनुष्य, आत्मा ।  
 देहसार(पु०)-सवज्ञा, चर्बी ।  
 देहिनी(स्त्री०)-पृथ्वी, मृत्ति ।  
 देही[नृ](पु०)-जानदार मनुष्य, आत्मा ।  
 दे(१ पु०)-शुद्ध करना, पवित्र करना,  
 रक्षा करना ।  
 दैत्य(पु०)-दितिपुत्र, असुर, राजस ।  
 दैत्या(स्त्री०)-नगीली वस्तु, सुरा ।  
 दैत्यारि(पु०)-देवता, विष्णु ।  
 दिन-निक (वि०)-रोज़ाना, प्रत्येक  
 दिन का । [येतन ।  
 दिनिकी (स्त्री०)-प्रत्येक दिन का  
 दैन्य-न (न०)-दीनभाव, दीनता,  
 कंगाली, उदासी ।  
 दीर्घ-र्घ्य(न०)-लम्बाई, उपापन, दीर्घता  
 दीर्घ(न०)-प्रारब्ध, किस्मत । पु०-भाट  
 प्रकार के विचारों में से एक ।  
 दिग्-देयन-उन्धी, स्वर्गीय ।  
 दीर्घ(पु०)-देवता ।  
 दीर्घरुत(वि०)-प्रारब्धग्रथ, हुदरती ।

दैवज्ञ(पु०)—ज्योतिषी, गणक जो ग्रहों को पाल को देखकर शुभाशुभ बर्णों के फल को बतलाता है ।

दैवत(न०)—देवता, देवसमूह प्रतिमा, यास्काचार्यकृत निरुक्त के तीसरे काण्ड का नाम । वि०—स्वर्गीय ।

दैवत-त्र(वि०) भाग्य के अधीन ।

दैवदुष्टिपाक(पु०) षडकिस्मती, भाग्य हीनता, भाग्यदोष ।

दैवपर ( वि० )—भाग्य को सर्वोपरि मानने वाला, जो होना है वह होकर रहेगा ऐसा बहने वाला ।

दैवयोग(पु०)—सौभाग्य, शुभायसर ।

दैवयोगेन-दैवयोगात् ( अ० ) सुध किम्पतोये, पटनावध, इत्तफाव से ।

दैववाणी ( स्त्री० )—आकाशवाणी, सस्कृतवाणी ।

दैवात्(अ०)—अद्यानक, अकस्मात् ।

दैधिक(वि०)—स्वर्गीय, देवतासम्बन्धी ।

दैधिक( वि० )—स्थानिक, प्रान्तिक, कीर्मी, समस्त देश से सम्बन्ध रखने वाला । पु०—गुरु, शिक्षक ।

दैष्टिक(पु०)—भोगवादी । वि०—भाग्य के आश्रित ।

दैतिक(वि०)—शारीरिक, निस्सामाजी ।

दा(४ प०)—जाटना, उदना ।

दा शिखर(न०)—कथा, स्कन्ध, खवा ।

दाग्धा [ गृ ] ( पु० )—गापाल, गूजर, दग्ध, घट्टा ।

दाप(पु०)—घट्टा, यत्न ।

दाप(पु०) रस्सी, रज्जु ।

दापद(वि०)—मन्युत, गतिशाली ।

दादह(पु०)—दह के समान हाथ, दहदहस्त ।

दार्मूल(न०)—मुजा पामूल, कल, कोप ।

दार्मुह(न०)—मल्लयुद्ध, बाहुयुद्ध ।

दाल ( पु० ) कूल, कुलना, होला, होलयात्रा ।

दोला निका ( स्त्री० )—पालकी, होली, पीनम, कुलना ।

दोप(पु०)—ऐष, पाप, गुनाह, दूषण, वैद्यक में वात, पित्त, कफ । न्याय में राग, द्वेष, मोह ।

दोष [ न ] (अस्त्री०)—बाजू, बाहु ।

दोषघाती[न्] (वि०)—दुर्जन ।

दोषघ्न(पु०)—दोषों के जानने वाला, परिहृत, चिकित्सक ।

दोषत्रय(न०)—वात, पित्त, कफ नामक तीन दोष ।

दोषा(अ०)—रात्रि के समय । स्त्री०—बाजू, बाह, रात्रि ।

दोषाकर(पु०) चन्द्रगा, चाद, दोषों का समूह । [ होने वाला ।

दोषातन ( न० )—रात्रि का, रात में दोषी[न्] (वि०)—अवगुणी, दोषयुक्त ।

पु०—मुन्निम अपराधी ।

दोस्(अस्त्री०)—बाहु, मुजा, किसी क्षेत्र की मुजा ।

दोह(पु०)—दुग्ध, दूध, दुहने का यत्न ।

दोहद(अस्त्री०)—छालवा, गभं, गभिणी की हड्डा, चटकटेपना ।

दोहदिनी(स्त्री०)—गभिणी, गभंयती, दा हृदय धाली ।

दोहनी(स्त्री०)—दूध दुहने का पात्र ।

दोहल=दोहद । [ उन्द ।  
 दोहा(स्त्री०)-एक प्रकार का मात्रा-  
 दीःगीत्य ( न० )-युरा स्वभाव, कू-  
 प्रकृति ।  
 दीत्य(न०)-द्वतभाव, द्वन का कार्य ।  
 दीरास्वप(न०)-क्रूरता, घुरा स्वभाव,  
 घदमाशी ।  
 दीर्गत्व(न०)-निर्धनता, मुसीबत ।  
 दीर्घत्व(न०)-कठिनता, मुश्किल ।  
 दीर्जन्य(न०)-शठता, क्रूरता ।  
 दीर्घत्व(न०)-कमजोरी, पीसपड़ीनता ।  
 दीर्मांग्य ( न० )-चदकिस्मती ।  
 दीर्मेतस्य ( न० )-मानसिक कष्ट,  
 उदासी, निराशा । [ निजना ।  
 दीर्घत्व ( न० )-दुष्प्राप्ति, अभाव, न  
 दीर्घत्व(न०)-शत्रुता, रभं, दृष्टा ।  
 दीर्घारिक(पु०)-द्वारपाल, द्वाररक्षक ।  
 दीर्घकुल ( वि० )-नीचकुलोत्पन्न ।  
 दीर्घिन् ( पु० )-पुत्री का पुत्र, प्येवता ।  
 दीर्घित्री(स्त्री०)-प्येवती, पुत्री की पुत्री ।  
 दीर्घिनी ( स्त्री० )-गमंयती स्त्री ।  
 द्यु ( २५० )-आक्रमण करना, हमला  
 करना ।  
 द्यु ( न० )-दिन, आकाश, चमक,  
 तेज्जी, स्वर्ण । पु०-अग्नि ।  
 द्युधर ( पु० )-आकाशग्रह, पत्नी ।  
 द्युत ( १ शब्द ) [ द्योतते ]-चमकना,  
 दीप्तिमान् होना । पु०-प्रकाश  
 की किरण ।  
 द्युति-ती ( स्त्री० )-चमक, शोभा,  
 कान्ति, प्रकाश ।  
 द्युपति ( पु० )-मृत्यु, दृष्ट ।  
 द्युलोक ( पु० )-स्वर्गलोक ।

द्युम्न ( न० )-चम, दीप्त, बल, जौर,  
 शक्ति, शोभा ।  
 द्यूत ( अस्त्री० )-उल, जुआ, खेल,  
 पामे का खेल, ठगी ।  
 द्यूतकर ( पु० )-जुआरी [ द्यूतकृत  
 का भी यही अर्थ है ] ।  
 द्यूतकोडा ( स्त्री० )-जुए का खेल ।  
 द्यूतवृत्ति ( पु० )-पैसेवरजुआरी, द्यूत-  
 गृह का अध्ययन ।  
 द्यो ( स्त्री० )-आकाश, वहिस्त,  
 आसमान ।  
 द्योत ( पु० )-प्रकाश, रोशनी, चमक,  
 धूप, गर्मी ।  
 द्योतक ( वि० )-प्रकाशक, प्रकट करने  
 वाला, चमकाने वाला ।  
 द्योतन ( पु० )-छिम्प, चिराग । न०-  
 चमक, प्रकाश, उपाख्या, दृष्टि,  
 उपाकाउ ।  
 द्रक्ष्य ( न० )-साप, परिमाण, शोला ।  
 द्रम्(१५०)-इधर उधर जाना, दीहना ।  
 द्रव ( वि० )-घटता हुआ [ पदार्थ ] रस,  
 टपकने वाला, बेगमुक्त, बिछला  
 हुआ । पु०-गति, गिर, टपकना,  
 खेल, रस ।  
 द्रवण ( न० )-दीहना, टपकना, धूना ।  
 द्रवद्रव्य ( न० )-चहने वाला पदार्थ ।  
 द्रवन्ती ( स्त्री० )-गतमूलिका, नदी,  
 भृषकपर्णी ।  
 द्रविड ( पु० )-दक्षिण में एक देश  
 [ यह शब्द यदुवचन में प्रयुक्त  
 होता है ] ।  
 द्रविण ( न० )-चम, दीप्ति, सम्पत्ति,  
 स्वर्ण, शक्ति, ताकत, दृष्टा ।

द्रव्य ( न० )-घोडा, वस्तु, लज्जा,  
पीतल, लेपन, मलहम, सार, गोद ।  
द्रव्यमय ( वि० )-सम्पत्ति वाला, प्राकृतिक  
द्रव्यसिद्धि ( स्त्री० )-धनप्राप्ति ।  
द्रव्य ( वि० )-प्रत्यक्ष, देखने योग्य,  
सुन्दर, प्रियदर्शन ।  
द्रव्य [ पद ] ( पु० )-रूपि, परीक्षक ।  
द्रा ( २ प० )-सोना, भागना, शक्ति-  
न्दा होना ।  
द्राक् ( अ० )-तेजी से, फौरन, तुरन्त ।  
द्राक्षा ( स्त्री० )-अगूर, किश्मिस,  
अगूर की धेल ।  
द्राक्षारिष्ट ( न० )-एक प्रकार का  
पीष्टिक अरिष्ट जिस में अगूर  
विशेष होते हैं ।  
द्राक्ष ( १ प० )-इच्छा करना, चाहना  
द्राप ( पु० )-सर्प, आकाश, मूर्ख, कोबह ।  
द्रामिल ( पु० )--चाणक्य का नाम ।  
द्राव ( पु० )--तेजी, भागना, नमी, बहना ।  
द्रावक ( पु० )--चन्द्रकान्तमणि, चौर,  
भार । न०--मोम ।  
द्राविड ( पु० )-द्रविड देश का निवासी,  
दक्षिण देश का प्राण्य ।  
द्राविडी ( स्त्री० )--इलायची ।  
द्रु ( १ प० ) [ द्रवति ]-बहना, दीड़ना,  
पिघलना, जाना ।  
द्रुह ( १, ६ प० )-धूमना, नष्ट होना ।  
द्रुण ( न० )-फमान, लठवार, बिच्छू,  
यदनाश, मधुमती ।  
द्रुत ( पु० )-बिन्दगी, घृष्ट, बिच्छू । वि०  
तीव्र, तेज, दीढ़ा हुआ, गन्ना हुआ ।  
द्रुम ( १० )-तेजी से, फौरन, अ-

विलम्बेन ।  
द्रुतविलम्बित ( न० )-एक छन्दका नाम  
द्रुपद ( पु० )-पञ्चाल देश के एक  
राजा का नाम, द्रौपदीका पिता  
द्रुम ( पु० )-पेड़, वृक्ष, दरखत, कुवेर,  
स्वर्ग ।  
द्रुमारि ( पु० )-हाथी, हस्ती ।  
द्रुह ( ४ प० )-द्रोह करना, रैंपा करना,  
हानि पहुंचाना ।  
द्रुह ( पु० )-पुत्र, सन्तान, शील ।  
द्रुहिण ( ५, ८ प० )-ब्रह्मा, शिव, विष्णु ।  
द्रु ( पु० )-भारना, लुक्सान पहुंचाना ।  
पु० स्वर्ण, सोना ।  
द्रुण ( पु० )-बिच्छू । न०--धनुष, कमान  
द्रेक ( १ प० )-शब्द करना, हर्षित होना ।  
द्रै ( १ प० ) [ द्रापति ]-सोना ।  
द्रोण ( पु० )-कौरव पांडवों के आचार्य  
का नाम, बिच्छू, वृक्ष, यादल,  
एक कौवा, ३४ घेर का परिमाण,  
ऐसा जलशय जो ८०० सौ गज  
उन्मा हो ।  
द्रोणि--णी--( स्त्री० )-एक देश, एक  
नदी, नील का घृत, एक पर्वत ।  
द्रोह ( पु० )-इर्ष्या, द्वेष, कलह, दुश्मनी ।  
द्रोणायण द्रोणायणि ( पु० )--अश्व-  
त्यामा का वाचक ।  
द्रौपदी ( स्त्री० )--पञ्चाल देश के राजा  
की कन्या जिसका विवाह अर्जुन  
के साथ हुआ था, भारतवर्ष की  
५ प्रसिद्ध स्त्री स्त्रियों में से एक ।  
द्रव्य ( न० )-जोड़ा ।  
द्रव्य ( पु० )-एक वसाय का नाम, एक

रोग। न०--जोड़ा, दो विरुद्ध वस्तुओं का मेल जैसे सुख दुःख, शीत उष्ण, क्रमहर छड़ाई, मल्लयुद्ध, सन्देश, रहस्य ।

द्वन्द्वभाव ( पु० )--पारस्परिक कलह, दुरमती । [ की लड़ाई ।

द्वन्द्वयुद्ध ( न० )--मल्लयुद्ध, दो जनपदों द्वय ( वि० )--दुग्धा, उदल । न०--जोड़ा, द्विविधा ।

द्वाचत्वारिंशत् ( स्त्री० )--४२ का वाचक ।

द्वाज ( वि० )--दो से उत्पन्न ।

द्वात्रिंशत् ( वि० )--३२ की संख्या का वाचक ।

द्वादश ( वि० )--१२ का वाचक ।

द्वादशकर ( पु० )--जिस के १२ हाथ हों, कार्तिकेय वा युद्धस्पति ।

द्वादशांगुल ( पु० )--चारह अंगुल की नाप, एक आलिशत ।

द्वापर ( अस्त्री० )--तीसरा युग, सन्देश, अनिशिष्टता ।

द्वामुन्धायण ( पु० )--गीतम त्रयि ।

द्वा ( अस्त्री० )--दरवाजा, उपाय, मार्ग, वसीला, तद्वीच ।

द्वा ( न० )--पूर्ववत् ।

द्वाकण्टक ( पु० )--दरवाजे की चट्टानी ।

द्वापाल ( पु० )--दरवान ।

द्वायन्त्र ( न० )--ताला ।

द्वास्थ ( पु० )--द्वारपाल, द्वारस्तक ।

द्वा[रि] का ( स्त्री० )--गुजरात प्रदेश के पश्चिमी किनारे पर श्री-कृष्ण जी की प्राचीन राजधानी ।

द्वाकाताप-पति ( पु० )--श्रीकृष्ण ।

द्वा ( अ० )--व्यञ्जि, मार्जित ।

द्वाविंशति ( स्त्री० )--२२ वाहंस ।

द्वि ( वि० )--२ की संख्या, दोनों ।

द्विज ( वि० )--दुग्धा, दूसरा ।

द्विकुट ( पु० )--कट, उद्गः ।

द्विगुण ( वि० )--द्विगुणा, २ से गुणा किया गया ।

द्विगुणित ( वि० )--पूर्ववत् ।

द्विज ( पु० )--जिस का दोबारा जन्म हुआ हो अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य जिन का उपनयन के पश्चात् दूसरा जन्म हुआ कहा जाता है, दन्त, पोंसला, पत्नी, सर्प ।

द्विजन्मा [ न ] ( पु० )=द्विज ।

द्विजराज ( पु० )--द्विजों का राजा, चन्द्रमा, चांद, गुरु ।

द्विजवर ( पु० )--द्विजों में श्रेष्ठ अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रि ।

द्विजाति ( पु० )--जिस के दो जन्म हों अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ।

द्विजिह्व ( पु० )--सर्प, नाप, दो जीभ वाला, सल, कपटी, चोर ।

द्वितीय ( वि० )--दो की संख्या वाला । न०--जोड़ा ।

द्वितीय ( वि० )--दूसरा । पु०--गाथी, निम्न, शरीर, दूसरा पुत्र ।

द्वितीया ( स्त्री० )--कृष्णपक्ष और शुक्लपक्ष की दूसरी तिथि, दीयन, माया, संगिनी । [ द्विगुणापन ।

द्वित्व ( न० )--जोड़ा, दो का अङ्क, द्विदत्त ( वि० )--जो दो दांतों से पहि-

चाना जाय जैसे धैव आदि ।

द्विधा (ज०)-दो प्रकार से, दो तरह ।  
 द्विप (पु०)-हाथी, हस्ती । [महीना ।  
 द्विपक्ष (पु०)-पक्षी, परिन्द, मास,  
 द्विपद् (पु०)-मनुष्य, देवता, पक्षी, राशि ।  
 द्विपाद (पु०)-पूर्वघत ।  
 द्विमासक (पु०)-जिस के दो माता  
 हों, गणेश, जरासन्ध ।  
 द्विरद (पु०)-दस्ती, हाथी, दो दांत वाला  
 द्विरसन (पु०)-सर्प, सांप ।  
 द्विरागमन (ग०)-विवाह के पश्चात्  
 लहक्री का फिर जाना, मुकलावा,  
 गौना ।  
 द्विरात्र (ग०)-दो रात्रि ।  
 द्विरुक्त (वि०)-दो बार कहा हुआ ।  
 द्विरेक (पु०)-भूभर, भौरा ।  
 द्विवचन (न०)-व्याकरण में दो का  
 बोध कराने वाले शब्द का रूप ।  
 द्विविध (वि०)-दो प्रकार का ।  
 द्विशत (ग०)-२०० दोसी, १०२ ।  
 द्विग् (२ जा०)-द्वेप करना, घेर करना  
 , गकरत करना । वि०-द्वेयी, नकरत  
 करने वाला । पु०-शत्रु, दुश्मन ।  
 द्विप (पु०)-शत्रु, दुश्मन ।  
 द्विपत् (पु०)-पूर्वघत । [ वाला ।  
 द्विपस्तप (वि०)-शत्रु का भेदन करनी  
 द्विष्ट (न०)-ताम्, तांवा, ताम्रधातु ।  
 वि०-द्वेपयुक्त ।  
 द्विम् (ज०)-दो बार ।  
 द्विसप्तति (स्त्री०)-५२ सहस्र ।  
 द्विसप्ताह (पु०)-पञ्चषाढ़ा ।

द्विसमन्विभुज (पु०)-पैसा त्रिभुज जिस  
 की दो भुजाएं बराबर हों ।  
 द्विहन् (पु०)-हस्ती, हाथी ।  
 द्विहायन (वि०)-दो वर्ष का ।  
 द्विहृदया (स्त्री०)-जिसके दो हृदय हों,  
 गर्भवती स्त्री ।  
 द्वीप (जम्बी०)-टापू, भूमि का वह  
 भाग जिस के चारों ओर पानी  
 हो, जज्जीरा, चीत्ते का चमड़ा,  
 द्विवर्ण, बाघ ।  
 द्वीपवान् [वत्] (पु०)-सागर, नदी ।  
 द्वीपी [न्] (पु०)-जिसका चमड़ा दुरंगा  
 हो अर्थात् चीता, बाघ ।  
 द्वीप्य (पु०)-टापू में रहने वाला, व्यास-  
 देव, रुद्र का वाचक ।  
 द्वेषा (ज०)-दो प्रकार से, द्विगुणा ।  
 द्वेष (पु०)-नकरत, घृणा, शत्रुता,  
 ईर्ष्या ।  
 द्वेषण (पु०)-शत्रु । न०-घृणा, नकरत ।  
 वि०-घृणा करने वाला ।  
 द्वेयी [न्] (पु०)-द्वेष करने वाला,  
 नाश करने वाला । [नकरत ।  
 द्वेप्य (वि०)-घृणास्पद, काबिले  
 द्वैगुणिक (पु०)-सूदखोर, व्याज पर  
 ठपाज लेने वाला ।  
 द्वैत (ग०)-२ वी सख्या, दो प्रकार  
 का भेद, एक वचन का नाम,  
 दो वस्तुओं की जनादि मानने  
 का सिद्धान्त अर्थात् प्रज्ञा और  
 जीव जनादि, जनन्त और एक

दूधरे से सिन्न हैं ।

द्वैतवादी [न] (पु०)-द्वैत के सिद्धान्त को मानने वाला ।

द्वैध (वि०)-द्विगुणा न०-२ की संख्या, दो हिस्सों में बटवारा, फर्क, विरोध, सन्देह ।

द्वैधोभास (पु०)-अनिश्चयता, संशय, कान्त होना, पहेली ।

द्वैप (वि०)-टापू में रहने वाला, चीते के समझे का घना हुआ ।

न०-चीते का घनहा ।

द्वैपायन (पु०)-द्वीप में उत्पन्न होने से वेदव्यास का नाम ।

द्वैमासुर-वक्र (पु०)-गणेश, जरासन्ध

द्वैधार्थिक (वि०)-दो धर्मों में होने वाला, दोसाठा ।

द्वैहायन (न०)-दो वर्ष का काल ।

## घ

घ-तवर्ग का चतुर्थ अक्षर । न०-घन, सम्पत्ति । पु०-कुवेर, ब्रह्मा, धर्म । [करना ।

घट्ट (१० द०)-नष्ट करना, बरबाद

घट (पु०)-तराजू, तुला, साठवीं राशि।

घटक (पु०)-४२ रत्नों का एक परिमाण होता है ।

घटिका-घटी (स्त्री०)-घोती, कमर में बांधने का कपड़ा, कटिबस्त्र ।

घण्ट (१ प०)-आवाज करना ।

घनूर-क (पु०)-घनूरा नामक वृक्ष ।

घन् (१ प०)-आवाज करना ।

घन(न०)-सम्पत्ति, दौलत, रुपया, कोय, कोई बहुमूल्य वस्तु, पूंजी, लूट का माल, पारितोषिक, धनिष्ठा राशि, शंक्र-गणित में जमा का निशान ।

घनक (पु०)-छालची, गूधु ।

घनकाम (वि०)-पूर्ववत् ।

घनकेलि (पु०)-कुवेर का धावक ।

घनलय (पु०)-सम्पत्ति का नाश ।

घनगर्भित (वि०)-घन के कारण मग्न

घनक्षय (पु०)-घन को जीतने वाला, अर्जुन, बन्धि, हाथी, एक धायु, एक वृत्त ।

घनद (पु०)-घन धी रत्ना करने वाला, कुवेर, चदारमनुष्य, दिग्जल वृत्त ।

घनदण्ड (पु०)-जुमाना ।

घनदायी [न] (पु०)-अग्नि, ज्ञान ।

घनधानी (स्त्री०)-कोय, मगाना ।

घनपति (पु०)-कुवेर, कोषाध्यक्ष ।

घनपाठ (पु०)-पूर्ववत् ।

घनवानु (वत्) (वि०)-घनवाना, अमीर ।

घनहर (पु०)-धारिष, चोर ।

घनहीन (वि०)-मरीय, सम्पत्तिरहित ।

घनापहार (पु०)-जुमाना, लूट ।

घनिका (वि०)-अमीर, घनवान्, नेक ।

पु०-घनी पुरुष, साहूकार, देकर ।

घनिष्ट (वि०)-बहुत अमीर ।

घनिष्ठा (स्त्री०)-२३वां नक्षत्र ।

घनी [न] (पु०)-साहूकार ।

घनु (पु०)-कमान, चार दस्त का परमाण, घनुधारी ।



धनुर्गुण(पु०)-मौर्वी, धनुष् का चिल्ला।  
 धनुर्गद्-गोद(पु०)-धनुर्धारी, तीरदाज  
 धनुर्ज्यां(स्त्री०)-चिल्ला, मौर्वी।  
 धनुर्धर-भूत(पु०)-धनुर्धारी, तीरदाज।  
 धनुर्विद्या(स्त्री०)-शस्त्रास्त्रविद्या।  
 धनुर्वेद(पु०)-चार उपवेदों में से एक  
 जिस में शस्त्रास्त्रविद्या का  
 वर्णन है। [वाला।  
 धनुष्क(पु०)-तीरदाज, तीर चलाने  
 धनुष्पाणि(धि०)-शिशु के हाथ में  
 कमान हो। [धनुर्धर।  
 धनुष्मान् [नत्] (पु०)-तीरदाज,  
 धनुष् (न०)-कमान, वृत्ताश, चार  
 हस्त का परिमाण, जगल।  
 धनु (स्त्री०)-कमान। पु०-खत्ती,  
 अनाज की खत्ती, अनाजका ढेर।  
 धन्य (धि०)-अमीर, सुशक्तिस्मत्,  
 प्रसन्न, नेक, अच्छा, कृतार्थ,  
 सराहने लायक, पुण्यशील। न०-  
 दीलत, कोष, अश्वकर्ण का वृक्ष।  
 धन्याक(न०)-धनिया, धनिया का  
 वृक्ष।  
 धन्वन्(अस्त्री०)-आकाश, महभूमि,  
 जगल, किनारा, सहारा।  
 धन्वन्तरि(पु०)-एक प्रसिद्ध ऋषि का  
 नाम जो आयुर्वेद का प्रणेता है।  
 धन्वययाम (पु०)-जवाड़ा नामक  
 औषधी।  
 धन्वा [न्] (पु०)=धन्वन्।  
 धन्वित (पु०)-शुकर, भूअर।  
 धन्वी[न्](पु०)-धनुर्धारी, तीरदाज,  
 अश्विन। न०-अश्विन नामक एक

वृक्ष। [ना।  
 धम्(द्विप०)-शब्द करना, आवाज कर-  
 धम-क(पु०)-सुहार, अयस्कार, स्पर्ण-  
 कार।  
 धमन(पु०)-नल, सुहार, क्रूर।  
 धमनि-नी (स्त्री०)-नाही, नठन,  
 ग्रीवा, नाह, हल्दी, धौकनी।  
 धम्मिल (पु०)-समत तथा पुष्पादि  
 रचना से विभूषित केश, वधे  
 हुए बाल, रत्नजटित वाली का  
 जूहा।  
 धर(पु०)-पर्वत, पहाड़, आठ वसु-  
 ओं में से एक, कपास का सूत्र,  
 धागा।  
 धरण (पु०)-एक पर्वत, सूर्य, सूरज,  
 चौबीस वा दश रत्नी का परि-  
 माण, धान्य, शीक, सेतु, पुल।  
 धरणि (स्त्री०)-भूमि, पृथिवी।  
 धरणी (स्त्री०)-भूमि, पृथ्वी, जमीन।  
 धरणीकीलक(पु०)-पर्वत, पहाड़।  
 धरणीधर (पु०)-विष्णु, पर्वत,  
 कच्छपावतार।  
 धरणीपूर(पु०)-समुद्र।  
 धरणीसुता(स्त्री०)-सीता, जन्मपुत्री।  
 धरा(स्त्री०)-भूमि, पृथ्वी, गर्भाशय,  
 जरायु, जेल, नाहीभेद।  
 धरात्मज(पु०)-मंगलग्रह, भूमिपुत्र।  
 धराधर(पु०)-विष्णु, पर्वत।  
 धरामर(पु०)-ब्राह्मण, पृथ्वीके देव।  
 [भूदेव, भूधर आदि शब्द भी  
 इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं।]  
 धरित्री(स्त्री०)-भूमि, पृथ्वी, जमीन।

धरिमा[न] (पु०)-तुला, तराजू ।

धरुण (पु०)-ब्रह्मा, स्वर्ण, लाल, पानी।

धर्तव्य (वि०)-धारण करने योग्य,

धारणीय, स्थापनीय ।

धर्म (न०)-यज्ञ, गृहधर्म ।

धर्म (अस्त्री०)-श्रुतिस्मृति-प्रतिपा-

दित कर्म, कर्म से उत्पन्न हुआ

श्रुमाश्रुम फल वा अदृष्ट, आत्मा,

स्वभाव, नीति, उपमा, निमाल,

यमराज, लग्न से ९ वां स्थान,

सत्त्वश्रुति, दान, पुण्य ।

धर्मकर्म[न] (न०)-धर्मार्थ कान, धर्म-

कार्य ।

धर्मकाय (पु०)-बुद्ध का बोधक ।

धर्मकील (पु०)-शासन, शिक्षा, राज-

शासन, राजा की शिक्षा ।

धर्मक्षेत्र (न०)-धर्म का क्षेत्र अर्थात्

कुलक्षेत्र जहां पर कौरव और

पाण्डवों के बीच महाभारतीय-

घर्षित घोर युद्ध हुआ था ।

धर्मधारिणी (स्त्री०)-वेदविहित

दाम्पत्यधर्म का आचरण करने

वाली, धर्मपत्नी, माया ।

धर्मदान (न०)-धर्मार्थ दान अर्थात्

यह दान जो किसी भी स्वार्थ

को उत्पन्न न कर शुभाशुकी

दिया जाय ।

धर्मद्वयी (स्त्री०)-गङ्गा, देयनदी ।

धर्मध्वजी [न] (वि०)-आग्नीविज्ञार्थ

जटादि धर्म के कपटवेद्य धारण

करने वाला, छद्मध्वजी ।

धर्मपत्तन (न०)-मरिच, मिर्च ।

धर्मपत्नी (स्त्री०)-धर्मकारणार्थ विद्या-

हित खवर्णा ज्ञानार्थ, पूर्वविद्या-

हिता अपने वर्ण की स्त्री, वाणी,

कीर्ति, यश, स्मरणशक्ति,

ज्ञान्ति, धृति ।

धर्मपुत्र (पु०)-धर्मराज का पुत्र, पाण्डु

का ज्येष्ठपुत्र राजा युधिष्ठिर ।

धर्ममूल(न०)-पुण्य की कड़, शीमला-

दृष्ट कारण ।

धर्मयुक् [न] (वि०)-धर्म की धारण

करने वाला, धार्मिक पुरुष ।

धर्मराज (पु०)-यमराज, युधिष्ठिर ।

धर्मलक्षण (न०)-धर्म के लक्षण जो

कि मनुप्रतिपादित १० हैं, यथा-

धृति, क्षमा-दान, चोरी न करना,

शीघ्र, इन्द्रियों का निरोध, धी,

विद्या, सत्य जीर क्रोधाभाव ।

धर्मवान् [वत] (वि०)-धार्मिक पुरुष ।

धर्मवासर (पु०)-धर्मोत्सवार्थ दिन,

वीर्णमास्य ।

धर्मवैतथिक (पु०)-बह पुरुष कि जो

पापकर्म से धनोपासन कर अप-

ने को धर्मोत्तमा प्रकट करने के

लिये दान करे अर्थात् कप-

टाधारी ।

धर्मशास्त्र (न०)-यह शास्त्र जो धर्म

को प्रतिपादन करे जैसे मनु-

स्मृति आदि ।

धर्मशील (वि०)-धर्मानुष्ठान करने

वाला, शिव का त्यागाद धर्म कर-

ने का हो ।

धर्मसंस्थापन (न०)-अधर्म को दूर

कारके वेदोक्तधर्मों को नियत करना,  
धर्म की स्थापना ।  
धर्मसंहिता (स्त्री०)—धर्म की स्थिति  
के लिये निर्माण किये हुए मनुस्मृति  
आदि शास्त्र अर्थात् धर्मप्रतिपा-  
दक सन्वादिशास्त्र ।  
धर्मात्मा [न] (पु०)—वह पुरुष जिस-  
ने अपने चित्त को धर्मकार्य में  
लगा रक्खा हो धर्मशील ।  
धर्माधिकरण (पु०)—ऐसा पुरुष जिसे  
धर्माधिकार प्राप्त हो गया हो,  
धर्माध्यक्ष । न०—धर्मशास्त्रानुकूल  
नीति के विचार करने का स्थान  
अर्थात् फचहरी ।  
धर्माध्यक्ष (पु०)—धर्माधिकारी, धर्म  
का द्रष्टा, परमेश्वर ।  
धर्माभास (पु०)—जो वास्तव में धर्म  
न हो और धर्म के सदृश प्रतीत  
होता हो, श्रुतिस्मृति के प्रति-  
कूल धर्म ।  
धर्मासन (न०)—ठपावहारिक कार्य-  
साधन के लिये आसन, विचारा-  
सन, घेद्य, नीति की कुर्सी ।  
धर्मिणी (स्त्री०)—धर्मवती स्त्री, रेणुका ।  
धर्मिष्ठ (वि०)—अतिशय धर्मशील,  
विशेष रूप से धर्म का धारण करने  
वाला, धर्मशील, पुण्यात्मा, नाथु ।  
धर्मी [न] (वि०)—धर्म का धारण करने  
वाला, धर्मयुक्त, पुण्यात्मा ।  
धर्म्य (वि०)—धर्म से मिश्रित, धर्म से  
प्राप्य, धर्म से अपृथक्, धर्म से  
लाभ सन्वादन करने वाला ।

धर्म्यविवाह (पु०)—धर्म के विचारपूर्वक  
हुआ विवाह, विवाहविशेष ।  
धर्म्य (पु०)—प्रगल्भता, चातुर्य, चतुराई,  
शक्तिबन्धन, सानुभूति, भारता,  
अनादर करना, अपमान सहना ।  
धर्म्यकारिणी (स्त्री०)—वह कन्या जिस  
ने अपने कुटुम्बताचरण से कुल  
को दूषित कर दिया हो दूषिता  
कन्या ।  
धर्म्य (न०)—अनादर, तिरस्कार, बे-  
इज्जत करना, परिभव ।  
धर्म्यणी (स्त्री०)—असती स्त्री ।  
धर्म्यिणी (स्त्री०)—पुरुचली, उपनिषा-  
रिणी, असती स्त्री ।  
धर्म्यित (वि०)—तिरस्कृत, अपमानित,  
बेइज्जत किया हुआ । न०—मैथुन,  
स्त्रीसंग, भोग करना ।  
धर्म्यिता (स्त्री०)—असती स्त्री, कुलटा,  
वह स्त्री जो सगमार्थ अपने प्रिय  
पुरुष के समीप संकेतस्थान में जाये ।  
धर्म्य (१ पु०)—जाना, गमन करना ।  
धर्म्य (पु०)—यति स्थानी, मालिक ।  
धर्म्य (पु०)—धर्म नामक वृक्ष, सुन्दर  
घैल, चीनदेशोद्भूत कर्पूर, श्वेत  
मिर्च, श्वेत वर्ण । वि०—श्वेतवर्ण  
घाला, गौरवर्ण के अङ्ग घाला ।  
धर्म्य (स्त्री०)—सफेद रंग की गी,  
शुद्ध गी ।  
धर्म्यपल (पु०)—यह पत्नी जिस के सफेद  
पस दा अर्थात् दस, शुक्लपल ।  
धर्म्यमृत्तिका (स्त्री०)—सफेद मिट्टी,  
पट्टिया मिट्टी ।

धवलोत्पल ( न० )—श्वेतकमल, कुमुद नामक कमल, यह कमल जो रात्रि में खिलता है ।

धवाणक ( पु० )—वायु, वह वायु जो वृक्षादि की कम्पायमान करता है, प्रचण्ड वायु ।

धवित्र ( न० )—उपंजन, पंखा, धीजना ।

धा ( ३ व० )—पकड़ना, धारण करना, पालन करना, देना, बढ़ाना, प्रोत्साहन करना ।

धाक ( पु० )—वृष, घैल, जाहार, जम्न, स्तम्भ, आधार, सहारा ।

धाठी ( स्त्री० )—शत्रु के समीप गमन, अभ्यासादन, शत्रु के सम्मुख प्रपात ।

धातकी ( स्त्री० )—पुष्पविशेष, धाम के फूल ।

धाता ( पु० )—ब्रह्मा, विष्णु, महादेव ।

धातु ( पु० )—शरीरधारक वस्तु, जैसे—मात, पित्त और कफ । रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र ये सात । एवं स्वर्णादि सात धातु । व्याकरण में वह नक्षयित शब्द जो क्रिया की द्योतित करे जैसे “ भू ” आदि ।

धातुघ्न ( न० )—जो धातुओं का नाश करे, काझी, काझिक ।

धातुप ( पु० )—जो धातुओं का पालन करे, रसविशेष ।

धातुद्रावक ( न० )—जो अपने संसर्ग से स्वर्णादि धातुओं को द्रवीभूत करदे अर्थात् सोहागा, तुहागा ।

धातुभूत ( पु० )—पवंत, पहाड़, जो

धातुओं को धारण करे, वीर्य-वर्तक वस्तु ।

धातुमारिणी ( स्त्री० )—तुहागा, टंकण, सर्जिका, सज्जी ।

धातुवैरी ( न० ) ( पु० )—स्वर्णादि धातुओं का शत्रु, गन्धक ।

धातुशेखर ( पु० )—कासीर, कसीर ।

धातूपल ( पु० )—पाषाण, पत्थर ।

धातुपुत्र ( पु० )—ब्रह्माका पुत्र, सनत्कुमार

घात्र ( न० )—ऐसा पात्र जिसमें अन्नादि रक्ताजाय, पात्र, वर्तन, भाजन ।

घात्री ( स्त्री० )—माता, मां, उपमाता, धाय, आंघला ।

घात्रीपुत्र ( पु० )—उपमाता का पुत्र, धाय का पुत्र, नट ।

घात्रीफल ( न० )—आमलकी, आंघला ।

घात्रेयी ( स्त्री० )—दुग्ध पिलाने वाली उपमाता, धाय, छोटी माता ।

घानक ( न० )—धनियार, धान्याक ।

घाना ( स्त्री० )—जृष्टयव, भुने हुए जौ, सत्त, धनियां ।

घानी ( स्त्री० )—आम्रप, आधार, वह जगह जिसमें रह कर प्रभावर्ग का पालन पोषण किया जाता है जैसे—राजधानी, पीछू नामक वृक्ष

घानुष्क ( वि० )—धनुषर, वह पुरुष जिस का शस्त्र धनुष हो, जिस का आजीवन धनुष पर निर्भर हो ।

घानुष्य ( पु० )—धनुष के निये उप-योगी, धंश, बाण ।

घानेय ( न० )—धनियां नामक मसिद्ध वस्तु, धान्याक ।

धान्या (स्त्री०)-बृहदेष्टा इत्यायथी  
धान्य(न०)-धान्याक, धनिया, सतुप  
धावल, चार तिलो की नाप ।

धान्यकोष्ठक(न०)-धान्यरक्षार्थं गृह,  
कुठला, कीठी । [ त्वचा ।

धान्यत्वच् ( स्त्री० )-धानो का तुप,  
धान्यनाय (पु०)-धानो का विक्रेता,  
धान्यविक्रयी ।

धान्यवीर(पु०)-धानो में वीर बृहश,  
नाय, उहद ।

धान्यराग(पु०)-यव, जी ।

धान्याचल (पु०)-दान करने के लिये  
धान्यनिमित्तपर्यंत, धानों का पहाड़ ।

धान्यारि(पु०)-सूसा, सूपक ।

धान्योत्तम ( पु० )-धानो में उत्तम,  
शालि नामक धान्य ।

धाम [ न० ] ( न० )-गृह, घर, शरीर,  
स्थान, जगह, जन्म, तेज, कान्ति,  
प्रज्ञा, चतक, स्वयमकाश, सुद  
रोशन ।

धामप(पु०)-एक नापे का परिमाण ।

धामनिधि(पु०)-तेजो का घर, सूर्य,  
आक नामक यज्ञ ।

धागनी(स्त्री०)-गाही, नहज ।

धाय ( न० )-धारण करने वाला,  
धारणकर्ता ।

धारप(पु०)-पुरोहित, कुलपुरोहित ।

धार्या( स्त्री० )-अग्नि में समिधा  
ढालने का मन्त्र, ऋग्वेद का यह  
मन्त्र जिस में अग्नि प्रज्वलित  
किया जाता है ।

धार (न०)-पात्रस्थित धरा का जल,

मेह का पानी । पु०-गन्तीर, प्रान्त,  
झिला, झण, पत्थरविशेष ।

धारणा( स्त्री० )-यम नियम और  
प्राणायामादि साधनों से वशीकृत  
चित्त की आत्मा में दृढ़ स्थिति  
को योगी जन धारणा कहते हैं,  
उचित मार्ग में स्थिति, आत्मा  
में चित्त की स्थिरता, मर्यादा,  
पक्कि, नाही, नहज ।

धारणी(स्त्री०)-नाही, नहज, बुद्धिप्रोक्त  
मन्त्रभेद, पक्कि, अंगी, कतार ।

धारयित्री(स्त्री०)-पृथ्वी, जमीन, भूमि ।

धारा (स्त्री०)-घट आदि का छिद्र,  
निरन्तर द्रवीभूत पदार्थ का टप-  
कना वा गिरना, तलवार आदिकी  
तीक्ष्ण नोक, अधिकता, कीर्ति,  
अतिवृष्टि, समुदाय, एक नगरी का  
नाम जो राजा भोज की राजधानी  
थी, घोड़ी की पाच प्रकार की गति,  
मेघी का अतिवेग से सरचना ।

धाराङ्गुर (पु०)-जल के कण, जल-  
बिन्दु, शीकर, ओले, घनोपल ।

धाराङ्ग (पु०)-तीर्थ का नाम, खड्ग,  
तलवार ।

धाराट (पु०)-यह पक्षी जो मँच की  
धारा के लिये शब्द करता हुआ  
धूमता है अर्थात् घातक, परीक्षा,  
मेच, बाइल, अश्रय, उन्मत्त हस्ती ।

धारापर (पु०)-मेघ, यादल ।

धाराफल ( पु० )-मदनमृत्त, कामदेव  
का यज्ञ ।

धारावाही [न्] (वि०)-निरन्तर बहने वाला, शनैः २ क्रमशः गिरने वाला ।

धाराविष (पु०)-सङ्ग, तलवार ।

धारासम्पात (पु०)-धाराआ का पतन, अतिवृष्टि, बहुत बरसना ।

धारिणी (स्त्री०)-जो सनस्त धाराधर प्राणिवर्ग की धारण करे अर्थात् पृथ्वी, भूमि, शास्त्रादि नामक वृक्ष ।

धारी [न्] (पु०)-पीछुं मानके वृक्ष, धारण करने वाला, जो आश्रय प्रदान करे । न०-बचाने वाला ।

धारु (वि०)-पान करने वाला, धान-कर्ता । [ हुआ गर्मे २ दूध ।

धारोष्ण (न०)-धारा द्वारा गिरा धाताराष्ट्र (पु०)-जो अच्छे राजा वाले देश में उत्पन्न हुआ हो,

एक भर्षे, एक हंसविशेष अर्थात् वह हंस जिसके चरण और घोंघ काले वर्ण के और अन्य शरीर श्वेतवर्ण का हो, धृतराष्ट्र की सन्तान, धृतराष्ट्र का पुत्र दुर्योधनादि ।

धार्मिक (वि०)-निरन्तर धर्म करने वाला, धर्मशील, धर्ममेयी, धर्मात्मा । [ धारणीय ।

धायं (वि०)-धारण करने योग्य धातुव (न०)-धृष्टता, उत्तजाराहित्य, येशरमी, निरुत्तजपन ।

धाम् (१ आ०)-दीहना, जन्दी धमना, भागना, शुद्धि काना, साफ करना ।

धावक (पु०)-रगक, रगरेज, घोड़ी ।

वि० जन्दी चलनेवाला, ग्रीष्मामी,

धावन (न०)-शीघ्रता, से चलना, शोधना, शुद्ध करना, जन्दी जाना ।

धावनी (स्त्री०)-कटेली, कण्टकारी ।

धावित (वि०)-गया हुआ, गन ।

धि (६ प०)-धारण करना, पकड़ना, रखना [ 'स' उपसर्ग के पूर्व लगा देने से इस का अर्थ सन्धि (मेल, जुलह) करना होता है ] ।

धिन् (भ०)-भस्मना, भिड़कना, निन्दा [ निन्दनीय, शोचनीय, लि, शीक के योग्य इत्यादि अर्थों में प्रायः इस का प्रयोग होता है और इस के योग में द्वितीया वितक्ति होती है ] ।

धित्कार (पु०)-भनादर, तिरस्कार, घेइज्जती ।

धिम्कृत (वि०)-निरम्कृत, अपमानित, निन्दा के योग्य किया हुआ, निभंतिर्गत, हाटा हुआ ।

धिक्रिया (स्त्री०)-निन्दा, भस्मना ।

धिह (१ आ०)-सन्दीह करना, जगाना, जीवना, रहना, स्टेगिन होता ।

धिपय (पु०)-देवताओं का आचार्य, गृहस्पति ।

धिपय (स्त्री०)-युद्धि, मनीषा, अकल, जिस के द्वारा अनुपय धर्म तथा प्रगल्भतायुक्त कार्य करता है ।

धिप्य (न०)-स्थान, यह, अग्नि, नक्षत्र, शक्ति, अग्निभेद । पु०-शुद्धाचार्य, धीर्य । वि० उद्यमदा-धिहारी ।

धिप्यय (न०)=धिप्य ।

धी (४ भा०)—तिरस्कार करना, ये-  
इज्जती करना, सेवा करना,  
विचार न करना ।

धी ( स्त्री० )—युद्धि, मनीषा, शकल,  
समर्थ, ज्ञान । [हुआ, पीत ।

धीत(वि०)—पिया हुआ, पान किया  
धीति (स्त्री०)—जल पीने की इच्छा,  
पिपासा, प्यास ।

धीन्द्रिय(न०)—याच सानेन्द्रिय अर्थात्  
नेत्र, कान, स्पर्श, रसना और  
नासिका । मन भी धीन्द्रिय है ।

धीमान्(पु०)—विद्वान्, बृहस्पति ।

धीर् (१० उ०)—अनादर करना, तिर-  
स्कार करना, येइज्जती करना ।  
[सर्गदा 'अथ' उपसर्ग इस के पूर्व  
रहता है, यथा—“अवधीरयति-ते”]

धीर ( वि० )—धैर्यान्वित, परिहृत,  
यलिष्ठ, नम्र, बुद्धि का प्रेरक ।  
परमेश्वर, साक्षी, गवाह । ग०—  
केशर ।

धीरा (स्त्री०)—नायिकाभेद, स्थित  
जौर निश्चिन्त वित्त की वृत्ति ।

धीलटि(स्त्री०)—दुहिता, पुत्री ।

धीवर (पु०)—कैवर्त्त, कहार, गच्छी य-  
कहने वाला ।

धीवरी ( स्त्री० )—कैवर्त्तपत्नी, धीवर-  
भार्या, दीवर्ती ।

धीशक्ति (स्त्री०)—बुद्धि का नामधेय,  
शुश्रूषा आदि बुद्धि के आठ गुण,  
यथा—शुश्रूषा, श्रवण, ग्रहण, धा-  
रण, उदायोह ( सकृद्विस्तकं )  
अपेक्षितान और तत्त्वज्ञान ।

धीसख(पु०)—मन्त्री, अमात्य, दीवान,  
वजीर ।

धीसन्धि (पु०)=धीसख ।

धु ( ५ उ० )—कापना, हिलाना, कपन ।

धु (स्त्री०)—कापना ।

धुस् (१ भा०)—जागना, सन्दीप्त करना,  
रहना, कुंश पाना, जीयना ।

धुन(वि०)—स्वप्न, कम्पित, कपायाहुआ

धुनि ( स्त्री० )—नदी, यह नदी जो  
तटोत्पन्न वेतस आदि वृक्षों को  
कम्पायमान करती है ।

धुनी (स्त्री०)=धुनि ।

धुनीनाथ (पु०)—समुद्र, सागर ।

धु=धुमार (पु०)—बृहदश्व नामक राजा  
का पुत्र जिसने धुम्धु नामक  
राक्षस का वध किया था अर्थात्  
कुवलयाश्वराज, इन्द्रगोप, धीर-  
चहूटी, कीटविशेष, गृहधूम ।

धुर् [रा] (स्त्री०)—शोक, चिन्ता, क्रोध,  
रचादि का अपभ्रान्त, शोक, भार ।

धुरन्धर ( वि० )—शोक उठाने वाला,  
भार ढोने वाला, भारवाही ।

धुरीण (वि०)—शोक उठाने वाला,  
श्रेष्ठ, उत्तम, भारवाह ।

धुरीय (पु०)—त्रैल, गजद्वान् ।

धुर्यं (वि०)—भार उठने वाला, शोक  
ढोने वाला, उत्तम, श्रेष्ठ ।

धुव् ( १ प० )—भारना, धध करना,  
हिलाना करना ।

धुवन (पु०)—अग्नि, वाग ।

धुवित्र (न०)—यज्ञाग्नि की प्रज्वलित  
करने के लिये सृगधर्मरहित द्य-  
वान्, योजना, यज्ञाग्नि का सुलगाना ।

धस्तुर (पु०)-धतूरा ।

धू ( १,५,९,१०३० )-ठांपना, हिक्कना  
धू [ र ] (स्त्री०)-नार, चोक, यान का  
मुख, रधादि का अग्रभाग ।

धृक (पु०)-धृत, काल, समय ।

धून ( वि० )-कम्पित, कपाया गया,  
पृषकृत, निर्भत्सित, डाटा हुआ,  
हयक्त, ह्यागा हुआ ।

धून (वि०)-कम्पित, कपाया हुआ ।

धूनि (स्त्री०)-कपन, कांपना ।

धूप ( १ प० )-तपाना, गर्म करना, तपना  
धूप ( पु० )-गुग्गुल आदि सुगन्धित  
द्रव्यों से मिश्रित धूमां, ताप,  
गर्मी, चन्तसीकरण ।

धूषित ( वि० )-सूक्ष्म, गर्म किया  
हुआ, मार्ग आदि के बलने से  
थका हुआ, श्रान्त, धूप दिया हुआ,  
दूषित ।

धूम (पु०)-गोडे काष्ठ से उत्पन्न हुआ  
धुमां, मेघ की उत्पत्ति का कारण ।

धूमकेतन (पु०)-अग्नि, भाग, उपद्रवो-  
द्भावी मशुन फल का मूषक एक  
मत्तारों का समुदायक, केतुग्रह,  
महादेव ।

धूमकेतु (पु०)-अग्नि, आग ।

धूमयोनि (पु०)-दादल, मेघ, नागर-  
मोषा, गीली एकही ।

धूमित ( पु० )-कृष्ण-लोहित-वर्ण,  
काला और लाल रंग । वि०-  
कृष्णलोहित रंग वाला ।

धूममंदति (स्त्री०)-धूप का समुदाय,  
धूममण्ड ।

धूमात (पु०)-धूमवर्ण । [विशेष ।

धूमिका ( स्त्री० )-कुम्भटिका, पक्षि-  
धूमोर्णा ( स्त्री० )-यमराज की भार्या,  
यमपत्नी ।

धूमोर्णापति (पु०)-यमराज, यम ।

धूम्या ( स्त्री० )-धूममण्ड, धूप का  
समुदाय । वि०-धूप का साधन ।

धूम (पु०)-श्याम और रक्त मिश्रित  
रंग, लाल और काला वर्ण, खर  
के रोममण्डल । वि०-श्यामरक्त  
मिश्रित वर्ण वाला ।

धूमक (पु०)-उष्ट्र, जट ।

धूमलोचन (पु०)-जिस के नेत्र धूसर  
वर्ण के हों, कपोत, कबूतर,  
महिषासुर नामक एक दैत्य जो  
शुक्तासुर की सेना का पति था ।

धूमवर्ण ( पु० )-लिल का वर्ण धूमले  
रंग का हो, एक पर्वत का नाम ।

धूमिका (स्त्री०)-शिंशुपानामक एक  
वृक्ष, टाली का पेड़ ।

धूर ( ४ भा० )-मारना, मघ करना,  
गमन करना, जाना ।

धूर्जंठि (पु०)-महादेव, शिव, जिस  
में लोफत्रय की चिन्ता प्रकटित  
हो रही हो ।

धूर्त (पु०)-धतूर वृक्ष । वि०-शुभारी,  
ठग, बदमाश, वधूक । न०-विह-  
नामक लवण ।

धूर्तक (पु०)-धूर्त के सट्टा, शृगाल,  
गोदह, सिंघार, नागभेद ।

धूर्तकृत् (पु०)-धतूरा । वि०-ठग,  
वधूक ।



धूर्वाह ( वि० )—बोझा ढाँने वाला,  
धुरन्धर, भारवाहक ।

धूलक ( न० )—विष, जहर ।

धूलि ( स्त्री० )—पराग, रज, धार्चिब  
घृणं, धूल ।

धूलिकेदार ( पु० )—धूलिप्रधान क्षेत्र,  
जहाँ जहाँ धूलि अधिक हो ।

धूलिध्वज ( पु० )—ध्वज, ध्वज, ध्वज,  
जिन का झण्डा धूलि हो ।

धूलिपुष्पिका ( स्त्री० )—केतकी नामक  
वृक्ष ।

धूलीपटल ( पु० )—वहो हुई धूलि का  
गिरीह, उड़ीसमान धूलि का  
समूह ।

धूश्-प्-स् ( १०प० )—कान्तियुक्त, कर-  
ना, शोभित करना, शिथिलकृत  
करना ।

धूसर ( पु० )—कपोत, कम्बुज, कट,  
गर्दभ, गधा, जिस का स्वरूप  
तेल के सदृश हो, काला, पीत-  
वर्ण । वि०—उन २ रंगों वाला ।

धूमरी ( स्त्री० )—किन्नरीभेद ।

धृ ( १भा० )—गिरना, पतन होना ।  
( १ उ० )—टहरना, स्थित होना ।  
( १० उ० )—धारण करना, पक-  
टना ।

धृत ( वि० )—स्थिर किया हुआ, स्थि-  
रीकृत, निश्चित, अव्यवस्त,  
प्रतिष्ठ ।

धृतराष्ट्र ( पु० )—धन्व्यश्रीय राजा,  
गन्तुपीत्र, दुर्योधन का पिता,  
सर्प, साप, पक्षी ।

धृतराष्ट्री ( स्त्री० )—धृतराष्ट्र की  
पत्नी, हस्तिनायां, हस्ती पत्नी ।

धृति ( स्त्री० )—सन्तुष्ट होना, धारण  
करना, पकटना, यत्न, धारणा,  
ऐहिक पदार्थों से विरक्त हुए  
चित्त की स्थिरता, या योग,  
अठारह अक्षर के पादयुक्त एक  
छन्द, द्वादश की संख्या ।

धृत्वरी ( स्त्री० )—पृथ्वी, भूमि, जमीन ।

धृत्वा [ नृ ] ( पु० )—प्राप्त्यर्थ, आकाश,  
समुद्र, विष्णु, मेधावी पुरुष,  
धर्म ।

धृप् ( ५प० )—चातुर्य दिखाना, प्रग-  
ल्भता करना । ( १० भा० )—शक्ति  
को रोकना, शक्तियन्धन । ( १० उ० )—  
क्रोध करना, दयाना, तिरस्कार  
करना ।

धृप् ( पु० )—संचाल, समूह, समुदाय,  
प्रगल्भ, चातुर्य ।

धृष्ट ( वि० )—प्रगल्भतायुक्त, निर्लज्ज ।

धृष्टद्युम्न ( पु० )—अपने नाम से प्रसिद्ध  
द्रुपद राजा का पुत्र ।

धृष्टा ( स्त्री० )—असती स्त्री, कुलटा स्त्री ।

धृष्णक् ( वि० )—लज्जारहित, लज्जा  
न करने वाला, धैर्यमं ।

धृष्णि ( पु० )—किरण, मयूख ।

धृष्णु ( वि० )—निपुण, चतुर, निर्लज्ज,  
धृष्ट । पु०—कवि का एक पुत्र ।

धेन ( पु० )—समुद्र, सागर ।

धेना ( स्त्री० )—नदी ।

धेनिका ( स्त्री० )—लक्षणा से जल के  
समीप का स्थान ।

धेनु ( स्त्री० )—नवप्रभूता गौ ।

धेनुक ( पु० )—असुरविशेष जिस को बलराम ने मारा था ।

धेनुकमूदन ( पु० )—बलराम, श्रीकृष्ण ।

धेनुका ( स्त्री० )—गौ, हथिनी, दस्तिनी ।

धेनुदुग्धकर ( पु० )—गाजर, गजूर ।

धेनुया ( स्त्री० )—क्षण की निवृत्ति के लिये घन्पक रूप से साहूकार की दी हुई गौ ।

धेनुक ( पु० )—धेनुओं का समूह, गौ-ओं का गिरोह ।

धैर्य ( न० )—धीरता, धीरज, चित्त की स्थिरता, ऊचापन, धिक्कत-साधनों के होते हुए भी चित्त का निर्विकारत्व, चित्त का न भ्रवराग ।

धैवत ( पु० )—सप्तस्वरों में से उठा स्वर, कयठनिस्सृत एक प्रकार की आवाज़ ।

धोका ( पु० )—सर्पविशेष ।

धोरण ( न० )—होड़ी, धोड़ा, गाड़ी आदि यात, एक प्रकार की जड़ की गति ।

धीरणि ( स्त्री० )—परम्परा, क्रम से होना ।

धीत ( वि० )—धोया हुआ, साफ किया हुआ, उत्तेजित । न०—धादी ।

धीतकीये [ शि ] य ( न० )—धोया हुआ रेशमी कपड़ा, कीड़ों के समूह से उत्पन्न हुआ यत्र ।

धीतेय ( नस्त्री० )—एक प्रकार का नमक, सैंधा नमक ।

धीरेय ( वि० )—भार उठाने वाला । पु०—धैल, धोड़ा आदि ।

धीर्तिर ( न० )—धूर्तसम्बन्धी, धूर्त का ।

धमा ( १प० )—मग्नि को दहकाना, फूंक मारना, शख आदि मगाना ।

धमात् ( १प० )—आकांक्षा करना, चाहना, चोर शब्द करना ।

ध्मां [ ध्वां ] ह् ( १प० )—कांथर करना ।

ध्मांत ( पु० )—कौआ, मत्स्यमत्तक, ग्रीह मांगने वाला ।

ध्मात ( वि० )—फूंक गया, संचलित, फूंक से मगाया हुआ ।

ध्माकार ( पु० )—अवस्कार, लोहार ।

ध्मापित ( वि० )—फूटा हुआ, धनाया हुआ ।

ध्यात ( वि० )—चिन्तित, विचारित ।

ध्यातव्य-ध्येय ( वि० )—ध्यान करने योग्य, विचारणीय ।

ध्यान ( न० )—चिन्तन, किसी वस्तु का एकाग्रचित्त से विचार करना ।

ध्यानस्य ( वि० )—ध्यान में लगा हुआ ।

ध्याम ( न० )—दमनक वृक्ष, एक प्रकार का गन्धद्रव्य ।

ध्र ( वि० )—धारण करने वाला [ यह शब्द प्रायः ममास के अन्त में आता है जैसे—नक्षीध्र, कुभ्र इत्यादि ] ।

धृञ्-धृञ् ( १प० )—ज्ञाना, हास्य करना ।

ध्रा ( १प० )—ज्ञाना, वसन करना ।

ध्रु ( १, २ प० )—स्थिर होता, टिकता, जाना, मारना ।

ध्रुव ( वि० )—स्थिर, निश्चल, न घट-उठने वाला । पु०—एक प्रकार की कील, विष्णु, महादेव, उत्तान-पाद राजा का मुत्र, नासिका के ऊपर का भाग, मूगोल के

दक्षिणीय और उत्तरीय केन्द्रों के

ऊपर का भाग, एक प्रसिद्ध तारा।

न०-आकाश, दलील ।।

ध्रुवक(न०)-एक प्रकार का गीत ।

ध्रुवसू(न०)-निश्चयेन, ठीक है ।

ध्रुवा ( स्त्री० )-वटपत्राकृति यक्षपात्र

विशेष, सूत्रों, शालपर्णी नामक

ओषधि, साध्वी स्त्री ।

ध्रुक्(१ आ०)-छन्नत होना, बढ़ना,

उत्साह होना ।

ध्रु(१ प०)-प्रसन्न होना, तृप्त होना ।

ध्रुव(न०)-पट्टा होना, स्थिर रहना

ध्रुवं ( १ आ० )-नाश होना, नष्ट

होना, गिरना ।

ध्रुवं(पु०)-विनाश, गिरना, परबादी।

ध्रुवंसी [न] (पु०)-पर्वत पर उत्पन्न

होने वाला पीलु नामक वृक्ष ।

ध्रु०-नष्ट होने वाला ।

ध्रुज्(१ प०)-ज्ञाना, मनन करना ।

ध्रुज ( पु० )-क्षरहर, मिथान, एक

मशहूर मनुष्य। अस्त्री०-पुरुष का

विह्व, उपस्थेन्द्रिय ।

ध्रुजद्रुम(पु०)-ताडवृक्ष, ताड़ का पेड़।

ध्रुजप्रहरण(पु०)-यापु, चवन ।

ध्रुजगङ्गा (पु०)-मछीमत्स्यजनक रोग-

विशेष ।

ध्रुजिनी(स्त्री०)-ध्वजा वाली घेना ।

ध्रुजी[न] (पु०)-ध्वजा वाला, राजा,

रथ, ब्राह्मण, घोड़ा, मोर ।

ध्वन(१० उ०)-शब्द करना, बोलना,

आवाज़ निकलना ।

ध्वन(पु०)-शब्द, आवाज़, सुर[स्वर]।

ध्वनमोदी [न] (पु०)-भ्रमर, भैंरा,

शब्द की मक्ली ।

ध्वनि ( पु० )-मृदंगादि का धीमा

शब्द, अलंकारग्रन्थों में उत्तम

काव्यविशेष अर्थात् उत्तम काव्य।

ध्वनिग्रह ( पु० )-कान, श्रोत्रेन्द्रिय ।

ध्वनित ( वि० )-शब्दित, मृदंगादि

का किया हुआ शब्द, स्वनित ।

ध्वनिमाला (स्त्री०)-वीणा, बाहुल ।

ध्वनिविकार (पु०)-शब्द का विकार,

शोकनयादि के कारण ध्वनि

की विकृति ।

ध्वस् (१आ०)-जाना, गमन करना,

विनाश होना, गिरना ।

ध्वस्त ( वि० )-पतित, गिरा हुआ,

च्युत, गलित, नष्ट ।

ध्वंस ( पु० )-काक, कीभा, ह्यान,

वृह, मण्डा, तक्षक, भिक्षुक ।

ध्वंसपट ( पु० )-कोकिल, कीबल,

काक से प्रतिपादित ।

ध्वान (पु०)-शब्द, आवाज़ ।

ध्वान्त (न०)-अधेर, अन्धकार ।

ध्वान्तवित्त ( पु० )-खद्योत, पटवी-

जना, जुबनू ।

ध्वान्तशाश्वत (पु०)-सूर्य, चन्द्रमा,

शयोनाक नामक वृक्ष ।

ध्वान्ताराति ( पु० )-अन्धकार का

शत्रु, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि ।

ध्वान्ताम्भेय(पु०)-पटवीजना, जुबनू ।

ध्व ( १प० )-कुटिलता करना, टेढ़ा

करना, कुटिलीकरण ।

## न

न-तत्रयं का पाँचवाँ अक्षर । अ०-

निषेध, रोकना, मना करना,

घाँघना, अपमान, मिसाल, रिक्त,

खाली । [क्रिया के साथ संयुक्त

होने पर यह 'अभाव, न

होने' अर्थ में प्रयुक्त होता है] ।

वि०-प्रशस्ति, प्रशंसा के योग्य,

रतुत । पु०-नोती । [शक ।

नशुक (वि०)-नाश करने वाला, ना-

नकुट ( न० )-नासिका, घ्राणेंद्रिय,

नाक ।

नकुल ( पु० )-नेकला, पादद्वयों में

बीधा, शिथिल, जिस का कुल न

है, कुलरहित ।

नकुला ( स्त्री० )-जटागाँड़ी, केसर ।

नकुलीश ( पु० )-भैरवविशेष ।

नक्ष् ( १० प० )-नष्ट करना, नाश कर-

ना, नष्टीकरण ।

नक्त ( न० )-रात, रात्रि, रतनी, वह

व्रत जिस में अमन्त दिन निरा-

हार रहकर चार घड़ी रात व्य-

तीत हो जाने पर भोजन किया

जाता है ।

नक्तवारी [ न ] ( पु० )-जो रात्रि में

भूमण करता है, उल्लू, टटूर,

शिकली, वि०-रात्रि में घूमने वाला

नक्तपूर ( पु० )-शालग्राम, अमर, तन्मर,

पीर, चतुर्दशविहारी । वि०-रात्रि

में विराम ले वाला ।

नक्तन्दिन ( न० )-रात दिन, लगानार ।

नञ ( पु० )-जो दूरस्थल पर पाद-

प्रसारण न कर सकता हो कुभीर,

नाका । नञ-द्वार के अग्रभाग की

छकड़ी, नासिका, नासा ।

नञ्जान ( पु० )-जलशान्तुविशेष, घाट ।

नलत्र ( न० )-अश्विनी, भरणी आदि

आकाशरूप तारे ।

नलत्रचक्र ( न० )-अश्विन्पादि नलत्रों

का घनाहुमा एक चक्र, २७ नलत्रों

का समूह, आकाशमण्डलरूप

राशिचक्र ।

नलत्रनेमि ( पु० )-ध्रुव नामक एक तारा,

विष्णु, चन्द्रमा ।

नलत्रप ( पु० )-चन्द्रमा, चांद, चंद्रप ।

नलत्रपुत्र ( पु० )-एक व्रत का नाम ।

नलत्रमाळा ( स्त्री० )-माळाकार नलत्र-

समूह, अक्षयिणीति सोतिषों का

निर्दिष्ट हार, तारों की पंक्ति ।

नलत्रमूषक ( पु० )-जो नलत्रों द्वारा

शुभाशुभ कथयतलाये, ज्योतिषी,

ऐसा ज्योतिषी को ज्योतिष के

विद्वान्न को न मानता हो ।

नलत्रेय ( पु० )-चन्द्रमा चांद, नलत्रों

का पति ।

नल ( १ प० )-नमन करना, जाना,

चलना, सरकना ।

नल ( अम्ब्री० )-निम में छिद्र, नदी,

अट्टनीदमटक, नलून ।

नलकुट ( पु० )-नासिका, नाई ।

नलर ( अम्ब्री० )-नलून, न, नल ।

नलरद्वनी ( स्त्री० )-नल काटने का

शराविशेष, नुवत्रा, नलन ।

नखरायुध (पु०)—जिस के नख ही नख हों, फुक्कुट, सुर्गा, व्याघ्र, सिंह ।  
[नखायुध भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है] ।

नखानसि (अ०) परस्पर नखूनो द्वारा प्रवृत्त हुआ युद्ध, ऐसा युद्ध जिसमें नखूनो द्वारा प्रहार किया जाय ।

नखाशा (पु०)—जो नखों को मक्षण करे, चरल, ललक ।

नखी (स्त्री०)—नख नामक एक प्रकार का गन्ध द्रव्य ।, [विहीर्ण करे ।

नखी (पु०)—सिंह, जो नखप्रहार से

नग (पु०)—जो चल न सके, पर्यंत, प्रहार, वृक्ष, पेड़ ।

नगज (पु०) हस्ती, हाथी ।

नगण (पु०)—छन्द शास्त्र में वह गण जिस में तीनों अक्षर लघु होती हैं ।

नगपति (पु०)—हिमालय पर्वत, चन्द्रमा ।

नगभिद्र (पु०)—इन्द्र, पापाणभेद नामक औषधी ।

नगैश्व (स्त्री०)—क्षुद्रपापाण, लोटापत्थर ।

नगर (न०)—शहर, पुर, बहुजननिवा

संस्था, जिसमें शिल्पादिकार्यों में निपुण अनेक नगुण्य रहते हों ।

नगरम्प्रहर (पु०)—कात्तिकेय शिव का प्रवेष्ट पुत्र, देवताओं की सेवा का पति [यह कथा पुराणों में प्रसिद्ध है कि कात्तिकेय ने अपने घाण्वे प्रीति नामक पर्वत में छिद्र कर दिया था जो कि दृष्टा के छिये मानस परायर जान के लिये लोपा मार्ग बना गया ] ।

नगाटन (पु०)—यक्षघारी, घातर ।

वि०—पर्यंतो वा वृक्षों में घूमने वाला । [हिमालय ।

नगाधिप (पु०)—पर्यंतो का राजा,

नगाश्रय (पु०)—हस्तिफन्द नामक औषधी । वि०—पर्यंतवासी, पर्यंत पर रहने वाला ।

नगीका [स्] (पु०)—यक्ष वा पर्यंत जिस का निवासस्थान हो, पक्षी, सिंह, सरभ, काक, कौआ ।

नग्न (वि०)—नगा, धस्त्ररहित, दिगम्बर नामक एक धौड़ों का भेद, वेदत्रय-

रूप आचरण का त्याग करने वाला जन ।

नगनाटक (पु०)—दिगम्बर योगी ।

नग्निका (स्त्री०)—रजोधर्म से रहित स्त्री, लज्जारहित स्त्री ।

नज् ( १ आ० )—लज्जा करना, शर्म करना ।

नज् ( अ० ) अभाव घोषक, रोकना, अल्पत्व, सूक्ष्म, कलह, विरोध,

भेद । [ यह अव्यय सादृश्य आदि छ अर्थों में प्रयुक्त होता है,

यथा सादृश्ये अत्राक्षयण । अत्रावे-अवापम् । भेदे-अघट घट ।

अल्पत्ये-अनुदरी कन्या । अत्रा-अस्त्ये-अकेशी । विरोधे-अमुर ।

नट् ( १ प० )—नाचना, नृत्य करना, हिसा करना, मारना ।

नट (पु०)—नर्तक, स्त्रीजीवी, वर्णसंज्ञाभेद, अशोक वृक्ष ।

नटन ( न० )—नृत्य, नाच ।

मटभूषण ( न० )-हरताल ।

मटी (स्त्री०)-मट की मायां, वेष्टा,  
कंजरी, नटनी ।

मटेश्वर ( पु० )-शिव, महादेव ।

मह ( १०३० )-गिरना, पतन होना ।

मह ( पु० )-मह गानक तृणविशेष,  
भाड़, नटपास, नलनामक तृण ।

महल ( वि० )-प्रभुत श्री मह नामक  
घास वाला प्रदेश ।

मत ( वि० )-नमित, नमा हुआ,  
नम, कुटिल, जन्मनाड़िकाविशेष,  
अर्द्धदिन ठपतीत हो जाने पर प्राप्त  
जन्म की घड़ी । न०-तगर नामक  
भीषधि की जड़ ।

मतनासिक ( वि० )-झुकी, हुई नाक  
वाला, चपटी नासिका वाला,  
अल्पनासिकायुक्त ।

मताङ्गी (स्त्री०)-ऐसी नारी जिस का  
शरीर स्तनादि के भार से झुका  
हुआ हो ।

मति(स्त्री०)-नमृता, नमन, झुकना ।

मह(१ प०)-खुश होना, चन्तुष्ट होना,  
समर करना ।

मह ( पु० )-ऐसी नदी जिन में बिना  
खोदे स्वतः ही अचिञ्जन रूप से  
जलप्रवाह बहता हो जैसे-सिन्धु,  
गोण, दामोदर और मेरु आदि ।

महनु(पु०)-मेघ, बादल ।

नदी (स्त्री०)-ऐसी जलधारा जिस में  
भाट सहज धनुष की साप से न्यून  
परिमाण के फैलाव का जल न  
हो जैसे-गंगा, यमुना, सरस्वती  
और कावेरी आदि ।

नदीकान्त(पु०)-समुद्र, सागर ।

नदीकूलप्रिय(पु०)-जलवेतस, जलवेत ।

नदीज(पु०)-अर्जुन नामक दल, अग्नि-  
मन्य, अरणि, श्रीरूपितामह ।

नदीन(पु०)-नदियों का म्बानी, समुद्र ।

नदीमातृक ( वि० )-नदी के जल से  
सम्पादित चान्द्यादिकों से घालित  
देश ।

नदीपण ( वि० )-नदीस्तान करने में  
कुशल, नदी के अवगाहन से दत्त,

। नद्युत्तरण प्रसार की जाननेवाला ।

नहु (वि०)-धनु, बघा हुआ, निप्रिय ।

नहुी । ( स्त्री० )-चर्मनिर्मित रन्ध्री,  
चर्मरज्जु, चमड़े की बनी रन्ध्री ।

ननन्दा ( स्त्री० )-जो सेवा करने पर  
श्री चन्तुष्ट न हो, पति की ध्वनि  
[ननान्दा का भी यही अर्थ है] ।

ननु ( अ० )-प्रश्न, पृच्छा, सवाल,  
अवधारण, आवाहन, बुलाना,  
अभोधन, निन्दा, निश्चय, अनु-  
मति, सान्त्वन, मनभ्रान्ता ।

ननुच ( अ० )-विरोधपूर्णक वचन,  
विरोधोक्ति ।

नन्द ( पु० )-प्रीत्युक्त के पिता, एक  
गोप का नाम, आनन्द, निधि-  
विशेष, खजाना, एक नृप जो कि  
महानन्दी का पुत्र था, घांस का  
नाम, सुदंगविशेष, दत्त-नामा-  
सानामक ग्रन्थ का प्रणेता ।

नन्दक(पु०)-विष्णु का सह्य, जेठक,  
मेठ, आनन्दकारक, एक नाम  
का नाम, काश्मिरेय का अनुसर-  
विशेष, पृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

नन्दकि ( स्त्री० )-पिप्पली ।

नन्दकी [ नृ ] ( पु० )-विष्णु का वाचक ।

नन्दशु ( पु० )-आनन्द का वाचक ।

नन्दन ( पु० )-पुत्र, भेक, भेंदक, एक पर्वत । न०-साठ संवत्सरों में से एक । वि०-आनन्द करने वाला ।

नन्दनन्दन ( पु० )-नन्द के पुत्र श्री-कृष्ण [ नन्दसुत भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ] ।

नन्दनन्दनी ( स्त्री० )-श्रीकृष्ण के पिता नन्द की पुत्री, दुर्गा । [ मल्ला ]

नन्दनमाला ( स्त्री० )-आनन्दजनक नन्दना ( स्त्री० )-पुत्री, दुहिता ।

नन्दा ( स्त्री० )-पार्वती, गौरी, उभय-पक्ष की प्रतिपद्, पद्मी और एका-दशी तिथि, नद, अलिङ्गुर, नादा नन्दात्मज ( पु० )-नन्दपुत्र, श्रीकृष्ण ।

नन्दि ( पु० )-आनन्द का वाचक, द्यूत का एक अङ्ग, शिव का अनु-चर, नन्दिकेश्वर, बृहद्विशेष, शिव, विष्णु ।

नन्दिका ( स्त्री० )-इन्द्र का कीड़ास्थल, इन्द्र के कीड़ा करने का स्थान, पक्षी तिथी, अलिङ्गुर ।

नन्दिकेश्वर ( पु० )-शिव का द्वारपाल ।

नन्दिघोष ( पु० )-अर्जुन के रथ की ध्वनि, नन्दि जनों की स्तुति का घोष, मांगलिक घोषणा । वि०-घोषयुक्त ।

नन्दिनी ( स्त्री० )-पुत्री, दुहिता, पार्वती, नङ्गा, नगद, यशिष्ठधेनु त्रिषु की सन्तानार्थी राजादिछीप

ने सेवा की थी, रेणुका ना-मक वीरघ, व्याडि की माता । तेरह अक्षर के पाद वाला एक छन्द, दुर्गा का नाम ।

नन्दिनीसुत ( पु० )-व्याडि मुनि ।

नन्दी [ नृ ] ( पु० )-महादेव का पार्श्व-चर, नन्दिकेश्वर ।

नन्दी ( स्त्री० )-दुर्गा ।

नन्दीमुखी ( स्त्री० )-तन्द्रा, मूछा ।

नन्दीश ( पु० )-शिव, महादेव, महा-देव का द्वारपाल, संगीतशास्त्र में भरतीक एक तालप्रभेद ।

नन्देश्वरः [ नृ ] ( न० )-इन्द्र का चरोवर ।

नपुंसक ( अस्त्री० )-जो न पुरुष और न स्त्री हो, हिजड़ा ।

नपुंस [ नृ ] ( पु० )-जिससे पितर न गिरे, पीत्र, पोता, धेयता, लड़की का पुत्र ।

नप्त्री ( स्त्री० )-पीत्री, पोती, धेयती, सुतात्मजा ।

नप्त ( पु० )-ब्रह्मण का भास, स्वामी-धिय मनु का पुत्रविशेष ।

नप्तः [ नृ ] ( न० )-आकाश, आसमान ।

नप्तःक्रान्ती [ नृ ] ( पु० )-सिंह, शेर ।

नप्तःप्राण ( पु० )-पयन, घायु ।

नप्तःसद् ( पु० )-देवता, देव ।

नप्तःसरित् ( स्त्री० )-आकाशगंगा, नन्दकिनी, स्वर्गङ्गा ।

नप्तःस्थित ( पु० )-नरकविशेष ।

नप्तश्चतु ( पु० )-सूर्य, पूरज ।

नप्तश्चर ( पु० )-पयन, मेष, सूर्यादिपद, तारगण, पक्षी ।

नभस (न०)-आकाश, आसमान ।  
 नभसकुल (पु०)-पक्षी, जानवर, परिन्द  
 नभसतल (अस्त्री०)-गगनमण्डल,  
 आकाशमण्डल ।  
 नभस्य (पु०)-वर्षा के छिपे सपथोधी,  
 आद्रपद का भास ।  
 नभस्वान् (पु०)-वायु, पवन, हवा ।  
 नभोगज (पु०)-मेघ, बादल ।  
 नभोमणि (पु०)-सूर्य, सूरज ।  
 नभोऽम्बुव (पु०)-चातक पक्षी ।  
 नभोरजः [स्त्र] (न०)-अन्धकार, अंधेरा ।  
 नभ्राट् [ज्] (पु०)-मेघ, बादल ।  
 नभः [स्त्र] (अ०)-झुकना, नमना, नति,  
 ह्याग, स्तोत्र । न०-अन्न का  
 वाचक ।  
 नमतः (पु०)-प्रभु, स्वामी, भूत, नट ।  
 नमस (पु०)-अनुकूल ।  
 नमस्कार (पु०)-नति, प्रणति, प्रणाम,  
 आदर करना, सत्कार करना,  
 बाहुलि धिर झुका कर अपना  
 सपुतब वा नम्रत्वमात्र प्रकट  
 करना ।  
 नमस्य (वि०)-नमस्कार करने योग्य,  
 वन्दनीय, नमस्कारार्ह, नमस्कर-  
 णीय ।  
 नमस्या (स्त्री०)-पूजा, अर्घा, अर्चना ।  
 नमस्यित (वि०)-पूजित, अर्चित,  
 जिसकी पूजा की गई हो ।  
 नमुचि (पु०)-जो न छोड़े, कंदर्प, काम-  
 देव, एक दैत्य का नाम ।  
 नमुचिद्वि [प्] (पु०)-नमुचि का  
 शत्रु, हन्त ।

नमुचिसूदन (पु०)-पूत्रवत । [ वृत्त ।  
 नमेक (पु०)-रुद्रात, सुरपुन्नाग नामक  
 नमोगुरु (पु०)-ननस्कराशीय गुरु,  
 ब्राह्मण ।  
 नम्ब (१ प०)-जाना, गमन करना ।  
 नम् (वि०)-विनययुक्त, तत, नम्रा  
 हुआ, झुका हुआ ।  
 नम्रक (पु०)-बैत, वैतस । वि०-नम्र, नम्र  
 नय (१ आ०)-गमन करना, प्रस्थाप  
 करना, जाना ।  
 नय (पु०)-नीति, द्यूतविशेष, शुका-  
 चार्य प्रभृति नीतिशैलियों का निर्माण  
 किया हुआ शास्त्र । [भानयन ।  
 नयन (न०)-चक्षु, नेत्र, आँख, प्रापण,  
 नयनी (स्त्री०)-आँख की पुतली,  
 कनीनिका । [ प्रदीप ।  
 नयनोत्सव (पु०)-नेत्रों का उत्सव,,  
 नयनोपास्त (पु०)-अपाङ्ग, कटाक्ष,  
 नेत्रों के कोये ।  
 नयविशारद (पु०)-नीति का जानने  
 वाला, नीतिशास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ ।  
 नर (पु०)-विष्णु, परमात्मा, भर्जुन,  
 अनुष्य, महादेव, देवयोनिविशेष,  
 एक ऋषि का नाम, उपा नापने  
 का एक गुण ।  
 नरक (पु०)-एक दैत्य, भूमि का मध्य,  
 पापात्माओं के कष्ट भोगने का  
 [पुराणानुसार] स्थानविशेष अर्थात्  
 रौरव प्रभृति २१ नरक ।  
 नरककुपह (न०)-पाप भोगने का  
 स्थान, यातनास्थान जो कि  
 बन्धिकुपह, तप्तकुपह, क्षारकुपह



पु. आदि पुराणोपबर्णित दई हैं ।

नरकजित ( पु० )—विष्णु, परमात्मा, श्रीकृष्ण जिन्होंने नरक नामक दैत्य को परास्त किया ।

नरकदेवता ( स्त्री० )—नरक के अधिष्ठात्री देवता जो कि जलक्ष्मी, निश्चिती और कालघर्णी आदि हैं ।

नरनारायण ( पु० )—नर और नारायण अर्थात् कृष्ण और अर्जुन के नाम या स्वरूप से अवतीर्ण मुनि जो कि दो वे, ऋषभदेव ।

नरपति ( पु० )—मनुष्यों का पति, नृपति, राजा । [ देश

नरभू ( स्त्री० )—मनुष्योत्पत्ति, भारतवर्ष  
नरभानिनी ( स्त्री० )—वह स्त्री जिस के दाढ़ी मूठ हो, श्लक्ष्ण्युक्त नारी ।

नरमाला ( स्त्री० )—वह माला जो मनुष्यों के शिरो से बनी हो, नर-मुकुटमाला ।

नरमेध ( पु० )—यह यज्ञ जिस में इन्द्रियों या दमः होता है, यह संस्कार जिस में मृतपुरुष का दाहकर्म दिया जाता है अर्थात् अन्त्येष्टि संस्कार ।

नरवाहन ( पु० )—कुवेर, मत्तपति ।  
धि०—मनुष्य जिस के वाहन अर्थात् ठे जाने वाले हो, एक राजा का नाम । [ दैत्य, अशुर ।

न. निश्चय ( पु० )—नरभयक, राक्षस,

न. मार ( पु० )—मोमादर ।

न. सिद्ध ( पु० )—पुरुषों में सिद्धसदृश,

विष्णु के दशावतारों में से चौथा, हिरण्यकशिपु नामक दैत्य के वधार्थ जिस का हीना पुराणों में वर्णित है, शौर्य, गाम्भीर्य आदि गुणों से स्रष्टव्यकोटि का मनुष्य, नरश्रेष्ठ । [ जनममुदाय ।

नरस्कन्ध ( पु० )—मनुष्यों का समूह, नराधिप ( पु० )—राजा, नृपति ।

नरान्तक ( पु० )—यमराज, राक्षसविशेष जो कि राक्षस का पुत्र था ।

नरी ( स्त्री० )—नरपत्नी, नारी, मनुष्य की स्त्री । [ स्वामी ।

नरेन्द्र ( पु० )—राजा, मनुष्यों का

नरोत्तम ( पु० )—मनुष्यों में श्रेष्ठ, विष्णु, पैराग्ययुक्त पुरुष, राजा ।

नकुटक ( न० )—नासिका, नाक ।

नक्तव ( पु० )—नट, चारण, नृत्यकोविद, यह पुरुष जो नाचना जानता हो, नल नामक तृण ।

नर्तकी ( स्त्री० )—नर्तकनार्या, नृत्य-कारिणी, नृत्य जाननेवाली स्त्री ।

नर्तन ( न० )—नाच, नृत्य ।

नर्ह ( १ प० )—शब्द करना, आवाज करना, जाना ।

नमंद ( पु० )—यह पुरुष जो हास्य प्रदान करता है, परिहास का मन्त्री, हसोदिल्ली का घसीर ।

नमन् ( न० )—परिहास, हसी, हास्य, हसीठट्टा ।

नल ( पु० )—अपने नाम से प्रसिद्ध चन्द्र-वर्गीय राजा जो कि दमयन्ती

का पति था, एक सूर्यवशीम  
राजा ।

मलकिनी (स्त्री०) - जघा, जांघ, छात ।

मलकुंवर (पुं०) - कुंवर का पुत्र ।

मलद (न०) - खंस, चशीर, पुष्परस,

जटामाषी ।

मलदस्यु (पुं०) - मिर्म्य का सृष्ट, नीम ।

मलनीम (पुं०) - चिलिचिम नामक

मत्स्य । [एक भुगन्धितद्रव्य ।

मलिका (स्त्री०) - माली, माही, महज,

मलिनीखरह (न०) - कमलिनियों का  
समुदाय ।

मलिनेश्वर (पुं०) - विष्णु का द्योतक ।

मलव (पुं०) - धार से हाथ के माप  
का देश, चतुःशतहस्त परिमित  
देश ।

मव (वि०) - नवीन, नूतन, नया, वर्त-  
मानकालिक । पुं० - प्रवृत्ति, स्तोत्र ।

मवग्रह (पुं०) - सूर्य, चन्द्रादि मवग्रह ।

मवति-नी (स्त्री०) - ९ की सख्या का  
वाचक ।

मवदल (न०) - कमलकेशर ॥ समीप  
का पत्ता, कमल का नूतन पत्र ।

मवदीधिति (पुं०) - वह ग्रह जिस की  
नी किरण हों अर्थात् मङ्गल ।

मवदुर्गा (स्त्री०) - शैलपुत्री आदि दुर्गा  
के नी स्वरूपभेद । [भूल ।

मवदोला (स्त्री०) - नवीन मेहुा, नई

मवद्वारपुर (न०) - ऐसा पुर जिस में  
नी दवांजे हों, शरीर, देह । [श-  
रीर में नी दवांजे से हैं-दो कर्ण,  
दो नेत्र, दो नासिका और एक

मुख ये सात ऊपर के और गुदा,  
निङ्ग ये दो नीचे के मिल कर  
९ हैं ] ।

नवधा (अ०) - नौ प्रकार, नौ तरह ।

नवधातु (पुं०) - स्वर्ण आदि ९ धातु  
होते हैं ।

नवन् (वि०) - ९ की संख्या का वाचक ।

नवनी (स्त्री०) - नवीन धृत, नवगीत,  
नया निकला हुआ धृत, नवजन ।

नवनीत (न०) - पूर्ववत् ।

नवनीतक (न०) - धृत, ची, मयखन से  
सम्पादन किया धृत ।

नवपाठक (पुं०) - नवीनाध्यापक,  
नया मास्टर । [वती स्त्री ।

नवफलिका (स्त्री०) - नवीन रत्नीधर्म-  
नयन (वि०) - ९ की संख्या का पूरक,

नी की संख्या पूरी करने वाला  
अर्थात् नवरां । [युक्त दश ।

नवमसिंहा (स्त्री०) - बहुत पुष्टियों से  
नवनी (स्त्री०) - कृष्ण और शुक्रपक्ष

की ९वीं तिथि ।

नवमीवना (स्त्री०) - युवति, तरुणा  
स्त्री, जवान औरत ।

नवरत्न (न०) - नीररत्नी का समूह,  
नव प्रकार के मणि, विक्रमादि-

त्य की सत्ता के नी परिकृत, नीति  
के उपदेशविषयक ९ रत्न ।

नवरत्न (न०) - ९ रात्रि, ये नवरत्न  
गिन में आश्विनशुक्ला प्रतिपदा  
से नवमी पर्यन्त दुर्गा का प्रता-  
नुष्ठान किया जाता है ।

नवत्रय (स्त्री०) - नवविधाहिता स्त्री,

नवोदटा, नवीना भार्या ।

नववधवागमन (न०)—नवीन यधू का पिता के घर से प्रतिग्रह में प्रथम आगमन ।

नववरिका (स्त्री०)—नवयधू ।

नवयस्त्र (न०)—नया यस्त्र, नया कपड़ा, नवीन यस्त्र, अनादृत वसन ।

नवशायक (पु०)—मात्साकार, नाली, तैलकार, तेली, ओष, कुलाल आदि की जाति ।

नवश्राद्ध (न०)—ग्यारहवें दिन का श्राद्ध, एकादशह श्राद्ध ।

नवसूतिका (स्त्री०)—वह गौ जिस का नवीन प्रसव हुआ हो, नवप्रसूता गौ ।

नवार्ध (न०)—नवीन अन्न, नया अनाज । नवार्ध ( पु० )—मेपादि १२ छत्रों का नवपार्ध, ९ पार्ध भाग ।

नवार्धर (न०)—नया यस्त्र, नूतन यस्त्र ।

नवार्धि ( पु० )—नरूठ यह ।

नवाह (पु०)—नया दिन, नवीन दिन, प्रतिपत्तिदि ।

नवीन ( वि० )—नूतन, नया, नवीन ।

नवीनटा (स्त्री०)—नवीनविवाहिता स्त्री ।

नवीनदक (न०)—नया जल, नवीन पानी, नये जल का जीवण ।

नवीनदूध (न०)—नया निहाला हुआ दूध, नवनीत, नवदूध ।

नवय ( वि० )—नया, नवीन, नूतन, स्तुतय, पुजित, नूत, स्तुति किया हुआ ।

नवयप्रसूतिका ( स्त्री० )—वह स्त्री

जिस की संतति मर जाती हो, मृतवत्सा स्त्री ।

नश्वर (वि०)—नष्ट होने वाला, नष्ट-शील, नाशयोग्य, ध्वंसप्रतियोगी ।

नष्ट ( वि० )—छिपा हुआ, अंतर्हित, तिरोहित, अदर्शनयुक्त ।

नष्टचेष्टता (स्त्री०)—शोकादि से चेत-नाभाव, मूर्च्छा, मलय, चेष्टा-रहित, बेहोश ।

नष्टाग्नि ( पु० )—प्रमाद से जिस ने अग्निहोत्र का परित्याग कर दिया हो, निरग्नि ।

नष्टाप्तिसूत्र (न०)—चोरी द्वारा अपहृत धनका प्राप्त कुछ भाग, स्तेयद्रव्य, चोरी का माल ।

नष्टेन्दुकला (स्त्री०)—वह तिथि जिस में चंद्रमा की कला नष्ट हो गई हो, अमावस्या, कुहू ।

नसा ( स्त्री० )—नाक, नासिका ।

नस्त ( पु० )—पूर्ववत् । [विषय ।

नस्ता (स्त्री०)—नासाकृत छिद्र, नासा-

नस्तित ( पु० )—वह यैन जिस की नाक बर्ध दी गई हो, नाप डाला हुआ घेड़ ।

नस्तोत्त (पु०)—पूर्ववत् । [याज्ञ धूर्ण ।

नस्त्य (न०)—हुलास, नस्यार, नासिका-

नस्त्योत्त (पु०)—नस्तित ।

नदि ( अ० )—रोकना, समा करना, नियंत्रण करना ।

नहुष ( पु० )—अपने नाम से प्रसिद्ध एक चंद्रवंशीय राजा, गर्वभेद ।

नहुषात्मज ( पु० )—नहुष का पुत्र

ययाति नाम राजा ।

ना (अ०)-निषेध, नहीं, नता, अभाव ।

ना [नृ] (पु०)-पुरुष, मनुष्य, आदमी ।

नाक (पु०)-वह लोक जहाँ दुःख न हो, स्वर्ग ।

नाकनाथ (पु०)-इन्द्र ।

नाकनाथक (पु०)-पूर्ववत् ।

नाकी (पु०)-जिसका निवासस्नान स्वर्ग है, देव, देवता ।

नाकु (पु०)-वहनीक, मुनिविशेष ।

नाकुल (पु०)-नकुल का पुत्र । न०-तत्रविशेष ।

नासत्र (न०)-नक्षत्रसम्बन्धी ।

नाग (पु०)-सर्प, साँप हस्ती, भेड़, भोया, नागकेसर, शरीररूप एक वायु जिस से चक्रार (हकार) सम्बन्धी कार्य होता है, क्रूरचारी । वि०-पर्वत में होने वाला । न०-इयोतिष में एक करण का नाम ।

नागदन्त (पु०)-हस्ती का दाँत, हस्तिदन्तवद्गुण, यद्दान्तगतं दारु, सूँटी ।

नागपक्ष्मी (स्त्री०)-आयादकृष्णा पञ्चमी जिस में विपनाशिनी जनसा देवी का पूजन किया जाता है ।

नागपाथ (पु०)-वरुणदेव का एक बन्धनापयोगी अस्त्र, वरुणायुध ।

नागबल (पु०)-भीमसेन ।

नागमाता (स्त्री०)-सर्पों की माता, मनमादेवी, मनःशिला, मनसिल ।

नागर (वि०)-शहर में रहने वाला,

चतुर पुरुष, शिल्पकार, कारीगर । न०-शुण्ठी, साँठ ।

नागराज (पु०)-सर्पों का राजा, वासुकि, अनन्त, शेष, हस्तिमों का राजा, ऐरावत । [ स्त्री, नागरपत्नी । नागरी (स्त्री०)-चतुर स्त्री, बुद्धिमती नागरेयक (वि०)-नगरसम्बन्धी ।

नागलता (स्त्री०)-सर्प के स्वरूपाकार लता, वह वेल जिसका स्वरूप सर्प के सा हो, ताम्बूलछता, पुरुष का चिह्न । [ लीक ।

नागलोक (पु०)-पाताल, सर्पों का नागाधिप (पु०)-शेष, अनन्त । [ गरुड ।

नागान्तक (पु०)-सर्पों का विनाशक, नागाशन (पु०)-पूयंयत् । [ प्रसिद्ध नगर । नागाह (पु०)-हस्तिनापुर नागक नागी (स्त्री०)-हस्तिनी, हथिनी ।

नाचिकेतः (पु०)-एक ऋषि का नाम, अग्नि, आग, एक वेदबन्धनी गाय । [ देश वा तद्देश्यासी ।

नाट (पु०)-नृत्य, नाच, कर्णाटकनाटक नाटक (न०)-देखने योग्य एक

प्रकार का काठ्य, वह काठ्य जो गद्यपद्य और प्राकृतभाषा की रचना से युक्त हो, कामारुष्य नाम देवों के समीप एक पर्वतभेद ।

नाटार (पु०)-नट का पुत्र ।

नाटिका (स्त्री०)-नाटकविशेष, एक नाट्य का भेद । [ युत ।

नाट्य (पु०)-नटों का छड़का, नटी-नाट्य (न०)-गीत, नृत्य, नाट्यादि नटों का काम ।

नाट्यशास्त्र ( स्त्री० )-नृत्यस्थान,  
नाचने का घर, नाटकमन्दिर, देव-  
मन्दिर के समीपस्थ घर ।

नाट्योक्ति ( स्त्री० )-नाटक विषयक  
वचन, नृत्यकर्मापयोगी वाक्य ।  
नाडि-डो ( स्त्री० )-देहस्थशिरा, घड़ी,  
६० पलात्मक समय, वृत्त की  
शाखा विशेष ।

नाडिकेल ( न० )-नारिकेल, नारिकेल ।  
नाडिन्धन ( पु० )-सुनार, स्वर्णकार ।  
नाडीचक्र ( न० )-नाभिरूपान से निःसृत  
शिराचक्र ।

नाडीजंघ ( पु० )-काक, कौआ, एक  
प्रकार का वगुला, मुनिभेद ।

नाणक ( पु० )-शोकुत्सित न हो, उत्तम,  
श्रेष्ठ, मनोहरमुद्राचिन्हित, जिस  
पर चिन्ह अङ्कित हो ।

नाम् ( १ पु० )-गर्भ होना, संतप्त होना,  
भिक्षा मांगना, याचना करना ।  
( १ आ० )-आज्ञा करना, ऐश्वर्य  
भोगना ।

नाम ( पु० )-स्वामी, मालिक, अधि-  
पति, महादेव । वि०-प्राप्यनीय,  
स्तुत्य, प्राप्यना करने योग्य ।

नामवान् ( वि० )-पराधीन, परतन्त्र,  
दृगरे के अधीन ।

नामहरि ( पु० )-मद्य, दारु, पीयासा ।  
नाद ( पु० )-शब्द, आवाज, उच्चारण,  
चन्द्राकार विन्दु, वायुभेद ।

नादध ( न० )-नदी का जल, नदी  
सम्बन्धी, मेषा लवण । पु०-काश  
नामक द्रव्य । वि०-नदी का ।

नाम् ( १ आ० )-याचना करना, मांगना ।  
नाना ( अ० )-अनेक, बहुत, विना ।

नानार्थ ( वि० )-अनेक अर्थ वाला,  
बहुत प्रयोजन वाला ।

नानाध्वनि ( पु० )-काहल, योणा, मृद-  
गादि अनेक ध्वजों का मिश्रित  
शब्द ।

नानारूप ( वि० )-बहु प्रकार का, पृथ-  
ग्विध, अनेक तरह का, बहुविध ।

नान्दी ( स्त्री० )-वह आहुति जिस में  
देवता और पितर वस होते हैं,  
सम्पत्ति, ऐश्वर्य, नाटक में सूत्रधार  
कृत संगलाचरण, नाटक के आदि  
में देव द्विजों का दिया हुआ  
आशीर्वाद ।

नान्दीमुख ( पु० )-एक प्रकार का आहुति  
को विवाहादि के पूर्व बृहस्पति वा  
अग्नीषादिजन्यपातक के दूरी-  
करणार्थ किया जाता है, दूपादि-  
मुखबन्धन ।

नान्दीवादी ( वि० )-नाटक के आरम्भ  
में नान्दी विषयक श्लोकों का  
पाठ करने वाला, भेरी आदि  
वाला बजाने वाला ।

नापित ( पु० )-नाष्ट, हज्जाम, क्षीर-  
कर्म का कर्ता ।

नापितशालिका ( स्त्री० )-नाष्ट का  
घर, नापितशुद्ध ।

नाभि ( पु० )-अपने नाम से प्रसिद्ध  
राजा को कि प्रियव्रत का पौत्र  
और अग्नीषु का पुत्र था, यज्ञ  
[ पट्टिया ] का मध्य, पुरी, प्रधान

राजा, द्वादश राजाओं के चक्र का मध्य ।

नाभिज (पु०)—ब्रह्मा का वाचक ।

नाभिजन्मा [नृ] (पु०)—पूर्ववत् ।

नाभिज (पु०)—पूर्ववत् ।

नाभिवर्ष (पु०)—भारतवर्ष देश ।

नाभी (स्त्री०)=नाभि ।

नाम(ल०)—स्वीकृति, प्राकाशय, कुत्सन, निन्दा, धिक्करण, निर्यास, क्रोध, विस्मय, अस्वस्थ, स्वरण ।

नाम[नृ] (न०)—संज्ञा, नाम, वाक्य, गोत्र, लक्षण, व्यपदेश्य, विन्ह ।

नामकरण(न०)—एक संस्कार जिसमें नाम रक्खा जाता है, जन्म के पश्चात् दशवें दिन का कृत्य ।

नामधेय (न०)—संज्ञा, नाम, वाचक शब्द ।

नामधेय(वि०)—जिस का केवल नाम ही शेष रह गया हो, मृत, मरा हुआ पुरुष ।

नाय(पु०)—नीति, न्याय ।

नायक (पु०)—स्वामी, मनु, नायिक, ठे काने वाला, सेनाध्यक्ष, हार के मध्य की भणि, उपपत्ति, बहु-वैश्याभोगोपशील ।

नायिका (स्त्री०)—प्रेमासक्त तरुणी स्त्री, वह स्त्री जिसे शृंगार रस अपिक्त स्त्रीकृत हो, दुर्भाग्यकि ।

नार (पु०)—नरसन्तान, बालक, बाल, माता । न०—नरसमूह, अनुषांगों का समुदाय । वि०—नरसम्बन्धी ।

नारक (पु०)—नरक, पाप के फल

भोगने का स्थानविशेष । वि०—नरक में रहने वाला, नरकस्थ जीव ।

नारकी ( वि० )—नरसम्बन्धी पीड़ा भोगने वाला ।

नारकीट(पु०)—बहु पुरुष जी अपनी ही हुई आशा को भंग करदे ।

नारङ्ग(न०)—गावर, गजूर, सतरे का पेड़ । पु०—विष्णुलीरव, लीहिया खट्टरों से से पुरु ।

नारद (पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध मुनि, तत्प्रोक्त महापुराण, ज्ञान-दाता, अज्ञान का नाशक ।

नारसिंह (न०)—एक उपपुराण जिसमें नृसिंहावतार का वर्णन है ।

नाराय(न०)—छोहनिर्मित एक अश्व, छोटे या बाण, तीर ।

नारायिका (स्त्री०)—अठारह अक्षर के षड् वाला शुद्ध छन्द ।

नारायण (पु०)—विष्णु, नरसमूह का आश्रय भोजन निवासस्थान ।

नारायणलक्षण(न०)—गंगा के दोनों तटों की चार हस्त परिमित जगह ।

नारायणमित्र(पु०)—शिव, महादेव ।

नारायणयन्त्रि(पु०)—मृत पतित पुरुषों के प्रायश्चित्तार्थ कर्तव्य कर्मविशेष, धर्मशास्त्रप्रोक्त प्रायश्चित्त ।

नारायणाक्ष(न०)—विष्णु का अक्षभेद ।

नारायणी(स्त्री०)—गंगा, लक्ष्मी, विष्णु की एक शक्ति, शताधरी नामक औषध ।

नारिकेर-ल(पु०)—स्वनामप्रसिद्ध फल-

वृक्षविशेष, नारियल का पेड़, जो जल वा पवन से कम्पायमान हो।

नारी ( स्त्री० )—वनिता, स्त्री, जिस में नर का धर्मोच्चार हो। नरधर्मोच्चारयुक्ता स्त्री, अबला, औरत।  
नारीद्रूपण ( न० )—स्त्रियों के दीप जो कि ई हैं, यथा—मद्यपान, दुर्जनों का साथ, पति से वियोग, भ्रमण, दूसरे के घर सोना और रहना।

नाल(न०)—कमलद्वय, कमल की हंडी।  
नालीक(पु०)—वाण, तीर, वह वाण जो धनुष से छूटते समय जपङ्कर शब्द करे।

नाविक(पु०)—मल्लाह, कर्णधार, महाज द्वारा यात्रा करने वाला पथिक।

नाव्य (वि०)—वह जल जो नाव से तरा जाय, नौका से तरने योग्य जल वा देश, नौकागम्य देश।

नाश(पु०)—भागना, पलायन, मृत्यु, निधन, अदर्शन, दर्शनाभाव, जीवों के नाश का हेतु।

नाशी(वि०)—नाशविशिष्ट, वह पुरुष जिस का नाश हो गया हो।

नासतयी (पु० द्विव०)—अश्विनीकुमार, स्वर्ग के वैद्य।

नामा(स्त्री०)—नाक, नासिका।

नामारोग(पु०)—नाक के रोग।

नामिका(स्त्री०)—नाक, नामा।

नामिकामल ( न० )—नाक का मल, नामान्धित मल।

नामिदय (वि०)—नाक के छिपे उप-

योगी, नासिका में उत्पन्न होने वाला।

नासक्यौ(पु०)=नासतयी।

नासीर (न०)—वह सेना जो सेनापति के आगे चले, सेनामुख, पायोनि-यर सेना। वि०—आगे जाने वाला, अग्रसर।

नास्ति (अ०)—अस्तित्व का अभाव, अविद्यमानता, न होना।

नास्तिक(पु०)—वह पुरुष जो परलोक, तत्समाधन, वेद और ईश्वर के अस्तित्व को न मानता हो; जो यज्ञादि के फल को न माने, वेद-निन्दक, ईश्वरनास्तिकत्ववादी, वेदामासाय्यवक्ता, चार्वाक आदि।

नास्तिकता ( स्त्री० )—नास्तिकपन, निश्चयादृष्टि।

नाहल(पु०)—स्लेच्छजातिविशेष।

नाहुपि ( पु० )—नहुष राजा का पुत्र ययाति।

नि (अ०)—निषेध, निश्चय, लघुत्व, छोटापन, चातुर्य, हटना, घटकार, मुक्त होना, सन्देह, सामीप्य, उपरस, दान, ग्रन्थतः।

निः[र्] (अ०)—निषेध, निर्णय।

निः[स्] (अ०)—निषेध, साकल्य, अतीत

निःकामित ( वि० )—निकाछा हुआ, यहिच्छक, निष्कामित।

निःस्र ( वि० )—विना सप्रिय वाला देश, सप्रियशून्य देश।

निःप्रत ( वि० )—प्रभारहित, विना पान्ति वाला।

निःशब्द (वि०)—बुपचाप, शब्दरहित ।  
 निःशलाक ( वि० )—अकेले, एकान्त,  
 रहः, निजंन, जनसमुदायरहित ।  
 निःशेष ( वि० )—जो शेष से निकल  
 गया हो, सम्पूर्ण, समस्त, सब,  
 समान ।  
 निःशोच्य (वि०)—साफ किया हुआ,  
 शोधित, मृष्ट ।  
 निःश्रयणी (स्त्री०)—जिस के पूर्ण रूप  
 से आश्रयित होता है, सीढ़ी,  
 पीढ़ी, काष्ठनिर्मित शोपान ।  
 निःश्रेणि-णी (स्त्री०)—घाँसों की बनी  
 सीढ़ी, शोपानपंक्ति, वंशप्रदित  
 शोपान ।  
 निःश्रेपस ( न० )—निश्चितकल्पण,  
 विज्ञान, मुक्ति, शुभ, विद्या, भक्ति,  
 सेवा । पु०—शिव ।  
 निःश्वास (पु०)—मुख और नासिका  
 से निरस्त वायु, श्वास, सांस ।  
 निःशमम् (न०)—निन्दा, सुराई, गद्गई ।  
 निःसङ्ग (वि०)—संग न करने वाला,  
 मेलरहित, कल की इच्छा न क-  
 रने वाला । [ रहित ।  
 निःसन्धि (वि०)—टूट, भङ्गभूत, सन्धि-  
 निःसम्पात (पु०)—वह समय जिस में  
 आना जाना बन्द हो, अर्द्ध रात्रि  
 का समय, आधीरात । वि०—गम-  
 नागमनरहित ।  
 निःसरण (न०)—घर का दवाँजा, गृहा-  
 दि का द्वार, मरण, मृत्यु, उपाय,  
 निर्गम, मुक्तता ।  
 निःसार (पु०)—शाखीट नामक वृक्ष ।

वि०—साररहित, जिस में कुछ  
 सार न हो । [ का नाग ।  
 निःसारण(न०)—गृह आदिसे निकलने  
 निःसारा (स्त्री०)—केले का वृक्ष, कदली  
 निःस्नेह ( वि० )—स्नेहशून्य, प्रेम-  
 रहित, तैलरहित ।  
 निःस्नेहा(स्त्री०)—अतृपी नामक वृक्ष,  
 जिस से तैल निकल गया हो ।  
 निःस्त्राव (पु०)—चावलों का रस, भक्त-  
 रस, माँह ।  
 निःस्त्र (वि०)—दरिद्र, कंगाल, निर्धन,  
 गरीब, छातिरहित ।  
 निकट (न०)—समीप, पास, अदूर ।  
 निकर (पु०)—समूह, गिरोह, समुदाय,  
 निधि, भण्डाना, सार, धन ।  
 निकर्षण (न०)—ग्राम के बाहर बिहार  
 करने की भूमि, शहर आदि में  
 गृह के निर्माणार्थ माया हुआ  
 प्रदेश ।  
 निकष-स ( पु० )—कसीटी, शाण, वह  
 पत्थर जिससे शस्त्र आदि की  
 धार तीक्ष्ण की जाती है ।  
 निकषा(स्त्री०)—राक्षसों की माता, सु-  
 भाली की कन्या, विप्रवा की भार्या ।  
 अ०—निकट, समीप, पास ।  
 निकपात्मज (पु०)—राक्षस, दैत्य, अमुर  
 निकषोपल (न०)—निकष ।  
 निकाम (न०)—इच्छानुकूल, यथेच्छित,  
 इष्ट, परमात्मा, गृह, स्थान ।  
 निकाम्य (पु०)—वह प्राणिवर्ग जिनका  
 धर्म समान हो, एकधर्मियों का  
 गिरोह, समूह, स्थान, निलय ।



निकाय ( पु० )—घर, गृह, रहने की जगह ।

निकार ( पु० )—अनादर, बेइज्जती, तिरस्कार, धिक्कार, धान्य का ऊपर की फेंकना, धान्योर्ध्वसेपण ।

निकारण ( न० )—बध, मारण, हिंसा ।

निकुञ्ज ( अस्त्री० )—लता आदि से ढका हुआ स्थान, लताच्छादित गृह, बेलों से आच्छादित प्रदेश ।

निकुम्भ ( पु० )—कुम्भकरण का पुत्र, दन्ती नामक एक वृक्ष, मल्लाद का पुत्रविशेष ।

निकुम्भिला ( स्त्री० )—लता की पश्चिम दिशा में एक गुफा का नाम, तत्प्रदेशरूप एक देवी । [ सा ।

निकुरम्भ ( न० )—समुदाय, झुगड़, बहुत निकृत ( वि० ) तिरस्कृत, अपमानित, वञ्चित, ठगा गया, प्रत्याख्यात, शठ, नीच ।

निकृति ( स्त्री० )—हाटना, भ्रष्टन, शाठ्य, दैन्य, अपमान गरीबी ।

निकृष्ट ( वि० )—अधर, नीच, निन्दित ।

निकेत ( पु० )—घर, स्थान, निकेतन, रहने की जगह । [ पलायु ।

निकेतन ( न० )—पूर्ववत् । पु०—प्याल,

निरय [ क्या ] ण ( पु० )—धीना की ध्वनि, धीनाशब्द, धीना को आवाज [ प्रक्षयण, प्रस्वाण, मुक्कण, सुम्भाण, उपक्षयण, उपक्ष्वाण, आदि शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त होते हैं ] ।

निक्षिप्त ( वि० )—स्थापित, रखता हुआ, न्यस्त ।

निक्षेप ( पु० )—अमानत, धरोहर ।

निखयं ( न० )—१०००००००००० दश सहस्र करोड़ की संख्या का वाचक ।

पु०—यौना, सामन ।

निखाल ( वि० )—खोदा हुआ, गटा, खोद कर स्थापित ।

निखिल ( वि० )—समस्त, सब, सम्पूर्ण ।

निगह ( अस्त्री० )—ब्रेष्टी, गृहला, हथकड़ी ।

निगहित ( वि० )—बधा हुआ, बद्ध ।

निगण ( पु० )—होम का धुआ, ध्वनधूम ।

निगद ( पु० )—कथन, सापण, नीलना ।

निगम ( पु० )—वेद, निश्चय, प्रतिज्ञा, न्याय के पाच अवयवों में से अन्तिम अवयव, व्यवहार, पुरी, कट, वेद की एक शाखा ।

निगमन ( न० )—न्याय के पाच अवयवों में से यह अन्तिम अवयव कि जो प्रकरण के विरुद्ध प्रमाण को छिन्नभिन्न करके प्रकरणानुकूल प्रमाण का मिश्रण करावे ।

निग [ गा ] र ( पु० )—भोजन, आहार ।

निगरण ( न० )—भक्षण । पु०—होमधूम, होम का धुआ ।

निगाल ( पु० )—अश्व के कण्ठ का स्थान, अश्वगलोद्देश ।

निगु ( पु० )—मन, मूल, मनोच्च, मुन्दर, चित्रवर्त्म ।

निगूढ ( वि० )—गुप्त, छिपा हुआ । पु०—यनभूग, यनमुद्ग ।

निगहीत ( वि० )—धीहित, रुद्ध, रोका हुआ, तर्जित, तत्संज्ञा किया हुआ ।

निग्रह(पु०)-अनुग्रह का अभाव, रोक, वचन; गतसेना, सीमा, हृद, निराकरण, कुत्सितप्रवृत्ति को अवलोकन कर तिरस्कृत करना ।

निग्रहस्थान(न०)-वह स्थान जिसमें पढ़ने से प्राप्ति परास्त समझा जाता है, प्राप्ति के पराजय का स्थान, गौतमप्रणीत १६ पदार्थों में से अन्तिम ।

निराह(पु०)-आक्रोश, शाययुक्त वृद्ध, वचन थोड़ना, निग्रह ।

निघ(पु०)-पूर्णरूप से दिया आघात; जिस को छद्माहं, चौड़ाहं और रुद्धाहं तीन्धाहं समझे, समस्यल, दासरा, कंधुक, गेद, वृत्त ।

निघण्टु(पु०)-अपने नाम का वैदिक क्रोश, वेद की द्विस्थनरी ।

निघस(पु०)-आहार, भोजन, खाने का पदार्थ ।

निघासि(स्त्री०)-छोड़नपदह, छोड़े का बना दण्ड ।

निघुट(न०)-चोपण, चोपणा, ननादी ।

निघृण्य(पु०)-तुर, पवन, घास, खर, गधा, बराह, सूअर, मार्ग ।

निघ्न(वि०)-अधीन, घममें, पराधीन, गुणित, गुणन (जयं) किया हुआ ।

निघप ( पु० )-समुदाय, यज्ञ, यज्ञा हुआ, अधधि से बाहिर, अधधियों से वृद्धित पदार्थ ।

निघाय ( पु० )-एकत्रित किया हुआ अन्नादि, राशिकृत, समुदाय ।

निघिकी(स्त्री०)-उत्तमांगी, उत्तमांग ।

निश्चित ( वि० )-पूरित, व्याप्त, भरा हुआ, निश्चित, भिला हुआ, रचित, सञ्चित, इच्छा हुआ, सङ्कीर्ण ।

निचुल(पु०)-चेतस, दैत का वृत्त ।

निचोल(पु०)-विस्तर, विजीना, डोली के ढकने का परदा, स्त्रियों का आच्छादन वस्त्र, दुपट्टा, चादर ।

निचुलवि(स्त्री०)-त्रिहुत नामक देश ।

निच्छिभि(पु०)-एक प्रकार की यर्ग-चक्रर जाति । [ नित्य ।

निज(वि०)-अपना, आत्मीय, स्वकीय, निट्[ग] (स्त्री०)-राजि, निशा, रास ।

निटल(न०)-नस्तक, कपास, खोपड़ी ।

निहीन(न०)-पक्षियों की गतिविधेन, चन्दगमन, शनैः चलना ।

नितम्ब(पु०)-स्त्री की कटि का पश्चाद् भाग, कटितट, चूतड़, कटि, स्कन्ध, कन्धा ।

नितम्बिनी(स्त्री०)-वह स्त्री जिस के नितम्ब अछटे हों, प्रगस्तनितम्ब-युक्ता स्त्री, म्बिनी ।

नितरान्(अ०)-निरन्तर, सर्वदा, सदा, अतिशय, विशेषकर ।

नितग ( न० )-जात पातालों में से एक को बहुत निघैःरियत है, अधःप्रदेश ।

नितान्त( वि० )-अतिशय, बहुत कर, एकान्त, अत्यन्त, उम पाछा, तटान् ।

नित्य(वि०)-सदास्थायी, जो सर्वदा रहे, सतत, निरन्तर । पु०-सदा, सर्वदा, प्रतिदिन, नमुद्र, विनाश और उत्पत्ति से रहित वस्तु ।

नित्यकर्म ( न० )—नित्यप्रति कर्तव्य वेदविहित कर्म, वह कर्म जिस के त्याग से मनुष्य प्रायश्चित्ती हो जाता है जैसे कि सन्ध्यावन्दन, पञ्चपञ्चात्मक कर्म ।

नित्यक्षीर ( न० )—स्वप्नाथ से प्राप्त समयोपयोगी क्षीर, रागप्राप्त केशकरांन ।

नित्यगति(पु०)—वायु, पवन, हवा ।  
नित्यतृप्त (वि०)—ब्रह्मविचारानुभव के आनन्द से तृप्त, आशारहित, निराश्रय, परब्रह्म के आनन्द से सन्तुष्ट ।

नित्यदा(अ०)—सदा, हमेशा, सर्वदा ।  
नित्यदान (न०)—प्रतिदिन करने योग्य दान, वह दान जो प्रत्युपकार और फल की इच्छा न कर सुपात्र को दिया जाय ।

नित्यप्रलय ( पु० )—चार प्रकार के प्रलयों में से एक, नित्यप्रति उत्पन्न हुए जीवों का नाश ।

नित्यमुक्त (पु०)—कालत्रय के बन्धन से रहित, परमात्मा ।

नित्ययज्ञ(पु०)—फलाभिसन्धान रहित प्राणिमात्र के लिये नित्यकर्तव्य यज्ञ, अग्निहोत्रादि ।

नित्ययीयना (स्त्री०)—वह स्त्री जिस का यीयन सदा स्थिर रहे, द्वीपदी वि०—स्थिर यीयन वाला ।

नित्यसमास ( पु० )—एक समास का नाम, वह समास जिसका अर्थ समस्वगान पदों के निम्न कुछ

अवगत हो न हो, जैसे “जपद्रव्य, जमदग्नि” इत्यादि ।

नित्या ( स्त्री० )—पार्यंती, शक्ति-विशेष, मगसा नामक देवी ।

नित्यानध्याय ( पु० )—सब प्रकार से यज्ञं वेदपाठादि की छुटी का समय, वेदपाठ न करने की छुटी का काल ।

नित्याभियुक्त ( वि० )—सर्वप्रकार से योगाभ्यास में सलग्न पुरुष, योगाभ्यासी, केवल देह की रक्षा के लिये यत्नयरायण ।

निद (न०)—विष, जहर ।

निदद्गु ( पु० )—विषभय से पलायित पुरुष, दद्गु नामक रोग से रहित ।

निदर्शन ( न० )—दृष्टान्त, मिसाल, उदाहरण । [ एक भेद ।

निदर्शना (स्त्री०)—आठ्यालङ्कार का निदाघ (पु०)—गर्मी का समय, उष्ण-काल, ग्रीष्मकाल, ज्येष्ठ और आषाढ के मास ।

निदाघकर(पु०)—सूर्य, सूरज ।

निदाघकाल(पु०)—ग्रीष्म ऋतु, ज्येष्ठ और आषाढ मास ।

निदान (न०)—आदिकारण, रोग का निर्णय, अन्त, अखीर, अवसान, वत्सरवज्र, रोग का कारण, रोग का निश्चय कराने वाला एक ग्रन्थ, तपश्चर्या के फल की याचना ।

निदिग्ध ( वि० )—लेप आदि से घड़ा हुआ, उपचित, लेपयुक्त सुगन्धिधत्त ।

निदिग्धा (स्त्री०)—गुला, इलायची ।

निदिध्यासन (न०)—ध्यान का भेद,

गुरुमुख से श्रुत पदार्थ का पुनः २

विचार, विचारित अर्थ में निम-

ग्नित होना ।

निदेश (पु०)—आज्ञा, शिक्षा, हुक्म,

पात्र, वस्त्र, समीप, पास, निकट ।

निदेशटा [ट्ट] (वि०)—निदेश करने

वाला, उपदेशक, उपदेशकर्ता ।

निद्रा (स्त्री०)—नींद, सोना, शयन,

कर्मेन्द्रियों के विषयो से जीव

की प्रवृत्ति होने की अवस्था ।

निद्राण (वि०)—वह पुरुष जिसे निद्रा

आगई हो, सोया हुआ, निद्रित,

शयित ।

निद्रालु (वि०)—अतिनिद्रा वाला,

निद्राशील, जिसे बहुत निद्रा

आती हो ।

निद्रावृत्त (पु०)—अंधेरा, अन्धकार ।

निधन (पु०)—मरण, मरना, मृत्यु,

नीत, नाश ।

निधान (न०)—निधि, खजाना, आसक्त,

कार्य की समाप्ति, कामका अंत ।

निधि (पु०)—शयन, आदि कोय,

समुद्र, आधार, आश्रय जैसे—शुण-

निधि, विद्यानिधि, जलनिधि

इत्यादि ।

निधिनाथ (पु०)—स्वज्ञाने का स्वामी,

सुखे । [ निधीश, निधीश्वर

आदि शब्द भी इसी अर्थ में प्रयुक्त

होते हैं ] ।

निधुवन (न०)—जिस में हस्त पादादि

अंग सम्पाद्यमान होते हैं, मैथुन,

स्त्रीसंग, सुरत, कामभोग ।

निध्यान (न०)—दर्शन ।

निध्वान (पु०)—शब्द, आवाज ।

निन [न] द (पु०)—शब्द, रस की

ध्वनि, शृंगार का शब्द ।

निन्दक (वि०)—निन्दा करने वाला,

बुगलखोर ।

निन्दतन (वि०)—दूरे हाथ वाला,

निन्दितहस्त ।

निन्दा (स्त्री०)—अपवाद, दुष्कृति,

गर्हा, बदनामी, दूषण, ऐष, चुगली ।

निन्दास्तुति (स्त्री०)—निन्दा से

मिली हुई स्तुति, निन्दागर्भित

स्तुति, वपाजस्तुति ।

निन्दित (वि०)—तिरस्कृत, धिक्कृत,

अपमानित, डाटा हुआ ।

निप (अस्त्री०)—कलस, पड़ा, घट,

कदम्ब का वृक्ष ।

निपत्या (स्त्री०)—पृथ्वी की पृथ्वी,

गुहभूमि, छड़ाई की जगह ।

निपाक (पु०)—पाक, पका हुआ ।

निपात (पु०)—पतन, अन्तिम पतन,

मृत्यु, मरना, वपाकरण में 'घ'

या 'प्र' आदि ।

निपातन (न०)—अधीनघन, नीचे

पहुँचाना, खलीकरण, वपाकरण में

उत्तण से अनुत्पन्न (असिद्ध)

पदसिद्धि ।

निपान (न०)—नृप के समीप का अला-

शय, चीवरूपा, गी दूहने का

पात्र, गोदाहनपात्र, जलाशयमात्र ।

निपीडित ( वि० )—पीड़ा पहुँचाया हुआ, निघोड़ा हुआ ।

निपुण (वि०)—कार्यकुशल, काम करने में दक्ष, होशियार, प्रवीण ।

निबन्ध (पु०)—ग्रन्थरचना, मूत्रायरोध रोग, निम्न घृत्त, दिन या, समय के निश्चित करने पूर्वक देने की प्रतिज्ञा, अफारे का रोग, आनाह्ररोग ।

निबन्धन (न०)—यह साधन जिस से मनुष्य बांधा जाता है, बंधन के बन्धन का, उपरिभाग ।

निबर्हण (न०)—भारण, मारना ।

निभ (पु०)—तुल्य, सदृश, धराधर ।

निभालन (न०)—दर्शन, अवलोकन ।

निभूत ( वि० )—मोटा हुआ फाल, भूतकाल ।

निभूत (वि०)—नम्र, विनीत, निजंन, निश्चल, अटल, अस्तासन्न, छिपने के समीप पहुँचा हुआ ।

निनउजयु (पु०)—शयन, सोना, जलाव-गाहन, भीनाधलम्बन, चुप रहना ।

निमज्जन ( न० )—स्नान, अवगाहन, चञ्चलतारहित स्थिति, नीनधारण ।

निमज्जन ( न० )—उत्सवविशेष में भोजनार्थ युलाना, भोजन के लिये युलाया भेजना, आह्वान, नियोजनविशेष ।

निमय (पु०)—विनिमय, बदलावदली ।

निमान (न०)—मोड़, क्रीमत, मूल्य ।

निमि (पु०)—स्थनाम से प्रसिद्ध राजा ददवाक का यशज ।

निमित्त-क (न०)—हेतु, सद्य, कारण, चिन्ह, निम्नान, शकुन, उद्देश्य ।

निमित्तकारण ( न० )—तीन प्रकार के कारणों में से एक अर्थात् तृतीय कारण ।

निमित्तवित्त (पु०)—उपोतिपी, दैवज ।

निमिष ( पु० )—विष्णु, समयविशेष, आँख का मीचना, चक्षुर्मोहन ।

निमोहन (न०)—मृत्यु, मरना, सकुञ्चि होना, आँख मीचना, यत्नमगत रोगविशेष ।

निमेष (पु०)—नेत्र के स्वाभाविक स्फुरण का काल, नेत्र का मीचना, समयविशेष, पलक का कड़कना, पक्षरूपम्दन ।

निमेषकृत (स्त्री०)—विजली, विद्युत् ।

निमेषकृ [ज] (पु०)—खद्योत, पटवी-जना, जुगनू ।

निम्न (वि०)—गहरा, नीचा, गम्भीर । पु०—गनमित्र का पुत्र, सम्राजित और प्रसेन का पिता ।

निम्नगा (स्त्री०)—नीचे स्थान से जाने वाली नदी, नदीमात्र । वि०—नीचे जाने वाला ।

निम्नोजत (वि०)—नीचा और रुचा, चम्नतानत ।

निम्न (पु०)—नीच का धाक ।

निम्नोचन (न०)—छिपने के समीप, अस्तप्राय ।

नियत (वि०)—निश्चित, गित्य, सेवा में तत्पर, सदाचरणयुक्त, जितेन्द्रिय ।

न०-प्रतिदिन का कर्त्तव्य काम ।  
नियति ( स्त्री० )-भाग्य, प्रारब्ध,  
किस्मत, नियम ।

नियतो(स्त्री०)-दुर्गो ।

नियतेन्द्रिय (वि०)-जिसने इन्द्रियें  
बश में करली हों, इन्द्रिय-  
दमनशील ।

नियन्ता[त्] (पु०)-रथ चलाने वाला,  
सारथि, दण्डदाता । वि०-पशु को  
चलाने वाला ।

नियन्त्रित (वि०)-प्राधारहित, अन-  
गुल, प्रतिकुल, सम्यक् प्रकार से  
पथीकृत ।

नियम(पु०)-गङ्गीकार प्रतिष्ठा, इफ-  
रार, दिशवास, निश्चय, एक वृत्त,  
मीमांसाप्रतिपादित एक विधि;  
शौच, सन्तोष, तप, वेदपठनं  
जीर ईश्वर में मन का लगाना ।

नियमित ( वि० )-कृतनियम, बंधा  
हुआ, यह ।

नियाम(पु०)-नियम ।

नियामक ( पु० )-गल्लाह, कसंधार,  
नाय चलाने वाला । वि०-स्वामी,  
मालिक ।

नियुक्त ( वि० )-बहु पुरुष त्रिषु ने  
विषया के साथ नियोग किया  
हो, नियोगविशिष्ट, निश्चित,  
अवधारित, आछा किया हुआ,  
आद्यन्त ।

नियुत ( न० )-१००००० दश लक्ष की  
गुण्यता का वाचक । [नियुत ।

नियुत ( न० )-वागुत्तुह, जुगाओं से

नियोग ( पु० )-अवधारण, निश्चय,  
मेवकों को कार्य में लगाना, आछा,  
सन्तानार्थ विषयाविषाह आदि ।

नियोग्य ( वि० )-लगाने को योग्य,  
नियोगार्ह, स्वामी, मालिक ।

नियोजन ( न० )-काम में लगाना,  
आछा देना, मुकदिर करना ।

नियोज्य(वि०)-कार्य में लगाने योग्य,  
भूत्य, प्रेप्य, नीकर ।

निर् ( अ० )-नगा, निषेध, निश्चय,  
नहीं, बाहिर ।

निरग्नि ( पु० )-अग्निहोत्रादि कर्म-  
शून्य; होमाग्नि से रहित ।

निरक्षुब्ध (वि०)-जिसका कोई प्रति-  
बन्धक न हो, बाधाशून्य, अनि-  
बाधे ।

निरक्षता (स्त्री०)-अन्धकाररहित, पूर्णमा-  
सि०-अज्ञानरहित ।

निरक्ष(वि०)-ग्रंथरहित, पठित, मागशून्य,  
संक्रान्ति का क्षयस ।

निरत (वि०)-नियुक्त, लगा हुआ ।

निरत्यय ( वि० )-नाशरहित, टलरहित,  
कपटशून्य, जो न दक सके, अप्रतिष्ठा ।

निरन्तर (वि०)-लगातार, निरन्तर, सधत,  
अवकाशरहित, विमोद, विना रुक,  
अनात्मोय, अचिद ।

निरन्तपश्चात् (पु०)-जिसने निरन्तर  
अभ्यास किया जाना हो, स्वाध्याय ।

निरपन्न (वि०)-सज्जाशून्य, निर्जन्म, धृष्ट,  
येशमे । [चेरगाँव ।

निरपेक्ष ( वि० )-इच्छारहित, शून्य,  
निरय (वि०)-वरक्त, पापफल मोचन या  
स्वान । [दण्डरहित, वाधाशून्य ।

निरांत (वि०)-न रुकने वाला, प्रति-

निरर्थक (वि०)-निष्फल, प्रयोजनरहित,  
वेमतल्य, अर्थशून्य ।

निरवग्रह (वि०)-जिसका कोई प्रतिबन्धक  
न हो, स्वतन्त्र, वर्ण के प्रतिबन्ध का  
अभाव । [रहित, स्वच्छ, श्रेष्ठ ।

निरवय (वि०)-वेकलङ्ग, निर्दोष, लाञ्छन-  
निरवयव (वि०)-अवयवरहित, निराकार,  
परम सूक्ष्म । पु०-आकाशादि ।

निरवशेष (वि०)-सद्यः सम्पूर्ण, सारा ।

निरवसित (वि०)-पात्रबहिष्कृत, पात्र से  
बाहर किया हुआ, प्रतिषेधपूर्ण ।

निरशन (न०)-अनशन, भोजनाभाव । वि०-  
विना भोजनवाला ।

निरस (वि०)-नीरस । पु०-रस का अभाव ।

निरसन (न०)-प्रत्याख्यान, निरस्कार करना,  
पृथक् करना, छोड़ना ।

निरस्त (वि०)-शीघ्रता से उच्चारण किया  
गया, जल्दी बोला हुआ, शीघ्रोच्चारित,  
त्यक्तशर, धृता हुआ, निष्कृत, प्रति-  
हत, भेजा हुआ, प्रेषित ।

निराकरण (न०)-पृथक् करना, दूर करना,  
निवारण, अनादर करना ।

निराकरिष्य (वि०)-पृथक् कर देने वाला,  
निराकरणशील, निगलने वाला ।

निराकार (पु०)-आकाररहित, परमेश्वर,  
ब्रह्म । [निरस्कार प्रत्याख्यात निरस्त ।

निराकृत (वि०)-निराकृत किया हुआ,  
निराकृति (स्त्री०)-दूर करना, छुटाना,  
निवारण । वि०-आकाररहित,  
अस्याप्यय ।

निराचार (पि०)-आचार न करने वाला,  
आचारशून्य, अनाचारी ।

निरातपा (स्त्री०)-जिसमें आतप दूर हो  
गया हो, शीत, गत ।

निरावाध (वि०)-बाधा रहित, एक पक्षा-  
भास का नाम ।

निरामय (वि०)-नोरोग, रोगरहित, जिसे  
कोई रोग न हो, उपद्रवादिरहित ।  
पु०-वन का छाम और वनशूकर ।

निरालम्बा (स्त्री०)-आकाशमांसी, शुक्ल-  
यजुर्वेद के अन्तर्गत एक उपनिषद् ।  
वि०-आश्रयशून्य ।

निराश (वि०)-आशा रहित, इच्छाशून्य ।

निराहार (वि०)-भोजना रहित ।

निरिक्लिषी (स्त्री०)-कनात, जवानिका ।

निरिन्द्रिय (वि०)-इन्द्रियशून्य, इन्द्रियों का  
दमन करने वाला ।

निरिक्षण (न०)-वर्शन, अवलोकन ।

निरिक्षित (वि०)-देखा हुआ, अवलौ-  
कन किया हुआ, अवलोकित ।

निरीश (न०)-फाल, लांगलस्थित  
लौहविशेष । वि०-नास्तिक,  
वैश्वरहित ।

निरिप (न०)-पूर्ववत् ।

निरिह (पु०)-विष्णु, परमेश्वर ।

निरुक्त (न०)-धातु और प्रत्यय आदि  
के अर्थों की सङ्गन्धिवेचनापूर्वक  
वैदिक शब्दार्थों का प्रतिपादन  
करने वाला एक ग्रन्थविशेष ।

निरुक्ति (स्त्री०)-धातु और प्रत्यय के  
विभाग पूर्वक किसी शब्द की  
पूर्ण रूप से व्याख्या, निष्पट्ट  
पर किया हुआ यास्क मुनि का  
भाष्य, पूर्णरूप से कथन ।

निरुद्ध (वि०)-रुका हुआ, रुद्ध ।

निरुद्धान (वि०)-उद्योग न करने वाला,  
निरुद्धान, आलसी ।

निरुपद्रव ( वि० )-उपद्रवरहित,  
सुखातशून्य ।

निरुपम (वि०)-जिस की कोई उपमा  
न हो, अनुपम, उपमा रहित ।

निरुपाख्य (वि०)-जो मन वाणी से प्रका-  
शित न किया जा सके, परमात्मा,  
परब्रह्म, अव्यक्तस्वरूप, मिथ्या  
पदार्थ, घन्ध्यापुत्रादि ।

निरुपेक्ष (वि०)-श्रेयसाद, उपेक्षारहित-  
अनुपेक्ष ।

निरुद्ध (पु०)-शक्ति के सद्ग्रह लक्षणा  
से अर्थ का द्योतक शब्द । वि०-  
विना विवाहा पुरुष, अनुद्धाहित ।

निरुद्धलक्षणा (स्त्री०)-शक्ति के समान  
लक्षणा, वह लक्षणा जो व्याकरण  
तथा कोष से प्रसिद्ध अर्थ में शक्ति  
के तुल्य लक्षणरूप शब्दार्थ को  
प्रकाशित करे ।

निरुद्धा (स्त्री०)-वह लक्षणा जो शब्द  
की शक्ति को प्रकाशित करे ।

निरुद्धि ( स्त्री० )-ह्वाति, प्रसिद्धि,  
शोहरत ।

निरूपण ( न० )-विचार, निदर्शन,  
निसाल, दृष्टान्त, प्रकाश, अच्छे  
प्रकार से विचारना, वह विचार  
जिस में तदवधानानुकूल शब्द  
का प्रयोग किया जावे ।

निरूपित ( वि० )-वर्णित, निरूपण  
किया हुआ, कृतनिरूपण, समाया  
हुआ, नियुक्त ।

निशंति (स्त्री०)-मलहमी, लहमी की  
ज्येष्ठा भगिनी, घृणास्पद । पु०-

दक्षिण और पश्चिम की दिशा  
का स्वामी । वि०-उपद्रवरहित ।

निरुप (पु०)-मानवेद का वाचक ।

निरोद्धव्य ( वि० )-रक्षा करने के  
योग्य, रक्षणीय ।

निरोध (पु०)-नाश, आपत्ति, निग्रह,  
रोक, प्रत्यय ।

निरोधन (न०)-रोकना, घन्द् करना,  
कारागारादि में डालना ।

निर्गन्त ( वि० )-बाहर गया हुआ,  
यहिःप्राप्त । [वाला

निर्गन्ध (वि०)-गन्धरहित, बेगन्ध

निर्गन्धन(न०)-मारना, नाश करना,  
मारण, निर्यन्धन । [वृक्ष ।

निर्गन्धपुष्पी (स्त्री०)-शास्त्रमणि का

निर्गुण (पु०)-रस्व, रजः और तमो-  
गुण से रहित, परमात्मा ।

निर्गुणही (स्त्री०) जिस में रस नहीं,  
नीरस, कमल की मूल, सिन्धुवार  
नामक एक वृक्ष ।

निर्गूढ (पु०)-यत्न का रकोट, वृक्ष-  
कोटर । वि०-ढका हुआ, संकुचित ।

निर्यन्त्र-व (पु०)-नगा, नरग, दिगम्बर,  
एक मुनि, जुआरी, निर्धन, सूखे,  
मौदुर्मेद । वि०-ग्रन्थनिर्गन्त, जिस  
के हृदय से क्रीडादङ्काररूप गाँठ  
निकल गई हो, निरुद्ध हृदयपन्थि,  
असहाय ।

निर्यन्त्रिक (पु०)-वह पुरुष जो कौपीन  
भी धारण न करे, तपणक । वि०-

निपुण, निर्गुण, यन्त्रिरहित ।

निर्पात (पु०)-वह शब्द जो वायु पर



वायु की चोट पहुँचे से होता है,  
परस्पर दो घबनों के टकरा जाने  
का शब्द, भूकम्प, भूचाल, नाश।  
निर्घण (वि०) - निर्दय, दयारहित,  
घेरहम, दया न करने वाला।  
निर्घोष(पु०) - प्रत्येक प्रकार का शब्द,  
शब्दमात्र।

निर्जन (वि०) - जनरहित स्थानादि,  
विजन, वह प्रदेश जहाँ कोई भी  
जन न हो, एकाग्रत।

निर्जर(पु०) - देवता, देव। वि० - बृद्धा-  
वस्था से रहित। [पण]।

निर्जरा(स्त्री०) - गिलीय, गुह्य, ताल-  
निर्जल(वि०) - जलरहित देशादि।

निर्जलैकादशी (स्त्री०) - ज्येष्ठ मास के  
शुक्लपक्ष की एकादशी, निर्जला  
एकादशी जिस में वाचमन के  
अतिरिक्त छल पीना वर्जित है।

निर्जित(वि०) - पराजय को प्राप्त हुआ,  
विजित, वश में हुआ, वशीकृत।

निर्जीव (वि०) - जीवात्तरहित, मृत,  
मृतशरीर, प्राणिशून्य, ऐसा शरीर  
जिसे जीव ने छोड़ दिया हो।

निर्जर (पु०) - करमा, पर्वत से जल  
निकलने का स्रोत, पर्वतावती-  
पांजलप्रवाह।

निर्जरी(स्त्री०) - नदी, दरिया।

निर्जरी [नृ](पु०) - पर्वत, पहाड़।

निर्जरिणी (स्त्री०) - झरने के जल-  
प्रवाह से उत्पन्न हुई नदी।

निर्णय (पु०) - अवधारण, निश्चय,  
यकीन, फैसला, नीमाशा के

पांच अवयवों में से अन्तिम, धारण।  
निर्णिक (वि०) - बाण किया हुआ,  
शोधित, जिस का मूल दूर हो  
गया हो, अपनीतमल।

निर्णीत (वि०) - निश्चय किया हुआ,  
निश्चय किया हुआ, निश्चयीकृत।

निर्णैक(पु०) - राजक, धोयी।

निर्दंष्ट (वि०) - दूसरे की बुराई में  
लगा हुआ, पराववादरत, निर्दय,  
लौघ, प्रयोजनरहित, नष्ट।

निर्दय(वि०) - दयारहित, घेरहम।

निर्दहन (पु०) - भस्मलातक, भिलावा,  
जिस में से आग दूर हो गई हो,  
अग्निशून्य।

निर्दहनी(स्त्री०) - सूखानामक लता।

निर्दिग्ध(वि०) - बली, बलवान्, बलिष्ठ।

निर्दिष्ट (वि०) - निश्चय किया हुआ,  
निश्चित, बतलाया हुआ, कथित,  
आदिष्ट, उपदिष्ट।

निर्देश(पु०) - जाग्रत, हुक्म, शासन,  
द्योतित करने वाला शब्द, रूप  
और नाम; वेतन। वि० - देश से  
निकाला हुआ।

निर्देष्टा [दृ] (पु०) - निर्देशकर्ता,  
उपदेष्टा, उपदेशक। [यकसूर।

निर्दोष(वि०) - दोषरहित, अनपराधी।

निर्धन (पु०) - बूढ़ा पैल, जरङ्गम।

वि० - दरिद्र, गरीब, धनहीन।

निर्धर्म (वि०) - धर्म न करने वाला,  
धर्महीन।

निर्धार (पु०) - निश्चय, जाति गुण  
और क्रिया को उद्भव में रखा

वात्स्यादि की सत्कृष्टता से सजातीय से पृथक् करना, यथा-मनुष्यों में ब्राह्मण, गौत्रों में काली गौ और पक्षियों में शीघ्र-गामी श्रेष्ठ है ।

निर्धारण(न०)-पूर्ववत् ।

निर्धारित(वि०)-निश्चय किया हुआ, निश्चयीकृत, निर्णित, फैसला किया हुआ, विदित किया गया, निर्धारणीय विषय ।

निर्धार्य (वि०)-निर्धारण करने योग्य, निर्धारयितव्य, विचारने योग्य ।

निर्धूत (वि०)-सुगिहत, त्यागा गया, निरस्त, ड़ाटा हुआ, भर्त्सित ।

निर्घात (वि०)-घोसा हुआ, प्रताड़न किया गया, प्रताड़ित ।

निर्हृन्द् (वि०)-सुख दुःख, शीत चण, छात्राछात्र और रागद्वेष के से जोड़े से शुन्य ।

निर्यन्ध (पु०)-हठ, आपस, अभि-निवेश अभिलषित वस्तु की प्राप्ति में धार २ प्रयत्न, अङ्ग, अभ्यर्पणा, प्रार्थना ।

निर्घात (वि०)-जिस से पीड़ा दूर हो गई हो, उपद्रव रहित, बेरोक, बिना कष्ट ।

निर्भट (वि०)-मजबूत, दृढ़ ।

निर्भय (वि०)-भयरहित, निश्शङ्क । पु०-उत्तम अश्व, श्रेष्ठ घोड़ा, रौच्य मनु का पुत्र ।

निर्भर (न०)-जिस में अधिक भार हो, अतिशय, अतिमात्र, जो

अत्यधिक हो ।

निर्भर्त्सित (वि०)-झाटा हुआ, निन्दित, तिरस्कृत, छोड़ दिया गया, नष्ट किया हुआ ।

निर्भाग्य (वि०)-भाग्यहीन, मूढ़, असम्पद, मन्द ।

निर्भद (पु०)-ऐसा हस्ती जिस का नद दूर हो गया हो । वि०-नद-शून्य ।

निर्भम (वि०)-जिस का अपनापन जाता रहा हो, नमत्परहित, स्त्री पुत्ररदि में समता न करने वाला ।

निर्मल (वि०)-रागादि या रजस्तमो-गुण आदि मल से रहित, शुद्ध, मल को दूर करने वाला, कतक नामक वृक्ष का फल जो कि जल में डालने से उस के सय मल को दूर कर देता है ।

निर्मलोपल(पु०)-गुह्यपत्यर, स्फटिक ।

निर्भाल्य (न०)-देवता पर चढ़ाया हुआ द्रव्य, देवोच्छिष्ट वस्तु, देवता के विसर्जनान्तर उस की अभ्यर्पण किया हुआ द्रव्य ।

निर्मुक्त (पु०)-वह सयं जिस ने कै-सली चतार दी हो, मुक्तकञ्चुक, त्यक्तवस्त्रसयं । वि०-सपरहित, अपने पाम कुट्ट म रमने वाला, निष्परिग्रह, बन्धनरहित ।

निर्मुट (न०)-वह दूकान जिस पर कर न हो, करशून्य इष्ट । पु०-सुपरहित वृत्त ।

निर्मोक्ष (पु०)—केंचुली, सर्प की खाल,  
सर्पत्वक्, त्वङ्मात्र, कवच, सन्नाह,  
वस्त्र, आकाश ।

निर्मोक्ष (पु०)—त्याग का वाचक ।

निर्यन्त्रण (वि०)—वाधाशून्य, निर-  
गल, बेरोक, यन्त्रणारहित, उ-  
च्छल ।

निर्योण (ग०)—हस्ती के नेत्र का कोना,  
गजापाङ्ग देश, जज़ीर, वह रस्सी  
जिससे पशुओं के पाव बांधे जाते  
हैं, मोक्ष ।

निर्योतन (ग०)—घेर का शोधन, शत्रु-  
प्रतीकार, धरोहर का समर्पण  
करना, श्रणादि का शोधन, दान,  
त्याग, प्रतिदान । [कर्णधार ।

निर्योम (पु०)—मल्लाह, नाविक,  
निर्यास (पु०)—काढ़ा, कषाय, कषाय,  
गोद, वृक्ष का रस, रस ।

निर्युक्तिक (वि०)—युक्तिशून्य, जिस  
के पास युक्ति न हो ।

निर्यूप (पु०)—क्वाथ, कषाय, काढ़ा ।

निर्यूह (पु०)—द्वार, दरवाजा, कषाय,  
काढ़ा, नागदन्त, सूटी, मुकुट,  
मिटर, चोटी । [लक्षणशून्य ।

निर्यल्लण (वि०)—लक्षण से रहित,  
निर्यल्ल (पु०)—घिप्पु, श्रीकृष्ण, नि-  
रीह । वि०—छेपरहित ।

निर्येप (वि०)—आसक्तिरहित, छेप-  
शून्य, निष्पाप ।

निर्ययमी (स्त्री०)—केंचुली, सर्प की  
खाल, सर्पत्वक् ।

निर्ययन (ग०)—यह व्याख्या जो

प्रकृति (धातु) और प्रत्यय के  
विभाग दिखलाने पूर्वक अर्थ को  
प्रकटित करे, निरुक्ति, अर्थ का  
निरूपण, पूर्णरूप से कथन, चुप,  
मौन ।

निर्यंपन (न०)—दान, देना, दिए-  
दान, आहुत करना, अन्नादि का  
छांटना, योग, योग्यपन ।

निर्यंतित (वि०)—सीमा तक पहुंचा  
हुआ, निष्पादित, पूर्ण किया  
गया, पूर्णित ।

निर्वहण (ग०)—नाट्योक्तिमें आरम्भ  
की हुई कथा की पूर्ति, प्रस्तुत  
कथा की समाप्ति, अन्त, नाश,  
नाटक की सन्धिविशेष ।

निर्वाण (ग०)—मुक्ति, मोक्ष, अपवर्ग,  
विश्रान्ति, समाप्ति, हस्ती का  
स्नान, नाश । वि०—मुक्त, शान्त,  
विष्णु, शून्य, निश्चल ।

निर्वात (वि०)—वायु से सञ्चार से  
रहित देश, वायुरहित ।

निर्वाद (पु०)—लोकनिन्दा, घदनामी,  
जनश्रुति, शोहरत, अवज्ञा, निश्चि-  
तवाद, विवादाभाव ।

निर्याप (पु०)—मत पितरों के उद्देश्य से  
आहुत आदि में किया दान, भिक्षा  
के लिये दान । [दान ।

निर्यापण (न०)—यथ, सारना, देना,

निर्यार्य (वि०)—सरवसरूपदा से  
निश्चय होकर कार्य करने वाला,  
भय, पराक्रम, व्यसन और ऐश्वर्य  
की वृद्धि में सग की अविकृत दशा

को सत्त्व कहते हैं उस सत्त्व की सम्पदा से उद्योग करता हुआ निर्भीक होकर कार्य करने वाला ।

निर्वाचन(न०)—यान वा देश में पृथक् करना, निकालना, देश से निकाल देना, मार देना, विसर्जित करना ।

निर्वाह (पु०)—कार्य का सम्पादन, कार्यप्रयत्न, पूर्ण करना, समाप्ति, निष्पत्ति, आत्मीयिका, अन्त ।

निर्वाहण(न०)—नाट्योक्ति में प्रस्तुत कथा की समाप्ति ।

निर्विकल्प-क(न०)—यह ज्ञान जिससे ज्ञात और ज्ञेय का विभाग, विशेष्य और विशेषणरूप सम्बन्ध या भान तथा गुणत्व का सम्बन्ध दूर हो गया हो; जीव और ब्रह्म की अखण्डाकार एकत्वविषयक वृत्ति का द्योतक ज्ञान; न्याय-शास्त्र में यह ज्ञान को प्रकाशता आदि से रहित, सम्बन्धानवगाहि और इन्द्रियों के गोचर न हो ।

निर्विकार (वि०)—विकार से रहित, विकारशून्य । पु०—परमात्मा, जन्ममृत्यु आदि यह विकारों से पृथक् ।

निर्विषण (वि०)—वैराग्य वाला, उदासीन, अनुतापित, परदात्ताप-युक्त, परनाशे वाला ।

निर्विषा (स्त्री०)—विषय मानक पर्यंत में निकली हुई नदी ।

निर्विषा (स्त्री०) यह धोपय जिसके

देवन से विष नष्ट हो जाता है, निर्विषी, विषापहा, तृणविशेष ।

निर्वाणा (स्त्री०)—यह दास जिसमें बोज न हो, द्राक्षाविशेष ।

निर्वीर (वि०)—वीररहित, वह देश वा मगर जिसमें कोई शूर पुरुष न हो ।

निर्वीरा (स्त्री०)—यह स्त्री जिसके पति और पुत्र न हों, पतिपुत्र-विहीन स्त्री ।

निर्वृति (स्त्री०)—सुन्दर स्थिति, सुख, अस्त हो जाना, छिप जाना, अस्तमन, मुक्ति, मोक्ष, मृत्यु, शान्ति ।

निर्वृत्त (वि०)—निषेधन, सम्पादित, पूर्ण किया हुआ, वृत्तिशून्य, बिना आत्मीयिका वाला ।

निर्वृत्ति(स्त्री०)—सम्प्राप्ति, प्राप्त होना, आगति । वि०—वृत्तिरहित ।

निर्वेद (पु०)—अपना-तिरस्कार, स्वायमान, परदात्ताप, जीदासीन्य, विरक्ति, वैराग्य, सांसारिक पदार्थों से चर्हिमुंछ होना । वि०—वेदरहित ।

निर्वेग (पु०)—वैतन, तनव्याह, भोग-मुक्त, विषाह, प्राप्ति ।

निर्वेधन (न०)—छिद्र, मूलाग्र, दिव्य, व्यवसाय ।

दाह, पूर्णरूप से ले जाना, निः-  
शेषहरण, दाह के लिये मृतक  
का लेजाना ।

निर्हार (पु०)-गड़े हुए काटे आदि का  
निकालना, मल और मूत्रादि का  
परित्याग, मृत शरीर को दाहायं  
बाहर ले जाना, मूलोच्छेदन,  
यथेष्टविनियोग ।

निर्हारी [न्] (पु०)-वह गन्ध जो  
दूर तक फैलने वाला हो । वि०-  
शव को जलाने के लिये बाहर ले  
जाने वाला ।

निर्होद (पु०)-शब्द, आवाज, ध्वनि ।

निलय (पु०)-घर, गृह, स्थान, रहने  
की जगह ।

निलिम्प (पु०)-देवता, देव ।

निलिम्पनिर्हारी (स्त्री०)-देवनदी,  
गङ्गा । [ फी गौ, सौरभेयी ।

निलिम्पा-स्त्रिका (स्त्री०)-देवताओं  
निलीन (वि०)-छिपा हुआ, सलग्न,  
छपाट ।

नियपन (न०)-वह दान जो मृत पितरों  
के लक्ष्य से दिया जाता है ।

निघा (स्त्री०)-कुमारी, अविवाहिता  
कन्या, बट कन्या जिसका विवाह  
न हुआ हो । [ स्थान ।

नियगति (स्त्री०)-घर, गृह, आवास-  
नियस्य (पु०)-ग्राम, गाँव ।

नियस्य (न०) घर, गृह, वस्त्र, आच्छा-  
दन, वास, कपड़ा ।

निषह (पु०)-गिरीह, समुदाय, कुण्ड,  
मातृप्रकार के पर्वतों में से एक ।

निवात (त्रि०)-वायुभूय, बिना वायु  
वाला देश । पु०-ऐसा फव्व जो  
शस्त्र से न काटा जा सके, शस्त्रा-  
मैद्य फव्व ।

निवातकवच (पु०व०)-प्रह्लाद नामक  
दैत्य के पुत्र जिन्हें इन्द्र के उपदेश  
से अर्जुन ने मारा था, एक देव का  
नाम ।

निवाप (पु०)-मृत पितरों के नाम पर  
दिया दान, पितृदान, खेत, क्षेत्र ।

निवारण (न०)-निश्चय दूर करना,  
निराकरण ।

निवारित (वि०)-जिस का निवारण कर  
दिया गया हो, कृतिवारण ।

निवाल (पु०)-गृह, घर, आश्रय ।

निवासी [न्] (वि०)-निवास करने वाला,  
निवासकर्त्ता ।

निविड (वि०)-छिद्ररहित, अयकाशशून्य,  
स्थूल, मोटा, सघन, सान्द्र, घनका ।

निविष्ट (वि०)-निवेशयुक्त, प्रविष्ट, कृतप्रवेश ।

निर्घात (न०)-कण्ठ में लटका हुआ यज्ञो-  
पवीत, कण्ठलम्बित यज्ञवून । वि०-  
आच्छादनवस्त्र ।

निर्घातो [न्] (वि०)-कण्ठमेलस्थायमान यज्ञ-  
वून वाला, कण्ठस्थित यज्ञोपवीतयुक्त ।

निवृत्त (न०)-मना, निपे, हटा हुआ,  
निम्त, तोड़ा हुआ । वि०-मौनधारण  
किये हुए, मौनव्रताम्बी ।

निवृत्तात्मा [न्] (पु०)-जिसका आत्मा  
शरीरादि के बन्धन से पृथक् हो,  
पथ्यत्मा । [श्रममुक्ति ।

निवृत्ति (स्त्री०)-दटना, दूर होना, उग्रम,

निवेदन (न०)-सम्मानपूर्वक जलनागा,  
विज्ञापन, दूरगमन, समर्पण, लोपना ।

निवेदित ( वि० )-निवेदन किया हुआ,  
धिज्ञापित, कृतनिवेदन ।

निवेश ( पु० )-विन्यास, स्थापन, रखना,  
सेना के ठहरने का स्थान, विवाह ।  
निवेशन ( न० )-घर, गृह, नगर, स्थापन ।  
निवेशनीय ( वि० )-प्रवेश करने योग्य,  
निवेशार्ह ।

निवेश्य ( वि० )-निवेश के योग्य, विवाह के  
लायक, विवाह, धृष्टमुक्ति के लिये  
शोधनीय ।

निश्व ( स्त्री० )-रात्रि, रात, हल्दी ।

निशठ ( पु० )-यलदेवजी का पुत्र ।

निश[शा] सन ( न० )-दर्शन, देखना,  
सुनना, श्रवण ।

निशा ( स्त्री० )-रात, रात्रि, हल्दी,  
मेघ, वर्षा, नियुक्त, दर्क, धनु जीर  
सकर इन छानों की संज्ञा । [ मुग्धा ]

निशाकर ( पु० )-चन्द्रमा, चांद, कुक्कुट,

निशागण ( पु० )-रात्रियों का समूह ।

निशाधर ( पु० )-जो रात्रि में बिचरे,  
रातस, दैत्य, चतुर्क, चोर, मृगाल,  
सर्प, सांप, चक्रवाक, चक्रवा  
नामक पत्नी, पिशाच । वि०-रात  
में घूमने वाला ।

निशापरी ( स्त्री० )-रातसी, व्यभिचा-  
रिणी, कुलटा स्त्री । [ कार ।

निशापर्म [ न् ] ( न० )-अधेर, अन्ध-

निशाजन ( न० )-ओछ, पाछा, दर्क ।

निशाट ( पु० )-चलूक, चलू । वि०-  
रात्रि में बिचरने वाला ।

निशाटन ( पु० )-पूर्ववत् ।

निशात ( वि० )-तेज किया हुआ,  
शाप पर चढ़ा हुआ, नीलपीकृत ।

निशाद ( पु० )-भील, निषाद । वि०-  
रात्रि में भोजन करने वाला;  
रात्रिभ्रू ।

निशादि ( स्त्री० )-संध्या समय ।

निशान्त ( न० )-गृह, घर, प्रांतःकाल ।

वि०-अतिशान्त ।

निशापति ( पु० )-चन्द्रमा, कर्पूर ।

निशामणि ( पु० )-चन्द्रमा ।

निशानन ( न० )-देखना, अवलोकन,  
सुनना, श्रवण ।

निशानूय ( पु० )-शृगाल, गीदड़ ।

निशारण ( न० )-मारण, नारना, रात्रि  
का युद्ध ।

निशारतन ( न० )-चन्द्रमा, चांद ।

निशावन्द ( न० )-रात्रिसमूह, रात्रिगण

निशावेदी [ न् ] ( पु० )-कुक्कुट, मुर्ग ।

निशाठस ( पु० )-कुमुद नामक कण्ड ।

निशाह्वा ( स्त्री० )-हल्दी, हरिद्रा ।

निशित ( वि० )-शाप पर चढ़ाया हुआ,  
तेज किया हुआ । न०-छीड़ ।

निशीथ ( वि० )-गाधीरात, अर्धरात्र,  
रात्रिमात्र ।

निशीचिनी ( स्त्री० )-रात्रि, रात ।

निशीचिनीनाप ( पु० )-चन्द्रमा, चन्द्र ।

निशीय्या ( स्त्री० )-रात्रि, रात ।

निशुम्भ ( पु० )-एक दैत्य जो कि  
कश्यप की दनुनाम्नी भार्या में  
सत्पन्न हुआ और शुम्भ का  
कनिष्ठ भ्राता था ।

निशुम्भन ( पु० )-मारण, नारना ।

निशुम्भमर्दिनी ( स्त्री० )-दुर्गा का वापक ।

निशुम्भी ( स्त्री० )-युद्धविशेष, वध

बुद्धि जिम से अज्ञानकृत अन्ध-  
कार दूर हो जाये ।

निश्चय ( पु० )—सशयरहित ज्ञान,  
निर्णय, वह अर्थात्कार जिम में  
अन्य को निषिद्ध कर दूसरे प्रक-  
रणभूत की स्थापना की जाय,  
सिद्धान्त ।

निश्चल ( वि० )—चञ्चलतारहित, स्थिर,  
स्थायी, पक्का, असम्भावना और  
प्रतिकूलभावना से शुन्य, पृथ्वी,  
जमीन ।

निश्चला ( स्त्री० )—शालपर्णी नामक  
औषध, पृथ्वी, भूमि, एक नदी,  
वि०-अघल ।

निश्चलाङ्ग ( पु० )—पर्वतादि, धक,  
वगुला । वि०-स्पन्दनशून्य ।

निश्चायक ( वि० )—निर्णय करने वाला,  
निर्णायक, निश्चयकर्ता, कैसला  
करने वाला ।

निश्चारक ( पु० )—मल का क्षय, पुरीय-  
क्षय, पवन, स्वतन्त्र । [ रहित ।

निश्चित ( वि० )—चिन्ताशून्य, चिन्ता-  
निश्चीयमान ( वि० )—निश्चय किया  
विषय, निश्चितविषय, निश्चय  
किया जाने योग्य विषय ।

निश्चुक्कण ( न० )—दात साफ करने  
की मिस्सी, दन्तशण, ।

निश्चेष्ट ( वि० )—चेष्टाशून्य, निश्चेष्टित ।

निश्वास ( पु० )—मुख और नाक से  
बाहर निकला प्राणवायु, बहि-  
मुखरवास, श्वास, वास ।

निश्वाससंहिता ( स्त्री० )—शिवप्रणीत  
एक संहिता ।

निपङ्ग ( पु० )—तूणीर, तर्कश, इषुधि ।

निपङ्गधि ( पु० )—आलिङ्गन, चिपटना,  
तृणविशेष, रुक्म, सारथि, रथ,  
घनुधारी । वि०-आलिङ्गन करने  
वाला ।

निपङ्गी [ न् ] ( वि० )—धनुर्धर, धनुष्मान्,  
धन्वी । पु०-धतराष्ट्र का एक पुत्र ।

निपण ( वि० )—बैठा हुआ, चपविष्ट ।

निपद ( पु० )—सास प्रकार के स्वरो में  
से पहिला, स्वमान से प्रविष्ट  
एक राजा ।

निपद्या ( स्त्री० )—सौदा धेचने की  
जगह, हुकान, परमधिकयशाला,  
छटोला, झुद्रादा, मडी ।

निपदर ( पु० )—कीचड़, पंक, कदंन,  
जम्बाल, कामदेव का नाम ।

निपदरी ( स्त्री० )—रात, रात्रि ।

निपथ ( पु० )—एक पर्वत जो हलायुत  
के दक्षिण भाग में हरिषर्ष की  
सीमा का द्योतक है, एक देश  
और तद्देशवासी, तद्देशीय राजा,  
पठिन, सप्त सूर्यपथीय श्रीराम-  
चन्द्र का प्रपौत्र, कुशपुत्र अतिथि  
का तनय, निपाद नामक स्वर ।

निपाद ( पु० )—धीमा से उत्पन्न शब्द,  
कण्ठ से निकली ध्वनि, प्राश्न-  
वर्ण से शूद्रा में उत्पन्न पारथय  
नामक वर्णमङ्कुर आति, चण्डाल,  
धीयरभेद, एक स्वर ।

निपादी [ न् ] ( पु० )—हस्तिपाल, पीछ-

घात, हस्तपारोह, जो हाथी की  
चलावे वा बैठावे ।

निपिटु(वि०)—रोका हुआ, मना किया  
हुआ, घटाया गया, निवारित,  
निषेधविषय ।

निषेक ( पु० )—गर्भाधानसंस्कार,  
। मिंचन, सींचना । न०—रेत, घीयं ।

निषेध(पु०)—प्रतिषेध, मना, निवृत्ति ।

निषेधन(न०)—सेवा, सत्कार, पूजा ।

निषेध्य(वि०)—सेवा करने योग्य, सेव-  
नीय, पूज्य, सत्कारार्ह ।

निष्क (१० शा०)—माप करना, तोल  
करना, मान ।

निष्क (अस्त्री०)—सुवर्ण, सोना, स्वर्ण  
का घना आभूषण, वह परिमाण  
जो १६ नाये का हो, हा, वस्तुस्थल  
का भूषण, १०८ रत्तिका (रत्ती) परि-  
मित स्वर्ण, स्वर्णनिर्मितपात्र,  
४ नाये का परिमाण ।

निष्कर्म(पु०)—निर्बोह, बिस्तृत धातु  
का तख या सार, इतना परि-  
माण, इयत्तापरिच्छेद, विस्वास,  
सरोसा, यक्रीन ।

निष्कल (वि०)—कलारहित, नष्टवीर्य,  
वह पुरुष जिस का वीर्य नष्ट हो  
गया हो, ब्रह्म । पु०—आश्चर्य,  
सहारा ।

निष्कला (स्त्री०)—वह स्त्री जिस का  
रसोपमं नष्ट हो गया हो,  
विगतासंवा, बूढ़ा स्त्री ।

निष्कली (स्त्री०)—अतुहीना, निवृत्त-  
रजरका स्त्री ।

निष्काशि [वि] त (वि०)—निकाला  
हुआ, दूर किया हुआ, दूरीकृत,  
वहिकृत ।

निष्कुट(पु०)—घर की समीप का उप-  
वन, बगीचा, गृहनिक्षेपवन,  
क्षेत्र, ह्रीत, अन्तःपुर ।

निष्कुटि-टो(स्त्री०)—इलायची, प्लुता ।

निष्कुशित ( वि० )—निकाला हुआ,  
। निष्कापित ।

निष्कुपित(वि०)—तोड़ा हुआ, उपहित,  
त्रुटित, त्यचा से दूर किया हुआ ।

निष्कुह ( पु० )—पंहु की सखोडर,  
सुस्तकोटर ।

निष्कृति ( स्त्री० )—पापादि से दूर  
होना, सुही पाना, निस्तार,  
निर्मुक्ति, अग्निविशेष ।

निष्कन(पु०)—वृद्धि की शक्ति, निर्गम,  
निष्क्रमण नामक सत्कार, खोटा  
कुल, दुष्कुल । [निर्गम ।

निष्कान्त ( वि० )—निकला हुआ,  
निष्क्रिय ( न० )—ब्रह्म, परमात्मा ।

वि०—क्रियाशून्य ।

निष्ठ (वि०)—ठहरा हुआ, स्थित ।

निष्ठा(स्त्री०)—नाश, निवृत्ति, अन्त,  
याचन, प्रार्थना, प्राप्य, दुःख,  
मात्स्योक्ति में प्रस्तुत कथा की  
पूर्णता वा समाप्ति, मुक्तसेवा,  
यनादि का यक्रीन, उपाकरण में  
'क' और 'कवतु' नामक दो  
प्रत्यय ।

निष्ठिन(न०)—सम्पत् प्रकार से स्थित  
होने वाला, निश्चयरूप से स्थित,



अच्छे प्रकार से जानने वाला,  
सम्यग्ज्ञाता ।

निष्ठि [घो] व (पु०)-शून्मा, सुख से  
कफ का निकालना ।

निष्ठिवन (न०)-पूवंचत् ।

निष्ठुर (पु०)-फटिन, चरन, पक्ष-  
चचन, फटोर वचन बोलना, क्षु-  
चन निकालना । वि०-तस्व-  
भ्राय वाला । [पूका हुआ ।

निष्ठ्यूत (वि०)-जैजा हुआ, क्षिप्त,

निष्ठ्यूति (स्त्री०)-पूवंचत् ।

निष्ठेवन (न०)-पूवंचत् ।

निष्णात (वि०)-सम्यक्प्रकार से  
ज्ञान किया हुआ, चतुर, निपुण,  
विद्य, पारङ्गत ।

निष्पत्ति (स्त्री०)-पूर्ति, समाप्ति,  
पुराण, फल, परिणाम, नतीजा,  
विधि, निश्चय, अन्त ।

निष्पन्नाकृति (स्त्री०)-अतिपीडा,  
अत्यन्त दुःख, बड़ी व्यथा, वाण  
का दूसरी तरफ से निकालना ।

निष्पनिका (स्त्री०)-करीर का वृक्ष ।

निष्पदयान (न०)-वह यान जिस  
के पाव न हों, मोटा आदि ।

निष्पन्न (वि०)-पूर्ण हुआ, सम्पन्न,  
समाप्त, सिद्ध ।

निष्परिग्रह (वि०)-सांसारिक साध-  
नियों से रहित, परनहस, नन्यासी,  
साधु । वि०-त्यक्तसग ।

निष्पादित (वि०)-समाप्त किया हुआ,  
संपादन किया गया, कृतसम्पादन,  
सिद्ध किया हुआ ।

निष्ठातिभ (वि०)-दीप्तिशून्य, कान्ति-  
रहित, मूर्ख, जड़ ।

निष्प्रत्यूह (वि०)-विभ्ररहित, निर्विघ्न ।

निष्प्रभ (वि०)-कान्तिशून्य, प्रभारहित

निष्प्रयोजन (वि०)-प्रयोजनरहित,  
बिना मतलब ।

निष्फल (वि०)-बिना फल, फलरहित ।

निष्फला (स्त्री०)-बह थी । जिस  
का पक्ष वर्ण की अवस्था के उप-  
रान्त रजोधर्म नष्ट हो गया हो ।

निश्चर्ग (पु०)-स्वभाव, आदत ।

निश्चूदन (न०)-यध, हिंसन, मारना ।  
वि०-विनाशक ।

निश्चुट (वि०)-त्यक्त, खँका हुआ,  
छोड़ा हुआ, रखवा गया, नश्यत् ।

निश्चुष्टार्प (वि०)-दूतविधेय, सन्दे-  
शहारक ।

निस्तन (वि०)-तलरहित, मोल, वर्तुल ।

निस्तेजः [स्] (वि०)-तेजःशून्य,  
तेजोरहित ।

निस्त्रिंश (पु०)-तलवार, खड्ग ।

निस्पृह (वि०)-सांसारिक विषय-  
वासनाओं से रहित, स्पृहाशून्य ।

निस्पृहा (स्त्री०)-इच्छा का अभाव ।

निस्पृह [स्य] न्द (पु०)-भरना, टप-  
कना, सरण, छोड़ा २ चहना ।  
वि०-सरणशील ।

निस्त्रा [स्त्र] व (पु०)-मयाह, दरिया,  
नदी, चायलों का माह, चहना,  
भरना ।

निस्पृ [स्य] न (पु०)-शब्द, आवाज ।

निह्वन (न०)-यध, मारण, मारना,  
फटल करना ।

निहन्ता [त्] ( वि० )-मारने वाला,  
वधकर्ता, नहादेव ।

निहाका ( स्त्री० )-गोधिका, गोसाप  
नामक जन्तुविशेष ।

निहार ( पु० )-तुषार, हिम, वर्ष ।

निहित ( वि० )-स्थापित, स्थापन  
किया हुआ, गुप्त, ठहरा हुआ,  
रक्खा हुआ ।

निह्व ( पु० )-गुप्त, छिपा हुआ, अन्य  
प्रकार से स्थित वस्तु को प्रकारा-  
न्तर से प्रकटित करना, शक्य,  
अविश्वस्य ।

निहृति ( स्त्री० )-पूर्ववत् ।

निह्राद ( पु० )-वह शब्द स्पष्ट  
रूपसे जिस का अर्थ विदित न हो  
अर्थात् अठथक शब्द ।

निक्षण ( न० )-चूमना, चुम्बन ।

निक्षा ( स्त्री० )-पूका, जूँ, लहीक ।

निक्षिप्त ( वि० )-त्यक्त, त्यागा हुआ,  
न्यस्त, रक्खा हुआ, धरोहर,  
स्थापित घनादि ।

निक्षेप ( पु० )-समर्पण की हुई वस्तु,  
क्षेपण, त्याग ।

नीक ( पु० )-यक्षविशेष ।

नीकार ( पु० )-न्यङ्कार, तिरस्कार,  
धिक्कार ।

नीकाश ( वि० )-तुल्य, सदृश, धरा-  
मर, उपमा, मिश्रण, यक्रीन ।

नीच ( वि० )-पामर, चिवर्ण, घामन,  
बीना, सुद्र, जाह्नम, निहीन । पु०-  
धीर नामक गन्धद्रव्य ।

नीचकैः [स्] ( अ० )-नीचा, अल्प, अनुकच,

नीचग ( न० )-जल, पानी । वि०-

पामर । [चले, नदी, दरिया ।

नीचगा ( स्त्री० )-जो नीचे स्थान से

नीचनीज्य ( पु० )-प्याज, पलाण्डु ।

नीचैः [स्] ( अ० )=नीचकैः ।

नीह ( पु० )-घोंसला, पतियों का  
निवास-स्थान, स्थान ।

नीहज ( पु० )-पत्नी, जामवर ।

नीहजेन्द्र ( पु० )-गुरु, पतियों का राजा ।

नीत ( वि० )-प्राप्त, ले जाया हुआ ।

नीति ( स्त्री० )-न्याय, शुद्धाचार्य  
प्रभृतियों का रवा नीतिशास्त्र,  
मापण, प्राप्त करना ।

नीतिघोष ( पु० )-बृहस्पति का रथ,  
न्याय की घोषणा, न्यायध्वनि ।

नीतिशास्त्र ( न० )-वह शास्त्र जिस  
से द्वारा नीति का बोध हो, बृह-  
स्पति, शुद्धाचार्य, चाणक्य और  
कामन्दक आदि से निर्मित द्वितीय-  
देशादि ग्रन्थ ।

नीप ( पु० )-नियन्ता, जो प्राप्त करावे,  
प्रापयिता, नेत्र, स्तुति, जल ।

नीघ ( न० )-घन, चन्द्रमा, रेयती नामक  
नक्षत्र, वल्मीक, नेत्रि, घुरा ।

नीप ( पु० )-कदम्ब का वृक्ष, घन्धूक  
का पेड़, नील अशोक का वृक्ष ।

नीर ( न० )-जल, पानी, रस ।

नीरज ( न० )-कमल, मुक्ता, मोती ।

वि०-जल से उत्पन्न होने वाला,  
छुलिरहित देश या पुष्पादि ।

पु०-उद्ग नामक एक जलजन्तु ।

नीरद ( पु० )-नेत्र, दादल, नागरमोष ।

वि०-दन्तशून्य ।

नीरधि(पु०)-समुद्र ।

नीरनिधि(पु०)-समुद्र, सागर ।

नीरन्ध्र ( वि० )-छिद्ररहित, घन,  
सान्द्र, गाढ़ा, अनवकाश ।

नीरस (पु०)-अनार, दाहिम । वि०-  
रसशून्य । [ विलाय ।

नीराखु(पु०)-जलविलाय, चद्र, चद्र-

नीराजन (न०)-आरती करना, आ-  
शिवन नाचने अथवादि की पूजा  
करना, कर्पूर वा प्रकलित दीपक  
आदि से सत्कार करना, शख में  
जल, धुदुधछ प्रदर्शन, आभू-  
षणलो से सिंघन और दण्डवत्  
प्रणाम करने पूर्वक सत्कार करना ।

नीरुक् ( अस्त्री० )-रोगाभाव, स्वा-  
स्थ्य, अनामय । , [कुण्ठीयध ।

नीरुज (न०)-जिस से रोग दूर हो,

नील (पु०)-इलाहृत नामक वर्ण की  
उत्तरदिशा में इन्धकवर्ण का  
एक मर्मादापर्वत, मणिविशेष, एक  
धानर का नाम, नीला रङ्ग, निधि  
विशेष, चिन्ह, घट का वृक्ष, अन्नहीन  
वा पुत्र, नागभेद । वि०-नील-  
वर्णयुक्त ।

नीलकण्ठ(पु०)-जिस का कण्ठ नीले  
रंग का हो, महादेव, भयूर, याम-  
घटव, गाय का चिहा, राजन,  
ममोला नाम का एकपक्षी, चन्दन ।

नीलकमल(न०)-नीले वर्ण का कमल,

नीलपकज, नीलाटज । [नगी ।

नीलधुन्तला (स्त्री०)-पायंती की एक

नीलघीव(पु०)-महादेव, शिव । वि०-  
नीलवर्ण की घोषा वाला ।

नीलकु (पु०)-अतिक्षुद्र जन्तुमात्र का  
नाम, क्रिमिभेद, गीदह, गृगल ।

नीलजा(स्त्री०)-वितस्ता नामक नदी ।

नीलतरु(पु०)-मारिकेल, नारियल का  
वृक्ष ।

नीलदूर्वा(स्त्री०)-हरितवर्ण की दूर्वा ।

नीलपट्ट(न०)-अधेर, अन्धकार ।

नीलविङ्गला (स्त्री०)-एक प्रकार की  
गोशक्ति । [ श्येन ।

नीलपिच्छ (पु०)-नामक पक्षी,

नीलगणि(पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध  
गणि ।

नीलमाधव(पु०)-विष्णु, जगन्नाथ ।

नीलगीलिक(पु०)-खद्योत, जुगनू ।

नीललोहित ( पु० )-जिस का कण्ठ

नीला और बाल रक्तवर्ण के हो,  
शिव, महादेव, शिवनिमित्तक एक  
वृत्त, नील और रक्तमिश्रित रंग ।

नीलवर्णभू (पु०)-काले रंग का नैटक,  
कृष्णभेक । स्त्री०-पुनर्नया जीपधा ।

नीलवसन(पु०)-बलराम । वि०-नील  
वस्त्रो वाला । न०-नीला वस्त्र ।

नीलगवस्त्र(पु०)-पुष्पवत् ।

नीलवामा(पु०)-शनिग्रह । वि०-नील  
वर्ण के वस्त्रो वाला ।

नीलवर्ण(पु०)-कृष्णवर्ण का धैल, धूप-  
विशेष, वह धैल जिसका रंग लाल  
और सुर, पुच्छ तथा शिर श्वेत-  
वर्ण के हो । [ एक नदी ।

नीला(स्त्री०)-नीलवर्ण की मलिका,

नीलाङ्क ( पु० )-सारस नामक पक्षी,  
चास पक्षी ।

नीलाञ्जन ( न० )-नीलवर्ण का अञ्जन,  
सीवीराञ्जन ।

नीलाञ्जना ( स्त्री० )-विजली, विद्युत् ।

नीलाञ्ज ( न० )-नीलकमल ।

नीलाम्बर ( पु० )-बलराम, बलदेव,  
राजस, धनैश्वर यह । वि०-  
नीलवस्त्रयुक्त । न०-नीला वस्त्र ।

नीलाम्बुजम्ब ( न० )-नीलकमल ।

नीलाश्मा [ न् ] ( पु० )-नीलमणि,  
नीलम ।

नीलासन ( पु० )-नीलवर्ण का आसन  
नामक वृक्ष, रतिवन्धविशेष ।

नीलीराग ( पु० )-यह पुरुष जिस का  
प्रेम स्त्रिपर हो, स्त्रिप्रेमा, नील  
वर्ण, नायक और नायिका का  
पूर्वरागविशेष ।

नीलीत्वल ( न० )-नीला पद्म, नीलीकृ  
अतिमुगन्धित नीलवर्णका कमल ।

नीवर ( पु० )-वामिज्यकर्ता, भित्तुक,  
संन्यासी, कीनह, पङ्क । न०-जल ।

नीवार ( पु० )-तृणधान्यविशेष, सवां  
नामक चावल ।

नीवि-घी ( स्त्री० )-घैर्यों का मूलधन,  
स्त्रियों का कमरबन्द, कटिवस्त्र-  
वन्ध । [ विशेष कर यह शब्द  
स्त्रियों के कमरबन्द में ही प्रयुक्त  
होता है, परन्तु पुत्रों के भी  
कटिवन्धवस्त्र का याचक है ] ।

नीवृत्त ( पु० )-जहाँ बहुत जनसमूह  
रहता है, देश, जनपद ।

नीशार ( पु० )-कनात, परदा, प्रावरण,  
मशहरी, जिस से हिम और पवन  
रुक जाते हैं, हिमानिलप्रावरण ।

नीहार ( पु० )-तुषार, हिम, पाला, वर्ष  
नु ( अ० )-प्रश्न, सवाल, वितर्क,  
प्रश्नाज्ञाप, अतीत, घीटा हुआ,  
अपमान, हेतु, निश्चय ।

नुत ( वि० )-स्तुति किया हुआ, स्तुत,  
प्रशंसित ।

नुति ( स्त्री० )-स्तुति, पूजा ।

नूतन ( वि० )-नवीन, नया, अतिनव ।

नूतन ( वि० )-पूयेवत् ।

नूद ( पु० )-जो पाप वा रोग को दूर  
करे, ब्रह्मदाहवृक्ष, शहतूत का  
वृक्ष । [ दलील ।

नूनं ( अ० )-तर्क, अप्रतिश्रव्य, स्मरण,

नूपुर ( अस्त्री० )-पांव का आभूषण,  
पादगङ्गद, पांवटा, पात्रेय ।

नृकेशरी [ न् ] ( पु० )-नृसिंहावतार,  
नरश्रेष्ठ ।

नृग ( पु० )-एक राजा जो इन्द्राक्ष का  
पुत्र था जिसे गौदानविषपक्ष  
प्रसादन्य पाप से कुल्लाम  
( करकैंटा ) की योनि प्राप्त होगई  
थी, और फिर श्रीकृष्ण ने उद्धार  
पाया । यह कथा महाभारत में  
विशेष रूप से वर्णित है ।

नृकरोटिका ( स्त्री० )-मनुष्यकपाल,  
मनुष्य की खोपड़ी ।

नृचताः [ न् ] ( पु० )-देव, देवता,  
राक्षस ।

नृपलुः [ स् ] ( पु० )-सुमीयगामक  
राजा का पुत्र ।

नृत्य ( पु० )-नृत्य करना, नाचना ।

नृति ( स्त्री० )-नृत्यना, नर्तन ।

नृत्य ( पु० )-जो नृत्य करे, नाचे, नर्तक ।

नृत्त ( न० )-नृत्य, नाचना, नर्तन ।

नृत्य ( न० )-नृत्य ।

नृदेव ( पु० )-राजा, नृपति । [ धर्मयुक्त ।

नृधर्मो [ नृ ] ( पु० )-कुबेर । वि०-मनुष्य-

नृप ( पु० )-१६ कीधर्मयुक्त जिसे  
शासन का अधिकार हो, नरपति,  
राजा, षडशाह ।

नृपति ( पु० )-राजा, नरपति, कुबेर ।

नृपमित्र ( पु० )-बही प्याज, राजप-  
लायुह, शालि नामक धान्यविशेष,  
आम्रवृक्ष । वि०-राजा का मित्र ।

नृपमन्दिर ( न० )-राजा का महल,  
राजसदन, पीथ । [ कूटस्थ ।

नृपलक्ष्म [ नृ ] ( न० )-राजचिन्ह, राज-  
नृपलक्षणपर ( पु० )-जो राजा का वेश  
धारण करे, नृपवेशधारी ।

नृपसभ ( न० )-राजसभा, राजाओं के  
रहने की शाला ।

नृपात्मजा ( स्त्री० )-राजा की कन्या,  
कहती लूयी, कटुतुम्बी ।

नृपाध्यक्ष ( पु० )-राजाओं का यक्ष,  
राजमृग नामक यक्ष ।

नृपाधीर ( न० )-राजाओं के भोजन-  
समय का सूचक धाजा, भक्ततुंग,  
यह धाजा जो राजाओं के भोजन  
समय धजाया जाता है । [ यक्षमा ।

नृपामय ( पु० )-रस का रोग, राज-

नृपासन ( न० )-राजा के बैठने का  
आसन, सिंहासन, भद्रासन ।

नृपोचित ( पु० )-राजभाष, राज उरद ।

वि०-राजा के योग्य । [ सत्कार ।

नृपघ्न ( पु० )-अतिविमेषा, अतिवि-

नृपराह ( पु० )-विष्णु के घोरालिखित  
घराहायतार का वाचक ।

नृपश ( वि० )-दूसरे के साथ द्रोह  
करने वाला, परद्रोही, क्रूर, निर्दय,  
हिंसक । [ द का रक्षक ।

नृसिंह ( पु० )-घोरालिखित विष्णु, प्रलहा-  
नृसेन ( न० )-मनुष्यों की सेना ।

नृहरि ( पु० )-नृसिंहावतार, विष्णु ।

नृ ( १ प० )-न्याय करना, इन्साफ़  
करना ।

नेजक ( पु० )-धीमी, रजक । वि०-शुद्ध  
करने वाला, शोधक ।

नेता [ नृ ] ( पु० )-प्रभु, स्वामी, निम्न-  
वृक्ष । वि०-निर्वाह करने वाला,  
प्रापक ।

नेत्र ( न० )-आख, नेत्र, चक्षु, अशुक,  
मथने की रज्जु, जटा, रथ, शलाका,  
यक्ष की कह । वि०-पहुंचाने  
वाला, प्रापक, प्रवृत्त कराने वाला ।

नेत्रच्छद ( पु० )-जिनसे नेत्र ढके जाते  
हैं, पलक, मेनक । [ का गोलक ।

नेत्रपिण्ड ( पु० )-बिलास, बिहाल, नेत्र  
नेत्रयोनि ( पु० )-इन्द्र, देवराज, चन्द्रमा ।

नेत्ररत्न ( न० )-कज्जल, मुमूर्ति ।

नेत्ररोग ( पु० )-आख के रोग, पक्षुरोग ।

नेत्ररोगहा [ नृ ] ( पु० )-यक्षिकाली  
नामक यक्ष । वि० नेत्ररोगनाशक ।

नेत्रामय(पु०)-नेत्ररोग, आंखों का रोग।  
नेत्राम्यु ( न० )-नेत्रों का जल, अश्रु,  
आंशू ।

नेत्री ( स्त्री० )-नाड़ी, नद्य, लक्ष्मी,  
एक नदी। वि०-शिला देनेवाली,  
पहुंचाने वाली। [ अतिममीपत्य ।

नेदिपु ( वि० )-जो अतिनिकट हो,  
निदीयान् [स्] ( वि० )-पृथ्वत् ।

नेप ( पु० )-पुरोहित, जल, पानी ।  
नेपत्य ( न० )-वेश, नेत्रस्थान, आभू-  
षण, नाटक आदि के अनुकरण के  
लिये सज्जित भूमि, रङ्गभूमि ।

नेपाल(पु०)-अपने नामसे प्रसिद्ध देश ।

नेपालिका (स्त्री०)-नगःशिला नामक  
जीवध ।

नेम (पु०)-सनय, फाड़, अवधि,  
गयाँदा, परकोटा, कैतय, जहुँ,  
आधा, गर्त, गढ़ा, सायंकाल,  
मूछ [ जहुँ के अर्थ में प्रयुक्त  
इस शब्द की सर्वनाम संचा हो  
जाती है ] ।

नेमि ( स्त्री० )-कुएं के समीप का  
समानस्थान, चक्र की परिधि,  
रथ के पहिये का घेरा। पु०-त्रिन-  
देश का वाचक ।

नेमिपक्र ( पु० )-परीक्षितवंशीय एक  
राजा जो अशोककृष्ण का पुत्र  
था । [ क्षेत्र ।

नेमिग ( न० )-नेमिपारय्य नामक  
नेष्टा [ ष्ट ] ( पु० )-त्यष्टानामक  
देव, शक्तिवत्, जो शत्रु के अनु-  
सार वैदिकधर्म कराये ।

निकटिक(वि०)-समीपस्थ, समीपवर्ती,  
पाम में रहने वाला ।

निकट्य (न०)-समीपता, निकटत्व ।

नैरुभेद (वि०)-अनेकविध, बहु प्रकार  
का, उच्छ्वासच ।

नैकपेय(पु०)-निकपा के पुत्र राजस ।

नैगम(पु०)-उपनिषद्, ब्रह्म का प्रति-  
पादन करने वाली विद्या, वैश्य-  
जन, उपवहारी, नागर, नगर का ।

नैचिकी(स्त्री०)-उत्तम धेनु, श्रेष्ठ गौ ।

नैज ( वि० )-अपना, स्वयं, निज-  
सम्बन्धी ।

नैत्पि [त्य]क ( न० )-प्रतिदिन का  
कर्त्तव्य कर्म; नैत्पि अनुष्ठान करने  
योग्य । [दक्षता, चतुरार्ह ।

नैपुण्य-य ( न० )-चातुर्य, निपुणता,

निमित्तक (वि०)-वह कर्म जो पुत्रादि  
के जन्म को निमित्त मान कर  
किया जाय, जातकर्म आदि ।

नैमित्तिकद्वार (न०)-किसी निमित्त  
की आश्रित कर किया हुआ दान ।

नैमित्तिकलय (पु०)-वह प्रलय जो  
चारमहस्र युगों के उपतीत हो  
जाने के पश्चात् होता है, प्रल-  
यविशेष ।

नैमिपारय्य(न०)-एक तीर्थ का नाम,  
वह क्षेत्र जहां शिष्टजु ने एक  
निमेषमात्र में देव्य का नाश  
किया था । [फल, वटफल ।

नैमिषोप (न०)-वट नामक वृक्ष का

नैयायिक (वि०)-न्यायशास्त्र के पढ़ने  
वा ज्ञानने वाला, न्यायशास्त्रज्ञ ।

न्यायाध्येता, तार्किक ।

नैरन्तर्य (न०)—विच्छेदरहित होना,

लगातार सम्पादन ।

नैराश्रय (न०)—आशाराहित्य, पृच्छा-

शून्यत्व, स्वाक्षिप्त न रखना ।

नैरुक्त (वि०) निरुक्तद्वारा प्रतिपादित,

निरुक्तसम्बन्धी, निरुक्त का वेत्ता ।

नैर्ऋत (पु०)—राक्षस, पश्चिम और

दक्षिण की कोण का स्वामी, राहु ।

नैर्ऋति (स्त्री०)—नैर्ऋत कोण, दक्षिण

और पश्चिम के मध्य की दिशा ।

नगुण्य (न०)—सत्त्व, रज और तनोगुण

का अभाव, निगुणत्व, तत्त्वज्ञान

का योग । [सकार्ष, विषयवैराग्य ।

नैर्ऋत्य (न०)—नलराहित्य, शुद्धता,

नैर्ऋत (न०)—नीलापन, नीलिमा ।

नैवेद्य (न०)—देवता के लिये समर्पणीय

अन्न, देव के उद्देश्य से दातव्य

पदार्थ, देवता पर चढ़ाने की वस्तु ।

नैथ (न०)—रात्रिसम्बन्धी, रात्रि में

होने वाला ।

नैश्चिक (वि०)—निशा में होने वाला,

निशा में ठयापक । [तत्त्व ।

नैश्चर्य (न०)—निश्चयपन, निश्चि-

नैपथ्य (पु०)—निषधदेश का जल

नामक राजा, निषधदेश का पति,

एक वर्ष जिस का अधिपति

अग्नीध्र का पुत्र हरिवर्ष था,

अपने नाम से प्रसिद्ध कविवर

रघुदेव का रथा हुआ एक

काष्ठप्रस्थ । वि०—निषधसम्बन्धी ।

नैष्ठिक (पु०)—कोपपर में नियुक्त

पुरुष, कोपाध्यक्ष, राजासी, दण्ड-

क्षपति । वि०—निरुक्त [ स्वर्ण ] से

सूतीदा हुआ, स्वर्णविकार ।

नैष्ठिक (वि०)—जो सगस्त जीवनपर्यन्त

ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर गुरुकुल में

नियाम करे, ब्रह्मचारिविशेष ।

नैसर्गिक (वि०)—स्वाभाविक, स्वभा-

वगर्भित, कुदरती ।

नैस्त्रिंशिक (वि०)—तलवार से प्रहार

करने वाला, खड्गधारी ।

नो (अ०)—नहीं, अभाव, न होना ।

नोचेत् (अ०)—न हुआ तो, नहीं

तो, निषेधवाचक ।

नोधाः [स्] (पु०)—एक ऋषिका नाम ।

नोपस्थाता [स्] (वि०)—समीप में

स्थित न होने वाला, दूर रहने

वाला, दूरस्थ, दृष्ट वचन छोड़ने

वाला । [जल पर चले ।

नौ (स्त्री०)—नौका, नाव, बेड़ी, जो

नौका (स्त्री०)—नदी आदि के तर-

णार्थ काष्ठ का बनाया हुआ यान-

विशेष, नाव ।

नौकाद्वय (पु०)—नौका चढ़ाने का

द्वय, बरली, सेवणी ।

नौतायं (वि०)—नाव से पार होने

योग्य जल या देश ।

न्यकारुका (स्त्री०)—चिन्ताक्रान्ति,

मलकीट, चिन्ता का कीटा ।

न्यङ्कार (पु०)—तिरस्कार, अनादर,

येष्टजती, नीचकरण ।

न्यज (न०)—व्यभिचय । वि०—निकृष्ट ।

पु०—गहिर, जानदग्न्य, परशुराम ।

न्यग्रोध ( पु० )—बटवृक्ष, यह का पेड़,  
चार इस्त का परिमाण, ठ्यास-  
परिमाण, गांड का पेड़, शमी-  
वृक्ष, विष्णु का वाद्यक, बय को  
अधोभाग में कर के स्थित ।

न्यग्रोधपरिमाण्डल ( पु० )—बड़ पुरुष  
जो चार हाथ कड़ा हो, ठ्यास-  
परिमितोद्य पुरुष जो कहते हैं कि  
त्रैतायुग में विशेष कर होते थे ।

न्यग्रोधपरिमाण्डला ( स्त्री० )—स्त्री-  
विशेष, यह स्त्री जिस के स्तन  
व्यक्तिकठिन, नितम्ब विशाल और  
जो मध्यभाग में कृम हो ।

न्यद्रु ( व् ) ( वि० )—नीच, घीना, खड़े,  
नीचे-स्थल, निम्न, सम्पूर्णता ।

न्यद्रु ( पु० )—एक मुनि । यह युग जिस  
के बहुत जग होते हैं, पारवसिना ।

न्यद्रु ( न० )—एक सुद्वारक का नाम ।

न्यक्षित ( वि० )—नीचे फेंका हुआ,  
अधो-स्थित ।

न्यस्त ( वि० )—स्थापन किया हुआ,  
स्थापित, स्पर्क, फेंका हुआ ।

न्यस्तशस्त्र ( पु० )—मुट से विमुख हो  
निम्न शस्त्र रख दिये हों, विमु-  
क्त । वि०—तपस्त्रशस्त्र, शस्त्र  
त्यागने वाला ।

न्याय्य ( न० )—जुने हुए चावल, भूट  
सबहुल, मृदाय ।

न्याय ( पु० )—आहार, भोजन ।

न्याय ( पु० )—नीति, विजय का उपाय,  
विष्णु, गीतमप्रणीत एक शास्त्र,  
प्रतिष्ठा, हेतु, उदाहरण, उपनय

और निगम नामक पञ्चायय-  
वाक्य, युक्ति, भोग, उचित ।

न्यायी ( वि० )—न्यायानुसार कान  
करने वाला, न्यायशील, न्यायवान् ।

न्याय्य ( वि० )—न्याय से युक्त, न्याय-  
मिश्रित, न्याय से मिठा हुआ,  
उचित ।

न्यास ( पु० )—रखने योग्य वस्तु, धरो-  
हर, अमानत, स्थापनीय द्रव्य,  
भर्पण, हयाग, संन्यास ।

न्युक्त ( वि० )—अधोमुख, नीचे मुख,  
आह्लादिपात्रभेद, नीचे मुख किया  
पात्र । पु०—कुशनिर्मित लुक्, लुक् ।

न्यून ( वि० )—निम्न, निम्नोद्योग्य,  
कम, कम । [ पागल ।

न्यूनपञ्चाशद्वाय ( पु० )—उन्मत्त,  
न्योनाः [ व् ] ( वि० )—कुटिल, तिरछा,  
कूर, बदमाश ।

नृत्तिमाली [ नृ ] ( पु० )—जो ननुष्यों  
की उत्तिनिर्मित माला को  
धारण करे, शिव, महादेव । वि०—  
ननुष्यात्तिमालाधारी ।

## प

प-पदार्थ का प्रथम अक्षर । पु०—पवन,  
वायु, पण, पक्षा, पान करना,  
पीना, आघात करना, अघात ।

पञ्चक ( पु० )—भीखों का निवासस्थान,  
शहरालय, पागदालों की कुटी ।

पक्षा [ व् ] ( वि० )—पाचक, पाककर्ता,  
पाक बनानेवाला । पु०—अग्नि ।



पक्ति (स्त्री०)—पाक, मीरय, भारीपन ।

पक्तिशूल (न०)—यह शूल जो भोजन के पश्चात् पाचसमय में हो, परिणामशूल, पाकशूल ।

पक्त् (न०)—गार्हपत्य नामक अग्नि ।

पक्तिम (न०)—वह अन्न जो पका कर तैयार किया गया हो, पाकनि-  
द्वैत, पका कर सजिगत (तैयार)  
किया हुआ अन्न ।

पक्व (वि०)—पका हुआ, कृतपाक,  
परिणत, छुट्ट, विनाश के समीप,  
नाशोन्मुक्त ।

पक्वकृत (पु०)—निष्प्रका पक्ष । वि०—  
पाक करने वाला ।

पक्ववरच (पु०)—मद्य, शराव ।

पक्वधारि (न०)—पका हुआ जल,  
पक्वजल, फास्लिक, कांजी ।

पक्वधान (न०)—पका हुआ अन्न ।

पक्ववाशय (पु०)—आवाशय, अन्न  
पकने का आशय जो नाभि से  
नीचे के भाग में होता है, नाभ्य-  
धोभाग ।

पक्त् (१० व०)—स्वीकार करना, पक-  
ड़ना, ग्रहण करना, लेना ।

पंक्ष (पु०)—पक्षी, पंख, मांस का कृष्ण  
शुक्लपल नामक पतवाड़ा, कच-  
ले परे समूह अणु का बोधक जैसे—  
क्षेत्रपक्ष, पार्श्व, समीप, यह,  
न्यायमत में यह पदार्थ जिसके  
साध्य में सन्देह हो जैसे—'पर्यतो  
चन्दिमान्' यहाँ पर्यंत पक्ष में  
साध्य चन्दि सन्दिग्ध है, निम्न,

बल, विरोध, राजहस्ती, फट्ण,  
सगातीयमग्न ।

पक्षक (पु०)—पार्श्वद्वार, सिङ्की, सहाय ।

पक्ष[क्षा] घात (पु०)—अपने नाम से  
प्रसिद्ध यह, वातरोग जिसमें शरीर  
के एक तरफका अङ्ग नारा जाता है ।

पक्षचर (पु०)—चन्द्रमा, यह गगन जो  
सृषक् विचरता हो ।

पक्षज (पु०)—चन्द्रमा, चांद ।

पक्षजन्म [न्] (पु०)—पूर्वपत् ।

पक्षता (स्त्री०)—पक्ष का भाव, पक्ष  
का होना, न्यायमत में जहाँ भगि  
का अस्तित्व निर्णीत नहीं होता  
वही पक्षता का होना माना जाता  
है, ऐसा निश्चित होने पर यदि  
आनुमानिकी इच्छा हो ती भी  
पक्षता हो सकती वा मानी जा  
सकती है, अन्यथा नहीं, ऐसा  
स्वीकार करते हैं ।

पक्षति (स्त्री०)—पक्ष की मूल, प्रति-  
पदा, पहिली तिथि, पड़वा, पक्षि-  
यो के पंख की जड़ ।

पक्षद्वार (न०)—पार्श्व का दरवाजा,  
सिङ्की, द्वार ।

पक्षचर (पु०)—चन्द्रमा । वि०—पक्ष  
धारण करने वाला ।

पक्षपात (पु०)—स्नेह सन्ध्यादि के  
कारण अन्याययुक्त साहाय्य में  
गिरना, अन्याय के लिये सहा-  
यता प्रदान करना, तरफदारी  
करना, पक्षियों के पंखों का  
गिरना ।

पक्षपाणि (पु०)-गिहकी, द्वार ।  
 पक्षमूल (पु०)-प्रतिपदा, पह्या ।  
 पक्षवाहन(ग०)-पक्षी, जानवर, परिन्द ।  
 पक्षान्त (पु०)-पक्ष का अन्त, पौर्ण-  
 मासी, पूर्णिमा, अमावस्या ।  
 पक्षायवर (पु०)-पूर्ववत् ।  
 पक्षिणी (स्त्री०)-यत्तमान और जाने  
 वाले दिनों के मिश्रित रात्रि,  
 अर्धात् वसन्तमान और जाने वाले  
 दिनों के शीत की रात्रि, पक्षियों  
 का समुदाय ।  
 पक्षिक(पु०)-वात्स्यायन नामक मुनि,  
 जिसने गीतगोवर्धों पर प्रारण्य  
 निर्माण किया है । वि०-सहा-  
 यता देने वाला, साहाय्यमद,  
 , पंखों वाला ।  
 पक्षिगाला (स्त्री०)-पक्षियों के रहने  
 की जगह, चिड़ियाघर, चोंचला ।  
 पक्षिसिंह (पु०)-गरुड । [का रात्रा ।  
 पक्षिस्थानी [न] (पु०)-गरुड, पक्षियों  
 पक्षी [न] (पु०)-जानवर, परिन्द,  
 माण, तीर । [रखोहया ।  
 पक्षु (वि०)-पाचक, पाककर्ता,  
 पक्षन [न] (ग०)-नेत्रलीन, पलक,  
 किशक, कनक की केसर, पक्षियों  
 के पर, पारीक मृत् ।  
 पक्षु (पु०)-कीचड़, कदम, पाप ।  
 पक्षुच्युट (पु०)-जलमुक्त कीचड़ ।  
 पक्षुकीर(पु०)-टिटोदरी नामक पक्षी,  
 कीमटि पक्षी ।  
 पक्षुकीर (पु०)-गूकर, मृगर । वि०-  
 कीचड़ में खेलने वाला ।

पङ्कगति ( स्त्री० )-मत्स्यविशेष, एक  
 मत्स्य ।  
 पङ्कज (ग०)-कमल, पद्म ।  
 पङ्कजन्म[न] (ग०)-पूर्ववत् ।  
 पङ्कजिनी (स्त्री०)-वालाय, पद्माकर ।  
 पङ्कज (पु०)-नीलों का घर, शय-  
 रालय । [नरविशेष ।  
 पङ्कजमा ( स्त्री० )-कीचड़युक्त एक  
 पङ्कज [ प ] (ग०)-पद्म, कमल ।  
 पङ्कज (ग०)-पूर्ववत् । [वाला स्थान ।  
 पङ्कज (वि०)-कदमयुक्त देश, कीचड़  
 पङ्कज ( ग० )-कमल, पद्म, सारस  
 नामक पक्षी ।  
 पङ्क्ति ( स्त्री० )-समातीत समूह,  
 दश अक्षरों के पाद वाला एक  
 छन्द, १० की संख्या, मृत्ति,  
 पाक, महस्य, गौरव, विस्तार ।  
 पङ्क्तिप्रीय (पु०)-रावण, छद्मेश्वर ।  
 पङ्क्तिधर ( पु० )-टिटोदरी नामक  
 पक्षी, कुररी पक्षी ।  
 पङ्क्तिदूषक ( पु० )-ब्राह्म में भोजन  
 नाथें घेरे हुए ब्राह्मणों की पङ्क्ति  
 को जो दूषित करदे, अपांक्तेय,  
 ब्राह्म आदि में भोजन देने के  
 अयोग्य ।  
 पङ्क्तिपावन ( पु० )-ब्रह्म पुत्र्य जो  
 ब्राह्मदि मत्कार्य में भोजन के  
 नियमें घेरे ब्राह्मणों की पङ्क्ति को  
 पवित्र करदे, त्रेणीपवित्रकर्ता,  
 ब्राह्मभोजनयोग्य ।  
 पङ्क्तिरप ( पु० )-जिन के रप की  
 गति दशों दिशामों में हो, दश-

रथ राजा, श्रीरामचन्द्र के पिता ।

पञ्चु ( वि० )—लगड़ा, न चल सकने वाला, गतिरहित । पु०—शनैश्चर पञ्च ।

पच्य ( १८० )—पकाना, पाक करना ।

( १ आ० )—प्रकट करना, प्रसिद्धि करना, स्पष्ट करना । ( १० उ० ) फैलाना, विस्तार करना ।

पच ( वि० )—पाक करने वाला, पाचक, रसोदया ।

पचत ( पु० )—अग्नि, सूर्य, सूरज, चन्द्रमा, इन्द्र । वि०—पकाने वाला ।

पचन ( न० )—पाक, रसोई, पाकसाधन । पु०—अग्नि । वि०—पाचक ।

पचन्ती ( स्त्री० )—पाककर्त्री, पाक यगाने वाली स्त्री । [ रसोदया ।

पचमान ( वि० )—पाचक, पाककर्ता, पचस्पचा ( स्त्री० )—दाकड़रही । [ वाली

पचा ( स्त्री० )—पाककर्त्री, पाक यगाने पचि ( पु० )—अग्नि, आग, पचन ।

पचेरिच ( पु० ) अग्नि, सूर्य । वि०—पाककर्ता के परित्रन बिना ही स्वयं पचने वाला ।

पचेलुक ( पु० )—पाचक, गृह, पाककर्ता । पच ( १५० )—लापटादन करना, टुकना ।

पउन ( पु० )—चिष्णुके चरणां से सत्पन्न हुआ, गृह, सीया यणे ।

पठभटिका ( स्त्री० )—एक छन्द निग के प्रत्येक पाद में १६ मात्रा होती है । [ याचक ।

पद्म [ म्र ] ( मि० )—५ की गहरा का पद्म ( न० )—५ की गहरा, पाचो का

भाग, धनिष्ठादि रेवतीपर्यन्त ५ नक्षत्र, सुहृभूमि, रणक्षेत्र, पाचो से खरीदा हुआ ।

पञ्चकपाल ( पु० )—पञ्चविधेय । न०—पाच कपालो का समूह ।

पञ्चकर्म ( न० )—वैद्यकगत में—घनन, विरेचन, नस्य, निरुहण और अनुयासा ये पाच कर्म; स्थाप-शास्त्र में—उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुञ्चन, प्रसारण और गमन नामक पाच कर्म हैं ।

पञ्चकोप ( पु० )—वेदान्त में अग्नय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आत्मन्दमय नामक पाच कोपो का वाचक ।

पञ्चगव्य ( न० )—गौ की पाच दस्तुर्गों के मेष, यथा—दधि, दुग्ध, घृत, गोमूत्र और गोबर [ प्रायश्चित्त-विधेय में कर्तव्य की दृष्टि के लिये दूध का सेवन किया जाता है ]

पञ्चचूडा ( स्त्री० )—पाच धिसा [ चोटी ] युक्त एक अक्षरा का नाम ।

पञ्चजन ( पु० )—पुरुष, मनुष्य, एक वैद्य-विधेय [ कहते हैं जिसकी प्रस्थि-यो से गोकरण का पाञ्चजन्य नामक शंख निमित्त हुआ ] ।

पञ्चजनी ( स्त्री० )—विश्वकव की कन्या पञ्चजनीन ( पु० )—पञ्चजनो के लिये दित । वि० पञ्चजनन्यम्भी ।

पञ्चघान ( पु० )—सुहृ, जिसे पाच पदार्थों का ज्ञान हो ।

पञ्चतस्य ( न० )—पृथ्वी, जल, अग्नि,

वायु और आकाश नामक पांच तत्व; तन्त्रशास्त्रों के मन्त्र, मंत्र, मन्त्र, मुद्रा और मैथुन का वाचक।

पञ्चतपाः [ च ] ( वि० )—चार अग्नि और पांचवां सूर्य इन के मध्य में बैठ कर तप करने वाला, अग्नि-चतुष्टय और पञ्चम सूर्य से वाच्य तप से युक्त। [ पञ्चापवधयुक्तः ।

पञ्चतम ( वि० )—पांच अवधियों वाला, पञ्चतन्त्रनाम ( न० )—तमोगुणी ब्रह्म-ज्ञान से उत्पन्न पांच महाभूतों के शब्द, स्वर्ण, रूप, रस और गन्ध नामक पांच विषय।

पञ्चता ( स्त्री० )—पांच भूतों का एक-भाव, मृत्यु, निषण्ण, मोक्ष।

पञ्चतीर्थी ( स्त्री० )—ज्ञानवापी, नन्दि-केश, तारकेश, महाकालेश्वर और दण्डवाणि नामक पांच तीर्थ।

पञ्चतप ( न० )=पञ्चता।

पञ्चदशी ( स्त्री० )—अमावस्या, पूर्णि-मा, श्रीमन्नक्षत्रों के विद्यारण्य-मुक्तिस्त वेदान्त का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ। [ प्रकार से।

पञ्चधा ( ज० )—पांच तरह से, पांच पञ्चतस्य ( पु० )—हस्ती, कूर्म, कच्छप, वृषाच।

पञ्चनद ( पु० )—गन्ध, विषाधा, वसवती, चन्द्रमागा और वितस्ता नामक पांच नदियों से युक्त देश, पञ्जाब, कश्मीर।

पञ्चपत्नी [ न ] ( पु० )—प्रथम कहने में उपयोगी एक उद्योग का ग्रन्थ।

पञ्चप्रासाद ( पु० )—पांच शिवरों से युक्त महल, देवमन्दिरविशेष।

पञ्चवन्ध ( पु० )—मष्ट द्रव्य का पञ्च-मांश दण्ड।

पञ्चभूत ( न० )—पृथ्वी, वायु, अग्नि, वायु और आकाश नामक पांच भूतों का समूह।

पञ्चम ( वि० )—पांच की संख्या पूरी करने वाला, पांचवां। पु०—सात प्रकार के स्वरों में से पांचवां। न०—मैथुन, विषयभोग।

पञ्चमहायज्ञ ( पु० )—ब्रह्मविषयों को नित्य कर्तव्य पांच यज्ञ यथा—ब्रह्मयज्ञ, विषयज्ञ, देवयज्ञ, भूत-यज्ञ और ज्ञयज्ञ।

पञ्चमार ( पु० )—अलक्ष्मण जी का पुत्र, जो पांच इन्द्रियों में आसक्त हो।

पञ्चमार्ग्य ( पु० )—पञ्चम राग गिरि का मुग या स्वर हो, कोयल, कोकिल।

पञ्चमी ( स्त्री० )—पाचहों की पत्नी, द्रौपदी, पांचवीं तिथि, विद्याभेद, नदीविशेष। [ का नाम।

पञ्चमुग ( पु० )—गङ्गादेव, शिव, रुद्राक्ष पञ्चरत्न ( न० )—पांच प्रकार के रत्न यथा—स्वर्ण, हीरक, नीलगि, पद्म-राग, और मुक्ता।

पञ्चलक्षण ( न० )—पुराण के पांच लक्षण यथा—भग्न, प्रतिभग्न, यश, मन्वन्तर और यगानुपरित।

पञ्चयज्ञ ( पु० )—शिव, महादेव, पांच मुग का उद्गात।

पञ्चयत्री ( स्त्री० )—यष्ट, वीरल, आद-

खा, विरवं श्रीर अशोक नामक  
पाँच दूतों का समूह, दण्डक  
वन में उस स्थान का नाम जहाँ  
श्रीरामचन्द्र जी ने सीता और  
लक्ष्मण के साथ बहुकालपर्यन्त  
वास किया था।

पञ्चधाण (पु०)—जिस के पाँच धाण  
हैं, कामदेव, चम्पय।

पञ्चशर (पु०)—पूँववत्।

पञ्चशास्त्र (पु०)—जहाँ शास्त्राकार पाँच  
अंगुलिपा हैं, हस्त, हाथ, कर।  
वि०—पञ्चधाणायुक्त।

पञ्चविध (पु०)—सिंह, शेर, चर्म की  
हिंसा भाषा में उत्पन्न एक मुनि।

पञ्चसूना (स्त्री०)—जीवों की हिंसा के  
पाँच स्थान यथा—घुलछी, चक्री,  
गहसानगी, चुहारी और जल का  
घड़ा रखने का स्थान।

पञ्चवाग्नि (पु०)—पाँच वाग्निधियों का  
उपासक। वि०—पाँच वाग्नि बाला

पञ्चाङ्ग (न०)—एक वृत्त है त्वक्, पत्र,  
पुष्प, मूल और फल का समाहार,  
तिथि, वार, नक्षत्र, योग और  
करणात्मक पाप, पुरुषचरण विशेष  
यथा—अप, मंग, तपण, वासिपेक  
और विप्रभांजन। पु०—कच्छप,  
कमठ, फलुआ, अत्रयविशेष, प्रणा-  
ममेद, राजनीति।

पञ्चाङ्गसूत (पु०)—कच्छप, फलुआ।

पञ्चाङ्ग (पु०)—एक वृत्त का वृत्त।

पञ्चाभय (स्त्री०)—तपस्याविशेष।

पञ्चाग्न (पु०)—सिंह, शेर, अग्निभय-

ङ्कर, ज्योतिषशास्त्रीक सिंह-  
राशि, पाँच मुख का रुद्राक्ष।

पञ्चामृत (न०)—दूध, दधि, शर्करा, घृत  
और मधु ये पाँच वा इन से बना  
पदार्थ। [भाष।

पञ्चाम्नाय (पु०)—एक तन्त्रग्रन्थ का  
पञ्चाल (पु०)—देशविशेष, सद्देशनिवासी  
जन, उस देश का नृपति। [यह  
शब्द बहुवचनान्त भी होता है]।

पञ्चालिका (स्त्री०)—पुतली का वाद्यक।

पञ्चाली (स्त्री०)—यस्त्रनिर्मित पुतली,  
गुड्डी, गुडिया, गीतविशेष।

पञ्चावस्थ (पु०)—मृतक, मुदा, शव।

वि०—पञ्च अवस्थाओं से युक्त।

पञ्चाशत (स्त्री०)—५० की संख्या का  
वाद्यक, पचास।

पञ्चाक्षय (पु०)—सहादेव, शिव। वि०—  
पञ्चमुच बाला।

पञ्चेन्द्रिय (न०)—पाँच ज्ञानेन्द्रिय जो  
त्वक्, नेत्र, रश्मि, कर्ण और  
वाक् हैं।

पञ्चेष्ट (पु०)—कामदेव, रतिपति।

पञ्चोपविष (न०)—पाँच प्रकार के उप-  
विष जो स्तुही [गुरुवृद्ध], अर्क,  
करवीर छागनी [कलिहारी] और  
कुचला कहे हैं।

प [ वि ] झर (अस्त्री०)—जरीर की  
हृदयों का समूह, पत्नी आदि के  
सांधने की लम्ब वस्त्रों का पित्रा।

पञ्चराशेठ (पु०)—मछली मारने का  
एक प्रकार का उपाय, फाँटा।

पञ्चि-श्री (स्त्री०)—गृन्थाचनतालिका

अर्थात् सूत की अही ।  
 पञ्चिकारक (पु०)-कायस्थजाति ।  
 पट् ( १ प्र० )-जाना, गमन करना ।  
 ( १० उ० )-दीप्ति, चमकना, वेष्टन,  
 लपेटना ।  
 पट ( अस्त्री० )-वेष्टन, वस्त्र । पु०-  
 पियाल नामक वृक्ष ।  
 पटकार(पु०)-जुलाहा, चित्रकार ।  
 पटकुटी (स्त्री०)-कपड़े का घर, तम्बू,  
 खेमा । [ पटग्रह शब्द का भी  
 यही अर्थ है ] ।  
 पटच्छर(न०)-शीर्षवस्त्र, पुराता वस्त्र ।  
 वि०-जो अपने को कपड़े से  
 लपेट कर चलता है । पु०-पीर ।  
 पटमग्रहप ( पु० )-वस्त्रो का बनाया  
 ग्रह, वस्त्रकुटी ।  
 पटमय ( न० )-वस्त्रग्रह, पटमन्दिर ।  
 पटल (न०)-नैत्ररोग, छत, परिच्छद,  
 चामरी, पिठारी, परदा । पु०-  
 ग्रन्थविशेष, वृक्ष का नाम ।  
 पटवाप (पु०)-पटमन्दिर, वस्त्रग्रह ।  
 पटवासक (पु०)-वह चूर्ण जो वस्त्रो  
 को सुगन्धित करता है, केशरादि  
 चूर्ण, गुलाब ।  
 पटह( अस्त्री० )-ढोल, ढक्का नामक  
 वाजा । पु०-युद्धक्षेत्र में वाद्य-  
 मान ढोल । [ अरही ।  
 पटाका ( स्त्री० )-पताका, ध्वजा,  
 पटिष्ठ(वि०) अतिनिपुण, अतिशयपटु ।  
 पटी(स्त्री०)-कनात, जवनिका ।  
 पटीयान्[स] (वि०)-कार्यदक्ष, अति-  
 शय पटु ।

पटीर(न०)-खेत, क्षेत्र, चालनी, मेघ,  
 कामदेव, उदर, पेट, खदिर,  
 उच्छ, चन्दन ।  
 पटु(पु०)-पटोलपत्र नामक औषध ।  
 वि०-चतुर, दक्ष रोगरहित, नपुंसक,  
 तेज, स्फुट, साक्ष ।  
 पटुकल्प(वि०)-कर्मचतुर, अल्पनिपुण ।  
 पटुजातीय (वि०)-अतिशयपटु, पटु  
 प्रकार ।  
 पटुरूप(वि०)-बहुत निपुण, अतिदक्ष ।  
 पटोल( पु० )-अपने गान से प्रसिद्ध  
 एक लता । न०-वस्त्रविशेष ।  
 पट ( न० )-शहर, नगर, चौक, पटडा,  
 ढाल, राजसिंहासन, रेशमी वस्त्र ।  
 पु०-पीसने का पत्थर, शिख ।  
 पटज ( न० )-रेशमी वस्त्र ।  
 पटदेवी (स्त्री०)-पटरानी, महादेवी,  
 राजनहिणी, वह राजपत्नी जिस  
 का राजा के सहित अभिषेक किया  
 गया हो ।  
 पटन (न०)-पत्तन, शहर, नगर, राज-  
 धानी, मुख्य नगर ।  
 पटार्हा (स्त्री०)-पटरानी, महादेवी ।  
 पटिष्ठ [स] ( पु० )-कुल्हाड़ी, परशु,  
 अस्त्रविशेष ।  
 पट ( १ प्र० )-वाचना, पढ़ना, लिखे हुए  
 अक्षरों का पठन ।  
 पठन(न०)-वाचन, पढ़ना ।  
 पठि(स्त्री०)-पूजक ।  
 पठित(वि०)-पढ़ा हुआ, अधीत, वाचित,  
 पाठ किया हुआ, उद्धरित ।

पठितव्य(वि०)-पढ़ने योग्य, पठनीय,  
पाठ करने योग्य ।

पङ् ( १ आ० )-जानना, समझकरना  
और प्राप्त करना । (१०५०)-इकट्ठा  
करना, राशिकरण ।

पण् (१आ०)-सूरीदना, बेचना, स्तुति  
करना, प्रशंसा करना ।

पण (पु०)-वह धन जिस से व्यवहार  
क्रिया जाता है, मूलधन, पसा,  
जुआ, द्यूत, दाव, गृह, नियम,  
विष्णु, ८० कौड़िया, चारकाफिषी,  
पूँजी ।

पणधन्वि(स्त्री०)-दुकान, हट ।

पणन(न०)-विक्रय, बेचना ।

पणकर(न०)-उद्योतिपशास्त्रीकृत लग्न  
से द्वितीय, पद्मन, अष्टम और  
एकादश स्थान का नाम ।

पणव ( जस्त्री० )--पट्टविशेष, एक  
प्रकार के ढोछ का नाम । [द्रव्य ।

पणस (पु०)-उपायहारिक धन, परम-  
पणाङ्गना(स्त्री०)-वेश्या, चाराङ्गना ।

पणाया (स्त्री०)-लेना देना रूप व्यव-  
हार ।

पणायित (वि०)-प्रशंसा किया हुआ,  
प्रशंसित, सरीदा हुआ, बेचा हुआ,  
[पणित भी इसी अर्थ में प्रयुक्त  
होता है] ।

पणास्त्रिप-८(न०)-कपर्दिका, कौडी ।

पणितव्य(वि०)-सूरीदने योग्य, बेचने  
लायक, विशेष द्रव्य, स्तुति करने  
योग्य, स्तोतव्य ।

पण्ड ( पु० )-वह पुरुष जो कार्य के

साफल्य की प्राप्ति न हो । वि०-  
निष्फलप्रयत्नवाला ।

पण्डा (स्त्री०)-तत्त्वानुगानिनी बुद्धि,  
वह बुद्धि जो उत्तमानुत्तम के विचार  
से युक्त हो ।

परिहृत(पु०)-वह पुरुष जिस की बुद्धि  
पदार्थ के तत्त्व की अच्छे प्रकार से  
जानने में समर्थ हो, शास्त्रमर्म-  
वेत्ता, निपुण ।

परिहृतमग्नय(वि०)-अपने को परिहृत  
जानने वाला, जो आपेको परिहृत  
जानता हो ।

परिहृतमानी [न्] (वि०)--जिसे अपने  
पारिहृत्य का अभिमान हो, परिहृ-  
ताभिमानि । [ तटप द्रव्य ।

परय (वि०)-बेचने योग्य द्रव्य, पणि-  
परयधीचिका ( स्त्री० )-दुकान, हट,  
कौदा बेचने का स्थान [ परय-  
धीधी, परयशाला आदि शब्द भी  
इसी अर्थ में होते हैं ] ।

परमस्त्री (स्त्री०)-वेरपा, चाराङ्गना,  
कंजरी ।

परयाङ्गना(स्त्री०)-पूयंघत् ।

परयाजीव (पु०)-जिस का आजीवन  
लेनदेन हो, घेइप, घणिजन,  
व्यवहारी ।

पत् (१प०)-जाना, समझ करना, गिरना,  
नीचे जाना । [ वाला ।

पत(पु०)-पुष्ट, दृढ । वि०-पतन करने

पतग(पु०)-पक्षी जानवर, परिन्द ।

पतङ्गम(पु०)-मृग, पक्षी, शलभ, गहुए  
या घृत । [ मधुमक्षिका ।

पतङ्गिका (स्त्री०)-शब्द की गणना,

पतञ्जिका (स्त्री०)—प्रत्यक्षा, धनुष का चित्ता ।

पतञ्जलि(पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध, मुनि जो कि पाणिनि मुनि के सूत्रों पर भाष्यकर्ता और पातञ्जल दर्शनादि ग्रन्थों का निर्माता । हुआ है, नाट्यकार ।

पतत्र(न०)—पंख, पल ।

पतत्रि(पु०)—पत्नी, आनन्द परिरुद्ध ।

पतत्रो[न्] (पु०)—पूँछवत् । [पात्र ।

पतद्वपह (पु०)—पीकदात्री, भूकने का ।

पतद्वीह (पु०)—वाज नामक पत्नी, ज्येष्ठ । [गिरने वाला ।

पतन[त्] (पु०)—पक्षी, परिरुद्ध । वि०—

पतन(न०)—पात, गिरना, पाप ।

पतम(पु०)—चन्द्रमा, पत्नी ।

पतयालु (वि०)—गिरने के स्वभाव वाला, पतनशील, पातुक ।

पताका(स्त्री०)—ध्वजा, कंठी, त्रिकोणाकार बांस पर लटकता हुआ । कपड़ा, सौभाग्य, नाटक का अङ्गविशेष ।

पताको [न्] (वि०)—पताका धारण करने वाला, ध्वजाधारी ।

पति(पु०)—भर्ता, पाणिग्रहीता, स्वामी, रमण, गृही, प्राणनाथ । वि०—अधिपति, स्वामी, ईश्वर, नायक ।

पतिधरा (स्त्री०)—वह कन्या जो स्वेच्छा से पति को पसन्द करे, स्वयंवरा ।

पतिघ्नी(स्त्री०)—पति का नाश करने वाली हस्त की रेखाविशेष,

हाथ की वह रेखा जिस से पति नष्ट हो जाय, वैधव्यमूचक रेखा ।

पतित(वि०)—अपने मदाचार वा धर्म से भ्रष्ट हुआ, चलित, कम्पित ।

पतिध्वी(स्त्री०)—सौभाग्यवती, सुदानन, सधन स्त्री ।

पतिव्रता(स्त्री०)—सुचरित्रा, साध्वी, लती, वह स्त्री जो अपने ही पति से अनुराग रखती है ।

पत्तन(न०)—नगर, शहर, मृदङ्ग वाला

पत्ति(पु०)—गति, वह सेना जो पैदल, जले, १ हस्ती, २ रथ, ३ अश्व और ४ पैदलों की संख्या वाली सेना । [मसूह ।

पत्तिबंधति (स्त्री०)—पदातिषों का पतनी (स्त्री०)—विधिपूर्वक वेद के भन्त्रों से विवाहित स्त्री, यज्ञ-कर्म में पति के साथ रहने वाली स्त्रियाँ ।

पहन्याट(पु०)—पतनीगृह, भार्यास्थान ।

पत्र(न०)—पलाश, पत्ता, पर्ण, पंख, कागज, बिट्टी, झत, लिपि ।

पत्रकूच्छ (पु०)—व्रतविशेष, पर्णकूच्छ नामक घृत ।

पत्रदारक(पु०)—लकड़, आरा ।

पत्रपरशु (पु०)—खेती, स्वर्णादि के काटने का साधन, मृगशूत्र ।

पत्रभङ्ग (पु०)—स्तन, कपोलादिकों पर पत्राकार कस्तूरी आदि का लिखा हुआ तिलकविशेष ।

पत्रवीचन(न०)—नवीन पत्र, तथा पत्ता ।

पत्ररथ(भस्त्री०)—पत्नी, विद्वान् ।



पत्रवाह(पु०)-घाण, तीर ।

पत्रनूचि(स्त्री०)-काटा, कटक ।

पत्राङ्ग(न०)-लालचन्दन, पद्मक ।

पत्राङ्गन ( न० )-रोशनाई, स्थायी, मयी । [सुत ।

पत्रिका(स्त्री०)-पत्री, चिट्ठी, लिपि,

पत्री[न] (पु०)-पक्षी, जानवर, बाघ, तीर, धर, राज नामक पक्षी,

रयाखड पुरुष, पर्वत, पहाड ।

पनी(स्त्री०)-लिपि, पत्र, सुत ।

पत्सल(न०)-माग, रास्ता, पन्था ।

पघ्(१ पु०)-जाना, गमन करना ।

पघ (पु०)-माग, पन्था ।

पधिक(वि०)-यात्री, मुसाफिर, मार्ग में चलने वाला ।

पधिकचन्तति(स्त्री०)-यात्रियों का समूह, मुसाफिरी का गिरोह ।

पधिल(वि०)-पधिक, मुसाफिर ।

पध्म(वि०)-चिकित्सोपयोगी और रोगपीडित अनुप्य के लिये हितकर वस्तु, सुख करने वाला ।

पध्मा(स्त्री०)-हरीतकी, हेड ।

पद् ( ४भा० )-जाना, गमन करना ; (१० भा०)-जाना, हरकत करना ।

पद ( न० )--चिन्ह, पाद, इछरेक का चतुर्थ भाग, सुबन्त और तिङन्त शब्द, पादचिन्ह । पु०-किरण ।

पदर(पु०)-पदघ्न, पद का छाता ।

पदग(पु०)-पदाति, पैदल । वि०-पावों से गमन करने वाला ।

पदवि दी(स्त्री०)-मार्ग, पन्था, राह ।

पदाङ्ग(पु०)-पाव के चिन्ह, पादचिन्ह

पदाति(पु०)-श्री पावों से चले, पैदल ।

पदाति(पु०)-पूर्ववत् ।

पदार(पु०)-पावों की धूलि, पादरज ।

पदार्थ ( पु० )--पद से ज्ञातव्य वस्तु, भाव, तत्त्व, अभिधेय, धर्म, वस्तुमात्र, सत्त्व, ज्ञायमान में द्रव्य, गुण, कर्मादि सात पदार्थ ।

पदासन ( न० )-पावों का आसन, पादपीठ ।

पदिक(पु०)-पदाति, पैदल, पदगामी ।

पद्म(पु०)-पूर्ववत् ।

पद्मति-ती ( स्त्री० )-मार्ग, रास्ता, धर्म, पद्धति, सस्कारादि का बोधक ग्रन्थविशेष-जैसे विवाह-पद्धति आदि ।

पद्म ( न० )-कमल, अरविन्द, हस्ती के मुखादि पर स्थित बिन्दु-समूह, सेना की शक्काकार ठूप्-रचना, निधि का वाचक, दशा-बुन्द की संख्या, सीधा, पीहकर-मूल, देहस्थ पद्माकार नाडीचक्र । पु० -मार्गविशेष ।

पद्मकेशर ( पु० )--कमल की केशर, किञ्चलक ।

पद्मगर्भ(पु०)-ग्रन्था, विष्णु, शिव ।

पद्मतन्तु(पु०)-कमल के तन्तु, कमल-नाल, मूखाल ।

पद्मनाभ ( पु० )-जिह्व की नाभि में कमल हो, विष्णु ।

पद्मनाभि(पु०)-पूर्ववत् ।

पद्मनाल(न०)=पद्मतन्तु ।

पद्मपत्र ( न० )-पोहकरमूल नामक

भीषण, कमल का पत्ता । [ पद्म-

पत्रं का भी यही अर्थ है ] ।

पद्मपाणि(पु०)-ब्रह्मा, बुद्ध, सूर्य ।

पद्मपुराण ( न० )-१८ पुराणान्तर्गत एक पुराण ।

पद्मपुराण(पु०)-कर्णिकार नामक वृत्त, विकार नामक पत्ती ।

पद्मप्रिया(स्त्री०)-जरत्कारु मुनि की पत्नी, मनसादेवी ।

पद्मवन्ध ( पु० )-चित्रकाव्यविशेष, शब्दालंकारभेद ।

पद्मवन्ध(पु०)-सूर्य, जमर ।

पद्मन्(पु०)-जिस की उत्पत्ति कमल से है अर्थात् ब्रह्मा ।

पद्मयोनि(पु०)-ब्रह्मा ।

पद्मराग(पु०)-रक्तवर्ण की एक मणि-विशेष, माणिक, छाल नामक प्रसिद्ध रत्न । [ कुवेर, राजा ।

पद्मछाज्ज(पु०)-सूर्य, ब्रह्मा, धिय, पद्मछाज्जता(स्त्री०)-सरस्वती, लक्ष्मी ।

पद्मबाधा ( स्त्री० )-जिस का घास कमल में हो अर्थात् लक्ष्मी ।

पद्मबीज(न०)-कमलबीज, कमलगद्दा नाम से प्रसिद्ध द्रव्य ।

पद्मबीजाक्ष ( न० )-मछाना नामक प्रसिद्ध पदार्थ । [ देवी ।

पद्मा ( स्त्री० )-लक्ष्मी, लज्जा, मनसा

पद्माकर ( पु० )-कमलोत्पत्तिस्थान, तड़ाग, सरोवर ।

पद्माल(न०)-पद्मबीज, कमलगद्दा ।

पद्माष्ट(पु०)-चक्रमर्द, चक्रवर्ध नामक वृत्त ।

पद्मालया(स्त्री०)-लक्ष्मी, लज्जा ।

पद्मावतीप्रिय(पु०)-जरत्कारु मुनि ।

पद्मासन ( न० )-योगशास्त्र में एक आसनविशेष । पु०-ब्रह्मा ।

पद्मिनी ( स्त्री० )-पद्मसमूह, कमल वाला देश, पद्मलता, एक प्रकार की औरत ।

पद्मिनीकान्त-वल्कल(पु०)-सूर्य ।

पद्मी[न] (पु०)-हाथी । वि०-कनडाँ वाला ।

पद्मेशय(पु०)-विष्णु ।

पद्म(न०)-कविकृति, झोकरविशेष ।

पद्म ( पु० )-पैरों से उत्पन्न हुआ अर्थात् शूद्र ।

पद् ( १भा० )-स्तुति करना, प्रशंसा करना, तारीफ़ करना ।

पद्म (पु०)-कटहल नाम से प्रसिद्ध एक प्रकार का फलवृक्ष ।

पद्मविका (स्त्री०)-तृद्वारोगविशेष ।

पद्मा (पु०)-रह्या, रास्ता, मार्ग ।

पद्म (वि०)-गिरा हुआ, क्षुप्त ।

पद्म (पु०)-सर्प, साँप ।

पद्मकेशर ( पु० )-नागकेशर नामक प्रसिद्ध भीषण ।

पद्मगाशन ( पु० )-साँपों को खाने वाला अर्थात् गरुड ।

पद्मगी (स्त्री०)-सर्पिणी, भुजङ्गी ।

पद्महा (स्त्री०)-चर्मपादुका, झूठा ।

पद्मि (पु०)-चन्द्रमा ।

पद्मी (पु०)-सूर्य, चन्द्र । [ गद्दी ।

पद्मा ( स्त्री० )-दक्षिण देश में एक पद्म (१भा०)-ममन करना, नाता ।

पयश्चय (पु०)-जलसमूह, पूर, बाढ़ ।

पयस् [ः] ( न० )-जल, पानी, दुग्ध, क्षीर ।

पयस्कन्द ( स्त्री० )-क्षीरविदारि, दूध वाली विदारिकन्द नामक औषध ।

पयस्य ( वि० )-दुग्धविकार घृत दधि आदि । पु०-विडाल, विडाल ।

पयस्या ( स्त्री० )-दुग्धिका, दुही, क्षीर-काकोली, अर्कपुष्पः ।

पयस्थिनी ( स्त्री० )-दूधवाली [धेनु], पानी वाली [ नदी ], धकरी, जीवन्ती नामक औषध ।

पयोचन ( पु० )-चनोपल, ओला ।

पयोधर ( पु० )-नेत्र, दादल, स्त्रीस्तन, नारियल ।

पयोधाः-धि ( पु० )-समुद्र, जलाधार ।

पयोनिधि ( पु० )-पूर्वोक्त ।

पयोवृत्त ( पु० )-एक प्रकार का वृत्त जो १२ दिन में समाप्त होता है जिसमें केवल दुग्धपान ही किया जाता है ।

पर ( वि० )-अन्य, दूसरा, अगला, दूर, श्रेष्ठ, मोक्ष । न०-अल । पु०-शत्रु, दुश्मन ।

परकीप ( वि० )-परमप्रपन्धी, दूसरे का ।

परकीया ( स्त्री० )-साधिकाभेद, उप-साधिका ।

परात्त ( न० )-परमाया, दूसरे की पराधीन ।

पराम्पि ( पु० )-अद्भुतियों की गण, अद्भुतिपथ ।

परकन्द ( वि० )-परतम्य, पराधीन, दूसरे के अधीन ।

परच्छिद्र ( न० )-दूसरे के ऐव, परदोष ।

परजात ( वि० )-अन्य से उत्पन्न, दूसरे से मांयित । पु०-कोयल, कोकिल ।

परजित ( वि० )-शत्रु से जित्ता हुआ, परास्त, दूसरे से पुष्ट हुआ ।

परज्ज ( पु० )-तैल निकालने का यन्त्र, कोल्हू, सेन, आग ।

परज्जन ( पु० )-पश्चिम दिशा का स्वामी, यक्ष ।

परज्जय ( पु० )-शत्रुविजयकर्ता, यक्ष ।

परतन्त्र ( वि० )-पराधीन, दूसरे के वश में परब्रह्मी ( वि० )-परलोक का भय नान-

में वाला, धर्मात्मा, धार्मिक ।

परतथ ( न० )-भेद, परता, न्यायमत्त में सिद्ध गुणविशेष ।

परदार ( पु० )-दूसरे की भार्या, परदारा

परदुःख ( न० )-दूसरे की पीड़ा, अन्य-जनसम्यन्धी दुःख ।

परद्वेषी ( वि० )-दूसरों के साथ द्वेष करने वाला, परद्वेषी, विदूषक ।

परन्तप ( वि० )-शत्रुओं को सन्तानित करने वाला, इन्द्रियदमनशील,

सामय नामक मनु का एक पुत्र, गणपदेशाधिपति एकराजा ।

परपिपादा ( वि० )-दूसरे का जन्म खाने वाला, परान्तोपयोगी ।

परपुत्र्य ( पु० )-पितृपुत्र, परमात्मा, अन्य पुत्र्य, उपनायक ।

परपाट ( पु० )-कोयल, कोकिल ।

[ यह शब्दों में प्रसिद्ध है कि योपल अपने अपने बने स्वयं को ही भगवत् के दोषों के कारण काही

[ कौवी ] के घोंसले में रख आती और वह उसका निजसन्तापयुक्ति से पालन पोषण करती है पतदर्थ ही कोकिल के 'परपुष्ट' 'परभृत' इत्यादि नाम हैं ]। [ धीमा ।

परपुष्टा(स्त्री०)-वेष्या, वाराङ्गना, परा-  
परपूर्वा ( स्त्री० )-वह स्त्री जो अपने  
पति को निकृष्ट समझ कर अन्य-  
पतिको उत्कृष्ट जान उस से प्रेम रख-  
ती हो, पुनर्भू, स्वैरिणी ।

परभाग(पु०)-अत्यन्त गुणोत्कर्ष, अत्यु-  
त्तमता, खण्ड, उत्तमाश, दूसरे का  
द्विषा ।

परजुक्ता(स्त्री०)-अन्य पुरुष से प्रीति  
हुई स्त्री, परपुरुषसंगवतीनारी ।

परभृत(पु०)-काक, कौआ ।

परभृत(पु०)-कोकिल, कौयल ।

परम् ( अ० )-अधिक, केवल, नियोग,  
अनन्तर ।

परम ( वि० )-प्रधान, उत्कृष्ट, पहिला,  
आद्य, ओङ्कार, अग्रेसर, शिव ।

परमसू(अ०)-अनुशा, अनुमति, हुक्म,  
अङ्गीकार, स्वीकार करना ।

परमगव(अ०)-उत्तमगी, श्रेष्ठगाय ।

परमपद ( अस्त्री० )-अच्छा स्थान,  
उत्तम जगह ।

परमब्रह्म [ नृ ] ( न० )-परमात्मा, पर-  
मेश्वर । [ मुनि ।

परमर्षि ( पु० )-उत्तम ऋषि, ब्रह्मवेत्ता

परमहन् ( पु० )-गन्यासिद्धिप्रेष ।

परमाणु ( पु० )-अतिसूक्ष्म, जिस से  
अधिक कोई सूक्ष्म न हो ।

परमात्मा ( पु० )-विष्णु, परमेश्वर,  
शिव, ईश्वर, ब्रह्म ।

परमाद्वैत ( पु० )-पूर्ववत् ।

परमान्न ( न० )-देवान्न, उत्कृष्टान्न,  
पायस, क्षीर ।

परमायुः [ स् ] ( न० )-उत्तम आयु,  
जीवितकाल, बड़ी उम्र, १००  
वर्ष की आयु ।

परमार्थ ( पु० )-उत्कृष्ट पदार्थ, यथार्थ  
वस्तु, मोक्ष, सुख, दुःखाभाव ।

परस्तरु ( पु० )-काक, कौआ ।

परमेश्वर ( पु० )-ब्रह्म, परमवर्तीराजा ।

परमेष्ठी [ नृ ] ( पु० )-परब्रह्म में लीन  
होने वालापुरुष, चतुर्मुख ब्रह्मा ।

परम्पर ( पु० )-प्रपीच आदि, शृङ्गभेद ।

परम्परा ( पु० )-वध, सन्तति, क्रम,  
खिलखिला । [ से चला हुआ ।

परम्परीण ( वि० )-परम्परागत, क्रम  
परलोक ( पु० )-दूसरा लोक, लोकान्तर

परवश ( वि० )-परायत्न, पराधीन,  
दूसरे के वशीभूत ।

परयान् [ वत ] ( वि० )-पराधीन ।

परयूत ( पु० )-धृतराष्ट्र ।

परश ( न० )-रत्नविशेष [ कहते हैं  
कि इन के स्पर्श में हमारे धातु  
स्पर्णत्व की प्राप्ति हो जाते हैं ] ।

परशु ( पु० )-अस्त्रविशेष, कुन्हाड़ा ।  
[ इसी अर्थ में परशु भी होता है ] ।

परशुधर ( पु० )-गणेश, परशुराम ।

परश्व [ स् ] ( अ० )-आने वाले दिन से  
जगला दिन, परमा ।

परश्व [ स्व ] प ( पु० )-परशु, कुठार,



परि (अ०)--चारों से तरफ बर्तना, उपाधि, निकालना, शोक, मन्तोप, उपरम, भूयण इत्यादि अर्थों का बोधक ।

परिकर (पु०)--समारम्भ, कसर कसना, पंखू [ पलंग ], चिबुक ।

परिकर्म [ न० ] ( न० )--अङ्गसंस्कार, केसर आदिदेह सजावट का द्रव्य-विशेष, उबटन, अरीरसंस्कार-मात्र, शोभामयण, प्रतिकर्म ।

परिकर्मा [ न० ] ( पु० )--सेवक, नीकर, परिचारक ।

परिकांक्षित ( वि० )--स्पृष्टाजिछाय, तपस्वी, वैराग्ययुक्त ।

परिक्रम (पु०)--कीर्ति के लिये पावों से गमन, गुंवादि की प्रदक्षिणा करने के लिये पैदल जाना, विहार, चैर ।

परिक्षिया (स्त्री०)--एकदिनचन्द्रमन्थी यज्ञविशेष, राई या भछादि से परिवेष्टन [ छपेटना ] ।

परिक्षित (पु०)--एक कुतूहलीय राजा, अभिमन्यु-का पुत्र [ परीक्षित, पोरिक्षीत, परिक्षित ये शब्द भी इन्हीं अर्थ में प्रयुक्त होते हैं ] ।

परिखा ( स्त्री० )--ताटे, शत्रु आदि नगर में प्रवेश न कर सके मृत-दण्ड चारों तरफ मुद्रा हुआ लख गारने का स्थान ।

परिष्ठात (वि०)--अति प्रसिद्ध, मशहूर, मयनायुक्त ।

परिगत ( वि० )--प्राप्त, ज्ञात, जाना हुआ, विभूत, चारों तरफ से

घिरा हुआ, परिवेष्टित, गया हुआ । [ योग्य ।

परिग्रहा (स्त्री०)--नारी, ग्रहण करने परिग्रह (पु०)--दान देना, प्रतिग्रह,

पत्नी, सेना का पश्चाद्भाग, परियोर, झुंझीकार, शाप, शपथ, साधन, मूल, कन्द । [ धक ।

परिघाट (पु०)--यज्ञ की वेदि का बो-

परिघ ( पु० )--छोड़े का घना हुआ मुद्गर, उद्योतिपशास्त्रीक २१ योगों में से एक, घट, घर, काच का घट, पुर का दरवाजा, कांति-किय का अनुचार, घातहानिविशेष ।

परिघात (पु०)--अस्त्र, चारना, दान ।

परिधय (पु०)--विशेषज्ञान, कम्पास, प्रणय, ज्ञात की पुनः २ जानना, प्रशसा, प्रेम ।

परिधर ( पु० )--मुकुटत्र में रथ का रत्नक, सहायक, सेना में राजा का दण्डनायक, रोगों की परि-चर्या करने वाला ।

परिधयां (स्त्री०)--सेवा, दण्ड, शत्रुपा, अधीनता, उपामना ।

परिधारय (पु०)--घर प्रणिमिन्न का उत्सहार किया जाय, यज्ञ का अग्नि ।

परिधारक ( वि० )--सेवक, नीकर, भृत्य । [ दिव्य, पूजनीय ।

परिधाय ( वि० )--सेवा करने योग्य,

परिचित (वि०)--घात, जाना हुआ, परिचययुक्त । [ परिधयनीय ।

परिधेय (वि०)--धितने योग्य, धेनुक,

परिच्छेद ( पु० )-परिवार, सामग्री, उपकरण अर्थात् हस्ती, अश्व, रथादि । [हुभा, चवृत ।

परिच्छन्न (वि०)-सब तरफ से ढका परिच्छिन्न (वि०)-सांख्यिक, अवधि-प्राप्त, परिच्छेदयुक्त ।

परिच्छेद (पु०)-इयत्ता रूप प्रमाण, इतना, सीमा, अवधि, ग्रन्थ के संग, अभ्यास आदि ।

परिजन (पु०)-प्रेमजन, परिवार, पालनीय सुत्रादि वगैरे ।

परिणत (वि०)-परिपक्व, बड़ा हुआ, अवस्थान्तर की प्राप्त ।

परिणय (पु०)-विवाह, उद्वाह, शादी ।

परिणाम (पु०)-विकार, प्रकृति का बदलना, स्वरूप का अभ्यस हो जाना, अन्त, अपालकारभेद ।

परिणामदर्शी [नृ] (वि०)-कार्यसमाप्ति के पूर्व ही अन्तिम फल का देखने वाला, परमकालदर्शी ।

परिणामशूल (पु०)-यह शूल जो भुक्त अन्न के परिपाकसमय में होता है, रोगविशेष । [कैलास ।

परिणाह (पु०)-विस्तार, घिसालना, परिणमा [नृ] (पु०)-भर्ता, पति, नाटिक, त्रिष के साथ विवाह हुआ हो । [मय तरफ से, भयंतः ।

परिमा [नृ] (ल०)-चारों ओर से,

परिमाण (पु०)-हुम, गर्मी, शीत, गंध, रूप, भ्रमण नृण्य, नरक-विशेष । [रहित, समुचित ।

परिपुष्ट (वि०)-मज्जुष्ट, अतिपुष्ट-

परितोष (पु०)-सन्तोष, सग्र, सब प्रकार से तुष्टि ।

परित्याग (पु०)-छोड़ना, त्यागना, सब प्रकार से वर्जन ।

परित्राण (न०)-मारण आदि हिंसात्मक कर्म से बचना, रक्षण, कुत्सित कर्म से हटाना, हस्तधारण ।

परिदान (न०)-एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी को देना, अदलाबदली, विनिमय ।

परिदायी [नृ] (पु०)-अविवाहित ज्येष्ठ भाई को छोड़ कर छोटे को कन्या देने वाला पुरुष । [बड़े भाई को छोड़ छोटे को कन्या देने वाला कन्याकार पिता 'परिदायी', यह कन्या 'परिवर्द्धनीया', छोटा भाई 'परिवेत्ता' ज्येष्ठ श्रुति, 'परिविक्र' और ऐसे विवाह के कराने वाला आचार्य 'परिकर्ता' कहाता है जो कि ये सब धर्मशास्त्रों में पतित हैं ] ।

परिदेय (न०)-विलाप, किन्हीं हुए अनुचित काम पुरा शोक करना, परयासाय, पेटना, पुनः सोचना । [करना ।

परिदेयना (स्त्री०)-गोबन्धियक विलाप परिधान (न०)-पहरा हुआ वस्त्र, परिधेय वस्त्र, अपोवस्त्र ।

परिधि (पु०)-सुरों और चतुर्गुणा के चारों ओर उपर्युक्त हुआ गोलाकार गवटल, घेरा, परिधि, यद्यपि के वृक्ष की शाखा, पर्वत की शिखर

वज्र, सूर्य तथा चन्द्रमा की समा ।  
परिधिस्थ (वि०)—चेरी में रहने वाला,  
मण्डल में स्थित, भृत्य, नौकर,  
सघाम में शत्रु के प्रहार से रथ  
की रक्षा करने वाला, येना में  
नृपति का दूतद्विनायक ।

परिपण-न ( न० )—वह धन जिस से  
उपबहार किया जाता है, मूल-  
धन, पूंजी ।

परिपन्थक ( पु० )—शत्रु, वह पुरुष जो  
अवगुण को प्रकट करता है या  
भाग को अवरोध कर चलता है ।

परिपन्थी [ नृ ] ( वि० )—दोषों को प्रकट  
करने वाला, शत्रु, दुश्मन, प्रति-  
कूल भावपूर्ण करने वाला ।

परिपाक ( पु० )—वर्तुराई, निपुणता,  
उत्तम प्रकार से पकना, अच्छा  
पाक ।

परिपाटि-टी ( स्त्री० )—सिलसिला,  
अनुक्रम, रीति, रिवाज, आनुपूर्वक ।

परिपूत ( न० )—विना छिलके के धान्य,  
मुपरहित धान्य । वि०—सब प्रकार  
से पवित्र ।

परिपूर्णत ( न० )—सब ओर से गारा  
हुआ, परिपूर्णता, सम्पूर्णत ।

परिपेलय ( वि० )—अत्यन्त कोमल ।

परिप्लव ( वि० )—चञ्चलतायुक्त, अति  
चञ्चल, अस्थिर । पु०—मुखीमल  
नामक राजा का पुत्र ।

परिप्लुत ( वि० )—जलादि से झूयाहुला ।

परिप्लुता ( स्त्री० )—मदिरा, शराब, मद्य,  
मेधुन में वेदनायती योगिनी ।

परिधि ( पु० )—राजा के योग्य हस्ती,  
अश्व, रथ आदि, राजयोग्य द्रव्य,  
परिच्छिन्न, मामयी ।

परिभा [ भा ] व ( पु० )—तिरस्कार, बेइ-  
ज्जतो, अनादर ।

परिभाषण ( न० )—निन्दायुक्त वचन,  
सोपात्म्य कथन, वह वचन जिस  
में उनाहनाया ताना दिया गया ।

परिभाषा ( स्त्री० )—कृत्रिम गान, बना-  
यटी संगीत, मूत्र का लक्षणविशेष,  
अवयवार्थ की छोड़ समूह का  
अर्थ, एक विशेष नाम ।

परिभूत ( वि० )—तिरस्कार किया हुआ,  
अनादृत, अवमानित ।

परिमण्डल ( वि० )—सब तरफ से गोल-  
कार, वर्तुल, गोल ।

परिमल ( पु० )—केशर आदि का मलना,  
मलने से उत्पन्न हुई सुगन्ध,  
मदनीय सुगन्ध, धीरम, विस्-  
समूह । [ समता ।

परिमाण ( न० )—माप, प्रमाण, तोल,

परिमाण्य ( वि० )—गुह करने योग्य,  
शोषणीय ।

परिमित ( वि० )—परिणाम किया हुआ,  
मापित, उचित, ठीक, तोल्युक्त,  
परिमाणयुक्त ।

परिमेय ( वि० )—माप करने योग्य,  
गिनती के लायक, परिमाणयुक्त ।

परिमोक्ष ( पु० )—मल का त्याग, विमुक्ति,  
सत्र और से रक्षण ।

परिमोषी [ नृ ] ( वि० )—चुराने वाला,  
तस्कर, चोर, परिमोषणशील ।



परि[री] रम्भ (पु०)-आलिङ्गन, हृदय से लगाना ।

परिवत्सर (पु०)-संवत्, वर्ष, साल ।

परिवजन (न०)-छोड़ना, परित्याग, मारना, मारण ।

परि[री] वत्त ( पु० )-अदलायदली, अपवर्तन, कूर्मराजा, युग का अन्तिम समय । [जगदः ।

परिवस्य (पु०)-ग्रान, गाव, रहने की

परिवह(पु०)-सात प्रकार के वायुओं में से छठा ।

परि[री] वाद (पु०)-निन्दा, बुराई, अपवाद, बदनामी ।

परि[री] वाप(पु०)-मुण्डन, केशरही दल, जलस्थान परिच्छद, साँझ

परिवापन(न०)-पूर्ववत् ।

परिवापित(वि०)-मुड़ा हुआ, मुड़ित ।

परि[री] वार(पु०)-कुटुम्ब, परिजन, तलवार की रथान, खड्ग कोष ।

परि[री] वाह(पु०)-जल का प्रवाह, जलोच्छ्वास, चारों तरफ पानी का उल्लेखना ।

परिवि. न(पु०)-कनिष्ठभाईके विवाह समय अविवाहित ज्येष्ठ आता ।

परिवि. ति(पु०)-यह भाई के अविवाहित होने पर विवाहित छोटे भाई का भाग । [अधिष ।

परिवृत्त(वि०)-स्वाधी, प्रभु, मालिक,

परिवृत्त( वि० )-सब ओर से लिपटा हुआ, आच्छादित, घेरे ।

परिवेत्ता[न] ( पु० )-यह भाई का विवाह न होने पर विवाहित छोटा भाई ।

परिवेदन ( न० )-विवाद, शादी, अग्न्याध्याय, सब प्रकार से ज्ञान, सब तरह से ज्ञान, सर्वतोभाष से विद्यमानता ।

परिवेश ( पु० )-उपेतन, घेरा, घेरे, मेघादि के कारण सूर्य और चन्द्रमा के चारों तरफ का घेरा ।

परिवेष ( पु० )-पूर्ववत् । [वाला ।

परिवेषक ( पु० )-परिवेष्टा, परोसने

परिवेषण ( न० )-वेष्टन, घेरा, भोजन का परोसना ।

परिवेषिका ( स्त्री० )-घेरा डालने वाली, भोजन परोसने वाली ।

परिवेष्टा [ष्ट] ( पु० )-घेरा डालने वाला, भोजन परोसने वाला ।

परिवेष्टित ( वि० )-सब ओर से घिरा हुआ, सब तरह से घेरा हुआ ।

परिवृत्त्या ( स्त्री० )-तपस्या, तपश्चर्या, इधर उधर घूमना ।

परिव्राज जक (पु०)-पति, सन्पासी, अनुयायी ।

परिव्राट् [ज] ( पु० )-पूर्ववत् ।

परिशिष्ट ( न० )-अधिशिष्ट भाग की वतलाने वाला, शेष, शेष ।

परिशोध (पु०)-सब प्रकार से शुद्धि ।

परिशोष(पु०)-सब प्रकार से शुष्कता ।

परिशन (पु०)-ठपायायन, दण्ड घेठक रूप कगरत, मेहनत ।

परिश्रम (पु०)-धना, मजलिस, कमेटी ।

परिश्रान्त ( वि० )-सब तरह से थका हुआ ।

परिश्रेय ( पु० )-आश्लेष, आलिङ्गन ।

परिपत् द्व (स्त्री०)-समा, धर्मोपदेशक

परिहर्ता का समुदाय । [परिधर्म]

परिपद ( पु० )-सेवक, नौकर, मेहनत

परिपद्य ( पु० )-समोपद, मेम्बर

परिपट्टल ( वि० )-सप्ता खाला । पु०-

मेम्बर, सदस्य ।

परिपट्ट ( स्त्री० ) ( वि० )-परपट्ट,

दूसरे से पला हुआ ।

परिष्कार ( पु० )-अलंकार, सूपण,

सरकार, सजावट, सामान ।

परिष्कर्ता ( वि० )-अलंकृत, सजाया

हुआ, कृतसंस्कार ।

परिष्कृतभूमि ( स्त्री० )-वेदि, यज्ञार्थ

संस्कृतभूमि । [यगनगीर होना ।

परिष्वग ( पु० )-आलिङ्गन, मिलना,

परिसर ( पु० )-सुदी, नगर, तथा पहाड़ के

समीप की भूमि, मृत्यु, विधि

[नियम] । [चारों तरफ जाना ।

परिसर ( पु० )-चारों तरफ बांधना,

परिसर्य ( पु० )-परिक्रिया, चारों

तरफ जाना, सर्वविशेष, एक

प्रकार का कुपटरीय । [पूजना ।

परिसर्ग ( स्त्री० )-सेवा, चारा ओर

परिस्पन्द ( पु० )-परिस्फूर्ति, परिवार,

सब ओर से चलना, नौकर ।

परिस्पन्दन ( न० )-चारों ओर से

चलना, कांपना ।

परिस्पन्द ( पु० )=परिस्पन्द ।

परिस्तुत ( स्त्री० )-वर्णन, नदिरा ।

परिस्तुत ( वि० )-सब तरफ से टपका

हुआ । [शराव ।

परिस्तुता ( स्त्री० )-वर्णनी, नदिरा ।

परि[री]हार ( पु० )-अनादर, बेइज्जत

ती, परिवर्जन, त्याग ।

परिहाय ( वि० )-त्यक्तव्य, दूर करने

योग्य । [सत्ताक, दिन्तगी ।

परि[री]हास ( पु० )-केल, हसीठट्टा,

परीक्षक ( वि० )-परीक्षा लेने वाला,

इम्तिहान लेने वाला, जाच

करने वाला । [करना ।

परीक्षक ( न० )-परसना, देख भाल

परीक्षा ( स्त्री० )-जांच, इम्तिहान ।

परीत ( वि० )-परिदेष्टित, पयओर से ठपात

परीष्टि ( स्त्री० )-तलाशी, अन्वेषण,

सेवा, परिधर्षा ।

परीसार ( पु० )-सब ओर गमन, सर्वतोः

गमन, परिसर्ग ।

पह ( पु० )-स्वर्गलोक, समुद्र, पर्वत,

पहाड़, ग्रन्थि, गाँठ ।

पहः [स्] ( न० )-ग्रन्थि, गाँठ ।

पहुत ( न० )-गत वर्ण, पीठा हुआ संघट,

मिलला साल ।

पहुतन ( वि० )-बहु पदार्थ जो गत वर्ण

में हुआ हो, पीठे वर्ण में चतुष्पन्न

वस्तु, गतवर्ण का ।

पहुत ( न० )-कठोर वाक्य, सख्त वचन ।

वि०-विविधवर्ण, कठोर, कट्ट ।

पहुतौक्तिक ( वि० )-कठोर वचन बोलने

वाला, अभिप्रेत ।

परेत ( वि० )-मरा हुआ, मृत, दूर

गया हुआ ।

परेतराट् [ज] ( पु० )-प्रेतो का राजा,

यमराज । [दिन ।

परेद्यति ( न० )-परला दिन, दूसरा

पर्यट्ट (म्) (श्री०) - पूर्ववत् ।

पर्यट्टका (स्त्री०) - बहुत बार टपारूँ

हुई गी, बहुत सूना गी ।

पर्यटित (वि०) - दूमेरे से पालित, खान्यो  
से पुष्ट हुआ । पु० - कोकिल ।

पर्यस्त (न०) - नेत्रों से दूर, अगोचर,  
अप्रत्यक्ष । पु० - तपस्वी, यद्यति  
नामक राजा का पौत्र, अनु का  
पुत्रविशेष ।

पर्यन्त (पु०) - मेघ, बादल, इन्द्र का  
नाम, मेघ का गर्जन ।

पर्यन्ता (स्त्री०) - दाकड़हदी ।

पर्यं (१० द०) - हरित रंग का होना,  
हरितभाव ।

पर्यं (न०) - पत्ता, पत्र, पक्ष, पक्ष । पु० -  
पतास का वृक्ष । न० - ताड़पूल ।

पर्यं - पत्तो वाला ।

पर्यन्तर (पु०) - पत्ताओं का बनाया  
हुआ पुरुष, पुतला, पुत्रलक ।

पर्यंशाला (स्त्री०) - पर्यंकुटी, पत्तो  
की बनाई हुई कुटी ।

पर्यंषि (पु०) - कमल, पद्म, जलपद्म  
शक्तिविशेष ।

पर्यांशग (पु०) - मेघ, बादल ।

पर्यांन (पु०) - तुलसी नामक वृक्ष ।

पर्यं (१ आ०) - अपान वायु का छोड़  
ना, अपानवायु का स्थान, पाद  
मारा । [ केशो का समूह ।

पर्यं (पु०) - अपानवायु का छोड़ना,  
पर्यं (न०) - अपानवायु का छोड़ना,  
अपानोत्सर्ग ।

पर्यं (न०) - मनीष मूत्र, मयी पास ।

पर्यट्ट (पु०) - शिष्टपापहा नामक औषध ।

पर्यट्ट (पु०) - जाना, गमन करना ।

पर्यट्ट (पु०) - पेलग, खाट, आसन-  
विशेष, वीरभिन ।

पर्यटन (न०) - भ्रमण करना, चारों  
तरफ घूमना ।

पर्यन्योग (पु०) - अच्छे प्रकार से छूट-  
ना, प्रश्न, सवाल, निश्चाया ।

पर्यन्त (पु०) - सीमा तक पहुँचा हुआ,  
समीप, निकट, पार्श्व ।

पर्यन्तभू (स्त्री०) - नदी, नगरे की  
पर्वत आदि के समीप की भूमि,  
अवधि की जगह, परिधर ।

पर्यन्तिका (स्त्री०) - गुण से पतित होना,  
गुणध्वंस ।

पर्यंष (पु०) - शास्त्र की लोक से  
विरुद्ध आचरण, समय का उपर्य  
खोना, कतव्यविस्मृति ।

पर्यंवरणा (स्त्री०) - विरोध, पक्षपात,  
सिद्ध करना, सर्वव्यापकता ।

पर्यंवरण (न०) - विरोध, पक्षपात ।

पर्यंस्त (वि०) - गिरा हुआ, पतित,  
हल, विस्तृत, विस्तार वाला ।

पर्यंस्तिका (स्त्री०) - खाट, खट्टा । [ पोशा

पर्याण (न०) - घोड़े की नाड़ी, जीत  
पर्याप्त (न०) - यथेष्ट, पूरा, शक्ति,  
ताकत, स तुष्टि, कीर्ती । वि० -  
प्राप्त, शक्तिसम्पन्न ।

पर्याप्ति (स्त्री०) - रक्षा हिंसात्मक  
कर्म करने वाले को रोकना,  
प्रकाश, प्राप्ति ।

पर्यांष (पु०) - सिलसिला, कदमप्राप्त

वह शब्द जो समान अर्थ का  
 बोधक हो । [कर्मशयन]  
 पर्यायशयन ( न० )-क्रम से सोना  
 पर्याप्त (पु०)-गिरना, पतना, मारना,  
 हिना करना, हमना  
 पर्युदक्षन ( न० )-क्षण, कर्ज  
 पर्युदस्त ( वि० )-निवारण किया  
 हुआ, निवारित, दूरीकृत, दूर  
 हटाया हुआ ।  
 पर्युदास ( पु० )-निवारण, रोकना,  
 एक प्रकार से हटाना, निषेध,  
 नकारात्मक, वह नकार जो सदृश  
 अर्थ का बोधक होता है । [हुआ]  
 पर्युपित ( वि० )-ठपुष्ट, घाभी, रक्खा  
 पर्येषणा ( स्त्री० )-तर्क आदि से पदार्थ  
 की परीक्षा, तर्कवितर्कद्वारा पदार्थ  
 की अच्छे प्रकार पहिचानना,  
 शब्देषण ।  
 पर्य ( १ प० )-जानना, मनन करना,  
 प्राप्त करना, पूर्ति करना ।  
 पर्य ( न० ) ( न० )-ग्रन्थि, गाँठ, जोड़,  
 क्षण । अष्टमी, चतुर्दशी, अमा-  
 वस्या, पूर्णिमा और सूर्यसंक्रांति  
 इन पाँचों का बोधक ।  
 पर्यंक ( न० )-चतुर्दशी, जानु ।  
 पर्यंगामी ( न० ) ( पु० )-पर्य के दिनों  
 में संचालन करने वाला पुरुष ।  
 पर्यंत ( पु० )-गिरि, पहाड़, भूधर,  
 एक मुनि का नाम, भक्त्यविशेष,  
 धृष्ट का यादक, आकाशविशेष ।  
 पर्यंतगा ( स्त्री० )-पायंती, भीरी, नदी ।  
 पयि-पर्यंत में उत्पन्न होनेवाली ।

पर्वतराज ( पु० )-हिमालय पर्वत ।  
 पर्वतारि ( पु० )-चन्द्र, पर्वत का वैरी ।  
 पर्वताश्रय ( पु० )-मेघ, आदम ।  
 पर्वतीय ( वि० )-एक प्रकार की जाति,  
 पहाड़ों में रहने वाले, पहाड़ी ।  
 पर्वधि ( पु० )-चन्द्रमा का वाचक ।  
 पर्वसन्धि ( स्त्री० )-गाँठों का जोड़,  
 प्रतिपदा और पूर्णमासी का  
 मध्यकाल ।  
 पशु ( पु० )-परशु, कुल्हाड़ा ।  
 पशुका ( स्त्री० )-पशुवाहे की हठी,  
 पारवर्द्धि ।  
 पशुपाणि ( पु० )-परशुराम, गणेश ।  
 पशुराम ( पु० )-जमदग्नि का पुत्र,  
 परशुराम । [करना]  
 पर्य ( १ आ० )-स्नेह करना, प्यार  
 पर्यद् ( स्त्री० )-सभा, परिहर्तों का समूह ।  
 पयि-सभासद्, सम्पन्न, सुन्दर ।  
 पर्यद्वन ( वि० )-सभासद्, पारिपद,  
 पल ( १ प० )-मनन करना, जानना ।  
 १० स०-रक्षा करना, भजना ।  
 पल ( न० )-मांस, समय का परिमाण,  
 ५ तोले का वजन, एक घड़ी का  
 साठवां भाग ।  
 पलक्य ( स्त्री० )-पालक का शाक ।  
 पलकूट ( वि० )-हरने वाला, भीरु,  
 भयभीत ।  
 पलकूप ( पु० )-रातम, दैत्य ।  
 पलकपा ( स्त्री० )-रातसी, गोलक  
 पलक ( न० )-जोड़, जोड़ना ।  
 पलप्रिय ( पु० )-कीर्ति, फाँस ।  
 पल्लव ( न० )-मांस, कीचड़, तिलचूण ।

पु०-राक्षस, दैत्य ।

पल्लवपर(पु०)-भागवतचर, पितृचर ।

पल्लाग्नि (पु०)-पित्त, पित्त-गुणों का दोष । [मांस खाने वाला]

पलाद (पु०)-राक्षस, दैत्य । वि०-

पलादन(पु०)-पूर्ववत् ।

पलान्न(न०)-भासादियुक्त सिद्धान्त,

यह भोजन को मांस आदि के साथ पकाया गया हो ।

पलायन (न०)-भागना, एक स्थान, को छोड़कर दूसरे स्थान को जाना ।

पलायित (वि०)-भाग हुआ, गलत, छिपा हुआ, तिरोहित ।

पलाय(अस्त्री०)-धान्यतुष, पयास ।

पलाय(न०)-पत्ता, पर्ण, पत्र । पु०-झाक का पेड़ । वि०-रितवर्णवाला ।

पलाशी[न्] (पु०)-राक्षस, वृक्षविशेष, जो विद्रुत ।

पल्लिनी(स्त्री०)-बृहत्ती, पृथ्वी औरत ।

पल्लिप(पु०)-काप का पहा, पाकोटा, माकार, पुर का दयाजा, गोपुर ।

पल्लित(न०)-एक रोग जिस में अस्थि नष्ट हो भाग सकंद होजाते हैं, घातों का प्रयत्न होना, केशवाक्र ।

पु०-बृद्ध पुरुष ।

पल्लिप(स्त्री०)-बृहत्ती स्त्री ।

पल्लव(पु०)-लट्वा, खाट, पलग ।

पल्लवपन(न०)-पीठे का काटी, जीत ।

पल्लव(पु०) जाना, गमन करना ।

पल्लव(पु०)-धनु, पला, नदीय चक्र-का गुच्छा, एक देश और [ पु० य० में ] उभे देश के रहने वाले ।

पल्लवद्व(पु०)-अशोक नामक वृक्ष ।

पल्लवोधार(पु०)-शाखा, टहनी ।

पल्लविक(वि०)-कासी पुरुष, कामुक ।

पल्लव(स्त्री०)-छोटा गाव, घा, कुटीर । [ अल्पचरोव ।

पल्लव (अस्त्री०)-छोटा तालाब,

पल्लव(न०)-गोबर, गोमय । पु०-वायु, मरुत । [ काँटावा ।

पल्लव(पु०)-वायु, हवा । न०-कुम्हार

पल्लवात्मक(पु०)-हनुमान् भोजन, अग्नि ।

पल्लवाश(पु०)-सर्प, साप ।

पल्लवाशन(पु०)-पूर्ववत् ।

पल्लवाशनाश(पु०)-गहड़, मयूर, मोर ।

पल्लवेट (पु०)-बड़ा निम्ब का पेड़, बकामन का पेड़ ।

पल्लवाग(पु०)-नयन, वायु ।

पल्लवा(स्त्री०)-पूलिनिमित्त का-कार वायु, यात्मा, बसुला ।

पल्लि(पु०)-यज्ञ, यज्ञ का शस्त्र ।

पल्लि (अस्त्री०)-कुश नामक पाष,

पय, जल ताम्र, यज्ञोपवीत, घृत,

शहद, विष्णु, महादेव । वि०-

प्रतादि से शुद्ध, साफ, स्वच्छ ।

पल्लिपाल्य(न०), पय, गौ ।

पल्लिप (स्त्री०)-मूलमी-जीमक वृक्ष नदीविशेष, हरिद्रा, हल्दी ।

पल्लिवारोपण(न०)-बड़ा दान, जिन में

विष्णु के निमित्त यज्ञोपवीत

अर्पण किया जाता है, प्रावण

शुक्ल द्वादशी का नाम ।

पल्लव (१ स०)-याचना, रोकना ।

१० उ०--वाचना, स्पर्श करना, छूना, जाना ।

पशव्य (वि०)--पशुसम्बन्धी, पशुओं के लिये हितकर ।

पशु (पु०)--सिंह आदि चतुष्पाद जानवर, जो सूर्य को समान भाव से देखता है ।

पशुक्रिया (स्त्री०)--मैथुन, विषयभोग ।

पशुपति (पु०)--शिव, महादेव ।

पशुराज (पु०)--पशुओं का राजा, सिंह, शेर । [प्रतीची, अधिकार ।

पशवात् (अ०)--पीछे, शान्त, धरम,

पशवात्ताप (पु०)--किसी अनुचित कर्म को करके शोक करना, पछताना,

अनुताप, पुनः पुनः शोक करना ।

पश्चाद् (वि०)--शेष भाग, पीछे का भाग, दूसरा भाग, उत्तरार्ध ।

पश्चिम (वि०)--पीछे होने वाला ।

पश्चिमा (स्त्री०)--अस्ताचल के समीप की दिशा, पश्चिम दिशा ।

पश्य (अ०)--प्रशंसा, तारीफ, आश्चर्य, विस्मय, दर्शक ।

पश्यतोदर (पु०)--स्वर्णकार, सुनार ।

पश्यन् [त्] (वि०)--देखने वाला, दर्शनकर्ता ।

पश्यन्ती (स्त्री०)--चार प्रकार की बाखियों में से एक अर्थात् मूलाधार से उत्पन्न होकर हृदयस्थान से प्रकटित हुई शब्दरूपवाणी जो कि चार प्रकार की है यथा-त्रैलोक्य, मध्यमा, पश्यन्ती और अर्नपायिनी; देखने वाली ।

पशु (१ उ०)--वाचना, रोकना, मूचना, गठि लगाना ।

पशुप्र (न०)--घर, सह, रहने की जगह ।

पश्व (पु०)--अश्व [ दाढ़ी ] धारण करने वाली एक नीच जाति ।

पा (१प०)--पान करना, पीना । २ प०--रक्षण करना, बचाना ।

पा (वि०)--पान करने वाला, रक्षा करने वाला, रक्षणकर्ता ।

पाशव (पु०)--एक प्रकार का लक्षण ।

पाशु (पु०) धूलि, रज, खेत के लिये चिरकाल से इकट्ठा किया गया मृदा, कर्पूर आ भेद ।

पांशुकुली (स्त्री०)--रानमार्ग ।

पाशुवत्तर (पे०)--ओले, घनीपल ।

पाशुल (पु०)--महादेव, शिव, पापात्म्या, महादेव का खट्वाङ्ग । वि०--धूलि-युक्त आ पापविशिष्ट ।

पाशुला (स्त्री०)--व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा, रजस्वला, केतकी ।

पासा (वि०)--द्वयण लगाने वाला ।

पासु (पु०)--धूलि, रज ।

पाक (पु०)--पकाना, पचन, फल, परिणाम, दैत्यविशेष जिसे इंद्र ने मारा था, पाली, पात्र, मिश्र, बालक, वृद्धावस्था से हुई रवेतता, भय, रात्र्यादि ।

पाकश (न०)--काचलक्षण, परिणामशूल ।

पाकश्रुत (न०)--तेजपात, तेजपा ।

पाकल (न०)--कुशीपथ, कृष्ट । पु०--अग्नि, पचन, हस्तिशर । वि०--धूनादि उत्पन्न करने वाला ।

पाकशाला (स्त्री०)-पाकस्थान, रसोई घर, पकाने की जगह ।

पाकशासन(पु०)-इन्द्र । [ अर्जुन ।

पाकशासनि(पु०)-इन्द्र का पुत्र जयन्त,

पाकशुक्ला ( स्त्री० )-सुहिया मिट्टी ।

पाका(स्त्री०)-मालिका ।

पाकिन(वि०)-एक कर तैयार हुआ, पकिन, पाकनिष्पन्न ।

पावय ( न० )-विह नानक लवण ।

पु०-जवाखार । [ पतसम्बन्धी ।

पासायण (वि०)-पक्ष में होने वाला,

प्राप्ति (वि०)-पक्षपात करने वाला,

पक्षिपातक, पक्ष में उत्पन्न हुआ,

पक्ष का, प्राप्ति और अप्राप्ति की

सम्भावना का वह विषय जो एक

पक्ष से जाया हो ।

पासपट ( पु० )-वेदत्रयी के चर्न को खण्डन करने वाला पुरुष ।

पागल ( पु० )-वन्मत्त, आत्मरक्षण में असमर्थ पुरुष ।

पाचक ( पु० )-रसोइया, सूद । वि०-भुक्तान्न को पकानेवाला जाटराशि न०-पित्त नामक दोषविशेष ।

पाचन ( पु० )-अग्नि, आग, चन्द्रमा अक्षरसः । न०-प्रायश्चित्त, वातादि दोषों को पकानेवाला क्राय विशेष ।

पाचक ( पु० )-शुद्धाग्न, टङ्कण ।

पाचनी ( स्त्री० )-हिंद, हरीतकी ।

पाचल ( पु० )-अग्नि, पाचक, पवन, राखने का द्रव्य ।

पाक्षुगन्ध ( पु० )-श्रीकृष्ण का शल ।

पाक्षाल ( न० )-एक शाख का नाम ।

वि०-पक्षालदेश में उत्पन्न हुआ ।

पु०-एक देश का नाम जो द्रुपद-राज का नगर था और यज्ञमान में जो कर्कशायाद के नाम से प्रसिद्ध है । पु० य०-उस देश के रहने वाले । [ पुतली, पुत्रिका ।

पाश्चातिका ( स्त्री० )-वस्त्रादिनिर्मित पाश्चाती ( स्त्री० )-पुत्रिका, पुतली, द्वीपदी, पावहवपत्नी, पिप्पली ।

पाट् ( न० )-सन्वोधन का वाचक ।

पाटसर ( पु० )-चीर, लस्कर ।

पाटन ( न० )-छेदन, तोड़ना, उखाड़ना ।

पाटल ( पु० )-श्वेत और रक्तवर्ण, गुलाबी रंग । वि०-श्वेतरक्त रंग वाला ।

पाटला ( स्त्री० )-दुर्गा, पार्वती ।

पाटली[लि]पुत्र ( न० )-पटना नामक नगर । [कौशल्य, जारोग्य ।

पाटव ( न० )-पटुता, चतुराई, क्रिया-

पाटविक ( वि० )-पटुतायुक्त, धूर्त ।

पाटित ( वि० )-काटा हुआ, विदीर्ष किया हुआ ।

पाठ ( पु० )-गुरुमुख से श्रुत असुरों का उच्चारण, विधिपूर्वक वेदादि का अभ्यास, पढ़ना, एक बृहद्पत्र ।

पाठक ( पु० )-अध्यापक, पढ़ाने वाला, मास्टर । [स्कूल ।

पाठशाला ( स्त्री० )-पढ़ने का घर,

पाठिका ( स्त्री० )-अध्यापिका, पाठ नामक औपध ।

पाठी [नृ] ( पु० )-चीते का का वृक्ष, पाठक । वि०-पढ़ाने वाला ।

पाठीन ( पु० )—एक मत्स्य का नाम,  
वह मत्स्य जिस के सहस्र दंष्ट्रा  
होती हैं, गुग्गुल का वृक्ष, पाठक ।  
वि०—पद्माने वाला ।

पाठ्य ( वि० )—पढ़ने योग्य, पठनीय ।  
पाणि(स्त्री०)—दुकान, बह, पर्यवर्षी ।  
पाणि ( पु० )—हाथ, हस्त, कर, कुलिक,  
नामक वृक्ष ।

पाणिग्रहीती (स्त्री०)—वेदोक्त विधान-  
पूर्वक विवाहिता भार्या, धर्मपत्नी ।  
पाणिग्रहण ( न० )—विवाह, उद्वाह,  
शादी ।

पाणिध ( पु० )—वह पुरुष जो हाथ  
बकावे, हाथ से मृदादि ब्रजाने  
वाला पुरुष ।

पाणिज ( पु० )—नख, नाखून ।  
पाणि [ णी ] लठ ( न० )—दो तोड़े का  
परिमाण, हथेली, हस्त के नीचे  
का भाग ।

पाणिनि ( पु० )—व्याकरण के कर्ता  
एक प्रसिद्ध मुनि जो कि दाक्षी  
नाम्नी नातर से उत्पन्न हुए थे ।  
पाणिनीय ( वि० )—पाणिनि मुनि-  
कृत आठध्यायी प्रभृति व्या-  
करणग्रन्थ ।

पाणिपय ( वि० )—हाथों से पीने वाला,  
हाथद्वारा पानकर्ता ।

पाणिमर्द ( पु० )—हाथ ब्रजाने वाला  
पुरुष, हस्तमर्दक ।

पाणिमर्द ( पु० )—नख, नाखून ।  
पाणिमर्ग्य (स्त्री०)—रज्जु, रस्सी ।  
मापीकर ( न० )—विवाह, शादी ।

पागहर ( पु० )—श्वेत रंग, एक पर्वत,  
सहस्रक वृक्ष विशेष । न०—कुम्ह का  
पुष्प, जेठ । वि०—उत्त रंग वाला ।

पागहव ( पु० )—युधिष्ठिरादि पागह-  
नन्दन ।

पागहु ( पु० )—चन्द्रवंशीय प्रसिद्ध राजा,  
शुक्लनिर्मित पीतवर्ण, नाम-  
विशेष, श्वेत रंगका दन्ती, रोग-  
विशेष, पटोल का वृक्ष । वि०—  
श्वेतनिर्मित पीतवर्णवाला ।

पागप ( वि० )—स्तुति करने योग्य,  
स्तुत्य, स्तवनीय, स्तुत्यार्ह ।

पात ( पु० )—पतन, विराम, राहु नामक  
ग्रह । वि०—रक्षित, बचाया हुआ ।

पातक ( न० )—पाप, अशुभ कर्म, नरक-  
साधन, पाणियों की हिंसा करना,  
व्यात्मक कर्म । [ श्वेत ग्रह ।

पातङ्गि ( पु० )—मृग की चन्ताँन, शनै-  
पातङ्गल ( न० )—पतङ्गलिमुनिप्रणीत-  
योगदर्शन, शास्त्रविशेष ।

पातन ( न० )—नीचे गिराना, अधःपतन,  
अधोमयन । [ रक्षितः ।

पाता [ त् ] ( वि० )—रक्षा करने वाला,  
पाताल ( न० )—अपने नाम से प्रसिद्ध  
अघोरीक विशेष, टिद्र, विषर,

सूराख, बाहवानल, लग्न से श्रीधर  
स्थान ॥ पु०—अपघ्नकाने का यन्त्र

पातालनिलय ( पु० )—दैत्य, राक्षस, मर्ष ।  
पाति ( पु० )—स्वामी, मालिक, प्रभु ।

पातिक ( पु० )—शिशुमार, मत्स्यविशेष,  
आकाशस्थ नक्षत्रसमूह ।

पातिखी ( स्त्री० )—मृग बांधने की



रस्सी, नारी, एक प्रकार का मिट्टी का पात्र ।

पातुक(वि०)-गिरनेवाला, पतनशील ।

पात्र (न०)-जल आदि दे रहने का स्थान, आयेय कि धारणयोग्य वस्तु, धर्तन, दान के योग्य सुपात्र ब्राह्मण, यज्ञसम्बन्धी स्तुति, दीनो तटो के मध्य में जल ठहरने का स्थान, नाटक में नायक आदि का वाचक ।

पात्रपाल(पु०)-तराजू, तुला, घट ।

पात्रवद्धार(पु०)-वर्तनों की शुद्धि ।

पात्री(स्त्री०)-पात्र, धर्तन ।

पात्रीय(न०)-यज्ञ के पात्र, योग्य ।

पात्रीर ( पु० )-यज्ञसम्बन्धिद्रव्य, यज्ञद्रव्य ।

पात्रेयमित ( वि० )-भोजनसमय में ही मिलने वाला, जो भोजन से अन्यत्र न मिले, भोजन में ही प्रवीण, एक पाप का नाम, वह पाप जिसमें अन्त करण में पाप-युद्धि रत ऊपर से प्रथमा की जाय । [ शिष्य :

पात्र(न०)-पापियों का आंता, विरणु, पार्थ (न०)-जल, पानी । पु०-अग्नि, भुय, भूरज ।

पाप [न] (न०)-जल, पानी, जल ।

पापि [न] (पु०)-समुद्र, नेत्र, चतुः । न०-जल ।

पापेय ( न० )-मार्ग में ठहर करके योग्य द्रव्य, मार्ग का रुचं, शम्भल, जन्पाराशि ।

पाथोज (न०)-कमल, पद्म ।

पाथोद (पु०)-मैघ, बादल ।

पाथोधर (पु०)-पूर्ववत् ।

पाथोचि (पु०)-समुद्र, सागर ।

पाद् (पु०)-पाव, चरण, पाद ।

पाद(पु०)-चरण, पाव, चौपा हिस्सा, वृक्षों की लकड़, श्लोकपाद, पड़े पर्वत के समीप का छोटा पहाड़, किरण ।

पादकटक(पु०)-नूपुर, पाजो, क्लावर ।

पादकुच्छ (पु०)-व्रतविधेय, वह व्रत जिसमें एक दिन का उपवास किया जाता है ।

पादग्रहण ( न० )-पाव पकड़नेपूर्वक प्रणाम, अभिवादन ।

पादचारी [न] (पु०)-पैदल, पदाति, जो पावों से गमन करता है ।

वि०-पावों से चलने वाला ।

पादज्ञ (पु०) शूद्र, चौपा घण । वि०-पावों से लटपटनमात्र ।

पादज्ञान (न०)-जुनी, पातुका, उहाव ।

पादप (पु०)-वृक्ष, पेड़, दरख, पाद पीठ, पावों का आसन, पीठा, स्टूल । [ पदासन ।

पादपीठ(न०)-पाव रखने का आसन, पादप्रधारण (न०)-पातुका, रुहाव ।

पादचक्षम(न०)-नी और भैंस आदि के पाव बांधने का साधन ।

पादगुल ( न० )-पाव के नीचे का भाग, चरण का अधोभाग ।

पादविक ( पु० )-पथिक, यात्री, गद्गरीर, पैदल । [ गतरीग ।

पादगोप(पु०)-पावों का भूतन, चरण-

पादस्फोट (पु०)-पांशों का फटना,  
विपादिका, विवाद ।

पादाङ्गद (न०)-नूपुर, क्रांतिर, पाशेव ।

पादात् (पु०)-पदाति, वृक्ष का याचक

पादात् (न०)-पैदलों का समूह ।

पादालिन्दी (स्त्री०)-नीका, नाय ।

पादुका (स्त्री०)-जूती, खड़ाव, पाद-  
रक्षिका । [कार ।

पादुकाकार-कृत (पु०)-चमार, धर्म-

पादू (स्त्री०)=पादुका । [मृत ।

पादोद्ग (ग०)-चरणों का जल, चरणा-

पाद्य (न०)-पांश धोने के लिये जल,

पादप्रक्षालनार्थ जल ।

पान (न०)-पीने की वस्तु, पीना,

द्रव्यरूप द्रव्य का गले से नीचे

उतारना, पात्र, घर्तन, छत्रिन-

नदी, महर, जल । वि०-रत्ता

करने वाला । [पक्रस ।

पापक (न०)-पीने का द्रव्य विशेष,

पानगोष्ठी (स्त्री०)-मद्य पीने वाली

की सभा, मद्यपानचक्र ।

पानपात्र (न०)-शराब पीने का प्याला,

मद्य पानपात्र । [विश्य, शरीरिहक ।

पानभणिक (पु०)-मद्य बेचने वाला

पानभाजन (न०)-शराब का प्याला ।

पानीय (न०)-जल, पीने योग्य वस्तु ।

पाणीयशालिका (स्त्री०)-जल पिछाने

का घर, प्रपा, प्याक ।

पान्ध (पु०)-पयिक, सुमाफिर ।

पाप (न०)-अपम, नीचकर्म, गरक का

नाशन, गुनाह ।

पापक (न०)-पूर्ववत् ।

पापकृत (वि०)-पाप करने वाला ।

पापग्रह (पु०)-रवि, मंगल, शनि,

राहु और इन से युक्त बुध ।

पापग्न (पु०)-तिल नामक द्रव्य । वि०-

पापनाशक । [जारपति ।

पापपति (पु०)-उपपति, दूसरा पति,

पापपुरुष (पु०)-पापशील पुरुष,

पापात्मक मनुष्य, गुनहगार,

तन्त्रशास्त्र में कहा हुआ पुरुष के

स्वरूपका वह पदार्थ जो वामकुक्षि

में पाप के स्वरूप में ध्यान के

योग्य होता है ।

पापमुक्त (वि०)-पाप से छूटा हुआ,

निश्पाप, पापरहित ।

पापहिं (स्त्री०)-शिकार खेलना, मृगया

पापात्मा [न] (पु०)-पापयुक्त पुरुष,

"त्रिष की युद्धि पापकर्म में लगी

हुई हैं । [पापयुक्त ।

पापी [न] (पु०)-पापात्मक मनुष्य,

पाप्मा [न] (पु०)-पाप, नीच कर्म ।

पान [न] (पु०)-खुजली नामक रोग,

विषयिका । [जीवघ ।

पानग (पु०)-गन्धक नाम से प्रसिद्ध

पामर (वि०)-नीच, क्रूर, लाल, मूर्ख ।

पामा [न] (स्त्री०)-गुल्मी रोग ।

पायम (पु०)-दुग्ध में तैयार किया

गया अन्न, सोर आदि, परमो-

त्तम अन्न । वि०-दुग्ध का ।

पायु (पु०)-गुदा, अपान वायु के रहने

का स्थान, गुहाद्वार, अपने नाम

के प्रसिद्ध भरद्वाज का पुत्र ।

पार (१० न०)-कार्य की समाप्ति, काम

का समाप्त होना ।

पार(न०)-दूसरा तट, नदी को उलं-  
घन कर जाने योग्य परला-  
किनारा । पु०-पार, पारद ।

पारक(वि०)-पूर्ति करने वाला, पूर्ति-  
कारक, पालनकर्ता, प्रोत्ति करने  
वाला । [नामी ।

पारण(वि०)-पार जाने वाला, पार-  
पारजायिक ( पु० )-परस्त्रीगामी,  
पारदारिक ।

पारण(न०)-भेष, खादन ।

पारणा (स्त्री०)-उपवास के अन्त का  
भोजन, व्रतसमाप्तिविषयक अन्तिम  
दिन का भोजन ।

पारतन्त्र्य ( न० )-दूसरे के वश में  
रहना, पराधीनता, परव्रजता ।

पारत्रिक (वि०)-दूसरे लोक में होने  
वाला, परलोक के लिये हित-  
कारक, पारलौकिक, परलोक-  
सम्बन्धी ।

पारदारिक (पु०)-दूसरे की भाषा में  
भाषक, परस्त्रीगामी, परदाररत ।

पारदायं(न०)-परस्त्री से गमन करना,  
परदारगमन ।

पारदेश ( वि० )-परदेश में गया  
हुआ, पयित, प्रोपित, पर-  
देशजात ।

पारमहंस्य ( वि० )-वह धर्म जो  
परमहंस नामक संन्यासियों के  
लिये प्राप्त है अर्थात् परमहंस-  
धर्म, ज्ञानस्वरूप ।

पारमार्थिक (वि०)-जो मोक्ष के लिये

हितकर हो, परमार्थयुक्त, मुख्य,  
आपस में बटा हुआ, परस्पर  
विभक्त ।

पारम्पर्य ( न० )-कुलक्रम, विलम्बित  
से आया हुआ, वंश की परम्परा  
से आगत ।

पारम्पर्योपदेश ( पु० )-पितृपरम्परा  
से प्राप्त उपदेश, वह उपदेश जो  
अपने वंश के वृद्धों से चला जाता  
हो और जिस का अपने को  
साक्षात्कार न हो ।

पारलौकिक ( वि० )-दूसरे लोक के  
लिये हितकर, परलोकसम्बन्धी,  
परलोक में होनेवाला । [पत्नी ।

पार [रा] यत (पु०)-कयूतर नामक  
पारश्व ( पु० )-ब्राह्मण के धीर्य से  
शूद्राजायाँ में उत्पन्न पुत्र, निषाद  
नामक जाति, परस्त्री का पुत्र,  
लौह । वि०-परशुसम्बन्धी ।

पारश्वध (पु०)-कुलहाड़े से युद्ध करने  
वाला पुरुष, पारश्वधधारी ।

पारशि [सी]क ( पु० )-एक देश का  
गाम, पारस देश । पु० ब०-  
उस देश के निवासी । वि०-उस  
देश में उत्पन्न होने वाला ।

पारस्त्रिण्य ( वि० )-दूसरे की स्त्री  
से उत्पन्न, पारस्त्रिण्य, परस्त्रीजात ।

पारा ( स्त्री० )-एक नदी ।

पारायत ( पु० )-कयूतर, पारायत ।

पाराय [रा] र (पु०)-समुद्र, सागर ।  
न०-तटस्थ ।

पारायण ( न० )-पुराणपाठ, किसी

ग्रन्थविशेष का सम्पूर्ण रूप से पाठ करना, पूरा २ पाठ करना, समयप्रव, जिसके द्वारा एक काम के अन्त को प्राप्त होता है ।

पारावती ( स्त्री० )—नदी विशेष, गोपनीय ।

पारावारीण ( वि० )—दोनों तरफों पर जाने वाला, तटद्वयगमनशील, तीरद्वयगामी ।

पाराशर ( पु० )—पराशर नामक ऋषि के पुत्र वेदव्यास, पराशरकृत एक स्मृति, संहिताविशेष । न०—पराशरोक्त भिक्षुसूत्र नामक ग्रन्थ ।

वि०—पराशर का ।

पाराशरि ( पु० )—वेदव्यास ।

पाराशरी [ नृ ] ( पु० )—पराशरोक्त भिक्षुसूत्र की ओ पढ़ता है, भिक्षुक, चतुर्पत्त्रिणी, सर्वकर्मपरित्यागी, सन्यासी । [ वेदव्यास ।

पाराशर्य ( पु० )—पराशर का पुत्र पारिकाशी [ नृ ] ( पु० )—तपस्वी, सन्यासी, जीवनभूतधारी, ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति का इच्छुक ।

पारिजात ( पु० )—समुद्र में उत्पन्न हुआ देवताओं का वृक्ष, कल्पवृक्ष ।

पारिणाय्य ( वि० )—विवाहसमय प्राप्त हुआ धन ।

पारिणाया ( वि० )—घर की सामग्रियों जैसे—झट्टा, आसन, घट, पात्र, वस्त्रादि ।

पारितोषिक ( वि० )—भेट में प्राप्त हुआ धन, परितोष से प्राप्त धन,

सन्तोषजनक द्रव्य ।

पारिन्द्र ( पु० )—सिंह, शेर ।

पारिपान्थिक ( पु० )—चोर, तस्कर ।

पारिपात्र-त्रिक ( पु० )—एक पर्वत का नाम जो विन्ध्याचल के पश्चिम में मालवदेश की सीमा का बोधक और कुलपर्वतों में से एक है ।

पारिपात्रिक ( पु० )—जो आस पास में रहता वा विवरता है, नाटक में वह नट जो सूत्रधार के पास रहता है ।

पारिप्लव ( न० )—वस्त्र, ताल, आकुल, तीर्थविशेष । पु०—जल का पक्षी ।

पारिभद्र ( पु० )—यज्ञविशेष, निम्नवृक्ष ।

पारिभाष्य ( न० )—कुण्ठीपत्र, जामिन, होना, जामिनी देना, प्रतिभूषणता ।

पारिभाषिक ( न० )—परिभाषा के अर्थ का बोधक पद, साङ्केतिकपद ।

पारिभाष्य ( न० )—सर्वत्र विद्यमानता, व्यापकता में कारणत्व से शून्य परमाणु का नाप, परमाणु-परिमाण ।

पारिमुखिक ( वि० )—सामने में रहने वाला, सम्मुखवर्ती ।

पारिपद ( पु० )—सप्ताष्ट, ऋष, मेखर ।

पारिहार्य ( पु० )—कंठ्य, कटक, कहर, करभूषण ।

पारीण ( वि० )—पार जाने वाला, पारगामी, कार्य की समाप्त करने वाला । [ सर्व ।

पारीन्द्र ( पु० )—सिंह, शेर, अजगर

प० ( पु० )—मूय, मूत्र, अग्नि, ज्ञान ।

पारुष्य (न०)-अप्रियभाषण, दुर्वा  
क्य कटुवचन, इन्द्र का वन,  
अगर नामक गन्ध द्रव्य ।

पार्थ(पु०)-पृथिवी का पालक, राजा,  
पृथा के पुत्र युधिष्ठिरादि,  
अर्जुन वृक्ष ।

पार्थिव ( पु० )-पृथ्वीपति, राजा ।  
वि०-पृथ्वी से उत्पन्न होने वाला ।

पार्थिवी(स्त्री०)-सीता, जनकपुत्री ।

पार्षर (पु०)-सुरराज का वाचक ।

पार्षण ( वि० )-स्मृतियों में कहा  
गया आहु जो अमावस्या, पूर्णि  
मादि पर्व दिनों में किया जाता  
है । पु०-सृष्टिर्षण ।

पार्षत ( पु० )-शकायन, महानिम्ब ।

वि०-पर्यंत, सी होनी वाला ।

पार्षती (स्त्री०)- दुर्गा, शिवपत्नी ।

पार्षतीतन्मूल ( पु० )-कात्तिकेय,  
रक्त, सेनानी ।

पार्ष्य ( अस्त्री० )-समीप निकट,  
कक्ष का अधोभाग, चक्र, पहिया ।

पार्ष्यक ( वि० )-शठता से विभय  
का अव्येपण करने वाला ।

पार्ष्यपरिवर्तन ( न० )-पार्ष्य का  
केरना, वगैरे केरना, पीठ देना,  
कटिदान ।

पार्ष्यविप्लव (न०)-द्विपक्षी शीघ्र  
विशेष ।

पार्ष्यशूल ( पु० )-पंखों का दण्ड ।

पार्ष्णी (स्त्री०)-द्वीपदी, पारश्वपत्नी ।

पार्ष्ण ( पु० )-महाकृद्, मध्य, अमावस्या,  
मेघद्वय ।

पार्ष्ण ( पु० )-पूर्ववत् ।

पार्ष्णि ( पु० )-गद्दे के नीचे का  
हिस्सा, एही, गुल्फ का अधो-  
भाग, सैन्यपट, सेना की पीठ ।  
स्त्री०-कुन्ती, पाण्डुपत्नी ।

पार्ष्णिप्राह ( पु० )-शत्रु, दुश्मन, जो  
पीछे रहे, पीछा प्रहण करने हारा ।

पार्ष्णित्र ( न० )-पीछे की रक्षा करने  
वाली सेना, पश्चाद्गतक सेना  
विशेष । [करना, बचाना ।

पाल (१०३०)-रक्षा करना, पालन  
पारा ( पु० )-पीकदान, झुकने का  
यात्र । वि०-रक्षक, पालक ।

पालक(पु०)-अश्वरक्षक, साईं, सीते  
का वृक्ष । वि०-पालनकर्ता ।

पालू (पु०)-पालक का शाक, पर्यङ्क,  
पलग, बाज नामक पक्षी ।

पालन ( न० )-रक्षण, सर्व प्रभूता  
जी का दूध ।

पलाश ( न० )-पर्ण, पत्ता, किसलय,  
तेजपात । पु०-परिद्वर्ण, हरा रंग ।  
वि०-पलाशसम्बन्धी ।

पालि छी ( स्त्री० )-श्रेणी, पक्षि, जू,  
चूका, यह स्त्री जिस के मूठ,  
दीर्घी, छी, प्रान्त, पुल, मोद,  
लसक, प्रशमा । [ रक्षित ]

पालित ( प्रि० )-रक्षा किया हुआ,  
प्रायक(पु०)-अग्नि, शोक, विद्युत्  
अथवा अग्नि ।

पावकि(पु०)-वृत्तिसेय, रक्त, गुह ।

पावण(पु०)-अग्नि, उमा, पीछे रंग  
का भुगरान, विष्णु, मित्र नामात् ।

न०-जल, रुद्राक्ष, प्रायश्चित्त, चित्रक,  
पीता, शुद्धि, गोमय, गोबर ।

पावनध्वनि(पु०)-शंख का वाचक ।

पावनी (स्त्री०)-हरीतकी, हैड़, गंगा,

तुलसी, गी, याकहीपकी एकनदी ।

पाश(पु०)-बांधने का साधन, पशु

और पक्षियों के बांधने का एक

कंदा, शस्त्रविशेष, रणजुमान [ फल

गड़ के आगे प्रयुक्त करने से इस

का अर्थ शोभात्मक होता है ] ।

पाशक(पु०)-जुमा खेले का साधन,

पाशा, द्यूतविशेष ।

पाशपाणि (पु०)-वरुण का वाचक ।

पाशवपालन(न०)-घास नामक तृण ।

पाशित(वि०)-सांघा हुआ, पाशमुक्त ।

पाशी[नृ](पु०)-वरुण, व्याध, धमराज ।

पाशीकृत(वि०)-पाश से बांधा हुआ,

पाशबद्ध ।

पाशुपत (न०)-वृत्तविशेष, एक अस्त्र

का नाम । पु०-शिव का देवता

, पशुपति हो, पशुपति का भक्त ।

पाशुपताक्ष(न०)-महादेव का शूल-

नामक अस्त्रविशेष ।

पाशुपात्त (न०)-पशुओं का रक्षण,

पशुओं का पालन, चिरवृत्ति,

चिरवर्ष ।

पाशुपात्त (वि०)-अश्विन, देव में

चरपन्न होने का सा, पशुपति

देव का ।

पाश्या (स्त्री०)-पाशों का चतुर्दश,

पापघ्नी (पु०)-वेदघ्न का लक्षण-

कता, वेदोद्धर्ता को छोड़ने

वाला, वेदाचारविहीन, बौद्ध  
संप्रणक आदि ।

पापघ्नी[नृ] (पु०)-पूर्ववत् ।

पापाण(पु०)-पत्थर, प्रस्तर ।

पापाणदारक[ण] (पु०)-खैरी, टंक,

पत्थर के काटने का औजार ।

पि (इ प०)-गमन करना, जाना ।

पिक(पु०)-कोकिल, कीपल ।

पिकवन्धु(पु०)-आम्रवृक्ष का वाचक ।

पिकराग(पु०)-पुंयवत् ।

पिकवल्लभ(पु०)-पूर्ववत् ।

पिकानन्द(पु०)-यसन्त, शत्रु ।

पिकी(स्त्री०)-कीकिल, पिकराया ।

पिङ्ग(पु०)-दस्ती का पीता, बैरावका

पिङ्ग (न०)-यालक, ईरसाह नामक

वृक्ष । पु०-मृदक, पीला रंगी

वि०-पीतवर्ण वाला ।

पिङ्गल(पु०)-शिव, महादेव ।

पिङ्गल (न०)-नील और पीत मिश्रित

रंग, भागभेद, ज्ञानांग, भूमिपद,

रुद्र, महादेव, एक मुनि का नाम,

वह मुनि जिसने खन्दःगूत्र नामक

प्रसिद्ध ग्रन्थ निर्माण किया ।

पिङ्गला(स्त्री०)-दक्षिण के दिग्गज की

पत्नी, अपने नाम से प्रसिद्ध

एक वैद्या, नारीविशेष, राज-

नीति का वाचक ।

पिङ्गल(पु०)-महादेव, शिव । [पिङ्गे-

शब्द का भी यही अर्थ है] ।

वि०-पिङ्गल वर्ण के रेशों वाला ।

पिषगङ्ग(पु०)-चदर, पेट, पशु का भवयव ।

पिचगिहल (वि०)-बड़े पेट वाला,  
तुन्दिल, थोँद वाला ।

पिचु(पु०)-कपास, कार्पास, रुई, कुष्ठ-  
रोगविशेष; एक दैत्य, अस्य-  
भेद, शैरु का चाचक ।

पिचुतूल(न०)-रुई, तूल ।

पिपुमन्द(पु०)-निम्ब का वृक्ष ।

पिचु(१० उ०)-छेदन करना, काटना ।

पिचुट(न०)-सीसक, सीसा; रांग,  
एक प्रकार का नेत्ररोग ।

पिचु(६ पु०)-रोकना, बांधना ।

पिचु(न०)-सौर की घुँट, मयूरपिचु,  
मयूर की शिखा । पु०-घुँट,  
नाक, सेमल का वृक्ष, सुपारी,  
पंक्ति, कीच । [ पत्ती ।

पिचुवाण (पु०)-श्वेन, बल नामक

पिच्छिल(वि०)-परस ठगलून, मरह-  
युक्त भात, स्निग्ध सूपदि ।

पिज (१० उ०)-बल करना, चमकना,  
हिंसा करना, मारना, दान देना ।

पिजु(न०)-घल, ताकत, जोर । पु०-  
एक प्रकार का कर्पूर, वि०-  
टपाकुल, हिरान ।

पिजुट(पु०)-नेत्रमल, आंखों का मैल ।

पिजुग (न०)-रुई स्फोटन करने का  
धनुष, रुई, धुआँ का नार्पण ।

पिजुर (न०)-दूरताल, स्वर्ण, भाग-  
ज्योति, पत्ती आदि के बन्ध करने  
का पिजरा, शरीरादिपुष्पमूह ।  
पु०-अवविशेष, पीत और रक्त-  
वर्ण । वि०-सब रंग वाला ।

पिजुल(न०)-कुशपत्र; बरतोल ।

पिप्लली (स्त्री०)-कुशा का बनाया  
भादेशमात्र पवित्र, पवित्रा ।

पिप्लूय(पु०)-कान का मैल, कर्णमल ।

पिप्लेट (पु०)-आंस का मल, नेत्रमल ।

पिट(१ पु०)-एकत्र होना, शब्द करना ।

पिट-क (१ पु०)-पिटारी, मज्जू पा,  
विस्फोट, फोड़ा नामक रोग ।

पिहक(न०)-दाँतों का मैल, दन्तमल ।

पिह (१ पु०)-सकलीक, ठठाना, बलेश  
भोगना, मारना, हिंसा करना ।

पिठर(न०)-नागरभीषा, दूध बिलोने  
का दरह, मय्यनदरह । पु०-पृथ्वी,  
अग्निविशेष, एक दैत्य का नाम ।

पिठरी(स्त्री०)-स्थाली, घाली ।

पिह (१ आ०, १० उ०)-एकत्र करना,  
राशीकरण ।

पिहक (पु०)-स्फोटक, झण, फोड़ा ।

पिहका(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

पियह(अस्त्री०)-इकट्ठा हुआ, राजीकत;  
आजीवन, देहमात्र, देह का एक  
भाग, स्थान का एक देश, कबल,  
घास, आहुविशेषक पियह, समु-  
दाय, वृत्त, गोल, गजकुम्भ, लोहा,  
मदनवृक्ष, आहु से पितरो के लिये  
देय अन्नविशेष ।

पियहखजूर(पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध  
खजूर का वृक्ष । [ प्रद ]

पियह (पु०)-पियहदानकर्ता, पियह-  
पियहपाद(पु०)-बत्ती, हाथी ।

पियहपुष्प (अस्त्री०)-अशोक नामक  
वृक्ष का पुष्प ।

पियहबीजक (पु०)-कमेर का वृक्ष ।

पिण्डल ( पु० )-सेतु, पुल ।

पिण्डल ( पु० )-भिक्षान्नीयजीवी,  
निक्षायी ।

पिण्डल ( न० )-ओले, चनोपल ।

पिण्डलय ( न० )-तीक्ष्ण छोटा ।

पिण्डार ( पु० )-गोप, गालिया, बौद्ध  
सन्मार्गी, सपणक, चिककल का वृक्ष ।

पिण्डालुक ( न० )-आलु का भेद,  
गोलाकार आलु ।

पिण्डिका ( स्त्री० )-रथ के पहिये की  
धुरी, रथनाभि ।

पिण्डित ( वि० )-गिना हुआ, गणित,  
घन, गुणन किया हुआ, गुणित ।

पिण्डी [ न० ] ( वि० )-शरीरचारी,  
शरीरी ।

पिण्डीशूर ( पु० )-वह पुरुष जो खाने  
' में गूर हो, मोलनगूर, घर में  
हो शूर ।

पिण्पाक ( अस्त्री० )-तिलकलक, खल  
नाम से प्रसिद्ध वस्तु, हींग ।

पिता [ न० ] ( पु० )-उत्पादक, जनक, बाप ।

पितामह ( पु० )-पितृ पिता, बाबा,  
बाप का बाप, प्रपिता । [ दादी ।

पितामही ( स्त्री० )-पिता की माता,  
पितृक ( वि० )-पितृसम्बन्धी, पिता

से प्राप्त ।

पितृकानन ( न० )-पितरों का घन,  
श्मशानभूमि, नरघट । [ पितृवन,

पितृगृह शब्द भी इसी अर्थ में  
होते हैं ] ।

पितृमित्र ( स्त्री० )-प्रभावस्था ।

पितृमित्र ( न० )-पितरा का तीर्थ,

गया, अगूठा और तर्जनी का  
सम्पर्भाग ।

पितृपति ( पु० )-पितरों का पति, पमराज  
पितृपिता=पितामह ।

पितृप्रभू ( स्त्री० )-गिळली सध्या का  
समय, पिता की माता, दादी ।

पितृमित्र ( पु० )-भूगराज, भगरा ।

पितृबन्धु ( पु० )-आवा [पितामह]  
की बहिन का पुत्र, पिता के  
माता का पुत्र । [ भाई ।

पितृभ्राता ( पु० )-पितृव्य, पिता का  
पितृव्य ( पु० )-तपेण ।

पितृलोक ( पु० )-पितरों का लोक,  
चन्द्रलोक से ऊपर का एक लोक ।

पितृव्य ( पु० )-पिता का भाई ।

पितृव्यसा [ स्त्री० ]-पिता की  
बहिन, युवा ।

पितृस्वस्त्रीय ( पु० )-पिता की बहिन  
की पुन्ताम, सुभा का बेटा या बेटो ।

पितृसन्निभ ( वि० )-जो पिता के  
समान हो । [ सुकरा ।

पितृ ( न० )-देहस्थ दोषविशेष, गर्मी,  
पितृग्री ( स्त्री० )-गुदूची, गिळीय ।

पितृरक्त ( न० )-रक्तपित्त नामक  
रोग जिस में मुखनासा आदि में  
खून जाया करता है ।

पितृनी ( न० )-सामे आदि से बना  
एक प्रकार का धातु, पीतल ।

पितृ-गर्भस्वभाव का । [ पीपल ।

पितृला ( स्त्री० )-जलपिप्पली, जल  
पितृारि ( पु० )-पघट, छासा, छात्र ।

पितृ ( वि० )-पितृसम्बन्धी पिता से प्राप्त,  
पिता का । न०-मपु, माप [ उद्धृ ] ।



पु०-पितृस्तुल्य, पिता का भाई ।  
पितृलज्ज (पु०) पत्नी । वि०-गिरने की इच्छा  
वाला ।

पिधान (ग०)-छादन, ढकना, परदा ।  
पिनद्ध (वि०)-छादनयुक्त, ढका हुआ,  
पट्टियाँ हुआ [वस्त्रादि] ।

पिनाक (झात्री०)-शिव का धनुष, शिव  
शूल रूपी शस्त्र, धूल का वरसना ।

पिनाकी [न.] (पु०)-शिव, महादेव ।

पिपतिपु (पु०)-पत्नी । वि०-पतनेच्छु,  
गिरने की इच्छा वाला । [प्यास ।

पिपासा (स्त्री०)-पीने की इच्छा, तृषा,  
पिपासिन (वि०)-तृषायुक्त, प्यासा ।

पिपातु (वि०)-पीने की इच्छा वाला, तृपित,  
प्यासा । [मकोडा वा मकाड़ी ।

पिपीराक लिका = काला कीड़ा वा कीड़ी,  
पिप्पटा (स्त्री०)-गुह्यशर्करा, शकर ।

पिप्पल (न०)-जल, कपड़े का एक टुकड़ा ।  
पु०-पीपल का पेड़, पक्षिभेद ।

पिप्पल ली (स्त्री०)-पीपल नामक औषध,  
कपा, चपला, मानधी । [औषध ।

पिप्पलीमूल (न०)-पीपलामूल नामक  
पिप्पिका (स्त्री०)-दन्तमल । [मेवा ।

पिथाल (पु०)-वृक्षविशेष, चिराँजी नामक  
पिल्ल (१० ड०)-प्रस्था करना, चलाना ।

पिल्लुक (पु०)-पीलुवृक्ष, एक प्रकार का  
पहाड़ी फलवृक्ष ।

पिल्लका (स्त्री०)-हस्तिनी, हथिनौ ।

पिष् (१ प०)-क्षिप्तवना, सिंचन करना ।

पिष् (६ प०)-हिस्से करना, टुकड़े करना,  
पातना । [वाला ।

पिशङ्ग (पु०)-पिङ्गल वस्त्र । वि०-पिङ्गलवर्ण  
पिशाच (पु०)-द्रव्योनिविशेष, एक प्रकार  
का दैत्य, मांसभक्षण पुरुष ।

पिशङ्गमुष्ट (पु०)-शाखाटक मुष्ट ।

पिशित (न०)-मांस, गाश्त ।

पिशिता (स्त्री०)-जटामासी नामक सुगं-  
धित द्रव्य । [झाने वाला ।

पिशितायी [न.] (वि०)-मांसभक्षण, मांस

विशुभ (न०)-कुंजुम, केमर । पु०-नारद,  
काँष्ठा । वि०-सुगन्धयोर, मृद, निर्दय ।

पिप् (७ प०)-पीसना, चूर्ण करना ।

पिष्ट (न०)-सीसा, पिष्टक, पिष्टी । वि०-  
पिस्ता हुआ, चूर्ण किया गया, दत्ता  
हुआ, चूर्णित ।

पिष्टक (न०)-तिलचूर्ण । पु०-पिसे हुए  
चावलों का विकार, पिसे चावलों का  
बना भोजनविशेष, पूष, पूषा, नेत्र  
का एक रोग ।

पिष्टप (न०)-लोक, भुवन, जगत् ।

पिष्टपचन (न०)-तया, कटाहों प्रजीव ।

पिष्टपूर (पु०)-बड़े, बटक, पिष्टक ।

विष्टसीरस (न०)-चन्दन, मस्तक से  
लगाने का सुगन्धित द्रव्य ।

पिष्टरात (पु०)-यह पूर्ण जो वस्त्रों को  
सुगन्धित करने के लिये बनाया  
गया हो, अवोर, केशर आदि,  
पट्टाच चूर्ण । [पिष्टी ।

पिष्टिका (स्त्री०)-पिसी हुई दाढ़,  
पिस् (१ प०)-घमकना, दीप्त होना,  
सुगन्धिमर्दन, बल करना, नारना,  
दान करना, पीसना ।

पिहित (वि०)-ढका हुआ, बन्द किया  
गया, आच्छादित, अन्तर्हित ।

पी (४ आ०)-पीना, पान करना ।

पीठ (अस्त्री०)-आसनविशेष, पीठा,  
भूतधारियों का आसन, बैठने  
का आधार, स्तूप, वेदी, ग्रह  
नगरविशेष जहाँ देवी के देह से  
अनेक खण्ड टूट कर गिरे हो ।

पीठी (स्त्री०)-पीठी नामक आसन ।

पीह (१० ड०)-चारना, प्रवेश करना,  
विलोचन, मर्दन करना ।

पीहन (न०)-विपसी राजा आदि का

देश पर आक्रमण, दुःख देना,  
कष्ट पहुंचाना, सहन ।

पीडा(स्त्री०)-दुःख, व्यथा, तकलीफ,  
बाधा, कष्ट ।

पीडित(वि०)-बाधा पहुंचाया हुआ,  
निचोड़ा हुआ, चादस, दुःखित ।

पीत(न०)-पान, हरिताल । पु०-पीत  
वर्ण, हल्दी का रंग । वि०-पीत-  
वर्ण वाला । [पीतल ।

पीतक(न०)-हरिताल, केशर, कुकुन,  
पीतकन्द(न०)-गाजर, गजूर ।

पीतकाष्ठ(न०)-पीला चन्दन ।

पीततण्डुल(पु०)-कगनी ।

पीतता(स्त्री०)-पीलावन, पीतत्व ।

पीतन(न०)-केशर, कुकुन ।

पीतपुष्प(पु०)-कमल का वृक्ष, कर्णिकार ।

पीतबालुका(स्त्री०)-हरदी, हरिद्रा ।

पीतवासा[स्] (पु०)-झींकृष्ण । वि०-  
पीतवस्त्र वाला ।

पीता(स्त्री०)-हरदी, हरिद्रा ।

पीताक्षिप(पु०)-अगरतम मुनि ।

पीतान्मर(पु०)-विष्णु का वाचक ।

पीतु(पु०)-सूर्य, अग्नि, सूर्यापिप ।

पीथ(न०)-गल, घृत, सूर्य, अग्नि, काल ।

पीत(वि०)-मोटा, स्थूल, घनादि से  
पूर्ण, सम्पन्न, पृष्ठिङ्गित, बृद्ध ।

पीनस (पु०)-जुकाम, नासिकारोग,  
प्रतिश्याय ।

पीनसी[स्] (पु०)-पीनसरोगी पुरुष,  
बह पुरुष जिस को जुकाम का  
रोग हो ।

पीनोष्ठी (स्त्री०)-बह गी जिस के

बाख खा थन बहुत नोटे हों,  
पीवरस्तनी गौ ।

पीयू (पु०)-तृप्त होना, प्रसन्न होना ।

पीयु (पु०)-सूर्य, तलूक, कीआ, काल ।

वि०-हिंसा करने वाला, प्रतिकूल ।

पीयूष (न०)-अमृत, सुधा, थोड़े  
दिन की ज्यादागी का सात दिन  
के भीतर का दूध, मवीन दूध ।

पीडू (पु०)-रीकना, अवरोध करना ।

पीलु (पु०)-पुष्प, परमाणु का वाचक,  
हस्ती, हड्डियों का खण्ड, कीट-  
विशेष, बाण, तीर, वैद्येषिकों  
का एक भेद, पिठरपाक, फल-  
युक्तविशेष ।

पीवू (पु०)-मोटा होना, स्थूल होना ।

पीव [स्] (वि०)-मोटा, स्थूल, बल-  
वान् । पु०-पवन, वायु ।

पीवर (वि०)-मोटा, पीन, स्थूल ।  
पु०-तानस, मन्वन्तर में सहस्रियों  
का भेद ।

पीवा [स्] (पु०)-अक्षवान्, पवन, वायु ।

पीवरी (स्त्री०)-असम्पन्न, अतावर  
नामक औषध, तरुण गौ, शा-  
लपर्णी ।

पुनिङ्ग (न०)-पुरुष का चिन्ह, शिशु ।  
पु०-व्याकरणोक्त सस्कारविशिष्ट  
एक प्रकार का शब्द । वि०-पुरुष  
के चिन्ह वाला ।

पंवृष (पु०)-गन्धसूषक, उलूहर ।

पुश्चल (पु०)-अभिचारी, तारपुरुष ।

पुश्चली (स्त्री०)-अभिचारिणी,  
कुलटा स्त्री ।

पुस्(१० व०)-मलना, मर्दन करना ।  
 पुसधन(न०)-एक प्रकार का गर्भ का  
 संस्कार जो कि गर्भधारणानन्तर  
 तृतीय मास में किया जाता है,  
 स्त्रियों के लिये कर्तव्य एवं व्रत,  
 दुग्ध ।  
 पुस्कीकिल(पु०)-पुंस्य कोयल पक्षी ।  
 पुस्त्व(न०)-पुंस्य का बिन्दु, पुंस्यत्व,  
 शुक्र, वीर्य, अङ्गविशेष ।  
 पुक्कश-स(पु०)-बगहाल, अधम, नीच,  
 निषाद से शूद्रा में उत्पन्न पुत्र ।  
 पुक्कप(पु०)-पुंस्यवत् ।  
 पुक्क(पु०)-घाण का मूल, चिल्ले पर  
 चढ़ाये घाण का हिस्सा, घाण  
 का सिरा, पयांस, काफी, प्रसिद्ध;  
 मङ्गलाचार ।  
 पुक्क(अस्त्री०)-समूह, गिरोह, समुदाय ।  
 पुक्कल(पु०)-आत्मा का वाचक ।  
 पुक्कय(पु०)-वृषभ, बैल । [ तोलना ।  
 पुक्क(१ प०)-मापना, प्रमाण करना,  
 पुक्क(न०)-पीछे का भाग, पूछ, लांगूल ।  
 पुक्कटि ( न० )-अङ्गुलियों का मट-  
 काना, अङ्गुलिमोटन । [ कुक्कुट ।  
 पुक्क(न०)(पु०)-अर्क का घृत, मुर्गा,  
 पुक्क (पु०)-गिरोह, समूह, समुदाय ।  
 पुट ( १० व० )-दीप्त होना, चमकना,  
 पूर्ण करना, पीसना ।  
 पुट[अदन्त] (१० व०)-मालिनन करना,  
 मिलना, जुड़ना ।  
 पुट(न०)-भीषण आदि के पकाने के  
 लिये जुड़े हुए दो पात्र अपांस

संपुट, दोना, जायफल । पु०-  
 घोड़े का खुर । वि०-ढकना,  
 आछादन ।

पुटक(न०)-कमल, पद्म ।  
 पुटघोव(पु०)-तांघे का घड़ा, गागर,  
 ताम्बूकुम्भ । [ भीषण का पचन ।  
 पुटपाक(पु०)-संपुट के भीतर रखी  
 पुटभेद (पु०)-नदी आदि का बका-  
 कार ज्वर, नदी के जल का बह,  
 नगर, शहर, वाद्यविशेष ।  
 पुटभेदन(न०)-नगर, शहर ।  
 पुटिका(स्त्री०)-बलायची, पृष्ठा ।  
 पुटित ( वि० )-गुथा हुआ, यमित,  
 पाटित, तन्त्र में कहा आद्यन्त में  
 ओकारादि के सम्पुटयुक्त मन्त्र ।  
 पुटी(स्त्री०)-पत्रादि से रचित 'दोना',  
 'कौपीन, आच्छादनयस्त्र' ।  
 पुटोदज(न०)-श्वेतवर्ण का उग्र ।  
 पुटोदक(पु०)-नारिकेल, नारियल ।  
 पुह्(१० व०)-तिरस्कार करना, अना-  
 दर करना, खेदजन्ती करना ।  
 पुह्( १ प० )-मर्दन करना, मलना,  
 पीसना । [ का सम्पादन ।  
 पुण्(६ प०)-धर्मकार्य करना, धर्मकृत्य  
 पुण्ड ( पु० )-तिलक, टीका ।  
 पुण्डरीक (न०)-श्वेतवर्ण का कमल,  
 सफेद रंग का पद्म, श्वेतपद्मा,  
 भीषणविशेष । पु०-अग्निकोण  
 में रहने वाला दिग्गज, इति-  
 ज्वर, राजिल नामक सर्प, कम-  
 , बहलु, श्वेतवर्ण, क्रीष्ण द्वीपराज

एक पर्वत का वाचक, श्रीराम-  
चन्द्र जी के वंश में एक नृप ।

पुस्तकालय (पु०)-विष्णु, श्रीकृष्ण ।

पुस्तकीयक (न०)-स्वल्पपत्र, गुलाम  
का फूल ।

पुस्तक (पु०)-इक्षुभेद, पीड़ा, एक  
दैत्य, विप्रक, चीता नामक औषध,  
क्रिमिविशेष, तिलक का दूत,  
पु० न०-एक देश का नाम ।

पुस्तकेति (पु०)-हस्ती, हाथी ।

पुस्तक (न०)-शुभ, कर्म, धर्म, शुभादृष्ट,  
शोभन कर्म । वि०-सुन्दर, सुगन्धि ।

पुस्तक (न०)-व्रतविशेष, उपवास ।

पुस्तकृत (वि०)-पुस्तक करने वाला,  
धार्मिक पुरुष ।

पुस्तकान (पु०)-पक्ष, राक्षस ।

पुस्तकानेश्वर (पु०)-कुबेर ।

पुस्तकान (न०)-श्वेतकुश नामक वृक्ष  
विशेष ।

पुस्तकभूमि (स्त्री०)-आर्यावर्त देश,  
हिमालय और विन्ध्याचल के

मध्य का प्रदेश, यथा अनु-

आत्ममुद्राक्ष वै पूर्वोदात्ममुद्राक्ष परिधमात्र ।

ततोरेवान्तर गिरीराजवर्त विदुषा ॥

पुस्तकानु [ त ] (वि०)-पुस्तक करने  
वाला, पुस्तकयुक्त ।

पुस्तकालोक (पु०)-विष्णु, युधिष्ठिर,  
नलराज । वि०-पवित्र आचरण

करने वाला ।

पुस्तकालोका (स्त्री०)-सीता, द्रौपदी ।

पुस्तका (स्त्री०)-तुलसी नामक वृक्ष ।

पुण्याह (न०)-पवित्र दिन, पुण्या-  
त्पादक दिन ।

पुण्याहवाचन (न०)-वैदिककर्म के  
आरम्भ समय में मंगलार्थ 'पुण्याह'  
इस शब्द का तीन बार कथन  
वा ब्राह्मण द्वारा उस दिवस की  
पवित्रता का सम्यक् उच्चारण ।

पुस्त (१ पु०)-जाना, गमन करना,  
प्राप्त करना ।

पुस्तक (पु०)-तृण, पत्ता वा काण्ड  
आदि की बनाई मूर्ति, पुस्तका ।

पुस्तकिका (स्त्री०)-पुस्तक ।

पुस्तिका (स्त्री०)-निही आदि की  
बनाई मूर्ति ।

पुस्तिका (स्त्री०)-शब्द की मक्खी,  
मधुमक्षिका, डोटी, मक्खी ।

पुस्त (पु०)-जो 'पुस्त' नामक मरकत् से  
रक्षा करे, लड़का, तनय, सुत, बेटा  
जो कि 'औरत' आदि १२ प्रकार  
के होते हैं, लग्न से प्रांचया स्थान ।

पुस्तक (पु०)-तनय, बेटा, घरम  
मानक पशु, कृत्रिम [गोद लिया]  
सुत, पुत्र, पर्वतविशेष, वृक्षभेद,  
दया करने योग्य पुरुष ।

पुस्तका (स्त्री०)-लक्ष्मणा नाम की  
बेल जो यन्ध्या स्त्रियों के लिये  
भी गर्भप्रदा होती है ।

पुस्तिकापुत्र (पु०)-लड़की का पुत्र वा पुत्र-  
रूप से स्वीकार की हुई कन्या ।

पुत्रिणी (स्त्री०)-पुत्रपत्नी स्त्री ।

पुत्री [न] (पु०)-पुत्रपुत्र पुत्र ।

पुत्री (स्त्री०)-लड़की, सुता, बेटा ।

पुत्रोय ( वि० )-पुत्रसम्यग्धीः पुत्रनिमित्त-  
सकसंयोग ।

पुत्रेष्टि ( स्त्री० )-पुत्र के निमित्त यज्ञविशेष,  
यह यज्ञ जो पुत्रोत्पत्ति के लिये किया  
जाता है ।

पुत्री ( पु० )-पुत्र और पुत्री । [ पहुंचाना ।

पुत्र ( २. पु० )-भारना, हिंसा करना, हानि  
पुद्गल ( पु० )-देह, आत्मा, शिव का नाम,  
परमात्मा । वि०-सुन्दराकार, सुन्दरप्रभ

पुनः [ र ] ( प्र० )-भेद, अधिकार, अवधा-  
रण, दूसरा पक्ष, पक्षान्तर, फिर ।

पुनःपुनः [ र ] ( अ० )-फिर फिर, बार-  
बार, असीद्धन, असकल, सुहुः ।

पुनःपुनः ( स्त्री० )-एक नदी जो गया  
के समीप है, पुनपुनः, पनपुनः ।

पुनःसंस्कार ( पु० )-दूसरी बार सपन-  
यत्नादि संस्कार, द्वितीयवार  
संस्कार ।

पुनरागमन ( न० )-द्वितीयवार आग-  
मन, फिर से आना ।

पुनरुक्त ( न० )-पुनवार कथन, दूसरी  
बार कहना । [ विप्र ।

पुनरुक्तजन्मा [ न ] ( पु० )-प्राज्ञन,

पुनरुक्तवदोभ्यास ( पु० )-वह अलं-  
कार जिस में बार २ पूर्वोक्त  
कथन पाया जाये ।

पुनर्जन्म [ न ] ( न० )-द्वितीयवार  
जन्म, फिर से जन्म ।

पुनर्नव ( पु० )-नख, नाखून ।

पुनर्नव ( पु० )-पूर्ववत् ।

पुनर्भू ( स्त्री० )-दूसरी बार विवाहित  
स्त्री, दुबारा टपाही गीरत, द्विकृता

पुनर्वसू ( पु० )-विष्णु, शिव ।

पुनर्वसू ( पु० द्वि० )-अश्विनी से सातवां  
नक्षत्र ।

पुनराग ( पु० )-प्रवेत कनक, पीतवर्ण  
का-इस्ती, उत्तम मनुष्य, वह वृक्ष  
जिस पर बहुत से पुष्प हों ।

पुनरागमनरक ( पु० )-वह नरक जिस में  
मनुष्य परदेराभिगमन आदि १६  
प्रकार के पापसमूह से पड़ता है ।

पुच्छुल ( पु० )-पेट में रहने वाला वायु,  
चदरस्थ वायु ।

पुच्छुल ( पु० )-बागवार्त्त में स्थित एक  
महाशय, कैफ़ड़ा ।

पुगाग [ स ] ( पु० )-पुरुष, मनुष्य, मनु-  
ष्यत्वजातिविशिष्ट, कूटस्थ  
पुरुष ।

पुर् ( द्वि० )-आगे जाना, अग्रगमन ।

पुर् ( न० )-गह्वर, घर, देह, नागरनोषा,  
घर के ऊपर घर, चम, चमड़ा ।

पुर् ( स्त्री० )-नगरी, पुरी, शहर,  
बहुत से ग्राम के उपबहारी पुरुषों  
के रहने का स्थान ।

पुर् [ स ] ( प्र० )-आगे, समीप में,  
अग्रतः, पूर्व की दिशा में, प्रथम  
काल में । [ अग्रगामी ।

पुर्ःशर ( वि० )-आगे, चलने वाला,

पुर्ज्जन ( पु० )-स्वकृत शुभाशुभ कर्म  
की आसक्ति या तरसमीप रहने  
से देह का उत्पन्नकर्ता, जीव ।

पुर्ज्जनी ( स्त्री० )-पुष्टि, गमीया ।

पुर्ज्जय ( पु० )-सूर्यपंथीय काकुरस्थ  
मासक एक प्रसिद्ध राजा ।

पुर्ट ( न० )-स्वर्ण, सोना ।

पुराण (पु०)-समुद्र, सागर ।

पुरतः [स्] (अ०)-आगे से, अग्रतः ।

पुरतटी (स्त्री०)-छोटी दुकान, सुद्र  
बट ।

पुरद्वार (न०)-नगर का दरवाजा ।

पुरहिद् [प] (पु०)-शिव, महादेव ।

पुरन्दर (पु०)-इन्द्र, देवताओं का  
राजा, चौर, लूटकर ।

पुरन्दरा (स्त्री०)-गङ्गा, सुरनदी,  
काली मिश्र ।

पुरन्धि-न्धी (स्त्री०)-पति, पुत्र और  
पुत्री वाली स्त्री, कुटुम्बधारी मारी,  
कुटुम्बिनी, स्त्रीमात्र ।

पुरद्वरण (न०)-सम्प्रतिष्ठा के पंचांग  
साधन यथा-सम्प्रजप, होम, तर्पण,  
अभिषेक और ब्राह्मण भोजन,  
देवताके पूजन द्वारा किसी अनि-  
लपित मन्त्र को सिद्ध करना ।

पुरस्कार (पु०)-आगे करना, पुर-  
स्क्रिया, पूजन, स्वीकार, अभिषाप,  
शत्रु का पकड़ना, इनाम ।

पुरस्कृत (वि०)-पूजित, आगे किया  
गया, शत्रु से परेष्ठ, स्वीकार किया  
हुआ, छिड़का हुआ, सिक्त ।

पुरस्तात् [अ०]-आगे से, सामने  
से, अग्रतः ।

पुरा (अ०)-पूर्व, व्यतीत, बीते  
हुए, वाक्यरचना, प्रबन्ध, कहानी,  
पूर्व की दिशा, सन्निहित, अना-  
गत, आगामिक ।

पुरा (स्त्री०)-शुगन्धित द्रव्यविशेष ।

पुराकृत (वि०)-पूर्वकाल में किया  
पापपुण्य रूप कर्म, प्रारब्ध ।

पुराण ( वि० )-पुराणा, प्राचीन,

पुगाकाशीन, बृह । न०-बीती  
हुई घटना, पुराकालसम्बन्धी  
कहानी वा भाषा, प्राचीन वृत्तान्त,  
इतिहास, गाथा, अपने नाम से  
प्रसिद्ध पुस्तक [पुराण संह्या में  
१८ हैं जिनमें अनेक कपोलकल्पित  
गाथाओं का वर्णन और कहीं २  
पर धर्मापदेश का समावेश है ।  
वर्तमान हिन्दुगण [सनातनधर्मी  
नाम से परिचित] इन को अपना  
धर्मग्रन्थ मानते हैं] ।

पुराणपुरुष (पु०)-विष्णु का वाचक,  
बृह पुरुष ।

पुरातन (पु०)-पहिले समय से हुआ,  
पुराणा, बहुत प्राचीन, पुराण,  
अष्टपाय, विष्णु, परमात्मा । वि०-  
पूर्व समय में होने वाला, प्राचीन-  
कालोद्भूत ।

पुराध्यक्ष ( वि० )-नगर का स्थानी,  
नगरनायक, पुरका अधिकारी ।

पुरारि ( पु० )-शिव, महादेव ।

पुरावसु ( पु० )-जीष्मपितानह ।

पुरावृत्त (न०)-पूर्व समय की व्यतीत  
हुई बात, पूर्व समय के चरित्र,  
इतिहास, वह ग्रन्थ जिस में प्राची-  
नकाल के चरित्र वर्णित हो जैसे  
महाभारत आदि ।

पुरि ( स्त्री० )-नगर, कुटी, नदी का  
वाचक, शरीर । पु०-राजा, सन्या-  
विभेद ।

पुरी ( स्त्री० )-नगरी, राजधानी ।

पुरीतत् ( अस्त्री० )-आत, अन्त्र,  
वे नाडिया जो शरीर को फैलाने  
में हेतु होती हैं ।

पुरीमोह ( पु० )-घतूरा, घतूर ।

पुरीप ( पु० )-यिष्टा, मल ।

पुरीपण ( पु० )-पूर्ववत् ।

पुरीपम ( पु० )-नाप, उहद ।

पुरु ( पु० )-देवलोक, एक राजा जो  
ययाति का कनिष्ठ पुत्र था, दैत्य  
का नात । वि०-बहुत, प्रचुर ।

पुरुष ( पु० )-मनुष्य, पुमान्, मानव,  
महर्ष ।

पुरुषकार ( पु० )-पुरुषार्थ, पौरुष,  
उद्योग, चेष्टा, हिम्मत, पुरुष का  
प्रयत्न ।

पुरुषत्व ( पु० )-मनुष्यपन, मनुष्यता ।

पुरुषद्वय ( वि० )-पुरुष के परिमाण  
वाला, पुरुषपरिमाण ।

पुरुषद्वय ( वि० )-पूर्ववत् ।

पुरुषमात्र ( वि० )-पूर्ववत् । [ श्रेष्ठ ।

पुरुषपंत ( पु० )-मनुष्यों में श्रेष्ठ, पुरुष-

पुरुषसिंह ( पु० )-पूर्ववत् ।

पुरुषाद्य ( पु० )-विष्णु, जिनविशेष ।

पुरुषोत्तम ( पु० )-विष्णु, परमात्मा ।

पुरुष शु ( वि० )-बहुत, प्रचुर ।

पुरुषूत ( पु० )-इन्द्र, देवराज ।

पुरुषाः [स] ( पु० )-एक चन्द्रयगीय  
राजा जो युध मे द्रुता में उत्पन्न  
हुआ जो रयंगी का पति था ।  
पुरोग ( वि० )-आगे चलने वाला,  
अग्रगामी, प्रथम ।

पुरोडाश ( पु० )-हवि, जो के चून से  
बनाई रोटिकाविशेष, घृत आदि  
यद्यद्रव्य ।

पुरोधा- [स] ( पु० )-पुरोहित ।

पुरोभागी [न] ( वि० )-गुणों को छोड़  
कर अवगुणों पर दृष्टि डालने  
वाला, पहिले भाग ( हिस्सा )  
वाला, अग्रगंथी ।

पुरोहित ( पु० )-पुरोधा., यज्ञमान  
के सङ्गलार्थ शान्ति आदि कर्ता,  
इस लोक वा परलोकसम्बन्धी  
कार्यों में जो आगे किया जाय,  
यज्ञादि कर्मों का कारयिता ।

पुर्व ( १ पु० )-पूर्ण करना, भरना,  
पूर कराना ।

पुल् ( १० व० )-उन्नत होना, ऊँचा  
होना । १५०-बढ़ा होना, महत्त्व ।

पुल ( पु० )-विपुल, बड़ा, सेतु ।

पुलक ( पु० )-रोमों का खड़ा होना,  
रोमाञ्ज, रोमोद्देह, हस्तिभोजन,  
कीट, हरिताल, गण का एक  
दोष, राई, एक गन्धर्व का नाम ।  
ज० कंकुष्ठ नाम औषध । [नाम ।

पुलस्ति-स्थ ( पु० )-एक मुनि का

पुलह ( पु० )-मुनिविशेष का नाम,  
धान नामक अन्न, सिप्र, जलदी ।

पुलाक ( पु० )-क्षुद्रपान्थ, अश्वशृङ्ग ।

पुलिम ( म० )-सौयोत्थिततट, जल से  
निकला हुआ किनारा, द्वीप, टापू ।

पुलिन्द ( पु० )-चण्डालभेद ।

पुलोमजा ( स्त्री० )-चन्द्राणी, पुलोमा  
नाम दैत्य की पुत्री ।

पुलोमजित्-द्विद् (पु०)-इन्द्र ।

पुलोमा [न] (पु०)-अमुरविशेष,  
इन्द्र का श्वशुर । [पालना ।

पुप् (१ प०, ४ प०)-पुष्ट करना,  
पुपित (वि०)-पुष्ट, पालित, प्रवरित  
किया हुआ ।

पुष्कर (न०)-इस्तिशुगहायभाग, वाद्य-  
विशेष, कमल, एक तीर्थ । पु०-एक  
हाथी, नृपविशेष [इस अर्थ में  
प्रायः नल के भाई के लिये यह  
शब्द प्रयुक्त होता है] । [औषध ।

पुष्करमूल (न०)-पोहकरमूल नामक  
पुष्कराक्ष (पु०)-विष्णु ।

पुष्करिणी (स्त्री०)-पद्मसमुदाय,  
कमलिनी, चतुष्कोण तालाब जो  
सौ धनुष की माप का हो ।

पुष्करी [न] (पु०)-इस्ती, हाथी ।

पुष्कल (वि०)-श्रेष्ठ, बहुत, पूर्ण, काकी ।  
न०-नगरविशेष, चौंसठ मुहूर्त का  
परिमाण, चार घास भर भीख ।

पुष्ट (वि०)-मज्जित, बलशाली, पालन  
किया हुआ ।

पुष्टि (स्त्री०)-पालना, बढ़ना, पोहय  
मातृकाओं में से एक ।

पुष्टिदा (स्त्री०)-असगन्ध, वृद्धि ।

पुष्प (४ प०)-खिलना, विकसना, फूलना ।

पुष्प (न०)-कुसुम, फूल, स्त्रीरज, कुबेर  
का विमान, फूला नामक नेत्ररोग ।

पुष्पक (न०)-कुबेर का विमान, फूला  
नामक नेत्ररोग ।

पुष्पकरण्डक (न०)-फूलों को चुन कर  
रखने की टोकरी ।

पुष्पकीट (पु०)-भ्रमर, अलि, भौरा ।

पुष्पकेतु (न०)-फूलों को दूर करने  
वाला अंजन ।

पुष्पचाप (पु०)-कामदेव, अननग ।

पुष्पदन्त (पु०)-वायव्य कोण का  
दिग्गज, एक विद्याधर का नाम ।

पुष्पधन्वा (पु०)-कामदेव, रतिपति ।

पुष्पपुर (न०)-पाटलीपुत्र, पटना ।

पुष्पफल (पु०)-कपित्थ, कैश, कूष्माण्ड ।

पुष्पमास (पु०)-वसन्त ऋतु ।

पुष्परस (पु०)-फूलों का रस, मकरन्द-  
कुमुद, गोंद, निपांस ।

पुष्पराम (पु०)-नण्डिविशेष, पुष्कराक्ष ।

पुष्पलाव (पु०)-मालाकार, माली ।

पुष्पलिङ्ग (पु०)-मधुकर, भौरा ।

पुष्पयती (स्त्री०)-क्षतुमती स्त्री,  
रजस्वला । [फुलवाड़ी ।

पुष्पवाटी-टिका (स्त्री०)-पुष्पोद्यान,

पुष्पशर (पु०)-कन्दर्प, कामदेव ।

पुष्पशून्य (पु०)-रतुम्बर, गूलर का पेड़ ।  
वि०-फूलरहित ।

पुष्पा (स्त्री०)-कर्णपुरी, भागलपुर  
नाम से प्रसिद्ध नगर । [माली ।

पुष्पाजीव-जीवी (पु०)-मालाकार,

पुष्पाशव (न०)-मधु, शहद ।

पुष्पाह्वा (स्त्री०)-शतपुष्पा, सैंफ ।

पुष्पित (वि०)-फूलवाला, जातकुसुम ।

पुष्प (पु०)-सत्ताईस नक्षत्रों में से  
आठवां नक्षत्र ।

पुष्पलक (पु०)-गन्धमूग, क्षपणक, फील ।

पुस्त (१० व०)-गन्धन, वाचना ।

पुस्त (न०)-मटो, लकड़ी, चमड़े आदि



वा रतनों से घना हुआ पदार्थ,  
कारीगरी का काम, पलस्तर  
आदि काम ।

पुस्तक(न०)-ग्रन्थ, किताब ।

पुस्तकभां(वि०)-शिल्पकार, कारीगर ।

पू(४ प०, १ आ०, ८ उ०)-शुद्ध करना,  
साफ करना ।

पूग (पु०)-सुपारी का वृक्ष, समूह,  
फांटे वाला वृक्ष । न०-सुपारीफल ।

पूगपात्र-पीठ( न० )-पीकदान, पान  
सुपारी खाने के समय चूकने का  
पात्र । [करना, इज्जत करना ।

पूज्( १० न० )-अर्चन करना, पूजा

पूजक(वि०)-पूजनकरनेवाला, पूजारी ।

पूजा(स्त्री०)-अर्चना, इवादन करना ।

पूजार्ह(वि०)-पूजा के योग्य, पूजनीय ।

पूजित (वि०)-अर्चित, पूजा किया  
हुआ । [ पूजनीय ।

पूजितव्य-पूज्य(वि०)-पूजा के योग्य,

पूत(वि०)-शुद्ध, पवित्र । न०-अपनीत-  
तुपतण्डुल, छड़े हुए चावल ।

पू०-ग्रंथ, प्रेतकुशा ।

पूतकतायी (स्त्री०)-शतक्रतु[शुभ्र] की  
पत्नी, शची, इन्द्राणी । [तिल ।

पूतधान्य (न०)-पवित्र धान्य अर्थात्

पूतना(स्त्री०)-हरीतकी, ऐह, रातसी-  
भेद, एक घातुरोग ।

पूतभारि(पु०)-श्रीकृष्ण ।

पूना(स्त्री०)-दूषा, दूष नामक घास ।

पूनातमा[न] (पु०)-परमात्मा, मिश्र ।

पूति(स्त्री०)-पवित्रता, दुर्गन्ध, पापी-  
जमी । न०-रोहित नामक मृग ।

पूतिक(न०)-विष्टा, पुरीष । पु०-कर्-  
जने का भेद ।

पूतिकर्ण(पु०)-कर्णरोगविशेष ।

पूतिका ( स्त्री० )-माजारी, बिल्ली,  
कीटविशेष ।

पूतिकाष्ठ(न०)-देवदारु, सरलवृक्ष ।

पूतिगन्ध ( पु० )-गन्धक, इक्षुदीवृक्ष,  
दुर्गन्ध । [ कांगनी ।

पूतितैला(स्त्री०)-ज्योतिष्मती, माख-

पूप ( पु० )-विष्टक, घड़ा, मिट्टी का  
घना घड़ा । [ राध, पीव ।

पूय ( न० )-वृणादि से निकला हुआ

पूयारि(पु०)-सिन्ध का वृक्ष ।

पूर ( ४ आ० )-प्रसन्न होना, भरना,  
पूर्ति करना ।

पूर ( पु० )-जल का प्रवाह, जल का  
समुदाय, भोजनविशेष, वृण की  
सफाई ।

पूरक ( पु० )-बीजपूर नामक मीठू,  
विजौरा मीठू, एक गुणक जड़,

प्राणायाम का भेद, यह प्राणा-  
याम जिस में श्वास नाक से

ऊपर की खींचा जाता है, प्रेत के

शरीर की निर्माण करने वाले  
पिण्डों की संज्ञा । वि०-पूर्ण

करने वाला ।

पूरण(न०)-पितृविशेष, यषां, अर्द्धों  
का गुणन । पु०-समुद्र, सेतु, पुल,

विरगुतेल । वि०-पूरा करनेवाला ।  
पूरित(वि०)-पूरा किया हुआ, गुणन  
किया गया, गुणित ।  
पूरत्व(पु०)-गन्ध, गर, मर्य, आदमी ।

पूर्ण(वि०)-सकल, समस्त, भरा हुआ,  
नागभेद, शक्त । [ पूरित घट ।

पूर्णकुम्भ(पु०)-जल से भरा घड़ा, जल-

पूर्णपात्र(न०)-वस्तु से भरा हुआ पात्र,

किसी उत्सवविशेष में प्रयुक्तता  
से ग्रहण किये अलङ्कारादि, शुद्ध  
मुट्टी चावलों से भरा यह पात्र जो  
होनादि के अन्त में प्रस्ता की  
दक्षिणा में दिया जाता है ।

पूर्णमा(स्त्री०)-पूर्णिमा तिथि ।

पूर्णमास ( पु० )-पीतमास नामक  
यज्ञविशेष ।

पूर्णमासी=पूर्णमा ।

पूर्णा(स्त्री०)-पञ्चमी, दशमी, पूर्णिमा  
और अमावस्या नामक तिथि ।

पूर्णोलक(न०)-पूर्णपात्र ।

पूर्णावसार(पु०)-महिष और राम ।

पूर्णिमा(स्त्री०)-पीतमासी ।

पूत ( न० )-पालन, खात आदि का  
कान, तालाब, कुव आदि का  
खुदवाना । न०-भरना, पूर्य करना ।  
वि०-उक्त, पूरित, भरा हुआ,  
ढका हुआ । [ रहना ।

पूय ( १० व० )-वसना, निवास करना,

पूय [यं] ( वि० )-प्रथम, पहिला,  
सब, ज्येष्ठ भाई [इस शब्द की  
संयमान सञ्ज्ञा होती है] ।

पूर्वगंगा ( स्त्री० )-नर्मदा नदी ।

पूर्व [यं] ज ( पु० )-पहिले उत्पन्न  
हुआ, ज्येष्ठ माता ।

पूर्व [यं] जा ( स्त्री० )-बड़ी बहिन,  
ज्येष्ठा भगिनी ।

पूर्व [यं] दिक् ( स्त्री० )-पूर्वदिशा ।

पूर्व [यं] दिक्पति ( पु० )-इन्द्र

पूर्व [यं] देव ( पु० )-अमर, दैत्य,  
राक्षस । [ का देश ।

पूर्व[यं] देश ( पु० )-पूर्व की दिशा

पूर्व [यं] पक्ष (पु०)-शुक्लपक्ष, शास्त्र  
विषयक प्रश्न, शास्त्रीयप्रश्न ।

पूर्व [यं] पद ( न० )-नाक्य वा  
समास का पूर्वभाग, परपद से  
पहिलापद, यह पद जिसके अन्त  
में भुप् वा तिद् प्रत्यय हो ।

पूर्व[यं] यज्ञ (पु०)-जिन का तेद ।

पूर्व [यं] रात्रि ( पु० )-रात्रि का  
पहिला भाग । [पहिला रूप ।

पूर्व [यं] रूप (न०)-पहिला छवण,

पूर्व [यं] वादी [न्] ( पु० )-प्रपन-  
वादकर्ता, मुद्दै ।

पूर्व[यं] शैल(पु०)-उदय पर्वत, वह पर्वत  
जिस पर की हो कर सूर्य उदय  
होता है । [वाजा, अग्रगामी ।

पूर्व [यं] सर ( वि० )-जाने चलने  
पूर्वो[यो] ( स्त्री० )-पूर्व की दिशा ।

पूर्वो [यो] पाठा ( स्त्री० )-अग्निनी  
मन्त्र से २०वा मन्त्र ।

पूर्वो [यो] ह्नु ( पु० )-तीन प्रकार से  
विभक्त दिन का पहिला भाग ।

पूर्व [यं] द्युः [स्] ( अ० )-पहिला  
दिवस, पूर्वदिन । [करना ।

पूर्व ( १० व० )-पूकृत करना, इकट्ठा  
पूष[१ प०]-बढ़ना, बृद्धि होना ।

पूर्वा[न्] (प०)-मूर्य, दिनपति, मूरण ।

पूर्व ( १० व० )-पालन करना, रक्षा करना ।

६ भा०-उपवहार करना, काम  
 करना । ५ प०-प्रयत्न होना ।  
 पृक्त (न०)-घन, दौलत । वि०-मिला  
 हुआ ।  
 पृक्ति (स्त्री०)-स्पर्श, सम्पर्क, छूना ।  
 पृच् (२ भा०, ३ प०)--मिलना, जोड़ना,  
 सम्पर्क होना, इकट्ठा होना ।  
 पृच्छा (स्त्री०)-प्रश्न, सवाल, पूछना ।  
 पृतना (स्त्री०)--सेना, फौज, चमू, बह  
 सेना जिस में २४३ रथ, २४३ हस्ती,  
 ३२९ अश्व, और १३१५ पैदल हों ।  
 पृतनापाट [साह् ] (पु०)-इन्द्र ।  
 पृप् (१० उ०)--केंकना, फेलाना ।  
 पृष्क (भा०)-अलहदा, जुदा, भिन्न,  
 अनेक रूप, विना, वर्जन ।  
 पृष्कत्व (न०)-अलग होना, भिन्नता,  
 जुदाई ।  
 पृष्गात्मता (स्त्री०)-देहादि रूप  
 पदार्थों से आत्मा की पृष्कता,  
 स्वरूप का पृष्भाप, विवेक ।  
 पृष्गात्मिका (स्त्री०)-उपक्ति ।  
 पृष्गन्त (पु०)-सूर्य, नीच, पामर ।  
 पृष्ग्विषय (वि०)-अनेक प्रकार वाला,  
 गानाश्रव ।  
 पृषा (स्त्री०)-कुन्ती, मुधिष्ठितादि  
 की मातर, कुन्तिभोज की कन्या ।  
 पृषाज (पु०)-कुन्तीपुत्र । [ तनय,  
 सुत, सुभु, और पुत्र भगने से  
 भी यही ग्रंथ होता है, यामाश्रयतः  
 यह गण्ड अर्जुनके निधे आता है ।  
 पृषिनी (स्त्री०)-गृनि, जमीन ।  
 पृषिनीमल (न०)-जमीन की सतह,  
 भूमि का ऊपर का भाग ।

पृथिवीन्द्र-ईश-क्षित-पाल (पु०)-राजा,  
 नृपति ।  
 पृथिवीपति (पु०)-राजा, यमराज ।  
 पृथिवीमण्डल (अस्त्री०)-कुरंगजमीन,  
 पृथिवी का घेरा ।  
 पृथिवीरुह (पु०)-वृक्ष, पेड़ ।  
 पृथु (वि०)-घोड़ा, विस्तृत, बसीह,  
 बड़ा, बहुत, तेज । पु०-अग्नि,  
 विष्णु, महादेव, एक राजा का  
 नाम । स्त्री०-अग्नीम ।  
 पृष्क (पु०)-बच्चा, शिशु, छोटा बालक ।  
 पृष्क (वि०)-घोड़ा, बड़ा, बसीह ।  
 पृष्वी (स्त्री०)-पृथिवी, जमीन,  
 पञ्चभूतों में से एक, बड़ी इलायची ।  
 पृष्वीखत (न०)-शर, गुला, छाई ।  
 पृष्वीज (पु०)-वृक्ष, पेड़, नकुलप्रह ।  
 पृष्वीपर (पु०)-पर्वत, पहाड़ ।  
 पृष्वीपति-नाच (पु०)-राजा, हाकिम ।  
 पृष्कु (पु०)-विच्छेद, पीता, चित्रक,  
 हाथी, वृक्ष, सर्प ।  
 पृष्नि [टिप्प] (वि०)-छोटा, नाजुक,  
 खर्ब, रगविरंगा । पु०-धान ।  
 स्त्री०-प्रकाशकिरण, भूमि, तैय,  
 दूत, देवकी ।  
 पृष्निगर्भ-धर (पु०)-श्रीकृष्ण ।  
 पृष् (१ भा०)-छिड़कना, देना, सताना,  
 जुफवान पहुंचाना ।  
 पृष् (पु०)-रगविरंगा मृग, जलविन्दु,  
 चिन्ह, दाग ।  
 पृष्ताशय (पु०)-वायु, सतत ।  
 पृष्क (पु०)-पाण, तीर ।  
 पृष्ति (पु०)-अद्यधिक, पानीकी बूंद ।

पुषोदर (पु०)-वायु, पवन । वि०-  
बिन्दुगर्भित, चक्षुं वाता ।

पुष्ट (वि०)-पूछा हुआ, प्रश्न किया  
हुआ, ठिठका हुआ ।

पुष्टि(स्त्री०)-पूछगल, प्रश्न, सवाल ।

पुष्ट (न०)-शरीर के पीछे का भाग,  
पीठ, किताब का छप्पा ।

पुष्टग्रन्थि(वि०)-कुम्हा, कुम्हा ।

पुष्टतः [सु] (अ०)-पीछे से, पीछे की  
ओर से, पीछे पीछे ।

पुष्टद्वारि(पु०)-जिस को नज़र पीछे  
को हो, भाँट, रौंठ ।

पुष्टयंश (पु०)-पीठ का भाँस, कमर  
की छत्रो हड्डी ।

पु (१०, ९५०)-प्राप्तना, पूरा करना ।

पेषक (पु०)-उलूक, उलूक, हापी की  
मूँठ का चिरा, घर्गड़, चारपाई,  
मेष, सूँका ।

पेटक (नस्त्री०)-बैग, बक्का, टोकरी,  
बैला, पिटारी । [बृहविशेष ।

पेटिका-पेटो (स्त्री०)-पिटारी,

पेटा (स्त्री०)-सन्दूक, मगूपा, यही  
पिटारी । [शोण्य ।

पेष (वि०)-पीने लायक, पाम करने  
योग्य (नस्त्री०)-पेषवी, सद्यःप्रभूता  
गी का सात दिन के मध्य का दूध ।

पेष (१५०)-कम्पन, कांपना, टिलना ।

पेष (न०)-पुष्टपविष्ट, अगदकोप ।

पेषक (वि०)-कृश, कोमल, नाजूक,  
गरम, सुन्दर ।

पेश [प.स] ल (वि०)-दत्त, चतुर,  
होशियार, नाजूक, कोमल ।

पेशि-शी (स्त्री०)-अण्डा, भाँस-  
पिंड, एक नदी, कुपाणापार,  
तलवार की म्यान । [करना ।

पेष (१५०)-सेवा करना, निश्चय  
पेषण (न०)-पौसना, धूर्ण करना,  
पेषणि-शी (स्त्री०)-पेषणशिला,  
पौसने की शिल, पट्ट ।

पैठीनवि-शी (पु०)-स्मृतिगोत्रका-  
रक एक मुनि । [दादा का ।

पैतामह (वि०)-पितामहसम्बन्धी,

पैतृक (वि०)-पिता का, पितासे प्राप्त ।

पैत्तिक (वि०)-पितृज, पितृसम्बन्धी ।

पैत्र (वि०)-पितृसम्बन्धी, पिता  
का । न०-विदुतीर्थ, सर्जनी और  
ज्यूटे के मध्य का स्थान ।

पैल (पु०)-मुनिविशेष ।

पैशाच (पु०)-मादप्रकार के विवाहों  
में मादका विवाह ।

पैशुन्य(न०)-विशुनता, खलता ।

पेष्टिक(न०)-नष्टविशेष, सुरामंद ।

पोगपह (वि०)-विह्वलन, न्यूनधि-  
काय, जिस के अंग छीटे चड़े हों ।

पु०-पांच और दश वर्ष के मध्य  
की आयुबाला वालक ।

पोटलिका(स्त्री०)-पोटली, पुटलिया

पोटा(स्त्री०)-पुरुषविन्दुयुक्ता स्त्री,  
दाढी मूँठवाली स्त्री ।

पोत (पु०)-जालक, भीका, जहाज  
की सवारी, समुद्र की सवारी,  
दशवारिक हस्तो ।

पोतवणिक [त्र] (पु०)-जहाज वा  
भीका द्वारा व्यापार करने वाला  
व्यापारी ।

पोतवाह(पु०)--मल्लाह, कैवर्तक ।

पोता(पु०)--विष्णु, अतिथि ।

पोत्रायुध(पु०)--शूकर, सूअर ।

पोलिका(स्त्री०)--पिटकविशेष, फुल-  
का, फुलकिया नामक रोटी ।

पोषण(न०)--पालन करना, पुष्टि ।

पोस्टा[ट.] (वि०)--पोषणकर्ता, पालने  
वाला । [नीय ।

पोष्य(वि०)--पोषण करनेयोग्य, पाल-  
धायक (न०)--पु स्त्व, पुरुषत्व । वि०--  
पुरुष में उत्पन्न, पुरुष से प्राप्त ।

पौण्डरीक ( न० )--पौडा, हस्तभेद,  
यज्ञविशेष । [ मन्त्रा ।

पौण्ड्र (पु०)--देशभेद, पौडा नामक  
पौत्र[हस्त] (पु०)--पुत्र का पुत्र, पोता ।  
पौत्री [हस्त] (स्त्री०)--पुत्र की पुत्री,  
पोती ।

पौन पुन्यम्(अ०)--पुन पुन ,बारबार ।  
पौनर्नय(पु०)--१२ प्रकार के पुत्रों में से  
एक, दूसरी बार विवाहिता स्त्री  
में उत्पन्न पुत्र । वि०--बार बार  
होने वाला ।

पौर ( वि० )--नगरवासी, नागरिक ।  
न०--राजकपूर ।

पौरव्य (पु०)--पन्द्रयशोय पुत्र नामक  
राजा का पुत्र ।

पौरस्त्य(वि०)--पूर्वदिशा में उत्पन्न,  
पहिछे हुआ, आगे हुआ, आगे का ।

पौराखिक(वि०) पुराणवेदान्तवाला,  
पुराणों की ही धर्मग्रन्थ मानने  
वाला ।

पौरुष(न०)--पुरुषभाव, हिम्मत, बहा-

दुरी, ऊपर फैले जुआ और हाथा  
याले अनुपम का परिमाण ।

पौरुषेय (वि०)--पुरुषसम्बन्धी, पुरुष-  
उत्त । [ इया ।

पौरोगव(पु०)--पाकशालाध्यक्ष, रसो-  
पौर्णमास ( पु० )- पूर्णमासी में होने  
वाला एक यज्ञ ।

पौलस्त्य(पु०)--कुवेर, रावण ।

पौष ( पु० )--पुष्यनक्षत्रयुक्त पूर्णमासी  
वाला महीना, पूष ।

पौष्टिक ( वि० )--पुष्ट करने वाला,  
बल देने वाला । न०--सौर [हजा-  
मत ] के समय शरीर को ढकने  
वाला वस्त्रविशेष ।

पौष्ट्य (वि०)--पुष्टिनिमित्त, पुष्टिसम्बन्धी  
व्याप्त(अ०)--सम्बोधन का वाचक ।

प्यै (१ अ०)--वृद्धि को प्राप्त होना,  
बढ़ना, चन्नति करना ।

प्र(अ०)--गति, वारम्भ, उत्कर्ष, उपाति,  
उत्पत्ति, स्वतन्त्रभाव आदि अपौ  
का बोधक, उपसर्गों में प्रथम  
उपसर्ग ।

प्रकट(वि०)--विशद, साफ, जाहिर ।

प्रकटित ( वि० )--विशदीकृत, जाहिर  
किया हुआ, स्पष्ट किया हुआ ।

प्रकम्पन(पु०)--घायु, ध्वन ।

प्रकर ( वि० )--विकीर्ण, फैला हुआ  
[ पुष्पादि ] । पु० -समूह, अधि-  
कार । न० -अग्रह नामक शुभ  
स्थितद्रव्य ।

प्रकरण ( न० )--प्रस्ताव, प्रत्यसम्पि,  
वह प्रमाण जिस में कवि का आप

ही कल्पना किया हुआ वृत्तान्त होता है ।  
 प्रकर्ष (पु०)—वत्कर्ष, बड़ाई, उत्तमता ।  
 प्रकाश (पु०)—वृत्त की जड़ से शाखाओं तक का हिस्सा । [अत्यर्थ ।  
 प्रकाश (वि०)—यथेष्ट, इच्छापूर्वक,  
 प्रकाशम् (न०)—चित्त की प्रसन्नता प्रकट करना ।  
 प्रकार (पु०)—भेद, सादृश्य, दंग, तरह ।  
 प्रकाश (पु०)—आतप, रोशनी, धूप, चमक । वि०-प्रकाशमान, चमकीला  
 प्रकाशक (वि०)—प्रकाश करने वाला, रोशन करने वाला ।  
 प्रकाशकज्ञाता (पु०)—कुक्कुट, भुगा ।  
 प्रकाशकज्ञाता [त्र] (पु०)—सूर्य, परमेश्वर ।  
 वि०-प्रकटरूप वाला । [प्रकटित ।  
 प्रकाशित (वि०)—प्रकाश किया हुआ, प्रकीर्ण (वि०)—बिखरा हुआ, विस्मि [ फैला हुआ ], विस्तृत । पु०-एक प्रकार का करंज । न०-भिन्न २ जातियों का मेल, चानर ।  
 प्रकीर्तित (वि०)—कहा हुआ, कथित ।  
 प्रकृत (वि०)—अधिकृत, आरुप, जिसे किसी काम का अधिकार दिया गया हो, जसली, स्वामाधिक ।  
 प्रकृति (स्त्री०)—स्वभाव, सत्त्वरजस्तमोरूप गुणों वाला प्रधान, स्थिर, स्वामी, मित्र, शक्ति, परमात्मा, कारीगरी, जीव, इच्छीभ अक्षर के पाद वाला एक प्रकार का छन्द ।  
 प्रकृष्ट (वि०)—प्रधान, बड़ाई वाला, अच्छा ।

प्रकोष्ठ (पु०)—कूप के नीचे का हिस्सा, छाया का हिस्सा, कुहनी से छाया के पीछे तक का भाग, सहन, कमरा  
 प्रक्रिया (स्त्री०)—अधिकार, प्रकरण, राजाओं के सम्मुख छत्रचानर आदि का शिलाना ।  
 प्रकृ [क्र] ण (पु०)—मीन की आवाज, घोड़ा का शब्द ।  
 प्रजालन (न०)—घोना, साफ करना, मार्जन करना ।  
 प्रताडित (वि०)—घोया हुआ, मार्जित  
 प्रलेप (पु०)—भीषणादि में डालने योग्य द्रव्य । [छोड़े का तीर ।  
 प्रलवेहन (पु०)—नाराच नामक अस्त्र,  
 प्रक्षर (वि०)—बहुत तेज । पु०-कुक्कुट, कुत्ता, घोड़े का सान, खच्चर ।  
 प्रख्या (स्त्री०)—सादृश्य, बराबरी ।  
 प्रख्यात (वि०)—मशहूर, विख्यात, प्रसिद्ध । [होना ।  
 प्रख्याति (स्त्री०)—प्रसिद्धि, मशहूर  
 प्रगट (पु०)—छुट्ट कपोल, कोहनी से छेकर कल [ घगल ] तक भुजा, दुर्ग की दीवार ।  
 प्रगल्भ (वि०)—प्रत्युत्पन्नमति, हाजिरमवाब, प्रतिभावाला ।  
 प्रगाढ (वि०)—बहुतगाढ़ा, दृढ़, मजबूत  
 प्रगुण (वि०)—सीधे स्वभाव वाला, दल, घटु ।  
 प्रगे (न०)—अतिप्रगतःकाय, बहुतसबेरा  
 प्रग्रह (पु०)—तुलाग्र, धन्दी, धन्धन, घोड़े आदि की रस्सी, लगाव, किरा ।

प्रचणन (न०)-बाहर के दर्वाजे का  
कमरा, घरामदा, सोहे का मूसल  
प्रचण्ड (वि०)-दुर्घर्ष, प्रणलभ ।

प्रचण्डमूर्ति (स्त्री०)-वर्ण यक्ष,

प्रतापयुक्तशरीर । [नामी संयोग ।

प्रचय (पु०)-समूह, बढ़ना, शिथिल

प्रचार (पु०)-व्यक्त, प्रकाश, रिवाज ।

प्रचुर (वि०)-बहुत, अधिक, अतिशय ।

प्रचेता [त्] (पु०)-सारथि, कोषवान् ।

प्रचेताः [स्] (पु०)-वरुण, एक मुनि ।

वि०-अच्छे दिल वाला । [हुआ ।

प्रचोदित (वि०)-प्रेरित, प्रेरणा किया

प्रच्छ (इ प०)-पूछना, जानने की

इच्छा करना ।

प्रच्छद (पु०)-आच्छादन, ढकना ।

प्रच्छन्न (वि०)-ढका हुआ, आवृत ।

न०-अन्तर्द्वार ।

प्रच्छदिंका (स्त्री०)-घमिरीग, कैदीना

प्रच्छादन (न०)-उत्तरीयवस्त्र, दुपहा,

ओढ़ना । [हुआ ।

प्रच्छादित (वि०)-आच्छादित, ढका

प्रचणिका (स्त्री०)-माता, जननी ।

पूजय (पु०)-प्रकृष्टवेग, उत्तमवेग ।

प्रजा (स्त्री०)-सन्तति, औलाद, रैयत

प्रजागर (पु०)-अतिशय जागना ।

प्रजावति (पु०)-प्रजा का स्वामी,

यत्तुमंग प्रजा, जामाता, सूर्य,

जग्मि, विश्वकर्मा ।

प्रजावती (स्त्री०)-मन्तान वाली स्त्री,

मार्ग की भार्या, महे आताकी पत्नी

प्रजेश्वर (पु०)-राजा ।

प्रज (वि०)-पंडित, विद्वान् ।

प्रजसि (स्त्री०)-संकेत, इशारा ।

प्रज्ञा (स्त्री०)-बुद्धि, सरस्वती, धी ।

प्रज्ञाचक्षुः (पु०)-चतराष्ट्र, अन्धापुरुष ।

प्रज्ञानं (न०)-बुद्धि, चिन्ह, निशान ।

प्रज्वलित (वि०)-प्रकाशमान ।

प्रणय (पु०)-प्रीतिपूर्वक प्रार्थना, स्नेह,

प्यार, शान्ति ।

प्रणयित्री (स्त्री०)-भार्या, स्त्री ।

प्रणयी [न्] (पु०)-भर्ता, स्वामी ।

प्रणव (पु०)-जिस के द्वारा परमात्मा

या स्वेटदेव की स्तुति की जाय,

परमात्मा का सर्वोत्तम नाम,

वेदमन्त्र के प्रथम पढ़ने योग्य,

शोकार ।

प्रणाद (पु०)-उच्चैःस्वर, अनुराग

से उत्पन्न शब्द, कर्णरोगविशेष ।

प्रणाम (पु०)-भक्तिश्रद्धायुक्त नमस्कार,

प्रणति, नम्र होना, झुकना, वह

प्रणाम जो दोनों भुजा, दोनों

चरण, यक्षःश्चल, शिर, हृष्टि, मन

और बाणी दन आठ अंगों द्वारा

किया जाय ।

प्रणाय (वि०)-अभिलाषरहित,

प्रेमशून्य, शत्रु, द्वेष करने योग्य,

असम्मत, सज्जन, प्रिय ।

प्रणाल (पु०)-नाली, जल निकलने

का मार्ग, जलनिस्सरण का मार्ग

पतनाला ।

प्रणाली (स्त्री०)-पूयंघत ।

प्रणिपात (न०)-उद्योग, कोशिश,

प्रयत्न, समाधि, अभिनिवेश, किसी

एक बात पर ही झुक जाना ।

प्रणिधि ( पु० )-गुप्त दूत, सुफिया,  
वेषक, याचना करना, मांगना,  
वृहद्रथ का पुत्र । [ सुशामद ।

प्रणिपात ( पु० )-प्रणाम, झुकना,

पूणिहित ( वि० )-पाया हुआ, प्राप्त-  
समाहित, रक्खा हुआ, समाधि  
में संलग्न ।

प्रणीत ( वि० )-रूपान्तर या रसा-  
न्तर को प्राप्त होने वाला, फैला  
हुआ, क्षिप्त, स्थापित, प्रवेश किया-  
हुआ । पु०-संस्कार किया अग्नि,  
संस्कृतान्ति ।

प्रणीता ( स्त्री० )-यज्ञ का पात्रविशेष,  
वह पात्र जिस में आहुति से बचा  
सुव का घृत डाला जाता है ।

प्रणुत ( वि० )-स्तुति किया हुआ,  
स्तुत, प्रशंसित ।

प्रणय ( वि० )-वश में हुआ, अधीन,  
वरय । [ विस्तृति ।

प्रतति ( स्त्री० )-बेल, लता फैलाव,  
प्रतती ( स्त्री० )-पूर्ववत् ।

प्रतन ( पु० )-पुराना पदार्थ, पुरातन-  
पुरानी वस्तु ।

प्रतल ( न० )-एक मोचेका छोक, पाताल-  
फेद । पु०-बपेट, फैली चगलिमो  
वाला हस्त ।

प्रतान ( पु० )-विस्तारयुक्त तैयार हुआ  
तन्तुभेद, धातु का एक रोग ।

प्रतानिनी ( स्त्री० )-फैली हुई बेल,  
विस्तृत लता ।

प्रताप ( पु० )-बहु तेज की धन, दण्ड  
और सेनासमूह से उत्पन्न होता  
है, प्रभाव, पीडय ।

प्रतापन ( न० )-सपाना, पीडा देना,  
पीहन । पु०-कुम्भीपाक नामक  
नरक । वि०-रोग देने वाला ।

प्रतापस ( पु० )-संकेद आक का वृक्ष ।

प्रतारक ( वि० )-ठगने वाला, छलिया,  
धूर्त, वक्त्रक ठग ।

प्रतारण ( न० )-ठगना, छल करना, धूर्तन ।

प्रतारणा ( स्त्री० )-पूर्ववत् ।

प्रतारित ( वि० )-ठगा हुआ, धूर्त ।

प्रति ( अ० )-१५वा उपसर्ग, विस्तृत  
होना, फैलना, व्याप्ति, विन्धु,  
प्रतिदान, निश्चय, भाग, को-  
पुनः, तरङ्ग, ओर ।

प्रतिकर्म [ नृ ] ( न० )-कृत्रिम वेश, बना-  
यटी भूषण, सजाना, प्रसाधन,  
अङ्गसंस्कार ।

प्रति [ ती ] कार ( पु० )-चटला लेना,  
घैर निकालना, रोगचिकित्सा,  
इलाज, अपकार के रूपर अपकार  
करना ।

प्रतिकाश-स ( वि० )-सदृश, तुल्य, बरा-  
बर, एकसा, प्रकाश, समक ।

प्रतिकूप ( पु० )-परिखा, छाड़े ।

प्रतिकूल ( वि० )-बलटा, विपक्ष, आनु-  
कूलपरहित, विरुद्ध ।

प्रतिकृति ( स्त्री० )-प्रतिमा, प्रति-  
निधि, सादृश्य, तुल्यता, बराबरी,  
बदला निकालना, तमबोर, मूर्ति ।

प्रतिकृष्ट ( वि० )-निन्दनीय, गल्ल,  
कुत्सित ।

प्रतिलग्न ( अ० )-बार बार, पीनः पुनः ।

प्रतिलय ( पु० )-रखक, रखयिता ।



प्रतिलिप्त(वि०)-मेजा हुआ, प्रेषित,  
दूर किया गया, तिरस्कृत, बुला  
कर मेजा हुआ ।

प्रतिग्रह (पु०)-धर्मार्थे दिये घनादि  
का ग्रहण, अङ्गीकार, मजूर करना,  
दान का लेना, सेनापृष्ठ, पीक-  
दान, सूर्य । [यूकने का पात्र ।

प्रतिग्राह(पु०)-प्रतिग्रहण, पीकदान,

प्रतिघ(पु०)-क्रोध, गुस्सा । [भारण ।

प्रतिपातन(न०)-भारना, यथ करना,

प्रतिपत्त(न०)-अङ्ग, शरीर, देह ।

प्रतिपक्षः [त्] (न०)-दृष्टानुकूल,

अभिप्राय के अनुसार, प्रतिकल्प,

चित्र, तसवीर ।

प्रतिच्छाया (स्त्री०)-चित्र, तसवीर,

प्रतिकृति, सादृश्य, एकही शकल ।

प्रतिफलप(पु०)-वाक्पविशेष ।

प्रतिज्ञा (स्त्री०)-कर्त्तव्य का उपदेश,

साध्य का निर्देश, प्रण, दावा,

प्रतिज्ञान का बोधक, जमीकार,

आत्मा ।

प्रतिघात(वि०)-स्वीकार किया हुआ,

अङ्गीकृत, मजूर किया हुआ, इक-  
रार किया गया ।

प्रतिताली (स्त्री०)-ताली, चाधी,

कुल्ली, तालकोट्टपाटन यन्त्रविशेष ।

प्रतिदारण(न०)-मुद्ग, सधान, लटार्ह ।

प्रतिदिग(न०)-नित्यप्रति, रोज़ २ ।

प्रतिदि[दी] वा [न्] (पु०)-सूर्य, मूरत ।

प्रतिदेय(वि०)-छरीदी हुई वस्तु को

मुष्ट समझ कर धेनने वाटे को

वापिस करके देना

प्रतिध्वनि(पु०)-आवाज़ की आवाज़,  
शूज़, प्रतिशब्द, एकसा शब्द,  
छोटा हुआ शब्द ।

प्रतिध्वान(पु०)-पूर्ववत् ।

प्रतिनिधि(पु०)-सदृश, प्रतिमा, प्रवर्ती,

अपने स्थान में स्वसदृश स्थापन

करना, चित्र, तसवीर ।

प्रतिप(पु०)-शान्तनुराज का पिता ।

प्रतिपक्ष (पु०)-विरुद्धपक्ष में स्थित,

शत्रु, दुश्मन, विरुद्ध प्रतिपक्षा ।

प्रतिपक्ष[द्] (स्त्री०)-पहिठी तिथि,

पड़वा, बुद्धि ।

प्रतिपत्ति (स्त्री०)-प्रवृत्ति, चतुर्थ,

धैर्य, प्रगल्भता, गौरव, कर्त्तव्य

कार्य का ज्ञान, पदमाप्ति, विश्वास ।

प्रतिपन्न (वि०)-अवगत, जाना हुआ,

अङ्गीकृत, स्वीकार किया गया,

धिकान्त ।

प्रतिपादक (वि०)-बोध कराने वाला,

बोधक, प्रतिपत्तिजनक ।

प्रतिपादन (न०)-देना, बोधन, कथन,

समझना । [पालनकर्ता ।

प्रतिपालक(वि०)-पालन करने वाला,

प्रतिपालन (न०)-रक्षा करना, पोषण ।

प्रतिपाल्य (वि०)-पालन करने

योग्य, रक्षणीय, पालनीय ।

प्रतिपथ (पु०)-निविद्ध का फिर से

विधान ।

प्रतिफल (न०)-सदृशफल, प्रतिबिम्ब ।

प्रतिवच्य (वि०)-वापने योग्य, प्रति-

वच्यगाह ।

प्रतिबन्ध ( पु० )- कार्य का रूकना,  
कार्यावरोध । वि०-रोकनेवाला ।

प्रतिबन्धक ( पु० )-धूल, विटप ।  
वि०-अवरोधक ।

प्रतिबल ( वि० )-समान बल वाला,  
तुल्यबल, सदृश बल ।

प्रतिभय ( वि० )-भय देने वाला,  
भयप्रद, भयङ्कर । न०-भय ।

प्रतिभा ( स्त्री० )-प्रत्युत्पन्न मति,  
स्फुरणवती बुद्धि, वह बुद्धि जो  
हानिर लयाव रक्षती हो ।

प्रतिभू ( पु० )-लघ्यस्व, जामिन,  
वह पुरुष जो पक्षी होता है,  
लभक ।

प्रतिन ( वि० )-तुल्य, सदृश, बराबर ।

प्रतिमा ( स्त्री० )-मिट्टी वा पत्थर  
आदि की मूर्ति, प्रतिविम्ब, प्रति-  
छाया, चित्र, तस्वीर, सादृश्य,  
तुल्यता, एक सदृश करना ।

प्रतिमान ( न० )-प्रतिविम्ब, परछाईं,  
सादृश्य, हस्ती का भस्तरप्रदेश,  
प्रतिमिधि, दुष्टान्त, प्रतिमा ।

प्रतिमुक्त ( वि० )-पहिरा हुआ, धारण  
किया हुआ, बहु, यथा हुआ,  
परित्यक्त, बाधित किया गया,  
विक्रुत, प्रतिनियत ।

प्रतिपत्न ( पु० )-इच्छा, अभिलाषा,  
रोकना, प्रतिग्रह, सस्कार, परि-  
श्रमी, ग्रहण । य० वि०-तुल्य यत्न  
करने वाला ।

प्रतिपातना ( स्त्री० )-चित्र, तस्वीर,  
तुल्यपीठा, एकसी कथना ।

प्रतियोग ( पु० )-विरोध, दूसरी बार  
सद्योग, पुनरुद्योग ।

प्रतियोगी[त्] ( वि० )-विरोधी, विरुद्ध  
पक्ष वाला, प्रतिकूलपक्षावलम्बी ।

प्रतिरूप-क ( न० )-प्रतिमा, प्र-  
तिविम्ब, परछाईं, चित्र । वि०-सदृश ।

प्रतिरोध ( पु० )-तिरस्कार, मनावर,  
सम्प्रतिपक्ष, वाधा, विघ्न, धोरी ।  
प्रतिरोधी[त्] ( पु० )-धोर, तस्कर ।

प्रतिशेन ( वि० )-सलटा, विपरीत,  
अनुकूलता से विरुद्ध, घान ।

प्रतिशेनन ( पु० )-यह पुरुष जो उत्तम  
वर्ण की स्त्री में नीच वर्ण से  
उत्पन्न हुआ हो, वर्णसंकर संकीर्ण ।

प्रतिवचः[त्] ( न० )-प्रत्युत्तर, जवाब,  
उत्तर, विरुद्ध वचन ।

प्रतिवचन ( न० )-प्रुवचत् ।

प्रतिवचन ( पु० )-वाचन, गाँव ।

प्रतिवाक्य ( न० )-उत्तर, जवाब ।

प्रतिवाजि ( स्त्री० )-प्रत्युत्तर, प्रति-  
वाक्य ।

प्रतिवात ( वि० )-वह देश जहाँ से वायु  
लीट कर आता है, विरुद्धवायु-  
प्रदेश ।

प्रतिवादो [त्] ( वि० )-विरुद्ध बोलने  
वाला, मुदाइलह, प्रतिपक्षी ।

प्रतिवासर ( पु० )-प्रतिदिन, नित्यप्रति,  
तद्दिन ।

प्रतिवासी [त्] ( वि० )-समीप रहने  
वाला, गृहनिष्ठवासी, पड़ोसी ।

प्रतिविधान ( न० )-उपराय, बदला  
लेना, प्रतिपत्न ।

प्रतिविम्ब (न०)—प्रतिमा, परछाई।  
पूतिविषा ( स्त्री० )—अतीव नामक  
औषध ।

प्रतिषेध (पु०)—पास में रहने वालों  
का घर, पड़ोसियों का घर। वि०—  
समीप रहने वाला ।

प्रतिशासन ( न० )—बुलाकर सेवकादि  
को कार्य में लगाना, आज्ञा देनी,  
हुक्म करना। प्रतिकूल आज्ञा ।

प्रतिश्याय (पु०)—जुकाम, पीनस का  
रोग ।

प्रतिश्रम ( पु० )—यत्नस्थान, यत्न की  
शाला, सभा, आश्रय, गृह, घर ।

प्रतिश्रव ( पु० )—मंजूर, अङ्गीकार,  
स्वीकार, कृत्य ।

प्रतिश्रुत (स्त्री०)—प्रतिध्वनि, सलटी  
आवाज़, गूँज ।

प्रतिश्रुत (वि०)—अङ्गीकार किया हुआ,  
स्वीकृत, प्रतिष्ठात, इकरार ।

प्रतिषिद्ध (वि०)—निषिद्ध, रोक हुआ,  
मना किया गया, प्रतिषेध का  
विषय ।

प्रतिषेद्धा [द्व.] ( वि० )—निषेध करने  
वाला, प्रतिषेधकर्ता । [निषेध ।

प्रतिषेध (पु०)—रोकना, मना करना,  
प्रतिषेधक ( वि० )=प्रतिषेद्धा ।

पूतिष्क ( पु० )—दुन, सदेश ले जाने  
वाला पुरुष । [अयनामी ।

पूतिष्क ( पु० )—मदायक, दूत,  
पूतिष्क ( पु० )—पास की रज्जु ।

पूतिष्ठ (पु०)—रोक, पूतिष्ठ, विप्र ।  
पूतिष्ठ ( वि० )—पूतिष्ठा वाला पुरुष ।

प्रतिष्ठा (स्त्री०)—गौरव, बड़ाई, पदवी,  
स्थान, आश्रय, एक छन्द जिस  
में चार अक्षरों का पाद होता है;  
यह कर्त्तव्यकर्म जो पूतादि की  
समाप्ति में किया जाता है,  
संस्कारविशेष ।

प्रतिष्ठान ( न० )—नगरविशेष जो  
पुष्करवा नामक राजचक्रवर्ती की  
राजधानी थी, वर्तमान में जिसे  
विठोर कहते हैं । [निवृत्त ।

प्रतिष्ठित (वि०)—प्रतिष्ठायुक्त, गौरव-  
प्रतिष्ठर ( अस्त्री० )—कङ्कण, हस्तभूष,  
मन्त्रविशेष, घृणघुट्टि, सेना का  
पिछला भाग, प्रातःसमय, नरहल ।

प्रतिसर्ग ( पु० )—ब्रह्मा की सृष्टि के  
पश्चात् द्वाव्रभूति प्रजापतियों  
की सृष्टि, प्रतिकूलरचना, पृथक्  
का वाचक ।

प्रतिसंघ ( वि० )—प्रतिकूल, लड़का ।

प्रतिसान्धानिक ( पु० )—अभिजन,  
भागध, स्तुतिपाठक, भाट ।

प्रतिचीरा ( स्त्री० )—कनात, परदा,  
यवनिका ।

प्रतिमूर्त्यक ( पु० )—मूर्त्य के समीप का  
मंडल, मूर्त्यसभा, रुक्लास, करकेंटा ।

प्रतिसृष्ट ( वि० )—तिरस्कृत, अनादर  
किया गया, प्रहाराग्रात, प्रेषित,  
भेजा हुआ, दत्त, दिया गया ।

प्रतिहत (वि०)—रोका हुआ, ललट कर  
भारागया, द्विष्ट, रुद्ध, आज्ञाशून्य ।

प्रति[नी] द्वार (पु०)—द्वारपाल, द्वार-  
रक्षक, ललट कर चोट करना ।

प्रतिहारक ( पु० )-नायिक, कपटी,  
मायाकार ।

प्रतीक ( पु० )-अङ्ग, अवयव, चिह्न,  
प्रतिकूल, दूसरा रूप ।

प्रतीक्षा ( स्त्री० )-मण्डला, इन्तजारी,  
प्रतीक्षण, आशा ।

प्रतीदय ( वि० )-सत्कार के योग्य,  
पूजनीय, प्रतीक्षा करने योग्य ।

प्रतीची ( स्त्री० )-पश्चिम की दिशा ।  
वि० पश्चिमाभिमुखी ।

प्रतीचीन ( वि० )-पश्चिम की दिशा  
में होने वाला [ प्रतीक्य शब्द  
का भी यही लक्ष्य है ] ।

प्रतीत ( वि० )-प्रसिद्ध, ख्यात, मशहूर,  
जाना हुआ, व्यतीत, विश्वास  
किया गया, आदरसहित, ज्ञात ।

प्रतीति ( स्त्री० )-ख्याति, प्रसिद्धि, ज्ञान,  
हृयं, आदर ।

प्रतीप ( वि० )-प्रतिकूल, पिरहु, लट्टा ।  
न०-अर्थात्कारसेद ।

प्रतीपदशिमी ( स्त्री० )-नारी, स्त्रीनाम  
प्रतीर ( न० )-किनारा, तट ।

प्रतीहारी ( स्त्री० )-द्वारस्थ नारी,  
द्वारपालिनी ।

प्रतीद ( पु० )-पावक, कोड़ा ।

प्रतीही ( स्त्री० )-गनी, कूचा, नगर के  
सदय का मार्ग, रज्या ।

प्रत ( वि० )-दिया हुआ, दत्त ।

प्रत ( वि० )-बहुत पुराना, प्राचीन,  
पुरातन ।

प्रत्यक्ष [ च ] ( वि० )-पश्चिम की दिशा,  
पश्चिम का देश ।

प्रत्यक्ष ( वि० )-नेत्रों के समुत्पन्न, इन्द्रिय  
से उत्पन्न ज्ञान । वि०-उत्तम ज्ञान  
वाला ।

प्रत्यक्षवादी [ न ] ( पु० )-बौद्ध, बुद्धमता-  
वलम्बी पुरुष ।

प्रत्यगाश्रयपति ( पु० )-पश्चिम की  
दिशा का स्वामी, दत्त ।

प्रत्यय ( वि० )-नवीन, नूतन, नया ।

प्रत्यय [ च ] ( वि० )-पश्चिम की दिशा,  
पश्चिम का देश ।

प्रत्यङ्ग ( न० )-अवयवविशेष ।

प्रत्यङ्गिरा ( स्त्री० )-एक देवी का नाम ।

प्रत्यङ्गीक ( पु० )-शत्रु, विपत्ती, विरो-  
धी, विघ्न । [ समीपस्थ देश ।

प्रत्यङ्ग ( पु० )-छेड़ों का देश । वि०-

प्रत्यन्त-पर्यन्त ( पु० )-बड़े पर्यन्त के  
समीप का छोटा पर्यन्त ।

प्रत्यनियोग ( पु० )-प्रत्यपराध, प्रति-  
कूल प्रश्न, अभियुक्त का अभियोग

चलानेवाले पर दूसरा प्रश्न, मुद्दे  
पर आपेक्षिक हानिविषयक नातिथ

प्रत्यभिवाद ( पु० )-अभिवाद मुह  
आदि का दिया आशीर्वाचन ।

प्रत्यय ( पु० )-शपथ, कृतज्ञ, ज्ञान,  
अधीन, यकीन, आश्रय, ठगकरणा

में बड़ शब्द जो धातु या नाम  
को निमित्त मान कर विधान

किया जाय, हेतु, छिद्र, शब्द,  
आचार, स्वादु ।

प्रत्ययित ( वि० )-विश्वस्त, यथापेक्षता,  
सीट कर गया हुआ ।

प्रत्यर्षी [ न ] ( वि० )-शत्रु, दुश्मन ।

पु०-प्रतिवादी ।

पुत्त्यर्पित ( वि० )-पुत्तिदत्त, पुत्त्यर्पण,  
घरोहर का वापिस देना ।

पुत्त्यवसान ( न० )-भोजन, खानेयोग्य  
वस्तु । [ भक्षित ।

पुत्त्यवसित ( वि० )-खाया हुआ,  
पुत्त्यवस्कन्द ( पु० )-चार प्रकार के  
उत्तरों में से एक ।

पुत्त्यवस्थाता [त्] ( वि० )-पुत्तिपत्नी  
होकर ठहरने वाला; शत्रु, दुश्मन ।

प्रत्यवाय ( पु० )-वाप, नीच करने, ऐस,  
दोष, विघ्न ।

प्रत्यहम् ( अ० )-पुत्तिदिन, रोज २ ।

प्रत्याकार ( पु० )-तलवार की म्यान,  
खड्गकोप ।

प्रत्याख्यात ( वि० )-दूर किया हुआ,  
दूरीकृत, तिरस्कृत अनादृत,  
इन्कार किया हुआ ।

पुत्त्याख्यात ( न० )-दूर करना, दूरीक-  
रण, अनादर करना, इन्कार करना ।

पुत्त्यादिष्ट ( वि० )-दूर किया गया,  
निकाला हुआ; सूचित, इत्तिठा  
दिया हुआ, विज्ञित ।

पुत्त्यादेश ( पु० )-दूर करना, निकालना,  
आज्ञा, इन्कार करना ।

पुत्त्याध्वान ( पु० )-पेट का धक्करना;  
वायुजन्य आनाह रोगविशेष ।

पुत्त्यालीड ( न० )-धनुर्हारियों की गति  
विशेष अर्थात् धान पाद की  
निकोड़ और सीपे पौल की आगे  
खेलाकर खड़ा होना, आस्वादित,  
चाटा हुआ ।

पुत्त्यामय ( वि० )-अतिसुगीप में रहने  
वाला; निकटवर्ती ।

पुत्त्यासार ( पु० )-सेना का पश्चाद्भाग,  
सैन्यपृष्ठ ।

पुत्त्याहार ( पु० )-पुत्त्येक इन्द्रिय  
को अपने २ विषय से खींचना,  
पीछे की हटाना, ठ्याकरण में  
' अण् ' आदि संज्ञा का बोधक ।

पुत्त्युक्ति ( स्त्री० )-पुत्त्युत्तर, जवाब ।  
पुत्त्युत ( अ० )-विपरीतता; बलिक ।

पुत्त्युत्कल ( पु० )-पुत्त्यान हेतु को लक्ष्य  
में रख कर अपुत्त्यान का आरम्भ  
करना; युद्धार्थ उद्योग; फर्म के  
आरम्भ में प्रथम युक्ति का प्रयोग ।

पुत्त्युत्काम्ति ( स्त्री० )-पूर्ववत् ।

पुत्त्युत्तर ( न० )-उत्तर का उत्तर, वह  
उत्तर जो उचित हो ।

पुत्त्युत्थान ( न० )-अपने स्थानादि  
पर आये हुए के सत्कारार्थ बैठना,  
अभ्युत्थान, समीप से उठना ।

पुत्त्युत्थन्नमति ( वि० )-तत्कालीनित  
उत्तर देने वाली बुद्धि से युक्त,  
कुशाग्रीय बुद्धि, सूक्ष्म बुद्धि वाला,  
पुत्तिभायुक्त ।

पुत्त्युद्गमनीय ( न० )-सानने से उठने  
योग्य, खुले हुए वस्त्रों का जोड़ा,  
धीतवस्त्रद्वय । वि० समुपस्थान के  
योग्य, पूजा करने लायक ।

पुत्त्युद्गमन ( न० )=पुत्त्युत्थान ।

पुत्त्युपू ( पु० )-पुत्त्यात, पुत्त्याकाल,  
एक वस्तु का नाम ।

पुत्त्युपः [ स् ] ( न० )-पुत्त्यात, पुत्त्याकाल,  
शयन, दिनमुख ।

पुत्त्यह ( पु० )-विप्र, नकावट ।

प्रत्येक(न०)—एक २ के प्रति, हर एक ।  
प्रच ( १ आ० )—प्रख्यात होना,  
प्रसिद्ध होना ।

प्रपन (वि०)—प्रधान, मुख्य, आदिम,  
आग्रिम [प्रपमाविभक्ति के बहु-  
वचन से इस की 'सर्वनाम' सज्ञा  
होती है ।

प्रचित (वि०)—प्रसिद्ध, प्रशहूर, ख्यात ।  
प्रथिमा [त्रि] (पु०)—मोटापन, स्थूलत्व,  
बड़ा होना ।

प्रथिष्ठ (वि०)—बहुत बड़ा, अतिबृहत् ।  
प्रद ( वि० )—देने वाला, दाता ।

प्रदक्षिण (न०)—दक्षिणावर्त से किसी  
। देवादि की चपलक्षय में इस कर  
उस के चारों तरफ घूमना, परि-  
क्रम करना ।

प्रदक्षिणा (स्त्री०)—पूर्ववत् । [हुआ ।  
प्रदत्त ( वि० )—अच्छे प्रकार से दिया  
प्रदर ( पु० )—एक प्रकार का स्त्रियो  
का रोग, काँड़ना, दिदीर्णकरना,  
भङ्ग, बाण ।

प्रदक्षिंत ( वि० )—दिखलाया हुआ,  
जालीकित ।

प्रदल ( पु० )—बाण, तीर ।

प्रदान ( न० )—उत्तम दान, देना ।

प्रदिक् [श्] ( स्त्री० )—दिशाओं के  
बीच की दिशा, विदिक् ।

प्रदिग्ध (न०)—भासनिर्मित व्यञ्जन-  
भेद । वि०—लिखड़ा हुआ, प्रलिप्त,  
भूषित ।

प्रदीप ( पु० )—दीपक, दीवा, लैम्प ।

प्रदीपन ( पु० )—एक प्रकार का

स्पावर विष । वि०—प्रकाशित  
करने वाला । [भीत ।

प्रदेश (पु०)—देशमात्र, मुल्क, भित्ति,  
प्रदेशन ( न० )—भेद, उपाय, ग्रहा वा  
हयं से देवता, ब्राह्मण और  
राजादि के लिये दातव्य द्रव्य ।

प्रदेश [शि] जो ( स्त्री० )—तलंगनी  
अङ्गुलि, वह अङ्गुलि जिसके द्वारों  
वस्तु का निर्देश किया जाता है ।

प्रदेश ( पु० )—प्रलेख, लेख, किसी  
पिछी हुई वस्तु का शरीर से  
विपकाना ।

प्रदोष ( पु० )—रात्रि का मुख, सन्ध्या  
समय, रात्रि के प्रारम्भ की चार  
वा दो चढ़ी का समय । वि०—  
हुष्ट, प्रकटदोषी ।

प्रद्यु(न०)—पुरुष, शुभकर्म ।

प्रद्युम्न ( पु० )—कामदेव, कन्दर्प, श्री  
कृष्ण का वर्षष्ठ पुत्र ।

प्रद्योत(पु०)—किरण, रश्मि ।

प्रद्योतन(पु०)—सूर्य, सूरज ।

प्रद्विद्रा] य (पु०)—भागना, पलायन ।

प्रपन(न०)—उपाय, मुद्द, उपाई ।

प्रपान ( न० )—स्त्वरजस्तमोरूप वा  
गुणत्रयगयी प्रकृति, तत्कार्य  
बुद्धितत्त्व । वि०—उत्तम, प्रशस्त ।  
पु०—महामात्र, सेनापत्यादि का  
याचक, एक राजपि का नाम,  
परमात्मा, बुद्धि ।

प्रवि(पु०)—रणनामि, धुरा ।

प्रवी(वि०)—उत्तम बुद्धि वाला, प्रशस्त-  
बुद्धियुक्त । स्त्री०—प्रकटबुद्धि ।

मनस(वि०)-नाश वाला, नाशयुक्त ।

मपध (पु०)-विस्तार, फैलाव, सञ्चय, प्रसारण, ठगना, संचार, प्रति-बुलत्व । [मार्ग ।

मपध(वि०)-अच्छा रास्ता, प्रशस्त-प्रपन्ना(स्त्री०)-हैड, हरीतकी ।

मपद न०)-पाव का अग्रभाग, पादाय ।

मपन(वि०)-धरजमें जाया, धरजागत ।

मपा ( स्त्री० )-प्याऊ, जलशाला, यज्ञशाला ।

मपाणि(पु०)-पाखितल, हथेली ।

मपात( पु० )-निर्भर, भरना, बिना किनारे, आश्रयग्रहण, तट, कूल ।

मपावन(न०)-एक वन, कासपूरकवन, पितामहपिता ।

मपितामह (पु०)-बाबा का पिता, पहदादा, उत्तम पितामह, ग्रहा ।

मपितामही (स्त्री०)-मपितामह की पत्नी, पहदादी । [पहपोता ।

मपीत्र ( पु० )-पीते का सुत, पौत्रपुत्र,

मपीत्री ( स्त्री० )-पीत्र की कन्या, पहपोती ।

मकुल(वि०)-खिला हुआ, विकसित ।

ममन्ध ( पु० )-काठयादि चन्धो की रचना, चन्दर्म, गू रना, दूस्तजान ।

ममन्धकल्पना ( स्त्री० )-वह रचना जिस में मिथ्या विषय कल्प-धिक और सत्य विषय सूक्ष्मरूप से वर्णित हो ।

ममल(पु०)-पत्र, पत्ता, पल्लव । वि०-

मकूट मल वाला, अतिथलुयुक्त ।

ममाळ (मस्त्री०)-मृ गा, विदुष, सच

का अधिष्ठाता, मङ्गल पङ्क, पल्लव, पत्ता, बीणा का दण्ड, रक्तवर्ण ।

मयुद्ध(वि०)-विद्वान्, परिहृत, खिला हुआ, प्रकुल, जागता हुआ ।

मयोध ( पु० )-अच्छा ज्ञान, निर्द्वारहित होना, जागरण, जागना ।

मयोधन(न०)-जागरण, जागना, होश में होना, किसी कारणवश पूर्व चन्दनादि गन्ध के न्यून हो जाने पर पुनः प्रयत्नविशेष से उस में गन्धोत्पादन करना ।

मयोधनी ( स्त्री० )-दुरालम्भा नामक कीपथ, देवठान का दधी जी कार्तिकशुक्लपक्ष में होती है ।

ममल्लन(पु०)-पवन, वायु, हवा ।

ममद्र (पु०)-निर्म्यवृत्त । वि०-मोठ ।

ममध ( पु० )-जन्म, जन्म का हेतु, बल, पराक्रम, पहिला प्रकाश-रूपान, ६० प्रकार के वर्षों में से एक, सृष्टि, रचना । वि०-प्रभूत, बहुत ।

ममविष्णु ( पु० )-परमात्मा, भैरव के १०८ नामों में से एक । वि०-होने के स्वभाव वाला ।

ममा (स्त्री०)-कान्ति, दीप्ति, यमक, रीशनी, एक गोपी, सूर्यपत्नी ।

ममाकर(पु०)-सूट्य, चन्द्रमा, अग्नि, आकाश का बृह, श्रीमत्सांख्य के निर्माण करने वाला एक मुनि ।

ममाकीट(पु०)-खद्योत, जुगनू ।

ममात(न०)-मात काल, सुयह ।

ममाव(पु०)-कोप और दण्ड से उत्पन्न

हुमा तेज, शक्ति, ताकत असर ।  
 प्रसाधान्(वि०)-तेजोयुक्त, प्रसाधाला,  
 तेजस्वी ।  
 प्रसाधती(स्त्री०)-नर्तों की धीणा, १३  
 । अक्षर के पद वाला एक छन्द,  
 मूर्धभायी ।  
 प्रसाप(पु०)-आठ वसुओं में से एक ।  
 प्रसास(पु०)-एक तीर्थ का नाम, सोम-  
 तीर्थ, वसुमेद ।  
 प्रसिद्ध(पु०)-मशहूस्ती, बह इस्ती  
 । जिस का मद् पूरका हो । वि०-  
 भेद वाला, फटा हुआ ।  
 प्रसु(पु०)-ईश्वर, शिव । वि०-स्थानी,  
 नायक, अधिपति, पालक ।  
 प्रसूता(स्त्री०)-प्रेरवयं, सम्पत्ति, यशार्थ ।  
 प्रसूत(वि०)-बहुत, प्रचुर, निरस्तुत,  
 चतुर, निकला हुआ, उन्नत, ऊँचा  
 प्रभृति(ज०)-तब से लेकर, तदादि,  
 तद्वारम्भ । [ स्कोटन ।  
 प्रमेद(पु०)-अक्षर, भेद, फल, कूटना,  
 प्रभृष्टक(ज०)-गिछा से लटकती हुई  
 माला ।  
 प्रसक्त(वि०)-उन्मत्त, पागल, बेहोश,  
 प्रमादी, असावधान ।  
 प्रमद(पु०)-नहादेव का अनुचरविशेष,  
 अश्व, घोड़ा, घृतराष्ट्र का एक पुत्र ।  
 प्रमथन(न०)-थप, कलेश प्रहृषाना,  
 विछोहन । वि०-मथने वाला ।  
 प्रमथा(स्त्री०)-हरीतकी, हैह ।  
 प्रमथाधिप(पु०)-महादेव, शिव ।  
 प्रमथित(न०)-अक्षरहित तक, मट्टा,  
 उछ । वि०-मथा हुआ ।

प्रसद ( पु० )-हर्ष, आनन्द, सुधी,  
 घतूरे का फल, एक दानव, अश्विष्ठ  
 का एक पुत्र ।  
 प्रसदवन(न०)-राजपत्निमें के विहार  
 का वन, अन्तःपुर का वन ।  
 प्रसदा(स्त्री०)-उत्तम स्त्री, सुन्दरनारी,  
 चतुर्दशाक्षर के पाद वाला एक  
 छन्द । [ हर्षयुक्त, सुगदिष्ट ।  
 प्रमना [ ख ] (वि०)-प्रकट मन दासा,  
 प्रमय(पु०)-हिंसा, यथ ।  
 प्रमा(स्त्री०)-बह ज्ञान जिस से पदायं  
 यथायं रूप से जाना जाय, निर्भ्रम  
 ज्ञान, निश्चयात्मक ज्ञान ।  
 प्रमाण( न० )-युक्ति, दलील, सबूत,  
 निश्चय ।  
 प्रमातामह(पु०)-मातामह का पिता,  
 पड़नाना । [ पत्नी, पड़नानी ।  
 प्रमातामही (स्त्री०)-प्रमातामह की  
 प्रमाथ ( पु० )-बलात्कार से डरक,  
 पृथ्वी में डाल कर रगड़ना, मूनि  
 में पीसना ।  
 प्रमाथी [ न ] ( वि० )-मारने वाला,  
 पीड़ा देने वाला, देह और इन्द्रियों  
 को क्षीम कराने वाला, प्रमथन-  
 शील ।  
 प्रमादे ( पु० )-असावधानी, बेपर-  
 काही, कर्त्तव्य को अकर्त्तव्य और  
 अकर्त्तव्य को कर्त्तव्य समझना ।  
 प्रमादवान् [ वत् ] (वि०)-प्रिमा समझी  
 करने वाला, असमीक्षकता, मूर्ख ।  
 प्रमादिका ( स्त्री० )-सदाचाररहिता  
 कन्या, वह कन्या जो दूषित हो  
 गई हो ।



प्रमादी [न] ( वि० )=प्रमादवान् ।

प्रमापण(न०)-हिंसा करना, नारना ।

प्रमित ( वि० )-जाना हुआ, ज्ञात, परिमित । [यथार्थज्ञान, प्रमा ।

प्रमिति ( स्त्री० )-निश्चयात्मकज्ञान,

प्रमीद ( वि० )-घादल, घन, नूत्रित ।

प्रमीत ( वि० )-मरा हुआ, मृत ।

प्रमीला ( स्त्री० )-तन्द्रा, आँखों का निचना, मूर्छा ।

प्रमुख ( न० )-उगसे लेकर, तदारभ्य, तदादि, तदक्षय, सम्मुख । पु०-  
हुपारी का दूत, समूह । वि०-  
श्रेष्ठ, पहिला, प्रधान, माननीय ।

प्रमुदित ( वि० )-प्रसन्न हुआ, हँस ।

प्रमेह ( पु० )-एक रोग जिस में रज्ज्वा-  
वस्था में वा मूत्र के वायु वीर्य-  
करण होता है ।

प्रमेद ( पु० )-हर्ष, आनन्द, खुशी ।

प्रम्लोचा(स्त्री०)-एक अप्सराकामात्म ।

प्रमत्त ( वि० )-पवित्र, शुद्ध, नम्र,  
जितेन्द्रिय ।

प्रमत्त ( पु० )-कठमाप्ति के लिये  
व्यापार, कोशिश, चेष्टा, न्यायमत्त  
में प्रवृत्ति, निवृत्ति और जीवन-  
कारण नामसे तीनप्रकार का यत्न  
तो कि आत्मा का गुणमाना है,  
सांख्यमतानुसार युद्ध का धर्म,  
परिग्रह, चरकार ।

प्रपाण ( पु० )-एक तीर्थ जहाँ गंगा  
और यमुना का संगम हुआ है,  
प्रदृश्य, इन्द्र का वाचक, अश्व ।

प्रयोगतय ( पु० )-इन्द्र, देवराज ।

प्रयाण ( न० )-जाना, गमन करना,  
यात्रा, प्रस्थान ।

प्रयास ( पु० )-शौचितिक, श्रुग, श्रुका-  
चार्य । न०-प्रस्थान । वि०-गया,  
हुआ, गत । [वलग्न, अज्ञान ।

प्रयास ( पु० )-प्रयत्न, परिश्रम,

प्रयुक्त ( वि० )-अच्छे प्रकार लगा  
हुआ, संलग्न ।

प्रयुक्त(न०)-दशलक्षकी संख्या का वाचक

प्रयोक्ता [व] ( पु० )-साहूकार, धनी,  
उत्तमर्ण । वि०-प्रयोग करने वाला,  
अनुष्ठाना, नियोग करने वाला,  
काष्ठ का आचार्य ।

प्रयोग ( पु० )-मन्त्रादि की पूर्ति  
करना, वश में करना, वशीकरण,  
निदर्शन, निखाल, दूष्टान्त, अश्व,  
नियत करना, इस्तेमाल करना,  
वृद्धि के लिये धन देना ।

प्रयोजक(वि०)-सेवकादि को कार्य में  
लगाने वाला, प्रेरणा करने वाला,  
प्रेरक, नियोगकर्ता, नियन्ता ।

प्रयोजन ( न० )-कारण, मतलब, सबब,  
हेतु ।

प्रयोज्य ( वि० )-लगाने योग्य, जो  
प्रयोग किये जाने के योग्य हो,  
मृत्य, सेवक ।

प्रसूद ( वि० )-यड़ा हुआ, वृद्धिपूर्वक,  
जड़पकड़ा हुआ, घटमूल, ज्ञात ।

प्ररोह ( पु० )-अक्षुर, अंकुभा, नन्दीवृक्ष  
प्रलपित ( वि० )-कहा हुआ, कथित ।

प्रलम्ब ( पु० )-एक दैत्य का नाम,  
राग, त्रपुष, मेघ, शाखा, दार-

मेद, देशविशेष । वि०-लम्बमान ।

मलम्बय (पु०)-बलराम ।

मलम्बयितृ (पु०)-बलराम ।

मलय (पु०)-रूपान्त, प्रसन्न के दिन,  
का अन्त, सृष्टि के समय का दिन,

। नाभ, खेटाक्षय, अन्तर्धान, छिपना

मलाप (पु०)-अनर्थक वचन, वकवाद,  
निप्रयोगन बोधना, बहुवचन ।

मलीनता (स्त्री०)-घेष्टा का नाश,

प्रलय, इन्द्रियों का सो जाना ।

प्रवचन (ग०)-वेद, वेदार्थ का ज्ञान,  
वेदाङ्ग, प्रकृत वाक्य ।

प्रवचनीय (वि०)-प्रकृत वक्ता, प्रवाच्य

प्रवण (पु०)-घौराहा, चलुप्यय, वह

प्रदेश जहां से चारों तरफ को  
भाग जाता हो, क्रम से नीचा

स्थान, उदर । वि०-नम्र, स्निग्ध,

आवृत्त, क्षीण, निर्वृत्त ।

प्रवक्ष्यस्वपत्तिका (स्त्री०)-नामिकाभेद ।

प्रवपाः [व्] (वि०)-बूढ़, बूढ़ा पुरुष,  
पुराण ।

प्रवर (ग०)-अगुरु, गौरव, अन्वय, वंश ।

पु०-गौत्रप्रवर्तक मुनिगण । वि०-

श्रेष्ठ ।

प्रवर्ग (पु०)-होम का अग्निविशेष ।

[प्रवर्ग्य शब्द का भी यही अर्थ है]

प्रवर्तक (वि०)-कार्य में लगाने

वाला, प्रवृत्तिजनक, प्रवर्तनकर्ता

प्रवर्तना (स्त्री०)-प्रवृत्तिका उत्पादक

। व्यवहार, आरम्भ, कान में

लगाना, प्रेरणा । [लगा हुआ ।

प्रवर्तित (वि०)-उत्पन्न हुआ, जात,

प्रवह (पु०)-वायुविशेष, नगर से  
बाहिर गमन, मेघ का नाम ।

प्रवङ्गण (ग०)-पालजी, हंली, स्त्रियों  
को ले जाने का वह यान जो  
बस्त्रों से ढका हुआ और कहारों  
द्वारा ले जाया जाता है ।

प्रवङ्गि (स्त्री०)-पहेली, प्रहेलिका,  
कठिन समस्या ।

प्रवङ्गिका (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

प्रवाद (पु०)-परस्परवाक्य, अनर्थ,  
अनश्रुति ।

प्रवार (पु०)-वस्त्र, छाछादन, प्रवर

प्रवारण (ग०)-महादान, सुन्दर स्त्री  
रत्नादि का दान, निषेध, मना ।

प्रवास (पु०)-विदेश, परदेश, दूरदेश-  
स्थिति, परदेश में रहना ।

प्रवासन (ग०)-परदेश में रहना,  
देशनिकाला, वचनारण ।

प्रवासी [न्] (वि०)-विदेश में रहने  
वाला, परदेशी, विदेशस्थ ।

प्रवाद (पु०)-अल का वहना, लठ-  
कीत, व्यवहार, उत्तम अश्व ।

प्रवाहिका (स्त्री०)-संप्रहणी रोग  
का भेद । [मग्न होना ।

प्रविरूपाति (स्त्री०)-अतिप्रसिद्धि, बहुत  
प्रविदारण (ग०)-युद्ध, संधान, लड़ाई

आकीर्ण । [होना, विधुर ।

प्रविश्लेष (पु०)-अतिविशेष, जुदा

प्रविष्ट (वि०)-प्रवेशयुक्त, पहुंचा हुआ ।

प्रविहारण (ग०)=प्रविदारण ।

प्रवीण (वि०)-चतुर, विद्वान्, निपुण,

शिक्षित, योगाद्वारा दक्षस्वर से

गाने वाला ।

[ श्रेष्ठ ।

प्रवीर(पु०)-उत्तमयोद्धा, सुजट । वि०-

प्रवृत्त (वि०)-लग्न हुआ, प्रवृत्तियुक्त,  
आरम्भ ।

प्रवृत्ति (स्त्री०)-वाचा, यात, प्रवर्त्तन,  
यत्नादि उद्योग, इस्ती का मद,  
अवन्ती आदि देशभेद ।

प्रवृद्ध (वि०)-बड़ा हुआ, वृद्धियुक्त,  
मौढ, पूर्ण, विशाल, सफल, बाढा  
प्रवेक ( वि० )-मुख्य, प्रधान, उत्तम,  
सद्वार ।

प्रवेष्ट(पु०)-यथ, जी ।

प्रवेणि-णी(स्त्री०)-हाथी की पृष्ठ का  
चित्रविचित्र रंग का कम्बल,  
नदीविशेष ।

प्रवेष्ट(पु०)-पीलेवर्णकी मूंग, पीतमुद्ग

प्रवेश(पु०)-अन्दर जाना, अन्तर्गमन ।

प्रवेशन(न०)-मुख्य दरवाजा, गङ्गाद्वार,  
सिंह का द्वार, दाखिल होना ।

प्रवेशट(पु०)-भुजा, यात्रु, याह ।

प्रवृत्त (वि०)-साफ, स्फुट ।

प्रवृत्तित (पु०)-सन्धासी, पतुर्पासी,  
जैनविध्य । न० सन्धास ।

प्रवृत्तया (स्त्री०)-सन्धास, धानप्रस्थ ।

प्रवृत्तयावन्त(पु०)-सन्धास से पतित,  
सन्धास से घट सन्धासी ।

प्रथमा (स्त्री०)-स्तुति, तारीफ, गुण-  
वर्णन, गुर्जा का यत्ना करना ।

प्रथम(पु०)-प्रथमा, उपथम, शान्ति ।

प्रथमन ( न० )-मारना, यथ, हिंसा,  
शमना, शान्ति, स्थिर करना,  
प्रतिपादन ।

पृथस्त ( वि० )-अतिश्रेष्ठ, पृथमा  
के योग्य, श्रेष्ठ, चौहा ।

पृथस्ता [तृ] ( वि० )-शामन करने  
वाला, अतिवृत्ति, मित्र ।

पृथन (पु०)-जानने की दृष्टि, जि-  
ज्ञासा, सवाल, अनुप्राण, पृच्छा ।

पृथनदूती (स्त्री०)-प्रहेलिका, महेली ।

प्रथय (पु०)-प्रेम, सुहृदयत, प्रणय ।

प्रथित (वि०)-नय, विनीत, शिक्षित ।

प्रथलप (वि०)-थिथिल, ढीला ।

पृष्टा [तृ] (वि०)-पूछने वाला, पृच्छक,  
प्रश्नकर्त्ता ।

पृष्ठ ( वि० )-आगे जाने वाला, भद्र-  
गामी, अत्युत्तम, नेत्र का वाचक ।

पृष्ठवाट [हृ] (पु०)-जुए में जोड़े हुए  
बैल आदि, वे नवीन वृष आदि  
को दमन के लिये अर्थात् रथ  
इल आदि में बलना सिखलाने  
के लिये जोड़े गये हैं ।

प्रष्टी(स्त्री०)-आगे चलने वाली पत्नी,  
प्रथमाया ।

प्रष्टीही (स्त्री०)-प्रथमगर्भा गी, यह  
गी जिस ने प्रथम गर्भ धारण  
किया हो ।

प्रसक्त (न०)-गिर्य । वि०-आसक्त,  
लग्न हुआ, कसा हुआ ।

प्रसक्ति (स्त्री०)-प्रसक्त, सलग्न होना,  
आपत्ति, अनुमिति, अनुमान ।

प्रसक्त(पु०)-सगतिविशेष, मेळ, मैथुन,  
स्त्रीसुग । [यकाहे, प्रवन्नता ।

प्रसक्ति(स्त्री०)-निमेलता, स्पर्शता,

प्रसक्त(वि०)-स्पर्श, निमेल, साक ।

सन्तुष्ट, खुश । [ होना ।  
 प्रसन्नता (स्त्री०) - प्रसाद, खुशी, खुश  
 प्रसन्ना (स्त्री०) - मदिरा, शराब ।  
 वि० - प्रसन्नतायुक्त [स्त्री] ।  
 प्रसन्नेरा (स्त्री०) - मदिरा, मद्य, शराब ।  
 प्रसन्न (न०) - बलात्कार, जबरदस्ती ।  
 प्रसन्नम् (अ०) - अपमानक, अकस्मात्,  
 एकाएक ।  
 प्रसर (पु०) - उत्पत्ति, प्रणय, वेग, समु-  
 दाय, समीपगमन, वाण, संग्राम,  
 'सर्वां के बावळ, नीवार ।  
 प्रसरण (न०) - सेना का सर तरक  
 कैलना, अभ्युत्थान, गमनमात्र ।  
 प्रसर्पण (न०) - पूर्ववत् ।  
 प्रसव (पु०) - बालक का पैदा होना,  
 जन्म, गर्भसोचन, उत्पत्ति, गर्भ-  
 ग्रहण, फल, पुष्प, आद्या । -  
 प्रसववर्धन (न०) - इठिला, युक्त ।  
 प्रसवस्थली (स्त्री०) - माता, जमनी  
 प्रसविता [तु] (पु०) - पिता, जनक,  
 बाप । [जननी, माता ।  
 प्रसवित्री (स्त्री०) - उत्पन्न करने वाली,  
 प्रसव (वि०) - प्रतिकूल, नाम, चढटा,  
 विपरीत, बरसिछाफ ।  
 प्रसह (पु०) - बलात्कार से सहाय  
 पत्नी, श्रेय, बाज आदि ।  
 प्रसहन (पु०) - हिंस्रपशु । न० - आलि-  
 गन, सहना । [जबरदस्ती ।  
 प्रसह्य (अ०) - बलात्कार, इठ से,  
 प्रसह्यचौर (पु०) - बलात्कार से चोरी  
 करने वाला, लुटकार, डाकू ।  
 प्रसाद (पु०) - प्रसन्नता, खुशी, निर्म-

लता, स्वास्थ्य, प्रसक्ति, अनुग्रह ।  
 प्रसादन (न०) - अन्न, प्रसन्नताकारक ।  
 प्रसादना (स्त्री०) - सेवा, पूजा, टहल ।  
 प्रसाधनी (स्त्री०) - सिद्धि, कर्पी,  
 भाल साफ करने का साधन ।  
 प्रसाधित (वि०) - अलंकृत, सजाया  
 हुआ, पूर्ण किया हुआ ।  
 प्रसारण (न०) - विस्तारकरना, फैलाना ।  
 प्रसारी [ न ] (वि०) - विस्तार करने  
 वाला, फैलाने वाला, विस्तार-  
 कारक । [ पूर, राध, पीय ।  
 प्रसित (वि०) - आसक्त, लगा हुआ । न०  
 प्रसिद्धि (वि०) - अलंकृत, भूषित, मयूर,  
 विख्यात ।  
 प्रसिद्धि (स्त्री०) - ख्याति, प्रतिष्ठा, भूषा  
 प्रसू (स्त्री०) - माता, पननी, कपली,  
 लता, उत्पन्न करने वाली, घोड़ी  
 प्रसूका (स्त्री०) - पूर्ववत् ।  
 प्रसून (वि०) - उत्पन्न हुआ, सज्जात ।  
 न० - पुष्प, फूल ।  
 प्रसूता (स्त्री०) - वह स्त्री जिसके सन्तान  
 उत्पन्न हो गई हो, प्रसूतिका,  
 जातसन्ताना ।  
 प्रसूति (स्त्री०) - सन्तान, अपत्य, औलाद  
 प्रसूतिग (न०) - प्रसव से उत्पन्न हुआ  
 दुःख, जनने का दुःख ।  
 प्रसून (न०) - पुष्प, फूल, कुसुम, फल ।  
 वि० - उत्पन्न हुआ ।  
 प्रसूनेयु (पु०) - कन्दर्प, कामदेव ।  
 प्रसूत (न०) - आठ तोले का परिमाण,  
 पस्ता, आधी अञ्जली । वि० - बढ़ा  
 हुआ, विनीत, नियुक्त, नियत  
 किया हुआ ।

प्रसूति(स्त्री०)-पूर्ववत् ।

प्रसेक ( पु० )-सेवन, गिरना, छुटि,  
लार का गिरना, रोगविशेष ।

प्रसेदिवान् [ छ ] ( वि० )-प्रसन्न, खुश ।

प्रसेव ( पु० )-बीजा का अङ्गविशेष,  
स्पूत, सिंघा हुआ ।

प्रसेवक ( पु० )-बीजा के अग्रभाग  
पर बधी हुई लकड़ीविशेष,  
बीजाग्रान्तस्थ वक्रकाष्ठ ।

प्रस्कण्य ( पु० )-ज्वरविशेष ।

प्रस्कन्न ( वि० )-गिरा हुआ, पतित ।

प्रस्तर ( पु० )-पाषाण, शिला, पत्थर,  
मणि ।

प्रस्तार ( पु० )-तृणवन, तिनकों का  
वन, पत्रों की बनी शय्या, फैलाव,  
विस्तार, प्रक्रिया ।

प्रस्ताव ( पु० )-अक्षर, बीजा, प्रसं-  
गस्तुति, प्रसंग, रेचपूलेक्षण, तहरीक।  
प्रस्तायना ( स्त्री० )-आरम्भ, भूमिका,  
तनदीद, नाटक में सूत्रधार और  
नटों आदि का परस्परवाचालाप ।

प्रस्तिर ( पु० )-पत्र आदि से निर्मित  
शय्या ।

प्रस्तुत ( वि० )-अवसरप्राप्त, प्रासं-  
गिक, उद्यत, प्रकृत, स्तुतियुक्त,  
उपस्थित, पेश किया हुआ ।

प्ररप ( पु० )-१ मीट का परिमाण,  
पत्थर, पथर, पहाड़, जैलाव ।

प्ररपान ( न० )-विषय की दृष्टि  
वाले का संचामनूनि में गमन,  
गमनमात्र, यात्रा ।

प्ररपावित ( वि० )-भेजा हुआ, प्रेषित ।

प्ररफुट ( वि० )-खिटा हुआ, विकसित  
प्ररफोटन ( न० )-काज, मूर्ध, ताड़ना,  
खिटना, विकसन ।

प्ररयय ( न० )-लगतार जल का  
बहना, पर्यंत का करना, स्वेद,  
पसीना । पु०-चन्द्रमा, मास्यवान्  
पर्यंत । [ बहना ।

प्ररवाव ( पु० )-भूत्र, वेश्या, टपकना,  
प्ररवेद ( पु० )-पसीना, घर्मविन्दु ।

प्ररहत ( वि० )-फैला हुआ, घितत,  
अभ्यस्त, क्षयण, हिंसित, ताड़ना,  
किया हुआ, घादित ।

प्ररहमेनि ( पु० )-चन्द्रमा, चांद ।

प्ररहर ( पु० )-दिन का आठवा हिस्सा,  
पहर, याम ।

प्ररहरण ( न० )-गुह्य, सपान, शस्त्र, अस्त्र,  
घोट नारना, वध में करना,  
ताड़न करना ।

प्ररहपण ( पु० )-सुधग्रह । वि०-हर्षयुक्त,  
हर्ष करने वाला ।

प्ररहयणी ( स्त्री० )-हरिद्रा, हल्दी, १३  
अक्षरके पाद वाला एक छन्द ।

प्ररहण ( न० )-काव्यविशेष, हास्य,  
हंसी करना, आक्षेप ।

प्ररहसन्ती ( स्त्री० )-पूषिका, घासन्ती  
सता ।

प्ररहस्त ( पु० )-बह पाप जिस में  
अङ्गुलियें फैली हुई हों, चपेट,  
गपपड़, रावण का सेनापति ।

प्ररहार ( पु० )-घोट, वापात ।

प्ररहास ( पु० )-नागभेद, नट, शिव,  
महादेव ।

प्रहि ( पु० )-कूप, कुआँ । [ दाढ ।

प्रहित ( वि० )-फँका हुआ, लिप्त । न०-

प्रहीण ( वि० )-त्यक्त, त्यागा हुआ ।

प्रहुत ( न० )-भूतयज्ञविशेष ।

प्रहेलिका ( स्त्री० )-पहेली, वह रचना-  
विशेष जिस में अपे लिपा हुआ  
हो, कूटार्थभाषित कथा ।

प्रह्लाद ( पु० )-हिरण्यकशिपु नामक  
देव का पुत्र जो कि ईश्वर का  
परमभक्त था ।

प्रह्व ( वि० )-विनीत, नम्र, झुका हुआ ।

प्राक् ( अ० )-पूर्व की दिशा, पूर्व का  
देश, पहिले, प्रज्ञात, उपतीत,  
अवान्तर ।

प्राकाश्य ( न० )-जाठ प्रकार की  
सिद्धियों में से एक, इच्छा, मर्जी,  
चाहना ।

प्राकार ( पु० )-परकोट, चारों तरफ से  
घेष्टनाकार घँट आदि से निर्मित  
भित्ति, शहरपनाह, कोट ।

प्राकृत ( वि० )-अपकार करने वाला,  
नीच, प्रकृतिसम्बन्धी, स्वभाव-  
निर्मित, स्वभाव से सिद्ध, संस्कृत  
शब्द से निर्गत नाटकादि में अप-  
भ्रंश शब्द, प्रलय का भेद ।

प्राकृतप्रलय ( पु० )-प्रकृतिसम्बन्धी  
प्रलय, यह प्रलय जिस में कार्य-  
समूह प्रकृति में लीन होजाता है ।

प्राकृतमानुष ( पु० )-सामान्य कोटि का  
मनुष्य, साधारण पुरुष ।

प्राकृतमित्र ( न० )-स्वाभाविक मित्र,  
वह मित्र जिस का प्रेम कृत्रिम

अर्थात् बनावटी न हो ।

प्राकृतिक ( वि० )-स्वाभाविक, प्रकृति-  
सम्बन्धी, कुदरती ।

प्राक्तन ( वि० )-पूर्व की दिशा वा देश  
में हुआ, पुरातन, पुराना, पूर्व  
की दिशा, पूर्वका ।

प्राक्तनकर्म ( न० )-पूर्वजन्म का कर्म,  
भाग्य, अटूट, पूर्वकृत कार्य ।

प्राक्फल ( पु० )-पनस, करीलका वृक्ष ।

प्राक्फलगुनी ( स्त्री० )-पूर्वफलगुनी नाम  
नक्षत्र । [ चार्प ।

प्राक्फलगुनीमय ( पु० )-वृक्षरूपित, सुरा-

भागभाव ( पु० )-पूर्वफालवर्त्ती अभाव,  
आगामी समय में होने वाला  
अभाव जैसे-"इन तन्तुओं से ब्रह्म  
घनेगा" इस प्रकार से प्रसिद्ध  
अभावविशेष, भविष्यत्काल का  
योचक । [ प्रगल्भता ।

प्रागल्भ्य ( न० )-गम्भीरता, जैयं,

प्रागुदीची ( स्त्री० )-पूर्व और उत्तर  
के बीच की दिशा, ईशान कोण ।

प्राग्ज्योतिष्य ( पु० )-कामरूपी देश ।

प्राग्भार ( पु० )-पर्यंत का अग्रभाग,  
बड़ा भार, उत्कर्ष, घुलतारा ।

प्राग्रहर ( वि० )-उत्तम, श्रेष्ठ ।

प्राग्यु ( वि० )-पुर्ववत् ।

प्राग्वश ( पु० )-वह घर जो यशमान  
की स्तिपति के लिये होनाद से  
पुर्व के भाग में बनाया गया हो,  
पहिला वश, पूर्वकुल ।

प्रापात ( पु० )-पुट, लहारे ।

प्रापार ( पु० )-पृथकी आहुति, दीमादि

कर्म में अग्नि पर घृत का क्षरण  
अर्थात् ब्रह्मणः ।

प्राच्य ( पु० )—अभ्यागत, अतिथि,  
अकस्मात् आया हुआ जन ।

प्राच्यिक ( पु० )—पूर्ववत् ।

प्राच्यिक ( पु० )—पूर्ववत् ।

प्राह् ( वि० )—पूर्वदिशा, पूर्व का देश,  
पूर्वकाल ।

प्राङ्गण ( न० )—आंगन, चक्कर, गड्ढा भूमि ।

प्रायिका ( स्त्री० )—घन की नकली,  
घननतिका, दण्ड, हाँस ।

प्राची ( स्त्री० )—पूर्व की दिशा ।

प्राचीन ( वि० )—पूर्व की दिशा वा  
देश में उत्पन्न हुआ, पुराना ।

प्राचीनवर्हिः [ स् ] ( पु० )—इन्द्र, एक  
राजा का नाम ।

प्राचीनासीत ( न० )—प्राहु आदि विद्व-  
कर्म में घाम हाथ की बाहिर कर  
दक्षिणहस्त पर यज्ञीपवीत धारण  
करना ।

प्राचीताधीती [ त्र ] ( पु० )—यार्धे हाथ  
को निकाल कर चौधे हाथ पर  
यज्ञीपवीत धारण करने वाला  
पुण्य, प्राचीताधीतयुक्त ।

प्राचीपति ( पु० )—इन्द्र, देवराज ।

प्राचीर ( न० )—चारों तरफ की दीवार,  
पार्कीटा, गड्ढा पनाह ।

प्राचीतस ( पु० )—यारभौकि मुनि, प्रचेता  
की मन्तानभाष, विष्णु, दक्ष, गरुड  
का पुत्र ।

प्राचेतस [ स ] ( पु० )—प्राचीनवर्हिः राजा  
के पुत्र [ यह सकारान्त नित्य बहु-

वचनान्त होता है ] ।

प्राच्य ( पु० )—शरावती नदी के पूर्व  
और दक्षिण देश का नाम । वि०—  
पूर्वदेश का । [ वाला ।

प्राणक ( पु० )—सारथि, रथादि चलाने  
प्राजापत्य ( पु० )—भाठ प्रकार के  
विवाहों में से एक, प्रयाग, जैन-  
राजविधेय । न०—द्वादश दिन में  
समाप्त होने वाला एक व्रत,  
रोहिणी नक्षत्र । वि०—प्रजापति,  
सम्बन्धी चक्र आदि ।

प्राजिता [ त्र ] ( पु० )—सारथि । वि०—  
अच्छा जाने वाला ।

प्राज्ञ ( पु० )—परिहृत, विद्वान्, कलिक  
देव का ज्येष्ठ भ्राता, राजा का  
सौतर, मूर्ख । वि०—चतुर, निपुण ।

प्राज्ञा ( स्त्री० )—बुद्धिमती स्त्री, बुद्धि, अक्षु-  
प्राप्ती ( स्त्री० )—प्रज्ञा, बुद्धि, परिहृत-  
भार्या ।

प्राच्य ( वि० )—बड़ा हुआ, प्रपुर, बहुत ।  
न०—वृत्तन पूत, बहुत पूत ।

प्राज्ञ ( वि० )—चीधा, सरल, अज्ञ ।

प्राट् [ त्र ] ( पु० )—पूठने वाला, प्रभक्तता ।

प्राह्विवाक ( पु० )—अर्थों [ मुद्गह ] और  
प्रत्यर्थों [ मुद्गालह ] की बात को  
जुन कर अच्छे धुरे का विचार  
करने वाला, जज्ञ, मुंश्चि, यकील ।  
[ प्राह्विविवाक का भी यही अर्थ  
होता है ] ।

प्राच्य ( पु० )—प्रज्ञा, हृदय में रहने वाला  
यापु, अविष्ट, बल, काश्य कां  
जीवनात्मक रस, नाक के आगे ।

रहने वाला वायु गिरि का कर्म बाहर जाना है ।

प्राणप (पु०)-पवन, हवा, यलवान्,  
तीर्थका वाचक, प्रजापति ।

प्राणद(न०)-जल, रुधिर, रक्त । वि०-

प्राण देने वाला-पु०-जीवक वर्त ।

प्राणन (न०)-जीवन, जीना, चेटा  
करना ।

प्राणनाथ(पु०)-पति, स्वामी, मालिक ।

प्राणन्त(पु०)-पवन, हवा, रसाज्जन ।

प्राणन्ती ( स्त्री० )-छींक, हिस्का,  
हिचकी ।

प्राणनयकोप ( पु० )-कर्मैन्द्रियसहित

प्राण, अपान, समान, उदान

और व्यान नामक पांच वायु-  
समूह ।

प्राणसंघन (पु०)-प्राणों का रोकना,

प्राणायाम, वह कर्म जिसमें  
नासिका द्वारा जाने जाने वाला  
वायु रोक जाता है ।

प्राणसद्म[न्] (न०)-शरीर, देह ।

प्राणसना ( स्त्री० )-सायाँ, पत्नी ।

वि०-प्राणतुल्य ।

प्राणाः ( पु० व० )-प्राण, अपान,

समान, उदान और व्यान नामक  
पांच वायु ।

प्राणायानी (पु०)-प्राण और अपान

नामक दो वायु, अश्विनीकुमार ।

प्राणायाम ( पु० )-वह कर्म जिसमें

प्राणवायु का अवरोध किया  
जाता है अर्थात् बाहर से प्राण  
वायु की छींक कर ऊपर ले जाना

कुम्भक, फिर उसे वहीं रोक कर  
पूरण करना पूरक और पुनः उस  
को नासिका के द्वारा शनैः  
बाहर निकालना रोक नाम  
प्राणायाम कहलाता है, योग का  
अङ्गविशेष ।

प्राणित ( न० )-बह द्यूत [लुभा]  
को मेढा वा मुर्गा आदि प्राणियों  
के द्वारा शर्त लगा कर खेला  
जाता है, पणपुर्वक नैप और  
कुक्कुटादि पक्षियों का युद्ध,  
सनाहुय ।

प्राणिहिता (स्त्री०)-पादुका, उड़ाई ।

प्राणी [न्] ( वि० )-प्राणयुक्त मनु-  
ष्यादि जन्तु, चेतन, जीव ।

प्राणीत्य ( न० )-श्रृणु, कर्ज ।

प्राणेश (पु०)-पति, स्वामी, मालिक ।

प्रातः [र्] ( न० )-प्रभात, सुबह,  
प्रत्यूष, मूर्धोदय से धीन पड़ी  
तक का समय ।

प्रातःकृत्य ( न० )-प्रभात समय का  
कर्तव्य कर्म, सन्ध्योपासनादि ।

प्रातर्गैय (पु०)-वन्दित, भाट, स्तुति-  
पाठक ।

प्रातर्भोक्ता [र्] (पु०)-काक, कौआ ।

वि०-प्रातःकाल भोजन करने वाला

प्रातर्भोजन ( न० )-प्रातःकाल का  
खाना, नाश्ता । [ प्रातराश भी  
इसी अर्थ में प्रयुक्त होता है ] ।

प्रातिपदिक् ( पु० )-अग्नि, आग ।

न०-व्याकरण में अर्थ वाला वह  
शब्दस्वरूप जो कि प्रातु तथा



प्रत्यय से भिन्न किन्तु कृदन्त,  
तद्धित और समास से निष्पन्न  
हुआ हो, सार्थक शब्द ।

प्रातिभाष्य ( न० )-चाही होना,  
साक्षित्व, जादिनी ।

प्रातिस्विक ( न० )-प्रत्येक वस्तु का  
नैतिक असाधारण धर्म ।

प्रातिहारिक ( पु० )-कपटी, छलिया,  
सायाकारक, द्वारपाल ।

प्राथमिक ( वि० )-पहिले समय में उत्पन्न  
हुआ, पूर्वसमय का, आरम्भिक ।

प्रादुर्भाय ( पु० )-जाहिर होना, आवि-  
र्भाव, प्रकट होना, प्रकाश ।

प्रादेश ( पु० )-तर्जनी अंगुली के  
साथ फैला हुआ अंगुष्ठ, देश-  
मात्र, तर्जनी के साथ फैलाये हुए  
अंगुष्ठपरिणाम का माप ।

प्रादेशन ( न० )-दान, त्याग, खैरात ।

प्रादोष ( वि० )-प्रदोष का, प्रदोष-  
सम्बन्धी ।

प्रादोषिक ( वि० )-पूर्ववत् ।

प्राधान्य ( न० )-मुख्यत्व, प्रधानता ।

प्राध्य ( न० )-अनुकूल, आशानुवर्ती ।

प्राध्य ( पु० )-दूर जाने वाले रथादि,  
नम्, दूरगम्य । वि०-यद्, यंचा  
हुआ ।

प्राप्त ( पु० )-प्राप्त का भाग, पिछली  
सीमा, शेप सीमा, सूया ।

प्राप्तत [ म् ] ( न० )-चारों तरफ से,  
सब ओर से ।

प्राप्तर ( न० )-यह भाग जो दूर तक  
गूँथ हो, जलप्लादि से रहित

पथ, दूरगन्तव्य मार्ग, घन, वृक्ष  
को खड़ोडर ।

प्राप्तशून्य ( न० )-पूर्ववत् ।

प्रापण ( न० )-प्राप्त होना, पहुँचाना,  
ले जाना ।

प्रापणीय ( वि० )-प्राप्त होने योग्य,  
प्राप्त्य, पहुँचाने वा लेजाने योग्य ।

प्राप्त ( वि० )-लब्ध, प्रस्थापित, भेजा  
हुआ, आसादित ।

प्राप्तपञ्चत्व ( वि० )-नरा हुआ, नृत ।

प्राप्तरूप ( वि० )-सुन्दर, मनोह,  
परिहृत, बिन्न ।

प्राप्तव्य ( वि० )=प्रापणीय ।

प्राप्ति ( स्त्री० )-ज्ञान, धन आदि की  
वृद्धि, उदय, पाना, सहति, नेत्र,  
अग्निमादि आठ सिद्धियों में से  
एक, स्थानान्तर पर पहुँचना ।

प्राप्त्य ( वि० )-पहुँचाने योग्य, गम्य,  
प्राप्तव्य, पाने लायक ।

प्राबोधिक ( पु० )-प्रातःकाल, सुबह ।

प्राभूत ( न० )-भेट, उपायन, पारितो-  
यिकधन, इनाम ।

प्रमाणिक ( पु० )-सहेतुक, प्रत्यक्षादि  
प्रमाणबिह, शास्त्र, प्रमाणकर्ता,  
मयांदा के लायक, सत्ता के योग्य ।

प्रमापय ( न० )-प्रमाण का भाग, प्रमा-  
करणत्व, वस्तु का यथायं रूप से  
जानना, पहचानने योग्य प्रमाण ।

प्राय ( पु० )-मृत्यु, मरण, मरणार्थ  
भोजन न करना, अनशन, तुल्य,  
यहुतायत, अवस्था, पाप, तप ।

न०-प्रवेश, सपान ।

प्रायः [ स् ] (अ०)-आहुत्य, बहुतायत्, बहुत करके, तपोऽनुष्ठान ।

प्रायश्चित्त (न०)-पापशोधन का साधन, तपोऽनुष्ठान का मिश्रण, पापनिवर्त्तक चान्द्रायणादि धर्म या कर्म ।

प्रायश्चित्ती [ त् ] (वि०)-प्रायश्चित्त करने योग्य पुरुष, अपराधी, दोषी ।

प्रायुद्धोपी [ न् ] (पु०)-अश्व, घोड़ा ।

प्रायोपपत्ति (वि०)-प्रयोजन के योग्य, मत्त-लव के लायक ।

प्रायोपविष्ट (वि०)-भोजन न कर मरने के लिये बैठता हुआ पुरुष, वह पुरुष जो अनशन व्रत करता हुआ, मरणार्थ उद्यत हो ।

प्रायोपवेश (पु०)-सद्यः संकल्प विकल्पों के त्याग तथा भोजन न करने, पूर्वक मृत्यु के लिये बैठना ।

प्रारब्ध (न०)-शरीर आदि का आरम्भक पूर्वजन्मान्तित अदृष्ट विशेष जिस का लय भोग से ही होता है । वि०-आरम्भ किया हुआ ।

प्रारब्धि (स्त्री०)-हस्ती के बाधने की रज्जु । [ आरम्भ, शुरू ।

प्रारम्भ (पु०)-कर्म, काम, यागी, मार्पन (न०)-मागना, याचना करना, मारना, हिंसा करना ।

मार्पना (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

मार्पणीय (न०)-द्विपर युग । वि०-मार्पना के योग्य, वाच्छनीय ।

मार्पित (वि०)-याचित, मागा हुआ, कथित, वृत्त, मारा हुआ ।

प्रालम्ब (न०)-गले में सीधी लटकती हुई माला, कण्ठी । वि०-अति-थय लम्बमान ।

प्रालम्बिका (स्त्री०)-स्वर्ण का हार, तोड़ा, स्वर्णनिर्मित हार ।

प्रालेय (न०)-हिम, धर्म, तुषार ।

प्रालेयाद्य (पु०)-चन्द्रमा, बाद ।

प्रावट (पु०)-यव, जौ ।

प्रावरण (न०)-ऊपर का वस्त्र, हुपहा, चत्तरीय वस्त्र ।

प्रावार (पु०)-पूर्ववत् ।

प्रावृट् [ प् ] (स्त्री०)-वर्षा का मौसम, वर्षाकाल । [ जोड़ने का वस्त्र ।

प्रावृत (न०)-चत्तन वस्त्र, पोशाक,

प्रावृति (स्त्री०)-परकोटा, चारों तरफ की दीवार ।

प्रावृषा (स्त्री०)-वर्षाकाल, धनागन ।

प्रावृषिक (पु०)-मयूर, मोर । वि०-वर्षाकाल में उत्पन्न होने वाला ।

प्रावृषेय (पु०)-कदम्बवृक्ष । वि०-वर्षाकाण्डाद्रव ।

प्राशित (न०)-पितृपक्ष विशेष । वि०-छाया हुआ, भक्षित ।

प्राशिक (पु०)-कुशलप्रश्नकर्त्ता, सम्य । वि०-प्रश्न करने वाला ।

प्रास (पु०)-कुन्त नामक अस्त्र, जाला ।

प्रासङ्ग (पु०)-गाड़ी आदि का जूना, युग । [ महल ।

प्रासाद (पु०)-देवताओं का घर, राज-

प्रासादकुक्कुट (पु०)-पारावत, क्यूतर ।

प्रासिक (पु०)-भाँटे से प्रहार करने वाला, कुन्तास्त्रधारी, कीन्तिक ।

प्राह(पु०)-नृत्यविषयक उपदेश ।  
 प्राह ( पु०)-दिन का पहिला पहर,  
 अच्छा दिन, पूर्वदिन ।  
 प्राह्नि(अ०)-पहिले पहर में, पूर्वाह्न में ।  
 प्राह्निन(वि०)-पूर्वाह्न में होने वाला,  
 पूर्वोन्ह का, पूर्वोदयम्बन्धी ।  
 प्राह्नेतराम्(अ०)-बहुत सुबह, बहुत  
 पहिला पहर ।  
 प्रिय ( पु० )-पति, भर्ता, जागरता,  
 कासिकेय, मृगविशेष, अहिनामक  
 औषध ।  
 प्रियवद(पु०)-गन्धधेका वाचक । वि०-  
 । प्रिय बोलने वाला, मिष्टभाषी ।  
 प्रियङ्गुर ( वि० )-प्रिय करने वाला,  
 प्रियकर्ता । पु०-दैत्यभेद ।  
 प्रियजन(पु०)-मित्रवर्ग, हृद्यलोक, मौढ  
 भाव का ज्ञाता ।  
 प्रियतन ( पु० )-नमूरशिखा नामक  
 वृक्ष । प्रि०-इन सम में अति  
 प्यारा, अतिशय प्रिय ।  
 प्रियतर(वि०)-इन दोमें अधिक प्रिय ।  
 प्रियता ( स्त्री० )-प्यार, स्नेह, दाह ।  
 प्रियदर्शन ( वि० )-शुभदर्शन वाला,  
 मनोह, सुदृश्य, स्वस्त्वयान् ।  
 पु०-शुभ पत्नी, एक गन्धधे ।  
 प्रियवादी [नृ] ( वि० )-प्रिय बोलने  
 वाला, मनोहपत्ता ।  
 प्रियव्रत(पु०)-स्वायम्भुवराज्येष्टपुत्र ।  
 प्रिया ( स्त्री० )-पत्नी, भार्या,  
 दलायची, गदिरा, घात, घाता ।  
 प्रियल ( पु० )-पुतविशेष, पोपलवृक्ष ।  
 प्रियोदिन ( वि० )-बड़ा हुआ, प्रिय  
 वाक्य, जाटुवाक्य ।

प्री (९ व०)-तृप्त होना, प्रसन्न होना,  
 इच्छा, चाहना, कान्ति ।  
 प्री ( स्त्री० )-प्रथमा विभक्ति का  
 बोधक । [प्रसन्न हुआ ।  
 प्रीति ( वि० )-पुराना, पुरातन, प्रीत,  
 प्रीति ( न० )-तृप्त करना, तर्पण,  
 पूरा करना, रक्षा करना ।  
 प्रीत ( वि० )-प्रसन्न हुआ, प्रीतियुक्त,  
 प्रमुदित, हृष्ट ।  
 प्रीति ( स्त्री० )-तृप्ति, प्रेम, सुधी,  
 हर्ष, २९ योगों में से दूसरा ।  
 प्रीतिश्रुषा ( स्त्री० )-उषा नाम्नी  
 अनिरुद्ध की पत्नी । वि०-  
 प्रीतियुक्त ।  
 प्रीतिदत्त ( न० )-प्रेम से दी हुई वस्तु ।  
 प्रीतिभोज्य ( वि० )-प्यार से खाने  
 योग्य अन्नादि ।  
 प्रु (१आ०)-सरकना, खिचड़ना, सर्पण ।  
 प्रुट् (१आ०)-रगड़ना, मर्दन करना,  
 मलना ।  
 प्रुप् ( १प० )-जलाना, मस्न करना ।  
 ( ९ प० )-सौंघना, घूरा करना,  
 भरना, स्नेह करना ।  
 प्रुष्ट ( वि० )-जला हुआ, दग्ध, गला  
 हुआ, सड़ा हुआ ।  
 प्रुप्प ( पु० )-मृष, अलु, गोमन ।  
 प्रुप्ता ( स्त्री० )-जल की विस्तृ,  
 जलकला ।  
 प्रेक्षण ( न० )-नेत्र, आख, दर्शन ।  
 प्रेक्षणकृत् ( पु० )-आंख का मोलक ।  
 प्रेक्षा (स्त्री०)-अच्छे प्रकार से देखना,

नास्त्वैतन्, पर्यालोचना, शोभा, युद्धि  
शाखा, नृत्य का देखना ।  
प्रेतावत् ( वि० )-सोच कर कार्य  
करने वाला, समीक्ष्यकर्ता ।  
प्रेक्षा (स्त्री०)-छोछा, झूठा, पर्यटन,  
चूना, अश्व की गति, नृत्य,  
नाच, युद्धविशेष ।  
प्रेक्षित (वि०)-कांपा हुआ, कम्पित ।  
प्रेक्षाल [मदन्त] ( १० प० )-झूलता,  
दोला पर चढ़ना । [कम्पन ।  
प्रेक्षोलत ( न० )-झूठा, कांपना,  
प्रेत ( पु० )-नरकस्थ प्राणी, नारकी  
जीव, पिशाचभेद, स्थूलशरीर  
के भस्म हुए परायात वतपक्ष देह ।  
वि०-मृत, मरा हुआ ।  
प्रेतकर्म [ नृ ] ( न० )-मृतगनुष्य का  
दाह से लेकर सपिण्डीकरण तक  
का कर्म ।  
प्रेतगृह (न०)-श्मशान, मरपट ।  
प्रेततर्पण (न०)-गरण से लेकर सपि-  
ण्डीकरण तक प्रेतशब्दोच्चारण-  
पूर्वक दिया हुआ जलदान ।  
प्रेतदेह (स्त्री०)-प्रेत का शरीर,  
मृतदेह ।  
प्रेतमदी (अस्त्री०)-प्रेतों के तरने योग्य  
भद्दे, चैतरणी ।  
प्रेतपट्ट ( पु० )-मृत्यु के समय का  
बाजरा, मरखकाल में यादनीय  
वाद्यविशेष ।  
प्रेतपति (पु०)-प्रेतों का पति, यमराज ।  
प्रेतपिण्ड ( पु० )-गरण के अनन्तर  
सपिण्डीकरणतक प्रेत के लिये

पुद्गल पिण्डाकार अन्न ।  
प्रेतपुर (पु०)-यमपुरी, यमालय ।  
प्रेतवन (न०)-श्मशान, चितास्थान ।  
प्रेतशिला (स्त्री०)-बड़ शिला जिस-  
पर गया में मरों के उद्देश्य से  
पिण्डदान किया जाता है ।  
प्रेतब्राह्म (न०)-यह ब्राह्म जो प्रेत के  
उद्देश्य से किया जाय ।  
प्रेता (स्त्री०)-मृता स्त्री, मरी हुई भीरल ।  
प्रेत्य (ज०)-दूसरा लोक, लोकान्तर,  
अमुत्र, मरकर ।  
प्रेम [ नृ ] (न०)-स्नेह, प्रियता, प्यार,  
हसीठहा [ जल ।  
प्रेमपातन (न०)-रोयना, रोदन, नेत्र-  
प्रेम [ नृ ] (पु०)-स्नेह, इन्द्र, पवन ।  
प्रेमी [ नृ ] (वि०)-स्नेह करने वाला,  
प्रेमयुक्त । [ स्त्री ।  
प्रेमसी (स्त्री०)-प्रियतमा नारी, प्यारी  
प्रेमान [ नृ ] (पु०)-बहुत प्यारा, पति,  
कान्त ।  
प्रेरण (न०)-भेजना, निकट भेषकादि  
को काम में लगाना, प्रेषण ।  
प्रेरित (वि०)-भेजा हुआ, प्रेषित ।  
प्रेर्या [ नृ ] (पु०)-समुद्र, दरिया ।  
प्रेर्यते (स्त्री०)-नदी, दरिया ।  
प्रेप् ( १ प० )-माना, गणन करना ।  
प्रेष (पु०)-भेजना, प्रेषण, पीडा, डपटा ।  
प्रेषण (न०)-प्रेरण, भेजना ।  
प्रेषित ( वि० )-भेजा हुआ, स्थापन  
किया हुआ, प्रेषित ।  
प्रेष्ठ (वि०)-बहुत प्यारा, अतिशय प्रिय  
प्रेष्ठा (स्त्री०)=प्रेमसी ।

प्रोद्य(वि०)-भेजने योग्य, दास, सेवक ।  
 प्रैप'(पु०)-दास, नौकर । न०-दास का  
 फर्म, सेवाकर्म । [भेजना ।  
 प्रैप्य ( पु० )-मलना, मर्दन, उन्माद,  
 प्रोक्त (वि०)-कथित, कहा हुआ ।  
 प्रोक्षण ( न० )-सींचना, छिड़कना,  
 मारना, हिंसा करना, बध ।  
 प्रोलिन(वि०)-सिक्त, छिड़का हुआ,  
 निहत, मारा हुआ ।  
 प्रोजासन(न०)-मारना, हिंसा करना ।  
 प्रोजिक्त(वि०)-त्यक्त, त्यागा हुआ ।  
 प्रोऊन(न०)-साफ़ करना, पोखना,  
 प्रयत्न ।  
 प्रोयठ(पु०)-पीकदान, घीबनपात्र ।  
 प्रीत ( वि० )-गुंघा हुआ, खचित,  
 गुम्फित, स्मृत, सिपां हुआ ।  
 न०-पक्ष ।  
 प्रोत्थादन(न०)-उन्न, उठाता ।  
 प्रोत्कुल(वि०)-गिला हुआ, विकसित  
 प्रोत्पाद ( पु० )-कार्यसम्पादन में  
 अल्पन्त उत्पाद ।  
 प्रोप(स्त्री०)-पोड़े की नाक, जखन-  
 नामिका, भूकर की नाक, धोती,  
 स्त्री का गर्भ, गर्त, गढ़ा, जखन  
 का मुस । वि०-पथिक, पान्य,  
 दयापित ।  
 प्रोप(पु०)-मन्नाप, बट ।  
 प्रोपित(वि०)-विदेश में गया हुआ,  
 परदेशी, प्रवासगत ।  
 प्रोपिमासंका(स्त्री०)-वह स्त्री जिस  
 का पति परदेश में गया हो ।  
 प्रोष्ट(पु०)-मत्स्यभेद, जलपदविशेष, गो,

प्रोष्टपद (पु०)-भाद्रपद नामक मास,  
 नक्षत्रविशेष । वि०-गो के तुल्य  
 पद्युक्त । [नक्षत्र ।  
 प्रोष्टपदा(स्त्री०)-पूर्वाभाद्रपद नामक  
 प्रोष्टपदी ( स्त्री० )-भाद्रपदमास की  
 पूर्णिमा ।  
 प्रोष्टी(स्त्री०)-मत्स्यभेद, शंफरी ।  
 प्रोष्ट(पु०)-हस्ती का पांख, हाथी के  
 पांख की गांठ । वि०-तर्क, निपुण ।  
 प्रौढ(वि०)-बढ़ा हुआ, बहिर्गत, तरुण,  
 परिश्रमी, निपुण ।  
 प्रौढपाद(पु०)-आसन के ऊपर आरो-  
 पित पांख वाला पुरुष, किसी  
 वस्त्रादि से कनर, जघा और  
 पुटनों के बन्धनपूर्वक बैठा हुआ  
 पुरुष ।  
 प्रौढा (स्त्री०)-नामिका भेद, ५५ वर्ष  
 की अवस्था वाली स्त्री ।  
 प्रीदि(स्त्री०)-ताकृत, सामर्थ्य, प्रग-  
 लभता, लक्ष्य ।  
 प्रीण(वि०)-चतुर, निपुण ।  
 प्रलत्(१ अ०)-भक्षण करना, खागा ।  
 प्रलत् (पु०)-वृक्षविशेष, पाकुड़ नामक  
 वृक्ष । [गंत एक द्वीप ।  
 प्रलत्द्वीप(पु०)-सात द्वीपों के जन्त-  
 प्रलत् (१ अ०)-आना, गमन करना,  
 उछलना, कूदना ।  
 प्रलत् ( पु० )-प्रलम्ब, कूदना, गेंदक,  
 चबहाल, वातर, गेंदा, जलकाक,  
 पाकड़ वृक्ष, जल के प्रतिभात्र,  
 वृक्षविशेष, जल, जलमुग्धा । न०-  
 नागरगोधा, खस । वि०-कूद कर  
 चलने वाला ।

प्लवक ( पु० )—खड्ग की धार आदि पर नाचने वाला पुष्प, उवपच, चण्डाल ।

प्लवग ( पु० )—वानर, वन्दर, मेंढक, सूर्य का सारथि, शिरीषवृक्ष ।

प्लवङ्ग ( पु० )—वानर, मृग, प्लव नामक वृक्ष । [ कूटकर चलने वाला ।

प्लवङ्गम ( पु० )—वानर, वन्दर । वि०—प्लवग ( वि० )—ऊन से नीचे प्रदेश वाली भूमि, प्रवण ।

प्लावन ( न० )—द्रव वस्तु का चारों तरफ़ या ऊपर को जाना, उफ़ान आना, स्नान करना, बहना, बाढ़ आना ।

प्लावित ( वि० )—गलादि में डूबा हुआ, निमज्जित, धहाया हुआ, गीला किया गया ।

प्लिह् ( १ प० )—आना, गमन करना । प्लीहा ( स्त्री० )—तिरली नामक रोग, यामकुलि के पास में बढ़ा हुआ मांस का टुकड़ा ।

प्लीहा [ नृ ] ( पु० )—पूर्वघट ।

प्लीहारि ( पु० )—मशरवत् वृक्ष ।

प्ल ( १ भा० )—उड़ल कर चलना, सरफना ।

प्लुत ( न० )—तिरछा जागा, झपट कर चलना, अश्व की गतिविशेष ।

पु०—प्रमात्रिक वषं घषा—घोश्म् ।

वि०—उड़लं कर चलने वाला, निकटिहका हुआ, ठप्राप्त ।

प्लुष् ( ४ प० )—जलाना, भस्म करना ।

प्लुट ( वि० )—दाघ, जला हुआ ।

प्लोप ( पु० )—दाढ़, गमी, सन्ताप ।

प्ला ( २ प० )—खाना, भक्षण करना ।

प्लात ( वि० )—भक्षित, खाया हुआ ।

प्लान ( न० )—भोजन, साध्यपदार्थ, खाना ।

## फ़

फ़—पयर्ग का दूसरा अक्षर । न०—शुक्र कयन, वषणं वचन, भिन्या भाषण, फूत्कार, फुंकार । पु०—फ़फ़ा वायु, शीर का वायु, जून्साओं का जाना, यवसाधन, फनलाभ, संज्ञाविशेष ।

फ़ळ् ( १ प० )—कुत्सित व्यवहार, शनैः२ पलना, मन्दगमन, गलती में प्रयोग करना ।

फ़ळिका ( स्त्री० )—कुठपयदार, गलत असल, तत्त्व के निर्णयार्थ पूर्व-पक्ष, मिट्ट करने योग्य तर्क, न्याय-विषयक ठपारूपा ।

फ़ट् ( न० )—तन्त्रशास्त्र में कहा गया नामक शस्त्र, अर्घ्यपात्र का प्रता-सन, अर्घ्य जल द्वारा पूजा की सामग्री के अभ्युत्थान आदि में इस का प्रयोग किया जाता है । वि०—विगीर्ण आदि ।

फ़ट ( पु० )—चर्प का फण ।

फ़टा ( स्त्री० )—फणा, दम्भ, पूत, कितव ।

फ़फू ( १ प० )—शनायास उत्पन्न होना, यिना परिश्रम के उपजना । ( १ प० सक० )—गमन करना, जाना ।

फ़ण ( पु० )—घाँप का फेला हुआ सततक, सपं का फण ।

फ़ण [ ना ] कर ( पु० )—सपं, सपं, भुजङ्ग ।

कण [ण] धर (पु०)-साय, सयं ।  
 कणभृत्-वान् (पु०)-पूर्ववत् । [कण ।  
 कणा (स्त्री०)-सयं की कटा, साय का  
 कणिकेसर (न०)-नायकेसर ।  
 कणिकर (न०)-विवाहादि कार्य में  
 शुभाशुभ के ज्ञानार्थ '२३ नक्षत्रों  
 का समायोजन करने वाला ।  
 कणितस्वग (पु०)-विष्णु का वाचक ।  
 कणिमय (पु०)-वायु, पवन ।  
 कणिकेन (पु०)-अद्विकेन, अकीन ।  
 कणी [न] (पु०)-सयं, साय, भुक्त ।  
 कणीयस्वर (पु०)-सयं का स्वामी,  
 जगन्त ।  
 कण्ड (पु०)-जठर, पेट, च्दर ।  
 कणकारी [न] (पु०)-प्रसिद्ध ।  
 कर्कटिका (स्त्री०)-झूठी, पाहुका ।  
 कल् (१ म०)-तोड़ना, भेदन करना,  
 फाड़ना, कल का स्वरूप होना ।  
 कल (न०)-युक्तादि का कल, लाभ, डाल,  
 बाण का अगला हिस्सा, त्रिकला  
 [द्वि, वहेड़ा, आयला], प्रयोजन,  
 लाभकल, दान, काम, उद्देश्य ।  
 पु०-कुटज वा वृक्ष ।  
 कल (न०)-चर्म, दाढ़ । पु० अस्त्रियों  
 वा गृह, नायकेसर, घोड़ी का  
 पट्टा । [दाय में देखा हो ।  
 कलकपालि (पु०)-यह मुख्य गिन के  
 कलकाम (दि०)-कर्मकल की इच्छा  
 करने वाला ।  
 कलकीपत्र (पु०)-अष्टकोप, पुष्प ।  
 पद्यपटि (वि०)-ममयानुक्त पद्य  
 धारण करने वाला [वृत्त] ।

कलवाही [न] (पु०)-वृक्ष, पेड़ । वि०-  
 कल ग्रहण करने वाला ।  
 कलत्रिक (न०)-त्रिकला [द्वि, वहेड़ा  
 और आयला] ।  
 कलद (पु०)-वृक्ष । वि०-कल देने वाला ।  
 कलपाकान्ता (स्त्री०)-जोषि, धान्य  
 कदली आदि । [स्नान ।  
 कलभूनि (स्त्री०)-कर्मकल भोगने का  
 कलवान् [वृत्त] (पु०)-कल वाला वृक्ष,  
 कलपुष्प वृक्ष । [पनर, करील ।  
 कलपुष्प (पु०)-कलप्रधान वृक्ष,  
 कलपुष्पि (स्त्री०)-कर्मकल का ग्रहण ।  
 कलप्रेष्ठ (पु०)-आमृवृक्ष, आम का पेड़ ।  
 कला (स्त्री०)-नाद का वृत्त, धर्मीवृत्त ।  
 कलादन (पु०)-शुक्ल, तोता पक्षी ।  
 वि०-कल खाने वाला ।  
 कलान्त (पु०)-बाध, वध । [कलापुष्पि ।  
 कलावृक्ष (पु०)-कल की अशिलाया,  
 कलिका (स्त्री०)-बाण का अगला  
 हिस्सा ।  
 कलिगी (स्त्री०)-प्रियङ्गु का वृक्ष ।  
 कली [न] (त्रि०)-कल वाले वृक्षादि ।  
 कलेष [त्रि] द्वि (पु०)-कलपुष्पवृक्ष,  
 योग्य समय । [लाभ ।  
 कलोदय (पु०)-कलोत्पत्ति, सयं, स्वर्ग-  
 फल (वि०)-साररहित, दुःख, निर-  
 र्थक, साधारण, मनोरथ, सुन्दर ।  
 स्त्री०-गयातीर्थस्य एक नदी ।  
 कलुगुदा (स्त्री०)-गया नदी ।  
 कलुगुन (पु०)-अर्जुन, काशगुन का  
 नाम । वि०-कलुगुनी नक्षत्र में  
 ग्रहण हुआ ।

फलगुनी (स्त्री०)—पूर्वफलगुनी उत्तर-  
फलगुनी नामक नक्षत्र ।

फलगूत्सव(पु०)—दोलमात्रा, गोविन्द  
के उपलक्ष्य में फालगुन मास की  
पूर्णिमा के दिन करने योग्य एक  
उत्सव, होलिकोत्सव ।

फल्य(न०)—पुष्प, फूल, कुसुम ।

फलकल(पु०)—छाज की हवा, सूर्यवायु ।

फा(पु०)—सन्ताप, कष्ट, व्यर्थभाषण ।

फाणि(पु०)—गुड़, चीरा, दही मिले  
ससू, करमन, लिचड़ी ।

फाणित(न०)—राय, केजी, कच्चीसांड ।

फायट(वि०)—भिना परिश्रम के बना  
हुआ, बनायासकृत, क्लृप्त ।

फाल(न०)—फाली, कुश, कुशिक,  
पृथ्वी फाड़ने के लिये सांगलक्ष्य  
छीड़ । पु०—शिव, बलदेव । वि०—  
कपास से बना हुआ वस्त्र ।

फालकूट(वि०)—हल में लगे हुए  
छीड़ से जीती हुई भूमि आदि,  
वह प्रदेश जिस में हल खलाया  
गया हो ।

फालगुन(पु०)—अर्जुन, अर्जुन नामक  
वृक्ष, अश्विनी से ११वां और  
१२वां नक्षत्र, चैत्र से १२वां मास ।

फालगुनानुज (प०)—वसन्तऋतु,  
वसन्तकाल ।

फालगुनिक(पु०)—फालगुन संघक मास ।

फालगुनी(स्त्री०)—फालगुन मास की  
पूर्णिमा । [ वचन ।

फि(पु०)—पाप, क्रीच, गुम्हा, निष्फल

फिङ्गक(पु०)—पिड़ा, चटक, चिड़िया  
नामक पक्षिविशेष ।

फिङ्ग (पु०)—अपने नाम से प्रसिद्ध  
म्लेच्छदेश, शिशुनमन्थनी गर्भ  
का एक रोगविशेष जो फिङ्गी  
या फिरगिणी के यन्त्र से होता है ।

फिङ्गरोटी(स्त्री०)—हवलरोटी, विप-  
कुट, वह रोटी जो गेहूं के दूध  
की गोलाकार और मोटी बना  
कर तन्दूर के पाकद्वारा बनाई  
जाती है ।

फिरङ्गिणी (स्त्री०)—फिरगदेश में  
उत्पन्न हुई नाड़ी, फिरगिन ।

फिरङ्गी[न] (पु०)—वह पुरुष जो फिरग  
देश में उत्पन्न हुआ हो ।

फु(पु०)—मन्त्रक, मन्त्र की उच्चारण  
करके फुटकार शब्द करना अपांत  
फुंकना, तुच्छ वाक्य ।

फुट(वि०)—स्फुटित, फूटा हुआ, खिल  
हुआ, प्रस्फुटित, सांप का कण ।

फु[फू]ल(न०)—फुटकार शब्द करना,  
फूंक मारना, तुच्छभाषण ।

फुत्कर(पु०)—अग्नि, आग ।

फुत्कार(पु०)—फुत्कार शब्द करना,  
फुत्करण ।

फुत्फुत्(पु०)—कैफड़ा, वह आशय जो  
वामपाश्वर्क में हृदय की नाड़ी से  
लग्न हुआ और सदान वायु का  
आधार है । [होना ।

फुत्त (१ प०)—खिलना, विकसित

फुत्त(वि०)—खिला हुआ । पु०—फूल ।

फुत्तरीक(पु०)—सर्प, सांप, देशविशेष ।

फण (पु०)—दूध वा लाल के भाग,  
बुलबुला, समुद्रभाग, हिम, गुड़  
का त्रिकार ।



फेणप ( पु० )—मुनिविशेष, वृक्षादि से स्वयं गिरे हुए फलों से आजीवन करने वाला मुनि । वि०—भागो का पान करने वाला ।

फेणो (स्त्री०)—राव, गुह्यिकार ।

फेन ( पु० )=फेण ।

फेनक ( पु० )—पिष्टकविशेष, बड़े ।

फेनका (स्त्री०)—जल में पके चावली का चूर्ण ।

फेनल (वि०)—भाग वाला, बुद्धबुद्धयुक्त ।

फेनवान् [वत्] ( वि० )—पूर्ववत् ।

फेनाय ( न० )—बुद्बुद्, बुलबुला ।

फेनाशनि ( पु० )—इन्द्र, देवराज ।

फेनिल ( पु० )—बदरीवृक्ष, बेरी का पेड़ । न०—बदरीफल, बेरी ।

फेर [गड] ( पु० )—शृगाल, गीदड़ ।

फेरव ( पु० )—शृगाल, राक्षस । वि०—भूत, हिंसा करने वाला ।

फेरु ( पु० )—गीदड़, शृगाल ।

फेल (न०)—खाकर छोड़ा हुआ अन्न, उच्छिष्ट, भुक्तचमुष्मिन्त ।

फेनक ( पु० )—पूर्ववत् ।

फेला—लिका ( स्त्री० )—पूर्ववत् ।

फल—खी ( स्त्री० )—पूर्ववत् ।

## व

व—पदार्थ का स्वीयवर्ण । पु०—वरुण, घट, सर्वत, इगारा, मूचना, यपन, तुनगा, वागम, पीना, तन्नुभो वा फेलाता, जल का वाचक, गमन । [ वहुल, वहुत ही ।

वदिष्ट ( वि० )—बहुत, अतिशय

चंहीयान् [त्] ( वि० )—पूर्ववत् ।

व [व] क (पु०)—वगुला नामक पत्नी, एक दैत्य जिसे भीमसेन ने मारा था, वृक्षविशेष, एक अगुर जिस का पंच श्रीकृष्ण जी ने किया था ।

व [व] कजित (पु०)—भीमसेन, श्रीकृष्णचन्द्र ।

व [व] कमिसूदन ( पु० )—पूर्ववत् ।

व [व] कपञ्चक ( न० )—कार्तिकमुक्ता एकादशीसे कार्तिकी पूर्णिमा तक पांच तिथि [ इस विषय में पीराणिक गाथा है कि इन पांच दिनों में श्रीसलजलवाहिनी नदियों में स्नान करना विशेषपुण्य लाभकर है और इन पांच तिथियों में वगुला मत्स्यादि पक्षियों का नांस भक्षण नहीं करता, अतएव इन तिथियों का नाम 'कपञ्चक' है इत्यादि ] ।

व [व] कवृत्ति ( पु० )—वगुला के लुप्त वत्तार करने वाला कपटी पुरुष, स्वार्थसाधक, मिथ्याविनीत ।

व [व] ववा ( स्त्री० )—घोड़ी, चोटकी, अश्विनी नक्षत्र, दासी, स्त्रीविशेष, नदीभेद, तीर्थ का वाचक ।

व [व] ववागि ( पु० )—समुद्र में रहने वाला अग्नि, समुद्रस्थ अग्नि, शिवनिर्मित घोड़ी के मुख की अग्नि, सोह्यागि ।

व [व] ववागल ( पु० )—पूर्ववत् ।

व [व] ववागुती ( पु० द्वि० )—अश्विनी-पुमार, स्वर्गवेद्य ।

वदिष्ट ( न० )—मत्स्य धीधने के लिये

लंहे का घनाया, तिरछा काटा,  
नरूपवेधन ।

यहिर्गो ( स्त्री० )—पूर्ववत् ।

यण ( पु० )—घोसना, आवाज करना ।

यण ( पु० )—शब्द, आवाज, ध्वनि ।

य [ य ] णिक् [ ङ् ] ( स्त्री० )—व्यवहार,  
वाणिज्य, लेना देना । पु०—व्यापारी ।

य [ य ] णिग्रन्थु ( पु० )—नीली का  
वृक्ष, नीलगन्ध ।

यणिमाय ( पु० )—व्यापार, वैश्यत्व,  
क्रयविक्रय करना, लेना देना ।

य [ य ] णिन ( पु० )—वैश्य, यणिक,  
यनिया । [ इरीद फरीद करना ।

य [ य ] णिज्य ( पु० )—याणिज्य, व्यापार,  
अणिज्या ( स्त्री० )—पूर्ववत् ।

यद् ( १ प० )—घोसना, भाषण करना,  
स्थिर होना ।

य [ य ] द्र ( न० )—घेर का फल, कपास  
का दल, कपास का फल । पु०—  
घेर का दल ।

यदरि—री ( स्त्री० )—घेर का पेड़, कपास ।

यदरिकाश्रम ( अस्त्री० )—अपने नाम  
से प्रसिद्ध एक तीर्थ जो हिमालय  
पर्वत के प्रदेश में योगनगर के  
समीप और जलकनन्दा नदी  
के पश्चिम तट पर स्थित है जो  
कि भगवान् व्यास जी का प्रसिद्ध  
आश्रम है । [ यदरीशैल भी इसी  
का नामान्तर है ] ।

यद् ( वि० )—यंघा हुआ, अन्धनयुक्त,  
निगदित, यन्त्रित, खराब ।

यद्गुद ( न० )—एक नदर का रोग जिस

में मल का अवरोध हो जाता  
और कष्ट से पीड़ा, २ उत्तरता है ।

यद्गुष्टि ( वि० )—दृढगुष्टि वाला  
पुरुष, कृपण, कजूस, सून, लोभी ।

यद्गुल ( वि० )—मज्जुत जड़ वाला,  
उखाड़ने में न आसकने वाला,  
दृढगुल ।

यद्गुल ( वि० )—शिला के घन्घन से  
युक्त, जिस की चोटी घंघी हुई हो,

यद् ( १० प० )—यांघना, यशमें करना ।  
( १ जा० )—निन्दा करना ।

यच ( पु० )—भरना, कलक करना, पर-  
माणवियोगानुरूप हिंसात्मक कर्म  
करना ।

यधिर ( वि० )—सुनने की शक्ति से  
रहित, यहिरा, अधश्रोत्रियशून्य ।

य [ य ] पू ( स्त्री० )—नारी, स्त्री, पुत्रवधू,  
माया, नयोदा, नयोगविद्याहिता स्त्री

यधूजन ( पु० )—योधित, स्त्रीजन, नारीमात्रा

यधूतयम ( न० )—करोखा, गधाज,  
धातायन ।

यधूति—टी ( स्त्री० )—चोड़ी चय की  
औरत, अल्पवयस्क नारी,  
पुत्र की पत्नी ।

यध्य ( वि० )—नारने के योग्य, हिंसनीय ।

यध्यभूमि ( स्त्री० )—नारने के योग्य  
स्थान, यध्यस्थान, श्मशान ।

यद्र ( न० )—सीसा, सीसक ।

यद्रो ( स्त्री० )—यद्रों की रस्सी,  
पार्श्वज्जु, तसमा ।

यद्र ( जा० )—गांभना, याचना करना ।

यन्ध ( पु० )—मानसी पीड़ा, अन्धन,

देह, गति का रोकना, अणुशुद्धि के विश्वाग के लिये रखी हुई वस्तु, सयत्न, योगसाधन के हठादि बन्धविशेष ।

बन्धक (पु०)-विनिमय, अदलबदल, एक वस्तु देकर तत्सदृश दूसरी लेना ।  
बन्धकी (स्त्री०)-उपभिवारिणी, असती, कुलटा स्त्री, बधनाथ औरत ।

बन्धन (न०)-बांधने का साधन, रज्जु, मिगह[बेड़ी]आदि से बाधना, हिंसा करना, मारना, बध, कारागार, जेलखाना । वि०-बांधने वाला ।

बन्धनवेश्म [न्र] (न०)-जेलखाना, कारागार, कैदखाना ।

बन्धनालय (पु०)-पूर्वघत् ।

बन्धस्तम्भ (पु०)-हाथी के बांधने का चम्भ, आलान, गजबन्धन ।

बन्धित्र (न०)-कामदेव, कन्दर्प, पमड़े का बीजना ।

बन्धु (पु०)-स्वगोत्र का पुरुष, बान्धव, चाति, मामा का पुत्र आदि मित्र, माता, पिता, भ्राता, एतविशेष ।

बन्धु-जीव (पु०)-बन्धु नामक वृक्ष ।

बन्धुता (स्त्री०)-बन्धुपन, बन्धुभावा । गराह, बन्धुनमूह ।

बन्धुदत्त (न०)-स्त्रीधन, यह स्त्रीधन का धिक्काह से पूर्ण बन्धादशा में माता पिता द्वारा दिया गया हो ।

बन्धु[न०]-मुद्द, बधबन्धन । पु०-

स्त्रीचिन्ह, धहिरा, हसपक्षी, तिलचूना, तिलकलक, वगुला, पत्रिमात्र, अयम नामक औषध, बन्धुरु वृक्ष । वि०-नम्र, मनोहर, सुन्दर, रमणीय, कृपा और नीचा, सत्तू ।

बन्धुरा(स्त्री०)-वेश्या, चारांगना ।

बन्धुल (पु०)-उपभिवारिणी स्त्री का पुत्र, कुलटासुत, बन्धुकवृक्ष । वि०-मनोहर, नम्र, नत । [विशेष ।

बन्धुक(पु०)-दोपहरिया नामक वृक्ष-

बन्धूर (पु०)-क्षिद्र, विधर, मुरास । वि०-रम्य, सुन्दर, नम्र, नत ।

बन्ध्य(वि०)-अस्तु के समय में भी फल न आनेवाला वृक्ष, फलशून्य, निष्कलवृक्ष, बांधने योग्य, बन्धनीय ।

बन्ध्या(स्त्री०)-बाक औरत, वह स्त्री जिस के सन्तान न होती हो, अग्रजस्त्री ।

बन्ध्याककोटकी (स्त्री०)-यह औषध विशेष जिस के सेवन से बन्ध्या स्त्रियों के गर्भस्थिति हो जाती है, बाकककोड़ा, पुत्रदा ।

ब[ध]भू(१ पु०)-ज्ञाना, मनन करना ।

बधवी(स्त्री०)-दुर्गा, शिवपत्नी ।

बधि (पु०)-वज्र, इन्द्रधनुस्त्र । वि०-धारण और पोषण करने वाला ।

बधु (पु०)-शिव, विष्णु, शक्ति, मकुल, मखला, विनाल, यष्टा, मुनिभेद, एक देश, कपिल रण, वीर्य वण, योगपाद या पुत्र, यथातिराज

का पात्र जो ब्रह्म का पुत्र था ।  
वि०-पीले रंग वाला ।

बभ्रुवाहन(पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध  
मणिपुर का राजा जो अजुन की  
चित्राङ्गदाभायाँमें उत्पन्न हुआ था ।

घर( न० )-केसर, आर्द्रक, लालता,  
दामाद, देवता आदि से भांगने  
योग्य जमिलपित वस्तु, स्त्री-  
कार करना । पु०-मिश्र, घृत ।

ययं(१ प०)-गमन करना, जाना ।

यवंद(पु०)-राजदण्ड ।

यवंटी( स्त्री० )-वेश्या, अश्ली स्त्री,  
प्रोहिनेद ।

यहं (१ जा०)-दान करना, मारना,  
स्तुति करना, सम्भाषण करना ।

यहं (न०)-मीर का पिछड़, मयूर का  
पंख, कुटुम्ब, परिवार ।

यलु (१ न० )-हिंसा करना, मारना,  
जीना, निरूपण करना, देखना ।

यल (न०)-सेनासमूह, मोटापन, स्फूर्त-  
त्व, नागर्य, शक्ति, देह, धन, रक्त-  
वर्ण, वीर्य । पु०-उलराम, वरुण  
का वृक्ष, दैत्यविशेष, काक ।  
वि०-यलपुक्त ।

य[य] लक्ष (पु०)-श्वेतवर्ण, मङ्गेदरंग ।  
वि०-श्वेतवर्ण वाला ।

यलज(न०)-मुटु, संग्राम, क्षेत्र, नगर-  
द्वार, धान्यसमूह । वि०-यल से  
वृत्तवन्त ।

यलद (पु०)-जीवक नामक औषध-  
विशेष, पीष्टिक कर्म का जगन्नाथ  
प्रोभाग्नि, यषम, बैल । वि०-यल  
देने वाला ।

बलदीनता ( स्त्री० )-चित्त की चव-  
हाट, रवाना, इंपतय, हानि ।

बलदेव (पु०)-बलराम, श्रीकृष्णजी के  
व्येष्ट भ्राता ।

बलप्रभू ( स्त्री० )-रोहिणी, बलदेव  
जी की माता ।

बलभद्र (पु० )-बलदेव, पर्वतविशेष ।

बलराम ( पु० )-बलदेव, छलधर ।

बलवत् ( ज० )-जतिशय, बहुत ।

वि०-यलपुक्त ।

बलवान् [यत्] ( वि० )-बल वाला,  
बलिष्ठ, योग्यवान् ।

बलविन्पास ( पु० )-सेना की रचना-  
विशेष, व्यूह, शत्रु निषेका जेदन  
न कर सके तब प्रकार से सेना  
का खड़ा करना । [धनी ।

बलशाली[न्](वि०)-बलपुक्त, ताकतवर,

बलमूदन ( पु० )-इन्द्र, देवराज ।

[बलनिपूदन की भी यही अपेक्षा] ।

बलस्थिति ( स्त्री० )-शिविर, सेना  
के ठहराने का स्थान, छाया ।

बलहा [न्] (पु०)-इन्द्र, जल, बलवान् ।

वि०-शत्रु की सेना का नाश  
करने वाला ।

बला( स्त्री० )-खुरेटी नामक औषध-  
विशेष, एक अस्त्रविद्या जिसे से  
प्रभाव से लुधा और तृषाकन्य  
श्लेश नहीं होता जो विश्वामित्र  
जी ने श्रीरामचन्द्रजी की प्रदान  
की थी । [ पुराण का पुत्र ।

य [य] लाक ( पु० )-यकजातिविशेष,

य [य] लाका ( स्त्री० )-यकजाति,

घगलाओ की पक्ति, घकगणो,  
घ्वारी भायाँ, घणयिनी ।

घलाट ( पु० )-मूग, मुद्ग ।

घलात् (अ०)-हठ से, जिद से, जोरा-  
वरी, अकस्मात्, अचानक ।

घलात्कार (पु०)-हठ से करना, घल-  
पूर्वक करना, जोर से करना ।

घलानुक् (पु०)-घलदेव के छोटे भाई,  
श्रीकृष्ण । [ का वृत्त ।

घलाय ( पु० )-घल का स्थान, वरुण  
घलाराति(पु०)-इन्द्र ।

घलाश(पु०)-कफनामक दोष, घलग्न ।

घलासम(पु०)-बुद्धदेव, शिव ।

घ[व]लाहक(पु०) मेघ, बादल, नागर  
नीचा, एक दैत्य, पञ्चतविशेष,  
नागभेद, श्रीकृष्ण के चार भ्रात्रो  
में से एक, एक नद का घाचक ।

घलि(पु०)-कर टैक्स, राजप्राप्त भाग,  
उपहार, भेंट, पूजासामग्री पाच

यज्ञों के अन्तर्गत भूतयज्ञ, विरो-  
धन नागक दैत्य का पुत्र, बृहा-

वस्था के कारण त्वचा का ढोला-  
पन, गुदा के भीतर अङ्गुर के

स्वरूप का नासपिण्ड, उदर का  
अवयव ।

घ [व] लि-वघी[न्] ( पु० )-विष्णु,  
वामनावतार का दोषक । [दैत्य ।

घ[व] लिन्दग(पु०)-धाणासुरनामक  
घ[व] लिपुष्ट(पु०)-काय, कीमा ।

घ[व] लिभुक् [ ज् ] (पु०)-पूर्ववत् ।  
घ[व] लिमन्दिर (न०)-पाताल, नीचे  
का लोक, अधोलोक ।

घलि[ली] मुख(पु०)-वामर, चन्द्र ।

घलिष्ठ(पु०)-एक मुनि, ऊट, उष्ट्र ।  
वि०-घलघाटा, घलयुक्त ।

घ[व]लिसद्म(न०)-पाताल, अधोलोक  
घ[व]ली [न्] ( पु० )-घलदेव, वृष,

शूकर, ऊट, महिष, भैंसा, कर् ।  
वि०-घलवाटा, घलिष्ठ ।

घ[व] ली ( स्त्री० )-मुढापे से ढीली  
हुई त्वचा ।

घ[व]लीयान्[च्] (वि०)-अतिशय बड़  
ताला, जोरावर, प्रशस्तघलयुक्त ।

घलीवर्द्ध(पु०)-वृषभ, बैल ।  
वलय(न०)-शुक्र, वीर्य, मुख्य धातु ।

पु०-बुद्धभिक्षुक । वि०-घलकर्ता ।  
वल्या(स्त्री०)-खरैटी, अतिगला, कधी

वधक्य यिनी(स्त्री)-बहुत दिनों की  
ठगई गी, चिरप्रसूता गी ।

घ[व]ह् (१आ०)-बढना, वृद्धि होना ।  
बहु(वि०)-बहुत, अनेक, विपुल, प्रचुर ।

बहुक ( पु० )-पपीहा, ललकाक, पक्षि-  
विशेष ।

बहुकर(पु०)-ऊट, उष्ट्र । वि०-साफ  
करने वाला, सम्मार्जक, युहारी

लगाने वाला ।  
बहुकरी (स्त्री०)-युहारी, सम्मार्जनी,

साफ करने का साधन ।  
बहुगल्पदा (स्त्री०)-कस्तूरी नामक

सुगन्धित द्रव्य ।  
बहुगल्पवाक् [ च् ] ( वि० )-कुवाड़य

बालने वाला, कटुवादी ।  
बहुग्रन्थि(पु०)-झाक नामक ७२विशेष  
घात [ स ] (अ०)-बहुतों से, अनकों से ।

बहुतन्त्रि (वि०)-बहुत चीजा वाला,  
बहुतन्त्रिपुक्त ।

बहुतिथि (वि०)-बहुत संख्या वाला,  
अनेकसंख्यात, वह समय जिसमें  
बहुतशी तथियर्थी बीत गटे हों ।

बहुत्र (अ०)-बहुत समय में, बहुतों में ।

बहुत्व (न०)-बहुतपन, अनेकत्व ।

बहुत्वर्ष [व्] (पु०)-भोजपत्र का वृत्त ।

बहुत्वर्ष (पु०)-पूर्ववत् ।

बहुदुग्ध (पु०)-गोधूम, गेहूँ नामक अन्न ।

बहुदुग्धा ( स्त्री० )-बहुतसा दूध देने  
वाली गी, स्नुही का वृत्त ।

बहुवद (अ०)-बहुत प्रकार से, अनेक  
तरह से ।

बहुवार (न०)-बहु, कुडिग, इन्द्रगच्छ ।

बहुनाडिक (वि०)-अनेक नमी वाला,  
देह, शरीर । [ स्तम्भ ।

बहुनाडीक (वि०)-द्विपद, दिन, घन्टा,

बहुनाद (पु०)-जिधकी लड़ी आवाज  
हो, गङ्गा ।

बहुपटु (वि०)-अतिनिपुण, बहुत से  
कर्मों में दक्ष, कुछ कम चतुर ।

बहुपत्र ( न० )-अधक । पु०-स्पात्र,  
पलान्त्र । वि०-बहुत पत्रों वाला ।

बहुपत्रिका ( स्त्री० )-सेधी, भूमि-  
जांघडा, यही बताया ।

बहुपर्ण (पु०)-मलच्छद, मनोने का  
वृत्त । वि०-बहुपत्रपुक्त ।

बहुपार्श्व (पु०)-बहु का वृत्त, बटवृत्त ।

बहुपार्श्व (पु०)-बटवृत्त । वि०-अनेक  
पार्श्वों वाला । [ पूर्व वाला ।

बहुपुत्र (पु०)-मनोनेका वृत्त । वि०-बहु-

बहुपुत्र (पु०)-गृहर, चूबर, मूङ्ग का  
वृत्त । वि०-बहुपुत्रानवाला ।

बहुप्रतिष्ठ (पु०)-बहु व्यवहार को  
अनेक पद या विषयों की मुक्ती-  
शक्ति के पृथक्पत्रपुक्त हो । वि०-  
बहुप्रतिष्ठावाला ।

बहुप्रद (वि०)-बहुतां को देने, देना,  
बड़ा दानी, वदान्य, प्रदाता,  
पु०-शिव ।

बहुप्रसू ( स्त्री० )-बहुमन्ताम स्त्रिय  
करने वाली स्त्री, बहुप्रमथा ।

बहुपल (पु०)-विंह, घेर । वि०-बहुत  
पल वाला ।

बहुमधुरी ( स्त्री० )-मधुरी का वृत्त ।

बहुमल (पु०)-सीसा, भीषण । वि०-  
बहुत लल वाला ।

बहुभाग (पु०)-बोराडा, दुष्ट, बड़  
भाग जिस में चारों तरफ को  
रास्ता जाता हो । वि०-बहुपथ-  
पुक्त । [ अनेककथ ।

बहुमूर्ति ( वि० )-बहुत रूपवाला,

बहुमूल्य (वि०)-हीनता, बेमूल्य ।  
न०-बड़ी सोन, अपिच्छमूल्य ।

बहुरूप (वि०)-अनेक रूपों वाला,  
अनेक रंगों वाला । पु०-सूर्य,

बादल, विष्णु, शिव, विष्णु, शिव ।

बहुरोम (वि०)-बहुन वाला, बास्तू ।

पु०-मेह ।

बहुल (वि०)-घना, चौड़ा, विस्तृत,  
अतिशय, बहुत, अमरुप । पु०-

कल्पवृत्त । न०-सिद्धि । वि०-  
निच ।

बहुलम् (अ०)-अक्सर, अतिशयेन ।

बहुलता-त्वम्=अधिकता, घनता, असुरूप्यता ।

बहुला(स्त्री०)-इलायची, गी, भीलवृक्ष ।

बहुलीकृ (८ व०)-प्रकट करना, घोषित करना, बढाना ।

बहुलीकृत (वि०)-बहुित, प्रकटित ।

बहुलीभाष (पु०)-प्रकट होना ।

बहुलीभू (१ प०)-कैलना, बढना, प्रकट होना ।

बहुवचन ( न० )-ठपाकरण में २ से अधिक का योषक वचन ।

बहुवर्ण ( वि० )-बहुत रंगों वाला, अनेकरूप ।

बहुवारम् (अ०)-अक्सर, बहुत ।

बहुविक्रम (वि०)-अत्यन्त बलशाली, योद्धा ।

बहुविध (वि०)-अनेक रूपांतों वाला

बहुविध ( वि० )-अनेक प्रकार का, बहुरूप ।

बहुवीहि (वि०)निस में बहुत चावल

है । पु०-ठपाकरण में एक प्रसिद्ध

‘समार्थ’ अर्थात् जिस में अन्य पद

प्रधान होता है, जैसे-बहुवचन,

उप्यकरण इत्यादि ।

बहुभाष (वि०)-बहुत भाषाओं वाला

बहुभूत ( वि० )-परिहृत, विद्वान्,

येदोता । [ वाला ।

बहुसन्तति ( वि० )-बहुत सन्तान

बहु [ म्र ] (अ०)-बहुत, अतिशयेन,

वक्त्र । [ लगाना ।

बाह् ( १ भा० )-स्नान करना, गोते

बाह्य=बाह्य ।

याहीर(पु०)-नीकर, सेवक, भृत्य ।

बाह ( वि० )-मजबूत, स्थिर, अधिक,

बहुत ।

बाटम् (अ०)-हा, स्वीकारी, अच्छा,

बास्तव में, यकीनन, बहुत अच्छा ।

बा [ वा ] ण ( पु० )-तीर, गी का स्तन,

विरोचन का पुत्र, एक दैत्य, एक

प्रसिद्ध कवि जो हर्षवर्द्धनकी सभा

में रहता था । [ यह ।

बाणतूण(पु०)-सरकस, बाण देवता का

बाणमुक्ति ( स्त्री० )-तीर छोड़ना,

बाणमोक्षण ।

बाणवृष्टि(स्त्री०)-तीरों को बर्षा ।

बाणिज्य ( न० )-व्यवसाय, व्यापार ।

बा [ वा ] णी ( स्त्री० )-सुरस्वती,

वाक्यकी अधिष्ठात्री देवी, मौलना,

वाक्य, वस्त्रादि धुनने का काम ।

बादरायण(पु०)-वेदव्यास, पारंगत ।

बा [ वा ] ष् ( १ भा० )-रोकना, काट

उठाना, तकलीफ पाना ।

बा [ वा ] य ( पु० )-प्रतिबन्ध, रोक,

रुकावट, न्यायमत में वह पक्ष

जिस में साध्य का अभाव हो जैसे-

“ अग्नि शीतल है ” यहा पक्ष=

अग्नि में साध्य=शीतलत्व का

अभाव है । वि०-प्रतिबन्धक ।

बाधक ( वि० )-रोकने वाला, बाधा-

जनक । पु०-स्त्रियों का यह रोग

जो सन्तान की उत्पत्ति का अव-

रोधक है । [ निषेध ।

बाधा ( स्त्री० )-पीडा, ठपपा, दुख,

बाधित(वि०)-पीड़ित, बाधायुक्त ।  
 बाधिये(न०)-बहिरापन, कर्णकारोग ।  
 बाध्य (वि०)-बाधा देने योग्य, पीड़-  
 नीय, रोकने लायक, निवर्त्य ।  
 बान्यकिनेय ( वि० )-व्यभिचारिणी  
 स्त्री का पुत्र, कुलदासुत ।  
 बान्धव(पु०)-डुहद, छात्र, सम्बन्धी,  
 माता और पिता के पक्ष का,  
 मारुत आदि ।  
 बाहेंदोर(पु०)-रांग, आम की मुठली,  
 ब्रह्मसुत, अङ्कुर, अङ्कुश ।  
 बाल(वि०)-१६ वर्ष की अवस्था तक  
 का बालक, शिशु, बच्चा, अष्ट,  
 दूध । अस्त्री०-बाला नामक एक  
 गन्धद्रव्य । पु०-केश, घोड़े की  
 पूंछ, अश्वस्त, हस्ती की पूंछ,  
 नारिकेल, नारियल, पाँच वर्ष  
 का हाथी का पीला ।  
 बालक ( अस्त्री० )-गन्धद्रव्य । पु०-  
 शिशु, अश्व और हस्ती की पूंछ,  
 अङ्गुली, कंकण, डेरा ।  
 बालगमिणी ( स्त्री० )-प्रथममर्षिणी,  
 प्रथममर्षिणी ।  
 बालग्रह(पु०)-बालकों की काट पहुँ-  
 चाने वाला एक ग्रह वा रोगविशेष ।  
 बालचर्य ( पु० )-स्वामिकाधिकेय,  
 गुह । न०-बालचरित्र, बालक्रीडा ।  
 बालतन्त्र ( न० )-यह शास्त्र जिस  
 में बालकों की रक्षा का उपाय  
 वर्णित है ।  
 बालवृत्त ( न० )-नवीन चास, नूतन  
 तृण, शयन ।

बालधि (पु०)-केशों वाली पूंछ, वह  
 पूंछ जिस में बाल उभे हों ।

बालपाशपा(स्त्री०)-डेशनमूठ में मूषण  
 रूप में स्थित मणि ।

बालभोज्य(पु०)-वणक, चने । वि०-  
 बालकों के खाने योग्य ।

बालभूमिका (स्त्री०)-छोटी भूमिका,  
 छत्तुन्दर, गिरिका ।

बालव्यसन( न० )-बालों का बन्नाया  
 पंखा, चामर, चंवर ।

बालसूर्य( न० )-वैद्य नामक मणि ।  
 पु०-प्रातःकाल का सूर्य ।

बालहस्त(पु०)-पूँछ, बालधि, लान्जुल ।

बाला ( स्त्री० )-नारिकेल, नारियल,  
 इन्दी, अलंकारविशेष, एक गन्ध

द्रव्य, घृतकुमारी, एक वर्ष की  
 अवस्था वाली गी, पीडशवर्षाया

नारी, पाँच वर्ष की या दो वर्ष से  
 न्यून अवस्थाकी कन्या, कन्यामात्र ।

बालार्क ( पु० )-प्रातःकाल का सूर्य,  
 नवीदित तथा कन्याराधिसूर्य ।

बालि(पु०)-वानरों का राजा, इन्द्रमुन  
 श्री सुग्रीव के साथ सुगु ने श्रीराम-

चन्द्रजी द्वारा मारा गया था ।

बालिचिल्या( पु० य० )-पुलस्त्य की  
 कन्या यजति से ऋतु के धर्म से

उत्पन्न हुआ मुनिविशेष । [ बाल-  
 चिल्या का भी यही अर्थ है ] ।

बालिनी (स्त्री०)-अश्विनी नक्षत्र ।  
 बालिश (वि०)-मूर्ख, अष्ट, घेयकूफ,  
 शिशु, बच्चा । न०-तकिया,  
 उपधान, सिंहाना ।



बालिहन्ता[तृ] (पु०)-श्रीरामचन्द्र ।  
 बाली[नृ](पु०)-बालि । वि०-केशयुक्त ।  
 बालीश (पु०)-मूत्रकृच्छ्र नामक रोग  
 जिसमें मूत्र रक्त के साथ थोड़ा र  
 उतरता है, चिन्तन ।  
 बा[वा]लु (स्त्री०)-एलबालुक नामक  
 गन्ध द्रव्य ।  
 बा[वा]लुका (स्त्री०)-धूलि, रेणु विशेष ।  
 बा[वा]लुकात्मिका (स्त्री०)-शर्करा,  
 सिक्ता । वि०-बालुकरामय ।  
 बा[वा]लुकी (स्त्री०)-कण्टो, कफटो ।  
 बाळेय (पु०)-बलि नामक दैत्य की  
 भन्तान, जननेजयवशीय सुतपा  
 नामे राजा का सुत, गथा, दैत्य-  
 विशेष । वि०-कोमल, गूढ, धनि  
 का द्वित्विचिन्तक, बलि के योग्य ।  
 बाळेष्ट (पु०)-बैर, घदर । वि०-  
 बालको की अभिलषित वा  
 प्रिय ।  
 बाल्मीकि (पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध  
 , मनि जो बाल्मीकीयैरामायण के  
 निर्माता हैं ।  
 बाल्य (न०)-बालकपन, शैशवावस्था  
 के कर्म, मिश्रुत्य, १६ वर्ष तक की  
 अवस्था । [भाष ।  
 बा [वा] प्य ( न० )-आभू, नेत्रजल,  
 बाह-हा (स्त्री०)-भुजा, बाहु, बाह ।  
 बाहामाहवि (अ०)-भुजाओं से प्रवृत्त  
 भुजा पुट, भल्लपुट ।  
 बाहु (अस्त्री०)-भुजा, बाह ।  
 बाहुव (पु०)-राजा मल्ल का नाम जो हि  
 द्या द्वारा निज भ्राता पुष्कर के

साथ स्वराज्य के जित जाने पर  
 श्रापणंरान के यहां भस्वपरि-  
 चर्या में नियुक्त होने की दशा में  
 पड़ा था ।

बाहुज ( पु० )-ब्रह्म की भुजाओं से  
 उत्पन्न सत्रिय, राजन्य ।

बाहुज (अस्त्री०)-चमड़े का घनाया  
 हुआ वह साधन जो शस्त्र के  
 लाघात से बचाने के लिये हाथ  
 पर बांधा जाता है । [राजा ।

बाहुदन्ती[नृ](पु०)-इन्द्र, देवताओं का  
 बाहुदा (स्त्री०)-एक नदी का नाम ।  
 बाहुभूषा (स्त्री०)-केयूर, बाजू, बाहु-  
 भूषणमात्र ।

बाहुमूल (न०)-यमल, कल, कांख ।

बाहुपुट ( न० )-मल्लपुट, भुजाओं  
 द्वारा कुशतीलहना । [का भाष ।

बाहुप (पु०)-अग्नि, आग, कार्तिक

बाहुलेय (पु०)-कार्तिकेय, मुह, स्कन्द ।

बाहुबहस्रभूत (पु०)-कार्तवीर्यार्जुन ।

बिट् (१प०)-शपथ खाना, बिल्लाना,  
 शप देना ।

बिद (१प०)-अलग २ करना, अवयव ।

बिद् (१०प०)-पेदम करना, तोड़ना ।

बिस् (४प०)-केंकना, क्षेपण करना ।

बीमत्स (पु०)-अर्जुन । वि०-पापा-  
 त्म, दोषी, मिन्दित, विकृत,  
 घृणी, शृङ्गारादि भाठ प्रकार  
 के रसों में लठा ।

बीमत्स (पु०)-अर्जुन, पाण्डुसुत ।

युद्ध (१०प०)-कहना, कपन करना ।

( १ प० )-भीकना, पुत्रों के सा  
 शब्द करना ।

वृक्क(न०)-हृदय में स्थित मांसपिण्ड,  
हृदय । पु०-छाग, बकरा, समय ।

वृक्कन (न०)-कुत्ते का शब्द, कुक्कुर-  
भाषण ।

वृक्का (स्त्री०)-रुधिर, खून, शोणित,

वृक्कार (पु०)-सिंह की गर्जना, सिंह-  
ध्वनि ।

वृद्ध(१च०)-देखना, आलोचना करना ।

वृद्ध (पु०)-विष्णु का नवमावतार,  
शाक्यमुनि गौतम । वि०-ज्ञात,  
सपिण्ड, जायत, जाना हुआ ।

वृद्धि (स्त्री०)-प्रज्ञा, मनीषा, अन्त-  
करण की निश्चयात्मिका वृत्ति,  
ज्ञान, विद्या, जानना, सांख्य-  
शास्त्रोक्त प्रकृति का यह परि-  
णामविशेष जो बुल, दुःखादि  
आदिविषय धर्मों वाला है ।

वृद्धिमान् (वि०)-वृद्धि वाला, ज्ञानी ।

वृद्धीन्द्रिय (न०)-ज्ञानेन्द्रिय जो पाच  
और मन के सहित ६ हैं, यथा-  
मन, कर्ण, नेत्र, जिह्वा, त्वचा  
और नासिका ।

वृद्धबुद्ध (पु०)-जल का वस्तुलाकार  
विकार, बुलबुला, गर्भ का अव-  
स्थाविशेष ।

वृध् (४भा०)-विदित करना, जानना ।

वृध (पु०)-परिहृत, सुधी, विवेक्षक,  
नवग्रहों में से घीया, चन्द्रसुत ।

वृधरत्न (न०)-पद्मा, भरकत नामक  
मणि ।

वृधवार (पु०)-वृध का दिन ।

वृधसुत(पु०)-पुरुष नामक राजा जो

इला के गर्भ से उत्पन्न हुआ था ।

वृधान(पु०)-गुरु, ब्रह्मवेत्ता, विज्ञ, कवि ।

वृधाष्टमी(स्त्री०)-वृधवारयुक्त अष्टमी,  
उस में कर्त्तव्य द्रव्यविशेष ।

वृधित(वि०)-ज्ञान, जाना हुआ, युद्ध ।

वृधिल (वि०)-विज्ञ, जानने वाला,  
विद्वान् ।

वृधन (पु०)-वृक्ष की लह, मूलप्रदेश,  
जगला हिरवा, महादेव ।

वृधुसा(स्त्री०)-खाने की वृद्धा, लुधा,  
भूख । [ वाला, लुधित, भूखा ।

वृधुक्षित (वि०)-भोजन की वृद्धा  
वृध (न०)-भुख, तुच्छ धान्य, चावल  
आदि का छिलका, कड़ङ्गर ।

वृध (न०)-पूर्वधत् ।

वृधस्त ( १० प० )-जनादर करना, वे-  
द्वज्जती करना ।

वृधस्त (न०)-गानपिण्डविशेष, करीब  
वृक्ष का साररहित भाग ।

वृध (पु०)-जानना, ज्ञान, एक ऋषि,  
जागने का समय, चैतन्य, सूर्य  
का रूपविशेष ।

वृधक (पु०)-सूचक, सूचना देने वाला  
पुरुष । वि०-वृधोत्पादक ।

वृधवर (पु०)-रात्रि के अन्त में  
जगाने वाला पुरुष, भाट, बन्दि-  
जन, वैतालिक ।

वृधन (न०)-विज्ञापन, मन्थदीपन,  
हस्तिहार, जताना ।

वृधनी (स्त्री०)-पिप्पली, कात्तिक-  
शुक्लैकादशी, देवचटानएकादशी ।

वृधि (पु०)-पीपल का वृक्ष, एक

प्रकार की समाधि, बोध । वि०-  
जानने वाला ।

बोधितरु-द्रुम-वृक्ष ( पु० )-पीपल का  
वृक्ष, अश्वत्थवृक्ष ।

बौद्ध ( न० )-बुद्धप्रणीत वह शास्त्र जो  
, निरोधवरवाद से युक्त है । वि०-  
बुद्धकृतशास्त्र के पढ़ने वाला ।

, पु०-उपपन्न, बुद्धशास्त्रानुगामी ।

बोध ( पु० )-बुध का पुत्र पुरूरवा ।

द्वयुग् ( १० उ० )-तयागना, युवक् करना,  
, छोड़ना । [ करना ।

ब्रण् ( १ प० )-आवाज करना, शब्द

व्रतति ( स्त्री० )-छता, घेस, विस्तार,  
फैलाव । [ वृत्त, शिव, महादेव ।

ब्रध् ( पु० )-सूर्य, वृक्ष की जड़, अक्ष-

ब्रह्म ( न० )-वेद, परमेश्वर, तत्त्व, तप,  
ओ३म्, ब्राह्मण, मोक्ष, ब्रह्म  
चर्य, अध्यात्मविद्या, ब्राह्मण्य  
ग्रन्थ, सम्पत्ति, भोजन, सत्य ।

ब्रह्मकन्यका ( स्त्री० )-सरस्वती, वाग-  
धिष्ठात्री, ब्राह्मी । [ ताळाव ।

ब्रह्मकुण्ड ( न० )-ब्रह्मनिर्मित एक

ब्रह्मकूट ( पु० )-पर्वतविशेष ।

ब्रह्मकूप्यं ( न० )-एक घून जिस में  
पीणमासी के रात्रि और द्विपय  
भर उपवास करके जागते दिन  
प्रातः नमः पद्मगठ्य धारण किया  
जाता है ।

ब्रह्मपर्यं ( न० )-वेदप्राप्ति के लिये अष्ट-

विध भैरुनस्यागपर्वक व्रत धारण  
करना, उपरुपेन्द्रिय का संयम,  
स्त्रीभोगादिरित्य ।

ब्रह्मचारिणी ( स्त्री० )-ब्रह्मचर्यव्रत  
को धारण करने वाली कन्या, सती  
स्त्री, भारती नरगक औपध ।

ब्रह्मचारी [ नृ ] ( पु० )-उपनयन के  
अनन्तर नियमपूर्वक गुरु के सम्मुख  
वेद पढ़ने वाला द्विज, वेदपाठी  
विद्यार्थी, ब्रह्मचर्यव्रत का धारण  
करने वाला मनुष्य ।

ब्रह्मजन्म [ नृ ] ( न० )-उपनयनसंस्कार,  
आध्यात्मिकजीवन ।

ब्रह्मज्ञ-ज्ञानिन् ( वि० )-ब्रह्म को जानने  
वाला । पु०-कार्तिकेय ।

ब्रह्मज्ञान ( न० )-तत्त्वज्ञान, ब्रह्म को  
जानना, अध्यात्मज्ञान ।

ब्रह्मण्य ( वि० )-ब्रह्मसम्बन्धी, पवित्र,  
ब्राह्मण के योग्य । पु०-वेदज्ञ ।

ब्रह्मता-त्व=ब्रह्म को प्राप्त होना वा  
ब्रह्म में लय होना, ईश्वरीयभाव ।

ब्रह्मतेजः [ च् ] ( न० )-ब्राह्मणका तेज,  
ब्रह्मज्ञान द्वारा प्राप्त अरोज ।

ब्रह्मदण्ड ( पु० )-ब्राह्मण का शाप,  
ब्राह्मण का दातव्य ।

ब्रह्मदान ( न० )-वेदविद्या का पढ़ाना,  
तत्त्वज्ञान का देना ।

ब्रह्मद्विष्ट [ ट् ]-द्वेष्टिन् ( वि० )-ब्राह्मण  
से द्वेष्ट करने वाला, धर्मविरोधी,  
नास्तिक ।

ब्रह्मनिष्ठ ( वि० )-ब्रह्म के ध्यान में  
रत, सुदापरस्त ।

ब्रह्मपद ( न० )-ब्रह्मता, ब्राह्मणभाव,  
ब्राह्मीपता ।

ब्रह्मपरिषद् (स्त्री०) - ब्राह्मणों की समा।

ब्रह्मपत्र-पादप (पु०) - पलाश वृक्ष।

ब्रह्मपुत्र (पु०) - ब्राह्मण का पुत्र, भारत-  
वर्ष के पूर्व में एक महानद जो  
हिमालय से निकल कर बङ्गाल  
की खाड़ी में गिरता है।

ब्रह्मपुत्री (स्त्री०) - सरस्वती नदी।

ब्रह्मपुर (न०) - हृदय, बनारस।

ब्रह्मपुरी (स्त्री०) - बनारस, स्वर्ग में  
ब्राह्मणों का पुराणोपकथित  
नगर।

ब्रह्मपुराण (न०) - १८ पुराणों में से एक।

ब्रह्मयन्त्र (पु०) - नीच कोटि का  
ब्राह्मण, पंक्तिबद्धिभूत निन्दित  
ब्राह्मण, विप्राचाररहित, निर्देश,  
विप्रसङ्ग भाव आदि।

ब्रह्मभूम (न०) - ब्रह्मस्थ, ब्रह्मपन,  
ब्रह्म के साथ एकीभाव, तत्त्वा-  
भूज्य, मोक्ष। [की भेटला।

ब्रह्ममेखल (पु०) - मुल्ल, मूत्र, ब्राह्मण

ब्रह्मयज्ञ (पु०) - विधिपूर्वक वेद का  
पढ़ना और पढ़ाना, वेद का अभ्यास,  
शिष्यों को वेदाभ्यापन।

ब्रह्मयोगि (पु०) - ब्रह्म की प्राप्ति का  
कारण, ब्रह्मध्यान, तीर्थविशेष।

ब्रह्मपोनी (स्त्री०) - एक तीर्थ जो  
कुरुक्षेत्रप्रदेश में सरस्वती के तट  
पर पृथूदक के निकट स्थित है।

ब्रह्मरन्ध्र (न०) - शिर में एक छिद्र-  
विशेष, वह छिद्र जिस के द्वारा  
भरण समय में प्राणवायु के नि-  
कलने पर जीव की ब्रह्मप्राप्ति

कही है और योगी ब्रह्मप्राप्ति के  
लिये समाधि अवस्था में जिस में  
ध्यान करते हैं, उक्तमातृ, ब्रह्मतालु।

ब्रह्मरात्र (पु०) - ब्राह्ममुहूर्त, अठणो-  
दय काल की पहिली दो घड़ी।

ब्रह्मरात्रक (पु०) - वह भूतविशेष जो  
पहिले ब्राह्मण होकर फिर कुरुक्षेत्र-  
वश राक्षसयोगिनी की प्राप्ति हो  
गया हो, ब्राह्मण होकर अच-  
रन्ध्र करने वाला पुरुष।

ब्रह्मपिं (पु०) - वेदवेत्ता वशिष्ठादि  
मुनि, ब्रह्मा वा ब्राह्मण के तुल्य  
वेदस्मरता ऋषि, वेद का स्मरण  
करने वाला ऋषि।

ब्रह्मपिंदेश (पु०) - ब्रह्मपिंदों के रहने  
योग्य देश जो कि चार हैं यथा-  
कुरुक्षेत्र, मत्स्य, पाण्ड्या और  
शूरसेन।

ब्रह्मलोक (पु०) - वह लोक जिस को  
प्राप्ति होकर फिर जन्म नहीं  
लेता पंडित अर्थात् उत्पल्लोक।

ब्रह्मभय (न०) - ब्रह्मा का भयन,  
ब्राह्मणवाक्य, वेदवचन।

ब्रह्मवद्या (स्त्री०) - कथा, गाथा।

ब्रह्मवर्चस (न०) - वेद के पढ़ने वा तप  
से उत्पन्न हुआ तेज, ब्रह्मतेज।

ब्रह्मवत् (पु०) - सरस्वती और दृपद्वती  
नदी के मध्य का देश, ब्रह्मवर्त  
देश।

ब्रह्मवाद (पु०) - वेद का पढ़ना, वेदपाठ।  
ब्रह्मवादी [न] (पु०) - वेद के जानने  
वा पाठ करने वाला पुरुष, वेद-  
पाठी, वेदवक्ता।

ब्रह्मवादिनी (स्त्री०)-गायत्री ।

ब्रह्मविद्या (स्त्री०)-ब्रह्म के प्रतिपादन करने वाली विद्या, ब्रह्मज्ञान, दुर्गा ।

ब्रह्मविन्दु (पु०)-वेदपाठ करते समय मुख से निकली हुई घूँट ।

ब्रह्मवेद (पु०)-ब्रह्मविषयक ज्ञान ।

ब्रह्मवैवर्त ( न० )-गठारह पुराणों के अन्तर्गत एक पुराण ।

ब्रह्मवासन (न०) ब्रह्मा का उपदेश, वेद, ब्रह्मविचार का ग्रह, चर्मकोटक, नवद्वीप के पूर्व और दक्षिण कोण में एक नगर ।

ब्रह्मसंहिता(स्त्री०)-वैष्णवोंके आचार का प्रतिपादन करने वाला एक ग्रन्थ जिसमें १०० अध्याय हैं ।

ब्रह्मसर्व (पु०)-एक प्रकार का सर्व, विष, हलाहल, अश्व की छार ।

ब्रह्मसायुज्य (न०)-ब्रह्मर्माद्य, ब्रह्म के स्वरूप में मिलना, ब्रह्म के साथ एकीभाव, मुक्त होना ।

ब्रह्मसावर्णि (पु०)-दशम मनु ।

ब्रह्मसू (पु०)-अग्निरुद्र, उपापति, कामदेव, ब्रह्मा का उत्पादक विष्णु ।

ब्रह्मसूत्र (न०)-यज्ञोपवीत, यज्ञसूत्र, जनक । ब्रह्मा के प्रतिपादक भारीरिण सूत्र, वेदान्तसूत्र ।

ब्रह्मस्थ(न०)-ब्राह्मण का धन, ब्राह्मण सम्बन्धी धन ।

ब्रह्मदत्ता ( स्त्री० )-ब्राह्मणका धन, विप्रदान, ब्राह्मण का भारमा ।

ब्रह्म [ नृ ] (पु०)-ब्राह्मण की नारने

वाला पुरुष, ब्रह्मन्, ब्राह्मणधर्कता, वृषलीपति ।

ब्रह्महुत (न०)-ब्राह्मण या अतिथि के लिये दिया हुआ हव्य, यज्ञमहायज्ञों में से अतिथि के सत्काररूप एक यज्ञ, नृयज्ञ ।

ब्रह्मा [ नृ ] (पु०)-पितामह, सृष्टिकर्ता, देवविशेष, यज्ञादि में कृताकृत कर्म का निरीक्षणकर्ता, श्वा योग, ब्राह्मण, अहंरुपासकभेद ।

ब्रह्माञ्जलि (पु०)-वेदाध्ययन के समय गुरु के सम्मुख हाथ जोड़ना, सामवेद के पाठ समय स्वर विभाग के लिये की हुई अञ्जलि, वह अञ्जलि जो वेद पढ़ने के आदि और अन्त में ओङ्कार के उच्चारणपूर्वक गुरु के सामने की जाती है ।

ब्रह्माणी (स्त्री०)-ब्रह्मा की पत्नी, ब्रह्मशक्ति, दुर्गा, राजनीति, ऐणुका नामक एक गन्धद्रव्य ।

ब्रह्माण्ड (न०)-चतुर्दश भुवन, विश्वगोलक, सब संचार ।

ब्रह्मात्मसू (पु०)-अश्व, घोड़ा ।

ब्रह्मारण्य ( न० )-वेदपाठ करने की भूमि ।

ब्रह्मापंग (न०)-ब्रह्म में अर्पण, ब्रह्म के लिये सोपना, अर्पणीय सब वस्तुनात्र ब्रह्म है ।

ब्रह्मावर्त=ब्रह्मवर्त ।

ब्रह्मासन ( न० )-ब्रह्म के ध्यानार्थ आसन, योगासन, पद्म, स्वस्ति-कादि आसनविशेष ।

ब्रह्मास्त्र (न०)-ब्रह्मस्त्ररूप अस्त्रविशेष ।  
ब्रह्मिष्ठा (स्त्री०)-दुर्गा, शक्ति, देवी ।  
ब्रह्मी (स्त्री०)-अपने नाम से प्रसिद्ध  
मेधाजनक औषधविशेष ।

ब्रह्मोद्या (स्त्री०)-ब्रह्मकथा, पर-  
मात्मा का निरूपण करने वाली  
कथा । [ लिखे दिया अन्न ।

ब्रह्मोदन (न०)-यज्ञ में ऋत्विजों के  
ब्राह्म (न०)-प्रतिपत्ति तीर्थ जो कि  
अगूठे के मूल में माना है, इसी  
तीर्थ से द्विजों के लिये आचमन  
करने का विधान है, ब्रह्मपुराण,  
ब्रह्मास्त्र । पु०-नारद, एक विवाह,  
रात्रि के पिछले प्रहर की अन्तिम  
दो घड़ी का काल, पारा, राज-  
धर्म । वि०-ब्रह्मसम्बन्धी ।

ब्राह्मण (पु०)-वेद या ईश्वर की  
जानने वाला पुरुष, द्विजाति,  
भूदेव, अपजन्मा, उत्तमवर्ण, शिव,  
विष्णु । न०-ब्रह्मसमूह, ब्राह्मण-  
समुदाय, यज्ञविषयक ४ ग्रन्थ ।

ब्राह्मणद्रुम (पु०)-बह पुरुष जो ब्राह्मण  
कुल में उत्पन्न होकर वेदोक्त  
कर्म न करता हुआ भी अपने की  
ब्राह्मण मतछावे, जातिमात्र  
ब्राह्मण, गुरे आचार वाला विप्र ।  
ब्राह्मणी (स्त्री०)-ब्राह्मणपत्नी, भारणी  
नामक औषध, हंस की माया,  
पिपीलिकाविशेष, मुद्दि ।

ब्राह्मण्य (न०)-ब्राह्मणों का समूह,  
ब्राह्मणत्व, विप्रभाव । वि०--  
ब्राह्मण का । पु०-यनि यह ।

ब्राह्ममुहूर्त (पु०)-अरुणोदय होने से  
पूर्व की दो घड़ी, रात्रि के अन्तिम  
प्रहर की पिछली दो घड़ियों का  
समय ।

ब्राह्माहोरात्र (पु०)-ब्रह्मा का एक रात  
दिन जो मनुष्यों के कल्पवृक्ष का  
समय होता है ।

ब्राह्मी (स्त्री०)-दुर्गा, शिव की आष्ट-  
मातृकाओं में से एक, सरस्वती,  
ब्रह्मशक्ति, शक्तिविशेष ।

ब्रुवन् [वत्] (वि०)-बोलता हुआ,  
कथन करता हुआ, कथयन्, वक्ता ।

ब्रुवाण (वि०)-पूर्ववत् ।

ब्रू (२ ल०)-कदना, कथन करना ।

## भ

भ-पवर्ग का चतुर्थ अक्षर । न०-नक्षत्र  
राशि, यह । पु०-शुकाचार्य,  
दैत्यगुरु, भूवर, भ्रम, भ्रान्ति, छन्द-  
शास्त्र में भगण निम्न में पड़िला  
अक्षर गुरु और शेष दो अक्षर छपु  
होते हैं ।

भक्त (न०)-भक्त, भक्त्य, भक्तज,  
भावल, ओदन । पु०-भक्तियुक्त,  
भक्ति करने वाला । वि०-विभक्त,  
बंटा हुआ । [ कृत्रिमधूप ।

भक्तकर (पु०)-यनाया हुआ धूप,

भक्तकार (वि०)-रसोद्देयनाने वाला,  
पाचक, सूत्रकार, रसोद्देय ।

भक्तनूपं (न०)-भोजन समय में भगवाने

योग्य दासा, भोजनकालीन  
वाद्यविशेष ।

भक्तदास (पु०)—पन्द्रह प्रकार के दासों  
में से एक, केवल भोजनमात्र पर  
दास्यकर्म करने वाला पुरुष,  
सुनिश्चित होने पर भी भोजन पर  
ही जिसने दासभाव स्वीकार  
कर लिया है ।

भक्तनरह ( अस्त्री० )—बावलों का  
नाम, निःस्वास्व ।

भक्ति (स्त्री०)—सेवा, 'पूज्य पुरुषों में  
अमुराग, आराधना, गीणवृत्ति,  
स्पासना, ईश्वर में अत्युत्कृष्ट  
प्रेम, अट्टा, रचना, संगी, अवयव  
उपचार । [ युक्त ।

भक्तिमान् (वि०)—भक्तिवाला, भक्ति-

भक्तिपोग (पु०)—भक्ति वा चित्त की  
एकाग्रता से ईश्वरभजन में लग  
जाना, परमेश्वर में भजन विष-  
यक सम्मग्न्य । [ छोड़ा ।

भक्तिल ( पु० )—उत्तम अश्व, अच्छा

भक्त ( १० व० )—खाना, भक्षण करना,  
भोजन करना ।

भक्त (वि०)—भोजन करने वाला,  
भोजनकर्ता, परस्पर ।

भक्षण ( न० )—खाना, भोजन करना,  
भक्षण, खाद्वय । [ पोय, द्रव्य ।

भक्षणीय ( वि० )—खाने योग्य, भक्ष-

मह्य (वि०)—पूर्ववत् ।

भक्ष्याभक्ष्य (न०)—खाने और न खाने  
योग्य द्रव्य, खाद्याखाद्य द्रव्य ।

भग ( पु० )—सूर्य, चन्द्रमा, सोताग्य,

सुधी, अभ्युदय, महारथ, कीर्ति,  
धीन्द्र्य, प्रेम, धर्म, मरन, पैराग्य,  
भोस, शक्ति, ज्ञान, इच्छा, अष्ट-  
सिद्धियों में से एक, स्त्रीयोगि ।

भगदत्त पु० )—महाभारत में कथित  
एक राजा का नाम ।

भगन्दर (पु०)—एक प्रकार का मयङ्कर  
रोग, गुदा का जोड़ा ।

भगवत् [वान्] (वि०)—तेजस्वी, पवित्र,  
प्रतिष्ठा का वाचक । पु०—देवता,

विष्णु, शिव, युद्ध का विशेषण ।

भगवती ( स्त्री० )—प्रतिष्ठित नारी  
लक्ष्मी दुर्गा ।

भगवदीय (पु०)—वैष्णव, विष्णुपूजक ।

भगवद्गीता ( स्त्री० )—महाभारत में  
युद्ध पर्व के आदि में वर्णित  
श्रीकृष्ण और अर्जुनका अध्यात्म-  
विषयक संवाद, अपने नाम से  
प्रसिद्ध ग्रन्थ ।

भगांकुर (पु०)—अशरीर का धासीर ।

भगास (न०)—खोपड़ी, खप्पर ।

भगिनी (स्त्री०)—यहून्, स्वसा, स्त्री,  
सौभाग्यवती । [ का भर्ता ।

भगिनीपति-भरार (पु०)—बहमोद्द, बहम

भगिनीय (पु०)—यहून् का पुत्र, भगि-  
नीय, भाता ।

भगीरथ ( पु० )—सूर्यवंशी राजा सगर  
का पुत्र जिसने गंगामदी का महत्  
रूप से निर्माण किया था ।

भगीरथप्रयत्न (पु०)—असीम पुरुषार्थ ।

भग ( वि० )—टूटा हुआ, दात, फटा  
हुआ, पराजित, खिन्न ।

भगवेष्ट (वि०)—नाकागयाय, असफल  
भगदर्प (वि०)—जिसका दर्प पूर्ण  
हो गया हो ।

भगप्रतिष्ठा (वि०)—आदेकरोश, अपनी  
प्रतिष्ठा को तोड़ने वाला ।

भग्नमनोरथ (वि०)—निराश, भगवेष्ट ।

भग्नमान (वि०)—अनादृत, अपमानित ।

भग्नवृत्त (वि०)—बेवका, भग्नप्रतिष्ठा ।

भग्नश (वि०)—निराश, भग्नमनोरथ ।

भग्नी (स्त्री०)—बहिन, भगिनी ।

भग्नोत्साह (वि०)—निराश, जिसकी  
हिम्मत टूट गई हो ।

भग्नोद्यम (वि०)—भगवेष्ट, जिस का  
उद्यम निराल रहा हो ।

भंग (पु०)—तोड़ना, भक्ति, विभाग, जुदाई,  
टुकड़ा, गिरावट, नाश, पराजय,  
नाकागयायी, त्याग, रोक, मागना,  
छहर, गमन, पोछा, भांग ।

भंगि-गी (स्त्री०)—विच्छेद, जुदाई,  
तिरछापन, फरेय, रचना, बना-  
गट, छहर, फड़, बहाना ।

भंगुर (वि०)—गाजुक, भाग्य ही टूटने  
वाला, लजिक, नाशवान्, कुटिल,  
तिरछा ।

भग्न (न०)—भांग का सेत ।

भङ्ग (१ व०)—घांटना, विभाग करना,  
खीकार करना, भेदा करना,  
भुगताना, चुनना, भजन करना ।

भङ्ग (१० व०)—देना, पकाना ।

भजन (न०)—पूजा, उपासना, विभाग,  
कृष्ण, भेदा, कीर्तन ।

भङ्ग (१३, प०)—तोड़ना, टुकड़े करना,

नष्ट करना, निराश करना, रोकना,  
पराजित करना ।

भंजत (वि०)—तोड़ने वाला, रोकने  
वाला । न०—विच्छेद, नाश, इटाना,  
रोकना । पु०—दांत का टूटना ।

भंजा (स्त्री०)—दुर्गा का नाम ।

भट् (१ प०)—पानना, परवरिश करना,  
किराया करना । १० व०—भोलना,  
बार्ते करना । [राक्षस ।

भट (पु०)—घोड़ा, सिपाही, अन्तपण,

भट (पु०)—स्वामी, मालिक, विद्वान्  
। छात्रों की उपाधि, विद्वान्पुत्र्य,  
तत्त्ववेत्ता, भाट, चारण ।

भट्टाचार्य (पु०)—विद्वानों की उपाधि,  
तत्त्ववेत्ता, महारचिह्न ।

भट्टार (वि०)—पूजनीय, आदरणीय ।

भट्टारक (वि०)—पूजनीय । पु०—ऋषि  
सूयं, देवता ।

भट्टारकवार (पु०)—स्विवार ।

भट्टारिका (स्त्री०)—फुलीन स्त्री, देवी ।

भट्टिनी (स्त्री०)—प्राज्ञनमायी, शाह-  
जादी, सुवरासी ।

भट्टिल (पु०)—बहादुर, योद्धा, अनुचर ।

भण् (१ प०)—बहना, बोलना, बयान  
करना, शब्द करना ।

भजन-जिन (न०)—बाकी, बातचीत,  
सुपतगु, सवाद ।

भट्ट (१ व०)—पिछारना, हँसी उडाना,  
भजाक करना । [ज़रीफ़ ।

भय (पु०)—भयाक करने वाला,

भयन (न०)—कमल, पुष्ट, शठता ।

भविष्य (वि०)—भीमापवान्, सुश-



किस्मत । पु०-सौभाग्य, कुशल-  
 सेन, मजदूर, दूत, शिरीषवृक्ष ।  
 भद्रन्त(पु०)-बीहो के लिये एक मति  
 श्टासूचक शब्द, बीहसपणक ।  
 भद्राक (पु०)-अभ्युदय, सौभाग्य ।  
 भद्र (वि०)-नेरु, सुश, भुष, मेहरबान,  
 अच्छा, सुन्दर । न०-सुशी,  
 सौभाग्य, कुशलसेन, आशीर्वाद,  
 स्वर्ण, लोहा । पु०-घैल, कपटी,  
 देवदारु का वृक्ष ।

भद्रक (वि०)-सुन्दर, शुभ ।  
 भद्रकारक-हूर (वि०)-मंगलदाता ।  
 भद्रकाली (स्त्री०)-दुर्गा का नाम ।  
 भद्रवत् [ वान् ] ( वि० )-मंगलकर,  
 शोभायमान ।

भद्रा (स्त्री०)-गौ, सुरगंगा, कृष्ण-  
 भगिनी शुभद्रा; द्वितीया, सप्तमी  
 और द्वादशी तिथि, कई औष-  
 धियों का नाम ।

भद्रान्नय ( न० )-चन्दन की छकड़ी,  
 मन्दल का पेड़ । [सिंहासन ।

भद्रासन ( न० )-राला का आसन,  
 भान् (पु०)-पूजना, चिल्लाना, भिग  
 । भिन करना ।

भद्र (पु०)-मखरी, घूस, घुआं ।

भय (न०)-डर, खीफ, इतरा । पु०-  
 राग, बीमारी ।

भयवर-हूर ( वि० )-भयानक, खीफ-  
 नाक, इतरनाक ।

भयविह्वल(पु०)-अलार्म का विमल;  
 इतरे की मूयना ।

भयप्राना(वि०)-भय से घपाने वाला ।

भयमद (वि०)-खीफनाक, भयानक ।

भयभीत(वि०)-खीफजदा, डरा हुआ ।

भयविप्लुत(वि०)-खीफजदा, भयभीत ।

भयशील (वि०)-डरपीक, कायर ।

भयानुर-यार्त्त(वि०)-डरा हुआ, खीफ-  
 जदा, भयभीत ।

भयानक (वि०)-खीफनाक, डरायना ।

पु०-चीता, राहु । न०-भय, डर ।

भयान्वित-क्रान्त (वि०)=भयभीत ।

भयावह (वि०)-इतरनाक, भयानक ।

भर ( वि० )-घरदाश्त करने वाला,  
 सहारा देने वाला । पु०-बोफ,  
 बड़ी सख्या, डेर, आधिक्य,  
 चोरी ।

भरट (पु०)-कुम्हार, नौकर ।

भरण (वि०)-पालने वाला, पोषक ।

न०-पालन, पोषण, लेजाना,  
 पहिरना, किराया । [कीड़ा ।

भरयह ( पु० )-राजा, स्वामी, ब्रैल,

भरयय (न०)-मजदूरी, भाड़ा, पालन,  
 सहारा । [तारी ।

भरण्या ( स्त्री० )-मजदूरी, भाड़ा,

भरत (पु०)-चन्द्रवंशीय राजा दुष्य-

न्त और अकुन्तला के पुत्र का  
 नाम जिस के चक्रवर्त्तित्व के

कारण आर्यावर्त्त का नाम भरत-  
 वर्ष पड़ गया; श्रीराम के भाई

का नाम जो कैकेयी का पुत्र था,  
 एक व्यक्ति का नाम जो गान-

यिद्धा का जाचिकर्ता है; अमि-  
 नयकर्ता, येतनभोगी योद्धा, जह-

भरत नागक ऋषि ।

भरतखण्ड ( न० )-आर्यावर्त के एक  
प्रान्त का नाम ।

भरतवर्ष ( पु० )-भरत का देश अर्थात्  
आर्यावर्त, भारतवर्ष ।

भरप ( पु० )-राजा, अग्नि, लोकपाल ।

भरद्वाज ( पु० )-सप्त ऋषियों में से एक,  
छाया पत्नी । [ हुन्ना, हरा ।

भरित ( वि० )-पातित, योषित, भरा

भरु ( पु० )-पति, स्वामी, शिष्य, विष्णु,  
स्वर्ग, वागर ।

भरुज ( पु० )-गोदह, शृगाल ।

भरुटक ( न० )-मुना हुआ मांस, कषाय

भर्ग ( पु० )-शिष्य, ब्रह्मा, प्रभा, भूतना ।

भर्जम ( न० )-भूतना, भूतने का पात्र ।

भर्ता [ त् ] ( पु० )-पति, स्वामी,  
छोहर, पालक, उत्पादक, रक्षक ।

भर्तृदारक ( पु० )-राजा का पुत्र, नाटक  
में राजकुमार ।

भर्तृहरि ( पु० )-शृंगार नीति और  
प्रेमराग इन तीनों शतकोका कर्ता-  
एक व्यन्धकार । [ वाली स्त्री ।

भर्त्री ( स्त्री० )-माता, पोषण करते  
मत्स्य ( १० या० )-घमकाना, धिक्कारना,  
किङ्करी । [ धाप ।

भर्त्सन-भर्त्सना=हरावा, घमकी, धिक्कार,  
मन्त्रिर्षत ( वि० )-विक्कन, किङ्करी हुआ ।

भर्म ( न० )-भजदूरी, साहा, स्वर्ण ।

भर्म [ न् ] ( न० )-सहारा, पोषण, भज-  
दूरी, घर, स्वर्ण, योद्धा ।

भल ( १० या० )-देखना, अवलोकन करना

भल्ल ( १० या० )-वधान करना, कहना,

जल्मी करना, मारना, देना ।

भल्ल-क ( पु० )-रीठ, मालु ।

भल्लु [ ल्ल ] क ( पु० )-रीठ, मालु ।

भव ( पु० )-सत्ता, भाव, उत्पत्ति, उद्गम-  
स्थान, सत्ता, प्राप्ति ।

भवत् [ वात् ] ( वि० )-होने वाला ।

सर्व-आप, अपने सम्मुख उपस्थित  
पुरुष के आदर के लिये यह शब्द  
प्रथम पुरुष में प्रयुक्त होता है ।

भवती ( स्त्री० )-प्रथम पुरुष में उप-  
स्थित प्रतिष्ठित नारी के लिये  
यह शब्द प्रयुक्त होता है, आप ।

भवदीय ( वि० )-आपका, तुम्हारा ।

भवन ( न० )-सत्ता, उत्पत्ति, स्थान, घर,  
सकाय, क्षेत्र ।

भवनपति ( पु० )-गृहस्वामी, गृहस्प ।

भवनीय ( वि० )-होने योग्य, भायी ।

भवन्ती ( स्त्री० )-धर्तमान काठ,  
भद्रमाया ।

भवभूत ( न० )-प्राणिमात्र का चहन्न-  
स्थान अर्थात् परमात्मा । [ नाम ।

भवभूति ( पु० )-एक प्रसिद्ध कवि का  
अग्रामी ( स्त्री० )-शिवमाया, पार्वती ।

भवित ( वि० )-प्रयत्न, सुग, सुफीद, कार-  
आमद । [ भव्य, अटल ।

भवितव्य ( वि० )-संचित होने योग्य,  
व्यवहार्यता ( स्त्री० )-अटल पटना,

प्रारब्ध ।

भविन ( पु० )-कवि, शास्त्र । [ वाला ।

भविष्य ( वि० )-आगामी, भावी, होने

भविष्य ( वि० )-आगामी, जाने वाला,

भविष्य । न०-आने वाला समय ।

भविष्यत्(वि०)=भविष्य । [ एक ।  
 भविष्यपुराण (न०)-१८ पुराणों में से  
 भविष्यवादी-वक्ता ( वि० )-आने की  
 बात कहने वाला, दैवज्ञ, ज्योतिषी ।  
 भव्य (वि०)-उपस्थित, वर्त्तमान, आ-  
 गामी, होने वाला, उपित, उपयुक्त,  
 अच्छा, सम्दा, शुभ, सुन्दर, शान्त,  
 सज्जा । [ देना ।  
 भव् (१ प०)--भैरवना, गुरोना, पाछी  
 भव-क(पु०)--कुत्ता, श्वान ।  
 भव् (१ प०)--खाना । ३ प०--चमकना,  
 धिक्कारना ।  
 भवद् (पु०)--सूर्य, गीरत, प्लव, काष्ठ ।  
 भवन(पु०)--मधुनलिका ।  
 भवन्त(पु०)--काल, समय । [ हुआ ।  
 भवित (वि०)--भस्मीभूत, राख किया  
 भस्त्रका-स्त्रा-स्त्र (स्त्री०)--धौकली,  
 पानी भरने की मशक ।  
 भस्म [ न् ] ( न० )--राख, होनादिक  
 की राख ।  
 भस्मक(न०)--खोना या खांदी ।  
 भस्मकार(पु०)--धोयी ।  
 भस्मभूत(वि०)--मृत, मरा हुआ ।  
 भस्मसात् ( अ० )--राख की दशा में  
 पहुँच जाना ।  
 भस्मा [ स्त्री ] ४(८३०)-भस्म करना ।  
 भस्मीकरण(न०)-भस्मकरना, जलाया  
 भस्मीकृत (वि०)--भस्म किया हुआ,  
 जलाया हुआ ।  
 भस्मीभू (१ प०)--भस्म होना, जलना ।  
 भस्मीभूत ( वि० )--भस्म हुआ, जला  
 हुआ ।

भा (२ प०)--दीप्ति, चमकना । स्त्री०--  
 प्रकाश, चमक, दीप्ति, कान्ति ।  
 भाग(पु०)--बांटना, हिस्से करना, अंश,  
 टुकड़ा, हिस्सा, भाग्य, किस्मत ।  
 भाग्येय (न०)--भाग्य, किस्मत । पु०--  
 राजदेय कर [खिराज], दायद,  
 शरीक । [ महापुराण ।  
 भागवत (न०)--अष्टादशपुराणान्तर्गत  
 भागवत् [ः] (अ०)--एक २ भाग का  
 देना ।  
 भागहर (वि०)--हिस्सेदार, अंशग्राही,  
 हिस्सा बांटने वाला, ।  
 भागिक(वि०)--भाग वाला, आंशिक ।  
 भागिन्[यी] (वि०)--हिस्सेदार, हिस्से  
 वाला । [ भांजा ।  
 भागिनेय ( पु० )--ग्रहिन का बेटा,  
 भागीरथी (स्त्री०)--गंगा, जाह्नवी ।  
 भागुरि(पु०)--धर्मशास्त्र तथा उपाकरण  
 का निर्माता एक मुनि । [दिव ।  
 भाग्य(न०)--शुभाशुभ सूचककर्म, प्रारब्ध  
 भाङ्गोन् (न०, भग उपजने का खेत ।  
 [भाग्य का भी यही अर्थ है ।]  
 भाज् ( १० उ० )--एक करना, जुदा  
 करना, विभाग करना, हिस्सेकरना  
 भाजक ( वि० )--भाग करने वाला,  
 बांटने वाला । [ लायक ।  
 भाजन (न०)--पात्र, जाररा, योग्य,  
 भाजित ( वि० )--विभक्त, पाटा हुआ,  
 एककृत । [ बांटने लायक ।  
 भाज्य ( वि० )--विभक्त करने योग्य,  
 भाटक(न०)--भाड़ा, किराया, महसूल ।  
 भाट (पु०)--कुमारिणभट्टका अनुयायी

भाण (पु०)-देहने लायक काष्ठपत्रे ।  
 भारह(न०)-धत्तन, चौखचा, फडाही,  
 वकस, औजार, सामान, गट्टा ।  
 भारहपति(पु०)-सौदागर, व्यापारी ।  
 भारहपुट(पु०)-नाहे, डब्बा ।  
 भारहवाला (स्त्री०)-कोठार, इकट्ठा  
 करने की जगह ।  
 भारहाः (पु० व०)--मलदूरी, सौदागरी  
 का सामान ।  
 भारहागार (स्त्री०)--कोठार, सामान  
 रखने का कमरा ।  
 भारहार(न०)-पूर्ववत् ।  
 भारहारिक(पु०)-भारहारी, कोठारी,  
 भारहागारिक । [का स्वामी ।  
 भारहारी(नृ) (पु०)-कोठारी, भारहार  
 भाविहक-ल(पु०)-नाहे, डब्बा ।  
 भाविहवाह(पु०)-पूर्ववत् ।  
 भाविहवाला (स्त्री०)-इकट्ठा करने  
 की जगह ।  
 भात(पु०)-खेरा, उषाकाष्ठ । वि०-  
 चमकीला, रोशन । [शोभा ।  
 भाति(स्त्री०)--ज्ञान, प्रतीति, चमक,  
 भातु(पु०)-सूर्य, सूरज ।  
 भाद्र-वद (पु०)-एक चन्द्रमास का  
 नाम जो वर्षाकाल में अगस्त  
 या सितम्बर के लगभग होता है ।  
 भान ( न० )-प्रत्यक्ष होना, स्फुटित  
 शोभा, चमक, ज्ञान ।  
 भानु ( पु० )-सूर्य, सुन्दरता, दिन,  
 राजा, चमक, प्रकाश । स्त्री०-  
 सुन्दर स्त्री । [का नाम  
 भानुमती (स्त्री०)-दुर्गोपन की पत्नी ।

भाम् (पु०)-क्रोषित होना ।  
 भाम ( पु० )-चमक, शोभा, क्रीड,  
 अग्निनीपति ।  
 भामनी (पु०)-परमात्मा, वृद्ध ।  
 भामा (स्त्री०)-क्रोधातुस्त्री, श्रीकृष्ण-  
 भार्या सत्यभामा । [ चण्डी ।  
 भामिनी(स्त्री०)-सुन्दर स्त्री, कामिनी,  
 भामिनीबिलास (पु०)-परिहतराज  
 जयन्तापकृत एक काव्य का नाम ।  
 भार ( पु० )-बोझा, वजन, घनाभान  
 युद्ध, गहराई, मेहनत ।  
 भारक (न०)-बोझ, वजन ।  
 भारयड (वि०)-एक कल्पित पक्षी ।  
 भारत (वि०)-भरतचन्द्रन्धी । पु०-  
 भरतचन्द्रति, भारतदेशनिवासी ।  
 न०-भारतवर्ष, महाभारत नामक  
 इतिहासग्रन्थ । [संस्कृति ।  
 भारती (स्त्री०)-वाणी, वाग्मिनी,  
 भारद्वाज ( पु० )-द्रोण का नाम,  
 जगत्पति, मंगल ग्रह, सप्त ऋषि-  
 यों में एक, छात्रा पक्षी ।  
 भारवाह ( पु० )-घोषा होने वाला  
 कद्धार, घासवाह ।  
 भारवि (पु०)-किरातार्जुनीय नामक  
 प्रसिद्ध काव्य का कर्ता । [भुजा ।  
 भाराकान्त ( वि० )-घोष से दया  
 भारि (पु०)-शेर, सिंह ।  
 भारंग (पु०)-शुक्र, परशुराम, शिव,  
 हस्ती, जमदग्नि, मार्कण्डेय,  
 पूर्वीयदेश ।  
 भारंगी (स्त्री०)-दूर्वापाक, उदनी,  
 पावती, देवपत्नी ।

भाष्य(वि०)--पानन करने योग्य, महारा  
देने लायक । पु०--नौकर, आश्रित ।  
भाष्य(स्त्री०)--विधिपूर्वक विवाहिता  
पत्नी, मादा ।  
भाष्यजित-आटिक ( पु० )--जोर का  
गुलाम, भाष्यधीन पति ।  
भाष्यट ( पु० )--भाष्य से बेरयावृत्ति  
कराकर पेट पालने वाला ।  
भाष्य(न०)--सुन्दरी, उपादती, आधिक्य ।  
भाष ( न० )--भाषा, सस्कृत, चमक,  
अन्धेरा,  
भाषु(पु०)--सूर्य सूरज ।  
भाषु[सु-सु-सु]क(पु०)--रीठ, भाषू,  
भाष(पु०)--सत्ता, मौजूदगी, यत्ना-  
नता, होना, संघटना, दशा, ढग,  
रुतबा, भक्ति, खसलत, आदत ।  
भाषक( वि० )--उत्पादक, भाषपूर्ण,  
पु०--हयाल, अनुभव करने की  
वृत्ति  
भाषज(पु०)--प्रेम, स्नेह, कामदेव ।  
भाषनं-भाषना=बिन्ता, फिक्र, ध्यान,  
हयाल, सोचना, पर्यालोचना ।  
भाषरूप(वि०)--असली, ठीक २ ।  
भाषवाचक (न०)--ऐसी संज्ञा जिनमें  
किसी वस्तु की विद्यमानता  
अथवा उपस्थिति का पता लगे ।  
भाषगुहि(स्त्री०)--ईमानदारी, सदापन,  
भाषात्मक(वि०)--असली, वास्तविक ।  
भाषार्थ(पु०)--किसी लक्ष्य या जुमले  
के जगदिरा मायने ।  
भाषिक (वि०)--कुदरती, स्वाभाविक,  
भावपूर्ण, अविव्य ।

भाषित(वि०)--उत्पन्न, प्राप्त, प्रकटित,  
प्रत्यक्ष, ज्ञात, विचार हुआ ।  
भाषित (न०)--दुलोक, पृथिवीलोक  
और पाताल नामक तीनलोक ।  
भाषिनी(स्त्री०)--सुन्दर स्त्री, कुलीन  
नारी, कुलटा स्त्री । [ होनहार ।  
भाषी[नृ] ( वि० )--भाषे होने वाला,  
भाषुक ( वि० )--भाषी, होने वाला  
प्रसन्न, आनन्दित ।  
भाष्य(वि०)--होने वाला, होनहार ।  
भाष(१ आ०)--कहना, बोलना, उच्चा-  
रण करना ।  
भाषण(न०)--कथन, घाणी, वातचीत ।  
भाषा (स्त्री०)--जबान, घाणी, वात,  
बोली  
भाषान्तर ( न० )--तर्जुमा, अनुवाद,  
एक भाषा से दूसरी भाषा में  
करना ।  
भाषिका(स्त्री०)--जवान, बोली, घाणी ।  
भाषित (वि०)--कहा हुआ, उच्चरित,  
व्यक्त । न०--वाणी, मुक्तगु ।  
भाषी[नृ] (वि०)--कहने वाला, बोलने  
वाला, यातूनी ।  
भाष्य (न०)--वातचीत, बोलचाल की  
भाषा का कोई ग्रन्थ, टीका,  
गिलासरी । [ झुलि ।  
भाष्यकर-कार (पु०)--टीकाकार, पत-  
भाष ( १ आ० )--चमकना, प्रमत्त में  
जाना, जगदिर होना । स्त्री०--  
चमक, मोम, किरण, प्रभाष,  
दृष्टा ।  
भाष ( पु० )--शोभा, चमक, नयाल,

मुग्धा, गिह, गोष्ठ, एक कवि ।  
 भास्यन (न०)-धमकना, प्रकट होना ।  
 भास्य (पु०)-मूर्ख, मूर्ख ।  
 भास्कर (पु०)-मूर्ख, अग्नि, योद्धा,  
 एक व्यंतिषी का नाम । न०-  
 स्वर्ण ।  
 भास्वत् [धान] (वि०)-धमकीला,  
 धमकदार । पु०-मूर्ख, प्रकाश,  
 शोभा, धीर । ।  
 भास्वत् (वि०)-रस का रस हुआ ।  
 भिद् (१भा०)-पूँदना, भागना, भीख  
 भागना, प्राप्त करना ।  
 भिक्षण(न०)-कक्षीरी, भीख माँगना ।  
 भिक्षा (स्त्री०)-भीख, माँगना, माँगने  
 पर दी हुई वस्तु, मजदूरी, भिक्षा ।  
 भिक्षाकर (न०)-भीख माँगना ।  
 भिक्षाकर-चार(पु०)-कक्षीर, भिक्षारी ।  
 भिक्षादन (न०)-भीख माँगते हुए  
 इधर उधर घूमना । पु०-कक्षीर ।  
 भिक्षान्न (न०)-मागकर प्राप्त किया  
 अन्न, भिक्षा में प्राप्त भोजन ।  
 भिक्षित(वि०)-मांगा हुआ ।  
 भिक्षु(पु०)-भिक्षारी, नाथ, सन्नाथी,  
 योद्धापणक ।  
 भिक्षुक(पु०)-भिक्षारी, नाथ ।  
 भिक्षुप(पु०)-योद्धापणको को सत्ता ।  
 भिक्ष(न०)-टुकड़ा, दीवार, भीत ।  
 भिक्षि(स्त्री०)-तोड़ना, टुकड़े करना,  
 दीवार, आश्रय, टुकड़ा, टूटी  
 हुई वस्तु, घटाटे, दाप, अवसर ।  
 भिक्षिका (स्त्री०)-परदा, दीवार,  
 छिपछपी । [भीर ।  
 भिक्षिपीर (पु०)-छेव लगाने वाला

भिद्(१ प०)-टुकड़े २ करना, विभक्त  
 करना । ३३०-तोड़ना, छेव लगाना,  
 खोदना । [हीरा, इन्द्रयज्ञ ।  
 भिद्क(पु०)-तलवार, राह । न०-  
 भिक्षु(पु०)-सेव बहने वाला दरिया ।  
 भिद्(न०)-धम ।  
 भिद् (वि०)-टूटा हुआ, विभक्त,  
 बल्लभ, सुखा हुआ, सुरलिल,  
 मिला हुआ ।  
 भिक्षक(पु०)-घुहानुपाधी ।  
 भिक्षिद्(वि०)-जुहनी, लत ।  
 भिक्षप्रकार(वि०)-टूटती तरह का ।  
 भिक्षद्वय (वि०)-भिक्षा द्वित फट  
 गया हो । [जाति ।  
 भिक्ष (पु०)-तीन नामक लंगड़ी  
 भिक्षक(पु०)-खोपूवृक्ष ।  
 भिक्षोद(पु०)-खोपूवृक्ष, खोपका पेड़ ।  
 भिक्षपापाय(पु०)-वैद्या में श्रेष्ठ ।  
 भिक्ष[क] (पु०)-इकीम, धैर्य, मभा-  
 लिङ्ग, औपध, प्रलाज ।  
 भिक्षय (न०)-इलाज, उपचार,  
 चिकित्सा । [अनाश ।  
 भिक्षा-विभक्त (स्त्री०)-सुना हुआ  
 भिक्षा(स्त्री०)-भात, पके हुए चावल ।  
 भो(३ प०)-हरना, खोपू जाना, भय-  
 जित होना । स्त्री०-मय, दर,  
 र्शाङ्ग, रातरा ।  
 भोत(वि०)-हरा हुआ, खोपूवृक्ष,  
 कायर । न०-दर, जय ।  
 भोति(स्त्री०)-दर, जय, शोष, कष्ट,  
 जयरा ।

भीम ( वि० )-भयानक, दरावना,  
भयङ्कर । पु० शिव, परमात्मा,  
युधिष्ठिर का छोटा भाई ।

भीमनरद ( वि० )-भयङ्कर दर्जना  
करने वाला । पु० भयानक शब्द  
या गर्जना, सिंह ।

भीमपराक्रम ( वि० )-भयानक शक्ति  
वाला । पु०-विष्णु ।

भीमर ( न० )-युद्ध, लड़ाई ।

भीमसेन ( पु० )-द्वितीय पाण्डुपुत्र,  
एक प्रकार का कपूर ।

भीमा ( स्त्री० )-दुर्गा, रोचना, एक  
नदी, चाबुक ।

भीमोदरो ( स्त्री० )-उमा ।

भीर ( वि० )-हरपोक, कायर । पु०  
भीता, शृगल । न०-चादी ।

स्त्री० हरपोक स्त्री, बकरी, छाया ।

भीर [ छु ] क ( वि० )-हरपोक,  
कायरप, शर्मांछु । पु०-भीता,  
भीदह, भालू, बलू । न०-जगल, जग ।

भीरता-त्वे=कायरता, हरपोकपन ।

भीरहृदय ( पु० )-हरिण, मृग ।

भीलु [ छु ] क ( पु० )-भालू रीछ ।

भीरु [ छु ] ( स्त्री० )-हरपोक स्त्री ।

भीषण ( वि० ) भयावता, दरावना,  
भयङ्कर । न०-भयानक वस्तु ।

भीषा ( स्त्री० )-उराने का कृत्य,  
भय, दर ।

भीष्म ( वि० )-भयानक, भयङ्कर,  
भीषण । पु०-राजस, भान्तनुपुत्र  
देवदत्त ।

भीष्मक ( पु० )-भान्तनुपुत्र देवदत्त,

विदर्भराज का नाम, जिस की  
पुत्री रुक्मिणी थी ।

भुक्त ( वि० )-भोगकिया हुआ, पामा-  
हुआ, आकाम्त ।

भुक्तशेष-वच्छिद्य ( पु० )-जूठन,  
खाकर बचा हुआ अन्न ।

भुक्ति ( स्त्री० )-भोगन, भोग ।

भुज् ( इ पु० )-भुक्ताना, भुक्ता,  
टेटाकरना । ३ स०-खाना, भक्षण  
करना, भोगना ।

भुज् ( वि० )-[ समासान्त में ] भोगने  
वाला, शासन करने वाला ।

स्त्री०-भोग, लाभ ।

भुज ( पु० )-बाजू, बाँह, हाथ, हाथी  
की सूँड़, भुकाव, शाखा ।

भुजग ( पु० )-साप, चप । [ नीर ।

भुजगा-तक भयान ( पु० )-गरुड, तेवडा,

भुजगी ( स्त्री० )-आश्लेषा नक्षत्र ।

भुजङ्ग ( पु० )-साप, सर्प, शार, पति,  
आश्लेषा नक्षत्र, ८ का जड़ ।

भुजङ्गन ( पु० )-सर्प, साप, राहु । न०-  
सीसक, सीसा । [ की देल ।

भुजङ्गलता ( स्त्री० )-ताम्बूली, पान

भुजङ्गीश ( पु० )-वासुकि, शेष, पतञ्जलि,  
भिंगल इति ।

भुजदण्ड ( पु० )-घाथ की समान दंड ।

भुजमूल ( न० )-कन्धा, स्कन्ध ।

भुजा ( स्त्री० )-बाजू, बाँह, भोग,  
हाथ, चक्राकृति ।

भुजाकण्ट ( पु० )-माखन, नल ।

भुजामध्य ( पु० )-कोहमा, छाती ।

भुजि ( पु० )-जगिन, भाग ।

भुजिप्य(पु०)-दास, नौकर, रोग ।  
भुजिप्या (स्त्री०)-नौकरानी, दासी,  
वेरवा, रणही ।

भुज्यु(पु०)-वर्तन, अग्नि, भोजन, यज्ञ ।  
भुज् ( १ जा० )-नहारा देना, लेना,  
चुनना । [ मिठाई ।

भुमुंरिका ( स्त्री० )-एक प्रकार की  
भुवन ( न० )-संचार, लोक [ भुवन  
या दुनियाजों का नन्द्यर तीगवा  
चौदह ई ], पृथिवी, स्वर्ग, जीव-  
धारी, नमुप्य, जल, चौदह का जल ।  
भुवनत्रय ( न० )-पृथिवी, अन्तरिक्ष  
और द्यौः मान लोक लोक जयदा  
द्यौः, पृथिवी और पाताल ।

भुवनवावनी(स्त्री०)-गगनदी ।  
भुवनेश(पु०)-राजा, पृथिवीपति ।  
भुवनेश्वर(पु०)-राजा, शिव ।  
भुवन्पु(पु०)-स्वामी, माणिक, चन्द्रना,  
सूर्य, अग्नि ।

भुषः [ रू-सू ] ( ज० )-अन्तरिक्षलोक,  
ईश्वर, तीन व्यावृत्तियों में से एक  
[ भूभुषः स्वः ] ।

भुवि[स्] (पु०)-समुद्र, सागर ।  
भू ( १ प० )-हीना, वर्धमान रहना,  
उत्पन्न होना, संचित होना, जीना  
भू (वि०)-[समाप्तान्त में ] होनेवाला,  
वर्धमान, उत्पन्न । पु०-विष्णु,  
होमाग्नि । स्त्री०-पृथिवी, समार,  
भूमि, नमीन, तीन व्यावृत्तियों  
में से प्रथम । [ पु०-अधेग ।

भूठ( अस्त्री० )-गार, धूरास, काल ।  
भूकम्प(पु०)-भूपाट, पृथ्वी का कंपना ।

भूकण(पु०)-पृथ्वी का व्यास ।  
भूकण(पु०)-पृथ्वी का अन्दरूनी भाग,  
विष्णु, चतसूति ।

भूकृ-वेद(न०)-तद्व्याना ।  
भूगोल(पु०)-पृथ्वी, समार या ग्लोब,  
जुगराफिया ।

भूगोलयिद्या ( स्त्री० )-जुगराफिया,  
जलपट का वृत्तान्त ।

भूत(वि०)-हुमा र, उत्पन्न, प्राप्त ।  
पु०-पुत्र, शिव, कृष्णपल । न०-  
जीवधारिमात्र, ज्ञानदार, प्रेन;  
पृथ्वी, अपस्, तपस्, वायु और  
आकाश नामक पदार्थभूत, धीता  
हुमा काल, उत्पन्नता ।

भूतकाल ( पु० )-धीता हुमा समय,  
गुह्यता जमाना । [ भाना ।

भूतकान्ति (स्त्री०)-भूतप्रेम का चद  
भूतगण(पु०)-प्राणिसमूह, प्रेतों का  
समूह । [ वर प्रेत चद गया हो ।

भूतयस्त (वि०)-जिस के लिये भूत  
भूतयाम (पु०)-ज्ञानदारों का समूह,  
प्राणिधर्म, शरीर । [ नदारभाय ।

भूतदया(स्त्री०)-जीवधारियों के प्रति  
भूतधारिणी(स्त्री०)-भूमि, पृथ्वी ।

भूतभाष(पु०)-शिव, परमात्मा ।  
भूतपल(पु०)-कृष्णपल ।

भूतपूर्व(वि०)-जो पूर्व हो चुका हो ।  
भूतयज्ञ(पु०)-पशुयज्ञों में से एक, जिस  
में समस्त प्राणिकों को बलि  
दो जाती है ।

भूतल(न०)-पृथ्वी की सतह ।  
भूतारमा ( वि० )-जिस की आत्मा



पवित्र हो गई हो । पु०-जीवात्मा,  
 प्रज्ञा, शिव, विष्णु, ब्रह्म ।  
 भूतानुकम्पा(स्त्री०)-भूतदया ।  
 भूतान्तक ( पु० )-मृत्यु का देवता,  
 यमराज ।  
 भूति ( स्त्री० )-भाव, विद्यमानता,  
 उत्पत्ति, कुशल होने, अभ्युदय,  
 कामयाबी, सम्पत्ति, शोभा, राख,  
 भूला नाश ।  
 भूतिक(न०)-कर्पूर, चन्दन ।  
 भूतिकर्म[न] (न०)-मंगलमय उत्सव,  
 स्वीहार ।  
 भूतिकाम ( वि० )-मंगल की इच्छा  
 करने वाला । पु०-राजमत्री,  
 बृहस्पति । [याम ।  
 भूतण(पु०)-एक प्रकार की शुद्धिभक्त  
 भूदार(पु०)-सृजर, शृकर ।  
 भूदेव-सुर(पु०)-प्राज्ञ, विप्र ।  
 भूधन(पु०)-राजा, शासक ।  
 भूपर(पु०)-पर्यंत, शिव, कृष्ण, रात  
 का अंक ।  
 भूप(पु०)-पर्यंत, पहाड़ ।  
 भूगता[र] (पु०)-दार्किन, शासक ।  
 भूप(पु०)-राजा, दार्किन, भूपति ।  
 भूपति(पु०)-राजा, शिव, ब्रह्म ।  
 भूपद(पु०)-घट, घेह । [नि पंरा ।  
 भूपरिः(पु०)-पृथिवी का चारों ओर  
 भूपवित्र(न०)-नी वा मोघर ।  
 भूपाल ( पु० )-राजा, पृथिवीपति,  
 भोजराज । [राजन ।  
 भूपद-भुन( पु० )-मंगल यह, नरक  
 भूपदान(न०)-भूमि का दान देना ।

भूभाग(पु)-प्रदेश, भूमि का टुकड़ा ।  
 भूभुज्(पु०)-राजा, दार्किन ।  
 भूभुव(पु०)-पर्यंत, राजा, विष्णु ।  
 भूमयडल(न०)-पृथिवी का घेरा ।  
 भूमन् ( पु० )-आधिक्य, बहुतायत,  
 सम्पत्ति । न०-पृथिवी, प्रान्त,  
 प्रदेश, शीव । [हुआ ।  
 भूमय(वि०)-पार्थिव, पृथ्वी का घना  
 भूमि(स्त्री०)-पृथ्वी, जमीन, प्रान्त,  
 प्रदेश, स्थान, १ का वाचक ।  
 भूमिक्प(पु०)-भूचाल, भूकम्प ।  
 भूमिकर(पु०)-लगान, मालगुजारी,  
 जमीन की पैदावार का जो भाग  
 राजा चढ़ण करता है ।  
 भूमिका (स्त्री०)-पृथ्वी, भूमि, जमीन,  
 नकान की मजिद, नाटक की  
 घोषक, प्रस्तावना, दीयाचा ।  
 भूमी(स्त्री०)-भूमि ।  
 भूमीन्द्र ( पु० )-राजा, नृप ।  
 भूयश. [ स् ] ( न० )-बहुत ही, अधिक  
 से अधिक ।  
 भूयस् [ : ] (न०)-पुन, फिर, बहुत ही ।  
 भूपिष्ठ ( वि० )-अतिथय, बहुततर ।  
 भूरि (वि०)-प्रचुर, बहुत । पु०-विष्णु,  
 ब्रह्म, शिव । न० स्थान, घोंगा ।  
 भूरिगन ( पु० )-गदंग, गंधा ।  
 भूरिगाय ( वि० )-बहुल उल याता ।  
 पु० गीदर, गंगाल ।  
 भूरिग [ स् ] (न०)-बहुत, बहुतवार ।  
 भूरिगवा [ स् ] ( पु० )-चन्द्रयमीप  
 राजा भोजन दान या पुत्र, एक राजा  
 भूज ( पु० )-जपने गान में सम्बल

प्रधान प्रसिद्धवृक्ष, भोजपत्रका वृक्ष।  
भूजपत्र (पु०)-पूर्ववत् ।

भूलता (स्त्री०)-केंचुए, जन्तुविशेष  
औ पानी घरखने के समय जमीन  
से निकलते है ।

भूशय (पु०)-पृथिवी में रहने वाले  
नकुलगोपादि जन्तु ।

भूप ( १ प०, १० उ० )-समाना, शरी-  
रादि की बनावट करना ।

भूयण ( न० )-अलंकार, सजने की  
सामग्री, जेवर, गहना । पु०-विष्णु ।

भूपित ( वि० )-अलंकृत, सजित,  
सजा हुआ ।

भूष्ण (वि०)-होनेवाला, भविष्य ।

भृ ( १ उ० )-पालनकरना, पोषण  
करना । ३ उ०-धारण करना,  
पोषण करना ।

भ्रुकुथ [स] ( पु० )-बह पुरुष जो ब्रुकु-  
टी द्वारा अपने अभाष्ट को बत-  
ताता है, स्त्री का वेश धारण-  
कर्ता नट ।

भ्रुकुटि-टी ( स्त्री० )-भौं, भ्रूकुटि,  
भौं का बढ़ागा, त्पौरी बदलना ।

भ्रु ( पु० )-मुनिविशेष, शिष्य, शुक्र-  
ग्रह, जमदग्नि ।

भ्रुपति ( पु० )-भ्रु के वश का पति,  
परशुराम । [ चार्य ]

भ्रुसुत-पुत्र ( पु० )-परशुराम, शुक्रा-

भ्रुग ( पु० )-भ्रुनर, भौंरा, भ्रुगराज,

भगरा, कलिंग पक्षी । न०-अवरक ।

भृंगरिट-टि(पु०)-शिवका द्वारपाल ।

भृगाभीष्ट ( पु० )-भौंरा को प्रिय,  
आसपुष्ट ।

भृंगारि [लि] का (स्त्री०)-फिलिडका  
भृंगारी (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

भृज् ( १ आ० )-भूजना, भजन ।

भृजक (वि०)-भजदूर, वेतनभोगी ।

भृति (स्त्री०)-भरण, पोषण, पालन,  
वेतन, भजदूरी ।

भृत्य (पु०)-दास, गुलाम, नोकर ।

भृश ( ४ प० )-तीव्र निरना, अघः-  
पात होना ।

भृश ( वि० )-भज्युक्त, शक्तिशाली,  
अत्यधिक ।

भृशस् (अ०)-बहुत, अधिक, अतिशय ।

भृष्ट ( वि० )-भुना हुआ, पानी के  
बिना रेत और आग से संयोग से  
प्रका हुआ ।

भृ(६ प०)-फिड़कना, पालना, भूजना,  
धिक्कारना ।

भेक (पु०)-मैंडक, वायुरूप, बादल ।

भेकभृग् (पु०)-साप, सर्प ।

भेकरव-शब्द (पु०)-मैंडक की आवाज ।

भेड (पु०)-हव, मेघ, मैंडा ।

भेड् (पु०)-मैंडा, मेघ ।

भेद (पु०)-टूट, पृथक्करण, जुदा  
करना, फाड़ना, फूँक, राजनीति  
का एक अंग ।

भेदक ( वि० )-भेद करने वाला,  
जुदा करने वाला, विशेषण,  
विदारक ।

भेदकर-कृत (वि०)-भेद करने वाला,  
फगड़ा पैदा करने वाला ।

भेदन ( वि० )-फाड़ने वाला, काटने  
वाला । न०-फूट का घीन घीना,

जुदा करना, झगड़ा । पु०-सूअर ।  
भेदबुद्धि ( वि० )-ब्रह्म को चसार से  
अलग मानने वाला ।

भेदवादी [ न् ] ( पु० )-द्वैतवादी, जीव  
ब्रह्मकी सत्ता पृथक् माननेवाला  
भेदिका ( स्त्री० )-नाश, मर्यादा ।

भेदित ( वि० )-विदारित, फाड़ा हुआ ।

भेदी [ न् ] ( वि० )-भेद डालने वाला ।

भेद्य ( वि० )-विदार्य, फाड़ने लायक ।

भेरि-री ( स्त्री० )-नहारा, बड़ा ढोल ।

भैरवह ( वि० )-सयानक, भयमद । न०-  
गर्भधारण, हगल ।

भैरवह ( पु० )-भोदह, शृंगार ।

भेठ ( वि० )-कायर, हार्यक, सुखं, अ-  
न्धिर, उचा, तेज । पु०-किप्रती,  
गीका, घेड़ा ।

भेय ( स्त्री० )-हरना, खीन मानना ।

भैषज ( वि० )-चंगा करने वाला, चिकि-  
त्सक । न०-दवाई, औषध ।

भैषजांग ( न० )-दवाई का अंग, औषध  
का अनुपान ।

भैषज्य ( वि० )-चिकित्सा के योग्य ।

भैस ( वि० )-भिता गांग कर जीने  
वाला । न०-भीरा, भिसा ।

भैसभीविका-युनि ( स्त्री० )-बकीरी ।

भैस्य ( न० )-भिसा, भोस ।

भैमी ( स्त्री० )-भीमराजा की पुत्री,  
दमपत्नी, माघ के शुक्लपक्ष की  
एकादशी ।

भैष ( नि० )-भयानक, भीषणाक,  
भीषण । पु०-भैषभेद; भय, रागभेद  
भैरवी ( स्त्री० )-दुर्गा का भेद, एक

रागशी का नाम । [ पञ्ची ।

भैषज ( न० )-दवाई, औषध । पु० लाघक  
भैषज्य ( न० )-औषध, दवाई, चिकि-  
त्सा, इलाज ।

भैष्मकी ( स्त्री० )-विदर्भराज भीष्मक  
की पुत्री, रुक्मिणी ।

भोः [ च् ] ( प्र० )-हे, अरे, सम्बोधन ।

भोक्ता [ च् ] ( वि० )-भोगने वाला, अनु-  
भवकर्ता, शासक, काविक । पु०-  
पति; राज, मेगी ।

भोग ( पु० )-सुखदुःखादि का अनुभव,  
हस्तेमाल, स्वभोग, शासन, भैष्म-  
कर्म, दावत, भोजन, देवता पर  
बढ़ाया हुआ अन्न, लाभ, आनन्दनी  
धन, सर्व का कण, शरीर ।

भोगकर ( वि० )-आनन्ददायक ।

भोगसह ( न० )-अनाना, अन्तःपुर । ए

भोगतृणा ( स्त्री० )-सांसारिक सुखों  
की चूल्हा ।

भोगधर ( पु० )-सांप, सर्प ।

भोगपति ( पु० )-प्राप्तिक शासक ।

भोगभूमि ( स्त्री० )-स्वर्ग, पृथ्वी ।

भोगवती ( स्त्री० )-पातालगंगा, चन्द्र-  
मास की द्वितीया ।

भोगवस्तु ( न० )-भोगने की चीज ।

भोगस्थान ( न० )-शरीर, अन्तःपुर ।

भोगिक ( पु० )-साहस, अत्यरक्षक ।

भोगिनी ( स्त्री० )-राजा की उपपत्नी ।

भोगिपत्न्य ( न० )-पत्नी ।

भोगी [ च् ] ( पु० )-सर्प, सांप, राजा, घागा-  
पक्ष, नायित, नाद । वि०-भोगने  
वाला, भोक्ता । [ अन्तर्देव ।

भोगीन्द्र-देव ( पु० )-भैषजांग, चाणुकि,

भोग्य(वि०)-भोगनेके योग्य, बरदाश्त करने लायक। न०-भोग्यपदार्थ, धन, दौलत, धान्य।

भोज(पु०)-मालवाप्रदेशान्तर्गत धारानगरी का एक प्रसिद्ध राजा, एक विद्वत्भारज। [ वाला।

भोजक ( वि० )-खिलाने वाला; खाने भोजन(पु०)-विष्णु, शिव। न०-खाना खाद्यपदार्थ, अन्न खाना, भोग, सम्पत्ति।

भोजनत्याग(पु०)-तपस्यासु; रोजा।

भोजनमारुह( न० )-खाना खाने का वर्तन। [ भोजनशाला।

भोजनभूमि(स्त्री०)-खाने का कनरा,

भोजनारुहादन(न०)--खानाकपड़ा।

भोजनीय(वि०)-खाने योग्य, खाद्य।

भोजी [ भू ] (वि०)-[ समासान्त में ] खाने वाला, भोक्ता।

भोज्य(वि०)-खानेयोग्य, भोगने योग्य। न०-भाजन, सुराह।

भोज्यफाल(पु०)-खाना खानेका समय।

भोट(पु०)-तिब्बत प्रदेश।

भोलि(पु०)-ऊट, चट्ट।

भौह(पु०)-तिब्बतनियासी।

भौत ( वि० )-भूतसम्बन्धी, भौतिक, पामल। पु०-भूतो की पूजा करने वाला, देवल, भूतयज्ञ।

भौतिक ( वि० )-जीवधारियों से सम्बन्ध रखने वाला, पचभूतो का बना हुआ, भूताक्रान्त। न०-भौतिक पदार्थ, गोती।

भौतिकविद्या ( स्त्री० )-ब्रह्मज्ञान, नाजीगरी।

भीपाल(पु०)-राजकुमार।

भीम(वि०)-भूमिसम्बन्धी, पार्थिव।

पु०-मगल ग्रह, जल, मकाश, अग्नि ऋषि।

भीमवार(पु०)-मगलवार।

भीमिक-मय ( वि० )-पार्थिव, पृथिवी पर रहने वाला। [ खड़ाश्वी।

भीरिष् ( पु० )-स्वर्णकोपाध्यक्ष,

भीव[न] न (पु०)-विश्वकर्मा।

भ्यस्(१ आ०)-हरना, खोफ खाना।

भ्रश ( १ आ०, ४ पु० )-नीचे गिरना, भटकना, खो देना, बच भागना, च्यून होना, लप्ट होना।

भ्रश [ भ ] (पु०)-गिरावट, फिसलना, नाश, अभाव, लुप्तता, त्याग।

भ्रकुटि-टी ( स्त्री० )-भैंस का चढ़ाना, भ्रमग।

भ्रक्ष(१ उ०)-खाना, भक्षण करना।

भ्रञ्जन(न०)-भूमना।

भ्रम् ( १, ४ पु० )-घूमना, भटकना, इधर उधर फिरना, फैलना, भूम में पड़ना, गलती करना।

भ्रत (पु०)-निश्चयाज्ञान, कुछ का कुछ समझना, चक्रगति, गलती, अशुद्धि, खबड़ाहट, आवर्त, कुम्हार का चक्र, चक्की, करना।

भ्रमण ( न० )-घूमना, चक्कर काटना, दिलना, अस्थिरता, सैर।

भ्रमर(पु०)-मधुकर, भौरा, मधुमक्षिका।

भ्रमरक ( पु० )-मधुमक्षिका, आवर्त, अस्त्री०-ब्रुम्ह, केशमुच्छ, खेलने की गेंद।

भूमाकुल(वि०)-घघराया हुआ ।

भूमि ( स्त्री० )--चारो ओर घूमना,  
कुम्हार का चक्र, आवर्त, भ्रम,  
अशुद्धि ।

भूशु=भूशु । [ कता, कूरता ।

भूशिमा [ न ] ( पु० )--ज्वादाती, अधि-  
भूषण(वि०)-रूप, अधःपतित ।

भूशु(६३०) [ भूजति ]-पकाना, भूना  
भूज(१ आ०)-चमकना ।

भूजपु(पु०)-शोभा, चमक; दीप्ति, काति  
भ्रान्तिष्णु ( वि० )-दीप्तिशाल, चमकने  
वाला ।

भ्राता [ त ] ( पु० )-भाई, सौंदर,  
गहरा दोस्त, धान्ध्य

भ्रातृक ( वि० )-भ्राता सम्बन्धी ।

भ्रातृज ( पु० )-भाई का पुत्र; भतीजा  
भ्रातृजाया ( स्त्री० )-भाई की पत्नी,  
भायज ।

भ्रातृद्वितीया ( स्त्री० )-भैयादोपज,  
कार्त्तिक धृता द्वितीया ।

भ्रातृपुत्र-भ्रातृपुत्र ( पु० )-भाई का  
पुत्र, भतीजा [ शत्रु ।

भ्रातृपुत्र ( पु० )-भाई का पुत्र, भतीजा,  
भ्रातृपुत्र(ग०)-भाईपुत्र, भाईपुत्र ।

भ्रातृपुत्र(वि०)-भाई या भाईयांवाला  
भ्रातृपुत्रपुत्र(पु०)-पति का सहा भाई,  
पुत्र । [ स्त्री । पु०-भतीजा ।

भ्रातृपुत्र-पुत्र(वि०)-भाईका, भ्रातृपुत्र-  
भ्रातृ ( वि० )-मित्रप्राप्त वाटा,  
पुत्रवाटा । ग०-भ्रमण, घूमना ।

भ्रान्ति(स्त्री०)-भ्रमण, घूमना, भ्रम-  
वापेक्षण, भ्रम, भ्रम, भ्रन्देह ।

भ्रान्तिमान्[मत्](वि०)-घूमने वाला ।  
भ्राम(०)-घूमना, भ्रमण, धोखा, माया  
भ्रामक ( वि० )-ब्रह्मकाने वाला, धोखे-  
वाज, भ्रमाल, गोदह, ठग ।

भ्रामर ( न० )-नधु, शहद । अस्त्री०-  
अयस्कान्त, चुम्बक पत्थर ।

भ्राशु(१,४आ०)-चमकना, रोशनहोना  
भ्राष्ट्र(पु०)-प्रकाश, ईश्वर नामक वायु ।

अस्त्री०-भूमने की कड़ाही ।

भ्रु [ भ्रु ] कुश [ ख ] ( पु० )-स्त्री वेश में  
अभिनयकर्ता पुरुष ।

भ्रू ( स्त्री० )-भौं, भवें, आसके ऊपर  
यात्रो की कतार । [ बदलना ।

भ्रूक्षेप ( पु० )-भौं का चढ़ाना, तपीरी  
भ्रूण ( १० आ० )-आशा करना, बृष्टा

करना, भरोसा करना, हरना ।  
भ्रूण ( पु० )-गर्भस्थित बालक, बच्चा,

स्थिरता का गर्भ ।  
भ्रूणहत्या ( स्त्री० )-गर्भ गिराना, गर्भ

का नारना । [ बदलना ।  
भ्रूमंग ( पु० )-भौं का चढ़ाना, तपीरी

भ्रूमध्य ( ग० )-दोनों भौं के बीच का  
स्थान ।

भ्रूज ( १ आ० )-चमकना ।  
भ्रू [ भ्रू ] प् ( १३० )-धीना, चलना,

जाना, गिरना, टरना ।  
भ्रूय ( पु० )-दूरवत्, गति, अपने स्थान

से रूपत होगा ।

स

म-पदमंश पशुम अक्षर । पु०-नाल,  
विष, मन्तरजगतर, पशु, विष,

शिव, ग्रन्था, यम, पञ्चन स्वर ।

न०-जल, इर्थ ।

मह्(१ आ०)-सगना, यदना, देना ।

मकर(पु०)--नाका, मगरमच्छ, चारह  
राशियों में से दशवीं ।

मकरकुरहल(न०)--कणामयल ओ मगर  
के स्वरूप का होता है ।

मकरकेतल-केतु(पु०)--कामदेव, मयन ।

मकरध्वज(पु०)--पूर्ववत् ।

मकरन्द(पु०)--पुष्परस, मूल का शब्द ।

मकरसप्तमी (स्त्री०)--माघ मास की  
छहठा सप्तमी ।

मकरी [न] (पु०)-समुद्र, सागर ।

मकुट=मुकुट ।

मकुति (पु०)-गूढ़शासन ।

मकुर (पु०)-माइना, दर्पण, कली ।

मकुल (पु०)-चकुलवृक्ष, कली ।

मकूलक (पु०)-कली, दन्तीवृक्ष ।

मवक् (१ गा०)-जाना, हरकत करना ।

मक्कुल (पु०)-गेह ।

मक् (१ प०)-इकट्ठा करना, ढेर  
लगाना, झुहु होना ।

मल (पु०)-श्लेष्म, कपट, गिरीह ।

मलिक (पु०)-मक्खी, मधुगच्छी ।

मलि [स्त्री] का (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

मलिकामल (न०)-नीम ।

मल्-मल् (१ प०)-जाना, देना ।

मगध (पु०)-एक देश, बिहार का  
दक्षिण भाग, चारण । बहु०-म  
गधदेशनिवासी ।

मगधेश्वर (पु०)-जरासन्ध, मगध  
देश का राजा ।

मगधोद्भवा (स्त्री०)-पिप्पली, मघ ।

मघ (पु०)-एक द्वीप, एक देश,  
आनन्द, विलास ।

मघव (पु०)-एन्द्र ।

मघवत् (पु०)-पूर्ववत् ।

मघवा [वत्] (वि०)-कौराज, चमार ।

पु०-इन्द्र, व्यास, पैयक ।

मक् (१ आ०)-सजाना, जाना ।

मकिंल (पु०)-यनागिन, दायाग्न ।

मकुर (पु०)-माइना, दर्पण ।

मक्कु (अ०)-क्षीरन, लुप्त ।

मग् (१ व०)-जाना, हरकत करना ।

मद्गल (पु०)-मद्गल यद्ग, अग्नि । वि०

शुभ, आनन्ददायक, सौभाग्य-

वान् । न०-सुख, आनन्द, चरकत ।

मगलछाया (पु०)-यद्ग का पेड़,  
बटवृक्ष ।

मगलमदा (स्त्री०)-हरिद्रा, हल्दी ।

मगलप (न०)-चन्दन, सोना, स्वर्ण,

सिन्दूर । पु०-अश्वत्थ, नारिकेल,

विल्व, कपित्थ । वि०-मगलकर,

सुन्दर ।

मगल्या (स्त्री०)-शयपुष्पी, यक्ष,

हरिद्रा आदि औषधियों का नाम ।

मङ्गिनी (स्त्री०)-गीका, नाय ।

मक् (१० आ०)-कृपा करना, ठगना,  
अभिनानी होना, पूजा करना ।

मच्चिका (स्त्री०)-प्रथस्त, बहुत  
बच्छा [यद्ग शब्द सञ्ज्ञावाचक  
शब्द के अन्त में आता है] ।

मज्जन (न०)-स्नान, नहाना, मज्जा ।

मज्जसमुद्भव (न०)-मज्जा से उत्पन्न

अर्थात् शुद्ध, सीयं ।

मज्जा ( स्त्री० )—अस्विसार, चर्बी, किसी फल की गुठली के अन्दर का भाग ।

मज्जारस ( पु० )—मज्जा का रस अर्थात् शुद्ध, सीयं ।

मज्ज ( पु० )—खट्टा, खाट, बांस का बना हुआ ऊँचा आसन ।

मज्जरि-री ( स्त्री० )—घरलरी, बाल, मुक्का, मोठी, तुलसी नामक वृक्ष ।

मज्जोर ( अस्त्री० )—नूपुर, पैरों की उगलियों का भूषण ।

मज्जुचोय ( वि० )—अच्छे शब्द वाला ।

मज्जुल-मंजु ( वि० )—मनोहर, खूबसूरत, सुन्दर । पु०-ममोला नामक पक्षी ।

म०-यह स्थान जो छतामो से आच्छादित हो, निकुञ्ज ।

मज्जुषा ( स्त्री० )—पिटारी, पेटिका ।

मट् ( १ प० )—नाश होना, निश्छिन्न होना

मटधी-ती ( स्त्री० )—पापाखवृष्टि, पतवार बरसना, भीला ।

मट् ( १ प० )—वास करना, रहना ।

मट ( पु० )—विद्यार्थियों का निवास-स्थान, धीर्द्विगहीस, देवमन्दिर, योगियों के रहने का स्थान, कालिज, पाठशाला, पैलगाड़ी ।

मट् ( १०४० )—भूयित करना, सजाना ।

मट्ट ( पु० )—वाक्यभेद, एक प्रकार का पाजा, विपुल समूह ।

मण् ( १ प० )—अस्पष्ट शब्द करना, बड़बड़ाना ।

मणि-णी ( अस्त्री० )—मुक्कादि रत्न, मोती

आदि रत्न, मिट्टी का पात्रविशेष, एक कीमती पत्थर । [ यह शब्द प्रायः पुस्तिक में ही आता है ] ।

मणिकर्णिका ( स्त्री० )—काशी में एक तीर्थ ।

मणिकार ( पु० )—जोहरी, मणिनिर्मित अलंकारी का बनाने वाला ।

मणिकूट ( पु० )—जिसके कूट मणिसदृश हों ऐसा पर्वत, कामरूपदेशरूप पर्वतविशेष ।

मणिसनि ( पु० )—मणियों की खान ।

मणियोध ( पु० )—कुवेरपुत्र ।

मणितारक ( पु० )—सारथ पक्षी ।

मणिपूर ( न० )—यट्चक्रान्तर्गत नाभिरूप तृतीय चक्र, अपने नाम से प्रसिद्ध देश ।

मणिबन्ध ( पु० )—हाथ का पोंछा, जिसजगह कंकण [ कड़ा ] पहिना जाता है, सेन्धे का एक पर्वत ।

मणिबीज ( पु० )—जिसके बीज मणिसदृश होते हैं अर्थात् दाहिम, अनार ।

मणिमाला-सरः—मणियों से खचित सार, मणियों की माला ।

मणीध ( अ० )—मणिसमान, मणिसदृश ।

मणह ( अस्त्री० )—सद्य अन्नो का रस, माह, सार । पु०-मैहक ।

मणहल ( पु० )—विषट्कविशेष, माहा नाम से प्रसिद्ध रोटिकाभेद ।

मणहन ( वि० )—सजाने वाला, आभूषणप्रिय । पु०-एक तत्त्ववेत्ता का नाम जिसकी शकटाधार्य में

शास्त्रार्थ में पराजित किया था ।  
न०-आभूषण, सजावट, शृंगार, प्र-  
माण और तर्क से किसी विषय  
को पुष्टि करना ।

मरहप ( पु० )-उत्सव के समय पर  
यज्ञादि के लिये बनाया हुआ  
कृत्रिम सजग, रेखा, तन्मू, शानि-  
याना, कुंज ।

मरहपन्त ( पु० )-आभूषण, सजावट,  
नट, शोभा ।

मरहल ( वि० )-गोल, घुंछु । पु०-  
गोलाकार रेखाचूड़, कुत्ता, सप-  
ने । न०-गोलाकार, घुंछ, दायरा,  
छोव, चक्र, गोलचरु, चमूह, सभा,  
प्राप्त, करद राजप ।

मरहलक ( न० )-वृत्त; दायरा; प्राप्ति;  
समुदाय; इत्येतकुष्ठ; दपण ।

मरहलित ( वि० )-गोल किया हुआ ।

मरहली [ न० ] ( पु० )-कुत्ता, चूयं, बट-  
वृत्त, प्रान्तिकशामक, सपं, बिस्ली

मरहलीक ( पु० )-करद राजा ।

मरहलीकरण ( न० )-गोलकरना, कुं-  
दली मारना ।

मरिहत ( वि० )-मज्जित, सजाहुआ ।

मरहूक ( पु० )-मैंदक ।

मरहूकयोग ( पु० )-एक योगासन जिस  
में योगी मरहूकधन बैठकर ध्यान  
समाप्ता है ।

मरहूकी ( स्त्री० )-मैंदकी, जमती स्त्री,  
कतिपय स्त्रियों का नाम ।

मरहूर ( न० )-छाँदे का खेल ।

मत ( वि० )-माना हुआ, विचार किया

हुआ, आदर किया हुआ, विश्वास  
किया हुआ, सेवा हुआ, इच्छित,  
समझा हुआ । न०-विचार, रूपाल,  
विश्वास, राय, सिद्धान्त, धार्मिक  
विश्वास, आदेश, सलाह, अनि-  
प्राय, स्वीकारी, ज्ञान ।

मतङ्ग ( पु० )-हाथी, इस्ती, बादल,  
मेघ, एक जगि ।

मतङ्गज ( पु० )-हाथी, इस्ती ।

मतझिका ( स्त्री० )-मसासप्त में यह  
शब्द श्रेष्ठ के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।

मसास ( वि० )-जुवा खेलने में दक्ष ।

मतान्तर ( न० )-विभिन्न विचार-  
विभिन्न निद्धान्त ।

मसायलम्बन ( न० )-ठिकी राम राय  
का गानना; मतविशेष का अनु-  
सरण ।

मति ( स्त्री० )-समझ, ज्ञान, प्रतिभा,  
राय, इरादा, विचार, अनुमान,  
धारणा, निश्चय, वित्त का भुकाव,  
सलाह, स्मृति ।

मतिगर्भ ( वि० )-प्रतिभाशाली, चतुर ।

मतिद्वेष ( न० )-इच्छाकराय, विचारभेद

मतिनिश्चय ( पु० )-दृढनिश्चय,  
पक्का विश्वास । [ पूर्वक ।

मतिपूर्वकम् ( न० )-इरादतन्, इच्छा-

मतिभेद ( पु० )-इच्छाकराय ।

मतिभूम ( पु० )-चित्त की परराइट,  
धोखा, झूठ । [ दार ।

मतिमान् ( मत् ) ( वि० )-चतुर, समझ-

मतिहीन ( वि० )-चूयं, बेसमझ, नादान ।

मत्क ( वि० )-मेरा, अपना, पु०-बटमल,



मत्कुण ( पु० )-सटमल, ऐसा हाथी जिसके दात बाहर को न निकले हो, बिना दाढ़ी का मनुष्य, भैंसा, नारियल ।  
 मत्त(वि०)-पागल, शराबी, गुस्ताख, बेहोश । पु०-पागलआदनी, कोयल, भैंसा, धतूरा । [भाभिनी ।  
 मत्तकाशि [चि] मी(स्त्री०)-कामिनी, मत्तकीज(पु०)-हाथी, हस्ती ।  
 मत्तगामिनी(स्त्री०)-कुलटा, असती ।  
 मत्तय(न०)-ज्ञानप्राप्ति का उपाय ।  
 मत्स(पु०)-मछली ।  
 मत्सर(वि०)-ईर्ष्या, लालची, कजूस, स्वार्थी, क्रूर । पु०-दुर्षा, द्वेष, घनवह, लालच, क्रोध ।  
 मत्स्य ( पु० )-मीन, मछली, बारह राधियो में से एक । [घनी ।  
 मत्स्यगन्धा(स्त्री०)-ठ्यासमाता, सत्य ।  
 मत्स्यघात(पु०)-मछली नारने वाला, मछेरा ।  
 मत्स्यजीवी[न] (पु०)-पूर्यवत् ।  
 मत्स्यगिहका ( स्त्री० )-घाह का बिकार, गुह ।  
 मत्स्यही(स्त्री०)-पूर्यवत् ।  
 मत्स्यधानी(स्त्री०)-मत्स्यकरगिहका, मछली रखनेकी टोकरी । [पक्षी ।  
 मत्स्यनाथक(पु०)-कुररघधी, यगुला ।  
 मत्स्यपरग ( पु० )-मछरगा नामक एक पक्षी । [ टराज ।  
 मत्स्यराज(पु०)-रोहितमत्स्य, चिरा-मत्स्यवेधन-वेधनी=बहिग, मछली पोंधने का इण्डियारविशेष, बाटा ।

मत्स्यादनी(स्त्री०)-जलपिप्पली ।  
 मत्स्यो ( स्त्री० )-स्त्री मत्स्य जाति, मादा मछली ।  
 मत्स्योदरी ( स्त्री० )-ठ्यास की माता, मत्स्यगन्धा, काशीस्थ एक तीर्थविशेष ।  
 मय-मय्(१प०)-बिलोना, मयना, बिलो-हन करना, यथ करना, नारना ।  
 मयन(न०)-बिलोचना, मयना, नारना, क्लेश देना ।  
 मयित(वि०)-मया हुआ, नारा हुआ, बिलोहित । न०-जलरहिततक ।  
 मयु [यू] रा ( स्त्री० )-अपने नाम से प्रसिद्ध नगरी ।  
 मयुरेश(पु०)-श्रीकृष्ण ।  
 मद् ( १, ४ प० )-हर्षित होगा, खुश होना, गर्व करना, अहकार करना ।  
 मद् (पु० )-भागोद, खुशी, अहकार, मृगमद, कस्तूरी, मत्तता, मस्ती, हस्तिगण्डजल ।  
 मदकट(पु०)-खायह, गुहभेद ।  
 मदकल ( पु० )-मस्त हाथी । वि०-मदोत्कट, अव्यक्तशब्द करनेवाला ।  
 मदगन्धा (स्त्री०)-मदिरा, शराब ।  
 मदन(पु०)-कामदेव, घघन्त, एक यक्ष का नाम, मैनफल्ड ।  
 मदनघनुदंशी (स्त्री०)-मदनोत्सवा-त्मिका चतुदंशी, वैश्रवणा चतुदंशी ।  
 मदनमोहन(पु०)-श्रीकृष्ण ।  
 मदनशलाका ( स्त्री० )-कामीहीनक जीपध, चारिका, कोयल ।  
 मदनसदन ( न० )-कामदेव का घर,

स्त्रीचिन्हविशेष, [ ज्योतिष में ]  
लग्न से सातवा स्थान ।

मदनावस्था ( स्त्री० )—मदनकृतदशा,  
कामियों की हालत जो कामदेव  
द्वारा होजाती है ।

मदनोत्पय ( पु० )—उत्पयविशेष, झीलि-  
कीउत्पय, झोली ।

मदयन्तिफा ( स्त्री० )—मस्तिष्कालता,  
चमेली ।

मदयित्तु ( पु० )—कामदेव, शीपिहक,  
[ फछाल ], मेघ । न०—शराय ।  
वि०—मादक, नशीला ।

मदस्थल-स्थान ( न० )—शराय पीने  
का स्थान । [ मदात्यय रोग ।

मदान्तक-अत्यय ( पु० )—गदठयाचि,  
मदार ( पु० )—इस्ती, कामुक, गन्ध-  
मेद, घनूरा, शूकर, नृपमेद ।

मदालापी [ न० ] ( पु० )—कोकिल, कोयल ।

मदिर ( पु० )—रक्तउदिर, ममोला  
पक्षी । वि०—मदकारक, मदयुक्त ।

मदिरा ( स्त्री० )—शराय, हर तरह की  
मद्य । [ भाई ।

मदिराल ( पु० )—विराट के राजा का  
मदिराली ( स्त्री० )—मत्तलोचना स्त्री ।

मदिरागृह ( न० )—शराय बनाने का  
घर, गोदाम आयकारी ।

मदीय ( वि० )—स्वकीय, मेरा ।

मटोरकट ( पु० )—मत्तइस्ती, मस्त छापी ।

मदोदृत ( वि० )—मस्त, मद से उत्पन्न ।

मद्गु ( पु० )—पलियिषेय, मर्षमेद,  
जङ्गली पशु, नीका, बेंही, घण-  
मंकर, दोगला, घगुला ।

मद्गुर ( पु० )—एक प्रकार का मत्स्य  
[ मगर ] विशेष ।

मद्य ( न० )—शराय, मदिरा ।

मद्यप ( वि० )—मद्य पीने वाला, शराबी ।

पद्यपात्र-भाषह ( न० )—शराय का घुत्तन,  
शराय का प्याला ।

मद्यपान ( न० )—शराय का पीना ।

मद्र ( पु० )—देशविशेष, मारवाड़ प्रदेश ।

मद्रक ( वि० )—मद्र देश में होने वाला,  
मारवाड़ी ।

मद्रसुता ( स्त्री० )—मद्रराजकन्या, पारहु-  
राज की दूसरी स्त्री माद्री जो  
मकुल और सहदेव की माता थी ।

मद्रा [ न० ] ( पु० )—शिव ।

मघज्य ( पु० )—वैशाख मास ।

मघु ( न० )—शहद, मद्य, शराय, कूल  
का रस, पाणी, मधुररस । पु०—  
वसन्त ऋतु, चैत्र का महीना,  
एक दैत्य का नाम, रावण का  
पिता, अशोक युद्ध । वि०—मीठा,  
सुशगवार ।

मघुक ( वि० )—मीठा, मधुर । पु०—  
वायोकयुद्ध, मधुमा, मुलहठी ।

मघुकण्ठ ( पु० )—कोकिल, कोयल ।

मघुकर ( पु० )—हंगार मक्खी, मैसी,  
मीठानीयू, मैरा ।

मघुकृत ( पु० )—शहद की मक्खी ।

मघुकांघ ( पु० )—शहद की मक्खियों  
का छत्ता ।

मघुक्षीर-क ( पु० )—समूर का पेड़ ।

मघुनायन ( पु० )—कोयल, कोकिल ।

मघुपीप ( पु० )—पूयवत् ।

मधुवृत्ता (अस्त्री०)-गन्ना, पोंछा ।

मधुदूत (पु०)-आम का पेड़ ।

मधुदुम (पु०)-आम का पेड़, आमवृक्ष ।

मधुप (पु०)-मधुमक्षिका, शराधी पुरुष ।

मधुपति (पु०)-कृष्णचन्द्र ।

मधुपर्क (पु०)-कांस्वपात्र में स्थित दही जिसमें शहद मिला हो, दधि, घी, मिश्री, पानी और शहद इन पाँचों को भी कहते हैं ।

मधुपुर-पुरी=मधुरा का नाम ।

मधुपुरुष (पु०)-अशोकवृक्ष, बकुल, दन्ती, शिरीष [चिरच] ।

मधुप्रमेह (पु०)-प्रमेह का एक भेद जिस में मूत्र के साथ नीटा जाने लगता है, प्रमेह की बढ़ी हुई हालत ।

मधुघोष (पु०)-अमार का पेड़ ।

मधुमक्षः-क्षा-सिका--शहदकी मक्खी ।

मधुमत्त [मान्] (वि०)-भीटा, मधु-युक्त, राशगवार । [शेथ ।

मधुमत्त (वि०)-शराय के कारण ये-

मधुमल्लि-लठी (स्त्री०)-मालतीलता, धमेली की बेल ।

मधुनाभय(ग०)-पैय या पैशाख ।

मधुमेह=मधुप्रमेह । [इठी ।

मधुपट्टि-ष्टी (स्त्री०)-हंस, गज्रा, मुल-

मधुर(पु०)-भीटा रस, विजौरा भीयू, गुड़ । ग०-विष, आसय । वि०-

भीटा, भनीहर, प्रिय, मूद्गमूरत ।

मधुरास(पु०)-इक्षु, गन्ना, गल ।

मधुमा (स्त्री०)-दुद्धी नामक पौध,

सूर्य, गरीइफली ।

मधुरस्त्रवा(स्त्री०)-एक प्रकार का खजूर, पिरहखजूर ।

मधुरालाप(स्त्री०)-कोकिला, कोयल मधुरिपु(पु०)-भीरुष्ण ।

मधुलिट्ट [ ह् ] (पु०)-सूर, भीरा ।

मधुलोलुप(पु०)-पूर्यवत् ।

मधुवन(ग०)-मधुदैत्य जिस में रहता है यह वन, मधुरापुरी के पास एक वन, किच्छिन्धा नगरी में बहुत मधुवाला एक वन ।

मधुशेप ( अस्त्री० )-शहद का बाँझा माग, सिकृष्क, मोम । [का मित्र ।

मधुसख-सारथि(पु०)-कामदेव, वसन्त मधुहा[न्] (पु०)-विष्णु ।

मधुलिष्ट(ग०)=मधुशेप । [नगर ।

मधुपत्र (अस्त्री०)-मधुरापुरी, मधुरा मधूलक(पु०)-जलजमधूक वृक्ष ।

मध्य (ग०)-बीच, बीचका क़द [शरीर का ], कमर, बीचका भाग, पेट, परार्ध संख्या से छोटी संख्या । वि०-न्याय्य, इन्साफ़युक्त, मध्य-स्थ ।

मध्यगन्ध(पु०)-आसय, आमका पेड़ मध्यत.[स्] (ग०)-बीच में, बीच से ।

मध्यदेश (पु०)-किसी चीज़ का बीच का भाग, हिमालय और विन्ध्य-देश के बीच का भाग, दक्षिण में एक सूत्रा । [ दीपहर ।

मध्यन्दिन (पु०)-दिन का मध्यभाग;

मध्यम(वि०)-बीचका, मध्य में हुआ, मध्यला, स्वरों में पाँचवां [मुर],

गानशास्त्र में चतुर्थ स्थर । न०—  
शरीर का मध्य भाग ।

मध्यमपदलोपी [ न ] (पु०)—व्याकरण  
शास्त्र में एक प्रकार का समास  
जिस में मध्यमपद का लोप हो  
जाता है जैसे-शाकप्रियः प्रायिष्यः=  
शाकप्रायिष्यः में ।

मध्यमपाण्डव (पु०)—पाण्डु का वि-  
जला पुत्र अर्जुन ।

मध्यमसूतक (पु०)—छेती करने वाला  
मीकर, किसान, कृषक ।

मध्यमलोक (पु०)—पृथिवी, बीचकालोक  
मध्यमसाहस (न०)—दूसरे के कपड़े  
आदि का फाड़ना फेंकना आदि,  
दिना सोचे गौर से कोई काम  
करना । पु०—दण्डविशेष, पु०० पण  
का दण्डविशेष ।

मध्यमा (स्त्री०)—दृष्टरजस्कानारी,  
बीच की उगली, एक प्रकार की  
बाणी, नायिकाभेद ।

मध्यरात्रि (पु०)—माधी रात का समय,  
तिथीय, रात्रि का बीच ।

मध्यलोकपाल (पु०)—राजा, भूपति ।

मध्यवर्ती [ न ] (वि०)—मध्यस्थ, वादी  
और प्रतिवादी के बीच में रहकर  
उन का निपटेरा करने वाला,  
मुनि ।

मध्या (स्त्री०)=मध्यमा ।

मध्याह्न (पु०)—दोपहर ।

मध्यामव (पु०)—मधूकपुष्पकृत आसव,  
माधवीक नामक श्राव ।

मन् ( १५०, १० आ० )—पूजा करना, जह-

कार करना, उत्सार करना ।  
६, ४ आ०—ग्रोध होना ।

मनन ( न० )—अनुचिन्तन, विचारणा,  
अभ्यास करना, जानना ।

मन.शिल-ला=मैनशिल नामक जीवध  
मनस् [ : ] (न०)—सम्पूर्ण इन्द्रियों का  
मेरक अन्तरिन्द्रिय, मन, चित्त,  
ग्यारहवें इन्द्रिय ।

मनसा (स्त्री०)—मास्तीक मुनिकी माता  
जरतकाक मुनि की पत्नी, वायुकि  
की महिमा ।

मनसिज (पु०)—कामदेय, अनग ।

मनसिधप (पु०)—पूर्ववत् ।

मनस्ताप (पु०)—अनुताप, मनकी पीड़ा  
मन [ न- ] स्थ ( वि० )—मन में स्थित,  
अन्तःकरणस्थित ।

मनस्विन् [ स्वी ] (वि०)—मशस्तमनस्क,  
परिहृत, दाना, धड़े दिल वाला ।

मनस्विनी (स्त्री०)—दाना स्त्री, धर्मो-  
त्सा स्त्री, दुर्गा, चन्द्रमा की माता

मनाकु (अ०)—ईषत, थोड़ा, अल्प, मन्द  
मनायी-धी (स्त्री०)—मनु की स्त्री ।

मनित (वि०)—ज्ञात, जाना हुआ । [ चाह

मनीया (स्त्री०)—पुष्टि, इच्छा, अकूल,

मनीपी [ न ] (वि०)—परिहृत, बुद्धियुक्त,  
मनीयावाला ।

मनु ( पु० )—एक प्रजापति, धर्मशास्त्र  
का निर्माता एक मुनि, प्रस्ता से

उत्पन्न मुनि । स्त्री०—मनु की स्त्री  
मनुज (पु०)—मनुष्य, आदमी । वि०--

मनु से उत्पन्न ।

ममृताट् [ ख ] (पु०)—दुयेर ।

मनुषी-प्यो ( स्त्री०)--मानुषी, मनुष्य  
की स्त्री, नारी ।

मनुष्य(पु०)--जन, आदमी, नर, मानव  
मनुष्यधर्मो[न्] (पु०)--धर्म का राजा,  
कुवेर । [ यज्ञ ।

मनुष्ययज्ञ(पु०)--अतिथिपूजन, अतिथि-  
मनोजय-जयस(वि०)--वित्तुल्य, पिता  
के सदृश, अतिथि जेगवाला ।  
मनोजवा(स्त्री०)--अग्निकी एक जिह्वा,  
फात्तिकेय की माताओ का भेद,  
वेगवती स्त्री ।

मनोज ( वि०)--मनोहर, सुन्दर, मन-  
जीरु, मंजल, रुचिर ।

मनोज्ञा(स्त्री०)--मन शिला, मदिरा ।

मनोभव-योनि(पु०)--मनविज ।

मनोरथ (पु०)--इच्छा, इच्छादिश, मन  
की अभिलाषा ।

मनोरन(वि०)--मन को रमाने वाला,  
मनोहर, पारु, रुचिर ।

मनोरमा (स्त्री०)--गोरोचना, युद्धि-  
शक्तिविधेय एक ग्रन्थ का  
नाम ।

मनोहर (वि०)--मनोह, सुन्दर, रुचिर  
न०--धोना, स्वर्ण । पु०--कुन्दवृक्ष ।

मनोहरा (स्त्री०)--पमेली, पीछे रंग  
की लड़ी ।

मनोहर्ता [न्] (वि०)--मन को हरने  
वाला, मनोहर ।

मनोहारी [न्] (वि०)--पूर्ववत् ।

मन्थय ( वि० ) -ममनीय, विचार्यं,  
गानने कि योग्य । न०--विचार

मन्ता[न्](वि०)--विद्वान्, गानने वाला

मन्तु (पु०)--अपराध, कसूर, मनुष्य,  
प्रजापति, प्रजा का मालिक ।

मन्त्र ( पु० ) -वेदभेद, गुप्तभाषण,  
सलाह, सम्मति ।

मन्त्रकृत् (पु०)--मन्त्री, यजीर । वि०-  
सलाह करने वाला ।

मन्त्रगूढ (पु०)--गुप्तचर, दूत ।

मन्त्रगृह (न०)--सलाह करने का घर,  
मन्त्रालय ।

मन्त्रजिह्व (पु०)--अग्नि, आग ।

मन्त्रज्ञ ( वि० )--मन्त्र का जानने  
वाला । पु०--दूत, चर ।

मन्त्रय चा=सलाह, एकान्त में कर्त्त-  
व्यकर्म का निश्चय करना

मन्त्रदाता [ तृ ] ( वि० )--मन्त्र देने  
वाला, गुरु । [ किया हुआ ।

मन्त्रपूत ( वि० )--मन्त्र द्वारा पवित्र  
मन्त्रविद् ( वि० )--मन्त्र का जानने

वाला, दूत, चर ।

मन्त्री [न्] (पु०)--अमात्य, यजीर ।

मन्थ (पु०)--मथनदण्ड, मथानी, सूर्य,  
आक का पेड़, धिलोना, एक

प्रकार का दवाय ।

मन्थन (न०)--नवनीत, मक्खन ।

मन्थन ( पु० )--मथानी, धिलोने का  
दण्ड, रई । न०--धिलोना, मथना ।

मन्थनघटो ( स्त्री० )--दही धिलोने  
का पात्र, दही की मटकी ।

मन्थर(वि०)--मन्द, मूर्ख, मूख, जत-  
लाने वाला, धैर्यहीन, देहा । पु०--

मन्थर(वि०)--मन्द, मूर्ख, मूख, जत-  
लाने वाला, धैर्यहीन, देहा । पु०--

मम (अ०)-मेरा, मदीय ।

ममता(स्त्री०)[ममत्व]-आपे का ध्यान,

मोह, स्नेह, प्रियार, अभिमान ।

ममतायुक्त(वि०)-मोहयुक्त, अभिमानो-

भय (१आ०)-गमन करना, जाना ।

मय (पु०)-एक दैत्य का नाम, अश्व-  
तर, ऊट ।

मया (स्त्री०)-चिकित्सा, इलाज ।

मयी (स्त्री०)-मय की स्त्री जाति  
जैसे उड़ती, ऊटनी, अश्वतरी ।

मयु (पु०)-किन्नर, मृग, हरिण ।

मयुराज (पु०)-किन्नरों का राजा,  
कुवेर । [लपट, शोभा ।

मयूख (पु०)-किरण, धमक, उजाला,

मयूर (पु०)-मोर, नीलकण्ठ, सूर्य-  
शतक का कर्ता एक कवि, पुष्प-  
विशेष ।

मयूरक(न०)-अञ्जनविशेष, तूतिया ।

पु०-अपामार्ग, चिरचिटा ।

मयूरचूहा (स्त्री०)-मयूरशिखा ।

मयूरारि (पु०)-मोर का शत्रु, कूक-  
लाच, गिरगिट । [मोरनी ।

मयूरी (स्त्री०)-मयूर की स्त्रीजाति,

मरक (पु०)-दैतिक तथा भौतिक उप-  
द्रव्यों से उत्पन्न प्राणियों का  
विना समय करना, मारि का  
भय । [पन्ना ।

मरकत(न०)-हरे रंग की एक मणि,

मरण (न०)-शरीर से आत्मा का  
अलग होना, मौत, यत्ननाम  
नामक विष ।

मरुद(पु०)-मकरुद, कुर्छों का रस ।

मराल (पु०)-राजहंस, कारणहंस  
नामक पक्षी, घोड़ा, खल, घादल,  
अनार का वन । वि०-चिकना,  
नर्म । [लीक्षण द्रव्य ।

मरि[री]य (न०)-मिर्च नाम से प्रसिद्ध

मरिना (स्त्री०)-मृत्यु, मौत ।

मरीचि(पु०)-सप्तविंशति में से प्रज्ञा का  
जन से उत्पन्न सब से बड़ा पुत्र,  
एक मुनि, सून । अकली०-किरण,  
रश्मि ।

मरीचिका (स्त्री०)-सुगन्धना, सुराब,  
सूर्य की किरणों में पानी का  
धन होना ।

मरु (पु०)-पर्यंत, निर्जल देश, मार-  
वाड़ प्रदेश, कुरवक वृक्ष । [स्त्री ।

मरुटा-गडा (स्त्री०)-ऊंचे नाथे वाली

मरुत (पु०)-वायु, पवन, पादल का  
वृक्ष ।

मरुत्त (पु०)-वायु, हवा, देवता ।  
[मारुत का भी यही अर्थ है] ।

मरुत्त (पु०)-चन्द्रवशी एक राजा,  
करवे का वृक्ष । [का मार्ग ।

मरुत्पथ (पु०)-आकाश, देवताओं

मरुत्पाल (पु०)-देवताओं का पालन-  
कर्ता अर्थात् इन्द्र ।

मरुत्पुत्र (पु०)-मीनमेन ।

मरुत्फल (न०)-धनोपल, जोला ।

मरुत्पत्त [पान्] (पु०)-इन्द्र ।

मरुत्सल (पु०)-इन्द्र, अग्नि, चीते  
का पेड़ ।

मरुदान्दोल (पु०)-वायु को हिलाने  
वाला अर्थात् पला, दपलन ।

मरुदिष्ट (पु०)-देवताप्रिय, गुग्गुलु ।  
मरुभू-भूमि (स्त्री०)-मारवाह प्रदेश,  
जलरहित पृथिवी, रेतीलाजंगल ।

मरुभूह (पु०)-करील का पेड़ ।  
मर्क (पु०)-जाना, गमन करना ।  
मर्कट (पु०)-वानर, खन्दर, मकड़ी,  
एक पक्षी ।

मर्कटतिन्दुक (पु०)-कुपीलु, कुपला ।  
मर्कटशीर्ष (न०)-हिंगुल, शिगरफ ।  
मर्कटी (स्त्री०)-कपिकच्छु, कौंच की  
फली ।

मर्कर (पु०)-सुंगराज का वृक्ष ।  
मर्करा (स्त्री०)-बाँक जीरत ।  
मर्जू (पु०)-घोड़ी, रजक ।  
मर्त्त (पु०)-मनुष्य, भूलीक ।  
मर्य (पु०)-मनुष्य ।

मर्द्द (न०)-गात्रपादादि का दबाना,  
मलना, बुरा करना, पीसना ।  
मर्द्दित (वि०)-मला गया, पीसा  
गया, क्षुण्णित, दबाया हुआ ।  
मर्म [न्] (न०)-स्वरूप, तरङ्ग, क्षुण्ण-  
स्थान, जीवस्थान ।

मर्मज्ञ (वि०)-तथ्यज्ञ, मर्म [ विषय  
हुई बात ] को जानने वाला,  
[मर्मवित् का भी यही अर्थ है] ।  
मर्मर (पु०)-कपड़ों की र पतों से जो  
शब्द निकलता है, महुमहु ।

मर्मस्पर्क [ ग् ] (वि०)-जीजीवस्थान  
को स्पर्श करता है, मर्मपीडक ।  
मर्मवित्-द्र [ घ् ] (वि०)-मर्मस्थान  
के वेधन करने वाला, मर्मज्ञ ।  
मर्या (अ०)-सीमा, हद्द ।

मर्यादक (वि०)-मर्यादाकर्ता, मर्याद  
वांछने वाला ।

मर्यादा (स्त्री०)-न्याययुक्त पथ में  
रहना, सीमा में रहना, सीमा,  
हद्द, कूल, तट । [ काय करना ।  
मल् (१ आ०)-धैर्य करना, पकड़ना,  
मल (अस्त्री०)-पाप, गुणाह, पुरीष,  
विषा, छोटे आदि का मल  
[ जंग ], शरीर में उत्पन्न श्लेष्म  
स्वेदादि कपूर, कृपल, मूत्र,  
वातादि तीन दोष, फैल ।

मलम (वि०)-मल के सान करने  
वाला । पु०-शालमलिकन्द ।  
मलद्रात्री [ न् ] (पु०)-अपपात, जमा-  
लगाटा । [ ज्ञेया, ग्रामिष्ठाना ।  
मलन (न०)-पीसना, कुचलना । पु०-  
मलपृष्ठ (न०)-ग्रन्थ का प्रथम पृष्ठ,  
टाइटिलपेज ।

मलमुञ्ज (पु०)-काक, कीमा ।  
मलमल्लक (पु०)-कीपीन, लंगोटी ।  
मलमास (पु०)-अधिक मास, बढ़ा  
हुआ मास, छौंद का महीना ।

मलय (पु०)-भारत के दक्षिण में एक  
पर्वतमाला, माछाबार, माटिका ।  
मलयल-उद्गम (न०)-सन्दर्भ, चन्दन ।  
मलयाचल-मद्रि-गिरि-पर्वत (पु०)-  
मलय नामक पहाड़ ।

मलवासस् (स्त्री०)-रत्नस्थला नारी ।  
मलाका (स्त्री०)-हथियार, दूती, प्रेम-  
वती स्त्री ।  
मलारि (पु०)-छारी वस्तु जिस से  
मेल कटता है ।

मलि (स्त्री०)-कृयज्ञा, विद्यास ।

मलिक (पु०)-राजा, द्राकिण ।

मलिन (वि०)-मैला, गन्दा, अपवित्र,  
अस्पृच्छ, दूषित, मलमुक्त, पापी,  
भीष । न०-पाप, सुहागा ।

मलिनता-द्वय=मैलापन, गन्दापन ।

मलिनमुख (वि०)-क्रूर, भीष जिस  
की चेष्टा विगड गई हो । पु०-

अग्नि, दूत, गोलामून ।

मलिनित (वि०)-मैला, खराब, क्रूर ।

मलिम्लुच (पु०)-चौर, लुटेरा, राजर्ष,  
मच्छर, मलमास, वायु, अग्नि,  
चित्रकवृक्ष, पाला, पञ्चगव्यो को  
न करने वाला ब्राह्मण ।

मलिष्ठा (स्त्री०)-रजस्वला स्त्री ।

मलीमल (वि०)-मैला, गन्दा, अप-  
वित्र, मलमुक्त ।

मल्ल (शब्द०)-पकड़ना, चारण करना ।

मल्ल (वि०)-मज्जुत, कसरती । पु०-  
। पहलवाग, वर्तन, कपोल, धनं-  
संकरभेद, देशविशेष ।

मल्लक्रीडा ( स्त्री० )-जमनास्टिक,  
कुशती । [अखाड़ा ।

मल्लभ भृगि ( स्त्री० )-मुद्गस्पृच्छ,

मल्लमुद्ग (न०)-कुशती, याहुमुद्ग, पह-  
लवानों की लड़ाई ।

मल्लार (पु०)-मलहार राग ।

मल्लि [ल्लो] (स्त्री०)-आलसीभेद ।

मल्लिका (स्त्री०)-ऐसा श्वं जिसका  
शरीर काला, घोष और चरण

लाल होते हैं, मालतीभेद, दीयट ।

मल्लीकर (पु०)-तस्कर, चौर ।

मल्लु (पु०)-रीछ, भालू ।

मश (१ पु०)-मिनभिनागा ।

मश (पु०)-मच्छर, मिनभिनाइट, क्रोच ।

मशक ( पु० )-मच्छर, त्वचारोगभेद,  
पानी भरने का चमड़े का पात्र ।

मशहरी (स्त्री०)-मच्छरो से घघने के  
लिये जो परदा पलंग के चारों  
ओर लाना जाता है ।

मशुन (पु०)-कुत्ता, कुक्कुर ।

मप् (पु०)-गण्ट करना, चारना ।

मपि-पो-शी=मसी ।

मस् (४ पु०)-मापना, तोलना ।

मस (पु०)-माप, बजने, बाट ।

मसरा (स्त्री०)-मसूर, मसूर की दाढ़ ।

मसि-सी (अकली०)-रोशभाई, कज्जल ।

मसिक (पु०)-साप का बिल ।

मसिधान-धानी (स्त्री०)-दावात ।

मसिपयय (पु०)-डेहक, मुहरिर ।

मसिपय (पु०)-कडम, पेन ।

मस [सू] र (पु०)-मसूर की दाढ़ ।

मसूरिका ( स्त्री० )-मशहरी, कुहनी,  
घेघकरोन ।

मसुण (वि०)-चिकित्ता, स्निग्ध ।

मस्क् (१ पु०)-जाना, हरकत करना ।

मस्कर ( पु० )-वास, गति, हरकत,  
ज्ञान, खोखला वांस ।

मस्करी [सू] (पु०)-संन्यासी, धाद ।

मस्त्र (६ पु०)[मज्जति]-महाना, हुबकी  
लगामा, ड्यना, गीते मारना ।

मस्त (न०)-शिर, मस्तक ।

मस्तक (अस्त्री०)-खोपड़ी, माथा,  
शिर, चोटी ।



मस्त [क] मूलक (न०)-गर्दन ।  
 मस्तकस्नेह(पु०)-दिमाग मस्तिष्क ।  
 मस्ति (स्त्री०)-मायना, तीलना ।  
 मस्तिष्क (न०)-दिमाग ।  
 मस्तु (न०)-छाक, दही का पानी ।  
 मह ( १ प०, १० व० )-पूजना, इच्छा  
 करना, बुझ करना, यदना ।  
 १ आ०-उदना, उगना ।  
 मह ( पु० )-त्योहार, उत्सव, यज्ञा-  
 तुति, भैंसा, प्रभा ।  
 महक ( पु० )-फुलवा, मसिह पुरुष,  
 विष्णु ।  
 महक्का(वि०)-महक, फैली हुई सुगन्ध ।  
 महत् (वि०)-बड़ा, चौड़ा, बहुत, वि-  
 पुल, अधिक, जम्मा, यसीह,  
 घना, जोर का, ऊँचा । पु०-  
 महान्, महान्ती, महान्तः ।  
 पु०-ऊट, शिव, चारुप में महत्तय ।  
 न०-यहप्पन, आधिक्य, राज्य,  
 वेदज्ञान [ महत् तत्पुरुष समास  
 में ज्यो का त्यो रहता है, किन्तु  
 कर्मधारय और बहुव्रीहि समास  
 में 'महा' में परिवर्तित हो  
 जाता है ] ।  
 महत्तय (न०)-महत्तय में वर्णित २५  
 तर्को में का दूसरा ।  
 महत्तर (वि०)-अधिक यद्वा । पु०-  
 गाय का प्रधान, यामाध्यक्ष ।  
 महत्तय (न०)-यहप्पन, गौरव, यद्वा, ऊँचाई ।  
 [ प्रासाद ।  
 महदाश्रय (पु०)-बड़ा भकान, महल,  
 महदाशा(स्त्री०)-यही आशा ।

महदाश्रय(वि०)-बड़े अचम्भे वाला ।  
 महनीय ( वि० )-पूजनीय, शरीफ,  
 रुच्यपदस्य ।  
 महन्त(पु०)-मठ का अध्यक्ष, आचार्य ।  
 महलीक(पु०)-भूः आदि सात लोकों  
 में चौथा ।  
 महर्षि( पु० )-श्रपियो में श्रेष्ठ, ब्रह्म-  
 क्षात्री, वेदव्यासादि ।  
 महर्लक (पु०)-बड़ा भकान, महल ।  
 वि०-कम्पोजर, दुर्बल ।  
 महस् ( न० )-उत्सव, पर्व, त्योहार,  
 यज्ञ, चतुर्थ भुवन, यहप्पन, जल,  
 अधिकता ।  
 महा(स्त्री०)-गाय, गी ।  
 महाकर ( वि० )-बड़े हाथों वाला,  
 बड़े कर [माय] का ।  
 महाकर्ण (पु०)-शिव, महादेव ।  
 महाकर्म [न] (वि०)-बड़े काम करने  
 वाला । पु०-शिव । [रात्रि ।  
 महाकला(स्त्री०)-शुक्लाद्वितीया की  
 महाकवि(पु०)-बड़ा कवि, मसिह या  
 प्राचीन कवि, शुक्लाचार्य ।  
 महाकाय ( वि० )-जसीम, बड़ी देह  
 वाला । पु०-हाथी, नन्दि ।  
 महाकार(वि०)-यसीह, चौड़ा, दीर्घ-  
 काय, जसीम । [ पृथिमा ।  
 महाकात्तिकी (स्त्री०)-कात्तिकशुक्ला  
 महाकाल(पु०)-अनवच्छिन्न काल,  
 लगातार समय, शिव, जैरव ।  
 महाकाव्य(न०)-आठ में अधिक सगों  
 वाला ग्रन्थ, प्राचीन ग्रन्थ ।  
 महाकुमार(पु०)-युवराज, ज्येष्ठराजपुत्र ।

महाकुल (वि०)-कुलीन, उच्चवर्ण ।

॥ न०-उच्च कुल ।

महागज(पु०)-बड़ा हाथी, दिग्गज ।

महागन्ध(वि०)-बड़ी गन्ध वाला ।

महागल (वि०)-बड़ी गर्दन वाला ।

महागुरु(पु०)-माता, पिता और आचार्य-ये तीन महागुरु कहलाते हैं ।

महाघोषी [नू] (पु०)-ऊट ।

महाघोष ( वि० )-बड़े शोर से भरा हुमा । न०-घाज़ार, हह । पु०-गजंभा, दहाड़ ।

महाङ्ग ( वि० )-बड़े अंग वाला, फेले हुए अंग वाला । पु०-ऊट ।

महाचक्रवर्ती [नू] (पु०)-ऐसा सचाट जिस का राज्य चक्रवर्ती हो ।

महाच्छाय(पु०)-बड़ का पेड़ ।

महाजन ( पु० )-पबलिक, जनसमूह, बड़ा आदमी, जाति का प्रधान, व्यापारी, जनसाधारण । [अपि ।

महाजाली [नू] ( वि० )-गहापविष्ट, महातपस्(पु०)-बड़ा तपस्वी ।

महातेजस् ( वि० )-बड़े तेज वाला, महापराक्रमी । पु०-योद्धा, अग्नि । न०-पारा ।

महात्मा [नू] ( वि० )-महानुभाव, तेजस्वी, महाशय, नेक । पु०-परमात्मा ।

महात्वय(पु०)-बड़ा त्वरा ।

महादेव(पु०)-बड़ा देवता, शिव ।

महादेवी(स्त्री०)-पार्वती, पटरानी ।

महादृग(पु०)-बड़ का पेड़ ।

महाधन ( वि० )-अमीर, धनी ।

न०-क्रीमती पोशाक, स्वर्ण, खेती ।

महाधातु(पु०)-स्वर्ण, शिव, मेरु ।

महानद(पु०)-बड़ा दरिया ।

महानदी(स्त्री०)-बड़ी नदी जैसे गंगा, सिन्धु आदि ।

महानन्दा(स्त्री०)-एक नदी का नाम ।

महानरक(पु०)-२१ नरकों में से एक ।

महानवमी (स्त्री०)-आश्विन शुक्ला नवमी, दुर्गानवमी ।

महानस(पु०)-रसोईघर, वावर्चीखाना ।

महानाद ( पु० )-बड़ा शोर, हुलहुल, ऊट, हापी, सिंह ।

महानिद्रा (स्त्री०)-सूत्य, अनन्तनिद्रा ।

महानिर्वाण( न० )-बौद्धों के अनुसार जीव का अल्पन्ताभाव ।

महानिशा( स्त्री० )-रात्रि के बिपले दोपहर, बड़ी रात्रि ।

महानीच(पु०)-घोड़ी ।

महानुभाव (वि०)-उदारहृदय, स्वच्छ-रित्र, नेक । पु०-प्रतिष्ठित पुरुष, महाजन ।

महान्तक(पु०)-मृत्यु, शिव ।

महापत्नी(पु०)-उड़, लड़क ।

महापथ (पु०)-बड़ा मार्ग, राजमार्ग, बड़ी सड़क ।

महापातक( न० )-बड़ा पाप, यथा:-  
अज्ञहत्या शरापान स्तेयं गुर्व-  
गमानमः । महान्ति पातकान्या-  
हुस्तत्समंरथ पतुनः ॥ मनु० ११, ११

महापात्र-अमात्य( पु० )-महामंत्री, प्रधान मन्त्री । [जो १८ हैं ।

महापुराण (न०)-पुराण नामक ग्रन्थ

महापुरुष (पु०)—महात्मा, बड़ा पुरुष,  
जातीयनेता ।

महाप्रभु (पु०)—सरदार, बड़ा स्वामी,  
राजा, परमात्मा ।

महाप्रलय (पु०)—ग्रहण का एक दिन  
समाप्त होलाने पर सर्व भूतों और  
लोकों का नश्व ।

महाप्रसाद (पु०)—बड़ा नजराना,  
देवता के निमित्त भोज्य पदार्थ ।

महाप्रस्थान (न०)—मृत्यु, मीत ।

महामाण (पु०)—द्रोणनामककाकविशेष,  
वर्ग का दूसरा व चौथा अक्षर ।

महाफल (पु०)—वित्त्वृत्त, खेल का  
दरस्त । [ इन्द्रायण ।

महाफला (स्त्री०)—इन्द्रवारुणी,

महाबल (वि०)—बड़े बल वाला ।

पु०—वायु, हवा, युद्ध । न०—सीसा,  
बीसक ।

महाव्राह्मण (पु०)—निन्दित ब्राह्मण,  
अचारण, वृत्तक का दान छेनेवाला ।

महामट (पु०)—अतिशय थोड़ा ।

महामारत (न०)—रुपासदेवरचित  
प्रसिद्ध इतिहासग्रन्थ ।

महाभीता (स्त्री०)—लज्जावती की  
लता, दुईमुँदे ।

महामोम (पु०)—शान्तनुराज, भृङ्गि  
नामक शिव काट्टारपाल । वि०—

अत्यन्त हरावना ।

महाभूत (न०)—पृथिवी, जल, तेज,  
वायु और आकाश ये पंचभूत ।

महामति (वि०)—अधिक बुद्धिवाला,  
अतिशय चतुर ।

महामनाः [सु] (वि०)—महाशय, सुला  
दिल, दिलावर, क्रैपाज्ञ ।

महामात्र (वि०)—माप में बड़ा, बहुत  
उन्दा । पु०—प्रधानानात्म, बड़ा  
बजीर, हाथियों का चलाने वा  
रखने वाला ।

महामाया (स्त्री०)—दुर्गा, चण्डी ।

महामारी (स्त्री०)—महाकाळी, अति-  
शय सारकरीण ।

महामुनि (पु०)—अगस्त्य, युद्ध, कृपा-  
चार्य, ठपास । न०—औषध, अनिया ।

महामोह (पु०)—बड़ा मोह, नाशमक्ती,  
सांसारिक विषयों में प्रीति कराने

वाला एक प्रकार का अज्ञान ।

महायज्ञ (पु०)—बड़ा यज्ञ, प्रतिदिन  
करने योग्य पञ्चयज्ञों का नाम

जिन के नाम ये हैं—ब्रह्मयज्ञ,  
देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और  
नृयज्ञ ।

महारथ (पु०)—बड़ा रथ, ऐसा सेनानी  
जिसके साथ १००००० योद्धा हों, शिव ।

महारस (पु०)—खजूर, गन्ना, पारा,  
काञ्चिक, कांजी ।

महाराज (पु०)—बड़ा राजा, सम्राट,  
सम्शोधन में राजाओं और शा-

सकों तथा आचार्यों के लिये  
प्रयुक्त होता है ।

महाराजाधिराज (पु०)—राजाओं का  
राजा, चक्रवर्ती सम्राट ।

महाराष्ट्री (स्त्री०)—सम्राज्ञी, महा-  
रानी, पटरानी ।

महारात्र (न०)—निशीथ, अहंरात्रि ।  
महारात्रि [स्त्री] (स्त्री०)—महाप्रलय ।

महाराष्ट्र ( पु० )-बड़ा राज्य, मह-  
दलों का देश, गजपिप्पली, मह-  
दलों की घोड़ी ।

महारोग ( पु० )-असाध्यरोग, महा-  
पाप से उत्पन्न मृगी आदि  
आठ भयंकर रोग । [ में से एक ।

महारौरव ( पु० )-२१ प्रकार के नरको

महालोह ( पु० )-काष्ठ, कौआ ।

महालोह ( न० )-चुम्बक लोहा ।

महावन ( न० )-वृन्दावन के पास एक  
प्राचीन वन ।

महावीर ( पु० )-बड़ा योद्धा, शेर,  
इन्द्रवज्र, हनुमान्, गरुड़, एक  
नाटक का नाम ।

महावीर्य ( वि० )-महापराक्रमी । पु०-  
ब्रह्मा, परमात्मा ।

महाध्याधि ( पु० )-काला फोड़ ।

महाध्याधिति ( स्त्री० )-भूः भुवः स्व-  
नाम के तीन शब्द ।

महाद्रव्य ( न० )-दुष्ट द्रव्य, बड़ा कोड़ा ।

महाद्रव्य ( न० )-आश्विनमास में दुर्गा-  
पूजा आदि, १२ वर्ष का एक वृत्त ।

महाधठ ( पु० )-राजधनूरा ।

महाशय ( वि० )-बड़े आशय वाला,  
महानुभाव, उदार, प्रिय ।

महाशूद्र ( पु० )-आमीर, अहीर ।

महासत्य ( वि० )-शरीर, कुलीन,  
मुसिक । पु०-बड़ा जानवर,  
शाययमुनि, कुवेर ।

महासमुद्र ( पु० )-महासागर ।

महासाधिविग्रहिक ( पु० )-परराष्ट्र-  
सचिव, दूसरे राज्यों से युद्ध और

सन्धि करने वाला राजमन्त्री ।

महासाहस ( न० )-बड़ा साहस, उज-  
झपन ।

महासेन ( पु० )-काशिकेय, बड़ा जनरल ।

महि ( अस्त्री० )-वष्टपन । पु०-गमक,  
प्रतिभा, बुद्धि । स्त्री०-[ मही ]-  
पृथ्वी, भूमि ।

महिका ( स्त्री० )-पाला, कुहरा ।

महित ( वि० )-पूजित, आदृत ।

महिमा [ मन् ] ( पु० )-वष्टपन, गौरव,  
शक्ति, यत्न, उच्चपद, अष्टवि-  
द्दियों में से एक ।

महिर ( पु० )-सूयें, अर्द्ध वृत्त ।

महिला ( स्त्री० )-स्त्री, नारी, छेड़ी,  
रेणुका ।

महिष ( पु० )-भैंसा, एक दैत्य ।

महिषध्वज-वाहन ( पु० )-यमराज  
शिव की सवारी महिष है ।

महिषासुर ( पु० )-एक दैत्य ।

महिषी ( स्त्री० )-भैंस, राक्षसी, सिरि-  
म्धू, असती स्त्री, बहू रानी शिव  
का राजा के साथ अभिषेक  
किया गया हो ।

मही ( स्त्री० )-पृथ्वी, भूमि, जमीन,  
जायदाद ।

महिसित् ( पु० )-राजा, शासक ।

महीज ( पु० )-मंगल ग्रह, वृत्त, नर-  
कासुर । न०-गोला अक्षर ।

महीतल ( न० )-जमीन की सतह ।

महीधर ( पु० )-पर्यंत, पहाड़ ।

महीध्र ( पु० )-पूर्वपत्त ।

महरीपति-पाल-भुज् ( पु० )-राजा ।  
 महरीप्राचीर ( न० )-समुद्र, सागर ।  
 महरीभूत ( पु० )-राजा, पर्वत ।  
 महरीछा-देछा-हेलिका ( स्त्री० )-नारी  
 महरीशुर ( पु० )-भूदेव, ब्राह्मण ।  
 मा ( अ० )-चारण, रोकना, मना  
 करना, मत, निषेध । यह शब्द  
 विशेषकर छोट् के साथ आता  
 है, लुङ् के साथ भी आता है,  
 तब उस के 'अ' का छोप हो  
 जाता है, कभी २ 'अ' का छोप  
 नहीं भी होता ।  
 मा ( स्त्री० )-उलनी, धन की अपिछा-  
 त्रीदेवी, माता, माप ।  
 मा ( २, प०, इ, ध आ० )-मापना,  
 लीछना) परिमित करना, घाट  
 से वजन मापना करना, सरतीव  
 देना, घनाना, दिखलाना ।  
 मांस ( न० )-गोशत, शरीर की एक  
 भाग, फल का गुद्दा । पु०-फोड़ा,  
 कसाई, काष्ठ ।  
 मांसन ( न० )-मांस से उत्पन्न चर्बी ।  
 मांसप ( पु० )-राक्षस, पिशाच ।  
 मांसरस ( पु० )-शोरवा ।  
 मांसल ( वि० )-थलवाला, जोरावर,  
 रूथल, मोटा ।  
 मांससारि-स्नेह ( पु० )-चर्बी ।  
 मांसकाशा ( स्त्री० )-चमड़ा, त्वचा ।  
 मांसाद-भलक ( पु० )-गोशतखोर,  
 सूखार, मांसाहारी ।  
 मांसिक ( पु० )-दूधर, कसाई, खटोक ।  
 मांसोदन ( पु० )-गास के साथ पक्के  
 हुए चावल ।

माकन्द ( पु० )-आम का पेड़ ।  
 माति [ स्त्री ] क ( वि० )-मक्की से  
 उत्पन्न । न०-शहद ।  
 मात्तिकज ( पु० )-सिक्कक, मोम ।  
 मागध ( वि० )-मगधदेश में उत्पन्न ।  
 पु०-मगधदेशनिवासी, यहां का  
 राजा, चारण, भाट ।  
 मागधा-धिक्का ( स्त्री० )-पिप्पली ।  
 मागधी ( स्त्री० )-पिप्पली, शर्करा,  
 छांड, प्राकृतभेद, एक घीली,  
 छोटी इलायची ।  
 माघ ( पु० )-पूक चांद्रमास को जन-  
 वरी वा फव्वरी के लगभग होता  
 है, मिथुपालवध काव्य का रच-  
 यिता एक कवि ।  
 मापयती ( स्त्री० )-पूर्वदिशा ।  
 माघी ( स्त्री० )-मघा नक्षत्रयुक्त पूर्णिमा,  
 माघ की पूर्णिमा ।  
 माघ्य ( न० )-कुन्दपुष्प, कुन्द का फूल ।  
 माङ्गल्य ( वि० )-मंगल के लिये हित-  
 कर, मंगलमय, मंगल का साधन ।  
 माघश ( पु० )-बन्दी, घोर, रोग, ग्रह ।  
 मापिका ( स्त्री० )-मक्की, मातिका ।  
 माक्षिण्ट ( न० )-मक्की से रंगा हुआ  
 द्रव्य, लाल रंग ।  
 माठर ( पु० )-मूर्ख के आसपास रहने  
 वाला गणविशेष ।  
 माणव ( पु० )-मनुष्य, कम उम्रवाला  
 आदमी, बालक, एक प्रकार का  
 हार ।  
 माणवक ( पु० )-सोल्ह वर्ष तक के  
 मनुष्य का बालक, मिश्र, कुमार ।

माणधीन ( वि० )—शिगुसङ्गन्धी,  
खालक का ।

माणव्य(न०)—आलकसमुदाय, बालकों  
का समूह । [ विशेष ।

माफिकय(न०)—माफिक, लाल, रत्न-  
माणिक्या(स्त्री०)—छिपकली, गृहभो-  
धिका । [ संघा नमक ।

माणिक्य[मन्थ](न०)—सैन्यवल्लवण,  
मातङ्ग ( पु० )—गज, हाथी, अश्वत्थ-  
वृक्ष, एक प्रकार की भीलों की जाति ।

मातरपितरौ ( पु० द्वि० )—माता और  
पिता, जनक तथा जननी ।

मातरिजा [ न ] ( पु० )—बायू, पवन ।  
मातलि ( पु० )—मतल की सन्तति,  
इन्द्र का सारथि ।

माता [ न ] ( स्त्री० )—जननी, मातर, मा,  
पृथ्वी, विभूति, लक्ष्मी । वि०—  
मापने वाला, छाता ।

मातामह(पु०)—माता का पिता, नाना  
मातामही(स्त्री०)नानी, माताकी माता ।

मातुल ( पु० )—माता का भाई, मामा ।

मातुलक ( पु० )—धतूरे का पेड़ ।

मातुलपुत्रक ( पु० )—धतूरे का फल ।

मातुला-सानी-ली(स्त्री०)—मातुल की  
स्त्री, नानी, कलाम [ मटर ] नामक  
जन्म, मांग ।

मातुलुङ्ग ( पु० )—विजोरा नींबू, एक  
प्रकार का नींबू, दाहिम ।

मातु [ ता ] ( वि० )—प्रमाणकर्ता, ज्ञाता,  
निर्माता । स्त्री०—मा, जननी,  
पृथ्वी, विभूति, लक्ष्मी ।

मातृका ( स्त्री० )—उपमाता धाय, दाईं,

जननी, माता, अकारादि ३९ वर्ण,  
स्वर ।

मातृनन्दन ( पु० )—कात्तिकेय, स्कन्द ।  
मातृप्वसा [ स ] ( स्त्री० )—माता की  
पहिल, भीसी ।

मातृप्वस्त्रेय ( पु० )—भीसी का लहका,  
भीसेरभाई नाम से प्रसिद्ध ।  
[ मातृप्वस्त्रीय का भी यही अर्थ है  
मात्र ( न० )—सम्पूर्णता, अवधारण,  
अल्प, माप, परिमाण ।

मात्रा ( स्त्री० )—परिमाण, अवसरावयव,  
ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत इनका बोधक ।  
मात्रार्थ ( न० )—दूसरों के गुणों को देख  
कर ह्येय करना, हसद करना ।

मात्रिक ( वि० )—मत्स्यघातक, मछली  
मारने वाला ।

माप ( पु० )—रास्तर, मार्ग, बाट,  
मिळोना, मपना ।

मायुर ( वि० )—मयुरा में रहने वाला  
या मयुरा से आया हुआ ।

माय ( पु० )—हथेली, खुशी, अहङ्कार,  
घमण्ड, गुरूर ।

मादक ( वि० )—नशीला, सम्भक्तका-  
रक । पु०—घातक पक्षी, दातपूह  
पक्षी ।

मादम ( न० )—लवंग, लीन । पु०—  
कामदेव, धतूरे का पेड़ ।

मादमी ( स्त्री० )—विजया, भग ।

मादृच-श [ श् ] ( वि० )—मुक्त या, मेरे  
समान ।

माद्री(स्त्री०)—पाण्डु की दूसरी भार्या  
जिसे मकुल और सहदेव का  
जन्म हुआ, अतीव नामक भीषण ।

साधव (पु०)—माया का पति, विष्णु,  
वसन्त, वैशाख का महीना,  
महुवे का पेड़।

साधविका-व्री (स्त्री०)—साधवी की  
बेटी, वासन्तीलता।

साधवोद्भव (पु०)—राजादनी, खिरनी  
नाम से प्रसिद्ध फल।

साधुर (न०)—मल्लिकापुत्र, चमेली  
का फूल।

साधुरी (स्त्री०)—मद्य, शराब।

साधुर्य (न०)—मधुरता, मीठापन,  
छावण, सुन्दरता।

साध्यदिन(न०)—मध्यदिन, दिन का  
बीच का भाग। स्त्री०—[नी]—  
शुक्लपञ्चमीय एक शाखा।

साधवी(स्त्री०)—मद्य, छरा, शराब।

साध्वीक(न०)—मधु, मध्वालय।

साध्वीकफेड़ (पु०)—नारिकेलभेद, एक  
प्रकार का नारियल।

साधु(१ भा०)—विचार करना। १०४—  
पूजा करना, अर्चन करना।

मान (न०)—परिमाण, माप, नीत का  
जंग, तील, अहकार, अतिमान,  
सम्मान, इज्जत।

मानग्रन्थि(पु०)—अपराध, मूल, गुनाह।

माननीय(वि०)—मानने के योग्य, पूज-  
नीय, आदरणीय।

मानरन्ध्रा (स्त्री०)—समय के जानने  
के लिये एक ताबे का फटीरा जिस  
की पेंदी में एक छेद होता है,  
आजकल कहीं २ पर इस का  
उप्यहार होता है।

मानव(पु०)—मनुष्य, आदमी।

मानवजित(वि०)—मानरहित, जिस  
की कुछ इज्जत न हो, नीच।

मानवी(स्त्री०)—मानुषी, नारीजाति।

मानव्य (न०)—मनुष्यों का समूह।

वि०—मनुवशीय।

मानव(न०)—मन, चित्त, कौलाह के  
निकट एक खरीवर। वि०—वमः—  
सम्प्रणी।

मानसव्रत(न०)—मन से किया हुआ  
व्रत, अहिंसा आदि कर्म।

मानसिक(वि०)—मनोभव, मनःसम्बंधी।

मानसीकाः[सु] (पु०)—मानस [खरी-  
वर] है निवासस्थान जिस का  
अर्थात् हंस। [स्त्री।

मानिनी(स्त्री०)—फलीयुक्त, मानवाली

मानी [नी] (वि०)—मानवाला, इज्जत  
वाला, अहकारी, पनडही। पु०—  
सिंह, शेर।

मानुष(पु०)—मनुष्य, आदमी।

मानुष (न०)—मनुष्यता, मानुषपन,  
आदमियत।

मान्य(न०)—धीमापन, रोग, मन्दता,  
मूर्खता, कमी, म्यून्ता।

मानघाता[तृ] (पु०)—एक सूर्यवंशीय

राजा का नाम। युवनाश्व का  
पुत्र। कहते हैं कि जब यह युव-  
नाश्व के घेठ से बाहर निकला  
तब अश्विनी ने कहा 'क इह  
धास्यति' अर्थात् यह किस को  
घारण [पालन] करेगा, तब  
इन्द्र ने कहा कि 'नां धास्यति'।

यानी मुझे पारण करेगा, तभी ये  
दसका नाम मान्यता पड़ गया।  
मान्य (वि०)--माननीय, आदरणीय।  
मापण (पु०)--तुला, कांटा जिस में  
व्यंजोदि तोले जाते हैं। न०--माप,  
परिमाण, तौल।  
मानक (वि०)--गत्सम्बन्धी, मुक्त से  
सम्बन्ध रखनेवाला, मेरा। [मान-  
कीन का भी यही अर्थ है]।  
माया (स्त्री०)--कपट, छल, निर्या-  
युक्ति का कारण एक प्रकार का  
अज्ञान, कृपा, दम्न, लहगी, युद्ध  
की माता।  
मायाकार-कृत (पु०)--ऐन्द्रजालिक,  
बाजीगर, मदारी।  
मायावी [ न ] (वि०)--माया रचने  
वाला, कपटी, दम्नी। पु०--  
मदारी, बाजीगर।  
मायासुत (पु०)--माया का पुत्र, बूढ़।  
मायिक (वि०)--माया वाला, छली,  
कपटी। पु०--मदारी, बाजीगर।  
न०--मायाफल। [ एक रोग।  
मायु (पु०)--देहस्थित, शरीरोन्मा,  
मायूर (न०)--मोरो का समूह। वि०--  
गयूरसम्बन्धी, मोर वाला।  
मायूरिक (वि०)--मायूर को मारनेवाला,  
मोर पकड़ने वाला।  
मार (पु०)--मृत्यु, मौत, विघ्न, रोक,  
फागदेव, धूँरा।  
मारक (वि०)--मारनेवाला। पु०--  
उत्पात, मारि, एक पक्षी, बाल।  
मारजित् (वि०)--फागदेव की जीतने

वाला। [ फरमा।  
मारण (न०)--मारना, धध, फटल  
मारि-री (स्त्री०)--मारना, मौत,  
मृत्यु, यथा।  
मारिचिक (वि०)--मारिच [ मिर्च ] से  
संस्कृत अर्थात् यना हुआ।  
मारित (वि०)--मारा हुआ, मर  
किया हुआ।  
मारिया (स्त्री०)--दल की माता।  
मारीच (पु०)--साइका नामी राक्षसी  
का पुत्र, रावण का नौकर, एक  
प्रकार का राक्षस।  
मारुत (पु०)--मरुदेव, मरुत, पवन, हवा।  
मारुतात्मज (पु०)--वायु का पुत्र,  
इन्द्रमान्, भीमसेन। [मारुति का  
भी यह ही अर्थ है]।  
मारुतापह (पु०)--वरुणवृक्ष, बरने का  
पेड़। वि०--वायुनाशक।  
मारुताशन (पु०)--पक्षि, साँप।  
मार्कण्ड-यहेय (पु०)--सुकण्ड मुनि का  
पुत्र, मार्कण्डेय नामक प्रसिद्ध ऋषि।  
मार्कण्ड-य (पु०)--भृगराज, भृंगरा।  
मार्ग ( १०८३, १५०)--अन्वेषण करना,  
ढूँढना, खोज करना, खोज  
करना।  
मार्ग (पु०)--प्रन्धा, रास्ता, शुद्धि,  
अन्वेषण, तलाश, मृगशिर नामक  
नक्षत्र। [ महीना।  
मार्गक (पु०)--मार्गशीर्ष, अगहन का  
मार्गण (न०)--अन्वेषण, तलाश, खोज,  
मार्गना, प्रणय, मुहूर्तयत करना,  
वि०--याचक, मार्गने वाला। पु०-



बाण, तीर ।

सागंशिर-शीघ्रं (पु०)-मृगशिर नक्षत्र  
वाली पूर्णिमा, ऐसी पूर्णिमायुक्त  
मास, अगस्त मास ।

सागिक(वि०)-मृगों का भारने वाला,  
पक्षिक, मुसाफिर ।

सागित ( वि० )-डूटा हुआ, तलाश  
किया हुआ, अन्वेषित ।

साग्यं (वि०)-नाजनीय, शुद्धि करने  
के लायक, अन्वेषणीय, ढूँढ़ने  
लायक ।

सागर्ज (१० व०)-भाजंन करना, साज  
करना, भाजना, शब्द करना,  
आवाज करना ।

सागर्ज (पु०)-विष्णु, रत्नक, घोड़ी ।

सागर्ज (ग०)-भाजना, साज करना ।  
पु०-इवेत तथा रक्त छोप ।

सागर्जा (स्त्री०)-मुरजध्वनि, मुरज  
की आवाज ।

सागर्जी (स्त्री०)-सम्भारणी, दुहारी ।

सागर्ज [ ल ] (पु०)-विहाय, विहाल,  
चित्रक ।

सागर्जक (पु०)-नमूर, मोर ।

सागर्जरी [ ली ] य (पु०)-विहाल,  
विहाय, शूद्र । ग०-शरीर की  
सफाई, कायशोधन । [ हुआ ।

सागर्जित (वि०)-शोधित, साफ किया  
सागर्जित(स्त्री०)-रसायन, एक प्रकार  
की पटनी । [शूकर ।

सागर्ज ( पु० )-मूयं, आक का पेड़,

सागर्ज ( वि० )-मृगमय, मृतकानि-  
मित, मिट्टी से बना हुआ ।

पु०-शराव, सकोरा, प्याला ।

सादंगिक (वि०)-मृदगवादन, नृदंग  
का बजाने वाला ।

सादंग ( ग० )-मृदुतर, कीमलपत्र,  
परदुःख को न सहारने से चित्त  
का दृवीभूत होना पु०-वर्ण-  
सकरभेद ।

सागर्ज (स्त्री०)-शुद्धि, सफाई ।

साग (पु०)-जातिविशेष, देशविशेष ।

ग०-क्षेत्र, खेत, हरताल, खन ।

सागक (ग०)-सपलपद्म, एक प्रकार  
का कमल, मारियल का धना  
मुमा एक पात्र । पु०-निम्बवृक्ष,  
भीम का पेड़ ।

सागती (स्त्री०)-जाती नामक लता  
धुवती स्त्री, चांदनी, एक नदी,  
रात । [ग्रहाणा ।

सागतीतीरज-सम्भव ( पु० )-टंकल,  
सागतीपत्री ( स्त्री० )-जातिपत्री,  
जातित्री ।

सागतीकल(ग०)-आमकल, जातिफल ।

सागमारिक (वि०)-माताभो के बोझ  
वाला ।

सागव ( पु० )-अयन्ति नामक देश,  
सागवाप्रदेश, एक प्रकार का राग ।

साग (स्त्री०)-श्रेणी, राजि, लेखा,  
पद्धति, स्त्रक्, साला ।

सागाकार ( पु० )-माछा को बनाने  
वाला युद्ध, माछी ।

सागिक ( पु० )-माछी, एक जाति,  
पक्षीविशेष । वि०-माछा बनाने  
वाला ।

मालिनी ( स्त्री० )-माली की स्त्री,  
 छन्दोभेद, गौरी, विषहृग्गा,  
 जवासा नामक औषध, कव-  
 ष्ट ऋषि के आश्रम के निकट एक  
 नदी । [वि०-माला घाला ।  
 माली [नृ] (पु०)-माली, जातिभेद ।  
 मालूर (पु०)-विस्ववृत्त, गेह का पेड़ ।  
 मालेय (वि०)-झुंझी माला बनाने  
 वाला, मालारचना में कतुर ।  
 माल्य (न०)-पुष्प, फूल, कुसुम, कुसु-  
 ममाला, मूर्ध्निस्थित सुमनमाला ।  
 माल्यवान् [वत्] (पु०)-पर्यंतविशेष,  
 राजण का यज्ञी [अमाल्य],  
 राजसविशेष । वि०-माला घाला ।  
 माशब्दिक (वि०)-मा [मत] शब्द  
 को कहने वाला, मनहू करने  
 वाला, निषेधकर्ता ।  
 माय (पु०)-धान्यभेद, उड़द परि-  
 माणभेद, एक मासे की तील,  
 मूखं, त्वचा का एक रोग जो  
 मस्सा नाम से प्रसिद्ध है ।  
 मायपर्णी (स्त्री०)-यन उडद, माय-  
 पर्णी नाम से प्रसिद्ध औषध ।  
 मायवर्धक (पु०)-स्वर्णकार, सुमार ।  
 मायश [उ] (ज०)-मासा मासा  
 भर, प्रतिमास ।  
 मापीण-ट्य (न०)-मापसंज्ञ ऐसा  
 रीत लिसमें उड़द उत्पन्न होते हैं ।  
 माष् (पु०)-चन्द्र, चाद, त्रिशट्-  
 मात्मक काष्ठ, महीना ।  
 मास (पु०)-चन्द्र, चाद, महीना,  
 चान्द्रमास, एक मास [तील में] ।

मासर (पु०)-भक्तगण्ड, मांढ, उधड़े  
 हुए चावलों में से निकला हुआ  
 पानी । [संक्रान्ति ।  
 माशान्त (पु०)-महीने का अन्त,  
 मासिक (वि०)-महीने में होने वाला,  
 महीने का, माहवारी ।  
 मासुरी (स्त्री०)-प्रमथ, मूँछ, मातृभगिनी  
 मास्म (अ०)-निवारण, हटाना, रोकना ।  
 माहाकुल-कुलीन (वि०)-बड़े कुल में  
 उत्पन्न, महाकुलीज्जघे ।  
 माहात्म्य (न०)-बड़ापन, महिमा,  
 तारीफ, महत्त्व ।  
 माहिर (अ०)-इन्द्र, जमरेश ।  
 माहिय (वि०)-मैंसका, महियसम्ब-  
 न्धी [दुष्पादि] ।  
 माहिय (न०)-सत्रिय द्वारा वैश्या  
 में उत्पन्न पुत्र, वर्णसंकर, दोगला ।  
 माहेन्द्र (पु०)-ज्योतिष में महेन्द्र  
 सम्बन्धी एक समय, शुभदण्ड-  
 विशेष । वि०-इन्द्रसम्बन्धी ।  
 माहेन्द्री (स्त्री०)-पूर्व की दिशा,  
 इद्रकी स्त्री, गौ ।  
 माहेय (वि०)-महीसम्बन्धी, पृथ्वी  
 का । पु०-मगलपह, नरक नामक  
 एक असुर । [शिव का ।  
 माहेश्वर (वि०)-महेश्वर से प्राप्त,  
 माहेश्वरी (स्त्री०)-दुर्गा, मातृभेद ।  
 मि (५ ल०)-फेंकना, घबेलेना, क्षेपण ।  
 मित (वि०)-परिमित, मापा हुआ,  
 घोड़ा गया, फेंका हुआ, तित ।  
 मितंगम (वि०)-परिमित गामी, मापता  
 हुआ जानेवाला । पु०-गम, दस्ती ।

मितट्ट (पु०)--समुद्र, सागर ।  
 मितम्पत्र (वि०)--मापकर पकाने वाला,  
 कृपण, नून ।  
 मितान्न ( वि० )--परिमितभोजी,  
 तुला हुआ खाने वाला ।  
 मिति (स्त्री०)--ज्ञान, मापना, विक्षेप,  
 प्रमाण, गवाही, बयत ।  
 मित्र (न०)--बंधु, दोस्त, सुहृत्, सखा ।  
 मित्रघ्न ( वि० )--मित्रघटस्थ, मित्र का  
 प्रिय । [ सप्तमी ।  
 मित्रवत्तमी (स्त्री०)--मार्गशीर्ष शुक्ला  
 मित्रा ( स्त्री० )--सुमित्रा, लक्ष्मण की  
 माता । [ आपस में मिलना ।  
 मिष् ( १ व० )--घष करना, मारना,  
 मिषत् [ ] (न०)--रहसि, एकान्त में,  
 अकेले में, आपस में ।  
 मिथिला ( स्त्री० )--अपने नाम से  
 प्रसिद्ध राजधानी, तिरहुत, जनक  
 राजा की नगरी ।  
 मिथुन ( न० )--स्त्रीपुरुष, जोड़ा, १२  
 राशियों में से तीसरी, राशि ।  
 मिथ्या (न०)--अवधार्य, झूठ, असत्य ।  
 मिथ्याकोप ( पु० )--चनावटी क्रोध ।  
 मिथ्यापद ( पु० )--गिरधंक आधर,  
 कुठ का कुठ समझना ।  
 मिथ्याग्रहण ( न० )--कुठ का कुठ  
 समझना ।  
 मिथ्याधर्या (स्त्री०)--दम्भ, कपट ।  
 मिथ्याधार (पु०)--अन्यथा चिकित्सा ।  
 मिथ्याज्ञान ( न० )--अशुद्धि, गलती,  
 भूल, धम ।  
 मिथ्यादृष्टि (स्त्री०)--नास्तिकता ।

मिथ्यानिर्मुक्त (न०)--कृष्ण खा कर  
 इकार करना । [ आरोपण ।  
 मिथ्यापवाद-अभियोग ( पु० )--झूठा  
 मिथ्याप्रतिष्ठ ( वि० )--वादेकरोध,  
 झूठीप्रतिष्ठा करने वाला ।  
 मिथ्यामति (स्त्री०)--संभ्रम, गलती ।  
 मिथ्यायोग (पु०)--गलत इस्तेमाल ।  
 मिथ्यावचन-वाक्य (न०)--झूठ, अस-  
 र्य वाक्य ।  
 मिद् ( १ जा०, ४, १० व० )--पिघलना,  
 मोटा होना, घिस करना ।  
 मिद् (न०)--सुस्ती, मन्दता ।  
 मिन्न (वि०)--आंशुक, चिड़ता, मोटा,  
 धर्षादार ।  
 मिन्व ( १ व० )--नम करना, छिड़कना,  
 पूजना, अर्चित करना ।  
 मिल् ( ६ व० )--मिलना, जुड़ना, शरीक  
 होना, एकत्र होना, सग करना ।  
 मिळन ( न० )--मेल, जोड़, संगति,  
 संग, लगाव, एकत्र होना ।  
 मिळित (वि०)--मिला हुआ, एकत्री-  
 भूत, मिश्रित ।  
 मिळिन्द (पु०)--मधुमती, भौरा ।  
 मिश् ( १ व० ) [ मिश्रति ]--घोर करना,  
 झुठ होना, गुल मचाना ।  
 मिश् ( १० व० )--मिलाना, जोड़ना,  
 जुटाना, जमा करना ।  
 मिश्र ( वि० )--मिश्रित, मिला हुआ,  
 मटा हुआ, जुड़ा हुआ । पु०-  
 प्रतिष्ठित पुरुष, यशस्वी मनुष्य,  
 विद्वान्, इस्तिमद् । न०-मिला-  
 वट, मिश्रण ।

मिश्रक ( वि० )-मिलित, मिलाने  
वाला, विविध । पु०-कम्पीण्डर ।  
न०-घन्टोपवन ।

मिश्रण ( न० )-मिलावट, मिलान,  
जोड़, जमा का कायदा ।

मिश्रित(वि०)-मिला हुआ, मिलित ।

मिथ् ( १ प० )-तर करना, नम करना ।  
६ प०-आखें खोलना, घूरना,  
मायूसी के साथ देखना ।

मिथ ( पु० )-स्पर्धा, चढ़ाकपरी । न०-  
बहामा, मिथ, धोखा, फरेब ।

मिष्ट ( वि० )--भीठा, जायफेदार,  
छजील, नम, तर । न०-मिठाई,  
छजील खाना ।

मिष्टाद्य(न०)-मिठाई ।

मिह् ( १ प० )-पेशाब करना, तर  
करना, धीरे पेशाबना ।

मिहिका(स्त्री०)--बर्फ, कीहरा ।

मिहिर ( पु० )--सूर्य, मेघ, चन्द्रमा,  
वायु, बृहत्पुरुष, अकं वृक्ष ।

मी ( २ प० )-मारना, मट करना,  
कम करना, बदलना, नटकना ।  
१० व०-जाना, हरकत करना,  
जागना, समझना । ४ आ०-गरना,  
मट होना ।

मीदुष्टम(पु०) शिव, शीर, मूयं ।

मीन(पु०) मछली, मत्स्याक्षतार ।

मीनकेतन (पु०)-कामदेव ।

मीनगन्धा (स्त्री०)-गरुपवती ।

मीनपाती [ म् ] (पु०)-मछरा ।

मीनर (पु०)-मकर, माका ।

मीण् ( १ प० )-जाना, हरकत करना,

शब्द करना ।

मीमासक(पु०)-मीमासा करने वाला,  
अनुसन्धानक, विवेचक, मीमासा  
शास्त्र का अनुगामी ।

मीमासन (न०)-परीक्षा, अनुसन्धान,  
विवेचना ।

मीमासा(स्त्री०)-परीक्षा, जाच, विवे-  
चना, गहरा विचार, जायों के ई  
दर्शनों में से एक जिसका निर्माण  
जैमिनि ने किया है [मीमासाके  
दो भेद हैं-पूर्वमीमासा, उत्तर-  
मीमासा अथवा वेदान्त; किन्तु  
इस शब्द से प्रायः पूर्वमीमासा  
का ही बोध होता है ] ।

मीमासाकार (पु०)-जैमिनि ज्ञापि ।

मीर (पु०)-समुद्र, सागर, सीमा, हृद,  
मध्य ।

मील् ( १ प० )-आखें घन्द करना,  
आखें झपकना, मुक्तांगा ।

मीलन (न०)-आखों का घन्द करना,  
खूँ का घन्द हो जाना या मुक्तां-  
जाना ।

मीलित (वि०)-घंद, मट, आखें घंद-  
किये हुए, एकत्रित, मिश्रित ।  
न०-अलकारभेद ।

मीयर (वि०)-नुफसानदह, पूनमीय ।  
पु०-सेनामी, जनरल । [ पिता ।

मु (पु०)-मुक्ति, मोक्ष, वधन, शिव,  
मुकन्दक (पु०)-दयाल ।

मुकु (पु०)-मुक्ति, निर्वाण ।

मुकुट (न०)--तांज, सेहरा, चोटी,  
शिखर । [ वाद्यभेद ।

मुकुन्द (पु०)--विष्णु, हरण, रत्नभेद,

मुकुन्दक (पु०)--धान्यभेद, प्याज ।

मुकुर (पु०)--दर्पण, आदना, वकुलवृक्ष, मल्लिका उता ।

मुकुल (स्त्री०)--कली, विना तिला हुआ फूल, आत्मा, शरीर ।

मुक्त (वि०)--छुटा हुआ, त्यक्त, वन्धन-रहित, भवाध, क्षिप्त, कृत, प्रेषित । पु०--निर्वाणप्राप्त पुरुष, मोक्षसुखप्राप्ती पुरुष ।

मुक्तक (न०)--ऐसा अस्त्र जो पोंक कर मारा जा सके ।

मुक्तकण्ड (पु०)--मुद्गानुयायी ।

मुक्तकण्ठक (पु०)--ऐसा सर्प जिस ने कँवली छोड़ दी हो ।

मुक्तकण्ठ (वि०)--शोर मचाने वाला ।

मुक्तकण्ठम् (अ०)--जोर से, सर्वसाधारण को बता कर ।

मुक्तकर-हस्त (वि०)--जैयाज, उदार, जिस का हाथ खुला हुआ हो ।

मुक्तलज्ज (वि०)--वेधर्म, लज्जाहीन ।

मुक्ता (स्त्री०)--मोती ।

मुक्तात्मा (पु०)--ऐसी आत्मा जिसका संसारचक्र से छुटकारा हो गया हो ।

मुक्ति (स्त्री०)--मोक्ष, छुटकारा, निर्वाण, त्याग, आयागमन से छुटकारा, छोड़ना, श्रणभोचन ।

मुक्तिमार्ग (पु०)--परमानन्द पाने का उपाय, वेदमार्ग ।

मुक्त्या (अ०)--त्याग कर, छोड़कर ।

मुख (न०)--घटन, वृक्ष, मुह, चेहरा, पक्षी की घोंघ, सरदार, प्रधान, तल, कारण, वेद । [ गुप्त ।

मुखकमल (न०)--कमल के समान सुन्दर

मुखसुर (पु०)--दात, दन्त ।

मुखगन्धक (पु०)--प्याज ।

मुखचपल (वि०)--घातूनी, वाचाल ।

मुखचपेटिका (स्त्री०)--मुह पर तमाचा मारना ।

मुखघीरि (स्त्री०)--जीम, जिह्वा ।

मुखज (पु०)--ग्राहण ।

मुखनिरीक्षक (पु०)--मुस्त आदमी ।

मुखनिवाशिनी (स्त्री०)--सरस्वती ।

मुखपट (पु०)--चूचट, परदा, यवनिका ।

मुखबन्ध--धन=दीबाधा, धूमिका ।

मुखमण्डल (न०)--गोल चेहरा ।

मुखमधु (वि०)--मधुरभाषी ।

मुखमार्जन (न०)--मुख धोना, कुत्सा करना ।

मुखपथ (पु०)--फकीर, भिदारी ।

मुखर (वि०)--घातूनी, वाचाल, निरन्तर शब्द करने वाला, मजाक चढ़ाने वाला । पु०--कौआ, सरदार, नायक । [ गुफू ।

मुखरिका-री (स्त्री०)--लगामका छोटा,

मुखलागल (पु०)--कुत्ता, कुकुर ।

मुखवल्गल (पु०)--अनार का पेड़ ।

मुखवाद्य (न०)--ऐसा वाद्य जो मुह से बजाया जाय ।

मुखयादान (न०)--मुह फाड़ना, जम्माई लेना ।

मुखशफ (वि०)--मद्गुवान ।

मुखस्त्राय (पु०)--यूक, ताल ।

मुखहास (पु०)--चेहरे की दशाघत, मसन्नवदन ।

मुखीय (वि०)--सरदार, प्रधान,

मुखिया, मुखारस्थ ।

मुख्य ( वि० )—मुखसम्बन्धी, प्रधान,  
खास, प्रथम, सर्वश्रेष्ठ, अग्रगामी,  
नायक, रहनुमा ।

मुख्यता-स्व=प्रधानता, सर्वोच्च पद ।

मुख्यमन्त्री(पु०)—प्रधान मन्त्री ।

मुख्यशः-तः ( अ० )—प्रधानतः, सब से  
अधिक, विशेषकर ।

मुख्यार्थ (पु०)—गौण अर्थ के सम्प्रत्यक्ष  
में प्रधान अर्थ ।

मुख ( वि० )—घबराया हुआ, विच-  
लित, मोह को प्राप्त, मूर्ख,  
अज्ञानी, कमसमझ, सीधा, सुन्दर,  
मनोहर ।

मुग्धभाव (पु०)—सादगी, मूर्खता ।

मुग्धा (स्त्री०)—युवती, सुन्दरी ।

मुग्धाक्षी (स्त्री०)—मेमनय नेत्रवाली ।

मुग्धानगा (स्त्री०)—सुन्दरयदना ।

मुग्ध (१आ०)—त्यागना, छोड़ना ।

मुग्ध (वि०)—[ समाप्तान्त में ] छोड़ने  
वाला, त्यागने वाला ।

मुग्धकुन्द (पु०)—एक प्रकार का पुष्प-  
वृक्ष, एक राजा ।

मुग्धिलिम्ब (पु०)—एक किस्म का फूल ।

मुग्ध-मुग्ध (१प०, १स०)—शब्द करना,  
आवाज करना, साफ़ करना ।

मुग्ध (पु०)—एक किस्म की घास,  
मूँज, धारानगरी का एक राजा  
की मीठी का पकाया ।

मुद्-मुद् (१प०)—घालों का छेदन  
करना, बालों का काटना, सहन  
करना ।

मुग्ध (वि०)—सुविह्वल, मुँहा हुआ ।

अस्त्री०—मस्तक, माथा, शिर ।  
पु०—एक दैत्य, नापित [ नाई ],  
पत्रशाखाहीन वृक्ष ।

मुद्रहक (पु०)—नापित, हज्जाम, नाई,  
वि०—मूँहने वाला, बाल काटने  
वाला ।

मुद्रहन (न०)—केशों का कटवाना,  
बाल मूँहवाना, घपन ।

मुद्रहफल (न०)—जिस का फल शिर  
की न्याईं हो अर्थात् नारियल,  
नारिकेल । [ मूँहने वाला ।

मुद्रही [ न् ] ( पु० )—नाई, हज्जाम,

मुद् (१आ०)—आनन्द मनाना, सुधी  
मनाना, हर्ष करना ।

मुद्-दा ( स्त्री० )—हर्ष, मोद, खुशी,  
त्रापभाणा नाशक औषध । [ खुश ।

मुदित ( वि० )—आनन्दित, हर्षित,

मुदिर ( पु० )—मेघ, यादल । वि०—  
कामी, विषयासक्त ।

मुद्ग (पु०)—मूद्ग नामक धान्य, एक पक्षी ।

मुद्गमोदक (पु०)—मूँग के छद्म ।

मुद्गर (न०)—एक प्रकार की मालती ।

पु०—फूलों का दृष्ट ।

मुद्गल (न०)—रोहिण्य नामक वृक्ष ।

पु०—प्रवर का प्रवर्तक एक मुनि,  
एक राजा ।

मुद्गा (स्त्री०)—अंगूठी की मुहर, यह  
अंगूठी जिस में मुद्गर गुदी हो,  
देवताविशेष की आराधना करने  
के निमित्त अंगुलियों की रचना-  
विशेष, सोने चादी की अंगूठी ।

मुद्गाक्षिपि (स्त्री०)—निघने के पाँस

प्रकारों में से एक लेखनप्रकार, ठापे के अन्तर ।

मुद्रिका ( स्त्री० )—घोने चांदी की बनी अंगूठी, मुहर, रुपया ।

मुद्रित ( वि० )—अप्रकटित, गुप्त, अद्वित, ठपा हुआ ।

मुषा ( भ० )—मिथ्या, सूया, निरर्थक, झूठ, असत्य ।

मुनि ( पु० )—ऋषि, पवित्र पुरुष, संयमी, सन्त, भक्त, अगस्त्य, व्यास, पाणिनि आदि, सात की संख्या ।

मुनितरु-द्रुम ( पु० )—वकलूख, मौल-सिरी का पेड़, अगस्ति का पेड़ ।

मुनिपुत्र ( पु० )—मुनियों में श्रेष्ठ मुनि ।

मुनिपुत्र-वक्र ( पु० )—दमनकवृक्ष, दीने का पेड़, उल्लूग पत्ती ।

मुनिपुष्प-वृक्ष ( न० )—वकुलपुष्प, मौलसिरी का फूल ।

मुनिभेषज ( न० )—हरीतकी, ह्रीह, लघन, कुठ न खाना ।

मुनीन्द्र ( पु० )—मुनिश्रेष्ठ, मुखियों में उत्तम, बृहदेव । [ धरकत करना ।

मुन्य् ( १ प० )—जाना, गमन करना, मुन्यन्त ( न० )—नीहार, सवाई के चावल, कन्द आदि ।

मुमुक्षा ( स्त्री० )—छूटने की इच्छा, मुक्ति की चाहना ।

मुमुक्षु ( वि० )—मुक्ति की इच्छा वाला । मोक्ष चाहने वाला । पु०—यति, सन्यासी । [ मुक्त ।

मुमुक्षान ( पु० )—भेष, वादल । वि०—मुमुषां ( स्त्री० )—मरने की अभिलाषा ।

मुमुक्षु ( वि० )—मरने की इच्छा वाला, मरने वाला, जिसकी मृत्यु मनीषा हो । मुर् ( ६ प० )—पेरा देना, घेर लेना, लपेटना । [ विघ्न ।

मुर ( पु० )—एकरासव । न०—लपेटना, मुरज ( पु० )—मृदंग, एक किस्म का ढाका ।

मुरजा ( स्त्री० )—कुपेर की स्त्री ।

मुरन्दला ( स्त्री० )—मर्मदा नदी ।

मुरमर्दन-रिपु ( पु० )—विष्णु, कृष्ण ।

मुरला ( स्त्री० )—मर्मदानदी, एक बाजा, बसरी, मुरली, केरलदेशस्थ एक नदी ।

मुरली ( स्त्री० )—बंशी, बांसरी, अलगोजा ।

मुरलीधर ( पु० )—श्रीकृष्ण ।

मुरा ( स्त्री० )—मुरा नामक एक औषध ।

मुरारि ( पु० )—विष्णु, श्रीकृष्ण ।

मुर्छ ( १ प० )—मूर्च्छा होना, बेसुध होना, बेहोश होना । [ गंगीठी ।

मुर्मिणी ( स्त्री० )—गङ्गारधानिका, मुर्मुर ( पु० )—तुषाग्नि, तुष [ जिसके ]

की आग, कामदेव, मूर्ध का चोड़ा ।

मुश [ व ] ली-लिका ( स्त्री० )—ताल-मूली, मूयली नामक औषध, टिपकली ।

मुय् ( ६ प० )—छूटना, चोरी करना ।

मुय [ व श ] ल ( प्रस्त्री० )—मूयल, जिसके अग्रभाग में छोटा लंग होता है और जो धान्यादिकूटने के काम में आता है ।

मुयित ( वि० )—अपहतद्रव्यजन, चुराया हुआ, जिसके चोरी हो गई हो ।

मुक्क ( पु० )—अवहकोष, चीर, तस्कर ।  
मुक्कक ( पु० )—दृक्षविशेष, घबटा-  
पाटल नामक वृक्ष ।

मुक्कशून्य ( पु० )—अवहकोषों से रहित  
पुरुष, राजाओं के रणवास में रहने  
वाला पुरुष, रुवावा इस नाम से  
प्रसिद्ध, नयुंसक, हीजड़ा ।

मुष्टा [ष्टी] मुष्टि ( अ० )—आपस में मुष्टि-  
यों से छड़ना, मुक्कनमुक्का छड़ना ।

मुष्टि ( अवली० )—मुष्टी, मुक्का, एक  
पल का परिमाण [तील], चार  
तोला । स्त्री०—चुराना ।

मुष्टिक ( पु० )—स्वर्णकार, सुनार,  
राजा केस का एक नक्ष [पहल-  
वान, घोड़ा] ।

मुष्टिका ( स्त्री० )—मुष्टी, मुक्का, हाथ  
की अंगुलियों को सकोड़कर एकत्र  
गोलाकार करना ।

मुष्टिधम ( पु० )—मुष्टी घुसने वाला  
थूँघा, बालक ।

मुष [प-श] लो [न] ( पु० )—ग्रीष्म  
का आता, बलदेव ।

मुषत्प ( वि० )—मूख से नारने योग्य ।  
मुस्तः—स्तः—स्तम्=नीचा, दृष्यमूल  
विशेष ।

मुस्ताद ( पु० )—मूत्र, शूकर ।

मुह ( ४५० )—मोह होना, बेचैन होना,  
धैर्य होना ।

मुहिर ( पु० )—कामदेव, मूर्ख, असम्य ।

मुहुस् [ः] ( अ० )—धीनः पुन्य, बारबार ।

मुहूतं ( अरबी० )—द्वादशतणपरि-  
मित काल, कुछ कम व षण्मास

दो घड़ी का समय, छहमा, घोड़ा  
काल ।

मू ( १५० )—वांघमा, वम्पन में करना ।

मूक ( वि० )—वाक्शक्तिरहित, मूंगा,  
दीन । पु०—मछली, एक दैत्य ।

मूकता—त्यं—भावः=मूंगापन, धोउने  
की शक्ति से रहित होना, दीनता ।

मूढ ( वि० )—मूर्ख, बेवकूफ, जड़ ।

मूत ( वि० )—बहु, तृणनिर्मित धान्य  
[अनाज] भरने का पात्रविशेष ।

मूत्र ( १०३० )—फिरना, पहना, मूतना ।

मूत्र ( न० )—मूत्र, पेशाब ।

मूत्रकृच्छ्र ( न० )—रोगविशेष, बिनग  
रोग जिस में कष्ट से थोड़ा २ मूत्र  
आता है ।

मूत्रग्रन्थि ( पु० )—ज्वररोग, मूत्र-  
नाग में पथरी का होना ।

मूत्रदोष ( पु० )—प्रमेह, जिरयान रोग ।

मूत्रनिरोध ( पु० )—मूत्र का रुक जाना,  
बन्द लगना ।

मूत्रफला ( स्त्री० )—जिसके राने से  
मूत्र अधिक आता है, ककड़ी ।

मूत्राशय ( पु० )—नाभि के नीचे का  
भाग, वस्तिस्वयं, मसाना ।

मूत्रित ( वि० )—कृतमूत्रोत्सर्ग, जो पेशाब  
कर चुका हो ।

मूर्ख ( वि० )—अध, मूढ, बेवकूफ ।

मूर्खता—त्यम्=बेवकूफी, अज्ञता, ना-  
समफी । [ बेधुपहोना ।

मूर्च्छना ( स्त्री० )—गीत का अंगविशेष,

मूर्च्छा ( स्त्री० )—संगोद, वेहोशी,  
यद्दि, यदना ।



मूर्च्छित ( वि० )—बेहोश, बेसुध,  
मूर्च्छावाला, बड़ाहुआ, कंचा,  
घथराया हुआ ।

मूर्ति ( वि० )—मूर्च्छित, बेहोश, मूर्ख,  
नादान, सदेह, पार्थिव, गुल्मिद,  
वास्तविक मूर्ति वाला ।

मूर्ति (स्त्री०)—सपरिनाशवस्तु, पार्थिव  
द्रव्य, शकल, शरीर, फठोरता,  
सुन्दरता ।

मूर्तित्व (न०)—वशरीरता, अवतार ।

मूर्तिमान् [ गत् ] ( वि० )—आकारयुक्त,  
शकलवाला, मूर्तिवाला, फठोर ।

मूर्धकर्णी—कर्परी (स्त्री०)—छाता, छत्री ।

मूर्धज (पु०)—शिर के वाल ।

मूर्धन् [ मूर्धा ] ( पु० )—शिर, नाथा,  
मस्तक, बोटी, आगे का भाग,  
छोडर ।

मूर्धन्य ( वि० )—शिर पर रहने वाला  
प्रधान, सर्वोत्तम ।

मूर्धन्तु=मूर्धन् ।

मूर्धो-वी-विंका (स्त्री०)—अपने नाम  
से प्रसिद्ध एक सता ।

मूल् ( १ च० )—जड़ पकड़ना, अंकुश  
चगना, मजबूती से खड़ा होना ।  
१०३०—उगाना, जमाना, बोना,  
पीद उगाना ।

मूल (न०)—जड़, किसी वस्तु का सभ  
से नीचे का भाग, जिफा, आरम्भ,  
बुनियाद, पाय, उद्गमस्थान,  
ग्रन्थ का वास्तविक भाग, वह  
भाग जिस पर टीका की जाय,  
उपसर्गों नक्षत्र, निष्पन्न, विप्लव

आदि जड़ ।

मूलक ( वि० )—उत्पन्न करने वाला,  
मूलयुक्त, जड़ जमाने वाला ।  
अस्त्री०—मूली नानक कन्द ।

मूलकर्म [ नृ ] ( न० )—वशीकरण, जादू,  
प्रथम कार्य ।

मूलकार ( पु० )—किसी ग्रन्थ का  
वास्तविक प्रणेता ।

मूलकारण ( न० )—आरम्भिक हेतु,  
वह कारण जिस से उत्पत्ति हो,  
प्रधान कारण ।

मूलग्रन्थ ( पु० )—मुस्तफा का असली  
भाग, ग्रन्थकार का स्वनिर्मित अंश,  
बहुदेव का वचनसमूह ।

मूलच्छेद ( पु० )—जड़ से छपाड़ना ।

मूलत्र ( वि० )—जड़ में उत्पन्न होने  
वाला जैसे यमी, मूलनक्षत्र में  
उत्पन्न होने वाला । न०—ताज  
अदरक ।

मूलदेव ( पु० )—कंच का नाम ।

मूलद्रव्य-धन ( न० )—पूँजी, कैपिटल  
स्टॉक, वास्तविक धन, वह रूपरा  
जो आरम्भ में व्यापार में लगाया  
जाता है ।

मूलप्रकृति ( स्त्री० )—संसार में सनातन  
दशा को प्राप्त हुआ सत्य, राज,  
और तमोगुणरूप प्रधान ।

मूलमृत्य ( पु० )—पुराना नीकर ।

मूलवचन ( न० )—किसी किताब का  
असली अंश, आख्यीय प्रमाण ।

मूलवित्त (न०)—मूलद्रव्य ।

मूलवध (पु०)—बोसाइटी, चम्पदाय ।

मूलस्थान (न०)—प्रनियाद, जड़भूमि,  
परमात्मा वायु, मुलतान नगर ।

मूलहर (वि०)—जड़मे नाश करने वाला  
मूला (स्त्री०)—अपने नाम से प्रसिद्ध  
नक्षत्र ।

मूलाधार (पु०)—नाभि और लिंग का  
बीच, जहाँ सब नाड़ियाँ आकर  
मिलती हैं ।

मूलिक (वि०)—आरंभिक, प्रधान,  
गुरु का । पु०—तपस्वी, मूलाहार  
करने वाला ।

मूलिन (वि०)—जड़के पास से उत्पन्न  
होने वाला । पु०—वृक्ष, पौधा ।

मूली[त्र] (पु०)—वृक्ष, पेड़ ।

मूलेर (पु०)—राजा, मादशाह ।

मूलोच्छेद (पु०)—घटनाश ।

मूल्य (न०)—क्रीमत, मोल, नौकरी,  
नज़दगी, लाभ, पूँजी, बसली  
क्रीमत । वि०—नष्ट करने योग्य,  
मूलोत्पन्न, खरीदने योग्य ।

मूय (१ आ०)—चुराना, छूटना ।

मूय (पु०)—चूहा, छोटा चूहा, मूराह,  
मोल लिहकी ।

मूयक (पु०)—चौर, चूहा, लट्कर ।

मूयन (न०)—घोरी, छूट ।

मूया-मूर्धिका (स्त्री०)—चूही, वायु  
आग का मूराह ।

मूर्धिक (पु०)—चूहा, चौर, गिरीष का  
पेड़, देशभेद ।

मूर्धिकविषाण (न०)—चूहे के सींग  
अर्थात् अनहोमी चाँचा, गगवि-  
षाण, आकाशकुमुन, सुपुत्र ।

मूर्धिकांक-अंचन (पु०)—पौराणिक गणेश  
का दायाँ जिसकी सवारी चूहा है ।

मूर्धिकाद-भराति (पु०)—बिल्ली ।

मूपी-मूर्धिका (स्त्री०)—छोटा चूहा,  
चूही ।

मृ (६ आ०)—नरता, नष्ट होना,  
शरीर स्वागता [ लट्, लोट्,  
कट्, विधिलिट्, लुट्, आशी-  
लिट् में आत्मनेपद तथा शेष  
लकारों में परस्मैपद होती है ] ।

मृकपट्ट (पु०)—एक ऋषि का नाम ।

मृग (४ प०, १० आ०)—पीछा करना,  
तलाश करना, मांगना, डूटना,  
अनुसन्धान करना, शिकार करना ।

मृग (पु०)—पशुमात्र, घोषाया, हरिण,  
पाँचवा नक्षत्र, इस्तिसेद, अन्वे-  
षण, मांगना, मकर राशि, कस्तूरी,  
पीछा, अनुसन्धान, मांगशीर्षमात्र ।

मृगजल (न०)—मृगतृणा ।

मृगजीवन (पु०)—व्याघ्र, शिकारी ।

मृगणा (स्त्री०)—खोये हुए पदार्थों को  
ढूँढ़ना, तलाश ।

मृगतृणा (स्त्री०)—जलशून्य देश में  
दूर से सूर्य की किरणों को देख  
व्यास से दुःखित हुए मृग जल की  
प्राप्ति से वार २ पूनते हैं परन्तु  
जल नहीं मिलता, अतः उग का  
यह प्रपञ्च निष्फल रहता है,  
निर्जल देश में रेत पर गिरी हुई  
किरणों में पानी का भ्रम, भ्रमद  
काम, अधिक लाछन जिस की  
प्रति नहीं हो सकती । [मृगतृ-

तृषा--तृणि-तृष्णिका का भी  
यही अर्थ है ] ।

सृगदश-दशक (पु०)-कुत्ता, कुक्कुर ।

सृगदृश्-नयना-अक्षी (स्त्री०)-हरिण  
के समान आंख वाली स्त्री,  
चञ्चल नेत्र वाली स्त्री ।

सृगदृष् (पु०)-शेर, सिंह ।

सृगधर (पु०)-चांद, चन्द्रमा ।

सृगधूर्त (पु०)-गौदह, शृगाल ।

सृगनाभि (पु०)-भुशुक, कस्तूरी, वह  
सृग जिसमें कस्तूरी निकलती है ।

सृगपति (पु०)-शेर, चीता ।

सृगमद (पु०)-कस्तूरी, भुशुक ।

सृगभास (पु०)-भार्येश्वर का भास ।

सृगया (स्त्री०)-शिकार, आखेट ।

सृगयापान (न०)-शिकार की मुहिम ।

सृगयु (पु०)-शिकारी, गौदह, व्याकृण ।

सृगयूष (न०)-हरिणों का कुवह ।

सृगराज-ज (पु०)-शेर, सिंह, चन्द्रमा ।

सृगरिपु (पु०)-शेर, सिंह ।

सृगलांठन-उत्सव (पु०)-चांद, चन्द्रमा ।

सृगलोचन (पु०)-चांद, चन्द्रमा ।

सृगलोचना-नी (स्त्री०)-सृग के समान  
नेत्र वाली स्त्री ।

सृगघादन (पु०)-घायु, हधा ।

सृगवप (न०)-शिकार, आखेट ।

सृगव्याप (पु०)-शिकारी ।

सृगशिरस् (अस्त्री०)-शिरस का शिर  
हरिण के समान है, अश्विनी से  
प्राप्तवा नक्षत्र । [सृगशिरा, सृग-  
शीपेन, सृगशीपे शब्दों का भी  
यही अर्थ है ] ।

सृगश्रेष्ठ (पु०)-चीता, सिंह ।

सृगहा [ न ] (पु०)-शिकारी ।

सृगाक (पु०)-चन्द्र, कपूर, घायु ।

सृगाजिन (न०)-सृगलाला ।

सृगाधिप-अधिराज (पु०)-शेर, सिंह ।

सृगाराति (पु०)-शेर, कुत्ता ।

सृगेन्द्र (पु०)-शेर, चीता ।

सृगेन्द्रचटक (पु०)-घाज, श्येन ।

सृज् ( १ प० )-आयाज करना । २ प०,

१० उ०-धोना, मिटाना, साफ  
करना, झाड़ू लगाता ।

सृजा (स्त्री०)-साजें, साफ करना ।

सृह् ( ६, ९ प० )-प्रसन्न करना, घना  
करना, सुग्री होना ।

सृहा-हानी (स्त्री०)-पावेंती ।

सृहीक (पु०)-शिव, मछली, हरिण ।

सृण् ( ६ प० )-भारता, कलक करना,  
साध करना ।

सृणाल ( अस्त्री० )-कमलहरही,  
वीरणमूल । [की इयही ।

सृणालिका-ली (स्त्री०)-कमल के कूल  
सृणाली [ न ] (पु०)-कमल ।

सृत ( वि० )-सुरदा, गतप्राण, निकम्मा,  
निश्चेष्ट । न०-मौत, मृत्यु, भिषाग्न

सृतक (अस्त्री०)-मुर्दा आदमी, लाश,  
शव । न०-सम्पन्धी के घर जाने से  
आशीर्ष, मृत्यु ।

सृतकान्तक (पु०)-गौदह, शृगाल ।

सृतकरप-प्राय (वि०)-मरे के समान,  
मृततुल्य, यद्दोश ।

सृतग्रह (न०)-कबर ।

सृतघेल (न०)-उपकन । [वाला ।

सृतत्रोवन ( वि० )-मुर्दा को निठाने

मृतमत्त-मत्तक ( पु० )-ग्रीवह ।  
 मृतसंस्कार ( पु० )-दाहकर्म, अन्त्ये-  
 ष्टिकर्म । [स्नान करना ।  
 मृतस्नान ( म० )-दाहकर्म के पश्चात्  
 मृतांग ( न० )-लाश, शव ।  
 मृताशेष ( न० )-सम्बन्धी या सगोत्री  
 की मृत्यु के कारण अपवित्रता  
 का जो संचार होता है उसके  
 लिये प्रायश्चित्तादि ।  
 मृति ( स्त्री० )-मृत्पु, गरण ।  
 मृतिमा [मृत्] ( पु० )-गरणधर्म ।  
 मृतपद ( पु० )-सूर्य, सूरज ।  
 मृत्तिका ( स्त्री० )-मट्टी, जमीन, भूमि ।  
 मृत्पु ( पु० )-मीत, गरण, यमराज,  
 माया, काशी, कामदेव ।  
 मृत्पुत्र्य ( पु० )-शिवः परमात्मा ।  
 मृत्पुद ( वि० )-नारने वाला ।  
 मृत्पुनाशन ( म० )-अमृत ।  
 मृत्पुपाय ( पु० )-मीत का पद ।  
 मृत्पुमृत्य ( पु० )-रोग, बीमारी ।  
 मृत्पुराज ( पु० )-यमराज ।  
 मृत्पुलोक ( पु० )-इक्ष्वाक, पृथ्वी,  
 यमराज का लोक ।  
 मृत्ता ( स्त्री० )-मृत्तिका, मट्टी ।  
 मृत्तन ( म० )-पुं, रेणु, धूलि ।  
 मृद ( ८ प० )-दयागा, पुष्पलता, टुकड़े  
 टुकड़े करना, पुंज करना, रगड़ना,  
 मिटाना ।  
 मृद ( स्त्री० )-मट्टी, भूमि का अंश,  
 प्रायश्चित्त अंश ।  
 मृदकर ( पु० )-दरा कटुकर ।  
 मृदग ( पु० )-तबला, वाद्योद् ।

मृदा ( स्त्री० )-मृत् ।  
 मृदु ( वि० )-मुनायम, नाजुक, दुर्बल,  
 कमजोर, कुन्द, सुस्त, नीठा, सयत ।  
 म०-मुलाभियत से, मीठे स्वर से ।  
 मृदुतापी [मृ] ( वि० )-मीठा बोलने  
 वाला, मधुरभाषी ।  
 मृदुल ( वि० )-मुलायम, नाजुक ।  
 मृदुस्पर्श ( वि० )-छूने से मुलायम ।  
 मृदुश्चक्षु ( वि० )-दयाधान, रुपाहु ।  
 मृष्ट ( १ उ० )-नम होना, उपेक्षा  
 करना, भीयना ।  
 मृथ ( न० )-युद्ध, लड़ाई ।  
 मृश ( ६ प० )-छूना, हाथ लगाना, रग-  
 डना, रोचना ।  
 मृष्ट ( १ प० )-छिड़कना । १ उ०-प्रदा-  
 रित करना, सहना । १० उ०-सहना,  
 यदांशत करना, इजाजत देना,  
 क्षमा करना, भूलना ।  
 मृषा ( न० )-झूठ, असत्य, अनृत,  
 वृथा, किजूल ।  
 मृषालव ( पु० )-आम का पेड़ ।  
 मृष्ट ( वि० )-गुह्य, पवित्र, साफ किया  
 हुआ, छुआ हुआ, विचारित ।  
 म०-मिष्ट ।  
 मृ( ८ प० ) [मृषाति]-मारना,  
 मे ( १ भा० ) [मृषते]-प्रदलना,  
 मयादला करना ।  
 मेक ( पु० )-अज, यकरा ।  
 मेक ( पु० )-मृकपयंत या माम, यकरा ।  
 मेखना ( स्त्री० )-स्त्रीकटीमुचण,  
 धीरत की कमर या जेधर, तगड़ी,  
 कटीमुच, रस्सी आदि, दीग क

कुसुम, पर्वत का नितम्ब ।  
 मेखनी [ न ] ( पु० )—शिव, ब्रह्मचारी ।  
 मेघ ( पु० )—घाटन, ढेर, ६ रागनियों में  
 , मे पक्ष, सुगन्धतृण ।  
 मेघकफ ( पु० )—भोला ।  
 मेघकाष्ठ ( पु० )—वरसात, वर्षाकाष्ठ ।  
 मेघबिनाक ( पु० )—पातक पत्नी ।  
 मेघदीप ( पु० )—विजली, विद्युत् ।  
 मेघदूत ( न० )—कालीदास कृत एक  
 प्रसिद्ध संस्कृतकाव्य ।  
 मेघनाद ( पु० )—बादलों की गरज,  
 रावणपुत्र मेघनाद, महाबली ।  
 मेघनादनिभ ( पु० )—लक्षण ।  
 मेघनद्वल ( न० )—आकाश, आसमान ।  
 मेघनाला ( स्त्री० )—बादलों का समूह ।  
 मेघयोनि ( पु० )—पुआं, कोहरा ।  
 मेघयाहन ( पु० )—वह्न ।  
 मेघसङ्घ ( पु० )—नोर, नगर ।  
 मेघक ( वि० )—काला, नीलाकाला ।  
 न०—स्पाही, कालारग, बादल, पुआं ।  
 मेढ-ह ( १५० )—पागल होना ।  
 मेढ ( पु० )—मैंटा, हाथीघान् ।  
 मेढि-पि ( पु० )—स्तम्भ, खम्भा ।  
 मेढ ( पु० )—मैंटा । न०—लिङ्ग, उप-  
 स्थेन्द्रिय ।  
 मेढ-ड ( पु० )—कीलघात, हाथीघात ।  
 मेढ-क ( पु० )—मैंटा ।  
 मेघ ( १५० )—मिलना, परस्पर मिलना,  
 जानना, भरण । [ घात ।  
 मेघिका-पिनी ( स्त्री० )—मेघी नामक  
 मेद ( पु० )—वर्षा ।  
 मेदम् ( न० )—वर्षा, मेद, शरीररूप

सात घातुओं में से एक, मुटापा,  
 - मोटापन ।  
 मेदक ( न० )—हड्डी, अस्थि ।  
 मेदवृद्धि ( स्त्री० )—मुटापा, बड़ी का  
 बढ़ जाना ।  
 मेदस्त्री [ न ] ( वि० )—मोटा, ताजा,  
 चर्बीदार, मजबूत, स्थूल ।  
 मेदिनी ( स्त्री० )—पृथ्वी, भूमि, एक  
 शब्दकोष का नाम । [ यम, पना ।  
 मेदुर ( वि० )—मोटा, चिकना, मुला-  
 मेद्य ( वि० )—पूखेय ।  
 मेघ ( पु० )—आहुति, यज्ञ, होम ।  
 मेघा ( स्त्री० )—प्रतिभा, बुद्धि, अच्छी  
 समझ, दिमागी क्षमता, ताकत,  
 यज्ञ । [ प्रसिद्ध टीकाकार ।  
 मेघातिथि ( पु० )—ननुस्मृति का एक  
 मेघावत् [ घान् ] ( वि० )—मज्जलानन्द,  
 धर्तुर, ममकद्वार ।  
 मेघायी [ विन् ] ( वि० )—पूखेय । पु०—  
 विद्वान्, क्षपि, प्रतिभाशाली  
 पुरुष, तोता ।  
 मेघ्य ( वि० )—पवित्र, मेघाजनक, बुद्धि  
 के लिये हितकर । पु०—उदिर,  
 यय, जी ।  
 मेघ्या ( स्त्री० )—रक्तवर्षा, मासकृमि,  
 शंसुपुष्पी, ब्रह्मी आदि मीमाष ।  
 मेनका ( स्त्री० )—स्वर्ग की एक वेश्या,  
 हिमालय की स्त्री । [ पार्वती ।  
 मेनकाहनत्रा ( स्त्री० )—शकुन्तला, दुर्गा,  
 मेका ( स्त्री० )—मेनका, मनमोहक  
 पितृव्या, हिमालय की स्त्री,  
 एक नदी । [ विंलाव ।  
 मेनाद ( पु० )—उग, मकरा, मयूर,

मेन्धिका-न्धी (स्त्री०) - मेहदी का पेड़ जिसके पत्ते हराव रचाने के काम आते हैं ।

मेघ ( १ भा० ) - जाना, गमन करना, हरकत करना । [ परिच्छेद ] ।

मेघ (वि०) - मापने लायक, छातव्य,

मेरु (पु०) - दुमेरु नामक पर्वत, आला के ऊपर का धौल, अंगुलियों का पर्व [ पीरवा ] ।

मेरुसाधनं ( पु० ) - एकादश मनु, चतुर्दशमन्वन्तर्गत ग्यारहवां मनु ।

मेरु (पु०) - मेरु, सग, विद्या ।

मेला (स्त्री०) - स्याही, सुर्मा, अलून, मिठाना, नील का वृक्ष ।

मेलागन्धा-गन्धु (स्त्री०) - स्याही का आधारपात्र, दाघात ।

मेघ ( १ भा० ) - सेधा करना, दहल करना

मेघ (पु०) - पशुभेद, मेढा, लग्नविशेष, पहिली राशि, औपचमिशेष ।

मेघकम्बल ( पु० ) - मेघलोचननिर्मित वस्त्र, मेड़ की ऊन का कम्बल, ऊर्णापु । [ घाला, गहरिया ।

मेघपाल-लक ( पु० ) - मेढा की पालने

मेघमगी ( स्त्री० ) - मेढासीगी नामक औपच ।

मेघा (स्त्री०) - छोटी इलायची ।

मेघादह (पु०) - इन्द्र, अमरेश ।

मेधिका-घी ( स्त्री० ) मेघ की स्त्री-जाति, जटामासी, तिनिश नाम का एक पेड़ ।

मेह ( पु० ) - प्रत्याघ, मूत्र, पेशाब, आदर, मेघ, प्रमेद का रोग ।

मेहघी (स्त्री०) - हन्दी, हरिद्रा ।

मेहन (न०) - पुनःपिष्ट, तपस्वेन्द्रिय, पेशाब करना, मूत्र ।

मेत्र (वि०) - मित्रसम्बन्धी, मित्र का, मित्र से प्राप्त । न० - मित्रता, दोस्ती, अनुराधा नक्षत्र, मल-भूधोत्सर्ग । पु० - ग्राहण ।

मैत्रायण ( पु० ) - मित्र और वरुण देवता की सन्तान, जगत्पति, यज्ञिष्ठ । [ मैत्रायण का भी यही अर्थ है । ]

मैत्री (स्त्री०) - दोस्ती, मित्रता, सुहृद्भाव [ मैत्र्य का भी यही अर्थ है ] ।

मैत्रेय (पु०) - ब्रह्मभेद, एक मुनि, मित्र की सन्तान । वि० - मित्रसम्बन्धी, मित्र का । [ बल्य की स्त्री ।

मैत्रेयी (स्त्री०) - एक उपनिषद्, याज्ञ-

मैथिल (पु०) - मिथिला नगरी का एक राजा । पु० बहुव० - मिथिला के रहने वाले ।

मैथिली ( स्त्री० ) - सीता, जानकी, रामचन्द्र की भायाँ ।

मैथुन (न०) - अन्याधानादि यज्ञकर्म, सन्तानार्थ स्त्रीपुरुष का संयोग, सम्भोग ।

मैनाफ (पु०) - एक पर्वत, दानवविशेष ।

मैनाकस्वसा [ सु ] ( स्त्री० ) - मैनाक की ग्रहिन, पार्वती ।

मैनिक ( पु० ) - गडली मारने वाला जालिक, मछेरा ।

मैरेय-यक ( अस्त्री० ) - मुराभेद, एक प्रकार की शराब । [ नक्ली ।

मैल [लि]न्द (पु०) - भौरा, शहद की

मोक्ष (१५०, १०७०)-कैंकना, छूटना,  
खोलना, खुल जाना ।

मोक्ष (५०)-मुक्ति, मोचन, मृत्यु,  
अलग होना, फेंकना ।

मोक्षक ( वि० )-मोक्षदाता, मुक्ति  
करने वाला ।

मोक्षोपाय ( ५० )-मुक्ति का साधन  
तय शमादि, योग, ज्ञान ।

मोक्षक ( न० )-छूटना, मुक्त होना,  
कैंकना । [ ५०-प्राचीर, कोट ।

मोक्ष(वि०)-निरपेक्ष,हीन,कम,छोटा ।

मोक्षपुष्पा ( स्त्री० )-धन्व्यास्त्री, याक्ष  
( भीरत ।

मोक्षा ( स्त्री० )-विहग,पाटला नामक  
भीषण । [ न०-केला, कदलीफल ।

मोक्ष ( ५० )-सहिलना का पेड़ ।

मोक्षक ( ५० )-मुक्ति, नजात, केले का  
फल, सहिलना का पेड़ । वि०-

वैराग्यवान्, निरक्त ।

मोक्षमिता [ व ]-( वि० )-मुक्तिदाता,  
छुटाने वाला । [ पूर्णिकरण ।

मोदन ( ५० )-वायु, हवा । न०-पीसना,

मोहायित ( न० )-स्त्रियो की एक  
प्रकार की अभिलाषा ।

मोक्ष ( ५० )-सूखा हुआ जग, भस्मिका,  
शाम रखन की पिटाही ।

मोक्ष ( ५० )-हर्ष, आनन्द, खुशी ।

मोक्षक ( ५० )-साध्यपदार्थविशेष, लहू  
नाम से प्रसिद्ध पदार्थ, शूद्रस्त्रा में  
सत्रिय से उत्पन्न पुरुष, एक प्रकार  
का पदार्थ जिसकी मदरा कहना  
चाहिये । वि०-आनन्ददाता, सुख  
करने वाला ।

मोदन ( न० )-खुशी, हर्ष । वि० हर्षजनक  
मोदिनी ( स्त्री० )-अजमोद, अजवा-  
यन, मालती, बनेली, करतूरी,  
शराब ।

मोदता ( स्त्री० )-मूर्वा नामक भीषण ।

मोपक ( ५० )-चौर, तस्कर ।

मोषण ( न० )-छूटना, चुराना, छेदना,  
भारना । [ छूटने वाला ।

मोपिता [ व ]-( वि० )-चुराने वाला,

मोह ( ५० )-भ्रम, धोखा, भ्रम, भ्रान्त,  
नासमझी, दुःख, शरीरादि में  
अवस्थाभिमान ।

मोहन ( ५० )-धतूरा, कामदेव का शर  
विशेष । वि०-मोहित करने वाला ।

न०-सुरत, नगरभेद ।

मोह [ हि ] की ( स्त्री० )-घटपत्री, नापा ।

वि०-मोहने वाली स्त्री ।

मोहरात्रि ( स्त्री० )-जन्माष्टमी की  
रात्रि, अस्तर के परिमाण से  
पचास वर्षे बीतने पर एक प्रकार  
का प्रलय ।

मोहशास्त्र ( न० )-अविद्याजनक ग्रन्थ ।

मौक्तिक ( न० )-मुक्ति, मोती ।

मौक्तिकप्रसवा-मुक्ति ( स्त्री० )-मोती  
पाली मोर्पे, ऐसी मुक्ति जिस में से  
मोती निकलता है । [ या हार ।

मौक्तिकसर ( ५० )-मोतियों की लड़ी

मोक्ष ( न० )=मुक्ति ।

मोक्ष ( न० )-अप्रियवादिता, चष-  
छता, मुखरता ।

मौक्तिक ( वि० )-मुखसम्पन्नी, मुह  
से कहा हुआ ।

मौल्यी (स्त्री०)—कटिबन्धनसूत्र, तगड़ी,  
सूत्र की तिहरी बनी हुई मेखला ।

मौल्यीबन्ध [ न ] ( पु० )—यज्ञोपवीत  
संस्कार । न०—तगड़ी पहरना,

मेखलाधारण करना ।

मौल्य ( न० )—मूढता, मूर्खता, बालक-  
पन, मोढ़ ।

मौल्य ( पु० )—मुद्गलमुनि की प्रस्ताव,  
गोत्रप्रवर्तक मुनिविशेष ।

मौल्य ( न० )—मूग पैदा होने योग्य  
क्षेत्र, ऐसा क्षेत्र जिसमें मूग अच्छी

पैदा हो । [ रश्मा, तूष्णीम् ।

मौन ( न० )—मुनिपना, अभाषण, चुप

। मौनी [ न् ] ( वि० )—वाणीठ्या पार  
रहित, चुप रहने वाला । पु०—मुनि

कीरलिक ( वि० )—मुरख [ मृदग ] बजाने  
के स्वभाव वाला, मुरख बजाने

वाला ।

मौल्य ( न० )—मूर्खता, मूढता, येयकूफी ।

मौली ( स्त्री० )—धनुष की प्रत्यक्षा ।

मौल ( वि० )—मूल से उत्पन्न, आरम्भिक,  
पुराना, प्राचीन, कुलीन । पु०—

पुराना मन्त्री ।

मौलि ( वि० )—प्रधान, सर्वोच्च ।

पु०—शिर, मुकुट, चोटी, शिखर,  
अगोका मूल । अक्ली०—शिर की

चोटी के बाल, जटाजूट, ताज,  
राजमुकुट ।

मौलि-ली ( स्त्री० )—पत्नी, भूमि ।

मौलिक ( वि० )—प्रधान, मुख्यवान्,  
मूर्खान ।

मौलिमण्डन ( न० )—शिरोभूषण ।

मौलिमुकुट ( न० )—ताज, एक राजविन्ह

मौली [ न् ] ( वि० )—ताजदार, शिखर-  
युक्त, मुकुटधारी ।

मौल्य ( न० )—क्रीमत, मूल्य ।

मौल्यिक ( पु० )—बदमाश, ठग, शठ ।

मौल्य ( पु० )—नज्मी, ज्योतिषी ।

मौल्यिक ( वि० )—लौकिक, अल्पका-  
लीन । पु०—ज्योतिषी, दैवज्ञ ।

मना ( १ प० )—जपना, मन २ में  
दोहराना, मेहनत से सीखना,

याद करना ।

मनात ( वि० )—अधीन, सीखा हुआ,  
दोहराया हुआ ।

मन ( १ प० )—रगड़ना, हकट्टा करना,  
मारना । १०८०—ढेर करना, छेपन

करना, निलाना, बड़बड़ाना ।

मन ( पु० )—कपट, दम्भ ।

मन ( १ प० )—पीसना, कुचलना ।

मदिमा [ मन् ] ( पु० )—मुलामिपत,  
मृदुता, कोमलता ।

मन् ( १ प० )—जाना, हरकत करना

मन् ( १ प० )—पागल होना ।

मन् ( १० प० )—काटना, घांटना ।

मन् ( वि० )—मुर्काया हुआ ।

मन् ( वि० )—मुर्काया हुआ, पका  
हुआ, उदास, मन्दा ।

मन् ( वि० )—मुर्काया हुआ, पका  
हुआ, उदास, मन्दा ।

मन् ( वि० )—मन्दा, मुर्काया हुआ  
मन् ( १ प०, १० प० )—मन्दा



। योत्ना, यद्यद्वा कर कहना ।  
 श्लेच्छ (पु०)-वृद्धी, मनार्थ, असंस्कृत-  
 भाषी, विदेशी, अन्त्यज, जाति-  
 व्युत्, पापी । न०-तामा ।  
 श्लेच्छजाति (स्त्री०)-वृद्धी क्रीम,  
 मनार्थ लोग, पयंतरय जाति ।  
 श्लेच्छभाषा (स्त्री०)-विदेशी ज्ञान ।  
 श्लेच्छभोजन (पु०)-गेहूं, गोधूम । न०-  
 जी, यम ।  
 श्लेष् (१ आ०)-पूजना, सेवा करना  
 श्लै (१ प०)-मुर्झाना, सहना, चकना,  
 उदास होना ।

## य

य (पु०)-जाने वाला, गतिशील,  
 गाढ़ी, धायु, यश, जी, मकाश,  
 रोक, एक गण, त्याग, यम ।  
 यकृत (न०)-सिगर, शरीर का एक  
 अंग, कोख, फुल्लि ।  
 यकृद्वर (न०)-सिगर का यद जाना,  
 जलन्धररोग ।  
 यक्ष (१ प०)-हरकत करना, चलना ।  
 १० आ०-पूजना, अर्चना करना ।  
 यक्ष (पु०)-एक कल्पित देवयोनि  
 जो कुवेर के अनुषर बताया जाते  
 हैं, भूत, इन्द्रभयन कुवेर, पूजा ।  
 यक्षग्रह (पु०)-भूत का चढ़ना, यक्ष  
 द्वारा आक्रान्त ।  
 यक्षतक (पु०)-वटवृक्ष, यक्ष का पेड़ ।  
 यक्षराज (पु०)-कुवेर, असाह्य ।  
 यक्षरात्रि (स्त्री०)-दीपावली का उत्सव ।

यज्ञाधिप-इन्द्र (पु०)-कुवेर, यक्षराज ।  
 यज्ञावास (पु०)-यक्ष का पेड़, वटवृक्ष ।  
 यज्ञिणी (स्त्री०)-यक्षभाषा, भूतिनी ।  
 यक्ष-यक्षन् (पु०)-रोगभेद, निर्मा,  
 क्षयरोग ।  
 यक्षग्रह (पु०)-क्षयरोग का आक्रमण  
 यक्षघ्नी (स्त्री०)-अंगूर ।  
 यक्षी [ज] (वि०)-क्षयरोगप्रस्त ।  
 यज्ञ (१ आ०)-यज्ञ करना, पूजा  
 करना, देना, दान करना, संगति  
 करना, इच्छा करना ।  
 यज्ञ (पु०)-यज्ञ, अग्नि ।  
 यज्ञत (वि०)-यज्ञ, पूजनीय । पु०-  
 यज्ञकर्त्ता, शिव, चन्द्र ।  
 यज्ञत्र (पु०)-अग्निहोत्री ।  
 यज्ञन (न०)-यज्ञ करना, यज्ञ, यज्ञस्थान  
 यज्ञनाम-क (पु०)-होता [पुरोहित]  
 आदि को नियुक्त करने वाला,  
 निरन्तर यज्ञ कराने वाला ।  
 यज्ञक (वि०)-पूजा करने वाला,  
 उदार, जैयान ।  
 यज्ञि (पु०)-यज्ञकर्त्ता, यज्ञ ।  
 यज्ञुः [ज] (न०)-यज्ञमन्त्र, यज्ञवेद  
 का मन्त्र, यज्ञ करते समय पठ-  
 नीय मन्त्र, यज्ञवेद ।  
 यज्ञुर्विद (वि०)-यज्ञवेद का ज्ञाता ।  
 यज्ञुर्वेद (पु०)-चारों वेद में द्वितीय  
 वेद जिस में यज्ञ का विधान  
 विशेषरूप में है [ऋक्, यजुः, साम  
 और अथर्व भाग के चार वेद हैं]  
 यज्ञ (पु०)-वेदमन्त्रों के उच्चारण  
 पुरातन समिधा सामग्री के साथ

पुताहुतियो का अग्नि में सम-  
र्पण, पूजाकायं, स्तवकार, अच्छा  
काम, अग्नि, विष्णु, दान, सम-  
तिकरण, वेदाध्ययन, शिल्पादि  
का निमोण ।

यज्ञकर्म [न] (न०)-यज्ञार्थ की पूर्ति  
करने वाला कोई काम ।

यज्ञकल्प (वि०)-यज्ञ के समान ।

यज्ञकाल (पु०)-पूर्णमासी, अमावस्या ।

यज्ञकुण्ड (न०)-यज्ञ करते समय  
प्रदीप्त अग्नि रखने का पग  
विधेय जिस में यज्ञाहुतिया डाली  
जाती हैं परिमाणपूर्वक ऐसा  
कुण्ड पृथ्वी में भी खोद लिया  
जाता है ।

यज्ञकृत् (वि०)-यज्ञ करने वाला ।

पु०-विष्णु, याज्ञिक, यज्ञकर्त्ता ।

यज्ञक्रिया (स्त्री०)-यज्ञसम्बन्धी  
कोई कार्य ।

यज्ञरत्न (पु०)-यज्ञकर्म में बाधा  
हालने वाला व्यक्ति, राक्षस,  
पिशाच ।

यज्ञदक्षिणा (स्त्री०)-यज्ञान्त में यज्ञ  
कर्त्ताओं की पुरस्कार रूप से जो  
धन दिया जाता है ।

यज्ञदीक्षा (स्त्री०)-यज्ञ का सम्पादन,  
यज्ञ में भाग लेने का अधिकार-  
प्रदान ।

यज्ञद्रुह (पु०)-राक्षस, दस्यु ।

यज्ञपति (पु०)-यज्ञमान ।

यज्ञपात्र (न०)-यज्ञकर्म में जिन  
पात्रों का व्यवहार होता है ।

यज्ञपुरुष (पु०)-परमात्मा, ब्रह्म ।

यज्ञवाहु (पु०)-अग्नि ।

यज्ञभूमि (स्त्री०)-यज्ञस्थल, यज्ञ  
करने का स्थान ।

यज्ञवल्लि हस्ती (स्त्री०)-सोमलता ।

यज्ञवृष (पु०)-जटवृक्ष ।

यज्ञवेदि दी (स्त्री०)-यज्ञ करने के  
लिये जो स्थान वामरुद्रप निर्मित  
किया जाता है । [भवन ।

यज्ञशाला (स्त्री०)-यज्ञ करने का

यज्ञसिद्धि (स्त्री०)-यज्ञ की पूर्ति ।

यज्ञसूत्र (न०)-यज्ञोपवीत ।

यज्ञागार (अस्त्री०)-यज्ञशाला ।

यज्ञाङ्ग (न०)-यज्ञ का साधन ।

यज्ञान्त (पु०)-यज्ञसमाप्ति ।

यज्ञाशन (पु०)-वायु, विद्युत्, इन्द्र,  
वसु आदि ३३ देवता ।

यज्ञिक (पु०)-पलाश वृक्ष, ढाक ।

यज्ञिन् [यज्ञी] (वि०)-यज्ञों का करने  
वाला । पु०-विष्णु, ईश्वर, पर-  
मात्मा ।

यज्ञिय (वि०)-यज्ञयोग्य, यज्ञ में  
काम आने वाला, पवित्र, पूज-  
नीय । पु०-देवता, द्वापरयुग ।

यज्ञीय (वि०)-यज्ञसम्बन्धी । पु०-  
चतुर्मुख का वृक्ष ।

यज्ञोपकरण (न०)-यज्ञ करते समय  
भावरु, सामग्री, सनिधा, घृत,  
अस्त्रशस्त्र आदि आवश्यक  
सामग्री ।

यज्ञोपवीत (न०)-यज्ञसूत्र जिस को  
धारण करने का अधिकार द्विग  
मात्र को है ।

यत्न ( वि० )-पूजने योग्य ।

यश्या ( स्त्री० )-पूजा, यज्ञ ।

यत्न ( १ भा० )-यत्न करना, कोशिश करना । [ जिससे ।

यत्-इ ( वि० )-जो । अ०-यस्मात्,

यतः [ नृ ] ( अ० )-जिससे, यस्मात् ।

यतन ( वि० )-जिस [ सत्र ] में से एक ।

यतर ( वि० )-जिन दोनों में से एक ।

यति ( वि० )-नितना, जिता । पु०-

संन्यासी, भिक्षुक । स्त्री०-विराज,

उन्होपन्य में लीन के करने का

स्थान, पाठविच्छेद । [ संन्यासी ।

यती [ नृ ] ( पु० )-यति, नितेन्द्रिय,

यती ( स्त्री० )-विधवा, बेका, राहिली ।

यतु [ तू ] का ( स्त्री० )-यत्नविशेष ।

यत्न ( पु० )-उद्योग, कोशिश, हिम्मत,

रुपादि २४ गुणों में से एक ।

यत्नवान् [ यात् ] ( वि० )-उद्योगी,

साहसी, यत्नवाला ।

यत्र ( अ० )-जिसमें, जहाँ, यस्मिन् ।

यथा ( अ० )-जैसे, जिस तरह से,

जिस भांति से, जिस प्रकार से ।

यथाकामम् ( अ० )-इच्छानुकूल, परजी

नि मुआज़िक, जैसा चाहें ।

यथाक्रमम् ( अ० )-क्रम के अनुकूल,

मिलमिलेवार ।

यथाज्ञात ( वि० )-जैसा उत्पन्न हुआ

वैसा ही रहा, दूर, बेवकूफ़ ।

यथावयम् ( अ० )-टीक २, यथावै ।

[ यथावयम् का भी यही अर्थ है ] ।

यथायम् ( अ० )=यथावयम् ।

यथाहम् ( अ० )-यथायोग्य, जैसा

होना चाहिये ।

यथाशक्ति ( अ० )-शक्तिके अनुसार,

मलानुकूल, ताकत के मुताबिक़ ।

यथाशास्त्रम् ( अ० )-शास्त्रानुसार,

जैसा शास्त्र में लिखा हो, शास्त्र

के मुताबिक़ ।

यथास्थितम् ( अ० )-जैसे रहना

चाहिये वैसे ही रहना । वि०-

यत्न, यथ ।

यथेष्टितम् ( अ० )-इच्छा के अनुसार

न०-इच्छा का न दूटना । [ यथेष्ट

का भी यही अर्थ है ] ।

यथेष्टाचारी [ नृ ] ( वि० )-इच्छाचार

करने वाला, इच्छानुकूल करने

वाला, स्वच्छन्द ।

यथोचितम् ( अ० )-यथायोग्य, जैसा

चाहिये । न०-अधीत्य, मुनासिब

यात को न उड़ना । वि०-

उचिन्, टीक । [ में ।

यदा ( अ० )-जब, जिस समय, जिसकाल

यदि ( अ० )-जो, अगर, पक्षान्तर में ।

यदीय ( वि० )-यत्स्वम्पणी, जिसका ।

यदु ( पु० )-यथाति मानक राजा का

पुत्र जिसके यंत्र में श्रीकृष्ण का

अम्भ हुआ ।

यदुनाथ-पति ( पु० )-श्रीकृष्ण ।

यदृच्छा ( स्त्री० )-स्वतन्त्रता, अपनी

इच्छा से अवानक, स्वैरितार ।

यन्ता [ तृ ] ( पु० )-भारवि, गाड़ीवान्,

हाथी का चालने वाला । वि०-

सयनी, अपने को यग में करने

वाला ।

यन्त्र (न०)-सयमन, रोकना, देवता का आसन, कला[कल], पात्रविशेष यन्त्रग्रह (न०)-कलघर, तैलनिष्कासन कछो या स्थान ।

यन्त्रण (न०)-रक्षण, रोकना, बाधना, सघाना ।

यन्त्रणा (स्त्री०)-पीडा, दर्द, तकलीफ यन्त्रित (वि०)-घट्ट, यथा हुआ । [याला यन्त्री [न] (वि०)-यन्त्रयुक्त, बांधने शब् (१ प०)-मैथुनकरण, सम्भोग करना । [झोना ।

यस् (१ प०)-हटना, रुकना, उपरान यम (पु०)-धर्मराज, अहिंसा सत्य-वचन ब्रह्मचर्यादि कर्म, इन्द्रियों का रोकना, कीआ, दो की सख्या, अनिग्रह, विष्णु । वि० जोहा ।

यमक (न०)-शब्दालंकारभेद । वि० जोहा, यमज । पु०-सयम ।

यमकोटि (स्त्री०) लका से पूर्व दिशा में पुरीविशेष ।

यमदग्नि (पु०)-मुनिविशेष, परशुराम का पिता ।

यमद्वितीया (स्त्री०) कार्तिक महीने के शुक्लपक्ष की दीपन ।

यमन (न०)-यन्धन, उपरति, बाधना । पु०-यमराज । वि० सयम करने वाला, यन्धनकर्ता ।

यमनिका (स्त्री०) यमनिका, कनाल, चिक । यमभगिनी (स्त्री०)-यमुना नदी ।

यमराज (पु०)-चौदह यमों का राजा, धर्मराज, मेलों का राजा ।

यमल (न०)-युगल, जोहा । वि०-

यमल, एक गधों से एक साथ चत्पल दो [यत्ने] ।

यमयाहन (न०)-भैसा, महिष, यमराज की सवारी ।

यमानिका-नी (स्त्री०)-अजमोद, अजवायन ।

यमी [न] (वि०)-सयमी, इन्द्रियों को यश में करने वाला, यमों का पालनकर्ता ।

यमी (स्त्री०)-यमुना नदी ।

यमुना (स्त्री०)-यमुना नदी, यम की बहिन, सूर्य की पुत्री, दुर्गा ।

ययाति (पु०)-नहुष का पुत्र एक राजा ।

ययी (पु०) महादेव, अश्व, तेज जाने वाला घोड़ा ।

ययु (पु०)-अश्वधनेधीय घोड़ा, अश्वनाभ ।

यय (पु०) जी नामक अन्न ।

ययक्य (न०)-जी होने लायक खेत ।

ययक्षार (पु०)-क्षारविशेष, जवाखार ।

ययन (पु०)-देशविशेष, यूनान, सब देश के रहने वाले समुदाय, एक मुनि । ययु०-वेग, जोर तेज गति वाला घोड़ा, गेधूम, तुरक जाति । वि०-वेग वाला ।

ययनप्रिय (न०)-सरिच, निचं ।

ययनाचार्य (पु०)-ज्योतिष शास्त्र का निर्माता एक ऋषि ।

ययनानी (स्त्री०)-ययनों की लिपि, तुरको का हाथ या लिखा

ययनारि (पु०)-ययन [कालययन] का शत्रु अर्थात् शिकृष्ण ।

यवनो ( स्त्री० )—अजवायन नामक औषध, यवन की स्त्री [मुमलमानी]  
 यवनेष्टुं ( पु० )—लशुन, लहसुन, प्याज, मिम्वदल । न०—मिचं, सीसा, मूञ्जन ।  
 यवमय्य ( न० )—एक प्रकार का चान्द्रा-युषवृत् । [ बना हुआ ।  
 यवमय ( वि० )—यवननिर्मित, की या  
 यवशूक ( पु० )—यवतार, जयातार ।  
 यवस ( न० )—पात, वृण ।  
 यवान् ( स्त्री० )—एक प्रकार की लिपिही की इगुने पानी में पकाई जाती है ।  
 यवानक-सा ( पु० )—दुरालभा, जवासा नामक प्रसिद्ध औषध ।  
 यविष्ठ ( वि० )—बड़ा जवान, छोटा भाई, लघुभ्राता ।  
 यवीयान् [ स् ] ( वि० )—पूर्ववत् ।  
 यव्य ( न० )—जी होने योग्य स्त्र ।  
 वि०—यवों के लिये हितकर ।  
 पु०—चान्द्रनाम ।  
 ययः [ स् ] ( न० )—प्रसिद्धि, कीर्ति, बढ़ाई ।  
 ययःपटह ( पु० )—यय की प्रकाश करने वाला एक प्रकार का यज्ञ ।  
 ययःशेष ( वि० )—मृत, गताशु ।  
 ययस्कर ( वि० )—कीर्तिकारक, प्रसिद्ध करने वाला ।  
 ययस्पा ( स्त्री० )—जीवन्ती और अद्वि नामक औषध ।  
 ययस्वान् [ यत् ] ( वि० )—ययस्वी, भागी, भगदूर, कीर्तियुक्त ।  
 ययस्विनी ( स्त्री० )—ययवाली स्त्री, यय-युत की पत्नी, एक प्रकार की

माछकांगनी, गंगा ।  
 यशोद ( पु० )—पारद, पारा । वि०—यश देने वाला । [ की माना ।  
 यशोदा ( स्त्री० )—नन्दपत्नी, दिलीप यष्टा [ पट ] ( वि० )—यज्ञ करने वाला, यागशील । पु०—यज्ञमान ।  
 यष्टि ( अव्ययी० )—ध्वजा का दण्डा, छाठी, लकड़ी, हारावली, तात, मुलवठी, मारंगी नामक औषध ।  
 स्थी०—शाखा, टहनी ।  
 यष्टी ( स्त्री० )—मुलवठी ।  
 यश् ( ह्य० )—यस्न करणा, योगिग करना ।  
 यस्क ( पु० )—मुनिविशेष ।  
 या ( स्त० )—जाना, गमन करना ।  
 याग ( पु० )—यज्ञ, इष्टि ।  
 याच् ( १ व० )—याचना करना, मांगना ।  
 याचक ( वि० )—मागने वाला, याचना करने वाला ।  
 याचन-भा ( स्त्री० )—मांगना, याचना ।  
 याचनक ( वि० )—याचक ।  
 याचित ( वि० )—प्रार्थित, मागा हुआ ।  
 न०—मांगना, याचना । [ प्रार्थना ।  
 याचजा ( स्त्री० )—याचना, भिक्षा, याचक ( पु० )—यज्ञ कराते वाला, शक्तिवद्, राजा का हाथी, मत्त हाथी ।  
 याजि ( पु० )—यज्ञ, यज्ञकर्ता ।  
 याजुष्य ( वि० )—यजुर्वेदसम्बन्धी ।  
 याज्ञवल्क्य ( पु० )—धर्मशास्त्र का मय-तक एक मुनि, योगियों का राजा  
 याज्ञिक ( पु० )—यज्ञ के लिये हितकर द्रव्य, कुगार, दत्त, गुदिर, पलाश,

अप्रवृत्त्य आदि युक्तः। वि०-याजक,  
यज्ञ कराने वाला [ पुरोहित,  
यजमान आदि ]।

याज्य ( वि० )-यज्ञ कराने योग्य ।  
न०-यज्ञस्थान, देवप्रतिमा, दाय-  
भाग ।

यात(वि०)-गत, गया हुआ, प्राप्त ।

यातना ( स्त्री० )-तीव्रवेदना, यड़ी  
पीड़ा ।

यातयान ( वि० )-शीर्ण, पुराना,  
पर्युपित, उच्छिष्ट, परिशुक्त ।

यातय ( वि० )-जाने लायक, गन्त-  
व्य । पु०-वह शत्रु जिसके सम्मुख  
जीतने की इच्छा वालों की  
जाना चाहिये ।

याता [ व ] ( वि० )-जाने वाला, गम-  
नशील, गन्ता । स्त्री०-पति के  
भाई की स्त्री । [ यमन ।

यातायात(न०)-गानाजाना, गमना-

यातिक ( वि० )-पान्थ, मुसाफिर,  
जाने वाला ।

यातु (अस्त्री०)-रासस, दैत्य । पु०-  
फाल, धातु । स्त्री०-यातना,  
पीड़ा । वि०-गन्ता, जाने वाला ।

यातुत्त ( वि० )-यातु [ रासस ] को  
भरने वाला । पु०-गुग्गुलु ।

यातुपान ( पु० )-रासस, अमुर ।

यातु(स्त्री०)-पति के भाई की पत्नी,  
देवरानी । [ वाला ।

यातृ ( वि० )-मुसाफिर, यात्रा करने  
यात्रा ( स्त्री० )-गमन, प्रस्थान, शत्रुओं  
को जीतने की इच्छा से राजा-

दि का गमन, देवता के उद्देश्य  
से एक प्रकार का उत्सव जैसे-  
रथयात्रादि ।

यात्रिक ( वि० )-यात्रा के लिये हित-  
कर, उत्सव, उपाय ।

यायातथ्यम् ( अ० )-जो चीज वैसी  
होनी चाहिये उसका वैसा ही  
होना, ठीक २ होना ।

यादःपति-ईश ( पु० )-जलजीवों का  
स्वामी, वरुण, समुद्र ।

यादव ( पु० )-श्रीकृष्ण । न०-गौ मैस  
आदि धन । वि०-यदु की सन्तान,  
यदु सम्बन्धी, यदु का । [ जीव ।

यादस् [ : ] ( न० )-हर किस्म का जल-  
यादशानाथ पति ( पु० )=यादःपति ।

यादूत-क् [ श् ]-श ( वि० )-जैसा, जिस  
भांति का, जिसके सदृश ।

यादूच्छिक ( वि० )-अपनी इच्छा से  
आया, अचानक आगया ।

यान' ( न० )-गमन, जाना, आक्रमण,  
हमला, मुहिम, सवारों [ रथ,  
गाड़ी आदि ] ।

यानपात्र(न०)-समुद्रयान, जहाज ।

यापन ( न० )-गुजारना [ समय का ],  
घिसाना, घटाना ।

याप्य ( वि० )-अधन, निन्दित, ऐसा  
रोग जो दवादे करते २ तो शान्त  
रहे और दवादे छोड़ने पर फिर  
बढ़ने लगे । [ तयाम, पालकी ।

याप्ययाम(न०)-चुरी सवारी, निन्दि-  
याम ( पु० )-समय, पहर, दिन तथा  
रात्रि का बीयाह्न हिस्सा ।

यामघोष ( पु० )-कुक्कुट, मुर्गा [ यह एक २ पहर के पीछे मोलता है ] ।

यामल ( न० )-युगल, जोड़ा, तत्रशास्त्र-भेद ।

यामवती ( स्त्री० )-रात्रि, हरिद्रा ।

यामाता [ त ] ( पु० )-दुहितुःपति, जमाई, दामाद । [ भाषा पहर ।

यामाह ( न० )-पहर का भाषा,

यामि ( स्त्री० )-भगिनी, यद्विन्, कुलवधू ।

यामिकनट ( पु० )-पहरेदार, पहर २ में बदलने वाला चौकीदार ।

यामित्र ( न० )-ज्योतिषशास्त्र में लग्न से सातवा स्थान ।

यामिनी ( स्त्री० )-रात्रि, रात, हल्दी ।

यामिनीपति ( पु० )-चन्द्रमा, रात का स्वामी, कपूर ।

यामो ( स्त्री० )-दक्षिणदिक्, यमया-तना, यमराज सम्बन्धी पीड़ा ।

यामुन ( वि० )-यमुना का, यमुना सम्बन्धी । न०-सम्प्रेद हुनरा, तीर्थविशेष । [ भांजा ।

यामेय ( पु० )-यामिपुत्र, भागिनेय,

याम्य ( पु० )-अगस्त्यमुनि, चन्दन का पेड़, यमदूत । वि०-यमसम्बन्धी ।

याम्या ( स्त्री० )-दक्षिणदिशा, भरखी नक्षत्र ।

याम्यायन ( न० )-दक्षिणायन, सूर्य का दक्षिणदिशा में जाना ।

यामजूक ( पु० )-चार २ यज्ञ करने वाला मनुष्य ।

यापावर ( पु० )-अश्वमेध नामक यज्ञ का घोड़ा, अरत्कारक मुनि । वि०-

चार २ टेढ़ा जाने वाला, अति-शयवक्तृगामी । न०-यावत्, भागना । [ यावदायुः ।

यावज्जीवम् ( अव० )-जीवनपर्यन्त,

यावत् ( अव० )-सारा, अवधि, लक्ष्यक, सीमा । वि०-जितना, जितने परिमाण वाला ।

यावन ( पु० )-यवनदेशोत्पन्न चित्तवृत्त नामक एक यन्त्रद्रव्य ।

यावनाल ( पु० )-धान्यभेद, जुमार नाम के प्रसिद्ध धान्य, एक देश का नाम ।

यावशूक ( पु० )-यवहार, जयाम्बर ।

याशीपरेय ( पु० )-शाक्यमुनि का पुत्र ।

याष्टीक ( वि० )-छाठी ही जिसका अल हो, छाठी से लड़ने वाला, छठैत नाम से प्रसिद्ध ।

यु ( २ प० )-मिलाना और न मिलाना । ८ प०-यांघना ।

युक्त ( वि० )-मिला हुआ, सचित, जुड़ा हुआ । पु०-योगीपुरुष, न्याय से प्राप्त द्रव्य ।

युक्ति ( स्त्री० )-अनुमान, दलील, न्याय, माटक का अंगविशेष ।

युग ( न० )-युग, जोड़ा, दो की संख्या; सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि नाम चार युग; चार हाथ का माप, गाड़ी, रथादि का जुमा ।

युगपद् ( अव० )-एकदा, एक ही समय ।

युगपत्रक ( पु० )-कोबिदार, कवनाल ।

युगपार्श्वय ( पु० )-सम्पाचार्य इल के साथ बांधा हुआ बैल, हिला-

यह बैल ।

युगल(न०)-जोड़ा, युग्म, दोकी सख्या।  
 युगान्त (पु०)-प्रलय, युगों का अन्त।  
 युग्म ( न० )=युगल।  
 युग्मपत्र ( वि० )-दो पतों वाला।  
 पु०-फचनार का पेड़।  
 युग्म ( न० )-यान, सवारी, वाहन।  
 पु०-घोड़ा, बैल आदि।  
 युक्त ( १ प० )-भूलना, प्रमाद होना,  
 बेपर्वाई होना।  
 युक्त(१०व०)-मिलना, जुड़ना। ४आ०-  
 मिलना, समाधि लगाना।  
 युक्त ( वि० )-समाधि वाला, संयोग  
 वाला, मिला हुआ।  
 युक्तान(पु०)-सारथि, रथहांकनेवाला।  
 युजो ( पु० द्वि० )-अश्विनीकुमार।  
 युज्जान(पु०)-सारथि, गाड़ोवान, विप्र।  
 वि०-योगविशेष वाला, योगी।  
 युत् (१आ०)-चमकना, प्रकाश होना।  
 युत् [ ध् ] ( स्त्री० )-युद्ध, संधान।  
 वि०-योद्धा, युद्ध करने वाला।  
 युत् ( वि० )-मिला हुआ, संयुक्त।  
 न०-चार हाथ की शाय।  
 युत्क (न०)-संधय, अंक, युग, जोड़ा,  
 स्त्री के यस्त्रका किनारा, पादाय-  
 भाग, यौतुकधन अर्थात् दहेज,  
 मैत्री करना। वि० संयुक्त, मिला  
 हुआ।  
 युद् (न०)-लड़ाई, संग्राम, समर।  
 युद्धरत्न ( पु० )-युद्धभूमि लड़ाई का  
 स्थान, भेदांगजट्ट।  
 युद्धसार(पु०)-घोड़ा, लश्कर।  
 युष् (४आ०)-लड़ाईकरना, युद्ध करना।

युष्-धा(स्त्री०)-संग्राम, लड़ाई, युद्ध।  
 युधान(पु०)-लड़ने वाला सत्रिय।  
 युधिक(वि०)-योद्धा, लड़ने वाला, शूर।  
 युधिष्ठिर (पु०)-अपने नाम से प्रसिद्ध  
 पाण्डवराज, धर्मपुत्र, पाण्डु का  
 ज्येष्ठपुत्र।  
 युयुधान (पु०)-इन्द्र, साहयिकि नामी  
 एक यादव, सत्रियमात्र। वि०-  
 योद्धा, युद्ध करने वाला।  
 युवक(पु०)-युवा, जवान पुरुष।  
 युवस्रलति(स्त्री०)-ऐसी जवान स्त्री  
 जो शिरकी गमी हो, रोगविशेष-  
 युक्ता जवान औरत।  
 युवति-नी (स्त्री०)-प्राप्तगीवना नारी,  
 जवान औरत।  
 युवन्(वि०)-जवान, श्रेष्ठ, बहुत अच्छा।  
 युवनाश्व(पु०)-एक राजा, मान्धाता  
 का पिता।  
 युवराज ( पु० )-राजकुमार, राजा के  
 मरने के बाद गद्दी पर बैठने वाला  
 राजकुमार, भाविराजा।  
 युयु(१ प०)-भजन करना, सेवा करना।  
 युष्मद् ( वि० )-आप, तुम्हारा, यह  
 भवच्छब्द के अर्थ में सर्वनाम  
 संज्ञक शब्द है, इस के तीनों लिंगों  
 में एक से ही रूप रहते हैं।  
 यूक(अस्त्री०)-मरफुण, खटमल, जू।  
 यूका ( स्त्री० )-मरफुण, खटमल,  
 घालयूका, छीक।  
 यूति(स्त्री०)-मिलाप, मिलाना।  
 यूप (न०)-सजातीय समुदाय, समूह,



ऋग्वेद, गिरौह । [ प्रधान ।  
यूयनाथ-पति(पु०)-वन्ध्याहाथियों का  
यूयस्रष्ट(वि०)-ऋग्वेद से पृथक् हुआ ।  
यूयिका-ची (स्त्री०)-जूही, एक प्रकार  
की पुष्पलता ।

यूनि(स्त्री०)=यूति । [ जीरत ।  
यूनी ( स्त्री० )-युवती स्त्री, जवान  
यूय (अस्त्री०)-यक्षीय पशु बांधने के  
लिये काष्ठविशेष, संस्कृत काष्ठ-  
विशेष, यज्ञस्तम्भ, यज्ञसमाप्ति-  
भूषक स्तम्भविशेष । पु०-जय-  
स्तम्भ, जीत का स्तम्भ, यज्ञस्तम्भ ।  
यूपद्रु-द्रुम (पु०)-सर्दिखत, खैर का  
वृक्ष ।

यूप(अस्त्री०)-मुद्गादिहोमपरस, मूग,  
मसूर आदि को भठारह गुणे जल  
में पकाते हैं जब कुछ गाढ़ा हो  
जाता है तब उतार कर प्युरादि  
में दिया जाता है । [ वाला ।  
योक्ता[ह] (वि०)-योगकर्ता, मिलाने  
योक्त्र(न०)-जूय के नाथ इछ बांधने  
की रस्सी, नाही नाम से प्रसिद्ध  
घमड़े की रस्सी ।

योग ( पु० )-जोड़, संयोग, उपाय,  
मिलावट, युक्ति, ध्यान, व्रत  
[कवच] आदि का धारण करना,  
जीवान्मा और परमात्मा का  
एक होना, दलील, ज्योतिष में  
विष्कम्भादियोग, नुशुता ।

योगत्र ( वि० )-योग से उत्पन्न होने  
वाला । न०-अंगुर, चन्दन । पु०-  
न्यायादि में कथित अलौकिक

सन्निकर्ष [व्यापार] विशेष ।  
योगदान(न०)-छलव उपाधि से देना ।  
योगनिद्रा ( स्त्री० )-योगरूपी नींद,  
कपना, दुर्गा, पार्वती ।  
योगपीठ(अस्त्री०)-योगोचित आसन,  
देवादि का आसनविशेष ।  
योगरूढ(पु०)-एक प्रकार का शब्दमेद,  
ऐसा शब्द जिस में अवयवशक्ति  
और समुदायशक्ति दोनों हों  
जैसे ' पकम ' ।

योगवाह ( पु० )-अनुस्वार, विसर्ग,  
शिष्टाभूतीय और उपजनानीय ।  
योगारूढ ( वि० )-योगीविशेष, वह  
योगी जो इन्द्रियविषय तथा कर्तों  
में आसक्त हो । [ आसन ।  
योगासन( न० )-ब्रह्मासन, ध्यान का  
योगिनी ( स्त्री० )-योगयुक्ता नारी,  
मगधती की सखीरूपिणी शक्ति  
जो यहुत हैं ।

योगी [ नृ ] ( वि० )-योग वाला, जो  
सुख दुःख में समानवृत्ति वाला हो,  
योगी, संयोग वाला ।

योगीश्वर ( पु० )-याज्ञवल्क्य मुनि ।  
वि०-योगियों में प्रेष्ठ ।

योगेश ( पु० )-याज्ञवल्क्यमुनि । वि०-  
योग का स्वामी ।

योगेश्वर ( पु० )-योगों का स्वामी  
श्रीकृष्ण ।

योग्य ( वि० )-योग के लिये उचित,  
प्रवीण, चतुर, योगार्ह, शक्तिमान् ।  
पु०-पुण्यनक्षत्र । न०-श्रद्धिनाशक  
औषध ।

योग्यता ( स्त्री० )-सामर्थ्य, लायकी, समता, चतुरता, होशियारी ।

योग्या ( स्त्री० )-अभ्यास, रबस होना, मली स्त्री ।

योजन ( न० )-योग करना, मेल, जोड़ना, चार कोस ।

योजनगम्या ( स्त्री० )-कस्तूरी, सीता, छयासदेव की माता, सत्यवती ।

योजित ( वि० )-जोड़ा हुआ, मेलित, मिटाया हुआ ।

योत्र ( न० )=योक्त्र ।

योद्धा [ दध् ] ( वि० )-युद्धकर्ता, लड़ाई करने वाला, बहादुर ।

योध ( पु० )-युद्ध, जंग, समर, लड़ाई ।  
वि०-योद्धा, बहादुर ।

योधन ( न० )-पूर्ययत् ।

योधसंराध ( पु० )-योद्धाओं की आपस में युद्ध के लिये जुलाना ।

योनि ( अव्यक्ती० )-भाकर, खान, कारण, जल, कुशदेशस्थ एक नदी, स्त्रीचिन्ह । [ समुप्यादि ।

योनित्र ( वि० )-योनि से उत्पन्न

योनिमुद्रा ( स्त्री० )-योनि की शकल की मुद्रा जो तन्त्रशास्त्र [वाममार्ग] में पूजा का अंग कहा है ।

योया ( स्त्री० )-नारी, औरत, स्त्री ।

योपितृ-पिता ( स्त्री० )-पूर्ययत् ।

योपितृमिया ( स्त्री० )-हरिद्रा, हल्दी ।

यौक्तिक ( वि० )-युक्ति से प्राप्त, युक्तिमिष्ट, दलील के योग्य ।

पु०-नमोसविध, दिवसगी द्वारा

दिल बहलाने के लिये नियुक्त किया यजीर ।

यौगिक ( वि० )-धातु तथा प्रत्यय के अर्थसम्बन्ध से ज्ञात, योग के लिये उचित । पु०-एक प्रकार का शब्दभेद, ऐसा शब्द जो धातु तथा प्रत्यय के सम्बन्ध पर अर्थ को प्रकाश करता है जैसे 'प्राचक' ।

यौजनशक्तिक ( वि० )-एक सौ योजन [चार सौ कोस] जाने वाला ।

यौत [ तु ] क ( न० )-विवाहसमय में प्राप्त चनादि, दहेज का पत्र ।

यौधिष्ठिर ( पु० )-युधिष्ठिर की संतति ।  
वि०-युधिष्ठिरसम्बन्धी ।

यौधेय=योद्धा ।

यौन ( न० )-जिनाकारी का गुणाह ।  
वि०-यौनिसम्बन्धी ।

यौवत ( न० )-युवति स्त्रियों का समूह, जवान औरतों का गिरोह ।

यौवन ( न० )-तल्लता, जवानी, सोलहवर्ष से ऊपर की अवस्था ।

यौवनकण्टक-पिष्टिका ( स्त्री० )-एक प्रकार की फुंगी जिसको मयावा कहते हैं और जो तारुण्य के जताने वाली होती है ।

यौवनलक्षण ( न० )-जवानी का निशान, मुन्दरता, स्तन । [राजा

यौवनारथ ( पु० )-मारुधाता नामक

यौवनाक-कीन ( वि० )-युवतसम्बन्धी, आपका, तुम्हारा ।

## र

र (पु०)-वह्नि, आग, तेज, तप, कामदेव वी अग्नि ।

रंहः [स्] (न०)-वेग, शीघ्रता, तेजी ।

रक्त (न०)-लेशर, लासधानु, सिन्दूर, रुधिर, रून । पु०-छालरंग, मुह-रक्त । वि०-छालरंग वाला, आरक्त, अनुरक्त ।

रक्तकन्द (पु०)-बिडुम, मूंगा रक्तानु, रतालु नामक शाकमेद । [कमल ।

रक्तकमल (न०)-रक्तोत्पल, छाल

रक्तकायदा (स्त्री०)-रक्तपुनर्नवा, छाल सांठी । [यक्षविशेष ।

रक्तकुसुम (पु०)-पारिजद्र नामक

रक्तगन्धक (न०)-छालगन्धक ।

रक्तगुहम (पु०)-एक प्रकार का रोग जो स्त्रियों की ही होता है ।

रक्तचन्दन (न०)-छाल चन्दन ।

रक्तचूर्ण (न०)-सिन्दूर नामक द्रव्य ।

रक्ततुण्ड (पु०)-तोता, शुकपत्नी । वि०-छाल मुंह वाला ।

रक्तदन्तिका (स्त्री०)-छाल दाँतों वाली एक दुर्गाशक्ति ।

रक्तदूध (अकली०)-कपीत, क्यूतर । वि०-छाल आँखें वाला ।

रक्तधातु (न०)-मेरु, गैरिक, ताँबा, शरीर का रून ।

रक्तप (पु०)-राक्षस, दैत्य । वि०-रक्त पीने वाला ।

रक्तपक्ष (पु०)-गरुड नामक पक्षी ।

रक्तपल्लव (पु०)-अशोक का वृक्ष । वि०-छाल पत्तों वाला ।

रक्तपा (स्त्री०)-ढाकिनी, टायन, लोंक, जलोका ।

रक्तपादी (स्त्री०)-लज्जालुलता, लुईमुई का पौदा ।

रक्तपाथी [न्] (वि०)-रक्तपान करने [रून पीने] के स्वभाववाला ।

रक्तपित्त (न०)-रोगविशेष जिस में नासा, मुख और गुदादि में रून जाया करता है । [पिड़ ।

रक्तपुष्पक (पु०)-छालवृक्ष, ठाक का

रक्तपुष्पा (स्त्री०)-शालमछिवृक्ष, छाल सांठी ।

रक्तकल (पु०)-वटवृक्ष, पड़ का पेड़ ।

रक्तकला (स्त्री०)-विन्धिका, कन्दूरी नामक लता ।

रक्तकोल (पु०)-दाहिम, अनार, रीठा ।

रक्तमेह (पु०)-प्रमेह रोगविशेष ।

रक्तमोक्षण (न०)-शोणितस्त्राव, रून का निक्षालवाना । [मजीठ ।

रक्तपट्टि-टिका (स्त्री०)-मल्लिन्ठा,

रक्तलघुम (पु०)-रक्तवर्ण की कन्द-विशेष, गुज्जन, सुस्मयतः इस ही का नाम भाषा में शलज्जन है ।

रक्तवर्ग (पु०)-दाहिम, किशुक, छाल आदि छाल रंग वाली धीर्जी का समुदाय ।

रक्तवर्ण (पु०)-इन्द्रयोप, तीक्ष्ण, धीर-यहूटी नामक कोड़ा ।

रक्तवर्तुन (पु०)-वैगन नामक फलशाक, पारायत, क्यूतर ।

रक्तवसन (पु०)-संन्यासी, पति ।

रक्तधात (पु०)-रोगविशेष ।

रक्तवृष्टि ( स्त्री० )—रक्त का थरसना,  
दैवकृत उपद्रवविशेष ।

रक्तशालि ( पु० )—रक्तवर्ण के चावल ।

रक्तशृंगिक ( न० )—एक प्रकार का विष ।

रक्तसर्प ( पु० )—लालवर्ण की सरसों,  
राहें, राजिका ।

रक्तसार ( न० )—रक्तचन्दन, लालचन्दन ।  
पु०—अम्लधेत नामक वृक्ष, खदिर-  
वृक्ष । [ बहना ।

रक्तसाय ( पु० )—अम्लधेत, खून का

रक्तहंसा ( स्त्री० )—रागणी विशेष जिस  
से हंस बर्हीभूत हो जाते हैं ।

रक्ता ( स्त्री० )—घाटली, लाजा, मजीठ ।

रक्ताक्ष ( पु० )—रुबूर, सारस, पक्षीर ।  
वि०—छूर, छाल नेत्रो वाला ।

रक्तांग ( न० )—कुकुम, केसर, जाफ-  
राम । पु०—मंगलग्रह, कपीला ।  
अस्त्री०—प्रवाल, मूला ।

रक्ताग्र ( न० )—कापायवस्त्र, रंगे  
हुए यत्र । वि०—कापायवस्त्रों के  
धारण करने वाला ।

रक्ताग्रा [ वृ ] ( न० )—सूनी घवासीर ।

रक्तिका ( स्त्री० )—घोंटली, गुना,  
रत्ती [ तील में ] ।

रक्तीतपलान ( वि० )—छालकमल के  
सदृश फान्ति वाला ।

रक्ष ( १ प० )—रक्षा करना, यथामा,  
पालना ।

रक्षः [ म् ] ( न० )—राक्षस, असुर ।

रक्ष.मग ( न० )—राक्षसों की मभा,  
राक्षसों का समूह ।

रक्षक ( वि० )—रक्षा करने वाला, पालने

वाला, यथाने वाला ।

रक्षण ( न० )—रक्षा, यथाना, पालना ।

रक्षा ( स्त्री० )—रक्षण ।

रक्षापत्र ( पु० )—भोजपत्र का पेड़,  
भूर्जपत्र ।

रक्षित ( वि० )—रक्षा किया हुआ, यथामा  
हुआ, हिफाजत किया हुआ ।

रक्षिता [ वृ ] वि० )—रक्षा करने  
वाला, यथाने वाला ।

रक्षिवर्ग ( पु० )—रक्षा करने वालों का  
समूह, सेनादि की रक्षा करने  
वाले, बहुत विपाही ।

रक्षोग्र ( पु० )—मिलावे का पेड़, सज्जद  
सरसों । न०—कांजी, हींग, श्वेद  
में सूक्तविशेष । वि०—राक्षस की  
मारने वाला ।

रक्षोजननी ( स्त्री० )—राक्षि, रात,  
राक्षसों की माता ।

रक्ष ( १ आ० )—गमन करना, जाना ।

रक्ष ( १ आ० )—गमन करना, जाना ।

रक्षु ( पु० )—सूर्यवंशीय राजा दिलीप  
का पुत्र जो रामचन्द्र का प्रपिता-  
मह था, रक्षुपथ नामक प्रसिद्ध  
कालीदासकृत संस्कृतकाव्य । पु०  
सदृश—रक्षुकुल में हुआ राजा । वि०  
शीघ्रगामी । [ कालीदास ।

रक्षुकार ( पु० )—रक्षुवंशकाव्य का कर्ता  
रक्षुमन्दन ( पु० )—श्रीरामचन्द्र ।

रक्षुमाय-पति ( पु० )—सूर्यवंश ।

रक्षुपथ ( अस्त्री० )—रक्षुवंश नामक  
ऊनविंशतमर्गात्मक काव्य । पु०—  
रक्षु का यश, रक्षुकुल ।

रंक (पु०)—कृपण, शून्य, नन्द, सूर्य ।

रंकु (पु०)—नृगविशेष, एक प्रकार का हरिण ।

रंग (म०)—धातुविशेष, रंग । पु०—रंग,

रंग, नृत्य, नाच, रणभूमि, नाट्य-शाला, सुहागा ।

रंगज (पु०)—रंग से उत्पन्न सिन्दूर ।

रंगजीवक (पु०)—रंगरेल, कपड़ा रंगने वाला, चित्रकार, तमाशा करके खीने वाला ।

रंगण (म०)—नाच, नृत्य ।

रंगइ (पु०)—ढंकण, सुहागा ।

रंगदूदा (स्त्री०)—रूपटिका, क्लिटकरी ।

रंगपील (म०)—कृष्णक, रुपया ।

रंगभूमि (स्त्री०)—नाटकघर, नृत्य-शाला, पहलवानों का अखाड़ा, थियेटर, स्टेज, युद्धक्षेत्र, स्वयंवरस्थान ।

रंगमण्डप (पु०)—थियेटर, नाटकघर ।

रंगशाला (स्त्री०)—नृत्यशाला, क्रीडा-भूमि । [ थियेटर ।

रंगाक्षय (अस्त्री०)—अछाड़ा, हम्फी-

रंगावतरण (म०)—रंगभूमि में नट का प्रवेश, नटदृति ।

रंग् (१३०)—गाना, जल्दी से गमन करना । १०३०—घमकना, थोड़ना ।

रंगस् (स्त्री०)—तेजी, जल्दी ।

रग् (१०३०)—बनाना, रचना, तैयार करना, लिखना, ग्रन्थ बनाना, सजना ।

रदन-भा (स्त्री०)—तम्पारी, यनावट, युति, किंगडगर, सुषानीपुलाय, सेना का मजिस्त करना, प्रत्य-

सम्पादन, निर्माण ।

रचयिता [वि] (पु०)—सम्पादक, निर्माता ।

रचित (वि०)—रचा हुआ, बनाया हुआ, निर्मित, सम्पादित, लिखित ।

रज (पु०)—रजस् ।

रजक (पु०)—घोड़ी, तोता ।

रजका (स्त्री०)—घोड़िन, रजकभाषी ।

रजकी (स्त्री०)—घोड़िन, तीगरे दिन की रजस्वला नारी ।

रजस (वि०)—रजस्रला; धवल, श्वेत ।

न०—चांदी, स्वर्ण, रक्त, हापी-दांत, धवत ।

रजतद्युति (पु०)—हनुमान् ।

रजसादि-प्रत्य (पु०)—कैलानपर्वत ।

रजन (पु०)—किरण, रश्मि । न०—रंगना, रंग देना ।

रजनि-गी (स्त्री०)—रात्रि, हल्दी, जाग जाग, दुर्गा ।

रजनिहर (पु०)—चन्द्रमा, काफूर ।

रजनिघर (पु०)—चांद, चौर, रातस, मिथाघर, चौकीदार ।

रजनिजल (न०)—भोस, पाछा ।

रजनिपति-रमण (पु०)—चांद, चन्द्रमा ।

रजनिमुख (न०)—चायकाठ, सन्ध्या ।

रजस् (न०)—धूलि, लाक, चूर्ण, पुष्प-रेणु, अघेरा, अघान, हमरा गुण

[प्रथम मरव, तृतीय तमस् कहलाता है], स्त्री का विकृत रक्त की प्रतिमास मोनि द्वारा बहता है, एक घातुमेद ।

रजस्वल (वि०)—रजोयुक्त, रजोगुण-विशिष्ट । पु०—मदिय, मैसा ।

रजरखला ( स्त्री० )--मांसिकधर्म वाला स्त्री, तत्तुमती स्त्री, हैज वाला औरत ।

रजोवन् ( न० )--अन्धकार, अंधेरा ।

रजोदर ( पु० )--रजक, धोबी ।

रज्जु ( स्त्री० )--बन्धनसाधन, रस्सी, डोरी ।

रज्जक ( न० )--हिंगुल, सिगरक । पु०-कच्चीला, रजरेज । वि०-प्रीति करने वाला ।

रज्जग ( न० )--लालचन्दन, मजीठ, हिंगुल, मुहकमत, प्रीति । वि०-रागजनक, प्रेमोत्पादक । पु०-फायफल, मूँज नामक घास ।

रज्जनी ( स्त्री० )--हरिद्रा, हल्दी ।

रट् ( १ प्र० )--मापन करना, मात-पीत करना, रटना ।

रटन्ती ( स्त्री० )--माघ महीने की कृष्णपक्ष की चतुर्दशी ।

रटित ( वि० )--कथित, कहा हुआ, रटा हुआ ।

रट्=रट् [ शब्द करना ।

रण् ( १ प्र० )--गमन करना, जाना,

रण ( अस्त्री० )-युद्ध, समर, जग ।

रणतूर्य ( न० )--रणवाद्य, संग्राम में चलने वाला वाजा ।

रणमत्त ( पु० )--हाथी, गज ।

रणरण ( पु० )-मशक । न०-उद्वाहन । वि०-रण में गर्जने वाला ।

रणसमुल ( न० )--समुलयुद्ध, यही भारी लड़ाई ।

रणहा ( स्त्री० )--आगुकीर्ण मापक

औषध, रांड, पिघवा स्त्री ।

रजटाश्रमी [ न् ] ( पु० )--सन्तानाभाव के कारण निष्फल आश्रम वाला पुरुष, ऐसा पुरुष जो ४० या ४८ वर्ष की आयु में अपनी भार्या से बिछुड़ गया हो ।

रत्न ( न० )--मैथुन, सम्भोग, क्रीड़ा करना, गुच्छस्थान । वि०-अनुरक्त, आसक्त, प्रीति में फंसा हुआ ।

रत्नताली ( स्त्री० )--कुहनी, दूती ।

रत्ननिधि ( पु० )--खजानपती ।

रत्नद्विपदक ( पु० )--स्त्रीचौर, लुम्पट, बदमाश, लुच्चा ।

रत्नायनी ( स्त्री० )--वेश्या, रण्डी, वारानमा ।

रति ( स्त्री० )--कामदेव की पत्नी, अनुराग, प्रीति, रमण करना, गुच्छस्थान ।

रतियह ( न० )--कोष्ठिनन्दिन, योनि ।

रतिपति ( पु० )--अमर, कामदेव । [ रतिकान्त, रतिरमण, रतिप्रिय आदि शब्दों का भी यही अर्थ है ] ।

रत्न ( न० )--नपि आदि पत्थर, नाणिक, हीरा, अपनी २ जाति में वृत्तम । [ द्वीपविशेष ।

रत्नकूट ( पु० )--पर्यंतविशेष । न०-

रत्नगर्भ ( पु० )--कुबेर, समुद्र, सागर ।

रत्नगर्भा ( स्त्री० )--पृथिवी, भूमि, श्रेष्ठ पुत्रघटी स्त्री । [ रत्नों का स्थान ।

रत्नपारायण ( न० )--सुरपूर्ण प्रकार के

रत्नगुरु ( न० )--हीरा, हीरक ।

रत्नारट् [ ज् ] ( न० )--रत्नों में श्रेष्ठ ।

अर्थात् माण्ड्य, छाल ।

रत्नवती ( स्त्री० )—पृथिवी, भूमि ।

वि०—रत्नवाली ।

रत्नवर्ण ( न० )—पुष्पकरण । वि०—

रत्न घरसाने के स्वभाव वाला ।

रत्नमू ( स्त्री० )—भूमि, जमीन, पृथिवी ।

रत्नकर ( पु० )—नणियों की रत्न,  
जमुद । [ महला, जहास जेवर ।

रत्नाभूषण ( न० )—रत्नों से कटित

रत्न ( अकली० )—मुट्टी बंधे हुए  
हाथ का परिमाण [ भाष ] ।

रथ ( पु० )—रथ नामक प्रसिद्ध रुधारी,  
शरीर, पाँव [ पैर ], बैठे का वृत्त ।

रथकह्या ( स्त्री० )—रथा का समुदाय ।

रथकर—कार ( पु० )—रथ बनाने वाली  
प्रकृति, छाति नामक जाति ।

रथगति ( स्त्री० )—दूसरे के प्रसार के  
रोकने के वास्ते रथ का गुप्त भाग,  
बद्ध ।

रथवरण ( पु० )—चक्रवाकपत्नी, रथ का  
चक्र [ पहिया ] ।

रथन्तर ( वि० )—रथ का लेजाने वाला,  
रथ से पार होने वाला, सावध  
में मन्त्रविशेष ।

रथाङ्ग ( पु० )—चक्रवाक [ चक्रवा ]  
पत्नी । न०—चक्र, पहिया ।

रथाङ्गमासि ( पु० )—श्रीकृष्ण, विष्णु ।

रथावरोही [ नृ ] ( वि० )—रथी, रथ में  
सवार हुआ, रथ में चढ़कर लड़ने  
वाला ।

रथिक ( वि० )—रथ पर सवार हो कर  
लड़ने वाला । पु०—रथी । [ रथिक,

रथिन, रथी इन शब्दों का भी  
यही अर्थ है ] ।

रथ्य ( पु० )—घोड़ा, अश्व । वि०—रथ  
का, रथमध्यन्धी ।

रथ्या ( स्त्री० )—रथके जाने योग्य सहक,  
उद्यम रास्ता, गली, रथीका समूह ।

रथ ( १ प० )—खोदना, उखाड़ना ।

रथ ( पु० )—दांत, दन्त, खोदना, साढ़ना

रदच्छद ( पु० )—ओष्ठ, होठ ।

रदन ( पु० )—रद । [ हाथी ।

रदनी-दी [ नृ ] ( पु० )—दांती वाला

रथ ( ४ प० )—हिंसा करना, मारना,  
रांघना, पकाना ।

रथ ( १ प० )—[ चक्र ] रंजना, दूध-  
रा वर्ण करना । [ अक० ] भासक  
होना, संसना ।

रन्तिदेव ( पु० )—विष्णु, चन्द्रवंशीय  
प्रकृति, कुत्ता, श्वान ।

रन्धन ( न० )—पाक, रांघना, पकाना ।

रन्धित ( वि० )—रथहुआ, पकाया हुआ

रन्ध्र ( न० )—छिद्र, भूराज, दुपण,  
दोष, पैर, अयोधिय में लक्ष्मण के  
मातला स्थान ।

रन्ध्रवंश ( पु० )—छिद्र वाला घांस,  
घोषा घांस ।

रथ ( १ प० )—जाना, गमन करना ।

रथ ( १ आ० )—किसी वस्तु की गति  
अभिलाषा करना, आरम्भ करना,  
गले लग कर मिलना । [ इतिसेट् ]  
शब्द करना, आवाज करना ।

रथस ( पु० )—त्रेण, तेजी, उत्तुक्ता,  
इषं, आनन्द, अतिशय अभिलाषा

रम् ( १ आ० )—झीड़ा करना, रमण करना, विलास करना, खेलना ।

रम ( पु० )—कान्त, रक्त अशोक का पेड़, अनग, रतिपति ।

रमण ( न० )—परयल की जड़, झीड़ा, भोगविलास करना, मैथुन खेलना ।

पु० पति, स्वामी, कामदेव, निम्बधत्त, गर्दभ, गन्ध । वि०—रमणीय, मनोहर, सुन्दर ।

रमणी ( स्त्री० )—नारी, स्त्री, सुन्दर स्त्री ।

रमणीय रम ( वि० )—मनाहर, सुन्दर, रसमुरत, उम्दा, अच्छा ।

रमा ( स्त्री० )—लक्ष्मी, शोभा, शशि-उग्रज नामक राजा की कन्या और कल्किदेव की पत्नी ।

रमाधर ( पु० )—विष्णु, श्रीकृष्ण ।

रमापति ( पु० )—पृथ्वत् । [ विष्णु ।

रमाप्रिय ( न० )—कमल, पद्म । पु०

रमेश्वर ( पु० )—विष्णु, श्रीकृष्ण ।

रम्भ ( पु० )—वेणु, महिषासुर का पिता, धानरविशेष, रेणु, धूलि ।

रम्भा ( स्त्री० )—फेला, कदली, जलसरा का नाम, पार्वती, गी का शब्द, वेश्या ।

रम्प ( न० )—पटीलमृग । वि० सुन्दर, मनोज्ञ, बल करने वाला, यदुलघ्न, चम्पक ।

रम्पक ( न० )—चम्पुद्वीप के नव वर्षों में से एक वर्षविशेष ।

रम्पा ( स्त्री० )—रात, रात्रि, गङ्गा, स्थल-पद्मिनी, कुमुदनी ।

रप ( पु० )—रसवर्ण, शोभा ।

रप् ( १ आ० )—गमन करना, जाना ।

रय ( पु० )—वेग, शीघ्रता, तेजी, प्रवाह, पुरुरवा का पुत्र ।

रराटी ( स्त्री० )—मस्तक, टालाट ।

ररलक ( पु० )—कम्बल, मृगविशेष, पहन, पलक । [ करना ।

रख् ( १ आ० )—जाना, गमन करना, शब्द

रय ( पु० )—शब्द, आवाज ।

रवण ( पु० )—उद्द, कोकिल, कोयल । न०—काश्य । वि०—तीक्ष्ण, चञ्चल, शब्द करने वाला ।

रवण ( पु० )—कोयल, कोकिल ।

रवि ( पु० )—सूर्य, आक का वृक्ष, रविवारा

रविकान्त ( पु० )—सूर्यकान्त नामक गणि । [ सूर्यचक्रविशेष ।

रविचक्र ( न० )—मनुष्य के आकार का

रविज ( पु० )—शनिश्चर, धानराज

सुग्रीव, यमराज, वैवस्वतमनु, कुन्तीपुत्र कर्ण । द्वि०—अश्विनी-कुमार ।

रविनाथ ( न० )—कमल, पद्म । पु०—बन्धूक ।

रविनेत्र ( पु० )—विष्णु का धोधक ।

रविप्रिय ( न० )—छाल कमल, तास, ताया । पु०—रक्तकरवीर, लकुष ।

रविरत्न ( न० )—मरणिक्क, मानिक, तास ।

रविहीह ( न० )—तास, ताया ।

रविमृग ( पु० )—रविज ।

रवीन्द ( न० )—कमल, पद्म ।

रश् ( १ प० )—शब्दकरना, आवाज करना ।

रशना ( स्त्री० )—मिट्टा, जीम, काशी, स्त्रीकटिभूषण, लगनी ।



रश्मि ( पु० )-किरण, अश्रवादि की  
रस्सी, लगाम । न०-कमल ।

रस् ( १० न० )-स्वाद लेना । १ प०-  
गठद करना ।

रस ( पु० )-रसना इन्द्रिय से ग्रहण  
करने योग्य पदार्थ जो कि मधुर,  
अम्ल, छयन, कटु, तिक्त और  
कषाय सेद से छः प्रकार का है,  
धातुविशेष, अहित अन्न आदि  
का पूर्णपरिणाम, पुष्परस, अलं-  
कारशास्त्र में कहा हुआ वह  
रसि आदि स्थायित्वयुक्त शृंगा-  
रादि कि जो सञ्चारी, उपमि-  
चारी और सहकारी भावसे प्रकट  
होने योग्य हो, रूप, ग्रेम, वीर्य,  
पारा, द्रव्यपदार्थ । न०-गल ।  
अस्त्री०-गन्धरस ।

रसकर्पूर ( न० )-रसकापूर, कर्पूररस,  
पारा, रस का पुष्प ।

रसगम (न०)-रसालून, हिंगुल, शिंगरफ ।

रसज ( पु० )-सुहागा, टंकण ।

रसज ( न० )-रक्त, रुधिर । पु०-गुह,  
मद्य का फीट । वि०-रससे उत्प-  
न्न होने वाला ।

रसज्ञा ( स्त्री० )-जिह्वा, जीभ, गङ्गा ।  
वि०-रस का जानने वाला ।

रसज्येष्ठ ( पु० )-मधुर रस, मीठा रस,  
शुद्ध रस ।

रसतेजः [ स् ] ( न० )-सुक्तान्न का  
सार, रक्त, रून । [ वेदु ।

रसदालिका ( स्त्री० )-पौंछा, ईंछ, पुगड़-  
रसपातु ( पु० )-पारा, पारद ।

रसधेनु ( स्त्री० )-वह गी जो दानार्थ  
इक्षुरस से बनाई जाती है ।

रसन ( न० )-स्वाद, ध्वनि, आवाज,  
जिह्वा, जलेन्द्रिय ।

रसना ( स्त्री० )-जिह्वा, जीभ, रस्सी,  
रज्जु, तगड़ी ।

रसनायक ( पु० )-शिव, महादेव ।

रसनालिट् [ ह् ] ( पु० )-कुत्ता, कुक्कुर ।  
वि०-जीभ से चाटने वाला ।

रसपाकज ( पु० )-गुह ।

रसफल ( पु० )-नारिकेलफल ।

रसरान ( पु० )-पारा, पारद, रसालून ।

रसवती ( स्त्री० )-रसोई का घर,  
पाकस्थान । [ दाख ।

रसा ( स्त्री० )-पृथ्वी, भूमि, जमीन,  
रसालून ( पु० )-मुर्गा, कुक्कुर ।

रसालून ( न० )-शिंगरफ, हिंगुल,  
रसीत ।

रसातल ( न० )-परातलमेद, पृथ्वी के  
नीचे का सातवां लोक ।

रसादान ( न० )-भूमिदान, पृथ्वीका दान ।

रसाधार ( पु० )-सूर्य, सूरज ।

रसाभास ( पु० )-अनोचित्ययुक्त रस,  
वह रस जो वास्तव में रस न हो  
और रस का प्रतीत हो । [ चूक ।

रसाल ( पु० )-अश्वेत । न०-चूक,

रसायन ( न० )-तक, छाल, कमर, धिय,  
वह औषधविशेष जो जरा और  
उमरादि व्याधियों का नाशक हो ।  
पु०-गठद ।

रसायनफला ( स्त्री० )-ईंछ, टरीतकी ।

रसाल ( न० )-सिरहक, एक सुगन्धित

वस्तुविशेष, शिखरणी नामक एक पेय पदार्थ । पु०-आम्र, इक्षु, ईख, गेहूं, पनस, पौंहा ।

रसाला(स्त्री०)-जिह्वा, दूबा, दास ।

रसाली(स्त्री०)-पौंहा, ईख, पुण्ड्रकोष्ठ ।

रसास्वादी [न] (पु०)-अमर, भौरा ।

वि०-रस का स्वाद लेने वाला ।

रसिक(पुं०)-सारसपक्षी, अश्व, हाथी ।

वि०-रसास्वादयुक्त । [काष्ठी ।

रसिका (स्त्री०)-ईख का रस, रसना,

रसित(न०)-मेघनिर्घोष, मेघ का शब्द ।

वि०-रघुर्णादि से जड़ा हुआ ।

रसुन(पु०)-लसुन, सहस्रन ।

रसेन्द्र(पु०)-पारद, पारा ।

रसोलस(पु०)-मूग, मुद्ग ।

रसोनक(पु०)-लसुन, श्लेष्मकन्द ।

रसोपल(न०)-मोती, भौतिक ।

रसन(न०)-द्रव्य ।

रस्य (ग०)-रक्त, लोहू । वि०-स्वाद लेने योग्य, आस्वाद्य ।

रह् (१० उ०)-जागा, गमन करना ।

रहः[म्] (न०)-वेग, तेजी, धन ।

रह् ( १ प० )-गति, गमन करना ।

१प० सक०-छोड़ना, त्याग करना ।

रहः [ म् ] (न०)-प्रकान्त, निर्जन, विविक्त, गोपनीय, याशस्व ।

अ०-विजन स्थान ।

रहस्प ( वि० )-छिपाने योग्य, गोप्य, प्रकान्त में उत्पन्न ।

रहस्या(स्त्री०) नदीभेद, रास्ना नामक भीषण, पाटा । [ हुआ ।

रहित ( वि० )-धर्मित, त्यक्त, छोड़ा

रा (२ प०)-दान करना, लेना, ग्रहण करना ।

रा(स्त्री०)-विभ्रम, दान, तेजी, काष्ठन, श्री । पु०-धन, स्वर्ण ।

राका ( स्त्री० )-पूर्ण चन्द्रमा वाली तिथि, प्रतिपद्युक्त पूर्णिमा, नदी-विशेष, प्रथमरजोधर्म वाली स्त्री, एक राक्षसी जो शूर्पणखा और खर की माता थी, कच्छरोग ।

राक्षस ( पु० )-यातुधान, हिंसात्मक कर्म करने वाली नीच जाति-विशेष, नन्दराज का मन्त्री, आठ प्रकार के विवाहों में से एक । अस्त्री०-अठभेद । वि०-राक्षससम्बन्धी ।

राक्षसी( स्त्री० )-राक्षसपत्नी, दाऊ, चण्डी, संध्यासमय ।

राक्षसेन्द्र ( पु० )-रावण, राक्षसों का यतिनाथ ।

रासा(स्त्री०)-छाख, छाछा ।

राग (पु०)-रगना, प्रेम, प्रीति, अनु-राग, चन्द्रमा, राजा, सूर्य, रक्त-वर्ण, क्रोध, वसन्तादि स्वरविशेष, गानशास्त्रीय राग जो दृष्टि यथा-भैरव, कौशिक, हिंदोल, दीपक, श्रीराग और मेघराग या मलहार ।

रागपूर्ण ( पु० )-कामदेव, खदिर का वृक्ष, छातारस । [विशेष ।

रागदालि (पु०)-ममूर नामक धान्य-

रागयुक्त[म्] (पु०)-नाजिक्य, मोती ।

रागरज्जु(पु०)-कामदेव, कन्दर्प ।

रागलता(स्त्री०)-कामदेव की पत्नी ।

राजसूत्र(न०)-तुला [ तराजू ] का सूत्र,  
यह सूत्र ।

रागाक्षी(स्त्री०)-मंजीठ, मल्लिका ।

रागाख्या(स्त्री०)-पूयंवत् ।

रागाशनि(पु०)-बृहदेव ।

रागिणी(स्त्री०)-धतुरा नारी, मेनका  
की उपेष्टकन्या, जयश्री नाम

वाली पहनी, वः रामों की पत्नी ।

रागी [ न ] ( वि० )-अनुराग करने  
वाला, कामुक, विछाड़ी पुरुष,

रक्तवर्णयुक्त । [ पुरु होना ।

राघ(१ शा०)-सामर्थ्य होना, शक्ति-

राघव (पु०)-श्रीरामचन्द्र, जज, दण-

रय, रघुवंशीयमात्र, समुद्रस्थ एक  
नदानहस्यविशेष ।

राडव ( न० )-मृग के रोनों से बना  
हुआ वस्त्रविशेष ।

रादूज(न०)-एक प्रकार का पुष्प जो  
रक्तपित्त का नाशक है ।

राज्(१ व०)-यमकना, दीप्तियुक्त होना

राजक( न० )-राजसमूह, राजाओं का  
गिरोह । वि०-बनकने वाला ।

राजकन्या ( स्त्री० )-केविका नामक  
पुष्प, राजपुत्री । [ का ।

राजकीय ( वि० )-राजसम्बन्धी, राजा

राजसम्प (पु०)-राजा के तुल्य, राज-  
सदृश, राजा होने में कुछ न्यून ।

राजकुमार (पु०)-राजपुत्र, यह राज-  
पुत्र जो सकलवस्था को प्राप्त

न हुआ हो । [पर्वत, शाकभेद ।

राजगिरि ( पु० )-मगधदेशस्थ एक

राजप(वि०)-राजा को नारने वाला,

राजहन्ता । [उपस्थेन्द्रिय ।

राजचिन्ह ( न० )-राजा का चिन्ह,

राजजम्बु (स्त्री०)-मिण्डवजूर, राय-  
जामन ।

राजज[य]ह्मा(पु०)-हय नामक रोग ।

राजत ( वि० )-रजतनिर्मित, चांदी के  
वने भूषणादि । न०-चांदी ।

राजतठ ( पु० )-कर्षिकारक्षत, कनैर  
का पेड़ ।

राजताल (पु०)-गुवाक का वृक्ष ।

राजदण्ड ( पु० )-राजा की आज्ञा,  
राजशासन ।

राजदन्त ( पु० )-ऊपर की पंक्ति के  
नखपर्वती हो दांत ।

राजदेशीय (पु०)=राजकस्थ ।

राजधर्म (पु०)-राजा का आवश्यक  
प्रशासकमार्गदि रूप कर्तव्य कर्म ।

राजधानी ( स्त्री० )-राजा के रहने  
की नगरी, राजनिवासस्थान ।

राजनीति(स्त्री०)-राजाओं के लागने  
योग्य शासन, दान आदि उपाय

और उन की प्रतिपादन करने  
वाला शास्त्र ।

राजनील (न०)-मरकत नामक मणि ।

राजन्य ( पु० )-सन्निभ, राजपुत्र,  
जग्गि, शीरिका का वृक्ष ।

राजन्यक (न०)-सन्निभसमूह ।

राजन्वान् ( वि० )-सुराज्युकदेश,  
अच्छे राजा वाला देश ।

राजपदिका ( स्त्री० )-बासक नामक  
पशुविशेष ।

राजपय (पु०)-राजमार्ग, राजाओं के

जाने योग्य मार्ग, बड़ा रास्ता ।  
 राजपुत्र (पु०)—चन्द्रमा का पुत्र बुध-  
 ग्रह, राजा का पुत्र, धर्मसंकर,  
 वैश्य से अश्वत्थ की कन्या में  
 उत्पन्न पुत्र, राजपूत । [कन्या ।  
 राजपुत्री (स्त्री०)—कछधी तूनी, राज-  
 राजभूय (न०)—राजत्व, राजा का  
 असाधारण कर्तव्य कर्म, राजपन ।  
 राजमार्ग (पु०)=राजपथ ।  
 राजयोग्य (वि०)—राजोचित, नृपार्ह ।  
 राजरंग (न०)—रजत, चादी ।  
 राजराज (पु०)—कुबेर, धनपति, चक्र-  
 यर्त्ती राजा, चन्द्रमा ।  
 राजर्षि (पु०)—राजाओं में श्रेष्ठ, ऋतु-  
 पर्णादि राजा, जितेन्द्रिय पुरुष,  
 यतारमा ।  
 राजलक्ष्मी [नृ] (पु०)—सुधिमिर,  
 धनत्रय नामक कोप । वि०—राजा  
 के चिन्हों से युक्त ।  
 राजलक्ष्मी (स्त्री०)—राजश्री, राजशोभा  
 राजवंश (वि०)—राजघश में उत्पन्न  
 होने वाला, नृपवंशोद्भव, जाति-  
 विशेष । [राजा का कर्तव्य कर्म ।  
 राजवर्त्म [नृ] (न०)—राजमार्ग,  
 राजधान [वत्] (वि०)—राजा से  
 युक्त, नृपविशिष्ट [देश] ।  
 राजवाह (पु०)—अश्व घोड़ा ।  
 राजगण (पु०)—पट, देशम ।  
 राजशाक (पु०)—समुद्र, वायुमूकशाक ।  
 राजन (वि०)—रजोगुण वाला, रजो-  
 गुण से उत्पन्न । [सीप ।  
 राजसदन (न०)—राजगृह, राजमण्डल,

राजसभा (स्त्री०)—नृपसभा, राजाओं  
 की समिति ।  
 राजसारस (पु०)—नयूर, मोर ।  
 राजसी (स्त्री०)—दुर्गा, रजोगुणधती ।  
 राजभूय (पु०)—राजा के करने योग्य  
 यज्ञविशेष ।  
 राजस्कन्ध (पु०)—घोड़ा, अश्व ।  
 राजस्व (न०)—राजा का धन, राजकर ।  
 राजह्वन (पु०)—वह ह्वस जिस की  
 चौंघ और पाख लाल वर्ण के  
 और अन्य शरीर श्वेत रंग का  
 हो, उत्तम राजा ।  
 राजहर्षण (न०)—तगर का पुष्प ।  
 राजा [नृ] (पु०)—नृपति, प्रभु, पार्थिव ।  
 राजादन (न०)—पियाल वृक्ष, वह  
 वृक्ष जिसके फल और बीजों के  
 लहूँ बनावकर राजाओं के द्वारा  
 राखे जाते हैं, क्षीरिका वृक्ष,  
 किशुक ।  
 राजार्क (पु०)—सज्जेद जाक का वृक्ष ।  
 राजार्ह (न०)—अगुन । वि०—राजा  
 के योग्य ।  
 राजार्हा (स्त्री०)—लम्बू, जागन ।  
 राजि (स्त्री०)—पक्षि, श्रेणी, रेशा,  
 कृतार, सज्जेद सरसो ।  
 राजिका (स्त्री०)—राजसर्प, काली  
 गरमो, केदार, राई । [वर्ष ।  
 राजिल (पु०)—सुबहुम नामक सर्प, कल-  
 राजी (स्त्री०)—पक्षि, श्रेणी, रजसरसो ।  
 राजीव (न०)—कगल, पद्म । पु०—यह  
 गोमयिगेय, सारसपक्षी, हरिण-  
 भेद, हस्ता । वि०—राजोपजीवी ।

राजेन्द्र(पु०)--राजश्रेष्ठ, चार यौजन  
कोष्ठ के अधिकार वाला नृप,  
नृप से शतगुण अधिक अधिकारी  
महलेश्वर और महलेश्वर से  
दशगुणाधिक राजेन्द्र कहलाता है।  
राज्ञी(स्त्री०)--राजपत्नी, रानी, मूर्त्य  
की भार्या, पश्चिमदिशा, कांस्य।  
राज्य(न०)--शासन, एकूणत, राज्यत्व।  
राज्यका(स्त्री०)--राज्यता।  
राज्यांग ( न० )--राज्य के अंग जो  
सात हैं यथा--स्थानी, जना-  
त्व [ मन्त्री ], सुदृढ, कोप, राष्ट्र,  
दुर्ग [ किला ], बल और पुरसा-  
धियों की श्रेणी।  
राटि ( स्त्री० )--संप्रान, सुदृढ, टिटि-  
हरी नामक पक्षी।  
राट (पु०)--देशविशेष।  
राटा ( स्त्री० )--गोला, लहरी, एक  
पुरी का नाम।  
राट्टीय ( वि० )--राट नामक देश में  
उत्पन्न हुआ, राटदेशोद्भव।  
रात्र (न०)--रात, रात्रि।  
रात्रक ( न० )--नारदमोक्ष पञ्चरात्र  
नामक ग्रन्थविशेष। पु०--यह  
ग्रन्थ जो एक वर्ष पर्यन्त वैश्य  
के घर में निवास कर चुका हो।  
रात्रि ( स्त्री० )--रात, निशा, प्रत्येक  
देश में मूर्त्यास्त हो जाने के  
पश्चात् का समय, हरिद्रा, हल्दी।  
रात्रिकर(पु०)--चन्द्रमा, चांद, कपूर।  
रात्रिच [ छ ] र (पु०)--रातस। वि०--  
रात्रि में बिचरने वाला।

रात्रिच [ छ ] री ( स्त्री० )--रातनी।  
वि०--रात में घूमने करने वाली।  
रात्रिभागर ( पु० )--कुत्ता, कुकुर।  
वि०--रात्रि में जागने वाला।  
रात्रिमणि (पु०)--चन्द्रमा, चांद,  
रात्रिवास (पु०)--अन्धकार, अंधेरा,  
रात्रि में सोते समय मोढ़ने योग्य  
वस्त्र। [ श्रवण ]।  
रात्रिविगम (पु०)--प्रातःकाळ, सवेरा,  
रात्रिवेद ( पु० )--मुग्धा, कुक्कुट।  
रात्रिवेदी [ नृ ] (पु०)--पूर्वपक्ष।  
रात्रिहाम ( पु० )--सज्जद कमल।  
रात्री ( स्त्री० )--निशा, रात।  
रात्र्यट ( पु० )--रातस। वि०--रात्रि  
में घूमने वाला।  
रात्र्यन्ध (पु०)--काकादि पक्षिविशेष,  
यह पक्षी जिसे रात्रि में नहीं  
दीखता।  
राष् (पु०)--गुप्त करना, छुपाना,  
सम्पादन करना, तटपार करना,  
भारमा। ४ पु०--मेहरबान होना,  
कामयाब होना, भारमा।  
राष् ( पु० )--वैशाखनाम। अस्त्री०  
'दया, मेहरबानी, जग्युदय।  
राष्टक (पु०)--दृढ, दृढकी शक्ति,  
ओला।  
राधन ( न० )--राज्ञी करना, सम्पादन,  
प्राप्ति, सम्पादनीयाय।  
राधना ( स्त्री० )--भाजी, घोड़ी।  
राधनी ( स्त्री० )--पूजा, शर्चना।  
राधा ( स्त्री० )--अम्बुदय, सफलता,  
एक गोपिका का नाम, कर्ण की

रूपमाता, अधिरथ की भार्या,  
विशाखा नक्षत्र, बिजली, वैशाख  
मास की पूर्विका ।

राधासुत ( पु० )-अनंराज कर्ण ।

राधिका ( स्त्री० )=राधा ।

राधेय ( पु० )-राधापुत्र, कर्ण ।

राधस्य ( न० )-सुधी, हर्ष, बलप्रदर्शन ।

राम ( वि० )-सुखकर, काररम देने  
वाला, सुन्दर, चारु, प्रयत्न,  
श्रुति । पु०-तीन प्रसिद्ध महा-  
पुरुषों का नाम-१ जनदग्निपुत्र  
परशुराम, २ कृष्ण के ज्येष्ठभ्राता बल-  
राम, ३ दशरथपुत्र श्रीरामचन्द्र  
[श्रीरामचन्द्र का यत्नान्त विस्तार  
पूर्वक धारणीकीय रामायण में  
वर्णित है] । न०-कालायन,  
अंधेरा, कुमरोग ।

रामक ( वि० )-चारु, सुन्दर, हर्षजनक ।

रामचन्द्र-मद्र ( पु० )-दशरथपुत्र राम ।

रामठ ( अस्त्री० )-हिनु ।

रामनवमी ( स्त्री० )-चैत्रशुक्ल नवमी  
को श्रीरामचन्द्र का जन्मदिन है ।

रामखल ( पु० )-किष्किण्याधिपति सुग्रीव

रामा ( स्त्री० )-सुन्दरी, चारु स्त्री,  
भार्या, मिथित भारी, मोहोचना ।

रामानुज ( पु० )-एक वैष्णवसुधारक  
का नाम जो द्वैतवादी थे ।

रामायण ( न० )-रामचरित्र, राम के  
जीवन का यत्नान्त, महर्षि वाल्मी-  
किृत ऋषिमे नाम से प्रसिद्ध  
आदिवाक्य । [एक कवि ।

रामिल ( पु० )-मैत्री, पति, कामदेव,

राय ( पु० )-राजन् का अपभ्रंश ।

राय ( पु० )-शोर, घीम, गर्जना, दहाह ।

रावण ( वि० )-बिहलाने वाला,  
मर्जने वाला । पु०-एक प्रसिद्ध  
राक्षसराजा को लंका का अधि-  
पति था तथा जिसने रामपत्नी  
सीता का हरण किया था और  
इसलिये दशरथपुत्र श्रीराम ने  
उस को सवंश मिहृत करके सीता  
कीता का बहुरा किया-यह कथा  
विस्तारपूर्वक रामायण में वर्णित है ।

रावणि ( पु० )-राक्षसपुत्र, मेघनाद ।

राशि ( पु० )-समूह, ढेर, ढपक और  
अव्यक्त तण, च्योतिषचक्र का १२  
वां अंश मेघ आदि, धान्य आदि  
का ढेर ।

राशिचक्र ( न० )-राशियों का घना  
हुमां चक्र, मेघ आदि १२ राशि  
वाला गोलाकार ।

राशिभोग ( पु० )-सूर्य आदि यहाँ  
का अपनी २ गति के अनुसार  
राशियों में जाना ।

राशिक ( न० )-ढेर लगाया, घुमना ।

राशीकृत ( वि० )-इकट्ठा किया हुआ ।

राष्ट्र ( न० )-राज्य, देश, रियासत,  
जाति, प्रीति, मेलन । अस्त्री०-  
प्रीति, मेलन, आम मुरीयत ।

राष्ट्रीय-प्टीय ( वि० )-राष्ट्रसम्बन्धी ।  
पु०-शासक, राजा, राजा का माला ।

राष्ट्र ( १ आ० )-बिहलाना, गुस्सा ।

राष्ट्र ( पु० )-शब्द, ध्वनि, रीछा,  
गुल्लह, एक प्रकार का मृत्य ।

रासज्ञ ( पु० )-गप्ता, गर्दम ।

रास्ना ( स्त्री० )-एक जता ।

राहित्य ( न० )-रहितता, खालीपन,  
अभाव, शून्य ।

राहु ( पु० )-रपान, लोहना, ज्योति-  
इयकर्म मूर्त्य की किरणों के न छूने  
से सत्पक्ष हुई पृथ्वी की छाया का  
माश्रय रूप एक ग्रह ।

राहुचरम-यासः-मूर्त्य का चन्द्रग्रहण ।  
[राहुदर्शन-पीडा का भी यही  
मर्म है] ।

रि ( ६ प० )-जाना, हरकत करना ।  
५ प०-मारना । ९ उ०-छोड़ना,  
निकाशना ।

रिक्त ( वि० )-खाली, सूना, विमल,  
निरर्थक ।

रिक्त्य ( वि० )=रिक्त ।

रिक्तपाणि-इक्षु ( वि० )-निर्धन,  
गरीब, खाली हाथ ।

रिक्ता ( स्त्री० )-चतुर्दशी, नवमी  
और पशुपति नामक तिथि ।

रिक्थ ( न० )-दायभाग, विरासत,  
धन, जायदाद, स्वर्ण ।

रिक्तग्राह-भागी [न] ( पु० )-दायाद,  
वारिस ।

रिन्-म् ( १ प० )-रेंगना, सरकना ।

रिंगण ( न० )-रेंगना, घिसकना,  
रगड़ना ।

रिप् ( ३ उ० )-खाली करना, माफ़  
करना, अलग करना, त्यागना ।  
१, १० उ०-मिलना, जोड़ना, अलग  
करना ।

रिञ् ( १ आ० )-सूचना ।

रिघम ( पु० )-वसन्त ऋतु, प्रेम ।

रिपु ( पु० )-शत्रु, दुश्मन, विपक्षी,  
छत्र से छटा स्थान ।

रिपुमर्दन ( न० )-शत्रु का नाश ।

रिप् ( ६ प० )-बाली देना, घेसी  
मारना, देना, लड़ना, मारना ।

रिञ् ( १मा० )-नर्मर का शब्द करना ।

रिप् ( ६ प० )-मारना, बध करना ।

रिग ( पु० )-शत्रु, दुश्मन ।

रिप् ( १, ५ प० )-मारना, मुह-  
सान पहुँचाना, चोट करना,  
नाकामयाब होना ।

रिष्ट ( वि० )-तत, इतनाय । न०-  
पाप, नाश, यदकिस्मती, बी-  
भाग्य । पु०-तखवार ।

री ( ५मा० )-घटना, टपकना । ९ उ०-  
जाना, मारना, गुराँना ।

रीज्या ( स्त्री० )-छज्जा, गर्भ, निन्द ।

रीढ ( पु० )-रीढ़ की हड्डी ।

रीढा ( स्त्री० )-अपमान, घेड़जती ।

रीख ( वि० )-तरित, जहा हुआ ।

रीति ( स्त्री० )-गति, हरकत, पंक्ति,  
सीमा, गदी, तरीका, ढंग, रिवाज,  
चाल, पीतल ।

रीय् ( १ उ० )-लेना, ढकना ।

रु ( २ प० )-चिखाना, गवद करना ।  
१ आ०-जाना, हरकत करना,  
मारना ।

रुठ ( पु० )-दानी, उदार ।

रुचम ( वि० )-चमकीला, शोभाय-  
मान । पु०-पतूरा, स्वर्णभूषण ।

न०-स्वर्ण, छोहा ।

सुक्मकारक ( पु० )-सुनार ।

सुक्मी [ न् ] ( पु० )-राजा भीष्मक  
का श्येष्ठ पुत्र ।

सुक्मिणी (स्त्री०)-विदर्भराज भीष्मक  
की पुत्री, श्रीकृष्ण की भार्या ।

स[रु]क्ष (वि०)-सूषा, स्नेहरहित ।

सुण (वि०)-बीमार, रोगी, क्षत, टेढ़ा ।

सुष् (१भा०)-प्रसन्न होना, चमकना ।

सुष्-चा(स्त्री०)-दीप्ति, प्रकाश, शोभा ।

सुष्क (वि०)-रुश्किय । पु०-तोता ।

न०-दात, भाटा, चञ्चो, घोड़े  
की अयाल ।

सुचि [ची] ( स्त्री० )-शोभा, चमक,  
सुन्दरता, जायका, इच्छा, प्रसन्न,  
गौरवना, भूष ।

सुचिकर(वि०)-जायकेदार, भूष बढ़ाने  
वाला, सहीपन ।

सुचित ( वि० )-शोभायमान, धन-  
कीटा, जायकेदार, सुश, प्रसा  
हुना ।

सुचिधाम--भर्ता (पु०)-सूर्य, पति ।

सुधिर ( न )-सुन्दर, चारु, रोचक,  
जायकेदार । न०-कुकुम्, लयंग ।

सुध् (वि०)-रुचि के लिये हितकर,  
सुन्दर । पु०-प्रेमी, पति, चावल ।

सुन् ( ६ प० )-नष्ट करना, टुकड़े र  
करना, रोगिल करना, दुःख पहुंच-  
वाना । १० उ०-मारना ।

सुन्-जा ( स्त्री० )-टूट, मग्नता, दुःख-  
वट, रोग, पकावट । [कना ।

सुट् (१भा०)-मुड़ाविला करना, प्रग-

रुट् ( १ प० )-मारना । १ भा०-  
रोकना, मुड़ाविला करना, दुःख  
देना ।

रुट् ( १ प० )-जाना, घुसाना, लंगहा  
होना, मुड़ाविला करना ।

संठ ( न० )-मस्तकरहित देह, तना,  
कवच ।

रुह् ( १ प० )-विज्ञाना, रीना, गर्जना ।

रुह् (स्त्री०)-चिल्लाहट, शरीरगुल ।

रुदध ( पु० )-बच्चा, कुत्ता, भुर्गा ।

रुदन-दित ( न० )-रीना, चिल्लाना,  
आहोकारी, क्रन्दन ।

रुट्ट ( वि० )-रुका हुआ, घिरा हुआ,  
ढका हुआ, बंद किया हुआ ।

रुद्र ( वि० )-मयानक, खीनक,  
बड़ा, प्रशंसनीय, रुलाने वाला ।  
पु०-ग्यारह रुद्र जो तैत्तिरीय वैदिक  
देवताओं के अन्तर्गत हैं, शिव,  
अग्नि, ११ का अष्ट ।

रुद्रज ( न० )-पारा, पारद ।

रुद्रभू ( स्त्री० )-इशानभूमि ।

रुद्रभू (स्त्री०)-ग्यारह रुद्रों की माता ।

रुद्राणी ( स्त्री० )-पार्वती, रुद्रभार्या,  
११ रुद्रों की कन्या ।

रुष् ( ७ उ० )-रोकना, ढकना, बन्द  
करना, बांधना, घेरना, घमाना ।  
[ रुणद्धि, रुन्धे; रुरोध, रुन्धे;  
अरुपत्, अरोहसीत्, अरुह्य;  
रोहस्पति-ते ] ।

रुधिर ( वि० )-लाल, गुल । न०-  
रून, रक्त, पुं कुम् । पु०-मङ्गलप्रद  
लाक्षण ।



रूप (४५०)-घबराहना, बिबाहना ।

रुमा (स्त्री०)-सुप्रीव की स्त्री । विशिष्ट

उपण की खान ।

रुरु (पु०)-सुगन्ध, कुत्ता ।

रुवु (पु०)-परगट का वृक्ष ।

रुश (६५०)-भारना, दिक् करना ।

रुप् (४५०)-भूखा होना, दुःखीहोना

१५०-भारना, दिक् करना ।

रुप्-पा-ट्टि (स्त्री०)-क्रोध, गुस्सा ।

रुपित-रुष्ट (वि०)-क्रोधित, भड़का हुआ ।

रुह ( १५० )-उत्पन्न होना, उगना, बोज जमना ।

रुहक ( म० )-सूराग्र, शार गढ़ा ।

रुहा ( स्त्री० )-दूर्वा घास ।

रुह ( वि० )-उगा हुआ, उत्पन्न,

उठा हुआ, बढ़ा हुआ, प्रसिद्ध,

मशहूर, निश्चित, प्रकृति और

प्रत्यय के अर्थ की अपेक्षा न

करके समुदायशक्ति से अर्थ जो

जताने वाला शब्द जैसे 'घट, गौ' ।

रुडि ( स्त्री० )-जन्म, पैदायश,

प्रसिद्धि, प्रकृति और प्रत्यय के

अर्थ की अपेक्षा किये बिना समु-

दायशक्ति से अर्थ का बोधन ।

रूप (१०८०)-धनाना, मूर्तिमान् करना,

देखना, तलाश करना, विचारना ।

रूप ( न० )-मूर्ति, शकल, स्वभाव,

प्रत्यय वस्तु, खूबसूरती, ग्रन्था-

वृत्ति, आकार, शब्द, नाम, शब्द

तथा धातुओं के आगे विभक्ति

लगा कर लिख्यन् शब्द, नाटका-

दि ग्रन्थः इवेत रंग । वि०-इवेत

रंग वाला, उत्तरपदस्थ रूपादि

शब्द के उपमान का वाचक यथा-

'पितरूपः पुतः', एक की संख्या

का बोधक ।

रूपक ( न० )-नाटक, अभिनय का

प्रदर्शक दृश्य काव्यप्रमेद, मूर्त,

काव्यालङ्कार, संख्याविधेय, उप-

मान । पु०-मुद्रा, तीन रत्नी की

माप, रजत, चांदी । वि०-मूर्ति-

मान् । [स्वभाव ।

रूपतत्त्व (न०)-शील, सद्बृत्त, अच्छा

रूपधारी [ न ] (वि०)-सौन्दर्ययुक्त,

खूबसूरत, रूपान्तर धारण करने

वाला मनु । [पक्षी ।

रूपनाशन (पु०)-उलूक, पेंचक, उल्लू

रूपालीला (स्त्री०)-वैश्य, वारांगना,

कंजरी ।

रूपास्त्र (पु०)-कामदेव, मन्मथ ।

रूपिका (स्त्री०)-सफेद आँक का वृक्ष,

इवेतार्क वृक्ष ।

रूप्य (न०)-नाभूषण बनाने के लिये

आवृत्त [ चीट लगाया हुआ ]

स्वर्ण तथा चांदी, रूपा, रजत-

मात्र, उपमेय । वि०-सुन्दर,

खूबसूरत ।

रूप्याध्यक्ष (पु०)-कोषाध्यक्ष, खजांची ।

रूवुक (पु०)-परगट का वृक्ष ।

रूप (१०८०)-घूसरित करना, घुलि

आदि से मिला देना ।

रूपक (पु०)-आंसा, वासक ।

रूपित ( वि० )-घुलिनमिश्रित, शुष्क

किया हुआ, गुपिहत ।

रे ( अ० )-सम्बोधनविशेष, नीच सम्बोधन, नीपादि के बुलाने में ।  
रेण् ( १ आ० )-सन्देहयुक्त होना, संश-  
याक्रान्त होना, सम्यक्तया न  
जागना ।

रेक ( पु० )-संशय, शंका, विरेचन,  
दस्त होना, मेंढक ।

रेकणः [ स् ] ( न० )-स्वर्ण, सोना ।

रेका ( स्त्री० )-सन्देह, शंका ।

रेखा ( स्त्री० )-थोड़ा, अल्प, छद्म,  
कपट, लकीर, पक्षि, छाइन ।

रेखागणित ( पु० )-ज्योतिषशास्त्र का  
एक गणितग्रन्थविशेष, ज्योतिषी ।

रेखाभूमि ( स्त्री० )-लंका और लुमेरु  
पर्वत के मध्यसूत्रगत देशविशेष ।

रेचक ( पु० )-जवाहार, जमालगोटे  
का धूल, पिचकारी, माणायान में  
नानिका से निष्कासित वायु ।

वि०-भेदक, दस्त करने वाला ।

रेच्य ( पु० )-वह वायु जो माणायान  
के समय नासिका द्वारा बाहर  
निकाला जाता है । वि०-भेदक ।

रेचन ( न० )-दस्त होना, मलभेदन,  
मल का बाहर निकलना ।

रेचना ( स्त्री० )-कथीला, काम्पिल्ल ।

रेचनी ( स्त्री० )-कथीला, जमालगोटे  
का धूल, मफेद निषोष ।

रेञ् ( १ आ० )-चमकना प्रकाशित  
होना, दीप्तिमान् होना ।

रेट् ( १ न० )-मांगना, याचना करना ।

रेणु ( अफली० )-धूलि, पांशु, पराग,  
पुष्परण । पु०-विषत्रापहा, पर्यट,

वायविडङ्ग ।

रेणुका ( स्त्री० )-गरिष के आकार का  
सुगन्धित एक द्रव्यविशेष, जम-  
दग्नि की स्त्री और परशुराम  
की माता ।

रेणुकासुत ( पु० )-परशुराम ।

रेणुरूपित ( पु० )-गधा, गर्दभ । वि०-  
धूलि से धूसरित ।

रेणुवास ( पु० )-भ्रमर, भौरा ।

रेणुसारक ( पु० )-कर्पूर, काजूर ।

रेतः [ स् ] ( न० )-शुक्र, वीर्य, शिव-  
वीर्य, पारद, पारा, जल ।

रेतजा ( स्त्री० )-वालुका, धूलिविशेष ।

रेतन ( न० )-वीर्य, शुक्र ।

रेत्य ( न० )-पीतल, पित्तल ।

रेत्र ( न० )-वीर्य, अमृत, पीपूष,  
पटवास, गुलाल, सूतक ।

रेव ( वि० )-निन्दित, कृपण, चून,  
झूर, दयारहित ।

रेव ( पु० )-रकार, राग, वह रकार  
जो अक्षर के ऊपर चढ़ा रहता  
है । वि-निन्दित, कुत्सित, निन्दा  
किया हुआ ।

रेकाः [ स् ] ( वि० )-कृपण, नीच,  
दुष्ट, अप्रिय, झूर ।

रेभण ( न० )-गीओ का रंभाना, गीओद,  
गीओ की ध्वनि । [ चीर, बासुर ।

रेरिहाण ( पु० )-शिव, महादेव,

रेय् ( १ आ० )-फुदकना, उछल कर  
चलना ।

रेवट ( पु० )-मूजर, वेष्ट, वांस, विष-  
वेष्ट, मांसुल, ययूला । न०-दक्षि-

णावर्तं शब्दः ।

रेवत (पु०)--अश्वीर, नील, एक राजा  
को रेवती का पिता और यल-  
राम का प्रवशुर था ।

रेवति (स्त्री०)--कामदेव की पत्नी ।

रेवती (स्त्री०)--यलदेव की भायाँ,  
२१ वा नक्षत्र, मातृविशेष, एक  
नदी, दुर्गभेद, २१ की खरपा,  
घालप्रह, मेढाष्टमी ।

रेवतीनख (पु०)--शनिश्चरप्रह ।

रेवतीरमण (पु०)--यलदेव, बलमद्र ।

रेवतीश (पु०)--पूर्ववत् ।

रेवा (स्त्री०)--नर्मदा नदी, रति का  
नामविशेष । [करना ।

रेव (१ पु०)--हींसना, छोड़े का शब्द

रे (१ पु०)--शब्द करना ।

रैत्य (वि०)--पित्तल का विकार,  
पीपल का वर्त्तन ।

रेवत (पु०)--रेवती नदी के समीप  
का प्रदेश, द्वारकासमीपस्थ पर्यंत  
विशेष, शिघ्र, दैत्यविशेष, स्वर्णालु  
नामक वृत्त, पद्मन मनु, मेघ,  
रैवतपर्यंत, सोमसाता । वि०-  
धनयुक्त ।

रौक (न०)--छिद्र घिल, सूराल, नीका,  
पु० नयद कयथा देकर प्रस्तु गरी-  
दना, कयभेद, दीप्ति, प्रकाश ।

रोग (पु०)--घातु या दीपो के खेपन्व  
मे सत्पन्न व्याधि, बीमारी ।

रोगण (न०)--भीषण, दयार्ह, चिकि-  
त्साशास्त्र । वि०-रोग का नाश  
करने वाला ।

रोगभू (स्त्री०)--शरीर, देह ।

रोगराज (पु०)--राजयहमा, लघ-  
रोग, कमलम्पयन ।

रोगलक्षण (न०)--निदान, रोग बत-  
लाने वाला चिन्ह ।

रोगशान्तक (पु०)--वैद्य, चिकित्सक ।

रोगशिला (स्त्री०)--नन शिला,  
चनसिल ।

रोगश्रेष्ठ (पु०)--उत्तर, दुष्टार, ताप ।

रोगह (न०)--अप्यर्थ, दयार्ह । वि०-  
रोगनाशक, वैद्य ।

रोगहारी [त्] (पु०)--वैद्य, हकीम ।  
वि०-रोगहन्ता ।

रोगितक (पु०)--अग्नीकवृक्ष ।

रोगी [न्] (वि०)--रोग वाला,  
व्याधियुक्त, बीमार ।

रोग्य (वि०)--रोग करने वाला,  
अप्यर्थ, अहितकर, रोगसम्बन्धी ।

रौचक (पु०)--क्षुधा, भूख, युमुता ।  
वि० रुचिकारक, मिय ।

रौचन (पु०)--कवीला, छूटवाटगलि,  
पलायन, पयाज, दाहिन, मयाय-  
म्भुवनम्बन्तर में देवविशेष,  
भारतवर्ष के अन्तर्गत एक पर्यंत ।  
वि० रौचन दीप्तिशाली, भीममान,  
अनुराग करने वाला ।

रौचनक (पु०)--अश्वीर, निम्बु ।

रौचना (स्त्री०)--रक्तकमल, गोरो-  
चना, रुपेद निमोघ, आरुलकी,  
मनसिल, सुन्दर नारी, यमुदेव  
की पत्नीविशेष ।

रौचनिका (स्त्री०)--प्रशलोघन ।

रोचमान ( पु० )—अश्व की ग्रीवा में  
रोनों का घेरा 'मोरी' एक नृप ।  
वि०—दीप्ति वाला, दीप्चमान ।  
रोचि[स्] ( न० )—प्रज्ञा, कान्ति  
रोशनी ।  
रोचिण ( वि० )—प्रकाशशील, दीप्ति  
वाला, आजिष्णु, चमकने वाला ।  
रोची [न्] ( वि० )—पूर्ववत् ।  
रोह [स्] ( वि० )—हिंसा करने वाला,  
वधक, हिंसक ।  
रोटिका ( स्त्री० )—गोधूमादि घून की  
बनी रोटी, पिटकविशेष ।  
रोह ( १ प० )—तिरस्कार करना,  
अनादर करना ।  
रोहः [स्] ( न० )—स्वर्ग, पृथिवी ।  
रोदन ( न० )—घिंलाना, कन्दन, रोगा,  
अश्रु, आसू ।  
रोदनी ( स्त्री० )—स्वर्ग, और भूमि ।  
[ यह जल्यप नी है और इसी  
कार्य का बोधक है ] । [ पृथ्वी ।  
रोदनी ( स्त्री० द्विव० )—स्वर्ग और  
रोप ( पु० )—नदीतट, रोधन, रोकना,  
बंद करना, आवरण, ढहरना ।  
रोप [स्] ( न० )—नदी का किनारा,  
नदीतीर ।  
रोधन ( वि० )—रोकने वाला, रोध-  
कर्ता । न०—प्रतिघन्ध, रोक ।  
रोप[पो]वक्रा ( स्त्री० )—नदी, दरिया ।  
रोपोवती ( स्त्री० )—पूर्ववत् ।  
रोप ( न० )—पाप, अपराध । पु०—  
लोप का यत्न ।  
रोप ( पु० )—घाण, तीर, बीजादि का

छगाना, रोपण । न०—छिद्र ।  
रोपण ( न० )—जनन, बीज छगाना,  
प्रादुर्भाव, यस्तु के वास्तविक  
रूप को छिपा कर प्रकारान्तर  
से खताना । वि०—रोपक ।  
रोम ( न० )—जल, छोम, छालु, जन-  
पदविशेष ।  
रोम [न्] ( न० )—शरीरोत्पन्न अङ्गुर,  
रोम, केश, छाल, एक जनपद  
और तद्देशवासी जन ।  
रोमक ( न० )—पाशुलवण, छोड़कान्त,  
जनपदविशेष, रुम, तद्देशवासी ।  
रोमकूप ( पु० )—छोमछिद्र, रोमों के  
सुराख ।  
रोमकेशर ( पु० )—चामर, चंवर ।  
रोमगुच्छ ( पु० )—पूर्ववत् ।  
रोमन्ध ( पु० )—भक्षित घास आदि  
को निकाल कर पशुओं का  
खायना, जुगालना, जुगाली करना ।  
रोमभूमि ( स्त्री० )—स्वप्ना, चमड़ा, छाल ।  
रोमलता ( स्त्री० )—रोमायलि, रोमों  
की पत्ति ।  
रोमवान् ( वि० )—रोमों वाला, छोम-  
विशिष्ट पुरुष । [ यहा होता ।  
रोमविकार ( पु० )—रोमाच्छ, रोमों का  
रोमश ( वि० )—प्रचुर रोमवाला । पु०—  
मेघ, झूकर, सूअर, पियड़ाहु, एक  
श्रमि । न०—उपस्थ ।  
रोमशा ( स्त्री० )—दग्धायुधविशेष,  
बृहस्पति की कन्या ।  
रोमहर्ष ( पु० )—रोमाक्ष, रोमोद्गम,  
रोमों का निकलना ।

रोमहर्षण (पु०)--सून, व्यासशिष्य ।  
न०--रोमाक्ष । वि०--रोमों को  
खड़ा करने वाला ।

रोमाक्ष ( पु० )--रोमहर्षण, छीमों  
का खड़ा होना ।

रोमाक्षित ( वि० )--वह पुरुष जिसके  
रोम खड़े हो गये हों, जालपुलक,  
हृष्टरोमा ।

रोमाक्षी-वक्षी ( स्त्री० )--रोमपंक्ति,  
छीमों की कतार, नाभि के ऊपर  
की रोमपंक्ति जिस से तारुण्य  
का होना प्रकटित होता है ।

रोमोद्गम-द्गद ( पु० )--रोमाक्ष, छीमों  
का फूटना । [ अतिशय रोदन ।

रोमुदा ( स्त्री० )--अधिक रोना,  
रोलम्ब ( पु० )--भ्रमर, भैंरा ।

रोप ( पु० )--क्रोध, गुस्सा ।

रोपण ( पु० )--पारा, पारद, ऊपर  
झूनि, कसीटी, हेमचर्मणोपल ।

वि०--क्रोधयुक्त । [ चढ़ने वाला ।

रोह ( पु० )--अकुर, अंकुजा । वि०--

रोहक ( पु० )--मेतविशेष । वि०--बढ़ने  
वाला ।

रोहण (न०)--वीर्य, शुक्र, जन्म, मातृ-  
भाव, प्रकट होना । पु०--पर्वत-  
विशेष, दूरस्थ पर्वत ।

रोहि ( पु० )--शीत, वृक्षविशेष ।  
वि०--धार्मिक पुरुष, धर्मात्मा ।

रोहिण ( न० )--चन्द्रमा भागों में  
विभक्त दिन का नवम मुहूर्त ।  
पु०--वटवृक्ष, रोहितक नामक वृक्ष,  
शास्त्रलिङ्गीपक्ष एक पर्वत-भूतज ।

रोहिणि (स्त्री०)--अश्विनी से चौथा  
नक्षत्र । [ वर्ण वाली स्त्री ।

रोहिणिका ( स्त्री० )--क्रोध से रक्त-

रोहिणी ( स्त्री० )--गौ, वसुदेवपत्नी,  
यक्षदेव की माता, विजली, हरी-  
लकी, ह्रीह, मंजीठ, नव वा पांच वर्ष  
की कन्या, हरिव्यक्तशिषु की पुत्री,  
चौथा नक्षत्र, कटुतुण्ड्यी, सुरभि-  
कन्या, कण्ठरोगविशेष, चन्द्र-  
भासा । [ वृषभ ।

रोहिणीपति ( पु० )--चन्द्रमा, वसुदेव,

रोहिणीश ( पु० )--पूर्वपति ।

रोहिण्यष्टमी ( स्त्री० )--रोहिणीयुक्त  
माद्रकुण्ठाष्टमी, कृष्णवन्माष्टमी ।

रोहित ( पु० )--सूर्य, एत मत्स्य, वर्ण-  
भेद, ऋष्यभृग । वि०--रोहित  
वर्ण वाला । स्त्री०--नृगी, घोड़ी,  
लताभेद ।

रोहित ( न० )--कुंकुम, केसर, रक्त ।  
पु०--मीनविशेष, अपने नाम से  
प्रसिद्ध हरिश्चन्द्र का पुत्र, मृग-  
विशेष, वृक्षभेद ।

रोहिताश्व ( पु० )--अग्नि, जाग, हरि-  
श्चन्द्र राजा का पुत्र ।

रौदय (न०)--घातघ्न, कृतता, कृता-  
पम, कठोरता, चिह्नभाषा ।

रौट् [ ह् ] ( १प० )--अनादर करना,  
तिरस्कार करना ।

रौद्र ( न० )--शृगारादि भाट रसों में  
से अन्तिम, उग्ररस । पु०--तेजस्व,  
सूर्य की गर्मी, घूप । वि०--भीषण,  
हरावना ।

रीच्य ( न० )-चादी, रजत । वि०-  
चादी का ।

रीरव ( वि० )-चञ्चल, भीषण, घूर्त,  
रुक्मण का । पु०-रीरव नामक  
नरकविशेष ।

रीहिण्येय ( पु० )-युधयह, बलराम ।  
न०-नरकत नणि ।

## ल

ल ( पु० )-इन्द्र, वर्णमाला का २८वां  
अक्षर । न०-पृथिवीधीन ।

लकु [ क ] प ( पु० )-लकुच का वृक्ष,  
बबहर नामक मरिहू घृस ।

लक्ष् ( १० व० )-देखना, पड़िचा-  
नना, अवलोकन करना, निशाना  
लगाना ।

लक्ष ( न० )-पद, चिन्ह, अंक, निशान,  
ठपान, यद्गाना, शरद्वय, तीर का  
निशाना, एक लाख की संख्या ।

लक्षण-लक्ष [ नृ ] ( न० )-चिन्ह, निशान ।  
पु०-लक्षण, सारस पक्षी ।

लक्षित ( वि० )-प्राप्त, अनुमान किया  
हुआ, अंकित ।

लक्ष्मी ( स्त्री० )-शोभा, कान्ति,  
विष्णु की स्त्री, धनदीलक्ष, भीती,  
हरिद्रा ।

लक्ष्मीपुत्र ( पु० )-कामदेव, अश्वय,  
कुश नामक रामचन्द्र का पुत्र, एक  
नन्दपुत्र ।

लक्ष्मीपल ( न० )-श्रीफल, बेल का पेट ।

लक्ष्य ( न० )-निशाना लगाने के

लायकद्रव्य, प्रयोगन, मतनय, चक्षुर्य  
वि०-देखने के योग्य, अनुमान  
करने लायक । [ मिछा हुआ ।

लगित ( वि० )-लगा हुआ, संसक्त,  
जगुड [ ल-र ] ( पु० )-दरहा, छद्म, छाठी ।

लग्न ( न० )-मेवादि बारह राशियों  
का सद्यः । वि०-लज्जित, संसक्त,  
लगा हुआ, स्तुतिपाठक, ज्ञामिन ।

लग् ( १भा० )-लपन करना, भोजन  
न करना, सीमा को उखाड़ना ।

लपिमा [ नृ ] ( पु० )-लपुता, हलका-  
पन, एक प्रकार का ईश्वर का  
ऐश्वर्य ।

लपु ( वि० )-शीघ्र, हलका, छोटा,  
साररहित, समोच्च, सुन्दर । पु०-  
ह्रस्वमात्रा वाले अकारादि वर्ण ।  
न०-अगुल, अगर नामक सुग-  
न्धित द्रव्य ।

लपुकाय ( पु० )-बकरा, छोटा शरीर ।  
वि०-छोटे शरीर वाला, सर्वकाय ।

लपुद्राक्षा ( स्त्री० )-छोटी मुनक्का,  
किशकिश ।

लपू ( स्त्री० )-रावण की राजधानी  
का नाम, दक्षिण में पुरीविशेष ।

लकारपति-नाथ ( पु० )-रावण, लका  
का मालिक ।

लकारपायी [ नृ ] ( वि० )-लका-  
निवासी, लका में रहने वाला ।  
पु०-वृक्षविशेष ।

लपन ( न० )-मनशन, भोजन न  
करना, पाका, उखाड़ना, उठलना ।

लज् ( १ प० )-श्रीष्ट करना, गर्भ

करना । १० व०-खोलना, हिसा  
करना, देना ।

लज्जा (स्त्री०)-साल, शर्मे, ग्रीहा, हवा ।

लज्जालु ( वि० )-शर्मालु, शर्मे करने  
वाला । स्त्री०-सुदुर्मुख की बेल ।

लज्जित (वि०)-अभिन्दा, लज्जायुक्त ।

लङ्क ( पु० )-लङ्क, मोदक, एक  
प्रकार की मिठाई ।

लङ्क ( पु० )-लङ्कन नामक देश ।

लता (स्त्री०)-बेल, बरछी, वृत्तति ।

लताफल (न०)-परबल, पटोल ।

लतामणि ( पु० )-मूगा, प्रवाल ।

लतारवन ( पु० )-सर्प, साप ।

लताकं (पु०)-बरी प्याज, हरिप्रभायुक्त

लट् ( १ प० )-कहना, बोलना ।

लपन ( न० )-मुल, आनन, मुंह,  
भरण, कहना ।

लपित ( वि० )-कपित, कहाहुआ,  
उद्धरित । न०-वचन, वाक्य ।

लपिका (स्त्री०)-लपकी, लपकी ।

लट्ठ ( वि० )-मार्ग, हाथिल किया  
हुआ, पाया ।

लम्ब ( वि० )-पाने योग्य, प्राप्त  
करने योग्य, हाथिल करने लायक ।

लम्क ( पु० )-यार, जार, अण्याश ।

लम्पट ( पु० )-पुर्ववत् । वि०-विय-  
यासक्त, परस्त्रोरस ।

लम्ब ( पु० )-मर्त्तक, नट, कान्त,  
सत्कांक्ष [ रिश्वत ], अकशास्त्र मे

भुगा और त्रिभुज आदि क्षेत्र ।

वि०-लम्बा, लटका हुआ ।

सम्बन्ध ( वि० )-लम्बे बाँटों वाला,

पु०-कुशा का सासन, लम्बे बाल ।

लम्बोदर ( वि० )-लम्बे पेट वाला,

जिस का पेट मुखजिन से भरता

हो । पु०-पौराणिक गणेश ।

लम्बीय ( पु० )-कूट, लट्टू । वि०-  
लम्बे होटों वाला ।

लप ( पु० )-नेल, निनाश, प्रलय-  
काल, ईश्वर, नीतशास्त्र से नृत्त-  
वाद्यादिकी साम्यता । [ लिङ्गा ।

ललना ( स्त्री० )-कानिनी, नारीभेद,

ललनाम्रिय ( पु० )-कदम्ब का फेड़,

कानिनीमल्लज । [ जाल ।

ललाट ( न० )-कपाल, मस्तक, भाषा,

ललाटिका ( स्त्री० )-नस्तकाभरण,

भाषे का गहना, टीका नाम से  
प्रसिद्ध ईश्वर ।

ललाम ( वि० )-सुन्दर, प्रमाण । न०-

चिन्ह, ध्वजा, सजावट, खींग,

पूँछ । पु०-घोड़ा, पुरुष ।

ललित ( वि० )-सुन्दर, मनोह,

अभिलपित । न०-प्रहारभाव से

उत्पन्न चेष्टाविशेष । पु०-एक

प्रकार का राग या स्वर ।

लव ( पु० )-कालभेद, देश, जरावा,

छेदन, श्रीरामचन्द्र का पुत्र, गौ

की पूछ के बाल । न०-जायफल,

लौग, लवंग ।

लवण ( न० )-नमक, साररस्युक्त

द्रव्य, छेदन । पु०-सिन्धु, समुद्र,

एक प्रकार का रस । वि०-नमकीन

लवणयुक्त, सारी, घड़ा सूखदूत ।

लवणा ( स्त्री० )-नदीविशेष, महा-

। लघोत्तिष्ठन्ती, कान्ति, दीप्ति ।

लघुजोत्तम ( न० )-सैन्धवा नमक,  
लाक्ष्मीरी नोन ।

लघित्र ( न० )-दांती, दराती, चाकू, लुरी  
लप् ( १, ४, ३० )-इच्छा करना, चाहना,  
स्पर्शा करना ।

लसिका ( स्त्री० )-लाला, लार,  
गुह से जो पानी टपकता है ।

लहरि-री ( स्त्री० )-लहर, महातरंग,  
यही तरंग ।

लह ( २ प० )-लेना, ग्रहण करना, पकड़ना ।

लक्षण्य ( वि० )-शुभाशुभ लक्षण  
को जानने वाला, शकुनी ।

लाक्षा ( स्त्री० )-लाख नाम से प्रसिद्ध  
द्रव्य । [ आरोग्य ।

लाघव ( न० )-लघुता, हलकापन,

लांगल ( न० )-खेत जोतने का साधन,  
हल ।

लांगलपद्धति ( स्त्री० )-लांगलरेखा,  
हल से खेची हुई लकीर, हलाई,  
सीता ।

लांगली [ न् ] ( पु० )-बलराम,  
नारियल, नारियल का पेड़ ।

लाङ्गुल ( न० )-पहाड़ों की घूँट, दुम ।

लाङ् ( १ प० )-क्रिडकना, घुड़कना ।

लाजा ( स्त्री० )-अलत, चावल ।

लाजाः ( पु० म० )-खील, मुनेहुए धान ।

लाजलन ( न० )-नाम, निशान, चिन्ह,

क्षोप लगाना । [ नफा, पाना ।

लाभः-अयम्=ठपात्र, मूद, फावदा,

फालन ( न० )-मेमपूर्यक पालन करना,  
छाड़ प्यार करना ।

लालमा ( स्त्री० )-गभिठापा, भति-

शय इच्छा, गर्भवती की इच्छा,

गर्भ का चिन्ह । [ कातर ।

लालाधित्त ( वि० )-लाला [ लार ] पुरु,

लालित्य ( न० )-सुन्दरता, मनोज्ञ-

भाव, खूबसूरती, मनोहरता ।

लाव [ ध ] क ( पु० )-लावा नामक

पत्थी । वि०-काटने वाला, छेदने

वाला । [ सौन्दर्यविशेष ।

लावण्य ( न० )-उपनता, खारीपन,

लावक ( पु० )-मयूर, मोर । न०-

मटका, घड़ा । [ पु०-नर्तक, नट ।

लास्य ( न० )-नृत्य, नाच, यात्रा ।

लिकका [ क्षा ] ( स्त्री० )-जूं का अरहा,

लीक, यूका, एक प्रकार का माप,

गवाक्षों में सूर्य की किरण पड़ने

पर जो घूलिकण दिखाई देते

हैं उन की पार मसमा के बरा-

बर की माप ।

लिख् ( ६ प० )-लेखन करना, लिखना ।

लिखन ( न० )-लिखन, लिपि, लेख ।

लिखित ( वि० )-लिखा हुआ, अंकित,

न०-लिखना, लिपि, एस्ताला,

विवाद, एक मुनि का नाम, इक-

रारनागादि पत्र ।

लिग ( न० )-चिन्ह, निशान, पुरुष

का चिन्हविशेष, अनुमानसिद्ध-

कर्ता हेतुविशेष, शिवलिंग, ठपक,

ठ्याकरखथास्त्र में पद के ठीक

होने को जताने वाला एक धर्म ।

लिङ्गी [ न् ] ( वि० )-चिन्ह वाला,



निशान वाला, प्वजी । पु०-  
इस्ती, हाथी ।

लिप(वि०)-लेपनकर्ता, लेपने वाला ।

लिपि-पी ( स्त्री० )-लिखना, लिखे  
हुई अक्षरों का पत्र, किसी भाषा  
की वर्णमाला । [वाला, मुहरिंर ।

लिपिक [जा] र (पु०)-लेखक, लिखने  
लिख (वि०)-भुक्त, भोगा हुआ, मिला

। हुआ, निपा हुआ, लिपटा हुआ ।  
लिप्ता (स्त्री०)-इच्छा, अभिलाषा,  
चाह । [छालची, लोभी ।

लिप्त ( वि० )-लुब्धक, यम्पु, लोलुप,  
लिवि [वि] ( स्त्री० )=लिपि ।

लीढ (वि०)-आस्वादित, चाटा हुआ,  
छूमा हुआ, स्पृष्ट । [आसक्त ।

लीन ( वि० )-लय प्राप्त, लगा हुआ,  
लीला (स्त्री०)-कैलि, क्रीड़ा, खेल,  
विलास ।

लीलावती (स्त्री०)-विलासवती स्त्री,  
भास्कराचार्य की पुत्री, पुराणों  
में एक प्रसिद्ध वैद्या, अंकगणित  
का एक ग्रन्थ जो भास्करा-  
चार्य की पुत्री का बनाया है ।

लुक्तापित (वि०)-अन्तर्हितदेह, लिपा  
हुआ, जिसने शरीर को लिपा  
लिया हा ।

लुट् (१० व०)-चोरी करना, लूटना ।

लुठन ( न० )-लोटना, अमापनादार्थ  
पृथ्वी पर घोड़े का इधर उधर  
लोटना । [चौर ।

लुपट [एटा] क (वि०)-लूटने वाला,  
लुपटक ( वि० )=लुपटक ।

लुप्त ( वि० )-जिसका धन चुराया  
गया हो, नष्ट, लिप गया, टूट गया ।

लुब्ध ( पु० )-व्याध, लम्पट । वि०-  
इच्छाकरने वाला, अभिलाषायुक्त ।

लुब्धक ( पु० )-पूर्ववत् ।

लुलाप ( पु० )-महिष, भैंसा ।

लुलित ( वि० )-भाम्दोलित, कैला  
हुआ, व्याप्त, स्रष्टित, उन्मूलित ।

लू ( ९ व० )-काटना, छेदन करना ।

लूता ( स्त्री० )-मकड़ी, एक प्रकार  
का कीड़ा ।

लून(वि०)-छिन्न, कटा हुआ, काटा गया ।

लून (न०)-पुच्छ, लागूल, पूछ ।

लूनविप ( पु० )-विच्छू आदि वह  
कीटविशेष जिस के पुच्छ में विप  
होता है ।

लेख ( पु० )-देव, देवता, लिखना ।  
वि०-लिखने योग्य, लेख्य ।

लेखक ( पु० )-लिखने वाला पुष्प,  
लेखनकर्ता, लिपिकर, मुहरिंर ।

लेखन ( न० )-पत्रादि पर अक्षरों का  
लिखना, अक्षरविन्यास, भोजपत्र ।

लेखनी (स्त्री०)-फलन, वर्णतूली ।

लेखपत्र (पु०)-इन्द्र, देवप्रेष्ठ, देवराज ।

लेखहार-क (पु०)-पत्र लेजाने वाला,  
विट्ठीरसा, पत्रवाहक ।

लेखा (स्त्री०)-पत्ति, कृतार, लिपि ।

लेख्य(वि०)-लिखने योग्य, लेखनीय ।

लेख्यपत्र ( पु० )-तालवृक्ष । न०-  
लिखने योग्य पत्र, छेटरपेपर ।

लेख्यस्थान (न०)-लिखने की जगह,  
दफ्तरखाना, आफिस ।

लेप ( पु० )—लीपना, लेपन, भोजन,  
खाद्यपदार्थ ।

लेपक ( पु० )—लीपनेवाला, राज, मिस्त्री ।

लेपन ( न० )—लीपना ।

लेप ( पु० )—मेघ से पाचवी राशि,  
सिंह राशि ।

लेलिहान ( पु० )—साप, सर्प, शिव ।  
वि०—बार २ चाटने वाला ।

लेश ( पु० )—अल्प, कण, थोड़ा,  
टुकड़ा । [ आस्वाद, चाटना ।

लेश ( पु० )—भोजन, आहार, भक्षण,

लेहन ( न० )—गिर्रा द्वारा रस का  
ग्रहण, पाटना ।

लेहिन ( पु० )—छुड़ाना, टकण ।

लेह्य ( वि० )—चाटने योग्य । न०—  
अमृत, सुधा ।

लैङ्ग ( न० )—लिङ्गपुराण, , लिङ्गनी  
युक्त । वि०—लिङ्गसम्बन्धी ।

लोक् ( १ भा० )—देखना, अवलोकन  
करना ।

लोक ( पु० )—सुघन, जन, दुनिया ।

लोकचक्षु ( पु० )—मूरग, मूर्ख ।

लोकपाल ( पु० )—नृप राजा, इन्द्रादि  
दिक्पाल का आठ हैं यथा इन्द्र,  
अग्नि, धर्मराज, निशंति, धरुण,  
वायु, पुष्य और शंकर । वि०—  
लोकों की रक्षा करने वाला ।

लोफयान्धय ( पु० )—मूर्ख, मूरज ।

लाकमाता ( स्त्री० )—लक्ष्मी ।

लोहविश्रुति ( स्त्री० )—जनश्रुति,  
अक्षवाद लोकायवाद ।

लोकायत ( न० )—तर्कभेद, चायांशयत ।

लोकायतिक ( पु० )—चार्वाक, नास्तिक,  
ताकिंक ।

लोकाशोक ( पु० )—अपने नाम से  
प्रसिद्ध वह पर्यंत जिसके एकमात्र  
भाग में प्रकाश और दूसरे में  
अधेरा बताया जाता है ।

लोकेश ( पु० )—ब्रह्मा, नृपति, राजा,  
इन्द्र, बुद्धभेद, पारा, लोकपाल ।

लोच ( १ भा० )—देखना, दर्शन करना ।

लोच ( न० )—अश्रु, आसू ।

लोचक ( पु० )—मासपिण्ड, आस की  
पुतली, कज्जल, स्त्रियों के नस्तक  
का आभूषण, नीलवस्त्र, सर्प की  
केंचुली, कदली, बुद्धिशून्य ।

लोचन ( न० )—आँख, नेत्र, चक्षु ।

लोच ( न० )—धीरी का धन, स्तेयद्रव्य

लोच [ ( पु० )—लोच का वृत्त ।

लोप ( पु० )—अभाव, विनाश, छिपना,  
छेदन, वधाकरण में वर्ण का नाश ।  
लोपा-मुद्रा ( स्त्री० )—अनश्वरमुनि की  
भार्या । [ का धन ।

लोप्य ( न० )—छूट का भाग, चोरी

लोभ ( पु० )—दूसरे के द्रव्य की अभि-  
लाषा, लालच, लृप्ता ।

लोभी [ ( वि० )—लोभयुक्त, लालची ।

लोभ्य ( पु० )—मूक, मुद्ग । वि० लोभनीय

लोभ [ ( न० )—शरीरोत्पन्न केय,  
पाल, रोम ।

लामपाद ( पु० )—मङ्ग देश का एक  
राजा जो शरपण्डित मुनि का  
प्रवशुर था ।

लोमय ( पु० )—पुनिविधेय । वि०-

बहुत शालीं वाला ।

लोमहर्षण (न०)-रोमाञ्च, रोनों का  
बड़ा होना । पु०-ठ्यासशिष्य

मृत जो कि बड़ा पीरानिक था ।

लोह(वि०)-चक्रवर्ण, साकाल, छालची,  
पु०-सामस मनु ।

लोहा(स्त्री०)-चघुठा, ठहरी, जिह्वा ।

लोहप (वि०)-बहुत लोम वाला,  
अतिबुद्धि । [ एकचित्त करना ।

लोष्ट ( १ भा० )-धकड़ा होना,

लोष्ट ( न० )-लोहमल । पु०-मिट्टी  
का ढंढा, सुतलपट ।

लोष्टन-सेदन (पु०)-ढेला तोड़ने का  
साधन, मुद्गर ।

लोह (नस्त्री०)-लोहा, धातुविशेष ।  
न०-अगुरुवन्दन ।

लोहकार (पु०)-लुहार ।

लोहकिह(न०)-लोहे का मल, लोहमल

लोहद्राघी [न] (पु०)-सहागा, टंकण ।

लोहवर (न०)-स्वर्ण, सीता ।

लोहित ( न० )-कुंकुम, छालचन्दन,  
सप्राप्त, सरोवर, जोती, सधिर,  
पतङ्ग । पु०-नदविशेष, लीमगह,  
लाल वर्ण, मत्स्यभेद, मृगविशेष,  
साँप, एक पर्वत । वि०-छालवर्ण  
वाला ।

लोहिताक्ष ( पु० )-विष्णु, कोकिल ।  
वि०-छाल नेत्र वाला । [का वृत्त ।

लोहिताङ्ग ( पु० )-नक्षत्रग्रह, कवीडे  
लोहिनी (स्त्री०)-रक्तवर्ण की स्त्री ।

लौकायतिक ( पु० )-वार्त्तिक शास्त्र  
का जानने वा पढ़ने वाला पुरुष,

तार्किकविशेष ।

लौकिक ( वि० )-लोकप्रसिद्ध, लोक  
में मशहूर, लोकज्यवहार में सिद्ध ।

लौकिकाग्नि ( पु० )-असत्कृतार्त्तिक,  
विधिपूर्वक संस्कार न किया  
हुआ अग्नि ।

लौह ( पु० )-लोहा, धातुविशेष ।

लौहज (न०)-मगडूर, लोहे का मल ।

लौहमाषड ( पु० )-लोहे का पात्र,  
इनामदस्ता । [ यना खूँटा ।

लौहशङ्कु ( पु० )-नरलभेद, लोहे का  
लोहिरय ( पु० )-ब्रह्मपुत्र नामक नद

विशेष, समुद्र । न०-रक्तवर्ण ।

ल्यी-ल्यी ( १ प० )-मिलना, भाँटि-  
गन करना ।

ल्यी(१प०)-जाना, पनन करना, प्राप्ति ।

व

व ( पु० )-पवन, वायु, वरुण, वल-  
वान्, मन्त्रणा, वलाह, वमहाना,  
वज्र, कल्याण, व्यापु, निपाच-  
स्यान, वरुण का घर, वन्दन ।  
न०-वरुणशील, प्रचेता । अ०-  
सादृश्य अर्थ का बोधक ।

वश (पु०)-पुत्र पीत्र आदि सन्तति-  
समुद्भूत, अन्यथाय, गोत्र, वृण-  
विशेष, घास, पीठ का हिस्सा,  
वाद्यविशेष, इन्तु, सालयुक्त ।

वज्र ( पु० )-बासों से उत्पन्न हुआ  
यय के आकार का एक पदार्थ,  
वेणुत्रय, बासकाजकुशा, वि०-श्रेष्ठ

कुल में उत्पन्न हुआ ।

वंशशर्करा ( स्त्री० )-वंशलोचन ।

वंशस्तनित-स्वविल (न०)-१२ अक्षर  
के पाद वाला एक छन्दोविशेष ।

वंशाघ ( न० )-वंश का अक्षर, वंश-  
मूल, वंश का पूर्वज ।

वशानुचरित ( न० )-वंश के चरित्रों  
का वर्णन जो पुराण के पञ्च लक्ष-  
णान्तर्गत है ।

वशी ( स्त्री० )-मुरली नामक वाजा  
विशेष ।

वशीधर (पु०)-श्रीकृष्ण का घोषक ।

वश्य(वि०)-श्रेष्ठकुलोत्पन्न, खानदानी  
वक् ( १ आ० )-टेढ़ा होना, कुटिल  
होना ।

वक ( पु० )-वगुला, पुष्पो वाला वृक्ष  
विशेष, कुवेर, एक राक्षस जो  
भीमसेन के द्वारा मारा गया था,  
दैत्यविशेष जो श्रीकृष्ण जी से  
मारा गया, औषध बनाने का  
यन्त्र विशेष ।

वक्तव्य (वि०)-नीच, हीन, निन्दित,  
कुरिस्त, वचनार्थ, कहनेलायक ।

वक्ता [ वृ ] (वि०)-उपित और बहुत  
कहने वाला, धार्मी, बहुभाषी,  
बोलने वाला ।

वक्त्र (न०)-मुख, चदन, मुख ।

वक्त्राधी [ वृ ] (पु०)-जम्बीर, नींदू ।

वि०-मुख की शुद्ध करने वाला  
ताम्रपुलादि ।

वक्त्रासय (पु०)-अपरमपु, षोडश रस

वक्त्र (पु०)-मनेत्रचर, मनस्यपद, शिष्य,

वित्तपापडा, पपंट, त्रिपुर नामक  
दैत्य, टेढ़ी गति वाला ग्रह, तिर्य-  
ग्मन । वि०-तिरछी चाल वाला ।

वक्रिम (न०)-तिरछापन, कीटिल्य ।

वक्रतुरा (पु०)-गणेश, शुरुपत्नी, तोता ।

वक्रोक्ति(स्त्री०)-कुटिलोक्ति, फाकूक्ति,  
टेढ़ावचन, शठदालकारभेद ।

वक्ष् ( १ प० )-क्रोध करना, गुस्सा  
करना ।

वक्ष् [ वृ ] (न०)-छाती, वृद्ध, कण्ठ  
से नीचे का भाग ।

वक्षोज (न०)-स्तन, कुशा, विस्तार ।

वक्षोवह ( पु० )-पूर्ववत् ।

वक्ष्यमाण ( वि० )-भविष्यत्काल में  
कथनीय विषय ।

वक्ष् (१प०)-जाना, गतन करना ।

वगला-मुखी ( स्त्री० )-दूध गहा-  
विद्याओं के अन्तर्गत एक देवी-  
विशेष ।

वगाह (पु०)-स्नान, गहाना, प्रवगाह

वक्ष् ( १ आ० )-गमन करना, निन्दित  
करना, शीघ्रता से जाना, आरम्भ  
करना ।

वक्ष् ( पु० )-नदी का टेढ़ापन, नदी-  
यक्र ।

वक्षिल ( पु० )-काटा, फण्टक ।

वक्ष् (न०)-धातुविशेष, राग । पु०-  
रत्नाकर में लेकर प्राप्तपुत्र तक  
वाग्देश, चन्द्रवशीय एक राजा ।

वक्ष्ज ( न० )-मिन्दूर । वि०-वक्ष-  
देश में उत्पन्न हुआ ।

वंगशुल्भज ( न० )--राग और तावे  
से मिश्रित धातु, कासी ।

वक्ष ( २ प० )--बोलना, कथन करना ।

वक्षः [ स् ] ( न० )--वाक्य, कथन, फिररा ।

वक्षु ( पु० )--ब्राह्मण । वि०--वाव-  
हूक, अतिशयवक्ता ।

वक्षन ( न० )--वाक्य, कथन, सौंठ, व्या-  
करण में एकत्वादि सख्या के अर्थ  
का द्योतक सुप्तिहात्मकप्रत्यय ।

वक्षनीय ( वि० )--कहने योग्य, कथ-  
नीय, निन्दार के योग्य, लोका-  
पवाद । [ लोका निन्दा ।

वक्षनीयता ( स्त्री० )--लोकापवाद,

वक्षनेस्थित ( वि० )--वक्षन का पालन  
करने वाला, बशीभूत, आज्ञानुवर्ती ।

वक्षनोपक्रम ( पु० )--वाक्यारम्भ, उप-  
न्यास, कहने की शुरुवात ।

वक्षसापत्ति ( पु० )--बृहस्पति, देवगुरु ।

वक्षस्कर ( वि० )--वक्षनेस्थित ।

वक्ष् ( १ प० )--गमन करना, जाना ।

वक्ष ( अस्त्री० )--इन्द्र का अस्त्र-  
विशेष, हीरा, एक योग । न०--  
बालक, लीह । पु०--इवेतकुश,  
श्रीकृष्ण का पौत्र, एक नृप ।

वक्षदन्त ( पु० )--शूकर, भृषङ्ग, भृषा ।

वक्षधर ( पु० )--इन्द्र, देवराज ।

वक्षनिर्घोष ( पु० )--वक्ष का शब्द,  
गर्जन ।

वक्षपाणि ( पु० )--इन्द्र, ब्राह्मण ।

वक्षमय ( वि० )--बहुत कठिन, वक्ष  
स्वरूप । [ वि०--वक्षयुक्त ।

वक्षी [ न ] ( पु० )--इन्द्र, बुद्धदेव ।

वक्षक ( पु० )--श्याल, गीदह । वि०--  
ठग, खल, धूर्त, कपटी ।

वक्षुन ( न० )--ठगना, प्रतारण, किसी  
वस्तु को प्रकारान्तर से वर्णन  
कर मोहोत्पन्न करना ।

वक्षुना ( स्त्री० )--पूर्ववत् ।

वक्षित ( वि० )--ठगा हुआ, प्रतारित ।

वक्षुल ( पु० )--अशोक का वृक्ष,  
तिनिश नामक पेड़, कुमुदवृक्ष,  
पक्षिविशेष, बेंत का वृक्ष । वि०--  
तिरछा, बक, टेढ़ा ।

वक्षुला ( स्त्री० )--यहुदुग्धा गो ।

वक्ष् ( १ प० )--धीरी करना, वर्णन करना,  
कहना । १० व०--बाटना, घेरना ।

वक्ष ( पु० )--यह का वृक्ष, सन की  
बनी हुई रस्सी, तात ।

वक्षक ( पु० )--बहा, विष्टकविशेष ।

वक्षु ( पु० )--बालक, शिशु, माणवक,  
ब्रह्मचारी ।

वक्षु ( पु० )--बालक, ब्रह्मचारी,  
भैरवविशेष, भैरो ।

वक्षर ( पु० )--मूर्ख, बक, टेढ़ा, ब्राह्मण  
के वैश्यकन्या से उत्पन्न पुत्र,  
शब्दकार । वि०--सन्द, शठ ।

वक्ष् ( १० व० )--बाटना, हिस्सा करना ।  
१ प०--छपेटना, घेरा देना ।

वक्षि-भी ( स्त्री० )--उज्जा, यह की  
चोटी, महल के शिखर का गूह ।

वक्ष ( वि० )--बहा, बृहत्, श्रेष्ठ, उत्तम ।

वक्षट ( पु० )--भाग, हिस्सा, अविव-  
हित पुरुष ।

वक्षटक ( पु० )--भाग, हिस्सा । वि०--

विभाग करने वाला, याटने वाला ।

वत् (अ०)-धरावरी, तुल्यता, सादृश्य ।

वत् ( अ० )-अनुकम्पा, दया, खेद, हर्ष, सन्तोष, आसन्नपण, विस्मय ।

वत्स ( पु० )-कर्णभूषण, कर्णजूल, शेर, शिर का गहना ।

वत्तिका ( स्त्री० )-वह स्त्री जिस की सन्तान दूर हो गई हो, सन्तान-रहिता नारी ।

वत्स ( न० )-वत्सःस्थल, छाती ।

पु०-गौ का बकड़ा, देशभेद, दियो-दास का पुत्रविशेष ।

वत्सतर ( पु० )-बोटा बछड़ा, सुद्र-वत्स, दम्प बैल ।

वत्सतरी (स्त्री०)-धूपोत्सर्ग में दानार्थ तीन वर्ष की परिकल्पित अवस्था वाली बछिया, छोटी बछिया ।

वत्सनाभ ( पु० )-एक प्रकार का रसावर विष जो पशु के बकरी की मारता है ।

वत्सपाल ( पु० )-श्रीकृष्ण । वि०-वत्सों [बछड़ों] का पालक ।

वत्सर ( पु० )-वर्ष, सवत्, साल ।

वत्सराज ( पु० )-चन्द्रवंशीय एक राजा ।

वत्सरान्तक(पु०)-वर्ष का अन्त करने वाला फाल्गुन का मास ।

वत्सल(वि०)-स्निग्ध, स्नेहयुक्त, प्रेम-वाला । पु०-शृंगारादि दश रसों में से एक, कांतिक्षेप का अनुचर-विशेष ।

वद् ( १ व० )-माचमा, नृत्य करना ।

१ प०-बोलना, कथन करना ।

वद(वि०)-बोलने वाला, वक्ता ।

वदन्(न०)-मुख, मुह, कथन, कहना ।

वदन्ति-न्ती ( स्त्री० )-कथा, गाथा, कहानी ।

वद [दा] न्य ( वि० )-बहुत दान देने वाला, बहुप्रद, बड़ा दानी, बहु-दानशील ।

वदाम ( न० )-अपने नाम से प्रसिद्ध कलविशेष, वादान । [बहुवक्ता ।

वदावद ( वि० )-बहुत बोलने वाला,

वध(पु०)-हिंसा, मारना, कत्ल करना, दूसरे के प्राणविधोयानुकूल भीष कर्म करना । [वधकर्त्ता ।

वधक(पु०)-हिंसा करने वाला पुरुष,

वधस्थान ( न० )-मारने की जगह, वधभूमि, मूचरखाना ।

वध्य(वि०)-मारने योग्य, बघाई ।

वध्यपाल(पु०)-कैदियो की रक्षा करने वाला पुरुष, जेलर ।

यन्(= आ०)-मागना, याचना करना ।

१ प०-सेवा करना ।

यन(न०)-वह स्थान जो बहुतसे वृत्तों युक्त हो, वगीचा, कानन, विविन, जल, निवास, घर, ऊरना, किरण ।

यनकोलि ( स्त्री० )-यन की घेरी ।

यनगोचर (पु०)-व्याघ्र, भील, नारा-यण, विष्णु, जलचर, कानन में विचरने वाला पुरुष ।

यनपन्दन ( न० )-अगुरु, देवदारु ।

यनज ( न० )-अमृज, कमल, पद्म ।

पु०-मागरमोचा, हस्ती । वि०-

यन में उत्पन्न होने वाला ।

वनप्रिय ( पु० )—कोकिल, कोयल ।  
वनमल्लिका ( स्त्री० )—वन की मल्लरी,  
दश, हाँस ।

वनमाला ( स्त्री० )—बहू माला जो  
पुटगो तक लम्बी हो, श्रुत के सूत्र  
प्रकार के पुष्पों से बनाई और  
जिस के बीच में मोटा कदम्ब  
का पुरुष हो; श्रीरूप की माला,  
वनपुष्पनिर्मित मालाविशेष ।

वनमाली [ नृ ] ( पु० )—श्रीरूप, विष्णु ।

वनमुक् [ च् ] ( पु० )—मेघ, बादल ।

वनराज ( पु० )—सिंह, शेर ।

वनलक्ष्मी ( स्त्री० )—कदली, केला ।

वनरूप ( पु० )—वानप्रस्थ, वृत्तीयाश्रमी,  
मग । वि०—वन में रहने वाला ।

वनरूपि ( पु० )—बहु वृक्ष जिस पर  
बिना पुष्प के फल आते हैं जैसे  
अरवृक्ष, पीपल आदि, वटवृक्ष,  
धृतपृष्ठ का पुत्रविशेष ।

वनायु ( पु० )—देशविशेष, अरब देश  
जहाँ के अरव वृक्ष माने जाते हैं ।

वनायुज ( पु० )—वनायु देश में उत्पन्न  
हुआ घोड़ा, अरबी घोड़ा ।

वनि ( पु० )—अग्नि, आग ।

वनिज ( वि० )—याचना किया हुआ,  
याचित, धेयित, प्रार्थित ।

वनिता ( स्त्री० )—स्त्री, योपित,  
औरत, प्रेन करने वाली स्त्री,  
जातरागा स्त्री, स्त्रीमात्र ।

वनी ( स्त्री० )—वन, विपिन, जंगल ।

वनी [ नृ ] ( पु० )—वानप्रस्थ ।

वनीक ( वि० )—याचक, मागने वाला ।

[ वनीयक का भी यही अर्थ है ] ।

वनेचर ( वि० )—वन में विचरने वाला,  
अरव्यचारी ।

वनीका: [ स् ] ( पु० )—वानर, वन्दर ।

वच् ( १ प० )—छान करना, टगना,  
प्रतारण ।

वन्दन ( न० )—स्तुति, प्रशंसा, तारीफ़,  
प्रणाम, विषयविशेष, रसोभेद,  
अक्षुर, [ वन्दना भी इसी अर्थ में  
प्रयुक्त होता है ] ।

वन्दनी ( स्त्री० )—स्तुति, नति, प्रणाम,  
स्त्रियों के नस्नक का भूषण-  
विशेष जिसे वन्दी कहते हैं ।

वन्दनीय ( वि० )—स्तुति के योग्य,  
प्रणामार्ह, तारीफ़ के लायक । पु०—  
पीतवर्ण का भंगरा ।

वन्दाह ( वि० )—प्रणाम करने के स्व-  
भाव वाला, अभिवादनशील ।  
न०—स्तुति ।

वन्दिन्दी ( स्त्री० )—कैदी, कारागार  
में बन्धा हुआ मनुष्य गवादि,  
नमस्कार, स्तुति । पु०—भाट ।

वन्दिग्राह ( पु० )—अग्नि, गस्त्र और  
देवता के स्थापन का भेदक, नानी  
और, दकैत । [ भाट, स्तुतिपाठक ।

वन्दिपाठ ( पु० )—प्रशंसा करने वाला,  
वन्दी [ नृ ] ( पु० )—पूर्ववत् ।

वन्द्य ( वि० )—नमस्कार के योग्य,  
वन्दना करने लायक, स्तुत्य ।

वन्य ( न० )—दाहर्षी । पु०—वाराही  
कन्द । वि०—वन में उत्पन्न होने  
वाला ।

वन्धा (स्त्री०)—वनसमूह, जलसमुदाय,  
मुद्रपर्णी, भस्म-धः ।

वप् (१३०)—बुनना, बीज बोना, मूटना ।

वपन (न०)—क्षौर कराना, केशमुखादन,  
यस्त्रादि का बुनना, बीज बोना ।

वपनी ( स्त्री० )—नापितशाला, गार्ह  
का घर, कोली का घर ।

वप् [ व ] (न०)—शरीर, देह, जिस्म,  
अच्छा आकार, अश । स्त्री०—

दलवन्धा और धर्मराज की पत्नी ।

वप्ता [ व० ] ( पु० )—पिता, जनक,  
नापित । वि०—बीज बोने वाला,  
कृषक, किसान ।

वप् (न०)—दुर्ग का भगरादि, खाई से  
निकाला हुआ मिट्टी का ढेर, क्षेत्र,  
खेत, तट, धूलि, सीसा । पु०—पिता,  
जनक, प्रजापति, परकोटा ।

वध ( पु० )—उपोतिपशास्त्रोक्त करण-  
विशेष ।

वध् (१ प०)—गमन करना, जाना ।

वध् (अ०)—शिवपूजा के अन्त में कपील  
वाद्यविशेष, शिव का प्रजवस्वरूप ।

वध् (१ प०)—वसन करना, कै करना,  
ऊपर की सज्जना ।

वध् (पु०)—उद्दि, रह, कै ।

वधन (न०)—पुर्ववत् ।

वधित (वि०)—घान्त, कै किया हुआ ।

न०—वसनकृत वस्तु ।

वध् (१ आ०)—गति, गमन, जाना ।

वध [ व् ] (न०)—वाल्वादि अयस्था,  
भगर, पत्नी, जानवर ।

वध [ व ] वध ( वि० )—युवा, तरुण,

जवान । पु०—मित्र, दोस्त ।

वध [ व ] वधा (स्त्री०)—पथती स्त्री,  
जवान औरत, सखी, छोटी बला-  
यची, गिलोय ।

वधस्म (वि०)—बराबर उगार का, तुल्य-  
वधस्क, स्निग्ध, मित्र ।

वधस्था ( स्त्री० )—सनान समर की  
औरत, सखी, सहेली ।

वधुन (न०)—ज्ञान, विद्या, इत्थ । पु०—  
देवस्थान, कथाश्रव का पुत्रविशेष ।

पु०—नियम, तरीका ।

वध् (१० उ०)—इच्छा करना, चाहना ।

वध ( न० )—केशर, कुठ म्रिय, त्वचा,  
जार्द्रक, इच्छा, मागना, भाव-  
रण, घेरा । अ०—मनाकर्मिय,  
बोहा प्यारा ।

वध ( पु० )—पति, जामाता, मित्र,  
गुगुल, प्रार्थनाविशेष, देवता से  
वरणीय अभिलषित वस्तु, देव-  
भावित पदार्थ, निग्रह ।

वधट ( पु० )—हृष नागक पत्नी, कीट-  
विशेष न०—कुन्दपुष्प ।

वधटा (स्त्री०)—हृष की भार्या, हस्तिनी ।

वधन ( न० )—कन्या आदि का पहन,  
कन्या देने के लिये जानातों की  
प्रार्थनाविशेष । पु०—परकोटा,  
कट, वरने का वृत्त ।

वधजा (स्त्री०)—हस्ती की चर्मनिर्मित  
कक्षरज्जु, हस्ती की पेट्टी, तमना ।

वधद ( वि० )—वर देने वाला, अभीष्ट  
प्रद, वरदाता ।

वधदायतुर्षी ( स्त्री० )—नाचगुणपत



की चतुर्थी जिस में गौरी का  
पूजन किया जाता है ।  
वरहचि ( पु० )—अपने नाम से प्रसिद्ध  
एक कवि, विक्रमादित्यराज की  
सभा के नवरत्नों में से एक ।  
वरचर्णिनी ( स्त्री० )—अत्युत्तमा स्त्री,  
श्रेष्ठ नारी, हस्ती, छांसा, रोचना,  
गौरी, पतिव्रता स्त्री ।  
वराह ( पु० )—शिव, महादेव । न०—  
बुद्ध । वि०—शेषमीय, छोटा,  
अधर ।  
वराह ( न० )—मस्तक, गुह्य, गुदा,  
योनि । पु०—विष्णु, हस्ती । वि०—  
श्रेष्ठ अङ्ग वाला ।  
वराहना ( स्त्री० )—अत्युत्तम अङ्गयुक्ता  
स्त्री, सुन्दर नारी ।  
वराह-क ( पु० )—कौड़ी, कपदक,  
छोटी कौड़ी, रस्सी, रज्जु ।  
वराह ( पु० )—इन्द्र, वरुणवृक्ष ।  
वराहचि ( स्त्री० )—काशी, बनारस ।  
वराहोह ( पु० )—हस्त्यारोह, हस्ती ।  
वराहोहा ( स्त्री० )—वत्तमाङ्गना,  
प्रशस्तनितम्बवती नारी ।  
वराहि ( पु० )—स्थूलवस्त्र, मोटा कपड़ा ।  
वराह ( पु० )—शूकर, सूअर, विष्णु  
का अवतारविशेष, एक पर्वत,  
शिशुमार, नागरकोषा ।  
वरिचरित ( वि० )—उपासना किया  
हुआ, उपासित परिचरित ।  
वरिवस्त्रा ( स्त्री० )—शुश्रूषा, सेवा,  
पूजा, अर्चना ।  
वरिप ( न० )—वर्ष, संवत्, साल, अब्द ।

वरिपा ( स्त्री० )—वृष्टि, वर्षा ।  
वरिष्ठ ( वि० )—बहुत बड़ा, अतिप्रिय,  
अतिश्रेष्ठ । न०—ताम्र, तांबा ।  
वरीयान् [ यस् ] ( वि० )—बहुत श्रेष्ठ,  
अत्युत्तम, अतितरुण । पु—विष्णु-  
म्भादि योगों में से १६ वां योग ।  
वरिष्ठ ( वि० )—एक प्रकार की स्लेख  
जाति ।  
वरुण ( पु० )—जल का अधिष्ठाता  
देवविशेष, पश्चिम दिशा का  
स्वामी, जल, सूर्य ।  
वरुणानी ( स्त्री० )—वरुण की पत्नी ।  
वरुण ( न० )—कवच, तनुप्राण, निरह,  
गुह्य, घर, सेना । पु०—रथ की  
रक्षा का स्थानविशेष, रथगुरि ।  
वरुणिनी ( स्त्री० )—सेना, फौज ।  
वरिण ( वि० )—पूजनीय, मार्चना  
करने योग्य, प्रधान । न०—केसर ।  
पु०—विष्णुगणों में से एक ।  
वरुण ( पु० )—बकरा, भेयशिवक, उगम ।  
वर्ग ( पु० )—स्वजातीयसमूह, समान-  
धर्म वाले प्राणी या अप्राणिर्गों  
का गिरोह यथा—नमुष्यवर्ग, अक्ष-  
वर्ग जैसे कर्षण, चवर्ग आदि, प्रन्थ-  
परिच्छेद यथा—स्वर्गवर्ग, गणित  
में समान दो अङ्कों का परस्पर  
गुणन करना यथा—२ की संख्या  
का ४ और ३ का ९ इत्यादि स्थान ।  
वर्गोत्तम ( पु० )—क्षेत्रादि छः वर्गों में  
उत्तम, उद्योतिषशास्त्रोक्त तीस  
अंश वाली राशि का एवां अंश  
अर्थात् चर राशिपों के पहले,

स्वरो के पांचवें और द्विस्वभाव वाली राशियों के नवमांश में घर्णोत्तम कहलाता है । [ होना ।  
 घर्च् ( १ आ० )-घमकना, प्रकाशित  
 वचर्च्:[ स् ] (न०)-रूप, बिछा, मल,  
 तेज, शुद्ध, धीर्य ।  
 वचर्चस्क(अस्त्री०)-विष्टा, मल ।  
 वचर्चस्वी [न्] (पु०)-तेजस्वी मनुष्य,  
 तेजोयुक्त पुरुष ।  
 घर्जन ( न० )-त्याग, छोड़ना, हिंसा,  
 मारण, मारना ।  
 घर्जिजंत(वि०)-त्यक्त, त्यागा हुआ ।  
 घर्ण ( १० उ० )-स्तुति करना, प्रशंसा  
 करना, घमकना, दीप्त होना,  
 चद्योग करना, कथन करना,  
 ध्यान करना ।  
 घर्ण(न०)-कुंकुम, केशर । पु०-ब्राह्मण  
 क्षत्रियादि जाति। रफेद आदि  
 रूप, अकारादि अक्षर, यश,  
 चन्दनादि लेपन द्रव्य, वृत्तविशेष,  
 स्वर्ण, जंगलाग, गाने का सिल-  
 सिला, प्रशंसा, स्तुतिभेद ।  
 घर्णक ( न० )-हरताल, मलने योग्य  
 पिंसा हुआ चन्दनादि द्रव्य ।  
 पु०-चन्दन, विलेपन, चारण,  
 मयङल । [ रुपाही का पात्र ।  
 घर्णकूपिका(स्त्री०)-मधीपात्र, दयात,  
 घर्णतूलि-ली (स्त्री०)-छेखनी, फलम ।  
 घर्णधर्म (अस्त्री०)-ब्राह्मण, क्षत्रिय,  
 वैश्य और शूद्रों के कर्त्तव्यकर्म ।  
 घर्णन (न०)-स्तवन, स्तुति, कथन,  
 गुणरीति ।

घर्णमाता (स्त्री०)-छेखनी, फलम ।  
 घर्णमाला (स्त्री०)-अकारादि अक्षरों  
 का समूह, अक्षरश्रणी ।  
 घर्णसङ्कर (पु०)-घर्ण का मेल अर्थात्  
 दोगलापन, मिश्रितजाति, उत्तम  
 घर्ण के पुरुष से हीनवर्त्ता भार्या  
 में वा नीच वष पुरुष के धीरे से  
 उत्तम वर्ण की स्त्री में उत्पन्न  
 पुत्रादि ।  
 घर्णित (वि०)-स्तुत, प्रशंसित, तारीफ  
 किया हुआ, कथित ।  
 घर्णी [न्] ( पुं० )-ब्रह्मचारी, कुमार,  
 ब्राह्मणादि जाति, छेख, चित्र-  
 कर, चित्र खींचने वाला पुरुष ।  
 वर्त्तक (पु०)-पक्षिविशेष, वृत्तक ।  
 वर्त्तन (न०)-आजीविका, वृत्ति, रोजी,  
 दयापन, जीवनीपाम । वि०-  
 जीविकायुक्त रहनेवाला । पु०-  
 काक, कौआ ।  
 वर्त्तमान ( पु० )-वह समय जिसमें  
 आरब्ध कार्य की परिसमाप्ति न  
 हो, मौजूदाजमाना, गुजरता हुआ  
 समय, हाल, अद्यतनकाल ।  
 वर्त्ति (स्त्री०)-दीपक की धत्ती, दीप-  
 दशा, छेख, नेत्राङ्गन, चरीरलेपन ।  
 वर्त्तिष्णु ( वि० )-वर्त्तनशील, रहने  
 वाला, होने वाला ।  
 वर्त्तुल ( वि० )-गोलाकार पदार्थ ।  
 न०-गुल्लन, गोलजम । पु०-कलाप-  
 विशेष ।  
 वर्त्तमं [न्] (न०)-पच्चा, नाम, रास्ता,  
 नेत्र के चलक, नेत्रच्छद ।

वर्द्ध (१०३०)-छेदन करना, काटना ।  
 वर्द्धक ( वु० )-ब्राह्मजयष्टि, भारंगी ।  
 वि०-पूर्ण करने वाला, काटने वाला, छेदक ।  
 वर्द्धकी [ नृ ] ( पु० )-वर्द्ध, स्वप्ता, । वर्षणसङ्करजातिविशेष ।  
 वर्द्धन ( न० )-छेदन, काटना, पूरा करना । वि०-वर्द्धि करने वाला, । वर्द्धयुक्त ।  
 वर्द्धमान (पु०)-एरवह का वृक्ष । वि०- बड़ा हुआ, वर्द्धिशील, मिट्टी का पात्रविशेष, कुण्डा, देशभेद, धनिकों का वर्द्धविशेष ।  
 वर्द्धर्ध (न०)-चमड़ा, चर्म, चाम ।  
 वर्द्धर्धौ (स्त्री०)-चमड़े की रस्सी, तसमा, वस्त्र [ नृ ] (न०)-कवच, जिरह धारण ।  
 वस्त्रा [ नृ ] ( पु० )-लत्रियों की वह, उपाधि जो नाम के जागे लगाई जाती है, लत्रियपहुति ।  
 वस्त्रिन्त ( वि० )-कवचधारी, भूतसन्नाह, कवच धारण किये हुए ।  
 वर्द्य (वि०)-प्रधात, मुख्य, श्रेष्ठ । पु०-कामदेव ।  
 वर्द्यणा (स्त्री०)-नीले रंग की नवखी, नीलमलिका, ब्याह नवखी ।  
 वर्द्यर ( न० )-हिंगु, हींग, पीला चन्दन, गन्धरस । पु०-देशविशेष, काल तुलसी का वृक्ष । वि०-पाभर, नीच, मूल ।  
 वर्ष (अस्त्री०)-वृष्टि, वर्षा, जम्बुद्वीप का अथ, सवत, साल, मेघ, प्रभव आदि ६० वर्ष, जम्बुद्वीप ।

वर्षण (न०)-वृष्टि, बरसना ।  
 वर्षणपर्वत (पु०)-वे पर्वत जो वर्षों का विभाग करते हैं जो सात हैं ।  
 यथा-हिमवान्, हिमकूट, निषध, मरु, चैत्र, कर्ण और शृङ्गी ।  
 वर्षव्रिय (पु०)-चातक पत्ती ।  
 वर्षवर (पु०)-नपुंसक, पण्ड, हीकड़ा ।  
 वर्षवृद्धि (पु०)-जन्मदिन, जन्म की तिथि, वर्षगांठ, जन्मतिथि का कृत्य ।  
 वर्षा ( स्त्री० )-अपने नाम से प्रसिद्ध । ऋतु, बरसने का सीसन, वर्षाऋतु ।  
 वर्षाभू (पु०)-भेक, मेंढक ।  
 वर्षाब्दी (स्त्री०)-सेकपत्नी, मेंढकी, पुनर्नवा नामक औषध । [यूदा ।  
 वर्षिष्ठ (वि०)-अतिशय बृद्ध, बहुत वर्षाग्रान् [यस् ] (वि०)-पूर्ववत ।  
 वर्षुक (वि०)-बरसने के समानावधाला, वर्षणशील । [के पक्षर ।  
 वर्षोपल (पु०)-ओला, करवा, वर्षा वस्त्र [ नृ ] (न०)-शरीर, देह, निरम ।  
 वर्द्ध (१०३०)-सारना, हिसार करना ।  
 वर्द्ध (न०)-मोर का पंख, मपरपिच्छ ।  
 व [य] हिंः [स् ] (पु०)-जग्नि, आग, दीप्ति, यज्ञ, कुश ।  
 वर्द्धिण (पु०)-मयूर, मोर ।  
 वर्द्धिमुख (पु०)-देवता, देव । [विशेष ।  
 वर्द्धिपदः [ इ ] (पु० बह्व०)-पितृगण-व [व] हीं [नृ ] (पु०)-मयूर, मोर, प्राधा के गम से उत्पन्न कश्यप का पुत्रविशेष । [ करना ।  
 वर्द्ध ( १ आ० )-दकना, आछादन

बलभि-भी(स्त्री०)=बलभि । १॥

बल्य (अस्त्री०)—ककण, फटक, हस्त  
पाद के कड़े [ यह शब्द उत्तर-  
पदस्थ होने पर 'बलका घेरा' ]  
अर्थ का बोधक होता है, यथा—  
'बल्य' अर्थात् पृथ्वी का घेरा ।  
बलपित ( वि० )—घेरा हुआ, लपेटा  
हुआ, घेरित ।

ब[य] लिभ (न०)=बलिभ

ब[य] एक (न०)—बल्ल, वृत्ति का  
लिलका, नम्र, चक, हीनता, मच्छिप्यो  
की रवचा शलक, खण्ड ।

ब[य] एकल (न०)—बल्लत्यक्, बल्ल ।  
अस्त्री०—दाहलीनी ।

बल्ल (१प०)—जाना, उल्ल कर चलना ।  
बल्लन (न०)—उल्लगमन, उल्ल कर  
चलना । [की रस्सी ।

बल्ला (स्त्री०)—लगाव, अश्व के मुख  
बल्लित (न०)—अश्व की गतिविशेष,  
जाना, अधिक बोलना, बहुभाष्य ।

बल्ल (पु०)—लाग, बकरा । वि०—  
सुन्दर, मनोह । न०—चन्द्रम,  
वन, जगल, अरण्य, पण पैसा ।

ब[य] रनीक (पु०)—कीटनिर्मित  
निहो का टेर, धमई, घामलूर,  
गरनी, बालनीकिमुनि, रोगविशेष ।

बल्ल (पु०)—तीन गुना का परिमाण,  
तीन रत्ती की तील ।

बल्लकी (स्त्री०)—बीदा, धीन, बल्लकी  
नागक वाद्यविशेष ।

बल्लन (पु०)—दधित, मिथ, अध्वत,  
स्वामी, श्रेष्ठ शत्रु ।

बल्लरि-री ( स्त्री० )—मञ्जरी, शता,  
। मेथिका, चित्रमूल । १॥ १॥ १॥

बल्लव (पु०)—गोप, ग्वालिया, भीम-  
सेन का नाम जो कि धिराटनगर  
में गुप्तरूप से रहने के समय  
रक्खा था । वि०—पावक, रसोइया ।

बल्लवी (स्त्री०)—गोपपत्नी, गोपिका ।  
आभीरी ।

बल्लि (स्त्री०)—लता, बेल, पृथ्वी ।

बल्लुर (न०)—कुञ्जस्थान, बेलों से  
आच्छादित वृक्ष, मञ्जरी, क्षेत्र,  
खेत, वन, निर्जलस्थान, नूतन-  
वासयुक्त स्थान ।

बल्लुर (वि०)—सूखा हुआ नास, शूकर-  
नास, कल्लर की जमीन, ज्वर,  
भूमि, वाहन, वनक्षेत्र ।

बल्ल (२ प०)—इच्छा करना, चाहना ।

बल्ल (न०)—प्रभुत्व, अधीन होना,  
पराधीनता, काबू में होना । पु०—  
इच्छा, वेश्यावृक्ष, जन्म ।

बल्लवद (वि०)—अधीन होने के  
वाक्य बोलने वाला, 'मैं आप  
के बल्ल हूँ' ऐसा कहने वाला,  
प्रियवक्ता । गीटा बोलने वाला  
' बल्लभूत । [भीरत ।

बल्ल ( स्त्री० )—बल्ल्या नारी, धातु  
बल्लित्व (न०)—स्वातन्त्र्य, सुदुस्सहारी,  
ऐश्वर्यविशेष । काट प्रकार की

सिद्धियों में से एक ।

बल्लि [सि] छ (पु०)—वापने नाम से  
प्रसिद्ध जिसेन्द्रियों में प्रधान  
एक मुनि, बल्लपत्नी का पति ।

वशी [न] ( वि० )-इन्द्रियों को वश में रखने वाला, जितेन्द्रिय, स्वतन्त्र ।

वशीकरण (न०)-वश करने वाला मन्त्र, औषध वा भणिविशेष; वह मन्त्रादिसापन जिस के द्वारा अवश पुरुषादि वश में किया जा सके।

वश्य ( न० )-लवण, लैंग । वि०-वश में हुआ, वशीभूत ।

वश्या ( स्त्री० )-वशीभूता स्त्री, वश में हुई औरत ।

वषट् ( अ० )-देवता के सहृदय से हविः वा घृत त्याग करने का मन्त्र, देवीहृदय से घृतादि का त्याग ।

वषट्कार ( पु० )-वह यागविशेष जो देवता के सहृदय से किया जाय, देवीहृदयक याग ।

वषट्कृत ( वि० )-वषट् इस मन्त्र से किया हुआ होम, वषट्मन्त्र को सञ्चारण कर अग्नि में होम किया गया [इहय] ।

वस् ( १ प० )-रहना, निवास करना । २ आठ-ढकना, आच्छादन करना।

वसति-ती ( स्त्री० )-वास, रहना, रात्रि, निवेदन, स्थान ।

वसन (न०)-वस्त्र, आच्छादन, कपड़ा, छादन, टकना, निवास ।

वसना, ( स्त्री० )-स्त्री की कमर का गहना, गारीकटिभूषण ।

वसन्त ( पु० )-ऋतुविशेष जो चैत्र और वैशाखमास में होता है,

रागविशेष, शीतला नामक रोग ।

वसन्ततिलक ( न० )-चीदह अक्षर के पाद वाला एक छन्दोविशेष ।

वसन्तदु ( पु० )-कीचल, पैत्रवास, आम्रवृक्ष, हिन्देल । [पंचमी ।

वसन्तपञ्चमी ( स्त्री० )-माघशुक्ल

वसन्तवन्धु-सख ( पु० )-कामदेव, मदन ।

वसन्तोत्सव ( पु० )-होलिकोत्सव ।

वसा ( स्त्री० )-वर्षा, नैद, दिग्गज ।

वसि ( पु० )-कपड़ा, वस्त्र, घर ।

वसित ( वि० )-वसा हुआ, रहने वाला, पहरा हुआ । न०-घर ।

वसिर(न०)-सामुद्र नामक, गजविष्पटी ।

वसि[गि] ष्ट ( पु० )-एक ऋषि का भाग जो मूर्यवंश के पुरोहित से और अनेक वैदिक मंत्रों के द्रष्टा हुए हैं।

वसु ( वि० )-नधुर, शुद्ध । न०-धन, सम्पत्ति, रत्न, स्वर्ण, जल, वस्तु ।

पु०-आठ वैदिक देव, आठकी संख्या, अग्नि, सूर्य, धनुर्लवृक्ष ।

वसुदेव ( पु० )-श्रीकृष्ण का पिता, यदुकुल में उत्पन्न एक क्षत्रिय ।

वसुदेवभू ( पु० )-श्रीकृष्ण ।

वसुधा ( स्त्री० )-पृथ्वी, जमीन, वसुमती ।

वसुन्धरा ( स्त्री० )-पूर्ववत् ।

वसुस्थली ( स्त्री० )-कुपेरपुरी ।

वसुस्थणी ( स्त्री० )-चिरममृता गी, बहुता दिनों की व्याई हुई गी ।

वस्त ( पु० )-छाया, बकरा ।

वस्ति ( पु० )-वास रहना, नाभि के नीचे मूत्राशय का स्थान ।

वस्तु ( न० )-द्रव्य, चीज, पदार्थ ।

वस्तुतः [स्] ( अ० )-असंलियत में,  
टीक २, वास्तविक ।

वस्त्य ( न० )-घर, गृह, भवन ।  
वि०-निवास के लिये अच्छा ।

वस्त्र ( न० )-आच्छादन, कपड़ा ।

वस्त्रप्रणि ( पु० )-कपड़े की भाँड,  
नीची, धोती की आटी ।

वस्त्र ( न० )-वेतन, मजदूरी, द्रव्य ।  
पु०-सूत्र, नीत, मोल ।

वह् ( १४० )-पहुँचाना, लेजाना, डोना ।

वह ( पु० )-घैल के कंधे की जगह,  
घोड़ा, अश्व, यान, सवारी,  
रास्ता, गद्, चारा, सहारा ।

वहत ( पु० )-गुमाफिर, घैल ।

वहति ( पु० )-घैल, वायु, मित्र, मंत्री ।

वहती-वहा ( स्त्री० )-नदी, जलधारा ।

वहन ( न० )-लेजाना, पहुँचाना,  
सहारा देना, महना, गाड़ी, नीका ।

वहिन ( वि० )-लेजाया हुआ, घात,  
प्राप्त ।

वहिन-नी=देहा, डिहती, जहाज ।

वह्य ( न० )-गाड़ी, यान । [विकल्प ।

वा ( अ० )-यद्वा, अथवा, जी,

वा ( २५० )-यहना, फूँटना, जाना,  
भारना, भूचना । ४५०-भूचना,  
सुक्तता । १०४०-जाना, सुग  
होना, पुनना ।

वाक् ( पु० )-वाणी, वचन । [वाक्पट्ट ।

वाक्पट्ट ( पु० )-कण्ठ, घाँटी की

वाक्पट्ट ( पु० )-साला, पत्नी वा भाई ।

वाक्पट्ट ( वि० )-वाक्पट्टी, वाक्पट्ट ।

वाक्पट्ट ( न० )-मिथ्या उत्तर, ऐंसे  
शब्दों का प्रयोग जो द्वयर्थक हो ।

वाक्पट्ट ( वि० )-वात करने में चतुर ।

वाक्प्रलाप ( पु० )-बहुत बोलना,  
वाग्मिता ।

वाक्प ( न० )-वाणी, शब्द, फ़िकरा,  
कथन, बोली ।

वाक्यप्रयोग ( पु० )-भाषा का प्रयोग,  
लफ्जों का इस्तेमाल ।

वाक्यपरचना ( स्त्री० )-जुमले में लफ्जों  
की तरतीब देना, कारकों का  
आपस में सम्बन्ध लगाना ।

वाक्यविन्यास ( पु० )-पूर्ययत् ।

वाक्यविशारद ( वि० )-कसीद, वाग्मी ।

वाक्चयन ( पु० )-कम बोलना, मौन-  
चारण ।

वागर ( पु० )-तपस्वी, ज्ञापी, विद्वान्,  
वीर, इरादा, वादवागल, भेदिया ।

वागा ( स्त्री० )-लगान, वागडोर ।

वागारु ( वि० )-वैद्यका, भगवति ।

वागाहन्तर ( पु० )-बहुत कहना,  
कठिन शब्दों का प्रयोग ।

वागीश ( पु० )-वाग्मी, सुयक्ता, बह्वर्षति ।

वागुरा ( स्त्री० )-जाल, पाश ।

वागुरिक ( पु० )-वधिक, जिकारी ।

वाग्जाल ( न० )-बहुत घातें करना,  
निठन्ली घातें ।

वाग्दन्त्र ( पु० )-वागाहन्तर । [भा ।

वाग्दण्ड ( पु० )-लानत, लालात, भर्ष-

वाग्दत्त ( वि० )-नादा किया, प्रतिज्ञात

वाग्दत्ता ( स्त्री० )-देनी कन्या जिसकी

सगाई हो गई हो ।

वाग्दान ( न० )-सगाई, सगमी ।

वाग्देवी(स्त्री०)-सरस्वती, शारदा ।  
 वाग् ( वि० )-कगो, घोड़ा योजने ।  
 वाला । पु०-विनय, छज्जा ।  
 वाग्पुह ( न० )-वाती की सहाई,  
 वितरहावाद ।  
 वाग्बिदग्ध ( वि० )-बोलने में बतुर ।  
 वाग्बिलोच ( पु० )-नधुर वा सुन्दर  
 वाणी ।  
 वाग्नी [ न ] ( वि० )-वाचाल, फसीह,  
 बहुत बातूनी, कपकप, बुद्धि ।  
 पु०-छिन्नरार, बृहस्पति ।  
 वाङ्ग ( पु० )-समुद्र, सागर ।  
 वाङ्ग ( १ प० )-वाहना, इच्छा करना ।  
 वाङ्गमय ( वि० )-शब्दनय, बातूनी,  
 कपकप ।  
 वाङ्गमात्र ( न० )-कथनमात्र ।  
 वाङ्गमुक्त ( न० )-दिवाघा, प्रस्तावना ।  
 वाग् [ क ] ( स्त्री० )-वाणी, शब्द,  
 बोली, आवरण, घातपीत, साया,  
 कथन, सरस्वती ।  
 वाक्क ( वि० )-घोड़ने वाला, कहने  
 वाला, प्रकाशक, अभिप्रेतक ।  
 पु०-पाठक, दूत ।  
 वाक्कन ( न० )-पढ़ना, प्रोपणा ।  
 वाक्कनिक ( वि० )-वाणी से कहा  
 हुआ, शाब्दिक ।  
 वाक्कपति ( पु० )-वाणी का स्वामी  
 अर्थात् बृहस्पति । [ वाग्मिता ।  
 वाक्कपत्य ( न० )-पाराप्रवादयकृता,  
 वाक्का ( स्त्री० )-वाणी, कथा, कथन ।  
 वाक्काट ( वि० )-बातूनी, नृपा वात  
 करने वाला ।

वाचाल ( वि० )-पूर्वदत्त ।  
 वाचिक ( वि० )-वाणीसम्बन्धी,  
 शाब्दिक । न०-ज्ञानी गुण ।  
 वाच्य ( वि० )-कहने योग्य, कुत्सित, हीन  
 विशेषण । न०-दूषण, प्रतिपादन ।  
 वाक्कवज्र ( न० )-कठोरवाणी, शत्रु  
 गुरुगु । [ वायं ।  
 वाक्कवार्य ( पु० )-वाहिरामायने, प्रकट  
 वाज ( पु० )-वाजू, पर, युद्ध, अनाम ।  
 न०-पी, भोजन, मल, यज्ञ-शक्ति,  
 धन, तेजी ।  
 वाजसन ( पु० )-विष्णु, शिव ।  
 वाजसनि ( पु० )-सूर्य, सूरज ।  
 वाजसनेय ( पु० )-वाक्कवज्र, वाज-  
 सनेयसहिता का कर्ता ।  
 वाजिन ( न० )-शक्ति, महाहुरी ।  
 वाजी [ न ] ( वि० )-शीघ्रगामी, मल-  
 शाली । पु०-पोड़ा, तीर, इन्द्र ।  
 बृहस्पति । [ वीर्यवर्धक जीवप ।  
 वाजीकरण ( न० )-एक प्रकार की  
 वाक्क ( १ प० )-वाहना, इच्छा  
 करना, तलाश करना ।  
 वाक्कन ( न० )-इच्छा, स्वादिष्ट ।  
 वाक्का ( स्त्री० )-पूर्वदत्त ।  
 वाक्कित ( वि० )-इच्छित, चाहा  
 हुआ । न०-इच्छा । [ वङ्क ।  
 वाट ( अस्त्री० )-बाह्य, साज, धनीघा,  
 वाटिका ( स्त्री० )-धनीघा, प्रपन्न ।  
 वाटी ( स्त्री० )-चेरा, धागा, दाग ।  
 दाह ( १ ना० )-नहाना, गोले लगाना ।  
 वाट्य ( पु० )-प्राक्कण, समुद्र की भाग्नि ।  
 वाचि ( स्त्री० )-मुनन, कथन, सरस्वती ।

वाणिज (पु०)--सौदागर, ठगपारी ।  
 वाणिजिक(पु०)--सौदागर, ठग ।  
 वाणिज्य ( न० )--तिजारत, ठगपार ।  
 वाणी (स्त्री०)--सरस्वती, शब्द, भाषा,  
 ज्ञान, आवाज, तारीफ़ ।  
 वात(वि०)--मुँह से फूँका हुआ, इच्छित,  
 प्रापित । पु०--वायु, हवा, आंधी,  
 गठिया, जोड़ों का सूजन, पृष्ठ ।  
 वातक(पु०)--जार, यार ।  
 वातकेतु(पु०)--धूलि, रेणु ।  
 वातकेलि(पु०)--प्रेम की धारें, काना-  
 फूसी । [ उतर ।  
 वातधर( पु० )--वातदोष से उत्पन्न  
 वातध्वज(पु०)--वादल, झाक ।  
 वातपुत्र(पु०)--ठग, भीन, छनूगाम् ।  
 वातरोग(पु०)--गठिया का रोग ।  
 वातवैरी[न](पु०)--एररुहवल, वादाम ।  
 वातसारवि(पु०)--अग्नि, भाग ।  
 वातायन (पु०)--घोड़ा । न०--खिड़की  
 तन्मू ।  
 वातावि(पु०)--एक राक्षस का नाम ।  
 वातापिद्विष्ट-ट् (पु०)--अगस्त्य ऋषि,  
 अगस्त्य नक्षत्र ।  
 वाति(पु०)--तूर्य, वायु, चन्द्रमा ।  
 वातुल( वि० )--पागल, गठियारोग से  
 पीड़ित । पु०--यबूला ।  
 वाता [तु](पु०)--वाय, हवा ।  
 वात्या(स्त्री०)--तूफान, तेज़ हवा, यबूला ।  
 वात्युत्प(न०)--प्रेम, बसो पर प्यार ।  
 वात्स्यायन ( पु० )--न्यायसूत्रों का  
 एक टीकाकार, बामसूत्रों का  
 बनाने वाला ।

याद( पु० )--कथन, यातघीत, वाणी,  
 ध्यान, बहस, सिद्धान्त, मक़वाह,  
 इस्तग़ासा । [ शनिश्चित ।  
 यादस्त(वि०)--ऊंगड़े में पंसा हुआ,  
 यादप्रतिवाद(पु०)--बहस, उत्तरप्रत्युत्तर ।  
 यादविवाद( पु० )--बहस, मुवाहिवा,  
 हिमेट । [ धीनान् ।  
 यादि(वि०)--शिक्षित, सुपठित, पतुर,  
 यादित्र(न०)--बाजा, बजाने की वस्तु ।  
 यादिश(पु०)--विद्वान्, श्रपि ।  
 यादी[न] ( वि० )--यार्त करने वाला,  
 ऊंगड़ाहू । पु०--यक्ता, प्रतिपक्षी,  
 मुद्दे, शिक्षक । [ वाद्यध्वनि ।  
 याद्य(न०)--बाजा, बाजे की आवाज,  
 याद्यकर(पु०)--बाजा बजाने वाला ।  
 यादर ( वि० )--रुई का बना हुआ ।  
 न०--सूती कपड़ा ।  
 यादरग(पु०)--वटवृक्ष ।  
 यादरायण=वादरायण  
 वाधक=बाधक ।  
 बाधा=बाधा ।  
 बाधु[धू] क्य(न०)--शादी, विवाह ।  
 बाधीणस(पु०)--नेहा । [ बाढी'णस का  
 भी यही अर्थ होता है ] ।  
 वान ( वि० )--मुँह से फूँका हुआ,  
 सुसाया हुआ, वनसम्बन्धी । न०-  
 सूखा फल, धौंकनी से फूंकना,  
 मुगन्धि, मुनना, थटाई ।  
 वानप्रस्थ ( पु० )--तीसरे आश्रम में  
 रहने वाला, तीसरा आश्रम, तप-  
 स्वी, सपूकृष्ट, पलाश ।  
 वानर (पु०)--बन्दर, लगूर, बन्दर के



रूप वाली मनुष्यजाति ।  
 वातस्पत्य ( पु० )—ऐसा वृक्ष जिस का  
 फल फूल से उत्पन्न हो ।  
 वातायु ( पु० )—भारत के पश्चिमोत्तर  
 प्रदेश में एक देश, अरबदेश ।  
 वातोरक ( पु० )—वेत का वृक्ष, मूँछपास ।  
 वात ( वि० )—कै किया हुआ, घुसा  
 हुआ, टपाना हुआ ।  
 वाताद ( पु० )—कुत्ता, कुक्कुर ।  
 वात ( स्त्री० )—कै, घमन, उर्द ।  
 वात ( पु० )—बीज बीना, पुनना, हजा-  
 नत बनाना ।  
 वापित ( वि० )—घोसा हुआ, हजानत  
 बनवाया हुआ ।  
 वापि-पी ( स्त्री० )—कुमाँ, कूप, बावड़ी ।  
 वात ( वि० )—धाँपा, धाँड़े तरफ़ का,  
 विरुद्ध, विरुद्ध, फुटल, कमोना,  
 नीच, सुन्दर, प्रियदर्शन, छोटा ।  
 पु०—ज्ञानदार, शिव, कामदेव,  
 सर्प, जाती, निषिद्ध कर्म । न०—  
 धन, दौलत ।  
 वातदेव ( पु० )—जिष्णु, महादेव, एकव्यपि ।  
 वातान ( पु० )—धीना, खवं, छोटा पुत्र्य,  
 दक्षिणदिशा का हापी, शिव,  
 आर्यभट्ट, दधु का पुत्रविशेष,  
 विष्णु, अंकीटवृक्ष ।  
 वातमार्ग ( पु० )—मध्य गाँगादि भेवियों  
 का मार्ग, एक गत जिसमें शक्ति की  
 उपाधना की जाती है, वेदविरु-  
 द्धाचार, उल्टाभान ।  
 वातलूर ( पु० )—बनी, बल्गीक, दीनक  
 का बनाया मिट्टी का डेर ।

वातलोचना ( स्त्री० )—सुन्दरनेत्री वाली  
 स्त्री, स्त्रीमेद, स्त्रीमात्र ।  
 वाता ( स्त्री० )—स्त्रीमात्र, गौरी, उदगी,  
 सुन्दर स्त्री ।  
 वातावर्त ( वि० )—बाँड़े तरफ़ से छीटने  
 वाला, धाँये मार्ग से छीटने वाला ।  
 वाती ( स्त्री० )—चोड़ी, टगाही, गंधी,  
 ऊँटनी, इयिनी । [ स्त्री ।  
 वातोरक ( स्त्री० )—सुन्दर जंघाओं वाली  
 वायक ( पु० )—समूह, गिरीह, कोली,  
 जुलाहा ।  
 वायवी ( स्त्री० )—उत्तर और पश्चिम  
 के नक्षत्रों की दिशा, वायव्यदिशा ।  
 वायव्य ( वि० )—वायुसम्बन्धी, वायुका ।  
 न०—मस्त्रविशेष ।  
 वायस ( पु० )—काक, कौआ, जगदयुत ।  
 वायमारानि ( पु० )—चलू, चलूक ।  
 वायु ( पु० )—पवन, हवा, उत्तर और  
 पश्चिम की दिशा का पति, गरी-  
 रस्यदोषविशेष, पाँच मूर्तों में से  
 एक ।  
 वायुकेतु ( स्त्री० )—चूँचि, रेणु ।  
 वायुगुल ( पु० )—वायुगोला, उदरोग-  
 विशेष, आयत, भंवर ।  
 वायुतनय-पुत्र-मुत ( पु० )—हनुमान्,  
 श्रीमहेन ।  
 वायुपुत्र-मत्त ( पु० )—सर्प, साँप । वि०—  
 वायु को मत्त करके घाला ।  
 वायुवर्त ( न० )—वाकाश, गगन,  
 आसमान ।  
 वायुवाह ( पु० )—धूम, धुआँ ।  
 वायुवाह-वा-नि ( पु० )—भाग, अगि ।

वाणिज (पु०)--सौदागर, ठगपारी ।  
 वाणिजिक(पु०)--सौदागर, ठग ।  
 वाणिज्य (न०)--विजागत, ठगपार ।  
 वाणी (स्त्री०)--सरस्वती, जठद, भाषा,  
 ज्ञान, आवाज, तारीफ़ ।  
 वात(वि०)--मुँह से फूँका हुआ, इच्छित,  
 प्रार्थित । पु०--वायु, हवा, आंधी,  
 गठिया, जोड़ों का सूजन, पृष्ठ ।  
 वातक(पु०)--जार, यार ।  
 वातकेतु(पु०)--धूलि, रेणु ।  
 वातकेलि(पु०)--प्रेम की बातें, काना-  
 फंसी । [ पत्तर ।  
 वातशर(पु०)--वातदोष से उत्पन्न  
 वातध्वज(पु०)--बादल, झाक ।  
 वातपुत्र(पु०)--ठग, भीम, हनूमान् ।  
 वातरोग(पु०)--गठिया का रोग ।  
 वातवेरी[नृ](पु०)--परब्रह्म, वादान ।  
 वातचारणि(पु०)--अग्नि, भाग ।  
 वातांपन (पु०)--घोड़ा । न०--छिड़की  
 तन्त्र ।  
 वातावि(पु०)--एक राक्षस का नाम ।  
 वाताविद्विष्ट-ट् (पु०)--अगस्त्य ऋषि,  
 अगस्त्य गक्ष ।  
 वाति(पु०)--सूये, वायु, चन्द्रना ।  
 वातुल(वि०)--वागल, गठियारोग से  
 पीड़ित । पु०--बगुला ।  
 वाता [नृ](पु०)--वाय, हवा ।  
 वातपा(स्त्री०)--तूफान, तेजहवा, बगुला ।  
 वातदण्ड(न०)--प्रेम, यशों पर प्यार ।  
 वातस्यापन (पु०)--न्यायमूर्तों का  
 एक टीकाकार, कानमूर्तों का  
 बनाने वाला ।

वाद(पु०)--कथन, वातचीत, वाणी,  
 ध्यान, बहस, सिद्धान्त, अफवाह,  
 इस्तग़ासा । [ अनिश्चित ।  
 वादप्रस्त(वि०)--कगड़े में पसा हुआ,  
 वादप्रतिवाद(पु०)--बहस, उत्तरप्रत्युत्तर ।  
 वादविवाद(पु०)--बहस, मुवाहिदा,  
 डिबेट । [ धीनान् ।  
 वादि(वि०)--शिक्षित, सुपठित, पतुर,  
 वादिन(न०)--बाला, बजाने की वस्तु ।  
 वादिश(पु०)--विद्वान्, ऋषि ।  
 वादी[नृ] (वि०)--वातें करने वाला,  
 कगड़ालू । पु०--यक्षा, प्रतिपक्षी,  
 मुद्दे, शिक्षक । [ वाद्यध्वनि ।  
 वाद्य(न०)--वाजा, वाजे की आवाज,  
 वाद्यकर(पु०)--वाजा बजाने वाला ।  
 वादर (वि०)--रई का बना हुआ ।  
 न०--सूती कपड़ा ।  
 वादरंग(पु०)--बटवृत्त ।  
 वादरायण=वादरायण  
 वाधक=बाधक ।  
 वाधा=बाधा ।  
 वाधु[धू] क्य(न०)--शादी, विवाह ।  
 वाधीणस(पु०)--नैंडा । [ वाहीणस का  
 भी यही अर्थ होता है ] ।  
 वात (वि०)--मुँह से फूँका हुआ,  
 सुलाया हुआ, यनमयध्वनी । न०-  
 गूला कल, चोंकगी में फूँकना,  
 मुगन्धि, मुनगर, पटाई ।  
 वातमस्य (पु०)--तीमरे आश्रम में  
 रहने वाला, तीसरा आश्रम, तप-  
 स्वी, मधूहृत्, पलाश ।  
 वातर (पु०)--मन्दर, छगूर, मन्दर के

रूप वाली मनुष्यजाति ।

यानस्पत्य ( पु० )—ऐसा वृक्ष जिस का  
फल फूल से उत्पन्न हो ।

यानायु ( पु० )—भारत के पश्चिमोत्तर  
प्रदेश में एक देश, अरबदेश ।

यामोरक ( पु० )—घेत का वृक्ष, मूँजघास ।

यान्त ( वि० )—कै किया हुआ, धूँका  
हुआ, रपाना हुआ ।

यान्ताद ( पु० )—कुसा, कुक्कुर ।

यान्ति ( स्त्री० )—कै, यमन, छदिं ।

याप ( पु० )—बीज बीना, युनना, हज्जा-  
मत यमाना ।

यापित ( वि० )—पोया हुआ, हज्जामत  
यनवाया हुआ ।

यापि-पो ( स्त्री० )—कुआं, कूप, बाघही ।

याम ( वि० )—यांया, बाँई तरफ़ का,  
विरुद्ध, खिलाफ़, फुटिल, कमीना,  
नीच, सुन्दर, प्रियदर्शन, छोटा ।  
पु०—जानदार, शिव, कामदेव,  
चपे, छाती, निपिट्ट रुने । न०—  
धन, दीलत ।

यामदेव ( पु० )—शिव, महादेव, एकअपि ।

यामन ( पु० )—बीना, चपे, छोटापुरुष,  
दक्षिणदिशा का हाथी, शिव,  
अश्वमेद, दनु का पुत्रविशेष,  
विष्णु, अंकीटवृक्ष ।

यामनाग ( पु० )—मद्य गांछादि मेवियों  
का मार्ग, एक मत जिसमें शक्ति की  
उपासना की जाती है, वेदविरु-  
द्भाचार, चल्तामार्ग ।

यामसूर ( पु० )—यमी, बलमीक, दीमक  
का मगाया मिही का ढेर ।

यामलोचना ( स्त्री० )—सुन्दरनेत्रीं वाली  
स्त्री, स्त्रीमेद, स्त्रीमात्र ।

यामा ( स्त्री० )—स्त्रीमात्र, गौरी, लक्ष्मी,  
सुन्दर स्त्री ।

यामावर्त्त ( वि० )—बाँई तरफ़ से छीटने  
वाला, बायें मार्ग से छीटने वाला ।

यामी ( स्त्री० )—घोड़ी, गृगाली, गधी,  
कंटनी, हथिनी । [ स्त्री ।

यामोरु ( स्त्री० )—सुन्दर लंपाओं वाली  
वायक ( पु० )—चमूद, गिरोह, कोली,  
जुठाहा ।

वायवी ( स्त्री० )—उत्तर और पश्चिम  
के मध्य की दिशा, वायव्यदिशा ।

वायव्य ( वि० )—वायुमन्त्रधी, वायुका ।  
न०—मन्त्रविशेष ।

वायव्य ( पु० )—काक, कौआ, अगरवृक्ष ।

वायव्याराति ( पु० )—चलू, उलूक ।

वायु ( पु० )—पवन, हवा, उत्तर और  
पश्चिम की दिशा का पति, शरी-  
ररूपदोषविशेष, पांच जूतों में से  
एक ।

वायुकेतु ( स्त्री० )—धूलि, रेणु ।

वायुगुल्म ( पु० )—वायुगोला, चक्षुरोग-  
विशेष, आवर्त्त, संवर ।

वायुतनय-पुत्र-सुत ( पु० )—हनुमान्,  
भीमसेन ।

वायुज्ज-मत्त ( पु० )—चपे, सांध । वि०—  
वायु को मत्तण करने वाला ।

वायुवर्त्त ( न् ) ( न० )—आकाश, गगन,  
आसमान ।

वायुवाह ( पु० )—धूम, धुआं ।

वायुसख-वा-सि ( पु० )—भाग, अगि ।

वार (न०)-जल, पानी ।

धार (पु०)-समुद्र, वृन्द, गिरीह, अव-  
धर, शूर्यादि दिन यथा:-रधि-  
धार; सोमवार आदि, शिव, द्वार,  
दरवाजा, क्षण, कुञ्जकवृक्ष, ओसरा,  
गम्बर । न०-मद्यपात्र, यज्ञपात्र-  
विशेष, जलसमुद्र ।

धारक (पु०)-ऊर्ध्वविशेष, घोड़े की  
चाल । न०-कष्ट का स्थान । वि०-  
निषेधक, रोकनेवाला, हटानेवाला ।  
धारण (न०)-रोकना, निषेध करना,  
धारण करना । पु०-हस्ती, कवच ।  
धारणवल्लभा (स्त्री०)-केला, कदली,  
हयिनी ।

धारमुख्या (स्त्री०)-वैज्या, वाराणसी ।  
धारवाणि (पु०)-घंसी ब्रजाने वाला  
पुरुष, उत्तमगायक, धर्मोधिकारी,  
धर्म, साल ।

धारवाणि-णी (स्त्री०)-धारांगना,  
वैश्या ।

धारस्त्री (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

धारांनिधि (पु०)-समुद्र, सागर ।

धादाणसी (स्त्री०)-काशी, बनारस ।

धाराह (पु०)-कल्पभेद, शूकर, वृक्ष-  
विशेष, विष्णु का अवतारविशेष ।  
न०-एक तीर्थ, एक पुराण । वि०-  
शूकरात्मन्वन्धी ।

धाराही (र०)-दुर्गाभेद, योगिनी-  
विशेष, यमानापघ्नी, शूकरी, शूजरी ।

धारि (न०)-पानी, जल ।

धारि-रां (स्त्री०)-घाणी, मोली, वाक्य,  
गरस्वती, दापी के धाधने की

रस्सी वा भूमि ।

वारिधर (पु०)-नत्स्य, मच्छ, जग-  
जन्तु । वि०-पानी में विधरनेवाला  
वारिज (न०)-कमल, पद्म, लींग, एक  
प्रकार का नमक । पु०-शख,  
सोपी, शुक्ति ।

वारित्रा (स्त्री०)-उत्र, छाता, छतरी ।

वारिद (पु०)-मेघ, बादल । न०-नागर-  
मोघा । वि०-जल देनेवाला ।

वारिधि-निधि (पु०)-समुद्र, सागर ।

वारिप्रवाह (पु०)-फारना, जल का  
बहना ।

वारिमुक् [च्] (पु०)-मेघ, बादल ।

वारिरुह (न०)-कमल, पद्म । वि०-  
पानी में उत्पन्न होनेवाला ।

वारिवाह (पु०)-मेघ, बादल ।

वारिश्च (पु०)-विष्णु, परमात्मा ।

धारीश (पु०)-समुद्र, सागर, वरुणदेव ।

धारु (पु०)-विजयकुञ्जर, संक्रान्तभूमि  
में विजय के देनेवाला हाथी ।

धारुण (न०)-जल, पानी, शतभिषा  
नक्षत्र, एक उपपुराण । पु०-भारत  
भूमि का एक खण्ड । वि०-धारुण-  
सम्बन्धी ।

धारुणि (पु०)-अगस्त्य मुनि, शृगु ।

धारुणी (स्त्री०)-मदिरा, दूध का घान,  
वरुण की भार्या, परिधमदिशा ।

धारुणह (अस्त्री०)-कणमल, नेत्र-  
मल, नीकापात्रविशेष ।

धारुण (वि०)-वृक्षों का बना हुआ ।  
न०-घन ।

धारिणिक (पु०)-लेखक, मुहरिंर ।

वात (वि०)-तन्दुरुस्त, हलका, कम-  
जोर । न०-कुशलसेम, चतुराई ।  
वाता(स्त्री०)-कदना, दहरना, समाचार,  
स्वर, पेशा, सेती, वैश्यवृत्ति ।  
वातावह-धर ( पु० )-दूत, समाचार  
सेजाने वाला, एलची, लामूस ।  
वातायन ( पु० )-पूर्ववत् ।  
वातिक(वि०)-वातासम्बन्धी । पु०-  
गुस्तर, वैश्य । न०-टीकासम्ब-  
न्धी नियमविधेय ।  
वाहक(न०)-बुढ़ापा, जरा, बृहस्पृह ।  
वाहकप(न०)-पूर्ववत् ।  
वाहपुं-पि-पि-पी [ नृ ] ( पु० )-उत्तमर्ण,  
यकर, अधिक बूढ़ होने वाला ।  
वार्य(न०)-धरकत, वरदान ।  
वार्यिक(वि०)-वालाभा, एक वर्ष का,  
वर्षासम्बन्धी ।  
वाल-क(पु०)=वालक ।  
वालि ( पु० )-मुघीय के बड़े भाई का  
नाम जिन की राम ने निहत  
. किया था । [ चूर्ण, कर्पूर ।  
वालुका ( स्त्री० )-पजती, रेत, धूलि,  
वालेय(पु०)=वालेय ।  
वाल्मीक-कि(पु०)=वाल्मीकि ।  
वायदूक(वि०)-वातूना, वायुवा, वायुमी  
वायदूकता ( स्त्री० )-वाग्मिता, बहुत  
वात करना ।  
वायुत(४ आ०)-पसन्द करना, चुनना,  
छाटना, सेवा करना, प्रेमकरना ।  
वायुत(वि०)-चुना हुआ, पसन्दीदा ।  
वायु ( ४ आ० )-गर्जना, चिल्लाना,  
धीरना, पुकारना ।

वाशि(पु०)-वाशि, अग्निदेवता ।  
वाशिता(स्त्री०)-हविनी, स्त्री, वज्रिता ।  
वाशुता(स्त्री०)-रात्रि, रात ।  
वा [ वा ] र्प ( अस्त्री० )-रूपता, गर्मी,  
नेत्रवल, जामू, भाप, लोहा ।  
वासु(१० उ०)-सुख बू देना, सुगन्धि  
करना, मसाला छानना ।  
वास ( पु० )-सुगन्धि, रहना, निवास,  
घर, जगह, कपड़ा ।  
वासक ( वि० )-सुगन्धि देने वाला,  
यसने वाला । न०-पहरने का  
बख ।  
वासकर्षी(स्त्री०)-यज्ञधूमि, कीड़ास्पृह  
वासप्रदान-मन्दिर(न०)-निवासस्थान,  
घर, गृह, मकान ।  
वासना ( स्त्री० )-भावना, कृतकर्मों  
की स्मृति, मिथ्याछान, जयाल,  
सुगन्धितवा ।  
वासन्त ( वि० )-वसन्त ऋतुसम्बन्धी,  
लवान, मेहनती । पु०-ऊट,  
छोटा हाथी, कोयल, नलयसमीर,  
आचारभूट अनुस्य ।  
वासन्ती ( स्त्री० )-वसन्तोत्सव, होली,  
विष्णुली, एक पुष्पलता ।  
वासर ( अस्त्री० )-दिन, धार ।  
वासरदत्ता(स्त्री०)-एक ग्रन्थ का नाम ।  
वासु ( न० )-कपड़ा, वस्त्र, परदा ।  
वामःकुटी ( स्त्री० )-तम्बू, शानियामा  
हेरा ।  
वाचि [ शि ] ष्ट ( वि० )-वशिष्ट का ।  
पु०-वशिष्टमन्तति ।  
वासु ( पु० )-आत्मा, परमात्मा ।

वासुकि-केय ( पु० )-एक प्रसिद्ध सर्प,  
सर्पराज ।

वासुदेव ( पु० )-वसुदेवपुत्र, श्रीकृष्ण ।

वासुरा ( स्त्री० )-पृथ्वी, रात्रि, स्त्री ।

वास्तव ( वि० )-असली, सच्चा, सारयुक्त ।

वास्तव्या ( स्त्री० )-उपाकाश, प्रातः ।

वास्तविक ( न० )-सच्चा, असली, ठीक ।

वास्तु ( अस्त्री० )-घर, यह, रहने  
की जगह ।

वास्तुशान्ति ( स्त्री० )-गृहप्रवेशसंस्कार,  
आधारशिला रखने का उत्सव ।

वास्त्र ( वि० )-कपड़े का बना हुआ ।

वास्त्र=वाष्प । [ करना ।

वाह् ( १आ० )-चलन करना, कोशिश

वाह ( वि० )-छे जाने वाला । पु०-

छे जाना, छानू जानकर, घोंघा,  
साँट, गाड़ी, वाजू, इया ।

वाहक ( पु० )-गाड़ीवान्, कोचमैन,  
पुद्गलधार । [ हस्ती ।

वाहन ( न० )-छेजाना, टांकना, गाड़ी ।

वाहस ( पु० )-भजदहा, जलनाग ।

वाहिक ( पु० )-नकारा, बैलगाड़ी,  
भार होने वाला । [ मतिभार ।

वाहित ( न० )-यज्ञत यज्ञ योक्ता,

वाहिनी ( स्त्री० )-मेना, स्त्री, नदी ।

वाहिनीपति ( पु० )-समुद्र, कर्णानियर ।

वाहुक=वाहक ।

वाहि ( पु० )-तन्तमान यन्त्र प्रदेश ।

वाहिक-ग्रीक ( पु० )-देशभेद, मल्ल  
का चाँदा, मन्थपेदे । न०--  
कुहू, हाँ ।

वि ( वि० )-निषेध, निरपय, निधोन,

न सहता, हेतु, विनियोग, ईपत,  
शुद्धि, परिभव, विज्ञान, पालन,  
आलस्य, गति, अठ्ठापति, अव-  
लम्बन, आलम्ब, उपसर्गविशेष  
[ विशेष कर यह धातु धीर संज्ञा-  
धातुक शब्दों के पूर्व प्रयुक्त होता  
है और उसके अर्थ में व्यत्यय  
करा देता है यथा-क्रम-ज्वरीदना  
और विक्रम-वेचना आदि ] । पु०-  
पत्नी, परमात्मा ।

विंश ( वि० )-२० की संख्या पूरी करने  
वाला, बीसवाँ ।

विंशक ( वि० )-बीस से ज्वरीदा हुआ,  
विंशतिक्रित, बीसवाँ ।

विंशति ( स्त्री० )-२० की संख्या, बीस ।

विंशतिक ( वि० )-बीस के योग्य,  
विंशतियोग्य, बीस के लायक ।

विंशतितम ( वि० )-विंश, बीसवाँ,  
२० की संख्या का पूरक ।

विकच ( पु० )-तपण, पुद्गलान्याविवि-  
शेष, केतु । वि०-विकसित, खिला  
हुआ, केशशून्य ।

विकट ( पु० )-विस्फोटक, कोड़ा, फुंसी  
धुतराष्ट्र का का एक पुत्र । वि०-

विकराल, विगल, विस्तृत, फैला  
हुआ, लम्बतदन्त, घिलत ।

विकटक ( पु० )-घिना काटों का  
वृक्षविशेष, यथास । वि०-घिना  
शमुयाला ।

विकटपन ( न० )-आत्मप्रशमा, अपनी  
उलाषा, निर्या प्रशंसा, अपनी

मराहना । वि०-यहाँ करनेवाला ।

विकराल (वि०)--सयङ्कर, मयानक रूप-  
वाला । [एक शूर ।

विकर्ण ( पु० )--द्वयोपन के पक्ष का

विकर्णन ( पु० )--मूर्च, मूर्छन, अर्कपक्ष ।

विकर्मस्थ ( वि० )--निषिद्ध कर्म करने  
वाला, कुत्सिताचारयुक्त, निन्दित  
थालपलन वाला ।

विकर्षण ( म० )--आकर्षण, खींचना ।

विकल ( वि० )--बिह्वल, चबराया  
हुआ, स्वभावशून्य, कलारहित ।

विकला ( स्त्री० )--मासिकधर्मरहित  
स्त्री, वह स्त्री जिसका रजोधर्म  
नष्ट हो गया हो ।

विकलाङ्ग ( वि० )--स्वभाव से न्यूनाङ्ग,  
विकृत, अङ्ग वाला, अङ्गहीन ।

विकल्प ( पु० )--भिन्न प्रकार, संशय,  
आप्ति, नामाविध, वनेक प्रकार  
की कल्पना, अवान्तर कल्प, पक्ष से  
प्राप्त, देवता, प्रकारद्वय से होने  
वाला ।

विकल्ब [स्य] र ( वि० )--खिलने के  
स्वभाव वाला, प्रकाशशील ।

विकशि [सि] ठ ( वि० )--खिटा हुआ,  
प्रफुल्लित, प्रकाशयुक्त ।

विकष ( पु० )--चन्द्रमा, चाँद ।

विकार ( पु० )--स्वभाव का अन्यथा  
होना, प्रकृति की तबदीली, रोग,  
मोमारी, मत्स्य का नाम ।

विकाल ( पु० )--कार्य के अयोग्य काल,  
विरुद्धकाल, वह काल जिस में  
दैव और पितृसम्बन्धी कार्य  
करना निषिद्ध है, दिगान्त,

सायाह्न, राक्षसीय समय ।

विकाश ( पु० )--प्रकाश, रहः, एशान्त,  
अकेले, विजन, स्फुट, स्वर्ग, आकाशी-

विकाशी-पी-सी [न] ( वि० )--विका-  
शशील, विकस्वर, खिलने के  
स्वभाव वाला, खिना हुआ ।

विकिर ( पु० )--विह्वल, पक्षी, वह  
सज्जद सरसों जो पूजा के समय  
विग्रह दूर करने के लिये अभि-  
न्वित कर चारों तरफ घेरी  
जाती है, वह विग्रहविशेष जो  
असंस्कृत मतपितरों के लिये  
कुशाभों पर दिया जाता है, नदी  
आदि के निकट बालुकामयी भूमि  
से निकला हुआ जल ।

विकिरण ( म० )--केंकना, विक्षेपण,  
हिसरा करना, मारना, विशान,  
आनना । पु०--आक का वृक्ष ।

विकीर्ण ( वि० )--केंका हुआ, धितित,  
खेला हुआ, बिखरा हुआ ।

विकुशोण ( वि० )--परिवर्तनशील,  
प्रयत्न, रुग्ण ।

विकृत ( वि० )--परिवर्तित, रोगी,  
विकारयुक्त, अधूरा, विधिभ्रं,  
सुरास्य । म०--परिवर्तन, मफरत ।

विकृति ( स्त्री० )--परिवर्तन, विकार,  
रोग, क्रोध, उत्तेजना ।

विकृष्ट ( १ पु० )--खींचना, रोकना,  
नष्ट करना । [हुआ ।

विकृष्ट ( वि० )--खींचा हुआ, फैल या

विकृ ( ६ पु० )--घेरेना, फैलाना,  
सुरास्य करना ।

विकल्प ( १ भा० )-सन्देह करना,  
विकल्प होना । [ खुले हुए हों ।  
विकेश ( वि० )-मंजरा, जिस के बाछ  
विक्र ( पु० )-अल्पायु हस्ती ।  
विक्रम् ( १ भा० )-आक्रमण करना,  
आगे बढ़ना, शक्ति दिखलाना,  
साथ २ चलना ।  
विक्रम ( पु० )-पराक्रम, क्रोध, चलना,  
जीत, महादुरी, उज्जयिनी के  
एक राजा का नाम ।  
विक्रमादित्य ( पु० )-उज्जयिनी  
का एक प्रसिद्ध राजा ।  
विक्रान्त ( वि० )-शक्तिशाली, विजयी,  
अतिक्रान्त । पु०-योद्धा, सिद्ध ।  
न०-क्रोध, महादुरी ।  
विक्रस्त ( पु० )-चन्द्रमा, चांद ।  
विक्रय ( पु० )-बेचना, फरोख करना ।  
विक्रिया ( वि० )-परिवर्तन, आन्दो-  
लन, क्रोध, विपत्ति, विकल्प ।  
विक्री ( २ भा० )-बेचना, बदलना ।  
विक्रेय ( वि० )-बेचने योग्य ।  
विक्रुग् ( १ पु० )-निरुत्थाना; जोर से  
रोना, गाली देना ।  
विक्रुट ( वि० )-चिल्लाया हुआ, कठोर,  
झुर । न०-सहायता के लिये  
चिल्लाना, गाली । [ गलौच ।  
विक्रोशन ( न० )-चिल्लाहट, गाली-  
विकलष ( वि० )-भयभीत, कायर ।  
विकिलन्न ( वि० )-बहुत गोला, सड़ा  
हुआ ।  
विकिलट ( वि० )-अतिदुःखी, आहत ।  
विकृत ( वि० )-जड़भी, आहत, फाड़ा

हुआ । [ फैलाना, त्यागना ।  
विलिप् ( ६ पु० )-घसेरना, फेंकना,  
विलिप्त ( वि० )-फैला हुआ, त्यक्त,  
चघराया हुआ, पागल, उन्मत्त ।  
विलुम् ( १ भा० )-झुठल होना, चघराना ।  
विलेप ( पु० )-इधर उधर फेंकना,  
प्रेषण, चघराहट, भय ।  
विलेपण ( न० )-फेंकना, त्यागना,  
भेजना, चघराहट ।  
विलोभ ( पु० )-चघराहट, चधुलता,  
विस्तविकल्प, युद्ध ।  
विलुगिहत ( वि० )-टूटा हुआ, विकृत,  
खरबन किया हुआ ।  
विलुसा ( स्त्री० )-जड़ान, जिह्वा ।  
विरुपा ( २ पु० )-मशहूर होना, देखना,  
पुकारना, प्रत्यक्ष करना ।  
विरुपात ( वि० )-प्रसिद्ध, मशहूर ।  
विरुपापन ( न० )-घोषणा, स्वीकारी ।  
विगण् ( १० पु० )-संख्या करना,  
गिनना, विचारना, ध्यान न  
देना ।  
विगणन ( न० )-गणना, गिनती,  
विचार, खण का दे देना । [ मृत ।  
विगत ( वि० )-गया हुआ, जुदा हुआ,  
विगम् ( १ पु० )-गुजारना, बिताना,  
चला जाना, सरना, नष्ट होना ।  
विगम ( पु० )-जुदाई, अन्त, त्याग, मृत्यु ।  
विगर्ह ( १ पु० )-दोष देना, बदमास  
करना, नफरत करना ।  
विगर्हण-णा=निन्दा, भत्सेना, गाली ।  
विगर्हित ( वि० )-निन्दित, अपमा-  
नित, बीष, युवा । न०-निन्दा ।



विगल् ( १५३ )-गलना, पिचलना,  
नीचे गिरना, टपकना ।

विगलित ( वि० )-गला हुआ, नष्ट,  
पिचला हुआ ।

दिगाढ ( वि० )-स्नात, निमज्जित,  
गहरा, बहुत, अधिक ।

विगाण ( न० )-निन्दा, दोषारोपण ।

विगाह् ( १आ० )-नहाना, हुज्जकी  
लगाना, प्रवेश करना, हिलाना ।

विगीति ( स्त्री० )-निन्दा, विरुद्ध-  
कथन । [ शून्य ।

विगुण ( वि० )-गुणरहित; लक्षण-  
विगूढ ( वि० )-छिपा हुआ; निन्दित;  
गुप्त । [ कर गाना ।

विनी ( १५० )-निन्दा करना; मिल  
विग्रह् ( ८५० )-पकड़ना, ऋगड़ना,  
लड़ना, विभक्त करना, स्थापित  
करना, देखना ।

विग्रह् ( पु० )-कैलाश, विस्तार, आकार,  
शरीर, विभाग, ऋगड़ा, लड़ाई,  
युद्ध, अश । [ रीका हुआ ।

विग्रहीत ( वि० )-विभक्त, पकड़ा हुआ,  
विपट् ( १आ० )-अलग होना, नष्ट  
होना, रुकना, विचार की प्राप्त  
होना । [ टूटा हुआ ।

विपटित ( वि० )-अलहदा विभक्त,  
विपटिका ( स्त्री० )-एक घड़ी का  
साठवा भाग, पल ।

विपट् ( १० उ० )-मारना, खदेड़ना,  
रगड़ना, तोड़ना ।

विपन ( पु० )-इतीहा, घन, विजयी ।

विपस ( पु० )-महेंचरित ग्रन्थ, नूतन ।

विघात ( पु० )-नाश, दूरीकरण, कृतल,  
रोक, रयाग ।

विघ्न ( पु० )-रोक, बाधा, मुश्किल ।

विघ्नकर-कर्ता-कारी ( वि० )-रोकने  
वाला, बाधा डालनेवाला, बाधक ।

विघ्ननायक-नाशन ( पु० )-गणेश,  
शिवपुत्र ।

विह्व ( पु० )-घोड़े का सुर ।

विष् ( ३, ७५० )-अलग करना, विभक्त  
करना, पहिचानना ।

विषक्षण ( वि० )-चतुर, परिहृत । पु०-  
विद्वान्, धीमान् ।

विषक्षु [ भू ] ( वि० )-अन्धा, नेत्रहीन ।

विषट् ( १५० )-इपर उपर घूमना,  
विचलित होना, विचरना, आक्र-  
मण करना, मन्देह करना, परीक्षा  
करना ।

विषरित ( न० )-इपर उपर घूमना ।

विषार ( पु० )-ध्यान धारणा, शीघ्र,  
परीक्षा, यहस, जाच, विवेचना,  
सन्देह, पसन्द-राय, इरादा ।

विषारक ( पु० )-परीक्षक, जज, मुमूतहिना

विषारण-णा=परीक्षा, अन्वेषण, यहस,  
विषार, सन्देह ।

विषारशील ( वि० )-ध्यान-देने वाला,  
अग्रशीघी, सांत्वधान ।

विषारित ( वि० )-पिन्तित, परीक्षित,  
निश्चित ।

विषर्चिका ( स्त्री० )-सुगन्धी, सान ।

विषल् ( १५० )-हिलना, कापना, हर-  
कत करना, आन्दोलित होना,  
भूट होना ।

विषय(पु०)-तलाश, अन्वेषण ।

विचल(वि०)-चलायमान, चञ्चल, गतिंत ।

विधि ( ५ उ० )-इच्छा करना, ढेर

लगाना, दूढ़ना, अलग करना ।

विधि (अकली०)-उहर, तरंग [ विची  
(स्त्री०)-फा भी यही अर्थ है ] ।

विचिकित्ता ( स्त्री० )-चन्देष्ट, शक,  
अनिश्चय, गलती, अशुद्धि ।

विचित्र(वि०)-मुसलिक, अनेक रंगों  
वाला, आश्चर्यमय ।

विचित्रवीर्य(पु०)-चित्रागद का छोटा  
भाई और शान्तनु का छोटा पुत्र  
जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न  
हुआ था ।

विचिन्त्(१० उ०)-सोधना, विचारना,  
ज्ञात करना । [ मृत ।

विचेतन(वि०)-चेतनारहित, बेजान,

विचेता-[मं](वि०)-चेतनारहित, घब-  
राया हुआ, क्रूर, मूर्ख ।

विचेष्ट्(१ आ०)-चेष्टा करना ।

विचेष्टा(स्त्री०)-घटन, हरकत, व्यवहार

विचेष्टित ( वि० )-चेष्टा किया हुआ,  
अवसाधकृत ।

विच्छन्द-क(पु०)-महल, प्रासाद ।

विच्छदंन(म०)-कै, घमन ।

विच्छदित(वि०)-घमन किया हुआ,  
स्पृष्ट हुआ ।

विच्छिन्ति ( स्त्री० )-कत्तन, टूटना,  
विनाश, नाश, घन्द होना ।

विच्छिद् ( ३ उ० )-काट कर अलग  
करना, सोड़ना, अन्न करना ।

विच्छिर् ( ६ प० )-छेपन करना, मलना ।

विच्छेद(पु०)=विच्छिन्ति । [ दृढा ।

विच्छेदन(म०)-काटना, जट से उपा-

विच्छु(१ आ०)-छुत होना, विचलित  
होना । [ छित ।

विच्छुत ( वि० )-गिरा हुआ, विच-  
विच्छुति (स्त्री०)-गिरावट, विचलन,  
नाश, नाकासपायी ।

विज्ञ ( ३ उ० )-अलग करना, देखना,  
दिलना ।

विजिता [च](पु०)-अरीक, अशी, ज्ञान ।

विजन् ( ४ आ० )-उत्पन्न होना, उगना ।

विजन ( वि० )-एकान्त, जनशून्य ।

विजनन ( म० )-उत्पत्ति, पैदायश ।

विजने ( अ० )-एकान्त में ।

विज्ञातीय ( वि० )-दूमरी भाति का,  
प्रतिकूल, समतारहित ।

विजय (पु०)-जयप्राप्त करना, जीत,  
गालिय आना, अजुंम, यम ।

विजयद्विदिभ(पु०)-मुहु का गङ्गारा ।

विजयनगर(म०)-एक नगर का नाम ।

विजयन्त ( पु० )-इन्द्र, देवराज ।

विजया ( स्त्री० )-दुर्गा, मांग ।

विजयादशमी ( स्त्री० )-आश्विन-  
शुक्ला दशमी ।

विजयी [न] ( पु० )-विजेता, कातह ।

विज्ज ( वि० )-जवान, युवा ।

विजि ( १ आ० )-कतह करना, विजय  
करना, गालिय आना, जीतना ।

विजिगीषा ( स्त्री० )-जीतने की  
इच्छा, स्पृहा ।

विजिगीषु ( वि० )-जीतने का इच्छुक,  
स्पृहा करने वाला । पु०-योद्धा,

प्रतिपत्ती ।

विजित ( वि० )-पराजित, मगल्लय ।  
 विजितेन्द्रिय ( वि० )-इन्द्रियों को  
 दमन करने वाला, विजितात्मा ।  
 विजित ( वि० )-कुटिल, टेढ़ा,  
 वेहँसाना । [खोजना, व्यापना ।  
 विजृम्भ ( १ भा० )-जम्भाना, मुँह  
 विजृम्भण(न०)-जंभाई लेना, खिलना,  
 फेटना ।  
 विज्ञ ( वि० )-घाता, जानने वाला,  
 चतुर । पु०-विद्वान् । [हुआ ।  
 विज्ञप्त (वि०)-प्रार्थित, ज्ञात किया  
 विज्ञप्ति (स्त्री०)-प्रार्थना, दरखवास्त,  
 घोषणा, इशतदार ।  
 विज्ञा(६ उ०)-जानना, वाक्य होना,  
 सीखना, प्रार्थना करना ।  
 विज्ञात (वि०)-जाना हुआ, समझा  
 हुआ ।  
 विज्ञान (न०)-विशेष ज्ञान, चतुराई,  
 अच्छी समझ, सांसारिक ज्ञान,  
 साधन ।  
 विज्ञानपाद (पु०)-वेदव्यास ।  
 विज्ञानवाद (पु०)-यह सिद्धान्त जिस  
 में विज्ञान को ही सर्वोपरि ठह-  
 राना जाता है ।  
 विज्ञानिक (वि०)-चतुर, सुशिक्षित ।  
 विज्ञानेश्वर (पु०)-मिताचरा नामक  
 टीका लिखने वाला एक श्रृंगि-  
 विंशेय । [शिशक ।  
 विज्ञापक ( पु० )-सूचना देने वाला,  
 विज्ञापन-ना=नोटिस, प्रार्थना, सूचना  
 शिक्ता । [ शिक्ता ।  
 विज्ञापित ( वि० )-प्रार्थित, सूचित,

विज्ञोलि-छी (स्त्री०)-छाइन, कतार ।  
 विट (पु०)-चार, कामी पुरुष, बड़-  
 भाश, ठग ।  
 विटप ( पु० )-शाखा, फाड़ी, अङ्कुर,  
 गुच्छा, फैलाव ।  
 विटपी[त्] (पु०)-वृक्ष, पादप, बटवृक्ष ।  
 विठङ्क (वि०)-बुरा, नीच, कमीना ।  
 विट् ( १ प० )-जोर से चिल्लाना,  
 लड़ना । [विशेष, घायविहङ्क ।  
 विहङ्क (वि०)-चतुर । अस्त्री०-औषध  
 विहङ्क (१० उ०)-नकुल करना, नजाक  
 चढ़ाना, दुःख देना ।  
 विहङ्कन-ना=नकुल, ठगई, धोखा ।  
 विहारक (पु०)-थिलाव, बिहारी ।  
 विहारह (पु०)-इस्ती, ताले का एक  
 भेद ।  
 वितरहा (स्त्री०)- वह कथा जिस में  
 अपने पक्ष की स्थापना न करके  
 परपक्ष को खिलभिल किया जाय ।  
 वितत (वि०)-फैला हुआ, विस्तार-  
 युक्त, विस्तृत ।  
 वितप (वि०)-मिट्या, मिटफल, मच-  
 स्य, व्यर्थ । पु० भरद्वाज का पुत्र ।  
 वितद्रु(स्त्री०)-पञ्चाव देशमें एक नदी ।  
 वितरण (न०)-दान, देना, न्याय ।  
 वितकं (पु०)-संशय, दलील, ऊह,  
 ज्ञानसूचक, शक ।  
 वितर्हि-का-हीँ (स्त्री०)-वेदी, वेदिका ।  
 वितर्ही (स्त्री०)-पूर्ववत् ।  
 वितल (न०)-पातालविशेष, नीचे का  
 छोक, नीचे का दूसरा छोक ।  
 वितस्ति( स्त्री० )-धारह अङ्गुल की

माप, द्वादशाङ्गुल, एक यालिखत ।  
 वित्तान ( न० )-वृत्तिविशेष, अवसर,  
 मौक़ा । पु०-विस्तार, पत्र, चदोवा,  
 चन्द्रातप, शासियाना । वि०-मन्द,  
 शून्य, तुच्छ ।  
 वित्त ( १० प० )-छोड़ना, त्याग करना ।  
 वित्त ( न० )-धन, द्रव्य, दौलत । वि०  
 विज्ञात, विचार्य हुआ, लठव,  
 रुपात, नश्वर ।  
 वित्ति ( स्त्री० )-विचार, लाभ, जानना,  
 ज्ञान, सम्भावना ।  
 वित्तेश ( पु० )-कुवेर, धन का स्वामी ।  
 विप्रस्त ( वि० )-हरा हुआ, त्रासयुक्त ।  
 वित्रास ( पु० )-त्रय, हर ।  
 विष् ( १ आ० )-नागना, याचना  
 करना ।  
 विट् ( ६ व० )-प्राप्त करना, पाना । ७  
 आ०-सीनासा करना, विचारना ।  
 ४ आ०-होना, अस्तित्व । २ प०-  
 जानना, ज्ञान प्राप्त करना ।  
 विद-इ ( पु० )-परिहृत, विद्वान्, युधप्रह ।  
 विदग्ध ( वि० )-निपुण, नागर, शहर  
 में रहने वाला, परिहृत ।  
 विदग्धा ( स्त्री० )-नायिकाभेद, चरतुस्त्री ।  
 विदग्ध ( पु० )-योगी, कृती, सफलप्रपञ्च,  
 काममाय, यज्ञ ।  
 विदन् [ वृ ] ( वि० )-जानने वाला, विद्व ।  
 विदभं ( भगवती० )-कुण्डिन नामक नगर  
 जो वग देश के दक्षिण पश्चिम  
 में वर्तमान है जिसे भागकल  
 नागपुर कहते हैं ।  
 विदभंजा ( स्त्री० )-भगवत्यन्नायां,

मलराजपत्नी दमयन्ती, श्रीकृष्ण-  
 भार्या रुक्मिणी । [ भीमराज ।  
 विदभंराज ( पु० )-विदभंदेशाधिपति,  
 विदल ( न० )-द्विधाकृत मटर आदि;  
 दो फाँक किया हुआ अनार, दा-  
 हिन । पु०-रक्तकाष्ठ, पिष्टक-  
 विशेष । वि०-पत्रशून्य ।  
 विदा ( स्त्री० )-युद्धि, जानना, ज्ञान,  
 अकल । [ प्रयाह, युद्ध ।  
 विदार ( पु० )-काड़ना, विदारण, जल का  
 विदारक ( पु० )-जल के बीच में स्थित  
 वृक्ष वा शिलादि । न०-वज्रतार,  
 जल के ठहरने का गर्त । वि०-  
 काड़ने वाला ।  
 विदारण ( न० )-काड़ना, भेदन करना,  
 गारना । पु०-ऊँचेर का वृक्ष ।  
 वि०-विदारण करने वाला ।  
 विदाहि [ नृ ] ( न० )-दाह करने वाला  
 द्रव्य, दाहजनकवस्तु ।  
 विदिक् [ श् ] ( स्त्री० )-दिशाओं  
 के बीच की दिशा जो चार हैं,  
 यथा-ईशान, आग्नेय, नैऋत  
 और वायव्य ।  
 विदित ( वि० )-जाना हुआ, अवगत,  
 प्राप्ति, उपगम । पु०-कवि ।  
 वि०-ज्ञान का आश्रय ।  
 विदिच ( पु० )-परिहृत, विद्वान्, योगी ।  
 विदीर्घ ( वि० )-काड़ा हुआ, विदा-  
 रित, कृतविदारण ।  
 विटुः ( पु० )-हस्ती के कपोलद्वय के  
 बीच का भाग, घोड़े के कान के  
 बीच का हिस्सा, क्रियापद ।

विदुर ( पु० )—फौरवी का मन्त्री जो दासी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, नागर, शहर में रहने वाला पुण्य, चीर । वि०—जानने वाला, छातर

विदूर ( वि० )—अतिदूरस्थ देशादि ।  
न०—यहुत दूर । पु०—पर्यंतविशेष, वैदूर्य नामक नणि के उत्पन्न होने का स्थान ।

विदूरप ( पु० )—सूर्यवंशीय एक राजा ।

विदूरद्रि ( पु० )—यह पर्यंत जहाँ वैदूर्य नणि उत्पन्न होती है ।

विदूरपक ( वि० )—अनेक प्रकार के दीप लगाने वाला, कामुक, परनिन्दक ।  
पु०—नायकविशेष, शङ्कररस का सहायक । [ देशान्तर ।

विदेश ( पु० )—परदेश, दूसरा देश,  
विदेह ( पु० )—जनकराज, श्रीरामचन्द्र का स्वशुर और सीता का पिता ।

वि०—देह के सम्बन्ध से शून्य ।

विदेहा ( स्त्री० )—मिथिला नगरी ।

विदु ( वि० )—विंधा हुआ, सिप्ल, छिद्रित, वापित ।

विद्यमान ( पु० )—वर्तमान, मौजूद ।  
वि०—वर्तमानकाल में होने वाला ।

विद्या ( स्त्री० )—ज्ञान, मोक्षविषयक बुद्धि, तत्त्व का माहात्कार, दुर्गा, दुर्गातन्त्रोक्त देवीनन्ध, शास्त्र, धर्म ।

विद्यापण [न]-पुञ्जु ( वि० )—विद्या से प्रमिटि वाला, विद्याविख्यात, इत्त से मशहूर ।

विद्यादान ( न० )—अध्यापन, पढ़ाना, विद्या का दान, पुस्तकदान ।

विद्यादेवी ( स्त्री० )—सरस्वती, बीहों की चोल्ह देविर्दे में से एक ।

विद्याघन ( न० )—विद्या से प्राप्त घन, विद्यारूप घन ।

विद्याघर ( पु० )—देवमीनितिशेष, यह देवता जो मन्त्रादि की धारण करता है ।

विद्युच्छिद्र ( पु० )—एक राक्षस जो शूर्पणखा का पति था ।

विद्युत् ( स्त्री० )—विजली, तहिल, चद्य-छा, सन्ध्या । वि०—कान्तिशून्य, निम्नत । [ कांसी ।

विद्युत्प्रिय ( न० )—कांस्य नामक धातु,  
विद्युन्माला ( स्त्री० )—आठ अक्षर के के पादयुक्त एक उन्द, विजली की चंक्ति ।

विद्युन्माली [न] ( पु० )—राक्षसविशेष ।

विद्र ( न० )—छिद्र, सुरास ।

विद्र [द्रा] य ( पु० )—पछायन, भागना, बहना, द्रवीभूत होना, पुद्र ।

विद्रुत-द्रावित ( वि० )—पछायित, भागा हुआ, पीहित, विलीम, द्रवीभूत हुआ ।

विद्रुन ( पु० )—मखाल, मोती, मूंगा, मूंगे का वृत्त, रत्नवृत्त ।

विद्वत्सत्त्व ( वि० )—कुछ कम विद्वान्, हेंपट्टन विद्वान् । [ विद्वान् ।

विद्वत्तम ( वि० )—इन सब में अधिक विद्वत्तर ( वि० )—इन दो में अधिक विद्वान् ।

विद्वद्देश्य-देशीय ( वि० )—कुछ कम  
विद्वान्, ईपढ़न विद्वान्, विद्वान्  
होने में कुछ न्यूनतायुक्त ।

विद्वान् [ यस् ] ( वि० )—सम्पक् प्रकार  
से जानने वाला, प्राज्ञ, परिहृत  
आत्मज्ञानयुक्त ।

विद्विष ( पु० )—शत्रु दुश्मन । वि०—  
द्वेष करने वाला । [ विरोध ।

विद्वेष ( पु० )—वैर; शत्रुता; दुश्मनी,  
विद्वेषक ( वि० )—द्वेष करने वाला, विरो-  
धक; विरोधकर्ता ।

विद्वेषण ( न० )—विद्वेष  
विध ( पु० )—विनाश, अद्विविशेष, हस्ती  
का भक्षयान्न, प्रकार ।

विधवज ( न० )—कम्पन; कांपना, हिलना,  
विधवा ( स्त्री० )—मृतभर्तृका; राह;  
येवा; यह स्त्री जिस का पति  
मर गया हो ।

विधवाता [ तृ ] ( पु० )—ब्रह्मा, प्रजापति,  
मदिरा, मृगमुनि का पृथविशेष,  
महादेव, विष्णु, कामदेव, कन्दर्प।  
वि०—रचने वाला ।

विधान ( न० )—विधि, प्रकार, हस्ती  
के खाने योग्य अन्न ।

विधानपत्र ( पु० )—परिहृत, विद्वान् ।  
वि०—विधान के जानने वाला ।

विधायक ( वि० )—नियम बनाने वाला,  
विधानकर्ता ।

विधि ( पु० )—ब्रह्मा, भाग्य, प्रारब्ध,  
क्रम, सिनगिला, काल, समय,  
नियम, विधान, विधिव्याक्य,  
नियोग, विष्णु, हस्ती का भक्षयान्न,

वैद्य, व्याकरण में सूत्रविशेष,  
नीति, कानून । [ नीतिपत्र ।

विधिपत्र ( वि० )—विधि के जानने वाला,  
विधिदर्शी [ न् ] ( पु० )—सदस्य, मेम्बर ।  
विधियत् ( अ० )—नियमपूर्यक, विधि  
के अनुसार ।

विधु ( पु० )—चन्द्रमा, चांद, विष्णु,  
ब्रह्मा, पवन, कर्पूर, कापूर,  
राष्ट्रविशेष, आयुध ।

विधुत ( वि० )—त्यक्त, त्यागा हुआ ।  
विधुति ( स्त्री० )—कापना, कम्पन,  
निराकृति, तिरस्कार ।

विधुगन ( न० )—पूर्ववत् ।

विधुस्तुद ( पु० )—राहु ।

विधुर ( वि० )—विकल, पृथक् हुआ,  
घबराया हुआ । न०—विश्लेष,  
वियोग, दूर होना, दुःख, कष्ट ।  
विधूत ( वि० )—कम्पित, कापा हुआ,  
हिलाया हुआ ।

विधेय ( वि० )—विधान करने योग्य,  
वशीभूत, सनकायार हुआ, बोधित ।

विध्यस ( पु० )—नाश, आपत्ति; तबाही ।

विनत ( वि० )—प्रणत, झुका हुआ,  
भुग्न, टेढ़ा हुआ, शिक्षित ।

विनता ( स्त्री० )—कश्यप की स्त्री और  
गरुड की माता । [ चारयि ।

विनतासूनु ( पु० )—गरुड, अरुण, सूर्य-  
विनय ( पु० )—प्रणाम, नम्रता, शिक्षा,  
विनती, अनुनय । वि०—क्षिप्त,  
जेंका हुआ, विनितेन्द्रिय, पहुँचा-  
ने वाला, पृथक करने वाला ।

विनयग्राही [ न् ] ( वि० )—वचन के

मानने वाला, वचनस्थित, वशीभूत  
विनयस्य (वि०)—माझाकारी, कहना  
मानने वाला ।

विनयन (न०)—विनाश, कुल्लेन्नतीर्थ ।  
विनष्ट (वि०)—नाश को प्राप्त हुआ,  
ध्वंसयुक्त, पतित, नाशायय ।

विनष्टि ( स्त्री० )—विनाश, क्षमाय,  
हानि । [ नासिक ।

विनष्ट (वि०)—नासिकारहित, गत-  
विना (अ०)—वर्जन, रोकना, नगर  
करना, विधाय, अन्तरेण, जाना ।

विनाकृत (वि०)—त्यक्त, त्यागा हुआ ।

विनायक (पु०)—गणेश; नानाजन, युद्ध  
देय, गहड़, विघ्न । वि०—नमाने  
वाला, विनय वाला ।

विनाश (पु०)—नाश, न दीखना, अद-  
शंन, ध्वंस । [ विनाशकर्ता ।

विनाशक ( वि० )—नाश करने वाला,  
विनाशोन्मुख (वि०)—नष्ट होने वाला,  
पत्र, पका हुआ, नाश के लिये  
नदात हुआ ।

विनिगमता ( स्त्री० )—यह उक्ति जो  
एक वस्तु में पड़ने वाली हो, एक  
तर्का दलील । [ निद्रारहित ।

विनिद्र (वि०)—उन्मीलित, खिला हुआ,  
विनिद्रता—त्ये=प्रयोग, जागना, निद्रा-  
राहित्य ।

विनिपात ( पु० )—पतन, देवादि से  
प्राप्त हुआ व्यसन, अपमान,  
तिरस्कार ।

विनिमय (पु०)—प्रतिदान, बदले का  
दान, बदलायड़ी, नमानत,

एक वस्तु को देकर तत्सदृश  
दूसरी लेना ।

विनीत (वि०)—नम्र, विनययुक्त, विन-  
यान्वित, शितेन्द्रिय, दूरीकृत,  
फँका हुआ, शिथिल, अनुत्त,  
दण्डित किया हुआ । पु०—उत्तम  
अश्व, दमनक नामक वृत्त ।

विनीता [र] (वि०)—शिलक, शिला  
देने वाला । पु०—नृपति, राजा ।

विनीद ( पु० )—कोतूहल, लमाशा,  
फ्रीडा, चत्सव, प्रमोद, हय, राज-  
गृहविशेष ।

विन्दु ( पु० )—बूंद, जलकण, कतरा,  
दन्तलतविशेष, अनुस्वार, शिन्दी,  
रेखागणित में वह बिन्दु जिस  
का विभाग न हो सके । वि०—  
जानने वाला, देदितव्य, ज्ञाता ।

विन्ध्य (पु०)—एक पर्वत का नाम जो  
आर्योपनिषद् की दक्षिण भारत के  
अलग करता है । [ विन्ध्य, न्यस्त ।

विद्य ( वि० )—घात, प्राप्त, अनुस-

विन्यम् ( ५ प० )—साधन करना,  
रखना, हवाले करना ।

विन्यस्त ( वि० )—रक्छा हुआ, सुर-  
क्षित, दत्त । [ समुद्र, निचय ।

विन्यास (पु०)—परीक्षर, क्रम, रखना,  
विप् (१०मा०)—फँकना, हाटना ।

विपक्ष ( वि० )—विरुद्ध पक्ष वाला ।

पु०—शत्रु, प्रतिद्वन्द्वी, प्रतियोगी ।

विपक्षता—त्यम्=शत्रुता, द्वेषभाव ।

विपक्ष (१प०)—पकाना, हलाना करना,  
विपक्षता, भुनाना ।

विपक्ष (वि०)-परिपक्ष, अच्छी तरह पका हुआ ।

विपण् (१आ०)-वेचना, शतं लगाना ।

विपणः-जनम्=विक्री, विक्रय, सुदो-  
करोशी । [व्यापार ।

विपणि-त्री ( स्त्री० )-बाजार, हट्ट,

विपणी [नृ] (पु०)-उपापारी, चौड़ा-  
गर, दूकानदार ।

विपत्ति ( स्त्री० )-विपत्त, मुसीबत,  
आपत्ति, मृत्यु, नाश, यातना ।

पु०-अच्छे पदार्थ ।

विपय (पु०)-गलत रास्ता, कुमार्ग ।

विपद् ( ४आ० )-नाकामयाय होना,  
फेल हो जाना, मरना ।

विपद्=विपत्ति । [हुआ ।

विपद्ग्रस्त ( वि० )-मुसीबत में फंसा

विपदा ( स्त्री० )=विपत्ति ।

विपन्न (वि०)-सूत, नष्ट, भाग्यहीन,  
मुसीबतज्ज्ञ । पु०-चर्प, सांप ।

विपरिणाम(पु०)-परिवर्तन, तयदीली ।

विपरिवृत्त ( १आ० )-घूमना, चक्कर  
काटना, लौटना, घेरना ।

विपरी ( २प० )-नाकामयाय होना ।  
असफल होना, बचकर काटना,  
दुःख में फंसना ।

विपरीत ( वि० )-विरुद्ध, प्रतिकूल,  
शत्रु, झूठा, अनुविभाजनक,  
अशुभ ।

विपरीतता-त्वम्=विरोध, झूठापन ।

विपर्यय (पु०)-विरोध, विरुद्धपटना,  
अज्ञाय, नाश, मलय, तयादना,  
गलती, मुसीबत ।

विपर्यय ( ४ आ० )-लौट जाना, बदल  
जाना, कुछ का कुछ समझना ।

विपर्यस्त (वि०)-परिवर्तित, विरुद्ध,  
निष्प्रा की सत्य समझा हुआ ।

विपर्याय(पु०)-वदक्रिस्मती, विरोधिता

विपर्याय (पु०)-पूर्ववत् ।

विपल(न०)-पल का साठवां भाग ।

विपलायन (न०)-इधर उधर भागना ।

विषाक ( पु० )-पावन, परिपक्वता,  
फल, परिणाम, रसान्तर, ज्ञायक,  
कठिनता ।

विषादन(न०)-नाश, फल, यथ ।

विषाधू-शा ( स्त्री० )-पजाय में उपाय  
नामक एक नदी ।

विपिन(न०)-जंगल, वन, वृक्षसमूह ।

विपुल(वि०)-बहुत, अधिक, अतिशय,  
विस्तृत, गहन । पु०-हिमालय ।

विपुला(स्त्री०)-पृथिवी, भूमि ।

विप्र(पु०)-ब्राह्मण, विद्वान्, अश्वत्थ  
का वृक्ष, सामन्त ।

विप्रकीर्ण (वि०)-बखेरा हुआ, छित-  
राया हुआ, खुदा हुआ ।

विप्रकार( पु० )-वेदवृत्ती, अपमान,  
क्रूरता, विरोध, बदला ।

विप्रकृ ( = २० )-सताना, दुःख देना,  
अपमान करना ।

विप्रतिकार(पु०)-खरबहन, बदला ।

विप्रतिपत्ति ( स्त्री० )-पारस्परिक  
फल, सम्मतिभेद, घमराहट ।

विप्रतिपद्(४ आ०)-झगलाफ़ करना,  
भेद रखना । [विशिष्ट ।

विप्रतिपन्न ( वि० )-घमराया हुआ,



विप्रतिषेध(पु०)-संयमन, निषेध ।  
 विप्रति [ तो ] सार (पु०)-पठताया,  
 फोष, कूरता ।  
 विप्रनष्ट(वि०)-सीया हुआ, निकम्मा ।  
 विप्रयुक्त(वि०)-अलहदा, मुक्त ।  
 विप्रयुज् ( ३ आ० )-अलग करना,  
 मक्षकन करना । [ भगड़ा ।  
 विप्रयोग ( पु० )-अलहदगी, जुदाई,  
 विप्रलभ्(१ आ०)-ढगना, धोखा देना,  
 नियतभंग करना, पुनः प्रप्त करना ।  
 विप्रलम्भ(पु०)-ढगई, धोखा, भुलाना,  
 भगड़ा ।  
 विप्रलम्भन(न०)-पूर्ववत् ।  
 विप्रलय(पु०)-महाप्रलय, अत्यन्तनाश  
 विप्रलाप ( पु० )-निरर्थक वाचालाप,  
 भगड़ा, प्रतिष्ठाभंग ।  
 विप्रिय(वि०)-नागवार, नापसन्दीदा ।  
 विप्रव(पु०)-दूसरे राजा के राजाआदि  
 से डर, सपन्न, चमराहट, विगाड़,  
 फलेथ, बलघा, पाप ।  
 विप्रु( १ आ० )-इधर उधर बढ़ना,  
 खंचल होना, पसराना, नष्ट होना ।  
 विप्रल ( वि० )-निष्फल, निकम्मा,  
 निरर्थक । [ कैलाना ।  
 विप्रन् ( ९ प० )-वांछना, जरूरत,  
 विप्रन्ध(पु०)-कञ्ज, अजोय ।  
 विप्रुह(वि०)-जाग्रत, खिजाहुआ, चतुर ।  
 विप्रु(१ प०, ४ आ०)-जानना, चेतन  
 होना, देखना, जानना ।  
 विप्रुध(पु०)-पण्डित, विद्वान्, चन्द्रमा ।  
 विप्रुधान(पु०)-शिक्षक, विद्वान् ।  
 विप्रोध(पु०)-प्रतिभा, जागरण ।

विभक्त(वि०)-वंटा हुआ, अशीकृत,  
 जुदा, पृथक्कृत । न०-विभाग, हिस्सा  
 विभक्ति ( स्त्री० )-विभाग, हिस्सा,  
 व्थाकरण में उपतिहादि प्रत्यय ।  
 विभज् (१३०)-विभाग करना, अलग  
 करना, बांटना ।  
 विभज् ( पु० )-पेशवर्ग, धन, मोल-  
 एक सवत्सर का नाम ।  
 विभा( २ प० )-चमकना, दिखलाई  
 देना । स्त्री०-कान्ति, किरण, प्रकाश ।  
 विभाकर-यसु(पु०)-सूर्य, सूरज, आफ  
 का पेड़, चन्द्रमा, अग्नि ।  
 विभाग ( पु० )-हिस्सा, टुकड़ा, अंश,  
 अध्याय । [ अञ्जतः ।  
 विभागतः-थः( आ० )-टुकड़ २ करके,  
 विभाजन(न०)-तकसील, बटवारा ।  
 विभाज्य(वि०)-विभाग करने योग्य,  
 बांटने लायक ।  
 विभात-भाती=प्रभात, लघाकाल, सवेरा  
 विभावरी(स्त्री०)-रात्रि, रात, वेद्या,  
 मुखरस्त्री । [ इस्तस्ना ।  
 विभाषा ( स्त्री० )-निषेध, विकल्प,  
 विभिद् (३३०)-छेदना, अलग करना,  
 विभक्त करना, मखेरना ।  
 विभिन्न (वि०)-विभक्त, छिदा हुआ,  
 घबराया हुआ, मिश्रित, फटा हुआ ।  
 विभीतक (अस्त्री०)-मछेड़े का वृक्ष ।  
 विभीषण ( पु० )-रावण का छोटा  
 भाई, नलतूण । [ आतंकसाधन ।  
 विभीषिका ( स्त्री० )-मय, डर,  
 विभु ( वि० )-शक्तिशाली, सर्वोत्तम,  
 सयत, सर्वव्यापक, सज्जुत । पु०-

ईश्वर नामक वायु, काल, आत्मा,  
स्वामी, नौकर ।

विष्णू ( १ प० )-जाद्विर होना, पर्याप्त होना, ठयापना ।

विभूत ( वि० )-बड़ा, शक्तिशाली,  
उत्पन्न, प्रकट ।

विभूति (स्त्री०)-शक्ति, बल, प्रपन्न,  
अभ्युदय, महत्त्व, शोभा, चन,  
भस्म, खाक ।

विभूय (१०३०)-सजाना, गृहार करना।

विभूषण विभूषा=मृगार, जेयर ।

विभूषित ( वि० )-सज्जित, अलङ्कृत ।

विभ्रश्च ( १ आ०, ४प० )-भूट होना,  
गिरना, नष्ट होना ।

विभ्रश (पु०)—नाश, गिरावट, अधःपात

विभ्रम् ( १०४, प० )-धूमनः, शटकना  
घघराना ।

विश्वना ( पु० )-यद्युत चूमना, शोभा,  
प्रियो का विछाव, भ्रमण।

विभूज् ( १ भा० )-चमकना, दीप्ति-  
मान् होता । वि०-शोभायमान ।

विमत (दि०)—यिरुदुमतिमुक्त, बिछा-  
 ञ् राय घाला, दशमन ।

विमनाः-नस्क ( धि० )-चिन्तादि से  
धिकल धित्त यात्रा ।

विनय ( पु० )-तथादत्ता, परियत्तन ।

यिग्मदं ( पु० )-मर्दम, मलमा, रगड़ना,  
चक्षण, शकायट ।

विमर्दन-ना=पीसना, रगड़, माश ।

विमर्दिं स(विः)-रगदाहुआ, पिसाहुआ

विमशः-नम्=भीषयिचार,यद्दस, तर्क-  
ना, सद्देह ।

यिगपं(पु०)-विचार, ये सद्यरी, असन्तोष

विमल ( चि० )-शुद्ध, वेदान्त, माफ ।

विमरता [त] (स्त्री०)~सीतेली मा ।

विमान (अस्त्री०) - येंलून, ह्याई  
जहाज़, सातमगिल का मकान,  
अपमान । [त्यक्त ।

विमुक्त (वि०)-मुक्तहुमा, छटा हुमा,

विमुक्ति (स्त्री०)-भोक्ष, दृष्टना, निजात

विमुख ( वि० )-प्रतिफूल, बहिर्मुख,  
विरुद्ध, दुश्मन, मुंह मोड़े हुए ।

विमुद्र (घिः)-विकसित, खिला हुआ,  
मुहर से रहित ।

विमोक्षित (वि०)—मोक्षयुक्त, वशीभूत।

वि [ वि]म्ब ( अस्त्री० )-सूरज और

चन्द्रमा का मण्डलः दर्पण, शीशा ।  
न०-छाया, कन्हरी का फल ।

पु०—रुकलास नामक पक्षी ।

यिषधारी [ नृ ] ('वि०)-आकाश में  
चलने वाला । पु०-बीड पक्षी ।

વિયત્ ( નં )-આકાશ, આસનાન ।

विषद्वक्त्र (स्त्री०)—आकाशगंगा, संदा-  
किनी, स्वर्ग की नदी ।

विषात (वि०)—निलंज, येशरन, घृष्ट ।

विद्योग ( पु० )—विरह, विछोना,  
विच्छेद, वसतिर्ष का नेल ।

वियोजित ( वि० )-अलग किया  
हुआ, विधोग कराया हुआ,

मिठाया हुआ ।  
विरक्त ( वि० )-जदा हटा हुआ.

वेमुदयत, यैरागो ।

विरक्ति(रुखी०)-विराग, प्रीतिराहित्य।  
विरचित ( वि० )-घनाया हुआ,

निमित्त, सम्पादित, रक्षा गया ।  
विरजाः [ स् ] ( स्त्री० )—ऐसी स्त्री  
जिस का मासिकधर्म नष्ट हो  
गया हो, गतार्त्तवा स्त्री ।

विरघ्न-घ्न ( पु० )—जगदुत्पादक,  
विधाता, प्रज्ञा ।

विरल ( वि० )—निवृत्त, हट गया,  
हटा हुआ ।

विरति ( स्त्री० )—हटना, निवृत्ति,  
रुकना, कुछ कार्य न करना ।

विरह ( पु० )—विच्छेद, वियोग, जुदाई ।  
विरहित ( वि० )—त्यक्त, विहीन, अलग  
किया हुआ ।

विरही [ नृ ] ( पु० )—वियोगी पुरुष ।

विराग ( पु० )—राग का अभाव, मुह-  
व्यत का न होना ।

विराट ( पु० )—एक देश, उस देश का  
स्थानी या राजा । [ नारायण ।

विराध ( पु० )—एक राजसूय जिसे राज ने  
विराम ( पु० )—अवसान, अन्त, अखीर,  
हटना, निवृत्ति, उहराव ।

विरह ( वि० )—प्रतिकूल, उल्टा, खिलाफ ।  
विरह ( वि० )—उत्पन्न हुआ, अकुरित,  
निकला हुआ, फूटा हुआ ।

विरूप ( वि० )—व्यक्तीकृत, बुरे रूप-  
वाला, नानारूप, परित्यक्तरूप ।  
न०—पिप्पलीमूल । [ होना ।

विरेक ( पु० )—दस्त, जुलाप, खाली  
विरिषन ( न० )—विरिष ।

विरोक ( पु० )—भूय की किरण । न०—  
तिद्रः सूर्याय ।

विरोधन ( पु० )—सूय, आक का पेड़,

यलि का पिता, प्रह्लाद का पुत्र,  
चन्द्रमा, एक राजसूय । वि०—रुचि-  
कर, रोचक ।

विरोध ( पु० )—वैर, शत्रुता, दुश्मनी ।  
विरोधी [ नृ ] ( पु० )—शत्रु, वैरी, एक  
सबूत का नाम ।

विल् ( ६ प० )—ढकना, छिपाना ।

वि [ वि ] ल ( न० )—तिद्रः, सूर्याय, गुफा,  
मह । पु०—वैत, सचैः श्रवणानामक  
इन्द्र का घोड़ा ।

विलक्षण ( वि० )—विशेष चिन्हवाला,  
अजीब, जुदा । न०—विना प्रयो-  
जन रहना ।

विलग्न ( वि० )—अच्छे प्रकार लगा  
हुआ, सलग्न । न०—शरीर का  
मध्यभाग, कमर, उदित मेयादि  
राशि । [ करना ।

विलज्ज ( ६ भा० )—लज्जा करना, शर्म  
विलज्ज ( वि० )—वैशर्म लज्जाहीन ।

विलप् ( १ प० )—कहना, शोक करना,  
गप्प चढ़ाना । [ जारी ।

विलपित ( न० )—शोक, रझ, आक्षो-  
विलम्ब ( १ भा० )—देर करना, मुय-  
तिल होना । [ टालमटोल ।

विलम्बः—व्ययम्—कपर लटकना, देर,  
विलम्ब ( पु० )—दान, उदारता,  
वहिश ।

विलयः—यगम्—नाश, मृत्यु, दूरीकरण ।  
विलस् ( १ प० )—चमकना, प्रकट होना,  
दिग्विह्वलना । [ आक्षोभित ।

विलाप ( पु० )—रोग, चिल्लाना,  
चिलाप ( पु० )—विहास, पन्ना, मैथीन ।

विलास-सनम्=क्रीड़ा, खेल, दिल-  
बहाल।

विलासवती (स्त्री०)-असती स्त्री ।

विलासिनी ( स्त्री० )-नारी, वेश्या,  
असती स्त्री ।

विलासिनी [न] ( पु० )-कामी पुरुष,  
अग्नि, चन्द्रमा, मर्ष, शिव, कामदेव ।

विलिख् (६ प०)-लिखना, चित्रितकरना।

विलिप् (६ प०)-लेपन करना, मलना।

विलिप्त ( वि० )-अभिपिक्त, चला  
हुआ, न-दा ।

विली ( ४ भा० )-सहारा पकड़ना,  
पिचलना, छीन होना, नष्ट होना ।

८ प०-पिचलना, दबीभूत होना ।

विलीन ( वि० )-पिचला हुआ, मृत,  
नष्ट, अमृत्युक्ष ।

विलुपठन (न०)-छूटना, छूट ।

विलुप् (६ प०)-तोड़ कर भलग करना,  
पकड़ना, छूटना, झराव करना,

छोप करना । [नष्ट, विलीन ।

विलुप्त (वि०)-गुहीत, छूटा हुआ,

विलुल् (१ प०)-आगे पीछे हरकत  
करना, हिलना ।

विलेखन ( न० )-खोदना, जह से  
उखाड़ना, विभक्त करना, अंकित  
करना ।

विलेपः-पनम्=गर्हण, लेप करने की  
यस्तु, पलास्तर, लेपन । [करना ।

विलोक (१० उ०)-देखना, अवलोकन

विलोकन(न०)-अवलोकन, दर्शन ।

विलोकित ( वि० )-देखा हुआ, दृष्ट,  
परीक्षित ।

विलोचन(न०)-आंख, चक्षुः ।

विलोहन(न०)-आन्दोलन, विलोना ।

विलोहित ( वि० )-विलोया हुआ,  
आन्दोलित । न०-मट्टा ।

विलोपः-पनम्-नाश, छूट, छीनना,  
कर्मण । [यवण ।

विलोम(पु०)-विरुद्धादेश, कुक्कुर, सर्प,

विलोल ( वि० )-चपल, तरंगयित,  
विलोहित ।

विवक्षा ( स्त्री० )-बोलने की इच्छा,  
अभिप्राय, इच्छा, अर्थ ।

विवक्षित(वि०)-इच्छित, अभिप्रेत ।

विवक्षिपु(वि०)-वालाक, धोखेवाज ।

विवर्जन(न०)-त्याग, नमा करना ।

विवर्जित (वि०)-त्यक्त, परहेज किया  
गया, धाटा हुआ ।

विवद्(१भा०)-विवादकरना, झगड़ना ।

विवर(न०)-सूराख, मुस, गढ़ा, जख, म,  
८ का अक ।

विवरण(न०)-ठपौरा, बयान, टीका,  
खोलना, दिखलाना ।

विवर्ण(वि०)-वर्णरहित, पैला, कुरूप,  
नीच, मुरख । पु०-अन्त्यज ।

विवर्द्धन ( न० )-बढ़ोतरा, आधिक्य,  
कर्त्तन । [चक्षुः ।

विवर्द्धित ( वि० )-बढ़ा हुआ, उत्तम,  
विवश (वि०)-दही, स्वतन्त्र, अपरा-

भूत, मजबूर, अधीन, बेकायू, असहाय

वियम्(१ प०)-बाहर रहना, मुझारना,  
बिताना, यास करना ।

वियमन(वि०)-नगा, दिग्म्वर ।

वियस्यान् [ यत् ] (पु०)-मूर्ख, अरुण, ।

वर्तमान ३यां मनु ।

विचट् (१ प०)--विवाह करना, हटाना, लदेड़ना ।

विवाक (पु०)--जग, न्यायाधीश ।

विवाट (पु०)--लड़ाई, झगड़ा, बहस, हिमेट, अभियोग, आदेश ।

विवाद्यस्तु ( न० )--झगड़े की झड़, बिना अनुमानत ।

विवादाशी [ न ] ( पु० )--सुद्ध, वादी ।

विवाट (पु०)--चूराख, फेलाव ।

विवातः--समन्=निवासन, निरवासन, हारराग, देशनिकाला ।

विवाचित (वि०)--आरिज, निष्कासित ।

विवाह (पु०)--शादी, पाणिग्रहण, मनु के अनुसार विवाह आठ प्रकार के होते हैं यथाः--ब्राह्मोदयस्तथै-  
धायैः प्राजापत्यस्तथासुरः । गान्ध-  
र्वो राजसूयश्चैव पैशाचश्चाष्टमो-  
ऽधमः ॥ मनु० ३ । २१

विवाहदीक्षा (स्त्री०)--विवाहसंस्कार ।

विवाहित ( वि० )--कृतविवाह, शादीशुदा ।

विवाह्य (पु०)--जामाता, जमाई । [ब्रूह]

विविग्न (वि०)--अतिजयनीत, अत्यन्त

विविक्त ( वि० )--अलग किया हुआ,

विभक्त, एकाकी, अकेला, वेदाश ।

विविष् ( ३, ७ स० )--अलग करना, विभक्त करना ।

विविष (वि०)--सुगुलिक, अनेकविध, अनेक प्रकार का ।

विवीत (पु०)--बाड़ा, घिरी हुई भूमि ।

विट् ( १, ९ स० )--ढकना, खोचना,

प्रकट करना, छपक करना ।

विचट् (वि०)--त्यक्त, त्यागा हुआ ।

विचट् (१० स०)--देना, नष्ट करना, महकम करना ।

विचुत् (१ आ०)--चट्टार काटना, घूमना आक्रमण करना ।

विचुत् ( वि० )--प्रत्यक्ष, जाहिर किया हुआ, छपक, बहर, बंवार ।

विचुत्ति (स्त्री०)--फेलाव, झगड़ार, टीका ।

विचुत्त (वि०)--चारों ओर घूमना हुआ, घबहरा काटने वाला ।

विचट्ट (वि०)--झड़, हुआ, बड़ा, विस्तृत ।

विचट्ट (स्त्री०)--बड़ीतरा, अभ्युदय ।

विवेक (पु०)--सदमद् को गानने वाली बुद्धि, ध्यान, समझ, विचारशक्ति ।

विवेकी [ न ] ( वि० )--सदमद् की विवेचना करने वाला, इन्माफ करने वाला । पु०--जग, सुसिद्ध, तत्त्ववेत्ता ।

विवेक्षा [ तृ ] (पु०)--जग, तत्त्वदर्शी ।

विवेचन-वचना=जोच, पड़ताल, विचार, बहस, तलसील । [हीना ।

विष् ( ६ प० )--प्रवेग करना, दासिल

विष् [ टृ ] (पु०)--वैश्य, ननुप्य, लोक । स्त्री०--जनता, पयलिक, पुत्री ।

विश्रपति-विश्रांति ( पु० )--राजा, जामाता, मुख्यध्यापारी ।

विशङ्क (१ आ०)--मन्देह करना, डरना, सुन्दिग्य होना ।

विशङ्क (वि०)--निडर, चेरीक ।

विशङ्का (स्त्री०)--सन्देह, शक, डर ।

विशंकट (वि०)-बड़ा, मजबूत, शक्ति-  
शाली ।

विशद (वि०)-स्वच्छ, बेदाग, साफ,  
सफेद, चमकीला, शान्त ।

विशय (पु०)-सन्देह, अनिश्चितता ।

विशर (पु०)-बध, नाश, फूटपड़ना ।

विशस् (१ प०)-काटना, कलकरना ।

विशस्त्र (वि०)-शस्त्रहीन, गैरमहकूज ।

विशाख (पु०)-कात्तिकेय, प्रार्थी-शिव,  
देवविशेष ।

विशाखा (स्त्री०)-१६वें नक्षत्र का नाम ।

विशारद (वि०)-चतुर, दक्ष, प्रसिद्ध ।  
दृढ़ । [सिखन्धी, प्रसिद्ध ।

विशाल (वि०)-बड़ा, विस्तीर्ण,

विशालता-त्यम्=बड़प्पन, गौरव,  
महत्त्व ।

विशालाक्ष (वि०)-बड़ी २ आंखों-  
वाला । पु०-विष्णु, गरुड़, शिव ।

विशित (वि०)-बेताज का, शिखर-  
रहित । पु०-तीर ।

विशित (वि०)-तेज, तीक्ष्ण ।

विशिष (पु०)-मन्दिर, घर, महल ।

विशिप् (१ प०)-तारीफ करना, मह-  
दूद करना, विशेषता दिखलाना,  
लक्षणयुक्त करना ।

विशिष्ट (वि०)-विशेषतायुक्त, खास,  
लक्षणयुक्त, परिभाषा किया गया,  
श्रेष्ठ ।

विशिष्टता (स्त्री०)-श्रेष्ठता, विशेषता ।

विशिष्टाद्वैतवाद (पु०)-वैष्णवप्रचारक  
रामानुज का सिद्धान्त कि जीव  
और प्रकृति एक ही और वास्त-

विक वस्तु हैं । [ हुमा ।

विशीर्ण (वि०)-खण्डित, नष्ट, मुरकाया

विशील (वि०)-असम्भ्य खेहूदा, क्रूर ।

विशुद्ध (वि०)-शुद्ध किया हुआ,  
पवित्र, निर्लेप ।

विशुद्धि (स्त्री०)-पवित्रता, सफाई,  
अशुद्धिराहित्य ।

विशुखल (वि०)-अघाघ, अनिय-  
न्त्रित, बेक्रायू ।

विशेष (वि०)-ज्ञात, बहुत । पु०-दो  
वस्तुओं का फर्क या इस्तिमाज ।

विशेषक (वि०)-पहचानने वाला,  
फर्क करने वाला ।

विशेषण (वि०)-विशेषताद्योतक, लक्षण-  
णिक । न०-लक्षण, ऐसा शब्द जो

किसी सज्ञा [विशेष] की विशे-  
पता, गुणवा लक्षण का द्योतक हो ।

विशेषित (वि०)-लुप्तित, विनिहृत,  
अंकित, श्रेष्ठ ।

विशेष्य (वि०)-लक्षण करने योग्य,  
विशेषतायुक्त, उत्तम । न०-यह

संज्ञा जिसकी किसी विशेषण  
द्वारा विशेषता दिखलाई जावे ।

विशोक (वि०)-शोकरहित । पु०-  
अशोकवृक्ष । [ करण ।

विशोषण (न०)-शुद्ध करना, शुद्धी-  
विशोष्य (०वि०)-शोषने योग्य ।

न०-श्राण, कर्ज ।

विशोषण (न०)-सुखाना, शुष्कीकरण ।

विश्रम् (४ प०)-आराम लेना,  
ठहरना, रुकना । [ रहितता ।

विश्रम (पु०)-आराम, ठहरना, श्रम-

विश्वकर्म ( वि० )-विश्वकर्म, शान्त,  
मज्झिम, निश्चिन्त ।

विश्वकर्म ( अ० )-निश्चिन्त, ये  
रौक टोक । [ विश्वकर्म रज्जुता ।

विश्वकर्म ( १ भा० )-भरोमा करमा,  
विश्वकर्म ( पु० )-भरोमा, विश्वकर्म,

आराम, कर्म । [ २० ]  
विश्वकर्मपात्र-स्थान ( ग० )-यह एक

विश्व पर भरोमा किया जा सके ।  
विश्वकर्म ( पु० )-यभार, रस्तास्थान ।

विश्वकर्म [ च ] ( पु० )-सुखस्थ पुनि का  
। पुत्र और रावण का पिता ।

विश्वकर्म ( वि० )-मका पुत्रा, आराम  
। लेन वाला, शान्तचित्त ।

विश्वकर्म ( स्त्री० )-आराम, विश्वकर्म ।  
विश्वकर्म ( पु० )-आराम, शान्त, शान्त-

विश्वकर्म, उद्दिगहीनता ।  
विश्वकर्म [ रा ] ( पु० )-निष्ठा, टपकमा,

प्रसन्न, प्रसिद्धि । [ रश्मि-वाला ।  
विश्वकर्म ( वि० )-प्रसिद्ध, मज्झिम, सुग

विश्वकर्म ( स्त्री० )-प्रसिद्धि, टपकमा ।  
विश्वकर्म ( ४ प० )-कूट पड़ना, अलग

होना । [ अलङ्कार ।  
विश्वकर्म ( वि० )-अलग, विगिम्भ,

विश्वकर्म ( पु० )-अलङ्कार, जुदाई,  
विश्वकर्म, अज्ञाय । [ विश्वकर्म ।

विश्वकर्म ( वि० )-अलग किया हुआ,  
विश्वकर्म ( ग० )-सम, समस्त, समाप्त ।

ग०-हुनिमा, जगत, समार । पु०-  
उस का अभिमान प्रीतिमा ।

विश्वकर्म [ न ] ( पु० )-परमेश्वर, नृप,  
देवगिम्भ ।

विश्वकर्म ( पु० )-विश्वकर्म, परमेश्वर ।  
विश्वकर्म ( पु० )-विश्वकर्म का मर्म

है, अनिष्ट ।  
विश्वकर्म ( स्त्री० )-पृथिवी ।

विश्वकर्म ( पु० )-विश्व का पात्र,  
उद्दिग, उद्दिग, विष्णु ।

विश्वकर्म ( स्त्री० )-पृथिवी ।  
विश्वकर्म [ न ] ( पु० )-समाप्तपात्र

परमात्मा ।  
विश्वकर्म [ न ] ( पु० )-पृथिवी ।

विश्वकर्म ( वि० )-सौम्य, ज्ञाते  
विश्वकर्म, विश्वकर्ममात्र ।

विश्वकर्म ( स्त्री० )-एक अप्रमा ।  
विश्वकर्म [ न ] ( पु० )-विष्णु, परमात्मा ।

विश्वकर्म ( पु० )-नाभिपुत्र एक अप्रमा ।  
विश्वकर्म [ न ] ( पु० )-विश्वकर्म का

राजा, परमेश्वर ।  
विश्वकर्म ( पु० )-मत्स्य, अद्भुत, यक्षीन ।

विश्वकर्म ( पु० )-मत्स्य ( पु० )-मत्स्य मादि  
इश्व देवता, यक्षी, ज्ञात ।

विश्वकर्म ( पु० )-विश्वकर्म का नाजिक,  
परमात्मा ।

विष् ( ३ उ० )-क्यासि, क्यास देवता,  
कैलास । स्त्री०-कैला, विष् ।

विष् ( ग० )-अल, कमल की जंगल,  
कमल की जंगल । अस्त्री०-अद्भुत,

गर्ल, यत्सनाम नामक विष् ।  
विष्कर्म-पात्री [ न ] ( पु० )-गिरीष दृष्ट,

चर्म का घेड़, घेड़ । वि०-विष्  
की दूर करने वाला ।

विष्कर्म ( वि० )-विष्कर्म, दुःखी ।  
विष्कर्मता ( स्त्री० )-अद्भुत, अद्भुत ।

विशंकट (वि०)—बड़ा, मजबूत, शक्ति-  
शाली ।

विशद (वि०)—स्वच्छ, वेदांग, साफ,  
सफेद, चमकीला, शान्त ।

विशय (पु०)—सन्देह, अनिश्चितता ।

विशर (पु०)—बध, नाश, फूटपड़ना ।

विशस् (१ प०)—काटना, कटलकरना ।

विशस्त्र (वि०)—शस्त्रहीन, गैरमहकूज ।

विशाल (पु०)—कार्तिकेय, मार्थी, शिव,  
देवविशेष ।

विशाला (स्त्री०)—१६वें नक्षत्र का नाम ।

विशारद (वि०)—चतुर, दल, प्रसिद्ध ।  
बूढ़ । [सिक्खी, प्रसिद्ध ।

विशाल (वि०)—बड़ा, विस्तीर्ण,

विशालता-त्वम्=बड़प्पन, गौरव,  
महत्त्व ।

विशालाक्ष (वि०)—बड़ी २ आंखों-  
वाला । पु०—विष्णु, गरुड़, शिव ।

विशिश (वि०)—येताण का, शिखर-  
रहित । पु०—तीर ।

विशित (वि०)—तेज, तीक्ष्ण ।

विशिष (पु०)—मन्दिर, घर, महल ।

विशिप् (३ प०)—तारीफ करना, मह-  
दूद करना, विशेषता दिखलाना,  
लक्षणयुक्त करना ।

विशिष्ट (वि०)—विशेषतायुक्त, खास,  
लक्षणयुक्त, परिभाषा किया गया,  
श्रेष्ठ ।

विशिष्टता (स्त्री०)—श्रेष्ठता, विशेषता ।

विशिष्टाद्वैतवाद (पु०)—वैष्णवप्रसारक  
रामानुज का सिद्धान्त कि जीव  
और प्रकृति एक ही और वास्त-

विक वस्तु हैं । [ हुमा ।

विशीर्ण (वि०)—खरिडत, नष्ट, मुरकाया

विशील (वि०)—असम्भ्य घेहूँदा, क्रूर ।

विशुद्ध (वि०)—शुद्ध किया हुआ,  
पवित्र, निर्लेप ।

विशुद्धि (स्त्री०)—पवित्रता, सफाई,  
अशुद्धिराहित्य ।

विशृंखल (वि०)—अबाध, अनिय-  
न्त्रित, बेकायू ।

विशेष (वि०)—ज्ञात, बहुत । पु०—दो  
वस्तुओं का फर्क या इम्तियाज ।

विशेषक (वि०)—पहचानने वाला,  
फर्क करने वाला ।

विशेषण (वि०)—विशेषताद्योतक, लक्ष-  
णिक । न० लक्षण, ऐसा शब्द जो  
किसी सत्ता [विशेष] की विशे-  
पता, गुणवा लक्षण का द्योतक हो ।

विशेषित (वि०)—छुलित, विन्धित,  
अंकित, श्रेष्ठ ।

विशेष्य (वि०)—लक्षण करने योग्य,  
विशेषतायुक्त, उत्तम । न०—बड़े  
संज्ञा लिमकी किसी विशेषण  
द्वारा विशेषता दिखलाई लाये ।

विशोक (वि०)—शोकरहित । पु०—  
अशोकवृक्ष । [ करण ।

विशोधन (न०)—शुद्ध करना, सुद्धी-

विशोध्य (वि०)—शोधने योग्य ।  
न०—शुद्ध, कर्ज ।

विशोषण (न०)—मुलाना, शुद्धीकरण ।

विश्रम् (४ प०)—आराम लेना,  
ठहरना, रुकना । [ रहितता ।

विश्रम (पु०)—आराम, ठहरना, श्रम-



विश्वकथ ( वि० )-विश्वस्त, शान्त,  
नज्जुत, निश्चिन्त ।

विश्वकथम् ( श्व० )-निहर् होकर, वे  
रौक टोक । [ विश्वास रखना ।

विश्वम् ( १ भा० )-मरोसा करना,  
विश्वम् ( पु० )-मरोसा, विश्वास,

आराम, कृत ।

विश्वम्प्राप्त-स्थान ( ग० )-वह व्यक्ति  
जिस पर मरोसा किया जा सके ।

विश्वम् ( पु० )-पनाह, रक्षास्थान ।

विश्ववाः [ च् ] ( पु० )-पुत्रस्त्य मुनि का  
पुत्र और रावण का पिता ।

विश्वान्त ( वि० )-रुका हुआ, आराम  
लेने वाला, शान्तचित्त ।

विश्वान्ति ( स्त्री० )-आराम, विश्राम ।

विश्राम ( पु० )-आराम, शान्ति, शान्त-  
चित्तता, चहनेहीनता ।

विश्रा [ स्त्रा ] व ( पु० )-गिरना, टपकना,  
'बहाव, प्रसिद्धि । [ रहने वाला ।

विश्रुत ( वि० )-प्रसिद्ध, प्रसन्न, खुश  
विश्रुति ( स्त्री० )-प्रसिद्धि, टपकना ।

विश्रिष्ट ( ४ प० )-छूट पड़ना, अलग  
होना । [ अलहदा ।

विश्रिष्ट ( वि० )-अलग, विभिन्न,  
विश्लेष ( पु० )-अलहदगी, जुदाई,

वियोग, अभाव । [ विसर्क ।

विश्लेषित ( वि० )-अलग किया हुआ,  
विश्व ( सर्व० )-सब, सबस्त, समस्त ।

न०-दुनिया, जगत्, ससार । पु०-  
सब का अभिमान्नी जीवात्मा ।

विश्वकर्मा [ न् ] ( पु० )-परमेश्वर, मूर्त्य  
देवशक्ति ।

विश्वकृत ( पु० )-विश्वकर्मा, परमेश्वर ।

विश्वकेतु ( पु० )-विश्व जिनका मगदा  
है, अनिरुद्ध ।

विश्वधारिणी ( स्त्री० )-पृथिवी ।

विश्वम्भर ( पु० )-विश्व का पाठन,  
ईश्वर, इन्द्र, हिण्ड ।

विश्वम्भरा ( स्त्री० )-पृथिवी ।

विश्वरोताः [ न् ] ( पु० )-ससारोत्पादक  
परमात्मा ।

विश्वसक् [ ज् ] ( पु० )-पूर्ववत् ।

विश्वस्त ( वि० )-नीतिमिर, जात  
निश्वास, विश्वासप्राप्त ।

विश्वाची ( स्त्री० )-एक अप्सरा ।

विश्वात्मा [ न् ] ( पु० )-विष्णु, परमात्मा ।

विश्वानित्र ( पु० )-गाधिपुत्र एक क्षत्रिय ।

विश्वाराट् [ ज् ] ( पु० )-विश्व का  
राजा, परमेश्वर ।

विश्वारू ( पु० )-प्रत्यय, ब्रह्मा, यक्षीन ।

विश्वदेवाः ( पु० बहु० )-ऋतु गादि  
दश देवता, वहि, आग ।

विश्वेश ( पु० )-विश्व का मालिक,  
परमात्मा ।

विष् ( ३ प० )-ठपाति, ठपात होना,  
कैलना । स्त्री०-मेला, विष्टा ।

विष ( न० )-जल, कमल की केशर,  
कमल की हगदी । अस्त्री०-जहर,  
गरल, बटसनाम नामक विष ।

विषप्र-पाती [ न् ] ( पु० )-शरीर वृक्ष,  
धम्पे का पेड़, बहेड़ा । वि०-विष  
को दूर करने वाला ।

विषण ( वि० )-विषादयुक्त, दुःखी ।

विषणता ( स्त्री० )-जहता, मगदा ।

विषयधर(पु०)—सपे, साप ।

विषयनिष्पत्ति (पु०)—विषय की चिकित्सा करने वाला वैद्य ।

विषयम(वि०)—असमान, ऊँचा नीचा, जो घराघर न हो, दारुण, सख्त, सबट । न०—एक प्रकार का छन्द ।

विषयमज्जर (पु०)—स्वरविशेष, तेज युक्तार ।

विषयमविताग (पु०)—असमानाश, हिस्सों का घराघर न होना ।

विषयमव्य (वि०)—ऊँचे नीचे में टहरने वाला, मुसीबत में फसा हुआ, विषयप्रस्त ।

विषयमायुध(पु०)—कानदेव, कन्दर्प ।

विषय (पु०)—इन्द्रियादिकों से जाने वाले मण्डादि, मजसून, देश, आश्रय ।

विषयि[न] (न०)—ज्ञान, इन्द्रिय ।

विषयी[न] (वि०)—विषयासक्त, भोगों में फसा हुआ । पु०—राजा, काम-देव, शब्द ।

विषाय(न०)—पशुओं के सींग, हाथी का शूकर का दात ।

विषायी [न] (पु०)—हाथी, सींग वाले पशु, मिषाहा, शृगाटक ।

विषाद (पु०)—जड़ता, अवसाद, दुःख, दिल का टूटना ।

विषारान्ति(पु०)—काला चतुरा ।

विषु(अ०)—साम्य, घराघरी, गाना रूप ।

विषुव यत् (न०)—यह पाल जब कि रात और दिन बराबर हो ।

विष्टप(पु०)—घाम्यशृङ्गर ।

विष्टिकर (पु०)—घेरे कर खाने वाले

पक्षी, जैसे—तीतर, मोर, मुर्गा आदि ।

विष्टप (अस्त्री०)—संचार, दुनिया ।

विष्टपहारी[न](वि०)—दुनियापरस्त ।

विष्टम् (पु०, लप०)—रोकना, जमाना ।

विष्टम्न (पु०)—रोक, रुकावट, कठग, सूयावरोध, अवरोध । [ वृत्त ।

विष्टर (पु०)—स्थान, जगह, आसन,

विष्टा-ष्टा (स्त्री०)—सल, पाखाना ।

विष्टि (स्त्री०)—गजदूरी, पेशा, बेगार, ज्योतिषशास्त्र में भद्राविशेष ।

विष्टु (पु०)—व्यापक परमेश्वर, पौराणिकों के त्रिदेव में का दूसरा देव जिस का धर्म संचार का

पालन करना है, अग्नि, पवित्र पुरुष, एक स्मृतिकार, आश्रय ।

विष्टुमुत्त (पु०)—चाणक्यमुनि । [ एक ।

विष्टुपुराण (पु०)—१८महापुराणों में से

विष्टपुराण (पु०)—राजा परीक्षित ।

विष्टुरथ-साहज (पु०)—गडह पक्षी ।

विष्टुम्ह ( १ जा० )—महकना, हरकत करना ।

विष्टुम्ह (पु०)—धटकन, हरकत ।

विष्टुम्ह (१ जा०)—बहना ।

विष्टुम्ह (पु०)—बहाव, टपकना ।

विस् (४प०)—हालना, जँकना, भेजना ।

१प०—जाना, हरकत करना ।

विस्मुत्त (वि०)—अलग, जुदा ।

विस्योग (पु०)—जुदाई, अलखदगी ।

विस्वद् ( १प० )—प्रतिष्ठाभग करना, पोसा देना ।

विस्वाद् (पु०)—पोसा, प्रतिष्ठाभग ।

विस्वकट (वि०)—मयझूर, सीकनाक ।

पु०-शेर, इन्द्रदीवस ।  
 विसंगत (वि०)-असङ्गत, अमाङ्गल्य ।  
 विसंघ (वि०)-संसारहित, अचेतन ।  
 विसर्ग (पु०)-दान देना, छोड़ना, जल  
 का त्याग, मोक्ष, प्रलय, लेखन-  
 कला में एक चिन्हविशेष जो [ः]  
 इस प्रकार का होता है ।  
 विसर्जन(न०)-त्याग, देना, छोड़ना ।  
 विसर्जनीय (वि०)-त्यागने योग्य,  
 छोड़ने लायक, विसर्गपिण्ड ।  
 विसर्जित (वि०)-त्यक्त, दत्त, भेजा  
 हुआ ।  
 विसर्प (पु०)-रेंगना, आगे पीछे सर-  
 कना, एक प्रकार का रोग ।  
 विसर्पश्म (न०)-मोम ।  
 विसर्पण (न०)=विसर्प ।  
 विसू [ घू ] चिका (स्त्री०)-क्षिप्वा  
 [ कालरा ] नामक रोग ।  
 विसूरण-ना=दुःख, कष्ट ।  
 विसूरित (न०)-पछताया, दुःख ।  
 विसूरिता (स्त्री०)-ज्वर, युञ्जार ।  
 विसृ (१प०)-फैलना, विस्तृत होना,  
 सरपट दीड़ना ।  
 विसृज् (६प०)-त्यागना, छोड़ना, भेजना ।  
 विसृत(वि०)-विस्तीर्ण, फैला हुआ ।  
 विसृप् (१प०)-गाना, मांच करना,  
 बच भागना ।  
 विसृष्ट (वि०)=विसर्जित ।  
 विसृष्ट [ स्तर ] र (पु०)-फैलाव, विध-  
 रण, घीड़ाई, विशालता । [ विशाल ।  
 विस्तीर्ण (वि०)-विपुल, फैला हुआ,  
 विस्तृ ( ५ व० )-फैलना, विधराना,

फैलाना, ढकना । [ विस्तृत ।  
 विस्तृत ( वि० )-फैला हुआ, घीड़ा,  
 विस्तृति (स्त्री०)=विस्तार ।  
 विस्तृ (६उ०)=विस्तृ ।  
 विस्त्या ( १ आ० )-ठहरना, अलग  
 छड़े होना, फैलना ।  
 विस्पाट(वि०)-साफ़, प्रत्यक्ष, प्रकट ।  
 विस्फूर् ( ६प० )-कांपना, हिलना,  
 चलकनर ।  
 विस्फुरित ( वि० )-हिलता हुआ,  
 हिला हुआ, फूला हुआ ।  
 विस्फुर्म् ( १प० )-दहाड़ना, गर्जना ।  
 विस्फुलिंग(पु०)-भाग की चिनगारी,  
 एक प्रकार का धूप ।  
 विस्फूर्जित(न०)-दहाड़, चीख, परिणास  
 विस्फोटः-टा=छोटी २ फुंसी, चैक ।  
 विस्मय (पु०)-आश्चर्य, अद्भुत, जलौष ।  
 विस्मरण (न०)-भूल, याद न रहना ।  
 विस्मि ( १आ० )-आश्चर्य करना,  
 सन्देह में होना, तारीफ़ करना ।  
 विस्मिन्त (वि०)-आश्चर्ययुक्त, हैरान  
 हुआ, विस्मयविधत् ।  
 विस्मिति (स्त्री०)=विस्मय ।  
 विस्मृ ( १प० )-भूलना, याद न रहना ।  
 विस्मृत (वि०)-भूला हुआ ।  
 विस्मृति ( स्त्री० )=विस्मरण ।  
 विस्मृ ( १ आ० )-फिसलना, गिरना,  
 ढीला होना ।  
 विस्मृता ( स्त्री० )-गरा, मुड़ापा ।  
 विह [ हं ] ग (पु०)-पत्ती, परिन्द,  
 सूर्य, चन्द्रमा, बादल, यह, तीर ।  
 विहंगम ( पु० )-सूर्य, पत्ती ।

विहृत ( वि० )-आहत, रोका हुआ,  
थप किया हुआ । पु०-जैनमन्दिर

विहृति ( पु० )-नित्र, साथी । स्त्री०-  
कत्ल, थप, नाकासपाही ।

विहृत् ( २ प० )-मारना, कत्ल करना,  
रोकना, रूपागना ।

विहृतन ( न० )-कत्ल, मार, चोट, थप ।  
विहृत-रण=हरना, छेना, जलहृदनी ।

विहृती [ तृ ] ( पु० )-घूमनेवाला, लुटेरा  
विहृप ( पु० )-अत्यन्त हर्ष ।

विहृच् ( १ प० )-मुस्कराना, हँसना ।  
विहृषन घित ( न० )-मन्द मुस्कान,  
मुस्करावट ।

विहृष ( पु० )-पूँर्ववत् ।  
विहृस्त ( वि० )-हरतरहित, बेक्राय

किया, परिहृत ।  
विहृ ( २ प० )-रूपागना, चोटना ।

विहृयस्-स ( कस्त्री० )-आकाश, आस-  
नाग । पु०-पक्षी ।

विहृर ( पु० )-छींटार्थपदगमन,  
भ्रमण, छीना, छींटो का मन्दिर ।

विहृरी [ नृ ] ( वि० )-विहृर  
करने वाला ।

विहृति ( वि० )-कृत, किया गया,  
विधिपूर्वक घटलाया हुआ ।

विहृति ( वि० )-छोटा हुआ, यजित, त्यक्त  
विहृ ( १ प० )-छीनना, छेना, हटाना,  
गिराना ।

विहृट ( पु० )-चोट, मुकमान ।  
विहृष्ट ( वि० )-ठप्पावृष्ट, तप आदि

के चपराया हुआ ।  
वी ( २ प० )-कानिष्ठ, पाहना,

नस्पत्त होना, ठपासि, फेंकना,  
कैंकना, खाना ।

वीक ( पु० )-घायु, पक्षी, हृदय ।  
वीक्ष ( १ आ० )-देखना, अवलोकन करना

वीक्षण-का=देखना, अवलोकन करना  
न०-नेत्र, आस ।

वीक्षित ( न० )-दृष्टि, निगाह ।  
वीक्ष्य ( वि० )-देखने योग्य । पु०-

नट, घोड़ा । न०-आश्चर्य, विस्मय ।  
वीचि ( अवली० )-लहर, तरंग,

अविचार, हर्ष, विप्राप्त ।  
वीचिमासी [ नृ ] ( पु० )-सागर, समुद्र ।

वीची ( स्त्री० )=वीचि ।  
वीज ( १ आ० )-जाना, गमन करना ।

१० व०-पखा करना ।  
वी [ वी ] ज ( न० )-शुक्र, वीर्य,

अकुर, अरुपकगणित, हृत्तककरा,  
धान्यादि का फल ।

वी [ वी ] जगणित ( न० )-एलजबरा ।  
वीजकोष ( पु० )-घराटक, कीड़ी ।

वीजन ( न० )-पंखा, पस्तु, हवा करना  
वीजी [ नृ ] ( पु० )-उत्पादक, पैदा

करने वाला, पिता ।  
वीक्य ( वि० )-घटित आदर के

योग्य, कुलीन, स्वान्दानी ।  
वीटि-टिका-टी ( स्त्री० )-पाग का

कोटा, छगाया हुआ पाग ।  
वीचा ( स्त्री० )-इसी नामका यात्रा, यीन

वीचायाद ( वि० )-वीणा [ वीन ]  
के यजाने वाला ।

वीत ( वि० )-गत, गया हुआ, गुजर  
हुआ, नष्ट, मुक्त, पाया हुआ ।

वीतराग ( वि० )—इच्छारहित, शान्त,  
रागरहित । पु०—सैन भर्तृ ।

वीतशोक ( पु० )—अशोकयुक्त । वि०—

जिस का शोक दूर हो गया हो ।

वीतमूत्र ( न० )—यद्यप्यवीत, जनेऊ ।

वीति ( स्त्री० )—गति, जाना, दीप्ति,

चमकना, खाना, शुद्धि । पु०—घोड़ा ।

वीतिहोत्र ( पु० )—कार्तिक, सूर्य ।

वीचि-पी ( स्त्री० )—पक्षि, खेण, राहता,

भाग, गली, काठ्य या नाटक

का एक अंग ।

वीषिका ( स्त्री० )—पूष्यवृत् ।

वीष् ( वि० )—पवित्र, शुद्ध । न०—

आकाश, वायु, अग्नि ।

वीणाश्रु ( पु० )—कूपादिमुसमन्धन का

साधन, घाट ।

वीषा ( स्त्री० )—विमली, विद्युत् ।

वीप्सा ( स्त्री० )—व्याप्ति, फैलना,

शब्दानुवृत्ति ।

वीर ( वि० )—बहादुर, वेगवाला,

शूरता वाला । पु०—योद्धा, भट,

अग्नि, पुन, पति, विष्णु । न०—

मिर्च, सरकरहा ।

वीरक ( पु० )—योद्धा, करवीरवृक्ष ।

वीरण ( न० )—उशीर, एक प्रकार का

चन्दन । [ पशुयुद्ध ।

वीरन्धर ( पु० )—समूर, पगड़े की बाकट,

वीरबाहु ( पु० )—विष्णु ।

वीरस ( पु० )—काट्यादि के शृंगारादि

रत्नों में से एक ।

वीररेणु ( पु० )—भीमसेन ।

वीरमू-प्रमू-प्रसविनी ( स्त्री० )—वीर-

माता, पुत्र की माता ।

वीरसेन ( पु० )—मल्लराजा का पिता ।

वीरा ( स्त्री० )—वीर की स्त्री, पुत्र

वाली स्त्री, आमलकी अतीव ।

वीरासन ( न० )—वीरों का आसन,

आसनविशेष । [ ईश्वर देव ।

वीर्य-धा ( स्त्री० )—विस्मृतछना, फैली

वीर्य ( न० )—शुक्रनातवां घातु, परा-

क्रम, प्रभाव, तीव्र, दीप्ति ।

वीर्यवान् ( वि० )—बलवाला, वीर्य-

वाला, वीरवाला ।

वीर्य ( पु० )—शुद्धि, चायल आदि

का गन्तव्य, भाग, भार, योद्धा ।

वीर्यधिक ( पु० )—योद्धा उठाने वाला,

भारवाही ।

वीह्वर=विह्वार ।

वृ ( १० उ० )—आच्छादन, ठकना ।

११ आ०—सेवा करना । १२ उ०—स्वी-

कार करना, मंजूर करना ।

वृक् ( १ आ० )—आदान, पकड़ना,

ग्रहण करना ।

वृक ( पु० )—सेहिपा, सलू, कीमा,

एक रातस, वकुलवृक्ष, हल, गीदड़ ।

वृकदश ( पु० )—कुत्ता, कुकुर ।

वृकपूष ( पु० )—गीदड़, शृगाल ।

वृकोदर ( पु० )—भीम, ब्राह्मण ।

वृकृण ( वि० )—खिन्न, कटा हुआ ।

वृन ( पु० )—पेड़, दरखत ।

वृत्तक ( पु० )—छोटा पेड़, पीड़ा ।

वृत्तवर ( पु० )—चन्दर, वानर ।

वृत्तच्छाय ( न० )—पेड़ों की छाया,

गहरी छाया ।

यक्षनाथ (पु०)-यष्टयक्ष, यष्ट का पेड़।

यक्षनिर्याम (पु०)-गोंद।

यक्षनिह (पु०)-कुल्हाड़ा।

यज् (२ भा०)-परहेज करना, त्यागना।

३ प०-त्यागना, पसन्द करना,

पूति करना, एटाना, देना, मारना।

१ प०, १० उ०-परहेज करना, त्या-

गना, मुस्तेस्ना करना।

यजन (न०)-पाप, गुनाह, आकाश।

पु०-केश, घाल। वि०- कुटिल,

तिछो।

युग्मिन् (न०)-पूर्वयत्।

युष् (८८०)-खाना, खर्च करना। ६ प०-

देना, सन्तुष्ट करना। [यत्तेना,

यत् [ गच्छति-यच्छति ] (१३०)-होना,

यत् (वि०)-प्राप्यत, स्वीकृत, भांगा

गया, बरा गया।

युति(स्त्री०)-मांगना, घेएन, लपेटना।

युत्त (वि०)-संचटित, सम्पादित, गत,

गोल, मरा हुआ, बूढ़, पठित,

चरणन हुआ, मसिद्ध। न०-घटना,

समाचार, सूचना, इतिहास, वृत्तान्त,

अगल, रीति, दायरा, खदोभेद।

पु०-कर्म, कलुआ।

युत्तवर्कटी (स्त्री०)-तरयूज।

युत्तगन्धि (न०)-गन्धविशेष।

युत्तफल (न०)-काली मिर्च। पु०-

आना, बर, आमलक।

युत्तन्ध (वि०)-जखड़े चरित्र वाला,

गुन नादि की पूजा में लगा हुआ,

सचपरित्र। [झाल।

युत्तान्त (पु०)-आत, संवाद, वर्णन,

युति (स्त्री०)-आजीविका, स्थिति,

अन्तःकरण का परिणामविशेष,

व्यवहार।

यूत्र (पु०)-अन्धकार, शत्रु, एक दैत्य,

पर्वत, शठ, मेघ।

यूत्रहा [न्] (पु०)-इन्द्र, देवराज।

यूया (अ०)-निरर्थक, व्यर्थ, बेफायदा।

यूयादान (न०)-वह दान जिस का

कुछ फल न हो, निःप्रयोजनदान।

यूहु (न०)-शैलज नामक गन्धद्रव्य।

पु०-विधारा का पेड़। वि०-बूढ़ा,

चतुर, गिपुण।

यूहुता-त्यम्-यूहुतापा, रणविरत्य।

यूहुप्रपितामह (पु०)-पड़दादा, बाप

का बाबा।

यूहुयवाः (स्त्री०) (पु०)-इन्द्र, देवराज।

यूहुसय (पु०)-यूहु का समूह, घातुक।

यूहु (स्त्री०)-यूही स्त्री, गतयीबना

नारी।

यूहुि(स्त्री०)-पड़ोसरी, सम्पत्ति, अम्यु-

दय, तरक्री। पु०-सूद, व्याज।

यूहुिजीविका ( स्त्री० )-व्याज की

आमदनी।

यूहुियाहु (न०)-मार्गदीमुखग्राह, वह

ग्राह जो सम्पत्ति के लिये विधा-

दादि शुभकार्यों में किया जाता है।

यूहुआजीव (वि०)-व्याज की आमदनी

से जीने वाला, सूदखोर।

यूष् ( १० उ० )-चमकना, दोसितान,

होना। १ आ०-- यदना।

यून्त (न०)-छांटला, फल तथा पत्तों

का वन्यपन।

वृन्ताक (पु०)--वैष्णव नामक फलशाक ।  
वृन्द (न०)--समूह, गिरीह, दश अरघ  
की सह्या का वाचक ।

वृन्दारक (पु०)--देवता, प्रधान । वि०-  
सुन्दर, मनोह ।

वृन्दारवन (न०)--अपने नाम से प्रसिद्ध  
मयुरा है समीप तीर्थविशेष ।

वृन्दिष्ठ (वि०)--अतिश्रेष्ठ ।

वृन्दिषक (पु०)--विच्छू, राशिविशेष,  
कीटविशेष ।

वृष् (१ पु०)--सौंचना, जल देना, उत्पन्न  
करने की सामर्थ्य का होना ।

वृष (पु०)--बैल, इन्द्र, धर्मराज, काम-  
देव, मयूरपुच्छ, दूसरी राशि,  
बूहा, शत्रु ।

वृषण (पु०)--अण्डकोष ।

वृषध्वज (पु०)--शिव, महादेव ।

वृषपदां [नृ] (पु०)--महादेव, एक वैद्य ।

वृषभ (पु०)--बैल, श्रेष्ठ, काम का छिद्र,  
लिंगविशेष ।

वृषभानु (पु०)--राधिका का पिता ।

वृषल (पु०)--भूद्र, अश्व, धर्महीन,  
गानर, चन्द्रगुप्त नामक राजा ।

वृषली (पु०)--पिता के घर में अवि-  
वाहिता शीघ्रसंयुक्ता कन्या,  
वृषलजाति की स्त्री ।

वृषलीपति (पु०)--वृषली नाम की  
कन्या का विवाहने वाला पुरुष,  
शूद्रा का पति ।

वृषलोचन (पु०)--भूषक, बूहा । न०--  
बैल के से नेत्रों वाला ।

वृषवाहन (न०)--महादेव, शिव ।

वृषस्यन्ती (स्त्री०)--विषय की इच्छा  
करने वाली स्त्री, कामुकी ।

वृषारूपायी (स्त्री०)--पार्यती, लक्ष्मी,  
इन्द्राणी, स्वाहा, अग्निपार्या,  
जीयन्ती नामक ऋषय ।

वृषाकपि (पु०)--शिव, विष्णु, सूर्य,  
मणि, इन्द्र ।

वृषाङ्ग (पु०)--महादेव ।

वृषि-पी (स्त्री०)--प्रतिपों का एक  
प्रकार का कुशावन ।

वृषोत्सर्ग (पु०)--मृतमनुष्य के उद्देश्य  
से विजार का छोड़ना रूप त्याग ।

वृष्टि (स्त्री०)--वर्षा, वरसना ।

वृष्टिभू (पु०)--मैंढक । वि०--वर्षा में  
होने वाला ।

वृष्टिज (पु०)--यादव, कृष्ण, मैंढा, मेघ ।

वृष्टिजगर्भ (पु०)--श्रीकृष्ण ।

वृषभ (न०)--वीर्यवर्तुण एक प्रयोग,  
बाजीका ऋषय । पु०--उड़द ।

वृद्ध (१० उ० १ पु०)--घनकता, प्रका-  
शित होना, शब्द करना, बहना ।

वृ [वृ] इत् (वि०)--विस्तारयुक्त, बहा ।

वृ [वृ] इती (स्त्री०)--कहेली, शब्द,  
अन्वेषेद, ऊपर का वस्त्र ।

वृद्धानु (पु०)--सूर्य, चीते का वृत्त ।

वृहद्रथ (पु०)--अथर्वशा का पुत्र, इन्द्र,  
यज्ञपात्रविशेष, सामवेद का एक  
भाग । वि०--बड़े रथवाला ।

वृ [वृ] हरूपति (पु०)--देवगुरु, वाणी  
का पति ।

वृ (उ०)--स्वीकार करना, सरना ।

वृग (पु०)--तेजी, जब, प्रवाह, वीर्य,

समूह, 'विचकारी, महाकाल,  
न्याय में सरकारविशेष ।  
वेगी [न] ( वि० )-तेज, वेग वाला ।  
पु०-ग्राज नानक पक्षी ।  
वेण् ( १३० )-गमन करना, पदिचा-  
नगा, देखना, स्तुति करना, यात्रे  
पर तापना, लेना, सोचना ।  
वेण ( पु० )-पृथुराज का पिता, धर्म-  
संकरजातिविशेष ।  
वेणि-णी ( स्त्री० )-केशों की रचना-  
विशेष, जलसमूह, देवदारु का  
वृक्ष, नदीभेद, गंगा यमुना और  
सरस्वती के संगम का स्थान-  
विशेष ।  
वेणु ( पु० )-बास, बकी, मुरली ।  
वेणुधम ( पु० )-बकी बजाने वाला  
पुरुष, वेणुवादक ।  
वेणुवाद ( पु० )-पूर्ववत् ।  
वेत्त-स ( पु० )-धैर्य का वृक्ष ।  
वेत्तन ( न० )-तनख्खाह, गजदूरी,  
दमंदहिजा । [ वाला देश ।  
वेत्तस्थान [ यत् ] ( वि० )-बहुत धैर्य  
वेत्ताल ( पु० )-गल्लविशेष, द्वारपाल,  
शिव जी के गणों का स्वामी,  
भूमाधिष्ठित मुदा ।  
वेत्ता [त] ( वि० )-प्राप्त, जानने वाला,  
प्राप्त करने वाला, ठठाने वाला ।  
वेत्त ( पु० )-वेत्त ।  
वेत्तपर ( पु० )-द्वारपाल, छपीडीवान्,  
वि०-धैर्य धारण करने वाला ।  
वेत्त [ त्रा ] यती ( स्त्री० )-मालवप्रदेश  
में एक नदी । [ पटाहं ।  
वेत्तासन ( न० )-वेत्त की पुरानी, मुदा,

वेद ( पु० )-विष्णु, शास्त्रविषयकज्ञान,  
धर्म और ब्रह्म के प्रतिपादक  
अपीरुषेय ग्रन्थविशेष की चार  
हैं यथाः--ऋक्, यजु, साम, अथर्व ।  
वेदगर्भ ( पु० )-ब्रह्मा, ब्राह्मण ।  
वेदत्रय त्रयी=तीन वेद अर्थात् ऋक्,  
यजु और साम ।  
वेदन ( न० )-बहु ज्ञान जिससे कुछ  
दुःखादि का अनुभव होता है, ज्ञान ।  
वेदना ( स्त्री० )-कष्ट, दुःख ।  
वेदनिन्दक ( पु० )-वेद की निन्दा करने  
वाला पुरुष, नास्तिक समुदाय ।  
वेदपाठी [न] ( वि० )-वेदों का पढ़ने  
वाला, वेदाभ्यासी ।  
वेदपारग ( पु० )-वेदवेत्ता ब्राह्मण । वि०-  
वेद के पार की प्राप्ति होने वाला ।  
वेदनाता [न] ( स्त्री० )-गायत्री ।  
वेदवती ( स्त्री० )-कुशुब्धन नानक  
राजा की कन्या ।  
वेदवचन ( न० )-वेदोक्त वाक्य ।  
वेदवदन ( न० )-ठपारकर, घागर ।  
वेदवित ( पु० )-विष्णु, ब्राह्मण । वि०-  
वेदों को जानने वाला ।  
वेदविहित ( त्रि० )-वेदप्रतिपादित,  
वेदां ॥ कहा गया ।  
वेदव्यास ( पु० )-सत्यवती के गर्भ से  
उत्पन्न पराशर का पुत्र, ब्रह्म-  
श्रुतों के निर्माता ऋषि ।  
वेदाग्रणी ( स्त्री० )-सरस्वती ।  
वेदाङ्ग ( न० )-वेद के आगम्य शास्त्र  
जो हैं यथा--शिक्षा, कल्प,  
ठपारकर, निरुक्त, उपोत्तिप  
और छन्द ।



वेदाधिप(पु०)--वेदों के पति जो चार हैं यथा:-बृहस्पति, सृगु, मीन और बुध ।

वेदान्त (पु०)--ब्रह्म का प्रतिपादन करने वाला शास्त्रविशेष ।-

वेदान्ती[नृ](पु०)--वेदान्तशास्त्रवेत्ता ।

वेदादि(पु०)--प्रणव, ओंकार ।

वेदि-दी ( स्त्री० )--होमादि के लिये । संस्कार की हुई भूमि, सरस्वती ।

वेदिना ( स्त्री० )--अर्जुनपत्नी द्रौपदी ।

वेदित(वि०)--ज्ञापित, बतलाया हुआ ।

वेदितव्य ( वि० )--ज्ञातव्य, जानने योग्य । [ बाला ।

वेदिता [ तृ ] ( वि० )--ज्ञाता, जानने

वेदी[नृ] (पु०)--परिहृत, विह्वल, ब्रह्म । वि०--जानने वाला ।

वेदीक ( वि० )--वेद में कहा हुआ, वेदविहित ।

वेप ( पु० )--वींघना, वेपल, लघुप्र-  
लम्प यह योगविशेष जो विवा-  
हादि शुभकार्यों में वर्जित है ।

वेपक ( न० )--कर्पूर, धनिया । वि०-  
वींघने वाला । [ मूल, ब्राह्मतीर्थ ।

वेपस ( न० )--अंगूठे की गड़, अंगुष्ठ-

वेधाः [स्र] (पु०)--शिव, ब्रह्मा, विष्णु,  
सूर्य, पंडित, आक का पेड़, चन्द्रमा ।

वि०--रचने वाला । [ तुम्हा ।

वेधित ( वि० )--छिद्रित, बिह्व, धींघा

वेधनी ( स्त्री० )--जलीका, जोंक ।

वेध्य ( न० )--लक्ष्य, निशाना । वि०-  
वींघने लायक ।

वेन=वेण् ।

वेप् ( १ सा० )--कांपना, हिलना ।

वेपयु ( पु० )--कम्प ।

वेपन ( न० )--कांपना, हिलना ।

वेम ( पु० )--कपड़ा धुनने का दण्ड ।

वेमा [नृ] ( अस्त्री० )--पूर्वघत् ।

वेर ( न० )--शरीर, केशर, बैंगन ।

वेल् ( १ प० )--कांपना, हिलना ।

वेल ( न० )--उपवन, बगीचा, समय ।

वैला ( स्त्री० )--चमुड़तट, समुद्र का किनारा, सर्पांदा, समय, बुध की स्त्री, दांतों का मांस ।

वैल् ( १ प० )--कांपना, हिलना ।

वैल्न ( न० )--काली निषं ।

वैल्न ( न० )--काष्ठनिर्मित पूरी आदि बनाने का साधन सर्पांदा वेलन, चीड़े आदि का पृथ्वी पर लोटना ।

वैश-य ( पु० )--अलंकारादि की सजावट का काम, नेपथ्यकर्म, वैश्या का घर, गृहनाश्र, प्रवेश ।

वैशदान ( पु० )--सूर्य की शोभा ।

वैशधारी[नृ](पु०)--कपटस्वरूप बनाने वाला, छली तपस्वी ।

वैशंत ( पु० )--छोटा तालाब, नदि ।

वैश [स्र] र ( पु० )--छोटा घोड़ा ।

वैश[स्र] वार (पु०)--मांस का धोवन, मांसपौतगल ।

वैशम [नृ] ( न० )--गृह, घर ।

वैशमभू ( स्त्री० )--घर बनाने लायक जगह, वास्तु ।

वैश्य ( न० )--वैश्या का घर ।

वैज्या-रमा ( स्त्री० )--शारांगना, रगड़ी ।

घेष्ट ( १ भा० )-लपेटना, आच्छादित करना । [ घेठन, मुकुट, गुगल ।  
घेष्टक-एत ( न० )-पगड़ी, हुपट्टा,  
घेष्टित ( वि० )-चारों तरफ घिरा हुआ, रुढ़, घेरा हुआ ।

घेस् ( १ प० )-जाना, गमन करना ।  
घेसन ( न० )-दाख का घून अर्थात् घेसन नाम से प्रसिद्ध घूर्ण ।

घेहत्त (स्त्री०)-उभंघात करने वाली गी ।

घेहार ( पु० )-विहार नामक प्रदेश ।

घे ( १ प० )-सुखाना, शुष्क करना ।

अ०-पादपूरण, प्रार्थना, अनुनय, सम्बोधन, निश्चय आदि अर्थों का बोधक ।

घेशतिक ( वि० )-बीस रुपये से खरीदा हुआ, विशतिफीत ।

घेकल ( न० )-पक्षीपक्षीत, जनेक ।

घेकल्पिक ( वि० )-विकल्प से प्राप्त या होने वाला, सुझारी ।

घेकल्प ( न० )-विकलता, चञ्चलाहट ।

घेकारिक ( वि० )-विकारयुक्त, विकारवाला ।

घेकुपट ( पु० )-घिण्ट, दम्ब, गरुड़ ।  
न०-उपरिष्ठ लोकविशेष ।

घेरुत ( न० )-विकार, बदलना, विकृतभाव । वि० विकारोत्पन्न ।

घेक्राण्त ( न० )-एक प्रकार की मणि ।

घेष्टागम ( पु० )-मानप्रस्थ, तृतीयाश्रमी, एक त्रापिविशेष ।

घेष्टुप ( न० )-गुणराहित्य, विनाहना, पूर्ण न होना, बेइसफ़ी ।

घेदिश्य ( न० )-अनेकरूपता, विच-

क्षणता, विचित्रता ।

घेजयन्त ( पु० )-इन्द्र का नदल, इन्द्र की ध्वजा, एक देव ।

घेजयन्तिका (स्त्री०)-पतारका, ध्वजा, झण्डा, जयन्ती का दृष्ट ।

घेजयन्ती (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

घे [घे] जिक ( न० )-हेतु, आत्मा, शिष्टुतैल । वि०-धीनसम्बन्धी ।

घेज्ञानिक (वि०)-निपुण, विज्ञानयुक्त ।

पु०-धीनों का शास्त्रविशेष ।

घेहालसूत ( न० )-दुष्टाचार, कपट-उपसंहार । [सुरलीवादक ।

घेणिक (वि०)-धीन का बजानेवाला, वैतसिक, (वि०)-मांसविक्रेता, गोशत खेचनेवाला ।

वैतनिक (वि०)-तनख्वाह लेकर काम करनेवाला, सजदूरी से जीनेवाला ।

वैतरणिणी (स्त्री०)-पुराणोपवर्णित पापियों के तरने के लिये यम-लोक की एक नदी, नरकसिन्धु ।

वैतालिक (पु०)-मंगलगीत आदि गान से राजाओं के जगाने वाले भाट ।

वैदण-गध्य ( न० )-चातुरी, होशियारी, बुद्धिमत्ता ।

वैदर्भ (पु०)-विदर्भ देश का राजा ।

वैदर्भी (स्त्री०)-दमयन्ती ।

वैदिक (पु०)-वेदज्ञाना प्राप्त । वि०-वेदसम्बन्धी, वेदज्ञ । [ शेष ।

वैदूर्य (न०)-रुक्मणीतथर्ण की मणिवि-  
वैदेशिक (वि०)-विदेशसम्बन्धी, देश-  
न्तर का । [उपसंहारी मनुष्य ।

वैदेह (पु०)-विदेहदेश का राजा, जनक,

वैदेही (स्त्री०)—सीता, जानकी, हल्दी,  
गोरोचना, वनिकपत्नी, पिप्पली ।

वैद्य (पु०)—अपक्व, निवृत्तिपक्ष, पंडित ।  
वि०—वैदस्यम्भी ।

वैद्यक (न०)—आयुर्वेद, चिकित्साशास्त्र ।

वैद्य-पक्ष ( वि० )—विधिप्रतिपादित,

ब्रह्मा वा माध्यमे प्राप्त । [ जाकी ।

वैद्यमं (न०)—असमानता, भङ्ग, गैरहं-

वैषयेय (पु०)—विषय का पुत्र ।

वैषम्य (न०)—रंहाप, पतिव्रियोम ।

वैष्णुति (पु०)—धर्म का अभाव, विष्णु-  
स्मादि योगों में से एक । स्त्री०—

वृद्धि, उत्पत्ति ।

वैनतेय (पु०)—गरुड़, अरुण ।

वैनायिक (पु०)—वस्तुमात्र की ज्ञान-  
भगुरता का प्रतिपादक बौद्ध-

शास्त्रविशेष, क्षणिक, ऊर्णनाम ।

न०—नाही, नक्षत्रविशेष । [ भाइ ।

वैपरीत्य (न०)—उलटापन, विपरीत-

वैभव (न०)—ऐश्वर्य, विभूति, अतिशय ।

वैनतस्य (न०)—नम का द्वैधीभाव,  
भग की विपरीतता ।

वैमात्र-त्रेय ( पु० )—उपमाता की  
संतान, सीतेला भाई ।

वैयाकरण (वि०)—व्याकरण के ज्ञानने  
वा पढ़ने वाला । [ दित रय ।

वैयाघ्र (पु०)—व्याघ्र के चर्म से आरुडा-

वैयाघ्रपट्ट (पु०)—गोत्रप्रवर्तक एक मुनि ।

वैयासिक (पु०)—व्यास की संतान,  
शुकदेव ।

वैयासिकी (स्त्री०)—व्यासप्रोक्तसंहिता

वैर (न०)—विरोध, दुश्मनी, घोरत्व ।

वैरकर-कृत ( वि० )—विरोधी, वैर  
करनेवाला ।

वैरनिर्वातनं-प्रतिक्रिया=बदला लेना,  
वैर निकालना ।

वैराग्य ( न० )—विषयवासनाओं से  
राहित्य, बेपरवाही ।

वैरी [ नृ ] (पु०)—शत्रु, दुश्मन । वि०—  
वैर करने वाला । [ बदसूरती ।

वैकुण्ठ (न०)—कुक्षपतर, बदशकल हीना,

वैरोचन-चति-चि (पु०)—बलि नामक  
राजा, युहु, विरोचन की संतति,

सूर्यपुत्र, अग्नि की संतान ।

वैलक्षण्य (न०)—विलक्षणता, विशेषता,  
अजीबपन ।

वैवर्च्य (न०)—रंग का बदलना, कालुष्य ।

वैवस्वत (पु०)—सूर्यपुत्र, चमराज ।

वैवाहिक ( वि० )—विवाह के धर्म्य,  
विवाहसम्बन्धी, विवाह वाला ।

पु०—जड़का लड़की का श्वशुर,  
सम्भी । [ एक मुनि ।

वैशम्पायन (पु०)—व्यासदेवका शिष्य,

वैशाख ( पु० )—अपने नाम से प्रसिद्ध  
एक महीना । न०—चतुर्थारिपों-

की स्थितिविशेष, मंथनदण्ड, रई ।

वैशेषिक ( पु० )—कणाद मुनिकृत

दर्शन का वेत्ता । न०—पहलुदर्शन  
में से एक ।

वैश्य (पु०)—चार वर्गों में से तीसरा,  
धनिषा । वि०—वैश्यसम्बन्धी ।

वैश्यवर्ण ( पु० )—कुबेर, शिव ।

वैश्यदेव (पु०)—पाँच वर्गों में से एक ।

वैश्यावर ( पु० )—अग्नि, सीते का

‘युक्त, सामवेदीय एक शाखा ।

वैषम्य ( न० )-विषमता, ऊचानीचा, मतोन्नत, एकसा न होना ।

वैष्णव ( वि० )-विष्णु का उपासक, विष्णुसम्बन्धी । न० होममन्त्र, एक महापुराण ।

वैहानिक ( पु० )-मसखरा पुरुष, हसीठहा करने वाला आदमी, विदूषक ।

बोहु ( पु० )-सर्पभेद, मत्स्यभेद ।

बोहा [हु] ( वि० )-बोझा होने वाला भारिक । पु० भूख, सूत, बैल, क्षयन, परिणेत ।

बोहु ( पु० )-मुनिविशेष ।

बीधट् ( अ० )-देवता के उद्देश्य से घृतादि का अग्नि में डोहना ।

व्यशक ( पु० )-पूत, ठग, पर्वत ।

व्यक्त ( वि० )-प्रकटित, जाहिर, साफ, देखने योग्य । पु० विष्णु ।

व्यक्ति ( स्त्री० )-प्रकाश, स्पष्टता, जाति, भूतमात्र ।

व्यग्र ( वि० )-व्याकुल, घबराया हुआ, ससन्न । पु०-विष्णु ।

व्यजन ( न० )-घोषना, पखा ।

व्यञ्जक ( पु० )-अवस्थानुरूप हृदय के भाव को प्रकाशित करने वाला और व्यजना से अर्थ का प्रकाशक शब्दविशेष । वि०-प्रकाशक ।

व्यञ्जन ( न० )-शाकभाजी, चिन्ह, रमन्नु, दिवस, अवसर, उपस्थेन्द्रिय, गर्दनाग्रिक अक्षर ।

व्यञ्जना ( स्त्री० )-शब्द की वृत्तिविशेष

व्यतिकर ( पु० )-व्यसन, दुःख, मेघ, सम्बन्ध । [यंय ।

व्यतिक्रम ( पु० )-उल्टा, विपरीत, विप-

व्यतिरिक्त ( वि० )-अधिक, भिन्न, जुदा ।

व्यतिरेक ( पु० )-विशेष, अभाव, सिवाय, अर्थात् कारभेद ।

व्यतिहार ( पु० )-अदलबदल, परिवर्तन

व्यतीत ( वि० )-बीता हुआ, गत ।

व्यतीपात ( पु० )-बहा उत्पात,

विष्कम्भादि २९ योगों में से एक

व्यत्यय ( पु० )-उल्टा, उलटपलट, विपर्यय

व्यत्यास ( पु० )-पूर्ववत् ।

व्यथ् ( १ आ० )-भय करता, दुःख का अनुभव करना ।

व्यथा ( स्त्री० )-पीडा, दुःख ।

व्यथ् ( ४ प० )-घोट लगाना, ताड़ना ।

व्यथ्व ( पु० )-कुमार्ग, छोटा रास्ता ।

व्यपदेश ( पु० )-छल, बहाना, जाल, वाक्यभेद ।

व्यभिचार ( पु० )-भ्रष्टाचार, बुरा चालचलन, न्याय में हेतु का दोषविशेष ।

व्यभिचारी [ नृ ] ( पु० )-भृंगार रस का भावविशेष, कुमार्गगामी पुरुष

व्यय ( पु० )-धनत्याग, खर्च, नष्टन, विनाश । न०-लग्न से १२वा स्थान

व्ययं ( वि० )-निष्प्रयोजन, निरर्थक

व्यलीक ( न० )-अपराध, असत्य, अग्रिय, कुकर्म, दुःख, ठगना ।

पु०-नागर । वि०-उस वाला ।

व्यवलम्ब ( न० )-विधोष, हीन, बाकी निकासना, कम करना ।

उपवच्छेद ( पु० )—सृष्टि करना, चाण  
का छोड़ना, निवृत्ति । [ दन, दकना

उपवधान ( न० )—फक, बीच, आच्छा

व्यवसाय ( पु० )—साहस उद्यम, आ-  
जीविका, निश्चय करना ।

व्यवस्था ( स्त्री० )—शास्त्र से निरूपित  
। विधि, शास्त्रमर्यादा, नियम ।

व्यवस्थित ( वि० )—विधिपूर्वक कथित,  
व्यवस्थापित ।

व्यवहार ( पु० )—विवाद, व्यापार,  
स्थिति, कर्म, दसविधेय ।

व्यवहारिक ( वि० )—व्यवहार के योग्य ।  
पु०—हनुदी नामक वृक्ष । [ वाला ।

व्यवहारी [ न ] ( वि० )—व्यापार करने  
व्यवसाय ( पु० )—नैयुक्त, छिपना, गुह्य ।

व्यसन ( न० )—निपत्ति, कष्ट, धन, गिरना ।  
व्यसनी [ न ] ( वि० )—व्यसनयुक्त, दुःखी,

बुरे शीक वाला ।

व्यस्य ( वि० )—मृत, मरा हुआ ।

व्यस्त ( वि० )—व्याकुल, चयराया  
हुआ, घाटा हुआ, विपरीत ।

न०—नियम का तोहना ।

व्याकरण ( न० )—वेद का वह अङ्ग-  
विशेष जिसके द्वारा शब्दस्वरूप

से शब्दों की सिद्धि की जाती है,  
पाणिनि मुनि आदि प्रणीत

अष्टाध्यायी प्रणित्यास्त्र ।

व्याकुल ( वि० )—चयराया हुआ, किञ्च  
तत्त्व के ज्ञान से मूढ ।

व्याकोश ( वि० )—सिखा हुआ, विकसित ।  
व्याख्या ( स्त्री० )—विवरण, टीका,

अधिक व्याख्यान ।

व्याख्यात ( वि० ) कथित, कहा हुआ ।

व्याघ्रत ( पु० )—विश्वम्भादियोगों में से  
१२वा, विघ्न, रुकावट, थोड़ा,  
शलकारविशेष ।

व्याघ्र ( पु० )—वाघ, भेड़िया, रक्तवर्ण  
का पररुह, करझवृक्ष ।

व्याघ्रपात [ इ ] ( पु० )—एक मुनि,  
विक्रान्तवृक्ष । वि०—व्याघ्र के  
तुल्य पावो वाला ।

व्याघ्रास्थ ( पु० )—विछाव, बिहाल ।  
न० भेड़िये का मुर ।

व्याग ( पु० )—छल, यद्वाग, अपदेश ।  
व्यागस्तुति ( स्त्री० )—यद्वाग से प्रशंसा,  
कपटस्तुति, अलङ्कारभेद ।

व्यागोक्ति ( स्त्री० )—छल से कथन,  
अर्थहीन तारविशेष । [ इन्द्र, वसुक्त ।

व्याह ( पु० )—सर्प, नासमंजस पशु,  
व्याहि ( पु० )—कोपकार एक मुनि ।

व्याप्त ( वि० )—कैला हुआ, प्रसन्न,  
विस्तृत । [ नील, हुण्ट ।

व्याप्य ( पु० )—सगृहीतक जाति, शिकारी,  
व्याधि ( पु० )—घीनारी, रोग, कुष्ठ ।

व्याधित ( वि० )—रोगयुक्त, घीनार ।  
व्याधु [ धू ] त ( वि० )—कम्पित, हिला

हुआ ।

व्यान ( पु० )—शरीरस्थ पाच पायुओं  
में से वह जो स्रव शरीर में व्यापक है।

व्यापक ( वि० )—सूत्र में रहने वाला,  
अधिकदेशगति ।

व्यापद् ( स्त्री० )—भाषति, मृत्यु । [ प्रस्ता ।

व्यापन ( वि० )—मृत, मरा हुआ, व्यापद्  
व्यापाद ( पु० )—युवा चाहना, द्रोह-

चिन्तन ।

[हुआ ।

ठपापादित ( वि० )-मारित, -मारा

ठपापार ( पु० )-ठपवहार, काम, मदद ।

ठपापारी [ नृ ] ( वि० )-ठपवहारी,

ठपवसाय करने वाला, मेहनती ।

ठपापी[नृ](पु०)-विरणु । वि०-ठपापक ।

ठपापत ( वि० )-सम्पूर्ण, उन्नत, मरा

हुआ, खपात, फैला हुआ ।

ठपापित ( स्त्री० )-शिव का ऐश्वर्य-

विशेष, हेतु और साध्य का एकत्र

रहना, ठपापन ।

ठपाप्य ( वि० )-ठपापियुक्त, फैला

हुआ । न०-अनुनिति का साधन ।

ठपापन-ग ( पु० )-तिर्यक् भाग में फैलाई

हुई दोनों भुजाओं के बीच का

भाग अर्थात् धर्यी ।

ठपानिग्र ( वि० )-मिला हुआ, सम्मिलित

ठपापत ( वि० )-छाया, चौड़ा, दीर्घ, दृढ़ ।

ठपापान ( पु० )-परिग्रह, फसरत,

। कुशती, हुंसेधार ।

ठपाल ( पु० )-मर्ष, दुष्ट हस्ती,

इलापद, सिंह । वि०-धूर्त, खल ।

ठपालपाइ ( पु० )-सर्व पकड़नेवाला

पुठव, सघेरा ।

ठपालपाही [ नृ ] ( पु० )-पुंयवत् ।

ठपालहारी ( स्त्री० )-आपस में चोरी,

परस्परहरण । [ परस्परहसन ।

ठपालहासी ( स्त्री० )-आपस की हंसी,

ठपापत ( वि० )-यत्त, घेरा, गोल, ठका

हुआ, हटा हुआ । [ हटाना ।

ठपापति ( स्त्री० )-निवारण, खरहन,

ठपाप ( पु० )-विस्तार, मोल के गज

की रेखा, पराशरपुत्र वेदठपास,  
मानभेद, पुराणपाठक ग्रंथण ।ठपासक्त ( वि० )-आसक्त, संलग्न,  
लगा हुआ ।ठपासङ्ग ( पु० )-विशेष आसक्ति,  
कार्यान्तरी को छोड़ एक ही में  
लगना । [ ठपाघात से युक्त ।

ठपाहत ( वि० )-रुद्ध, घबराया हुआ,

ठपाहार ( पु० )-उक्ति, कहना, बचन ।

ठपावृत्ति ( स्त्री० )-कवन, वाक्य, उक्ति,

सम्प्रविशेषणो 'भूर्भुवः स्वः' आदि

सात हैं ।

ठपुत्पान ( ग० )-विरोधाचरण, स्वा-

तन्त्र्य होना, नृत्यभेद ।

ठपुत्पत्ति ( स्त्री० )-संस्कार, विशेषो-

त्पत्ति, शक्तिज्ञान । - [ विद्व ।

ठपुत्पन्न ( वि० )-ठपुत्पत्तियुक्त, पठित,

ठपुदस्त ( वि० )-दूर किया हुआ,

निराकृत । [ करण ।

ठपुदास ( पु० )-अनादर करना, निरा-

ठपुप् ( १० व० )-छोड़ना, समाग करना ।

ठपुट ( वि० )-जला हुआ, दग्ध ।

ठपट ( वि० )-विश्वहित, सहित, पृथुल,

फैला हुआ, परिहित ।

ठपूह ( पु० )-समूह, गिरोह, झुण्ड ।

ठपो ( अ० )-छोड़ा, धीन का वाचक ।

ठपोकार ( पु० )-छोड़कारक, छुहार ।

ठपोन [ नृ ] ( ग० )-आकाश, जल ।

ठपोमकेश ( पु० )-शिव, महादेव ।

ठपोनचारी [ नृ ] ( पु० )-देवता, पक्षी,

घड़, मत्तत्र आदि ।

ठपोमधून ( पु० )-मेघ, बादल ।

उद्योगयाम (न०)-विमान, आकाशयाम ।

उद्योग ( न० )-चौट, कांठी मिर्च और  
पीपल नामक तीन कटुयस्तु ।

प्रज् (१५०)-जाना, गमन करना ।

प्रज (पु०)-समझ, मार्ग, मोट्ट, मयुरा  
के चारों ओर का देश । न०-गमन ।

प्रजनाय-पाल (पु०)-श्रीकृष्ण ।

प्रजाङ्गना (स्त्री०)-गोपी, वृज की स्त्री ।

प्रज्या (स्त्री०)-गमन, ययंटन, विजय  
की इच्छा वाले का प्रमाण ।

प्रज् (१०३०)-शरीर पर घाव करना,  
शेठ करना ।

प्रण (पु०)-सह, घाय, सहन ।

प्रन (न०)-उपवास, नियम, भोजनविशेष  
प्रवृत्ति-ती (स्त्री०)-जता, घेड़, विस्तार ।

प्रतादेश (पु०)-उपनयन, यज्ञोपवीत  
धारण । [प्रवृत्तचारी ।

प्रतो[न] (पु०)-प्रनधारणकर्ता, यजमान,

प्रव (६५०) छेदन करना, काटना ।

प्रवचन (पु०)-काटने का वाचन, छिनी ।  
न०-काटना, छेदन करना ।

प्रवत् (पु०) सपूह, गिरीह, वृद्ध ।

प्रवतो (पु०)-समुदायजीवी पुरुष,  
जिन का जीवन समुदाय पर  
निर्भर हो ।

प्रवत् (पु०)-दशमंस्काररहित पुन्य,  
संस्कारहीन, सावित्री से पतित,  
पंक्तिवाच्य ।

प्रवत्परतोम (पु०)-संस्कारहीन पुन्य  
से करने योग्य एक यज्ञ ।

व्रीट् (१५०)-उज्जा करना, जर्म करना ।

व्रीटा (स्त्री०)-उज्जा, गर्भ । [ व्रीह

और व्रीहन का भी यही अर्थ है ] ।

व्रीहि (पु०)-चावल, धान्यमात्र ।

व्रीह्यगर ( न० )-धान्यगृह, कुटला,  
कुसूत, खसी । [व्रीहिक्षेत्र ।

व्रीह्य ( न० )-धान्य उपजने का खेत,

## श

श (न०)-कल्याण, मंगल, शुभ, शास्त्र ।

शु०-शिश, शस्त्र ।

शंयु (वि०)-शुभान्वित, कल्याण वाला ।

शंयर ( न० )-जल, पानी । [रक्षण ।

शंसा ( स्त्री० )-वाक्प, प्रशंसा, इच्छा,

प्रवृत्ति (वि०)-निश्चय किया हुआ,  
रुत, मारा हुआ, कथित ।

शंस्य ( वि० )-प्रशंसा से योग्य, मार-  
जोग्य, कहने लायक ।

शक् ( १ भा० )-हरना, शक करना ।

शु०-नामधेय होना ।

शक ( पु० )-एक जाति, देवमेद,  
शान्तिवाहन नामक एक राजा ।

शकट ( कस्त्री० )-एक दैत्य की  
श्रीकृष्ण द्वारा निहत हुआ, मान-  
विशेष, गाड़ी ।

शकटदा [नृ] ( पु० )-श्रीकृष्ण ।

शकट ( कस्त्री० )-तपह, टुकड़ा,  
कण्टक, लुप का यक्ष, देशविशेष ।

शकाकट (पु०)-शक राजा का प्रचलित  
किया हुआ मयत, वयं ।

शकार (पु०)-राजा की भविष्यदिता  
स्त्री का भाई, नद और मृगंता-  
निमानो पुन्य ।

शकारि ( पु० ) - राजा विक्रमादित्य ।  
 शकुन ( न० ) - भावी शुभाशुभ का  
 सूचक अक्ष का फटकना आदि  
 विन्ह । पु० - पक्षिमान, विप्र-  
 विशेष । [ ज्योतिषी ।

शकुनज्ञ ( वि० ) - शकुन के जानने वाला,  
 शकुन्त ( पु० ) - पक्षिमात्र ।  
 शकुन्तला ( स्त्री० ) - विश्वागित्र के  
 ११ वीये से मैत्रका अक्सरा में उत्पन्न  
 हुई कन्या, दुष्यन्तराज की पत्नी ।

शकुन्ति ( पु० ) - पक्षिमात्र, जामवर ।  
 शकुत् ( न० ) - विण्टा मल ।

शकुत्करि ( पु० ) - बत्स, बछड़ा ।

शक्क [ क ] रि ( पु० ) - वृष बैल ।

शक्करी ( स्त्री० ) - एक नदी, छन्दीभेद ।

शक्त ( वि० ) - सामर्थ्य वाला, ताक-  
 तवर, मलिट । [ का पूर्ण ।

शक्त्य ( पु० ) - मत्तू, भुने हुए यवादि

शक्ति ( स्त्री० ) - देवीभेद, सामर्थ्य,

न्यायशास्त्रोक्त वह धर्म जो

कारण में रहने वाला और कार्य

का उत्पादक है, शब्दस्य वृत्तिवि-

शेष । पु० - वशिष्ठ जी का वसेष्ठपुत्र

शक्तिधर ( पु० ) - कार्तिकेय, ग्रह ।

• वि० शक्ति प्रारण करने वाला ।

शक्तु ( पु० ) - शक्तव । [ प्रियवद ।

शक्नु ( वि० ) - प्यार से बोलने वाला,

शक्व ( वि० ) - शक्तियुक्त, हो सकने

योग्य, सातव्य ।

शक्र ( पु० ) - इन्द्र, देवराज ।

शक्रगोप ( पु० ) - इन्द्रगोप, यीरवहुही,

तीन नामक कीटविशेष ।

शक्रजित् ( पु० ) - रावण का पुत्र मेघ-

नाद । वि० इन्द्र का जीतने वाला

शक्रधनु ( ग० ) - बल धनुष जो मेघा-

च्छन्न वाकाश में सूर्य की किरणों

के सम्पर्क से विचित्र धर्ण का

दीखा करता है, रामधनुष ।

शक्रनन्दन-सुत ( पु० ) - जर्जुन, जयन्त ।

शक्राणी ( स्त्री० ) - इन्द्राणी, शची ।

शङ्कर ( पु० ) - महादेव, शिव । वि० -

कल्याण के करने वाला ।

शङ्का ( स्त्री० ) - घास, हर, वितर्क, दुखील

शङ्कित ( वि० ) - भीत, डरा हुआ,

विश्वास के अयोग्य, शकामुक्त ।

शङ्कु ( पु० ) - स्थाणु, खूटा, मत्स्यभेद,

शल्यास्त्रविशेष, महादेव, दश

करोड़ की संख्या, कलुष, एक

राक्षस, सूर्य की छाया के परि-

माणार्थ काष्ठनिर्मित १२ अंगुल

का एक कीलक, लोहे की कील ।

शङ्कुर्ण ( पु० ) - गधा, गर्दभ ।

शङ्ख ( अस्त्री० ) - अपने नाम से प्रसिद्ध

वाद्यवस्तु, मस्तक की अक्षि-

विशेष निधिभेद, एक मुनि,

हस्तीके दात का बाध का हिस्सा,

संख्याविशेष । [ पुरुष ।

शखधन ( पु० ) - शख घजाने वाला

शखभृत् ( पु० ) - विष्णु ।

शखिनी ( स्त्री० ) - शखपुष्पी नामक

जीवध, यवतिक्ता, चार प्रकार

की स्त्रियों में से एक ।

शच् ( १ भा० ) - जपन करना, बोलना

शचि-नी ( स्त्री० ) - इन्द्रपत्नी, इन्द्राणी ।



शचीपति ( पु० )--इन्द्र ।  
 शट् ( १५० )--धीमार् होना, भेद करना,  
 जाना, करना ।  
 शट ( पु० )--खट्टा, अमल ।  
 शटा ( स्त्री० )--शेर की जटार ।  
 शट् ( १० प० )--आलस्य करना,  
 कुशाक्षय्य सोलना, मारना, ठगना,  
 दुःख उठाना ।  
 शठ ( न० )--तगर, केशरं, लोह । पु०--  
 धतूरा, धूर्त, मध्यस्थपुरुष ।  
 शठता ( स्त्री० )--माया, शरारत, ठगी,  
 शाठ्य, मूर्खता ।  
 शण् ( १ प० )--देना, दान करना ।  
 शण ( पु० )--सन का घूँत, मांग ।  
 श [ प ] षट् ( न० )--कमल जादि का  
 समूह । पु०--नपुंसक, हीनडा, वृष ।  
 श [ प ] षट् ( पु० )--नपुंसक, हीनडा, भन्तः--  
 पुररत्नक, स्वामा ।  
 शन ( न० )--१०० की संख्या, एकसी ।  
 शतक्रम ( पु० )--यह पर्वत जहाँ से  
 से सोना निकलता है ।  
 शतकोटि ( पु० )--यज्ञ, इन्द्र का शस्त्र,  
 भीरा । स्त्री०--१०० करोड़ की संख्या ।  
 शतक्रतु ( पु० )--इन्द्र ।  
 शतसगृह ( न० )--स्थान, सोना ।  
 शतग्रन्थि ( स्त्री० )--दृष्टा यास ।  
 शतग्री ( स्त्री० )--एक गज, लोप,  
 कण्ठरोगविशेष, बिच्छू ।  
 शततन ( वि० )--१०० की संख्या पूर्ण  
 करने वाला, सीधा । [ नक्षत्र ]  
 शततारा ( स्त्री० )--शतभिषा नामक  
 भन्दु ( स्त्री० ) सनसज नदी ।

अतथामा[न्] ( पु० )--विष्णु, परमात्मा ।  
 शतधार ( न० )--वज्र। वि०--सौ धार  
 वाला । [ ब्रह्मा, स्वर्ग ]  
 शतघृति ( पु० )--इन्द्र, स्वर्गाधिप,  
 शतपत्र ( न० )--पद्म, कमल । पु०--  
 सयूर, सारसपक्षी ।  
 शतपथ ( पु० )--अपने नाम से प्रसिद्ध,  
 यजुर्वेदीय एक ब्राह्मणग्रन्थ ।  
 शतपथिक ( वि० )--अनेक मतावलम्बी,  
 बहुत मतों पर चलने वाला, शत-  
 पथ का पढ़ने या जानने वाला ।  
 शतपथा ( स्त्री० )--शुक्राचार्य की  
 पत्नी, दूर्या, यथा ।  
 शतपुष्पा ( स्त्री० )--सैंफ । [ नक्षत्र ]  
 शतभिषक् [ ज् ] ( स्त्री० )--शतभिषा  
 शतमुख मन्त्र्य ( पु० )--इन्द्र ।  
 शतकपा ( स्त्री० )--ब्रह्मा की पत्नी  
 वा कन्या ।  
 शतहृदा ( स्त्री० )--बिजली, विद्युत् ।  
 शतानन्द ( पु० )--अपने नाम से प्रसिद्ध  
 एक मुनि, जनकराज का पुरोहित,  
 ब्रह्मा, गीतग मुनि, विष्णु ।  
 शतायुः [ श् ] ( वि० )--एक सौ वर्ष  
 की अवस्था वाला, सौ वर्ष का ।  
 शत्रु ( पु० )--अग्नि, विष्णु, दुश्मन, लक्ष्म  
 से उठा स्थान । वि०--दुश्मनापक  
 शत्रुघ्न ( पु० )--सुमित्रा के गर्भ से  
 उत्पन्न दशरथ का कनिष्ठ पुत्र,  
 लक्ष्मण का छोटा भाई ।  
 शट् ( १५० )--काटना, सीधण करना,  
 नष्ट करना, गिरना ।  
 शट्टि ( पु० )--मेघ, दस्ती । स्त्री०--

विजली, खरह । [ पुत्र, उग्रग्रह ।  
 शनि(पु०)-छाया के गर्भ से उत्पन्न सूर्य-  
 शनैः [स्] (अ०)-अद्भुत, धीरे, मन्द ।  
 शनैश्चर (पु०)-पूर्ववत् ।  
 शप् (१, ४ व०)-पिछाना, प्रतिष्ठा  
 करना, शप देना, कसम खाना ।  
 शपथ (पु०)-कसम, सौगन्ध, वाणी से  
 शरीरस्पर्शन ।  
 शपन (न०)-शपथ, कसम, गाली ।  
 शप्त (वि०)-शप दिया हुआ, शप-  
 यस्त, नष्ट-वशियेप । [वृत्तसूत्र] ।  
 शफ (न०)-गौ जादि का खुर,   
 शफर(अकली०)-एक प्रकार का मत्स्य ।  
 शब्द (१० व०)-बोलना, आवाज  
 करना ।  
 शब्द (पु०)-१. शनि, आवाज, कर्णे-  
 निद्रय से प्राप्त गुण, पदार्थविशेष,  
 अक्षरस्वरूप । [शब्दज्ञान ।  
 शब्दग्रह (पु०)-कर्णेन्द्रिय, काम,  
 शब्दग्रह [न] (न०)-शब्दस्वरूप  
 ग्रह, शब्दशास्त्र ।  
 शब्दज्ञेदी-वेधी [न] (पु०)-अर्जुन,  
 दशरथराज, याज्ञवल्क्य, शुद्धा,  
 चपस्वेन्द्रिय ।  
 शब्दानुशासन (न०)-शब्द के साधुत्व  
 का द्योतक व्याकरण ।  
 शब्दित(वि०)-मुलाया हुआ, आहूत,  
 शब्दायमान ।  
 शम्भु(४२०)-शान्ति करना, शान्ति देनेवाला  
 शन (पु०)-शान्ति, भीतर या बाहर  
 के इन्द्रियों का निग्रह, मोक्ष ।  
 शमन(पु०)-शान्ति, मन्त्री, यज्ञीर ।

शमन (न०)-शान्ति, दिसा । पु०-  
 यमराज, मृगविशेष, मटर ।  
 शमनस्वरा [स्](स्त्री०)-यमुना नदी ।  
 शमनी (स्त्री०)-रात्रि, रात ।  
 शमल (न०)-विष्टा, मल, पाप ।  
 शनि-नी (स्त्री०)-जाह का वृक्ष ।  
 शनी [न] (वि०)-शान्त, धीर ।  
 शनीगर्भ (पु०)-अग्नि, ब्राह्मण ।  
 श[स्]म्पा (स्त्री०)-विद्युत्, बिजली ।  
 शम्भ (१५०)-जाना, शमन करना ।  
 शम्भ (पु०)-वज्र, इन्द्रशस्त्र । न०-  
 जल, धन, सैप, वृत् ।  
 शम्बर (पु०)-एक दैत्य, मृगविशेष,  
 मत्स्य, शैवविशेष, युद्ध, लोभ, श्रेष्ठ ।  
 शम्बरारि (पु०)-कामदेव, कन्दर्प ।  
 शम्भल (अस्त्री०)-तट, पाथेय, सफर-  
 स्रवे, मत्सर । [जलकी सीपी ।  
 शम्भु [म्भू] क (पु०)-जलजन्तुविशेष,  
 शम्भल (पु०)-शम्भल नामक एक  
 नगर जहां कलिक अवतार का  
 होना पुराणों में वर्णित है ।  
 शम्भु (पु०)-शिव, ब्रह्मा, विष्णु,  
 ब्रह्मदेव, अग्नि, सफेद आक का  
 वृक्ष, सिद्ध । [सैल ।  
 शम्पा (स्त्री०)-युगकीलक, जुए का  
 शय(पु०)-हाथ, सपे, निद्रा, शय्या, पण ।  
 शयन (न०)-सोना, निद्रा, शय्या, सैयाना  
 शयनीय (न०)-शय्या, खट्वा । [दशी ।  
 शयनैकादशी(स्त्री०)-आषाढशुक्लएका-  
 शयाशु(वि०)-निद्राशील, सोने वाला ।  
 शयित (वि०)-सुप्त, सोया हुआ ।  
 शय्या (स्त्री०)-विस्तरा, चारपट्ट,

भासन, निद्रा, कौच ।  
 शम्पागत (वि०)-सोया हुआ, विस्तर  
 पर छेटा हुआ ।  
 शम्पाग्रह (न०)-सोने का कमरा ।  
 शम्पाभ्यस्त (पु०) राक्षशम्पा, यह का  
 अभ्यस्त ।  
 शर (पु०)-तीर, धाण, बर्बद मूल,  
 नडाई, घोट, ५ का अङ्क । न० जल ।  
 शरज (न०)-छोटी घी । पु०-कार्तिकेय ।  
 शरट (पु०)-ककलास, करकैंटा ।  
 शरण (न०)-सहायता, रक्षा, बचाव,  
 रक्षास्थान ।  
 शरणागत-पन्न (वि०)-शरण में आया  
 हुआ, सहायता मांगने वाला ।  
 श[स]रणि-णी (स्त्री०)-पृथ्वी, रास्ता ।  
 शरवह (पु०)-पक्षी, करकैंटा, ठग ।  
 शरव्य (वि०)-शरण देने योग्य ।  
 न०-शरण, रक्षास्थान, बचाव ।  
 शरव्यु (पु०)-रत्नक, बादल, वायु ।  
 शरकाल (पु०)-आश्विन और कार्तिक  
 शरह (स्त्री०)-संवत्, वर्ष, आश्विन  
 और कार्तिकमाससम्बन्धी श्रुतु ।  
 शरधि (पु०)-तरकस, तूण ।  
 शरभ (पु०)-एक प्रकार का आठ पांख  
 का कल्पित शृग, एक मन्दर,  
 हाथी का पीता ।  
 शरभू (पु०)-कार्तिकेय ।  
 श[स]रयु-यू (स्त्री०)-एक नदी जिस के  
 किनारे पर अयोध्या नगरी है ।  
 शरल=सरल ।  
 शरलक (न०)-जल, पानी ।  
 श[स]रलप (न०)-लक्ष्य, निशाना ।

शराह (वि०)-शरीर, बदमाश,  
 नुकसान पहुँचाने वाला ।  
 शराह (पु०)-घनुष, कमान ।  
 शराव (अस्त्री०)-प्याला, कुज्जा,  
 दही का एक घान, कुड्ड ।  
 शरावती (स्त्री०)-एक नदी, एक नगरी  
 शराव्य (पु०)-तूण, तरकस ।  
 शरिमा [मन्] (पु०)-उत्पन्न करना ।  
 शरीर (न०)-देह, जिसन, शारीरिक-  
 शक्ति, शव । [पु०-आत्मा ।  
 शरीरक (न०)-छोटा शरीर, शरीर,  
 शरीरज (पु०)-रोग, कानदेव ।  
 शरीरदयह (पु०)-शारीरिक दयह ।  
 शरीरपतन-पात=मृत्यु, भीष कीर देह  
 का अलग होना ।  
 शरीरभाक् (पु०)-सदेह, नीच, जानदार,  
 शरीरपटि (स्त्री०)-हड्डियों का  
 पिङ्गलात्र, दुबला आदमी ।  
 शरीरयात्रा (स्त्री०)-जीवननिर्वाह,  
 शरीरव्यपत्ति (स्त्री०)-अच्छी तन्हुकस्ती  
 शरीरी [न] (वि०) देह वाला,  
 सदेह, जानदार । पु०-शरीरमुक्त  
 वस्तु अनुप्य, सग्रीव शक्ति ।  
 शर (पु०)-तीर, वज्र, कौच ।  
 शर्करा (स्त्री०)-सकर, खाह, यमरी,  
 पयरी, टुकड़ा ।  
 शर्करी (स्त्री०)-नदी, पेटी ।  
 श[स]र्व (पु०)-जाना, मारना, कल्ल  
 करना ।  
 शर्वर (पु०)-वस्त्रविशेष ।  
 शर्भ (पु०)-समूह, शक्ति, ताकत ।  
 शर्भ [न] (न०)-सुशी, सीरुप,

परकन, घर । न०-खुल, शुभ ।  
वि०-खुशी ।

शर्मद(वि०)-खुलदाता । पु० परमात्मा ।  
शर्मो [ न ] ( पु० )-ब्राह्मण की  
उपाधि । [ ज्ञानिय की वर्गों, वैश्य  
की गुप्त और शूद्र की दास उपा-  
धि होती है ] । [ का नाम ।

शर्मिष्ठा ( स्त्री० )-मयाति की भावों  
शर्मा ( स्त्री० )-रात्रि, उगली ।

शर्म ( १ प० )-जाना, नमन करना, नारना  
शर्म ( पु० )-शिश, विष्णु ।

शर्व ( न० )-अधेरा । पु० कान्तिदेव ।  
श[स्]र्वरी ( स्त्री० )-रात्रि, रात, हल्दी ।

शर्वरीश ( पु० )-चन्द्रमा, चांद ।  
श[स्]र्वशी ( स्त्री० )-पावती, दुर्गा ।

शर्माक ( वि० )-झूर, निर्दय । पु०-  
शठ, घटनाश ।

शर्मा ( १ भा० )-हिलना, आन्दोलित  
होना, रुकना । १ प० जाना दीड़ना

शर्मा ( पु० )-साला ।  
शर्माक ( पु० )-नकली ।

शर्माग ( पु० )-राजा, हाकिम ।  
शर्माज ( पु० )-टीही, कीटविशेष,

एक अमुर ।  
शर्माका ( स्त्री० )-खूटी, कील, पेंसिल,

सलाह, तीर, चारिका पत्ती ।  
शर्माट ( पु० )-गाड़ी का थाम ।

शर्माभोलि ( स्त्री० )-ऊट, उष्ट्र ।  
शर्माककल ( न० )-पृथ की छाल, भाग,

टुकड़ा ।  
शर्माकली-सकी [ न ] ( पु० )-नटली ।  
शर्म ( १ भा० )-तारीफ करना ।

शर्म ( न० )-भाषा, तीर, घाण,  
फाटा, खूटी, कील ।

शर्म ( १ प० )-जाना, हरकत करना ।  
शर्म ( न० )-छाल, घटकल ।

शर्म ( पु० )-देशभेद, शास्त्र ।  
शर्म ( १ प० )-जाना, पाच पहुँचना,

बदलना ।  
शर्म ( अस्त्री० )-कीवरहित देह,

मुदां शरीर । न०-जल ।  
शर्मदाह ( पु० )-अन्त्येष्टि कर्म ।

शर्मयान-रथः=मुदां से जाने की गाड़ी  
शर्म=चपर ।

शर्मसान ( पु० )-पथिक, मार्ग ।  
न०-शनशानभूति ।

शर्म ( पु० )-खरगोश, चन्द्रमा के घट्टे,  
लोभवृक्ष ।

शर्मक ( पु० )-खरगोश, वर्णभेद ।  
शर्मभूत ( पु० )-चन्द्रमा, चांद ।

शर्मलाटन ( पु० )-चन्द्रमा, चांद, कर्पूर ।  
शर्मविन्दु ( पु० )-चन्द्रमा, विष्णु ।

शर्मविषाण शर्म ( न० )-खरगोश के  
सींग अर्थात् अश्वन्मव वस्तु ।

शर्मस्थली ( स्त्री० )-यगा और यमुना  
के बीच का देश, द्वावा ।

शर्माङ्ग ( पु० )-चन्द्रमा चांद, कर्पूर ।  
शर्मिणी ( स्त्री० )-चन्द्रमा की १६

कलाशो में से एक ।  
शर्मिकान्त ( पु० )-चन्द्रकान्त मणि ।

न०-कमल । [ शिथ का नाम ।  
शर्मिभूषण भूत-मौलि शेर ( पु० )-

शर्मिलेखा ( स्त्री० )-चन्द्रकला ।  
शर्मा [ न ] ( पु० )-चन्द्रमा, चांद ।

शश्वत् ( अ० )--हमेशा, सर्वदा ।  
 शष् ( १ प० )--मारना, घात करना ।  
 शशुलि-ली ( स्त्री० )--कर्णरन्ध्र, पूरी ।  
 कबीरी, कर्णरोग । [ त्रात्री पास ।  
 श [स] र्प-रूप ( पु० )--प्रतिमासय । न०--  
 शस् ( १ प० )--काटना, मारना ।  
 २ प०--सोना ।  
 शसन ( न० )--जलन, बध, मारना ।  
 शस्त ( वि० )--प्रशंसित, सत, पुनरावृत्त ।  
 शस्ति ( स्त्री० )--स्तुति, तारीफ़,  
 स्तोत्र, रत्नाघा । [ छोटा ।  
 शस्त्र ( न० )--तलवार आदि हथियार,  
 शस्त्रजीवी [ नृ ] ( पु० )--शस्त्र से  
 आजीविका वाला पुरुष ।  
 शस्त्रपाणी [ नृ ] ( पु० )--बह पुरुष जिस  
 के हाथ में शस्त्र हो, शस्त्रपारी ।  
 शस्त्री [ नृ ] ( वि० )--शस्त्र धारण  
 करने वाला, यही शस्त्र ।  
 शस्त्री ( स्त्री० )--छुरी, छोटा शस्त्रविशेष ।  
 श [स] र्प ( न० )--बूँतों के फल, क्षेत्र के  
 धान्यादि ।  
 शस्यमञ्जरी ( स्त्री० )--नवीन धान-  
 न्यादि की झोपन, कनिश ।  
 शस्यशूक ( न० )--धान्य के तूर, धान्य  
 का तीक्ष्णप्रमाण, किशोर ।  
 शाक ( पु० )--वृक्षविशेष, शक्ति, शिरी-  
 पयस, नृपभेद, एक द्वीप । न०--  
 पत्रपुष्पादि, तरकारी । [ एक मुनि ।  
 शाकटायन ( पु० )--उपाकरण का कर्ता ।  
 शाकटिक ( वि० )--गाड़ी से आनेवाला ।  
 शाकम्भरी ( स्त्री० )--दुर्गा, देवीविशेष ।  
 शाकराज ( पु० )--वास्तूक, बधुआ ।

शाकिनी ( स्त्री० )--शाकमुक्तपृथ्वी, दुर्गा  
 की एक अनुचरी । [ एक ग्रन्थ ।  
 शाकुन ( पु० )--शुभाशुभ का निश्चायक  
 शाकुनिक ( पु० )--पक्षियों के मारने  
 वाला पुरुष, पक्षिहन्ता ।  
 शाकुनेय ( पु० )--वृकनागक भक्षु, तुंडुल  
 पक्षिविशेष । वि०--शकुनसम्बन्धी ।  
 शाकुन्तलेय ( पु० )--शकुन्तला का पुत्र  
 भरतराज । वि०--शकुन्तलासंबन्धी ।  
 शाक्त ( वि० )--शक्ति की उपासना करने  
 वाला, शक्त्युपासक । [ वाला ।  
 शाक्तीक ( वि० )--बरही से प्रहार करने  
 शक्य ( पु० )--बुद्धदेव ।  
 शाक्यमुनि-सिंह ( पु० )--शाक्यवंश में  
 उत्पन्न हुआ एक मुनि ।  
 शाक्ती ( स्त्री० )--दुर्गा, शक्रपत्नी ।  
 शात् ( १ प० )--उपाप्त होना, फैलना ।  
 शाख ( पु० )--कृत्तिकापुत्र, कार्तिकेय  
 का कनिष्ठभ्राता, गणपति, राहु, वृष  
 शाखा ( स्त्री० )--टहनी, डाल, प्रमथ-  
 भेद, समीप, प्रकार, तरह ।  
 शाखानगर-पुर ( न० )--सूळ नगर के  
 समीप का छोटा शहर, पुरवा ।  
 शाखामृग ( पु० )--बामर, बम्बर ।  
 शाखारवह ( पु० )--अपनी शाखा की  
 छोड़ कर शाखान्तर को पढ़ने  
 वाला पुरुष ।  
 शाखी [ नृ ] ( पु० )--मृत्त, एक राजा,  
 वेद का भागविशेष, तुरकीय जन ।  
 शाङ्कर ( न० )--उन्नीसभेद । पु०-बली-  
 बर्द । वि०-शङ्करसम्बन्धी ।  
 शाङ्करि ( पु० )--गणेश, कार्तिकेय ।

शाट-क(पु०)-वस्त्र, आच्छादन, कपड़ा,  
शाटिका-टी ( स्त्री० )-वस्त्रभेद,  
छाड़ी, धोती ।

शात्यापन ( न० )-यह होम जो  
प्रकृत होम में किसी प्रकार की  
हुई विकृति के शमनार्थ किया  
जाता है । पु०-एक मुनि ।

शाठ्य ( न० )-शठता, सूखंता, छीठपना,  
शाण ( न० )-सन का खना वस्त्रादि ।  
पु०-कधीटी, रसान, चार मासे  
की तोल ।

शाणित ( वि० )-तीक्ष्ण किया हुआ,  
निशित, शाण पर चढ़ाया हुआ ।

शाण्डिल्य ( पु० )-विल्व का वृक्ष,  
गोत्रप्रदर्शक एक मुनि जो भक्ति  
युक्त का निर्माता है, अग्निभेद ।

शात ( न० ) छुल । वि०-तीक्ष्णीकृत ।

शातकुम्भ ( न० )-स्वर्ण, काष्ठन, सोना  
पु०-चतुरा, कनेर का वृक्ष ।

शातन ( न० ) सूक्ष्म करना, तनूकरण,  
काश्यं, विनाशन । वि०-छेदक ।

शाश्व ( न० )-शश्वसमूह, शश्वता,  
दुश्मनी । वि०-शश्वसम्बन्धी ।

शाद ( पु० )-कीचड़, कंदन, नवीन घास ।

शादहात ( पु० )-नवीन घास से  
हरित वण का प्रदेश ।

शाट्टल ( पु० )-यद्युत की गई घास  
घासा देश, नवीनवृक्षमहुलप्रदेश ।

शानू ( १५० )-काहना, भेदन करना ।

शान ( पु० )=शान ।

शान्त ( पु० )-एक रस । वि०-शान्ति-  
युक्त, शम वाला ।

शान्तनव ( पु० )-शान्तनु की सन्तान,  
भीष्मपितामह ।

शान्तनु ( पु० )-द्वारपरयुग का चन्द्रवं-  
शीय एक राजा, भीष्म का पिता ।

शान्ता ( स्त्री० )-दशरथराज कन्या,  
क्षुत्पयश्व की भार्या, शमीवृक्ष ।

शान्ति ( स्त्री० )-चित्त का उत्पन्न,  
काम क्रोधादि का जीतना, विषय-  
वासना से चित्त का अवरोध ।

शाप ( पु० )-आक्रोश, बुरा वाक्य  
कहना, शपथ, क्लेश ।

शापास्त्र ( पु० )-मुनि, शान्तजन ।

शाठद ( वि० ) शब्द से उत्पन्न हुआ,  
शब्दसम्बन्धी ।

शाठदबोध ( पु० )-वह ज्ञान जो शब्द  
के अर्थ से उत्पन्न हुआ हो,  
पदार्थज्ञान से उत्पन्न ज्ञान ।

शाठिदक ( पु० )-शब्दशास्त्र का वेत्ता,  
विचारण । [ का श्याता ।

शानित्र ( न० )-एक यज्ञ, पशुबन्धन

शाम्बरी ( स्त्री० )-शम्बर दैत्य की  
रखी इन्द्रजाळादि नाया ।

शाम्बध ( पु० )-कर्पूर, शम्भुपुत्र गजे-  
शादि, शिवोपासक, एक विष,

गुणल । वि०-शम्भुसम्बन्धी ।

न०-देवदारु ।

शाम्भयी ( स्त्री० )-दुर्गा ।

शायक ( पु० )-घाण, तीर, तलवार ।

शार ( न० )-विभिन्न वर्ण, रंगविरग ।

वि०-विभिन्न रंग वाला । पु०-

यायु, द्विस्रग ।

शारंग ( पु० )-मयूर, चातक, मृग, हस्ती,

भूमर । वि०-विचित्रवर्णयुक्त ।

भारंगी(स्त्री०)-सदंगीनाम का बाला ।

भारद ( न० )-सफ़ेद कमल, शस्य ।

पु०-घगुला, काश तृण, पीछी वा हरी मूग, संवत्, एक रोग ।

भारदा (स्त्री०)-सरस्वती, जीणावि-  
शेष, ब्राह्मी ।

भारदिक ( न० )-भारकालसम्बन्धी  
आहु । पु०-उस काल का रोग,  
आतप, धूप ।

भा[वा]दि-का(स्त्री०)-पक्षिविशेष, मैना

पाशक आदि की गोली । [पट्टा ।

भारिकल (भस्त्री०)-पासा खेलने का

भारीर ( न० )-सुश्रुतग्रन्थ का एक

भाग, वेदव्यासकृत एक वेदान्त

ग्रन्थ । वि०-शरीर से उत्पन्न

होने वाला । पु०-वृष, जीव ।

भारीरिक (वि०)-शरीरसम्बन्धी, ना-

त्रिक, शरीरोत्पन्न [सुख दुःखादि] ।

भारक (वि०)-हिंसक, मारनेवाला ।

भार्कर (पु०)-दूध के भाग, पयरीली

जगह । वि०-भर्करायुक्त ।

भार्ङ्ग (न०)-विष्णु का धनुष, धनुर्नात्र ।

भार्ङ्गी [न] (पु०)-विष्णु ।

भार्ङ्गल (पु०)-ठपाग्र, भेड़िया, एक

रासस, पशुभेद ।

भार्ङ्गलविक्रीडित(न०)-उन्नीस अक्षरों

के पादयुक्त एक छन्द । [रात्रिका ।

भावर (न०)-बहुत अन्धकार । वि०-

भाल् (१५०)--कथन करना, कहना ।

भाल(पु०)--मत्स्यभेद, एक वृक्ष, प्रकार ।

भालग्राम ( पु० )- विष्णु की मूर्ति-

विशेष, एक क्षेत्र, पर्वतभेद ।

भालनिर्माण ( पु० )--भाल के वृक्ष का

गोंद, सर्जरस । [पुलही, घेंघा ।

भालभञ्जिका (स्त्री०)--काष्ठ की बनी

भाला (स्त्री०)--घर, गृह, गृहकोण,

वृक्ष के स्कन्ध की डाली ।

भालासृग(पु०)--गीदड़, मृगान ।

भालावृक (पु०)--मृग, कुत्ता, मृगाल,

घानर, बिलाव ।

भालि ( पु० )--गन्धनाक्षर, चावल

आदि धान्यविशेष ।

भालिवाहन ( पु० )--एक राजा की

विक्रमादित्य का धनुर्जीर शक

संवत् का प्रवर्तक कहा जाता है ।

भालिहोत्र (पु०)-अश्व, घोड़ा ।

भाली (स्त्री०)--काला जीरा ।

भालीन(वि०)--घृष्ट, निर्लज्ज, देशर्ष ।

भालु(न०)--कपिलाद्रुप । पु०--मैंदक ।

भालोत्तरीय (पु०)--पाणिनि मुनि ।

भालनल-लि (पु०)--भालनली का वृक्ष;

एक द्वीप ।

भालव (पु०)--एक देश का नाम ।

भाव (पु०)--शिशु, बालक, बच्चा ।

वि०-शवसम्बन्धी ।

भावक (पु०)-बालक, शिशु ।

भावर (पु०)-अपराध, पाप, लोभवृक्ष,

शवरस्वामिकृत एक भाष्य, शिव-

कृत तन्त्रविशेष । वि०-शवर का ।

भावरी (स्त्री०)-भीलनी, एक प्रकार

की विद्या, शूकशिम्बी ।

भाववत (वि०) नित्य, हमेशा, मत्त ।

पु०-ठपास, शिव ।

शास्त्र (१ प०)—बुझा करना, तारीफ करना [ इस बात के पूर्व विशेष कर 'आश्' सपन में रहता है ] ।  
 २ भा०—आशीर्वाद देना । २ प०—आज्ञा, करना, शासन करना ।  
 शासन ( न० )—शिक्षा देना, आज्ञा, हितसाधन में लगाना, निदेश ।  
 शासनहर (पु०)—दूत, कासिद ।  
 शासित ( वि० )—शिक्षित, उपदेश किया हुआ । [ उपदेष्टा ।  
 शासिता [ तृ ] ( वि० )—शिक्षा देनेवाला, शास्ता [ तृ ] ( पु० )—राजा, पिता, उपाध्याय । वि०—शासनकर्ता ।  
 शास्त्र ( न० )—हितोपदेशक ग्रन्थ, पुस्तक, निदेश । [ कर्ता ।  
 शास्त्रकृत (पु०)—आदि । वि०—शास्त्र-शास्त्रप्रवृत्तः [ तृ ] ( न० )—उपाकरण ।  
 शास्त्रज्ञ-यित् ( वि० )—शास्त्र का जाननेवाला, शास्त्रवेत्ता ।  
 शास्त्री [ तृ ] ( वि० )—पूर्ववत् ।  
 शास्त्रीय ( वि० )—शास्त्र में कहा हुआ, शास्त्रप्रदिपादित । [ शिक्षणीय ।  
 शास्य ( वि० )—शिक्षा करने योग्य, वि (१ प०)—छेदन करना, काटना ।  
 शिंशवा ( स्त्री० )—बीसों का खेद ।  
 शिक् [ तृ ] ( स्त्री० )—शिव, शीका ।  
 शिव ( न० )—भोग, मधुच्छिद्य ।  
 शिवप ( न० )=शिक् । [ करना ।  
 शिव ( १ भा० )—गीतना, अभ्यास शिव ( वि० )—शिक्षा देनेवाला, पाठक, शिक्षण ( न० )—विद्या ग्रहण करना ।  
 शिता ( स्त्री० )—शीतना, धंदा

शास्त्रविशेष, पथ, अभ्यास, विद्या ।  
 शिक्षाकर ( पु० )—उपास । वि०—शिक्षा करने वाला ।  
 शिक्षागुरु ( पु० )—विद्या देने वाला गुरु ।  
 शिक्षित ( वि० )—शिक्षा-दिपा हुआ, विद्य । [ चूहा, छोटी ।  
 शिखर ( पु० )—समूर की चोटी, शिखर ( पु० )—कौवे का पर, पट्टे, काकपक्ष ।  
 शिखरिहक ( पु० )—कुक्कुट, मुर्गा ।  
 शिखरही [ तृ ] ( पु० )—भोर, दुपद-रान का पुत्र, याण, विष्णु, शिव, मुर्गा ।  
 शिखर ( स्त्री० )—पर्वत की चोटी, वृक्ष का अग्रभाग, शिर, सिरा, अन्त ।  
 शिखरवासिनी ( स्त्री० )—दुर्गा ।  
 शिखरिणी ( स्त्री० )—छन्दाभेद, वत्त-आकृति, रोमावली ।  
 शिखरी [ तृ ] ( पु० )—पर्वत, वृक्ष ।  
 शिखा ( स्त्री० )—चोटी, चूहा, अग्नि की ज्वाला ।  
 शिखाकन्द ( न० )—यज्ञत, नागर ।  
 शिखिध्वज ( पु० )—पूजा, धूम ।  
 शिखिवाहन ( पु० )—काशिकेय ।  
 शिखी [ तृ ] ( पु० )—भोर, अग्नि, तीर मुर्गा, केशुग्रह, गरव, दीपक, मेघी । वि०—शिक्षा वाला ।  
 शिष्य ( पु० )—सहिजने का वृत्त ।  
 शिष्य ( १ प० )—सूचना, ग्रन्थग्रहणकरणा शिष्याण ( न० )—नामिकागल, छोड़े का भउ, काचपात्रविशेष । पु०—उलटना, कप ।



शिञ् (१०३०)-अस्फुट शब्द करना ।  
 शिञ्जा (स्त्री०)-गहने की आवाज, आभूषणों का शब्द, धनुष का चिल्ला ।  
 शिञ्जिनी (स्त्री०)-धनुष का चिल्ला, नूपुर, बिलवे नामका जेवर ।  
 शित (वि०)-दुर्गल, कृश, तीक्ष्णोक्त, तेज किया हुआ । पु०-विश्वामित्रगोत्रीय एक ऋषि ।  
 शितशूक (पु०)-यव, जौ, गोधूम ।  
 शिति (पु०)-भोजपत्र का वृत्त, श्वेत और काळा रंग । वि०-उच्च रंग वाला । [विशेष ।  
 शितिकण्ठ (पु०)-शिव, दात्यूहपवि-  
 शिपिल ( वि० )-रक्षण, ढीला, ढीले उपयोग वाला, मन्द, मूर्ख । न०--  
 मन्दबन्धन । [सात्यकि का नाम ।  
 शिनि (पु०)-यदुवशीय एक क्षत्रिय,  
 शिपि (पु०)-रश्मि, किरण, जल ।  
 शिपिघट्ट (पु०)-शिव, विष्णु, दुर्गचर्मा  
 शिम (न०)-एक क्रीड शिखरे शिमा नदी निकली है । [ एक नदी ।  
 शि [शि] मा (स्त्री०)-वृज्जैनग्रन्थ में  
 शिकाकन्द (पु०)-कमलके पुष्पकी जड़ ।  
 शिर[स्] (न०)-मस्तक, शिर, शिखर ।  
 शिरःकल (पु०)-नारिकेल, नारियल ।  
 शिरःगूल (न०)-शिर का दूद, शिरःपीडा ।  
 शिरज (पु०)-शिर के घाल, केश ।  
 शिरमिज-रोकह-द (पु०)-पुर्ववत् ।  
 शिरस्क ( न० )-निरस्त्राण, पगड़ी, दुपहा, टोपी ।  
 शिरप्प (न०)-पुर्ववत् ।  
 शिरा (स्त्री०)-नाड़ी, मधूज ।

शिराल (वि०)-शिरायुक्त, नाड़ीवाला ।  
 शिरीय (पु०)-शिरम का वृत्त ।  
 शिरीयह (न०)-ऊपर का पर, चन्द्र-  
 शाला, भटारी । [नाह ।  
 शिरीषरा-चि (स्त्री० )-घीया, गर्दन,  
 शिरोमणि (पु०)-सूडामणि ।  
 शिरोवेष्ट (पु०)-पगड़ी, दुपहा ।  
 शिल् (६ प०)-भिल्ला मीनना, एक र दाना चुगना ।  
 शिल् (अस्त्री०)-उकड़, चिल्ला, खेत का जन्त काटे जाने के पश्चात् एक र दाना चुगना, पत्थर ।  
 शिला (स्त्री०)-खिल, पत्थर, द्वार के नीचे रखर लकड़ी का टुकड़ा ।  
 शिलाकुहक-भेद (पु०)-टांभी, टङ्क ।  
 शिलारत्नार (न०)-छोटा । [वालु ।  
 शिलाह (न०)-शिलाजीत नामक स्व-  
 शिलि (पु०)-सूत्रपत्र का वृत्त, दरवाजे का काष्ठविशेष ।  
 शिलीन्च (न०)-कंठे का पुष्प, गोमय लज्जिका, टाछ । पु०-भरतस्यविशेष ।  
 शिलीमुष्ट (पु०)-भूमर, भौरा, बाण, सौर, युद्ध ।  
 शिलीक्षय (पु०)-पर्वत, पहाड़ ।  
 शिलीकृत (पु०)-अथ ग्रहण किये हुए खेत में से अथशिल अथका चुगना ।  
 शिलीकार्मु (पु०)-गरुड ।  
 शिल्प ( न० ) कारीगरी, कल बनाने की विद्या, हुनर ।  
 शिल्पकार (पु०)-कारीगर ।  
 शिल्पकारी [न] (वि०)-सृष्टि आदि के बनाने वाला, शिल्पकर्मकर्ता ।

शिल्पशाला (स्त्री०)—कारीगरों का घर, मूर्ति बनाने वालों का गृह ।  
 शिल्पी [न] (वि०)—कारीगर ।  
 शिव (न०)—सुख, मङ्गल, जल, समुद्र-लवण, सफेद सुहागा । पु०—महादेव, वेद, गुगल, पारा, देवता, २०वां योग, काले रंग का चतूरा, लिङ्ग ।  
 शिवक (पु०)—कीलक, खूँटा, वह कीलक जो नीचे में नीलों के जुललाने के लिये गाढ़ा जाता है ।  
 शिवचतुर्दशी (स्त्री०)—शिवमिया चतुर्दशी, फाल्गुनकृष्ण चतुर्दशी ।  
 शिवदूती (स्त्री०)—दुर्गा की मूर्तिविशेष ।  
 शिवद्वय (पु०)—शिवलक्ष्मी ।  
 शिवधातु (पु०)—पारद, पारा ।  
 शिवपुरी (स्त्री०)—काशी, बनारस ।  
 शिवमित्र (न०)—रुद्राक्ष । पु०—चतूरा ।  
 शिवमिया (स्त्री०) पायंती, दुर्गा ।  
 शिवरात्रि (स्त्री०)—नाच के शुक्ल और फाल्गुन के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी ।  
 शिवलिंग (न०)—शिव की लिंगाकार पूजनायं पत्थर की बनाई मूर्ति ।  
 शिववीर (न०)—पारा, पारद ।  
 शिववेशर (पु०)—गङ्गा, चतूरा ।  
 शिवा (स्त्री०)—पायंती, गौरी, शी-  
 नाययती स्त्री, मुक्ति, दुर्वापाय, एमदी, अमीयल ।  
 शिवानी (स्त्री०) पायंती, गौरी ।  
 शिवालु (पु०)—शीट्ट, गंगा ।  
 शिवि [वि] का (स्त्री०)—पायंती, शोली । [शिवानिवेश, पहाय ।  
 शिवि [वि] र (न०)—पायंती, शीट्ट,

शिशिर (वि०)—ठण्डा, सदै । अस्त्री०—  
 ओस, शयनम, भाघ और फाल्गुन मास । [अतुविशेष ।  
 शिशिरकाल (पु०)—सर्दी का मौसम, शिशु-क (पु०)—बच्चा, सद्योजात बालक, शिष्य, आठ या सोलह वर्ष का बालक ।  
 शिशुमार (पु०)—सूख नामक जलजन्तु ।  
 शिख [रन] (न०)—उपस्थेन्द्रिय ।  
 शिखिबदान (वि०)—शुद्धाचारी, क्रूर ।  
 शिप् (१ पु०)—भारना, कल करना १प०, १० व०—धाकी रहना, अय-  
 शिष्ट रहना ।  
 शिष्ट (वि०)—छोड़ा हुआ, आदिष्ट, शिखित, पालतू, बुद्धिमान्, शरीर ।  
 शिष्टाचार (पु०)—सुव्यवहार, शरी-  
 ज्ञाना यत्तां ।  
 शिष्टि (स्त्री०)—आदेश, मजा, निधम ।  
 शिष्य (पु०)—पेला, शिष्य, शिष्य, उद्भूतता ।  
 शी (२ व०)—छेड़ना, आराम करना, सोना । स्त्री०—नींद, आराम ।  
 शीक (१ व०)—तरकरना, धीरे चलना । १प०, १० व०—सुदृढ़ होना, बगकना, धोखना, तर करना ।  
 शीकर (पु०)—धीछार, मूँदायादी । न०—भरलपक्ष ।  
 शीघ्र (वि०)—तेज, तीव्र ।  
 शीघ्रनेत्र (पु०)—पुता, पुष्कर ।  
 शीघ्रम् (न०)—गन्दी से, कौरन ।  
 शीत (वि०)—ठण्डा, सदै, सुस्त, निद्रालु, गन्ध । पु०—निद्रपक्ष ।

अस्त्री०-शिशिर ऋतु । न०-टंडक,  
जल, पानी ।

श्रीतकर ( पु० )-चन्द्रमा, कपूर ।

श्रीतकाल ( पु० )-नीचमसमां, जाड़ा ।

श्रीतल ( वि० )-ठण्डा, मंद । पु०-  
चन्द्रमा, कपूरमेद, चम्पकवृक्ष । न०-  
ठण्डक, श्रीतकाल, सफेद चन्दन,  
भीती, कमल ।

श्रीतला-ली ( स्त्री० )-चेचक रोग ।

श्रीतांशु ( पु० )-चन्द्रमा, कपूर ।

श्रीताद्रि ( पु० )-हिमालय पर्वत ।

श्रीतार्क्ष-भाकुल ( वि० )-टंड मे व्याकुल ।

श्रीतालु ( वि० )-ठण्ड के कारण,  
कापता हुआ ।

श्रीग ( पु० )-मजगर, महामुख ।

श्रीभू ( श्री० )-शैली नारना, घोलना ।

श्रीम्प ( पु० )-साँझ, शिव ।

श्री [नी]र ( पु० )-बड़ा साँप, अजगर ।

श्रीर्ष ( वि० )-बड़ा हुआ, मूत्र हुआ,  
फटा हुआ, दुबला, पतला ।

श्रीर्षि ( वि० )-नाशकारी, खूंखार ।

श्रीर्ष ( न० )-शिर, अस्तक ।

श्रीर्षक ( पु० )-राहु । न०-शिर,  
गोपही, घोड़ी, टीवी, जैमला,  
हुपग, छेत का दैर्घ्य ।

श्रीर्षव ( पु० )-साक्ष्याल । न०-  
कलगी, टीवी ।

श्रीलू ( १ प० )-मोचना, देवा करना,  
पूजना, ममन करना । १० उ०-  
पूजना, धार २ करना, चिन्तन  
करना, पहरना । [मनु भीर परि  
उपमगं के लगा देने वि इम धातु

का अर्थ वार २ सोचना या करना  
होता है] ।

श्रील ( पु० )-मजगर । न०-नयित,  
मुखलत, आदत, अच्छा स्वभाव,  
अच्छी मूरत । [मदाचार का भंग ।

श्रीलउपहन ( न० )-मतीरवर्त्तन,

श्रीलन ( न० )-वार २ करना, क्या-  
ध्याप, पहिरना ।

श्रीलवृत्ति ( स्त्री० )-मदाचार, नैकी ।

श्रीलित ( वि० )-पहिरा हुआ, ममल  
किया हुआ ।

शुंशुमार ( पु० )-मकरमेद, मूम ।

शुक ( पु० )-तोता, शिरीषवृक्ष, ठपा-  
मपुत्र । न० बट, कलगी, पगड़ी ।

शुकदेव ( पु० )-ठपासुत्र का नाम ।

शुकवन्दन-मदन ( पु० )-अनार का पेड़ ।

शुक ( वि० )-चक्कीला, साँझ,  
खारा, कटोर । न०-नाम ।

शुक्ति ( स्त्री० )-वीप, चौड़े की भयाल ।

शुक्तिवीण ( न० )-भीती ।

शुक ( पु० )-एक पक्ष, अमुरों का,  
आचार्य, उपेष्टनाम, अग्नि, चित्र-  
कदम्ब । न०-वीप, शविन ।

शुकल-क्रिय ( वि० )-वीपवर्षक, वीपवृक्ष

शुकवार-यामर ( पु० )-शुकवार से  
अगला दिन, शुक्रमा ।

शुकल ( वि० )-सफेद, खेत । पु०-  
खेतता, चान्द्रमास का अन्तिम  
आधा भाग, शिव । न०-पांटी,  
नीली ची ।

शुल्लपातु ( पु० )-छहिया, पाकनिही ।

शुल्लपल ( पु० )-चान्द्रमास का

अङ्गितमं अहंश जिस में चन्द्रमा प्रकाशित होता है ।

शुक्ला ( स्त्री० )—सुरस्यती, खांड, काकोली वृक्ष ।

शुक्लिना[न्](वि०)—श्वेतता, सफेदी ।

शुक्ति ( पु० )—वायु, रोशनी, अग्नि ।

शुंग ( पु० )—घटवृक्ष के अंकुर ।

शुष् ( १ पु० )—दुःखी होना, रंज करना, शोच करना, पछताना ।

४ उ०—चमकना, स्वच्छ होना, तर होना, मुक्त होना, दुःखी होना ।

शुष्—बा ( स्त्री० )—दुःख, कष्ट, शोच ।

शुचि ( वि० )—स्वच्छ, साफ, सफेद, पवित्र । पु०—पवित्रता, नेकी, ब्राह्मण, प्रीतिम अतु, शृंगार, चीते का चेड़, शिथ, आक का चेड़ ।

शुचिद्वान् [नत्] ( वि० )—चमकीला । पु०—अग्नि ।

शुचिस् ( पु० )—चमक, रोशनी ।

शुटीर ( पु० )—घोर, थोड़ा ।

शुट् ( १ पु० )—लंगड़ाना, रोकना ।

१० उ०—सुस्त होना, नन्द पड़ना ।

शुपट् ( १ पु०, १० उ० )—पवित्र करता, सुखना ।

शुपिठ-रठी(स्त्री०)—सींठ, सूखा अदरक ।

शुपत्य ( न० )—शुपटी ।

शुपट् ( १ पु० )—तोड़ना, दिक् करना ।

शुपट्(पु०)—हाथी की सूंड, इस्तिमद ।

शुपटी ( स्त्री० )—हाथी की सूंड, कमल की दण्डी, वेश्या, कुटनी, सराय ।

शुपटाल ( पु० )—हाथी, गज ।

शुपटी[न्](पु०)—हाथी, साफ करनेवाला  
शुटु ( वि० )—पवित्र, स्वच्छ, साफ, वेदान्त, निर्दोष, श्वेत, सदा, केवल, सादा ।

शुटुजंघ ( पु० )—गधा, गर्दभ ।

शुटुधी-भाय-मति ( वि० )—साफ़दिल, ईमानदार, अकुटिल ।

शुटुहाना ( वि० )—शुटुहान्तःकरण ।

शुटुहान्त ( पु० )—अन्तःपुर, हरण ।

शुटुहान्ता ( स्त्री० )—राजमहिषी, वेगम ।

शुटुहि ( पु० )—पवित्रता, सफ़ाई, चमक, शोभा, गलती की दुहस्ती ।

शुटुहिकर ( वि० )—शुटुहि करने वाला ।

शुटुहिपत्र ( न० )—गलतनामा ।

शुटुहोदन ( पु० )—गीतमयुटु का पिता ।

शुप् ( ४ पु० )—साफ़ होना, शुद्ध होना, शुभ होना ।

शुनक ( पु० )—कुत्ता, एक प्रायि ।

शुनाथी [वी]र ( पु० )—इन्द्र, पहलू ।

शुनि ( पु० )—कुत्ता, कुक्कुर ।

शुनी ( स्त्री० )—कुतिया, कुक्कुरी ।

शुन्ध् ( १० उ० )—साफ़ होना, शुद्ध करना ।

शुन्ध्यु ( पु० )—वायु, हवा । स्त्री०—घोड़ी ।

शुभ् ( १ स्त्री० )—चमकना, सुश होना, सुन्दर दिखलाई देना ।

शुभ ( वि० )—चमकीला, सुन्दर, मंगलकर । न०—मंगल, सीभाग्य, आभूषण, जल । [दायक ।

शुभ [इ] कर ( वि० )—मंगलकर, शुभ-शुभकर्म ( न० )—अच्छा काम ।

शुभवाता ( स्त्री० )—अच्छा सनाचार ।

शुभंयु ( वि० )—मंगलकर, सुशक्रिस्मत् ।

शुभा (स्त्री०)-दूर्वा घास, वंशलोचन ।

शुभांग (वि०)-सूक्ष्मरत, सुन्दर ।

शुभाचार (वि०)-नेक, अच्छा ।

शुभानना(स्त्री०)-सुन्दर मुख वाली स्त्री

शुभाशुभ ( न० )-नेकीबदी, अच्छा-

दुरा, सुखदुःख ।

शुष (वि०)-चमकदार, उघेत । न०-

चांदी । पु०-चन्द्रल, चन्दन ।

शुभ्रा (स्त्री०)-गङ्गा नदी, मणि ।

शुभांशु भकर (पु०)-चन्द्रमा, चांद ।

शुभ् (१प०)-चमकना, घोलना, मारना ।

शुभ(पु०)-एक दैत्य का नाम । [क्षोभा ।

शु [शू] र् ( ४भा० )-मारना, मजबूत

शुल्क् ( १०उ० )-देना, भदा करना,

पैदा करना, कहना, त्यागना ।

शुल्क (अस्त्री०)-टैक्स, चुंगी, मासि,

कीमत, दहेज ।

शुल्कप्राहक-प्राप्ती ( पु० )-नहसूल

इकट्ठा करने वाला । [पैदा करना ।

शुल्-ल् ( १० उ० )-देना, त्यागना,

शुल्-ल् (न०)-रस्सा, तांया, ज़ायदा ।

शुम् (स्त्री०)-माता ।

शुश्रूषक (पु०)-अनुचर, भीकर ।

शुश्रूषणं-पणा=शुश्रूषा ।

शुश्रूषा ( स्त्री० )-सुनने की इच्छा,

सेवा, कथन, आदर, टहल ।

शुष्(४प०)-छूटना, मुर्झाना, दुःखी होना

शुषिर ( वि० )-सूरास्रदार । पु०-

अग्नि, चूहा ।

शुषिल (पु०)-घास, हवा ।

शुष्क (वि०)-सूखा, सूखा हुआ, चका

हुआ, निरपेक, बेबुनियाद ।

शुष्ककलहः-वैरम्=निरर्थक शत्रुता ।

शुष्कल (अस्त्री०)-सूखा हुआ मांस ।

शुष्ण (पु०)-सूर्य, अग्नि ।

शुष्म (पु०)-सूर्य, अग्नि, घास । न०-

शक्ति, प्रकाश ।

शू (अस्त्री०)-जी, यश, शिखा ।

शूकर (पु०)-सूअर, बर्राह ।

शू[सू]हन(वि०)-अहम, घोड़ा, अस्पष्ट ।

पु०-अध्यात्मा । [पादज ।

शूद्र ( पु० )-चतुर्थवर्ण, अन्तिमवर्ण,

शूद्रमिय (पु०)-पलायु, प्याज ।

शूद्रकर्म [नू] (न०)-शूद्रों का कर्तव्य,

सेवादि काम । [आति-की स्त्री ।

शूद्रा ( स्त्री० )-शूद्र की भार्या, शूद्र-

शूद्रावेदी [ नू ] ( पु० )-शूद्रजाति की

स्त्री से विवाह करने वाला पुरुष ।

शूद्री-द्राणी ( स्त्री० )-शूद्र की भार्या ।

शून ( वि० )-वर्धित, सूजा हुआ ।

शूना ( स्त्री० )-माणियों के यथ का

स्थान, क़साईघाता ।

शूनायान् [वत्] ( पु० )-हिंसा करने

वाला, क़साई ।

शू[शु]न्य(न०)-आकाश, विन्दु, मुक्ता

वि० अभावयुक्त, रिक्त, खाली,

निर्जन, तुच्छ । [ नास्तिक ।

शून्यवादी [ नू ] ( पु० )-मीहुविशेष,

शून्यालय ( पु० )-निर्जनगृह ।

शू[सू]पकार(पु०)-पाचक, शूद्रपाचक,

शूद्रपाकीपजीवी ।

शू[सू] र् (पु०)-घीर, बहादुर, एक

यादव जो श्रीरुक्म का दाया पा,

सूर्य, सिंह, एकमहत्त्व, शूकर ।

शूरमेन (पु०)-देशविशेष, यदुपति ।  
 शूर्प (१० व०)-नापना, साप करना ।  
 शूर्प ( पु० )-छात्र, धान्यादि सापने  
 - का साधनविशेष ।  
 शूर्पकर्ण ( पु० )-हस्ती, गज ।  
 शूर्पणखा (स्त्री०)-राक्षस की बहिन ।  
 शूर्पः मि०-मी०=ओहेकीप्रतिमा । [हीना  
 शूल (१ प०)-रोगी होना, बड़ी पीड़ा  
 शूल ( अस्त्री० )-वह रोग जिस से  
 उदर में सुई चुभने की सी पीड़ा  
 होती है, बरछा, त्रिशूल, लोह-  
 कील, एक मुनि, एवा योग ।  
 शूलद्विद् [प्] (पु०)-हिङ्गु, हींग ।  
 शूलयन्त्रा [न्] (पु०)-शिव, महादेव ।  
 शूलधर धारी [न्] (पु०)-पुष्पवत् ।  
 शूलधारिणी (स्त्री०)-पार्वती, दुर्गा ।  
 शूलाकृत ( न० )-लोह आदि की  
 शलाका से घोंघ कर पकाया हुआ  
 मांस । [मुक्त ।  
 शूलिक (पु०)-खरगोश । वि०-शूल-  
 शूली [न्] ( पु० )-शिव । वि०-शूल  
 रोग वाला ।  
 शूल्य (न०)=शूलाकृत ।  
 शूनाल (पु०)-गोदूध, गोमास, दैत्य  
 विशेष, नीच, निर्दय, नीरु, वासुदेव ।  
 शूनालिका-ली ( स्त्री० )-गोदूध की  
 स्त्री, गिदहिया । [ घघन ।  
 शूला (अस्त्री०)-जङ्गीर, लोहरजङ्ग,  
 शूलटा (स्त्री०)-पुष्पवत् ।  
 शूल (न०)-शिखर, पर्यंत की चोटी,  
 सींग, चिन्ह, प्राधान्य, उत्कर्ष,  
 बागाधिप्य, स्तन । पु०-एक ऋषि ।

शृङ्गयेर (न०)-अदरक, सींठ, श्रीराम-  
 चन्द्र के मित्र गुह का पुर ।  
 शृङ्गमूल (पु०)-सिंघाड़ा, शृङ्गाटक ।  
 शृङ्गवान् [वत्] (पु०)-भारतवर्ष की सीमा  
 का एक पर्वत ।  
 शृङ्गाट ( न० )-चतुष्पथ, धीराहा ।  
 पु०-कानाकपादेशस्थ एक पर्वत,  
 सिंघाड़ा ।  
 शृङ्गार (न०)-छींग, अदरक, सिन्दूर,  
 कालागुरु, वज्रावट । पु०-नाटक में  
 एक रस, हस्ती का भूषण, सुरत ।  
 शृङ्गारभूषण (न०)-सिन्दूर ।  
 शृङ्गारयोनि (पु०)-कामदेव ।  
 शृङ्गारी [न्] (पु०)-सुपारी, हस्ती,  
 सुवेश, माणक्य ।  
 शृङ्गी [न्] ( पु० )-पर्वत, वृक्ष, एक  
 ऋषि । वि०-शृग वाला ।  
 शृत ( वि० )-पका हुआ, पक्का ।  
 शृत् ( १ जा० )-अपान शब्द करना ।  
 १ व०-काटना ।  
 शृत् ( पु० )-गुदा, बुद्धि ।  
 शृ ( २ प० )-काटना, छेदन करना ।  
 शृंखर ( न० )-शिखा, शिखास्थित  
 माछा, शिर के भूषणमात्र, मुकुट  
 के ऊपर का पुष्प, ताज ।  
 शेष-फ ( पु० )-शिरन, उपस्थ, लिङ्ग ।  
 शेष[प.]फः [स्] फ ( न० )-पुष्पवत् ।  
 शेषालिका-ली ( स्त्री० )-पुष्पितवृक्ष,  
 सहिजने का वृक्ष, जूफा ।  
 शेषुखी (स्त्री०)-बुद्धि, अवल, ज्ञान ।  
 शेष ( पु० )-छिग, शिरन ।  
 शेषधि ( पु० )-निधि, सज्जाना ।

शेष [या]ल (न०)-सिरवाल, जल  
। के ऊपर की काँटे ।

शेष (पु०)-सर्पों का राजा, समस्त,  
। अवशिष्ट, बाकी, बच, बच ।

शेषा (स्त्री०)-निर्मात्य, वह माला  
। आदि जो देवता के ऊपर चढ़ी  
हुई हो ।

शैल (पु०)-शिखर अर्थात् स्वर  
। विषयक ग्रन्थ के पढ़ने वाला  
पुरुष, शिस्तक ।

शैलिक (वि०)-शिक्षाशास्त्र के  
। जानने या पढ़ने वाला । [पुस्तक ।

शैलिक (पु०)-गणानाग, धिरचिटा

शैल्य (न०)-शीतलता, ठण्डापन ।

शैल्य (न०)-ढीलापन, धिपिलता ।

शैल्य (पु०)-मातृका नामक यादव  
। जो श्रीकृष्ण का सारथि था ।

शैल (पु०)-पर्वत, पहाड़ । न०-  
। शिखर । [द्रव्य ।

शैल्य (न०)-एक प्रकारका शुभ-धत्त

शैल्य (स्त्री०)-पार्वती, दुर्गा,  
गजपिप्पली ।

शैल्य (पु०)-महादेव ।

शैल्य (पु०)-श्रीकृष्ण ।

शैल्य (स्त्री०)-टाकी, टहल ।

शैल्य (पु०)-दिनालयपर्वत ।

शैल्य (पु०)-समुद्र, सागर ।

शैल्य (स्त्री०)-पार्वती, ज्योतिरमती

शैल्य (न०)-गिर, पर्वत की ओटी ।

शैल्य (पु०)-मिह, किरान, शील ।

शैल्य (पु०)-नट, शैलूष ।

शैल्य (स्त्री०)-सूत्र, नियम, रीति,  
परिपाटी ।

शैलूष (पु०)-नट, विलय का यज्ञ,  
धूर्त, ताल देने वाला पुरुष ।

शैलूषिकी (स्त्री०)-नटनी, शैलूषतापरी ।

शैलूष (पु०)-दिनालयपर्वत ।

शैल्य (न०)-शिवपुराण । पु०-धनूरा ।

शैल्य-शिव की उपासना करने  
वाला, शिवसम्प्रन्धी ।

शैल्य (न०)-पद्मकाष्ठ । पु०-सिरवाल,  
विन्ध्य के मनीष एक पर्वत ।

शैल्य (स्त्री०)-नदी, दरिया ।

शैल्य (न०)-अलोत्पन्न द्रव्यविशेष,  
काँट, मैदान, सिरवाल । [एकराजा ।

शैल्य-व्य (पु०)-श्रीकृष्ण का एक अवयव,

शैल्य (स्त्री०)-प्रतीपराज की भार्या,

सगर की पत्नी ।

शैल्य (न०)-शाल्यावस्था, बचपन ।

शैल्य (पु०)-प्रथम रंग का पिछा ।

शैल्य-शिशिरसम्प्रन्धी, शीतका-  
लीन । [जड़ागा ।

शैल्य (पु०)-चार रखना, शान पर

शैल्य (पु०)-दुःख, कष्ट, मानसिक  
यदना ।

शैल्य (पु०)-दुःख की भाँग ।

शैल्य (न०)-दुःख, कष्ट ।

शैल्य (वि०)-शोकप्रद, दुःखदायी ।

शैल्य (वि०)-दुःखदायी, कमीना ।

शैल्य (न०)-प्रभा, प्रकाश, अग्नि  
की जलपट ।

शैल्य (न०)-यज्ञदुरी, पराक्रम ।

शैल्य (वि०)-शुभ, छाल, पीछा ।

पु०-अग्नि, मंगल । न०-११६ ।

शैल्य (वि०)-शुभ, छाल । न०-  
कु कुम, रण, युद्ध ।

शोध ( पु० )-सूजन ।

शोध ( पु० )-सफाई, शुद्धता, पवित्रता ।

शोधक ( वि० )-दस्तावर, शुद्धिकारक ।

शोधन ( वि० )-शुद्ध करने वाला ।

न०-सफाई, गलतियों का शुद्ध

करना, कर्म की अदायगी । पु०-सूना

शोधनी ( स्त्री० )-झाड़ू, भाजनी ।

शोषित ( वि० )-शुद्ध किया हुआ ।

शोभन ( वि० )-सुन्दर, अच्छा, मनो-

हर । न०-सुन्दरता, कमल ।

शोभना ( स्त्री० )-हल्दी, सुन्दर स्त्री ।

शोभा ( स्त्री० )-सुन्दरता, चमक,

प्रभा, हल्दी, गीरोचना ।

शोष ( पु० )-सुरक्षाना, सूखापन ।

शोषण ( वि० )-सुखाने वाला, सुर-

क्षाने वाला । पु०-कामदेव के पञ्च-

शरी में एक । [झाया हुआ ।

शोषित ( वि० )-सुखाया हुआ, सुर-

शीक ( वि० )-धीर्यवस्त्रन्धी ।

शीघ्र ( न० )-शुद्धता, सफाई, शीघ्रता,

सम्बन्धी आदि के जन्म मरण

से जो सूतक लगता है उसका

दूरीकरण ।

शीघ्रकर्म ( न० )-प्रातःकाल मलमूत्र

त्याग कर स्नानादिकृत्य ।

शीघ्रकूप ( पु० )-पाखाना, सवहास ।

शीट्-ह् ( १ प्र० )-मगूर होना, गर्व

करना । [ मोहता, तपस्वी ।

शीटीर ( वि० )-मगूर, गर्वित । पु०-

शीघ्र ( वि० )-दक्ष, चतुर, मदमस्त ।

शीघ्रक-गहो [त्रि] ( पु० )-कलाल,

मद्यवणिक ।

शीद्र ( वि० )-शुद्धसम्बन्धी ।

शीनक ( पु० )-मन्त्रद्रष्टा एक ऋषि ।

शीनिक ( पु० )-यधिक, फसाई ।

शीर्य ( न० )-बहादुरी, पराक्रम, शूरता ।

शीरक-लिकक ( पु० )-शुल्कपाहक ।

शीरस्तिफ ( वि० )-आने वाले कल का,

कल तक रहने वाला ।

शमन् ( न० )-मुख, चेहरा, शरीर, शव ।

शमशान ( न० )-मुर्दा फू कने की जगह ।

शमश्रु ( न० )-दाढ़ी ।

शमश्रुल ( वि० )-दाढ़ी वाला, दाढ़ीदार ।

शमोल् ( १ प्र० )-आँखें बन्द करना,

नेत्र मींचना ।

शयान ( पु० )-कृष्णवर्ण, कोकिल, मेघ,

प्रयाग तीर्थ का घट, बृद्धदारक

वृक्ष । वि०-शयानवर्णयुक्त ।

शयानकण्ठ ( पु० )-नयूर, शिव, नील-

कण्ठ नामक पक्षी ।

शयामल ( पु० )-काला रंग, पीपल ।

वि०-काले रंग वाला ।

शयामसुन्दर ( पु० )-श्रीकृष्ण ।

शयाना ( स्त्री० )-वह स्त्री जिस के

सन्तान न हुई हो, पोटश वय-

स्का स्त्री, यमुना, विष्पली,

गिलोय, हल्दी, तुलसी, गूगल, गौ,

शिंशपावस, स्त्रीविशेष, यथा--

“ शीते मुखोष्णसर्वाङ्गी, यीष्मे च

सुखशीतला । तप्तकाष्ठनववर्णाभा,

सा स्त्री शयामेति कथ्यते ” ।

शयागात्र ( पु० )-युधप्रह । वि०--

काले अङ्ग वाला । [ चाला ।

शयाल-क ( पु० )-पत्नी का आता,



श्याय ( पु० )-कालापीलाभिन्नित  
रंग, कपिश । वि०-उस वाला ।  
श्यातदन्त-क (वि०)-काले और पीले  
दांत वाला ।

श्येत ( पु० )-शुक्लवर्ण, सफेद रंग ।  
श्वि०-श्वेत रंग वाला । [रङ्ग ।  
श्वेन ( पु० )-बाज नामक पक्षी, सफेद  
श्वै ( १ भा० )-जाना, गमन करना ।  
श्वैनम्पाता (स्त्री०)-भ्रमया, शिकार ।  
श्वण् ( १ प०, १० व० )-देना, दान करना ।  
श्वत् (स्त्री०)-श्रद्धा, विश्वास, यकीन ।  
श्वप् ( १० व० )-घांघना, छुड़ाना, धप  
करना । १ प०-यत्न करना, दुबल  
होना ।

श्वपन ( न० )-भारता, धप, कोशिश ।  
श्रद्ध-द्वाहुः ( वि० )-श्रद्धा रखने वाला,  
इच्छुक । [करना ।  
श्रद्धा ( ३ व० )-भरोसा करना, विश्वास  
श्रद्धा ( स्त्री० )-विश्वास, भरोसा,  
यकीन । [भरोसा करने लायक ।  
श्रद्धेय ( वि० )-श्रद्धा रखने के योग्य,  
अन्यः-अन्यम्-ढील, कलह, घांघना ।  
श्रम् ( ४ प० )-यत्न करना, कोशिश  
करना, पकना । [दुःख, तप ।  
श्रत ( पु० )-मेहनत, यत्न, थकावट,  
श्रमकर्मित ( वि० )-मेहनत से यकित ।  
श्रमक क ( वि० )-मेहनत करने वाला,  
नीच । पु०-तपस्वी, धौदु साधु,  
फकीर । [होने योग्य ।  
श्रमसाध्य ( वि० )-मेहनत से प्राप्त  
श्रम् ( १ भा० )-छापरयाह होना,  
गलती करना ।

शयः-यणम्=पनाह, आश्रय, रक्षास्थान ।  
शय ( पु० )-कान, टपकना, यश ।  
शयण ( अस्त्री० )-कान । न०-सुनना,  
अध्ययन, यश, द्विपौ हुई याता, घन ।  
शयणगोचर ( वि० )-जो सुनाई दे सके ।  
शयणेन्द्रिय ( न० )-सुनने की इन्द्रिय,  
कान, श्रोत्र ।  
श्या ( २ व० )-पकाना, उबालना ।  
श्याय ( वि० )-पका हुआ, उबला हुआ ।  
श्राद्ध ( वि० )-श्रद्धायुक्त, दयादार ।  
न०-श्रद्धापूर्वक पितरों की सेवा,  
शुश्रूषा तथा भोजनादि से उन  
की सृष्टि ।

श्रान्त ( वि० )-पका हुआ, शान्त ।  
श्रान्ति ( स्त्री० )-थकावट, श्रम ।  
श्राम ( पु० )-काल, महीना, उत्तर ।  
श्राय ( पु० )-आश्रय, रक्षास्थान ।  
श्राय ( पु० )-सुनना, बहना ।  
श्रायक ( पु० )-सुनने वाला, शिष्य,  
बौद्धमाधु, कीआ ।  
श्रावण ( वि० )-कर्णसम्बन्धी । पु०--  
जायाद के पश्चात् आने वाला  
चान्द्रमान, नास्तिक, एक वैश्य  
तपस्वी जो राधा दशरथ के द्वारा  
भारा गया । [श्रावणमें होनेवाला ।  
श्रावणिक ( पु० )-श्रावण मास । वि०--  
श्रावणी ( स्त्री० )-श्रावण मास की-  
पौर्णमासी, उस दिन किये जाना  
वाला एक वैदिक कृत्य ।  
श्रावित ( वि० )-सुनाया हुआ, कथित ।  
श्राव्य ( वि० )-सुनने योग्य, साक्ष ।  
श्रि ( १ व० )-आश्रय लेना, मनोप जाना ।

श्रित ( वि० )-गत्, आश्रित, रक्षित ।  
 श्री ( ९ उ० )-प्रकान्ता चबालना ।  
 श्री ( स्त्री० )-सम्पत्ति, धन, दीलत,  
 सुन्दरता, शोभा, लक्ष्मी, शृंगार,  
 प्रतिभा, धर्म, अर्थ और काम का  
 समुच्चय, कमल, सरस्वती, लवंग,  
 घाणो, यश, प्रतिष्ठावाचक शब्द ।  
 श्रीकण्ठ ( पु० )-शिर, भवभूति ।  
 श्रीनगर ( न० )-एक नगर का नाम ।  
 श्रीकण्ठिनी ( स्त्री० )-वसतपक्ष्मी ।  
 श्रीपति ( पु० )-विष्णु, राजा ।  
 श्रीपथ ( पु० )-राजमार्ग, [इन्द्राश्व ।  
 श्रीपुत्र ( पु० )-कामदेव, चन्द्रमा,  
 श्रीमान् [मत्त] ( वि० )-धनवान्, सुश-  
 क्तिमत्, प्रसिद्ध, आदरपात्र ।  
 श्रीयुक्त-युत ( वि० )-पूषंषत् ।  
 श्रीवल्लभ ( पु० )-सुशक्तिमत् आदमी ।  
 श्रील ( वि० )=श्रीमान् ।  
 श्रीश ( पु० )-विष्णु, परमात्मा ।  
 श्रु ( १ प० )-जाना, हरकत करना ।  
 ५ प०-सुनना, श्रवण करना, ध्यान  
 देना । [अधीत, लपात ।  
 श्रुत ( वि० )-सुना हुआ, सीखा हुआ,  
 श्रुतकीर्ति ( वि० )-प्रसिद्ध । पु०-उदार  
 पुरुष, शपि । स्त्री०-शत्रुघ्न की  
 पत्नी । [करने वाला ।  
 श्रुतधर ( वि० )-जिसने सुन कर याद  
 श्रुतयान्[यत्] ( वि० )-वेदघ, वेदपाठी ।  
 श्रुति-मी ( स्त्री० )-सुनना, श्रवण, कान,  
 रिपोर्ट, समाचार, किंवदन्ती,  
 आवाज, वेद, वेदमन्त्र, वेदज्ञान ।  
 श्रुतिपट ( पु० )-सर्प, तप ।

श्रुतिकट्ट ( वि० )-सुनने में कठोर ।  
 श्रुतिधर ( वि० )-सुनने वाला ।  
 श्रुतिप्रामाण्य ( न० )-वेद का प्रमाण ।  
 श्रुत्युक्त ( वि० )-वेदविहित ।  
 श्रु[स्त्रु]व ( पु० )-यज्ञ, यज्ञ का सुरवा ।  
 श्रु[स्त्रु]वा ( स्त्री० )-यज्ञ में घृताहुति  
 देने का पात्रविशेष, सुरवा ।  
 श्रंशि-णी ( स्त्री० )-पक्षि, लाइन,  
 फ़तार, समूह, जमाअत, ढोल ।  
 श्रंशिका ( स्त्री० )-तम्बू, खेमा ।  
 श्रंयस् ( वि० )-वेदतर, सर्वोत्तम ।  
 न०-शुभकर्म, सौभाग्य, मुक्ति ।  
 श्रंयस्कर ( वि० )-शुभ, सगलकर ।  
 श्रंष्ट ( वि० )-सर्वोत्तम, अत्युत्तम,  
 अत्यन्तसुखी । पु०-ब्राह्मण, राजा,  
 कुवेर, विष्णु । न०-गोदुरध ।  
 श्रंष्टाश्रम ( पु० ) गृहस्थाश्रम ।  
 श्रंष्टी[न्] ( पु० )-धनवान्, सेठ ।  
 श्रंष्ट्य ( न० )-श्रंष्टता, अच्छापन ।  
 श्रंण् ( १ प० )-इकट्ठा करना या होना ।  
 श्रंणिणी ( स्त्री० )-तितम्ब, चूतड़,  
 कमर, सहक, -रास्ता ।  
 श्रंणिमूत्र ( न० )-पेटी, तनही ।  
 श्रंतस् ( न० )-कान, सूँड़, कर्णेंद्रिय ।  
 श्रंता[त्] ( पु० ) सुनने वाला, शिष्य ।  
 श्रंत्र ( न० )-कान, कर्णेंद्रिय, वेद,  
 वेदाध्ययन ।  
 श्रंत्रिय ( पु० )-वेदघ, वेदप टी ब्राह्मण ।  
 श्रंत ( न० )-कणमन्मन्धी, यज्ञमन्म-  
 न्धी, वेदमन्मन्धी ।  
 श्रंतकमं ( न० ) वेदिक मंत्राण्ड ।  
 श्रंतमृत्र ( न० )-एक प्रकार के मृत्र

जिने में कर्मकाण्ड का विधान है  
 और गिन की रचना आश्वना-  
 यन, मासपायन, कार्त्तययन आदि  
 ऋषियो ने की है । [ सुन्दर ।  
 श्लक्ष्ण ( वि० )—मुलायम, चिकना,  
 श्लक्ष् ( १ भा० )—तारीफ करना, शेखी  
 मारना, बढ़ावा मारना ।  
 श्लक्ष्ण-पा=तारीफ, बढ़ावा, सुशामद ।  
 श्लक्षित ( वि० )—प्रशंसित, तारीफ  
 किया हुआ । [ प्रशंसा के योग्य ।  
 श्लक्ष्ण घनीय ( वि० )—फ्राविलेतारीफ,  
 श्लक्ष् ( १ प० )—जलना, विवर्ण । ४ प०—  
 आलिंगन करना, जोड़ना, पकड़ना ।  
 श्लक्ष्ण ( वि० )—खुड़ा हुआ, आलिं-  
 गन किया हुआ ।  
 श्लेष ( पु० )—आलिंगन, सम्बन्ध, जोड़ ।  
 श्लेषार्थ ( पु० )—द्वयर्थकवाचार्थ ।  
 श्लेषन-क-स्मा [ नृ ] ( पु० )—कफ, बलग्न ।  
 श्लेषगल ( वि० )—कफजनक, बलग्न वाला ।  
 श्लेषमातक ( पु० )—रिहसोड़े का वृक्ष ।  
 श्लोक् ( १ भा० )—प्रशंसा करना,  
 रचना करना, बढ़ावा, एकत्र होना ।  
 श्लोक ( पु० )—पद्य, कविनिर्मित चार  
 पादों वाला वाक्यविशेष, पद्य ।  
 श्वः [ श्व ] ( न० )—कल, आने वाला  
 दिन, अमावस्यदिन ।  
 श्व श्रेयस ( न० )—कल्याण, शुभ, मंगल,  
 भलाई, सुख । [ समूह ।  
 श्वगण ( पु० )—कुत्तों का गिरोह, कुक्कुर-  
 श्वदंष्ट्रक ( पु० )—गोक्षुर, गोखरु ।  
 श्वपथ ( पु० )—चाण्डाल, निपाद,  
 भगी, गोच पुरुष ।

श्वपाक ( पु० )—पूर्ववत् ।  
 श्वफल ( पु० )—अनार, नींबू, नारंगी ।  
 श्वपथ ( पु० )—शेष, मूतन ।  
 श्वपीचो ( स्त्री० )—रोग, बीमारी ।  
 श्वल्-ल् ( १ प० )—भागना, दौड़ना ।  
 श्वल्फ ( १० उ० )—कहना, घमान करना ।  
 श्वशुर ( पु० )—पति वा पत्नी का पिता ।  
 श्वशुर्य ( पु० )—साला, बहनोई, देवर ।  
 श्वश्रू ( स्त्री० )—ससू, पत्नी वा पति  
 की माता । [ आह भरना ।  
 श्वस् ( २ प० )—श्वाम लेना, फुकारना ।  
 श्वसित ( वि० )—श्वाम लिया हुआ ।  
 न० श्वास, पसीना, आह ।  
 श्वस्तन ( वि० )—कल होने वाला ।  
 श्वा [ नृ ] ( पु० )—कुत्ता, कुकुर ।  
 श्वागणिक ( पु० )—कुत्तों का पालक ।  
 श्वाग्रिक ( पु० )—शिकारी ।  
 श्वाननिद्रा ( स्त्री० )—कुत्तेकी सी नींद-  
 चमक नींद । [ शिकारी जानवर ।  
 श्वापद ( वि० )—दूखवार । पु०—चीता,  
 श्वास ( पु० )—साम, प्राण, पसीना,  
 वायु, श्वास का रोग, आह ।  
 श्वि ( १ प० )—बढ़ना, फूलना, वृद्धि  
 को प्राप्त होना ।  
 श्वित् ( १ भा० )—सफेद होना ।  
 श्वित ( वि० )—सफेद । न०—सफेदी ।  
 श्वित्र ( न० )—सफेद कोट ।  
 श्वित ( वि० )—सफेद । पु०—सफेद  
 , रङ्ग, सीप, कीड़ी, शुक्र । न०—चादी  
 श्वेतकुक्ष ( पु० )—ऐरावत नामक हस्ती ।  
 श्वेतकुष्ठ ( न० )—सफेद कोट ।  
 श्वेतकेतु ( पु० )—जैन वा बौद्ध तपस्वी

श्वेतधाम(पु०)-चन्द्रमा, कर्पूर । [का]  
 श्वेतपत्र(पु०)-हंस । वि०-सफेद पत्तों  
 श्वेतपिङ्गल ( पु० )-सिंह, शेर ।  
 श्वेतमाल ( पु० )-बादल, धुआं ।  
 श्वेतरक्त ( वि० )-गुलाबी ।  
 श्वेतवाह ( पु० )-अर्जुन, इन्द्र ।  
 श्वेता (स्त्री०)-कौड़ी, दूध, खाँड,  
 स्कटिका, फिटकरी ।  
 श्वेत्य (न०)-सफेदी, श्वेतकुट्ट ।

## घ

घ (वि०)-घेष्ट, धीमान् । पु०-नाश,  
 हानि, अवशेष, अन्त, मुक्ति,  
 स्वर्ग, निद्रा, माल, गर्भविमोचन ।  
 घट्कर्म ( न० )-ग्राहण के छः कर्त्तव्य  
 कर्म यथा:-पढ़ना, पढ़ाना; यज्ञ  
 करना, कराना; दान देना और  
 लेना ।  
 घट्परण (पु०)-मक्खी, टीही, जूँ ।  
 घट्दशन ( न० )-नारियँ के ६ भाग  
 यथा:-सांख्य, योग, न्याय, वैशे-  
 धिक, मीमांसा और वेदान्त ।  
 घट्द्विंशति (स्त्री०)-२६ की संख्या ।  
 घट्ज ( न० )-भरीर के छः भाग  
 यथा:-दोनों जघा, दोनों पाए,  
 गिर और अधरभाग; ६ वेदाङ्ग  
 यथा:-शिक्षा, व्रज्य, टकाकरण,  
 निरुक्त, उद्योगित और छन्द ।  
 घट्गोत्रि (स्त्री०)-२६ की संख्या ।  
 घटानन-घट्-घटन (पु०)-कार्तिकेय ।  
 घटहृदय-रु (पु०)-हीजड़ा, गुप्पुम्ह ।

घमासिक ( वि० )-अर्द्धवार्षिक ।  
 घष्टि ( स्त्री० )-६० की संख्या ।  
 घष्ट ( वि० )-उठा, उठवां ।  
 घष्टाश ( पु० )-उठाभाग, खेत की  
 उपज का द्वां हिस्सा जो राजा  
 प्रायः स्वयंभवासे ग्रहण करता है ।  
 घ [पा] घिका-घी (स्त्री०)-शुक्ल वा  
 कृष्णपक्ष की छठी तिथि, उठी  
 विभक्ति, कात्यायनी नास्ती दुर्गा ।  
 घटीतरुपुष्प ( पु० )-समासभेद ।  
 घटीपूजन पूजा=बालक जन्म के  
 पञ्चात् छठे दिन जो छटी का  
 पूजन किया जाता है ।  
 घटसानु ( पु० )-मयूर, यज्ञ ।  
 घाहय (पु०)-मनोविकार, गान ।  
 घाह्युपय ( न० )-छः गुणों का समूह,  
 राजनीति के छः विशेष अङ्ग ।  
 घाहमातुर ( पु० )-कार्तिकेय ।  
 घाहमासिक (वि०)-अर्द्धवार्षिक ।  
 घाण्ट ( वि० )-उठा ।  
 घिह्ग (पु०)-कामो पुरुष, विट ।  
 घु (पु०)-बालकजन्म ।  
 घोडश [न] (वि०)-सोलह ।  
 घोडश (वि०)-सोलहवां ।  
 घोडशकणाः ( स्त्री० घहु० )-घट्टभा,  
 की सोलह कलाएं यथा-अमृता,  
 मानदा, पुषा, लुट्टि, पुट्टि, रति,  
 धूति, शशिनो, चन्द्रिका, कान्ति,  
 उद्योतरमा, शो, मीति, अङ्गदा, पूर्णा  
 और अमृता ।  
 घोडशनाम्नकाः ( स्त्री० घहु० )-सोलह  
 नाताएं यथा:-"मीरी पद्मा शची

मेधा, सावित्री विजया जया ।  
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो  
लोकमातरः । शान्तिः पुष्टिर्धृति-  
स्तुष्टिः कुलदेवात्मदेवताः ॥

पोहशिक(वि०)-सोचहका बना हुआ ।

योढा (अ०)-उः प्रकार से ।

योद्ध (पु०)-उः दांत का खेल ।

जिष् (१, ४ प०)-पूकना ।

स्तीवन- स्तेवन ( न० )-पूक, छार ।

स्तपूत (वि०)-पूका हुआ ।

## स

स (पु०)-सर्व, वायु, शिव, पत्नी, विष्णु ।

न०-ज्ञान, ध्यान, वाड़ा । स्त्री०-

[सा] लक्ष्मी । अ०-समास में पूर्व

में 'सह, मन, सद्गुरु' के लिये

प्रयुक्त होता है ।

संय (पु०)-अस्थिमिश्र ।

संयज् (१ व०)-पूजना, पवित्र करना ।

संयत् (१ जा०)-कोशित करना, जट्टी-

कहद करना । स्त्री०-युद्ध, लड़ाई ।

संयत ( वि० )-अवच्छेद, यथा हुआ ।

पु०-तपस्वी ।

संयतात्मा [न्] (वि०)-जितेन्द्रिय ।

संयत (वि०)-मायधान, तत्पर, दृढत्व ।

सयम् (१ प०)-रोकना, यामित करना,

याचना । [अवरोध, तपस्या ।

संयम ( पु० )-रोक, जनोपतिषो का

संयमन (न०)-पूर्ययत् । [चित्त ।

संयमित (वि०)-रोका हुआ, यद्, पक-

संयमी [न्](पु०)-तपस्वी, जितेन्द्रिय ।

संया (२ प०)-एक साथ साथे बढ़ना,  
जुड़ा होना, प्राप्त करना, एक-  
त्रित होना । [परदेशगमन ।

सयात्रा (स्त्री०)-द्वीपान्तर में जाना,

सयाग (न०)-अच्छे प्रकार से जाना ।

संयाम (पु०)=संयम ।

सयाव (पु०)-घृततीरपक्व गोधून

बूणादि का हलुवा, विष्टकविशेष ।

संयुक् [न्] (वि०)-सम्बन्धी, गुणवान्,

सयुक्त, जुड़ा हुआ । [संयोगाश्रय ।

संयुक्त (वि०)-मिला हुआ, जुड़ा हुआ,

सयुग (पु०)-युद्ध, लड़ाई ।

संयुत (वि०)=संयुक्त ।

संयोग ( पु० )-नैलन, जोड़ना, मेल,

अप्राप्तवस्तुद्वय की प्राप्ति, सम्ब-

न्धमात्र । [ संयोगयुक्त ।

संयोगी [न्] ( वि० )-संयोग वाला,

संयोजन (न०)-मैद्यन, संयोग ।

संयोजित ( वि० )-मिलाया हुआ,

संयोगीकृत । [निन्दा ।

संरम्भ (पु०)-क्रोध, गुस्सा, वेग, बरसाह,

संराधन ( न० )-सेवा करना, अच्छे

प्रकार सेचना ।

संराय (पु०)-शब्द, ध्वनि, आवाज़ ।

सरूढ (वि०)-उगा हुआ, जाता हुआ,

प्रीड, परिपूर्ण हुआ ।

संरोध (पु०)-रोकना, रोकना, लेप ।

संनयन ( वि० )-लगा हुआ, सयुक्त ।

संलय (पु०)-निद्रा, सोना, प्रलय ।

सलाप (पु०)-आपस में बातचीत

करना, एकान्त सम्भाषण, भीति-

शुक्त भाषण, गुरुश्रु ।

सवत् ( ७० )-वर्ष, साल, अठ्ठ ।

सवत्सर ( पु० )-पूर्ववत् ।

सवदन ( न० )-यश में करना, अच्छे प्रकार से देखना, आलोचना करना, सवाद ।

सवदा ( स्त्री० )-वशीकरणक्रिया ।

सवर ( न० ) जल, एक ब्रीहवृत्त ।

पु०-एक दैत्य, मत्स्यविशेष ।

सवर्त ( पु० )-प्रलय, धर्मशास्त्रनिर्माता एक मुनि, मेघो का राजा ।

सवर्त ( पु० )-घलदेव, घलदेव का हल, घाहवागल, समुद्राग्नि ।

सवत्तिका ( स्त्री० )-दीपक की शिखा, कमलादि की केसर के समीप का पत्रा, नवीन पत्र । [फरने वाला समुद्र ( वि० )-घटाने वाला, दृज्जल नवलिप्त ( वि० )-मिश्रित, मिला हुआ, एकत्रित ।

सवस्य ( पु० ) ग्राम गाव ।

सवह ( पु० ) सात प्रकार के वायुओं में से एक, चौथा वायु ।

सवाद ( पु० )-समाचार, सन्देशवाक्य ।

सवार ( पु० )-उपाकरण में ग्यारह प्रकार के वाद्य प्रयत्नों में से एक, ठिपाना, समोपन ।

सवास ( पु० ) गढ़ापर, पुर से बाहिर कोटायोग्य सुला स्थल ।

सवाहक ( वि० )- अद्वायनदन, मुहूर्त भरने वाला अद्ग भरने वाला ।

सवाहन ( न० ) अद्गदन, मुहूर्तभरना ।

सविय ( वि० )-घमराया हुआ, लखड़े दिन वाला ।

सवित्ति ( स्त्री० )-युद्धि, चेतना, समक, अङ्गीकार ।

सवित् दु ( स्त्री० )-ज्ञान, प्रतिपत्ति, स्वीकार, आचार, युद्ध, मद्धेत, समाधि, सुधी, नाग, सम्भाषा ।

सविदा ( स्त्री० ) विजया, भाग, सिद्धि । [हुमा, अङ्गीकृत ।

सविदिस ( वि० ) अच्छ प्रकार जाना

सविधान ( न० )-उपाय, रचना ।

सवीक्षक ( न० )-तालाश करना, अव्येषक, अच्छी तरह देखना ।

सवीत-वृत्त ( वि० ) रुका हुआ, ठका हुआ आवृत ।

सवेग ( पु० )-भयादि से सत्पन्न हुई शीघ्रता, पूर्ण वेग, जल्दी करना ।

सवेश ( पु० ) निद्रा, उपभोगस्थान ।

सवेशन ( न० )-सौगक्रिया, सैद्युनकर्म ।

सठपान ( न० ) उत्तरीयवस्त्र, ऊपर ओढ़ने का वस्त्र, वस्त्रमात्र ।

संशक्त ( पु० )-कुलाचार या प्रतिज्ञा करके युद्ध से न हटने वाला पुरुष, नारायणी सेनाविशेष ।

संशय ( पु० )-सन्देह, शक, परस्पर विरुद्ध दो धर्मों का शक ।

संशयस्य ( वि० )-सन्देह में पड़ा हुआ, संशययुक्त ।

संशयान्ता [ नृ ] ( पु० ) सन्देह करने वाला पुरुष, सन्दिग्धान्त कारण ।

संशयान्ता [ वि० ]-सन्देहयुक्त, शक करने वाला ।

संशयिता [ नृ ] ( वि० )-पूर्ववत् ।

संशरण ( न० )-युद्धारम्भ, हमला, सरसण ।

स्थिति, नाश, व्यवस्था, सादृश्य,  
न्याय्य पक्ष में स्थिति, यज्ञविशेष,  
प्रलयचतुष्टय ।

संस्थान ( न० )--ढेर, मिक्कदार, शकल,  
घनाघट, निकटता, चौराहा, स्थान,  
चिन्ह, मृत्यु ।

संस्थापक ( वि० )--कायम करने वाला ।

संस्थापन ( न० )--कायमी, एक स्थान  
पर रखना, नियम । [ किया हुआ ।

संस्थापित ( वि० )--एतन्नीभूत, कायम

संस्थित ( वि० )--ठहरा हुआ, समी-  
पस्थ, एकत्रित, कायम, समस्त, मूल ।

संस्थिति ( स्त्री० )--समीपता, ढेर,  
स्थान, अवस्था, हालत, मृत्यु,  
रोग, प्रलय ।

संस्पृश ( पु० )--लगाव, छूना, मिलाव ।

संस्पृश् ( द्वि० )--छूना, मल छिड़कना ।

संस्पृष्ट ( वि० )--छुआ हुआ, मिला हुआ ।

संस्मरण ( न० )--याददाशन, स्मरण ।

संस्मृ ( १५० )--याद करना, सोचना ।

संस्मृति ( स्त्री० )--संस्मरण ।

संश्र [ श्रा ] य ( पु० )--बहना, बूना,  
टपकना, धारा ।

संश्रुत ( वि० )--भाइत, बन्द किया  
हुआ, जुड़ा हुआ, मिला हुआ,  
एकत्रित, पक्ष ।

संश्रुति ( स्त्री० )--मेल, मिलाव, घनता,  
ढेर, शक्ति, शरीर ।

संश्रु ( २५० )--यादन मिलाना,  
मारना, इकट्ठा करना ।

संश्रय ( न० )--इकट्ठा करना, पकड़ना,  
रोकना, पीछे को हटाना ।

संश्रय [ य ] ( पु० )--नाश करने वाला ।  
संश्रय ( पु० )--अत्यन्त पुथी या भय,  
घायु, स्पृह, रगड़ना ।

संश्रय ( पु० )--एकजगह करना, रोकना,  
नाश, प्रलय, अन्त, समूह, जुगर ।

संश्रयक ( वि० )--नाश करने वाला,  
दवाने वाला ।

संहिता ( वि० )--एक जगह रक्खा हुआ,  
एकत्रित, संहित, स्थित ।

संहिता ( स्त्री० )--मेल, समूह, सूत्र  
या श्लोको का क्रमपूर्वक एकी-  
करण, वेद की ऋचाओं के शब्दों  
को सन्धि के नियमानुसार मिलाने  
का नाम संहिता है इसी लिये  
वेद संहिता नाम से भी पुकारे  
जाते हैं ।

सहृति ( स्त्री० )--सुखलड़, शीरोगुल ।

संह ( १५० )--इकट्ठा करना, बाहिर  
खींचना, मुझनिद करना, रोकना,  
पकड़ना । [ आक्रान्त, नष्ट ।

संहत ( वि० )--एकत्रित, मुझनिद ।

संहति ( स्त्री० )--घनता, नाश, पकड़  
गिरफ्त, रोक, समूह ।

संहृष् ( ४५० )--खुश होना, रोंगटे  
खड़े होना ।

सकट ( वि० )--कमीना, नीच, घुरा ।

सकटक ( वि० )--काटेदार, खतरनाक,  
दुःखदायी । पु०--सिरवाल ।

सकरुण ( वि० )--दयावान्, दयालु ।

सकर्तृक ( वि० )--कर्तृमुक्त ।

सकर्मक ( वि० )--कर्म करने वाला,  
कर्मशील, व्याकरण में उस भातु

- संघामपटह ( पु० )-झीजी बाजा,  
छद्माई का नक्काश ।
- संघाह ( पु० )-शिक, मुहो, दस्ता ।
- संघाहक ( पु० )-पकड़ने वाला, इकट्ठा  
करने वाला ।
- संघकीर्त ( वि० )-ग्रहण किया हुआ,  
संक्षिप्त, एकचित्त, शासित, स्वीकृत ।
- सङ्घ ( पु० )-जनसभा, समूह ।
- सङ्घट ( १ भा० )-मिलना, एकत्र होना ।
- सङ्घटना ( स्त्री० )-मेल, मिलाप, घटना ।
- सङ्घट्ट ( पु० )-रगड़, टक्कर, आलिङ्गन ।
- सङ्घट्टन-टना=सङ्घट्ट ।
- सङ्घर्षः-वर्णम्=रगड़, टक्कर, स्पर्द्धा,  
इसद, जलन ।
- संघकित ( वि० )-विस्तृत, कायर ।
- सधि ( पु० )-निग्र, मित्रता । स्त्री०-  
। इन्द्राणी ।
- सधित्र ( वि० )-चित्रित, चित्रयुक्त ।
- सधिव ( पु० )-मित्र, मन्त्री, अमात्य ।
- सधेतन-तच्छू ( पु० )-चेतनायुक्त, सव-  
धान । [ धान ।
- सधेष्ट ( पु० )-आचष्ट । वि०-साध-  
सजन ( पु० )-रिखतेदार, सम्बन्धी ।
- सजल ( वि० )-तर, नम, गीला ।
- सजात ( वि० )-एक साथ उत्पन्न ।
- सजाति-तीप ( वि० )-वधज, एक ही  
जाति का, समान ।
- सजात्य ( न० )-विवादारी, भाईचारा ।
- सज्ज ( वि० )-तय्यार, तत्पर, सज्ज ।
- सज्जन ( पु० )-नच्छा आदमी । न०-  
घाट, सन्तरी, तैयारी, वन्दन ।
- सज्जना ( स्त्री० )-पोशाक, शृङ्गार, कवच ।
- सञ्ज्ञित ( वि० )-वस्तुयुक्त, तैयार,  
सशस्त्र, सजा हुआ ।
- सञ्ज्ञीभू ( १ प० )-तैयार होना, सजना ।
- सञ्ज्ञत ( पु० )-बदनाम, बामीगर, खोला ।
- सञ्ज्ञय ( पु० )-ढेर, सङ्ग्रह, स्टाक,  
बड़ी संख्या ।
- सञ्ज्ञयन ( न० )-ढेर लगाना, अन्त्येष्टि  
कर्म के पश्चात् अस्थि भीर  
भस्म को इकट्ठा करना ।
- सञ्चर ( १ प० )-चलना, हरकत करना,  
जमल करना, वतना ।
- सञ्चर ( पु० )-मार्ग, पगहणदी, काटक,  
जप, गरीर, बड़ोतरा ।
- सञ्चरण ( न० )-गति, यात्रा, हरकत ।
- सञ्चल ( १ प० )-हरकत करना, कांपना,  
कपटना ।
- सञ्चलन ( न० )-वहने, कम्पन ।
- सञ्चार ( पु० )-गति, हरकत, मार्ग,  
कठिनयात्रा, कठिनाई, पथप्रदर्शन,  
सर्वमणि, सूर्य का राश्यन्तरगमन ।
- सञ्चारक ( पु० )-रहनुमा, नेता, व्यक्ती ।
- सञ्चारण ( न० )-लेजाना, हरकत ।
- सञ्चारिका ( स्त्री० )-कुटिनी, गन्ध, जोड़ा
- सञ्चारित ( वि० )-उद्दिग्ग, सञ्चारयुक्त ।
- सञ्चारी [ न ] ( वि० )-गतिशील, भ्रामक,  
अस्थिर । पु०-वायु, गन्ध ।
- सञ्चि ( १ प० )-ढेर लगाना, इकट्ठा  
करना, तरतीब देना ।
- सञ्ज्ञित ( वि० )-सूक्ष्म, ढेर किया  
हुआ, संख्यात, सपन ।
- सञ्ज्ञिति ( स्त्री० )-एकीकरण, संग्रह ।
- सञ्ज्ञित ( १ प० )-विचारना, सोचना ।



सञ्चिन्तन (न०)-विचार, ध्यान ।  
 सञ्चिन्तित (वि०)-निश्चित, अच्छे प्रकार विचारा हुआ, अभिप्रेत ।  
 सञ्जुहु ( १० व० )-छिपाना, ढकना, पहरिना ।  
 सञ्जुन(वि०)-गुप्त, ढका हुआ ।  
 सञ्जिह् ( १ व० )-काटना, विभक्तकरना, टूट करना । [इल करना ।  
 सञ्जुह् (पु०)-कर्त्तन, विभाग, दूरीकरण, सञ्जु ( १ प० ) विपटना घाथना, जाना ।  
 सञ्जुन् ( ४ भा० )-उत्पन्न होना, घटना ।  
 सञ्जुष ( पु० )-पुतराशु के चारोंपि का नाम ।  
 सञ्जुल् ( १ प० )-घातें करना ।  
 सञ्जुल् (पु०)-घातपीत, शरीरगुल ।  
 सञ्जुा (स्त्री०)-नकरी, भजा ।  
 सञ्जुात(वि०)-वदित, जीता हुआ ।  
 सञ्जुव् ( १ प० )-मिलकर रहना, जीवन-निर्वाह करना, फिर से जीवन पाना ।  
 सञ्जुवण ( न० )-पुनर्वां जीना, एक ॥ साय रहना ।  
 सञ्जुवणी(स्त्री०)-एक प्रकार का अमृत, शीतल, रसुयश और मेघदूत की मणिनामकृत टीका ।  
 सञ्जु(वि०)-सायधान, सञ्जायुक्त ।  
 सञ्जपन(न०)-वध, फल ।  
 सञ्जा ( ८ भा० )-जानना, समझना, पहिचानना, सायधान रहना, आदेश करना ।  
 सञ्जा(स्त्री०)-चेतना, ध्यान, इशारा, नाम. व्याकरण में किसी पद, अनुव्य, रमान या भाव का बोधक

शब्द, गायत्री ।  
 सञ्ज्ञान(न०)-ज्ञान, समझ ।  
 सञ्ज्ञाविपर्यय(पु०)-चेतना का, नाश ।  
 सञ्ज्ञापन(न०)-सूचना, श्रुतण, वध ।  
 सटीक(वि०) टीकासहित, व्याख्यायुक्त  
 सट् ( १० व० )-समाप्त करना, जाना, सजाना ।  
 सट ( न० )-जटा श्रुतियों की शिखा और केशसमूह, सिद्धादिकी पीछा के दात, सिंह आदि के अयाल ।  
 सटा(स्त्री०)-पूर्ववत् ।  
 सट्नीन(न०)-पत्तियों की गतिविशेष ।  
 सतत(न०)-निरन्तर, लगातार । वि०-लगातार होनेवाला ।  
 सतरव ( न० )-सबभाव आदत, तरव के अनुकूल ।  
 सति(स्त्री०)-दान, अन्त, अवसान ।  
 सती(स्त्री०)-साध्वी, पतिव्रता, दुर्गा, दान, अवसान । [ सल ।  
 सतीन(पु०)-यश, वास, मटर । न०-सतीर्य (पु०)-एक गुरु के पास पढ़ने वाले शिष्य, आपस में एक गुरु के शिष्य ।  
 सतृ[प] (वि०)-तृपायुक्त, व्यासा ।  
 सत् ( वि० )-वर्ष, विद्यमान, साधु, धैर्य वाला, प्रशस्त, पूजित ।  
 सत्कर्त्ता [ तृ ] (पु०)-विष्णु । वि०-अच्छा कार्य करने वाला ।  
 सत्कर्म[नृ] (न०)-वेदविहित यज्ञादि शुभ कर्म । [ विशेष, सम्मान ।  
 सत्कार ( पु० )-आदर, पूजा, उत्सव-संस्कृत ( वि० )-पूजित, आदर किया

हुआ । पु०-महादेव ।  
 सत्कृति-क्रिया (स्त्री०)-सत्कार, आदर,  
 , श्रद्धाहादि क्रिया । [ श्रेष्ठ ।  
 सत्तम (धि०)-पूज्यतम, उत्तम, अतिशय  
 सुता ( स्त्री० )-विद्यमानता, होना,  
 , वह जातिविशेष जो, द्रव्य, गुण  
 , और कर्मों में रहती है ।  
 सत्यय (पु०)-श्रेष्ठ मार्ग, प्रशस्त पथ ।  
 सत्पुरुष (पु०)-उत्तम मनुष्य, पूज्यपुरुष  
 सत्प्रतिग्रह (पु०)-श्रेष्ठ पुरुषों के दिये  
 धन का ग्रहण ।  
 सत्प्रतिपक्ष (पु०)-एक प्रकार का न्याय  
 जो, सङ्घर्ष विरोध करने वाला  
 , हो, तुल्य व्यक्ति का प्रतियोगी ।  
 सत्कल (पु०)-दाडिम, अनार का वृक्ष ।  
 सत्य (न०)-कृत्युग, कसन, शपथ, ठीक २,  
 सिद्धान्त, प्रज्ञा । पु०-श्रीरामचन्द्र,  
 , विष्णु, पीपल का वृक्ष, एक मुनि ।  
 वि०-सत्ययुक्त ।  
 सत्यम् (भ०)-अङ्गीकार, प्रश्न, सुवाल ।  
 सत्यङ्कार (पु०)-सत्यापन, ' मुझे यह  
 वस्तु अवश्य खरीदनी है ' इस  
 प्रकार सच्चा करना, बयाना देना ।  
 सत्यधृति ( पु० )-एक ऋषि । वि०-  
 सत्यशील ।  
 सत्यनारायण (पु०) देवताविशेष, एक  
 व्रत जो भागफल बहुत प्रचरित है ।  
 सत्यपुर (न०)-विष्णुलोक ।  
 सत्यभामा (स्त्री०)-श्रीकृष्ण की पत्नी ।  
 सत्ययुग (न०)-चार युगों में से पहिला ।  
 सत्यलोक (पु०)-ब्रह्मलोक, सात लोकों  
 में ऊपर का ।

सत्यवचाः [स] (पु०)-ऋषि, मुनि । वि०-  
 सत्यवक्ता ।  
 सत्यवती (स्त्री०)-वेदव्यास की माता,  
 , ऋषीक मुनि की भार्या, नारदपत्नी ।  
 सत्यवतीसुत (पु०)-वेदव्यास ।  
 सत्यवादी [न] ( वि० )-सत्य सोलने  
 वाला, यथार्थवक्ता ।  
 सत्यवान् [वत्] (पु०)-एक राजा जो  
 सावित्री का पति था ।  
 सत्यव्रत (पु०)-त्रेतायुगमें सूर्यवंशीय  
 एक राजा, विश्वकुमार, महादेव ।  
 न०-सत्यरूप व्रत । वि०-व्रतयुक्त ।  
 सत्यसंघ-सगर ( पु० )-कुबेर, श्रीराम,  
 भरत । वि०-दृढप्रतिष्ठ, सच्ची  
 प्रतिष्ठा करने वाला ।  
 सत्यापन-ना=बयाना देना, सार्द्ध देना ।  
 सत्र (न०)-यज्ञ, धन, रह, वन, आच्छा-  
 दन, छल, सदादान, तडाग, दान ।  
 सत्रप (वि०)-लज्जायुक्त, लज्जालु ।  
 सत्रम् (भ०)-साथ, सह ।  
 सत्रशाला ( स्त्री० )-भक्षादि दान का  
 घर, यज्ञशाला, धर्मशाला ।  
 सत्राजित (पु०)-एक राजा जो सत्य-  
 भाना का पिता और श्रीकृष्ण  
 का श्वशुर था ।  
 सत्रि (पु०)-मेघ, बादल ।  
 सत्री (न)-ग्रहपति, ग्रहस्थ ।  
 सत्त्व (न०)-प्रकृति का एक गुण, मुख  
 का हेतु प्रकाशक ज्ञान, व्यवसाय,  
 स्वभाव, शक्ति । अस्त्री०-जलु, जीवा  
 सत्त्वर ( न० )-शीघ्र, जल्दी । वि०-  
 जल्दी करने वाला ।

सङ् (१५०)-दुःखी होना, भगन करना ।  
 सदन (न०)-घर, जल, पानी ।  
 सद्य (वि०)-दयालु, मेहरबान ।  
 सद्स् (स्त्री०)-सभा, फमेटी । न०-  
 गृह; घर ।  
 सद्स्य (पु०)-सभासङ्ग, मेम्बर ।  
 सदा (अ०)-हरवत्, हमेशा, नित्य ।  
 सदाचार (पु०)-अच्छे अनुष्ठानों का  
 आचरण । [वाला, नेकचलन ।  
 सदाचारी [नृ](वि०)-अच्छे आचरण  
 सदानन्द (पु०)-शिव, महादेव । वि०-  
 । हमेशा खुश रहने वाला । [नदी ।  
 सदागीता (स्त्री०)-करतोया नाम्नी  
 सवृत्तर (न०)-अच्छा उत्तर, ठीक  
 जवाब । [ बराबर ।  
 सद्गुण श्र-श (वि०)-एकसा, समान,  
 सद्योप (वि०)-दोपपुच्छ, छेब वाला ।  
 सद्भाव (पु०)-विद्यमानता, भीजूदगी,  
 । अच्छापन ।  
 सद्य [नृ](न०)-घर, जल, पानी ।  
 सद्यः [नृ](अ०)-कट, तटलण, सपदि  
 सही वक्त ।  
 सद्यःप्राणहर (वि०)-कट गलाया जीवन  
 का देने वाला । न०-ताज़ामास,  
 घाटापी, दुःखभोजन, घी, यमंजल ।  
 सद्यःप्राणहर (वि०)-कट ही मल वा  
 जीवन को हरने वाला । न०-  
 मूछा मास, खट्टा दही भादि ।  
 सद्योज्ञान (पु०)-वहस, यथुषा, शिव-  
 भूतिविशेष । वि०-तुरन्त ही  
 - पैदा हुआ ।  
 सद्युत्पन्न (न०)-अच्छा स्वभाव, श्रेष्ठ

आचरण । वि०-अच्छी जीविका  
 वाला, सत्पत्ति ।  
 सधर्मचारिणी (स्त्री०)-स्त्री, भार्या ।  
 सधर्मा [नृ](वि०)-समान धर्म वाला,  
 समान, बराबर ।  
 सधर्मिणी (स्त्री०)-स्त्री, भार्या, पत्नी  
 सधर्मी [नृ](वि०)-समान धर्म वाला,  
 एक जैसा आचरण करने वाला ।  
 सधवा (स्त्री०)-स्त्रीभाग्यवती स्त्री,  
 ससर्तका नारी ।  
 सधि (पु०)-अग्नि, आग ।  
 सधिस्र (पु०)-सुपन्न, बौल ।  
 सधोषी (स्त्री०)-सहचरी, सखी,  
 सहेली । [ वाला ।  
 सध्वष (वि०)-सहचर, साथ विचरने  
 सनत् (पु०)-ब्रह्मा, विधाता । अ०-  
 सर्वदा, हमेशा ।  
 सनत्कुमार (पु०)-अपने नाम से  
 प्रसिद्ध ब्रह्मा का पुत्र, एक मुनि ।  
 सनन्द (पु०)-पूर्ववत् ।  
 सनस्र (न०)-पथिब्रक, मछली  
 पकड़ने के लिये सन के सूत का  
 बना हुआ जाल ।  
 सनात् (अ०)-नित्य, हमेशा, सर्वदा ।  
 सनातन (पु०)-विष्णु, ब्रह्मा, शिव,  
 ब्रह्मा का पुत्र, एक मुनि, दिव्य  
 अनुष्ठान । वि०-नित्य, सदा होने  
 वाला, निश्चल । [ सरस्वती ।  
 सनातनी (स्त्री०)-दुर्गा, लक्ष्मी,  
 सनाथा (स्त्री०)-सधवा स्त्री ।  
 सनाति (पु०)-प्राप्ति, सपिपट, जाति  
 भाई । वि०-रुनेवा वाला, तुल्य ।

सन्ति (पु०)-दान, पूजा, सत्कार,  
स्त्री०-गुरु आदि का किसी कार्य  
में सादर नियोजन ।

सन्तिष्ठी (ष्टे)व (न०)-पुरुष की विन्दुओं  
के साथ कहा घबनादि, अस्तुकृत ।  
सन्तिष्ठ (वि०)-तिरुट, समीप रहने  
वाला, छिद्रयुक्त ।

सन्तत (न०)-निरन्तर, हमेशा, लगा-  
तार । वि०-विस्तार वाला ।

सन्तति (स्त्री०)-गोत्र, सन्तान, नाम,  
पंक्ति, विस्तार, पुत्र, कन्या, न  
रुکنने वाली धारा ।

सन्तप्त (वि०)-रास्ते के चलने आदि  
से थका हुआ, आन्त, अग्नि वा  
घूप से तपा हुआ ।

सन्तमस (न०)-गाढ़ अन्धकार, मोह,  
सर्वप्रक्यापी अन्धकार ।

सन्तान (पु०)-वंश, अपत्य, औलाद,  
विस्तार, कल्पवृक्ष । न०-एकशख ।

सन्तानिका (स्त्री०)-सीरसर, सलाई,  
फेनी, दूध का लच्छा, खोआ,  
छुरी का फल । [ दुःख ।

सन्ताप (पु०)-अग्नि की गर्मी, ताप ।

सन्तापन (पु०)-कामदेव के पाप  
बागी में से एक । वि०-सन्ताप-  
कारक ।

सन्ति (स्त्री०)-दान, अन्न, अवधान ।  
सन्तुष्ट (वि०)-संवर वाचा, सन्तोषी,  
सुख । [स्वास्थ्य, धीरज ।

सन्तोष (पु०)-सन्तुष्टि, सुखी, संवर,  
सन्देह (पु०)-बटखोई उतारने का  
एक यन्त्र, सहायी [ 'सन्द-

शिका' का भी यही अर्थ है ] ।

सन्दर्भ (पु०)-रचना, ग्रन्थन, सूचना,  
मन्त्र, सूटार्थ का प्रकाशन, सार-  
वचन ।

सन्दान (न०)-दान, रस्ती, वन्धन,  
उत्तम दान । पु०-इस्ती के घुटने  
के नीचे का भाग ।

सन्दानित (वि०)-बद्ध, बंधा हुआ ।

सन्दानिनी (स्त्री०)-गोशाला, गौत्रों  
के बंधने का घर ।

सन्दाव (पु०)-भागना, पलायन ।

सन्दाह (पु०)-मुख, तालु और होठों  
का मूखना, पूरी जलन ।

सन्दिग्ध (वि०)-सन्देहयुक्त, शकवाला ।

सन्दिग्ध (वि०)-बद्ध, बंधा हुआ ।

सन्दिग्ध (न०)-सन्देह, बातों;  
वाचिक अर्थ का कथन । वि०-  
कथित । [सन्दिग्ध ।

सन्दिहान (वि०)-सन्देह वाला;

सन्दी (स्त्री०)-खट्टा, खाट, सांजा ।

सन्देह (पु०)-संवाद, झूठ ।

सन्देहहर-हारक (पु०)-दूत, झूठ  
पहुँचाने वाला पुरुष ।

सन्देह (पु०)=संशय ।

सन्दोह (पु०)-समूह, गिरोह ।

सन्द्राव (पु०)-पलायन, भागना ।

सन्धा (स्त्री०)-प्रतिधा, इज्जत,  
सिपति, मेल ।

सन्धान (न०)-मद्य निकालना, मेल,  
अनुसन्धान, काज्जी, मदिरा ।

सन्धि (पु०)-राजाओं के छः गुणों  
में से एक, मेल, भेट देने पूर्वक

राजाओं का परस्पर मिलना, हठियों के जोड़ का स्थान, घीरादि से बनाई हुई सुरङ्ग, सावकाश, साधन, दो अक्षरों का मिलना ।

सन्धिघोर ( पु० )--सुरङ्ग लगा कर चोरी करने वाला पुरुष ।

सन्धित ( वि० )--मिलित, जुड़ा हुआ ।

सन्धिनी ( स्त्री० )--बैल द्वारा गर्भ धारण करने वाली गौ, अकाल दुग्धा गौ ।

सन्धिपूजा ( स्त्री० )--आश्विनशुक्ल-पक्ष की अष्टमी और नवमी के मेल की पूजा, भारतीय महापूजा के अन्तर्गत तृतीयापूजा । [ पुष्प ।

सन्धिधध ( पु० )--भूमिचम्पक, चमेलीका सन्धिधेला ( स्त्री० )--दिन और रात्रि के मिलने का समय ।

सन्धिहारक ( पु० )--सुरंग से चोरी करने वाला पुरुष, सन्धिघोर ।

सन्धुक्षित ( वि० )--महकाया हुआ, प्रकाशित, उद्दीपित । [ मिलनीय ।

सन्धेय ( वि० )--मिलाने योग्य, समीप्य,

सन्ध्या ( स्त्री० )--दिन और रात्रि के मिलने के एक दो पहरों का समय, रात्रि के आरम्भ समय का दूरद-धनुष्टयात्मककाल, युगसन्धि, सन्ध्यासमय उपासनीय देवता, नदीविशेष, एक स्त्री सीमा, चिन्ता, पुष्पविशेष ।

सन्ध्याथ ( पु० ) युग की सन्धि ।

सन्ध्यापानटी [ न ] ( पु० )--शिव, महादेव ।

सन्ध्याभू ( न० )--नेत्र, स्वर्ण, सन्ध्या समय का मेघ ।

सन्ध्याराग ( न० )--सिन्दूर ।

सन्ध्याराम ( पु० )--वस्त्र ।

सन्न क ( पु० )--पियाल वृक्ष, निर्धूल-जन, खय, बीना । धि०--निधूल, अवसन्न, दुःखित, घटा हुआ ।

सन्नत ( वि० )--प्रणत, झुका हुआ ।

सन्नति ( स्त्री० )--प्रणति, प्रणाम, ध्वनि, नम्रता ।

सन्नतु ( वि० )--वर्त्मित, कवच पहिरे हुए, उद्यत, नड्ड, सज्जात ।

सन्नय ( पु० )--समूह, गिरोह ।

सन्नाह ( पु० )--वर्त्म, कवच, निरह, बल्लर ।

सन्निकर्ष ( पु० )--समीप, सन्निधान, निकट होना, न्याय में विषय और इन्द्रियों का सम्बन्ध जो ध्यान का हेतु है ।

सन्निधान ( न० )--निकट, समीप्य, आश्रय, अवस्थान, इन्द्रियगोचर ।

सन्निधि ( स्त्री० )--पूर्यधत् ।

सन्निपतित ( वि० )--मिला हुआ, मिश्रित, एकत्रीकृत ।

सन्निपात ( पु० )--मिलना, भीषे गिरना, एकत्र होना, एक ज्वर जिस में यात पित्त कफात्मक तीनों दोष विगड़ कर एकत्र होनासे है, नाश, तालविशेष ।

सन्निबन्धन ( न० )--अच्छे प्रकार बाधना, कई स्थानों में विभक्त वाक्यों का एकस्वरान पर सकलन करना । वि०--अच्छे आजीवन धाता

सन्निभ (वि०)-सदृश, तुल्य, बराबर ।  
सन्निविष्ट ( वि० )-उपविष्ट, बैठा हुआ, निकट ।

सन्निवेश ( पु० )-निकर्षण, नगर से बाहिर विहार करने का प्रदेश, अच्छी स्थिति, मङ्गलस्थान, असाधारण ।  
सन्निहित (वि०)-निकटस्थित, समीप में ठहरा हुआ । पु०-अग्निविशेष ।  
न०-निकट होना ।

सन्न्यस्त ( वि० ) समर्पित, सौंपा हुआ, निक्षिप्त, त्यागा हुआ, रक्खा हुआ ।

सन्न्यास ( पु० )-काम्य कर्मों का परित्याग, भीषा आश्रम, चैत्र मास में शिव का व्रतविशेष ।

सन्न्यासी [नृ] ( पु० )-सन्न्यासपुङ्गव, चौथे आश्रम वाला पुरुष, परिव्राट् ।  
सपक्ष ( पु० ) न्याय में वह पक्ष जिस में साध्य और साधन दोनों विद्यमान हों । वि० सम्बन्धी, अपनी तरफ के अनुष्ठी वाला, पक्षी बरखर ।

सपत्राकरण (न०)-सपक्ष बाण के लगने की अतिपीड़ा, अत्यन्त दुःख ।

सपत्न ( पु० )-शत्रु, दुश्मन, बैरी ।  
सपत्नी ( स्त्री० )-समानपत्निका स्त्री, सौतिन, दूसरी औरत । [फट ।

सपत्नीक (वि०) भाषासहित, स्त्री वाला ।  
सपदि (न०)-तत्क्षण, उसी समय द्रुत ।

सपयो (स्त्री०)-पूजा, सत्कार, आदर ।  
सपाद ( वि० )-पादसहित, चौथे हिस्से वाला, चतुर्धाश युक्त, सत्राया ।

सपिण्ड ( पु० )-सप्तपुरुषान्तर्गत जाति, दायभागी, सगाभि, सात पीढ़ी तक का पुरुष ।

सपिण्डीकरण ( न० )-वह कर्म जिस में प्रेतत्व के छुड़ाने के निमित्त प्रेत का पिण्ड पिता, पितामह और प्रपितामह के पिण्ड के साथ निष्ठाया जाता है, प्रेत को पित्रादि की पक्ति में मिलाने वाला आहुतिविशेष ।

सपिण्डीकृत ( वि० )-वह स्तनक जिस का सपिण्डीकरण कर्म किया गया हो ।

सपीति ( स्त्री० )-छाति [धिरादरी] के साथ भिल्लकर खाना, पीना ।

सप्त [नृ] ( न० ) ७ की संख्या, सात ।

सप्तक ( वि० )-सातवा । न० सात ।

सप्तभिद्गु एवाल (पु०)-अग्नि, आग ।

सप्तति ( स्त्री० )-सत्तर ।

सप्तदश [नृ] ( वि० )-१७ की संख्या ।

सप्तधातु ( पु० )-शरीरस्थ सात धातु यथा-रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, अङ्गुर और शुक्ल ।

सप्तपदी ( स्त्री० )-विद्याह के समय बधू और वरका सात पद साथ चलना ।

सप्तम ( वि० )-सातवा ।

सप्तमी ( स्त्री० )-व्याकरण में सातवीं विभक्ति, प्रत्येक पक्ष की सातवीं तिथि ।

सप्तसप्ति ( पु० )-रवि, सूर्य ।

सप्ति ( पु० )-घोड़ा, जोर ।

सप्रत्यय (वि०)-विशेष

सफल(वि०)-कामयाब, फलपुक्त, सफल ।  
 सफल(पु०)-सामं काल का अन्धकार ।  
 सयाद (वि०)-सताने वाला, हानिकर ।  
 समर्त्तका (स्त्री०)-पतियुक्ता स्त्री ।  
 सभा (स्त्री०)-सभा, भीटिंग, मन्त्र-  
 णायह, न्यायालय, पब्लिक हाल ।  
 सभापति-भाषक(पु०)-प्रधान, चेयरमैन ।  
 सभावन(पु०)-शिव, भगवत् ।  
 सभासद(पु०)-सभा का सेन्सर या सम्प  
 सभास्तार(पु०)-पूर्ववत् ।  
 सम्प (वि०)-सत्ता से सम्बन्ध रखने  
 वाला, सभा के योग्य, वफादार,  
 शरीफ । पु०-सभासद, कुलीन, जसेसर  
 सम्पत्ता-स्वम्-भरापत्त, कुलीनता ।  
 सम्(१ पु०)-घबराना, न घबराना ।  
 सम् (अ०)-साथ, समान, ही, बहुत  
 आदि जहाँ में प्रयुक्त होता है ।  
 सम (वि०)-समान, बही, सदृश,  
 बराबर, साफ, सरल, ईमानदार,  
 अकटा, साधारण, सीधा, समस्त,  
 चौरस न०-चौरस मैदान ।  
 समकालम्(अ०)-एक साथ निकलकर ।  
 समकालीन (वि०)-एक ही समय में  
 रहने वाला, एक एक का ।  
 समकाल(पु०)-सप, सां ।  
 समक्ष(वि०)-आंखों के सामने, प्रत्यक्ष ।  
 समग्र(वि०)-तमाम, सारा, सम्पूर्ण ।  
 समग्रमुख(वि०)-मुख्या । न० ऐसा  
 . जिसकी चारों भुजा बराबर हों ।  
 समक्षित(वि०)-शान्तचित्त, सदासीन ।  
 सम(१ पु०)-इकट्ठा करना, जोड़ना,  
 पराजित करना, भड़काना ।

समज (पु०)-मुखेमहली, समूह ।  
 न०-वन, जंगल ।  
 समझा(स्त्री०)-पश, कीर्ति ।  
 समजपा(स्त्री०)-मोडिंग, सभा, यश ।  
 समजस (वि०)-उचित, ठीक, शुद्ध,  
 साफ, नेक, तन्दुरुस्त । न०-  
 औचित्य, शुद्धता ।  
 समतिक्रम(१ पु०)-विरक्त पार होना,  
 बढ़ जाना, अवस्था करना ।  
 समतिक्रम(पु०) सम्पत्तयातिक्कमण ।  
 समती-समतिक्रम (वीराहाहुआ[वक्त]  
 समतीत (वि०)-गत, अछड़ी तरह  
 समन्निभुज(अस्त्री०)-ऐसा जैन या चिन्  
 जिसकी तीनों भुजा बराबर हों ।  
 समद(वि०)-सदमस्त, दृष्टि ।  
 समदर्शी(न०)(वि०)-बेलाग, पक्षपातहीन  
 समदृग्-दृष्टि=समदर्शी ।  
 समधिक(वि०)-अतिशय, बहुत ।  
 समधिकम्(अ०)-बहुत अधिक ।  
 समधिगम् (१ पु०)-समीप पहुँचना,  
 अध्ययन करना, प्राप्त करना,  
 सबक ले करना ।  
 समधिगमन(न०)-सबक, अतिक्कमण ।  
 समनुज्ञा (१ पु०)-रजामन्द होना,  
 पसन्द करना, स्वीकृत, जाज्जकरना  
 समनुज्ञान(न०)-स्वीकृति, मंजूरी ।  
 समन्त (वि०)-विश्वव्यापक, समूचा ।  
 पु०-सद, सीमा ।  
 समन्ततर्भु [अ०]-चारों तरफ से ।  
 समन्तभुज(पु०)-अग्नि, भाग ।  
 समन्वय(पु०)-आकापदा विलसिला-  
 तात्पर्य । क्रमपूर्वक जुड़ा जुड़ा ।  
 समन्वित (वि०)-अच्छे प्रकारपुक्त,

समभिध्याहार ( पु० )—सहित, साथ,  
सम्पत्तया कथन करना, साथ  
वर्णन करना ।

समभिध्याहृत ( वि० )—साथ उच्चारण  
किया हुआ, सहित, मिश्रित ।

समभिहार ( पु० )—पौनःपुन्य, बार  
बार, भूषण ।

समसू(अ०)—साथ, सहित, एक ही बार ।

समय ( पु० )—काल, वक्त, आचार,  
धर्म, सिद्धान्त, संकेत, सवित,  
स्वीकार, अवसर, नियम, सम्पत्ति ।

समया ( अ० )—निकट, समीप, मध्य ।

समयाभ्युपित ( वि० )—मूर्त्य और  
तारागण से रहित काल ।

समर ( पु० )—संप्रान, युद्ध, लड़ाई ।

समरमूर्द्धा [ नृ ] ( पु० )—समानभूमि,  
युद्धस्थल, लड़ाई का मैदान ।

समर्चन ( न० )—सम्यक्प्रकार से पूजा  
करना, अच्छी तरह आदर करना ।

समर्थ ( वि० )—शक्तियुक्त, ताकत वाला

समर्चन-ना=उचितानुचित रूप से  
निश्चय करना, याचाध्य रूप से  
साधित करना, फ़ैसला ।

समर्द्धक ( वि० )—अभिलषित पदार्थ  
का देने वाला, इष्टफलप्रद ।

समस्पाद ( पु० )—समीप । वि०—मर्षा-  
दायुक्त, अच्छे चलन वाला ।

समल ( न० )—विष्टा, बहुत मन ।  
वि०—मलसहित ।

समयतार ( पु० )—तीर्थ, जल में उत-  
रने की सोझी [ पीड़ी ] ।

समयर्त्ता [ नृ ] ( पु० )—यमराज । वि०—

समान वर्त्ताव करने वाला ।

समवाय ( पु० )—समूह, मेल, निरूप  
रहने वाला सम्बन्ध ।

समवेत ( वि० )—समूहयुक्त, मिश्रित,  
मिला हुआ, एकट्ठा हुआ ।

समष्टि ( स्त्री० )—समूह, सम्मेलन,  
सम्बन्धवाप्ति, समस्तपक्ष ।

समस्त ( वि० )—सारा, सम्पूर्ण, सतिष्ठत,  
कृतसमाप्त, मिलित ।

समस्य ( पु० )—समानभाव से रहने  
वाला, समन्तायस्थित ।

समस्यली ( स्त्री० )—गंगा और यमुना के  
मध्य का प्रदेश, द्वाया ।

समस्या ( स्त्री० )—श्लोक के एक पाद से  
शेष तीन और बना कर श्लोक की  
पूर्ति करना । [ 'समस्यायां' भी इसी  
अर्थ में प्रयुक्त होता है ] ।

समर ( स्त्री० )—वर्ष, सबत्, साल ।

समांशिक ( वि० )—समान भाग वाला,  
बराबर हिस्से वाला ।

समाशी [ नृ ] ( वि० )—पूर्ववत् ।

समासमीना ( स्त्री० )—प्रतिधर्म ब्रह्मा  
देने वाली गाय ।

समाकर्षी [ नृ ] ( पु० )—यहुत दूर तक  
कैलने वाली सम्प, दूरगामी गन्ध ।

वि०—अच्छे प्रकार खींचने वाला ।

समाख्या ( स्त्री० )—कीर्ति, यश, नाम,  
प्रसिद्धि । [ हुआ

समागत ( वि० )—सम्पत्तया आया

समागत ( पु० )—समाप्ति, अच्छे प्रकार  
भागमन या मेल ।

समापात ( पु० )—सुद्ध, संप्रान, लड़ाई ।



समाचार ( पु० )-अच्छा आचरण,  
 सवाद, ख़बर ।  
 समाज ( पु० )-सभा, सीटिंग, हाथी ।  
 समाधा ( स्त्री० )-विरोध का मिटाना,  
 समाधान, प्रश्नोत्तर ।  
 समाधान ( न० )-वित्त की एकाग्रता,  
 ब्रह्म में मन का लगाना, कगड़ा  
 मिटाना, प्रश्न का यथोचित उत्तर  
 देना, नाटक का एक अङ्क ।  
 समाधि ( पु० )-ध्यान, एकाग्र हो कर  
 ध्येय वस्तु में वित्त का स्मिरी-  
 करण, नियम, काव्य का एक गुण,  
 कारणसामग्री, मठ । [ हुआ ।  
 समाधिरूप ( वि० )-समाधि में लगा  
 चान ( वि० )-तुल्य, सम, बराबर । पु०-  
 नातिरूप धाम, वर्णभेद ।  
 समानोदय ( वि० )-सहोदर, सगा ।  
 समापक ( वि० )-समाप्त करने वाला ।  
 समापन ( न० )-समाप्ति, खात्मा ।  
 समापन ( वि० )-प्राप्त, समाप्त, मिलना ।  
 समाप्त ( वि० )-इतम, अच्छे प्रकार  
 प्राप्त हुआ । [ खात्मा ।  
 समाप्ति ( स्त्री० )-आखीर, अन्त,  
 समाप्य ( वि० )-इतम करने लायक,  
 समाप्तियोग्य । अ०-समाप्त करके  
 समाप्तमयी [ न ] ( वि० )-लटकने  
 वाला । पु०-भूमिचम्पक ।  
 समालम्ब्य-म्भ ( पु० )-कुकुमादि, ये  
 यरीर पर लेपन करना, सारना ।  
 समालम्बन ( न० )-पूँययत् ।  
 समावर्तन ( न० )-एक वस्त्रकार जो  
 विद्यासमाप्ति के बाद पर जाने

के वक्त होता है । [ चलान ।  
 समाधिपट ( वि० )-संयुक्त, मिला हुआ,  
 समावृत ( वि० )-संयुक्त प्रकार से  
 ढका हुआ ।  
 समावृत ( वि० )-रुतसमावर्तन, विद्या-  
 समाप्ति के अनन्तर जिस को  
 गुरु ने गृहस्थाश्रम में प्रवेग होने  
 की आज्ञा- देदी हो ।  
 समावेश ( पु० )-अनेक अर्थों को एक  
 वचन में लाना, प्रवेश ।  
 समाप्त ( पु० )-सक्षेप, समर्थन, बहुत  
 पदों का एक होता, इकट्ठा करना,  
 जुटावा करना ।  
 समासक्त ( वि० )-संयुक्त, मिलित,  
 मिला हुआ, संसा हुआ ।  
 समासङ्ग ( पु० )-मेल, संयोग ।  
 समासादित ( वि० )-प्राप्त, पाया  
 हुआ, आदृत, निकटस्थ । [ सक्षेप  
 समाहार ( पु० )-समुच्चय, इकट्ठा करना,  
 समाहित ( वि० )-समाधि में लगा  
 हुआ, धृतसमाधि, प्रतिष्ठा, विद्या-  
 दारहित, शुद्ध, निष्पन्न ।  
 समावृत ( वि० )-संगृहीत, इकट्ठा  
 किया हुआ, एकत्रीकृत ।  
 समावृत्ति ( स्त्री० )-संग्रह, संक्षेप ।  
 समाह्वय ( पु० )-द्यूत, जुआ, युलाना,  
 युद्ध, पक्षी आदि का द्यूत ।  
 समित ( स्त्री० )-युद्ध, लड़ाई ।  
 समिता ( स्त्री० )-येहूँ का चून, मीदा ।  
 समिति ( स्त्री० )-सभा, फमेटी,  
 युद्ध, जंग, बराबरी ।  
 समिध-प ( पु० )-अग्नि, भाग ।

समिद्ध [ ध् ] (स्त्री०) - लकड़ी, धोमाघं  
काष्ठविशेष । [ प्रज्वलित ।

समिद्ध (वि०) - प्रदीप्त, जला हुआ,

समिध ( पु० ) - अग्नि, काष्ठ ।

समिन्धन ( न० ) - ममिन्, काष्ठ ।

समीक ( न० ) - संयाम, लड़ाई ।

समीकरण ( न० ) - जो बराबर न हो  
उसे बराबर करना, बीजगणित  
में यह प्रक्रिया जिस के द्वारा  
अज्ञात संख्या जानी जाती है ।

समीक्षण ( न० ) - प्रेक्षण, अच्छे प्रकार  
देखना । वि० - प्रकाशक ।

समीक्षा ( स्त्री० ) - पर्यालोचना, ठीक  
ठीक समझना, बुद्धि, नीमाचा-  
शास्त्र, यत्न, आत्मविद्या ।

समीक्ष्यकारी [ न् ] ( वि० ) - विचार  
कर जान करने वाला ।

समीध ( पु० ) - समुद्र, सागर ।

समीचक ( पु० ) - मैथुन, स्त्रीसंग ।

समीची ( स्त्री० ) - मृगी, स्तुति, वन्दना ।

समीचीन ( न० ) - यथार्थ, ठीक, सत्य  
वि० - सत्ययुक्त ।

समीद ( पु० ) = समिता ।

समीध ( वि० ) - निकट, भदूर, पास ।

समीर ( पु० ) - वायु, पवन, शमीवृक्ष ।

समीरण ( पु० ) - वायु, प्रेरण, पथिक,  
मरुतक वृक्ष । वि० - प्रेरक ।

समीरित ( वि० ) - कथित, उच्चारित ।

समीहित ( वि० ) - अभिलषित, चाहा  
हुआ, यांछित ।

समाधित ( वि० ) - उपयुक्त, योग्य ।

समुपप ( पु० ) - एकट्ठा होना, परस्पर-

निरपेक्ष बहुत से शब्दों का एक-  
त्रित होना, समाहार ।

समुच्चित ( वि० ) - इकट्ठा किया हुआ ।

समुच्छेद ( पु० ) - विनाश, सम्यक् प्रकार  
से काटना ।

समुच्छ [ च्छा ] य ( पु० ) - विरोध,  
उत्सेध, ऊचा होना, अत्युच्चता ।

समुच्छिन्न ( वि० ) - अत्युन्नत, बहुत ऊंचा ।

समुच्छसितं - द्वासः = श्वास, सांस, मुख-  
नासिक द्वारा वायु का चलना ।

समुज्झित ( वि० ) - त्यागा हुआ, छोड़ा  
हुआ, परित्यक्त ।

समुत्क्रम ( पु० ) - अच्छे प्रकार जाना,  
भले प्रकार गमन करना ।

समुत्क्रम ( पु० ) - ऊपर जाना, भले  
प्रकार ऊपर जाना ।

समुत्क्रोश ( पु० ) - क्रूरपक्षी, कुंज नामक  
पक्षी, जोर की आवाज ।

समुत्प ( वि० ) - स्रग्गुत्पन्न, अच्छे  
प्रकार पैदा हुआ, उठा हुआ ।

समुत्थान ( न० ) - उठाना, अच्छे प्रकार  
उद्योग करना ।

समुत्थित ( वि० ) - उठा हुआ, सम्यक्  
प्रकारेण उठा हुआ ।

समुत्पन्न ( वि० ) - अच्छे प्रकार पैदा  
हुआ, समुद्भूत । [ करना ।

समुत्पादन ( न० ) - अच्छे प्रकार से पैदा  
समुत्सर्ग ( पु० ) - सम्यक् त्याग, अच्छे  
प्रकार छोड़ना, पूर्णत्याग ।

समुत्सुक ( वि० ) - शीक्रीन, बहुत उत्साह  
वाला, अभिलषित वस्तु की प्राप्ति  
के निमित्त योप्रता करने वाला ।

समुत्पष्ट (वि०)-अच्छे प्रकार दयागा  
हुआ, दिया हुआ । [युद्ध, दिन ।

समुद्र [दा] यं ( पु० )-समूह, विरोध,  
समुदागम ( पु० )-सब प्रकार से ज्ञान ।  
समुदित ( वि० )-अच्छे प्रकार से कहा  
गया, उदय हुआ ।

समुदीरण ( न० )-अच्छे प्रकार कहना ।  
समुद्र ( वि० )-सूँगका, सूँगसहित ।  
पु०-सम्पुट, सम्द्रव ।

समुद्गम ( पु० )-ऊपर जाना, उत्पत्ति ।  
समुद्गोत ( वि० )-ऊँचे स्तर से गमन  
किया हुआ ।

समुद्गीर्ण ( वि० )-घमित, सगला  
हुआ, कपित, उठाया हुआ ।

समुद्दिष्ट ( वि० )-सम्पन्न स्थापित, अच्छे  
प्रकार कहा हुआ ।

समुद्भुत ( वि० )-अत्युन्नत, धूर्त,  
अतिनिपुण, अतिमूर्ख, समझी ।

समुद्धारण ( न० )-उत्थोत्थन, कूपादि  
से जन का निकालना, भक्षित  
: अन्न का घसन करना, उद्धार ।

समुद्धारो [वि] ( वि० )-उद्धार करने  
वाला, उभारने वाला ।

समुद्भूत ( वि० )-अपनीत, उत्पा-  
: पित, अच्छे प्रकार से निकाला  
हुआ, उद्भूत किया गया ।

समुद्भव ( पु० )-उत्पत्ति, पैदायश ।

समुद्भूत ( वि० )-समुत्पन्न ।

समुद्घात ( वि० )-अच्छे प्रकार से तैयार  
हुआ, पूर्ण उद्यमी ।

समुद्यम ( पु० )-पूर्णप्रयत्न, पुरे सीरे  
। पर कीर्ति करना ।

समुद्र ( पु० )-सागर, जलनिधि ।

समुद्रकक्ष-पेन ( पु० )-समुद्रभाग ।

समुद्रग ( वि० )-समुद्र की मात होने  
वाला ।

समुद्रगा ( स्त्री० )-नदी, दरिया ।

समुद्रमेखला-रसना घसना ( स्त्री० )-  
पृथ्वी । [करने के लिये जाना ।

समुद्रयात्रा ( स्त्री० )-समुद्र की तीर

समुद्रयान ( न० )-पीत, जहाज ।

समुद्रवेला ( स्त्री० )-समुद्रतट, समुद्र  
का किनारा ।

समुद्रा ( स्त्री० )-शमीयुक्त ।

समुद्रि [द्वी] य ( वि० )-समुद्र में उत्पन्न  
होने वाला-समुद्रसम्बन्धी ।

समुद्रह ( वि० )-सर्वोत्तम, श्रेष्ठ, अच्छे  
प्रकार लेजाने वाला ।

समुद्राह ( पु० )-श्रेष्ठ विवाह, शादी ।

समुद्गम ( न० )-गीलापन, आर्तभीति ।

समुद्गा ( वि० )-विलम्ब, भीगा हुआ ।

समुद्गम ( वि० )-अच्छे प्रकार उठा  
हुआ, जंघा । [ जंघाई ।

समुद्गम ( स्त्री० )-उच्छता, उत्सव,

समुद्गम ( वि० )-अभिमान, घमण्डी,

पवित्तमन्य, अच्छे प्रकार उत्पन्न ।

समुद्गम ( न० )-जड़ से उखाड़ना,  
अच्छे प्रकार मष्ट करना ।

समुपजीव ( न० )-आनन्द, सुखी ।

समुपवेशन ( न० )-सकाम, घर ।

समुपस्थित ( वि० )-विद्यमान, मौजूद,  
हाज़िर । [ से प्राप्त ।

समुपेत ( वि० )-एकचित, अच्छे प्रकार

समुपेयिषा ( वि० )-समीपगत, पास  
में पहुँचा हुआ, गमनकर्ता ।

समुपोड ( वि० )-मिला हुआ, संगत,  
उत्पन्न । [ परिच्छेद, अध्याय ।

समुल्लास ( पु० )-अत्यन्त आनन्द,  
समुल्लेख(पु०)-पैर आदि से पृथ्वी  
का खोदना ।

समूह(वि०)-इकट्ठा किया हुआ, राशी-  
कृत, झुका हुआ, विवाहित,  
शीघ्रित, भुक्त, टेढ़ा ।

समूल(वि०)-मूलसहित, जड़ के साथ ।

समूह ( १३० )-इकट्ठा करना, एकत्र  
करना ।

समूह ( पु० )-डेर, गिरोह, संख्या ।

समूहणी(स्त्री०)-भाइ, भाजंजी ।

समु(१५०)-मिलना, आमनेसामने आना

समूह ( वि० )-अमीर, धनवान्, वृद्धित  
अभ्युदयित, सीभाग्यवान् ।

समूह ( स्त्री० )-अभ्युदय, संगल,  
सम्पत्ति, शक्ति ।

समूह ( ४, ५५० )-घटना, उत्पत्ति पाना ।

समे ( २५० )-पार करना, मिलना ।

समेत ( वि० )-समुपेत, सहित, मिलित ।

समेध ( १३० )-वृद्धि पाना, फूल फलना ।

सम्पत् ( १५० )-मिल कर रहना,  
आक्रमण करना, संपटित होना,  
उत्तरना, प्रकृति होना ।

सम्पत्ति ( स्त्री० )-अभ्युदय, सफलता,  
धनवृद्धि ।

सम्पद ( ४३० )-कामयाव होना, उत्प-  
न्न होना, पूरा होना, प्राप्त करना ।

सम्पद ( स्त्री० )-सम्पत्ति ।

सम्पत् ( वि० )-अभ्युदयित, सीभाग्य-

वान्, प्राप्त, युक्त । पु०-शिव ।  
न०-दौलत, धन ।

सम्पराय ( न० )-युद्ध, लड़ाई, विपद्,  
भविष्यद्दशा, पुत्र ।

सम्परे ( २३० )-मुकाबिला करना,  
गुजरना । [ मैथुन, सोहबत ।

सम्पर्क ( पु० )-मेल, मिश्रण, संगति,

सम्पाक ( वि० )-चतुर, कुशल, छोटा,  
तर्कवादी । पु०-अमलतास का दूध ।

सम्पाट ( पु० )-तकुवा, तर्क ।

सम्पान ( पु० )-एक स्थान पर मिलन,  
टक्कर, अपीगमन, गति, दूरीकरण,  
गरुड़पुत्र ।

सम्पाति ( पु० )-एक कल्पित पक्षी जो  
गन्ध का पुत्र और जटायु का प्रह-  
साईं था ।

सम्पादः-दनम्=सफलता, पूर्ति, प्राप्ति ।

सम्पिप् ( ३५० )-अच्छे प्रकार पीसना ।

सम्पीह ( १० च० )-दवाना, खताना,  
घमना ।

सम्पीहः-नम्=दवाय, दुःख, रुद्धि, दुःख  
सम्पुट ( पु० )-गर्त, गहरा स्थान,  
टोकरा, यकस ।

सम्पुटका-टिका ( स्त्री० )-पूर्ववत् ।

सम्पूज ( १० ३० )-पूजना, नोट करना ।

सम्पूर्ण ( वि० )-भरा हुआ, समस्त,  
तमाम । न०-इंयर वायु ।

सम्पूक्त ( वि० )-मिला हुआ, उत्प-  
न्नित, स्थान में आया हुआ ।

सम्प्रयेता [ वृ ] ( पु० )-शासक,  
न्यायाधीश ।

सम्प्रति ( अ० )-अब, इस समय, इसी क्षण ।

सम्प्रतिपत्ति ( स्त्री० )—समीपागमन,  
उपस्थिति, प्राप्ति, स्वीकारो,  
आक्रमण, घटना, सम्पादन ।  
सम्प्रतिपद् ( ४ आ० )—पास जाना,  
खयाल करना, राय में रायमिलाना,  
प्राप्त करना, सम्पादन करना ।  
सम्प्रती ( २ प० )—विश्वास करना,  
ज़िस्सा करना, तीलना । [ यश ।  
सम्प्रतीति ( स्त्री० )—यकका विश्वास,  
सम्प्रत्यय ( पु० )—अहर् व पैमान,  
दृढ विश्वास । [ विवाह में देना ।  
सम्प्रदा ( ३ उ० )—देना, बख्शना,  
सम्प्रदान ( न० )—सम्पक् रूप से देना,  
विवाह में देना, वस्त्रियश, चतुर्थी  
विभक्ति का अर्थद्योतन ।  
सम्प्रदाय ( पु० )—परम्परा, विश्वास-  
समुष्ट, विशेष धार्मिकविचार, मस-  
विशेष के मानने वालों का समूह ।  
सम्प्रधान ( न० )—निश्चायकता ।  
सम्प्रधारण-रणा=उचितानुचित का  
विचार । [ सि युक्त ।  
सम्प्रवण ( वि० )—प्राप्त, अच्छे प्रकार  
सम्प्रवद् ( ४ आ० )—प्राप्त करना,  
आरम्भ करना ।  
सम्प्रमोद ( पु० )—अतिहर्ष, महील्लास ।  
सम्प्रमोह ( पु० )—यह मोह या प्रति-  
भासम । [ डटा हुआ, आसक्त ।  
सम्प्रयुक्त ( वि० )—एक साथ जुता हुआ,  
सम्प्रयुज् ( १, ३ उ० )—एक साथ जोतना,  
मिलाना, प्रयोग में लाना, वहलाना ।  
सम्प्रयोग ( पु० )—मेल, खगल, सम्प्र-  
य, समागम ।

सम्प्रवद् ( १ उ० )—जोर से वा साफ़  
बोलना, चिल्लाना, बातचीत करना ।  
सम्प्रवदन ( न० )—बातचीत, गुल्लू ।  
सम्प्रवर्त्तन ( न० )—आरम्भ, साहसिक  
कार्य । [ करना ।  
सम्प्रविश ( ६ प० )—निल कर प्रवेश,  
सम्प्रवृत्त ( १ आ० )—संचलित होना,  
आरम्भ करना, उपस्थित होना ।  
सम्प्रश्न ( पु० )—तहकीकात, जांच ।  
सम्प्रसाधन ( न० )—शुद्धार, सजावट,  
सुसम्पादन । [ बढना ।  
सम्प्रस्था ( १ आ० )—रवाना होना,  
सम्प्रस्थान ( न० )—रवानगी, बहिर्गमन ।  
सम्प्रहार ( पु० )—एक दूसरे पर चोट  
करना, मुकाबिला, गति ।  
सम्प्राप् ( १ प० )—प्राप्त करना, पहुँचना ।  
सम्प्राप्ति ( स्त्री० )—पूणतया प्राप्ति ।  
सम्प्री ( ४ आ० )—सम्पत्तया प्रसन्न  
होना । [ देखना ।  
सम्प्रेक्षण ( न० )—अच्छे प्रकार से  
सम्प्रव ( पु० )—वाद, जलनन होना ।  
सम्प्रल्ल ( वि० )—सम्पत्तया खिला  
हुआ । [ हुआ, गड्ढा युक्त ।  
सम्प्रह ( वि० )—अच्छे प्रकार से धंधा  
सम्प्रन्ध ( ८ प० )—एक साथ धांपना,  
कोहना, बमाना ।  
सम्प्रन्ध ( वि० )—धोप, संचित । पु०—  
खगल, ताल्लुक, रिश्तेदारी,  
पक्षी विभक्ति का अर्थद्योतन,  
विवाहयोजना, अभ्युदय ।  
सम्प्रन्धक ( वि० )—आहने वाला, मित्र,  
सम्प्रन्धी, रिश्तेदार ।

सम्बन्धी [न.] (वि०)-सम्बन्ध रखने वाला,  
मिला हुआ । पु०-रिश्तेदार, पुनरुद्भू  
के पिता और भ्रातादि ।

सम्बर (पु०)-पुल, पुरता, मृगभेद, पर्वत,  
एक राक्षस । न०-चैक, जल ।

सम्बल (अस्त्री०)-रसद, यात्रा में खाने  
पाने का सामान । न०-जल । [सिक्का]

सम्बाध (१ आ०)-सताना, जुलम करना,  
सम्बाध-नमू = चैक, याधा, नडिनता, डर ।

सम्बुद्ध (वि०)-अच्छी तरह समझ हुआ,  
प्रतिबुद्ध । पु०-बुद्ध या जैनदेवता ।

सम्बुद्ध (१ उ०, ४ आ०)-समझना, वाक्य  
होना, जागना, देखना ।

सम्बोध (पु०)-सूचना, व्याख्या, शुद्ध ज्ञान ।

सम्बोधन (न०)-व्याख्या, पुकारना, पुका-  
रने में जो निमिष प्रयुक्त होता है  
उसका नाम ।

सम्भक्त (वि०)-निभक्त, अच्छे प्रकार बांटा  
। हुआ, आसक्त ।

सम्भङ्ग (१ उ०)-तृष्णाम करना, भोगना,  
देना, सेवा करना ।

सम्भली (स्त्री०)-छुटनी ।

सम्भय (पु०)-उत्पत्ति, भाष, पेशावश,  
कारण, आरम्भ, मेल, इनकान, औचित्य,  
- नाय, योग्यता ।

सम्भाव्य (वि०)-जिसकी भविष्य काल में  
होने की आशा है, मुमकिन, योग्य ।

सम्भार (पु०)-एकत्रित करना, सामान,  
रसद, समूह, सहारा, धन ।

सम्भाव्यनं ना (स्त्री०)-यजुमान, मन में  
विचारना, विचार, पूजाभाव इमकान,  
योग्यता, सन्देह, प्रेम, प्रसिद्धि ।

सम्भावित (वि०)-भावना किया हुआ,  
मुमकिन, पूजनार्थ, प्राप्त, मनुष्ट ।

सम्भू (१ आ०)-उत्पन्न होना, वर्तमान होना ।

सम्भूत (वि०)-उत्पन्न, संयुक्त, समान ।

सम्भूति (स्त्री०)-उत्पत्ति, आरम्भ, मेल,  
औचित्य, शक्ति ।

सम्भूय (अ०)-मिल कर, एक साथ ।

सम्भूयममुधान (न०)-मिल कर व्यापा-

रिक काम करता, कम्पनी खोलना ।

सम्भृ (३ उ०)-इकट्ठा करना, पूरा करना,  
तैयार करना ।

सम्भृत (वि०)-एकत्रित, तैयार, युक्त, प्राप्त ।

सम्भृति (स्त्री०)-समूह, तैयारी, पूर्णता,  
परपरिधि । [गणी ।

सम्भाष पाथम् = वातचीत, गुप्तगुप्त प्रिय  
सन्निध (७ उ०)-टुकड़े २ करना, मिलाना,  
बनाना । [भाग टुम्रा ।

सम्भुक्त (वि०)-प्राया हुआ, अच्छे प्रकार

सम्भोग (पु०)-आनन्द, इस्तेमाल, मनुष्ट ।

सम्भोजक (पु०)-ज्ञायका लेने वाला, अन्ता ।

सम्भ्रम (१, ४ प०)-धूमना, घबराहना ।

सम्भ्रम (पु०)-चक्कर काटना, जल्दी, भय,

घबराहट, गलती, भ्रम ।

सम्मत (वि०)-अच्छे प्रकार माना हुआ,  
पसन्द, विचारित, पूजित ।

सम्मति (स्त्री०)-राय, स्वीकार, इच्छा,  
आदर, प्रेम, आदेश । [रास ।

सम्मद (वि०)-अत्यन्त दुषित । पु०-महा

सम्मन् (४ आ०)-राज्ञी होना, स्वीकार

करना, संचय, इजाजत देना आदर

करना । [करना ।

सम्मन् (१ आ०)-सलाह करना, आगत,

सम्मन्त्रण (न०)-सलाह, राय, मशवरा ।

सम्मन्त्र (वि०)-घरघरा हुआ, विशिष्ट,

आदृत, पूजनार्थ ।

सम्मा (३ आ०, २ प०)-भाषना बराबर

करना ।

सम्माजक (पु०)-संगी, भाई, लगने वाला,

सम्माजनी (स्त्री०)-भाई, गृहारो ।

सम्मान (पु०)-आदर, इज्जन । न०-तौल,

मुद्राविला । [पर मिलना ।

सम्मिल (३ प०)-इकट्ठा होना एक समान,

सम्मील (१ प०)-आगे बढ़ करना मुभांना ।

सम्भुव (वि०)-ग्रामने सामने, मुँह के

आगे, मुद्राविले में ।

सम्भुवन (अ०)-सामने, आगे, मुद्राविले में

सम्भुवी [न.] (पु०)-आरना, दर्पण ।

सम्भुन्य (वि०)-सुन्दर, विविध ।

सम्मुद् (४ प०)-घबराना, मूर्ख बनना ।  
 सम्मृज् (२ प०, १ उ०)-साफ़ करना, झाड़  
 लगाना ।  
 सम्मृद् (१ प०)-दयाना, पीसना, कुचलना ।  
 सम्मेलन (न०)-एक स्थान पर मिलना,  
 मिश्रण, सभा, कान्फ़ेंस ।  
 सम्मोद (पु०)-महोत्साह, बड़ी खुशी ।  
 सम्यक्-च्-च्च् (वि०)-ठीक, उचित,  
 सुशुभकार, सारा, तमाम ।  
 सचाट् [ज्] (पु०)-चक्रवर्ती राजा,  
 ऐसा राजा जिसने राजसूय यज्ञ  
 कर लिया हो ।  
 सयोनि (वि०)-सहोदर, बगल । पु०-  
 लगामाई, सौंता, इन्द्र ।  
 सर (वि०)-गतिधील । पु०-गति, तीर,  
 मलाई, नमक, प्रपात । न०-जल ।  
 सरक (जन्मी०)-सड़क, रास्ता, मार्ग,  
 मद्यपात्र । न०-गति, भील, स्वर्ग ।  
 सरङ्ग (पु०)-पत्नी, धीपाया । [मक्खी ।  
 सरट् (पु०)-घायु, घादल, छिपकली,  
 सरट (पु०)-घायु, पत्नी ।  
 सरण (वि०)-गतिधील, जाने वाला ।  
 न०-गति, छोड़े का ज़ग ।  
 सरबह-रपमु=सरबह, शरवमु ।  
 सरना (स्त्री०)-कुनिया, देवशुनी,  
 इक्षुपत्री, विभीषण की माया ।  
 सरसु (पु०)-घायु, हवा ।  
 सरस (वि०)-धीधा, अकुटिल, हेमा-  
 नदार, सादा ।  
 सरम् [ऽ] (न०)-भील, तालाय, जल ।  
 सरम (वि०)-रसवाला, सार्द्र, गीला ।  
 सरभि[धी]क (पु०)-सारस पक्षी ।  
 सरसिज (न०)-कमल ।

सरसी (स्त्री०)-भील, तालाय । [पक्षी ।  
 सरसीरुद् (न०)-कमल । पु०-सारस  
 सरस्वान् [वत्] (वि०)-जलपुष्प,  
 रसपुष्प, सुन्दर । पु०-समुद्र, भील,  
 नद, भैंसा ।  
 सरस्वती (स्त्री०)-घाणी, एक नदी  
 का नाम, नदी, गाय, अच्छी  
 स्त्री, दुर्गा, सोमलता, ज्योति-  
 र्मती, वाग्मिता ।  
 सराव (पु०)=धराव ।  
 सरित् (स्त्री०)-नदी, तागा ।  
 सरित्पति-नाथ (पु०)-समुद्र ।  
 सरित्तान् [वत्] (पु०)-पूर्ववत् ।  
 सरितापति (पु०)-पूर्ववत् । [वायु ।  
 सरि[री]ता [न्] (पु०)-गति, रेंगना,  
 सरिप (पु०)-सरसों ।  
 सरीसृप (पु०)-सांप, सर्प ।  
 सरूप (वि०)-समान रूपवाला,  
 समान, तद्रूप ।  
 सरोज (न०)-कमल, पद्म । वि०-  
 तालाय में वृक्ष होने वाला ।  
 सरोजिनी (स्त्री०)-कमल की बेल, पद्म-  
 समूह ।  
 सरीरुद्-ह (न०)-कमल का कूल, पद्म ।  
 सरोवर (पु०)-तट्टाग, तालाब ।  
 सरोप (वि०)-छोपपुष्प, भड़का हुआ ।  
 सखे (पु०)-घायु, चित्त, मन ।  
 सगं (पु०)-रचना, स्वभाव, पुटकारा,  
 काठयादि का परिच्छेद, निश्चय,  
 उदधाह, अनुमति ।  
 सगंधस्थ (पु०)-महाकाठय ।  
 सग्नं (१ भा०)-मांस करना, कमाया ।

सर्जि-फा-र्जी (स्त्री०)-सज्जी नानक  
निहो । [ माला, गति ।

सर्जु(पु०)-व्यापारी। स्त्री०-बिजली,

सर्प (प०)-साँप, नागकेशर, रेंगना ।

सर्पेत्तृण ( पु० )-नकुल, नेवला ।

सर्पण (न०)-रेंगना, सर्प के सी गति।

सर्पेभुज् (पु०)-नोर, सारस, बड़ा साँप।

सर्पेनणि ( पु० )-साँप के मस्तरु में  
कल्पित मणि । [ बासुकि ।

सर्पराज (पु०)-सर्पों का राजा अर्थात्

सर्पेसत्र(न०)-एक पौराणिक गाथा है

कि पारोक्षित जनमेजय ने सर्पों

से अपने पिता का परिशेष

छेने के लिये यज्ञ किया था जिस

का नाम ' सर्पेसत्र ' है ।

सर्पराति-अरि-अशन(पु०)=सर्पेभुज् ।

सर्पिणी(स्त्री०)-सर्प की स्त्री, साँपिनी ।

सर्पिः [ स् ] ( न० )-घृत, घी ।

सर्प ( पु० )-गति, आकाश, घी ।

सर्प ( १ प० )-भारना, फल करना ।

सर्पे(वि०) [सर्वनाम]-सारा, समस्त। पु०-

विष्णु, शिव ।

सर्वकालीन(वि०)-सदा रहने वाला, नित्य ।

सर्वसार(पु०)-सारा सार, सारा नाम से

प्रसिद्ध पदार्थ, साधन ।

सर्वगत(वि०)-सर्वव्यापक । [न०-जल ।

सर्वग ( पु० )-शिव, परमात्मा, आत्मा ।

सर्वगामी-गति(वि०)-सर्वव्यापक ।

सर्वद्वय(पु०)-सब को रगड़ने वाला अर्थात्

पाप । वि०-सर्वोत्तम । [व्यापी ।

सर्वजनीन ( वि० )-सर्वत्र प्रसिद्ध, संसार-

सर्वत्र-विद् ( वि० )-सब जानने वाला ।

पु०-परमात्मा । [ तरुण से ।

सर्वतः [ स् ] ( न० )-चारों ओर से, सब

सर्वतन्त्रसिद्धान्त(पु०)-वेसा सिद्धान्त जिस

सब कोई सिखा सकता हो । [से ।

सर्वतोभावेन(अ०)-सब रूप से, सब तरह

सर्वतोमुख(न०)-जल, आकाश । पु०-शिव,

ब्रह्मा, आत्मा, अग्नि ।

सर्वत्र(अ०)-सब स्थान में, सब देशों में,

सब काल में, सब जगह ।

सर्वथा(अ०)-सब तरह, सब प्रकार से ।

सर्वदमन(पु०)-सब को दमन करने वाला

अर्थात् दुष्पुत्रपुत्र भरत । [सर्वदृष्ट ।

सर्वदर्श [ न ] ( पु० )-बुद्ध, परमात्मा,

सर्वदा (अ०)-सदा, हमेशा ।

सर्वनाम(अ०)-व्याकरण में शब्दों की एक

कक्षा जिस का संग्रह के द्योतन कराने

के लिये प्रयोग होता है । [करते हैं ।

सर्वमित्र ( वि० )-जिस को सब पसन्द

सर्वमन्त्रा(स्त्री०)-यक्षुती ।

सर्वव्यापक(वि०)-सब जगह उपस्थित ।

सर्वशः(अ०)-विलकुल, तमाम, सब कहीं ।

सर्वसह(वि०)-सब कुछ सहारने वाला ।

पु०-गुगुल ।

सर्व[र्व]सहा (स्त्री०)-मृषियी ।

सर्वसाक्षी [ न ] (पु०)-परमात्मा, अग्नि,

वायु, सूर्य ।

सर्वस्यान०)-सब धन, सब धन ।

सर्वहित(न०)-काली मित्र ।

सर्वोर्ग(न०)-सारा शरीर, सब देहांग ।

सर्वोर्गीण(वि०)-सब अंगों में व्यापितवाला ।

सर्वोधिकारी [ न ] ( पु० )-अनरुल

सुपरिण्डेण्डेण्ड, सर्वोप्यक्त ।

सर्वेश(पु०)-परमात्मा, चक्रवर्ती राजा ।

सर्वेष पु०)-सरसों ।

सल-रत्न(न०)-जल, पानी ।

सलज्ज(वि०)-लज्जालु, गुमास्तु । [नम्र ।

सलिल ( न० )-जल, पानी, उच्छापाडा

सल ( पु० )-यक्ष, सन्तान; भर्कवृक्ष ।

सलन ( न० )-सोम निकालने का व्यापार,

यक्ष, प्रसव । [ सखा, मित्र ।

सलयाः[स्] (वि०)-समान उम्र वाला,

सलर(पु०)-शिव, जल । [एक प्रकार का ।

सलवे(वि०)-रक्त रंग का, पक्ष जाति का,



सविकल्प क(वि०)-सन्देशयुक्त, यह वा यह ।  
 सविषय ( वि० )-सशरीर, युद्धग्रस्त ।  
 सवितर्क-विमर्श ( वि० )-दूरदर्शी,

चिन्ताशील ।

सविता [तृ] (वि०)-प्रेमादक, दाता ।

सवित्री ( स्त्री० )-माता, गौ ।

सविध (वि०)-एक ही प्रकारका, समीप

सयिनय ( वि० )-भवनत, नम्र ।

सविशेष (वि०)-रास, अद्भुत, श्रेष्ठ ।

सविस्तर (वि०)-विस्तारपूर्वक, पूरा ।

सविस्मय (वि०)-साश्चर्य, सन्दिग्ध ।

सवेश (वि०)-वैश्वयुक्त, मज्जित, समीप ।

सव्य ( वि० )-दान, धाया, प्रतिकूल,

विहर्ष, दक्षिणी ।

सव्याज ( वि० )-संकपट, उछी ।

सव्यापार(वि०)-मशगूल, लगा हुआ ।

सखीह (वि०)-शमिन्दा, शमोल, सलज्ज

सख्य ( वि० )-कांटेदार, दुःखदायी ।

सखीक ( वि० )-सीमागमन, सुन्दर ।

सख् ( २ प० )-सोना ।

सख्या ( स्त्री० )-गर्भवती स्त्री ।

सन्देश ( वि० )-सन्देशयुक्त ।

सन्निवत ( वि० )-मुस्कराता हुआ ।

सह ( ४ प० )-सन्तुष्ट होना, सहना,

सुख होना ।

सह (वि०)-सहारने वाला, साविर ।

सु०-नामंशीयं नाम, महादेव ।

अस्त्री०-शक्ति, ताकत । अ०-साध,

पादक, मित्रकर ।

सह-नार ( पु० )-सहयोग, भाग्यवत ।

सहभागी(वि०)(पु०)-सहायक, सहिस्तेय

सहचर (पु०)-साथी, मित्र, पति, नीकर ।

सहचरी ( स्त्री० )-स्त्री, भार्या, सखी ।

सहज ( वि० )-कुदरती, मौजूबी ।

पु०-सहोदर ।

सहब मित्र ( न० )-स्वाभाविक मित्र ।

सहदेव (पु०)-कनिष्ठ, मातुहुपुत्र ।

सहधर्मिणी(स्त्री०)-समान धर्म वाली

अर्थात् पत्नी ।

सहन (न०)-समा, बरदाश्त, धीत

उष्णादि का सहारना ।

संहनशील (वि०)-समाशील, साविर ।

सहभोजन ( न० )-दावत, मिलकर

खाना, प्रीतिभोजन ।

सहरि ( पु० )-सूर्य, रवि ।

सहर्ष ( वि० )-हर्षयुक्त, खुश ।

सहर्षम् ( अ० )-हर्षपूर्वक, खुशी से ।

सहस् ( पु० )-नामंशीयं नाम, जाड़े

का भीषम । न०-शक्ति, विजय,

शोभा, लक्ष ।

सहसा(अ०)-यकायक, अकस्मात्, बलात् ।

सहसान(वि०)साविर । पु०-मयूर, यक्ष ।

सहस्य ( पु० )-बल का हितकारी

अर्थात् पीप नाम ।

सहस्र(न०)-दशसी की सख्या, हजार,

यहुत बड़ी सख्या ।

सहस्रकर-किरण ( पु० )-सूर्य, मूरज ।

[दीपित, रत्न, भाग्य, पाद,

मरीचि, अशु, अचिन्तन शब्दों के

लगाने से भी सूर्य ही का चोप

होता है] ।

सहस्रदृष्टि-छीजन-नेत्र(पु०)-ब्रह्म, विष्णु

सहस्रपत्र (न०)-कमल, पारस पत्ती ।

सहस्रनाम्न(पु०)-कात्तवीर्य नामक राजा  
याण, राजस, शिव ।

सहस्रनाम्न-मौलि ( पु० )-विष्णु ।

सहस्रनाम्न(न०)-( न० )-कम्बल ।

सहस्रशीर्षा ( स्त्री० )-दूर्वा घास ।

सहस्रशः (प्र०)-हजारों की संख्या में ।

सहस्राक्ष (पु०)-हस्त, विष्णु, परमा-  
त्मना, शिव ।

सहा (स्त्री०)-पृथिवी ।

सहाध्यायी (न०)(पु०)-सहापत्नी ।

सहाय (पु०)-मित्र, दोस्त, अनुचर,

साथी, मददगार, शिव । [मद्द ।

सहायता-पत्न्यम्=दोस्ती, मित्रता,

सहाय (पु०)-नदाप्रलय, आभूषण ।

सहित (वि०)-साथ, बाहन, मित्रकर ।

सहित (न०)-समा, सत्र । [करनेवाला ।

सहिष्णु (वि०)-सहनशील, धरदायक

सहिष्णुता-त्यम्=सहनशीलता, सत्र ।

सहृदि (पु०)-सूर्य । स्त्री०-पृथिवी ।

सहृदय (वि०)-नैकदिल, मेहरवान,

सहा । [राज । न०-दूषितान्न ।

सहृदय (वि०)-सदिग्ध, काबिले मुत-

सहोदर (स्त्री०)-पणशाखा, पत्तिपी

की कुटी ।

सहोद (पु०)-ऐसा थोर जो सुराये

हुए मान के साथ पकड़ा गया

हो, ऐसा पति जिस ने गंधर्वती

स्त्री के साथ विवाह किया हो ।

सहोदर (पु०)-एक पेट से उत्पन्न

होने वाला अर्थात् सगा भाई ।

सहोद (वि०)-अच्छा, श्रेष्ठ । पु०-तपस्वी,

अपि ।

सहा (वि०)-धरदायक करने लायक,  
सहने योग्य । न०-तन्दुरुस्ती,  
सहायता ।

सा (स्त्री०)-लक्ष्मी, पार्वती ।

सायान्त्रिक (पु०)-समुद्र के मार्ग से  
।। व्यापार करने वाला, पोतवन्धिक ।

सायुगीन (वि०)-मुद्र करने में चतुर,  
।। संपूर्ण योद्धा ।

सारविण (न०)-हुल्लड़, शोरीमुक्त ।

सायत्सर (वि०)-साधारण, वार्तिक ।

पु०-उपोतिपी, दैवज्ञ ।

सायादिक (वि०)-वाता सम्बन्धी ।

पु०-प्रतिवादी ।

साथयिक (वि०)-सन्देशयुक्त, अनिशिप्त ।

सासारिक (वि०)-दुनियायी ।

सासिद्धिक (वि०)-कुदरती, भीरुवी ।

सास्थानिक (वि०)-एक ही देश का

रहने वाला । [देहयुक्त ।

साहगनिक (वि०)-शारीरिक, दैहिक,

साक (न०)=शाक ।

साकम् (अ०)-साध, बाहन, मिलकर ।

साकम्प (न०)-सम्पूर्णता, समस्तभाव ।

साफाल (वि०)-इच्छुक ।

साफेत (न०)-अयोध्यानगरी ।

साफेतक (पु०)-अयोध्यानिवासी जन ।

साक्षुह (पु०)-यध, जी । न०-सत्तू ।

साक्षात् (अ०)-सामने, आँखों के आगे,

सुल्लभसुल्ला, प्रत्यक्ष ।

साक्षात्कार (पु०)-स्वयं किसी वस्तु को

देखना, जान ।

साक्षी (न०)(वि०)-देखने वाला, तसदीक

करने वाला । पु०-गवाह, ऐसा

समुप्य जिसने घटना की अपनी  
आँखों से देखा हो, परमात्मा ।  
साक्ष्य ( न० )-गवाही, शहादत,  
तसदीक । [भारने वाला ।  
साक्षेप ( वि० )-आक्षेपयुक्त, ताना ।  
साक्षेय ( वि० )-दोस्ताना, मित्र  
सम्बन्धी ।  
साक्ष्य (न०)-मित्रता, दोस्ती । [नेद ।  
सागर (पु०)-समुद्र, वाष्पका अंक, मृग-  
सागरा (स्त्री०)-नदी, गंगा ।  
सागरलघन (न०)-जहाजरानी ।  
सागराम्बरा-नेनि-मेखला ( स्त्री० )-  
पृथ्वी, भूमि ।  
साग्नि (वि०)-अग्नियुक्त, अग्नि की  
निरन्तर प्रज्वलित रखने वाला ।  
साग्निक (वि०)-पुण्यवत् । [बट  
साक्ष्य (न०)-मित्रण, गड़बड़, मिला-  
साक्षात्प-उपा-जनकभाता कुशब्धन  
की राजधानी । [युक्त ।  
साक्षेति (वि०)-सकेतवाला, संकेत-  
साक्षेपिक (वि०)-सक्षिप्त, मुक्तसर ।  
साक्ष्य (वि०)-सक्यासम्बन्धी, विच-  
रने वाला । अस्त्री०-यद् द्योतो  
में से एक त्रिगुण का कपिल मुनि  
ने निर्माण किया है ।  
साक्ष (वि०)-भगयुक्त, प्रत्येक अंग में  
सम्पूर्ण ।  
साप्रानिध ( वि० )-सप्रानसम्बन्धी,  
मुदुविपयक । पु०-कप्तान, मेरा-  
पति ।  
साप्रातिक (वि०)-बूझा करनेवाला ।  
साधि (भ०)-देहा, तिरछा, धक ।

साचीकृत ( वि० )-देहा किया हुआ,  
धकीकृत ।  
साटोप (वि०)-आहम्बरयुक्त । [मुख ।  
सात (वि०)-दिया हुआ, मष्ट । न०-  
सातत्य ( न० )-निरन्तरता ।  
साति (स्त्री०)-अन्त, दान, पीड़ा ।  
सातिसार ( वि० )-अतिसारयुक्त ।  
सास्वत ( पु० )-बलरान, श्रीकृष्ण,  
यादवमात्र, विष्णुभक्त ।  
सास्वती ( स्त्री० )-गायक की वृत्ति,  
विशेष, सुमन्त्रा ।  
सास्विक ( पु० )-ब्रह्मा, विष्णु, तीन  
प्रकार के भावों में से एक । वि०-  
सत्यगुणयुक्त ।  
सास्त्रिकी (स्त्री०)-दुर्गा, पूजाविशेष ।  
सात्स्य ( वि० )-सुख देने वाला,  
आनन्दजनक ।  
सात्यकि (पु०)-एक वृष्णिवंशीय जो  
श्रीकृष्ण का चारपि पा ।  
सात्यत-वनेय ( पु० )-वेदव्यास ।  
साद (पु०)-विषाद, दुःख, गमन, धरण ।  
सादन ( न० )-गृह, घर ।  
सादि ( पु० )-चारपि ।  
सादी [न] ( पु० )-अस्वाच्छ, सुद-  
सचार, हस्तपारोह, रथ पर चढ़ा  
हुआ । [ बराबरी ।  
सादृश्य (न०)-सुरूपभंता, सदृशता,  
साधक ( वि० )-निष्ठादक, साधन  
करने वाला ।  
साधन ( न० )-कर्म करने का हेतु,  
कारण, करणकारक, मृतगृहकार,  
भाग लगाना, दान, धन, सामग्री,

गमन, सावित करना, मोहन,  
अनुगमन ।

साधना (स्त्री०)—आराधना, सेवा ।

साधन्यं (न०)—समानधर्मत्व, धराधरी ।

साधारण (वि०)—सदृश, धरावर,

समान, बहुतो के अधिकार वाली  
वस्तु, सामान्य ।

साधारणी (स्त्री०)—घाधी, कुत्री,  
वेष्टया, व्यवहारिणी स्त्री ।

साधित (वि०)—सिद्ध किया हुआ,  
दायित, पूरा किया हुआ ।

साधिष्ठ (वि०)—दृढतम, बहुत मज-  
बूत, बहुत अच्छा ।

साधीयान् [ यस् ] (वि०)—अतिशय  
साधु, बहुत अच्छा, न्याय्य ।

साधु (वि०)—उत्तमकुलीत्पन्न, सम्प,  
सज्जन, मुनि, सुन्दर, बाधुपिक,

जिनदेव, वधित । पु०—व्यवहारी  
जन । [वाहन ।

साधुवाह (पु०)—उत्तम कुश्व, सुन्दर  
साधुयुक्ति (स्त्री०)—अच्छी आली-

बिका, सुन्दर वर्तन ।

साधत (न०)—उग्र, आतपत्र, भीरो  
का निरोह, परमवीथी, बाजार ।

साध्य (पु०)—गण्य देवताविशेष जो  
१२ हैं, २१वा योग । वि०—सिद्ध

करने योग्य, वह पदार्थ जो अठा-  
रह प्रकार के विधादों में से प्रमत्-

नादि से सिद्ध करने योग्य हो ।

साध्यसिद्धि (स्त्री०)—सिद्ध करने योग्य  
पदार्थ की सिद्धि, निपत्ति ।

साध्यस (न०)—भय, डर, प्रतिभा ।

साध्वी (स्त्री०)—सती, पतिव्रता स्त्री ।

सानन्द (वि०)—सुख, आनन्दयुक्त ।

सानु (अस्त्री०)—घोटी, धिखर, पर्वतरूप  
चौरस भूमि, अंकुर, वन, सविद्ध, सूर्य ।

सानुकोश (वि०)—दमालु ।

सानुनय (वि०)—शरीर, नम्र, सम्प ।

सानुराग (वि०)—आसक्त, प्रेमावद्ध ।

सान्तर (वि०)—अन्तरयुक्त ।

सान्तानिक (वि०)—सन्तानसम्बन्धी,  
कैला हुआ ।

सान्त्व (१० उ०) सुख करना, राजी  
करना, तसल्ली देना ।

सान्त्वन—ना=शान्तता, राजासन्दी, न-  
म्रता, तसल्ली ।

सान्द्र (वि०)—सघन, जुटा हुआ,  
गहरा, अतिशय ।

सान्धिवियहिक (पु०)—परराष्ट्र-  
सन्धिव, अन्य राष्ट्रो से सन्धि

विषय करने वाला मन्त्री ।

सान्ध्य (वि०)—सन्ध्या सम्बन्धी ।

सास्त्र्य (पु०)—इयनसानयी आदि  
जिस में पत मिला हो ।

सालिष्य (न०)—निकटता, सामीप्य,  
व्यवस्थिति ।

सान्यासिक (पु०)—सन्यासी, व्रतवांछनी  
सान्ध्य (वि०)—अन्धपशुहित ।

सापत्न्य (न०)—प्रीतिपात्राद, शत्रुता ।

सापराध (वि०)—मुद्रानि, अपराधी ।

सापवाद (वि०)—अनवाद्युक्त, अन-  
वाद फैलाने वाला ।

साफल्य (न०)--सफलता, कामयाबी ।  
 साबाध ( वि० )--बाधायुक्त, गड़बड़ ।  
 साम् ( १० २० )--सान्त्वना देना,  
 तसलती करना ।

सामक (न०)--असल श्रम । पु०-रसाना  
 सामग (पु०)--सामगान करने वाला,  
 ग्राहण । [असवाय ।

सानघी ( स्त्री० )--सानान, करजिघर,  
 सानप्य ( न० )--सम्पूर्णता, स्टाक ।  
 सामज्ञात (वि०)--सामवेद से उत्पन्न ।  
 सामझुष्य (न०)--भीषित्य, उपयुक्तता  
 सामनी-नी ( स्त्री० )--पशु बांधने  
 का रस्सा ।

सामम् ( न० )--तसलती, सान्त्वना,  
 राजनीति का एक उपाय वा  
 भेद, भान्ति द्वारा किसी विचार  
 के निपटारे का उपाय, सामवेद,  
 भीर मन्त्र ।

सामन्त (वि०)--सर्वज्ञानी । पु०-पड़ीसी,  
 करद राजा, सेनानी । न०-पड़ीस  
 सामयाचारिक (वि०)--समय के अनु-  
 सार आचरण करने वाला ।

सामयिक (वि०)--समयसम्बन्धी, वर्त-  
 मानकालीन, दायीक, सजिक ।

सामयोनि (पु०)--ग्राहण, इस्ती ।  
 सामय्यं (न०)--अधिक, ताकत, मल,  
 योग्यता, धन, लाभ ।

सामयाद (पु०)--विनाययुक्त शब्द ।  
 सामय्यद (पु०)--सीसरा यद आ आदि-  
 त्य द्वारा प्रकट हुआ है ।

सामवेदी (मू)(पु०)--सामयाधी ग्राहण  
 सामात्रिक ( वि० )--समात्रसम्बन्धी

पु०--समाज का सभासद् ।

सामान्य ( वि० )--साधारण, समान,  
 तसामान०-समातभाष, समानता ।  
 सामान्यतः (अ०)--साधारण रूप से ।  
 सामान्यवनिता ( स्त्री० )--धारनारी,  
 वेश्या, रण्डी ।

सामान्यशास्त्र (न०)--साधारण नियम  
 सामान्या ( स्त्री० )--धारनारी, वेश्या ।  
 सामासिक (वि०)--समासयुक्त, सहित  
 सामीची ( स्त्री० )--रनाचा, प्रथमा ।  
 सामीप्य (पु०)--पड़ीसी, न०-पड़ीस,  
 समीपता ।

सामुद्र (वि०)--समुद्री, समुद्रोत्पन्न,  
 पु०-नाविक, पोतबाह । न०-समुद्री  
 ममक, तिल ।

सामुद्रिक ( वि० )--समुद्रोत्पन्न, तिल  
 सम्बन्धी । न०-हाथ देखने की  
 विद्या । पु०-उपोत्तिपी ।

साम्प्रत (वि०)--वर्तित, मुनासिब ।  
 साम्प्रतम् ( अ० )--अद्य, इस समय,  
 तुरन्त । [वर्तित ।

साम्प्रतिक ( वि० )--वर्तमानकालीन,  
 साम्प्रदायिक ( वि० )--परम्परागत,  
 सम्प्रदायसम्बन्धी ।

साम्प्र ( न० )--साम्प्रत की छ से  
 निकला हुआ नमक । [मिदरघाणी ।

साम्य ( न० )--समानता, समानता ।  
 साम्राज्य (न०)--चक्रवर्तीराज्य, महान्त  
 साम्य (पु०)--अन्त, मर्यादा, तीर ।

सायक ( पु० )--बाघ, तीर, तलवार ।  
 सायकाल (पु०)--अपराध के पश्चात्  
 का समय, भोग ।

सायण(पु०)--वेद का एक भाष्यकार ।

सायम् ( अ० )--भास के वक्त ।

सायी [ नृ ] ( पु० )--सुहसवार ।

सायुज्य ( न० )--गहरा लगाव, निमग्न हो जाना ।

सार ( वि० )--अच्छा, असली, मज-दूत, आज्ञासूदा । अस्त्री०--असल बातों, आवश्यक भाग, चर्चा, तर्क ।

न०--जल, उपयुक्तता, लोहा ।

सारथ ( न० )--शहद, मधु ।

सारंग ( वि० )--रंगविरंगा, चित्रक ।

पु०--सृगभेद, हरिण, शेर, हस्ती, कौयल, मयूर, मादल, वस्त्र, घात, शिव, कानदेव, कमल, कपूर, कमलान, चन्दन, वाद्यभेद, आभूषण, स्वर्ण, चातकपत्ती, रात्रि, प्रकाश ।

सारङ्गिक(वि०)--विद्विद्या पकड़ने वाला

सारंगी(स्त्री०)--अपने नाम से प्रसिद्ध बाजा

सारणि--णी ( स्त्री० )--नहर, नाला ।

सारण्य ( पु० )--साँप का अण्डा ।

सारथि ( पु० )--रथवान्, सापी, सनुद्र ।

सारथेय ( पु० )--कुत्ता, खान ।

सारथेयी ( स्त्री० )--कुतिया ।

सारथ्य ( न० )--अज्ञातता, सीधापन ।

सारथ ( वि० )--सरोवरसन्मन्थी ।

पु०--अपने नाम से प्रसिद्ध पत्नी, चन्द्रमा । न०--कमल ।

सारस्वत ( वि० )--सरस्वती से सम्बन्ध रखने वाला, वाग्मी । पु०--सर-स्वती के आस पास का देश,

ब्राह्मणभेद । न०--वाणी, वाग्मिता ।

सागल ( वि० )--रुका हुआ, बाधायुक्त ।

सार्थ ( वि० )--अर्थयुक्त, सुफीद, अभीर ।

पु०--अभीर आदनी, व्यापारियों का समूह, झुण्ड । [ आनन्द ।

सार्थक ( वि० )--अर्थयुक्त, सुफीद, कार-

सार्थवाह ( पु० )--वजारों का नायक, बड़ा व्यापारी ।

सार्थिक ( पु० )--वजारा, व्यापारी ।

सार्द्ध ( वि० )--तत्, गीला, नम ।

सार्द्ध ( न० )--झोड़ा ।

सार्धम् ( अ० )--मिलकर, वाहन ।

सार्ध ( वि० )--सब का, सब से सम्बन्ध रखने वाला । [ निरन्तर ।

सार्धकालिक ( वि० )--सदा रहने वाला,

सार्धजनिक ( वि० )--सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला, साधारण ।

सार्ध ( न० )--सब बातों की जानकारी ।

सार्धजिक ( वि० )--सब स्थानों में होने वाला, सर्वत्रस्थित ।

सार्धभीम ( वि० )--सारे संसार का ।

पु०--सम्राट्, चक्रवर्ती राजा, उत्तर-दिक्पाल ।

सार्ध ( वि० )--सरसों का बना हुआ ।

न०--सरसों का तेल ।

साल ( पु० )--अपने नाम से प्रसिद्ध वृक्ष, माघोर, भित्ति ।

नाला ( स्त्री० )--दीवार, घर, धाला ।

सालूर ( पु० )--वेदक ।

साल्य ( पु० )--पृथ देश का नाम ।

साल्यिक ( पु० )--मैनापची ।

सावक ( पु० )--शिशु, बच्चा, पछड़ा ।

सावकाश(वि०)--अवकाशयुक्त, कुरन्तरी

सावधान ( वि० )--सुचारी, चिन्ता-

शील, चतुर ।

सावधि (वि०)-सीमायुक्त, विशेषित ।

सावयव (वि०)-अवयवयुक्त, साङ्ग ।

साधर (पु०)-लोभ, वृक्ष, दीप, पाप ।

साधरण (वि०)-दृक्, हुआ, घिरा हुआ । [ तीव्र ।

साधणं (वि०)-एक ही वर्ण का, सभा-

सावशेष (वि०)-अवशेषयुक्त, अधूरा ।

साधिका (स्त्री०)-दायी, धाय ।

साधित्र (वि०)-सूर्यसम्बन्धी । पु०-

सूर्य, ब्राह्मण । न०-यज्ञसूत्र ।

साधित्रो (स्त्री०)-प्रकाशद्विरण,

नायत्रीमन्त्र, उपनयनसंस्कार,

ब्राह्मणी, पार्वती, करमपपत्नी,

सत्यवान् की भावों ।

साशक (वि०)-भयानुर, लीकजड़ा ।

साशूक (पु०)-कम्बल ।

साश्वयं (वि०)-विस्मित, विस्मयकर ।

साशु (वि०)-आनुओं से भरा हुआ, रोता हुआ ।

साशुधी (स्त्री०)-सासु, पत्नीमाता ।

साष्टाङ्गम् (अ०)-शरीर में आठ अंगों से पृथिवी को छू कर ।

सामूय (वि०)-हासिद, ईर्ष्यालु ।

साहचर्य (न०)-संगति, गोष्ठी, साथ रहना । [ शक्ति ।

साहन (न०)-सहना, यदायत, सहन-

साहन (न०)-परस्त्रीहरणादि दुष्क-

त कर्म, दण्ड, पछात्कार से किया काम, अविवारित कर्म । पु०-

अग्निविशेष । वि०-विना विचार करने वाला ।

साहसिक (वि०)-चौर, अनुपग्रहन्ता, परस्त्रीगामी, कटु बोलने वाला, हिम्मतवी, दृढ करने वाला ।

साहस्र (न०)-सहस्रसमूह, अनेक हजार, सहस्रमात्र । वि०-सहस्र की संख्या वाला ।

साहायक (न०)-सहायता, मदद ।

साहाय्य (न०)-पूर्ववत् ।

साहित्य (न०)-एकत्रित होना, मिलना, काठपशास्त्रविशेष, परस्परसापेक्ष समान रूपों का एक ही क्रिया में अन्वयित होना ।

साह्य (न०)-मेलन, सहायता, एकट्ठा होना, मिलना ।

साह्य (पु०)-पशुयुद्ध, मेंढे आदि प्राणियों का द्यूत । वि०-नाम-युक्त, नाम के सहित ।

सि (ल०)-सील, मूचीकर्म करना ।

सिंह (पु०)-शेर, केशरी । [ यह शब्द जब किसी सञ्ज्ञावाचक शब्द के अन्त में आता है तब इसका अर्थ श्रेष्ठ तथा यलवान् का होता है जैसे:-पुरुषसिंह ] ।

सिंहतल (न०)-अम्ललि साधना ।

सिंहप्यनि-नाद(पु०)-शेर की दहाड़ ।

सिंहयाना-रथा (स्त्री०)-दुर्गा ।

सिंहल (अस्त्री०)-देशविशेष आज-कल जिसे 'सीलोन' कहते हैं ।

सिंहला (पु० य०)-लकानिवासी जन, सीलोन के रहने वाले ।

सिंहवाहन (पु०)-रथ, महादेव ।

सिंहान (न०)-सीहमल, नाभिकामल ।

सिंहासन ( न० )—स्वर्णरचिते राजा  
का आसन । पु०—रति के १६ग्रन्थों  
में से चौदहवां ।

सिंहिका ( स्त्री० )—राहु की माता ।

सिंहिकातनय-पुत्र-शुत ( पु० )—राहु ।

सिंदी ( स्त्री० )—शेरनी, सिंह की स्त्री ।

सिकता ( स्त्री० )—वायुकायुक्त भूमि,  
वालूरेत ।

सिकतामय ( वि० )—रेतीला, वायुका  
वाला । न०—वायुकायपुल्ल वट,  
रेतीला किनारा ।

सिक्क ( वि० )—छिड़का हुआ, सींचा हुआ ।

सिक्क ( पु० )—उपले हुआ चावल,  
ग्रास । न०—नोन ।

सिक्क ( न० )—नोन ।

सिपिणी ( स्त्री० )—नाक, नाथिका ।

सिप् ( ६ व० )—सींचना, जलदेना,  
जल छिड़कना ।

सिष्य ( पु० )—वस्त्र, कपड़ा, पुराना वस्त्र

सिष्यनूत ( वि० )—छिड़कता हुआ,  
सींचने वाला ।

सिद्धा ( स्त्री० )—गहने की आवाज़ ।

सित ( वि० )—सफेद, धवल, शुक्ल-  
वर्णयुक्त । पु०—सफेदरंग, शुक्लाचार्य ।  
न०—पांती, चन्दन ।

सितकण्ठ ( वि० )—सफेद कण्ठ वाला ।  
पु०—दात्यूह पक्षी ।

सितकर ( पु० )—चन्द्रमा, कपूर ।

सितकुशर ( पु० )—इन्द्र, इन्द्रवस्ती ।

सितगुप्ता ( स्त्री० )—सफेद सीटली ।

सितछत्र ( न० )—राजछत्र ।

सितछद-पद्म ( पु० )—हंस नामक पक्षी

सितमरिच ( न० )—सफेद निरच ।

सितशिम्विक ( पु० )—नेहूँ, गोधूम ।

सितसप्ति ( पु० )—भर्जुन, सफेद घोड़ा ।

सितसर्प ( पु० )—सफेद साँस ।

सिता ( स्त्री० )—साँड़, मिसरी,  
चनेली, घावघी, सफेद दूध ।

सितांशु ( पु० )—चन्द्रमा, कपूर ।

सिताङ्ग ( पु० )—रोहितमस्त्व, एक  
प्रकार की मछली ।

सिताजाम्बी ( स्त्री० )—सफेद जीरा ।

सितादि ( पु० )—राज, बहुधिकार ।

सितामन ( पु० )—नरुड़ पत्नी । वि०—  
सफेद मुख वाला । [ करने वाला ।

सिताम्बर ( वि० )—सफेद वस्त्र धारण  
सिताम्बोज ( पु० )—द्रवित पद्म, सफेद

कमल । [ शक्ति ।

सितासित ( पु० )—बलदेय, शुद्धसहित

सिति ( वि० )—काला, सफेद । पु०—  
सफेद और कालारंग ।

सिदिमा [ नृ ] ( पु० )—शुक्लता, कृष्णता

सितोदर ( पु० )—कुशेर । न०—सफेद  
कोख, श्वेतकुर्वि । [ न०—सङ्घिषा ।

सितोपल ( पु० )—रूफटिक, विल्लीर ।

सितोपला ( स्त्री० )—शंकरा, साँड़ ।

सिद्ध ( पु० )—देवयोनिविशेष, अच्छा  
पुरुष । न०—संधानमक । वि०—

ममिह, नित्य, मन्त्रमिहि थांला ।

सिद्धपुर ( न० )—भूगोल के नीचे का  
देशविशेष ।

सिद्धविद्या ( स्त्री० )—महाविद्याविशेष ।

सिद्धयेन ( पु० )—कान्तिकेय ।

सिद्धा ( स्त्री० )—आदि, योगिनीविशेष ।



सिद्धान्त (पु०)-मन्तव्य, जिससे ठीक घात का निश्चय होता है, ज्योतिषशास्त्रविशेष ।

सिद्धार्थ ( पु० )-शाक्यसिंह, सफेद सरसों, प्रसिद्ध अर्थ ।

सिद्धि ( स्त्री० )-दुर्गा, योगविशेष, निष्पत्ति, मोक्ष, वृद्धि । विद्धि

आठ हूँ यथा:-“अणिमा महिमा चैव, उपिमा प्राप्तिरेव च । प्राकाम्यसु सपेक्षित्व, अशित्वं च तथापरम्” । [पु०-वटुक भैरव ।

विद्धिद ( वि० )-सिद्धि का देने वाला ।

सिद्धेश्वरी ( स्त्री० )-देवीविशेष ।

सिधन ( न० )-एक प्रकार का कीड़ ।

[सिधन का भी यही अर्थ है] ।

सिधमल ( वि० )-कीड़ी, एक प्रकार के कीड़ वाला ।

सिधय ( पु० )-पुष्पनक्षत्र ।

सिनी ( स्त्री० )-सफेद गुण वाली ।

सिनीया [ वा ] ली ( स्त्री० )-चीदस वाली अनावस्था, दुर्गा ।

सिन्दूर ( न० )-छाल रंगका एक द्रव्य ।

पु०-एक प्रकार का वृक्ष ।

सिन्दूरतिलका ( स्त्री० )-ऐसी स्त्री जिस के सिन्दूर का टीका लगा हो अर्थात् सपत्नी स्त्री ।

सिन्धु ( पु० )-समुद्र, नदिविशेष, एक प्रकार का राग, सफेद मुहागा । स्त्री०-नदी, पञ्जाब में एक प्रसिद्ध नदी ।

सिन्धुखेल ( पु० )-सिन्धुप्रदेश ।

सिन्धुज ( न० )-सैषा नामक । वि०-

समुद्र में उत्पन्न हुआ ।

सिन्धुजन्मा [ नृ ] ( पु० )-चाद्रमा ।

सिन्धुपुष्प ( पु० )-शर ।

सिन्धुर ( पु० )-हाथी, यज्ञ ।

सोकर ( पु० )-जलकण, पानी की बूंद ।

सीता ( स्त्री० )-जनक राजा की पुत्री, हल की फाँटी, हल से खींची हुई लकीर ।

सीतारपति ( पु० )-रामचन्द्र ।

सीत्कार ( पु० )-सीसी करना, मुहब्बत से उत्पन्न शब्द । [ शराब ।

सीधु ( पु० )-गवै के रस से बनी हुई

सीधुरस ( पु० )-आम्रवृक्ष ।

सीमन्त ( पु० )-सीमानी, गर्भ से उठे वा आठवें नहीने में कर्तव्य एक संस्कार, बालों में मार्ग के समान बनावट, मांग । [ औरत ।

सीमन्तिली ( स्त्री० )-योधित, स्त्री,

सीमन्तोत्थयन ( न० )-गर्भ से आठवें या उठे नहीने में करने योग्य एक संस्कार ।

सीमा ( स्त्री० )-मर्यादा, हद्द, अग्रहकोष ।

सीरी [ नृ ] ( पु० )-यज्ञदेव, बलराम ।

सी [ वि ] वन ( न० )-सीवन, सीना, ताँस फैलाना ।

सु ( न० )-अच्छा, बहुत, पूजा ।

सुकरा ( स्त्री० )-ऐसी माय जो सुख-पूर्वक हुई जाये । [ नामक कन्द ।

सुकर्णक ( पु० )-हस्तिकन्द, हाथीचक सुकर्मा [ नृ ] ( वि० )-अच्छे काम करने वाला, सक्रिय । [ वृत्त ।

सुकायड ( पु० )-अच्छी शाखा वाला

सुकाम(वि०)-अच्छी कामना वाला ।  
सुकुमार ( वि० )-कोमल, सुदृ० पु०-

अच्छा बालक ।

सुकुमारा ( स्त्री० )-अमेली की लता,  
मालतीलता, कदली ।

सुकुमारी ( स्त्री० )-कोमलाङ्गी स्त्री,  
शंखपुष्पी नामक औषध । [सिंह]

सुकृत (वि०)-पुण्य करने वाला, धा-  
सुकृत (न०)--पुण्य, गुण, अच्छा काम ।

सुकृति (स्त्री०)-पूर्वपति । [वाला ।

सुकृती [न्] (वि०)-पुण्यशील, भलाई  
सुकेशी (स्त्री०)-स्वर्गवेश्याभेद, सुन्दर

केशों वाली स्त्री ।

सुख ( न० )-आनन्द, आत्मवृत्ति  
गुणविशेष, मद, हर्ष ।

सुखकर ( वि० )-सुख करने वाला,  
सहज में ही होने वाला ।

सुखभात (वि०)-आनन्दित, सुखी ।

सुखद (वि०)-सुख देने वाला । पु०-  
विष्णु । न०-विष्णु का स्थान ।

सुखभाक् [न्] (वि०)-सुखी, हर्षित ।

सुखराशि-त्रिका (स्त्री०)-दीपावली,  
दियाली ।

सुखा (स्त्री०)-वहणपुरी ।

सुखाधार ( पु० )-सुख का आश्रय,  
सुख देने वाला निवासस्थान ।

सुखायह(वि०)-सुखदाता, आनन्दजनक

सुखी[न्](वि०)-सुखवाला । [उत्तम ।

सुखोत्सव (पु०)-पति, सुख देने वाला

सुगम्(वि०)-अच्छा गन्धक । [वाला ।

सुगत (पु०)-मुक्त । वि०-अच्छी पाल

सुगति (स्त्री०)-अच्छी गति, सद्गति ।

पु०-यय नामक अपि का पुत्र,  
एक ग्रन्थकर्ता का नाम ।

सुगन्धि (स्त्री०)-अच्छी सुशब्द, इष्ट-  
गन्ध, सुगन्ध । वि०-अच्छी

गन्ध वाला ॥ न०-एलुवा ।

सुगम ( वि० )-सुख से प्राप्त होने  
वाला, अनायासप्राप्त ।

सुगह (न०)-अच्छा घर, सुन्दरगृह ।

सुगृहीत ( वि० )-अच्छे प्रकार ग्रहण  
किया हुआ ।

सुगृहीतनामा [न्] (पु०)-प्रातःस्मर-  
णीय नाम वाला मुक्तिद्वारादि,

पवित्रग्रन्थस्वी ज्ञान ।

सुगन्धि(पु०)-बोरक नाम वृक्ष । वि०-  
अच्छी गन्धि वाला ।

सुग्रीव ( पु० )-श्रीकृष्ण का भ्रातृ,  
वानरों का राजा जो श्रीरामचन्द्र

का सखा और वालि का छोटा  
भाई था ।

सुग्ल ( वि० )-हर्षक्षयपुष्प, रत्नीदा ।

सुग्लुः [स्] ( पु० )-सुन्दर, गूलर ।  
वि०-अच्छे नेत्रों वाला । न०-

सुन्दर नेत्र ।

सुचरित्रा(स्त्री०)-साध्वी, पवित्रता स्त्री ।

सुचारु ( वि० )-मनोहर, सुन्दर ।

सुचिर ( अ० )-बहुत देर का समय ।  
वि०-बहुत काल का ।

सुचिरायुः [स्] ( पु० )-देवता । वि०-  
अति पिरकाल तक जीने वाला ।

सुचेलक ( न० )-शोभनवस्त्र, अच्छा  
कपड़ा । [उत्तम ।

सुजन ( पु० )-अच्छा आदमी, साधु,

सुजनता (स्त्री०)—अच्छा जनसमूह ।

सुजल ( न० )—प्रवाह, कमल, अच्छा जल । वि०—अच्छे जल वाला ।

सुजरूप ( पु० )—वाक्यविशेष, अच्छा कथन, सुसंवधन ।

सुत ( पु० )—पुत्र, तनय, बेटा ।

सुतनु ( स्त्री० )—नारी, स्त्री । वि०—शोभनशरीरयुक्त ।

सुतपाः [स्] ( पु० )—सूर्य, सूरज, रौच्य मनु का पुत्र, मुनि, विष्णु । वि०—अच्छे तप वाला ।

सुतराम् ( अ० )—अतिशय, बहुत ही, निश्चित अर्थ का प्रतिपादक ।

सुतदेन ( पु० )—कोयल, कोकिल ।

सुतल ( पु० )—नागलोकभेद, पाताल का उठा खरह, अहालिकावन्धन ।

सुता ( स्त्री० )—कन्या, पुत्री, लड़की ।

सुतात्मज ( पु० )—पौत्र, दीहित्र, धेवता ।

सुतात्मजा ( स्त्री० )—पौत्री, पोती, धेवती, दीहित्री ।

सुविक्र ( पु० )—पर्यट, पितृपावड़ा ।

वि०—अतितीखा । पु०—निम्नवृत्त ।

सुतीक्ष्ण ( पु० )—सर्दिलने का वृक्ष, एक मुनि ।

सुतुङ्ग ( पु० )—नारियल का वृक्ष ।

वि०—अतिशयोक्त, बहुत ऊँचा ।

सुत्रामा [न्] ( पु० )—इन्द्र, देवराज ।

सुत्रया [न्] ( पु० )—यज्ञाङ्गस्नान करने

वाला पुरुष, सोमरस के पीने या निकालने वाला पुरुष ।

सुदण्ड ( पु० )—वेध, घेतका वृक्ष ।

सुदन् [त्] ( वि० )—अच्छे दातों वाला,

शोभनदन्त ।

सुदन्त ( पु० )—नट, नर्तक ।

सुदन्ती (स्त्री०)—दिशाओं की हथिनी, दिग्गजपत्नी ।

सुदर्शन ( न० )—इन्द्र का नगर । पु०—विष्णु का चक्र । सुतेर पर्यंत, जयवृक्ष, मरुत्यविशेष । वि०—अच्छे दर्शन वाला ।

सुदाना [न्] ( पु० )—एक ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का मित्र था; नेप, पर्यंत घेरावत हस्ती, समुद्र, गोपभेद । स्त्री०—एक नदी ।

सुदि ( अ० )—शुक्लपक्ष का वाचक ।

सुदिन ( न० )—अच्छा दिन, शुभदिवस ।

सुदिगाह ( न० )—शुभ दिन, प्रशस्त दिवस, पुण्यवाह ।

सुदीर्घ ( वि० )—अतिविस्तृत, बड़े विस्तार वाला । [बहुत दुःखी ।

सुदुःखित ( वि० )—अत्यन्त पीड़ित,

सुदुःख[ष्क] र ( वि० )—दुःख से करने योग्य, कष्टाचरणीय ।

सुदुस्त्यक्त ( वि० )—कठिनता से त्यागने योग्य ।

सुदूर ( वि० )—बहुत दूर, अति दूरतर ।

सुदृक् [श्] ( वि० )—सुन्दर नेत्रों वाला ।

सुदृढ ( वि० )—बहुत मजबूत, अतिगाढ़ ।

सुद्यम्न ( पु० )—धैर्यस्वत नामक मनु का पुत्र । वि०—श्रेष्ठधनयुक्त ।

सुधन्वा [ न् ] ( पु० )—विश्वकर्मा, एक राखा, अनन्त नामक नाम ।

वि०—अच्छे धनुष वाला ।

सुधर्मा [न्] ( पु० )—देवताओं की सभा,

कुटुम्बी । [देवसभायं मे यह शब्द  
स्त्रीलिङ्ग भो होता है] । वि०-  
अच्छे धर्म वाला ।

सुधा ( स्त्री० )-अमृत, लेपनपदार्थ  
[कलीचूना], आवला, गङ्गा, ईंट,  
इष्टिका, हैड, मधु ।

सुधांशु ( पु० )-चन्द्रमा, चाद, कर्पूर ।

सुधाकर-धार-निधि ( पु० )-पूर्ववत् ।

सुधाजीवी [ नृ ] ( पु० )-लेपक, राज,  
कारीगर ।

सुधावर्षी [ नृ ] ( पु० )-ब्रह्मा ।

सुधासिन्धु ( पु० )-अमृत का समुद्र ।

सुधाहर ( पु० )-गरुड, पक्षिराज ।

सुधिति ( अक्ली० )-परशु, कुहवाड़ा ।

सुधी ( पु० )-परिहृत, विद्वत् । वि०-  
अच्छी बुद्धि वाला ।

सुधीद्रव्य ( पु० )-घन्वन्तरि ।

सुनन्द ( पु० )-श्रीकण्ठ का एक सेवक  
या सखा, राजगृहविशेष । न०-  
चलदेव जी का मूल । वि०-  
अच्छा आनन्द देने वाला ।

सुनन्दा ( स्त्री० )-पार्वती की एक  
सखी, गीरोचना, अजयपत्नी इन्दु-  
मती की सखी वा द्वारपालिका ।

सुनयन ( पु० )-सुग । वि०-सुन्दर  
नेत्र वाला ।

सुनयना ( स्त्री० )-हरिणी, सुनयन्ती,  
नारी । वि०-अच्छे नेत्रा वाली ।

सुनाभ ( पु० )-मैनाकपर्वत, धृत्-  
राष्ट्र का एक पुत्र ।

सुनार ( पु० )-सर्प का अण्डा ।

सुनामी [ श्री ] र ( पु० )-इन्द्र, देवताओं

का राजा ।

सुनिष्ट ( वि० )-अत्यन्ततप्त,  
बहुत तपा वा चमका हुआ ।

सुनीति ( स्त्री० )-अच्छी, नीति,  
ध्रुव की याता ।

सुनीय ( वि० )-धर्म का प्रवर्तक धर्म-  
शीलक । पु०-प्राज्ञ ।

सुनील-क ( पु० )-दाहिम, अनार,  
नीलम नणि, अच्छा-नील वर्ण ।

सुनु [ नी ] ( न० )-जल, पानी ।

सुन्द ( पु० )-दैत्य विशेष, एक खानर ।

सुन्दर ( वि० )-मनोहर, अच्छी आ-  
कृति वाला । पु०-कानदेव, वृक्ष-  
विशेष ।

सुन्दरी ( स्त्री० )-रत्नमांगना, एक देवी ।

सुपक्ष ( पु० )-श्रेष्ठ आन् । वि०-  
अच्छा पका हुआ ।

सुपथ ( पु० )-अच्छा रास्ता, सम्मार्ग ।  
वि०-शोभन पथ वाला ।

सुपर्ण ( पु० )-गरुड, नागक्षेत्र ।  
वि०-अच्छे पंखों वाला ।

सुपर्णकेतु ( पु० )-चिपणु ।

सुपर्णा ( स्त्री० )-पद्मिनी, कमलिनी ।

सुपर्वा [ नृ ] ( पु० )-देवता, वंश, वास,  
तीर, धूआ, पर्व ।

सुपात्र ( न० )-योग्यपुरुष, अच्छा  
वर्त्तन । वि०-शोभन पात्र वाला ।

सुपान ( वि० )-पीने योग्य ।

सुपीत ( न० )-गाजर, गंवार । पु०-  
अच्छा पीतवर्ण । वि०-उमवाला

सुपीया [ नृ ] ( पु० )-अच्छा पीने  
वाला, शोभनपानकर्ता ।

सुपुष्प ( न० )—स्यन, लैंग का पुष्प,  
स्त्रीरज, रुई ।

सुप् ( न० )—इच्छीस विभक्तियों की  
संज्ञा, सप्तमीविभक्तिका बहुवचन ।

सुप्त ( न० )—निद्रा, नींद, शयन ।  
वि०—शयित, सोया हुआ ।

सुप्तघातक ( पु० )—दश, मच्छर ।

सुप्तजन ( पु० )—अर्जुन का समय ।

सुप्ति ( स्त्री० )—निद्रा, शयन, नींद ।

सुप्रतिष्ठा (स्त्री०)—एक वैदिक उन्दो-  
विशेष, अच्छी प्रशंसा । वि०—  
शोभनप्रतिष्ठायुक्त ।

सुप्रतिष्ठित (वि०)—अच्छी प्रशंसावाला

सुप्रतीक ( पु० )—ईशानदिशा का  
हस्ती, महादेव, कामदेव ।

सुप्रप्त (वि०)—अच्छे कान्ति वाला ।

सुप्रभा ( स्त्री० )—अग्नि की जिह्वा-  
विशेष, वाक्यो नामक औषध,  
अच्छी कान्ति ।

सुप्रभात ( न० )—शुभसूचक प्रातः काल,

उस समय पठनीय मागलिकवचन

सुप्रभाता (स्त्री०)—एक नदी, शामन-  
प्रभात वाली रात्रि ।

सुप्रयुक्त ( वि० )—अच्छे प्रकार प्रयोग  
किया हुआ ।

सुप्रयुक्तशर ( पु० ) कतहस्त, शीघ्र-  
तया याण चढाने में निपुण, जल्द  
निशानेवाज़ ।

सुप्रलाप ( पु० )—अवज्ञा वचन ।

सुप्रसन्न ( पु० )—कुवेर । वि०—अच्छी  
प्रसन्नता वाला

सुप्रमरा ( स्त्री० )—प्रचारिणी लता,

फैली हुई घेल ।

सुप्रसाद ( पु० )—शिव, विष्णु, अच्छी  
प्रसन्नता । वि०—सुप्रसन्नतायुक्त ।

सुफल ( पु० )—कनेर का वृक्ष, अनार,  
वदर, मुद्ग । वि० शोभनफलयुक्त ।

न०—अच्छा फल ।

सुफेज ( पु० )—समुद्रभाग ।

सुग्रन्ध ( पु० )—सिंह ।

सुभग ( पु० )—चम्पा, अशोकवृक्ष,  
सुहागा । वि० सुन्दर, प्रिय, अच्छे  
पेशवर्षयुक्त, सुदृश्य ।

सुभगा ( स्त्री० )—हस्ती, तुलसी,  
कस्तूरी, नील दुर्वा, प्रियङ्गु,  
सुवर्णकदली, पतिप्रिया नारी ।

सुभगासुत ( पु० )—पति की प्यारी  
स्त्री का सुत, सौभागिनेय ।

सुभग (पु०)—नारियल का वृक्ष ।

सुभट (पु०)—अच्छा योद्धा, बहादुर ।

सुभद्र ( पु० )—विष्णु, एक राजा ।  
वि० शुभ कल्याणयुक्त ।

सुभद्रा ( स्त्री )—श्यामा लता, श्रीकृष्ण  
की प्रियिनी और अर्जुन की पत्नी ।

सुभद्रेश ( पु० )—अर्जुन ।

सुभाषित (वि०)—अच्छा कहा हुआ ।  
पु०—सुदुर्मेद ।

सुमिष ( वि० )—सुकाल, सुगमता से  
निष्ठा मिलने वाला काल, अच्छा  
समय ।

सुभ ( वि० )—अच्छे जन्म वाला,  
सुजन्मा । स्त्री०—वत्सल भूमि ।

सुभूम ( पु० )—कातिकेय, गुद ।

सुभूति ( पु० )—अपने नाम से प्रसिद्ध

एक पण्डित, बेल का वृक्ष ।  
 वि०--अच्छे ऐश्वर्य वाला ।  
 सुनृय (न०)--बहुत दृढ़, बाढ़, अतिशय  
 सुभु-भू (स्त्री०)--सुन्दर भी वाली  
 स्त्री, नारीमात्र । वि०--सुन्दर  
 भूयुक्त । [ जाकाश ।  
 सुम (न०)--पुष्प, फूल । पु०--चन्द्रमा,  
 सुनति (स्त्री०)--अच्छी बुद्धि, विष्णु-  
 यशःब्राह्मण की पत्नी और कल्कि-  
 देव की माता । वि०--सुन्दर  
 मतिवाला ।  
 सुमदन (पु०)--आमृद्वृक्ष ।  
 सुमधुर (न०)--बहुत नीठा, वचन,  
 शान्तिकर वाक्य । वि०--बहुत नीचे  
 रस वाला । [ वि०--सुगोच ।  
 सुमन (पु०)--गंधून, गेहूं, धतूरा ।  
 सुमनः [स्त्री] (न०)--पुष्प, कुतुम्ब, फूल,  
 सुन्दर मन । वि०--गोभनपित्तयुक्त ।  
 सुमनसः [स्त्री] (पु०)--देवता, विष्णु,  
 पण्डित, गोधूम, मिश्रवृक्ष ।  
 वि०--अच्छे पित्त वाला । स्त्री०-  
 सुपलता, मालती, शतपत्री ।  
 सुमन्त्र (पु०)--कल्किदेव का बड़ा  
 भाई, दशरथराज का मेन्नी  
 और सारथि ।  
 सुमित्र (पु०)--बलवाक्युंशीय राज्य  
 नामक राजा का पुत्र, २४ महत्  
 पिताओं में से एक ।  
 सुमित्रा (स्त्री०)--राजा दशरथ की  
 पत्नी श्री महामन और शत्रुघ्न की  
 माता थी ।  
 सुमुख (पु०)--गणेश, नागभेद, गरुड

का पुत्र, पण्डित, शाकभेद । न०-  
 अच्छा मुख, नखतविशेष ।  
 वि०--सुन्दर मुख वाला ।  
 सुमुखा-खी (स्त्री०)--सुन्दर मुख  
 वाली स्त्री, सुन्दर नारी ।  
 सुमेखल (पु०)--मुञ्ज का वृक्ष । वि०  
 अच्छी मेखला वाला ।  
 सुमेधाः [स्त्री] (स्त्री०)--बोतिभनती  
 नामी खता । वि०--सद्बुद्धियुक्त ।  
 सुमेह (पु०)--स्वर्ण का एक पयंत,  
 लप करने की माला के गिर का  
 बड़ा दाना ।  
 सुम्म-स्त (पु०)--एक देश का नाम ।  
 सुपामुन (पु०)--विष्णु, एक पयंत,  
 वत्सराज, मेघ, एक मन्दल ।  
 सुयोधन (पु०)--धृतराष्ट्र का पुत्र,  
 दुर्योधनराज । [ नृप्यं, स्वर ।  
 सुर (पु०)--देवता, विद्वान्, पण्डित,  
 सुरक्त (वि०)--अच्छे अनुराग वाला,  
 अत्यन्त आसक्त, बहुत क्षमापुत्र ।  
 सुरगुह (पु०)--वृक्षपति, देवापायं ।  
 सुरङ्ग (न०)--दिङ्गुल, शिंकरक, पतङ्ग ।  
 पु०--नागरङ्ग, गतभेद ।  
 सुर[क]ङ्गा (स्त्री०)--सुरंग, गुहा, सैध ।  
 सुरज्येष्ठ (पु०)--ब्रह्मा, मनापति ।  
 सुरत (न०)--मैथुन, स्त्रीसंग, क्रीडा-  
 विशेष । वि०--क्रीडायुक्त, दयालु ।  
 सुरता (स्त्री०)--देवसमूह, देवत्व,  
 अक्षरोभेद । [वि०--अच्छे रस वाला  
 रूप (पु०)--चन्द्रवंशीय एक राजा ।  
 सुदाक (पु०)--देवदान नामक वृक्ष ।  
 सुरदेपिका (स्त्री०)--स्वर्णगुहा, देवतदी ।

सुरद्रुम (पु०)-देवदारु, कल्पवृक्षादि ।

सुरद्विद् [ प ] ( पु० )-असुर, दैत्य ।

वि०-देवताओं से द्वेष करने वाला ।

सुरद्विप ( पु० )-ऐरावत हस्ती ।

सुरधनुस् [ स् ] ( न० )-इन्द्र का धनुष ।

सुरधूप ( पु० )-राल ।

सुरनदी ( स्त्री० )-गङ्गा ।

सुरपति(पु०)-इन्द्र, देवताओं का पति ।

सुरपथ ( न० )-आकाश, आसमान ।

सुरपादप ( पु० )-कल्पवृक्ष ।

सुरपुरी ( स्त्री० )-अमरावती ।

सुरति ( न० )-स्वर्ण, सोना, सुन्दर,

अच्छीगन्ध । पु०-सुगन्धि, चरूपक,

गूगल, राल, घसन्त ऋतु, चैत्र का

महीना, कदम्बवृक्ष, धीर । स्त्री०-

शिवजटा, तुलसी, गी, एक देवी,

सुरा, पृथ्वी । वि०-मनोहर, धीर,

ख्यात, प्रसिद्ध ।

सुरर्षि ( पु० )-नारद, देवर्षि ।

सुरलोक(पु०)-स्वर्ग, देवताओं का लोक

सुरवत्सं [ न् ] ( न० )-आकाश ।

सुरवल्ली ( स्त्री० )-तुलसी ।

सुरवेरी [ न् ] ( पु० )-असुर, दैत्य, राक्षस

सुरमया [ न् ] ( न० )-देवगृह, स्वर्ग ।

सुरमरि ( स्त्री० )-गङ्गा ।

सुरसा(स्त्री०)-तुलसी, सर्पों की माता ।

सुरसुन्दरी ( स्त्री० )-दुर्गा, अप्सरा,

योगिनीविशेष, देवस्त्री ।

सुरा ( स्त्री० )-मद्य, शराय, मदिरा ।

सुराः [ रे ] ( पु० )-धनीपुरुष, धनवान्-

सुराङ्गना(स्त्री०)-देवताओं की स्त्री,

अप्सरा ।

सुराचार्य (पु०)-बृहस्पति ।

सुराज्जा [ न् ] ( पु० )-अच्छा राजा ।

वि०-अच्छे राजा वाला देश ।

सुराजीवी [ न् ] ( पु० )-मद्यपनिक्,

शीरिहक, कलाल ।

सुराप(वि०)-मद्य पीने वाला शराबी ।

सुरापना ( स्त्री० )-गङ्गा ।

सुरापान-न ( न० )-मद्यपान, शराय

का पीना, अव्यवस्था, चटनी ।

सुरारि (पु०)-दैत्य, असुर ।

सुरार्ह ( न० )-देवताओं के योग्य

चन्दन, हरिवन्दन । [सुमेरु पर्वत ।

सुरालय ( पु० )-देवमन्दिर, स्वर्ग,

सुराष्ट्र(पु०)-सुरट नामक देशविशेष,

जो भारतवर्ष के पश्चिम में है ।

सुरि [ रे ] ( वि० )-अच्छे धन वाला ।

सुरूप ( न० )-अच्छा रूप, तूल, रुई ।

वि०-अच्छे रूपवाला ।

सुरेज्य (पु०)-बृहस्पति ।

सुरेज्या ( स्त्री० )-तुलसी ।

सुरेन्द्र (पु०)-इन्द्र, लोकपाल ।

सुरेश्वर, पु०)-शिव, महादेव, इन्द्र ।

सुरेश्वरी ( स्त्री० )-स्वर्गगङ्गा ।

सुरोत्तम (पु०)-सूर्य, देवश्रेष्ठ ।

सुरोद (पु०)-मदिरा का समुद्र ।

सुलभ (वि०)-अनायासजन्य, सहज

से प्राप्त होने योग्य । [वाला ।

सुलोचन(पु०)-भ्रम । वि०-अच्छे नेत्रों

सुवचन(न०)-अच्छावचन, शोभनोक्ति ।

सुवधाः [ स् ] ( वि० )-अच्छा धोलने

वाला, धाम्नी ।

सुवध (पु०)-अग्नि, मूर्ध, चन्द्रमा ।

सुवर्चाः [सु] (वि०)-शुभतेज वाक्ता,  
अतितेजस्वी ।

सुवर्णं (न०)-स्वर्णं, सोना, हरिचन्दन,  
नागकेसर, धन । अस्त्री०-१६  
मासे स्वर्ण का परिमाण । पु०-  
स्वर्णकर्म, एक पक्ष, चतुरा, मूल ।  
वि०-अच्छे रूप वा अक्षर वाला ।

सुवर्णकार (पु०)-स्वर्णकार, सुनार ।  
सुवर्णाः [न्] (स्त्री०)-अच्छी अवस्था  
वाली स्त्री, प्रीड़ा, सुवर्ति स्त्री ।

सुवह (वि०)-सुख से ले जाने योग्य,  
सुखवाह । [ शिव ।

सुवास (पु०)-अच्छी नन्ध, उत्तमनिवास,  
सुवासिनी (स्त्री०)-विरकाल तक  
विता के पर में वास करने वाली  
स्त्री, विरिटी, द्वितीयवयस्क  
नारी । [ का नारी ।

सुविद्ध (पु०)-परिहृत । स्त्री०-गुणयु-  
सुविद्ध (पु०)-गुणाढ्य स्त्री के पाने  
वाला अर्थात् राजा, स्वपति ।

सुविद्वज (वि०)-कुटुम्ब, सुपुत्रेता ।  
सुविद्वज (न०)-अन्तःपुर, व्यवसाय ।  
सुविनीता (स्त्री०)-सुशीला नाय ।  
सुवीज (पु०)-ससखस, शिव । वि०-  
अच्छे वीज वाला । [ पराक्रम ।

सुवीर्य (न०)-वदरीकृत, अच्छा  
मुष्ट (पु०)-शूरण, त्रिमीरन्द । वि०-  
अच्छे चरित्र वाला, अच्छा गीत ।

सुवेष्ट (पु०)-त्रिकूट पर्वत । वि०-  
शान्त, अच्छी मर्यादा वाला, प्रवृत्त ।  
सुवे [ प ] थ (पु०)-सफेद गन्ना ।  
वि०-अच्छे देश वाला ।

सुवेगी [न्] (वि०)-सुन्दर वेश्यायुक्त ।  
सुवती (स्त्री०)-सुख से दृढ़ने योग्य  
गो, अच्छे वृत्त वाली स्त्री ।

सुशर्मा [न्] (पु०)-एक राजा, एक  
निन्दित ब्राह्मण । वि०-अच्छे  
सुख वाला । [ अच्छी छोटी बाला

सुशिक्ष (पु०)-अग्नि, आग । वि०-  
सुशिक्षा (स्त्री०)-मयूर की छोटी ।  
सुशीत (न०)-पीतचन्दन । वि०-  
शीतलस्पर्शयुक्त, बहुत ठंडा ।

सुशील (पु०)-बोल नामक राजा ।  
वि०-अच्छे स्वभाव या चरित  
वाला । [ वि०-सुन्दर स्त्रीयुक्त ।

सुश्रीक (पु०)-सहस्रकी का वृक्ष ।  
सुश्रुत (पु०)-विश्वामित्रमुनि का पुत्र  
जो विकित्साशास्त्र का कर्ता है,  
उसका पुकराया प्र-प । वि०-अच्छे  
प्रकार सुना हुआ । [ मुसयुक्त ।

सुशिलपट (वि०) सम्यक्तया निला हुआ,  
सुपम (पु०)-सुन्दर, शोभन, दरावर ।  
सुपमा (स्त्री०)-उड़ी शोभा ।

सुविर (न०)-छिद्र, मृदा, बिल ।  
वि०-छिद्रयुक्त ।

सुपीम (पु०)-चन्द्रकान्तमणि, एक  
वर्ण । वि०-मज्ज, शीतगुणी ।

सुपुट (न०)-वह अवस्थाविशेष  
जिस में मनुष्य के मनोरचित  
मय सहस्र विहत्वात्मक भाव  
दूर हो जाते हैं । वि०-सुपुटियुक्त ।

सुपुटि (स्त्री०)-नादनिद्रा, सुनिद्रा,  
वह अवस्था जिस को प्राप्ति  
हुना मनुष्य न किसी वस्तु की



कामना करता और न स्वप्न देखता है ।

सुपुन्रा (स्त्री०)—पृष्ठ की लम्बी हड्डी के बाहर इडा और पिंगला के मध्य की नाड़ी ।

सुपेण (पुं०)—विष्णु, वैत, लङ्कानिवासी एक वैद्य, चानरविशेष, एक, राजा, नागभेद, वसुदेवपुत्रविशेष ।  
सुष्ठु (अ०)—प्रथस्त, सत्य, वहुत ठीक, अतिशय ।

सुप्न ( न० )—रज्जु, रस्सी, डोर ।

सुसंस्कृत ( वि० )—घृतादि द्रव्य से अच्छे प्रकार परिपक्व [व्यञ्जनादि] उत्तम संस्कार वाला ।

सुसम्पत्-द्र ( स्त्री० )—अच्छी दौलत, सौभाग्य । वि०—अच्छी सम्पत्ति वाला । [ सुसम्पत् ।

सुसह ( वि० )—सुख से सहने योग्य, सुस्थ (वि०)—सुख से ठहरा हुआ, नीरोन सुस्थता (स्त्री०)—आरोग्य, रोगराहित्य, तन्दुरुस्ती । [हुआ, स्थिरतर ।

सुस्थिर ( वि० )—अच्छे प्रकार ठहरा सुस्नात (वि०)—मांगलिक द्रव्यों से स्नात किया हुआ, अच्छे प्रकार नहाया हुआ ।

सुहित (वि०)—किया हुआ, विहित, वस्तु

सुहिता ( स्त्री० )—अग्निजिह्वा ।

सुहृत्-द्र (पुं०)—सखा, मित्र, दोस्त, मित्र । [वाला, मयस्तचित ।

सुहृदय ( वि० )—अच्छे अन्तःकरण

सू ( स्त्री० )—सन्तान, प्रसव, भीलाद, पैरना, छेप ।

सूक (पुं०)—वायु, तीर, चतपल, पत्थर ।

सूकर (पुं०)—सूअर, कुम्भकार, मृगभेद ।

सूक्त ( वि० )—सुष्ठु कथित, मन्त्र-समूह यथा—पुरुषसूक्त, अग्नि-सूक्त इत्यादि ।

सूक्ष्म ( न० )—छल, कपट, कैतव्य, अध्यात्म, अलङ्कारभेद । पुं०—फलक का वृक्ष । वि०—अल्प, अणु, चोड़ा । [कुशाग्रमुष्टि, विज्ञ ।

सूक्ष्मदर्शी [न] (वि०)—अतिमुष्टिमान्, सूक्ष्मभूत ( न० )—अपस्त्रीकृत आकाशादि पांच भूत ।

सूक्ष्मैला (स्त्री०)—छोटी इलायची ।

सूच (पुं०)—चुगली करना, वैर करना ।

सूचक ( वि० )—पिशुन, चुगलखोर, निन्दक, सूचना देने वाला । पुं०—बीबने का द्रव्य, बिलाव, फाफ, मुगां, पिशाच, फयक, सिद्ध, सूत्रधार, मुद्ग । [ गन्धन ।

सूचन (न०)—घ्रापन, जलछाना, मारना,

सूचना (स्त्री०)—सूअर देना, जलछाना ।

सूचि-ची (स्त्री०)—गुई, धिसा, नोक, जंत्यभेद, ठपूवविशेष, केतकी का पुष्प ।

सूचिक ( पुं० )—कपड़ा सीने वाला अर्थात् दरजी, हस्ती की शृंह ।

सूचिका (स्त्री०)—सुई, हस्तिगुण्ड ।

सूचित ( वि० )—कहा हुआ, जतलाया हुआ, योषित ।

सूचियदम (पुं०)—नकुल, भूषा ।

सूयोमुख ( न० )—हीरा, एक नरक ।

पुं०—संज्ञेद कुशा ।

सूत (पु०)—सारथि, सूर्य, क्षत्रिय-  
वीर्य से ब्राह्मणी में उत्पन्न वर्णस-  
कर, विश्वकर्मा, सोमहर्षण जानक  
पुराणवक्ता, पारा । वि०—प्रेरित,  
भेजा हुआ । [ग्रहण । पु०—पारा ।  
सूतक (न०)—जननाशीघ्र, मरणाशीघ्र,  
सूति (स्त्री०)—जनन, पैदा होना,  
सौभाग्य निकालने की भूति,  
सीघ्र, सन्तान ।

सूतिका (स्त्री०)—नवप्रसूता स्त्री ।  
सूतिकागारगृह (न०)—प्रसवगृह,  
बालक पैदा होने का घर ।

सूतान (वि०)—चतुर, कार्यकुशल ।  
न०—भरखे प्रकार उठना ।

सूत्या (स्त्री०)—श्व का स्थलवि-  
शेष, सोमरस के पान ।

सूत्याशीघ्र (न०)—तक, जन्म के  
निमित्त से उत्पन्न अपवित्रता,  
जननाशीघ्र ।

सूत्र (१०३०)—लपेटना, गूँथना ।

सूत्र (न०)—बन्ध चुनने का साधन,  
धागा, सूत, यज्ञसूत्र, व्याख्या,  
शास्त्र के अभिप्राय की संक्षिप्त  
रूप से दिखलाने का नियम ।  
ग्रन्थ, प्रस्ताव, कारण ।

सूत्रकण्ठ (पु०)—ब्राह्मण, कपोत, मनी-  
ला नामक पक्षी ।

सूत्रधार (पु०)—भाटक के प्रसंग को  
समय २ पर दिखलाने वाला मुख्य  
नट, इन्द्र, शिल्पिभेद ।

सूत्रपुट्य (पु०)—कापांस, कपास ।

सूत्रपन्त्र (न०)—सूत्रवेष्टन काष्ठ, धरखा ।

सूद (पु०)—सूपकार, रसोइया, व्यंजन ।

सूदन (न०)—स्वीकार करना, हिंसन,  
मारना, फेंकना । [का स्थान ।

सूदशाला (स्त्री०)—पाकशाला, रसोई  
सून (न०)—पुष्प, प्रसव, उत्पन्न होना ।  
वि०—प्रफुल्लित, खिला हुआ,  
उत्पन्न हुआ ।

सूना (स्त्री०)—प्राणियों के घषका स्थान,  
मांस का घेचना, हस्तिशुण्ड ।

सूनु (पु०)—पुत्र, छोटा भ्राता, सूर्य,  
अर्क वृक्ष । स्त्री०—लड़की, कन्या  
[स्त्रीलिंग में 'सूनु' भी होता है ।

सूनृत (न०)—सत्य और प्रियवचन,  
मङ्गल । वि० तद्युक्त ।

सून्नद (वि०)—उन्मत्त, यहुत पागल ।

सूप (पु०)—दाल, रसोई, व्यञ्जनविशेष ।

सूपकार (पु०)—पाककर्ता, रसोइया ।

सूर (पु०)—सूर्य, अर्कवृक्ष, पविष्ठ, दाना ।

सू [शूर] (पु०)—जिमीकन्द ।

सूरत (वि०)—दया करने वाला,  
रूपालु, मेहरबान ।

सूरसूत (पु०)—अरुण, सूर्यसारथि ।

सूरि (पु०)—पविष्ठ, विद्वान्, सूर्य,  
आक का पेड़, एक यादव ।

सूरी [न] (पु०)—विद्वान्, पविष्ठ ।

सूरी (स्त्री०)—बड़ी सरसों, सूर्यभायां,  
कुन्ती, विदुषी स्त्री ।

सूर्यखा (स्त्री०)—सूर्यणता । [राक्षस ।

सूर्य (पु०)—सूरज, आक का पेड़, एक

श्रृंगान्त (पु०)—विस्लीर, स्फटिक,

भातशी शीथा, मणिविशेष ।

सूर्यकुल (पु०)—दिन, दिवस ।

सूर्यग्रहण (न०)—राहु से सूर्य का ग्रहा जाना, राहु में पृथिवी की छाया के पड़ने से सूर्य का दबाया जाना।  
सूर्यज (पु०)—सूर्य का पुत्र शनि, यम, वैवस्वतमनु, सुग्रीव । [पुत्र-तनय-सुत शब्द लगाने से भी यही अर्थ होता है] ।

सूर्यजा-पुत्री (स्त्री०)—यमुना नदी ।  
सूर्यमण्डल (न०)—सूर्य का गोला, परितः सूर्यवंश (पु०)—सूर्य का खानदान, एक प्रसिद्ध राजवंश जिसमें इक्ष्वाकु आदि राजा हुए हैं ।

सूर्या (स्त्री०)—सूर्यपत्नी, कुन्ती ।  
सूर्यालोक (पु०)—सूर्य का प्रकाश, धूप, रौद्र, तेज ।

सूर्यावर्ता (स्त्री०)—हुनहुलनामक घास ।  
सूर्यास्त (न०)—सूर्य का छिपना ।  
सूर्याष्ट (पु०)—वह अतिथि जो साय-काल का घर पर आया हो ।  
सूर्यादय (पु०)—सूर्य का उदय होना, घबेरा, मातःकाल ।

सु (१ प०)—जाना, गमन करना ।  
सुक् [ज्] (पु०)—सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा ।  
सुक् [श्] (न०)—होठों के समीप का भाग, गलछू ।  
सुक् [श्चि] जी (स्त्री०)—पूर्ववत् ।  
सुगल (पु०)—दृग्गल ।  
सुम् (४ भा०)—दयागना, देना ।  
सुनि-णी (स्त्री०)—अकृश, अरुच ।  
सुनि [नी] भा (स्त्री०)—लाला, छारा ।  
सुन (वि०)—गत, गया हुआ ।  
सुति (स्त्री०)—पति, जाना, गर्व ।

सत्वर (वि०)—गमनकर्ता, जानेवाला ।  
सत्वरी (स्त्री०)—माता, जानेवाली ।  
सदर (पु०)—सर्प, साँप । [स्त्री०—नदी] ।  
सदाकु (पु०)—वायु, अग्नि, वज्र, मृग ।  
सप् (१ प०)—जाना, गमन करना ।  
सपाटिका (स्त्री०)—चञ्चु, घोष ।  
सप्र (पु०)—चन्द्रमा, चाँद ।  
समर (पु०)—पशुविशेष, एक प्रकार का हरिण । वि०—जाने वाला ।  
सष्ट (वि०)—निर्मित, बनाया हुआ, युक्त, त्यक्त, निश्चित, मूर्धित, सजा हुआ । [निर्माण, स्वभाव] ।  
सष्टि (स्त्री०)—सृष्टि की रचना, सेक (पु०)—सौंका, जलादि का छिड़कना ।  
सेकपात्र (न०)—जल देने का पात्र अर्थात् सेल, मशक, बोका ।  
सेक्ता [तृ १] (वि०)—सेचक, सौंचने वाला, जल देने वाला । पु०—पति, स्वामी, खाविंद ।  
सेचन (न०)—सेक ।  
सेचार्ता (स्त्री०)—सौंचने का वर्तन, घालटी ।  
सेतिका (स्त्री०)—अयोध्यानगरी ।  
सेतु (पु०)—पुल, वरुणवत्, सेत की क्यारी जिनमें पानी रोका जाता है, तन्त्र में प्रणवस्वरूप मन्त्र ।  
सेत्र (न०)—घेड़ी, हथकड़ी, निगड़ ।  
सेता (स्त्री०)—सैन्य, समूह, फौज ।  
सेताङ्ग (न०)—हाथी घोड़े रथ पैदल आदि का समूह । [जानेवाला] ।  
सेतावर (वि०)—सेतागामी, सेता में सेतानी-पति (पु०)—कात्तिकेप, सेता-

पति, प्रीति का अफसर, कप्तान ।  
 सेनामुख ( न० )-सेना का अग्रभाग,  
 घोड़ा आदि की एक संख्या ।  
 सेनारत ( पु० )-सैनिक, सिपाही ।  
 सेमन्ती (स्त्री०)-सेवती नामक पुष्पलता  
 सेव (न०)-इसी नाम से प्रसिद्ध फल ।  
 सेवक ( वि० )-नीकर, अनुचर, भूष्य,  
 दास । पु०-सेनेवाला, दरजी ।  
 सेवधि=श्रेयधि ।  
 सेवन ( न० )-सिलाई, कपड़े आदि  
 का सीप, सीगना, खापना,  
 धुना । [अवयवविशेष ।  
 सेवनी (स्त्री०)-ई, सूची, शरीर का  
 सेवा (स्त्री०)-शुभ्रा, टहल, नीकरी,  
 सीगना, भजन, गारापना, आस-  
 रा लेना ।  
 सेवित ( वि० )-पूजित, सेवा किया  
 हुआ, भोगा हुआ आसरा  
 लिया हुआ ।  
 सेव्य ( वि० )-सेवा करने लायक, पूज-  
 नीय । पु०-अश्वत्थ का वृक्ष ।  
 न०-वीरणमूल, लज्जीर, लस  
 सैह ( वि० )-सिंह का, सिंहसन्मय ।  
 सैहिक-कंप ( पु० )-रातु नामक ग्रह  
 सेकत ( वि० )-विक्रतामय, रेतोला ।  
 सिद्धान्तिक ( वि० )-सिद्धान्त का ज्ञानने  
 वाला । [इति आदि पदार्थ ।  
 सेनिक ( पु० )-फौजी, सेना में प्राप्त  
 सैन्धव ( न० )-संध्या नामक । पु०-  
 घोड़ा, भरघो घोड़ा ।  
 सेन्य ( पु० )-सेना में मिला हुआ  
 हाथी घोड़ा आदि, फौजी । न०-

सेना का समूह ।  
 सेरिम ( पु० )-महिष, भैंसा, स्वर्ग ।  
 सेवाल ( न० )-शैवाल ।  
 सोः (स्त्री०)-पार्वती ।  
 सोढ ( वि० )-शान्त, समाशील, सहने  
 वाला, सहारा गया । [समायुक्त ।  
 सोडा [ दृ ] ( वि० )-सहारे वाला,  
 सोत्कण्ठ ( वि० )-बड़ी इच्छा वाला,  
 उत्कण्ठायुक्त । [ से हसना ।  
 सोरवास ( न० )-प्रियचन । पु०-ऊँचे स्वर ।  
 सोदय ( वि० )-वृद्धियुक्त, प्रकटित,  
 उदयसहित ।  
 सोदर ( पु० )-भगा भाई, सहोदर ।  
 सोदरा ( स्त्री० )-सगी बहिन ।  
 सोमनाद ( वि० )-सोमनादयुक्त, नशेवाला  
 सोमप्रव ( पु० )-रातु से प्रसव चन्द्रना  
 वा सूपे, विषहृषस्त पुरुष ।  
 सोपाधि ( वि० )-उपाधियुक्त, प्रति-  
 लाभ की इच्छा से किया दानादि ।  
 सोपान ( न० )-सीढ़ी, पीढ़ी, आरोहण ।  
 सोम ( पु० )-चन्द्रना, कपूर, यामर,  
 यमराज, पवन, कुबेर, वसुविशेष,  
 शिव, जल, सोमलता, किरण,  
 - अमृत । न०-स्वर्ग, काञ्ची ।  
 सोमलय ( पु० )-अमावस्या ।  
 सोमगर्भ ( पु० )-विष्णु ।  
 सोमज ( न० )-दुग्ध । पु०-दुग्ध । वि०-  
 चन्द्रमा से उत्पन्न होने वाला ।  
 सोमनेत्र ( न० )-प्रभाष नामक तीर्थ ।  
 सोमपायाः ( पु० )-अमृत पीने वाला  
 पुरुष ।  
 सोमपीती [ त्र ] ( न० )-पृथ्वी ।

सोमवन्धु (पु०)--कुमुद, युध, मूरज ।  
 सोमयाग ( पु० )--एक यज्ञ जो तीन  
 धर्म में पूर्ण होता है और जिस  
 में सोमरस पिया जाता है ।

सोमयाजी[न] (पु०)--सोम नामक यज्ञ  
 करने वाला पुरुष ।

सोमरोग (पु०)--स्त्रीरोगविशेष जिसमें  
 मूत्र अधिक होता है [एक खेल ।

सोमलता(स्त्री०)--अपने जान से प्रसिद्ध

सोमवार (पु०)--चन्द्रवार ।

सोमविक्रयी [न] (पु०)--सोमरस के  
 बेचने वाला पुरुष । [धन्य ।

सोमसिद्धान्त (पु०)--एक ज्योतिष का

सोमसुत (वि०)--सोमरस का निका-  
 लने वाला पुरुष ।

सोमसुता (स्त्री०)--मर्मदा नदी ।

सोमसूत्र ( न० )--शिवलिङ्ग से जल  
 निकलने का स्थान, जलहरी ।

सोमलुपटः-एठनम्=स्तुतिपूर्वक दुवाँद,  
 साक्षेप घचन, योली मारना ।

सौकरिक (पु०)--उपाध, शिकारी ।

सौकर्म ( न० )--अनायाससाध्य-कार्य,  
 बिना परिश्रम के होने वाला काम

सौख्यसुप्तिक ( वि० )--सुख से सोना  
 पड़ने वाला, स्तुतिपाठक, वन्दे ।

सौख्य ( न० )--सुख, आनन्द, आराम

सौगत (पु०)--बौद्धविशेष, गृन्थवादी ।

सौगन्धिक(न०)--सुगन्धित कमल-पत्र ।

सौषिक(पु०)--मूषीकमोंपत्रीवी, रत्री ।

सौजन्य ( न० )--सुजनता, सुजनता,

मलमली । [ पादित कर्पविशेष ।

सौध ( पु० )--ब्राह्मण, मूढ़ारा प्रति-

सौत्रामणी (स्त्री०) एक यज्ञ जिस का  
 देवता इन्द्र है । [ विद्युत् ।

सौदाम [नि] नी ( स्त्री० )--विजली,

सौध (अस्त्री०)--राजमहल ।

सौलिक (पु०)--नांसविक्रयी, उपाध,  
 कसाई । [ खूबसूरती ।

सौन्दर्य ( न० )--सुन्दरता, मनोहरता,

सौपर्ण (न०)--नरकत मणि, पत्ता ।

सौपर्ण्य(पु०)--गहड़ ।

सौप्तिक ( न० )--रात्रिसुप्त, निशारण,  
 महाभारतीय एक पर्व । [मन्यु ।

सौमद्र-द्रि(पु०)--सुमद्रा का पुत्र अभि-

सौभाग्य ( न० )--सुभाग, सिद्धर,  
 अच्छा प्रारब्ध । पु०--विष्कम्भा-

न्तर्गत एक रोग ।

सौभिक(पु०)--द्रौजालिक, बालीगर ।

सौमनस्य(न०)--चित्त की सन्तुष्टता,  
 आदुर्मे, पेशहप्रदान के पश्चात् ब्रा-

ह्मणों हस्त में पुष्प देने का मन्त्र ।

सौमित्रत्रि(पु०)--लक्ष्मण ।

सौम्य(पु०)--युधयह । वि०--मनोज्ञ,  
 प्रतारहित ।

सुर(पु०)--शनैश्चर, यन् ।

सौरभ(न०)--मेथर, अच्छा गन्ध ।

सौरभ्य(पु०)--वृष, बैल ।

सौरभ्यी(स्त्री०)--नी, अप्सरोभेद ।

सौरमास(पु०)--सूर्य की एक राशि पर  
 भोगने तक का काल ।

सौराष्ट्र ( पु० )--सूरत नामक देश ।  
 न०--एक विष ।

सौरि(पु०)--शनैश्चर ।

सौल्यिक( पु० )--तांघे के पात्र बनाने ।

वाला, तामुकुट्टक, कंथेर ।

शौचस्तिक ( पु० )-नल्याण करने में निपुण, पुरोहित ।

शौचिदल ( पु० )-अन्तःपुर का रत्न, ज्ञानानयन का रखवारा । दिश ।

शौचीर ( न० )-वेर, खोतीपुन । पु०-पूक शौचिव ( न० )-सुन्दर होना, अच्छापन, आतिथ्य, प्रशसनत्व ।

शौचालिक ( वि० )-‘आपने अच्छे प्रकार स्नान कर लिया’ ऐसा पूछने वाला, सुस्नातपण्डक ।

शौहादं ( न० )-हृदय का अच्छापन, निम्रता, प्रियता । पु०-सुहृद् का पुत्र शौहित्य ( न० )-तृप्ति का होना, प्रसन्नता । [ कूद कर जाना ।

स्कन्द ( १ आ० )-उड़ल कर चलना, रुन्द ( पु० )-शिवपुत्र, कातिक्य ।

स्कन्दन ( न० )-रेचन, बहना, मनन, सूखना । स्कन्ध ( पु० )-शंस, कंधा, प्रकारेण, गुहा, तना, समूह, संग्राम, शरीर, छन्दोभिद, योद्धा के पितामादि पाँच, ग्रन्थ का भाग, मार्ग । [ ज्ञानी ।

स्कन्धाधार ( पु० )-शिपिर, सैन्यस्थिति, स्कन्ध ( वि० )-कलित, गिरा हुआ, खरिब, शुष्क, गया हुआ । न०-बहना ।

स्कम्प ( २ उ० )-छोट करना, प्रतिपाद । स्कान्द ( न० )-स्कन्द नामक पुत्र ।

स्फट ( १ आ० )-फाड़ना, विदीर्ण करना । स्फटन ( न० )-फाड़ना, फ्लेश देना, हिंसन ।

स्फल ( १ प० )-चलना, गमन करना । स्फलन ( न० )-चलना, गिरना, रंगना, उच्चारण, छोट करना ।

स्फलित ( न० )-कपट युद्धादि द्वारा मर्यादा से गिरना । वि०-चलित, गिरा हुआ । स्तन ( १० उ० )-मेघ का गजना, नेवशब्द

होना । [ पिस्तान, पचोर, नूचक । स्तन ( पु० )-दरियों का संगमिधर, कुच, स्तनन ( न० )-मेघ का शब्द, बादल का गजना ।

स्तनध्व ( पु० )-छोटा वालन, अतिथि । स्तनभर ( पु० )-स्थूल स्तनों का मार ।

स्तनपिल ( पु० )-मेघ, विजला, नागरमाथा, मृत्तु, रंग । स्तनान्तर ( न० )-छाती, हृदय ।

स्तनामोघ ( पु० )-कुचों का परिपूर्णता । स्तनित ( न० )-मेघ का शब्द, हृदयों का आवाज, शब्दभाज ।

स्तन्य ( न० )-दुग्ध, दध । [ जड़ीभूत । स्तन्य ( वि० )-स्तम्भित, रोकागुभा, स्तन्यरोना [ न ] ( पु० )-गूकर, नूभर । वि०-पल्ले वालों वाला ।

स्तम् ( १ आ० )-बड़ होना, रोकना । स्तम्भ ( पु० )-गुलन, गुच्छा, तृण, यज्ञा ।

स्तम्भेर ( पु० )-हस्ती, हाथी । स्तम्भ ( पु० )-स्थूणा, खम्भा, पया ।

स्तम्भन ( न० )-रोकना, जड़ीभूत होना, कामदेव का एक पाण ।

स्तम्भ ( पु० )-स्तुति, प्रशंसा, बड़ाई । स्तम्भक ( पु० )-गुच्छा, गुलन ।

स्ताम्भक ( पु० )-प्रथमक, सुशानदी । स्तिमित ( वि० )-तर, भीछा, चतुष्ट ।

न०-तरी, नमी, गीछापन । स्तु ( २ उ० )-तारीफ करना, बड़ावादेना ।

स्तुति ( वि० )-स्तुति किया हुआ, कीर्ति । स्तुति ( स्त्री० )-प्रशंसा, तारीफ, बड़ाई ।

स्तुतिपादक ( पु० )-धारण, भाट । स्तुत्य ( वि० )-प्रशङ्नीय, बड़ाई योग्य ।

स्तुत् ( १ प० )-तारीफ करना । १ आ०-रोकना, दयाना ।

स्तुन्म ( ५, ८ प० )-रोकना चेतना-रहित करना ।

स्तूप ( ४५०, १०८० )-ढेर लगाना ।  
 स्तूप ( पु० )-ढेर, भीमार, धिता,  
 शक्ति, बौद्धमन्दिरविशेष ।  
 स्तु ( ५३० )-फैलाना, ढकना, मारना ।  
 ५ प०-प्रसज होना ।  
 स्तेन ( १०५० )-चुराना, लूटना, दूरकरना ।  
 स्तेन ( पु० )-चौर, लुटेरा । न०-चोरी ।  
 स्तेम ( पु० )-तरी, नभी ।  
 स्तीय ( न० )-चोरी, लूट, चुराई वस्तु ।  
 स्तेयी [ न ] ( पु० )-लुटेरा, चुराकर ।  
 स्तोक ( वि० )-घोड़ा, छोटा, चातक ।  
 स्तोकन् ( अ० )-कुछ २, अल्पशः ।  
 स्तोत्र ( न० )-तारीफ, यहाँ, स्तव ।  
 स्तोत्र ( पु० )-स्तम्भन, रोकना, गल-  
 स्वर को पूरा करने के लिये निर-  
 थक शब्द ।  
 स्तोम ( पु० )-प्रशंसा, मस्तक । न०-  
 धस्य, लोहदण्ड, शिर, धन, अनाज ।  
 स्तयेन ( पु० )-अमृत, सुधा, चौर ।  
 स्तये ( १८० )-ढेर लगाना, आवाज  
 करना । [ भर्त्सना ।  
 स्त्री ( स्त्री० )-योपित, नारी, औरत,  
 स्त्रीधरित्र-त ( न० )-औरतों का स्व-  
 भाव वा कृत्य ।  
 स्त्रीचिन्ह ( न० )-योनि, भय ।  
 स्त्रीजाति ( स्त्री० )-नारीसमूह ।  
 स्त्रीजित ( पु० )-जोरू का गुलाम,  
 भार्यापथ ।  
 स्त्रीपन ( न० )-यह धन जिस पर स्त्री  
 का स्वत्व हो जो उपकार का है ।  
 स्त्रीपमं ( पु० )-नारी का कर्तव्य, रजस् ।  
 स्त्रीपथ ( पु० )-नर, नारीपति ।

स्त्रीप्रसङ्ग ( पु० )-मैथुनकर्म ।  
 स्त्रीप्रभू-जमनी ( स्त्री० )-केवल कन्या  
 जनने वाली नारी ।  
 स्त्रीरजन ( न० )-पान, ताम्बूल ।  
 स्त्रीरत्न ( न० )-श्रेष्ठतमा स्त्री ।  
 स्त्रीछिग ( न० )-ठपाकरण में शक दो  
 का यह भेद जो नारीगुण का  
 श्रोतक होता है, स्त्रीत्वश्रोतक  
 चिन्ह ।  
 स्त्रीवश ( पु० )-स्त्री की अधीनता ।  
 स्त्रीहरण ( न० )-स्त्री का चुराया जाना ।  
 स्त्रीण ( वि० )-स्त्री का, ज्ञाना । न०-  
 स्त्रीपन, नारीस्वभाव, नारीसमूह ।  
 स्थ ( वि० )-[ सनासान्त में ] ठहरने  
 वाला, रहने वाला । पु०-स्थान ।  
 स्थग् ( १ प० )-ढकना, ढापना ।  
 स्थपन ( न० )-छिपावट, आच्छादन ।  
 स्थगर ( न० )-सुपारी । [ छिपा हुआ ।  
 स्थगित ( वि० )-आधृत, तिरोहित,  
 स्थविहल ( न० )-चबूतरा, आंगन,  
 यज्ञवेदि, सीमा ।  
 स्थपति ( वि० )-प्रधान । पु०-राजा,  
 सारथि, कुबेर, अन्तःपुराध्यक्ष ।  
 स्थल् ( १ प० )-मज्जयूती से ठहरना ।  
 स्थल ( न० )-मूली जमीन, जलरहित  
 अकृत्रिम भूमि का भाग, स्थान ।  
 स्थली ( स्त्री० )-स्थल ।  
 स्थवि ( पु० )-चर वस्तु, जुलाहा, स्वर्ग ।  
 स्थविर ( वि० )-निश्चल, स्थिर,  
 मृदु । पु०-बड़ा, भिखारी, अक्षर ।  
 स्थविष्ठ ( वि० )-सब से घृष्ट ।  
 स्था ( १ प० )-ठहरना, खड़े होना, रुकना ।

स्थाणु ( वि० )-स्थिर, गतिरहित ।

पु०-शिव, स्तम्भ, माला, सूटी ।

अस्त्री०-पद्मशालारहित वृक्ष ।

स्थाता [ वृ ] ( वि० )-ठहरा हुआ स्थित

स्थान ( न० )-जगह, स्टेशन, घर, देश,

। 'मगर, पद, स्थिति, समानता, वर्तन ।

स्थानक ( न० )-स्थान, नगर, वर्तन, भाग

स्थानच्युत-भ्रष्ट ( वि० )-पदच्युत, घर-

झाकत, बेकार । [ पु०-धानेदार ।

स्थानिक ( वि० )-उसी स्थान का, लोकल

स्थानी [ नृ ] ( वि० )-स्थानयुक्त ।

पु०-स्थानरत्नक, उपाकरण में वह

अक्षर जिस के स्थान में दूसरा

अक्षर आदेश होता है ।

स्थानीय ( वि० )-स्थानिक ।

स्थाने ( अ० )-ठीक २, उचित स्थान में

स्थापक ( वि० )-स्थापन करने वाला ।

स्थापन-ना=कायम करना, रखना,

युनिपाद डालना, सुरक्षित करना

स्थापित ( वि० )-कायम किया हुआ,

स्थिर किया हुआ, न्यस्त, निवे-

धित, ठिकाण हुआ ।

स्थाप[नृ] ( न० )-शक्ति, ताकत, स्थिरता

स्थापिभाष्य ( पु० )-धित की निरवलता

स्थायी [ नृ ] ( वि० )-रहनेवाला, बहुत

कालतक ठहरने वाला, मजबूत ।

स्थायुक ( वि० )-मजबूत, ठहरने

वाला । पु०-ग्रामाधिपति ।

स्थावर ( वि० )-स्थिर, ठहरा हुआ,

मुस्त । पु०-पर्यंत ।

स्थावरजंगम ( न० )-चल और अचल

सम्पत्ति, घर और अघर वस्तु ।

स्थापत्य ( पु० )-अन्तपुराध्यक्ष ।

स्थाल ( न० )-पाली, रकामी, घटलोई ।

स्थाली ( स्त्री० )-मिट्टी का वर्तन, टेंगपी

स्थालीपाक ( पु० )-गृहस्थ द्वारा

करने योग्य एक यज्ञ ।

स्थालीपुलाक ( पु० )-स्थाली में पके

हुए चावल, एक प्रकार का न्याय

जिसमें एक अंश के ज्ञान से सम्पू-

र्ण का ज्ञान अनुमित किया जाता

है जैसे एक चावल को देखने से सबके

पकने पकने का ज्ञान हो जाता है

स्थाविर ( न० )-बुढ़ापा, वृद्धत्व जो ३०

वर्ष के पश्चात् आरम्भ होता है ।

स्थावक ( पु० )-पानी का बुलबुला,

अलंकार । [ हुआ ।

स्थावु ( वि० )-स्थितिशील, ठहरा

स्थित ( वि० )-ठहरा हुआ, निश्चल,

खड़ा हुआ । [ बालत, पोशीशन ।

स्थिति ( स्त्री० )-ठहराव, दृशा, मर्मादा,

स्थिर ( वि० )-मजबूत, ठहरा हुआ,

निश्चल, शान्त । पु०-देवता, वृत्त,

पर्वत, सांड, शिव । [ मजबूत ।

स्थिरतर ( पु० )-परमात्मा । वि०-अधि-

स्थिरता-त्वम्=मजबूती, निश्चलता ।

स्थिरप्रतिष्ठ ( वि० )-धात का पक्का ।

स्थिररंगा ( स्त्री० )-नील । [ पाला

स्थिरात्मा-चित्त-धी-बुद्धि-मति ( वि० )

मजबूतदिल का, स्थिर बुद्धिवाला ।

स्थूणा ( स्त्री० )-घर का उम्मा, स्तम्भ,

लीहमूर्ति ।

स्थूम ( पु० )-प्रकाश चन्द्रमा ।

स्थूर ( पु० )-सांड, पुरुष ।



स्फूल (वि०)—पीवर, मोटा, बड़ा,  
मजबूत, घना, मूर्ख, मन्द । न०—  
देर, तम्बू, कूट ।

स्फूलकाय (वि०)—दीर्घ शरीर वाला ।  
स्फूलता त्वस् = मोटापन, मन्दता ।

स्फूलधी-गति (स्त्री०)—मोटी अकल ।

स्फुलशरीर (न०)—पचभूतो का घना  
देह, पाचभौतिक शरीर ।

स्फुला (स्त्री०)—बड़ी झुलायची ।

स्फुली [नृ] (पु०)—छट, चट्ट ।

स्फेय (वि०)—ठहरने योग्य । पु०—  
मध्यस्थ, पच, जज्ञ ।

स्फैर्य (न०)—मजबूती, चित्तैकाग्रता ।

स्फीर (न०)—मजबूती ।

स्फीर्य (न०)—स्फूलता, मोटी पुष्टि ।

स्फण (पु०)—घड़ना, घूना, घ्रवण ।

स्फा (स्त्री०)—महाना, भीमा ।

स्फात (वि०)—महाना गुभा ।

स्फात-क (पु०)—ऐसा प्रसारी जिस  
ने मुकुल में विद्या समाप्त कर  
के मुद्गर में प्रवेश किया हो ।

स्फाम (न०)—महाना, अवगाहन-सफाई

स्फानागर (न०)—महाने का स्थान ।

स्फानीय (वि०)—ज्ञान के लिये हितका-  
री जैसे तेल, नष्टना आदि ।

स्फाय (पु०)—रग, रक्तवादिनी नाड़ी ।

स्फाय धनु (पु०)—स्फाय ।

स्फाय (वि०)—चिकना, माटा, खेद  
वाला, चमकदार, प्रेमपक्ष, मनोहर ।

पु०—मित्र । न०—तेल, मोम, प्रकाश

स्फायता-रक्त = ममृता, प्रेम, चिकनापन

स्फाया (स्त्री०)—चर्मा, मज्जा ।

स्निह् (४५०)—प्रेम करना, खुश होना ।

स्नु (स्त्री०)—स्नायु, रग ।

स्नुपा (स्त्री०)—पुत्रवधू ।

स्नेह (पु०)—प्रेम, मुग्धवत्, चिकनापन;  
ममृता, चर्मा, तैल ।

स्नेहभू (पु०)—कफ, बलग्न । [चदाना ।

स्नेहयस्ति (स्त्री०)—वस्ति द्वारा तैल

स्नेही (पु०)—मित्र, विन्नकार, तैलमर्दक

स्नेहु (पु०)—चन्दमा, रोगविशेष ।

स्नै (१५०)—लपेटना, कपड़े पहनना ।

स्पन्द (१५०)—हिलना, टहर २ कर  
चलना ।

स्पन्द-न्दनम् = ईपत्कम्पन, चट्टकन ।

स्पर्ध (१५०)—रङ्क करना, घराबारी  
करना, चेलेंज देना ।

स्पर्धनम्-धर्मा = मुकाबिला करना, चढ़ा  
कपरी, इसद, इर्पा, चेलेंज ।

स्पर्श (१०५०)—छूना, घ्रवण करना,  
आलिङ्गन करना । [दूत ।

स्पर्श (पु०)—पकड़ना, एक गुण, युद्ध,

स्पर्ष्ट (वि०)—चाक, प्रकट, आदिर ।

स्पर्ष्ट (वि०)—छूना गुभा, कृतस्पर्श ।

स्पर्ष्ट (१० ३०)—इच्छा करना, चाहना ।

स्पर्ष्टणीय (वि०)—चाहने योग्य, श्लाघ्य ।

स्पर्ष्टालु (वि०)—चाहने वाला, इच्छुक ।

स्पर्ष्टा (स्त्री०)—इच्छा, स्पर्ष्टि ।

स्पर्ष्टि [टी] क (पु०)—विराट, एक मणि,  
आतशी जाला ।

स्पर्ष्ट (१५०)—वृद्धि होना, बढ़ना ।

स्पर्ष्टि (स्त्री०)—वृद्धि, उन्नति ।

स्नार (पु०)—सोना का गुलबुला । वि०—  
विपुल, चमकदार ।

स्नार [क] (स्त्री०)—नितम्ब, गूदा ।

स्नार (वि०)—विपुल, अनिष्ट, पढ़ा हुआ ।

स्कटन(न०)-खिलना, फूटना ।

स्कटित(वि०)-खिला हुआ, फूटा हुआ ।

स्फुरण(न०)-फड़कना, ईपन्वत्तन ।

स्फूर्तिग(अम्ली०)-आग की चिनगाये ।

स्फूर्ति(स्त्री०)-फुरना, निकसना, प्रतिभा, तेज । [ विकसित, स्फूर्ति वाला ।

स्फूर्तिमान् [ मत् ] ( वि० )-कान्तिमान्, स्फोटक ( पु० )-फोड़ा, प्रण । वि०-फोड़ने वाला ।

स्फोटन(न०)-विदारण, खिलना, फड़कना ।

स्म(अ०)-चीता हुआ, याद को पूरा करना ।

स्मय(पु०)-यमंड, आश्चर्य, गहर ।

स्मर(पु०)-अनंग, कामदेव ।

स्मरगृह-मन्दिर(न०)-स्नो का चिह्नविशेष ।

स्मरण(न०)-याद करना, स्मरणविशेष ।

स्मरप्रिया(स्त्री०)-रति, अनेगभार्या ।

स्मरहर(पु०)-शिव ।

स्मर(वि०)-कामदेवसन्वन्धी ।

स्मारक(वि०)-याद कराने वाला । [ स्मृता ।

स्मार्त्त ( वि० )-स्मृतिविहित, स्मृतियों का

स्मि(१० ब्रा०)-अनादर करना, हेरान होना ।

स्मित(वि०)-आश्चर्य युक्त, हेरान, खिला हुआ । न०-ईपड़ास ।

स्मृ(१ प०)-स्मरण करना, याद करना ।

स्मृत(वि०)-याद किया हुआ ।

स्मृति(स्त्री०)-धर्मोपदेशक शास्त्र, यादगार,

स्मरण, मनुस्मृति आदि धर्मग्रन्थ ।

स्मृतिविद्वद्(वि०)-स्मृतिशास्त्र के ज्ञाता ।

स्मर(वि०)-विकसित, ईपड़ासयुक्त ।

स्मर(१ ब्रा०)-स्मरण, यदना, टपकना ।

स्मर(पु०)-यदना, टपकना, चूना ।

स्मन्दन(न०)-यदना, जल । पु०-रघु,

तिनिश आ वृत्त । [ जाता ।

स्मन्दनारोह(पु०)-रथ पर चढ़कर लड़ने

स्मन्दी[न](वि०)-यहने वाला ।

स्मन्(वि०)-टपका हुआ, पुत ।

स्मन्तरु(पु०)-शरीर के हाथ की मज्जि ।

स्मृत(वि०)-निया हुआ । पु०-सुन का

दना पात्र ।

स्मृति(स्त्री०)-सुर्द आदि से सीना ।

पतन(न०)-नोच गिरना या गिरना ।

पसी[न](वि०)-अध.पतनशाल ।

पक्ष[ज्ञ] ( स्त्री० )-माला, माल्य ।

पक्षी[न] ( वि० )-मालाधारी, माल्ययुक्त ।

पञ्चा(स्त्री०)-रस्सी, तन्तुपटसमूह, प्रजापति ।

पत्त(१ ब्रा०)-गिरना, पतन होना ।

प[ष]व(पु०)-यदना, जरण होना, भरना ।

पवण(न०)-मून, पेशाब, घने, पसीना,

यदना, टपकना ।

पवन्ती(स्त्री०)-नदी, पक्ष श्रीपक्ष ।

पञ्चा[दृ](पु०)-ग्रन्था, प्रजापति ।

पत्त(वि०)-पतित, गिरा हुआ, द्युत ।

पत्तार(पु०)-भासन, विश्वरा, विश्वीना

पत्तारु(अ०)-द्रुत, फट, जरदी ।

पु(१ प०)-जाना, यदना, जरण ।

पुक्-ग[ञ] ( स्त्री० )-सुधा, यक्षपात्र ।

पुत्त ( पु० )-पटना नामक देश ।

पुत ( वि० )-यहा हुआ जल, गत ।

पुव ( पु० )-मुक् । [ पानी का यदना ।

पुत ( न० )-प्रवाह, योता, स्वयं

पुतः [ स् ] ( न० )-यैन से स्वयं जल

का निकलना, योयं ।

पुतस्वती-स्थिनी ( स्त्री० )-नदी,

दरिया । प्रवाहयुक्त ।

पुतोपगन ( न० )-पक्षेद सुरना ।

पुत(न०) धन, दीलत । वि०-भारतीय,

अपना । पु०-जाति, विष्णु ।

पुत ( वि० )-भारतीय, अपना ।

पुतपुत ( पु० )-यायु, दया ।

पुतम[न](न०)-अपना कसंठय काम ।

पुतोय ( वि० )-अपना, भारतीय ।

पुतत ( वि० )-ननोगत भाव, दिख

ही बात, नाट्योक्तिविशेष ।

स्वच्छ(न०)-विमलरस, साफ, मोती ।

पु०-स्फटिक । वि०-रोगमुक्त ।

स्वच्छन्द(वि०)-स्वतन्त्र, खुदमुखार ।

स्वच्छमणि(पु०)-स्फटिक मणि, विज्ज्वीर

स्वत्र (पु०)-रुधिर, खून । पु०-पुत्र ।

वि०-अपने से उत्पन्न ।

स्वजन (पु०)-चाति, अपना लोक ।

स्वतः[स्](न०) स्वयंही, अपने आप ।

स्वतन्त्र (वि०)-स्वाधीन, निरङ्कुश ।

स्वत्य (न०)-स्वाधीनता, नालिक-  
पना, अपना कठजान ।

स्वधर्म (पु०)-अपने धर्म के अनुसार  
वेदविहित आचार ।

स्वधा (अ०)-देवताओं के हविर्दान  
का मन्त्र, पितरों का अन्न । स्त्री०-  
दलकन्या और पितरोंकी पत्नी ।

स्वधामिप (पु०)-काळे तिल, अग्नि ।

स्वधामुक् [म्](पु०)-पितृसमूह, देवता ।

स्वधिति(अवली०)-कुठार, कुलहाड़ा ।

स्वन् (१०व०)-शब्द करना ।

स्वम(पु०)-शब्द, आवाज़ । [ध्वनित ।

स्वमित (न०)-मेघ का गर्जना । वि०-

स्वपन (न०)-ग्रसन, निद्रा ।

स्वप्न (पु०)-निद्रा, दयंन स्याय ।

स्वभाव (पु०)-अपना धर्म, मित्राङ्ग,  
गोल, आदम । [अष्टकारविशेष ।

स्वभाषीक (स्त्री०)-अधंस्यन्धी

स्वभू (पु०) प्रज्ञा, विष्णु, शिव, मनङ्ग ।

स्वधर्मज्ञ (वि०)-खुद पैदा किया  
पुत्र ।

स्वमेक (पु०)-वर्ण, पाद । [सुदयमुद ।

स्वयम् (अ०)-मुद, आप, अपनीतर,

स्वयम्भु (पु०)-ब्रह्मा । शिव ।

स्वयम्भुव (पु०)-प्रथम मनु, ब्रह्मा,

स्वयम्भू (वि०)-स्वयमुत्पन्न । पु०-

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, काल, काम-  
देव, स्त्रीवल्लः, परमात्मा ।

स्वयंवर(पु०)-आप ही करना, सभा में  
कन्या का अपने लिये वर चुनना ।

स्वयंवरा (स्त्री०)-अपने लिये वर  
चुनने वाली कन्या । [करना ।

स्वर (१०व०)-ऐव निकालना, निन्दा

स्वर (अ०)-स्वर्ग, द्यौः, ईश्वर, आकाश,  
तीसरी उपादृति, शोभा, जल ।

स्वर (पु०)-आवाज़, ध्वनि, धाजे  
का सुर, ७ का अङ्क, उदात्त  
अनुदात्त और स्वरित भेद से  
उच्चारण का यत्नविशेष, ज भा  
इ ई आदि अक्षर ।

स्वरभग (पु०)-एक रोग जिस में  
आवाज़ रुक जाती है । [प्राय ।

स्वरस (पु०)-अपना मतलब, स्वाभि-

स्वराज् (पु०)-ईश्वर, खन्दोभेद ।

स्वराज्य (न०)-मुदमुखारी, वैष्ण-  
नयनभेद ।

स्वरापगा(स्त्री०)-स्वर्ग की नदी, गंगा ।

स्वरित (वि०)-ध्वनित, उच्चरित ।

पु०-एक स्वर जो उदात्त और  
अनुदात्त के मेल से उत्पन्न होता है ।

स्वर (पु०)-धूप, पत्र, पत्र, तीर ।

स्वरूप (न०)-अपना रूप, स्वभाव ।

वि०-मनोघ्न, मनोहर, घराघर ।

स्वर्ग (पु०)-यद्विज, देवताओं का

निवासस्थान, वड़े सुख की जगह ।  
स्वर्गकाम ( वि० )-स्वर्ग की इच्छा  
करने वाला ।

स्वर्गपति-भक्तों ( पु० )-इन्द्र ।  
स्वर्गवधू ( स्त्री० )-अम्बरा, स्वर्देश्या ।  
स्वर्गोचल ( पु० )-सुमेरु पर्वत ।  
स्वर्गी ( नृ० ) ( वि० )-स्वर्गीय । पु०-देवता,  
अमर, मृतपुरुष । [ को प्राप्त ।  
स्वर्गीय-गर्ग ( वि० )-स्वर्ग के योग्य, स्वर्ग  
स्वर्गीकाः [ च ] ( पु० )-देवता, अमर ।  
स्वर्जिह्व-जो [ नृ ] ( पु० )-चण्डी ।  
स्वर्ग ( न० )-सोना, सुनहरा सिक्का ।  
स्वर्णकाय ( पु० )-गरुड ।  
स्वर्णकार-कृत् ( पु० )-सुनार ।  
स्वर्णदी ( स्त्री० )-गंगा ।  
स्वर्णोक्त ( पु० )-स्वर्णोक्त, वहिश्त ।  
स्वर्वापी ( स्त्री० )-गंगा, स्वर्गनदी ।  
स्वर्देश्या ( स्त्री० )-मेनकाभादि अम्बरा ।  
स्वर्ध्व ( पु० )-अश्विनीकुमार ।  
स्वल् ( १५० )-जाना, दरफत करना ।  
स्वरूप ( वि० )-घोड़ा, बहुत छोटा, नाचीज  
स्वरूपक ( वि० )-स्वरूपता, बहुत छोटा ।  
स्वरूपन्त ( वि० )-सब से छोटा ।  
स्वश्वर ( पु० )-पति वा पहनी का पिता ।  
स्वत्ता [ च ] ( स्त्री० )-भगिनी, यद्म ।  
स्वस्ति ( अ० )-होम, आशिष्, कुशल,  
अङ्गीकारयचन ।

स्वस्तिक ( पु० )-कल्याणदाता, एक  
प्रकार का घर, आसनविशेष ।

स्वस्तिवाचन ( न० )-किन्हीं यज्ञ वा  
संस्कार के पूर्व मंगलदायक वेद-  
मन्त्रों का पाठ ।

स्वस्त्ययन ( न० )-शुभ के लिये किया  
गया गृहपागादि ।

स्वस्थ ( वि० )-अपने आप में स्थित,  
साधपान, तन्दुरुस्त ।

स्वस्त्रित ( वि० )-इच्छानुसार गतिशील  
स्वस्त्रीय-स्त्रिय ( पु० )-भाजा ।

स्वस्त्रीया-स्त्रयी ( स्त्री० )-माजी ।  
स्यागव ( न० )-अच्छा आना, शुभागमन ।

स्याच्छन्य ( न० )-स्यच्छाचारता ।  
स्यातन्व्य ( न० )-स्यतन्वता, मुदमुत्तारी ।

स्वाति वा ( स्त्री० )-एक नक्षत्र ।  
स्याद-इनम् = ज्ञायका लेना, पाना ।

स्वादित ( वि० )-खाया हुआ, चाखा हुआ ।  
स्वादित ( वि० )-बहुत मीठा, अति उत्तम ।

स्यादु ( वि० )-मीठा, ज्ञायकदार, अच्छा ।  
स्यादुरसा ( स्त्री० )-शताघर, मुनक्का, मदिरा ।

स्याद्री ( स्त्री० )-किशमिश, अंगूर, मुनक्का ।  
स्यान ( पु० )-शब्द, आवाज ।

स्याप ( पु० )-सोना, नींद लेना ।  
स्यापद = दशापद । [ कुदरती ।

स्यामारिक ( वि० )-समात्र से उत्पन्न,  
सामिता-स्वम् = अग्र्यक्षता, प्रोप्रादृती ।

स्यामिनी ( स्त्री० )-मालकिनी, मोमादृस ।  
स्यामी [ नृ ] ( वि० )-मालिक, अग्र्यक्ष, पु०-

प्रोप्रादृतर ।  
स्यायंभुय ( वि० )-ब्रह्मा की संतान । पु०-

एक मनु ।  
स्यारद [ नृ ] ( पु० )-इन्द्र ।

स्यारोचियः चिस् ( पु० )-द्वितीय मनु ।  
स्यास्थ्य ( न० )-स्वस्थता, नरोगता, तन्दु-

स्तो, हालत ।  
स्याह्वा ( स्त्री० )-आग्नि की स्त्री । अ०-देवता  
का हविः देने का मंत्र ।

स्विद् ( अ० )-प्रदत्त, निवर्त, पादपूर्ति ।  
स्विन्न ( वि० )-स्वद्वयक, पत्नीना दिया हुआ ।

स्याह्वा ( न० )-स्याकार करना, मंजूर करना ।  
स्याह्वा ( न० )-स्याकार करना, मंजूर करना ।

स्याह्वा ( न० )-स्याकार करना, मंजूर करना ।  
स्याह्वा ( न० )-स्याकार करना, मंजूर करना ।

स्व (२ प०)-मारना, यथ करना ।

स्वेद ( पु० )-पसीना, उष्णता के कारण शरीर से जो पानी निकलता है ।

स्वेदन ( न० )-पसीना निकलना । [ तन्दूर ।

स्वेदनी ( स्त्री० ) लोहे का पात्र, तपा कड़ाही,

स्वर ( न० )-श्रवणो इच्छा । वि०-श्रवणो इच्छा वाला । [ गमन ।

स्वेरता-त्वम् = स्वहृन्दचारिता, इच्छापूर्वक

स्वेरिणी ( स्त्री० )-स्वेच्छापूर्वक विचारेवाली स्त्री, दुष्टाचारिणी स्त्री ।

सैरी [ न० ] ( पि० )-स्वेच्छाचारी, आज़ाद,

खुदमुस्तार, स्वतन्त्र ।

## ह

ह ( न० )-पाद को पूरा करने के

लिये प्रयुक्त होता है । सम्प्रोधन;

प्रसिद्धिप्रोधक । पु०-शिव, जल, शून्य

मगल । न०-परमात्मा, प्रसन्नता ।

हंस ( पु० )-अपने नाग से प्रसिद्ध

पक्षी [ कहते हैं कि यह पक्षी

नागसरोवर की छ पर रहता है ],

परमात्मा, जीवात्मा, माणसायु,

शिव, विष्णु, नृप, कामदेव,

रोमरहित राजा, पवित्र मनुष्य,

पद्म, धर्म, भैराव । [ कहा ।

हमक ( पु० )-पलियिशेष, नृप, पाय का

हमगाभिनी ( स्त्री० )-हम के समान

सुन्दर बाल चलने वाली स्त्री ।

हसनादिनी ( स्त्री० )-सुन्दर अंग वाली,

कोमल के समान चलने वाली

और भारीनितम्ब वाली स्त्री ।

हंमाला ( स्त्री० )-हथों की कतार ।

हमरप वाहन ( पु० )-पुराणोपकृत

धनुर्मुख प्रजा ।

हसलोहक ( न० )-पीतल ।

हसाशु ( पु० )-सफ़ेद, श्वेत ।

हसाधिरूढा ( स्त्री० )-सरस्वती ।

हंसाधिरूढ ( न० )-चादी, रजत ।

हसिका-सी ( स्त्री० )-भादा हस ।

हहो ( अ० )-हे, अरे, हो, हलो,

प्रश्नवाचक, सम्प्रोधन ।

हट ( १ प० )-चमकना, दीप्तिमान् होना ।

हट ( पु० )-बाज़ार, मार्केट, मेला ।

हटबिलाविनी ( स्त्री० )-वेश्या, धार-

नारी, हस्ती ।

हही ( स्त्री० )-छोटा बाज़ार ।

हट ( १ प० )-कूटना, क्रूर होना, सताना ।

हट ( पु० )-दुराग्रह, जुलूम, ज़िद, बलात्कार

हटयोग ( पु० )-अपानधारणा द्वारा

योगसाधन ।

हट्ट ( न० )-हट्टी, अस्थि ।

हट्टज ( न० )-चर्दी, मज्जा ।

हट्टिका-हू ( स्त्री० )-मही का घड़ा ।

हत ( धि० )-मतिहत, मारा गया,

नष्ट, घात किया गया, छीना

गया, रोका गया । न०-अथ,

फ़टल । [ कायर, कापुरुष ।

हतक ( धि० )-दुःखी, कम्पयत् । पु०-

हतकयटक ( धि० )-अथ, या कयटकहित

हतपित्त ( धि० )-अथ, या पित्त दुःख ।

हतदेव ( धि० )-यदक्रिस्मत्, भाग्यहीन ।

हतप्रभाव ( धि० )-अक्रिस्मत्, नपुंसक ।

हतमुक्ति ( धि० )-यद्विहीन, मूर्ख ।

हतभाग-भय ( धि० )-यदक्रिस्मत्, कम्पयत् ।

हतलक्षण ( धि० )-कम्पयत्, लक्षणरहित ।

हतश्री-सम्पद् ( धि० )-गरीब, निर्धन ।

हताश (वि०)--नाचन्मीद, आशा-  
रहित, कमज़ोर, क्रूर, वाक्, नीच।  
हति (स्त्री०)--वध, नाश, चोट, ना-  
कायपायी, ऐब, ज़रख, गुणा।

हत्नु (पु०)--हथियार, रोग।  
हत्या (स्त्री०)--वध, नरण, खून।

हन् (१प०)--मारना, फ़टल करना,  
पीटना, नुक्सान पहुंचाना,  
(त्यागना, जीतना, हटाना)।

हन् (वि०) [सनासान्त में]--मारने  
वाला, घात करने वाला।

हन (न०)--फ़टल, वध।

हन्त (न०)--फ़टल, वध, गुणन, चोट।

हनु-नू (अकली०)--ठोड़ी। स्त्री०--  
हथियार, रोग, नृत्य, औषध-  
विशेष, वैद्या।

हनु [नू] नानु [नत] (पु०)--रानायण में  
वर्णित एक प्रसिद्ध वानर योद्धा  
जो पवन के द्यौय से अंजना में  
उत्पन्न हुआ था।

हनूप (पु०)--राक्षस, असुर।

हन्त (अ०)--खेद, हर्ष, दया, शोक,  
आशिष् आदि अर्थों में आता है।

हन्ता [तृ] (वि०)--मारने वाला।  
पु०--घातक, यधिक, चौर।

हन्तु (पु०)--वध, हत्यु, बैल।

हय (१प०)--गाना, पूजना, आवाज़  
करना, यकता।

हय (पु०)--घोड़ा, सात का अंक, इन्द्र।

हयङ्गप (पु०)--रथवान्, कोचवान्,  
इन्द्र का सारथि, मातलि।

हयग्रीव (पु०)--विष्णु का एक रूप।

हयञ्ज (पु०)--सलोत्री, साइंघ।

हयद्विपत् (पु०)--भैंसा, सहिष।

हयप्रिय (पु०)--जी, यव।

हयमेघ (पु०)--अश्वमेघ यज्ञ।

हयशाला (स्त्री०)--अस्तमल, पुड़साल।

हयारूढ (पु०)--अश्वारोही, पुड़सवार।

हयो (स्त्री०)--घोड़ी।

हर (वि०)--हरने वाला, पकड़ने वाला,  
विभाजक। पु०--शिव, अग्नि, गधा,  
विभाजक, पकड़ना, हरण। [शिव

हरक (पु०)--चौर, बदमाश, विभाजक,

हरण (न०)--चुराना, ग्रहण, हटाना,

नाश, विभाग, खाज्, खण, यीनक

फोड़ी, चबलता हुआ पानी।

हरतेजः धीज (न०)--पारद, पारा।

हरशेखरा (स्त्री०)--गंगा।

हरि (पु०)--विष्णु, सिंह शिव, चन्द्र,

सूर्य, वायु, इन्द्र, किरण, अश्व,

ब्रह्मा, सर्प, वानर, मेंढक, यम,

भोर, हंस; तोता; कौकिल; नी

यों में से एक; अग्नि; भर्तृहरि;

पीत और हरित वर्ण। वि०--सब

वर्णवाला।

हरिकेश (पु०)--शिव।

हरिचन्दन (अस्त्री०)--फलपव्वल। न०

पद्मकेसर; कुकुम; चादनी।

हरिण (पु०)--मृग, शिव, विष्णु,

सूर्य, हंस, सफ़ेद रंग। वि०--

सफ़ेद रंग वाला।

हरिणहृदय (वि०)--भीरु, हरपोक।

हरिणाक्षी (स्त्री०)--मृगयना स्त्री।

हरिणाष्ट (पु०)--चन्द्रमा।

हरिणी ( स्त्री० )—सुगी, सोने की प्रतिमा, १६ अक्षर के पाद का एक छन्द, युवती स्त्री, एक सुतागना ।  
हरित् ( पु० )—नीलमिश्रित पीतवर्ण, एक अश्व, सिद्ध, विष्णु, सूर्य ।  
स्त्री०—हन्दी । अस्त्री०—तृण ।

हरिताल(न०)—हरताल नाम उपधातु ।  
हरिदश ( पु० )—सूर्य, आक का वृक्ष ।  
हरिद्रा ( स्त्री० )—हल्दी । [ एक तीर्थ ।  
हरिद्वार(न०)—अपने नाम से प्रसिद्ध  
हरिन्मणि ( पु० )—नरकतमणि ।  
हरिभुक् [ ज् ] ( पु० )—सर्प । [ वर्ष ।  
हरिवर्ष ( न० )—जन्मद्वीपान्तर्गत एक  
हरिवंश ( पु० )—विष्णुवंश, एक पुराण ।  
हरिवासर ( न० )—एकादशीतिथि और  
द्वादशी का प्रथम भाग ।

हरिवाहन ( पु० )—गरुड़ ।  
हरिशयन ( न० )—आपाढ़ शुक्ला  
द्वादशी से कार्तिक शुक्ला द्वादशी  
तक का समय ।

हरिदय ( पु० )—इन्द्र, देवराज ।  
हरीतकी ( स्त्री० )—हैह ।  
हर्ता [ त् ] ( पु० )—सूर्य, पुराने वाला ।  
हर्ष ( न० )—धनी पुरुषों के मण्डल ।  
हर्षत ( पु० )—सिद्ध, कुवेर । वि०—  
पीले नेत्र वाला ।

हर्षय ( पु० )—इन्द्र । [ उत्तम आनन्द ।  
हर्ष ( पु० )—इष्ट यन्त्र की प्राप्ति से  
हर्षण ( न० )—सुख, सुखी, विष्णुभक्त-  
गत १४वां योग । वि०—हर्षकर्ता ।

हर्षिणी ( स्त्री० )—विजया, भाग ।  
हर्षिता ( वि० )—सुखी, सुख, आनन्ददाता ।

हल् ( १५० )—विलेखन करना, खँचना ।  
हल ( न० )—छाया ।

हलधर ( पु० )—वलदेव । ।  
हला ( स्त्री० )—सखी, मदिरा, भूमि, जल ।  
हलाहल ( पु० )—एक प्रकार का तीक्ष्ण  
विष, ब्रह्मसर्प । [ कर्म करने वाला ।

हली [ न् ] ( पु० )—वलराम । वि०—कृषि-  
हलीश ( स्त्री० )—वलद्वय, हलस ।  
हल्य ( न० )—हल से जुता हुआ खेत,  
हलकर्षित क्षेत्र । [ नाचना ।

हल्लीप-क ( न० )—बहुत स्त्रियों के साथ  
हव ( पु० )—होम, यज्ञ, आज्ञा, युलाना ।  
हवन ( न० )—होम ।

हवनायुः [ स् ] ( पु० )—अग्नि ।  
हवनी ( स्त्री० )—होम का कुंड ।  
हवनीय ( न० )—होम का द्रव्य, हव्य ।  
हविष्य ( न० )—घृत, घी । [ द्रव्य ।  
हविष्याक ( न० )—वृत्तादि में खाने योग्य  
द्रव्य ( न० )—देवताओं के योग्य अन्न ।  
हव्यपाक ( पु० )—घर ।

हव्यवाह-न ( पु० )—अग्नि, आग ।  
हस् ( १५० )—हसना, विकसित होना,  
खिलना ।

हस ( पु० )—हास्य, मुख का खिलना ।  
हसन ( न० )—हसना, ठहा करना ।  
हसन्ती ( स्त्री० )—अगोठी । वि०—  
हसने वाली ।

हसित ( न० )—हसना, खिलना । वि०—  
विकसित, खिला हुआ, हसा हुआ ।  
हस्त ( पु० )—हाथ, पाणि, दापी की मूढ़,  
तेरहवा मन्त्र ।

हस्तमृत् ( न० )—विवाह के समय  
हाथ में यथा मृत्, कण्डू, कगना ।

हस्तामलक (न०)-करस्थित आंखला,  
अनायास करने वा देखने योग्य  
पदार्थ, वेदान्त का एक ग्रन्थ ।

हस्तिक (न०)-हस्तिपों का समूह ।

हस्तिदन्त (पु०)-हाथी का दांत, दीवार  
की खूंटो ।

हस्तिन [ ना ] पुर (न०)-पन्द्रवंशीय  
हस्ति नामक राजा का बसाया  
एक प्रसिद्ध नगर ।

हस्तिनी ( स्त्री० )-गजपत्नी, हथिनी

हस्तिप-पक ( पु० )-हाथी पर चढ़ने  
वाला, हाथीघानू । [ नदग्रल ।

हस्तिनद ( पु० )-हस्तिगण्ड से स्रुत

हस्त्यारोह ( पु० )=हस्तिप ।

हस्ती [ नं ] ( पु० )-हाथी, गज ।

हा ( ३ प० )-छोड़ना, त्याग करना ।  
३ आ०-गसन करना, जाना ।

हा ( अ० )-शोक, पीड़ा, विषाद, निन्दा

हाटक ( न० )-स्वर्ण, सोना, धतूरा ।

वि०-सोने का बना हुआ ।

हातव्य ( न० )-छोड़ने योग्य, त्यक्तव्य ।

हान ( न० )-त्याग, छोड़ना ।

हानि ( स्त्री० )-क्षति, नुकसान, अपचय

हापन ( भस्त्री० )-घर्ष, सवत् । पु०-

अग्नि की शिखा, ग्रीहिभेद ।

हार ( पु० )-मोतियों की माला मुक्तावली

हारक ( पु० )-घोर, घृत्त, क्षिप्त,

गद्यभेद, विभाजक अङ्क । वि०-

हारण करने वाला ।

हारावली ( स्त्री० )-मोतियों का हार

हारिद्रि ( पु० )-कदम्बवृक्ष । वि०-

हृदी से रगा हुआ ।

हारी [ न ] ( वि० )-हार वाला,  
यजोज्ञ, चुराने वाला ।

हारीत ( पु० )-धर्मशास्त्र का प्रणेता  
पंड मुनि, मैत्र प्रती, भूत ।

हारदं ( न० )-स्नेह, प्रेम, प्यार, अभिप्राय  
हार्य ( पु० )-विभीतक वृक्ष । वि०-ले  
जाने योग्य ।

हालाहल=हलाहल ।

हालाहली ( स्त्री० )-नदिरा ।

हालिक ( वि० )-कृपक, किसान ।

हाय ( पु० )-आह्वान, बुलाना,  
स्त्रियों की शृंगारभाषणन्य वृत्त ।

हास ( पु० )=उत्त ।

हास्तिक ( न० )-हस्तिमुद्रा ।

हास्य ( न० )-हंसना, रसविशेष ।

हाहाः ( पु० )-देवगन्धर्वविशेष ।

हाहाकार ( पु० )-पुष्ट का शब्द,  
शोकजन्य ध्वनि, हा हा करना ।

हि ( ५ प० )-चढ़ना, गमन करना ।

हि ( अ० )-निवध, पादपूरण, प्रशन,  
सयव, सन्धन-हेतुपदेण [ कर्षोक्ति ],

असूया, निन्दा ।

हिंसक ( पु० )-सिंहादि मारने वाला  
मनु, शत्रु । वि०-हिंसा करने वाला

हिंसा ( स्त्री० )-मारना, बध करना,  
कत्ल करना ।

हिंसित ( वि० )-मारा हुआ, वधप्राप्त ।

हिंस्र ( वि० )-घातक, हिंसाशील,  
मारने वाला ।

हिङ्ग ( १ उ० )-कूलना, अव्यक्त शब्द  
करना । १० आ०-हिंसा करना ।

हिक्का ( स्त्री० )-हिचकी रोग ।



हिङ्गु ( न० )—होँय, एक प्रकार का सुगन्धित द्रव्य ।

हिङ् ( १आ० )—गमन करना, जाना ।

हिहिम्ब्य ( पु० )—एक दैत्य जो भीम-सेन द्वारा निहृत हुआ ।

हिहिम्बा ( स्त्री० )—एक राक्षसी जो हिहिम्ब की वहिन और भीमसेन की भार्या थी ।

हित ( वि० )—पश्य, हितकर्ता, मित्र, धारण किया हुआ, गत, मङ्गल ।

हितकारी [ नृ ] ( वि० )—भलाई करनेवाला ।

हितीषी [ नृ ] ( वि० )—हित की इच्छा करने वाला ।

हितोपदेश ( पु० )—सत्कृतंठ्य का उप-देश, भलाई का परामर्श देना, विष्णुभक्त नीति का एक ग्रन्थ ।

हिन्दोल ( पु० )—झूलना, हिडोला, घ्रायण के शुक्लपक्ष में झूलने का उत्सवविशेष, एः प्रकार के रागों में से एक ।

हिन ( भ० )—तुषार, यज्ञ । पु०—चन्द्र-यज्ञ, कपूर, चन्द्रमा, हेमन्त ऋतु, हिमालय पर्वत ।

दिमकर ( पु० )—चन्द्रमा, कपूर ।

हिमाशु ( पु० )—पूषंमत् ।

हिमानी ( स्त्री० )—यज्ञ का गिराई, हिमसन्तति । [ पर्वत ।

हिमालय ( पु० )—अपने नाम से प्रसिद्ध हिमिका ( स्त्री० )—तुषार पर यज्ञा तुषार । [ स्तम्भ एक वर्ष ।

हिरण्य ( पु० )—रजत । भ०—नववर्षा-

हिरण्य ( भ० )—स्वर्ण, सोना ।

हिरण्यकशिपु ( पु० )—एक राजस राजा का नाम जिसके सम्बन्ध में एक पौराणिकगाथा है कि वह इतना शक्तिशाली हो गया कि उसने इन्द्र का राज्य छीन लिया और परमात्मपूजा का अत्यन्त विरोध किया, यहां तक कि उसने अपने पुत्र प्रह्लाद की भी उसकी ईश्वरभक्ति के कारण अनेक कष्ट दिये । अन्त में विष्णु ने गर-सिंहावतार धारण करके उसका सन्तन किया ।

हिरण्यकीश ( पु० )—स्वर्ण और रजत ।

हिरण्यगर्भ ( पु० )—परमात्मा, विष्णु ।

हिरण्यदा ( स्त्री० )—पवित्री ।

हिरण्यनाभ ( पु० )—सैनाक पर्वत ।

हिरण्यविन्दु ( पु० )—अग्नि ।

हिरण्यय ( वि० )—सुनहरा ।

हिरण्यरेताः [ स्त्र ] ( पु० )—अग्नि, सूर्य, शिव, चित्रकूट । [ मन्त्र भाई ।

हिरण्याल ( पु० )—हिरण्यकशिपु का

हिल् ( इप० )—प्रेमजीवा करना ।

हिल्लोल ( पु० )—लहर, तरंग, हिंडोल ।

ही ( अ० )—आश्चर्य, पकावट, दुःख ।

हीन ( वि० )—तपक, त्यागता हुआ, भायरहित, नष्ट, न्यून ।

हीनकर्म ( वि० )—निहयनैमित्तिक कर्म का त्यागने वाला । [ कुलोत्पन्न ।

हीनकर्म-कुलत्र ( वि० )—कर्मोपा, नीच-

हीनजाति ( वि० )—जातिच्युत ।

हीनांग ( वि० )—भंगान्न, लला आदि ।

हीर ( पु० )—वर्ण, भाला, सिंघ, योद्धा

का पिता, शिव । अस्त्री०-इन्द्र-  
वज्र, हीरा ।

हीरक ( पु० )-हीरा, लाल ।

हीरा ( स्त्री० )-लक्ष्मी, चीटी ।

हु ( ३८० ) [ जुहोति ]-आहुति देना,  
यज्ञ करना, याग ।

हुंकारः-कृतिः=हुंहुं की आवाज़ ।

हुङ् ( १ प० )-जाना । ६ प०-इकट्ठा  
करना, हूयना ।

हुङ् ( पु० )-मेढा, लौहदण्ड, बादल ।

हुङ् ( पु० )-मेढा, मेघ ।

हुङ्क ( पु० )-चटखनी, शराबी,  
दास्यहू पत्नी ।

हुङ् ( १ आ० )-इकट्ठा करना, चुनना ।

हुङ् ( पु० )-शेर, भेडा, ग्रामशूकर,  
रातस ।

हुत ( वि० )-आहुति रूप से दिया  
हुआ, अग्नि में समर्पित । पु०-  
शिव । न०-आहुति ।

हुतभुक् [ ज ] ( पु० )-अग्नि, आग ।

हुतवह ( पु० )-पूर्यवत् ।

हुताग्नि ( पु० )-यज्ञ की अग्नि ।

हुताशन ( पु० )-अग्नि, शिव, विभक्त ।

हुताशनी ( स्त्री० )-होडिका, फाल्गु-  
नमान की पूर्णिमा ।

हुनि ( स्त्री० )-आहुति ।

हु[ह्र]म् ( भ० )-सन्देश, स्वीकारी, क्रोध,  
गफ़रत, धिक्कार, प्रयत्न ।

हुल् ( १ प० )-जाना, छिपाना, मारना ।

हू ( भ० )-सम्बोधन, अनादर, गर्व,  
दुःसम्बोधक ।

हूङ् ( १ आ० )-जाना ।

हूण [ न ] ( पु० )-एक राजसजाति,  
विदेशी ।

हूत ( वि० )-दुलाया हुआ, भाहूत ।

हूति ( स्त्री० )-दुलावा, निमंत्रण ।

हूरव ( पु० )-गोदड़ । सियार ।

हूच्छेन ( न० )-कपट, ठगई ।

ह ( १८० )-हरना, छीनना, लेजाना,  
लेना, लूटना, चुराना, विवाहना,  
विमान करना । [ निन्दा ।

हणी [ णि ] या ( स्त्री० )-शर्म, दया,

हृत् ( वि० ) [ समाधान्त में ] लेजाने  
वाला, पकड़ने वाला ।

हृत ( वि० )-हरा गया, गृहीत, पकड़ा  
गया, स्वीकृत, विभक्त । न०-  
भाग ।

हृतसर्वस्व ( वि० )-जिसका सब कुछ  
खिन गया हो, बिल्कुल नष्ट ।

हृताधिकार ( वि० )-निकाला हुआ,  
पदव्युत्त, अधिकारव्युत्त ।

हृति ( स्त्री० )-लूटना, पकड़ना, नाश ।

हृद् ( न० )-दिह, मन, हृदय, छाती,  
आत्मा, अभ्यन्तर ।

हृद्गत ( वि० )-मनमें लचा हुआ ।

हृ[ह्र]द्रोण ( पु० )-दिन की बीमारी,  
दुःख, कष्ट, आसक्ति ।

हृदय ( न० )-दिह, आत्मा, मन,  
छाती, प्रेम, अभ्यन्तर ।

हृदयवम्प ( पु० )-दिहकी धड़कन ।

हृदयग्राही [ न ] ( वि० )-दिह को  
लुभाने वाला ।

हृदमद्गम ( वि० )-दिह को छूने वाला,  
सुन्दर, मधुर, प्यारा ।

हृदयचिह्न (वि०)-हृदय को छेदने वाला, अभ्रिय ।

हृदयरोग ( पु० )-दिल की बीमारी ।

हृदयलेख ( पु० )-ज्ञान, चिन्ता, दिल का दृढ़ । [छेदने वाला ।

हृदयविध्व-वेधी ( वि० )-दिल को हृदयस्थ (वि०) हृदय में स्थित ।

हृदयस्थान (न०)-छाती, यक्षःस्थल ।

हृदयात्मा [न०] ( पु० )-व्यगला ।

हृदयालु-मिक-दयी ( वि० )-नेकदिल, सहृदय, दयाद्रुचित्त ।

हृदयेथ येश्वर (पु०)-पति, स्वामी ।

हृदयेथा येश्वरी (स्त्री०)-माया, पत्नी ।

हृदि [दी] क (पु०)-एक यादव राजा ।

हृदिस्पृश (वि०)-हृदयवेधी-प्यारा, मनाहर ।

हृद्य ( वि० )-दिल का सच्चा, दिल को प्यारा, मनोहर, दयालु ।

हृय् ( १,४ प० )-सुथ होना, सुथी ममाना, रोगटे सड़े होना, झूठ बोलना । [यान्वित, ताजा, हताश ।

हृपित (वि०)-प्रसन्न सुथ, आश्च-प्योक्त (न०)-घानेन्द्रिय ।

हृष्ट=हृपित ।

हृष्टचित्त (वि०)-सुथदिल, प्रमन्नमनः ।

हृष्टरोगा [न०] (वि०)-पुष्टकित, रोमाचित्त ।

हृष्टवदन (वि०)-प्रसन्नमुख । [घान ।

हृष्टि (१प्र०)-गुणी, प्रसन्नतम, गर्व, हे (अ०)-सम्बोधनचिह्न ।

हेष्टा (स्त्री०)-द्विषत्री, द्विष्टा ।

हेट् (१प०)-क्रूर होना, दिक करना, नारना, पश्रिय करना ।

हेठ (पु०)-सताना, रोग, नुस्मान ।

हेट् (१भा०)-अनादर करना, झूलना । १प०-चेरना ।

हेड (पु०)-अवघा, अनादर ।

हेडज (पु०)-कोप, नास्तुथी ।

हेडाबु (पु०)-घोड़ा का सौदागर ।

हेति ( श्रवली० )-हृषियार, प्रकाश, लपट, जोर, किरण ।

हेति ( पु० )-समय, कारण, उद्देश्य, उद्गमस्थान, उपाय, जरिया, तर्क हेतुक (वि०)-[समासान्त में] दत्ता-

दक । पु०-कारण, जरिया, ताकिंका हेतुता-स्वम्-कारणकाहोना, कारणभाव

हेतुमान् [ मत् ] (वि०)-कारणयुक्त । पु०-कार्य ।

हेतुनाद (पु०)-ग्रहस, मुयाहिसा ।

हेतुशास्त्र (न०)-तर्कशास्त्र ।

हेतवाभास (पु०)-जो वास्तव में हेतु न हो और हेतु सा प्रतीत हो ।

हेम (न०)-स्वर्ण, सोना, धतूरा । पु०-काला घोड़ा, बुधपह ।

हेम [न०] (न०)-स्वर्ण, सोना, जल, वर्ण, धतूरा, शीतकृत, बुधपह ।

हेमक (न०)-स्वर्ण, सोना ।

हेमकर-कर्ता-कारक (पु०)-सुनार ।

हेमकुम्भ (न०)-धाने का फलश ।

हेमकूट (पु०)-एक पर्वत का नाम ।

हेमकलि (पु०)-अग्नि, चित्रकयूत ।

हेमगिरि (पु०)-सुमेरु पर्वत ।

हेमज्वाल (पु०)-अग्नि, आग ।

हेमन्त (अत्र०)-छः ऋतुओं में से एक, मार्गशीर्ष और पौष मास ।

हेमन्ती (स्त्री०)-जाड़ा, शीतकाल ।  
 हेममाला (स्त्री०)-यमराज की स्त्री ।  
 हेममाली [नृ](पु०)-सूर्य, सूरज ।  
 हेमरागिणी (स्त्री०)-इन्दो, हरिद्रा ।  
 हेमशंख (पु०)-विष्णु ।  
 हेमल (पु०)-सुनार, कसीटी ।  
 हेम्य (वि०)-सुनहरा ।  
 हेय (वि०)-स्वागते योग्य ।  
 हेरिक(पु०)-जासूस, गुप्तचर । [कना ।  
 हेल् (१आ०)-अवज्ञाकरना, तुच्छम-  
 हेतन-ना=अवज्ञा, भनादर ।  
 हेला (स्त्री०)-भनादर, प्रेमक्रीडा,  
 सुशी, दिलचस्पता, कामेष्वा,  
 ज्योत्स्ना, चांदनी ।  
 हेलाबुद्ध (पु०)-घोड़ों का मीठागर ।  
 हेलि (पु०)-सूर्य । स्त्री०-कामक्रीडा ।  
 हेवाक (पु०)-उत्कट इच्छा, शीक ।  
 हेवाकस(वि०)-उत्कट, तीव्र । [गर्जना ।  
 हे[हे]प् (१आ०)-दिनदिनाना, रेंगना,  
 हे[हे]पः-पा=दिनदिनाइट, गर्दभध्वनि  
 हेपी[नृ] (पु०)-घोड़ा, अश्व ।  
 हेहे(अ०)-सन्मोघनविन्द ।  
 हे (अ०)-सन्मोघन ।  
 हेतुक (वि०)-हेतुयुक्त, सकारण ।  
 पु०-तात्त्विक, नास्तिक ।  
 हेम (वि०)-ठण्डा, चंद, सुनहरा,  
 ओस । पु०-शिव ।  
 हेमन (वि०)-ठण्डा, शीतकालमन्त्र  
 ण्धी, सुनहरा । पु०-मार्गगाप  
 मास, हेमन्त शत्रु ।  
 हेममुद्रा-दि का(स्त्री०)-सुनहरामिह्रा ।  
 हेमवत (वि०)-बर्फीला, हिमालय

पर्वत पर उत्पन्न । न०-भारतवर्ष ।  
 हैमवती (स्त्री०)-पार्वती, गङ्गा नदी ।  
 हैयङ्गवीन (न०)-ताजा ची ।  
 हैविक (न०)-शोक, तस्कर ।  
 हैहय(पु०)-एक देश, उस देशके निवासी,  
 यदुका प्रपीत्र, अर्जुन कातवीर्य ।  
 हैहेय (पु०)-अर्जुन कातवीर्य ।  
 ही (अ०)-सन्मोघन, आश्चर्योद्बोधक ।  
 हीड् (१आ०)-अवज्ञाकरना, अपमान  
 करना । १प०-जाना ।  
 होड (पु०)-घोड़ा, नौकासमूह ।  
 होडा [ हृ ] (पु०)-लुटेरा, डाकू ।  
 होड (न०)-चुराया हुआ माल ।  
 होता [ वृ ] (वि०)-इयन करने वाला,  
 आहुति डालने वाला । पु०-याज्ञिक,  
 यज्ञकर्ता, अग्नि ।  
 होत्र (न०)-इयन में डालने योग्य  
 वस्तु जैसे-घृत, समिधा ।  
 होत्रा (स्त्री०)-यज्ञ, प्रशंसा ।  
 होत्रिक (पु०)-यज्ञकर्ता का सहायक ।  
 होत्री [नृ] (पु०)-यज्ञ कराने वाला ।  
 होत्री (पु०)-आहुति डालने-वाला,  
 शिवविष्णुभेद । [यज्ञशाला ।  
 होत्रीय (वि०)-होतृसम्बन्धी । न०-  
 होम (पु०)-इयन, पंचयज्ञान्तर्गत  
 एक यज्ञ ।  
 होमक(पु०)-होता, इयन करने वाला ।  
 होमकुण्ड (न०)-इयन करने के लिये  
 पृथिवी में खोदा हुआ गड्ढा या  
 ताम्रादि का पात्र ।  
 होमधान्य (न०)-तिज ।  
 होमधूम (पु०)-इयन का धमाका

होमभस्म [न] (न०)-हवन की राख ।  
होमवेला (स्त्री०)-हवन करने का समय ।  
होमशाला (स्त्री०)-होम करने का स्थान ।  
होमाग्नि ( पु० )-यज्ञवह्नि, हवन की आग ।

होमि ( पु० )-अग्नि, घी, पानी ।  
होमी[न] (पु०)-होता, होन करने वाला ।  
होमीय-म्य ( वि० )-होम के योग्य ।  
न०-घृत, घी ।

होरा ( स्त्री० )-छान, रेखा, शास्त्र-विशेष, राघर्षी का समय, एक घंटा ।  
होलक ( पु० )-अग्नि में भुने हुए अर्घ्यपक्व घने गेहूं आदि, होला नाम से प्रसिद्ध भृष्टधान्य ।

होलाक (स्त्री०)-वसन्तौत्सव, होली ।  
होलिका-होली (स्त्री०)-पूर्ववत् ।

हो (अ०)-सन्वोधन, बुलाना ।  
होह (१प०)-अनादर करना, जाना ।

हू ( २ आ० )-चोरी करना, दूरलेजाना ।  
हूस् ( अ० )-बीता हुआ दिन ।

ह्यस्त-रत्य ( वि० )-गतदिवसीय, योते हुए दिन में होने वाला ।

ह्रद ( पु० )-भगाप जलाशय, झील, पानी का मड़ा, कुण्ड ।

ह्रदयद्व ( पु० )-कुम्भोर, नाका ।  
ह्रदिनी (स्त्री०)-नदी, दरिया ।

ह्रमित [वि०]-ध्वनित, शब्द वाला ।  
ह्रिमिमा [न] (पु०)-ह्रस्वता, नपुता ।

ह्रमिस् ( वि० )-अधिक छोटा, अति-शय्य ।

ह्रमोयान् [गच्] (वि०)-पूर्ववत् ।  
ह्रस्व (वि०)-छोटा, लघु, खं, नीच ।

पु०-यीना आदमी, एक प्रकार का अक्षर । त०-परिमाणमितेन ।

ह्रस्वमज्ञे (पु०)-कथा, दम् । [ह्रिंटी] ।  
ह्रस्वमवेधुका (स्त्री०)-एक प्रकार की

ह्रस्वपला (स्त्री०)-भूमिजम्बू, ग्रामुनमेद ।  
ह्रस्वाग्नि ( पु० )-अर्कवृक्ष ।

ह्राद ( पु० )-हिरण्यकशिपु का पुत्र अर्थात् प्रल्हाद, शब्द ।

ह्रादिनी (स्त्री०)-विद्युत्, बिजली ।  
ह्रादी [ न ] (वि०)-शब्द वाला ।

ह्रास (पु०)-शब्द, नाश, क्षय ।  
ह्रासिक(वि०)-शब्द करनेवाला, नाशकर

ह्रासापर (स्त्री०)-लज्जा, शर्म, दया ।  
ह्रास (वि०) ह्रीत, लज्जित, विभक्त ।

ह्राति (स्त्री०)-हृति, हरण, घुराना ।  
ह्री (३प०)-लज्जाकरना, शरमकरना ।

स्त्री०-लज्जा, शरम ।  
ह्री[ह्री]का ( स्त्री० )-त्रास, लज्जा ।

ह्रीकु (वि०)-लज्जित, शरम वाला ।  
ह्रीजित ( वि० )-लज्जाशील ।

ह्रीष-त (वि०)-लज्जित, लज्जायुक्त ।  
ह्रीवैर-ल-लक (न०)-एक औषध ।

ह्रादि ( १आ० )-सुग होना, आनन्द मनाना, शब्द करना ।

ह्राद-दक ( पु० )-सुगो, आनन्द, प्रल्हाद का नाम ।

ह्रे (१३०)-स्पर्धा करना, ईर्ष्या करना, शब्द करना ।



# आर्यभाषा का सबसे सस्ता मासिकपत्र भास्कर मासिकपत्र मेरठ

आर्यभाषा के मासिकपत्रों में सबसे सस्ता मासिकपत्र है।  
सर्वदा के लिये मूल्य २) के स्थान में १) कर दिया गया है  
और भी रियायत

चतुर्थ वर्ष [ १८७१ ] में भास्कर के ग्राहकों को " वाल्मी-  
कीय रामायण" जिसका वास्तविक मूल्य ६) होगा, केवल २) में  
उपहार में दी जावेगी। उपहार की पुस्तक तय्यार की जा रही है।  
इस से अधिक किसी और पत्रों के ग्राहकों को सुभीता  
नहीं हो सकता

जल्दी कीजिये, भास्कर आप का ही पत्र है। भास्कर वैदिकसिद्धान्तों  
का ज्ञान कराता है, आर्यजाति का अनन्य शुभविन्तक, आर्यमन्त्र का  
सूत्रा मेवक और आर्यवर्म का पनपोषक है। इस पत्र के खरीदार बन-  
कर आप किसी प्रकार भी घाटे में नहीं रह सकते। भास्कर का "वार्षिक  
मूल्य २) था, किन्तु इस सदिच्छा से कि भास्कर प्रत्येक श्रेणी के मनुष्यों  
के हाथों में पहुँच सके, हर कोई इस के छेत्तों को पढ़ कर लाभ उठा सके,  
हमने भास्कर के प्रेमियों को यह सुभवनर दिया है जिस से कि आप को  
अर्धमूल्य में ही भास्कर प्राप्त हो सके। इस अवसर की हाथ से न जाने  
दीजिये। खरीदारी के लिये पत्र मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ के पते पर  
संजने चाहिये।

## भास्कर प्रेस की पुस्तकें।

भारतवर्ष का इतिहास १॥) मजिह्द, १॥॥) संस्कृत-हिन्दी-कोष ४) ६७  
संगीतरत्नावली ॥) आर्यगीर्णस मजिह्द १.२) विना जिह्द ॥) नीता-  
चरित्र नायिका ६ भाग २) नीतादेवी १२) आर्यसंगीतगतक १२) आर्यगायन  
२॥) पोषप्रदीप २॥) भरतमयस्वरूप ६) हिम्मतसिंह २) मृगकण्ठ ॥॥  
नारीसज्जनविलास ॥) शुद्धाणस्यनीति ॥) नीतिशतक ५ पानुवाद २)  
निषेध वैदिक है ॥) श्रीरुद्रचरितमार २) पोषदम्भ [ चौपाई भास्कर ] ॥  
मजिह्द पोषकण्ठ ॥) वैदिकविज्ञानगतक ॥) अक्षरदीप ॥) सन्ध्यावासन ॥) पति-  
व्रतधर्म ॥) मुसलमानों की शुद्धि ॥) संस्कृत की चारों पुस्तकें ॥२) सजिह्द ॥६)

पुस्तकें मिलने का पता: मैनेजर भास्कर प्रेस मेरठ शहर